تفسير معاني

القرآن الكريم

باللغة البنغالية

বাংলা তাফসীর

কুর'আনুল কারীম

অনুবাদঃ

প্রফেসর ডঃ মুহাম্মদ মুজীবুর রহমান

দারুস সালাম

রিয়াদ • জেদ্দা • আল-খোবার • শারজাহ্

ঢাকা • লাহোর • লন্ডন • হিউস্টন • নিউ ইয়র্ক

ALL RIGHTS RESERVED © جميع حقوق الطبع محفوظة

No part of this book may be reproduced or utilized in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying and recording or by any information storage and retrieval system, without the written permission of the publisher.

3rd Edition: January 2007

HEAD OFFICE

P.O. Box: 22743, Riyadh 11416 K.S.A.Tel: 0096 -1-4033962/4043432 Fax: 4021659
E-mail: riyadh@dar-us-salam.com, darussalam@awalnet.net.sa Website: www.dar-us-salam.com

K.S.A. Darussalam Showrooms:
Riyadh
Olaya branch: Tel 00966-1-4614483 Fax: 4644945
Malaz branch: Tel 00966-1-4735220 Fax: 4735221

- **Jeddah**
  Tel: 00966-2-6879254 Fax: 6336270
- **Madinah**
  Tel: 00966-503417155 Fax: 04-8151121
- **Al-Khobar**
  Tel: 00966-3-8692900 Fax: 8691551
- **Khamis Mushayt**
  Tel & Fax: 00966-072207055

U.A.E

- **Darussalam, Sharjah U.A.E**
  Tel: 00971-6-5632623 Fax: 5632624
  Sharjah@dar-us-salam.com.

PAKISTAN

- **Darussalam,** 36 B Lower Mall, Lahore
  Tel: 0092-42-724 0024 Fax: 7354072
- **Rahman Market, Ghazni Street,**Urdu Bazar Lahore
  Tel: 0092-42-7120054 Fax: 7320703
- **Karachi,** Tel: 0092-21-4393936 Fax: 4393937
- **Islamabad,** Tel: 0092-51-2500237

U.S.A

- **Darussalam, Houston**
  P.O Box: 79194 Tx 77279
  Tel: 001-713-722 0419 Fax: 001-713-722 0431
  E-mail: houston @dar-us-salam.com
- **Darussalam, New York** 486 Atlantic Ave, Brooklyn
  New York-11217, Tel: 001-718-625 5925
  Fax: 718-625 1511
  E-mail: darussalamny@hotmail.com

U.K

- **Darussalam International Publications Ltd.**
  Leyton Business Centre
  Unit-17, Etloe Road, Leyton, London, E10 7BT
  Tel: 0044 20 8539 4885 Fax:0044 20 8539 4889
  Website: www.darussalam.com
  Email: info@darussalam.com
- **Darussalam International Publications Limited**
  Regents Park Mosque, 146 Park Road
  London NW8 7RG Tel: 0044- 207 725 2246

AUSTRALIA

- **Darussalam** 153, Haldon St, Lakemba (Sydney)
  NSW 2195, Australia
  Tel: 0061-2-97407188 Fax: 0061-2-97407199
  Mobile: 0061-414580813 Res: 0061-2-97580190
  Email: abumuaaz@hotamail.com

CANADA

- Islmic Books Service
  2200 South Sheridan way Mississauga,
  Ontario Canada L5K 2C8
  Tel: 001-905-403-8406 Ext. 218 Fax: 905-8409

HONG KONG

- **Peacetech**
  A2, 4/F Tsim Sha Mansion
  83-87 Nathan Road Tsimbatsui
  Kowloon, Hong Kong
  Tel: 00852 2369 2722 Fax: 00852-23692944
  Mobile: 00852 97123624

MALAYSIA

- **Darussalam International Publication Ltd.**
  No.109A, Jalan SS 21/1A, Damansara Utama,
  47400, Petaling Jaya, Selangor, Darul Ehsan, Malaysia
  Tel: 00603 7710 9750 Fax: 7710 0749
  E-mail: darussalm@streamyx.com

FRANCE

- **Editions & Librairie Essalam**
  135, Bd de Ménilmontant- 75011 Paris
  Tél: 0033-01- 43 38 19 56/ 44 83
  Fax: 0033-01-43 57 44 31 E-mail: essalam@essalam com.

SINGAPORE

- Muslim Converts Association of Singapore
  32 Onan Road The Galaxy
  Singapore- 424484
  Tel: 0065-440 6924, 348 8344 Fax: 440 6724

SRI LANKA

- **Darul Kitab** 6, Nimal Road, Colombo-4
  Tel: 0094 115 358712 Fax: 115-358713

INDIA

- **Islamic Dimensions**
  56/58 Tandel Street (North)
  Dongri, Mumbai 4000 009,India
  Tel: 0091-22-3736875, Fax: 3730689
  E-mail:sales@irf.net

SOUTH AFRICA

- **Islamic Da`wah Movement (IDM)**
  48009 Qualbert 4078 Durban,South Africa
  Tel: 0027-31-304-6883 Fax: 0027-31-305-1292
  E-mail: idm@ion.co.za

تفسير معاني

القرآن الكريم

باللغة البنغالية

ترجمه

الدكتور / محمد مجيب الرحمن

إيست ميدو - نيويارك بأمريكا

الأستاذ ورئيس قسم اللغة العربية والتعليم الإسلامي

بجامعة راجشاهي، بنغلاديش (سابقًا)

المدير في مركز التعليم الإسلامي الحكومي (سابقًا)

عضو لجمعية أهل الحديث، بنغلاديش

راجعه

الدكتور / عبد الله فاروق السلفي

الأستاذ المساعد ورئيس قسم الدعوة والدراسات الإسلامية

الجامعة الإسلامية العالمية شيتاغونغ، بنغلاديش (سابقًا)

কুরআনুল কারীম

বাংলা তাফসীর

অনুবাদঃ প্রফেসর ড. মুহাম্মাদ মুজীবুর রহমান

Interpretation of the Meanings

THE QUR'ÂN

In the Bangla Language

By: Prof. Dr. Muhammad Mujibur Rahman

تفسير معاني

القرآن الكريم

باللغة البنغالية

ترجمه

الدكتور / محمد مجيب الرحمن

إيست ميدو - نيويارك بأمريكا

الأستاذ ورئيس قسم اللغة العربية والتعليم الإسلامي

بجامعة راجشاهي، بنغلاديش (سابقًا)

المدير في مركز التعليم الإسلامي الحكومي (سابقًا)

عضو لجمعية أهل الحديث، بنغلاديش

راجعه

الدكتور / عبد الله فاروق السلفي

الأستاذ المساعد ورئيس قسم الدعوة والدراسات الإسلامية

الجامعة الإسلامية العالمية شيتاغونغ، بنغلاديش (سابقًا)

কুরআনুল কারীম

বাংলা তাফসীর

অনুবাদঃ প্রফেসর ড. মুহাম্মাদ মুজীবুর রহমান

Interpretation of the Meanings

THE QUR'ÂN

In the Bangla Language

By: Prof. Dr. Muhammad Mujibur Rahman

কুরআনুল কারীম

বাংলা তাফসীর

প্রফেসর ড. মুহাম্মাদ মুজীবুর রহমান

প্রথম প্রকাশ

নভেম্বরঃ ২০০১ ইংরেজী

রামাযানঃ ১৪২২ হিজরী

অগ্রহায়ণঃ ১৪০৮ বাংলা

তৃতীয় সংস্করণ

জানুয়ারীঃ ২০০৭ ইংরেজী

জিলহজ্জঃ ১৪২৭ হিজরী

পৌষঃ ১৪১৩ বাংলা

গ্রন্থস্বত্বঃ প্রকাশকের

সদর দফতর

পোঃ বক্সঃ ২২৭৪৩, রিয়াদঃ ১১৪১৬, সৌদি আরব ফোনঃ ০০৯৬৬-১-৪০৩৩৯৬২-৪০৪৩৪৩২
ফ্যাক্সঃ ০০৯৬৬-১-৪০২১৬৫৯

E-mail: **Darussalam@awalnet.net.sa** Website: http: // www. dar-us-salam.com

শা খা স মূ হ ঃ

বিক্রয় কেন্দ্রসমূহ

রিয়াদ, সৌদি আরব

উলাইয়াঃ ফোনঃ ০০৯৬৬-১-৪৬১৪৪৮৩ ফ্যাক্সঃ ৪৬৪৪৯৪৫

মালাযঃ ফোনঃ ০০৯৬৬-১-৪৭৩৫২২০ ফ্যাক্সঃ ৪৭৩৫২২১

সুলাইমঃ ফোনঃ ০০৯৬৬-১-২৮৬০৪২২

জেদ্দাঃ ফোনঃ ০০৯৬৬-২-৬৮৭৯২৫৪ ফ্যাক্সঃ ৬৩৩৬২৭০

মদীনাঃ ফোনঃ ০০৯৬৬-৫০৩৪১৭১৫৫ ফ্যাক্সঃ ০৪-৮১৫১১২১

আল-খোবারঃ ফোনঃ ০০৯৬৬-৩-৮৬৯২৯০০ ফ্যাক্সঃ ৮৬৯১৫৫১

খামীস মুশীতঃ ফোন+ফ্যাক্সঃ ০০৯৬৬-০৭২২০৭০৫৫

আরব আমীরাত

ফোনঃ ০০৯৭১-৬-৫৬৩২৬২৩ ফ্যাক্সঃ ৫৬৩২৬২৪

E-mail: Sharjah @dar-us-salam.com

পাকিস্তান

দারুসসালাম, ৩৬/বি লয়ার মল, লাহোর

ফোনঃ ০০৯২-৪২-৭২৪ ০০২৪ ফ্যাক্সঃ ৭৩৫৪০৭২

রহমান মার্কেট, গজনী স্ট্রীট, উর্দুবাজার লাহোর

ফোনঃ ০০৯২-৪২-৭১২০০৫৪ ফ্যাক্সঃ ৭৩২০৭০৩

কারাচী ফোনঃ ০০৯২-২১-৪৩৯৩৯৩৬ ফ্যাক্সঃ ৪৩৯৩৯৩৭

ইসলামাবাদ ফোনঃ ০০৯২-৫১-২৫০০২৩৭

যুক্তরাষ্ট্র

দারুসসালাম, হিউস্টন

পি.ও. বক্সঃ ৭৯১৯৪ টিএক্স ৭৭২৭৯

ফোনঃ ০০১-৭১৩-৭২২০৪১৯ ফ্যাক্সঃ ৭২২০৪৩১

E-mail: sales@dar-us-salam.com

দারুসসালাম, নিউ ইয়র্ক

৪৮৬ আটলান্টিক এভিনিউ, ব্রুকলীন

নিউইয়র্ক ১১২১৭, ফোন ঃ ০০১-৭১৮-৬২৫ ৫৯২৫

ফ্যাক্সঃ ০০১-৭১৮-৬২৫ ১৫১১

E-mail: darussalamny@hotmail.com

যুক্তরাজ্য

লন্ডনঃ দারুসসালাম ইন্টারন্যাশনাল পাবলিকেশন্স লিমিটেড

লিওটন বিজনেস সেন্টার

ইউনিট-১৭, ইটলো রোড, লিওটন, লন্ডন, ই১০ ৭ বিটি

ফোনঃ ০০৪৪ ২০ ৮৫৩৯ ৪৮৮৫ ফ্যাক্সঃ ৮৫৩৯ ৪৮৮৯

Website: www.darussalam.com

E-mail: info@darussalam.com

দারুসসালাম ইন্টারন্যাশনাল পাবলিকেশন্স লিমিটেড

রিজেন্ট পার্ক মসজিদ, ১৪৬ পার্ক রোড,

লন্ডন এনডব্লিউ ৮ ৭ আর জি

ফোনঃ ০০৪৪-২০৭ ৭২৫ ২২৪৬

কানাডা

ইসলামীক বুকস সার্ভিস

২২০০ সাউথ শেরীডান ওয়ায়ে মিসিসাওগা

ওয়ানটারিও কানাডা এল৫কে ২সি৮

ফোনঃ ০০১-৯০৫-৪০৩৮৪০৬ এক্সিট.২১৮

ফ্যাক্সঃ ৯০৫-৮৪০৯

মালয়েশিয়া

দারুসসালাম ইন্টারন্যাশনাল পাবলিকেশন্স লিমিটেড

১০৯/এ, জালান এসএস২১/১এ, ডামানসারা উটামা

৪৭৪০০, পিটালিন জায়া, সিলাঙ্গুর, দারুল ইহসান

মালয়েশিয়া, ফোনঃ ০০৬০৩-৭৭১০ ৯৭৫০

ফ্যাক্সঃ ৭৭১০০৭৪৯

E-mail: Darussalam@streamyx.com

ফ্রান্স

ইসলাম লাইব্রেরী

১৩৫, বিডি ডি মেনিলমোনটেন্ট-৭৫০১১ প্যারিস

ফোনঃ ০০৩৩-০১-৪৩ ৩৮ ১৯ ৫৬/ ৪৪ ৮৩

ফ্যাক্সঃ ০০৩৩-০১- ৪৩ ৫৭ ৪৪ ৩১

E-mail: essalam@esslam.com

কুরআনুল কারীম

বাংলা তাফসীর

অনুবাদঃ
প্রফেসর ড. মুহাম্মাদ মুজীবুর রহমান
প্রাক্তন অধ্যাপক ও সভাপতি
আরবী ও ইসলামিক স্টাডিজ বিভাগ
রাজশাহী বিশ্ববিদ্যালয়, বাংলাদেশ

সদস্য, বাংলাদেশ জম্‌ঈয়তে আহলে হাদীস
প্রাক্তন পরিচালক, ইসলামিক এডুকেশন সেন্টার
ইস্ট মিডো, নিউ ইয়র্ক-১১৫৫৪, যুক্তরাষ্ট্র

সম্পাদনায়ঃ
প্রফেসর ড. আব্দুল্লাহ্ ফারুক সালাফি
প্রাক্তন অধ্যাপক ও সভাপতি
ডিপার্টমেন্ট অব দা'ওয়া এন্ড ইসলামীক স্টাডিজ
ইন্টারন্যাশনাল ইসলামীক ইউনিভার্সিটি
চিটাগং, বাংলাদেশ।

দা রু স সা লা ম
রিয়াদ • জেদ্দা • আল-খোবার • শারজাহ্
লাহোর • লন্ডন • হিউস্টন • নিউ ইয়র্ক

Department of Da'wah & Islamic Studies
الجامعة الإسلامية العالمية شيتاغونغ
International Islamic University Chittagong

Ref :

Date : 13-12-2005

إلى من يهمه الأمر

الحمد لله وحده والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، وبعد!

فإن الأستاذ الدكتور محمد مجيب الرحمن أستاذ ورئيس القسم العربي والدراسات الإسلامية بجامعة راجشاهي وعضو جمعية أهل الحديث ، بنغلاديش ومدير قسم التعليم الإسلامي العالي بميدو الشرقية بالولايات المتحدة الأمريكية أحد الدعاة الجهابذة وقادة الفكر الإسلامي في أرجاء بنغلاديش وله شهرة واسعة في الأوساط العلمية وهو من المجيدين المتقنين لشتى اللغات وهو كذلك صاحب خبرة طويلة وتجارب ممحصة في مجال العلوم الشرعية وإنه قام بترجمة معاني القرآن الكريم باللغة البنغالية المسمى -القرآن الكريم بنغلا تفسير- ترجمة صحيحة وافية حيث إنها تنقل إلى القراء الكرام روح القرآن وأهدافه النبيلة وتعاليمه السمحة بأسلوب رصين وذلك خلال فترة عمله ومحاضراته في جامعة راجشاهي الحكومية ببنغلاديش ثم خلال فترة عمله في المركز الثقافي الإسلامي بمدينة نيو يورك،الولايات المتحدة الأمريكية وإنني أرى أن الترجمة المذكورة تستحق الطبع والنشر في داخل البلاد وخارجها ليستفيد بها المسلمون الناطقون باللغة البنغالية وإنهم في أمس الحاجة إلى مثل هذه الترجمة التي وفت بالغرض شرعيا ولغويا وأدبيا وبلاغيا وقد قدم صاحبها خدمة جليلة في حقل تفسير القرآن الكريم باللغة البنغالية كما أن المذكور يتحلى بالأخلاق الفاضلة والسير الحميدة ويتمسك بالعقيدة السالمة من شوائب الشرك والبدعة. والله ولي التوفيق وصلى الله على نبينا محمد وعلى آله وصحبه أجمعين .

كتبه

(د. عبد الله فاروق السلفي)
الأستاذ المساعد ورئيس قسم الدعوة والدراسات الإسلامية
الجامعة الإسلامية العالمية شيتاغونغ، بنغلاديش.

Head
Dept. of Da'wah & Islamic Studies
International Islamic University Chittagong

Main Campus: 154/A, College Road, Chittagong-4203, Bangladesh.Tel: 880-031-610085, 610308, 625230, 638656 - 7, 639981. Ext.: 210, Fax: 880-031-610307, E-mail : info@iiuc.ac.bd **Permanent Campus:** Kumira, Sitakunda, Chittagong. Phone- 018329139, Web Site: www.iiuc.ac.bd **Dhaka Campus:** House no. 23, Road no. 03, Dhanmondi R/A, Dhaka-1205, Bangladesh. Phone- 880-2-8629947, 8613294, 8620115, Fax: 880-2-8624692, E-mail : iucdhk@bdonline.com

সূচীপত্র

১. সূরা ফাতিহা 01
২. সূরা বাকারা.....04
৩. সূরা আল-ইমরান 91
৪. সূরা আন-নিসা 143
৫. সূরা মায়িদা 190
৬. সূরা আন'আম 232
৭. সূরা 'আরাফ 281
৮. সূরা আনফাল.....333
৯. সূরা তাওবা 352
১০. সূরা ইউনুস 391
১১. সূরা হূদ 416
১২. সূরা ইউসুফ.....445
১৩. সূরা রা'দ.....469
১৪. সূরা ইবরাহীম 479
১৫. সূরা হিজর.....493
১৬. সূরা নাহল.....504
১৭. সূরা বানী ইসরাইল 529
১৮. সূরা কাহ্ফ.....549
১৯. সূরা মারইয়াম 573
২০. সূরা ত্বা-হা 587
২১. সূরা আম্বিয়া.....607
২২. সূরা হাজ্জ 623
২৩. সূরা মু'মিনুন 639
২৪. সূরা নূর.....652
২৫. সূরা ফুরকান 668
২৬. সূরা শুআ'রা.....680
২৭. সূরা নাম্‌ল.....700
২৮. সূরা কাসাস্ 715
২৯. সূরা আনকাবূত 734
৩০. সূরা রূম 747
৩১. সূরা লোকমান 756
৩২. সূরা সাজ্‌দাহ.....763
৩৩. সূরা আহ্‌যাব.....768
৩৪. সূরা সাবা.....785
৩৫. সূরা ফাতির 795
৩৬. সূরা ইয়াসীন 803
৩৭. সূরা সাফ্‌ফাত.....814
৩৮. সূরা সোয়াদ.....829
৩৯. সূরা যুমার 839
৪০. সূরা মু'মিন 852
৪১. সূরা হা-মীম আস্‌সাজদাহ .867
৪২. সূরা শূরা.....878
৪৩. সূরা যুখরুফ.....888
৪৪. সূরা দুখান.....900
৪৫. সূরা জাসিয়া.....905
৪৬. সূরা আহক্বাফ.....912
৪৭. সূরা মুহাম্মাদ.....920
৪৮. সূরা ফাত্‌হ.....928
৪৯. সূরা হুজুরাত 935
৫০. সূরা ক্বা'ফ.....939
৫১. সূরা যারিয়াত 944
৫২. সূরা তূর 951
৫৩. সূরা নাজম.....955
৫৪. সূরা কামার.....962
৫৫. সূরা রহমান 968
৫৬. সূরা ওয়াকি'আহ্.....974

This PDF Qur'an contain Interactive Link. Interactive link means CONTENTS pages are linked with their appropriate pages. So, when you click on a topic from the CONTENTS page, it will automatically direct you to the relevant page.

৫৭. সূরা হাদীদ 981
৫৮. সূরা মুজাদালাহ্.....988
৫৯. সূরা হাশ্‌র.....993
৬০. সূরা মুমতাহিনাহ্ 1000
৬১. সূরা সাফ্‌ফ.....1004
৬২. সূরা জুমুআ'হ্.....1007
৬৩. সূরা মুনাফিকূন 1009
৬৪. সূরা তাগাবুন.....1012
৬৫. সূরা তালাক.....1015
৬৬. সূরা তাহ্‌রীম.....1019
৬৭. সূরা মুল্‌ক.....1023
৬৮. সূরা কলম.....1027
৬৯. সূরা হাক্‌কাহ্ 1032
৭০. সূরা মা'আরিজ 1037
৭১. সূরা নূহ্.....1040
৭২. সূরা জ্বীন 1044
৭৩. সূরা মুয্‌যাম্মিল.....1047
৭৪. সূরা মুদ্‌দাস্‌সির.....1050
৭৫. সূরা কিয়ামাহ্.....1055
৭৬. সূরা দাহ্‌র.....1058
৭৭. সূরা মুরসালাত 1061
৭৮. সূরা নাবা.....1066
৭৯. সূরা নাযি'আত.....1069
৮০. সূরা আ'বাসা.....1072
৮১. সূরা তাক্‌ভীর 1075
৮২. সূরা ইন্‌ফিতার.....1078
৮৩. সূরা মুতাফ্‌ফিফীন.....1080
৮৪. সূরা ইন্‌শিকাক 1083
৮৫. সূরা বুরূজ.....1085
৮৬. সূরা তা'-রিক 1086
৮৭. সূরা আ'লা 1088
৮৮. সূরা গাশিয়াহ্ 1089
৮৯. সূরা ফাজ্‌র 1091
৯০. সূরা বালাদ 1094
৯১. সূরা শামস.....1096
৯২. সূরা লাইল.....1097
৯৩. সূরা দুহা.....1099
৯৪. সূরা আলাম নাশরাহ্ ...1100
৯৫. সূরা তীন 1100
৯৬. সূরা আ'লাক 1101
৯৭. সূরা কাদ্‌র.....1103
৯৮. সূরা বাইয়্যিনাহ্.....1103
৯৯. সূরা যিলযাল 1104
১০০. সূরা আদিয়াত.....1105
১০১. সূরা কা'রি'আহ্.....1106
১০২. সূরা তাকাসুর 1107
১০৩. সূরা আসর 1108
১০৪. সূরা হুমাযাহ্.....1108
১০৫. সূরা ফীল 1109
১০৬. সূরা কুরাইশ.....1109
১০৭. সূরা মাঊন.....1110
১০৮. সূরা কাওসার.....1111
১০৯. সূরা কা'ফিরূন 1111
১১০. সূরা নাস্‌র 1112
১১১. সূরা লাহাব্ 1112
১১২. সূরা ইখলাস.....1113
১১৩. সূরা ফালাক 1114
১১৪. সূরা নাস.....1115

This PDF Qur'an contain Interactive Link. Interactive link means CONTENTS pages are linked with their appropriate pages. So, when you click on a topic from the CONTENTS page, it will automatically direct you to the relevant page.

প্রকাশকের নিবেদন

সমস্ত প্রশংসা নিবেদন করছি বিশ্বজগতের রব, আল্লাহর জন্য যিনি আল-কুরআন অবতীর্ণ করেছেন মানব জাতির হেদায়েত ও কল্যাণের নিমিত্তে। দরূদ ও সালাম মুহাম্মাদ (ﷺ)-এর প্রতি এবং তাঁর পরিবার ও সাহাবীদের উপর বর্ষিত হোক।

বিশ্বে এখন প্রায় পঁয়ত্রিশ/চল্লিশ কোটি বাংলাভাষী রয়েছে। তাদের বেশিরভাগই হলেন মুসলমান। তারা দেশে-বিদেশে নিজ ভাষায় আল-কুরআন অধ্যয়ন করতে আগ্রহী। কিয়ামত পর্যন্ত আল-কুরআন মানবতার মুক্তির দিশারী এতে কোন সন্দেহ নেই। দুনিয়ার শান্তি ও আখেরাতের মুক্তির জন্য-এর অধ্যয়ন, চর্চা ও বাস্তবায়ন অবশ্যম্ভাবী।

উল্লেখ্য যে, আল-কুরআনের অনুবাদ গ্রন্থের মর্যাদা (মূল) কুরআনের সমপর্যায়ভুক্ত নয়। তবুও অনুবাদ মানুষকে স্ব-ভাষায় কুরআনের ভাবার্থ বুঝতে ও তার দ্বারা উপকৃত হতে এবং দুনিয়া ও আখেরাতের জীবনকে সমৃদ্ধশালী করতে সাহায্য করে।

এ তরজমা দারুস্‌সালামের দীর্ঘদিনের আশা-আকাঙ্ক্ষার বাস্তবায়ন। এ মহৎ কাজে বাংলাদেশের বিশিষ্ট শিক্ষাবিদ প্রফেসর ড. মুহাম্মাদ মুজীবুর রহমান তাঁর অনূদিত তাফসীর ইবনে কাসীর-এর কুরআনের তরজমা অংশটি দিয়ে আমাদের সে ইচ্ছা পূর্ণ করেছেন।

বাংলাভাষায় কুরআনুল কারীমের এই নির্ভরযোগ্য তরজমা বাংলাভাষী পাঠক-পাঠিকাদের হাতে তুলে দিতে পারায় আমি সর্বপ্রথমে আল্লাহ রাব্বুল আলামীনের শুকরিয়া আদায় করছি।

প্রকাশনা পরিষদের অক্লান্ত পরিশ্রমের ফলে সংশোধিতরূপে সত্ত্বর-এর প্রকাশনা সম্ভব হয়েছে। ড. আব্দুল্লাহ ফারূক, মুহাম্মাদ আব্দুর রব আফফান, আজমল হুসাইন, সাইফুল ইসলাম ও জনাব মুহিববুর রহমান, বর্ণবিন্যাসকারী ও ডিজাইনার জনাব আসাদুল্লাহসহ যাঁরা এ অনুবাদ প্রকাশনায় সক্রিয়ভাবে সহযোগিতা করেছেন তাদের সকলের প্রতি রইল আমার আন্তরিক কৃতজ্ঞতা ও শুভেচ্ছা।

হাদীসের সাহায্য ছাড়া কুরআনের অর্থ অনুধাবন করা যায় না। তাই প্রয়োজনীয় ক্ষেত্রে সহীহ হাদীসের অনুবাদের মাধ্যমে টীকা সংযোজন করা হয়েছে। তবে হাদীস অনুবাদের ক্ষেত্রে মূল আরবী গ্রন্থ দেখে করা হয়েছে। অধিকাংশ হাদীসই সহীহ আল-বুখারী থেকে নেয়া হয়েছে।

বাংলাভাষী সকল পর্যায়ের মুসলমান ভাইদের পবিত্র কুরআনের অর্থ বুঝে পড়ার আগ্রহের প্রতি লক্ষ্য রেখে তরজমা সহজ, বোধগম্য ও প্রাঞ্জল করার চেষ্টা করা

হয়েছে, যাতে তেলাওয়াতের সাথে সাথে তাঁরা কুরআন মাজিদের অর্থও বুঝতে পারেন।

২০০১ সালে প্রকাশিত তরজমায় যেসব ত্রুটি-বিচ্যুতির ব্যাপারে চিন্তাশীল পাঠক-পাঠিকা ও গবেষকমণ্ডলী পরামর্শ দিয়েছেন তাঁদেরকে আন্তরিক ধন্যবাদ জানাচ্ছি, মহান আল্লাহ তাদেরকে উত্তম বিনিময় দান করুন। এবারের প্রকাশনায় ঐ সব ত্রুটি সংশোধনের যথাসাধ্য চেষ্টা করা হয়েছে।

মানুষ ভুলের উর্ধ্বে নয়, সে হিসেবে এই অনুবাদেও ভুল-ভ্রান্তি থাকতে পারে। সুবিজ্ঞ পাঠক-পাঠিকার নিকট অনুরোধ অনুবাদে অনিচ্ছাকৃতভাবে কোনরূপ ভুল ধরা পড়লে দারুস্‌সালাম দফতরে মেহেরবানী করে জানাবেন। ইনশাআল্লাহ ভুলের সংশোধন আগামী সংস্করণে অবশ্যই করা হবে।

পবিত্র আল-কুরআনের বাংলা এ তরজমা গ্রন্থটি দ্বারা ইসলামকে জানার ব্যাপারে বাংলাভাষী জনগণ উপকৃত হলে আমাদের শ্রমও সার্থক হবে। পাঠকদের নিকট এটি গৃহীত হবে বলে আশা করছি। আল্লাহ আমাদের উত্তম আমলগুলো কবূল করুন এবং ভুল-ত্রুটিগুলো ক্ষমা করুন। আমীন।

রিয়াদঃ জানুয়ারী, ২০০৭

আব্দুল মালিক মুজাহিদ

জেনারেল ম্যানেজার

অনুবাদকের আরয

মানবকুলের মধ্যে সর্বশ্রেষ্ঠ তারাই যারা পবিত্র কুরআনের শিক্ষা গ্রহণ ও শিক্ষা দানে নিয়োজিত। নবী আকরামের (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) এই পবিত্র বাণী সকল যুগের জ্ঞান-তাপস ও মনীষীদের উদ্বুদ্ধ করেছে পাক কুরআনের অনুবাদ ও ব্যাখ্যা প্রণয়ন করার কাজে।

আল্লাহ পাকের লাখো শুকরিয়া, 'তাফসীর ইবনে কাসীরের' ব্যাপক জনপ্রিয়তা, কল্যাণকারিতা এবং অপরিসীম গুরুত্বের কথা অনুধাবন করে তা বাংলায় ভাষান্তরিত করে প্রায় বিশ বছর আগে বাংলাভাষী পাঠক-পাঠিকার হাতে অর্পণ করতে সক্ষম হয়েছিলাম।

আন্তর্জাতিক খ্যাতি সম্পন্ন প্রকাশনা প্রতিষ্ঠান 'দারুসসালাম' সেই তাফসীর থেকে কুরআনের 'তরজমা অংশটুকু' প্রকাশের উদ্যোগ নেয় ২০০১ সালে। এবার তারা পুনঃপ্রকাশের উদ্যোগ নিয়েছে এর জনপ্রিয়তার কারণে। ভবিষ্যতে 'পূর্ণাঙ্গ তাফসীর' প্রকাশের পরিকল্পনা তাদের রয়েছে। আল্লাহ তা'আলা তাদের কামিয়াব করুন এবং উপযুক্ত যা'জা দান করুন।

আপ্রাণ চেষ্টা সত্ত্বেও একান্ত অনিচ্ছাকৃতভাবে এতে কিছু মুদ্রণ প্রমাদ, তরজমার উপস্থাপনা এবং অন্যান্য ত্রুটি-বিচ্যুতি পরিলক্ষিত হয়েছিল। যেসব বিষয়ে সুধী পাঠক মহলের পক্ষ থেকে অনুবাদকের দৃষ্টি আকর্ষণ করা হয়েছে, (মহান আল্লাহ তাদেরকে উত্তম বিনিময় দান করুন)। সেগুলো পরম কৃতজ্ঞতা ও ধন্যবাদসহ গৃহীত হয়েছে। এই কল্যাণময় কাজটিকে আরো উন্নতমানের এবং একান্ত রুচিশীলভাবে সম্পন্ন করে পরিমার্জিত আকারে প্রকাশ করা হয়েছে।

এই তরজমা যদি চিন্তাশীল পাঠক-পাঠিকার মনের কোণে রূহানী আনন্দ দিয়ে কুরআনের মহাশিক্ষাকে তাদের দৈনন্দিন জীবনের প্রতিটি পর্যায়ে পূর্ণাঙ্গ রূপলাভের সংকল্প জাগিয়ে তুলতে পারে, আর এর আলোকেই যদি তারা গড়ে তুলতে পারেন তাদের জীবনধারা, তবেই পরিশ্রম ও সাধনাকে আমি সফল ও সার্থক মনে করবো।

আটলান্টিক, নিউজার্সি, মার্কিন যুক্তরাষ্ট্র

বিনয়াবনত

প্রফেসর ড. মুহাম্মাদ মুজীবুর রহমান

সহায়ক গ্রন্থ

১। "মিসবাহুল মুনীর" (সংক্ষিপ্ত তাফসীর ইবনে কাসীর)
২। তাফসীরে জালালাইন
৩। তাইসীর আল-কারীমুর রহমান
৪। আল-কুরআন ওয়ার্ড বাই ওয়ার্ড (উর্দু)
৫। কুরআনুল কারীম (মাওলানা আব্দুল হাকীম কর্তৃক রচিত)
৬। টীকাঃ হাদীসসমূহ বুখারী ও মুসলিম।

সূরাঃ ফাতিহা[১] মাক্কী

(আয়াতঃ ৭ রুকূঃ ১)

سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٧ رُكُوْعُهَا ١

১. আল্লাহর নামে শুরু করছি, যিনি পরম করুণাময় ও অতি দয়ালু।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿١﴾

২. আল্লাহর জন্য সমস্ত প্রশংসা যিনি জগতসমূহের প্রতিপালক।[২]

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢﴾

৩. যিনি পরম করুণাময়, অতিশয় দয়ালু।

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٣﴾

৪. যিনি প্রতিফল দিবসের মালিক।

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٤﴾

৫. আমরা শুধুমাত্র আপনারই ইবাদত করি এবং আপনারই নিকট সাহায্য প্রার্থনা করি।

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ﴿٥﴾

১। "ফাতিহা" (ফাতিহা অর্থঃ সূচনা, ভূমিকা ও সূত্রপাত করা)। এ সূরাটিকে ফাতিহাতুল কিতাব ও উম্মুল কিতাবও বলা হয়। কারণঃ মুস্‌হাফের (কুরআন মজিদের) প্রথমে এ সূরাটি লিখিত এবং নামাযের মধ্যে এর দ্বারাই কির'আত আরম্ভ করা হয় বলেও একে এ নামে অভিহিত করা হয়েছে। (বুখারী কিতাবুত তাফসীর, ফাতিহাতুল কিতাব অনুচ্ছেদ।)

২। আবূ সাঈদ ইবনুল মু'আল্লা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেছেনঃ (একদিন) আমি মসজিদে নববীতে (নফল) নামায পড়ছিলাম। ঠিক এ সময় রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আমাকে ডাকলেন; কিন্তু আমি তাঁকে কোন জবাব দিলাম না। পরে গিয়ে আমি তাঁকে বললামঃ হে আল্লাহ্‌র রাসূল! (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) [আপনি যে সময় আমাকে ডেকেছিলেন] আমি তখন নামায পড়ছিলাম। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) একথা শুনে তাকে বললেনঃ আল্লাহ্ তা'আলা কি বলেননিঃ অর্থঃ "আল্লাহ্ এবং রাসূল (সাল্লাল্লাহু আল্লাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর আহ্বানে সাড়া দাও, যখন তোমাদেরকে কোন কাজের প্রতি আহ্বান করেন।" (সূরা আনফাল, আয়াতঃ ২৪)

তারপর আমাকে বললেনঃ তুমি মসজিদ থেকে বের হওয়ার আগে আমি তোমাকে কুরআনের এমন একটি সূরা শিখিয়ে দেবো যা গুরুত্বের দিক দিয়ে সবচাইতে বড়। তারপর তিনি আমার হাত চেপে ধরলেন। যখন তিনি মসজিদ থেকে বেরিয়ে যেতে উদ্যত হলেন তখন আমি তাঁকে বললামঃ আপনি কি বলেননি যে, কুরআনের সবচাইতে গুরুত্বপূর্ণ সূরা আমাকে শিখিয়ে দেবেন? তিনি বললেনঃ সেই সূরাটি হলো আলহামদুলিল্লাহি রাব্বিল আলামীন। আমাকে 'সাবউল মাসানী' বা বার বার পঠিত এ সাতটি আয়াত ও মহান কুরআন দান করা হয়েছে। (অর্থাৎ সূরা ফাতিহাকে "সাবউল মাসানী" বলা হয় এ জন্য যে সূরাটিতে মোট সাতটি আয়াত আছে, যা নামাযে বার বার পঠিত হয়ে থাকে।) (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৭৪)

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۙ﴿۶﴾

৬. আমাদেরকে সরল সঠিক পথ-প্রদর্শন করুন।

صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ ۙ غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّيۡنَ ﴿۷﴾

৭. তাদের পথ, যাদের প্রতি আপনি অনুগ্রহ করেছেন; তাদের নয় যাদের প্রতি আপনার গযব বর্ষিত হয়েছে[১] এবং তাদেরও নয় যারা পথভ্রষ্ট।[২-৩-৪]

১। আ'দি বিন হাতেম (রাযিআল্লাহু আনহু) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেন, তিনি বলেনঃ (مغضوب عليهم) দ্বারা ইয়াহূদী সম্প্রদায়কে বুঝানো হয়েছে। (যারা সত্যকে জেনে শুনেও তা থেকে দূরে সরে গেছে এবং ইচ্ছেকৃতভাবে আমল পরিত্যাগ করেছে।) আর (ضالين) দ্বারা নাসারা বা খ্রিস্টানগণকে বুঝানো হয়েছে। (যাদের সঠিক পথ সম্পর্কে কোন ধারণা ও জ্ঞান নেই।) (তিরমিযী)

২-৩-৪। আব্দুল্লাহ্ ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর প্রতি ওহী অবতীর্ণ হবার পূর্বে বালদাহ নামক স্থানের নিম্নভাগে যায়েদ ইবনে আমর ইবনে নুফাইলের সাথে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সাথে সাক্ষাত হয়। তারপর (কুরাইশদের পক্ষ থেকে) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সামনে দস্তরখান বিছানো হলো। তিনি তা থেকে খেতে অস্বীকার করলেন (এবং যায়েদের সামনে ঠেলে দিলেন; কিন্তু তিনিও তা খেতে অস্বীকার করলেন।) অতঃপর যায়েদ (কুরাইশদের লক্ষ্য করে) বললেন, তোমাদের মূর্তির নামে তোমরা যা যবেহ কর তা আমি কিছুতেই খেতে পারি না। আমি তো কেবলমাত্র তাই খেয়ে থাকি যাতে যবেহ করার সময় আল্লাহ্র নাম উচ্চারণ করা হয়। যায়েদ ইবনে আমর কুরাইশদের যবেহর নিন্দা করতেন এবং তাদের উক্ত আচরণের প্রতিবাদ ও তার ত্রুটির প্রতি ইঙ্গিত করে বলতেন, বকরীকে সৃষ্টি করলেন আল্লাহ্ এবং তিনিই তাঁর আকাশ থেকে পানি বর্ষণ করেন, তিনিই তার জন্য মাটি থেকে ঘাস ও লতা-পাতা উৎপন্ন করেন। এতো কিছুর পরও তোমরা তাকে গাইরুল্লাহর নামে যবেহ কর। (বুখারী, হাদীস নং ৩৮২৬)

ইবনে উমর থেকে (অপর এক সনদে) বর্ণিত যায়েদ ইবনে আমর ইবনে নুফাইল সত্য দ্বীন সম্পর্কে জানা ও তার অনুসরণ করার জন্য শাম (সিরিয়া) দেশে গিয়ে এক ইয়াহূদী আলেমের সাথে সাক্ষাত করেন এবং তাকে তাদের দ্বীন সম্পর্কে জিজ্ঞেস করে বললেন, আমি হয়তোবা আপনাদের দ্বীন গ্রহণ করতে পারি। সুতরাং আমাকে (আপনাদের দ্বীন সম্পর্কে) কিছু বলুন। ইয়াহূদী আলেম বললেন, আপনি আমাদের ধর্মের অনুসারী হতে পারবেন না যে পর্যন্ত আল্লাহ্র আযাব থেকে আপনার অংশ আপনি গ্রহণ না করেন। যায়েদ বললেন আমি তো আল্লাহ্র আযাব থেকে (বাঁচার জন্যই) ভয়ে পালিয়ে এসেছি। আল্লাহ্ পাকের আযাব বিন্দুমাত্রও সহ্য করার ক্ষমতা আমার নেই এবং তা বরদাস্ত করার সাধ্যও রাখিনা। তাহলে অন্য কোন ধর্ম সম্পর্কে (মেহেরবানী) করে আমাকে পথ দেখাতে পারবেন কি? ইয়াহূদী আলেম বললেনঃ দ্বীনে হানীফ ছাড়া অন্য কোন সত্য দ্বীন আমার জানা নেই। যায়েদ বললেনঃ দ্বীনে হানীফ কি? তিনি বললেন তাহল ইব্রাহীম (আলাইহিস্সালাম)-এর আনীত দ্বীন। তিনি (ইবরাহীম (আলাইহিস্সালাম) ইয়াহূদী কিংবা খ্রিস্টান (কোন দলেরই) ছিলেন না। তিনি একমাত্র আল্লাহ্ ব্যতীত অন্য কিছুর ইবাদত করতেন না। অতঃপর যায়েদ সেখান থেকে বের হয়ে এক খ্রিস্টান আলেমের সঙ্গে সাক্ষাত করলেন এবং তাঁকেও পূর্বের ন্যায় জিজ্ঞেস করলেন। উক্ত আলেম বললেন যে পর্যন্ত আপনি আল্লাহ্র লা'নতের অংশ গ্রহণ না করবেন সে পর্যন্ত আমাদের ধর্মের অনুসারী হতে পারবেন না। যায়েদ বললেন আল্লাহ্র লা'নত থেকে (মুক্তি পাওয়ার জন্যই) আমি পালিয়ে বেড়াচ্ছি। আল্লাহ্র লা'নত কিংবা তাঁর গযবের বিন্দুমাত্রও আমি বরদাশত করতে পারব না, না আমার তা বরদাশত করার কোন সাধ্য আছে। অতঃপর উক্ত আলেমকেও বললেনঃ তা'হলে আপনি কি আমাকে অন্য কোন দ্বীন (ধর্ম)-এর কথা বলে দিতে পারবেন? উত্তরে উক্ত আলেম

বললেন, অন্য কোন ধর্মের কথা আমি জানি না, তবে (দ্বীনে) হানীফ ব্যতীত। যায়েদ জিজ্ঞাসা করলেন, হানীফ কি? তিনি বললেন, তা'হল ইব্‌রাহীম (আলাইহিস্‌সালাম)-এর আনীত দ্বীন। তিনি ইয়াহূদী ও ছিলেন না এবং খ্রিস্টানও ছিলেন না। তিনি আল্লাহ্ ছাড়া অন্য কিছুর ইবাদত করতেন না। যায়েদ যখন দেখলেন যে ইব্‌রাহীম (আলাইহিস্‌সালাম)-এর দ্বীনের সত্যতার ব্যাপারে তারা সকলেই একমত, তাদের মন্তব্য শুনে বেরিয়ে এলেন এবং বাহিরে এসে দু'হাত তুলে বললেন, হে আল্লাহ্! আমি তোমাকে সাক্ষি রেখে বলছি যে, নিশ্চয় আমি ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম)-এর দ্বীনের প্রতি রয়েছি। (বুখারী, হাদীস নং ৩৮২৮)

* লাইছ বলেন, হিশাম তার পিতা ও আসমা বিনতে আবু বকরের বরাত দিয়ে আমাকে লিখেছেন যে, আসমা বলেনঃ একদিন, আমি যায়েদ ইবনে আমর ইবনে নুফাইলকে দেখলাম যে, তিনি কা'বা ঘরের সাথে নিজের পিঠ লাগিয়ে দাঁড়িয়ে (কুরাইশদেরকে লক্ষ্য করে) বলছেন, হে কুরাইশ দল! আল্লাহ্‌র কসম! আমি ছাড়া তোমাদের কেউ ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম)-এর দ্বীনের অনুসারী নয়। আর তিনি জীবন্ত প্রোথিত নবজাত শিশুকন্যাকে জীবিত করতেন। যখন কোন ব্যক্তি তার মেয়েকে হত্যা করতে চাইত তখন তিনি তাকে বলতেন, একে হত্যা করো না। তোমার পরিবর্তে আমি তার ভরণ-পোষণের ভার নেব। এ বলে তিনি তাকে নিয়ে যেতেন। মেয়েটা যখন বড় হতো, তিনি তার পিতাকে বলতেন, তুমি চাইলে আমি মেয়েটাকে তোমাকে দিয়ে দিব। আর তুমি যদি চাও তবে আমিই মেয়েটার ভরণ-পোষণ করে যাব। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪২৮)

* উবাদা বিন সামিত (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, নিশ্চয়ই রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি নামাযে সূরা ফাতিহা পাঠ করবে না তার নামাযই হবে না। (বুখারী, হাদীস নং ৭৫৬)

* আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহ আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ নিশ্চয়ই রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যখন ইমাম সাহেব আমীন বলে তখন তোমরাও আমীন বল। কেননা (ঐ সময়) ফেরেশ্‌তারাও আমীন বলে থাকে। যে ব্যক্তির আমীন বলা ফেরেশ্‌তাদের আমীন বলার সাথে মিলে যায় তার পূর্ববর্তী গোনাহ মাফ করে দেয়া হয়। (আমীন অর্থ হচ্ছে "হে আল্লাহ্! আপনি কবুল করুন।") (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৭৫)

সূরাঃ বাকারাহ্, মাদানী

(আয়াতঃ ২৮৬, রুকূ'ঃ ৪০)

আল্লাহর নামে শুরু করছি, যিনি পরম করুণাময় ও অতি দয়ালু।

سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ مَدَنِيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٢٨٦ رُكُوْعَاتُهَا ٤٠

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ۚ ①

১. আলিফ-লাম-মীম[১]

ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ ②

২. এটা ঐ গ্রন্থ যার মধ্যে কোনরূপ সন্দেহ নেই; আল্লাহ ভীরুদের (পরহেজগারদের) জন্যে এ গ্রন্থ হিদায়াত বা মুক্তিপথের দিশারী।

الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۙ ③

৩. যারা অ-দৃষ্ট বিষয়গুলোতে বিশ্বাস স্থাপন করে, এবং নামায প্রতিষ্ঠিত করে ও আমি তাদেরকে যে জীবনো-পকরণ দান করেছি তা হতে ব্যয় করে থাকে।[২]

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ؕ ④

৪. এবং যারা তোমার প্রতি যা অবতীর্ণ করা হয়েছে ও তোমার পূর্বে যা অবতীর্ণ করা হয়েছিল, তদ্বিষয়ে বিশ্বাস স্থাপন করে এবং পরকালের প্রতি যারা দৃঢ় বিশ্বাস রাখে।

اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ⑤

৫. এরাই তাদের প্রভুর পক্ষ হতে প্রাপ্ত হিদায়াতের উপর প্রতিষ্ঠিত রয়েছে এবং এরাই সফলকাম।

১। الم এই ধরণের অক্ষরগুলিকে হুরূফ-আল মুকাত্তা'আত (বিচ্ছিন্ন বর্ণমালা) বলা হয়। এগুলিকে পৃথক পৃথকভাবে পড়া হয়। কুরআন মজিদের বহু সূরার (উনত্রিশটি সূরার প্রথমে) প্রারম্ভে এরূপ হরফ বা অক্ষর ব্যবহৃত হয়েছে। এর অন্তর্নিহিত তাৎপর্য আল্লাহ্ই অবগত আছেন। (তাফসীর ইবনে কাসীর)

২। ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ ইসলামের ভিত্তি পাঁচটি স্তম্ভের উপর স্থাপিতঃ (১) এ সাক্ষ্য দেয়া যে, আল্লাহ্ ছাড়া সত্য কোন মা'বূদ নেই এবং মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আল্লাহ্র রাসূল। (২) নামায কায়েম করা। (৩) যাকাত প্রদান করা। (৪) হজ্জ পালন করা। (৫) রমজান মাসে সিয়াম (রোজা) পালন করা। (বুখারী, হাদীস নং ৮)

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٦﴾

৬. নিশ্চয় যারা অবিশ্বাস করেছে, তাদের তুমি সতর্ক কর বা না কর, উভয়টা তাদের জন্য সমান, তারা বিশ্বাস স্থাপন করবে না।

خَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ ۖ وَعَلَىٰ أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٧﴾

৭. আল্লাহ তাদের অন্তরসমূহের উপর ও তাদের কর্ণসমূহের উপর মোহরাংকিত করে দিয়েছেন এবং তাদের চক্ষুসমূহের উপর আবরণ পড়ে আছে এবং তাদের জন্য রয়েছে গুরুতর শাস্তি।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُم بِمُؤْمِنِينَ ﴿٨﴾

৮. আর মানুষের মধ্যে এমন লোক আছে যারা বলে, আমরা আল্লাহর উপর এবং বিচার দিবসের উপর ঈমান এনেছি, অথচ তারা মোটেই ঈমানদার নয়।

يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٩﴾

৯. তারা আল্লাহ ও মুমিনদের সঙ্গে প্রতারণা করে, প্রকৃত অর্থে তারা নিজেদের ব্যতীত আর কারও সঙ্গে প্রতারণা করে না, অথচ তারা এ সম্বন্ধে বোধই রাখে না।

فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ﴿١٠﴾

১০. তাদের অন্তরে ব্যাধি (রোগ) রয়েছে, উপরন্তু আল্লাহ তাদের ব্যাধি আরও বাড়িয়ে দিয়েছেন এবং তাদের জন্যে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি রয়েছে যেহেতু তারা মিথ্যা বলতো।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ﴿١١﴾

১১. এবং যখন তাদেরকে বলা হয়ঃ তোমরা পৃথিবীতে অশান্তি সৃষ্টি করো না তখন তারা বলে আমরা তো শুধু সংশোধনকারী।

أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَٰكِن لَّا يَشْعُرُونَ ﴿١٢﴾

১২. সাবধান! তারাই অশান্তি সৃষ্টিকারী; কিন্তু তারা বুঝে না।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ كَمَا آمَنَ السُّفَهَاءُ ۗ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَٰكِن لَّا يَعْلَمُونَ ﴿١٣﴾

১৩. এবং যখন তাদেরকে বলা হয়, লোকেরা যেরূপ ঈমান এনেছে তোমরাও অনুরূপ ঈমান আন; তখন তারা বলেঃ নির্বোধেরা যেরূপ ঈমান এনেছে আমরাও কি সেরূপ ঈমান আনবো? সাবধান! নিশ্চয়ই তারাই নির্বোধ কিন্তু তারা অবগত নয়।

وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ شَيَاطِينِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِئُونَ ﴿١٤﴾

১৪. এবং যখন তারা মু'মিনদের সাথে মিলিত হয় তখন তারা বলেঃ আমরা ঈমান এনেছি এবং যখন তারা নিজেদের দলপতি ও দুষ্ট নেতাদের সাথে নির্জনে মিলিত হয়, তখন বলেঃ আমরা তোমাদের সঙ্গেই আছি, আমরা তো শুধু ঠাট্টা-বিদ্রূপ করে থাকি।

اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١٥﴾

১৫. আল্লাহ তাদের সঙ্গে ঠাট্টা-বিদ্রূপ করছেন[১] এবং তাদেরকে তাদের নিজেদের অবাধ্যতার মধ্যে বিভ্রান্ত হয়ে ফিরার জন্য ঢিল দেন।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ فَمَا رَبِحَت تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٦﴾

১৬. এরা তারাই, যারা সুপথের পরিবর্তে বিপথকে ক্রয় করেছে, সুতরাং তাদের বাণিজ্য লাভজনক হয়নি এবং তারা সঠিক-সরল পথে পরিচালিত হয়নি।

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمَاتٍ لَّا يُبْصِرُونَ ﴿١٧﴾

১৭. এদের দৃষ্টান্ত ঐ ব্যক্তির দৃষ্টান্তের ন্যায় যে অগ্নি প্রজ্বলিত করলো, অতঃপর অগ্নি যখন তার পার্শ্ববর্তী সমস্ত স্থান আলোকিত করলো, তখন আল্লাহ তাদের আলো

১। অর্থাৎ তারা যেমন মুসলমানদের সাথে ঠাট্টা-বিদ্রূপের আচরণ করে আল্লাহ তায়ালাও তাদের সাথে অনুরূপ আচরণ করতঃ তাদেরকে অপমাণিত ও লাঞ্ছিত করেন। প্রকৃতপক্ষে আল্লাহর পক্ষ হতে এটি ঠাট্টা নয়; বরং তাদের ঠাট্টা-বিদ্রূপের শাস্তি ও প্রতিদান। (আহসানুল বয়ান)

ছিনিয়ে নিলেন এবং তাদেরকে অন্ধকারের মধ্যে ছেড়ে দিলেন, সুতরাং তারা কিছুই দেখতে পায় না।

صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿١٨﴾

১৮. তারা বধির, মূক ও অন্ধ অতএব তারা (সঠিক পথের দিকে) প্রত্যাবর্তন হবে না।

اَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعْدٌ وَّبَرْقٌ ۚ
يَجْعَلُوْنَ اَصَابِعَهُمْ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ
حَذَرَ الْمَوْتِ ؕ وَاللّٰهُ مُحِيْطٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩﴾

১৯. অথবা আকাশ হতে পানি বর্ষণের ন্যায় যাতে অন্ধকার, গর্জন ও বিদ্যুৎ রয়েছে, তারা বজ্রধ্বনি বশতঃ মৃত্যু ভয়ে তাদের কর্ণসমূহে স্ব-স্ব অঙ্গুলি গুঁজে দেয় এবং আল্লাহ অবিশ্বাসীদের পরিবেষ্টনকারী।

يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ ؕ كُلَّمَآ اَضَآءَ
لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ ۙ وَاِذَآ اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا ؕ
وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٠﴾

২০. যেন বিদ্যুৎ তাদের দৃষ্টি হরণ করে ফেলবে, যখন তিনি তাদের জন্য একটু আলো (বিদ্যুত) প্রজ্জ্বলিত করেন তখন, তাতে তারা চলতে থাকে এবং যখন তাদের উপর অন্ধকারাচ্ছন্ন করেন তখন তারা দাঁড়িয়ে থাকে এবং যদি আল্লাহ ইচ্ছা করেন নিশ্চয় তাদের শ্রবণ শক্তি ও তাদের দর্শন শক্তি হরণ করতে পারেন। নিশ্চয় আল্লাহ সর্ব বিষয়ের উপর শক্তিমান।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ
وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿٢١﴾

২১. হে মানব মন্ডলী! তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের ইবাদত কর যিনি তোমাদেরকে ও তোমাদের পূর্ববর্তীদেরকে সৃষ্টি করেছেন, যেন তোমরা ধর্মভীরু (পরহেজগার) হও।

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا وَّالسَّمَآءَ
بِنَآءً ۖ وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ

২২. যিনি তোমাদের জন্যে যমীনকে শয্যা ও আকাশকে ছাদ স্বরূপ করেছেন এবং যিনি আকাশ হতে পানি বর্ষণ করেন, অতঃপর তার দ্বারা

مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّ اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾

তোমাদের জন্যে উপজীবিকা স্বরূপ ফলপুঞ্জ উৎপাদন করেন, অতএব তোমরা জেনে শুনে আল্লাহর সাথে কাউকে শরীক করো না।[১]

وَاِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ ۠ وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. এবং আমি আমার বান্দার প্রতি যা অবতীর্ণ করেছি, তাতে তোমরা যদি সন্দিহান হও তবে তৎ সদৃশ একটি 'সূরা' তৈরি করে নিয়ে এসো এবং আল্লাহ্ ব্যতীত তোমাদের সাহায্যকারীদেরকেও ডেকে নাও; যদি তোমরা সত্যবাদী হও।

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۖ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٤﴾

২৪. অনন্তর যদি তোমরা তা করতে না পার এবং তোমরা তা কখনও করতে পারবে না, তা হলে তোমরা সেই জাহান্নামকে ভয় কর যার ইন্ধন মানুষ ও প্রস্তরপুঞ্জ যা অবিশ্বাসীদের জন্যে প্রস্তুত করে রাখা হয়েছে।

وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِيْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۙ وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ وَلَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙ وَّهُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥﴾

২৫. আর যারা বিশ্বাস স্থাপন করেছে ও সৎকার্যাবলী সম্পাদন করে থাকে, তাদেরকে সুসংবাদ প্রদান কর যে, তাদের জন্যে এমন বেহেশ্‌ত রয়েছে যার তলদেশ দিয়ে নদীসমূহ প্রবাহিত হতে থাকবে; যখন তা হ'তে তাদেরকে উপজীবিকার জন্যে ফলপুঞ্জ প্রদান করা হবে তখন তারা বলবে— আমাদের এটা তো পূর্বেই

১। আবূ ওয়ায়েল থেকে বর্ণিত, তিনি আমর বিন সুরাহবিল থেকে এবং তিনি আব্দুল্লাহ্ বিন মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণনা করেন। তিনি বলেন যে, আমি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে জিজ্ঞেস করেছিলাম যে, আল্লাহ্‌র নিকট সবচেয়ে বড় গোনাহ কোন্‌টি? তিনি বললেন যে, তুমি আল্লাহ্‌র সাথে কাউকে শরীক কর, অথচ তিনি তোমাকে সৃষ্টি করেছেন। আমি বললাম নিশ্চয়ই এটি একটি বড় গোনাহ্। এরপর কোন্‌টি? তিনি বললেনঃ তোমার সাথে আহার গ্রহণ করবে এই ভয়ে তোমার সন্তানকে হত্যা করা। আমি বললাম এর পর কোন্‌টি? তিনি বললেনঃ তোমার প্রতিবেশীর স্ত্রীর সাথে জ্বিনা (ব্যভিচার) করা। (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৭৭)

প্রদত্ত হয়েছিল এবং তাদেরকে এর দ্বারা ওর সদৃশ প্রদান করা হবে এবং তাদের জন্যে তন্মধ্যে পবিত্র সহধর্মিনীগণ থাকবে এবং সেখানে তারা চিরকাল অবস্থান করবে।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيِۦٓ أَن يَضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوضَةً فَمَا فَوْقَهَا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ ءَامَنُوا۟ فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ ٱلْحَقُّ مِن رَّبِّهِمْ ۖ وَأَمَّا ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ فَيَقُولُونَ مَاذَآ أَرَادَ ٱللَّهُ بِهَٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ بِهِۦ كَثِيرًا وَيَهْدِى بِهِۦ كَثِيرًا ۚ وَمَا يُضِلُّ بِهِۦٓ إِلَّا ٱلْفَٰسِقِينَ ﴿٢٦﴾

২৬. নিশ্চয় আল্লাহ মশা অথবা তদপেক্ষা ক্ষুদ্রতর দৃষ্টান্ত বর্ণনা করতে লজ্জাবোধ করেন না, সুতরাং যারা ঈমান এনেছে তারা তো বিশ্বাস করবে যে, এ উপমা তাদের প্রভুর পক্ষ হতে খুবই স্থানোপযোগী হয়েছেঃ আর যারা কাফির হয়েছে, সর্বাবস্থায় তারা এটাই বলবে এসব নগণ্য বস্তুর উপমা দ্বারা আল্লাহর উদ্দেশ্যই বা কি? তিনি এর দ্বারা অনেককে বিপথগামী করে থাকেন এবং এর দ্বারা অনেককে সঠিক পথ প্রদর্শন করেন, আর এর দ্বারা তিনি শুধু ফাসিকদেরকেই (পাপীষ্ট, অনাচারী) বিপথগামী করে থাকেন।

ٱلَّذِينَ يَنقُضُونَ عَهْدَ ٱللَّهِ مِنۢ بَعْدِ مِيثَٰقِهِۦ ۠ وَيَقْطَعُونَ مَآ أَمَرَ ٱللَّهُ بِهِۦٓ أَن يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِى ٱلْأَرْضِ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْخَٰسِرُونَ ﴿٢٧﴾

২৭. যারা আল্লাহর সঙ্গে দৃঢ়ভাবে প্রতিজ্ঞাবদ্ধ হওয়ার পর তা ভঙ্গ করে এবং ঐসব সম্বন্ধ ছিন্ন করে যা অবিচ্ছিন্ন রাখতে আল্লাহ নির্দেশ দিয়েছেন এবং যারা ভূপৃষ্ঠে বিবাদ সৃষ্টি করে, তারাই পূর্ণ ক্ষতিগ্রস্ত।[১]

كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِٱللَّهِ وَكُنتُمْ أَمْوَٰتًا فَأَحْيَٰكُمْ ۚ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٨﴾

২৮. কিরূপে তোমরা আল্লাহকে অবিশ্বাস করছো? অথচ তোমরা নির্জীব ছিলে, পরে তিনিই তোমাদেরকে সঞ্জীবিত করেছেন,

১। ইবনে সিহাব থেকে বর্ণিত, তিনি মুহাম্মাদ বিন জুবাইর বিন মুতয়িম থেকে বর্ণনা করেন, জুবাইর বিন মুতয়িম তাকে জানিয়েছেন যে, নিশ্চয়ই তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছে যে আত্মীয়তার সম্পর্ক ছিন্নকারী জান্নাতে প্রবেশ করবেনা। (বুখারী, হাদীস নং ৫৯৮৪)

পুনরায় তিনি তোমাদেরকে নির্জীব করবেন, পরে আবার জীবন্ত করবেন, অবশেষে তোমাদেরকে তাঁরই দিকে প্রতিগমন করতে হবে।

هُوَ الَّذِىْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۗ ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ فَسَوّٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٩﴾

২৯. তিনি তোমাদের জন্যে পৃথিবীতে যা কিছু আছে– সমস্তই সৃষ্টি করেছেন; অতঃপর তিনি আকাশের প্রতি মনঃসংযোগ করেন, অতঃপর সপ্ত আকাশ সুবিন্যস্ত করেন এবং তিনি সর্ব বিষয়ে মহাজ্ঞানী।

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّىْ جَاعِلٌ فِى الْاَرْضِ خَلِيْفَةً ؕ قَالُوْٓا اَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَآءَ ۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ؕ قَالَ اِنِّىْٓ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٠﴾

৩০. এবং যখন তোমার রব ফেরেশতাগণকে বললেনঃ নিশ্চয় আমি পৃথিবীতে প্রতিনিধি সৃষ্টি করবো, তারা বললোঃ আপনি কি যমীনে এমন কাউকে সৃষ্টি করবেন যে, তারা সেখানে বিবাদ সৃষ্টি করবে এবং রক্তপাত করবে? আর আমরাই তো আপনার প্রশংসা গুণগান করছি এবং আপনারই পবিত্রতা বর্ণনা করে থাকি। তিনি বললেনঃ নিশ্চয় আমি যা পরিজ্ঞাত আছি তা তোমরা অবগত নও।

وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ ۙ فَقَالَ اَنْۢبِئُوْنِىْ بِاَسْمَآءِ هٰٓؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣١﴾

৩১. এবং তিনি আদমকে সমস্ত নাম শিক্ষা দিলেন,[১] অনন্তর তৎসমুদয় ফেরেশতাদের সামনে উপস্থাপিত করলেন; তৎপর বললেনঃ যদি তোমরা সত্যবাদী হও, তবে আমাকে এসব বস্তুর নামসমূহ জানাও।

১। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন। নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ ঈমানদারগণ কিয়ামতের দিন একত্রিত (সমবেত) হয়ে বলবেঃ আমরা আমাদের রবের কাছে কাউকে সুপারিশকারী নিয়োগ করছি না কেন? তাই তারা আদম (আলাইহিস্‌সাল্লাম)-এর কাছে গিয়ে বলবে, আপনি সমগ্র মানব জাতির পিতা, আল্লাহ্ পাক আপনাকে নিজ হাতে সৃষ্টি করেছেন এবং তাঁর ফেরেশ্‌তা দিয়ে আপনাকে সিজদা করিয়েছেন আর সব কিছু জিনিসের নাম

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٣٢﴾

৩২. তারা বলেছিল— আপনি পরম পবিত্র; আপনি আমাদেরকে যা শিক্ষা দিয়েছেন তদ্ব্যতীত আমাদের কোনই জ্ঞান নেই; নিশ্চয়ই আপনি মহাজ্ঞানী, প্রজ্ঞাময়।

আপনাকে শিখিয়েছেন। এ মসিবত থেকে রক্ষা পেয়ে যাতে আমরা শান্তি লাভ করতে পারি সেজন্য আপনি আপনার রবের কাছে আমাদের জন্য শাফায়াত করুন। তিনি বলবেনঃ আমি তোমাদের এ কাজের উপযুক্ত নই। তিনি তাঁর গোনাহের কথা স্মরণ করে লজ্জিত হবেন এবং বলবেনঃ তোমরা নূহের (আলাইহিস্‌সাল্লাম) কাছে যাও। কারণ আল্লাহ্ পাক তাঁকে পৃথিবীবাসীর জন্য সর্বপ্রথম রাসূল হিসেবে পাঠিয়েছিলেন। তাই ঈমানদারগণ তাঁর (নূহ আলাইহিস্‌সাল্লাম)-এর কাছে আসলে তিনি বলবেন, আমি তোমাদের এ কাজের উপযুক্ত নই। তিনি আল্লাহ্‌র কাছে তাঁর সেই প্রার্থনার কথা স্মরণ করে লজ্জাবোধ করবেন, যে প্রার্থনা করার বিষয়ে তাঁর কোন জ্ঞান ছিল না। তাই তিনি বলবেন তোমরা বরং হযরত ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সাল্লাম)-এর কাছে যাও। সবাই তখন তাঁর নিকটে আসবেন। তিনিও বলবেন, আমি তোমাদের এ কাজের উপযুক্ত নই। তোমরা বরং মূসা (আঃ)-এর কাছে যাও কারণ তিনি আল্লাহ্‌র এমন এক বান্দা, যার সঙ্গে আল্লাহ্ পাক কথা বলেছেন এবং তাঁকে তাওরাত কিতাব দান করেছিলেন। অতঃপর সবাই তাঁর (হযরত মূসা আলাইহিস্‌সাল্লাম)-এর কাছে উপস্থিত হলে তিনিও তার অপারগতার কথা জানিয়ে বলবেন যে, আমি তোমাদের এ কাজের উপযুক্ত নই। তিনি এক ব্যক্তিকে অন্যায়ভাবে হত্যা করার কারণে (শাফায়াতের জন্য) তার রবের সামনে যেতে লজ্জাবোধ করবেন। তিনি বলবেন, তোমরা বরং আল্লাহ্‌র বান্দা ও তাঁর রাসূল এবং আল্লাহ্‌র কালিমা ও রূহ ঈসার (আঃ) কাছে যাও। তিনিও তার অপারগতার কথা জানিয়ে বলবেন, আমি তোমাদের এ কাজের উপযুক্ত নই। তোমরা বরং মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর কাছে যাও। তিনি আল্লাহ্‌র এমন সম্মানিত বান্দা, আল্লাহ্ পাক যার আগের ও পরের সমস্ত গোনাহ্ মাফ করে দিয়েছেন। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেন তখন সবাই আমার কাছে আসবে। আমি আমার রবের কাছে হাজির হওয়ার অনুমতি প্রার্থনা করবো। আমাকে অনুমতি দেয়া হবে। আমি আমার রবকে দেখামাত্র সিজদায় পড়ে যাবো। যতক্ষণ তিনি চাইবেন ততক্ষণ আমি সিজদার অবস্থায় থাকবো। অতঃপর আমাকে বলা হবে, আপনি মাথা উঠান আপনি প্রার্থনা করুন। যা প্রার্থনা করবেন, তা দেয়া হবে। আর যা বলতে চান বলুন, শুনা হবে। আর শাফায়াত করুন। আপনার শাফায়াত গ্রহণ করা হবে। তখন আমি মাথা উঠাবো এবং এমনভাবে আল্লাহ্‌র প্রশংসা করবো, যেভাবে আমাকে তিনি শিখিয়ে দিবেন। তার পর শাফায়াত করবো। শাফায়াত ব্যাপারে আমাকে একটি সীমা নির্দিষ্ট করে দেয়া হবে। (যারা সীমার মধ্যে পড়ে) তাদের সবাইকে জান্নাতে পৌছিয়ে আমি ফিরে আসবো। আমি আমার রবকে দেখামাত্র পূর্বের মত সিজদায় পড়ে যাবো। এবার পূর্ণবার আমাকে একটি সীমা নির্দিষ্ট করে দেয়া হবে। ঐ সীমার মধ্যে পড়ে এমন সবার জন্য আমি শাফায়াত করবো এবং তাদেরকে জান্নাতে পৌছিয়ে দেবো। এভাবে তৃতীয়বারও করবো। তারপর চতুর্থবারও ফিরে এসে বলবো। কুরআন যাদেরকে আটকিয়ে রেখেছে এবং যাদের জন্য স্থায়ীভাবে জাহান্নাম নির্ধারিত, এখন শুধু তারা ছাড়া আর কেউ দোযখে নেই। (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৭৬)

আবূ আব্দুল্লাহ্ (ইমাম বুখারী) বলেনঃ কুরআন যাদেরকে আটকিয়ে রেখেছে (তারা ছাড়া আর কেউ দোযখে নেই) এ কথার অর্থ হল আল্লাহ্‌র বাণীঃ (خالدين فيها) "তারা স্থায়ীভাবে জাহান্নামে শাস্তি ভোগ করবে।" (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৭৬)

قَالَ يٰٓاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۚ فَلَمَّآ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۙ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۙ وَاَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿٣٣﴾

৩৩. তিনি বলেছিলেন হে আদম, তুমি তাদেরকে ঐ সকলের নামসমূহ জানিয়ে দাও; অতঃপর যখন সে তাদেরকে ঐগুলোর নামসমূহ জানিয়ে দিল, তখন তিনি বলেছিলেনঃ আমি কি তোমাদেরকে বলিনি যে, নিশ্চয় আমি ভূমন্ডল ও নভোমন্ডলের অদৃশ্য বিষয় অবগত আছি এবং তোমরা যা প্রকাশ কর ও যা গোপন কর আমি তাও পরিজ্ঞাত আছি।

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى وَاسْتَكْبَرَ ۫ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٤﴾

৩৪. এবং যখন আমি ফেরেশতা-গণকে বলেছিলাম যে, তোমরা আদমকে সিজদা কর, তখন ইবলিস ব্যতীত সকলে সিজদা করেছিল; সে আগ্রাহ্য করলো ও অহংকার করলো এবং কাফিরদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে গেল।

وَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا ۪ وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣٥﴾

৩৫. এবং আমি বললাম হে আদম! তুমি ও তোমার সহধর্মিণী জান্নাতে অবস্থান কর এবং তা হতে যা ইচ্ছা স্বচ্ছন্দে ভক্ষণ কর; কিন্তু ঐ বৃক্ষের নিকটবর্তী হয়ো না– অন্যথা তোমরা অত্যাচারীগণের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাবে।

فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيْهِ ۫ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٣٦﴾

৩৬. অনন্তর শয়তান তাদের উভয়কে সেখান থেকে পদস্খলিত করলো, তৎপরে তারা যেখানে ছিল তথা হতে তাদেরকে বহির্গত করলো; এবং আমি বললাম– তোমরা নীচে নেমে যাও, তোমরা পরস্পর পরস্পরের শত্রু; এবং পৃথিবীতেই তোমাদের জন্যে এক নির্দিষ্টকালের অবস্থিতি ও ভোগ-সম্পদ রয়েছে।

فَتَلَقّٰٓى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿٣٧﴾

৩৭. অনন্তর আদম স্বীয় প্রতিপালক হতে কতিপয় বাক্য শিক্ষা করলেন, আল্লাহ্ তখন তাঁর তাওবা কবূল করে তাঁকে ক্ষমা করলেন। নিশ্চয় তিনি ক্ষমাশীল, করুণাময়।

قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّىْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَاىَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٨﴾

৩৮. আমি বললামঃ তোমরা সবাই এখান (জান্নাত) হতে নিচে নেমে যাও; অনন্তর আমার পক্ষ হতে তোমাদের নিকট যে হেদায়েত উপস্থিত হবে পরে যে আমার সেই হেদায়েতের অনুসরণ করবে বস্তুতঃ তাদের কোনই ভয় নেই এবং তারা চিন্তিত হবে না।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٩﴾

৩৯. আর যারা অবিশ্বাস করবে ও আমার নিদর্শনসমূহে মিথ্যারোপ করবে তারাই জাহান্নামের অধিবাসী, সেখানে তারা সদা অবস্থান করবে।

يٰبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِىَ الَّتِىْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِىْٓ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْ ۚ وَاِيَّاىَ فَارْهَبُوْنِ ﴿٤٠﴾

৪০. হে ইসরাঈল বংশধর, আমি তোমাদেরকে যে নেয়ামত দান করেছি তা স্মরণ কর এবং আমার অঙ্গীকার পূর্ণ কর, আমিও তোমাদের অঙ্গীকার পূর্ণ করবো এবং তোমরা শুধু আমাকেই ভয় কর।

وَاٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْٓا اَوَّلَ كَافِرٍ بِهٖ ۖ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِىْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ز وَّاِيَّاىَ فَاتَّقُوْنِ ﴿٤١﴾

৪১. এবং আমি যা অবতীর্ণ করেছি তৎপ্রতি বিশ্বাস স্থাপন কর, তোমাদের সাথে যা আছে তা তারই সত্যতা প্রমাণকারী এবং এতে তোমরাই প্রথম অবিশ্বাসী হয়ো না এবং আমার আয়াতসমূহের পরিবর্তে সামান্য মূল্য গ্রহণ করো না এবং তোমরা বরং আমাকেই ভয় কর।

وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ

৪২. আর তোমরা সত্যকে মিথ্যার সাথে মিশ্রিত করো না এবং সে সত্য

وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٢﴾

গোপন করো না যেহেতু তোমরা তা অবগত আছ।[১]

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾

৪৩. আর তোমরা নামায প্রতিষ্ঠিত কর ও যাকাত প্রদান কর এবং রুকূ'কারীদের সাথে রুকূ' কর।

اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٤٤﴾

৪৪. তবে কি তোমরা লোকদেরকে সৎকার্যে আদেশ করছো এবং তোমাদের নিজেদের ভুলে যাচ্ছ– অথচ তোমরা গ্রন্থ পাঠ কর; তবে কি তোমরা হৃদয়ঙ্গম করছো না?[২]

وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ؕ وَاِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ ﴿٤٥﴾

৪৫. এবং তোমরা ধৈর্য ও নামাযের মাধ্যমে সাহায্য প্রার্থনা কর এবং অবশ্যই তা' কঠিন; কিন্তু বিনীতগণের পক্ষে নয়।

১। আতা ইবনে ইয়াসার (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেছেনঃ আমি আব্দুল্লাহ্ ইবনে আমর ইবনে আ'স (রাযিআল্লাহু আনহু)-এর সাথে সাক্ষাত করে তাঁকে বললামঃ তাওরাতে বর্ণিত রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর কিছু বৈশিষ্ট্যের কথা আমাকে অবহিত করুন। তিনি বললেন হ্যাঁ ঠিক কথা, আল্লাহ্‌র কসম! তাওরাতে তাঁর এমন কিছু বৈশিষ্ট্য ও গুণাবলী উল্লেখ রয়েছে যা কুরআনে বর্ণিত হয়েছে। "হে নবী! আমি তো তোমাকে পাঠিয়েছি সাক্ষীরূপে এবং সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারী রূপে।" (সূরাঃ আল-আহ্‌যাবঃ ৪৫) এবং অশিক্ষিতদের রক্ষাকারী হিসাবে প্রেরণ করেছি। তুমি আমার বান্দা এবং রাসূল। আমি তোমার নাম রেখেছি মুতাওয়াক্কিল বা ভরসাকারী, তিনি কঠিন হৃদয়ের অধিকারী নন, দুশ্চরিত্র এবং বাজারে সোরগোল সৃষ্টিকারী নন, এবং তিনি কোন মন্দ দ্বারা মন্দকে প্রতিহতকারী নন। বরং তিনি ক্ষমা এবং মাফকারী এবং ততক্ষণ পর্যন্ত আল্লাহ্ তাঁকে দুনিয়া থেকে উঠিয়ে নিবেন না যতদিন না ভ্রান্ত সমাজ সঠিক পথের দিশা পাবে। অর্থাৎ সমাজবাসী লা-ই-লাহা ইল্লাল্লাহর সাক্ষী দিবে এবং এর দ্বারা অন্ধের চোখ, বধিরের কান ও বদ্ধ অন্তর খুলবে। (বুখারী, হাদীস নং ২১২৫)

২। সুলাইমান থেকে বর্ণিত তিনি বলেন, আমি আবু ওয়েলকে বলতে শুনেছি। ওসামা (রাযিআল্লাহু আনহু)-কে বলা হল যে, আপনি তাঁকে (ওসমান) (রাযিআল্লাহু আনহু)-কে কিছু বলছেন না কেন? তিনি বললেন আমি তাঁকে গোপনে ব্যক্তিগতভাবে বলেছি। আর তা এজন্যই যে, আমি চাই না যে, তাঁর অনুপস্থিতিতে তাঁর বদনাম রটিয়ে সর্বপ্রথম আমি ফেতনা-ফ্যাসাদের দরজা খুলি। এবং আমি এটাও চাই না যে, যখন দুইজনের মধ্যে একজন আমীর নিযুক্ত হয় তখন তাঁকে সন্তুষ্ট করানোর জন্য বলব যে তুমি ভাল। কেননা আমি যখন থেকে রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি যে, কিয়ামতের দিন এক ব্যক্তিকে আনা হবে, অতঃপর তাকে জাহান্নামে নিক্ষেপ করা হবে, এবং গাধা চক্রাকারে ঘুরে যেমন গম পিষে তেমনি তাকে দোযখে পিষ্ট করা হবে। (শাস্তি দেওয়া হবে) এবং জাহান্নামবাসীরা চতুর্পাশে সমবেত হয়ে জিজ্ঞেস করবে হে ওমুক ব্যক্তি তুমি কি আমাদেরকে পৃথিবীতে সৎকাজের আদেশ এবং অসৎ কাজের নিষেধ করতে না? সে বলবে আমি তোমাদেরকে সৎকাজের আদেশ দিতাম, অথচ নিজে তা, করতাম না এবং অসৎ কাজ থেকে নিষেধ করতাম কিন্তু নিজে তা, করতাম। (বুখারী, হাদীস নং ৭০৯৮)

الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَاَنَّهُمْ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿٤٦﴾

৪৬. যারা ধারণা করে যে, নিশ্চয় তারা তাদের প্রতিপালকের সাথে সম্মিলিত হবে এবং তারা তাঁরই দিকে প্রতিগমন করবে।

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٧﴾

৪৭. হে বানী ইসরাঈল! আমি তোমাদেরকে যে নেয়ামত দান করেছি তা স্মরণ কর এবং নিশ্চয় আমি তোমাদেরকে সমগ্র পৃথিবীর উপর শ্রেষ্ঠত্ব দান করেছি।

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤٨﴾

৪৮. এবং তোমরা সে দিবসকে ভয় কর, যেদিন কোন ব্যক্তি অন্য ব্যক্তি হতে কিছুমাত্র উপকৃত হবে না এবং কোন ব্যক্তি হতে কোন সুপারিশও গৃহীত হবে না, কোন ব্যক্তি হতে কোন বিনিময়ও গ্রহণ করা হবে না এবং তাদেরকে সাহায্য করাও হবে না।

وَاِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿٤٩﴾

৪৯. এবং যখন আমি তোমাদেরকে ফির'আউনের সম্প্রদায় হতে বিমুক্ত করেছিলাম– তারা তোমাদেরকে কঠোর শাস্তি প্রদান করতো, তোমাদের পুত্রগণকে হত্যা করতো ও তোমাদের কন্যাগণকে জীবিত রাখতো এবং এতে তোমাদের প্রতিপালক হতে তোমাদের জন্যে মহাপরীক্ষা ছিল।

وَاِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿٥٠﴾

৫০. এবং যখন আমি তোমাদের জন্য সমুদ্রকে বিভক্ত করেছিলাম, তৎপর তোমাদেরকে উদ্ধার করে-ছিলাম ও ফির'আউনের স্বজনবৃন্দকে নিমজ্জিত করেছিলাম এমতাবস্থায় তোমরা তা প্রত্যক্ষ করছিলে।

وَاِذْ وٰعَدْنَا مُوْسٰٓى اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ

৫১. এবং যখন আমি মূসার সঙ্গে চল্লিশ রজনীর অঙ্গীকার করেছিলাম, অনন্তর

الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿٥١﴾

তার পরে তোমরা গো-বৎসকে (মা'বূদ হিসেবে) গ্রহণ করেছিলে এবং তোমরা অত্যাচারী ছিলে।

ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٥٢﴾

৫২. তা সত্ত্বেও আমি তোমাদেরকে মার্জনা করেছিলাম– যেন তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

وَاِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿٥٣﴾

৫৩. আর যখন আমি মূসাকে গ্রন্থ ও ফুরকান (প্রভেদকারী) দিয়েছিলাম, যেন তোমরা সুপথ প্রাপ্ত হও।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْٓا اِلٰى بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ ؕ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٤﴾

৫৪. আর যখন মূসা (عليه السلام) স্বীয় সম্প্রদায়কে বললেনঃ হে আমার সম্প্রদায়! নিশ্চয় তোমরা গো-বৎসকে (ইবাদতের জন্যে) গ্রহণ করে তোমাদের নিজেদের প্রতি অত্যাচার করেছো; অতএব তোমরা তোমাদের সৃষ্টিকর্তার নিকট ক্ষমা প্রার্থনা কর, আর তোমরা পরস্পরকে হত্যা কর তোমাদের সৃষ্টিকর্তার নিকট এটাই তোমাদের জন্য কল্যাণকর; অনন্তর তিনি তোমাদের প্রতি ক্ষমা দান করেছিলেন, নিশ্চয় তিনি ক্ষমাশীল, করুণাময়।

وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿٥٥﴾

৫৫. এবং যখন তোমরা বলেছিলেঃ হে মূসা! আমরা আল্লাহকে প্রকাশ্যভাবে দর্শন না করা পর্যন্ত তোমাকে বিশ্বাস করবো না– তখন বিদ্যুৎ (বজ্র) তোমাদেরকে আক্রমণ করেছিল ও তোমরা তা প্রত্যক্ষ করেছিলে।

ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٥٦﴾

৫৬. তৎপর তোমাদের মৃত্যুর পর আমি তোমাদেরকে সঞ্জীবিত করেছিলাম, যেন তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٥٧﴾

৫৭. এবং আমি তোমাদের উপর মেঘমালার ছায়া দান করেছিলাম এবং তোমাদের প্রতি 'মান্না'[১] ও 'সালওয়া' অবতীর্ণ করেছিলাম; আমি তোমাদের যে উপজীবিকা দান করেছি সে পবিত্র জিনিস হতে ভক্ষণ কর; এবং তারা আমার কোন অনিষ্ট করেনি, বরং তারা নিজেদেরই অনিষ্ট করেছিল।

وَاِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَسَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٨﴾

৫৮. এবং যখন আমি বললামঃ তোমরা এ নগরে প্রবেশ কর, অতঃপর তা হতে ইচ্ছামত ভক্ষণ কর এবং নতশিরে দ্বারে প্রবেশ কর ও তোমরা বলঃ আমরা ক্ষমা প্রার্থনা করছি, তাহলে আমি তোমাদের অপরাধসমূহ ক্ষমা করবো এবং অচিরেই সৎকর্মশীলগণকে অধিকতর দান করবো।

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٥٩﴾ ع

৫৯. অনন্তর যারা অত্যাচার করেছিল— তাদেরকে যা বলা হয়েছিল, তৎপরিবর্তে তারা সে কথার পরিবর্তন করলো, পরে অত্যাচারীরা যে দুষ্কার্য করেছিল, তজ্জন্যে আমি তাদের উপর আকাশ হতে শাস্তি অবতীর্ণ করেছিলাম।[২]

১। সাঈদ বিন যায়েদ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ ব্যাঙের ছাতা, 'মান্না' (একপ্রকার খাদ্য যা আল্লাহ্ বনী ইসরাঈলের জন্য আকাশ থেকে প্রত্যহ অবতীর্ণ করতেন) এবং এর পানি চোখের আরোগ্য। (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৭৮)

২। আমের বিন সা'দ বিন আবি ওয়াক্কাস সে তার পিতা থেকে বর্ণনা করেন যে, নিশ্চয়ই সে তার পিতাকে ওসামা বিন যায়েদকে জিজ্ঞেস করতে শুনেছেন যে, আপনি তাউন (প্লেগ মহামারী) সম্পর্কে রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট থেকে কি কিছু শুনেছন? ওসামা বললেনঃ রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলছেনঃ প্লেগ মহামারী এক প্রকার আসমানী গজব যা সর্ব প্রথম বনি ইসরাঈলের এক গ্রুপের উপর আপতিত হয়েছিল। অথবা যারা তোমাদের পূর্বে ছিল তাদের উপর আপতিত হয়েছিল। যখন শুনবে যে কোন এলাকায় এ রোগ দেখা দিয়েছে, তখন তোমরা সেখানে যেও না। আর যদি এমন জায়গায় ছড়িয়ে পড়ে যেখানে তোমরা অবস্থান করছ, তাহলে পালানোর উদ্দেশ্যে সেখান থেকে অন্য

وَاِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ
الْحَجَرَ ؕ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ
عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ
رِّزْقِ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٦٠﴾

৬০. এবং যখন মূসা (عليه السلام) স্বীয় সম্প্রদায়ের জন্যে পানি প্রার্থনা করেছিলেন তখন আমি বলেছিলাম তুমি স্বীয় লাঠি দ্বারা প্রস্তরে আঘাত কর; অনন্তর তা হতে বারটি ঝর্ণা প্রবাহিত হলো; প্রত্যেকেই স্ব-স্ব ঘাট জেনে নিল; তোমরা আল্লাহর উপজীবিকা হতে ভক্ষণ কর ও পান কর এবং পৃথিবীতে শান্তি ভঙ্গকারী রূপে বিচরণ করো না।

وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ
فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ
بَقْلِهَا وَقِثَّآئِهَا وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ؕ قَالَ
اَتَسْتَبْدِلُوْنَ الَّذِىْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِىْ هُوَ خَيْرٌ ؕ
اِهْبِطُوْا مِصْرًا فَاِنَّ لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْ ؕ وَضُرِبَتْ
عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ ۗ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ
اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا
وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٦١﴾ ع

৬১. এবং যখন তোমরা বলেছিলেঃ হে মূসা, আমরা একইরূপ খাদ্যে ধৈর্যধারণ করতে পারি না, অতএব তুমি আমাদের জন্যে তোমার প্রভুর নিকট প্রার্থনা কর— যেন তিনি আমাদের জন্মভূমিতে যা উৎপন্ন হয়, তা হতে শাক-সব্জি, কাঁকুড়, গম, মসুর এবং পেঁয়াজ উৎপাদন করেন; সে বলেছিলঃ যা উৎকৃষ্ট তোমরা কি তার সঙ্গে যা নিকৃষ্ট তার বিনিময় করতে চাও? কোন নগরে উপনীত হও প্রার্থিত দ্রব্যগুলো অবশ্যই প্রাপ্ত হবে এবং তাদের উপর লাঞ্ছনা ও দারিদ্র নিপতিত হলো এবং তারা আল্লাহর ক্রোধে পতিত হলো এহেতু যে, নিশ্চয় তারা আল্লাহর নিদর্শনসমূহ অস্বীকার করতো ও অন্যায়ভাবে নবীগণকে হত্যা করতো; এবং এ কারণেও যে, তারা অবাধ্যাচরণ করেছিল ও সীমা অতিক্রম করেছিল।

কোথাও চলে যেও না। আবূ নজর বলেনঃ এর অর্থ হল— পালিয়ে যাওয়ার উদ্দেশ্যে যেন সে এলাকা ত্যাগ না করে। (অন্য কোন প্রয়োজনে যেতে কোন বাধা নেই।) ওখান থেকে বের হইও না। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৭৩)

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالنَّصَارَىٰ وَالصَّابِئِينَ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾

৬২. নিশ্চয় মুসলমান, ইয়াহুদী, খ্রিস্টান এবং সাবেঈন সম্প্রদায়, (এদের মধ্যে) যারা আল্লাহ্‌র প্রতি ও কিয়ামতের প্রতি বিশ্বাস রাখে এবং ভাল কাজ করে, তাদের জন্যে তাদের প্রভুর নিকট পুরস্কার রয়েছে, তাদের কোন প্রকার ভয় নেই এবং তারা চিন্তিতও হবে না।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾

৬৩. এবং যখন আমি তোমাদের অঙ্গীকার গ্রহণ করেছিলাম এবং তোমাদের উপর তূর পর্বত সমুচ্চ করেছিলাম যে, আমি তোমাদেরকে যা দিয়েছি (কিতাব) তা দৃঢ়রূপে ধারণ কর এবং এতে যা আছে তা স্মরণ কর— যাতে তোমরা নিষ্কৃতি পেতে পারে।

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٦٤﴾

৬৪. এরপর পুনরায় তোমরা ফিরে গেলে, অতএব যদি তোমাদের প্রতি আল্লাহর অনুগ্রহ এবং তাঁর করুণা না থাকতো, তবে অবশ্য তোমরা বিনাশ প্রাপ্ত হতে।

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿٦٥﴾

৬৫. এবং অবশ্যই তোমরা অবগত আছ যে, তোমাদের মধ্যে যারা শনিবারের সীমা লংঘন করেছিল, আমি তাদেরকে বলেছিলাম যে, তোমরা ঘৃণিত বানর হয়ে যাও।

فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِلْمُتَّقِينَ ﴿٦٦﴾

৬৬. অনন্তর আমি এটা তাদের সমসাময়িক ও তাদের পরবর্তীদের জন্যে শিক্ষা এবং আল্লাহ্ ভীরুগণের জন্যে উপদেশ স্বরূপ করেছিলাম।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوا بَقَرَةً قَالُوا أَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا

৬৭. এবং যখন মূসা (عليه السلام) নিজ সম্প্রদায়কে বলেছিলেনঃ নিশ্চয় আল্লাহ, তোমাদেরকে আদেশ

قَالَ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٦٧﴾

করছেন যে, তোমরা একটি গরু 'যবহ' কর, তারা বলেছিলঃ তুমি কি আমাদেরকে উপহাস করছ? তিনি বলেছিলেন, আমি আল্লাহর নিকট আশ্রয় প্রার্থনা করছি, যেন আমি মূর্খদের অন্তর্গত না হই।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَّلَا بِكْرٌ ؕ عَوَانٌۢ بَيْنَ ذٰلِكَ ؕ فَافْعَلُوْا مَا تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٨﴾

৬৮. তারা বলেছিলঃ তুমি আমাদের জন্যে তোমার প্রতিপালকের নিকট প্রার্থনা কর যে, তিনি আমাদেরকে যেন সেটা কি কি গুণ বিশিষ্ট হওয়া দরকার তা বলে দেন, তিনি বলেছিলেনঃ তিনি (আল্লাহ) বলেছেন যে, নিশ্চয় সেই গরু বয়োবৃদ্ধ নয় এবং শাবকও নয়—এ দুয়ের মধ্যবর্তী, অতএব তোমরা যেরূপ আদিষ্ট হয়েছো তা করে ফেল।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا لَوْنُهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ ۙ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النّٰظِرِيْنَ ﴿٦٩﴾

৬৯. তারা বলেছিলঃ তুমি আমাদের জন্যে তোমার প্রভুর নিকট প্রার্থনা কর যে, তিনি ওর বর্ণ কিরূপ তা আমাদেরকে বলে দেন; তিনি বলেছিলেনঃ আল্লাহ্ বলেছেন যে, নিশ্চয় গরুও বর্ণ গাঢ় পীত, ওটা দর্শকগণকে আনন্দ দান করে। (দৃষ্টি নন্দন)

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۙ اِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ عَلَيْنَا ؕ وَاِنَّآ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ ﴿٧٠﴾

৭০. তারা বলেছিলঃ তুমি আমাদের জন্যে তোমার প্রতিপালকের নিকট প্রার্থনা কর যে, তিনি যেন ওটা কিরূপ তা আমাদের জন্যে বর্ণনা করেন, কেননা আমাদের নিকট সকল গরুই একই ধরণের এবং আল্লাহ ইচ্ছা করলে আমরা সুপথগামী হবো।

قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا ذَلُوْلٌ تُثِيْرُ الْاَرْضَ وَلَا تَسْقِى الْحَرْثَ ۚ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيْهَا ؕ قَالُوا الْـٰٔنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ؕ فَذَبَحُوْهَا وَمَا كَادُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧١﴾

৭১. তিনি বললেনঃ নিশ্চয় তিনি বলেছেন যে, অবশ্যই সে গরু সুস্থকায়, নিষ্কলংক, ওটা কর্ম বা ভূ-কর্ষণের জন্যে লাগানো হয়নি এবং ক্ষেতে পানি সেচনেও নিযুক্ত হয়নি, তারা বলেছিল—এক্ষণে তুমি সত্য প্রকাশ করেছ, অতঃপর তারা ওটা যবাহ্ করলো যা তাদের করবার ইচ্ছা ছিল না।

وَاِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِيْهَا ؕ وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿٧٢﴾

৭২. এবং যখন তোমরা এক ব্যক্তিকে হত্যা করার পর তদ্বিষয়ে বিরোধ করেছিলে এবং তোমরা যা গোপন করেছিলে আল্লাহ তার প্রকাশকারী।

فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ؕ كَذٰلِكَ يُحْيِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى ۙ وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٣﴾

৭৩. তৎপর আমি বলেছিলামঃ ওর (গাভীর) কিছু অংশ দ্বারা তাকে (মৃতকে) আঘাত কর; এই রূপে আল্লাহ মৃতকে জীবিত করেন এবং স্বীয় নিদর্শনসমূহ প্রদর্শন করেন—যাতে তোমরা হৃদয়ঙ্গম কর।

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِىَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً ؕ وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ؕ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَآءُ ؕ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٤﴾

৭৪. অনন্তর এরপর তোমাদের হৃদয় প্রস্তরের ন্যায় কঠিন বরং তদপেক্ষা কঠিনতর হলো এবং নিশ্চয় প্রস্তর হতেও প্রস্রবণ নির্গত হয় এবং নিশ্চয় সেগুলোর মধ্যে কোন কোনটি বিদীর্ণ হয়, তৎপরে তা হতে পানি নির্গত হয় এবং নিশ্চয় ঐগুলোর মধ্যে কোনটি আল্লাহর ভয়ে পতিত হয়, এবং তোমরা যা করছো তৎপ্রতি আল্লাহ অমনোযোগী নন।

اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَهٗ

৭৫. তোমরা কি আশা কর যে, তোমাদের কথায় তারা ঈমান আনবে? অথচ তাদের মধ্যে এমন

مِنْۢ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾

কতক লোক গত হয়েছে যারা আল্লাহর কালাম শুনতো, অতঃপর তাকে বুঝার পর তাকে বিকৃত করতো, অথচ তারা জানতো।

وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوْٓا اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَآجُّوْكُمْ بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٦﴾

৭৬. আর যখন তারা মু'মিনদের সাথে মিলিত হয় তখন বলে—আমরা ঈমান এনেছি, আর যখন তাদের কেউ কারও (ইয়াহূদীদের) নিকট একাকী হয়, তখন তারা বলেঃ তোমরা কি মুসলমানদেরকে এমন কথা বলে দাও যা আল্লাহ তোমাদের নিকট প্রকাশ করেছেন? পরিণামে তারা তোমাদেরকে তোমাদের প্রতি-পালকের সম্মুখে তর্কে পরাজিত করবে। তোমরা কি বুঝ না?

اَوَلَا يَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٧﴾

৭৭. তারা কি জানেনা যে, তারা যা গুপ্ত রাখে এবং যা প্রকাশ করে আল্লাহ সবই জানেন?

وَمِنْهُمْ اُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ الْكِتٰبَ اِلَّآ اَمَانِيَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿٧٨﴾

৭৮. এবং তাদের মধ্যে অনেক অশিক্ষিত লোক আছে, যারা প্রবৃত্তি ব্যতীত কোন গ্রন্থ অবগত নয় এবং তারা শুধু কল্পনাসমূহ রচনা করে থাকে।

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ بِاَيْدِيْهِمْ ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ ﴿٧٩﴾

৭৯. তাদের জন্যে আফসোস! যারা স্বহস্তে পুস্তক রচনা করে এবং পার্থিব তুচ্ছ স্বার্থের জন্য বলে যেঃ এটা আল্লাহর নিকট হতে সমাগত—তাদের হস্ত যা লিপিবদ্ধ করেছে তজ্জন্যে তাদের প্রতি আক্ষেপ এবং তারা যা উপার্জন করছে তজ্জন্যে তাদের প্রতি আক্ষেপ!

وَقَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدَةً ؕ

৮০. এবং তারা বলেঃ নির্ধারিত দিবসসমূহ ব্যতীত (জাহান্নামের)

قُلْ اَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗٓ اَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٠﴾

অগ্নি আমাদেরকে স্পর্শ করবে না, তুমি বলঃ তোমরা কি আল্লাহর নিকট হতে অঙ্গীকার নিয়েছো, ফলে আল্লাহ কখনই স্বীয় অঙ্গীকারের অন্যথা করবেন না? অথবা আল্লাহ্ সম্বন্ধে যা জানো না তোমরা তাই বলছো?

بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَّاَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْٓـَٔتُهٗ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٨١﴾

৮১. হ্যাঁ, যে ব্যক্তি পাপ অর্জন করেছে এবং স্বীয় পাপের দ্বারা পরিবেষ্টিত হয়েছে, বস্তুতঃ তারাই জাহান্নামের অধিবাসী, তথায় তারা সদা অবস্থান করবে।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٨٢﴾

৮২. এবং যারা বিশ্বাস স্থাপন করেছে ও সৎকর্ম করেছে তারাই জান্নাতবাসী, তন্মধ্যে তারা চিরকাল অবস্থান করবে।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ ۖ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۭ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَاَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٨٣﴾

৮৩. আর যখন আমি বানী ইসরাঈল হতে অঙ্গীকার নিয়েছিলাম যে, তোমরা আল্লাহ ব্যতীত আর কারো ইবাদত করবে না। পিতা-মাতার সঙ্গে সদ্ব্যবহার করবে ও আত্মীয়দের, অনাথদের ও মিসকিনদের[১] সঙ্গেও (সদ্ব্যবহার করবে), আর তোমরা লোকের সাথে উত্তমভাবে কথা বলবে এবং নামায প্রতিষ্ঠিত করবে ও যাকাত প্রদান করবে; তৎপর তোমাদের মধ্য হতে অল্প সংখ্যক ব্যতীত তোমরা সকলেই বিমুখ হয়েছিলে, যেহেতু তোমরা অগ্রাহ্যকারী ছিলে।

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, নিশ্চয়ই রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি লোকের দুয়ারে দুয়ারে ঘুরে বেড়ায় এবং দু'এক লোকমা বা গ্রাস অথবা দু'একটি খেজুর পেয়ে ফিরে যায় সে প্রকৃত মিসকীন নয়; বরং প্রকৃত মিসকীন ঐ ব্যক্তি যার এমন সম্বল নেই যা তাকে অভাবমুক্ত রাখে। অথচ তার অবস্থাও কারো অজ্ঞাত নয় যে, তাকে কেউ কিছু দান করে এবং সেও লোকের নিকট গিয়ে মুখ খুলে কিছু চায় না। (বুখারী, হাদীস নং ১৪৭৯)

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ
وَلَا تُخْرِجُوْنَ اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ
اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿٨٤﴾

৮৪. এবং আমি যখন তোমাদের অঙ্গীকার গ্রহণ করছিলাম যে পরস্পর রক্তপাত করবে না এবং স্বীয় বাসস্থান হতে আপন ব্যক্তিদেরকে বহিষ্কৃত করবে না; তৎপরে তোমরা স্বীকৃতি দিয়েছিলে এবং তোমরাই ওর সাক্ষী ছিলে।

ثُمَّ اَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُوْنَ
فَرِيْقًا مِّنْكُمْ مِّنْ دِيَارِهِمْ ۫ تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ
بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ؕ وَاِنْ يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى
تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ اِخْرَاجُهُمْ ؕ
اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ۚ
فَمَا جَزَآءُ مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ اِلَّا خِزْيٌ فِي
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ اِلٰٓى اَشَدِّ
الْعَذَابِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٥﴾

৮৫. অনন্তর তোমরাই সেই লোক যারা (পরস্পর) তোমাদের নফস্ সমূহকে হত্যা করছো এবং তোমরা তোমাদের মধ্য হতে এক দলকে তাদের গৃহ হতে বহিষ্কৃত করে দিচ্ছ, তাদের প্রতি শত্রুতাবশতঃ অসৎ উদ্দেশ্যে পরস্পরের বিরুদ্ধে সাহায্য করছো এবং তারা বন্দী হয়ে তোমাদের নিকট আসলে তোমরা তাদেরকে বিনিময় প্রদান কর; অথচ তাদেরকে বহিষ্কৃত করা তোমাদের জন্যে অবৈধ; তবে কি তোমরা গ্রন্থের কিয়দংশ বিশ্বাস কর ও কিয়দংশ অবিশ্বাস কর? অতএব তোমাদের মধ্যে যারা এরূপ করে তাদের পার্থিব জীবনে দুর্গতি ব্যতীত কিছুই নেই এবং কিয়ামত দিবসে তারা কঠোর শাস্তির দিকে নিক্ষিপ্ত হবে এবং তোমরা যা করছো আল্লাহ্ তদ্বিষয়ে অমনোযোগী নন।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ۫
فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٨٦﴾

৮৬. এরাই পরকালের বিনিময়ে পার্থিব জীবন ক্রয় করেছে; অতএব তাদের দন্ড লঘু হবে না ও তারা সাহায্য প্রাপ্ত হবে না।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَقَفَّيْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ

৮৭. এবং অবশ্যই আমি মূসাকে (عليه السلام) গ্রন্থ প্রদান করেছি ও

بِالرُّسُلِ ۚ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ اَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ ۚ فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ ۗ وَفَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ﴿٨٧﴾

তারপরে ক্রমান্বয়ে রাসূলগণকে প্রেরণ করেছি; এবং আমি মরিয়ম পুত্র ঈসাকে নিদর্শনসমূহ প্রদান করেছিলাম এবং পবিত্র আত্মা যোগে তাকে শক্তি সম্পন্ন করেছিলাম; কিন্তু পরে যখন তোমাদের নিকট কোন রাসূল— তোমাদের প্রবৃত্তি যা ইচ্ছে করতো না, তা নিয়ে উপস্থিত হলো তখন তোমরা অহংকার করলে; অবশেষে একদলকে মিথ্যাবাদী বললে এবং একদলকে হত্যা করলে।

وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا مَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾

৮৮. এবং তারা বলে যে, আমাদের হৃদয় আচ্ছাদিত। বরং তাদের অবিশ্বাসের জন্যে আল্লাহ তাদেরকে অভিসম্পাত করেছেন— যেহেতু তারা অতি অল্পই বিশ্বাস করে।

وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۙ وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ ۚ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٩﴾

৮৯. এবং যখন আল্লাহর পক্ষ হতে তাদের নিকট যা আছে তার সত্যতা সমর্থক গ্রন্থ উপস্থিত হলো এবং পূর্ব হতেই তারা কাফিরদের নিকট তা বর্ণনা করতো, অতঃপর যখন তাদের নিকট সেই পরিচিত কিতাব আসলো, তখন তারা তাকে অস্বীকার করে বসলো, সুতরাং এরূপ কাফিরদের উপর আল্লাহর লা'নত বর্ষিত হোক।

بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا اَنْ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٩٠﴾

৯০. তারা নিজ জীবনের জন্যে যা ক্রয় করেছে তা নিকৃষ্ট, যেহেতু আল্লাহ তাঁর দাসগণের মধ্যে যার প্রতি ইচ্ছা স্বীয় অনুগ্রহ অবতারণ করেন— শুধু এ কারণে আল্লাহ্ যা অবতীর্ণ করেছেন, তারা বিদ্রোহবশতঃ তা অবিশ্বাস করছে, অতঃপর তারা কোপের পর কোপে পতিত হয়েছে, এবং কাফিরদের জন্যে রয়েছে অবমাননাকর শাস্তি।

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ بِمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَ يَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۗ وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ؕ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِيَآءَ اللّٰهِ مِنْ قَبْلُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩١﴾

৯১. এবং যখন তাদেরকে বলা হয় যে, আল্লাহ যা অবতীর্ণ করেছেন তা বিশ্বাস কর, তখন তারা বলে— যা আমাদের প্রতি অবতীর্ণ করা হয়েছে আমরা তার প্রতি বিশ্বাস করি, এবং তাছাড়া যা রয়েছে তা তারা অবিশ্বাস করে, অথচ এটা সত্য, তাদের সাথে যা আছে এটা তারই সত্যায়িতকারী; তুমি বলঃ যদি তোমরা বিশ্বাসীই ছিলে, তবে ইতিপূর্বে কেন আল্লাহর নবীগণকে হত্যা করেছিলে?

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿٩٢﴾

৯২. এবং নিশ্চয়ই মূসা (عليه السلام) উজ্জ্বল নিদর্শনাবলীসহ তোমাদের নিকট উপস্থিত হয়েছিলেন, অনন্তর তোমরা তার পরে গোবৎস গ্রহণ করেছিলে, যেহেতু তোমরা অত্যাচারী ছিলে।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاسْمَعُوْا ؕ قَالُوْا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا ۗ وَاُشْرِبُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ؕ قُلْ بِئْسَمَا يَاْمُرُكُمْ بِهٖۤ اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩٣﴾

৯৩. এবং যখন আমি তোমাদের অঙ্গীকার গ্রহণ করেছিলাম এবং তোমাদের উপর তূর পর্বত সমুচ্চ করেছিলাম। আমি যা প্রদান করলাম তা দৃঢ়রূপে ধারণ কর এবং শ্রবণ কর তারা বলেছিলঃ আমরা শুনলাম ও অমান্য করলাম; এবং তাদের অবিশ্বাসের নিমিত্তে তাদের অন্তর-সমূহে গো-বৎস প্রীতি বদ্ধমূল হয়েছিল; তুমি বলঃ যদি তোমরা বিশ্বাসী হও, তবে তোমাদের বিশ্বাস যা কিছু আদেশ করছে তা অত্যন্ত নিন্দনীয়।

قُلْ اِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ اللّٰهِ

৯৪. তুমি বলঃ যদি অপর ব্যক্তিগণ অপেক্ষা তোমাদের জন্যে আল্লাহ্র

خَالِصَةً مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٩٤﴾

নিকট বিশেষ পারলৌকিক বাসস্থান থাকে, তবে তোমরা মৃত্যু কামনা কর, যদি তোমরা সত্যবাদী হও।

وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًا ۢبِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٥﴾

৯৫. এবং তাদের হস্তসমূহ পূর্বে যা প্রেরণ করেছে তজ্জন্যে তারা কখনই তা (মৃত্যু) কামনা করবে না; এবং আল্লাহ অত্যাচারীদের সম্বন্ধে সবিশেষ অবগত আছেন।

وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوةٍ ۚۛ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚۛ يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ اَنْ يُّعَمَّرَ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾

৯৬. এবং নিশ্চয়ই তুমি তাদেরকে অন্যান্য লোক এবং অংশীবাদীদের অপেক্ষাও অধিকতর আয়ু আকাঙ্ক্ষী পাবে; তাদের মধ্যে প্রত্যেকে কামনা করে সে যেন হাজার বছর আয়ু প্রাপ্ত হয় এবং দীর্ঘায়ুও তাকে শাস্তি হতে মুক্ত করতে পারবে না এবং তারা যা করছে আল্লাহ তার মহা পরিদর্শক।

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٧﴾

৯৭. তুমি বল— যে ব্যক্তি জিবরাঈলের সাথে শত্রুতা রাখে তিনিই তো সে আল্লাহ্‌র হুকুমে এ কুর'আনকে তোমার অন্তঃকরণ পর্যন্ত পৌছিয়েছেন, যে অবস্থায় তা স্বীয় পূর্ববর্তী কিতাবসমূহের সত্যতা প্রমাণ করছে, পথ দেখাচ্ছে মু'মিনদের ও সুসংবাদ দিচ্ছে।

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٩٨﴾

৯৮. যে ব্যক্তি আল্লাহ, তাঁর ফেরেশ্‌-তাগণের, তাঁর রাসূলগণের, জিবরাঈলের এবং মিকাঈলের শত্রু হয়, নিশ্চয়ই আল্লাহ এরূপ কাফিরদের শত্রু।

وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ﴿٩٩﴾

৯৯. এবং নিশ্চয় আমি তোমার প্রতি উজ্জ্বল নিদর্শনসমূহ অবতীর্ণ করেছি এবং দুষ্কার্যকারী ব্যতীত কেউই তা অবিশ্বাস করবে না।

اَوَكُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ ؕ بَلْ
اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٠﴾

১০০. কি আশ্চর্য যখন তারা কোন অঙ্গীকারে আবদ্ধ হলো তখনই তাদের একদল তা ভঙ্গ করলো! বরং তাদের অধিকাংশই বিশ্বাস করে না।

وَلَمَّا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ
لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙ
كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠١﴾

১০১. এবং যখন আল্লাহ্‌র নিকট হতে তাদের নিকট যা আছে তার সত্যায়িতকারী রাসূল তাদের কাছে আগমন করলো, তখন যাদেরকে গ্রন্থ দেয়া হয়েছে তাদের একদল আল্লাহ্‌র গ্রন্থকে নিজেদের পশ্চাদ্ভাগে নিক্ষেপ করলো, যেন তারা কিছুই জানে না।

وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ
وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ
النَّاسَ السِّحْرَ ۗ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ
هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ ؕ وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ
حَتّٰى يَقُوْلَآ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ؕ
فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ
وَزَوْجِهٖ ؕ وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا
بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا
يَنْفَعُهُمْ ؕ وَلَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ
فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ؕ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهٖٓ
اَنْفُسَهُمْ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠٢﴾

১০২. এবং সুলাইমানের রাজত্বকালে শয়তানরা যা আবৃত্তি করতো, তারা তারই অনুসরণ করছে এবং সুলাইমান কুফুরী করেননি কিন্তু শয়তানরাই কুফুরী করেছিল। তারা লোকদেরকে যাদু বিদ্যা এবং যা বাবেল শহরে হারূত-মারূত ফেরেশ্‌তাদ্বয়ের প্রতি অবতীর্ণ হয়েছিল তা শিক্ষা দিতো, এবং তারা উভয়ে কাউকেও ওটা শিক্ষা দিতো না, যে পর্যন্ত তারা না বলতো যে, আমরা পরীক্ষাস্বরূপ, অতএব তুমি কুফরী করো না; অনন্তর যাতে স্বামী ও তদীয় স্ত্রীর মধ্যে বিচ্ছেদ সংঘটিত হয়, তারা উভয়ের নিকট তা শিক্ষা করতো এবং তারা আল্লাহ্‌র হুকুম ব্যতীত তদ্বারা কারও অনিষ্ট সাধন করতে পারতো না এবং তারা ওটাই শিক্ষা করছে যাতে তাদের ক্ষতি হয় এবং তাদের কোন উপকার সাধিত হয় না এবং নিশ্চয় তারা জ্ঞাত আছে যে, অবশ্য যে কেউ ওটা ক্রয় করেছে, তার জন্যে পরকালে কোনই

অংশ নেই এবং তদ্বিনিময়ে তারা যে আত্ম-বিক্রয় করেছে তা নিকৃষ্ট, যদি তারা তা জানতো!

وَلَوْ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠٣﴾

১০৩. এবং যদি তারা সত্য-সত্যই বিশ্বাস করতো ও ধর্মভীরু হতো তবে আল্লাহ্‌র নিকট হতে কল্যাণ লাভ করতো, যদি তারা এটা বুঝতো।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٠٤﴾

১০৪. হে মুমিনগণ! তোমরা 'রায়েনা'[১] বলো না বরং 'উনযুরনা'[২] বলো এবং শুনে নাও; আর কাফিরদের জন্যে রয়েছে যন্ত্রণাময় শাস্তি।

مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿١٠٥﴾

১০৫. তোমাদের উপর তোমাদের প্রভুর পক্ষ হতে কোন কল্যাণ অবতীর্ণ হোক এটা মুশরিকরা এবং কাফিররা মোটেই পছন্দ করে না, আর আল্লাহ যাকে ইচ্ছে করেন তাঁর করুণার জন্যে নির্দিষ্ট করে নেন, এবং আল্লাহ মহা করুণাময়।

مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَاۤ اَوْ مِثْلِهَا ؕ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٠٦﴾

১০৬. আমি কোন আয়াত রহিত করলে কিংবা আয়াতটিকে বিস্মৃত করিয়ে দিলে তদাপেক্ষা উত্তম বা তদনুরূপ আনয়ন করি; তুমি কি জান না যে, আল্লাহ সব বিষয়ের উপরই ক্ষমতাবান?

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١٠٧﴾

১০৭. তুমি কি জান না যে, আকাশ ও পৃথিবীর আধিপত্য আল্লাহরই, এবং আল্লাহ ব্যতীত তোমাদের কোন বন্ধুও নেই এবং কোন সাহায্যকারীও নেই?

১। রাখাল "রায়েনা" ইয়াহুদীদের ভাষায় একটি গালি যা তারা রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর শানে বেয়াদবী মূলক বলতো।

২। আমাদের প্রতি নেক দৃষ্টি দিন।

اَمْ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَسْـَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا سُىِٕلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿١٠٨﴾

১০৮. তোমরা কি চাও যে, তোমাদের রাসূলের নিকট আবেদন করবে যেমন ইতিপূর্বে মূসার নিকট (হঠকারিতাবশতঃ এইরূপ বহু নিরর্থক) আবেদন করা হয়েছিল? আর যে ব্যক্তি ঈমানের পরিবর্তে কুফরী অবলম্বন করে নিশ্চয় সে সঠিক পথ হতে দূরে সরে পড়ে।

وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۚ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٠٩﴾

১০৯. কিতাবীদের অনেকে তাদের প্রতি সত্য প্রকাশিত হওয়ার পর তারা তাদের অন্তর্নিহিত বিদ্বেষবশতঃ তোমাদেরকে বিশ্বাস স্থাপনের পরে অবিশ্বাসী করতে ইচ্ছে করে; কিন্তু যে পর্যন্ত আল্লাহ স্বয়ং আদেশ আনয়ন না করেন সে পর্যন্ত তোমরা ক্ষমা কর ও উপেক্ষা করতে থাকো; নিশ্চয় আল্লাহ সর্ব বিষয়োপরি ক্ষমতাবান।

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١١٠﴾

১১০. আর তোমরা নামায প্রতিষ্ঠিত কর ও যাকাত প্রদান কর; এবং তোমরা স্ব-স্ব জীবনের জন্যে যে সৎকর্ম অগ্রে প্রেরণ করেছো; তা আল্লাহর নিকট প্রাপ্ত হবে; তোমরা যা করছো নিশ্চয় আল্লাহ তার পরিদর্শক।

وَقَالُوْا لَنْ يَّدْخُلَ الْجَنَّةَ اِلَّا مَنْ كَانَ هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ؕ تِلْكَ اَمَانِيُّهُمْ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١١١﴾

১১১. এবং তারা বলেঃ যারা ইয়াহূদী বা খ্রিস্টান হয়েছে তারা ছাড়া আর কেউই জান্নাতে প্রবিষ্ট হবে না, এটাই তাঁদের বাসনা; তুমি বলঃ যদি তোমরা সত্যবাদী হও, তবে তোমাদের প্রমাণ উপস্থিত কর।

بَلٰى ۚ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهٗۤ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۪ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

১১২. অবশ্য যে ব্যক্তি আল্লাহর জন্যে নিজেকে সম্পূর্ণরূপে সমর্পণ করেছে এবং সৎকর্মশীল হয়েছে,

يَحْزَنُوْنَ ﴿١١٢﴾

ফলতঃ তার জন্য তার প্রতিপালকের নিকট প্রতিদান রয়েছে এবং তাদের জন্যে কোন আশঙ্কা নেই ও তারা সন্তপ্ত হবে না।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى شَيْءٍ ۖ وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَيْءٍ ۙ وَّهُمْ يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ۗ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١١٣﴾

১১৩. আর ইয়াহূদীগণ বলে যেঃ খ্রিস্টানেরা কোন (ধর্মীয়) বিষয়ের উপর নেই এবং খ্রিস্টানেরা বলে যে, ইয়াহূদীরাও কোন (ধর্মীয়) বিষয়ের উপর নেই; অথচ তারা গ্রন্থ পাঠ করে। এরূপ যারা জানে না, তারাও ওদের কথার অনুরূপ কথা বলে থাকে; অতএব যে বিষয়ে তারা মতবিরোধ করেছিল, কিয়ামত দিবসে আল্লাহ তাদের মধ্যে তদ্বিষয়ে ফায়সালা করে দেবেন।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِيْ خَرَابِهَا ۗ اُولٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ يَّدْخُلُوْهَآ اِلَّا خَآئِفِيْنَ ۗ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١١٤﴾

১১৪. এবং যে কেউ আল্লাহ্‌র মসজিদসমূহের মধ্যে তাঁর নাম উচ্চারণ করতে নিষেধ করেছে এবং তা ধ্বংস করতে প্রয়াস চালিয়েছে— তার অপেক্ষা কে অধিক অত্যাচারী? এ ধরনের ব্যক্তিদেরকে শঙ্কিত অবস্থায়ই তন্মধ্যে প্রবেশ করা উচিত; তাদের জন্যে ইহলোকের দুর্গতি এবং পরলোকে কঠোর শাস্তি রয়েছে।

وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾

১১৫. আল্লাহরই জন্যে পূর্ব ও পশ্চিম; অতএব তোমরা যে দিকেই মুখ ফিরাও সে দিকেই আল্লাহ্‌র মুখ; কেননা আল্লাহ (সর্বদিক) পরিবেষ্টনকারী পূর্ণ জ্ঞানবান।

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۙ سُبْحٰنَهٗ ۗ بَلْ لَّهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿١١٦﴾

১১৬. এবং তারা বলেঃ আল্লাহ সন্তান গ্রহণ করেছেন! তিনি তা থেকে পরম পবিত্র; বরং যা কিছু গগণে ও ভূমন্ডলে রয়েছে তা তাঁরই জন্যে; সবই তাঁর আজ্ঞাধীন।[১]

১। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন। তিনি বলেছেন, আল্লাহ্ বলেনঃ ইবনে আদম (মানুষ) আমাকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে, অথচ তাদের জন্য এটা

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿١١٧﴾

১১৭. তিনি গগণ ও ভূবনকে অনস্তিত্ব থেকে অস্তিত্বে আনয়নকারী এবং যখন তিনি কোন কার্য সম্পাদন করতে ইচ্ছে করেন, তখন তার জন্যে শুধু 'হও' বলেন, আর তাতেই তা হয়ে যায়।

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِيْنَآ اٰيَةٌ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ؕ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿١١٨﴾

১১৮. এবং মুর্খেরা বলেঃ আল্লাহ আমাদের সাথে কেন কথা বলেন না– অথবা কেন আমাদের জন্যে কোন নিদর্শন উপস্থিত হয় না? এদের পূর্বে যারা ছিল তারাও এদের অনুরূপ কথা বলতো; তাদের সবারই অন্তর পরস্পর সাদৃশ্যপূর্ণ; নিশ্চয় আমি বিশ্বাসী সম্প্রদায়ের জন্যে উজ্জ্বল নিদর্শনাবলী বর্ণনা করি।

اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۙ وَّلَا تُسْـَٔلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ ﴿١١٩﴾

১১৯. নিশ্চয় আমি তোমাকে সত্য-সহ সুসংবাদদাতা ও ভয় প্রদর্শক-রূপে (সতর্ককারীরূপে) প্রেরণ করেছি এবং তুমি দোযখবাসীদের সম্বন্ধে জিজ্ঞাসিত হবে না।

وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ؕ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِىْ جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١٢٠﴾

১২০. এবং ইয়াহূদী ও খ্রিস্টানগণ তুমি তাদের ধর্ম অনুসরণ না করা পর্যন্ত তোমার প্রতি সন্তুষ্ট হবে না; তুমি বল– আল্লাহর প্রদর্শিত পথই সুপথ; এবং তোমার নিকট যে জ্ঞান এসেছে তৎপর যদি তুমি তাদের প্রবৃত্তির অনুসরণ কর, তবে আল্লাহ হতে তোমার জন্যে কোনই অভিভাবক ও সাহায্যকারী নেই।

উচিত নয়। আর আদম সন্তান আমাকে গালি দেয়, অথচ এটা তার জন্য উচিত নয়। তাদের আমাকে মিথ্যাপ্রতিপন্ন করার অর্থ হলো, তারা বলে আমি তাদেরকে (মৃত্যুর পরে) জীবিত করে পূর্বের ন্যায় করতে সক্ষম নই। আর তাদের আমাকে গালি দেয়ার অর্থ হলো, তারা বলে যে, আমার পুত্র আছে। অথচ স্ত্রী বা সন্তান বা গ্রহণ করা থেকে আমি পবিত্র। (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৮২)

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٢١﴾

১২১. আমি তাদেরকে যে ধর্মগ্রন্থ দান করেছি তা যারা সত্যভাবে বুঝবার মত পাঠ করে তারাই এর প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করেছে; এবং যে কেউ এটা অবিশ্বাস করে ফলতঃ তারাই ক্ষতিগ্রস্ত হবে।

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٢﴾

১২২. হে বানী ইসরাঈল! আমি তোমাদেরকে যে নেয়ামত দান করেছি এবং নিশ্চয় আমি পৃথিবীর উপর তোমাদেরকে যে শ্রেষ্ঠত্ব দান করেছি– তোমরা তা স্মরণ কর।

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿١٢٣﴾

১২৩. আর তোমরা ঐ দিবসের ভয় কর, যেদিন কোন ব্যক্তি কোন ব্যক্তি হতে কিছু মাত্র উপকৃত হবে না এবং কারও নিকট হতে বিনিময় গৃহীত হবে না, কারও শাফা'আত (সুপারিশ) ফলপ্রদ হবে না এবং তারা সাহায্য প্রাপ্ত হবে না।

وَاِذِ ابْتَلٰٓى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ ؕ قَالَ اِنِّيْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ؕ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٢٤﴾

১২৪. এবং যখন তোমার প্রতিপালক ইবরাহীমকে কতিপয় বাক্য দ্বারা পরীক্ষা করেছিলেন, পরে তিনি তা পূর্ণ করেছিলেন; তিনি (আল্লাহ) বলেছিলেনঃ নিশ্চয় আমি তোমাকে মানবমন্ডলীর নেতা করবো; তিনি (ইবরাহীম আঃ) বলেছিলেনঃ আমার বংশধরগণ হতেও; তিনি বলেছিলেনঃ আমার অঙ্গীকার অত্যাচারীদের প্রতি প্রযোজ্য হবে না।[১]

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ আমি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি যে, মানুষের মধ্যে জন্মগতভাবে সুন্নাত পাঁচটিঃ (১) খাতনা করা (২) (নাভীর নীচে) ক্ষুর ব্যবহার করা, (৩) গোঁফ কাটা, (৪) নখ কাটা, (৫) বগলের লোম উপড়ে ফেলা। (বুখারী, হাদীস নং ৫৮৯১)

❁ ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তোমরা গোঁফ ছাঁটো এবং দাড়িকে ছেড়ে দাও। (বুখারী, হাদীস নং ৫৮৯৩)

وَاِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا ؕ وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ وَعَهِدْنَاۤ اِلٰۤى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِىَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْعٰكِفِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿١٢٥﴾

১২৫. এবং আমি কা'বাগৃহকে মানব জাতির জন্য মিলন কেন্দ্র ও সুরক্ষিত স্থান করেছি এবং তোমরা মাকামে ইব্রাহীমকে নামাযের স্থান হিসেবে গ্রহণ কর এবং আমি ইবরাহীম ও ইসমাঈলের নিকট অঙ্গীকার নিয়েছিলাম যে, তোমরা আমার গৃহকে তাওয়াফকারী ও ই'তিকাফ-কারী এবং রুকু ও সিজদাকারীদের জন্যে পবিত্র রেখো।

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗۤ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٢٦﴾

১২৬. যখন ইবরাহীম (عليه السلام) বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! এ স্থানকে আপনি নিরাপত্তাময় শহরে পরিণত করুন এবং এর অধিবাসীদের মধ্যে যারা আল্লাহ ও পরকালে বিশ্বাস স্থাপন করেছে, তাদেরকে উপজীবিকার জন্যে ফল-শস্য প্রদান করুন, তিনি বলেন, যারা অবিশ্বাস করে তাদেরকে আমি অল্প দিন শান্তি দান করবো, তৎপরে তাদেরকে জাহান্নামের শাস্তি ভোগ করতে বাধ্য করবো, এটি নিকৃষ্টতম গন্তব্যস্থান!

وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٢٧﴾

১২৭. যখন ইবরাহীম (عليه السلام) ও ইসমাঈল (عليه السلام) কা'বার ভিত্তি উত্তোলন করছিলেন, (তখন বলেনঃ) হে আমাদের প্রতিপালক" আমাদের পক্ষ হতে এটা গ্রহণ করুন, নিশ্চয় আপনি মহা শ্রবণকারী, মহাজ্ঞানী।

رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَاۤ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۪ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٨﴾

১২৮. হে আমাদের প্রভু! আমাদের উভয়কে আপনার অনুগত করুন এবং আমাদের বংশধরদের মধ্য হতেও আপনার অনুগত একদল লোক সৃষ্টি করুন, আর আমাদেরকে

ইবাদতের আহকাম বলে দিন এবং আমাদের প্রতি ক্ষমাশীল হোন, নিশ্চয় আপনি ক্ষমাশীল, করুণাময়।

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ
اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيهِمْ ط
اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٢٩﴾

১২৯. হে আমাদের প্রভু! সে দলে তাদেরই মধ্য হতে এমন একজন রাসূল প্রেরণ করুন যিনি তাদেরকে আপনার আয়াতসমূহ পাঠ করে শুনাবেন এবং তাদেরকে কিতাব ও সুন্নাত শিক্ষা দান করবেন ও তাদেরকে পবিত্র করবেন। নিশ্চয়ই আপনি পরাক্রান্ত প্রজ্ঞাময়।

وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ اِلَّا مَنْ سَفِهَ
نَفْسَهٗ ط وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا ج وَاِنَّهٗ فِي
الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِينَ ﴿١٣٠﴾

১৩০. এবং যে নিজেকে নির্বোধ করে তুলেছে সে ব্যতীত কে ইবরাহীমের ধর্ম হতে বিমুখ হবে? এবং নিশ্চয়ই আমি তাকে এই পৃথিবীতে মনোনীত করেছিলাম, নিশ্চয় সে পরকালে সৎ কর্মশীলগণের অন্তর্ভুক্ত।

اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗٓ اَسْلِمْ ۙ قَالَ اَسْلَمْتُ
لِرَبِّ الْعٰلَمِينَ ﴿١٣١﴾

১৩১. যখন তার প্রভু তাকে বলেনঃ তুমি আনুগত্য স্বীকার কর; সে বলেছিলঃ আমি বিশ্ব জগতের প্রতিপালকের নিকট আত্মসমর্পণ করলাম।

وَوَصّٰى بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيهِ وَيَعْقُوبُ ط يٰبَنِيَّ اِنَّ
اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ
مُّسْلِمُونَ ﴿١٣٢﴾ ط

১৩২. আর ইবরাহীম ও ইয়াকুব স্বীয় সন্তানগণকে সদুপদেশ প্রদান করেছিল হে আমার বংশধরঃ নিশ্চয় আল্লাহ তোমাদের জন্যে এই (জীবন ব্যবস্থা) দ্বীন মনোনীত করেছেন, অতএব তোমরা মুসলমান না হয়ে মৃত্যুবরণ করো না।

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ الْمَوْتُ ۙ
اِذْ قَالَ لِبَنِيهِ مَا تَعْبُدُونَ مِنْ بَعْدِيْ ط قَالُوا
نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيلَ

১৩৩. যখন ইয়াকুবের মৃত্যু উপস্থিত হয় তখন কি তোমরা উপস্থিত ছিলে? তখন তিনি নিজ পুত্রগণকে বলেছিলেন— আমার পরে তোমরা কোন জিনিসের ইবাদত করবে? তারা বলেছিলেন— আমরা তোমার

وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٣﴾

পিতৃপুরুষ ইবরাহীম, ইসমাঈল ও ইসহাকের মা'বূদ— সে অদ্বিতীয় মা'বূদের ইবাদত করবো, এবং আমরা তাঁরই অনুগত থাকবো।

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٤﴾

১৩৪. ওটা একটা দল ছিল, যা অতীত হয়ে গেছে; তারা যা অর্জন করেছিল তা তাদের জন্যে এবং তোমরা যা অর্জন করেছো তা তোমাদের জন্যে এবং তারা যা করে গেছে তজ্জন্য তোমরা জিজ্ঞাসিত হবে না।

وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ؕ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٣٥﴾

১৩৫. এবং তারা বলে যেঃ তোমরা ইয়াহূদী অথবা খ্রিস্টান হও তবেই সুপথ প্রাপ্ত হবে, তুমি বলঃ বরং আমরা ইবরাহীমের (عليه السلام) সুদৃঢ় ধর্মের অনুসরণ করি এবং তিনি অংশীবাদীদের অন্তর্ভুক্ত ছিলন না।[১]

১। আব্দুল্লাহ্ ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর প্রতি ওহী অবতীর্ণ হবার পূর্বে বালদাহ নামক স্থানের নিম্নভাগে যায়েদ ইবনে আমর ইবনে নুফাইলের সাথে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সাক্ষাত হয়। তারপর (কুরাইশদের পক্ষ থেকে) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সামনে দস্তরখানা বিছানো হলো। তিনি তা খেতে অস্বীকার করলেন (এবং যায়েদের সামনে ঠেলে দিলেন; কিন্তু তিনিও তা খেতে অস্বীকার করলেন।) অতঃপর যায়েদ (কুরাইশদের লক্ষ্য করে) বললেন, তোমাদের মূর্তির নামে তোমরা যা যবেহ কর তা আমি কিছুতেই খেতে পারি না। আমি তো কেবলমাত্র তাই খেয়ে থাকি যাতে যবেহ করার সময় আল্লাহ্‌র নাম উচ্চারণ করা হয়। যায়েদ ইবনে আমর কুরাইশদের যবেহর নিন্দা করতেন এবং তাদের উক্ত আচরণের প্রতিবাদ ও তার ত্রুটি প্রতি ইঙ্গিত করে বলতেন, বকরী সৃষ্টি করলেন আল্লাহ্ এবং তিনিই তার আকাশ থেকে পানি বর্ষণ করেন, তিনিই তার জন্য মাটি থেকে ঘাস ও লতা-পাতা উৎপন্ন করেন। এতো কিছুর পর তোমরা তাকে গাইরুল্লাহর নামে যবেহ কর। (বুখারী, হাদীস নং ৩৮২৬)

❁ ইবনে উমর থেকে (অপর এক সনদে) বর্ণিত যায়েদ ইবনে আমর ইবনে নুফাইল সত্য দ্বীন সম্পর্কে জানা ও তার অনুসরণ করার জন্য শাম (সিরিয়া) দেশে গিয়ে এক ইয়াহূদী আলেমের সাথে সাক্ষাত করেন এবং তাকে তাদের দ্বীন সম্পর্কে জিজ্ঞেস করে বললেন, আমি হয়তোবা আপনাদের দ্বীন গ্রহণ করতে পারি। সুতরাং আমাকে (আপনাদের দ্বীন সম্পর্কে) কিছু বলুন। ইয়াহূদী আলেম বললেন, আপনি আমাদের ধর্মের অনুসারী হতে পারবেন না যে পর্যন্ত আল্লাহ্‌র আযাব থেকে আপনার অংশ আপনি গ্রহণ না করেন। যায়েদ বললেন আমি তো আল্লাহ্‌র আযাব থেকে (বাঁচার জন্যই) ভয়ে পালিয়ে এসেছি। আল্লাহ্ পাকের আযাব বিন্দুমাত্রও সহ্য করার ক্ষমতা আমার নেই এবং তা বরদাস্ত করার সাধ্যও রাখিনা। তাহলে অন্য কোন ধর্ম সম্পর্কে (মেহেরবানী) করে আমাকে পথ দেখাতে পারবেন কি? ইয়াহূদী আলেম বললেনঃ দ্বীনে হানীফ ছাড়া অন্য কোন সত্য দ্বীন আমার জানা নেই। যায়েদ বললেনঃ দ্বীনে হানীফ কি? তিনি বললেন তা'হল ইব্‌রাহীম (আলাইহিস্‌সালাম)-এর আনীত দ্বীন। তিনি (ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) ইয়াহূদী

قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَآ اُوْتِيَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۖ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿١٣٦﴾

১৩৬. তোমরা বলঃ আমরা আল্লাহর প্রতি এবং যা আমাদের প্রতি অবতীর্ণ হয়েছে, আর যা হযরত ইবরাহীম (عليه السلام), ইসমাঈল (عليه السلام), ইসহাক (عليه السلام) ইয়াকুব (عليه السلام) ও তাদের বংশধরের প্রতি অবতীর্ণ হয়েছিল এবং মূসা (عليه السلام) ও ঈসা (عليه السلام)-কে যা প্রদান করা হয়েছিল এবং অন্যান্য নবীগণ তাদের প্রভু হতে যা প্রদত্ত হয়েছিলেন, তদ সমুদয়ের উপর বিশ্বাস স্থাপন করছি, তাদের মধ্যে কাউকেও আমরা প্রভেদ করি না, এবং আমরা তাঁরই প্রতি আত্মসমর্পণকারী।

কিংবা খ্রিস্টান (কোন দলেরই) ছিলেন না। তিনি একমাত্র আল্লাহ্ ব্যতীত অন্য কিছুর ইবাদত করতেন না। অতঃপর যায়েদ সেখান থেকে বের হয়ে এক খ্রিস্টান আলেমের সঙ্গে সাক্ষাত করলেন এবং তাঁকেও পূর্বের ন্যায় জিজ্ঞেস করলেন। উক্ত আলেম বললেন যে পর্যন্ত আপনি আল্লাহ্র লা'নতের অংশ গ্রহণ না করবেন সে পর্যন্ত আমাদের ধর্মের অনুসারী হতে পারবেন না। যায়েদ বললেন আল্লাহ্র লা'নত থেকে (মুক্তি পাওয়ার জন্যই) আমি পালিয়ে বেড়াচ্ছি। আল্লাহ্র লা'নত কিংবা তাঁর গযবের বিন্দুমাত্রও আমি বরদাশত করতে পারব না, না আমার তা বরদাশত করার কোন সাধ্য আছে। অতঃপর উক্ত আলেমও বললেনঃ তা'হলে আপনি কি আমাকে অন্য কোন দ্বীন (ধর্ম)-এর কথা বলে দিতে পারবেন? উত্তরে উক্ত আলেম বললেন, অন্য কোন ধর্মের কথা আমি জানি না, তবে (দ্বীনে) হানীফ ব্যতীত। যায়েদ জিজ্ঞাসা করলেন, হানীফ কি? তিনি বললেন, তা'হল ইব্রাহীম (আলাইহিস্সালাম)-এর আনীত দ্বীন। তিনি ইয়াহূদীও ছিলেন না এবং খ্রিস্টানও ছিলেন না। তিনি আল্লাহ্ ছাড়া অন্য কিছুর ইবাদত করতেন না। যায়েদ যখন দেখলেন যে ইব্রাহীম (আলাইহিস্সালাম)-এর দ্বীনের সত্যতার ব্যাপারে তারা সকলেই একমত, তাদের মন্তব্য শুনে বেরিয়ে এলেন এবং বাহিরে এসে দু'হাত তুলে বললেন, হে আল্লাহ্! আমি তোমাকে সাক্ষি রেখে বলছি যে, নিশ্চয় আমি ইবরাহীম (আলাইহিস্সালাম)-এর দ্বীনের প্রতি রয়েছি। (বুখারী, হাদীস নং ৩৮২৭)

❁ লাইছ বলেন, হিশাম তার পিতা ও আসমা বিনতে আবু বকরের বরাত দিয়ে আমাকে লিখেছেন যে, আসমা বলেনঃ একদিন, আমি যায়েদ ইবনে আমর ইবনে নুফাইলকে দেখলাম যে, তিনি কা'বা ঘরের সাথে নিজের পিঠ লাগিয়ে দাঁড়িয়ে (কুরাইশদেরকে লক্ষ্য করে) বলছেন, হে কুরাইশ দল! আল্লাহ্র কসম! আমি ছাড়া তোমাদের কেউ ইবরাহীম (আলাইহিস্সালাম)-এর দ্বীনের অনুসারী নয়। আর তিনি (যায়েদ) জীবন্ত প্রোথিত নবজাত শিশুকন্যাকে জীবিত করতেন। যখন কোন ব্যক্তি তার মেয়েকে হত্যা করতে চাইত তখন তিনি তাকে বলতেন, একে হত্যা করো না। তোমার পরিবর্তে আমি তার ভরণ-পোষণের ভার নেব। এ বলে তিনি তাকে নিয়ে যেতেন। মেয়েটা যখন বড় হতো, তিনি তার পিতাকে বলতেন, তুমি চাইলে আমি মেয়েটাকে তোমাকে দিয়ে দিব। আর তুমি যদি চাও তবে আমিই মেয়েটার ভরণ-পোষণ করে যাব। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪২৮)

(ক) যিয়াদ ইবনে ইলাকা থেকে বর্ণিত. তিনি বলেনঃ আমি মুগীরা বিন শো'বাকে বলতে শুনেছি। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) (এত দীর্ঘ সময় পর্যন্ত দাঁড়িয়ে নফল) নামায পড়তেন যার ফলে তাঁর

فَاِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَاۤ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا هُمْ فِيْ شِقَاقٍ ۚ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٣٧﴾

১৩৭. অনন্তর তোমরা যেরূপ বিশ্বাস স্থাপন করেছ, তারাও যদি তদ্রূপ বিশ্বাস স্থাপন করে, তবে নিশ্চয় তারা সুপথ প্রাপ্ত হবে; এবং যদি তারা ফিরে যায় তবে তারা বিচ্ছিন্নতাবাদী। অতএব এখন তাদের ব্যাপারে আপনার জন্য আল্লাহ্ই যথেষ্ট এবং তিনিই মহাশ্রবণকারী, মহাজ্ঞানী।

صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۫ وَّنَحْنُ لَهٗ عٰبِدُوْنَ ﴿١٣٨﴾

১৩৮. আল্লাহর রং গ্রহণ করো, আল্লাহর রং-এর চাইতে উত্তম রং আর কার হতে পারে? এবং আমরা তাঁরই ইবাদতকারী।

قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِى اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ وَلَنَاۤ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ

১৩৯. তুমি বলঃ তোমরা কি আল্লাহ সম্বন্ধে আমাদের সঙ্গে বিরোধ করছো? অথচ তিনিই আমাদের

দু'পা ফুলে যেত। এ ব্যাপারে তাঁকে জিজ্ঞেস করা হলে তিনি বললেন, আমি কি কৃতজ্ঞ বান্দা হবো না? (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৭১)

(খ) আয়িশা (রাযিআল্লাহু আনহা) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ সঠিক কর্তব্য নিষ্ঠ এবং মধ্যম পন্থা অবলম্বন কর ও সুসংবাদ দাও। কেননা স্বীয় আমলের দ্বারা কেউ জান্নাতে প্রবেশ করতে পারবেনা। সাহাবীগণ বললেনঃ আপনিও না ইয়া রাসূলাল্লাহ! তিনি বললেন, আমিও না, তবে আল্লাহ্ আমাকে তাঁর রহমত এবং মাগফিরাত দ্বারা ঢেকে রেখেছেন। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৬৭)

(গ) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আমার নিকট ওহুদ পাহাড় পরিমাণ স্বর্ণ থাকলেও তা থেকে কিছু আমার নিকট ঋণ পরিশোধের জন্য রাখা ব্যতীত তিন দিন থাকবে তা আমি পছন্দ করি না। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৪৫)

(ঘ) আব্দুল্লাহ্ বিন মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তোমাদের মধ্যে কে নিজের সম্পদের চেয়ে উত্তরাধিকারীদের সম্পদকে বেশি ভালবাসে? সাহাবায়ে কিরাম বললেন, ইয়া রাসূলাল্লাহ্! আমাদের মধ্যে এমন কেই নেই, যে সে নিজের সম্পদের চেয়ে উত্তরাধিকারীদের সম্পদ বেশি ভালবাসে। তিনি (রাসূলুল্লাহ্ সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, যে ব্যক্তি (আল্লাহ্র পথে) খরচ করবে তা-ই শুধু নিজের সম্পদ, আর যা সে রেখে যাবে তা হলো তার উত্তরাধিকারীদের সম্পদ। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৪২)

(ঙ) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন একটি কুকুর পিপাসা কাতর হয়ে একটি কূপের চারদিকে ঘুরছিল মনে হচ্ছিল যে পানির পিপাসায় এখনই সে মারা যাবে। এমনি মুহূর্তে বনী ইসরাঈলের এক ব্যভিচারিণীর দৃষ্টিগোচর হল। অতঃপর সে তার মোজা খুলে (তা' দিয়ে কূয়া থেকে পানি উঠিয়ে) কুকুরটিকে পানি পান করাল। এ কারণে আল্লাহ্ তাকে ক্ষমা করে দিলেন। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৬৭)

مُخْلِصُوْنَ ﴿١٣٩﴾

প্রতিপালক ও তোমাদের প্রতিপালক, এবং আমাদের জন্যে আমাদের কার্যসমূহ এবং তোমাদের জন্যে তোমাদের কার্যসমূহ এবং আমরা তাঁরই জন্যে নিবেদিত।

اَمْ تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطَ كَانُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ؕ قُلْ ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٠﴾

১৪০. তোমরা কি বলছো যে, ইবরাহীম (عليه السلام), ইসমাঈল (عليه السلام), ইসহাক (عليه السلام), ইয়াকুব (عليه السلام) ও তাদের বংশধর ইয়াহূদী কিংবা খ্রিস্টান ছিলেন? তুমি বলঃ তোমরাই সঠিক জ্ঞানী না আল্লাহ? আল্লাহর নিকট হতে প্রাপ্ত সাক্ষ্য যে ব্যক্তি গোপন করছে সে অপেক্ষা কে বেশি অত্যাচারী? এবং তোমরা যা করছো তা হতে আল্লাহ অমনোযোগী নন।

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤١﴾

১৪১. তারা একটি জামা'আত ছিল যা বিগত হয়েছে; তারা যা অর্জন করেছে তা তাদের জন্যে এবং তোমরা যা অর্জন করেছো তা তোমাদের জন্যে এবং তারা যা করে গেছে তদ্বিষয়ে তোমরা জিজ্ঞাসিত হবে না।

سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِيْ كَانُوْا عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَ الْمَغْرِبُ ؕ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٤٢﴾

১৪২. মানবমন্ডলীর ভিতর থেকে কিছু নির্বোধ লোক অচিরেই বলবে যে, কিসে তাদেরকে সেই কেবলা হতে ফিরিয়ে দিলো, যার দিকে তারা ছিল? তুমি বলে দাওঃ পূর্ব ও পশ্চিম আল্লাহরই জন্যে, তিনি যাকে ইচ্ছা সরল পথ-প্রদর্শন করেন।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِيْ كُنْتَ عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ ؕ وَاِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤٣﴾

১৪৩. এভাবে আমি তোমাদেরকে মধ্যপন্থী ন্যায়পরায়ণ উম্মত করেছি যেন তোমরা মানবগণের জন্যে সাক্ষী হও এবং রাসূলও তোমাদের জন্যে সাক্ষী হয়;[১] এবং তুমি যে কেবলার দিকে ছিলে, তা আমি এজন্যে নির্ধারণ করেছিলাম যে, কে রাসূলের অনুসরণ করে আর কে তা হতে স্বীয় পদদ্বয়ের গোড়ালী প্রদর্শন করিয়ে ফিরে যায় আমি তা জেনে নেবো এবং আল্লাহ যাদেরকে সৎপথ প্রদর্শন করেছেন তারা ছাড়া অপরের জন্য এটা অবশ্যই কঠোরতর; এবং আল্লাহ এরূপ নন যে, তোমাদের ঈমান (নামায) বিনষ্ট করেন। নিশ্চয় আল্লাহ মানবগণের প্রতি স্নেহশীল করুণাময়।

১। আবূ সাঈদ খুদরী (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ নূহ (আলাইহিস্ সালাম)-কে কিয়ামতের দিন ডাকা হবে, তিনি বলবেনঃ হে আমার প্রভূ! আমি আপনার নিকট উপস্থিত। (আল্লাহ্ তাকে জিজ্ঞেস করবেন) তুমি কি তোমার দায়িত্ব (হুকুম-আহকাম মানুষের কাছে) পৌঁছিয়ে ছিলে? তিনি বলবেন, হ্যাঁ পৌঁছিয়ে ছিলাম। তখন তাঁর উম্মতদেরকে জিজ্ঞেস করা হবে তিনি তোমাদের প্রতি তাঁর যে, দায়িত্ব ছিল তা কি তিনি যথাযথ ভাবে পৌঁছিয়ে দিয়েছিলেন? তারা বলবে আমাদের নিকট কোন ভয়-প্রদর্শনকারী আসেননি। তখন আল্লাহ্ বলবেন তোমার সাক্ষী কে? তিনি বলবেন মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) এবং তাঁর উম্মত। তখন তারা (উম্মতে মুহাম্মাদীয়াহ) সাক্ষী দিবে যে, তিনি (নূহ আলাইহিস্ সালাম) তাঁর দায়িত্ব যথাযথভাবে তাদের কাছে পৌঁছিয়েছেন। "আর রাসূল (মুহাম্মাদ সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তোমাদের কথা সত্য বলে সাক্ষ্য প্রদান করবেন।" তাই মহান আল্লাহ্ বলেছেনঃ অর্থঃ "আর এভাবে আমি তোমাদেরকে মধ্যপন্থী সম্প্রদায় করেছি যেন তোমরা মানবগণের জন্য সাক্ষী হও এবং রাসূলও তোমাদের জন্যে সাক্ষী হয়।" (الوسط) শব্দের অর্থ হল (العدل) বা ন্যায়পরায়ণতা। (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৮৭)

قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۠ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٤﴾

১৪৪. নিশ্চয় আমি আকাশের দিকে তোমার মুখমন্ডল উত্তোলন অবলোকন করছি। তাই আমি তোমাকে ঐ কিবলাহ্ মুখীই করবো যা তুমি কামনা করছো; অতএব তুমি মসজিদে হারামের দিকে (কা'বার দিকে) তোমার মুখমন্ডল ফিরিয়ে নাও এবং তোমরা যেখানে আছ তোমাদের মুখ সে দিকেই প্রত্যাবর্তিত কর; এবং নিশ্চয়ই যাদেরকে কিতাব দেয়া হয়েছে তারা অবশ্যই অবগত আছে যে, নিশ্চয়ই এটা তাদের প্রতিপালকের নিকট হতে সত্য এবং তারা যা করছে তদ্বিষয়ে আল্লাহ অমনোযোগী নন।

وَلَئِنْ اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا قِبْلَتَكَ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٥﴾

১৪৫. এবং যাদেরকে কিতাব প্রদান করা হয়েছে তাদের নিকট যদি তুমি সমুদয় নিদর্শন আনয়ন কর, তবুও তারা তোমার কিবলাহ্কে গ্রহণ করবে না; এবং তুমিও তাদের কিবলাহ গ্রহণ করতে পার না, আর না তারা পরস্পর একজন অন্য জনের কিবলার অনুসারী এবং তোমার নিকট যে জ্ঞান এসেছে এর পরেও যদি তুমি তাদের প্রবৃত্তির অনুসরণ কর, তবে নিশ্চয় তুমি অত্যাচারীদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাবে।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ؕ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٤٦﴾

১৪৬. যাদেরকে আমি কিতাব প্রদান করেছি, তারা রাসূলুল্লাহ (ﷺ)-কে এরূপ ভাবে চিনে, যেমন চিনে, তারা আপন পুত্রদেরকে এবং নিশ্চয় তাদের এক দল জ্ঞাতসারে সত্যকে গোপন করছে।

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١٤٧﴾

১৪৭. এক বাস্তব সত্য তোমার প্রতিপালকের পক্ষ হতে; সুতরাং তুমি সংশয়ীদের অন্তর্ভুক্ত হয়ো না।

وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ
اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا ؕ
اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٤٨﴾

১৪৮. প্রত্যেকের জন্যে এক একটি লক্ষ্যস্থল রয়েছে, ঐদিকেই সে মুখমন্ডল প্রত্যাবর্তিত করে, অতএব তোমরা কল্যাণের দিকে ধাবিত হও; তোমরা যেখানেই থাক না কেন, আল্লাহ তোমাদের সকলকেই একত্রিত করবেন, নিশ্চয়ই আল্লাহ সর্ব বিষয়ে পূর্ণ ক্ষমতাবান।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ ؕ وَاِنَّهٗ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٩﴾

১৪৯. এবং তুমি যেখান হতেই বের হবে, তোমার মুখ মসজিদে হারামের দিকে প্রত্যাবর্তিত কর এবং নিশ্চয় এটাই তোমার প্রতিপালকের নিকট হতে সত্য, এবং তোমরা যা করছো তদ্বিষয়ে আল্লাহ অমনোযোগী নন।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ ؕ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ
شَطْرَهٗ ۙ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ ۙ
اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ ۚ فَلَا تَخْشَوْهُمْ
وَاخْشَوْنِيْ ۚ وَلِاُتِمَّ نِعْمَتِيْ عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ
تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥٠﴾

১৫০. আর তুমি যেখান হতেই বের হও না কেন, তোমার মুখ মসজিদে হারামের দিকে ফিরাও এবং তোমরাও যে যেখানে আছ তোমাদের মুখমন্ডল সেদিকেই প্রত্যাবর্তিত কর যেন তাদের অন্তর্গত অত্যাচারীগণ ব্যতীত অন্য কেউ তোমাদের সাথে বিতর্ক করতে না পারে, অতএব তোমরা তাদেরকে ভয় করো না বরং আমাকেই ভয় কর যেন আমি তোমাদের উপর আমার অনুগ্রহ পূর্ণ করি এবং যেন তোমরা সুপথপ্রাপ্ত হও।

كَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ
اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ
وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٥١﴾

১৫১. আমি তোমাদের মধ্য হতে এরূপ রাসূল প্রেরণ করেছি যিনি তোমাদের নিকট আমার নিদর্শনাবলী পাঠ করেন ও তোমাদেরকে পবিত্র করেন এবং তোমাদেরকে গ্রন্থ ও বিজ্ঞান শিক্ষা দেন আর তোমরা যা অবগত ছিলে না তা শিক্ষা দান করেন।

فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ ﴿١٥٢﴾

১৫২. অতএব তোমরা আমাকেই স্মরণ কর, আমিও তোমাদেরকে স্মরণ করবো এবং তোমরা আমার প্রতি কৃতজ্ঞ হও ও অবিশ্বাসী হয়ো না।[১]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٥٣﴾

১৫৩. হে বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ, তোমরা ধৈর্য ও নামাযের মাধ্যমে সাহায্য প্রার্থনা কর নিশ্চয় আল্লাহ ধৈর্যশীলগণের সাথে আছেন।

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ۭ بَلْ اَحْيَاۗءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ﴿١٥٤﴾

১৫৪. আর যারা আল্লাহর পথে নিহত হয়েছে তাদেরকে মৃত বলো না বরং তারা জীবিত; কিন্তু তোমরা তা অনুধাবন করোনা।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ۭ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٥٥﴾

১৫৫. এবং নিশ্চয় আমি তোমা-দেরকে ভয়, ক্ষুধা এবং ধন ও প্রাণ এবং ফল শস্যের অভাবের কোন একটি দ্বারা পরীক্ষা করবো এবং ঐসব ধৈর্যশীলদের সুসংবাদ প্রদান করুন।

الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿١٥٦﴾

১৫৬. যাদের উপর কোন বিপদ আপতিত হলে তারা বলেঃ নিশ্চয় আমরা আল্লাহরই জন্যে এবং নিশ্চয় আমরা তাঁরই দিকে প্রত্যাবর্তনকারী।

اُولٰۗىِٕكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۣ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ ﴿١٥٧﴾

১৫৭. এদের উপর তাদের প্রভুর পক্ষ হতে শান্তি ও করুণা বর্ষিত হবে এবং এরাই সুপথগামী।

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আল্লাহ্ তা'আলা বলেন, আমার সম্পর্কে আমার বান্দা যেরূপ ধারণা পোষণ করে আমি অনুরূপ এবং সে যখন আমাকে স্মরণ করে আমি (ইলমের মাধ্যমে) তার সাথে থাকি। যখন সে আমাকে মনে মনে স্মরণ করে আমিও তাকে মনে মনে স্মরণ করি। আর যদি সে জামাতবদ্ধ ভাবে আমাকে স্মরণ করে তাহলে আমি এর চেয়েও উত্তম জামাত (ফেরেশ্তাদের মাঝে) স্মরণ করে থাকি যা তার জামায়াত থেকে উত্তম। আর সে যদি আমার দিকে এক বিঘত এগিয়ে আসে তাহলে আমি তার দিকে এক হাত এগিয়ে যাই। আর যদি সে আমার দিকে এক হাত এগিয়ে আসে তাহলে আমি তার দিকে এক গজ পরিমাণ অগ্রসর হই। আর বান্দা যদি আমার দিকে হেটে হেটে অগ্রসর হয় তাহলে আমি তার দিকে দৌড়ে দৌড়ে অগ্রসর হই। (বুখারী, হাদীস নং ৭৪০৫)

إِنَّ الصَّفَا وَ الْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ اَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ اَنْ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا ؕ وَ مَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِيْمٌ ﴿١٥٨﴾

১৫৮. নিশ্চয় 'সাফা' ও 'মারওয়া' আল্লাহর নিদর্শন সমূহের অন্তর্গত, অতএব যে ব্যক্তি এই গৃহের 'হজ্জ' অথবা 'উমরা' করে তার জন্যে এতদুভয়ের প্রদক্ষিণ করা দোষণীয় নয়, এবং কোন ব্যক্তি স্বেচ্ছায় সৎকর্ম করলে আল্লাহ গুণগ্রাহী, সর্বজ্ঞাত।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَاۤ اَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالْهُدٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِى الْكِتٰبِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَ ﴿١٥٩﴾

১৫৯. আমি যেসব উজ্জ্বল নিদর্শন ও পথ-নির্দেশ অবতীর্ণ করেছি, আমি ঐ গুলোকে সর্ব সাধারণের নিকট প্রকাশ করার পরও যারা ঐসব বিষয়কে গোপন করে, আল্লাহ তাদেরকে অভিসম্পাত করেন এবং অভিসম্পাত কারীগণও তাদেরকে অভিসম্পাত করে থাকে।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَ بَيَّنُوْا فَاُولٰٓئِكَ اَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَاَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦٠﴾

১৬০. কিন্তু যারা তওবা করে ও সংশোধন করে নেয় এবং সত্য প্রকাশ করে, বস্তুতঃ আমি তাদের প্রতি ক্ষমা দানকারী এবং আমি তওবা কবূলকারী, করুণাময়।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٦١﴾

১৬১. যারা অবিশ্বাস করেছে ও অবিশ্বাসী অবস্থায় মৃত্যুবরণ করেছে, নিশ্চয় তাদের উপর আল্লাহর, ফেরেশতাগণের ও মানবকুলের সবারই অভিসম্পাত।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿١٦٢﴾

১৬২. সেখানে তারা চিরকাল অবস্থান করবে, তাদের শাস্তি প্রশমিত হবে না এবং তাদেরকে অবকাশ দেয়া যাবে না।

وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦٣﴾

১৬৩. এবং তোমাদের মা'বূদ একমাত্র আল্লাহ; সেই সর্ব প্রদাতা করুণাময় ব্যতীত অন্য কোন সত্য মা'বূদ নেই।

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ وَتَصْرِيفِ الرِّيَاحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٦٤﴾

১৬৪. নিশ্চয় নভোমন্ডল ও ভূমন্ডল সৃষ্টিতে, দিন ও রাতের পরিবর্তনে, জাহাজসমূহের চলাচলে– যা মানুষের লাভজনক এবং সম্ভার নিয়ে সমুদ্রে চলাচল করে, আল্লাহ আকাশ হতে বৃষ্টি বর্ষণ দ্বারা পৃথিবীকে মৃত্যুর পর পুনর্জীবিত করেন তাতে, প্রত্যেক জীবজন্তুর বিস্তার করেন তাতে, বায়ুরাশির গতি পরিবর্তনে এবং আকাশ ও পৃথিবীর মধ্যস্থ নিয়ন্ত্রিত মেঘমালায় সত্য জ্ঞানবান সম্প্রদায়ের জন্যে নিদর্শন রয়েছে।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَتَّخِذُ مِنْ دُونِ اللّٰهِ أَنْدَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِلّٰهِ ۗ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا إِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيعًا وَأَنَّ اللّٰهَ شَدِيدُ الْعَذَابِ ﴿١٦٥﴾

১৬৫. এবং মানবমন্ডলীর মধ্যে এরূপ কিছু লোক আছে– যারা আল্লাহর মোকাবেলায় অপরকে সমকক্ষ স্থির করে, আল্লাহকে ভালবাসার ন্যায় তারা তাদেরকে ভালবেসে থাকে এবং যারা বিশ্বাস স্থাপন করেছে– আল্লাহর প্রতি তাদের ভালবাসা দৃঢ়তর এবং যারা অত্যাচার করেছে তারা যদি শাস্তি অবলোকন করতো, তবে বুঝতো যে, সমুদয় শক্তি আল্লাহর জন্যে এবং নিশ্চয় আল্লাহ শাস্তি দানে কঠোর।[১]

إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتُّبِعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا وَرَأَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ ﴿١٦٦﴾

১৬৬. যখন অনুসরণীয় নেতারা অনুসারীদেরকে প্রত্যাখ্যান করবে এবং তারা শাস্তি প্রত্যক্ষ করবে ও তাদের সমস্ত সম্বন্ধ বিচ্ছিন্ন হয়ে যাবে।

১। আব্দুল্লাহ্ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) একটি কথা বলেছেন এবং আমি (তার বিপরীত) আরেকটি কথা বলছি। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেনঃ যে, আল্লাহ্ ব্যতীত অন্য কাউকে ডাকা অবস্থায় এবং তাকে আল্লাহ্র সমকক্ষ মনে করা অবস্থায় (শিরক করে) মারা গেল সে জাহান্নামে প্রবেশ করবে। এবং আমি বলছি যে, আল্লাহ্র সাথে কাউকে না ডেকে বা সমকক্ষ মনে না করে মৃত্যুবরণ করল সে জান্নাতে প্রবেশ করবে। (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৯৭)

وَقَالَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ النَّارِ ﴿١٦٧﴾

১৬৭. অনুসরণকারীরা বলবেঃ যদি আমরা ফিরে যেতে পারতাম তবে তারা যেরূপ আমাদেরকে প্রত্যাখ্যান করেছে আমরাও তদ্রূপ তাদেরকে প্রত্যাখ্যান করতাম; এভাবে আল্লাহ তাদের কৃতকর্মসমূহ তৎপ্রতি দুঃখজনকভাবে প্রদর্শন করাবেন এবং তারা জাহান্নাম হতে উদ্ধার পাবে না।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِى الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٦٨﴾

১৬৮. হে মানবগণ! পৃথিবীর মধ্যে যা বৈধ-পবিত্র, তা হতে ভক্ষণ কর এবং শয়তানের পদাঙ্ক অনুসরণ করো না, নিশ্চয় সে তোমাদের প্রকাশ্য শত্রু।

اِنَّمَا يَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْٓءِ وَالْفَحْشَآءِ وَاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦٩﴾

১৬৯. সে তো কেবল তোমাদেরকে মন্দ ও অশ্লীল কার্যের এবং আল্লাহ সম্বন্ধে তোমরা জান না এমন সব বিষয় বলার নির্দেশ দেয়।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَاۤ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿١٧٠﴾

১৭০. এবং যখন তাদেরকে বলা হয় যে, আল্লাহ যা অবতীর্ণ করেছেন তার অনুসরণ কর; তখন তারা বলে– বরং আমরা তারই অনুসরণ করবো যার উপর আমাদের পিতৃপুরুষগণকে পেয়েছি; যদিও তাদের পিতৃ-পুরুষদের কোনই জ্ঞান ছিল না এবং তারা সুপথগামী ছিল না তবুও?

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا كَمَثَلِ الَّذِىْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَآءً وَّنِدَآءً ؕ صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٧١﴾

১৭১. আর যারা অবিশ্বাস করেছে তাদের দৃষ্টান্ত ওদের ন্যায়। যেমন কেউ আহ্বান করলে শুধু চিৎকার ও ধ্বনি ব্যতীত আর কিছুই শুনে না; তারা বধির, মূক, অন্ধ, কাজেই তারা বুঝতে পারে না।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ

১৭২. হে বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ! আমি তোমাদেরকে যা উপজীবিকা

مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١٧٢﴾

স্বরূপ দান করেছি সেই পবিত্র বস্তুসমূহ ভক্ষণ কর এবং আল্লাহর নিকট কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর যদি তোমরা তাঁরই উপাসনা করে থাকো।[১]

اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٧٣﴾

১৭৩. তিনি শুধু তোমাদের জন্যে মৃত জীব, রক্ত (প্রবাহিত রক্ত), শূকরের মাংস এবং যা আল্লাহ ব্যতীত অপরের উদ্দেশ্যে উৎসর্গিত তা হারাম করেছেন; কিন্তু যে ব্যক্তি নিরুপায়; (হারামের প্রতি) ইচ্ছুক নয় এবং তা ভক্ষণের ক্ষেত্রে) সীমালঙ্ঘনকারী নয়, তার জন্যে পাপ নেই এবং নিশ্চয় আল্লাহ ক্ষমাশীল, করুণাময়।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۙ اُولٰٓئِكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ اِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٤﴾

১৭৪. নিশ্চয় আল্লাহ যা গ্রন্থে অবতীর্ণ করেছেন তা যারা গোপন করে ও তৎপরিবর্তে নগণ্য মূল্য গ্রহণ করে, নিশ্চয় তারা স্ব-স্ব উদরে অগ্নি ছাড়া অন্য কিছু ভক্ষণ করে না এবং কিয়ামত দিবসে আল্লাহ তাদের সাথে কথা বলবেন না, তাদেরকে পবিত্র করবেন না এবং তাদের জন্যে রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

১। আমের থেকে বর্ণিত, তিনি নুমান ইবনে বাশীর থেকে বর্ণনা করেন। নুমান ইবনে বাশীর বলেনঃ আমি রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি, হালাল সুস্পষ্ট এবং হারামও সুস্পষ্ট। আর এ দু'য়ের মাঝখানে রয়েছে অস্পষ্ট বিষয়গুলো যা অনেকে জানেনা। অতএব যে ব্যক্তি নিজকে সন্দেহজনক বিষয় থেকে রক্ষা করল, সে নিজের দ্বীনকে এবং সম্মানকে রক্ষা করল। আর যে ব্যক্তি সন্দেহজনক বিষয়ে নিপতিত হল তার উদাহরণ হল ঐ রাখালের ন্যায় যে, নিষিদ্ধ চারণ ভূমির চারপাশে (পশু) চরায়। আর সম্ভাবনা আছে যে কোন সময় সে তার মধ্যে (নিষিদ্ধ সীমায়) প্রবেশ করতে পারে। সাবধান! প্রত্যেক রাজারই সংরক্ষিত এলাকা থাকে। আর আল্লাহ্র সংরক্ষিত এলাকা হচ্ছে হারাম বিষয়াদি। জেনে রেখ, শরীরের মধ্যে একটি মাংশ পিন্ড আছে, যখন তা ঠিক থাকে তখন সমস্ত শরীর ঠিক থাকে। আর যখন তা নষ্ট হয়ে যায় তখন সমস্ত দেহটাই নষ্ট হয়ে যায়। আর তা হল ক্বলব (হৃৎপিন্ড)। (বুখারী, হাদীস নং ৫২)

أُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَٰلَةَ بِالْهُدَىٰ وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَآ أَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿١٧٥﴾

১৭৫. তারাই সুপথের বিনিময়ে কুপথ এবং ক্ষমার পরিবর্তে শাস্তি ক্রয় করেছে, অতঃপর জাহান্নাম (এর আযাব) কিরূপে সহ্য করবে?

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ نَزَّلَ الْكِتَٰبَ بِالْحَقِّ ۗ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِي الْكِتَٰبِ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ﴿١٧٦﴾

১৭৬. এ জন্যেই আল্লাহ সত্যসহ গ্রন্থ অবতীর্ণ করেছেন এবং যারা গ্রন্থ সম্বন্ধে বিরোধ করে, বাস্তবিকই তারাই বিরুদ্ধাচরণে সুদূরগামী।

لَّيْسَ الْبِرَّ أَن تُوَلُّوا وُجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلَٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَٰٓئِكَةِ وَالْكِتَٰبِ وَالنَّبِيِّينَ ۚ وَآتَى الْمَالَ عَلَىٰ حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَٰمَىٰ وَالْمَسَٰكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ وَالسَّآئِلِينَ وَفِي الرِّقَابِ ۚ وَأَقَامَ الصَّلَوٰةَ وَآتَى الزَّكَوٰةَ ۚ وَالْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ إِذَا عَٰهَدُوا ۚ وَالصَّٰبِرِينَ فِي الْبَأْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِينَ الْبَأْسِ ۗ أُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا ۖ وَأُولَٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿١٧٧﴾

১৭৭. তোমরা তোমাদের মুখমন্ডল পূর্ব বা পশ্চিম দিকে প্রত্যাবর্তিত কর তাতে পুণ্য নেই; বরং পুণ্য তার, যে ব্যক্তি আল্লাহ, পরকাল, ফেরেশতা-গণ, কিতাব ও নবীগণের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করে এবং তাঁরই ভালবাসা অর্জনের জন্য আত্মীয়-স্বজন, পিতৃহীনগণ, দরিদ্রগণ, পথিকগণ ও ভিক্ষুকদেরকে এবং দাসত্ব মোচনের জন্যে ধন-সম্পদ দান করে, আর নামায প্রতিষ্ঠিত করে ও যাকাত প্রদান করে এবং অঙ্গীকার করলে যারা সেই অঙ্গীকার পূর্ণকারী হয় এবং যারা অভাবে ও ক্লেশে এবং যুদ্ধকালে ধৈর্যশীল তারাই সত্যপরায়ণ এবং তারাই আল্লাহ ভীরু।

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلَى ۖ الْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْأُنثَىٰ بِالْأُنثَىٰ ۚ فَمَنْ عُفِيَ لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ وَأَدَآءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَٰنٍ ۗ ذَٰلِكَ تَخْفِيفٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ۗ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ

১৭৮. হে বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ! নিহতগণের সম্বন্ধে তোমাদের জন্যে প্রতিশোধ গ্রহণ বিধিবদ্ধ হলো; স্বাধীনের পরিবর্তে স্বাধীন, দাসের পরিবর্তে দাস এবং নারীর পরিবর্তে নারী; কিন্তু যদি কেউ তার ভাই কর্তৃক কোন বিষয়ে ক্ষমা প্রাপ্ত হয়, তবে যেন ন্যায় সঙ্গতভাবে তাগাদা করে এবং সদ্ভাবে তা পরিশোধ করে;

فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٨﴾

এটা তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে লঘু বিধান ও করুণা; অতঃপর যে কেউ সীমালঙ্ঘন করবে তার জন্যে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি রয়েছে।

وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٩﴾

১৭৯. হে জ্ঞানবান লোকেরা! কিসাস (প্রতিশোধ) গ্রহণে তোমাদের জন্যে জীবন আছে– যেন তোমরা আল্লাহ ভীরু হও।

كُتِبَ عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرًا ۖ الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَ الْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٨٠﴾

১৮০. যখন তোমাদের কারও মৃত্যু নিকটবর্তী বলে মনে হয়, তখন সে যদি ধন-সম্পত্তি ছেড়ে যায় তবে পিতা-মাতা ও আত্মীয়-স্বজনের জন্যে বৈধভাবে অসিয়ত করা তোমাদের জন্যে বিধিবদ্ধ হলো, আল্লাহ ভীরুদের জন্য এটা অবশ্যকরণীয়।

فَمَنْ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَآ اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٨١﴾

১৮১. অতঃপর যে ব্যক্তি শুনার পর তা পরিবর্তন করে, তবে এর পাপ তাদেরই হবে, যারা একে পরিবর্তন করবে; নিশ্চয়ই আল্লাহ শ্রবণকারী, মহাজ্ঞানী।

فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٨٢﴾

১৮২. অনন্তর যদি কেউ অসিয়ত-কারীর পক্ষে পক্ষপাতিত্ব বা পাপের আশঙ্কা করে তাদের মধ্যে মীমাংসা করে দেয়, তবে তার পাপ নেই; নিশ্চয়ই আল্লাহ ক্ষমাশীল করুণাময়।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٨٣﴾

১৮৩. হে বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ! তোমাদের পূর্ববর্তী লোকদের ন্যায় তোমাদের উপরও রোযাকে অপরিহার্য কর্তব্যরূপে নির্ধারিত করা হলো যেন তোমরা আল্লাহভীতি অর্জন করতে পারো।

اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ وَعَلَى الَّذِيْنَ يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ؕ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ؕ وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٤﴾

১৮৪. এটা নির্দিষ্ট কয়েক দিনের জন্য সুতরাং তোমাদের মধ্যে যে কেউ অসুস্থ কিংবা মুসাফির হয়, তার জন্যে অপর কোন দিবস হতে গণনা করবে; আর যারা সক্ষম তারা তৎপরিবর্তে একজন দরিদ্রকে খাদ্য দান করবে; তবে যে ব্যক্তি স্বেচ্ছায় সৎকর্ম করে তার জন্যে কল্যাণ এবং তোমরা যদি বুঝে থাকো তবে রোযা রাখাই তোমাদের জন্যে কল্যাণকর।

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ؕ وَمَنْ كَانَ مَرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ يُرِيْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ۫ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٨٥﴾

১৮৫. রমযান মাস, যার মধ্যে বিশ্বমানবের জন্য পথ প্রদর্শক এবং সু-পথের উজ্জ্বল নিদর্শন ও (হক ও বাতিলের) প্রভেদকারী কুর'আন অবতীর্ণ করা হয়েছে, অতএব তোমাদের মধ্যে যে ব্যক্তি এ মাস পাবে, সে যেন রোযা রাখে এবং যে ব্যক্তি অসুস্থ বা মুসাফির তার জন্যে অপর কোন দিন হতে গণনা করবে; তোমাদের পক্ষে যা সহজ আল্লাহ তাই চান ও তোমাদের পক্ষে যা কষ্টকর তা তিনি চান না এবং যেন তোমরা নির্ধারিত সংখ্যা পূরণ করে নিতে পার এবং তোমাদেরকে যে সুপথ দেখিয়েছেন, তজ্জন্যে তোমরা আল্লাহ্‌র বড়ত্ব বর্ণনা কর এবং যেন তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।[১]

১। (ক) ত্বালহা ইবনে উবাইদুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, একদা চুল এলোমেলো এক বেদুঈন রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট এসে বলল, ইয়া রাসূলাল্লাহ! আমাকে বলুন আল্লাহ্ আমার প্রতি কত ওয়াক্ত নামায ফরয করেছেন? তিনি বললেন পাঁচ ওয়াক্ত নামায; কিন্তু যদি তুমি নফল পড় তবে স্বতন্ত্র কথা। অতঃপর সে বললঃ আমাকে বলুন আল্লাহ্ আমার প্রতি কতটি রোযা ফরয করেছেন? তিনি বললেন পুরা রমযান মাসের রোযা রাখা; কিন্তু যদি তুমি নফল রাখ তা অন্য কথা। অতঃপর সে বললঃ আমাকে বলুনঃ আল্লাহ্ আমার উপর কি পরিমাণ যাকাত ফরজ করেছেন? রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তাকে ইসলামী শরীয়ত (ইসলামী জীবন বিধান) সম্পর্কে অবগত করালেন। সে বললঃ ঐ

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ﴿١٨٦﴾

১৮৬. এবং যখন আমার বান্দাগণ আমার সম্বন্ধে তোমাকে জিজ্ঞাসা করে, তখন তাদেরকে বলে দাওঃ নিশ্চয় আমি সন্নিকটবর্তী; কোন আহ্বানকারী যখনই আমাকে আহ্বান করে তখনই আমি তার আহ্বানে

সত্বার কসম! যিনি আপনাকে সম্মানিত করেছেন। আল্লাহ্ আমার উপর যা ফরজ করেছেন তার চাইতে আমি বেশীও করব না এবং কমও করব না। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ যদি সে সত্যবাদী হয় তাহলে নাজাত প্রাপ্ত অথবা বললেন যদি সে সত্যবাদী হয় তাহলে সে জান্নাত লাভ করল। (বুখারী, হাদীস নং ১৮৯১)

(খ) আবূ হুরাইরা রাযিআল্লাহু আনহু থেকে বর্ণিত, তিনি বলেছেন নিশ্চয়ই রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ রোযা (গোনাহ হতে রক্ষার জন্য) ঢাল স্বরূপ, সুতরাং রোযাদার অশ্লীল কথা বলবেনা, জাহেলী আচরণ করবে না।। আর কোন ব্যক্তি যদি তার সাথে মারামারি করতে চায়, গালমন্দ করে তাহলে সে যেন দু'বার বলে (দেখুন) আমি রোযাদার। ঐ সত্যার কসম যার হাতে আমার প্রাণ অবশ্যই রোযাদারের মুখের গন্ধ আল্লাহ্র নিকট মেসক্ আম্বরের চেয়েও উৎকৃষ্ট। সে খানা-পিনা এবং কামভাবকে আমার সন্তুষ্টি অর্জনের জন্য পরিত্যাগ করে থাকে। রোযা আমার জন্য এবং আমি নিজে তার প্রতিদান দিব। আর নেক কাজের পুরস্কার দশগুণ পর্যন্ত (নূন্যপক্ষে) দেয়া হয়ে থাকে। (বুখারী, হাদীস নং ১৮৯৪)

(গ) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি মিথ্যা কথা এবং তদানুযায়ী আমল করা পরিত্যাগ করতে পারলনা, তার খানা-পিনা পরিত্যাগ করার মধ্যে (রোযা রাখা) আল্লাহর কোন প্রয়োজন নেই। (বুখারী, হাদীস নং ১৯০৩)

(ঘ) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ নিশ্চয়ই আল্লাহ্ তা'আলা বলেনঃ যে ব্যক্তি আমার ওলীর সাথে শত্রুতা পোষণ করবে, আমি তার বিরুদ্ধে অবশ্যই যুদ্ধ ঘোষণা করব। আমি যা কিছু আমার বান্দার ওপর ফরয করে দিয়েছি তার চেয়ে এমন কোন কিছু নাই যে সে তার মাধ্যমে আমার নৈকট্য লাভ করতে পারবে যা আমার নিকট অধিক প্রিয়।* আমার বান্দাগণ সর্বদা নফল ইবাদতের মাধ্যমে আমার নৈকট্য লাভ করবে। এমন কি অবশেষে আমি তাকে ভালবেসে ফেলি। (আর আমি যখন তাকে ভালবাসি) তখন আমি তার কান হয়ে যাই যা দিয়ে সে শ্রবণ করে এবং আমি তার চোখ হয়ে যাই, যা দিয়ে সে দেখে এবং আমি তার হাত হয়ে যাই, যা দিয়ে সে স্পর্শ করে। এবং আমি তার পা হয়ে যাই, যার সাহায্যে সে চলাফেরা করে। এবং সে যখন আমার নিকট কিছু প্রার্থনা করে তখন অবশ্যই আমি তাকে দেই। এবং সে যদি আমার নিকট আশ্রয় প্রার্থনা করে তাহলে অবশ্যই আমি তাকে আশ্রয় দেই। আমার কোন কাজে আমি এতটা ইতস্ততা বোধ করিনা যতটা ইতস্ততা বোধ করি একজন মুমিনের জীবন সম্পর্কে। কেননা সে মৃত্যুকে অপছন্দ মনে করে অথচ আমি তার বেঁচে থাকাকে অপছন্দ করি। (বুখারীঃ ৬৫০২)

*** টীকাঃ** (আল্লাহ্ পাক বলেন আমার বান্দাহ যে সমস্ত ইবাদতের মাধ্যমে আমার নৈকট্য লাভ করে থাকে সে সমস্ত ইবাদতের মধ্যে আমি তাদের প্রতি যা ফরয করে দিয়েছি তা ছাড়া অন্য কোন ইবাদত নেই যা আমার নিকট অধিক প্রিয়। অর্থাৎ ফরয আল্লাহ্র নিকট 'সবচেয়ে অধিক প্রিয়'। যেমন নামায, রোজা, হজ্জ ও যাকাত ইত্যাদি এবং আমার বান্দাহ ফরয পালন করার পর নফল ইবাদতের মাধ্যমে আল্লাহ্র এত নিকটবর্তী হয়ে যায় যে, তিনি তাকে ভালবাসতে থাকেন।

সাড়া দিয়ে থাকি; সুতরাং তারাও যেন আমার ডাকে সাড়া দেয় এবং আমাকে বিশ্বাস করে, তা হলেই তারা সঠিক পথে চলতে পারবে।

أُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ إِلَىٰ نِسَائِكُمْ ۚ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَأَنتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ۗ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ كُنتُمْ تَخْتَانُونَ أَنفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنكُمْ ۖ فَالْآنَ بَاشِرُوهُنَّ وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ ۚ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۖ ثُمَّ أَتِمُّوا الصِّيَامَ إِلَى اللَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوهُنَّ وَأَنتُمْ عَاكِفُونَ فِي الْمَسَاجِدِ ۗ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَقْرَبُوهَا ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٨٧﴾

১৮৭. রোযার রজনীতে আপন স্ত্রীদের সাথে সহবাস করা তোমাদের জন্যে বৈধ করা হয়েছে; তারা তোমাদের জন্যে আবরণ এবং তোমরা তাদের জন্যে আবরণ, তোমরা যে আত্ম প্রতারণা করছিলে, আল্লাহ তা পরিজ্ঞাত আছেন, এ জন্যে তিনি তোমাদেরকে ক্ষমা করলেন এবং তোমাদের (অব্যাহতি দিয়েছেন); অতএব এক্ষণে তোমরা (রোযার রাত্রেও) তাদের সাথে সহবাস কর এবং আল্লাহ তোমাদের জন্যে যা লিপিবদ্ধ করেছেন তা অনুসন্ধান কর এবং সকালে কালো সুতা হতে সাদা সুতা প্রকাশিত হওয়া পর্যন্ত তোমরা খাও ও পান কর; অতঃপর রাত্রি সমাগম পর্যন্ত তোমরা রোযা পূর্ণ কর; তোমরা মসজিদে ই'তেকাফ করবার সময় তাদের (স্ত্রীদের) সাথে মিলন করো না; এটাই আল্লাহর সীমা, অতএব তোমরা তার নিকটেও যাবে না; এভাবে আল্লাহ মানবমন্ডলীর জন্যে তাঁর নিদর্শনসমূহ বর্ণনা করেন, যেন তারা আল্লাহ ভীরু হয়।

وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوا بِهَا إِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا فَرِيقًا مِّنْ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٨﴾

১৮৮. এবং তোমরা নিজেদের মধ্যে পরস্পরের ধনসম্পত্তি অন্যায়রূপে গ্রাস করো না এবং তা বিচারকের নিকট এ জন্যে উপস্থাপিত করো না, যাতে তোমরা জ্ঞাতসারে লোকের

ধনের অংশ অন্যায়ভাবে গ্রাস করতে পারো।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ ؕ قُلْ هِيَ مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ؕ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِاَنْ تَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِهَا وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰى ۚ وَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٨٩﴾

১৮৯. তারা তোমাকে নতুন চাঁদসমূহ সম্বন্ধে জিজ্ঞেস করছে, তুমি বলঃ এগুলো হচ্ছে জনসমাজের এবং হজ্জের জন্যে সময় নিরূপক; আর (ঐ হজ্জের চাঁদে) তোমরা যে পশ্চাৎদিক দিয়ে গৃহে সমাগত হও, এটা পুণ্য কর্ম নয়, বরং পুণ্যের কাজ হল যে, কোন ব্যক্তি আল্লাহ ভীরু হয় এবং তোমরা গৃহসমূহের দরজা দিয়ে প্রবেশ কর এবং আল্লাহকে ভয় কর, তোমরা অবশ্যই সুফল প্রাপ্ত হবে।

وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿١٩٠﴾

১৯০. এবং যারা তোমাদের সাথে যুদ্ধ করে, তোমরাও তাদের সাথে আল্লাহর পথে যুদ্ধ কর[১] এবং সীমা অতিক্রম করো না; নিশ্চয়ই আল্লাহ সীমা লঙ্ঘনকারীদের ভালবাসেন না।

وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ؕ كَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩١﴾

১৯১. তাদেরকে যেখানেই পাও, হত্যা কর এবং তারা তোমাদেরকে যেখান হতে বহিষ্কৃত করেছে, তোমরাও তাদেরকে সেখান হতে বহিষ্কৃত কর এবং হত্যা অপেক্ষা ফেত্না-ফাসাদ (কুফর ও শিরক) গুরুতর অপরাধ এবং তোমরা তাদের সাথে মসজিদুল হারামের নিকট যুদ্ধ

১। আবূ আমর আস সাইবানী থেকে বর্ণিত তিনি বলেন, আব্দুল্লাহ্ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেনঃ আমি রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে জিজ্ঞেস করলাম যে, ইয়া রাসূলাল্লাহ সর্বোত্তম আমল কোনটি? তিনি বললেনঃ সময়মত নামায পড়া। আমি বললাম এরপর কোনটি? তিনি বললেনঃ পিতা-মাতার প্রতি সদ্ব্যবহার করা। আমি বললাম এরপর কোনটি? তিনি বললেনঃ আল্লাহ্র পথে জিহাদ করা। অতঃপর আমি রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে আর কোন কিছু জিজ্ঞেস করা থেকে বিরত থাকলাম। আমি যদি তাকে আরো অধিক কোন কিছু জিজ্ঞেস করতাম তবে তিনিও আমাকে তার উত্তর দিতেন। (বুখারী, হাদীস নং ২৭৮২)

করো না; যে পর্যন্ত না তারা তোমাদের সাথে তন্মধ্যে যুদ্ধ করে; কিন্তু যদি তারা তোমাদের সাথে যুদ্ধ করে তবে তোমরাও তাদেরকে হত্যা কর; অবিশ্বাসীদের জন্যে এটাই প্রতিফল।

فَإِنِ انْتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٩٢﴾

১৯২. অতঃপর যদি তারা নিবৃত্ত হয় তবে নিশ্চয়ই আল্লাহ ক্ষমাশীল, করুণাময়।

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ لِلَّهِ ۖ فَإِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿١٩٣﴾

১৯৩. ফেত্না-ফাসাদ দূরীভূত হয়ে আল্লাহর দীন প্রতিষ্ঠিত না হওয়া পর্যন্ত তোমরা তাদের সাথে যুদ্ধ কর; অতঃপর যদি তারা নিবৃত্ত হয়, তবে অত্যাচারীদের উপর ব্যতীত বাড়বাড়ি নেই।[২]

১। আবূ বাকরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত তিনি বলেনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) (বিদায় হজ্জে) কোরবানীর দিন (মিনায়) খুত্বা অবস্থায় তিনি বললেনঃ তোমরা কি জান এটি কোন দিন? আমরা সবাই বললাম (সাহাবাগণ) আল্লাহ্ এবং তাঁর রাসূল সর্বাধিক অবগত। রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) কিছুক্ষণ চুপ থাকলেন। আমরা ভাবতেছিলাম হয়ত তিনি এদিনকে অন্য কোন নামে আখ্যায়িত করবেন। তিনি বললেনঃ এটা কি কোরবানীর দিন নয়? আমরা বললাম হ্যাঁ। তিনি বললেন এটি কোন মাস? আমরা বললামঃ আল্লাহ্ এবং তাঁর রাসূল সর্বাধিক অবগত। তিনি কিছুক্ষণ চুপ থাকলেন। আমরা ভাবতেছিলাম হয়ত তিনি এদিনটিকে অন্য কোন নামে নামকরণ করবেন। তিনি বললেনঃ এটা কি যিলহজ্জ মাস নয়? আমরা বললাম হ্যাঁ, তিনি বললেনঃ এটা কোন শহর? আমরা বললাম আল্লাহ্ এবং তাঁর রাসূল সর্বাধিক অবগত। তিনি কিছুক্ষণ চুপ থাকলেন, আমরা ভাবতেছিলাম যে, তিনি হয়ত তাকে অন্য কোন নামে আখ্যায়িত করবেন। তিনি বললেন, এটা কি হারাম শহর নয়? আমরা বললাম হ্যাঁ। (আদব ও সম্মানের মাস এখানে কাউকে মারা এবং কষ্ট দেয়া হারাম) তিনি বললেন, নিশ্চয়ই তোমাদের রক্ত, তোমাদের সম্পদ, এবং তোমাদের মান-ইজ্জত তেমনি হারাম যেমন তোমাদের আজকের এইদিন তোমাদের এই মাস তোমাদের এই শহর হারাম। আর এটি তোমরা তোমাদের প্রভুর সাথে সাক্ষাত করা পর্যন্ত বলবৎ থাকবে। হুশিয়ার হও! আমি কি আমার দায়িত্ব যথাযথভাবে পালন করেছি? উপস্থিত সবাই বলল (সাহাবাগণ) হ্যাঁ। তিনি বললেনঃ হে আল্লাহ্! তুমি সাক্ষি থাক। তোমরা যারা উপস্থিত আছ তারা অনুপস্থিতদেরকে এ সংবাদ পৌছিয়ে দিবে। কখনো এমন হতে পারে যে, প্রচারকারীর চাইতে-অনেক শ্রবণকারী অধিক সংরক্ষণকারী হতে পারে। আমার পরে পরস্পরে মারামারি করে কাফের হয়ে যেও না। (বুখারী, হাদীস নং ১৭৪১)

২। ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত নিশ্চয়ই রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আমি আদিষ্ট হয়েছি, যেন আমি লোকদের সাথে ততক্ষণ পর্যন্ত জিহাদ করি যতক্ষণ পর্যন্ত তারা এ সাক্ষী না দেয় যে আল্লাহ্ ব্যতীত সত্য কোন মা'বূদ নেই এবং নিশ্চয়ই মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আল্লাহ্র রাসূল এবং নামায প্রতিষ্ঠা করবে, যাকাত প্রদান করবে। যখন তারা তা করবে, তখন

اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩٤﴾

১৯৪. নিষিদ্ধ মাসের পরিবর্তে নিষিদ্ধ মাস এবং নিষিদ্ধ মাসেও বদলার ব্যবস্থা বের হবে ঐ অবস্থায় যদি কেউ তোমাদের প্রতি অত্যাচার করে, তবে সে তোমাদের প্রতি যেরূপ অত্যাচার করবে, তোমরাও তার প্রতি সেরূপ অত্যাচার কর এবং আল্লাহকে ভয় কর ও জেনে রেখো যে, আল্লাহ মুত্তাকীদের সাথে রয়েছেন।

وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛۚ وَاَحْسِنُوْا ۛۚ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٩٥﴾

১৯৫. এবং তোমরা আল্লাহর পথে ব্যয় কর এবং স্বীয় হাত ধ্বংসের দিকে প্রসারিত করো না এবং হিতসাধন করতে থাকো, নিশ্চয় আল্লাহ হিতসাধন-কারীদেরকে ভালবাসেন।

وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ؕ فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهٗ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ بِهٖٓ اَذًى مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ اَوْ صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ ۪ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ اِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ اِذَا رَجَعْتُمْ ؕ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ

১৯৬. তোমরা আল্লাহর উদ্দেশ্যে হজ্জ ও উমরাহ সম্পূর্ণ কর; কিন্তু তোমরা যদি বাধাপ্রাপ্ত হও তবে যা সহজ প্রাপ্য তাই কুরবানী কর এবং কুরবানীর জন্তুগুলো স্বস্থানে না পৌঁছা পর্যন্ত তোমাদের মস্তক মুন্ডন করো না; কিন্তু কেউ যদি তোমাদের মধ্যে রোগাক্রান্ত হয় বা তার মস্তক যন্ত্রণাগ্রস্ত হয়, তবে সে রোযা, কিংবা সাদকা অথবা কুরবানী দ্বারা ওর বিনিময় করবে, অতঃপর যখন তোমরা নিরাপদ অবস্থায় থাকো, তখন যে ব্যক্তি হজ্জের সাথে উমরারও ফলভোগ কামনা করে তবে যা সহজ প্রাপ্য তাই কুরবানী করবে;

তারা আমার পক্ষ থেকে তাদের জান-মাল রক্ষার অধিকার লাভ করবে। অবশ্য ইসলামের বিধান লঙ্ঘন করার কারণে শাস্তি পাবে। (যেমন চুরি, ব্যভিচার, হত্যা ইত্যাদি) এবং তাদেরকে আল্লাহ্‌র নিকট হিসাব দিতে হবে। [১] (বুখারীঃ ২৫)

اَهْلُهٗ حَاضِرِى الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١٩٦﴾

কিন্তু কেউ যদি তা না পায় তবে হজ্জের সময় তিন দিন এবং যখন তোমরা প্রত্যাবর্তিত হও তখন সাত দিন এই পূর্ণ দশ দিন রোযা রাখবে; এটা তারই জন্যে-যার পরিজন মসজিদুল হারামে উপস্থিত না থাকে এবং আল্লাহকে ভয় কর ও জেনে রেখো যে আল্লাহ কঠিন শাস্তি দাতা।[১]

اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوْقَ ۙ وَلَا جِدَالَ فِى الْحَجِّ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ؕ وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ۫ وَاتَّقُوْنِ يٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿١٩٧﴾

১৯৭. হজ্জের মাসগুলো নির্ধারিত; অতএব কেউ যদি ঐ মাসগুলোর মধ্যে হজ্জের সংকল্প করে, তবে সে হজ্জের মধ্যে সহবাস, দুষ্কার্য ও কলহ করতে পারবে না এবং তোমরা যে কোন সৎকর্ম কর না কেন, আল্লাহ তা পরিজ্ঞাত আছেন; আর তোমরা (নিজেদের) পাথেয় সঞ্চয় করে নাও; বস্তুতঃ নিশ্চিত উৎকৃষ্টতম পাথেয় হচ্ছে আল্লাহভীতি এবং হে জ্ঞানবানগণ! তোমরা আমাকে ভয় কর।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ فَاِذَآ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۪ وَاذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ۚ وَاِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿١٩٨﴾

১৯৮. তোমরা স্বীয় প্রতিপালকের অনুগ্রহ লাভের চেষ্টা করলে তাতে তোমাদের পক্ষে কোন অপরাধ নেই; অতঃপর যখন তোমরা আরাফাত হতে প্রত্যাবর্তিত হও তখন পবিত্র (মাশয়ারে হারাম) স্মৃতি-স্থানের নিকট আল্লাহকে স্মরণ কর এবং তিনি তোমাদেরকে যেরূপ নির্দেশ দিয়েছেন তদ্রূপ তাঁকে স্মরণ করো এবং নিশ্চয় তোমরা এর পূর্বে বিভ্রান্ত দের অন্তর্গত ছিলে।

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, নিশ্চয়ই রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ এক উমরা থেকে অপর উমরা মধ্যবর্তী গোনাহসমূহের জন্য কাফ্ফারা আর মাকবুল হজ্জের প্রতিদান জান্নাত ব্যতীত আর কিছুই নয়। (বুখারী, হাদীস নং ১৭৭৩)

ثُمَّ اَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٩٩﴾

১৯৯. অতঃপর যেখান হতে লোক প্রত্যাবর্তন করে, তোমরাও সেখান থেকে প্রত্যাবর্তন কর এবং আল্লাহর নিকট ক্ষমা প্রার্থনা কর; নিশ্চয় আল্লাহ ক্ষমাশীল, করুণাময়।

فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا ؕ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا وَمَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ﴿٢٠٠﴾

২০০. অনন্তর যখন তোমরা তোমাদের (হজ্জের) অনুষ্ঠানগুলো সম্পন্ন করে ফেলো তখন যেরূপ তোমাদের পিতৃ-পুরুষদেরকে স্মরণ করতে, তদ্রূপ আল্লাহকে স্মরণ কর বরং তদপেক্ষা দৃঢ়তর ভাবে স্মরণ কর; কিন্তু মানবমন্ডলীর মধ্যে কেউ কেউ এরূপ আছে যারা বলে থাকেঃ হে আমাদের প্রভু! আমাদেরকে ইহকালেই দান করুন তাদের জন্যে পরকালে কোন অংশ নেই।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿٢٠١﴾

২০১. আর তাদের মধ্যে কেউ কেউ বলে থাকেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে ইহকালে কল্যাণ দান করুন ও পরকালে কল্যাণ দান করুন এবং জাহান্নামের শাস্তি হতে আমাদেরকে রক্ষা করুন।

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٢٠٢﴾

২০২. তারা যা অর্জন করেছে, তাদের জন্যে তারই অংশ রয়েছে এবং নিশ্চয় আল্লাহ দ্রুত হিসাব গ্রহণকারী।

وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِىْٓ اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِىْ يَوْمَيْنِ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٠٣﴾

২০৩. এবং নির্ধারিত দিবসসমূহে আল্লাহকে স্মরণ কর; অতঃপর কেউ যদি দু'দিনের মধ্যে (মক্কায় ফিরে যেতে) তাড়াতাড়ি করে তবে তার জন্যে কোন পাপ নেই, পক্ষান্তরে কেউ যদি বিলম্ব করে তবে তার জন্যেও পাপ নেই এবং তোমরা আল্লাহকে ভয় কর ও জেনে রেখো

যে, অবশ্যই তোমাদের সকলকে তাঁরই নিকট সমবেত করা হবে।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ اَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿٢٠٤﴾

২০৪. এবং মানবমন্ডলীর মধ্যে এমনও আছে– পার্থিব জীবন সংক্রান্ত যার কথা তোমাকে চমৎকৃত করে তুলে, আর সে নিজের অন্তরস্থ (সততা) সম্বন্ধে আল্লাহকে সাক্ষি করে থাকে; কিন্তু বস্তুতঃ সে হচ্ছে ভীষণ ঝগড়াটে ব্যক্তি।[১]

وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِي الْاَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ﴿٢٠٥﴾

২০৫. যখন সে প্রত্যাবর্তিত হয় তখন সে পৃথিবীতে অশান্তি বিস্তারের এবং শস্য ক্ষেত্র ও জীবজন্তু বিনাশের চেষ্টা করে। আর আল্লাহ অশান্তি ভালবাসেন না।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٢٠٦﴾

২০৬. যখন তাকে বলা হয় তুমি আল্লাহকে ভয় কর, তখন প্রতিপত্তির অহমিকা তাকে অধিকতর অনাচারে লিপ্ত করে দেয়, অতএব জাহান্নামই তার জন্যে যথেষ্ট এবং নিশ্চয় ওটা নিকৃষ্ট আশ্রয় স্থল!

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠٧﴾

২০৭. পক্ষান্তরে কোন কোন লোক এরূপ আছে, যে আল্লাহর পরিতুষ্টি সাধনের জন্যে স্বীয় আত্মা বিক্রয় করে এবং আল্লাহ হচ্ছেন সমস্ত বান্দার প্রতি স্নেহপরায়ণ।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً ۪ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٢٠٨﴾

২০৮. হে মু'মিনগণ! তোমরা পূর্ণরূপে ইসলামে প্রবেশ কর এবং শয়তানের পদাঙ্ক অনুসরণ করো না, নিশ্চয় সে তোমাদের জন্যে প্রকাশ্য শত্রু।

১। আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) থেকে বর্ণিত, তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আল্লাহ্‌র নিকটে সেই লোক সর্বাধিক ঘৃণিত যে অত্যন্ত ঝগড়াটে। (বুখারী, হাদীস নং ২৪৫৭)

فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٠٩﴾

২০৯. অনন্তর স্পষ্ট দলীল প্রমাণাদি তোমাদের নিকট সমাগত হওয়ার পরেও যদি তোমরা পদস্খলিত হয়ে যাও, তবে জেনে রেখো যে, আল্লাহ হচ্ছেন মহা পরাক্রান্ত, প্রজ্ঞাময়।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ فِيْ ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٢١٠﴾

২১০. তারা শুধু এ অপেক্ষাই করছে যে, আল্লাহ তা'আলা সাদা মেঘমালার ছায়া তলে তাদের নিকট সমাগত হবেন আর ফেরেশতারাও (আসবেন) এবং সমস্ত কার্যের নিষ্পত্তি করা হবে এবং আল্লাহরই নিকট সমস্ত কার্য প্রত্যাবর্তিত হয়ে থাকে।

سَلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ اٰيَةٍۭ بَيِّنَةٍ ؕ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢١١﴾

২১১. ইসরাঈল বংশীয়গণকে জিজ্ঞেস কর যে, আমি কত স্পষ্ট প্রমাণই না তাদেরকে প্রদান করেছি। এবং যে কেউ তার নিকট আল্লাহর অনুগ্রহ সম্পদ আসার পর তা পরিবর্তন করে ফেলে তবে জেনে রেখো নিশ্চয় আল্লাহ কঠোর শাস্তি দাতা।

زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢١٢﴾

২১২. যারা অবিশ্বাস করেছে, তাদের পার্থিব জীবন সুশোভিত করা হয়েছে এবং তারা বিশ্বাস স্থাপনকারীদেরকে উপহাস করে থাকে এবং যারা আল্লাহভীরু তাদেরকে উত্থান দিবসে সমুন্নত করা হবে এবং আল্লাহ যাকে ইচ্ছে করেন অপরিমিত জীবিকা দান করে থাকেন।

كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۫ فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۪ وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ

২১৩. মানবজাতি একই সম্প্রদায়-ভুক্ত ছিল; অতঃপর আল্লাহ সুসংবাদ বাহক ও ভয় প্রদর্শকরূপে নবীগণকে প্রেরণ করলেন এবং তিনি তাদের সাথে সত্যসহ গ্রন্থ অবতীর্ণ করলেন যেন (ঐ কিতাব) তাদের মতভেদের

مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢١٣﴾

বিষয়গুলো সম্বন্ধে মীমাংসা করে দেয়, অথচ যারা কিতাবপ্রাপ্ত হয়েছিল, স্পষ্ট নিদর্শনসমূহ তাদের নিকট সমাগত হওয়ার পর, পরস্পরের প্রতি হিংসা-বিদ্বেষবশতঃ তারা সে কিতাবকে নিয়ে মতভেদ ঘটিয়ে বসলো, অতঃপর আল্লাহ তদীয় ইচ্ছাক্রমে বিশ্বাস স্থাপন-কারীদেরকে তদ্বিষয়ে সত্যের দিকে পথ প্রদর্শন করলেন এবং আল্লাহ যাকে ইচ্ছা সরল পথ প্রদর্শন করে থাকেন।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ؕ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ ﴿٢١٤﴾

২১৪. তোমরা কি মনে করে নিয়েছো যে, তোমরা বেহেশ্‌তে প্রবেশ করেই ফেলবে? অথচ তোমাদের অবস্থা এখনও তাদের মত হয়নি যারা তোমাদের পূর্বে বিগত হয়েছে; তাদেরকে বিপদ ও দুঃখ স্পর্শ করেছিল এবং তাদেরকে প্রকম্পিত করা হয়েছিল; এমন কি রাসূল ও তৎসহ বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ বলেছিলেন কখন আল্লাহর সাহায্য আসবে? সতর্ক হও, নিশ্চয় আল্লাহর সাহায্য নিকটবর্তী।

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ؕ قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٢١٥﴾

২১৫. তারা তোমাকে জিজ্ঞেস করছে যে, তারা কিরূপে ব্যয় করবে? তুমি বলঃ তোমরা ধন-সম্পত্তি হতে যা ব্যয় করবে তা পিতা-মাতার, আত্মীয় স্বজনের, পিতৃহীনদের, দরিদ্রদের ও পথিকবৃন্দের জন্যে করো এবং তোমরা যে সব সৎকর্ম কর নিশ্চয় আল্লাহ তা সম্যকরূপে অবগত।

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ

২১৬. জিহাদকে তোমাদের জন্যে অপরিহার্য কর্তব্যরূপে অবধারিত

تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢١٦﴾

করা হয়েছে এবং এটা তোমাদের নিকট অপ্রীতিকর; বস্তুতঃ তোমরা এমন বিষয়কে অপছন্দ করছো যা তোমাদের পক্ষে বাস্তবিকই মঙ্গলজনক, পক্ষান্তরে তোমরা এমন বিষয়কে পছন্দ করছো যা তোমাদের জন্যে বাস্তবিকই অনিষ্টকর এবং আল্লাহই অবগত আছেন আর তোমরা অবগত নও।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ ؕ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ؕ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَاِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ؕ وَلَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ اسْتَطَاعُوْا ؕ وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَاُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢١٧﴾

২১৭. তারা তোমাকে নিষিদ্ধ মাস, তার মধ্যে যুদ্ধ করা সম্বন্ধে জিজ্ঞেস করছে; তুমি বলঃ এর মধ্যে যুদ্ধ করা অতীব অন্যায়, আর আল্লাহর পথ ও পবিত্র মসজিদ হতে প্রতিরোধ করা এবং তাঁকে অবিশ্বাস করা ও তার মধ্যে হতে তার অধিবাসীদেরকে বহিষ্কৃত করা আল্লাহর নিকট গুরুতর অপরাধ এবং হত্যা অপেক্ষা ফেত্না-ফাসাদ (কুফর ও শিরক) গুরুতর এবং যদি তারা সক্ষম হয়, তবে তারা তোমাদেরকে তোমাদের ধর্ম হতে ফিরাতে না পারা পর্যন্ত সর্বদা তোমাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করতে থাকবে; আর তোমাদের মধ্যকার কেউ যদি স্বধর্ম হতে ফিরে যায় এবং ঐ কাফের অবস্থাতেই তার মৃত্যু ঘটে, তাহলে তার ইহকাল পরকালের সমস্ত কর্মই নিস্ফল হয়ে যায়, তারাই জাহান্নামের অধিবাসী এবং তারই মধ্যে তারা চিরকাল অবস্থান করবে।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ

২১৮. নিশ্চয় যারা বিশ্বাস স্থাপন করেছে এবং আল্লাহর পথে দেশ ত্যাগ করেছে ও আল্লাহর পথে জেহাদ করেছে, তারাই আল্লাহর

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢١٨﴾

অনুগ্রহের প্রত্যাশা করবে এবং আল্লাহ ক্ষমাশীল, করুণাময়।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ؕ قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ز وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ؕ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ؕ قُلِ الْعَفْوَ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١٩﴾

২১৯. মাদক দ্রব্য ও জুয়া খেলা সম্বন্ধে তারা তোমাকে জিজ্ঞেস করছে,[১] তুমি বলঃ এ দু'টোর মধ্যে গুরুতর পাপ রয়েছে এবং কোন কোন লোকের (কিছু) উপকার আছে, কিন্তু ও দু'টোর লাভ অপেক্ষা পাপই গুরুতর; তারা তোমাকে (আরও) জিজ্ঞেস করছে, তারা কি (পরিমাণ) ব্যয় করবে? তুমি বলঃ যা তোমাদের উদ্বৃত্ত; এভাবে আল্লাহ তোমাদের জন্যে নিদর্শনাবলী ব্যক্ত করেন যেন তোমরা চিন্তা করে দেখ।

১। (ক) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি লা'ত এবং ওজ্জার নামে কসম করে সে যেন লা-ইলাহা ইল্লাল্লাহ বলে। আর যে ব্যক্তি তার সাথীকে বলেছে যে, এসো আমরা জুয়া খেলি, তবে তার সাদকা করা উচিত। (বুখারী, হাদীস নং ৪৮৬০)

(খ) ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ নিশ্চয়ই রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি দুনিয়াতে মদ পান করল, অতঃপর তা থেকে তাওবা করল না, পরকালে সে তা থেকে বঞ্চিত হবে। (বুখারী, হাদীস নং ৫৫৭৫)

(গ) আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ আমি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে এমন একটি হাদীস শুনেছি যা আমি ব্যতীত অন্য কেউ তোমাদেরকে বর্ণনা করবে না। তিনি (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ কিয়ামতের আলামতগুলোর মধ্যে এ-ও আছে যে, অজ্ঞতা ও মূর্খতার বহিঃপ্রকাশ ঘটবে এবং জ্ঞানলোপ পাবে, যিনা-ব্যভিচার প্রকাশ্যে হতে থাকবে ও মদ পান (অবাধে চলবে)। পুরুষের সংখ্যা লোপ পাবে এবং নারীর সংখ্যা বৃদ্ধি পাবে; এমনকি পঞ্চাশ জন মহিলা একজন পুরুষের অধিনস্তে থাকবে। (বুখারী, হাদীস নং ৫৫৭৭)

(ঘ) ইবনে সিহাব থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, আমি আবূ সালমা ইবনে আব্দুর রহমান এবং ইবনে মুসাইয়্যেবকে বলতে শুনেছি যে, আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেছেনঃ নিশ্চয়ই নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যভিচার করা অবস্থায় ব্যভিচারকারী মোমেন থাকে না। মদপান করার সময় মদপানকারী মোমেন থাকে না, চুরি করার সময় চোর মোমেন থাকে না (সেই মুহূর্তে তার থেকে ঈমান দূরে চলে যায়)। ইবনে শিহাব বলেনঃ আমাকে আব্দুল মালিক বিন আবূ বকর বিন আব্দুর রহমান বিন হারেস বিন হিসাম জানিয়েছেন, নিশ্চয় আবূ বকর তাকে হাদীস শুনাতেন, আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণনা করেন যে, উল্লেখিত বর্ণনাকারী আবূ বকর এ হাদীসের সঙ্গে আরও একটু সংযুক্ত করেছেন যে, অনুরূপভাবে লুণ্ঠনকারী যখন লুণ্ঠন করে যার দিকে মানুষ চোখ তুলে তাকায় সেও লুণ্ঠন করার সময় মোমেন থাকে না। (বুখারীঃ, হাদীস নং ৫৫৭৮)

فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى ؕ قُلْ
اِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ؕ وَاِنْ تُخَالِطُوْهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ ؕ
وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
لَاَعْنَتَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٢٠﴾

২২০. পার্থিব ও পারলৌকিক বিষয়ে আর তারা তোমাকে ইয়াতিমদের সম্বন্ধে জিজ্ঞেস করছে; তুমি বলঃ তাদের হিতসাধন করাই উত্তম; এবং যদি তোমরা তাদেরকে সম্মিলিত করে নাও তবে তারা তোমাদের ভ্রাতা, আর কে অনিষ্টকারী, কে হিতাকাঙ্ক্ষী আল্লাহ তা অবগত আছেন এবং যদি আল্লাহ ইচ্ছে করতেন, তবে তিনি তোমাদেরকে বিপদে ফেলতেন, নিশ্চয় আল্লাহ পরাক্রান্ত, মহা প্রজ্ঞাময়।

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ؕ وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ
خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تُنْكِحُوا
الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ؕ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ
مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۖۚ
وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ
وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٢١﴾

২২১. এবং অংশীবাদিনীগণ বিশ্বাস স্থাপন না করা পর্যন্ত তোমরা তাদেরকে বিয়ে করো না এবং নিশ্চয় বিশ্বাসিনী দাসী অংশীবাদিনী (স্বাধীনা) মহিলা অপেক্ষা উত্তম যদিও সে তোমাদেরকে মোহিত করে ফেলে এবং অংশীবাদীগণ বিশ্বাস স্থাপন না করা পর্যন্ত তাদের সাথে (মুসলমান নারীদের) বিবাহ প্রদান করো না এবং নিশ্চয় অংশীবাদী তোমাদের মনঃপুত হলেও বিশ্বাসী দাস তদপেক্ষা শ্রেষ্ঠতর; এরাই জাহান্নামের দিকে আহ্বান করে এবং আল্লাহ স্বীয় ইচ্ছায় জান্নাত ও ক্ষমার দিকে আহ্বান করেন ও মানবমন্ডলীর জন্যে স্বীয় নিদর্শনাবলী বিবৃত করেন, যেন তারা শিক্ষা গ্রহণ করে।

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ؕ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا
النِّسَآءَ فِي الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى يَطْهُرْنَ ۚ
فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللّٰهُ ؕ

২২২. এবং তারা তোমাকে (স্ত্রী লোকদের) ঋতুস্রাব সম্বন্ধে জিজ্ঞেস করছে; তুমি বলঃ ওটা হচ্ছে কষ্টদায়ক অবস্থা। অতএব ঋতুকালে স্ত্রী লোকদের থেকে (সঙ্গম

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ ﴿٢٢٢﴾

না করে) বিরত থাক এবং উত্তমরূপে পবিত্র না হওয়া পর্যন্ত তাদের নিকটে যেও না; (সহবাস করোনা) অনন্তর যখন তারা পবিত্র হবে, তখন আল্লাহর নির্দেশ মতে তোমরা তাদের নিকট গমন কর, নিশ্চয় আল্লাহ ক্ষমা প্রার্থীগণকে ভালবাসেন এবং পবিত্রতা অর্জনকারীগণকেও ভালবেসে থাকেন।

نِسَاؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ فَأْتُوا حَرْثَكُمْ أَنَّىٰ شِئْتُمْ ۖ وَقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُم مُّلَاقُوهُ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٢٣﴾

২২৩. তোমাদের স্ত্রীগণ তোমাদের জন্যে ক্ষেত্র স্বরূপ; অতএব তোমরা যেভাবেই ইচ্ছা কর গমণ কর এবং স্বীয় জীবনের জন্যে পাথেয় পূর্বেই প্রেরণ কর এবং আল্লাহকে ভয় কর ও জেনে রেখো যে, তোমাদের সবাইকে তাঁর মুখোমুখী হতে হবে এবং বিশ্বাসীগণকে সুসংবাদ প্রদান কর।

وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً لِّأَيْمَانِكُمْ أَن تَبَرُّوا وَتَتَّقُوا وَتُصْلِحُوا بَيْنَ النَّاسِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٢٤﴾

২২৪. তোমরা নিজেদের শপথের জন্য আল্লাহ্‌র নামকে লক্ষ্যবস্তু বানিওনা, সৎকাজ, আত্মসংযম এবং মানুষের মাঝে মীমাংসা করে দেয়া থেকে বেঁচে থাকার উদ্দেশ্যে; বস্তুতঃ আল্লাহ্ সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞাতা।

لَّا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَٰكِن يُؤَاخِذُكُم بِمَا كَسَبَتْ قُلُوبُكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿٢٢٥﴾

২২৫. আল্লাহ তা'আলা তোমাদের নিরর্থক শপথসমূহের (অর্থহীন শপথের) জন্যে তোমাদেরকে ধরবেন না; কিন্তু তিনি তোমাদেরকে ঐসব শপথ সম্বন্ধে ধরবেন যেগুলো তোমাদের মনের সংকল্প অনুসারে সাধিত হয়েছে এবং আল্লাহ ক্ষমাশীল, ধৈর্যশীল।

لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ فَاِنْ فَآءُوْ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٢٦﴾

২২৬. যারা স্বীয় স্ত্রীগণ[১] হতে পৃথক থাকবার শপথ করে তারা চার মাস প্রতীক্ষা করবে; অতঃপর যদি তারা প্রত্যাবর্তিত হয়, তবে নিশ্চয় আল্লাহ ক্ষমাশীল, করুণাময়।

وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَاِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٢٧﴾

২২৭. পক্ষান্তরে যদি তারা তালাক দিতেই দৃঢ় প্রতিজ্ঞ হয়ে থাকে, তবে নিশ্চয় আল্লাহ শ্রবণকারী, মহাজ্ঞানী।

وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ اِنْ كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ اِنْ اَرَادُوْٓا اِصْلَاحًا ؕ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۪ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٢٨﴾

২২৮. এবং তালাক প্রাপ্তাগণ তিন ঋতু পর্যন্ত আত্মসম্বরণ করে থাকবে; এবং যদি তারা আল্লাহ ও পরকালে বিশ্বাস করে তবে আল্লাহ তাদের গর্ভে যা সৃষ্টি করেছেন তা গোপন করা তাদের পক্ষে বৈধ হবে না; এবং এর মধ্যে যদি তারা সন্ধি কামনা করে তবে তাদের স্বামীই তাদেরকে প্রতিগ্রহণ করতে সমধিক স্বত্ববান; আর নারীদের উপর তাদের যেরূপ স্বত্ব আছে, নারীদেরও তদনুরূপ ন্যায়সঙ্গত স্বত্ব আছে এবং তাদের উপর পুরুষদের শ্রেষ্ঠত্ব রয়েছে; আল্লাহ হচ্ছেন মহা পরাক্রান্ত প্রজ্ঞাময়।

اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۪ فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِيْحٌۢ بِاِحْسَانٍ ؕ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّآ

২২৯. তালাক দুইবার; অতঃপর (স্ত্রীকে) হয় বিহিতভাবে রাখতে হবে। অথবা সৎভাবে পরিত্যাগ

১। (ক) না'ফে থেকে বর্ণিত, নিশ্চয়ই ইবনে ওমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) "ইলা" (চার মাস স্ত্রী সংস্পর্শ পরিত্যাগের কসম করা) সম্পর্কে বলেন, যার উল্লেখ আল্লাহ্ কুরআনে করেছেন যে, নির্দিষ্ট সময় (চার মাস) অতিবাহিত হওয়ার পর আল্লাহ্র নির্দেশ অনুযায়ী হয় তার স্ত্রীকে বৈধ পদ্ধতিতে রাখবে, আর না হয় তালাক দিয়ে দিবে। (বুখারী, হাদীস নং ৫২৯০)

(খ) না'ফে, ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণনা করেন যে, যখন চার মাস অতিবাহিত হয়ে যায়, তখন তালাক দেয়া পর্যন্ত (স্ত্রী) অপেক্ষা করবে। স্বামী তালাক না দেয়া পর্যন্ত তালাক হবে না। উসমান, আলী, আবু দারদা এবং আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহুম) সহ রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লামের) আরো বার জন সাহাবী থেকে এমত বর্ণিত হয়েছে। (বুখারী, হাদীস নং ৫২৯১)

اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْـًٔا اِلَّآ اَنْ يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيْمَا افْتَدَتْ بِهٖ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَا ۚ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٢٩﴾

করতে হবে এবং যদি উভয়ে আশঙ্কা করে যে, তারা আল্লাহর সীমা স্থির রাখতে পারবে না। তবে তোমরা তাদেরকে যা প্রদান করেছো তা হতে কিছু প্রতিগ্রহণ করা তোমাদের জন্যে বৈধ নয়; অনন্তর তোমরা যদি আশঙ্কা কর যে, তারা আল্লাহর সীমা ঠিক রাখতে পারবে না, সে অবস্থায় স্ত্রী নিজের মুক্তি লাভের জন্য কিছু বিনিময় দিলে তাতে উভয়ের কোন দোষ নেই; এগুলোই হচ্ছে আল্লাহর সীমাসমূহ অতএব তা অতিক্রম করো না এবং যারা আল্লাহর সীমা অতিক্রম করে, বস্তুতঃ তারাই অত্যাচরী।[১]

فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗ ؕ فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يَّتَرَاجَعَآ اِنْ ظَنَّآ اَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٠﴾

২৩০. অনন্তর যদি সে স্ত্রীকে তালাক প্রদান করে তবে সে স্ত্রী যতক্ষণ পর্যন্ত তাকে ছাড়া অন্য স্বামীকে বিয়ে করে না নিবে সে তার জন্যে বৈধ হবে না, তৎপর সে তাকে তালাক প্রদান করলে যদি উভয়ে মনে করে যে, তারা আল্লাহর সীমাসমূহ স্থির রাখতে পারবে, তখন যদি তারা পরস্পর প্রত্যাবর্তিত হয় তবে উভয়ের পক্ষে কোনই দোষ নেই এবং এগুলোই আল্লাহর সীমাসমূহ, তিনি বিজ্ঞ সম্প্রদায়ের জন্যে এগুলো ব্যক্ত করে থাকেন।

১। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত নিশ্চয়ই সাবেত ইবনে কাইসের স্ত্রী নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট এসে বলল ইয়া রাসূলাল্লাহ্ সাবেত ইবনে কাইসের ধার্মিকতা এবং চরিত্রের ওপর আমার কোন অভিযোগ নেই; কিন্তু আমি মুসলমান হয়ে কুফরী করাটা মোটেই পছন্দ করি না। (তাদের উভয়ের সম্পর্কে অমিল ছিল) রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ তুমি কি তাকে (স্বামীকে) মহর হিসাবে যে বাগান সে দিয়েছিল তা ফিরিয়ে দিবে? সে বলল হ্যাঁ। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) সাবেত (রাযিআল্লাহু আনহু)-কে বললেন বাগানটি ফেরত নিয়ে তাকে এক তালাক দিয়ে দাও। (বুখারী, হাদীস নং ৫২৭৩)

وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۪ وَّلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ۫ وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمَآ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

২৩১. এবং তোমরা যখন স্ত্রীদেরকে তালাক দাও আর তারা তাদের নির্ধারিত সময়ে পৌঁছে যায়, তখন তাদেরকে ভালভাবে রাখতে পার অথবা ভালভাবে পরিত্যাগ করতে পার এবং তাদেরকে যন্ত্রণা দেয়ার জন্যে আবদ্ধ করে রেখ না, তাহলে সীমালঙ্ঘন করবে; আর যে ব্যক্তি এরূপ করে সে নিশ্চয়ই নিজের প্রতি অবিচার করে থাকে এবং আল্লাহর বিধি-বিধানকে বিদ্রূপাচ্ছলে গ্রহণ করো না আর তোমাদের প্রতি অনুগ্রহ এবং তোমাদেরকে উপদেশ দানের জন্যে গ্রন্থ ও হিকমত (সুন্নাত) হতে যা অবতীর্ণ করেছেন তা স্মরণ কর, আর আল্লাহকে ভয় কর ও জেনে রেখ যে, আল্লাহ সর্ব বিষয়ে মহাজ্ঞানী।

وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ يَّنْكِحْنَ اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ ذٰلِكَ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى لَكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

২৩২. এবং যখন তোমরা স্ত্রী লোকদেরকে তালাক দাও, তৎপর তারা তাদের নির্ধারিত সময়ে পৌঁছে যায়, তখন তারা উভয়েই যদি পরস্পরের প্রতি বিহিতভাবে সম্মত হয়ে থাকে, সে অবস্থায় স্ত্রীরা নিজ স্বামীদেরকে বিয়ে করতে গেলে তোমরা তাদেরকে বাধা প্রদান করো না; তোমাদের মধ্যে যে আল্লাহ ও পরকালের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করেছে এর দ্বারা তাদেরকেই উপদেশ দেয়া হচ্ছে; তোমাদের জন্যে এটা শুদ্ধতম ও পবিত্রতম (ব্যবস্থা) এবং আল্লাহই পরিজ্ঞাত আছেন আর তোমরা কিছুই জানো না।

وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ؕ وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌۢ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ بِوَلَدِهٖ ۗ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ؕ وَاِنْ اَرَدْتُّمْ اَنْ تَسْتَرْضِعُوْٓا اَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ مَّآ اٰتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٣﴾

২৩৩. এবং যে কেউ স্তন্যপানের কাল পূর্ণ করতে ইচ্ছে করে, তার জন্যে জননীগণ পূর্ণ দু'বছর স্বীয় সন্তানদেরকে স্তন্য দান করবে, আর সন্তানের জনকগণ বিহিতভাবে প্রসুতিদের খোরাক ও তাদের পোষাক দিতে বাধ্য; কাউকেও তার সাধ্যের অতীত কার্যভার দেয়া হয় না, নিজ সন্তানের কারণে জননীকে এবং নিজ সন্তানের কারণে জনককে ক্ষতিগ্রস্ত করা চলবে না এবং উত্তরাধিকারীগণের প্রতিও একই ধরণের বিধান; কিন্তু যদি তারা পরস্পর পরামর্শ ও সম্মতি অনুসারে স্তন্য ত্যাগ করাতে ইচ্ছে করে, তবে উভয়ের কোন দোষ নেই; আর তোমরা যদি নিজ সন্তানদেরকে স্তন্য পানের জন্যে সমর্পণ করতঃ বিহিতভাবে কিছু প্রদান কর তাহলেও তোমাদের কোন দোষ নেই এবং আল্লাহকে ভয় কর ও জেনে রেখো যে, তোমরা যা করছো আল্লাহ তা প্রত্যক্ষকারী।

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٣٤﴾

২৩৪. এবং তোমাদের মধ্যে যারা স্ত্রীদেরকে রেখে মৃত্যুমুখে পতিত হয়, তারা (বিধবাগণ) চার মাস দশ দিন প্রতীক্ষা করবে; অতঃপর যখন তারা স্বীয় নির্ধারিত সময়ে উপনীত হয় তখন তারা নিজেদের সম্বন্ধে বিহিতভাবে যা করবে, তাতে তোমাদের কোন দোষ নেই এবং তোমরা যা করছো তদ্বিষয়ে আল্লাহ সম্যক খবর রাখেন।

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا عَرَّضْتُمْ بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَآءِ اَوْ اَكْنَنْتُمْ فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ؕ عَلِمَ

২৩৫. এবং তোমরা স্ত্রী লোকদের প্রস্তাব সম্বন্ধে পরোক্ষভাবে যা ব্যক্ত কর অথবা নিজেদের মনে গোপনে যা

اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ وَلٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ
سِرًّا اِلَّآ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ؕ وَلَا تَعْزِمُوْا
عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتّٰى يَبْلُغَ الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ؕ وَاعْلَمُوْٓا
اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ ۚ
وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٣٥﴾

পোষণ করে থাক তাতে তোমাদের কোন দোষ নেই; আল্লাহ অবগত আছেন যে, তোমরা তাদের বিষয় আলোচনা করবে; কিন্তু গুপ্তভাবে তাদেরকে প্রতিশ্রুতি দান করো না; বরং বিহিতভাবে তাদের সাথে কথা বল এবং নির্ধারিত সময় পুর্ণ না হওয়া পর্যন্ত বিবাহ বন্ধনে আবদ্ধ হবার সংকল্প করো না এবং এটাও জেনে রেখো যে, তোমাদের অন্তরে যা আছে আল্লাহ তা পরিজ্ঞাত। অতএব তোমরা তাঁকে ভয় কর এবং জেনে রেখো যে, আল্লাহ ক্ষমাশীল, সহিষ্ণু।

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ
اَوْ تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ۚۖ وَّمَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَى
الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًا
بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٣٦﴾

২৩৬. যদি তোমরা স্ত্রীদেরকে স্পর্শ না করেই অথবা তাদের প্রাপ্য নির্ধারণ করার আগেই তালাক প্রদান কর তবে তাতে তোমাদের কোন দোষ নেই এবং তোমরা তাদেরকে কিছু সংস্থান করে দেবে, অবস্থাপন্ন লোক নিজের অবস্থানুসারে এবং অভাবগ্রস্ত লোক তার অবস্থানুসারে বিহিত সংস্থান (করে দেবে), সৎকর্মশীল লোকদের উপর এই কর্তব্য।

وَاِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ وَقَدْ
فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ
اِلَّآ اَنْ يَّعْفُوْنَ اَوْ يَعْفُوَا الَّذِيْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ
النِّكَاحِ ؕ وَاَنْ تَعْفُوْٓا اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ؕ وَلَا تَنْسَوُا
الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٧﴾

২৩৭. আর তোমরা যদি তাদেরকে স্পর্শ করার পূর্বেই তালাক প্রদান কর এবং তাদের মোহর নির্ধারণ করে থাক, তবে যা নির্ধারিত করেছিলে তার অর্ধেক; কিন্তু যদি তারা ক্ষমা করে কিংবা যার হাতে বিবাহ বন্ধন সে ক্ষমা করে অথবা তোমরা ক্ষমা কর তবে এটা আল্লাহ

ভীতির অতি নিকটবর্তী এবং পরস্পরের উপকারকে যেন ভুলে যেও না; তোমরা যা কর নিশ্চয়ই আল্লাহ তা প্রত্যক্ষকারী।

حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۗ وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ﴿٢٣٨﴾

২৩৮. তোমরা নামাযসমূহ ও মধ্যবর্তী নামাযের (আসর)[১] ব্যাপারে যত্নবান হও এবং বিনীতভাবে আল্লাহর উদ্দেশ্যে দন্ডায়মান হও।

فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٩﴾

২৩৯. তবে তোমরা যদি (শত্রুর ভয়ের) আশঙ্কা কর, সে অবস্থায় পদব্রজে বা যানবাহনাদির উপর (নামায আদায় করে নেবে) পরে যখন নিরাপদ হও তখন তোমাদের অবিদিত বিষয়গুলো সম্বন্ধে আল্লাহ তোমাদেরকে যেরূপ শিক্ষা দিয়েছেন সেরূপে আল্লাহকে স্মরণ কর।[২]

১। (ক) আব্দুল্লাহ্ ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, যার আসরের নামায ছুটে গেল তার যেন পরিবারবর্গ এবং ধন-সম্পদ সবই ধ্বংস হয়ে গেল। (বুখারী, হাদীস নং ৫৫২)

(খ) আবুল মালীহ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমরা বুরাইদা (রাযিআল্লাহু আনহু)-এর সঙ্গে এক মেঘাচ্ছন্ন দিনে এক জিহাদে অংশগ্রহণ করেছিলাম। তিনি বললেনঃ আসরের নামায আওয়াল ওয়াক্তে পড়ে নাও। কেননা নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, যে ব্যক্তি আসরের নামায পরিত্যাগ করল তার সমস্ত আমল বরবাদ হয়ে গেল। (বুখারী, হাদীস নং ৫৫৩)

২। সালেহ বিন খাওয়াস ঐ ব্যক্তি থেকে বর্ণনা করেন যিনি রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সাথে "যাতুর রিকা"র যুদ্ধে সালাতুল খাওফ (ভয়-ভীতির নামাযে) অংশগ্রহণ করেছিল তার থেকে বর্ণিত, তিনি বলেছেনঃ (সাহাবাগণের) একদল নামায পড়ার জন্য তাঁর (রাসূল সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সাথে কাতারবন্দী হয়ে দাঁড়ালেন এবং আরেকদল শত্রুর মোকাবিলায় প্রস্তুত থাকলেন। তিনি (নবী সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) প্রথমোক্ত দলের সাথে এক রাক'আত নামায পড়ে দাঁড়িয়ে থাকলেন। মোক্তাদীগণ তারা একা একা দ্বিতীয় রাক'আত পড়ে ফিরে গেলেন এবং শত্রুর মুখোমুখী হয়ে দাঁড়ালেন। এবার অপর দলটি এসে দাঁড়ালে তিনি (নবী সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তাদেরকে সাথে নিয়ে অবশিষ্ট (এক) রাক'আত পড়ে বসে থাকলেন। (দ্বিতীয় দলের) মুক্তাদীগণ নিজে নিজে দ্বিতীয় রাক'আত শেষ করে বসলে তিনি তাদেরকে সঙ্গে নিয়ে সালাম ফিরালেন। (বুখারী, হাদীস নং ৪১২৯)

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۚۖ وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ مَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٤٠﴾

২৪০. এবং তোমাদের মধ্যে যারা মৃত্যু মুখে পতিত হয় ও পত্নীগণকে ছেড়ে যায় তারা যেন স্বীয় পত্নীগণকে বহিস্কৃত না করে এক বছর পর্যন্ত তাদেরকে ভরণ-পোষণ প্রদান করার জন্যে অসিয়ত করে যায়; কিন্তু যদি তারা (স্বেচ্ছায়) বের হয়ে যায়, তবে নিজেদের সম্বন্ধে বিহিতভাবে তারা যে ব্যবস্থা করে তজ্জন্যে তোমাদের কোন দোষ নেই; এবং আল্লাহ মহাপরাক্রান্ত, মহা প্রজ্ঞাময়।

وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿٢٤١﴾

২৪১. আর তালাকপ্রাপ্তাদের জন্যে বিহিতভাবে ভরণ-পোষণের ব্যবস্থা করা আল্লাহ ভীরুগণের কর্তব্য।

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٤٢﴾

২৪২. এভাবে আল্লাহ স্বীয় নিদর্শনাবলী বর্ণনা করেন, যেন তোমরা হৃদয়ঙ্গম কর।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ ۪ فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ۟ ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٢٤٣﴾

২৪৩. তুমি কি তাদের প্রতি লক্ষ্য করনি, মৃত্যু বিভীষিকাকে এড়াবার জন্য যারা নিজেদের গৃহ হতে বহির্গত হয়েছিল? অথচ তারা ছিল বহু সহস্র; তখন আল্লাহ তাদেরকে বললেনঃ তোমরা মর; পুনরায় তিনি তাদেরকে জীবন দান করলেন; নিশ্চয় মানবগণের প্রতি আল্লাহ অনুগ্রহশীল; কিন্তু অধিকাংশ লোক কৃতজ্ঞতা স্বীকার করে না।

وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٤٤﴾

২৪৪. তোমরা আল্লাহর পথে সংগ্রাম কর এবং জেনে রেখো যে, নিশ্চয় আল্লাহ হচ্ছেন সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞাতা।

مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً ؕ وَاللّٰهُ يَقْبِضُ

২৪৫. কে সে, যে আল্লাহকে উত্তমভাবে ঋণদান করে? অনন্তর তিনি তাকে দ্বিগুণ বহুগুণ বর্ধিত করেন এবং আল্লাহই

وَيَبْصُۜطُ ۖ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٤٥﴾

(মানুষের আর্থিক অবস্থাকে) সংকুচিত বা স্বচ্ছল করে থাকেন এবং তাঁরই দিকে তোমাদেরকে প্রত্যাবর্তন করতে হবে।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الْمَلَإِ مِنْ بَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ مِنْۢ بَعْدِ
مُوسَىٰ إِذْ قَالُوا۟ لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ٱبْعَثْ لَنَا مَلِكًا
نُّقَٰتِلْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ۖ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ
إِن كُتِبَ عَلَيْكُمُ ٱلْقِتَالُ أَلَّا تُقَٰتِلُوا۟ ۖ قَالُوا۟
وَمَا لَنَآ أَلَّا نُقَٰتِلَ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ وَقَدْ أُخْرِجْنَا
مِن دِيَٰرِنَا وَأَبْنَآئِنَا ۖ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ
ٱلْقِتَالُ تَوَلَّوْا۟ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ ۗ وَٱللَّهُ عَلِيمٌۢ
بِٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٢٤٦﴾

২৪৬. তুমি কি মূসার পরে ইসরাঈল বংশীয় প্রধানগণের প্রতি লক্ষ্য করনি? নিজেদের এক নবীকে যখন তারা বলেছিলঃ আমাদের জন্যে একজন বাদশাহ নিযুক্ত করে দাও (যেন) আমরা আল্লাহর পথে যুদ্ধ করতে পারি! তিনি বলেছিলেনঃ এটা কি সম্ভবপর নয় যে, যখন তোমাদের উপর যুদ্ধ বিধিবদ্ধ হয়ে যাবে তখন তোমরা যুদ্ধ করবে না? তারা বলেছিলঃ আমরা যুদ্ধ করবো না এটা কিরূপে (সম্ভব)? অথচ নিজেদের আবাস হতে ও সন্তান-সন্ততি হতে আমরা বহিস্কৃত হয়েছি। অনন্তর যখন তাদের উপর যুদ্ধ বিধিবদ্ধ হলো তখন তাদের অল্প সংখ্যক ব্যতীত সবাই পশ্চাৎপদ হয়ে পড়লো এবং অত্যাচারীদের সম্পর্কে আল্লাহ সম্যকরূপে অবগত আছেন।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ ٱللَّهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ
طَالُوتَ مَلِكًا ۚ قَالُوٓا۟ أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُ ٱلْمُلْكُ
عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِٱلْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ
سَعَةً مِّنَ ٱلْمَالِ ۚ قَالَ إِنَّ ٱللَّهَ ٱصْطَفَىٰهُ عَلَيْكُمْ
وَزَادَهُۥ بَسْطَةً فِى ٱلْعِلْمِ وَٱلْجِسْمِ ۖ وَٱللَّهُ يُؤْتِى
مُلْكَهُۥ مَن يَشَآءُ ۚ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٧﴾

২৪৭. এবং তাদের নবী তাদেরকে বলেছিলেন নিশ্চয়ই আল্লাহ তালূতকে তোমাদের জন্যে বাদশাহরূপে নির্বাচিত করেছেন; তারা বললোঃ আমাদের উপর তালূতের রাজত্ব কিরূপে (সঙ্গত) হতে পারে? রাজত্বে তার অপেক্ষা আমাদেরই স্বত্ব অধিক, পক্ষান্তরে যথেষ্ট আর্থিক স্বচ্ছলতাও তার নেই; তিনি বললেনঃ নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাদের জন্যে তাকেই মনোনীত করেছেন এবং জ্ঞান ও দৈহিক শক্তিতে তিনি তাকে প্রচুর পরিমাণে বর্ধিত করে দিয়েছেন, আল্লাহ তাঁর রাজত্ব

যাকে ইচ্ছা প্রদান করেন এবং আল্লাহ হচ্ছেন প্রশস্তকারী, সর্বজ্ঞাতা।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ آلُ مُوسَىٰ وَآلُ هَارُونَ تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٤٨﴾

২৪৮. এবং তাদের নবী তাদের বলেছিলেন তার রাজত্বের নিদর্শন এই যে, তোমাদের নিকট সিন্দুক[১] সমাগত হবে, যাতে থাকবে তোমাদের প্রতিপালকের নিকট হতে শান্তি এবং মূসা ও হারূনের অনুচরদের পরিত্যক্ত আসবাবপত্র, ফেরেশতাগণ ওটা বহন করে আনবে; তোমরা যদি বিশ্বাস স্থাপনকারী হও তবে ওর মধ্যে নিশ্চয় তোমাদের জন্যে নিদর্শন রয়েছে।

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُم بِنَهَرٍ فَمَن شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَن لَّمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ فَشَرِبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ ۚ فَلَمَّا جَاوَزَهُ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ قَالُوا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ ۚ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلَاقُو اللَّهِ كَم مِّن فِئَةٍ قَلِيلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيرَةً بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٢٤٩﴾

২৪৯. অনন্তর যখন তালূত সৈন্যদলসহ বহির্গত হয়েছিলেন তখন তিনি বলেছিলেন নিশ্চয় আল্লাহ একটি নদী দ্বারা তোমাদেরকে পরীক্ষা করবেন, অতঃপর ওটা হতে যে পান করবে সে কিন্তু আমার দলভুক্ত থাকবে না এবং যে স্বীয় হাত দ্বারা আঁজলাপূর্ণ করে নেবে, তদ্ব্যতীত যে তা আস্বাদন করবে না সে নিশ্চয়ই আমার; কিন্তু তাদের মধ্যে অল্প লোক ব্যতীত আর সবাই সেই নদীর পানি পান করলো, অতঃপর যখন সে ও তার সঙ্গী বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ নদী অতিক্রম করে গেল তখন তারা বললোঃ জালূতের ও তার সেনাবাহিনীর মোকাবিলা করার শক্তি আজ আমাদের নেই; পক্ষান্তরে যারা

১। বারা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, এক ব্যক্তি (রাতে) সূরা কাহাফ পড়ছিল। আর তার পার্শ্বেই একটি ঘোড়া দু'টি রশি দিয়ে বাঁধা ছিল। এমতাবস্থায় একখানা মেঘখন্ড এসে তার ওপরে ছায়া দিল এবং মেঘখন্ড ক্রমশ নীচের দিকে আসতে থাকল, এমনকি তার ঘোড়াটি (ভয়ে) লাফালাফি শুরু করে দিল। সকাল বেলা ঐ ব্যক্তি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে উক্ত ঘটনা বর্ণনা করল, তখন তিনি বললেনঃ তা ঐ প্রশান্তি যা কুরআন তেলাওয়াতের কারণে অবতীর্ণ হয়েছিল। (বুখারী, হাদীস নং ৫০১১)

বিশ্বাস করতো যে তাদেরকে আল্লাহর সাথে সাক্ষাৎ করতে হবে, তারা বললোঃ আল্লাহর হুকুমে কত ক্ষুদ্র দল কত বৃহৎ দলকে পরাজিত করেছে, বস্তুতঃ ধৈর্যশীলদের সঙ্গে রয়েছেন আল্লাহ!

وَلَمَّا بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٥٠﴾

২৫০. এবং যখন তারা জালূত ও তার সেনাবাহিনীর সম্মুখীন হলো, বলতে লাগলোঃ হে আমাদের প্রভু! আমাদেরকে পূর্ণ সহিষ্ণুতা দান করুন, আর আমাদের কদমকে অটল রাখুন এবং কাফির জাতির উপর আমাদেরকে সাহায্য করুন!

فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۙ وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَآءُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ ۙ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٥١﴾

২৫১. তখন তারা আল্লাহর হুকুমে জালূতের সৈন্যদেরকে পরাজিত করে দিল এবং দাউদ জালূতকে নিহত করে ফেললেন এবং আল্লাহ দাউদকে রাজ্য ও প্রজ্ঞা দান করলেন এবং তাকে ইচ্ছানুযায়ী শিক্ষা দান করলেন, আর যদি আল্লাহ এক দলকে অপর দলের দ্বারা প্রতিহত না করতেন তবে নিশ্চয় পৃথিবী অশান্তি পূর্ণ হতো; কিন্তু আল্লাহ বিশ্বজগতের প্রতি অনুগ্রহকারী।

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢٥٢﴾

২৫২. এগুলো আল্লাহর নিদর্শন– তোমার নিকট এগুলো সত্যরূপে পাঠ করছি এবং নিশ্চয়ই তুমি রাসূলগণের অন্তর্গত।[১]

১। (ক) জাবের ইবনে আব্দুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, নিশ্চয়ই নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আমি এমন পাঁচটি জিনিস প্রাপ্ত হয়েছি যা আমার পূর্বে আর কাউকে দেয়া হয়নি। (১) এক মাসের পথ দূরে থাকা অবস্থায় শত্রুকে ভীত-সন্ত্রস্ত করার মত শক্তি দিয়ে সাহায্য প্রাপ্ত হয়েছি। (২) সমগ্র পৃথিবীকে আমার জন্য মসজিদ ও পবিত্র করে দেয়া হয়েছে। অতএব আমার উম্মতের যে কোন ব্যক্তি যে স্থানেই নামাযের সময় উপস্থিত হবে সেখানেই যেন নামায পড়ে নেয়। (৩) গণিমতের মাল আমার জন্য হালাল করা হয়েছে। আমার পূর্বে আর কারও জন্য তা হালাল ছিল না। (৪) আমি শাফা'য়াতের সুযোগপ্রাপ্ত হয়েছি। (৫) পূর্বের নবীগণ বিশেষ কোন জাতির নিকট প্রেরিত হতেন, আমি বিশ্বমানবের নিকট প্রেরিত হয়েছি। (বুখারী, হাদীস নং ৩৩৫)

(খ) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত, নিশ্চয়ই রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে, আমার এবং আমার পূর্ববর্তী নবীগণের উদাহরণ হল ঐ ব্যক্তির ন্যায় যে, অত্যন্ত সুন্দর করে একটি বিল্ডিং বানাল; কিন্তু বিল্ডিং-এর এক কর্ণারে একটি ইটের স্থান ফাঁকা রাখল, অতঃপর লোকেরা এই বিল্ডিং দেখতে এসে আশ্চার্যান্বিত হয়ে বলল কি আশ্চর্য ব্যাপার যদি এই ইটের স্থানটিও পূরণ করে দেয়া হত! (কতই না সুন্দর হতো) তিনি (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেনঃ আমি ঐ ইট এবং আমি সর্বশেষ নবী। (বুখারী, হাদীস নং ৩৫৩৫)

(গ) আব্দুল্লাহ্ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন যে, আমি যেন (আজও) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে দেখতে পাচ্ছি। তিনি (অতীত যুগের) নবীগণের মধ্য থেকে এক নবীর কথা বর্ণনা করতে গিয়ে বললেন যে, তাঁর স্বজাতি তাঁকে মেরে রক্তাক্ত করে ফেলল। আর তিনি তাঁর চেহারা থেকে রক্তাক্ত অবস্থায় বললেন হে আল্লাহ্! তুমি আমার এ জাতিকে ক্ষমা করে দাও, কেননা তারা জানে না। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৭৭)

(ঘ) উবাইদুল্লাহ বিন আব্দুল্লাহ্ বলেন যে, আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) এবং ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) আমাকে তারা দু'জনেই বলেছেন যে, যখন রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর মৃত্যুর সময় ঘনিয়ে আসল, তখন তিনি তাঁর মুখের ওপর চাদর দিয়ে ঢেকে রাখতেন। আর যখন গরম অনুভব হত তখন তা মুখ থেকে সরিয়ে ফেলতেন। এরূপ অবস্থায় তিনি বললেনঃ ইয়াহূদী এবং নাসারাদের উপর আল্লাহ্র লা'নত, তারা তাদের নবীগণের কবরকে মসজিদ বানিয়ে নিয়েছে। তিনি ইয়াহূদী ও নাসারাদের কাজ-কর্মের পরিণাম সম্পর্কে ভয় প্রদর্শন করছিলেন। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৫৩-৫৪)

(ঙ) ফুরাত আল-ফাজ্জাজ থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ আমি আবূ হাযেম থেকে শুনেছি, তিনি বলেনঃ আমি পাঁচ বছর আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু)-এর মজলিসে বসেছিলাম। আমি তাঁকে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে হাদীস বর্ণনা করতে শুনেছিঃ তিনি (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন যে, বনী ইসরাইলের নবীগণ তাদের ওপর শাসন পরিচালনা করতেন। যখনই একজন নবী ইন্তেকাল করতেন তখন সেখানে তাঁর পরে আরেক জন নবী প্রেরিত হতেন। আর নিশ্চয় আমার পরে আর কোন নবী নেই। আমার পরে খলীফা হবে (প্রতিনিধি) সাহাবাগণ বললেনঃ সে সময় আমাদেরকে কি করার জন্য আপনি নির্দেশ দিচ্ছেন? তিনি বললেনঃ যিনি প্রথম খলিফা হবেন তোমরা তার বাইয়াতকে পূর্ণ করবে এবং তার ন্যায্য অধিকার পালন করতে দিবে। তার নির্দেশ মেনে চলবে। কারণ আল্লাহ্ তাদেরকে যাদের ওপর শাসক বানিয়েছেন, সে শাসন সম্পর্কে নিশ্চয়ই তিনি (কিয়ামতের দিন) তাদেরকে জিজ্ঞেস করবেন । (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৫৫)

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ؕ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا ۟ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿٢٥٣﴾

২৫৩. এই সকল রাসূল, আমি যাদের কারো উপর কাউকে শ্রেষ্ঠত্ব প্রদান করেছি, তাদের মধ্যে কারও সাথে আল্লাহ কথা বলেছেন এবং কাউকে পদ মর্যাদায় সমুন্নত করেছেন, আর মরিয়ম পুত্র ঈসাকে প্রকাশ্য নিদর্শনাবলী দান করেছি এবং তাকে পবিত্রাত্মাযোগে (জিবরাঈল عليه السلام দ্বারা) সাহায্য করেছি, আর আল্লাহ ইচ্ছে করলে নবীগণের পরবর্তী লোকেরা তাদের নিকট স্পষ্ট প্রমাণপুঞ্জ সমাগত হওয়ার পর পরস্পরের সাথে যুদ্ধ বিগ্রহে লিপ্ত হতো না; কিন্তু তারা পরস্পর মতবিরোধ করেছিল ফলে তাদের কতক হলো মু'মিন আর কতক হলো কাফির। বস্তুতঃ আল্লাহ ইচ্ছে করলে তারা পরস্পর যুদ্ধ বিগ্রহে লিপ্ত হতো না; কিন্তু আল্লাহ যা ইচ্ছে করেন তাই সম্পন্ন করে থাকেন।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٥٤﴾

২৫৪. হে বিশ্বাসীগণ! আমি তোমাদেরকে যে উপজীবিকা দান করেছি, তা হতে সেদিন সমাগত হওয়ার পূর্বেই ব্যয় কর যাতে ক্রয়-বিক্রয়, বন্ধুত্ব ও সুপারিশ নেই, আর অবিশ্বাসীরাই অত্যাচারী।

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ

২৫৫. আল্লাহ তিনি ব্যতীত অন্য কোন সত্য উপাস্য নেই, তিনি চিরজীবন্ত ও সবার রক্ষণা-বেক্ষণকারী, তন্দ্রা ও নিদ্রা তাঁকে স্পর্শ করে না, নভোমন্ডলে ও ভূমন্ডলে যা কিছু রয়েছে সব তাঁরই; এমন কে আছে যে তাঁর অনুমতি ব্যতীত তাঁর নিকট সুপারিশ করতে

وَ الْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَ هُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿٢٥٥﴾

পারে? তাদের সম্মুখের ও পশ্চাতের সবই তিনি অবগত আছেন; তিনি যা ইচ্ছে করেন তা ব্যতীত তাঁর অনন্ত জ্ঞানের কোন বিষয়ই কেউ আয়ত্ব করতে পারে না; তাঁর কুরসী নভোমন্ডল ও ভূমন্ডল পরিব্যপ্ত হয়ে আছে এবং এতদুভয়ের সংরক্ষণে তাঁকে পরিশ্রান্ত করে না এবং তিনি সমুন্নত, মহীয়ান।[১]

لَاۤ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ ۚ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۗ لَا انْفِصَامَ لَهَا ؕ وَ اللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥٦﴾

২৫৬. ধর্ম (দ্বীন গ্রহণে) সম্বন্ধে বল প্রয়োগ নেই; নিশ্চয় ভ্রান্তি হতে সুপথ প্রকাশিত হয়েছে; অতএব, যে ব্যক্তি আল্লাহ ব্যতীত অন্য মা'বূদকে অবিশ্বাস করে এবং আল্লাহর প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করে সে দৃঢ়তর রজ্জুকে আঁকড়িয়ে ধরলো যা কখনও ছিন্ন হওয়ার নয় এবং আল্লাহ শ্রবণকারী মহাজ্ঞানী।

اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَوْلِيٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَى الظُّلُمٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥٧﴾

২৫৭. আল্লাহই হচ্ছেন মু'মিনদের অভিভাবক। তিনি তাদেরকে অন্ধকার হতে আলোর দিকে নিয়ে যান; আর যারা অবিশ্বাস করেছে শয়তান তাদের পৃষ্ঠপোষক, সে তাদেরকে আলোক হতে অন্ধকারের দিকে নিয়ে

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত। তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আমাকে রমযানের প্রাপ্ত যাকাত (ফেতরার মাল) সংরক্ষণ ও হেফাজতের দায়িত্ব অর্পণ করেছিলেন। এ সময় এক লোক এসে দু'হাতের তালু ভরে খাদ্য সামগ্রী চুরি করে নিয়ে যেতে উদ্যত হল, আমি তাকে ধরে ফেলে বললাম, অবশ্যই আমি তোমাকে নিয়ে রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট যাব। অতঃপর পুরো ঘটনা বর্ণনা করলেন। তখন ঐ আগন্তুক বললঃ যখন আপনি বিছনায় শুতে যাবেন তখন আয়াতুল কুরসী পাঠ করবেন। এর কারণে সার্বক্ষণিকভাবে আপনার জন্য আল্লাহ্র পক্ষ থেকে একজন (ফেরেশ্তা) পাহারাদার নিযুক্ত করা হবে, সে আপনাকে সারা রাত পাহারা দেবে এবং ভোর পর্যন্ত শয়তান আপনার কাছে আসতে পারবে না। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) (এ ঘটনা শুনলেন এবং) (আমাকে) বললেন (যে রাতে তোমার কাছে এসেছিল) সে তোমাকে সত্য কথা বলেছে, যদিও সে মিথ্যাবাদী, সে ছিল শয়তান। (বুখারী, হাদীস নং ৫০১০)

যায়, তারাই জাহান্নামের অধিবাসী ও এর মধ্যে তারা চিরকাল অবস্থান কারী।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِىْ حَآجَّ اِبْرٰهٖمَ فِىْ رَبِّهٖۤ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ ۘ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّىَ الَّذِىْ يُحْىٖ وَيُمِيْتُ ۙ قَالَ اَنَا اُحْىٖ وَاُمِيْتُ ؕ قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ يَاْتِىْ بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِىْ كَفَرَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥٨﴾

২৫৮. তুমি কি তার প্রতি লক্ষ্য করনি, যে ইবরাহীমের সাথে তার প্রতিপালক সম্বন্ধে বিতর্ক করেছিল, যেহেতু আল্লাহ তাকে রাজত্ব প্রদান করেছিলেন। যখন ইবরাহীম বলেছিলেন আমার প্রভু তিনি যিনি জীবিত করেন ও মৃত্যু দান করেন; সে বলেছিলঃ আমিই জীবন দান করি ও মৃত্যু দান করি; ইবরাহীম বলেছিলেন নিশ্চয় আল্লাহ সূর্যকে পূর্ব দিক হতে আনয়ন করেন; কিন্তু তুমি ওকে পশ্চিম দিক হতে আনয়ন কর; এতে সেই অবিশ্বাসকারী হতবুদ্ধি হয়ে পড়েছিল এবং আল্লাহ অত্যাচারী সম্প্রদায়কে পথ প্রদর্শন করেন না।

اَوْ كَالَّذِىْ مَرَّ عَلٰى قَرْيَةٍ وَّهِىَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ اَنّٰى يُحْىٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهٗ ؕ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ؕ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ اِلٰى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۚ وَانْظُرْ اِلٰى حِمَارِكَ ۫ وَلِنَجْعَلَكَ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ اِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا لَحْمًا ؕ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ ۙ قَالَ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٥٩﴾

২৫৯. অথবা ঐ ব্যক্তির অনুরূপ যে এমন কোন জনপদ অতিক্রম করছিল যা মুখ থুবড়ে নিজ ভিত্তির ওপর পড়েছিল। তিনি বললেন এই নগরের মৃত্যুর পর আল্লাহ আবার তাকে জীবন দান করবেন কিরূপে? অনন্তর আল্লাহ তাঁকে একশো বছরের জন্যে মৃত্যু দান করলেন, তৎপর তাঁকে পুনর্জীবিত করলেন, তিনি বললেনঃ এ অবস্থায় তুমি কতক্ষণ অতিবাহিত করেছো? তিনি বললেনঃ একদিন অথবা একদিনের কিয়দাংশ অতিবাহিত করেছি; তিনি বললেনঃ বরং তুমি একশত বর্ষ অতিবাহিত করেছো; অতএব তোমার খাদ্য

পানীয়ের প্রতি লক্ষ্য কর, ওটা বিকৃত হয়নি এবং তোমার গাধার প্রতি দৃষ্টিপাত কর এবং যেহেতু আমি তোমাকে মানুষের জন্যে নিদর্শন করতে চাই—আরও দর্শন কর হাড়গুলির পানে, ওকে কিরূপে আমি সংযুক্ত করি; তৎপর ওকে মাংসাবৃত্ত করি। অনন্তর যখন ওটা তাঁর নিকট স্পষ্ট হয়ে গেল তখন তিনি বললেনঃ আমি জানি যে, আল্লাহ সকল বিষয়ে সর্বশক্তিমান।

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِیْ كَیْفَ تُحْیِ الْمَوْتٰی ؕ
قَالَ اَوَ لَمْ تُؤْمِنْ ؕ قَالَ بَلٰی وَلٰكِنْ لِّیَطْمَىِٕنَّ قَلْبِیْ ؕ
قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّیْرِ فَصُرْهُنَّ اِلَیْكَ ثُمَّ
اجْعَلْ عَلٰی كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ
یَاْتِیْنَكَ سَعْیًا ؕ وَاعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ ﴿۲۶۰﴾

২৬০. এবং যখন ইবরাহীম বলেছিলেন হে আমার প্রভু! আপনি কিরূপে মৃতকে জীবিত করেন তা আমাকে প্রদর্শন করুন; তিনি বললেনঃ তবে কি তুমি বিশ্বাস কর না? তিনি বললেন হ্যাঁ; কিন্তু তাতে আমার অনন্তর পরিতৃপ্ত হবে; তিনি বললেনঃ তা হলে চারটা পাখী গ্রহণ কর, তারপর সেগুলোকে তোমার পোষ মানিয়ে নাও, অনন্তর প্রত্যেক পাহাড়ের উপর ওদের এক এক খন্ড রেখে দাও; অতঃপর ওদেরকে আহ্বান কর, ওরা তোমার নিকট দৌড়ে আসবে; এবং জেনে রেখো যে, নিশ্চয় আল্লাহ মহা পরাক্রান্ত, মহা প্রজ্ঞাময়।

مَثَلُ الَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ
كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِیْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ
مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ یُضٰعِفُ لِمَنْ یَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ
وَاسِعٌ عَلِیْمٌ ﴿۲۶۱﴾

২৬১. যারা আল্লাহর পথে স্বীয় ধন-সম্পদ ব্যয় করে তাদের উপমা—যেমন একটি শস্য বীজ, তা হতে উৎপন্ন হলো সাতটি শীষ, প্রত্যেক শীষে (উৎপন্ন হলো) একশত শস্য দানা এবং আল্লাহ যার জন্যে ইচ্ছে

করেন আরো বর্ধিত করে দেন, বস্তুতঃ আল্লাহ হচ্ছেন মহা মহাদাতা, মহাজ্ঞানী।

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٦٢﴾

২৬২. যারা আল্লাহর পথে নিজেদের ধন-সম্পদ ব্যয় করে, তৎপর যা ব্যয় করে তজ্জন্য কৃপা প্রকাশও করে না, কষ্ট দানও করে না, তাদের জন্যে তাদের প্রভুর নিকট পুরস্কার রয়েছে, বস্তুতঃ তাদের কোন ভয় নেই এবং তারা দুর্ভাবনাগ্রস্তও হবে না।

قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى ۗ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَلِيْمٌ ﴿٢٦٣﴾

২৬৩. যে দানের পরে কষ্ট দেয়া হয়, সে দান অপেক্ষা উত্তম ভাল কথা বলা ও ক্ষমা প্রদর্শন করা এবং আল্লাহ মহা সম্পদশালী, সম্মানী।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ كَالَّذِيْ يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۗ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ۗ لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦٤﴾

২৬৪. হে মু'মিনগণ! কৃপা প্রকাশ ও কষ্ট দিয়ে নিজেদের দানগুলো ব্যর্থ করে ফেলো না, সে ব্যক্তির ন্যায় যে নিজের ধন ব্যয় করে লোক দেখানোর জন্যে অথচ আল্লাহ ও পরকালে সে বিশ্বাস করে না; ফলতঃ তার উপমা যেমন এক বৃহৎ মসৃন পাথর খন্ড, যার উপর কতকটা মাটি (জমে) আছে, এ অবস্থায় বর্ষিত হলো তাতে প্রবল বর্ষা, যা তাকে পরিষ্কার করে দিল; তারা যা অর্জন করেছে তন্মধ্য হতে কোন বিষয়েই তারা সুফল পাবে না এবং আল্লাহ অবিশ্বাসী সম্প্রদায়কে পথ-প্রদর্শন করেন না।

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ بِرَبْوَةٍ

২৬৫. এবং যারা আল্লাহর সন্তুষ্টি সাধন ও স্বীয় জীবনের প্রতিষ্ঠার জন্যে ধন-সম্পদ ব্যয় করে, তাদের উপমা— যেমন উর্বর ভূভাগে অবস্থিত

اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٦٥﴾

একটি উদ্যান, তাতে প্রবল বৃষ্টিধারা পতিত হয়, ফলে সেই উদ্যান দ্বিগুণ খাদ্য শস্য দান করে; কিন্তু যদি তাতে প্রবল বৃষ্টিপাত না হয় তবে অল্প বৃষ্টি ধারাই যথেষ্ট এবং তোমরা যা করছো আল্লাহ তা প্রত্যক্ষকারী।

اَيَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ اَعْنَابٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ لَهٗ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۙ وَاَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَآءُ ۖ فَاَصَابَهَآ اِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٦٦﴾

২৬৬. তোমাদের কেউ কি এমনটা পছন্দ করবে? যে তার একটি খেজুর ও আঙ্গুরের বাগান থাক, যার তলদেশ দিয়ে নদী-নালা প্রবাহিত, তথায় সর্বপ্রকার ফলের সংস্থান তার রয়েছে, আর সে বার্ধক্যে উপনীত হলো, এদিকে তার কতকগুলো দুর্বল (অপ্রাপ্ত বয়স্ক) সন্তান-সন্তুতি আছে—এ অবস্থায় সেই বাগানে অগ্নিসহ এক ঘুর্ণিবায়ু আসলো আর তা পুড়ে ভস্মীভূত হয়ে গেল। এরূপে আল্লাহ তোমাদের জন্যে নিদর্শনাবলী ব্যক্ত করেন যেন তোমরা চিন্তা কর।[১]

১। একদিন উমর (রাযিআল্লাহু আনহু) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সাহাবাগণকে লক্ষ্য করে বললেনঃ তোমরাকি জান এই আয়াতটি কি বিষয়ে অবতীর্ণ হয়েছে- "তোমাদের কেহ কি পছন্দ কর যে, তার একটি বাগান হবে।" (সূরা বাকারাহ, আয়াতঃ ২৬৬) এ কথা শুনে তাঁরা বললেনঃ আল্লাহ্ই সবচাইতে ভাল জানেন। একথা শুনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহু) রেগে গিয়ে বললেনঃ বরং (পরিস্কার করে) জানি অথবা জানি না বলুন। তখন ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) বললেন, হে আমীরুল মু'মিনীন! এ ব্যাপারে আমার মনে একটি কথা জাগছে। উমর (রাযিআল্লাহু আনহু) বললেনঃ হে আমার ভাতিজা বল এবং তুমি তোমাকে ছোট মনে কর না। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) বললেনঃ এখানে আল্লাহ্ আমলের একটি উদাহরণ পেশ করেছেন। উমর (রাযিআল্লাহু আনহু) বললেনঃ কোন উদাহরণ? ইবনে আব্বাস বললেনঃ শুধুমাত্র আমলের উদাহরণ (হিসেবে বর্ণনা করা হয়েছে) একথা শুনে উমর বললেন একজন ধনাঢ্য ব্যক্তি আল্লাহ্র এতা'আত (বিধিনিষেধ) মেনে আমল করছে; অতঃপর আল্লাহ তার নিকট শয়তানকে প্রেরণ করলেন, তখন শয়তানের নির্দেশে নাফরমানী করতে লাগল। এমনকি তার সমস্ত নেক আমলকে সে বরবাদ করে ফেলল। (বুখারী, হাদীস নং ৪৫৩৮)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّاۤ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۪ وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ اِلَّاۤ اَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِ ؕ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿٢٦٧﴾

২৬৭. হে মু'মিনগণ! তোমরা যা উপার্জন করেছো এবং আমি যা তোমাদের জন্যে ভূমি হতে উৎপন্ন করেছি, সেই পবিত্র বিষয় হতে খরচ কর এবং তা হতে এরূপ কলুষিত বস্তু ব্যয় করতে মনস্থ করো না যা তোমরা মুদিত চক্ষু ব্যতীত গ্রহণ কর না; এবং তোমরা জেনে রাখো যে, আল্লাহ মহা সম্পদশালী, প্রশংসিত।

اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ ۚ وَاللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦٨﴾

২৬৮. শয়তান তোমাদেরকে অভাবের ভীতি প্রদর্শন করে এবং তোমাদেরকে অশ্লীল বিষয়ের আদেশ করে আর আল্লাহ তোমাদেরকে তাঁর নিকট হতে ক্ষমা ও দয়ার অঙ্গীকার করেন আর আল্লাহ হচ্ছেন অসীম করুণাময়, সর্বজ্ঞ।

يُّؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ؕ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٦٩﴾

২৬৯. তিনি যাকে ইচ্ছা হিকমত ও প্রজ্ঞা দান করেন এবং যাকে প্রজ্ঞা দান করা হয় ফলতঃ নিশ্চয়ই সে প্রচুর কল্যাণ লাভ করে বস্তুতঃ জ্ঞানবান ব্যক্তিগণ ব্যতীত কেউই শিক্ষা গ্রহণ করতে পারে না।

وَمَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿٢٧٠﴾

২৭০. এবং যে কোন বস্তু তোমরা ব্যয় কর না কেন, অথবা যে কোন প্রতিজ্ঞা (নযর) তোমরা গ্রহণ কর না কেন, আল্লাহ নিশ্চয়ই তা অবগত হন; আর অত্যাচারীগণের কোনই সাহায্যকারী নেই।

اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَاِنْ تُخْفُوْهَا وَتُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٧١﴾

২৭১. যদি তোমরা প্রকাশ্যভাবে দান কর তবে তা উৎকৃষ্ট এবং যদি তোমরা তা গোপন কর ও দরিদ্রদেরকে প্রদান কর তবে তাও তোমাদের জন্যে উত্তম এবং (এ

দ্বারা) তিনি তোমাদের কিছু পাপ মোচন করবেন। বস্তুতঃ তোমাদের কার্যকলাপ সম্বন্ধে আল্লাহ সর্বজ্ঞ।

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٢٧٢﴾

২৭২. তাদেরকে সুপথ প্রদর্শনের দায়িত্ব তোমার উপর নেই; বরং আল্লাহ যাকে ইচ্ছা সৎপথে পরিচালিত করেন এবং তোমরা ধন-সম্পদ হতে যা ব্যয় কর বস্তুতঃ তা তোমাদের নিজেদের জন্যে; আর একমাত্র আল্লাহর সন্তোষ লাভের চেষ্টায় ব্যতীত (অন্য কোন উদ্দেশ্যে) অর্থ ব্যয় করো না এবং তোমরা উত্তম সম্পদ হতে যা ব্যয় করবে তার পুরস্কার পুরোপুরি তোমরা পেয়ে যাবে। আর তোমাদের প্রতি অন্যায় করা হবে না।

لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِى الْاَرْضِ ۫ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۚ لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٢٧٣﴾

২৭৩. যারা আল্লাহর পথে অবরুদ্ধ রয়েছে বলে ভূ-পৃষ্ঠে গমনাগমনে অপারগ সেই সব দরিদ্রের জন্যে ব্যয় কর; (ভিক্ষা হতে) নিবৃত্ত থাকার কারণে অজ্ঞ লোকেরা তাদেরকে অবস্থাপন্ন বলে মনে করে, তুমি তাদেরকে তাদের লক্ষণের দ্বারা চিনতে পার, তারা লোকের নিকট ব্যাকুলভাবে যাচঞা (ভিক্ষা করে না) করে না এবং তোমরা শুদ্ধ সম্পদ হতে যা ব্যয় কর বস্তুতঃ সে সমস্ত বিষয় আল্লাহ সম্যকরূপে অবগত।

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٧٤﴾

২৭৪. যারা রাতে ও দিনে, গোপনে ও প্রকাশ্যে নিজেদের ধন-সম্পদগুলো ব্যয় করে, তাদের প্রভুর নিকট তাদের পুরস্কার রয়েছে, তাদের কোন ভয় নেই এবং তারা

চিন্তিত হবে না।[১]

اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِىْ يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْٓا اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ؕ فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ ؕ وَاَمْرُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧٥﴾

২৭৫. যারা সুদ ভক্ষণ করে, তারা শয়তানের স্পর্শে মোহাবিষ্ট ব্যক্তির দন্ডয়মান হওয়ার অনুরূপ ব্যতীত দন্ডায়মান হবে না; এর কারণ এই যে, তারা বলেঃ ক্রয়-বিক্রয় তো সুদের অনুরূপ। অথচ আল্লাহ তা'আলা ব্যবসা হালাল করেছেন এবং সুদকে হারাম করেছেন; অতঃপর যার নিকট তার প্রভুর পক্ষ হতে উপদেশ সমাগত হয়, ফলে সে নিবৃত্ত হয়, সুতরাং যা অতীত হয়েছে; তার কৃতকার্য আল্লাহর প্রতি নির্ভর; এবং যারা পুনঃ গ্রহণ করবে, তারাই হচ্ছে জাহান্নামের অধিবাসী, সেখানেই তারা চিরকাল অবস্থান করবে।

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِى الصَّدَقٰتِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ﴿٢٧٦﴾

২৭৬. সুদকে আল্লাহ ক্ষয় করেন এবং দানকে বর্ধিত করেন, বস্তুতঃ আল্লাহ অতি অকৃতজ্ঞ পাপাচারী-দেরকে ভালবাসেন না।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٧٧﴾

২৭৭. নিশ্চয় যারা ঈমান আনয়ন করে এবং সৎকার্যাবলী সম্পাদন করে, নামাযকে প্রতিষ্ঠিত রাখে ও যাকাত প্রদান করে, তাদের জন্যে

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেন, তিনি বলেছেনঃ যেদিন আরশের ছায়া ব্যতীত আর কোন ছায়া থাকবেনা (কিয়ামত দিবসে) সেদিন সাত শ্রেণীর লোককে আল্লাহ্ তার আরশের ছায়ার নিচে আশ্রয় দিবেন– (১) ন্যায় পরায়ণ শাসক (২) ঐ যুবক যে আল্লাহ্র ইবাদতের মধ্যে বড় হয়েছে। (৩) ঐ ব্যক্তি যার অন্তর মসজিদের সঙ্গে লেগে রয়েছে। (৪) ঐ দুই ব্যক্তি যারা শুধু আল্লাহ্র সন্তুষ্টির জন্যই পরস্পরকে ভালবাসে আবার ঐ একই উদ্দেশ্যে পরস্পরের সাথে সম্পর্ক ছিন্ন করে। (৫) ঐ ব্যক্তি যাকে কোন সম্ভ্রান্ত বংশের সুন্দরী মহিলা (ব্যাভিচারের দিকে) আহ্বান করলে (তদুত্তরে) সে বলে আমি আল্লাহ্কে ভয় করি। (৬) যে, এতটা গোপনীয়তার সাথে দান খয়রাত করে যে তার ডান হাত কি দান করছে বাম হাত তা জানতে পারে না। (৭) ঐ ব্যক্তি যে নির্জনে আল্লাহ্র যিকিরে চোখের অশ্রু ঝরায়। (বুখারী, হাদীস নং ১৪২৩)

তাদের প্রতিপালকের নিকট পুরস্কার রয়েছে এবং তাদের জন্যে আশঙ্কা নেই এবং তারা চিন্তিত হবে না।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰوٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧٨﴾

২৭৮. হে বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ! আল্লাহকে ভয় কর এবং যদি তোমরা মু'মিন হও, তবে সুদের মধ্যে যা বকেয়া রয়েছে তা বর্জ কর।[১]

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَاِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٢٧٩﴾

২৭৯. কিন্তু যদি না কর তাহলে আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের[২] পক্ষ হতে তোমাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধের জন্য প্রস্তুত হয়ে যাও। যদি তোমরা ক্ষমা প্রার্থনা কর তবে তোমাদের জন্যে তোমাদের মূলধন রয়েছে এবং তোমরা অত্যাচার করবে না ও তোমরাও অত্যাচারীত হবে না।

১। (ক) আওন বিন আবূ হুযাইফা থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ আমার পিতা একদা শিংগা লাগাতে পারে এমন (রক্তমোক্ষণকারী) এক কৃতদাস কিনে আনলেন এবং আমি তাকে এ সম্পর্কে জিজ্ঞেস করলাম তিনি বললেনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) কুকুরের মূল্য এবং রক্তের মূল্য গ্রহণ করতে নিষেধ করেছেন এবং শরীরে খোদাই করে নকশা করা এবং করানো থেকে নিষেধ করেছেন এবং সুদ দিতে এবং নিতে নিষেধ করেছেন এবং যে ছবি উঠায় (চিত্রাংকনকারীকে) তাকে লা'নত করেছেন। (বুখারী, হাদীস নং ২০৮৬)

(খ) আওন বিন আবূ হুযাইফা তার পিতা থেকে বর্ণনা করেন যে, তার পিতা শিংগা লাগায় এমন এক কৃতদাস কিনে এনে তার শিংগা লাগানোর যন্ত্রপাতি ভেঙ্গে ফেললেন এবং অতঃপর বললেনঃ নিশ্চয়ই নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) রক্তের মূল্য এবং কুকুরের মূল্য এবং পতিতা বৃত্ত থেকে নিষেধ করেছেন এবং সুদ দাতা ও গ্রহীতা এবং শরীর খোদাই করে নকশা করা এবং যে করায় এবং যে ছবি অংকন করে, এদের সবার ওপর লা'নত করেছেন। (বুখারী, হাদীস নং ৫৯৬২)

২। (ক) ইয়াহইয়া থেকে বর্ণিত তিনি বলেনঃ আমি উকবা ইবনে আব্দুল গাফেরকে বলতে শুনেছি তিনি আবূ সাঈদ খুদরী (রাযিআল্লাহু আনহু)-কে বলতে শুনেছেন যে, বেলাল (রাযিআল্লাহু আনহু) একদা নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট বুরনী (একপ্রকার উন্নতমানের খেজুর) নিয়ে আসল, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তাঁকে জিজ্ঞেস করলেন, এটা কোথায় পেলে? বেলাল (রাযিআল্লাহু আনহু) বললঃ আমার নিকট নিম্নমানের দু'সা' খেজুর ছিল, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে খাওয়ানোর উদ্দেশ্যে ঐ দু'সার পরিবর্তে আমি এই খেজুর একসা' কিনেছি। একথা শুনে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, হায় হায় এটাতো সরাসরি সুদ, এরূপ করো না; বরং যদি তুমি ভাল খেজুর কিনতে চাও, তাহলে খারাপ খেজুর পৃথকভাবে বিক্রি করে, ঐ মূল্যের বিনিময়ে ভাল খেজুর ক্রয় করবে। (বুখারী, হাদীস নং ২৩১২)

(খ) সামুরা ইবনে জুনদুব (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) অধিকাংশ সময়ই তাঁর সাথীদের জিজ্ঞেস করতেন, তোমাদের কেউ কোন স্বপ্ন দেখেছ কি?

কেউ কোন স্বপ্ন দেখে থাকলে, সে তাঁর নিকট বলত যা আল্লাহ্ চাইতেন। একদিন সকালে তিনি বললেন, রাতে (স্বপ্নে) আমার নিকট দু'জন আগন্তুক (ফেরেশ্‌তা) আসল। আমাকে তারা উঠাল। তারপর আমাকে বলল চলুন! আমি তাদের দু'জনের সাথে চললাম। আমরা শায়িত এক লোকের নিকট এসে পৌছলাম। অপর একজন তার নিকট পাথর হাতে দাঁড়ান। সে তার মাথা লক্ষ্য করে পাথর নিক্ষেপ করছে। এতে তার মাথা ফেটে যাচ্ছে। আর পাথর অনেক নিচে গিয়ে পতিত হচ্ছে। সে আবার পাথরের পেছনে পেছনে যায়। পাথরটি নিয়ে ফিরে আসতে না আসতেই তার মাথা পূর্বের ন্যায় ভাল হয়ে যায়। ফিরে এসে সে প্রথমে যেরূপ করেছিল আবার অনুরূপ আচরণ করে। আমি ফেরেশ্‌তাদ্বয়কে জিজ্ঞেস করলাম, সুবহানাল্লাহ্! বল এরা কারা? তারা বলল, সামনে চলুন। আমরা সামনে অগ্রসর হয়ে এক লোককে দেখতে পেলাম। সে চিত হয়ে শুয়ে ছিল। আরেকজন তার নিকট লোহার সাঁড়াশী হাতে দাঁড়ান ছিল। সে ওটা দ্বারা একের পর এক তার মুখমন্ডলের একাংশ চিরে (গলার) পেছন পর্যন্ত নিয়ে যেত। অনুরূপ তার নাকের ছিদ্র থেকে চোখ চিরে পেছন পর্যন্ত নিয়ে যেত। আওফ বলেন, আবূ রাজা বেশির ভাগ এরূপ বলতেন, সে একদিকে কেটে অপরদিকে কাটত। অপরদিকে কাটা শেষ হতে না হতেই প্রথম দিকটি পূর্বের ন্যায় ভাল হয়ে যেত, এভাবে বার বার ঐরূপই করত যেরূপ প্রথম করছিল। আমি বললাম, সুবহানাল্লাহ্! বল এরা দু'জন কে? তারা উভয়ে বলল, সামনে চলুন। সামনে আমরা একটি চুলারমত এক গর্তের নিকট গিয়ে পৌছলাম। তিনি (রাসূল সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, আমার মনে হয়, তিনি বলেছিলেন, আমি সেখানে শোরগোলের শব্দ শুনতে পেলাম। আমরা তাতে উঁকি মেরে বেশ কিছু উলঙ্গ নারী-পুরুষ তার মাঝে দেখতে পেলাম। যাদের নিচে থেকে আগুনের লেলিহান শিখা তাদের স্পর্শ করছিল। আগুনের আওতায় আসলেই তারা উচ্চস্বরে চিৎকার করে উঠত। আমি জিজ্ঞেস করলাম, এরা কারা? তারা বলল, সামনে চলুন। সামনে অগ্রসর হয়ে আমরা একটি স্রোতশ্বিনীর (নদীর) নিকট পৌছলাম। আমার যদ্দূর মনে পড়ে, তিনি বলছিলেন, সেটি ছিল লাল রক্তের ন্যায়। নহরে একজনকে সাঁতরাতে দেখলাম। নহরের পাড়ে একজন লোক দাঁড়িয়ে ছিল। যার নিকট ছিল অসংখ্য পাথরের এক স্তূপ। সাঁতারকারী লোকটি সাঁতরানো শেষ করে যার নিকট পাথরের স্তূপ ছিল তার নিকট এসে মুখ খুলে দিত। আর সে তার মুখে একটি করে পাথর নিক্ষেপ করত। তারপর সে সাঁতরাতে চলে যেত। সাঁতরিয়ে ফিরে এসে বারবার অনুরূপ মুখ খুলে দিত। আর ঐ লোকটি তার মুখে একটি করে পাথর নিক্ষেপ করত। আমি জিজ্ঞেস করলাম, এরা কারা? তারা বলল, সামনে চলুন। আমরা সামনে অগ্রসর হয়ে একজন বিভৎস চেহারার লোক দেখতে পেলাম। যেরূপ তোমরা কোন বিভৎস চেহারার লোক দেখে থাক। তার নিকট ছিল আগুন। সে আগুন জ্বালাচ্ছিল ও তার চতুর্দিকে দৌড়াচ্ছিল। আমি জিজ্ঞেস করলাম, এ লোক কে? তারা বলল, সামনে চলুন। সামনে আমরা এক ঘন সন্নিবিষ্ট বাগানে উপনীত হলাম। বাগানটি বসন্তের হরেক রকম ফুলে সুশোভিত ছিল। বাগানের মাঝে ছিল একজন লোক। যার আকৃতি এতখানি দীর্ঘকায় ছিল, আমরা তার মাথা দেখতে পাচ্ছিলাম না। তার চারপাশে এত বিপুলসংখ্যক বালক ছিল, যেরূপ আর কখনো আমি দেখিনি। আমি জিজ্ঞেস করলাম, এ লোক কে? আর এরাই বা কারা? তারা বলল, সামনে চলুন, সামনে চলুন। অবশেষে আমরা এক বিরাট বাগানে গিয়ে উপনীত হলাম। এরূপ বড় ও সুন্দর বাগান আমি আর কখানো দেখিনি। তারা আমাকে বলল, এর ওপর আরোহণ করুন। আমি তাতে আরোহণ করলে এক শহর আমাদের নজরে পড়ল। সেটি ছিল সোনা ও রূপার ইট দিয়ে তৈরি। আমরা ঐ শহরের দরজায় পৌছলাম। দরজা খুলতে বললে আমাদের জন্য দরজা খুলে দেয়া হল। ভেতরে প্রবেশ করে আমরা কিছু লোকের সাক্ষাত পেলাম। যাদের শরীরের অর্ধেক খুবই সৌন্দর্যমন্ডিত ছিল। যেরূপ তোমরা খুব সুন্দর কাউকে দেখে থাক। আর অর্ধেক ছিল খুবই কদাকার। যেরূপ তোমরা খুব কদাকার কাউকে দেখে থাক। তারা উভয়ে ঐ লোকদের উদ্দেশ্যে বলল, যাও, তোমরা এ ঝর্ণায় নেমে পড়। দেখা গেল প্রস্থের দিকে লম্বা প্রবাহমান একটি ঝর্ণা রয়েছে। তার পানি ছিল সম্পূর্ণ সাদা। তারা গেল এবং তাতে নেমে পড়ল। তারপর তারা আমাদের নিকট ফিরে আসল। দেখা গেল তাদের কদাকৃতি দূর হয়ে গিয়েছে। এক্ষণে তারা খুব সুন্দর আকৃতি-বিশিষ্ট হয়ে গিয়েছে। ফেরেশ্‌তাদ্বয় আমাকে জানাল, এটাই 'আদন' নামক বেহেশ্‌ত। এটাই আপনার বাসস্থান। আমি উপরের দিকে

وَاِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ ؕ وَاَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨٠﴾

২৮০. আর যদি সে অভাবগ্রস্ত হয় তবে স্বচ্ছলতা আসা পর্যন্ত তাকে সময় দেয়া উচিত। আর যদি তোমরা বুঝে থাক তবে তোমাদের জন্যে দান করাই উত্তম।[১]

وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ۗ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٨١﴾

২৮১. আর তোমরা সেই দিনের ভয় কর, যেদিন তোমরা আল্লাহর পানে প্রত্যাবর্তিত হবে, তখন যে যা অর্জন করেছে তা সম্পূর্ণরূপে প্রদত্ত হবে এবং তারা অত্যাচারিত হবে না।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ؕ وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌۢ

২৮২. হে বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ, যখন তোমরা কোন নির্দিষ্টকালের জন্যে ঋণ আদান-প্রদান করবে,

---

তাকালাম। দেখলাম, ধবধবে সাদা মেঘের ন্যায় এক অট্টালিকা। তারা আমাকে জানাল, এটাই আপনার প্রাসাদ। আমি বললাম, আল্লাহ্ তোমাদের উভয়ের কল্যাণ করুন! আমাকে ছেড়ে দাও। আমি এতে প্রবেশ করব। তারা বলল, এখন নয়। তবে এতে আপনি অবশ্যই প্রবেশ করবেন। আমি তাদের বললাম, সারারাত ধরে আমি অনেক অনেক আশ্চর্য জিনিস প্রত্যক্ষ করলাম। এগুলোর তাৎপর্য কি? তারা উভয়ে বলল, এক্ষণে আমরা তা আপনাকে জানাব। প্রথম যে ব্যক্তির নিকট আপনি গিয়েছেন, যার মাথা পাথর মেরে চৌচির করা হচ্ছিল, সে কুর'আন মুখস্থ করে (তার ওপর আমল) ছেড়ে দিত। আর ঘুমিয়ে ফরজ নামায তরক করত। আর যে ব্যক্তির নিকট আপনি গেলেন, যার গলদেশের পেছন পর্যন্ত চেরা হচ্ছিল। আর নাকের ছিদ্র ও তার চোখ পিঠ পর্যন্ত চেরা হচ্ছিল, সে সকাল বেলা আপন ঘর থেকে বেরিয়ে যেত, আর চতুর্দিকে মিথ্যার প্রচার করে বেড়াত। আর ঐ উলঙ্গ নারী-পুরুষ যাদের প্রজ্জ্বলিত চুলায় দেখতে পেয়েছেন, তারা ছিল যেনাকার পুরুষ ও যেনাকার নারী। আর যে লোক ঝর্ণায় সাঁতরাচ্ছিল যার নিকট দিয়ে আপনি গিয়েছিলেন, যে পাথরের লোকমা খাচ্ছিল, সে ছিল সুদখোর। আর ঐ কদাকার ব্যক্তি যাকে আপনি আগুনের নিকট দেখতে পেয়েছিলেন, আর যে, আগুন জ্বালিয়ে তার চারদিকে দৌড়াচ্ছিল সে দোযখের দারোগা মালেক ফেরেশ্তা। বাগানে যে দীর্ঘাকৃতির লোককে দেখেছিলেন তিনি ছিলেন ইবরাহীম (আলাইহিস্ সালাম)। আর তাঁর চারপাশে যে বালকদের আপনি দেখেছেন, তারা ছিল ঐ সব শিশু, যারা স্বভাব ধর্মের (ইসলাম) ওপর মৃত্যুবরণ করেছে। বর্ণনাকারী বলেন, মুসলমানদের কেউ কেউ জিজ্ঞেস করেছিলঃ হে আল্লাহ্র রাসূল! মুশরিকদের সন্তানরা কোথায় রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছিলেন, তারাও সেখানে ছিল। আর যাদের অধিকাংশ অত্যন্ত সুন্দর ছিল, আরেক অংশ ছিল অত্যন্ত কদাকার, তারা ছিল ওসব লোক, যারা ভাল-মন্দ উভয় প্রকার কাজ মিশ্রিতভাবে করেছিল। আল্লাহ্ তাদের ত্রুটিসমূহ ক্ষমা করে দিয়েছেন। (বুখারী, হাদীস নং ৭০৪৭)

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, নিশ্চয়ই রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন (পূর্বের যামানায়) এক ব্যক্তি লোকদেরকে ঋণ দিত আর তার সন্তানদেরকে বলত যে, যখন কোন বিপদগ্রস্ত লোক আসে তখন তার কর্জ ক্ষমা করে দিও। হয়ত আল্লাহ্ও আমাদেরকে ক্ষমা করে দিবেন। তিনি বলেনঃ অতঃপর (লোকটি মৃত্যুর পর) আল্লাহ্র সাক্ষাত পেল, তখন আল্লাহ্ তাকে ক্ষমা করে দিলেন। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৮০)

بِالْعَدْلِ ۚ وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ
اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ ۚ وَلْيُمْلِلِ الَّذِىْ عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ
اللّٰهَ رَبَّهٗ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْـًٔا ؕ فَاِنْ كَانَ الَّذِىْ
عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا اَوْ ضَعِيْفًا اَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ
اَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ ؕ وَاسْتَشْهِدُوْا
شَهِيْدَيْنِ مِنْ رِّجَالِكُمْ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ
فَرَجُلٌ وَّامْرَاَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَآءِ اَنْ
تَضِلَّ اِحْدٰىهُمَا فَتُذَكِّرَ اِحْدٰىهُمَا الْاُخْرٰى ؕ
وَلَا يَاْبَ الشُّهَدَآءُ اِذَا مَا دُعُوْا ؕ وَلَا تَسْـَٔمُوْٓا اَنْ
تَكْتُبُوْهُ صَغِيْرًا اَوْ كَبِيْرًا اِلٰٓى اَجَلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ اَقْسَطُ
عِنْدَ اللّٰهِ وَاَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَاَدْنٰٓى اَلَّا تَرْتَابُوْٓا اِلَّآ
اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ
عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَلَّا تَكْتُبُوْهَا ؕ وَاَشْهِدُوْٓا اِذَا
تَبَايَعْتُمْ ۪ وَلَا يُضَآرَّ كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ؕ وَاِنْ
تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ
وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٨٢﴾

তখন তা লিখে নাও; আর কোন একজন লেখক যেন ন্যায্যভাবে তোমাদের মধ্যে (ঐ আদান-প্রদানের দলীল) লিখে দেয়, আর কোন লেখক যেন (দলীল) লিখে দিতে অস্বীকার না করে, আল্লাহ তাকে যেরূপ শিক্ষা দিয়েছেন, তার লিখে দেয়া উচিত এবং যে ব্যক্তির উপর দায়িত্ব সেও লিখিয়ে নেবে এবং তার উচিত যে, স্বীয় প্রতিপালক আল্লাহকে ভয় করা ও এর মধ্যে কিছুমাত্র ব্যতিক্রম না করা; অনন্তর যার উপর দায়িত্ব সে যদি নির্বোধ বা অযোগ্য অথবা লিখিয়ে নিতে অসমর্থ হয় তবে তার অভিভাবকেরা ন্যায়সঙ্গত ভাবে লিখিয়ে নেবে এবং তোমাদের মধ্যে দু'জন পুরুষ সাক্ষীকে সাক্ষী করবে; কিন্তু যদি দু'জন পুরুষ না পাওয়া যায় তবে সাক্ষীগণের মধ্যে তোমরা একজন পুরুষ ও দু'জন নারী মনোনীত করবে, যদি নারীদ্বয়ের একজন ভুলে যায় তবে উভয়ের একজন অপরজনকে স্মরণ করিয়ে দেবে এবং যখন আহ্বান করা হয় তখন সাক্ষীগণের অস্বীকার না করা উচিত এবং ক্ষুদ্র অথবা বৃহৎ বিষয়ের নির্দিষ্ট সময় লিখে নিতে তোমরা অবহেলা করো না, এটা আল্লাহর নিকট অতি সঙ্গত এবং সাক্ষ্যের জন্যে এটাই দৃঢ়তা ও সন্দেহে পতিত না হওয়ার নিকটতর; কিন্তু যদি তোমরা কারবারে পরস্পরে হাতে হাতে আদান-প্রদান কর, তবে তা লিপিবদ্ধ না করলে তোমাদের পক্ষে

দোষ নেই এবং পরস্পর ক্রয়-বিক্রয় করার সময় সাক্ষী রাখবে, এবং লেখককে ও সাক্ষীকে যেন ক্ষতিগ্রস্ত না করা হয়, আর যদি কর তবে তা নিশ্চয় তোমাদের পক্ষে অনাচার এবং আল্লাহকে ভয় কর ও আল্লাহই তোমাদেরকে শিক্ষা প্রদান করেন এবং আল্লাহ সর্ববিষয়ে মহাজ্ঞানী।

وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ؕ فَإِنْ اَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِى اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ وَلْيَتَّقِ اللّٰهَ رَبَّهٗ ؕ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ؕ وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَإِنَّهٗۤ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٨٣﴾

২৮৩. এবং যদি তোমরা সফরে থাক ও লেখক না পাও, তবে হস্তান্তরকৃত বন্ধক রাখা বিধেয়।[১] অনন্তর কেউ যদি কাউকে বিশ্বাস করে তবে যাকে বিশ্বাস করা হয়েছে তার পক্ষে গচ্ছিত দ্রব্য প্রত্যর্পণ করা উচিত এবং স্বীয় প্রতিপালক আল্লাহকে ভয় করা ও সাক্ষ্যে গোপন না করা উচিত এবং যে কেউ তা গোপন করবে, নিশ্চয় তার মন পাপাচারী; বস্তুতঃ আল্লাহ তোমাদের কার্যকলাপ সম্বন্ধে সম্যক জ্ঞাতা।

لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَإِنْ تُبْدُوْا مَا فِىْۤ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٨٤﴾

২৮৪. নভোমন্ডলে ও ভূমন্ডলে যা কিছু রয়েছে সবই আল্লাহর এবং তোমাদের অন্তরে যা রয়েছে, তা প্রকাশ কর বা গোপন রাখ, আল্লাহ তার হিসাব তোমাদের নিকট হতে গ্রহণ করবেন, অতঃপর তিনি যাকে ইচ্ছা ক্ষমা করবেন এবং যাকে ইচ্ছা শাস্তি দিবেন এবং আল্লাহ সর্ব বিষয়ে শক্তিমান।

১। আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) এক ইয়াহূদীর নিকট থেকে নির্দিষ্ট মেয়াদে (বাকী) কিছু খাদ্য সামগ্রী খরিদ করেন। এবং ঐ সময় পর্যন্ত তিনি তার নিকট তাঁর বর্ম বন্ধক রাখেন। (বুখারী, হাদীস নং ২৫০৯)

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۟ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۟ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨٥﴾

২৮৫. রাসূল তাঁর প্রতিপালক হতে তার প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে তা বিশ্বাস করেন এবং মু'মিনগণও (বিশ্বাস করেন); তাঁরা সবাই ঈমান এনেছে আল্লাহর উপর তাঁর ফেরেশতাগণের উপর, তাঁর গ্রন্থসমূহের উপর এবং তাঁর রাসূলগণের উপর। আমরা তাঁর রাসূলগণের মধ্যে কাউকেও পার্থক্য করি না, তারা বলে, আমরা শ্রবণ করলাম ও স্বীকার করলাম, হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা আপনারই নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করছি এবং আপনারই দিকে চূড়ান্ত প্রত্যাবর্তন।

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۟ وَاغْفِرْ لَنَا ۟ وَارْحَمْنَا ۟ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٨٦﴾

২৮৬. কোন ব্যক্তিকেই আল্লাহ তার সাধ্যের অতিরিক্ত কর্তব্য পালনে বাধ্য করেন না; কারণ সে যা উপার্জন করেছে তা তারই জন্যে এবং সে যা (অন্যায়) করেছে তা তারই উপর বর্তায়। হে আমাদের প্রতিপালক! যদি আমরা ভুলে যাই অথবা না জেনে ভুল করি তজ্জন্যে আমাদেরকে দোষারোপ করবেন না, হে আমাদের প্রতিপালক, আমাদের পূর্ববর্তীগণের উপর যেরূপ ভার অর্পণ করেছিলেন, আমাদের উপর তদ্রূপ ভার অর্পণ করবেন না; হে আমাদের প্রভু, যা আমাদের শক্তির অতীত ঐরূপ ভার বহনে আমাদেরকে বাধ্য করবেন না এবং আমাদেরকে ক্ষমা করুন ও আমাদেরকে মার্জনা করুন এবং

আমাদের দয়া করুন; আপনিই আমাদের অভিভাবক। অতএব কাফির সম্প্রদায়ের বিরুদ্ধে আমাদেরকে সাহায্য করুন।[১]

সূরাঃ আল-ইমরান, মাদানী

(আয়াতঃ ২০০ রুকূঃ ২০)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةُ اٰلِ عِمْرٰنَ مَدَنِيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٢٠٠ رُكُوْعَاتُهَا ٢٠

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ۚ ﴿١﴾

১. আলিফ-লাম-মীম।

اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ﴿٢﴾

২. আল্লাহ ছাড়া কোনই সত্য মা'বূদ নেই। তিনি চিরঞ্জীব, স্বয়ং সম্পূর্ণ ও সকল সৃষ্টির রক্ষণাবেক্ষণকারী।

نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَاَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ﴿٣﴾

৩. তিনি হক সহ তোমার প্রতি গ্রন্থ অবতীর্ণ করেছেন যা পূর্ববর্তী বিষয়ের সত্যতা প্রতিপাদনকারী এবং তিনি তাওরাত ও ইনজীল অবতীর্ণ করেছিলেন।

مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَاَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ۗ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٤﴾

৪. মানুষের পথপ্রদর্শনের জন্য ইতিপূর্বে (তিনি আরো কিতাব নাযিল করেছেন।) আর ফুর'কান অবতীর্ণ করেছেন। নিশ্চয়ই যারা আল্লাহর নিদর্শনাবলীর প্রতি অবিশ্বাস করে, তাদের জন্যে কঠোর শাস্তি রয়েছে, আর আল্লাহ পরাক্রান্ত প্রতিশোধ গ্রহণকারী।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ﴿٥﴾

৫. নিশ্চয়ই আল্লাহ– যাঁর নিকট ভূমণ্ডলের মধ্যে ও নভোমণ্ডলের মধ্যে কোন বিষয়ই লুকায়িত নেই।

১। ইবনে শিহাব থেকে বর্ণিত, তিনি বলেছেন, মাহমুদ ইবনে রুবাই আমাকে জানিয়েছেন যে, নিশ্চয়ই ইতবান ইবনে মালেক, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লামের)-এর আনসারী সাহাবা ছিলেন এবং তিনি তাদের মধ্যে ছিলেন যারা বদরের যুদ্ধে অংশগ্রহণ করেছিলেন। নিশ্চয়ই তিনি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর কাছে গেলেন। (বুখারী, হাদীস নং ৪০০৯)

هُوَ الَّذِيْ يُصَوِّرُكُمْ فِي الْاَرْحَامِ كَيْفَ يَشَآءُ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ⑥

৬. তিনিই স্বীয় ইচ্ছানুযায়ী জরায়ুর মধ্যে তোমাদের আকৃতি গঠন করেছেন, সেই পরাক্রান্ত মহা প্রজ্ঞাময় ব্যতীত কোনই সত্য মা'বূদ নেই।

هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ اٰيٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ وَاُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ ؕ فَاَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَآءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَآءَ تَاْوِيْلِهٖ ۚ وَمَا يَعْلَمُ تَاْوِيْلَهٗٓ اِلَّا اللّٰهُ ۘ وَالرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ يَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ⑦

৭. তিনিই তোমার প্রতি গ্রন্থ অবতীর্ণ করেছেন, যাতে সুস্পষ্ট অকাট্য আয়াতসমূহ রয়েছে—ওগুলো গ্রন্থের মূল এ ব্যতীত কতিপয় আয়াতসমূহ অস্পষ্ট; অতএব যাদের অন্তরে বক্রতা রয়েছে, ফলতঃ তারাই অশান্তি সৃষ্টি ও (ইচ্ছা মত) ব্যাখ্যা বিশ্লেষণের উদ্দেশ্যে অস্পষ্টের অনুসরণ করে অথচ আল্লাহ ব্যতীত এগুলোর অর্থ কেউই অবগত নয়; আর যারা জ্ঞানে সুপ্রতিষ্ঠিত, তারা বলেঃ আমরা ওতে বিশ্বাস করি, সমস্তই আমাদের প্রতিপালকের নিকট হতে সমাগত এবং জ্ঞানবান ব্যতীত কেউই উপদেশ গ্রহণ করে না।

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ⑧

৮. হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদের পথ-প্রদর্শনের পর আমাদের অন্তরসমূহ বক্র করবেন না এবং আমাদেরকে আপনার নিকট হতে করুণা প্রদান করুন, নিশ্চয়ই আপনি মহাদাতা।

رَبَّنَآ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ⑨

৯. হে আমাদের প্রতিপালক! নিশ্চয়ই আপনি সকল মানুষকে সমবেতকারী ঐ দিন যাতে একটুও সন্দেহ নেই, নিশ্চয়ই আল্লাহ প্রতিজ্ঞা ভঙ্গকারী নন।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمْ وَقُوْدُ النَّارِ ۙ﴿١٠﴾

১০. নিশ্চয়ই যারা অবিশ্বাস করেছে, তাদের ধন-সম্পদ ও তাদের সন্তান-সন্ততি আল্লাহর নিকট কোন বিষয়েই ফলপ্রদ হবে না এবং তারাই হবে জাহান্নামের ইন্ধন।

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١١﴾

১১. ফিরাউন সম্প্রদায় এবং তাদের পূর্ববর্তীদের প্রকৃতির ন্যায় তারা আমার আয়াতসমূহের প্রতি অসত্যারোপ করেছে, এই হেতু আল্লাহ তাদের অপরাধের জন্যে তাদেরকে শাস্তি প্রদান করেছেন এবং আল্লাহ কঠোর শাস্তি দাতা।

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ وَتُحْشَرُوْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٢﴾

১২. যারা অবিশ্বাস করেছে, তুমি তাদেরকে বলঃ অচিরেই তোমরা পরাভূত হবে এবং তোমাদেরকে জাহান্নামের দিকে একত্রিত করা হবে এবং ওটা নিকৃষ্টতর স্থান।

قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ فِيْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ؕ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاُخْرٰى كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَاْيَ الْعَيْنِ ؕ وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿١٣﴾

১৩. নিশ্চয়ই তোমাদের জন্যে দু'টি দলের পরস্পর সম্মুখীন হওয়ার মধ্যে (বদরের যুদ্ধে) নিদর্শন (শিক্ষনীয়) রয়েছে, তাদের একদল আল্লাহর পথে সংগ্রাম করছিল এবং অপর দল অবিশ্বাসী ছিল, যারা প্রত্যক্ষ দৃষ্টিতে তাদেরকে দ্বিগুণ দেখছিল এবং আল্লাহ যাকে ইচ্ছা তদীয় সাহায্য দানে শক্তিশালী করেন, নিশ্চয়ই এর মধ্যে চক্ষুষ্মানদের জন্যে উপদেশ রয়েছে।

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ

১৪. মানবমণ্ডলীর জন্য রমণীগণের, সন্তান-সন্ততির, জমাকৃত স্বর্ণ ও রৌপ্য ভাণ্ডারের, সুশিক্ষিত অশ্বের ও পালিত পশুর এবং শস্য ক্ষেত্রের প্রেমাকর্ষণী দ্বারা সুশোভিত করা হয়েছে, এটা পার্থিব জীবনের সম্পদ

الْمَاٰبِ ﴿١٤﴾

এবং আল্লাহর নিকটেই শ্রেষ্ঠতম আশ্রয়।

قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿١٥﴾

১৫. তুমি বলঃ আমি কি তোমাদেরকে এটা অপেক্ষাও উত্তম বিষয়ের সংবাদ দেব? যারা আল্লাহ ভীরু তাদের জন্য তাদের প্রতিপালকের নিকট জান্নাত রয়েছে— যার নিম্নে নদীসমূহ প্রবাহিত, তন্মধ্যে তারা সদা অবস্থান করবে এবং সেখানে পূত পবিত্র সহধর্মিণীগণ ও আল্লাহর সন্তুষ্টি রয়েছে এবং আল্লাহ বান্দাদের প্রতি লক্ষ্যকারী।

اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٦﴾

১৬. যারা বলেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! নিশ্চয়ই আমরা বিশ্বাস স্থাপন করেছি, অতএব আমাদের অপরাধ ক্ষমা করুন এবং জাহান্নামের আগুনের শাস্তি হতে আমাদেরকে বাঁচিয়ে নিন।

اَلصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ﴿١٧﴾

১৭. যারা ধৈর্যশীল, সত্যপরায়ণ, অনুগত, দানশীল এবং রাতের শেষাংশে ক্ষমা প্রার্থণাকারী।

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًۢا بِالْقِسْطِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾

১৮. আল্লাহ সাক্ষ্য প্রদান করেন যে, নিশ্চয়ই তিনি ব্যতীত সত্য কেউ মা'বূদ নেই এবং ফেরেশতাগণ, ন্যায় নিষ্ঠ বিদ্যানগণ ও (সাক্ষ্য প্রদান করেন) তিনি ব্যতীত অন্য কোন সত্য মা'বূদ নেই, তিনি পরাক্রমশালী প্রজ্ঞাময়।

اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۟ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

১৯. নিশ্চয়ই ইসলামই আল্লাহর একমাত্র মনোনীত ধর্ম এবং যাদেরকে গ্রন্থ প্রদান করা হয়েছে তাদের কাছে জ্ঞান আসার পর তারা পরস্পর বিদ্বেষবশত বিরোধে লিপ্ত

فَإِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٩﴾

হয়েছিল এবং যে আল্লাহর নিদর্শন-সমূহ অস্বীকার করে, নিশ্চয়ই আল্লাহ সত্বর হিসাব গ্রহণকারী।

فَإِنْ حَاجُّوكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ۗ وَقُلْ لِلَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْأُمِّيِّينَ أَأَسْلَمْتُمْ ۚ فَإِنْ أَسْلَمُوا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۖ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠﴾

২০. অনন্তর যদি তারা তোমার সাথে বিতর্ক করে তবে তুমি বলঃ আমি ও আমার অনুসারীগণ আল্লাহর উদ্দেশ্যে আত্মসমর্পণ করেছি এবং যাদেরকে গ্রন্থ প্রদান করা হয়েছে এবং যারা নিরক্ষর তাদেরকে বলঃ তোমরা কি আত্মসমর্পণ করেছো? অনন্তর তবে নিশ্চয়ই তারা সুপথ পেয়ে যাবে যদি তারা আত্মসমর্পণ করে, আর যদি ফিরে যায়, তবে তোমার উপর দায়িত্ব তো শুধু প্রচার করা মাত্র; আর আল্লাহ বান্দাদের প্রতি লক্ষ্যকারী।

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ يَأْمُرُونَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢١﴾

২১. নিশ্চয়ই যারা আল্লাহর নিদর্শন-সমূহ অবিশ্বাস করে ও অন্যায়ভাবে নবীদেরকে হত্যা করে এবং যারা মানবমণ্ডলীর মধ্যে ন্যায়ের আদেশ-কারী তাদেরকে হত্যা করে; তাদেরকে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তির সুসংবাদ দিয়ে দাও।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ﴿٢٢﴾

২২. এদেরই কৃতকর্মসমূহ ইহকাল ও পরকালে ব্যর্থ হবে এবং তাদের জন্যে কেউ সাহায্যকারী নেই।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ مِنْهُمْ وَهُمْ مُعْرِضُونَ ﴿٢٣﴾

২৩. তুমি কি তাদের প্রতি লক্ষ্য করনি যাদেরকে গ্রন্থের একাংশ প্রদান করা হয়েছে? তাদেরকে গ্রন্থের দিকে আহ্বান করা হচ্ছে, যেন এটা তাদের মধ্যে মীমাংসা করে; অতঃপর তাদের একদল মুখ ফিরিয়ে নিলো এবং তারা বিমুখতা অবলম্বনকারী।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ۖ وَّغَرَّهُمْ فِيْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٤﴾

২৪. এটা এ জন্যে যে তারা বলেঃ নির্দিষ্ট সংখ্যক দিবস ব্যতীত অগ্নি আমাদেরকে স্পর্শ করবে না এবং তারা যা তাদের ধর্ম বিষয়ে মনগড়া ধারণা করতো ওটা তাদেরকে প্রতারিত করেছে।

فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۖ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾

২৫. অনন্তর যেদিন আমি তাদেরকে একত্রিত করবো—যাতে কোন সন্দেহ নেই, তখন তাদের কি দশা হবে? এবং প্রত্যেক ব্যক্তি যা অর্জন করেছে তা সম্যকরূপে প্রদত্ত হবে এবং তারা অত্যাচারিত হবে না।

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ز وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ط بِيَدِكَ الْخَيْرُ ط اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٦﴾

২৬. তুমি বলঃ হে রাজ্যাধিপতি আল্লাহ! আপনি যাকে ইচ্ছা রাজত্ব দান করেন এবং যার নিকট হতে ইচ্ছা রাজত্ব ছিনিয়ে নেন, যাকে ইচ্ছা সম্মান দান করেন এবং যাকে ইচ্ছা লাঞ্ছিত করেন; আপনারই হাতে যাবতীয় কল্যাণ, নিশ্চয়ই আপনি সর্ব বিষয়ে ক্ষমতাবান।

تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَ تُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ز وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ تُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ز وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾

২৭. আপনি রজনীকে দিবসের ভিতরে প্রবেশ করান এবং দিবসকে রজনীর ভিতরে প্রবেশ করান এবং মৃত হতে জীবিতকে নির্গত করেন এবং জীবিত হতে মৃতকে বহির্গত করেন এবং আপনি যাকে ইচ্ছা অপরিমিত জীবিকা দান করে থাকেন।

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِيْ شَيْءٍ اِلَّآ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ تُقٰىةً ط وَ يُحَذِّرُكُمُ

২৮. মু'মিনগণ যেন মু'মিনদেরকে ছেড়ে কাফিরদেরকে বন্ধুরূপে গ্রহণ না করে; এবং তাদের আশঙ্কা হতে আত্মরক্ষা ব্যতীত যে এরূপ করে আল্লাহর সাথে তার কোন সম্পর্ক

اللّٰهُ نَفْسَهٗ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨﴾

নাই; আর আল্লাহ তোমাদেরকে তাঁর ব্যাপারে সতর্ক করেছেন। আল্লাহরই দিকে ফিরে যেতে হবে।[১]

قُلْ اِنْ تُخْفُوْا مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ تُبْدُوْهُ يَعْلَمْهُ اللّٰهُ ؕ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٩﴾

২৯. তুমি বলঃ তোমাদের অন্তরসমূহে যা রয়েছে তা যদি তোমরা গোপন কর অথবা প্রকাশ কর, আল্লাহ তা অবগত আছেন এবং নভোমণ্ডলে ও ভূমণ্ডলে যা কিছু রয়েছে আল্লাহ তা পরিজ্ঞাত আছেন; এবং আল্লাহ সর্ব বিষয়ে সর্ব শক্তিমান।

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۚۖ وَّمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوْٓءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗٓ اَمَدًا بَعِيْدًا ؕ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٣٠﴾

৩০. সেদিন প্রত্যেক ব্যক্তি যা কিছু সৎকর্ম করেছে তা মওজুদ পাবে এবং সে যা মন্দ কাজ করেছে তাও পাবে। তখন সে ইচ্ছা করবে যে, যদি তার মধ্যে ও ঐ দুষ্কর্মের মধ্যে সুদূর ও ব্যবধান হতো এবং আল্লাহ তা'আলা তোমাদেরকে নিজ সম্পর্কে সতর্ক করছেন এবং আল্লাহ স্বীয় বান্দাদের প্রতি স্নেহশীল।

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣١﴾

৩১. তুমি বলঃ যদি তোমরা আল্লাহকে ভালবাস তবে আমার অনুসরণ কর, আল্লাহ তোমাদেরকে ভালবাসবেন ও তোমাদের অপরাধ-সমূহ ক্ষমা করবেন এবং আল্লাহ ক্ষমাশীল, করুণাময়।

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾

৩২. তুমি বলঃ তোমরা আল্লাহ ও রাসূলের অনুসরণ কর; কিন্তু যদি তারা ফিরে যায়, তবে নিশ্চয়ই আল্লাহ অবিশ্বাসীদেরকে ভালবাসেন না।

১। আব্দুল্লাহ্ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহু) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আল্লাহ্‌র চেয়ে অধিক আত্মসম্মানবোধ আর কেউ নেই। তাই তিনি অশ্লীলতা হারাম করেছেন। (বুখারী, হাদীস নং ৭৪০৩)

إِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰٓى اٰدَمَ وَنُوْحًا وَّاٰلَ اِبْرٰهِيْمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٣﴾

৩৩. নিশ্চয়ই আল্লাহ আদমকে ও নূহকে এবং ইবরাহীমের সন্তানগণকে ও ইমরানের সন্তানগণকে বিশ্ব জগতের উপর মনোনীত করেছেন।

ذُرِّيَّةًۢ بَعْضُهَا مِنْۢ بَعْضٍ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾

৩৪. তারা একে অপরের সন্তান এবং আল্লাহ মহা শ্রবণকারী, মহাজ্ঞানী।

اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّىْ نَذَرْتُ لَكَ مَا فِىْ بَطْنِىْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّىْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٥﴾

৩৫. যখন ইমরান পত্নী নিবেদন করলেন, হে আমার প্রতিপালক! নিশ্চয়ই আমার গর্ভে যা রয়েছে, তা আমি মুক্ত করে আপনার উদ্দেশ্যে মানত করলাম, সুতরাং আপনি আমার থেকে তা গ্রহণ করুন, নিশ্চয়ই আপনি মহা শ্রবণকারী, মহাজ্ঞানী।

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ اِنِّىْ وَضَعْتُهَاۤ اُنْثٰى ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ؕ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى ۚ وَاِنِّىْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَاِنِّىْۤ اُعِيْذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٣٦﴾

৩৬. অনন্তর যখন তিনি তা প্রসব করলেন তখন বললেন হে আমার প্রতিপালক! আমি তো কন্যা সন্তান প্রসব করেছি এবং তিনি যা প্রসব করেছেন তা আল্লাহ ভালভাবেই অবগত আছেন এবং (ঐ কাঙ্খিত) পুত্র এ কন্যার সমকক্ষ নয়; আর আমি কন্যার নাম রাখলাম, 'মারইয়াম' এবং আমি তাকে ও তার সন্তানগণকে বিতাড়িত শয়তান হতে আপনার আশ্রয়ে সমর্পণ করলাম।

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ وَّاَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۙ وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ؕ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا ؕ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٧﴾

৩৭. অনন্তর তাঁর প্রভু তাঁকে উত্তমরূপে গ্রহণ করলেন এবং তাঁকে উত্তমভাবে গড়ে তুললেন এবং যাকারিয়াকে তার অভিভাবক করলেন; যখনই যাকারিয়া তার নিকট উক্ত প্রকোষ্ঠে প্রবেশ করতেন, তখনই তার নিকট খাদ্যসম্ভার প্রত্যক্ষ করতেন; তিনি বলতেনঃ হে

মারইয়াম! এটা কোথা হতে প্রাপ্ত হলে? তিনি বলতেনঃ এটা আল্লাহর নিকট হতে; নিশ্চয়ই আল্লাহ যাকে ইচ্ছা অপরিমিত জীবিকা দান করেন।

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ ۚ قَالَ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿٣٨﴾

৩৮. ঐ স্থানে যাকারিয়া তার প্রতিপালকের নিকট প্রার্থনা করেছিলেন; তিনি বলেছিলেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমাকে আপনার নিকট হতে সুসন্তান দান করুন; নিশ্চয়ই আপনি প্রার্থনা শ্রবণকারী।

فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ يُّصَلِّيْ فِي الْمِحْرَابِ ۙ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَسَيِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٣٩﴾

৩৯. অতঃপর যখন তিনি 'মেহরাবের' মধ্যে দাঁড়িয়ে প্রার্থনা করছিলেন, তখন ফেরেশতাগণ তাঁকে সম্বোধন করে বলেছিলেনঃ নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাকে ইয়াহইয়া সম্বন্ধে সুসংবাদ দিচ্ছেন– তাঁর অবস্থা এই হবে যে, তিনি আল্লাহর বাক্যের সত্যতার সাক্ষ্য দিবেন। নেতা হবেন, স্বীয় প্রবৃত্তিকে খুব দমনকারী হবেন এবং তিনি সৎকর্মশালী নবীদের একজন হবেন।

قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِيْ عَاقِرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿٤٠﴾

৪০. তিনি বলেছিলেনঃ হে আমার প্রতিপালক, কিরূপে আমার পুত্র হবে? কেননা আমার বার্ধক্য উপস্থিত হয়েছে ও আমার স্ত্রী বন্ধ্যা; তিনি বললেনঃ এরূপে, আল্লাহ যা ইচ্ছা করেন তাই করে থাকেন।

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ؕ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ؕ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ

৪১. তিনি বলেছিলেনঃ হে আমার প্রভু! আমার জন্যে কোন নিদর্শন নির্দিষ্ট করুন; তিনি বললেনঃ তোমার নিদর্শন এই যে, তুমি তিন দিন

كَثِيْرًا وَّ سَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ﴿٤١﴾

ইঙ্গিত ব্যতীত লোকের সাথে কথা বলতে পারবে না; আর স্বীয় প্রভুকে বিশেষভাবে স্মরণকর এবং সন্ধ্যায় ও প্রভাতে তাঁর মহিমা বর্ণনা কর।[১]

وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰكِ عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٢﴾

৪২. এবং যখন ফেরেশতাগণ বলেছিলেন হে মারইয়াম! নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাকে মনোনীত করেছেন ও তোমাকে পবিত্র করেছেন এবং বিশ্বজগতের নারীগণের উপর তোমাকে মনোনীত করেছেন।

يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ وَاسْجُدِيْ وَارْكَعِيْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾

৪৩. হে মারইয়াম! তোমার প্রভুর ইবাদত কর এবং সিজদাকর ও রুকূ' কারীগণের সাথে রুকূ কর।

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, (নবজাত শিশু) দোলনায় তিনজনই মাত্র কথা বলেছে। (একজন) হযরত ঈসা (আলাইহিস্‌সালাম)। আর বনী ইসরাইলের এক ব্যক্তি ছিল। তার নাম ছিল জুরাইয। সে নামায পড়ছিল। এমনি সময় তার কাছে তার মা আসল এবং তাকে ডাকল। সে (মনে মনে) বলল, আমি জবাব দেব; নাকি নামায পড়তে থাকব। (সাড়া না পেয়ে) তার মা বদদোয়া দিল যে, হে আল্লাহ্! যেনাকারিনীদের চেহারা না দেখা পর্যন্ত যেন তার মরণ না হয়। জুরাইয নিজের ইবাদাতখানায় থাকত। (একদিন) এক মহিলা তার নিকট আসল। তার সাথে কিছু কথাবার্তা বলল; কিন্তু সে (মহিলাটির সাথে মিলতে) অস্বীকার করল। অতঃপর মহিলাটি একজন রাখালের নিকট গেল এবং তাকে দিয়ে আপন মনোবাসনা পূরণ করে নিল। পরে সে একটি পুত্র সন্তান প্রসব করল। সে অপবাদ দিয়ে বললো, এটি জুরাইযের সান্তান। লোকজন জুরাইযের নিকট আসল। তার ইবাদাতখানা ভেঙ্গে ফেলল। তাকে নীচে নামিয়ে আনল। অকথ্য ভাষায় গালিগালাজ করল। তখন জুরাইয গিয়ে ওযূ করল এবং নামায পড়ল। তারপর নবজাত শিশুটির নিকট আসল এবং তাকে জিজ্ঞেস করল, হে শিশু! তোমার পিতা কে? সে জবাব দিল, সেই রাখালটি। (জনগণ নিজেদের ভুল বুঝল, জুরাইযকে) বলল, আমরা আপনার ইবাদাতখানাটি সোনা দিয়ে বানিয়ে দিচ্ছি। সে বলল, না, মাটি দিয়েই বানিয়ে দেবে। (তৃতীয় ঘটনা হচ্ছেঃ) বনী ইসরাইলের এক মহিলা ছিল। সে তার শিশুকে দুধ পান করাচ্ছিল। তার কাছ দিয়ে আরোহী এক সুপুরুষ চলে গেল। সে দু'আ করল, হে আল্লাহ্! আমার ছেলেটিকে তার মত বানিয়ে দাও। শিশুটি (তখনি) মায়ের স্তন ছেড়ে দিল, সেই আরোহীর দিকে ফিরল এবং বলল, হে আল্লাহ্! আমাকে এর ন্যায় বানিও না। তারপর আবার মায়ের দুধের দিকে ফিরল এবং তাতে চুষতে লাগল। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আপন আঙ্গুল চুষে (শিশুটির দুধ চোষার যে অবস্থা) দেখাচ্ছিলেন, আমি যেন তা (এখনও) দেখতে পাচ্ছি। পুনরায় সেই মহিলাটির পাশ দিয়ে একটি দাসীকে নিয়ে যাওয়া হলো। (তার মালিক তাকে মারছিল) মহিলাটি দু'আ করল, হে আল্লাহ! আমার ছেলেকে তার মতো করো না। ছেলেটি (সাথে সাথে) মায়ের স্তন ছেড়ে দিল এবং বলল, হে আল্লাহ্! আমাকে তার মতো কর। মা জিজ্ঞেস করল, তা কেন? শিশুটি জবাব দিল, সেই আরোহীটি ছিল যালিমদের অন্যতম। আর এ দাসীটিকে লোকেরা বলছে, তুমি চুরি করেছ, যেনা করেছ। অথচ সে কিছুই করেনি। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৩৬)

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ؕ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۪ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٤﴾

৪৪. এটা সেই অদৃশ্য বিষয়ক সংবাদ যা আমি তোমার প্রতি প্রত্যাদেশ করছি এবং যখন তারা স্বীয় লেখনীসমূহ (কলমসমূহ) নিক্ষেপ করছিল যে, তাদের মধ্যে কে মারইয়ামের অভিভাবক হবে, তখন তুমি তাদের নিকটে ছিলে না; এবং যখন তারা কলহ করছিল তখনও তুমি তাদের নিকট ছিলে না।

اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٥﴾

৪৫. স্মরণ কর, যখন ফেরেশতারা বললেন, হে মারইয়াম! নিশ্চয় আল্লাহ তাঁর তরফ থেকে তোমাকে একটি বাণীর সুসংবাদ দিচ্ছেন, তার নাম মসীহ ঈসা ইবনে মারইয়াম, সে সম্মানিত দুনিয়া ও আখেরাতে এবং সে আল্লাহর ঘনিষ্ঠদেরও অন্যতম।

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِى الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٤٦﴾

৪৬. তিনি মানুষের সাথে কথা বলবেন দোলনায় থাকা অবস্থায় এবং প্রাপ্ত বয়সেও এবং তিনি হবেন নেককারদেরও অন্যতম।

قَالَتْ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِىْ بَشَرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكِ اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٤٧﴾

৪৭. মারইয়াম বললেন, হে আমার প্রতিপালক! কেমন করে আমার সন্তান হবে, অথচ কোন মানব আমাকে স্পর্শ করেনি। আল্লাহ বললেনঃ এভাবেই আল্লাহ সৃষ্টি করেন যা ইচ্ছা করেন। যখন তিনি কোন কাজ করতে মনস্থ করেন তখন তাকে শুধু বলেন "হও", অমনি তা হয়ে যায়।

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ﴿٤٨﴾

৪৮. তিনি তাঁকে লিখনি বিদ্যা, শরীয়তি প্রজ্ঞা এবং তাওরাত ও ইন্‌জীল শিক্ষা দেবেন।

وَرَسُوْلًا اِلٰى بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ اَنِّىْ قَدْ جِئْتُكُمْ

৪৯. আর তাকে ইসরাঈল বংশীয়গণের জন্যে রাসূল করবেন;

بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ اَنِّيْٓ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًۢا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِيْ بُيُوْتِكُمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ﴿٤٩﴾

নিশ্চয়ই আমি তোমাদের প্রতি-পালকের নিকট হতে নিদর্শনসহ তোমাদের নিকট আগমন করেছি; নিশ্চয়ই আমি তোমাদের জন্যে মাটি হতে পাখীর আকার গঠন করবো, তারপর ওর মধ্যে ফুঁ দেব, অনন্তর আল্লাহর আদেশে ওটা পাখী হয়ে যাবে এবং জন্মান্ধকে ও কুষ্ঠ রোগীকে নিরাময় করি এবং আল্লাহর আদেশে মৃতকে জীবিত করি এবং তোমরা যা ভক্ষণ কর ও তোমরা যা স্বীয় গৃহের মধ্যে সঞ্চয় করে রাখ— তদ্বিষয়ে সংবাদ দিচ্ছি; যদি তোমরা বিশ্বাসী হও, তবে নিশ্চয়ই এতে তোমাদের জন্যে নিদর্শন রয়েছে।

وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَلِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۣ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿٥٠﴾

৫০. আর আমার পূর্বে তাওরাত হতে যা আছে এটা তার সত্যতা সত্যায়নকারী এবং তোমাদের জন্যে যা অবৈধ হয়েছে, তার কতিপয় তোমাদের জন্যে বৈধ করবো ও আমি তোমাদের প্রভুর নিকট হতে তোমাদের জন্য নিদর্শন এনেছি; অতএব আল্লাহকে ভয় কর ও আমার অনুগত হও।

اِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٥١﴾

৫১. নিশ্চয়ই আল্লাহ আমার প্রভু ও তোমাদের প্রভু; অতএব তাঁর ইবাদত কর— এটাই সরল পথ।

فَلَمَّآ اَحَسَّ عِيْسٰى مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ وَاشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٥٢﴾

৫২. অনন্তর যখন ঈসা তাদের মধ্যে প্রত্যাখ্যান প্রত্যক্ষ করলেন, তখন তিনি বললেন আল্লাহর উদ্দেশ্যে কে আমার সাহায্যকারী হবে? হাওয়ারিগণ বললেন আমরাই আল্লাহর সাহায্যকারী; আমরা

আল্লাহর প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করেছি; এবং সাক্ষী থাকুন যে, আমরা আত্মসমর্পণকারী।

رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٣﴾

৫৩. হে আমাদের প্রভু! আপনি যা অবতীর্ণ করেছেন, আমরা তা বিশ্বাস করি এবং আমরা রাসূলের অনুসরণ করছি; অতএব সাক্ষীগণের সাথে আমাদেরকে লিপিবদ্ধ করুন।

وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿٥٤﴾

৫৪. আর তারা ষড়যন্ত্র করেছিল ও আল্লাহ সূক্ষ্ম কৌশল করলেন এবং আল্লাহ সূক্ষ্ম শ্রেষ্ঠতম কৌশলী।

اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَىَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ اِلَىَّ مَرْجِعُكُمْ فَاَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٥٥﴾

৫৫. যখন আল্লাহ বললেনঃ হে ঈসা! নিশ্চয়ই আমি তোমাকে আমার দিকে তোমার (পার্থিব্য জীবন) পূর্ণতা দান করে উত্তোলন করবো এবং অবিশ্বাসকারীগণ হতে তোমাকে পবিত্র করবো, আর যারা অবিশ্বাস করেছে তাদের উপর তোমার অনুসারীগণকে কিয়ামত দিবস পর্যন্ত সমুন্নত করবো; অনন্তর আমারই দিকে তোমাদের প্রত্যাবর্তন; অতঃপর তোমাদের মধ্যে যে বিষয়ে মতভেদ ছিল তার মীমাংসা করবো।[১]

১। (ক) ইবনে শিহাব থেকে বর্ণিত, নিশ্চয়ই সাঈদ ইবনে মুসায়্যিব আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু)-কে বলতে শুনেছেনঃ রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ ঐ সত্ত্বার শপথ যার হাতে আমার প্রাণ অবশ্যই ঐ সময় ঘনিয়ে আসছে যে, তোমাদের মাঝে ইবনে মারইয়াম (ঈসা আলাইহিস সালাম) আগমন করবেন ন্যায়পরায়ণ বিচারক হিসাবে। ক্রুশ ভেঙ্গে নিশ্চিহ্ন করবেন (খ্রিস্টান ধর্মের প্রতীক), শূকর নিধন করবেন, জিযিয়া কর তুলে নিবেন। অর্থনীতির চরম উন্নতি হবে, এমনকি যাকাতের মাল নেয়ার মত লোক থাকবেনা। একটি সিজদা দেয়া দুনিয়া এবং দুনিয়াতে যা কিছু আছে তার চেয়ে উত্তম হবে। অতঃপর আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেনঃ যদি চাও তাহলে কুরআনের ঐ আয়াত পাঠ কর। অর্থঃ "এমন কোন আহলে কিতাব থাকবেনা যে, মৃত্যুর পূর্বে তাঁর প্রতি (ঈসা আলাইহিস্ সালাম) ঈমান আনবেনা এবং কিয়ামতের দিন তিনি তাদের ওপর সাক্ষী হবেন।" (সূরা নিসাঃ ১৫৯) (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৪৮)
(খ) আবূ কাতাদাহ আল-আনসারীর গোলাম না'ফে থেকে বর্ণিত নিশ্চয়ই আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেনঃ রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তখন তোমাদের কেমন লাগবে? যখন ঈসা (আলাইহিস্সালাম) তোমাদের মাঝে আগমন করবে এবং তোমাদের মধ্য থেকে ইমাম হবেন (ইমাম মাহদী) এবং ঈসা (আলাইহিস্সালাম) তার ইকতেদা করবেন। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৪৯)

فَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَاُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٥٦﴾

৫৬. অনন্তর যারা অবিশ্বাসী হয়েছে, বস্তুতঃ তাদেরকে ইহকাল ও পরকালে কঠোর শাস্তি প্রদান করবো এবং তাদের জন্যে কেউ সাহায্যকারী নেই।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٧﴾

৫৭. আর যারা বিশ্বাস স্থাপন করেছে ও সৎকার্যাবলী সম্পাদন করেছে ফলতঃ তিনি তাদেরকে পূর্ণ প্রতিদান প্রদান করবেন এবং আল্লাহ অত্যাচারীগণকে ভালবাসেন না।

ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ مِنَ الْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ﴿٥٨﴾

৫৮. আমি তোমার প্রতি অকাট্য প্রজ্ঞাময় বর্ণনা ও নিদর্শনাবলী হতে এটা পড়ে শুনাচ্ছি।

اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٥٩﴾

৫৯. নিশ্চয়ই আল্লাহর নিকট ঈসার দৃষ্টান্ত আদমের অনুরূপ; তিনি তাঁকে মাটি দ্বারা সৃষ্টি করলেন, তৎপর বললেন, হও, ফলতঃ তাতেই হয়ে গেল।

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٦٠﴾

৬০. এ বাস্তব ঘটনা তোমার প্রতিপালকের পক্ষ হতে; সুতরাং তুমি সংশয়ীদের অন্তর্ভুক্ত হয়ো না।

فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ ۟ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦١﴾

৬১. অনন্তর তোমার নিকট যে জ্ঞান এসেছে, তারপরও ঐ বিষয়ে যে তোমার সাথে বিতর্ক করে, তুমি বলঃ এসো আমরা আমাদের সন্তানগণ ও তোমাদের সন্তানগণকে আমাদের নারীগণ ও তোমাদের নারীগণকে এবং স্বয়ং আমাদেরকে ও স্বয়ং তোমাদেরকে আহ্বান করি তৎপর বিনীত প্রার্থনা করি যে, অসত্য-বাদীদের উপর আল্লাহর অভিসম্পাত হোক।

إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٢﴾

৬২. নিশ্চয়ই এটাই সত্য বিবরণ এবং আল্লাহ ব্যতীত কোন সত্য মা'বূদ নেই, নিশ্চয়ই আল্লাহ অতীব সম্মানী, প্রজ্ঞাময়।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ ﴿٦٣﴾

৬৩. অতঃপর যদি তারা মুখ ফিরিয়ে নেয় তবে নিশ্চয়ই আল্লাহ কলহ সৃষ্টি কারীদের সম্পর্কে পরিজ্ঞাত আছেন।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿٦٤﴾

৬৪. তুমি বলঃ হে আহলে কিতাব! আমাদের মধ্যে ও তোমাদের মধ্যে যে বাক্য অভিন্ন ও সাদৃশ্য রয়েছে তার দিকে এসো যেন আমরা আল্লাহ ব্যতীত কারও ইবাদত না করি ও তাঁর সাথে কোন অংশী স্থির না করি এবং আল্লাহ ব্যতীত আমরা পরস্পর কাউকে প্রভু রূপে গ্রহণ না করি[১]; অতঃপর যদি তারা ফিরে যায় তবে বলঃ সাক্ষী থাক যে, আমরাই মুসলিম।

১। আব্দুল্লাহ ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেছেনঃ আবু সুফিয়ান আমার সামনে (উপস্থিত থেকে) বর্ণনা করেছেন যে, যে সময় আমার ও রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর মধ্যে হুদাইবিয়ার) চুক্তি ছিলো সেই সময় আমি শামে (সিরিয়া) গেলাম। সেখানে থাকা অবস্থায়ই নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর একখানা পত্র হিরাকলের নামে তার কাছে পৌছানো হলো। আবূ সুফিয়ান বলেন, দিহ্ইয়া কালবী পত্রখানা বহন করে নিয়ে গিয়েছেন। তিনি পত্রখানা বুসরার শাসনকর্তার কাছে পৌছিয়ে দিল বুসরার শাসনকর্তা আবার তা হিরাকলের কাছে পৌছিয়ে দিয়েছিলেন। আবূ সুফিয়ান বর্ণনা করেছেন, তখন (পত্র পাওয়ার পর) হিরাকল (তাঁর সভাসদদের) বললেনঃ যে লোকটি নিজেকে নবী বলে দাবী করছে তাঁর কওমের কেউ এখানে আছে কি? তারা বললো, হ্যাঁ, আছে। আবূ সুফিয়ান বলেন, আমাকে ও আমার কুরাইশ গোত্রীয় কয়েকজন সঙ্গীকে হিরাকলের দরবারে ডাকা হলো। আমরা হিরাকলের দরবারে পৌছলে আমাদের তাঁর সামনে বসানো হলো। তখন তিনি বললেনঃ যে লোকটি নিজেকে নবী বলে দাবী করছে তোমাদের মধ্যে বংশের দিক থেকে তাঁর ঘনিষ্ঠ কেউ আছে কি? আবূ সুফিয়ান বলেন, আমি বললাম, বংশগত দিক থেকে আমি তার ঘনিষ্ঠ লোক তখন দরবারের লোকজন আমাকে তাঁর (হিরাকল) সামনে বসিয়ে দিল এবং আমার সঙ্গীদেরকে আমার পেছনে বসালো। এরপর তাঁর দোভাষীকে ডাকা হলো। তিনি তাঁর দোভাষীকে বললেন, তাদেরকে (পেছনের লোকদেরকে) বলো, আমি একে (আবূ সুফিয়ান) নবুয়ত দাবীকারী লোকটি সম্পর্কে প্রশ্ন করবো। যদি সে মিথ্যা বলে তাহলে তোমরা তার মিথ্যা ধরিয়ে দেবে। আবূ সুফিয়ান বলেন, আল্লাহ্র কসম, আমি মিথ্যা বললে আমার সাথীরা প্রতিবাদ করে ধরিয়ে দেবে-এই ভয় না থাকলে আমি অবশ্যই মিথ্যা কথা বলতাম। এরপর তিনি তাঁর দোভাষীকে বললেনঃ তাকে জিজ্ঞেস করো, তোমাদের মধ্যে তাঁর (নবুয়াতের দাবীদার লোকটির) বংশমর্যাদা কিরূপ?

يٰۤاَهۡلَ الۡكِتٰبِ لِمَ تُحَآجُّوۡنَ فِىۡۤ اِبۡرٰهِيۡمَ وَمَاۤ اُنۡزِلَتِ التَّوۡرٰىةُ وَالۡاِنۡجِيۡلُ اِلَّا مِنۡۢ بَعۡدِهٖ ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿٦٥﴾

৬৫. হে আহলে কিতাব! তোমরা ইবরাহীম সম্বন্ধে কেন বাদানুবাদ করছো? অথচ তাঁর পরেই তাওরাত ও ইনজীল অবতীর্ণ হয়েছে, তবুও কি তোমরা বুঝছো না।

আবূ সুফিয়ান বলেন, আমি বললাম, তিনি আমাদের মধ্যে উচ্চ বংশীয়। তিনি (হিরাকল) বললেনঃ তাঁর পূর্ব পুরুষদের মধ্যে কেউ বাদশাহ্ ছিল কি? আবূ সুফিয়ান বর্ণনা করেছেন, আমি বললাম না। তিনি বললেনঃ তিনি এখন যা বলছেন তার পূর্বে কি তোমরা কখনো তাঁকে মিথ্যা অপবাদ দিতে? আমি বললাম না। তিনি বললেন, নেতৃস্থানীয় ও উচ্চ মর্যাদাসম্পন্ন লোকেরাই তাঁর অনুসরণ করছে, না দুর্বল লোকেরা? আবূ সুফিয়ান বলেন, আমি বললাম, দুর্বল লোকেরাই বরং তার অনুসরণ করছে। তিনি (হিরাকল) বললেন, তাঁর অনুসারীদের সংখ্যা বৃদ্ধি পাচ্ছে না হ্রাস পাচ্ছে? আবূ সুফিয়ান বলেন, আমি বললাম বৃদ্ধি পাচ্ছে। তিনি জিজ্ঞেস করলেন, উক্ত দ্বীনে প্রবেশ করার পর তাদের মধ্যে কেউ কি তার প্রতি অসন্তুষ্ট হয়ে তা ত্যাগ করে? আমি বললাম, না। তিনি বললেন, তোমরা কি কোন সময় তাঁর সাথে যুদ্ধ করেছো? আমি বললাম, হ্যাঁ। তিনি বললেন, তাঁর সাথে তোমাদের যুদ্ধের ফলাফল কি? আমি বললাম, তাঁর ও আমাদের মাঝে যুদ্ধের ফলাফল হলো পালাক্রমে বালতি ভরে পানি উঠানোর মতো। কখনো তিনি আমাদের থেকে পান আবার কখনো আমরা তার নিকট থেকে পাই। তিনি জিজ্ঞেস করলেন, তিনি কি কখনো ওয়াদা ভঙ্গ করেন? আমি বললাম না। তবে আমরা একটি নির্দিষ্ট সময় পর্যন্ত তার সাথে এক চুক্তিতে আবদ্ধ আছি। জানি না এ সময় তিনি কি করেন। আবূ সুফিয়ান বলেন, এ একটা কথা ছাড়া তার বিরুদ্ধে আর কোন কথা বলা আমার পক্ষে সম্ভব হয়নি। তিনি বললেন, তাঁর আগে এরূপ আর কেউ কি বলেছে? আমি বললাম না। এরপর তিনি তাঁর দোভাষীকে বললেন, তাকে বলো, আমি তোমাকে জিজ্ঞেস করলাম, তোমাদের মধ্যে তাঁর বংশ মর্যাদা কিরূপ? তুমি বললে যে, তিনি আমাদের মধ্যে উচ্চ বংশীয়। এভাবে রাসূলদেরকে তাঁদের কওমের উচ্চ বংশেই পাঠানো হয়। আমি তোমাকে জিজ্ঞেস করলাম যে, তাঁর পূর্বপুরুষদের মধ্যে কেউ কি বাদশাহ ছিলো? তুমি বললে না। (তাঁর পূর্বপুরুষদের মধ্যে কেউ যদি বাদশাহ থাকতো) তাহলে আমি বলতাম, সে এমন এক ব্যক্তি যে, তাঁর পিতৃপুরুষের রাজ্য পুনরুদ্ধার করতে চায়। আমি তোমাকে তাঁর অনুসরণকারীদের সম্পর্কে জিজ্ঞেস করলাম যে, তারা সমাজের দুর্বল লোক না সম্ভ্রান্ত উচ্চবংশীয় লোক? তুমি বললে যে, সমাজের দুর্বল লোক। এসব লোকই তো রাসূলদের অনুসারী হয়ে থাকে। আমি তোমাকে জিজ্ঞেস করলাম, সে এখন যা কিছু বলছে তা বলার আগে তোমরা কি কখনো তার প্রতি মিথ্যা বলার অপবাদ দিতে পেরেছো? তুমি বললে, না। তাতে আমি বুঝলাম যে, যিনি মানুষের বেলায় মিথ্যা পরিত্যাগ করেন আর আল্লাহ্‌র ব্যাপারে মিথ্যা বলবেন- এরূপ কখনো হতে পারে না। আমি তোমাকে জিজ্ঞেস করলাম, তাদের কেউ কি তাঁর দ্বীনে প্রবেশ করার পর অসন্তুষ্ট হয়ে তা পরিত্যাগ করে? তুমি বললে, না। ঈমানের ব্যাপারটা এরূপই হয়ে থাকে যখন তার সজীবতা ও স্বতঃস্ফূর্ততা হৃদয়ে গেঁথে যায়। আমি তোমাকে জিজ্ঞেস করলাম যে, তাঁর দ্বীন গ্রহণকারীদের সংখ্যা বাড়ছে না কমছে? তুমি বললে, বাড়ছে। পূর্ণতা প্রাপ্ত না হওয়া পর্যন্ত ঈমানের অবস্থা এরূপই হয়। আমি তোমাকে জিজ্ঞেস করলাম, তোমরা কি তাঁর সাথে যুদ্ধ করেছো? তুমি বললে যে, তোমরা তার বিরুদ্ধে যুদ্ধও করেছো। কিন্তু যুদ্ধের ফলাফল হয়েছে বালতিতে করে পালাক্রমে পানি উঠানোর মতো। তিনি কখনো তোমাদের নিকট থেকে পান। আবার তোমরা কখনো তাঁর নিকট থেকে পেয়ে থাকো। অর্থাৎ যুদ্ধের ফলাফল কখনো তোমাদের অনুকূলে আবার কখনো তাঁর অনুকূলে। এভাবেই রাসূলদের পরীক্ষা করা হয়। তবে পরিণামে তারাই বিজয়ী হন। আমি তোমাকে জিজ্ঞেস করলাম, তিনি কি কখনো ওয়াদা খেলাফ বা চুক্তি ভঙ্গ করেন? তুমি বললে, না, তিনি কখনো চুক্তি ভঙ্গ করেন না। আমি তোমাকে জিজ্ঞেস করলামঃ এরূপ কথা এর আগে আর কেউ কি কখনো বলেছে? তুমি বললে না। তাঁর আগে এরূপ কথা আর কেউ বলে থাকলে আমি বলতাম, সে পূর্বের বলা

هٰٓاَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ حَاجَجْتُمْ فِيْمَا لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَآجُّوْنَ فِيْمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٦٦

৬৬. হ্যাঁ, তোমরা এমন যে, যে বিষয়ে তোমাদের জ্ঞান ছিল, তা নিয়েও তোমরা কলহ করছিলে; কিন্তু যে বিষয়ে তোমাদের কোনই জ্ঞান নেই, তা নিয়ে তোমরা কেন কলহ করছো? এবং আল্লাহ পরিজ্ঞাত আছেন আর তোমরা অবগত নও।

مَا كَانَ اِبْرٰهِيْمُ يَهُوْدِيًّا وَّلَا نَصْرَانِيًّا وَّلٰكِنْ

৬৭. ইবরাহীম ইয়াহূদী ছিলেন না এবং খ্রিস্টানও ছিলেন না; বরং তিনি

কথারই অনুসরণ করছে। আবূ সুফিয়ান বলেন, তারপর তিনি জিজ্ঞেস করলেন, তিনি তোমাদেরকে কি কি আদেশ করেন? আমি বললাম, তিনি আমাদেরকে নামায পড়তে, যাকাত দিতে, আত্মীয়তা ও ভ্রাতৃভাব বজায় রাখতে এবং নিষিদ্ধ কাজ বর্জন করে চলতে আদেশ করেন। তিনি বললেন, তুমি যা বলেছো তা যদি সত্য হয় তাহলে নিশ্চয়ই তিনি নবী। আমি জানতাম, তিনি আবির্ভূত হবেন; কিন্তু আমি এ ধারণা করিনি যে, তিনি তোমাদের মধ্য থেকে আবির্ভূত হবেন। যদি আমি বুঝতাম যে, আমি তাঁর কাছে পৌঁছতে পারবো তাহলে তাঁর সাথে সাক্ষাত করতাম আর যদি আমি তাঁর কাছে থাকতাম তাহলে তাঁর পা দু'খানি ধুয়ে দিতাম। আর তাঁর রাজত্ব আমার পায়ের নিচের জায়গা পর্যন্ত সম্প্রসারিত হবে। আবু সুফিয়ান বলেনঃ এরপর তিনি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর লিখিত পত্রখানা আনালেন এবং পাঠ করলেন। তাতে লেখা ছিলোঃ "বিসমিল্লাহির রাহমানির রাহীম। আল্লাহ্র রাসূল মুহাম্মাদের পক্ষ থেকে রোমের অধিপতি হিরাকলের নামে। যারা হেদায়াতের পথ অনুসরণ করে চলছে তাদের প্রতি শান্তি বর্ষিত হোক। অতঃপর আমি আপনাকে ইসলামের প্রতি আহ্বান জানাচ্ছি। ইসলাম গ্রহণ করুন-শান্তিতে থাকবেন। ইসলাম গ্রহণ করুন, আল্লাহ্ আপনাকে দ্বিগুণ পুরস্কার দান করবেন। আর যদি ইসলাম থেকে মুখ ফিরিয়ে নেন তাহলে কৃষক অর্থাৎ সকল প্রজার গোনাহ্র দায়-দায়িত্ব আপনার ওপরই বর্তাবে। হে আহলে কিতাবগণ! এমন একটি কথার দিকে এগিয়ে আস যা আমাদের, তোমাদের সবার জন্য সমান। তা হলো, আমরা আল্লাহ্ ছাড়া কারো 'ইবাদত' বা দাসত্ব করবো না, তাঁর সাথে কোন কিছুকে শরীক করবো না, আমাদের একজন অন্যজনকে প্রভু বলে গ্রহণ করবে না। এর পরেও তারা যদি ফিরে যায় তাহলে তাদেরকে বলো যে, তোমরা সাক্ষী থেকো, আমরা ইসলামকে গ্রহণ করেছি।" পত্র পাঠ শেষ হলে তার দরবারে হৈ চৈ শুরু হলো এবং নানা রকম কথা হতে থাকলো এবং আমাদেরকে বের করে দেয়া হলো। আবূ সুফিয়ান বলেন, আমি তখন আমার সঙ্গীদেরকে বললামঃ আবু কাবশার পুত্রের ব্যাপারটা বেশ গুরুত্বপূর্ণ হয়ে উঠেছে। তাকে এখন বনী আসফারদের (রোমবাসী) বাদশাহ্ও ভয় করছে। এরপর থেকে আমি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর ব্যাপারে এ দৃঢ়মত পোষণ করাতাম যে, তিনি খুব শীঘ্রই বিজয় লাভ করবেন। শেষ পর্যন্ত আল্লাহ্ আমাকেই ইসলামে প্রবেশ করিয়ে দিলেন। যুহরী বর্ণনা করেছেন, এরপর হিরাকল তার একটি কক্ষে রোমের প্রধান ব্যক্তিবর্গকে ডেকে একত্রিত করে বললেনঃ হে রোমবাসীগণ! তোমরা কি স্থায়ী সফলতা ও হিদায়াত চাও? তোমরা কি তোমাদের রাষ্ট্রের স্থায়ীত্ব কামনা করো? (তাহলে সেদিকে এগিয়ে আস) এ কথা শোনামাত্র সবাই পলায়নপর বন্য গাধার মতো প্রাণপণে দরজার দিকে ছুটে চললো; কিন্তু দরজার গোড়ায় পৌঁছে দেখলো তা আগেই বন্ধ করে দেয়া হয়েছে। এখন হিরাকল তাঁর দরবারের লোকদের বললেনঃ তাদেরকে ফিরিয়ে আন। তাদেরকে ডেকে নেয়া হলে তিনি বললেনঃ আমি আমার কথা দ্বারা তোমাদের ধর্ম-বিশ্বাস কতখানি মজবূত তা পরীক্ষা করলাম। তোমাদের নিকট আমি যা আশা করেছিলাম তা এই মাত্র দেখলাম। একথা শুনে সবাই তাকে সিজদা (কুর্ণিশ) করলো এবং সন্তুষ্ট হলো। (বুখারী, হাদীস নং ৪৫৫৩)

كَانَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٦٧﴾

সুদৃঢ় একনিষ্ঠ মুসলিম ছিলেন এবং তিনি অংশীবাদীগণের অন্তর্গত ছিলেন না।

اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ لَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ وَهٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٨﴾

৬৮. নিশ্চয়ই ঐ সব লোক ইবরাহীমের বেশি নিকটতম যারা তাঁর অনুগামী হয়েছেন আর এই নবী ও মু'মিনগণ আর আল্লাহ তা'আলা বিশ্বাসীগণের অভিভাবক।

وَدَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يُضِلُّوْنَكُمْ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٦٩﴾

৬৯. এবং কিতাবীগণের মধ্যে এক দলের বাসনা যে, তোমাদেরকে পথভ্রান্ত করে; কিন্তু তারা নিজেকে ব্যতীত বিপথগামী করে না অথচ তারা বুঝছেনা।

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿٧٠﴾

৭০. হে আহলে কিতাব! তোমরা কেন আল্লাহর আয়াতসমূহের প্রতি অবিশ্বাস করছো? অথচ তোমরাই ওর সাক্ষী।

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٧١﴾

৭১. হে কিতাব ধারীরা! তোমরা কেন সত্যের সঙ্গে মিথ্যাকে মিলিয়ে নিচ্ছ? এবং সত্যকে গোপন করছ অথচ তোমরা তা অবগত আছ।[১]

১। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, একজন লোক প্রথমে খ্রিস্টান ছিল। পরে সে ইসলাম গ্রহণ করে সূরা আল-বাকারা ও সূরা আলে ইমরান পড়ে শেষ করল এবং নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নির্দেশক্রমে ওহী লিখতে শুরু করল (অর্থাৎ ওহী লেখক নিযুক্ত হলো)। তারপর সে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট থেকে পালিয়ে গিয়ে আবার খ্রিস্টান হয়ে গেল এবং বলতে লাগল, আমি মুহাম্মাদকে যা লিখে দিতাম তাছাড়া আর কিছুই সে জানে না।
তারপর আল্লাহ্ তাকে মৃত্যুমুখে পতিত করলে খ্রিস্টানরা তাকে কবরস্থ করল; কিন্তু পরদিন সকাল বেলা দেখা গেল, ভূগর্ভ তাকে বাইরে ছুড়ে ফেলেছে। তখন খ্রিস্টানরা বলল, এটা মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) ও তার অনুসারীদের কাজ। আমাদের এ লোকটি যেহেতু তাদের কাছ থেকে পালিয়ে এসেছিল তাই তারা একে কবর খুঁড়ে একে বাইরে ফেলে গিয়েছে। অতঃপর তারা তার জন্য আবার কবর খুঁড়লো এবং যতটা সম্ভব তা গভীর করল। (এবং তাকে দাফন করল।) পরদিন সকালে আবার দেখা গেল যে, ভূগর্ভ তাকে বাইরে ছুঁড়ে ফেলেছে। এবারেও খ্রিস্টানরা বলল, এটা মুহাম্মাদ ও তার সহচরদের কাজ। আমাদের এ লোকটি যেহেতু তাদের কাছ থেকে পালিয়ে এসেছিল, তা-ই তারা এর কবর খুঁড়ে একে বাইরে ফেলে গিয়েছে। এরপর তারা তার জন্য আবার কবর খুঁড়ল এবং যতদূর সম্ভব কবরটি গভীর করল। (এবং তাকে তাতে দাফন করল।) কিন্তু পরদিন সকালে দেখা গেল যে, ভূগর্ভ তাকে বাইরে নিক্ষেপ করেছে। তখন তারা বুঝতে পারল যে, এটা কোন মানুষের কাজ নয়। তাই তারা তাকে ওভাবেই ফেলে রাখল। (বুখারী, হাদীস নং ৩৬১৭)

وَقَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْٓا اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٧٢﴾

৭২. আর আহলে কিতাবের মধ্যে একদল এটাই বলে যেঃ বিশ্বাস স্থাপনকারীদের প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে তৎপ্রতি পূর্বাহ্নে বিশ্বাস স্থাপন কর এবং অপরাহ্নে তা অস্বীকার কর– তাহলে তারা ফিরে যাবে।

وَلَا تُؤْمِنُوْٓا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ ۭ قُلْ اِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ ۙ اَنْ يُّؤْتٰٓى اَحَدٌ مِّثْلَ مَآ اُوْتِيْتُمْ اَوْ يُحَاۗجُّوْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۭ قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾

৭৩. আর যারা তোমাদের দ্বীনের অনুসরণ করে তাদের ব্যতীত বিশ্বাস করো না; তুমি বলঃ আল্লাহর পথই সুপথ– যা তোমাদেরকে প্রদান করা হয়েছে, তদ্রূপ অন্যকেও প্রদত্ত হতে পারে; অথবা যদি তোমার প্রভুর সম্বন্ধে তোমার সাথে বিতর্ক করে তবে তুমি বল অনুগ্রহ আল্লাহরই হাতে; তিনি যাকে ইচ্ছা দান করেন এবং আল্লাহ মহা অনুগ্রহশীল, মহাজ্ঞানী।

يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٤﴾

৭৪. তিনি যার প্রতি ইচ্ছা করেন স্বীয় করুণা নির্দিষ্ট করেন এবং আল্লাহ হচ্ছেন অসীম অনুগ্রহের মালিক।

وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُّؤَدِّهٖٓ اِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ لَّا يُؤَدِّهٖٓ اِلَيْكَ اِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَاۗىِٕمًا ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْاُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾

৭৫. কিতাবীদের মধ্যে এরূপ আছে যে, যদি তুমি তার নিকট পুঞ্জীভূত ধনরাশিও গচ্ছিত রেখে দাও, তবুও সে তা তোমার নিকট ফেরত দেবে এবং তাদের মধ্যে এরূপও আছে যে, যদি তুমি তার নিকট একটি 'দীনার'ও গচ্ছিত রাখ, তবে সে তাও তোমাকে ফেরত দেবে না; যে পর্যন্ত তুমি তার শিরোপরি দণ্ডায়মান থাক, কারণ তারা বলে যেঃ আমাদের উপর ঐ অশিক্ষিতদের কোন দায়-দায়িত্ব নেই এবং তারা আল্লাহর প্রতি মিথ্যা আরোপ করে, অথচ তারাও জানে।

بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٧٦﴾

৭৬. হ্যাঁ, যারা স্বীয় অঙ্গীকার পূর্ণ করে ও সংযত হয়, আল্লাহভীরু হয় তবে নিশ্চয়ই আল্লাহভীরুগণকে ভালবাসেন।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَاَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۪ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٧﴾

৭৭. নিশ্চয়ই যারা আল্লাহর অঙ্গীকার ও স্বীয় শপথ সামান্য মূল্যে বিক্রি করে, পরকালে তাদের কোনই অংশ নেই এবং আল্লাহ তাদের সাথে কথা বলবেন না ও কিয়ামত দিবসে তাদের প্রতি দৃষ্টিপাত করবেন না, তাদেরকে পরিশুদ্ধ করবেন না এবং তাদের জন্যে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি রয়েছে।

وَاِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٨﴾

৭৮. আর তাদের মধ্যে নিশ্চয়ই এরূপ একদল আছে যারা নিজেদের জিহ্বা বাঁকা করে গ্রন্থ আবৃত্তি করে– যেন তোমরা ওটাকে গ্রন্থের অংশ মনে কর, অথচ ওটা গ্রন্থের অংশ নয় এবং তারা বলে যেঃ এটা আল্লাহর নিকট হতে সমাগত, অথচ ওটা আল্লাহর নিকট হতে নয় এবং তারা আল্লাহ সম্বন্ধে মিথ্যা বলে ও তারা তা অবগত আছে, অর্থাৎ জেনে শুনেই মিথ্যা বলে।

مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّىْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ﴿٧٩﴾

৭৯. এটা কোন মানুষের পক্ষে উপযোগী নয় যে, আল্লাহ যাকে গ্রন্থ, প্রজ্ঞা ও নবুওয়াত দান করেন, তৎপরে সে মানবমণ্ডলীর মধ্যে বলেঃ তোমরা আল্লাহকে পরিত্যাগ করে আমার বান্দায় পরিণত হও; বরং সে বলবে তোমরা প্রভুরই ইবাদত কর, কারণ তোমরাই কিতাব শিক্ষা দান কর এবং ওটা পাঠ করে থাক।

وَلَا يَأْمُرَكُمْ أَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ أَرْبَابًا ۗ أَيَأْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨٠﴾

৮০. আর তিনি আদেশ করেন না যে, তোমরা ফেরেশতাগণ ও নবীগণকে প্রতিপালকরূপে গ্রহণ কর; তোমরা আত্মসমর্পণকারী হবার পর তিনি কি তোমাদেরকে বিশ্বাসদ্রোহীতার আদেশ করবেন?[১]

وَإِذْ أَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ۗ قَالَ ءَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ إِصْرِيْ ۗ قَالُوْٓا أَقْرَرْنَا ۗ قَالَ فَاشْهَدُوْا وَأَنَا مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٨١﴾

৮১. এবং আল্লাহ যখন নবীগণের অঙ্গীকার গ্রহণ করেছিলেন যে, আমি তোমাদেরকে গ্রন্থ ও দৃঢ়প্রজ্ঞা যা দান করলাম তারপর যখন একজন রাসূল আগমন করবেন, যিনি তোমাদের মাঝে বিদ্যমান কিতাবের সত্যতা স্বীকার করবেন। তখন তোমরা অবশ্যই তার প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করবে এবং তার সাহায্যকারী হবে; তিনি আরও বলেছিলেনঃ তোমরা কি অঙ্গীকার গ্রহণ করলে এবং এর দায়িত্বের বোঝা গ্রহণ করলে? তারা বলেছিলঃ আমরা স্বীকার করলাম, তিনি বললেনঃ তবে তোমরা সাক্ষী থাক এবং আমিও তোমাদের সাথে সাক্ষীগণের অন্তর্ভুক্ত রইলাম।

فَمَنْ تَوَلّٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٨٢﴾

৮২. অতঃপর এর পরে যারা ফিরে যাবে, তারাই দুষ্কার্যকারী।

أَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ يَبْغُوْنَ وَلَهٗٓ أَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّإِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾

৮৩. তবে কি তারা আল্লাহর (মনোনীত) দ্বীন ব্যতীত অন্য কিছু কামনা করে? অথচ নভোমণ্ডল ও

১। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, তিনি উমর (রাযিআল্লাহু আনহু) কে মিম্বরে বলতে শুনেছেন যে, আমি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) কে বলতে শুনেছি যে, নাসারারা যেভাবে ইবনে মারইয়াম (ঈসা আলাইহিস্‌সালামের)-এর প্রশংসা করে। (তাঁকে আল্লাহর সান্তান বলেছে) তোমরা এভাবে আমার অতিরিক্ত প্রশংসা করিও না; বরং নিশ্চয়ই আমি তাঁর বান্দা সুতরাং তোমরা আমাকে আল্লাহ্‌র বান্দা এবং তাঁর রাসূল বলবে। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৪৫)

ভূমণ্ডলে যা কিছু আছে ইচ্ছা ও অনিচ্ছাক্রমে সবাই তাঁর উদ্দেশ্যে আত্মসমর্পণ করেছে এবং তাঁরই দিকে প্রত্যাবর্তিত হবে।

قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۖ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۖ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٨٤﴾

৮৪. তুমি বলঃ আমরা আল্লাহর প্রতি এবং যা আমাদের প্রতি অবতীর্ণ হয়েছে এবং যা ইবরাহীম, ইসমাঈল, ইসহাক, ইয়াকুব ও তাদের বংশধরগণের প্রতি অবতীর্ণ হয়েছে এবং যা মূসা, ঈসা ও নবীগণ তাদের প্রতিপালক কর্তৃক প্রদত্ত হয়েছে তৎপ্রতি বিশ্বাস স্থাপন করলাম, আমরা তাদের মধ্যে কাউকেও পার্থক্য জ্ঞান করি না এবং আমরা তাঁরই প্রতি আত্মসমর্পণকারী।

وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٨٥﴾

৮৫. আর যে কেউ ইসলাম ব্যতীত অন্য জীবন ব্যবস্থা অন্বেষণ করে তা কখনই তার নিকট হতে পরিগৃহীত হবে না অতএব পরকালে সে ক্ষতিগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত হবে।[১]

১। (ক) আবূ জামরাহ থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ আমি ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা)-এর সাথে বসতাম। তিনি আমাকে তার আসনে বসাতেন। তিনি একবার আমাকে বললেন, 'তুমি আমার কাছে থাক। আমি তোমাকে আমার সম্পদ থেকে একটা অংশ দেব।' আমি তখন তার কাছে দু'মাস অবস্থান করলাম। তারপর তিনি বললেন, যখন 'আবদুল কায়েস গোত্রের দূত নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর কাছে এল তখন তিনি জিজ্ঞেস করলেন, "তোমরা কোন্ গোত্রের লোক? অথবা কোন্ দূত?" তারা বলল, রবী'আ গোত্রের। তিনি বললেন, ঐ গোত্রের অথবা দূতের শুভাগমন হোক যারা বিনা লাঞ্ছনায় ও বিনা অনুতাপে এসেছে। তারা বলল, "হে আল্লাহ্র রাসূল! (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আমরা সম্মানিত মাস ছাড়া (জুলকা'দা, যিল হিজ্জাহ, মুহাররম ও রজব) অন্য কোন সময় আপনার নিকট আসতে পারি না। কারণ আমাদের ও আপনার মাঝ এলাকায় কাফের মুদার গোত্র বাস করে। কাজেই আমাদেরকে আপনি সত্য ও অসত্যের মধ্যে পার্থক্য সৃষ্টিকারী কোন হুকুম দিন। আমরা তা অন্যদেরকে জানিয়ে দেব। আর তার মাধ্যমে আমরা যেন বেহেশ্তে যেতে পারি।" তারা রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর কাছে পানীয় দ্রাব্যাদি সম্পর্কেও জিজ্ঞেস করল। তিনি তাদেরকে চারটি বিষয়ের হুকুম দিলেন এবং চারটি বিষয়ে নিষেধ করলেন। তিনি তাদেরকে এক আল্লাহ্র প্রতি ঈমান রাখার আদেশ দিলেন। তিনি তাদেরকে জিজ্ঞেস করলেন, 'তোমরা কি জান এক আল্লাহ্র প্রতি ঈমানটা কি?' তারা বলল, 'আল্লাহ্ ও তাঁর রাসূলই ভাল জানেন।' তিনি বললেনঃ এই সাক্ষ্য দেয়া যে, আল্লাহ্ ছাড়া অন্য কোন (সত্য) মা'বূদ নেই আর

كَيْفَ يَهْدِى اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّ جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٦﴾

৮৬. কিরূপে আল্লাহ সেই সম্প্রদায়কে পথ-প্রদর্শন করবেন যারা বিশ্বাস স্থাপনের পর অবিশ্বাসী হয়েছে এবং তারা রাসূলের সত্যতা বিষয়ে সাক্ষ্য প্রদান করেছিল এবং তাদের নিকট প্রকাশ্য নিদর্শনসমূহ এসেছিল, আর আল্লাহ অত্যাচারী সম্প্রদায়কে পথ-প্রদর্শন করেন না।

মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তাঁর রাসূল। আর নামায কায়েম করা, যাকাত দেয়া এবং রমযানে রোযা রাখা। আর তোমরা গণীমতের মালের এক-পঞ্চমাংশ দান করবে। আর তিনি সবুজ কলসী, শুকনা লাউয়ের খোল, খেজুর কান্ডের কাষ্ঠপাত্র এবং আলকাত্‌রা মাখান বাসন-এই চারটি (জিনিসের ব্যবহার) নিষেধ করলেন। তারপর তিনি বললেনঃ এসব কথা তোমরা মনে রেখে অন্য সকলকে জানিয়ে দাও। (বুখারী, হাদীস নং ৫১)

টীকাঃ এগুলো ছিল মদের পাত্র। মদ সংরক্ষণ ও পানের জন্য এ পাত্রগুলো ব্যবহার করা হতো। এ পাত্রগুলো হারাম করার কারণস্বরূপ বলা যায়, প্রথমতঃ মদ হারাম হবার পর তখন বেশী দিন অতিক্রান্ত হয়নি, তাই এ পাত্রগুলো দেখলে আবার মদের স্মৃতি জেগে ওঠার সম্ভাবনা ছিল। ফলে মদ পানের আকাঙ্খা জেগে ওঠাও অস্বাভাবিক ছিল না। দ্বিতীয়তঃ তখনো পর্যন্ত এ পাত্রগুলোতে মদের কিছুটা প্রভাব মিশ্রিত থাকাও অসম্ভব ছিল না।

(খ) আবূ জামরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেনঃ আমি ইবনে আব্বাস এবং অন্যান্য লোকদের মধ্যে দোভাষীর কাজ করছিলাম। তখন ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) বললেন, আবদুল কাইস গোত্রের লোকেরা নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) নিকট আসলে তিনি বললেন কোন দূত বা কোন কাওম তারা বলল, 'রবী'আ। তিনি বললেন, "শুভাগমন হোক এই গোত্রের বা এই দূতের যারা (যুদ্ধে পরাস্ত হয়ে নয়; বরং স্বেচ্ছায় ইসলাম গ্রহণ করায়) লাঞ্ছিত নয়, অনুতপ্তও নয়।" তারা বলল, আমরা দূর থেকে সফর করে আপনার কাছে আসি। আর আমাদের ও আপনার মাঝপথে রয়েছে এই কাফের গোত্র 'মুদার'। আর আমরা আপনার কাছে পবিত্র মাস ছাড়া (অন্য সময়) আসতে পারি না। কাজেই আমাদেরকে এমন কাজের হুকুম দিন, যা আমাদের অন্যান্য লোকদেরকে জানাতে পারি। এর মাধ্যমে আমরা বেহেশতে যেতে পারব। তিনি তাদেরকে একমাত্র আল্লাহ্‌র প্রতি ঈমান রাখার হুকুম দিয়ে বললেন, তোমরা কি জান একমাত্র আল্লাহ্‌র প্রতি ঈমানটা কি? তারা বলল, 'আল্লাহ্ ও তাঁর রাসূলই ভাল জানেন।' তিনি বললেন, 'এই সাক্ষ্য দেয়া যে, আল্লাহ্ ছাড়া কোন সত্য ইলাহ বা মা'বূদ নেই এবং মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আল্লাহ্‌র রাসূল। আর নামায আদায় করা, যাকাত দেয়া এবং রমযানের রোযা রাখার (হুকুম দিলেন)। এ ছাড়া গণীমতের মালের (যুদ্ধ লব্ধ সামগ্রী) এক-পঞ্চমাংশ দান করবে। আর তিনি লাউয়ের শুকনা খোল, সবুজ কলসী ও আলকাতরা মাখান বাসন (ব্যবহার করতে) নিষেধ করলেন।

বর্ণনাকারী শু'বা বলেন, (বর্ণনাকারী) আবূ জামরা কখনও কাষ্ঠপাত্রের কথা বলেছেন আবার কখনও 'মুযাফফাত' শব্দের স্থলে 'মুকাইয়ার' শব্দ বলেছেন।

রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন যে, তোমরা এ বাণী সংরক্ষণ কর এবং তোমাদের অন্যান্য লোকদেরকে জানিয়ে দাও। (বুখারী, হাদীস নং ৮৭)

(গ) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ একদিন নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) লোকদের সামনে বসেছিলেন। এমন সময় একজন লোক এসে তাঁকে জিজ্ঞেস করল, 'ঈমান কি?' তিনি বললেন, ঈমান এই যে, তুমি আল্লাহ্, তাঁর ফেরেশতা, (পরকালে) তাঁর সাথে সাক্ষাত ও তাঁর

أُولَٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ أَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللَّهِ وَالْمَلَٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿٨٧﴾

৮৭. ওরাই– যাদের প্রতিফল এই যে, নিশ্চয়ই তাদের উপর আল্লাহর, তাঁর ফেরেশতাগণের ও মানবকুলের অভিসম্পাত।

خَٰلِدِينَ فِيهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٨٨﴾

৮৮. তারা তন্মধ্যে সদা অবস্থান করবে– তাদের উপর হতে শাস্তি প্রশমিত হবে না এবং তাদেরকে বিরাম দেয়া যাবে না।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ وَأَصْلَحُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٨٩﴾

৮৯. কিন্তু যারা এরপর তওবা করেছে ও সংশোধিত হয়েছে তবে নিশ্চয়ই আল্লাহ ক্ষমাশীল, করুণাময়।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوا كُفْرًا لَّن تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَأُولَٰٓئِكَ هُمُ الضَّآلُّونَ ﴿٩٠﴾

৯০. নিশ্চয়ই যারা বিশ্বাস স্থাপনের পর অবিশ্বাসী হয়েছে, তৎপরে অবিশ্বাসে তারা আরো বেড়ে গেছে। তাদের ক্ষমা-প্রার্থনা কখনই পরিগৃহীত হবে না এবং তারাই পথভ্রষ্ট।

রাসূলগণের প্রতি বিশ্বাস রাখবে। মরণের পর আবার জীবিত হতে হবে, তাও বিশ্বাস করবে। লোকটি জিজ্ঞেস করল, 'ইসলাম কি?' তিনি বললেন, ইসলাম এই যে, তুমি আল্লাহ্‌র ইবাদত করতে থাকবে এবং তাঁর সাথে (কাউকে) শরীক করবে না, নামায কায়েম করবে, নির্ধারিত ফরয যাকাত দেবে এবং রমযানে রোযা রাখবে। সে জিজ্ঞেস করল, ইহ্‌সান কি? তিনি বললেন, (ইহ্‌সান এই যে) তুমি (এমনভাবে আল্লাহ্‌র) ইবাদত করবে যেন তাঁকে দেখছ ; যদি তাকে না দেখ, নিশ্চয় তিনি তোমাকে দেখছেন (বলে অনুভব করবে।) সে জিজ্ঞেস করল, 'কিয়ামত কখন হবে?' তিনি বললেন, এ ব্যাপারে যাকে প্রশ্ন করা হয়েছে তিনি প্রশ্নকারীর চেয়ে বেশি জানেন না। তবে আমি তার (কিয়ামতের) শর্তগুলো (লক্ষণ) বলে দিচ্ছি, 'যখন বাঁদী তার মনিবকে প্রসব করবে এবং কাল উটের রাখালরা যখন দালান কোঠা নিয়ে পরস্পর গর্ব করবে। যে পাঁচটি জিনিসের জ্ঞান একমাত্র আল্লাহ্ রাখেন, কিয়ামতের জ্ঞান তারই অন্তর্ভুক্ত। এরপর নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) এই আয়াত পড়লেনঃ "আল্লাহ্‌র নিকটই কিয়ামতের জ্ঞান রয়েছে। (আর তিনি বৃষ্টি বর্ষণ করেন) এবং মাতৃগর্ভে কি আছে তা তিনিই জানেন। কোন জীবই আগামীকাল কী উপার্জন করবে তা জানে না এবং কোন্ জমিনে (স্থানে) সে মরবে তাও জানে না। আল্লাহ্ সব জানেন ও খবর রাখেন।"(সূরা লোকমানঃ ৩৪)

এরপর লোকটি চলে গেল। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ তোমরা তাকে ফিরিয়ে আন। কিন্তু সাহাবীগণ দেখতে পেলেন না। তখন তিনি বললেনঃ 'ইনি (ছিলেন জিবরীল (আলাইহিস্ সালাম); লোকদেরকে তাদের দ্বীন শিক্ষা দিতে এসেছিলেন। (বুখারী, হাদীস নং ৫০)

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِمْ مِلْءُ الْأَرْضِ ذَهَبًا وَلَوِ افْتَدَىٰ بِهِ ۗ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ﴿٩١﴾

৯১. নিশ্চয়ই যারা অবিশ্বাস করেছে ও অবিশ্বাসী অবস্থায় মৃত্যুবরণ করেছে, ফলতঃ তাদের কারও নিকট হতে পৃথিবী পরিপূর্ণ স্বর্ণও নেয়া হবেনা– যদিও সে স্বীয় মুক্তির বিনিময়ে তা প্রদান করে; ওদেরই জন্যে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি রয়েছে এবং ওদের জন্যে কোনই সাহায্যকারী নেই।[১]

১। কাতাদা থেকে বর্ণিত তিনি বলেন আমাদেরকে হাদীস বর্ণনা করেছেন আনাস বিন মালেক (রাযিআল্লাহু আনহু) নিশ্চয়ই আল্লাহ্‌র নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন যে, কিয়ামতের দিন কাফেরকে উপস্থিত করে বলা হবে যে, যদি তোমার নিকট পৃথিবী সমপরিমাণ স্বর্ণ থাকে তাহলে কি তুমি এর বিনিময়ে এই শাস্তি থেকে মুক্তি কামনা করবে? তখন সে বলবে হা। তাকে বলা হবে যে, তোমার নিকট এর চেয়েও সহজ জিনিস চাওয়া হয়েছিল। (বুখারী, হাদীস নং ৬৫৩৮)

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۚ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٩٢﴾

৯২. তোমরা যা ভালবাস, তা হতে ব্যয় না করা পর্যন্ত তোমরা কখনই কল্যাণ লাভ করতে পারবে না এবং তোমরা যা কিছুই ব্যয় কর আল্লাহ তা পরিজ্ঞাত আছেন।

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَآءِيْلُ عَلٰى نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٩٣﴾

৯৩. তাওরাত অবতরণের পূর্বে ইসরাঈল নিজের জন্যে যা অবৈধ করেছিল তদ্ব্যতীত সর্ববিধ খাদ্য ইসরাঈল বংশীয়গণের জন্যে বৈধ ছিল; তুমি বলঃ যদি তোমরা সত্যবাদী হও, তবে তাওরাত আনয়ন কর তৎপরে ওটা পাঠ কর।

فَمَنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٩٤﴾

৯৪. অনন্তর ও যদি কেউ এরপর আল্লাহর প্রতি অসত্যারোপ করে তবে তারাই অত্যাচারী।

قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۗ فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٥﴾

৯৫. তুমি বলঃ আল্লাহ সত্য বলেছেন; অতএব তোমরা ইবরাহীমের আদর্শের নিবিড়ভাবে অনুসরণ কর এবং তিনি অংশী-বাদীগণের অন্তর্গত ছিলেন না।

اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِيْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٦﴾

৯৬. নিশ্চয়ই সর্বপ্রথম গৃহ, যা মানবমণ্ডলীর জন্যে নির্দিষ্ট (প্রতিষ্ঠা) করা হয়েছে,তা ঐ ঘর, যা মক্কায় অবস্থিত; ওটা বরকতময় এবং সমস্ত বিশ্ববাসীর জন্যে পথ-প্রদর্শক।

فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ ۚ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٧﴾

৯৭. তার মধ্যে প্রকাশ্য নিদর্শনসমূহ বিদ্যমান রয়েছে, মাকাম-ই-ইবরাহীম উক্ত নিদর্শনসমূহের অন্যতম। আর যে ওর মধ্যে প্রবেশ করে সে নিরাপদ হয়ে যায় এবং আল্লাহর উদ্দেশ্যে এ গৃহের হজ্জ করা সেসব মানুষের অবশ্য কর্তব্য যারা শারিরীক

ও আর্থিকভাবে ঐ পথ অতিক্রমে সমর্থ এবং যদি কেউ অস্বীকার করে তবে নিশ্চয়ই আল্লাহ সমগ্র বিশ্ববাসী হতে মুখাপেক্ষিহীন।[১]

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٨﴾

৯৮. তুমি বলঃ হে কিতাবধারীরা! তোমরা কেন আল্লাহর নিদর্শনাবলীর প্রতি অবিশ্বাস করছো? এবং তোমরা যা করছো আল্লাহ সে বিষয়ে সাক্ষী আছেন।

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ شُهَدَآءُ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٩﴾

৯৯. তুমি বলঃ হে গ্রন্থপ্রাপ্তগণ! যে ব্যক্তি বিশ্বাস স্থাপন করেছে, তার মধ্যে কুটিলতার কামনায় কেন তোমরা তাকে আল্লাহর পথে প্রতিরোধ করছো অথচ তোমরাই সাক্ষী রয়েছো? আর তোমরা যা করছো সে বিষয়ে আল্লাহ অমনোযোগী নন।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٠﴾

১০০. হে মু'মিনগণ! যারা গ্রন্থ প্রদত্ত হয়েছে, যদি তোমরা তাদের এক দলের অনুসরণ কর, তবে তারা তোমাদেরকে তোমাদের ঈমান আনয়নের পর কাফির বানিয়ে দেবে।

وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ؕ وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِىَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٠١﴾

১০১. আর কিরূপে তোমরা অবিশ্বাস করতে পার, যখন আল্লাহর নিদর্শনাবলী তোমাদের সামনে পঠিত হয় এবং তোমাদের মধ্যে তাঁর রাসূল বিদ্যমান রয়েছে? আর যে কেউ

১। আবদুল্লাহ্ বিন আমর (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ বানী ইসরাইলরা বাহাত্তর দলে বিভক্ত হয়ে পড়েছিল আর আমার উম্মত তিহাত্তর দলে বিভক্ত হবে। তাদের মধ্যে একটি দল ছাড়া আর সব দলই জাহান্নামী হবে। সাহাবাগণ জিজ্ঞাসা করলেনঃ সেই একটি দল কারা- হে আল্লাহ্র রাসূল! তিনি বললেনঃ "তারা হচ্ছে সেই লোক যারা অনুসরণ করবে আমার ও সাহাবাদের আদর্শ।" (তিরমিযী, হাদীস নং ২৬৪১ পৃঃ ৬০০)

আল্লাহকে দৃঢ়রূপে ধারণ করে, তবে নিশ্চয়ই সে সরল পথে পরিচালিত হবে।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٢﴾

১০২. হে বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ! তোমরা প্রকৃত ভীতি সহকারে আল্লাহকে ভয় কর এবং তোমরা মুসলমান হওয়া ব্যতীত মৃত্যুবরণ করো না।

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۠ وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖۤ اِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٠٣﴾

১০৩. আর তোমরা একযোগে আল্লাহর রজ্জুকে সুদৃঢ়রূপে ধারণ কর ও বিভক্ত হয়ে যেয়ো না এবং তোমাদের প্রতি আল্লাহর যে নেয়ামত রয়েছে তা স্মরণ কর, যখন তোমরা পরস্পর শত্রু ছিলে তখন তিনিই তোমাদের অন্তঃকরণে প্রীতি স্থাপন করেছিলেন, তৎপরে তোমরা তাঁর অনুগ্রহে ভ্রাতৃত্বে আবদ্ধ হলে এবং তোমরা অগ্নিকুণ্ডের নিকটে ছিলে অনন্তর তিনিই তোমাদেরকে ওটা হতে উদ্ধার করেছেন; এরূপে আল্লাহ তোমাদের জন্যে স্বীয় নিদর্শনাবলী ব্যক্ত করেন যেন তোমরা সুপথ প্রাপ্ত হও।

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٤﴾

১০৪. এবং তোমাদের মধ্যে এরূপ এক সম্প্রদায় হওয়া উচিত— যারা কল্যাণের দিকে আহ্বান করবে এবং ভাল কাজের আদেশ করবে ও মন্দ কাজের নিষেধ করবে আর তারাই সুফল প্রাপ্ত হবে।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٠٥﴾

১০৫. এবং তাদের সদৃশ হয়ো না, যাদের নিকট প্রকাশ্য প্রমাণ আসার পর তারা বিচ্ছিন্ন হয়েছে ও বিরোধ করেছে এবং তাদের জন্যে রয়েছে কঠোর শাস্তি।

يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۣ اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿١٠٦﴾

১০৬. সেদিন কতকগুলো মুখমণ্ডল হবে উজ্জ্বল সাদা বর্ণের এবং কতগুলো মুখমণ্ডল হবে কালো বর্ণের; অতঃপর যাদের মুখমণ্ডল কালো বর্ণের হবে। (তাদেরকে বলা হবে) তবে কি তোমরা বিশ্বাস স্থাপনের পর অবিশ্বাসী হয়েছো? অতএব, তোমরা শাস্তির আস্বাদ গ্রহণ কর, যেহেতু তোমরা অবিশ্বাস করেছিলে।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٧﴾

১০৭. আর যাদের মুখমণ্ডল শুভ্র উজ্জ্বল (সাদা) হবে, তারা আল্লাহর করুণার অন্তর্ভুক্ত; তারা তন্মধ্যে সদা অবস্থান করবে।

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٨﴾

১০৮. আল্লাহর এ সকল নিদর্শন— যা আমি তোমার প্রতি সত্যসহ আবৃত্তি করছি এবং আল্লাহ বিশ্বজগতের প্রতি অত্যাচারের ইচ্ছে করেন না।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿١٠٩﴾

১০৯. আর যা নভোমণ্ডলের মধ্যে আছে ও যা ভূমন্ডলের মধ্যে রয়েছে তা আল্লাহর জন্যে এবং আল্লাহর দিকে সবকিছুই প্রত্যাবর্তিত হয়।

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿١١٠﴾

১১০. তোমরাই মানবমণ্ডলীর জন্যে শ্রেষ্ঠতম সম্প্রদায়রূপে সমুদ্ভূত হয়েছ, তোমরা ভাল কাজের আদেশ করবে ও মন্দ কাজের নিষেধ করবে এবং আল্লাহর প্রতি বিশ্বাস স্থাপন কর; আর যদি গ্রন্থ প্রাপ্তগণ বিশ্বাস স্থাপন করতো, তবে অবশ্যই তাদের জন্যে মঙ্গল হতো; তাদের মধ্যে কেউ কেউ তো মু'মিন এবং তাদের

অধিকাংশই দুষ্কার্যকারী।[১]

لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّآ اَذًى ؕ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ ۫ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١١١﴾

১১১. দুঃখ প্রদান ব্যতীত তারা তোমাদের কোন অনিষ্ট করতে পারবে না; আর যদি তারা তোমাদের সাথে সংগ্রাম করে, তবে তারা তোমাদেরকে পৃষ্ঠ প্রদর্শন করবে; অতঃপর তাদেরকে সাহায্য করা হবে না।

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا ثُقِفُوْٓا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿١١٢﴾

১১২. আল্লাহর প্রতিশ্রুতি ও মানুষের প্রতিশ্রুতি (তাদের নিরাপত্তার ব্যাপারে) ব্যতীত তারা যেখানেই অবস্থান করুক না কেন, লাঞ্ছনায় আক্রান্ত হবে– আল্লাহর কোপে নিপতিত হবে এবং দারিদ্র দ্বারা আক্রান্ত হবে; এটা এ কারণে যে, তারা আল্লাহর নিদর্শনাবলীর প্রতি অবিশ্বাস করেছিল এবং নবীগণকে অন্যায়ভাবে হত্যা করেছিল; এটা এ জন্য যে, তারা বিরুদ্ধাচরণ করেছিল ও সীমা অতিক্রম করেছিল।

لَيْسُوْا سَوَآءً ؕ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ﴿١١٣﴾

১১৩. তারা সকলে সমান নয়; আহলে কিতাবের মধ্যে এক সুপ্রতিষ্ঠিত সম্প্রদায় রয়েছে যারা রাত্রিকালীন আল্লাহর আয়াতসমূহ পাঠ করে এবং সিজদা করে থাকে।

১। (ক) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ আল্লাহ্ বলেনঃ "তোমরাই সর্বোত্তম জাতি যাদের মানুষের কল্যাণ কামনায় উদ্ভব ঘটানো হয়েছ।" এই আয়াতের তাফসীরে তিনি বলেনঃ মানুষের মধ্যে সর্বোত্তম মানুষ তারাই যারা মানুষকে কোন জিহাদের ময়দান থেকে বন্দী করে নিয়ে আসে, এমনকি ঐ বন্দী লোকগুলো পরে ইসলাম গ্রহণ করে। (বুখারী, হাদীস নং ৪৫৫৭)

(খ) আল্লাহ্ পাক এমন জাতির প্রতি বিস্মিত হন, যারা জিঞ্জিরের (শিকলের) সাথে বেহেশ্তে প্রবেশ করে। [অর্থাৎ বন্দী অবস্থায় ইসলাম গ্রহণ করে।] (বুখারী, হাদীস নং ৩০১০)

يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٤﴾

১১৪. তারা আল্লাহ ও পরকালের প্রতি বিশ্বাস করে এবং ভাল কাজের আদেশ ও মন্দ কাজের নিষেধ করে এবং সৎকার্যসমূহে তৎপর থাকে, আর তারাই সৎকর্মশীলগণের অন্তর্ভুক্ত।

وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿١١٥﴾

১১৫. আর তারা যে সৎকার্য করবে, ফলতঃ তা কখনও অস্বীকার করা হবে না এবং আল্লাহ মুত্তাকীদের সম্পর্কে পরিজ্ঞাত আছেন।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١١٦﴾

১১৬. নিশ্চয়ই যারা অবিশ্বাস করেছে তাদের ধনরাশি, সন্তান-সন্ততি আল্লাহর নিকট কিছুমাত্র ফলপ্রদ হবে না এবং তারাই অগ্নির অধিবাসী, তন্মধ্যে তারা চিরকাল অবস্থান করবে।

مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٧﴾

১১৭. তারা পার্থিব জীবনে যা ব্যয় করে তার দৃষ্টান্ত হিম শীতল বায়ুর অনুরূপ, যারা স্বীয় জীবনের প্রতি অত্যাচার করেছে ওটা সে সকল সম্প্রদায়ের শস্য ক্ষেতে নিপতিত হয় এবং তা বিধ্বস্ত করে। আর আল্লাহ তাদের প্রতি অত্যাচার করেননি বরং তারাই স্বীয় জীবনের প্রতি অত্যাচার করেছে।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا ؕ وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْ ۚ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۚ وَمَا تُخْفِيْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ

১১৮. হে বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ! তোমরা নিজেদের ব্যতীরেকে অন্য কাউকে মিত্ররূপে গ্রহণ করো না— তারা তোমাদেরকে ক্ষতিগ্রস্ত করতে সংকুচিত হবে না এবং তোমরা যাতে বিপন্ন হও, তারা তাই কামনা করে; বস্তুতঃ তাদের মুখ হতেই শত্রুতা

كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١١٨﴾

প্রকাশিত হয় এবং তাদের অন্তর যা গোপন করে তা গুরুতর; নিশ্চয়ই আমি তোমাদের জন্যে নিদর্শনাবলী ব্যক্ত করছি, যেন তোমরা বুঝতে পার।

هٰۤاَنْتُمْ اُولَآءِ تُحِبُّوْنَهُمْ وَلَا يُحِبُّوْنَكُمْ وَتُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ كُلِّهٖ ۚ وَاِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّا ۚ وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ؕ قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١١٩﴾

১১৯. সাবধান হও— তোমরাই তাদেরকে ভালবাস, অথচ তারা তোমাদেরকে ভালবাসে না এবং তোমরা সমস্ত গ্রন্থই বিশ্বাস কর; আর তারা যখন তোমাদের সাথে মিলিত হয় তখন বলেঃ আমরা বিশ্বাস স্থাপন করেছি এবং যখন তোমাদের হতে পৃথক হয়ে যায়, তখন তোমাদের প্রতি আক্রোশে অঙ্গুলিসমূহ দংশন করে; তুমি বলঃ তোমরা নিজেদের আক্রোশে মরে যাও! নিশ্চয়ই আল্লাহ অন্তরের কথা পরিজ্ঞাত আছেন।

اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۫ وَاِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا بِهَا ؕ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿١٢٠﴾

১২০. যদি তোমাদেরকে কল্যাণ স্পর্শ করে তবে তারা অসন্তুষ্ট হয়; আর যদি তোমাদের অমঙ্গল উপস্থিত হয়, তারা আনন্দিত হয়ে থাকে এবং যদি তোমরা ধৈর্যধারণ কর ও সংযমী হও, তবে তাদের চক্রান্ত তোমাদের কোনই ক্ষতি করতে পারবে না; তারা যা করে নিশ্চয়ই আল্লাহ তার পরিবেষ্টনকারী।

وَاِذْ غَدَوْتَ مِنْ اَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٢١﴾

১২১. যখন তুমি বিশ্বাসীদেরকে যুদ্ধার্থে যথাস্থানে সংস্থাপিত করবার জন্যে প্রভাতে স্বীয় পরিজন হতে বের হয়েছিল এবং আল্লাহ শ্রবণকারী মহাজ্ঞানী।

اِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٢﴾

১২২. যখন তোমাদের দু'দল ভীরুতা প্রকাশের সংকল্প করেছিল এবং আল্লাহ সে দলদ্বয়ের পৃষ্ঠপোষক

ছিলেন; এবং মু'মিনগণ যেন আল্লাহর উপরই নির্ভর করে থাকে।

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّ اَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢٣﴾

১২৩. আর নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাদেরকে বদরে সাহায্য করেছিলেন যখন তোমরা দুর্বল ছিলে; অতএব তোমরা আল্লাহকে ভয় কর যেন তোমরা কৃতজ্ঞ হও।

اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُنْزَلِيْنَ ﴿١٢٤﴾

১২৪. যখন মু'মিনদেরকে বলছিলেঃ এটা কি তোমাদের পক্ষে যথেষ্ট নয় যে, তোমাদের প্রতিপালক তিন হাজার ফেরেশতা প্রেরণ করে তোমাদেরকে সাহায্য করবেন?

بَلٰٓى ۙ اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ﴿١٢٥﴾

১২৫. বরং যদি তোমরা ধৈর্যধারণ কর ও সংযমী হও এবং তারা যদি স্বেচ্ছায় তোমাদের উপর নিপতিত হয়, তবে তোমাদের প্রতিপালক পাঁচ সহস্র বিশিষ্ট ফেরেশতা দ্বারা তোমাদের সাহায্য করবেন।

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ۗ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١٢٦﴾

১২৬. আর আল্লাহ এ সাহায্য শুধু এ জন্যেই করেছেন যেন তোমাদের জন্যে সুসংবাদ হয় এবং যেন তোমাদের অন্তরে শান্তি আসে আর সাহায্য শুধু আল্লাহর পক্ষ হতেই হয়ে থাকে, যিনি অতীব সম্মানী, প্রজ্ঞাময়।

لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَآئِبِيْنَ ﴿١٢٧﴾

১২৭. যারা অবিশ্বাসী হয়েছে, তিনি এরূপে তাদের একাংশকে কর্তিত করেন অথবা তাদেরকে লাঞ্ছিত করেন, যাতে তারা অকৃতকার্যতা সহকারে ফিরে যায়। (যুদ্ধের ময়দান হতে)।

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١٢٨﴾

১২৮. এ কার্যে তোমার কোনই কর্তৃত্ব নেই যে, তিনি তাদেরকে ক্ষমা করেন অথবা শাস্তি প্রদান করেন; পরন্তু নিশ্চয়ই তারা অত্যাচারী।

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٢٩﴾

১২৯. আর নভোমণ্ডলে যা রয়েছে ও ভূমণ্ডলে যা আছে তা আল্লাহরই; তিনি যাকে ইচ্ছা ক্ষমা করেন এবং যাকে ইচ্ছা শাস্তি প্রদান করেন এবং আল্লাহ ক্ষমাশীল, পরম করুণাময়।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا الرِّبَا أَضْعَافًا مُضَاعَفَةً ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٣٠﴾

১৩০. হে বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ! তোমরা দ্বিগুণের উপর দ্বিগুণ সুদ[১] (চক্র বৃদ্ধিহারে) ভক্ষণ করো না এবং আল্লাহকে ভয় কর যেন তোমরা সুফল প্রাপ্ত হও।

وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ﴿١٣١﴾

১৩১. আর তোমরা সেই জাহান্নামের ভয় কর, যা অবিশ্বাসীদের জন্য প্রস্তুত রাখা হয়েছে।

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١٣٢﴾

১৩২. আর আল্লাহ ও রাসূলের আনুগত্য স্বীকার কর যেন তোমরা করুণা প্রাপ্ত হও।

وَسَارِعُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٣﴾

১৩৩. তোমরা স্বীয় প্রতিপালকের ক্ষমা ও জান্নাতের দিকে ধাবিত হও, যার প্রসারতা ও বিস্তৃতি নভোমণ্ডল ও ভূমণ্ডল সদৃশ, ওটা আল্লাহ ভীরুদের জন্যে নির্মিত হয়েছে।

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তোমরা ঈমান ধ্বংসকারী সাতটি বিষয় হ'তে বেচে থাকবে। সাহাবাগণ বললেনঃ হে আল্লাহ্র রাসূল! সেই বিষয়গুলি কি? তিনি বললেনঃ (১) আল্লাহ্র সাথে শিরক করা, (২) যাদু করা, (৩) আল্লাহ্র যথার্থ কারণ ব্যতীত যাকে হত্যা করা নিষিদ্ধ করেছেন তাকে হত্যা করা, (৪) সুদ খাওয়া, (৫) (অন্যায় ভাবে) ইয়াতীমের সম্পদ খাওয়া, (৬) যুদ্ধ চলাকালে জেহাদের ময়দান হতে পলায়ন করা, (৭) সত্য-সাধ্বী মুসলমান রমনীর ওপর ব্যভিচারের মিথ্যারোপ করা, যে কখনও তা কল্পনাও করেনা। (বুখারী, হাদীস নং ২৭৬৬)

الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣٤﴾

১৩৪. যারা স্বচ্ছলতা ও অভাবের মধ্যে ব্যয়[১] করে এবং ক্রোধ[২] সংবরণ করে ও মানবদেরকে ক্ষমা করে; আর আল্লাহ সৎকর্মশীলদেরকে ভালবাসেন।

وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۫ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۫ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٥﴾

১৩৫. এবং যখন কেউ অশ্লীল কার্য করে কিংবা স্বীয় জীবনের প্রতি অত্যাচার করে, তৎপর আল্লাহকে স্মরণ করে অপরাধসমূহের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করে; আর আল্লাহ ব্যতীত কে অপরাধসমূহ ক্ষমা করতে পারে? এবং তারা যা করেছে, তার উপর জেনে-শুনে অটল থাকে না।

اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿١٣٦﴾

১৩৬. তাদের পুরস্কার হবে তাদের প্রভুর নিকট হতে মার্জনা এবং এমন উদ্যানসমূহ যেগুলোর তলদেশ দিয়ে স্রোতস্বিনীসমূহ প্রবাহিত থাকবে, তন্মধ্যে তারা সদা অবস্থান করবে; এবং কর্মীদের (সৎকর্মশীলদের) জন্যে কি সুন্দর প্রতিদান!

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٣٧﴾

১৩৭. নিশ্চয়ই তোমাদের পূর্বে আদর্শসমূহ অতিক্রান্ত হয়েছে; অতএব পৃথিবীতে বিচরণ কর, তৎপরে লক্ষ্য কর যে, অবিশ্বাসীদের পরিণাম কিরূপ হয়েছে।

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন (মানুষের) শরীরের প্রতি খন্ড অস্থির উপর প্রতিদিন একটি করে সাদকা ওয়াজিব হয়। কোন লোককে স্বীয় সাওয়ারীর উপর আরোহণ করিয়ে সাহায্য করা বা তার মাল-সরঞ্জাম বহন করে দেয়া, উত্তম কথা বলা, নামাযের উদ্দেশ্যে যাতায়াতের প্রতিটি পদক্ষেপ এবং (পথিককে) রাস্তা দেখিয়ে দেয়া এসবই সাদকা হিসেবে গণ্য হয়ে থাকে। (বুখারী, হাদীস নং ২৮৯১)

২। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নিশ্চয়ই রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ বাহাদুর সে নয় যে কুস্তিতে কাউকে পরাজিত করে। বাহাদুর সে যে, কঠিন রাগের সময় নিজেকে সামলাতে পারে। (বুখারী, হাদীস নং ৬১১৪)

هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٨﴾

১৩৮. এটা মানবমণ্ডলীর জন্যে স্পষ্ট বিবরণ এবং আল্লাহ্ ভীরুগণের জন্যে পথ-প্রদর্শক ও উপদেশ।

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٩﴾

১৩৯. আর তোমরা দূর্বল হয়ো না ও বিষণ্ন হয়ো না এবং যদি তোমরা বিশ্বাসী হও, তবে তোমরাই জয়ী হবে।

اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ؕ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٠﴾

১৪০. যদি তোমাদের আঘাত লেগে থাকে, তবে নিশ্চয়ই সেই সম্প্রদায়েরও তদ্রূপ আঘাত লেগেছে এবং এ দিবসসমূহকে আমি মানবগণের মধ্যে পরিক্রমণ করাই; এবং যারা বিশ্বাস স্থাপন করেছে তাদেরকে যাতে আল্লাহ্ এরূপে জানতে পারেন এবং তোমাদের মধ্য হতে কতকগুলোকে শহীদরূপে গ্রহণ করবেন আর আল্লাহ্ অত্যাচারী-দেরকে ভালবাসেন না।

وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤١﴾

১৪১. আর যারা বিশ্বাস স্থাপন করেছে, তাদেরকে আল্লাহ্ এরূপে নির্মল করেন এবং অবিশ্বাসীদেরকে নিপাত করেন।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٢﴾

১৪২. তোমরা কি ধারণা করেছো যে, তোমরা জান্নাতে প্রবেশ করবে? অথচ যারা জিহাদ করে তোমাদের মধ্য হতে তাদের ব্যাপারে আল্লাহ্ অবগত হবেন না? ও ধৈর্যশীলদের তিনি জানবেন না?

وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۖ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿١٤٣﴾

১৪৩. এবং নিশ্চয়ই তোমরা মৃত্যুর পূর্বেই ওর সাক্ষাৎ কামনা করছিলে, অনন্তর নিশ্চয়ই তোমরা তা প্রত্যক্ষ করেছো এবং তোমরা অবলোকন করছো।

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَاْئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾

১৪৪. এবং মুহাম্মাদ রাসূল ব্যতীত কিছুই নয়, নিশ্চয়ই তার পূর্বে রাসূলগণ বিগত হয়েছে, অনন্তর যদি তাঁর মৃত্যু হয় অথবা তিনি নিহত হন, তবে কি তোমরা পশ্চাদপদে ফিরে যাবে? এবং যে কেউ পশ্চাদপদে ফিরে যায়, তাতে সে আল্লাহর কোনই অনিষ্ট করবে না এবং আল্লাহ কৃতজ্ঞগণকে অচিরেই পুরস্কার প্রদান করবেন।

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ؕ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ؕ وَسَنَجْزِى الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٥﴾

১৪৫. আর আল্লাহর আদেশে ধার্যকৃত লিপিবদ্ধ নির্দিষ্ট সময় ব্যতীত কেউই মৃত্যুমুখে পতিত হয় না; এবং যে কেউ দুনিয়ার প্রতিদান কামনা করে, আমি তাকে তা হতেই প্রদান করি এবং যে কেউ পরকালের প্রতিদান কামনা করে, আমি তাকে তা হতেই প্রদান করে থাকি; এবং আমি কৃতজ্ঞগণকে অচিরেই পুরস্কার প্রদান করবো।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ اَصَابَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٦﴾

১৪৬. আর এমন অনেক নবী ছিলেন, যাদের সহযোগে প্রভুভক্ত লোকেরা যুদ্ধ করেছিল; পরন্তু আল্লাহর পথে যা সংঘটিত হয়েছিল তাতে তারা নিরুৎসাহ হয়নি, শক্তিহীন হয়নি ও বিচলিত হয়নি এবং আল্লাহ ধৈর্যশীলগণকে ভালবাসেন।

وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤٧﴾

১৪৭. আর এতদ্ব্যতীত তাদের অন্য কথা ছিল না যে, তারা বলতোঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদের জন্যে আমাদের অপরাধ ও আমাদের বাড়াবাড়ি ক্ষমা করুন ও আমাদের চরণসমূহ সুদৃঢ় করুন এবং অবিশ্বাসীদের উপর আমাদেরকে সাহায্য করুন।

فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٤٨﴾

১৪৮. অনন্তর আল্লাহ তাদেরকে পার্থিব পুরস্কার প্রদান করলেন এবং পরকালের শ্রেষ্ঠতর পুরস্কর দেবেন; এবং আল্লাহ্ সৎকর্মশীলগণকে ভাল-বাসেন।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾

১৪৯. হে মু'মিনগণ! যারা অবিশ্বাস করেছে যদি তোমরা তাদের আজ্ঞাবহ হও, তবে তারা তোমাদেরকে পশ্চাদপদে ফিরিয়ে নেবে, তাতে তোমরা ক্ষতিগ্রস্ত হয়ে প্রত্যাবর্তিত হবে।[১]

بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ﴿١٥٠﴾

১৫০. বরং আল্লাহ তোমাদের অভিভাবক এবং তিনিই শ্রেষ্ঠতম সাহায্যকারী।

سَنُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَاۤ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٥١﴾

১৫১. যারা অবিশ্বাস করেছে, আমি অতি সত্বর তাদের অন্তরে ভীতি সঞ্চার করবো, যেহেতু তারা আল্লাহর সাথে সে বিষয়ে অংশী স্থাপন করেছে যে বিষয়ে তিনি কোন প্রমাণ অবতারণ করেননি এবং জাহান্নাম তাদের অবস্থান স্থল এবং ওটা অত্যাচারীদের জন্যে নিকৃষ্ট বাসস্থান।

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗۤ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰۤى اِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِى الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ؕ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ

১৫২. আর নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাদের জন্যে স্বীয় অঙ্গীকার সত্য করেছেন— যখন তাঁর আদেশে তোমরা ভগ্নোদ্যম না হওয়া পর্যন্ত

১। সামুরা ইবনে জুনদুব (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, যে ব্যক্তি (মুসলমান) মুশরিকের সঙ্গে অবস্থান করল এবং তার সঙ্গে (একই দেশে বা স্থানে) অধিবাসী হয়ে বসবাস করল সে (মুসলমান) অবশ্যই উক্ত মুশরিকের ন্যায়। (আবূ দাউদ, হাদীস নং ২৭৮৭)

টীকাঃ মুসলমানকে মুশরিকের সঙ্গে অবস্থান না করে পৃথকভাবে বসবাস করার জন্য কঠোরভাবে সাবধান ও হুশিয়ার উচ্চারণ করা হয়েছে। কারণ একজন মুসলমান মুশরিকের সঙ্গে সহ অবস্থান ও উঠাবসার মাধ্যমে তার মধ্যে তাদের স্বভাবের প্রভাব পড়তে পারে। এই হাদীসটি মুশরিকদের সঙ্গে মুসলমানদের সম্পর্ক বিষয়ে একটি মূলনীতি।

الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ؕ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٢﴾

কলহ করছিলে এবং অবাধ্য হয়েছিলে; অতঃপর তোমরা যা ভালবেসেছিলে, তা তিনি তোমাদেরকে প্রদর্শন করলেন; তোমাদের মধ্যে কেউ কেউ পৃথিবী কামনা করছিলে এবং কেউ কেউ পরকাল কামনা করেছিলে তৎপর তিনি তোমাদেরকে পরীক্ষার জন্যে বিরত করলেন এবং নিশ্চয়ই তোমাদেরকে ক্ষমা করলেন এবং আল্লাহ বিশ্বাসীগণের প্রতি অনুগ্রহশীল।

اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ عَلٰٓى اَحَدٍ وَّالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ فِيْٓ اُخْرٰىكُمْ فَاَثَابَكُمْ غَمًّۢا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَآ اَصَابَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥٣﴾

১৫৩. আর যখন তোমরা উপরের দিকে আরোহণ করে যাচ্ছিলে এবং কারও দিকে ফিরেও দেখছিলে না (উহুদের যুদ্ধে কাফিরদের ভয়ে পাহাড়ে আরোহণপূর্বক পলায়ন করেছিলে) ও রাসূল তোমাদেরকে পশ্চাদ হতে আহ্বান করছিলেন; অনন্তর ও তিনি তোমাদেরকে দুঃখের উপর দুঃখ প্রদান করলেন; কিন্তু যা অতিক্রান্ত হয়েছে এবং তোমাদের উপর যা উপনীত হয়নি তোমরা তজ্জন্যে দুঃখ করো না এবং তোমরা যা করছো আল্লাহ সে বিষয়ে অভিজ্ঞ।

ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَطَآئِفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ؕ يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ؕ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ ؕ يُخْفُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ

১৫৪. অনন্তর তিনি দুঃখের পরে তোমাদের উপর শান্তি অবতীর্ণ করলেন তা ছিল তন্দ্রা যা তোমাদের এক দলকে আচ্ছন্ন করেছিল, আর একদল নিজের জীবনের জন্যে চিন্তা করছিল; তারা আল্লাহ সম্বন্ধে সত্যের বিনিময়ে অজ্ঞতার অনুরূপ ধারণা পোষণ করছিল, তারা বলছিল এ বিষয়ে কি আমাদের কোন অধিকার

لَكَ ط يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ط قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ج وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ط وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١٥٤﴾

নেই? তুমি বলঃ সকল বিষয়ে আল্লাহর অধিকার; তারা নিজেদের অন্তরে যা গোপন রাখে, তা তোমার নিকট প্রকাশ করে না; তারা বলেঃ যদি এ বিষয়ে আমাদের কোন অধিকার থাকতো, তবে এখানে আমরা নিহত হতাম না; তুমি বলঃ যদি তোমরা তোমাদের গৃহের মধ্যেও থাকতে, তবুও যাদের প্রতি হত্যা বিধিবদ্ধ হয়েছে, তারা নিশ্চয়ই স্বীয় বধ্যস্থানে (গৃহে হলেও) এসে উপস্থিত হতো এবং এটা এ জন্যে যে, তোমাদের অন্তরের মধ্যে যা আছে, আল্লাহ তা পরীক্ষা করেন এবং এরূপে তিনি তোমাদের হৃদয়ে যা আছে তা নির্মল করে থাকেন; এবং আল্লাহ অন্তর্নিহিত ভাব পরিজ্ঞাত আছেন।

اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۙ اِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ج وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ط اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٥٥﴾

১৫৫. নিশ্চয়ই তোমাদের মধ্যে যারা দু'দলের সম্মুখীন হওয়ার দিন পশ্চাদাবর্তিত হয়েছিল, তারা যা অর্জন করেছিল, তার কোন কোন বিষয় হতে শয়তান তাদেরকে প্রতারিত করেছিল এবং অবশ্যই আল্লাহ তাদেরকে ক্ষমা করেছেন; নিশ্চয়ই আল্লাহ ক্ষমাশীল, সহিষ্ণু।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِي الْاَرْضِ اَوْ كَانُوْا غُزًّى لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَمَا قُتِلُوْا ج لِيَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ حَسْرَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ ط وَاللّٰهُ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ط وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١٥٦﴾

১৫৬. হে মু'মিনগণ! যারা অবিশ্বাস করেছে, তোমরা তাদের মত হয়ো না এবং যখন তাদের ভ্রাতৃগণ পৃথিবীতে বিচরণ করে অথবা যুদ্ধে নিহত হয় তখন তারা বলেঃ যদি ওরা আমাদের নিকট থাকতো তবে মৃত্যুমুখে পতিত হতো না। অথবা নিহত হতো না; আল্লাহ এরূপে তাদের অন্তরে দুঃখ

সঞ্চার করেন এবং আল্লাহই জীবন দান ও মৃত্যু দান করেন এবং তোমরা যা করছো, তৎপ্রতি আল্লাহ লক্ষ্যকারী।

وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿١٥٧﴾

১৫৭. আর যদি তোমরা আল্লাহর পথে নিহত অথবা মৃত্যুমুখে পতিত হও তবে আল্লাহর নিকট হতেই ক্ষমা রয়েছে এবং তারা যা সঞ্চয় করেছে তদপেক্ষা তাঁর করুণা শ্রেষ্ঠতর।

وَلَئِنْ مُّتُّمْ اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِلَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾

১৫৮. আর যদি তোমরা মৃত্যুবরণ কর বা নিহত হও তবে তোমাদেরকে অবশ্যই আল্লাহর দিকে একত্রিত করা হবে।

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ ۚ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴿١٥٩﴾

১৫৯. অতএব আল্লাহর অনুগ্রহ এই যে, তুমি তাদের প্রতি কোমল চিত্ত; এবং তুমি যদি কর্কশ ভাষী, কঠোর হৃদয় হতে, তবে নিশ্চয়ই তারা তোমার সংসর্গ হতে অন্তর্হিত হতো, অতএব তুমি তাদেরকে ক্ষমা কর ও তাদের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা কর এবং কার্য সম্বন্ধে তাদের সাথে পরামর্শ কর; অনন্তর যখন তুমি সংকল্প করেছ তখন আল্লাহর প্রতি নির্ভর কর এবং নিশ্চয়ই আল্লাহ নির্ভরশীলগণকে ভালবাসেন।

اِنْ يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِيْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ۗ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٦٠﴾

১৬০. যদি আল্লাহ তোমাদেরকে সাহায্য করেন, তবে কেউই তোমাদের উপর জয়যুক্ত হবে না এবং যদি তিনি তোমাদেরকে পরিত্যাগ করেন, তবে তাঁর পরে কে আছে যে, তোমাদেরকে সাহায্য করে? এবং বিশ্বাসীগণ আল্লাহর উপরেই নির্ভর করে থাকেন।

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّغُلَّ ؕ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦١﴾

১৬১. আর কোন নবীর পক্ষে আত্মসাৎ করণ শোভনীয় নয়[১] এবং যে কেউ আত্মসাৎ করেছে তবে যা সে আত্মসাৎ করেছে তা উত্থান দিবসে আনয়ন করা হবে; অনন্তর প্রত্যেক ব্যক্তি যা অর্জন করেছে তা পূর্ণরূপে প্রদত্ত হবে এবং তারা নির্যাতিত হবে না।

اَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ مَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦٢﴾

১৬২. যে আল্লাহর সন্তুষ্টির অনুসরণ করেছে, সে কি তার মত হতে পারে, যে আল্লাহর আক্রোশে পতিত হয়েছে? এবং তার বাসস্থান জাহান্নাম, আর ওটা নিকৃষ্ট গন্তব্য-স্থান।

هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٣﴾

১৬৩. আল্লাহর নিকট তাদের পদমর্যাদাসমূহ আছে এবং তোমরা যা করছো সে বিষয়ে আল্লাহ লক্ষ্যকারী।

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) একদিন আমাদের মাঝে দাঁড়িয়ে গণীমতের অর্থসম্পদ আত্মসাতের ভয়াবহতা সম্পর্কে বক্তব্য রাখলেন এবং ভয়াবহ পরিণামের বিষয়ও আলোচনা করলেন। তিনি বললেন, আমি কিয়ামতের দিন তোমাদের কাউকে এমন অবস্থায় দেখতে চাই না যে, সে ঘাড়ে একটি চীৎকাররত বকরী, একটি হ্রেষারত অশ্ব বহন করছে এবং আমাকে ডেকে বলছে যে, হে আল্লাহ্‌র রাসূল! আমাকে এ বিপদ থেকে (রক্ষা) উদ্ধার করুন। তখন আমি বলব, আমি তোমার জন্য কিছুই করতে পারছি না। আমি তো আল্লাহ্‌র বিধি-বিধান তোমাদের নিকট পৌঁছিয়ে দিয়েছিলাম। (অথবা) আমি তোমাদের কাউকে এমন অবস্থায়ও দেখতে চাই না যে, সে একটি চীৎকাররত উট ঘাড়ে বহন করে আমার কাছে এসে বলছে, হে আল্লাহ্‌র রাসূল! আমাকে বিপদমুক্ত করুন। আমি বলব, আমি তোমার জন্য কিছুই করতে পারছি না, আল্লাহ্‌র বাণী বা আদেশ-নিষেধ তো আমি তোমাদের কাছে পৌঁছে দিয়েছিলাম। (অথবা) তোমাদের কাউকে আমি এমনও দেখতে চাই না যে, সে সম্পদের বোঝা ঘাড়ে করে আমার কাছে আগমন করে বলবে, হে আল্লাহ্‌র রাসূল! আমাকে বিপদ থেকে রক্ষা করুন। আমি বলব, আমি তোমাদের জন্য কিছুই করতে সক্ষম নই। কেননা, আমি আল্লাহর বাণী তোমাদের নিকট পৌঁছিয়েছিলাম। (অথবা) তোমাদের কোন ব্যক্তি কাপড়ের গাঁটটি ঘাড়ে বহন করে আগমন করবে আর বাতাসে কাপড় তার ঘাড়ের ওপর উড়তে থাকবে। সে বলবে, হে আল্লাহ্‌র রাসূল! আমাকে বিপদমুক্ত করুন। আমি বলব, আমি তোমার জন্য কিছুই করতে পারছি না। আল্লাহ্‌র বাণী তো আমি তোমাদের কাছে পৌঁছে দিয়েছিলাম। (বুখারী, হাদীস নং ৩০৭৩)

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿١٦٤﴾

১৬৪. নিশ্চয়ই আল্লাহ্ বিশ্বাসীগণের প্রতি অনুগ্রহ করেছেন, যখন তিনি তাদের নিজেরদেরই মধ্য হতে একজন রাসূল প্রেরণ করেছেন, যিনি তাদের নিকট তাঁর নিদর্শনাবলী (আয়াতসমূহ) পাঠ করেন ও তাদেরকে পবিত্র করেন এবং তাদেরকে গ্রন্থ ও বিজ্ঞান শিক্ষা দান করেন এবং নিশ্চয়ই তারা এর পূর্বে প্রকাশ্য ভ্রান্তির মধ্যে ছিল।[১]

১। (ক) হোযায়ফা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ নিশ্চয় আমানত অবতীর্ণ হয়েছে আকাশ থেকে মানুষের অন্তরে এবং কুরআন অবতীর্ণ হয়েছে, অতঃপর তারা কুরআন পড়েছে, এবং হাদীস শিখেছে। (বুখারী, হাদীস নং ৭২৭৬)

(খ) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেছেন যে, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আমার উম্মতের সকল লোক জান্নাতে প্রবেশ করবে। কিন্তু যে অস্বীকার করেছে (সে জান্নাতবাসী হতে পারবে না)। জিজ্ঞাসা করা হলঃ কে অস্বীকার করেছে, হে আল্লাহ্র রাসূল? উত্তরে বললেনঃ যে আমার অনুসরণ করল সে জান্নাতে প্রবেশ করবে। আর যে ব্যক্তি আমার অনুসরণ করল না, সে অস্বীকার করল। (বুখারী, হাদীস নং ৭২৮০)

(গ) জাবের ইবনে আব্দুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) নিদ্রিত ছিলেন, এমতাবস্থায় তাঁর নিকট কয়েকজন ফেরেশ্তা আগমন করলেন। (তারা পরস্পরে বলাবলি করতে লাগলেন) কেউ বললো, তিনি নিদ্রিত; আর কেউ বললো, তাঁর চক্ষু নিদ্রিত, কিন্তু তাঁর হৃদয় জাগ্রত। অতঃপর কয়েকজন বললো, তোমাদের এ সাথীর (নবীর) একটি উদাহরণ আছে কেউ বলল, তা হলে সে উদাহরণটি বর্ণনা করুন। তাদের কেউ বললো, তিনি তো নিদ্রিত, আবার কেউ বললো, তাঁর চক্ষু মাত্র নিদ্রিত তার অন্তর জাগ্রত আছে। (উদাহরণ বর্ণনা করা যেতে পারে) অতঃপর তারা বললো, তাঁর উদাহরণ হচ্ছে ঐ ব্যক্তির ন্যায় যে, একটি গৃহ নির্মাণ করলো, অতঃপর সেখানে যিয়াফতের আয়োজন করলো। আর একজন আহ্বানকারী প্রেরণ করলো, অতঃপর যে কেহ সে আহ্বানকারীর দাওয়াত গ্রহণ করে উপস্থিত হলো, সে গৃহে প্রবেশ করে যিয়াফতের খানা খেয়ে নিল, আর যে দাওয়াত গ্রহণ করলো না সে গৃহেও প্রবেশ করতে পারলো না, খেতেও পারলো না। তারা বললো, এ উদাহরণের ব্যাখ্যা খুলে বলুন, যেন তিনি বুঝতে পারেন। কেউ বললো, তিনি তো নিদ্রায় মগ্ন আছেন (কিভাবে বুঝবেন) আবার কেউ বললো, তাঁর শুধুমাত্র চক্ষুই নিদ্রিত তাঁর অন্তর জাগ্রত আছে। তারপর তারা (ব্যাখ্যা করে) বললো, ঘর মানে জান্নাত, আর আহ্বানকারী মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)। তাই যে ব্যক্তি মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর অনুকরণ করবে তার আল্লাহ্র আনুগত্য করা হবে। আর যে মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে অমান্য করবে, বস্তুতঃ সে আল্লাহ্কেই অমান্য করবে। মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) লোকদের মাঝে ব্যবধান সৃষ্টি করেছেন। (আনুগত্য ও অবাধ্যতার সীমারেখা)। (বুখারী, হাদীস নং ৭২৮১)

(ঘ) আবূ মূসা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম থেকে বর্ণনা করেন। তিনি বলেন, আমার এবং যা (কুরআন) দিয়ে আমাকে আল্লাহ্ প্রেরণ করেছেন, তার উদাহরণ এরূপ যে, এক ব্যক্তি তার সম্প্রদায়ের নিকট এসে বলতে লাগলো, হে আমার সম্প্রদায়, আমি নিজ চক্ষে শত্রু বাহিনী দেখে এসেছি, অতএব তোমরা মুক্তির (নিরাপত্তার) চেষ্টা কর। অতঃপর সম্প্রদায়ের একদল

اَوَ لَمَّآ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا ۙ قُلْتُمْ اَنّٰى هٰذَا ؕ قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٦٥﴾

১৬৫. হ্যাঁ, যখন তোমাদের উপর বিপদ উপস্থিত হলো বস্তুতঃ তোমরাও তাদের প্রতি তদানুরূপ দ্বিগুণ বিপদ উপস্থিত করেছিলে, যখন তোমরা বলছিলেঃ এটা কোথা হতে এলো? তুমি বলঃ ওটা তোমাদের নিজেদেরই নিকট হতে; নিশ্চয়ই আল্লাহ সর্ব বিষয়োপরি শক্তিমান।

وَمَآ اَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٦٦﴾

১৬৬. এ দু'দলের সম্মুখীন হওয়ার দিবস তোমাদের উপর যা উপনীত হয়েছিল; তা আল্লাহরই ইচ্ছাক্রমে এবং এর দ্বারা আল্লাহ বিশ্বাসীদেরকে বাস্তবে জেনে নেন।

وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ۚ وَقِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوِ ادْفَعُوْا ؕ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّا اتَّبَعْنٰكُمْ ؕ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ مَّا لَيْسَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ﴿١٦٧﴾

১৬৭. আর এর দ্বারা তিনি কপটদেরকে জেনে নেন এবং তাদেরকে বলা হয়েছিলঃ এসো, আল্লাহর পথে সংগ্রাম কর অথবা তাদেরকে প্রতিরোধ কর; তারা বলেছিলঃ যদি আমরা যুদ্ধ করতে জানতাম, তবে কি আমরা তোমাদের অনুগমন করতাম না? তারা সেদিন বিশ্বাস অপেক্ষা অবিশ্বাসের নিকটবর্তী ছিল; তাদের অন্তরে যা নেই তাই তারা মুখে বলে থাকে এবং তারা যে বিষয় গোপন করে, আল্লাহ তা পরিজ্ঞাত আছেন।

اَلَّذِيْنَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا لَوْ اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ؕ قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ

১৬৮. যারা গৃহে বসে স্বীয় ভ্রাতৃগণের সম্বন্ধে বলেছিলঃ যদি তারা আমাদের কথা মান্য করতো

তার কথা অনুসারে শেষ রাতে নিরাপদ স্থানে রওয়ানা হয়ে গেল এবং সমুদয় বিপর্যয় থেকে মুক্তি পেয়ে গেল। আর একদল তাকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করলো, এবং নিজেদের গৃহেই ভোর পর্যন্ত অবস্থান করলো। ভোরে যখন শত্রু বাহিনী এসে পড়ল, তখন তাদেরকে সমূলে ধ্বংস করে ফেলল, এ দৃষ্টান্তই আমার এবং যে ব্যক্তি আমার আনীত দ্বীনের অনুসরণ করলো, আর যে ব্যক্তি আমাকে ও আমার আনীত দ্বীনে হক অমান্য ও মিথ্যা প্রতিপন্ন করলো। (বুখারী, হাদীস নং ৭২৮৩)

إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٦٨﴾

তবে নিহত হতো না; তুমি বলঃ যদি তোমরা সত্যবাদী হও তবে নিজেদেরকে মৃত্যু হতে রক্ষা কর।

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ﴿١٦٩﴾

১৬৯. যারা আল্লাহর পথে নিহত হয়েছে, তাদেরকে মৃত ধারণা করো না; বরং তারা জীবিত, তারা তাদের প্রতিপালক হতে জীবিকা প্রাপ্ত হয়।

فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۙ وَيَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿١٧٠﴾

১৭০. আল্লাহ তাদেরকে স্বীয় অনুগ্রহ হতে যা দান করেছেন, তাতেই তারা পরিতুষ্ট এবং যারা পশ্চাতে থেকে তাদের সাথে সম্মিলিত হয়নি, তাদের এ অবস্থার প্রতিও তারা সন্তুষ্ট হয় যে, তাদের কোন ভয় নেই এবং তারা দুঃখিত হবে না।

يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٧١﴾

১৭১. তারা আল্লাহর নিকট হতে অনুগ্রহ ও নিয়ামত লাভ করার কারণে আনন্দিত হয়, আর এ জন্যে যে, নিশ্চয়ই আল্লাহ বিশ্বাসীগণের প্রতিদান বিনষ্ট করেন না।

اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٢﴾

১৭২. যারা আঘাত পাওয়ার পরেও আল্লাহ ও রাসূলের নির্দেশের সাড়া দিয়েছিল, তাদের মধ্যে যারা সৎকার্য করেছে ও সংযত হয়েছে, তাদের জন্যে রয়েছে মহা পুরস্কার।

اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ۖ وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ﴿١٧٣﴾

১৭৩. যাদেরকে লোকেরা বলেছিলঃ নিশ্চয়ই তোমাদের বিরুদ্ধে লোকজন সমবেত হয়েছে, অতএব তোমরা তাদেরকে ভয় কর; কিন্তু এতে তাদের বিশ্বাস আরো পরিবর্ধিত হয়েছিল এবং তারা বলেছিল আল্লাহ্ই আমাদের জন্য যথেষ্ট এবং মঙ্গলময় কর্মবিধায়ক।[১]

১। (ক) আবদুল্লাহ্ ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেছেনঃ আল্লাহ্ই আমাদের জন্য যথেষ্ট। তিনিই আমাদের জন্য উত্তম জিম্মাদার (সূরা আল-ইমরানঃ ১৭৩ আয়াত) ইবরাহীমকে

فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوْٓءٌ ۙ وَّاتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ﴿١٧٤﴾

১৭৪. অনন্তর তারা আল্লাহর অনুগ্রহও সম্পদসহ প্রত্যাবর্তিত হয়েছিল, তাদেরকে কোন অমঙ্গল স্পর্শ করেনি এবং তারা আল্লাহর সন্তুষ্টির অনুসরণ করেছিল; আর আল্লাহ মহা অনুগ্রহশীল।

اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهٗ ۖ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٥﴾

১৭৫. নিশ্চয়ই এই হচ্ছে তোমাদের সেই শয়তান যে তার অনুসারীগণকে ভয় প্রদর্শন করে; কিন্তু যদি তোমরা বিশ্বাসী হও তবে তাদেরকে ভয় করো না এবং আমাকেই ভয় কর।

وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ ۚ اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۗ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِى الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٦﴾

১৭৬. আর যারা দ্রুতগতিতে কুফরির দিকে ধাবমান হচ্ছে তুমি তাদের জন্যে চিন্তিত হয়ো না, বস্তুতঃ তারা আল্লাহর কোনই অনিষ্ট করতে পারবে না; আল্লাহ তাদের জন্যে পরকালের কোন অংশ রাখতে ইচ্ছা করেন না এবং তাদেরই জন্যে কঠোর শাস্তি রয়েছে।

اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٧﴾

১৭৭. নিশ্চয়ই যারা বিশ্বাসের পরিবর্তে অবিশ্বাস ক্রয় করেছে, তারা আল্লাহর কোনই অনিষ্ট করতে পারে না এবং তাদের জন্যে রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ خَيْرٌ لِّاَنْفُسِهِمْ ۗ اِنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ

১৭৮. যারা অবিশ্বাস করেছে তারা যেন এটা ধারণা না করে যে, আমি তাদেরকে যে সুযোগ দিয়েছি, তা

(আলাইহিস্‌সালাম) যখন আগুনে নিক্ষেপ করা হয়েছিল তখন তিনি এ কথাটি বলেছিলেন। আর মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) একথাই বলেছিলেন, যখন লোকজন তাঁকে এসে খবর দিলো যে, তোমাদের বিরুদ্ধে বিরাট সেনাদল প্রস্তুত করা হয়েছে। তাদেরকে ভয় করো। এ কথা শুনে তাদের ঈমান আরো মজবূত হলো। তারা বললো, আল্লাহ্‌ই আমাদের জন্য যথেষ্ট। আর আমাদের পক্ষ থেকে কাজের জন্য তিনিই উত্তম জিম্মাদার। (বুখারীঃ হাদীস নং ৪৫৬৩)

(খ) আবদুল্লাহ্ ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেছেনঃ ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম)-কে যখন আগুনে নিক্ষেপ করা হয়েছিলো তখন তাঁর শেষ কথাটি ছিলো- "আল্লাহ্‌ই আমার জন্য যথেষ্ট। আমার জন্য তিনিই উত্তম জিম্মাদার।" (বুখারী, হাদীস নং ৪৫৬৪)

وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٧٨﴾

তাদের জীবনের জন্যে কল্যাণকর; তারা স্বীয় পাপ বর্ধিত করবে তদ্ব্যতীত আমি তাদেরকে অবসর প্রদান করিনি এবং তাদের জন্যে অপমানকর শাস্তি রয়েছে।

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۪ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٩﴾

১৭৯. আল্লাহ এরূপ নন যে, তিনি পবিত্রতা হতে অপবিত্রতা পৃথক না করা পর্যন্ত তোমরা যার উপরে আছো, সে অবস্থায় বিশ্বাসীদেরকে পরিত্যাগ করবেন এবং আল্লাহ এরূপ নন যে, তোমাদেরকে অদৃশ্য বিষয় জানাবেন এবং আল্লাহ তদীয় রাসূলগণের মধ্যে যাকে ইচ্ছা মনোনীত করে থাকেন; অতএব আল্লাহ ও তদীয় রাসূলের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন কর এবং যদি তোমরা বিশ্বাস স্থাপন কর ও সংযমী হও, তবে তোমাদের জন্যে মহান প্রতিদান রয়েছে।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١٨٠﴾

১৮০. আর আল্লাহ যাদেরকে স্বীয় প্রতিদান হতে কিছু দান করেছেন সে বিষয়ে যারা কার্পণ্য করে, তারা যেন এরূপ ধারণা না করে যে, ওটা তাদের জন্যে কল্যাণকর; বরং ওটা তাদের জন্যে ক্ষতিকর; তারা যে বিষয়ে কৃপণতা করেছে, উত্থান দিবসে ওটাই তাদের গলার বেড়ী হবে এবং আল্লাহ নভোমণ্ডলের ও ভূমণ্ডলের স্বত্বাধিকারী এবং যা তোমরা করছো আল্লাহ সে বিষয়ে পূর্ণ খবর রাখেন।[১]

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যাকে আল্লাহ্ ধন-সম্পদ দিয়েছেন; কিন্তু সে তার যাকাত আদায় করেনি। তার সেই ধন-সম্পদকে কিয়ামতের দিন একটি সাপের রূপ দেয়া হবে, যার মাথায় চুল থাকবে এবং (দুই) চোখের

لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿١٨١﴾

১৮১. অবশ্যই আল্লাহ তাদের কথা শ্রবণ করেছেন, যারা বলে থাকে যে, আল্লাহ দরিদ্র আর আমরা ধনবান; তারা যা বলেছে এবং অন্যায়ভাবে তাদের নবীদের হত্যা করেছে, এর সবই আমি লিপিবদ্ধ করবো এবং তাদেরকে বলবোঃ তোমরা প্রদাহকারী শাস্তির আস্বাদ গ্রহণ কর।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٨٢﴾

১৮২. এটা তাই, যা তোমাদের হাতসমূহ পূর্বে প্রেরণ করেছে এবং নিশ্চয়ই আল্লাহ গোলামদের (বান্দাদের) প্রতি অত্যাচারী নন।

اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ؕ قُلْ قَدْ جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٨٣﴾

১৮৩. যারা বলে থাকেঃ অবশ্য আল্লাহ আমাদের জন্যে অঙ্গীকার করেছেন যে, অগ্নি যা গ্রাস করে, আমাদের জন্যে এমন কুরবানী আনয়ন না করা পর্যন্ত আমরা যেন কোন নবীর প্রতি বিশ্বাস স্থাপন না করি; তুমি বলঃ নিশ্চয়ই আমার পূর্বে সমুজ্জ্বল নিদর্শনাবলী এবং তোমরা যা বল তৎসহ রাসূলগণ আগমন করেছিলেন; যদি তোমরা সত্যবাদী হও, তবে কেন তোমরা তাঁদেরকে হত্যা করেছিলে?

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ

১৮৪. অতঃপর যদি তারা তোমার প্রতি অসত্যারোপ করে, তবে

ওপর কাল দু'টি দাগ থাকবে। আর এটিকে তার গলায় পেঁচিয়ে দেয়া হবে সেটি তার মুখের দু'পাশে দংশন করতে থাকবে এবং বলবে-আমিই তোমার ধন-সম্পদ, আমিই তোমার গচ্ছিত অর্থ-সম্পদ। তারপর আল্লাহ্‌র রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) এ আয়াতটি পাঠ করেন। অর্থঃ "আর আল্লাহ যাদেরকে স্বীয় প্রতিদান হতে কিছু দান করেছেন সে বিষয়ে যারা কার্পণ্য করে, তারা যেন এরূপ ধারণা না করে যে, ওটা তাদের জন্যে কল্যাণকর; বরং ওটা তাদের জন্যে ক্ষতিকর; তারা যে বিষয়ে কৃপণতা করেছে, উত্থানদিবসে ওটাই তাদের কণ্ঠনিগড় (গলার বেড়ী) হবে এবং আল্লাহ নভোমণ্ডলের ও ভূমণ্ডলের স্বত্বাধিকারী, এবং যা তোমরা করছো আল্লাহ সে বিষয়ে পূর্ণ খবর রাখেন।" (সূরাঃ আল-ইমরান, আয়াতঃ ১৮০)

جَآءُوْ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿١٨٤﴾

তোমার পূর্বেও রাসূলগণকে অবিশ্বাস করা হয়েছিল, যারা প্রকাশ্য নিদর্শনাবলী ও ক্ষুদ্র পুস্তিকা এবং উজ্জ্বল গ্রন্থসহ আগমন করেছিলেন।

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿١٨٥﴾

১৮৫. সমস্ত জীবই মৃত্যুর আস্বাদ গ্রহণকারী এবং নিশ্চয়ই উত্থান দিবসে তোমাদেরকে পূর্ণ প্রতিদান দেয়া হবে; অতএব যে কেউ অগ্নি হতে বিমুক্ত হয়েছে ও জান্নাতে প্রবিষ্ট হয়েছে, ফলতঃ নিশ্চয়ই সে সফল-কাম; আর পার্থিব জীবন প্রতারণার সম্পদ ছাড়া আর কিছুই নয়।

لَتُبْلَوُنَّ فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۫ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَذًى كَثِيْرًا ؕ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿١٨٦﴾

১৮৬. অবশ্যই তোমরা তোমাদের ধন-সম্পদ ও তোমাদের জীবন-সমূহের দ্বারা পরীক্ষিত হবে এবং যাদেরকে তোমাদের পূর্বে গ্রন্থ প্রদত্ত হয়েছে ও যারা অংশী স্থাপন করেছে, তাদের নিকট হতে তোমাদেরকে বহু দুঃখজনক বাক্য শুনতে হবে; এবং যদি তোমরা ধৈর্যধারণ কর ও সংযমী হও, তবে অবশ্যই এটা সুদৃঢ় কার্যাবলীর অন্তর্গত।

وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ ۫ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ﴿١٨٧﴾

১৮৭. আর যখন আল্লাহ, যাদেরকে গ্রন্থ প্রদত্ত হয়েছে তাদের অঙ্গীকার গ্রহণ করেছিলেন যে, তোমরা নিশ্চয়ই এটা লোকদের মধ্যে ব্যক্ত করবে এবং তা গোপন করবে না; কিন্তু তারা ওটা তাদের পশ্চাতে নিক্ষেপ করলো এবং ওটা অল্প মূল্যে বিক্রি করলো, অথচ তারা যা ক্রয় করেছিলো তা নিকৃষ্টতর।

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ

১৮৮. যারা স্বীয় কৃতকর্মে সন্তুষ্ট এবং যা করেনি তজ্জন্যে প্রশংসা প্রার্থী,

اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٨٨﴾

এরূপ লোকদের সম্বন্ধে ধারণা করো না যে, তারা শাস্তি হতে বিমুক্ত বরং তাদের জন্যে রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٨٩﴾

১৮৯. আল্লাহরই জন্যে নভোমণ্ডলের ও ভূমণ্ডলের আধিপত্য এবং আল্লাহ সর্ব বিষয়োপরি শক্তিমান।

اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿١٩٠﴾

১৯০. নিশ্চয়ই নভোমণ্ডল ও ভূমণ্ডল সৃজনে এবং দিবস ও রাত্রির পরিবর্তনে জ্ঞানবানদের জন্যে স্পষ্ট নিদর্শনাবলী রয়েছে।

الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٩١﴾

১৯১. যারা দণ্ডায়মান, উপবেশন ও শায়িত (এলায়িতভাবে) অবস্থায় আল্লাহকে স্মরণ করে এবং নভোমণ্ডল ও ভূমণ্ডলের সৃষ্টি বিষয়ে চিন্তা করে যে, হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি এটা বৃথা সৃষ্টি করেননি আপনিই পবিত্রতম অতএব আমাদেরকে জাহান্নাম হতে রক্ষা করুন!

رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿١٩٢﴾

১৯২. হে আমাদের প্রতিপালক! অবশ্য আপনি যাকে জাহান্নামে প্রবিষ্ট করেন, ফলতঃ নিশ্চয়ই তাকে লাঞ্ছিত করলেন এবং অত্যাচারীদের জন্যে কেউই সাহায্যকারী নেই।

رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ﴿١٩٣﴾

১৯৩. হে আমাদের প্রভু! নিশ্চয়ই আমরা এক আহ্বানকারীকে আহ্বান করতে শুনেছিলাম যে, তোমরা স্বীয় প্রতিপালকের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন কর, তাতেই আমরা বিশ্বাস স্থাপন করছি; হে আমাদের প্রভু! অতএব আমাদের অপরাধসমূহ ক্ষমা করুন ও

আমাদের অমঙ্গলসমূহ আবৃত করুন এবং পূণ্যবানদের সাথে আমাদেরকে মৃত্যু দান করুন।

رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿١٩٤﴾

১৯৪. হে আমাদের প্রভু! আপনি স্বীয় রাসূলগণ মাধ্যমে আমাদের সাথে যে অঙ্গীকার করেছিলেন তা দান করুন এবং উত্থান দিবসে আমাদেরকে লাঞ্ছিত করবেন না; নিশ্চয়ই আপনি অঙ্গীকারের ব্যতিক্রম করেন না।

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّىْ لَاۤ اُضِيْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۚ فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَ اُوْذُوْا فِىْ سَبِيْلِىْ وَ قٰتَلُوْا وَ قُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾

১৯৫. অনন্তর তাদের প্রতিপালক তাদের আহ্বানে সাড়া দিলেন যে, আমি তোমাদের পুরুষ অথবা নারীর মধ্য হতে কোন কর্মীর কৃতকার্য ব্যর্থ করবো না, তোমরা পরস্পর এক, অতএব যারা দেশ ত্যাগ করেছে ও স্বীয় গৃহসমূহ হতে বিতাড়িত হয়েছে ও আমার পথে নির্যাতিত হয়েছে এবং সংগ্রাম করেছে ও নিহত হয়েছে, নিশ্চয়ই তাদের জন্যে আমি তাদের অমঙ্গলসমূহ আবৃত করবো এবং নিশ্চয়ই আমি তাদেরকে জান্নাতে প্রবেশ করাবো— যার নিম্নে স্রোতস্বিনীসমূহ প্রবাহিত; এটা আল্লাহর নিকট হতে প্রতিদান এবং আল্লাহর নিকটই উত্তম প্রতিদান রয়েছে।

لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِى الْبِلَادِ ﴿١٩٦﴾

১৯৬. যারা অবিশ্বাসী হয়েছে তাদের নগরসমূহে চাল-চলন যেন তোমাদেরকে প্রতারিত না করে।

مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۫ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾

১৯৭. এটা মাত্র কয়েকদিনের সম্ভোগ; অনন্তর তাদের অবস্থান জাহান্নাম এবং ওটা নিকৃষ্ট স্থান।

لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ﴿١٩٨﴾

১৯৮. কিন্তু যারা স্বীয় প্রতিপালককে ভয় করে, তাদের জন্যে জান্নাত– যার নিম্নে স্রোতস্বিনীসমূহ প্রবাহিত, তন্মধ্যে তারা সদা অবস্থান করবে, এটা আল্লাহর সন্নিধান হতে আতিথ্য; এবং যেসব বস্তু আল্লাহর নিকট রয়েছে তা পুণ্যবানদের জন্যে বহুগুণে উত্তম।

وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ ۙ لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٩٩﴾

১৯৯. এবং নিশ্চয়ই আহলে কিতাবের মধ্যে এরূপ লোকও রয়েছে যারা আল্লাহর প্রতি এবং তোমাদের প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে, সে বিষয়ে আল্লাহর ভয়ে বিশ্বাস স্থাপন করে; যারা অল্প মূল্যে আল্লাহর নিদর্শনাবলী বিক্রি করে না, তাদেরই জন্যে তাদের প্রতিপালকের নিকট প্রতিদান রয়েছে; নিশ্চয়ই আল্লাহ সত্বর হিসাব গ্রহণকারী।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا ۟ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٢٠٠﴾

২০০. হে বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ! তোমরা ধৈর্য অবলম্বন কর এবং সহিষ্ণু ও সুপ্রতিষ্ঠিত হও এবং আল্লাহকে ভয় কর– যেন তোমরা সুফলপ্রাপ্ত হও।

سُوْرَةُ النِّسَآءِ مَدَنِيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ١٧٦ رُكُوْعَاتُهَا ٢٤

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

সূরাঃ আন-নিসা, মাদানী

(আয়াতঃ ১৭৬ রুকূঃ ২৪)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْ تَسَآءَلُوْنَ

১. হে মানবমণ্ডলী! তোমরা তোমাদের রবকে ভয় কর যিনি তোমাদেরকে একই ব্যক্তি হতে সৃষ্টি করেছেন ও তা হতে তদীয় সহধর্মিণী সৃষ্টি করেছেন এবং তাদের উভয়

بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ①

হতে বহু নর ও নারী ছড়িয়ে দিয়েছেন এবং সে আল্লাহকে ভয় কর যাঁর নামের দোহাই দিয়ে তোমরা একে অপরকে তাগাদা কর এবং আত্মীয়তাকেও ভয় কর, নিশ্চয়ই আল্লাহই তোমাদের তত্ত্বাবধানকারী।

وَ اٰتُوا الْيَتٰمٰۤى اَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ ۪ وَلَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَهُمْ اِلٰۤى اَمْوَالِكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ②

২. আর ইয়াতীমদেরকে তাদের ধন-সম্পত্তি প্রদান কর এবং পবিত্রতার সাথে অপবিত্রতার বিনিময় করো না ও তোমাদের ধন-সম্পত্তির সাথে তাদের ধন-সম্পত্তি ভোগ করো না; নিশ্চয়ই এটা গুরুতর অপরাধ।

وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا فِى الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَلَّا تَعُوْلُوْا ③

৩. আর যদি তোমরা আশঙ্কা কর যে ইয়াতীমদের (মেয়েদের) প্রতি সুবিচার করতে পারবে না, তবে নারীগণের মধ্য হতে তোমাদের মনমত দু'টি ও তিনটি ও চারটিকে বিয়ে কর; কিন্তু যদি তোমরা আশঙ্কা কর যে, ন্যায়বিচার করতে পারবে না তবে মাত্র একটি অথবা তোমাদের দক্ষিণ হাত যার অধিকারী (ক্রীতদাসী) এটা অবিচার না করার নিকটবর্তী।

وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ؕ فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْٓـًٔا مَّرِيْٓـًٔا ④

৪. আর নারীগণকে তাদের দেন-মোহর প্রদান কর কিন্তু যদি তারা সন্তুষ্ট চিত্তে পরে কিয়দাংশ তোমাদেরকে প্রদান করে তবে বিবেচনা মত তৃপ্তির সাথে ভোগ কর।

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِىْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِيٰمًا وَّارْزُقُوْهُمْ فِيْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَقُوْلُوْا لَهُمْ

৫. আল্লাহ তোমাদের জন্যে যে ধন-সম্পত্তি নির্ধারিত করেছেন, তা অবোধদেরকে প্রদান করো না এবং তা হতে তাদেরকে ভক্ষণ করাতে

قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝٥

থাক, পরিধান করাতে থাক এবং তাদের সাথে সদ্ভাবে কথা বল।[১]

وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰٓى اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَاِنْ اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْٓا اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا تَاْكُلُوْهَآ اِسْرَافًا وَّبِدَارًا اَنْ يَّكْبَرُوْا ؕ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَاْكُلْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ۝٦

৬. আর ইয়াতীমগণ বিবাহযোগ্য না হওয়া পর্যন্ত তাদেরকে পরীক্ষা করে নাও; অতঃপর যদি তাদের মধ্যে বিবেক-বুদ্ধি পরিদৃষ্ট হওয়া লক্ষ্য কর, তবে তাদের ধন-সম্পত্তি তাদেরকে সমর্পণ কর এবং তারা বয়োঃপ্রাপ্ত হবে বলে তা' অপব্যয় ও সত্বরতা (তাড়াহুড়া) সহকারে আত্মসাৎ করো না এবং যে ব্যক্তি অভাব মুক্ত হবে সে নিজেকে সম্পূর্ণ বিরত রাখবে, আর যে ব্যক্তি অভাবগ্রস্ত হবে সে সঙ্গত পরিমাণ ভোগ করবে, অনন্তর যখন তাদের সম্পত্তি তাদেরকে সমর্পণ করতে চাও তখন তাদের জন্যে সাক্ষী রেখো এবং আল্লাহই হিসেব গ্রহণে যথেষ্ট।

لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۖ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ اَوْ كَثُرَ ؕ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ۝٧

৭. পুরুষদের জন্যে পিতা-মাতা ও আত্মীয়-স্বজনের পরিত্যক্ত বিষয়-সম্পত্তিতে অংশ রয়েছে এবং নারীদের জন্যেও পিতা-মাতা ও আত্মীয়-স্বজনের পরিত্যক্ত বিষয়-সম্পত্তিতে অংশ রয়েছে– অল্প বা অধিক এক নির্দিষ্ট পরিমাণ।

وَاِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ اُولُوا الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنُ فَارْزُقُوْهُمْ مِّنْهُ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝٨

৮. আর যখন তা বন্টনের সময়ে স্বজনগণ, পিতৃহীনগণ এবং দরিদ্রগণ উপস্থিত হয়, তখন তা হতে

১। মুগীরা ইবনে শো'বা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আল্লাহ্ তা'আলা তোমাদের ওপর (বাপ) মায়ের অবাধ্যতা, কন্যাদেরকে জীবন্ত কবর দেয়া, কারো প্রাপ্য না দেয়া হারাম করেছেন। আর অর্থহীন কথা বলা, খুব বেশি যাঞ্চা (ভিক্ষা) করা এবং সম্পদ অপচয় করা তিনি তোমাদের জন্য অপছন্দ করেন। (বুখারী, হাদীস নং ২৪০৮)

তাদেরকেও জীবিকা দান কর এবং তাদের সাথে সদ্ভাবে কথা বল।

وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ لَوْ تَرَكُوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا خَافُوْا عَلَيْهِمْ ۖ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝٩

৯. আর যারা নিজেদের পশ্চাতে নিজেদের অসমর্থ সন্তানদেরকে ছেড়ে যাবে যাদের ব্যাপারে তাদের ভীতি থাকবে তজ্জন্যে তাদের শঙ্কিত হওয়া উচিত; সুতরাং তাদের আল্লাহকে ভয় করা ও সদ্ভাবে কথা বলা আবশ্যক।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ۗ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا ۝١٠

১০. যারা অন্যায়ভাবে ইয়াতীমদের ধন-সম্পত্তি গ্রাস করে, নিশ্চয়ই তারা স্বীয় উদরে অগ্নি ব্যতীত কিছুই ভক্ষণ করে না এবং সত্বরই তারা অগ্নি শিখায় উপনীত হবে।

يُوْصِيْكُمُ اللّٰهُ فِيْٓ اَوْلَادِكُمْ ۖ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ۚ فَاِنْ كُنَّ نِسَآءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۚ وَاِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۗ وَلِاَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ اِنْ كَانَ لَهٗ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلَدٌ وَّوَرِثَهٗٓ اَبَوٰهُ فَلِاُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَاِنْ كَانَ لَهٗٓ اِخْوَةٌ فَلِاُمِّهِ السُّدُسُ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۗ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ لَا تَدْرُوْنَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا ۗ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝١١

১১. আল্লাহ তা'আলা তোমাদের সন্তানদের সম্বন্ধে তোমাদেরকে নির্দেশ দিচ্ছেন যে, এক পুত্রের জন্যে দু'কন্যার অংশের তুল্য; আর যদি শুধু কন্যাগণ দু'জনের অধিক হয় তবে তারা মৃত ব্যক্তির পরিত্যক্ত সম্পত্তি হতে দুই তৃতীয়াংশ প্রাপ্ত হবে। আর যদি একটি মাত্র কন্যা হয় তবে সে অর্ধেকাংশ প্রাপ্ত হবে এবং যদি মৃত ব্যক্তির কোন সন্তান থাকে, তবে তার পিতা-মাতার জন্যে অর্থাৎ উভয়ের প্রত্যেকেরই জন্যে তার পরিত্যক্ত সম্পত্তি হতে এক ষষ্ঠাংশ রয়েছে আর যদি তার কোন সন্তান না থাকে এবং শুধু পিতা-মাতাই তার উত্তরাধিকারী হয়, তবে তার মাতার জন্যে হবে এক তৃতীয়াংশ এবং যদি তার ভ্রাতা থাকে, তবে সে যা নির্দেশ করে গেছে, সেই নির্দেশ ও ঋণ অন্তে তার জননীর জন্যে এক ষষ্ঠাংশ, তোমাদের পিতা ও

তোমাদের পুত্রের মধ্যে কে তোমাদের অধিকতর উপকারী তা তোমরা অবগত নও, এটাই আল্লাহর নির্দেশ; নিশ্চয়ই আল্লাহ মহাজ্ঞানী, প্রজ্ঞাময়।

وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ إِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ
وَلَدٌ ۚ فَإِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا
تَرَكْنَ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْنَ بِهَآ أَوْ دَيْنٍ ۗ
وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ إِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ
فَإِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْ
بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوْصُوْنَ بِهَآ أَوْ دَيْنٍ ۗ وَإِنْ كَانَ رَجُلٌ
يُّوْرَثُ كَلٰلَةً أَوِ امْرَأَةٌ وَّلَهٗٓ أَخٌ أَوْ أُخْتٌ فَلِكُلِّ
وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۚ فَإِنْ كَانُوْٓا أَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ
فَهُمْ شُرَكَآءُ فِي الثُّلُثِ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى
بِهَآ أَوْ دَيْنٍ ۙ غَيْرَ مُضَآرٍّ ۚ وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ ۗ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿١٢﴾

১২. আর তোমাদের পত্নীগণের যদি সন্তান-সন্ততি না থাকে, তবে তারা যা পরিত্যক্ত করে যায় তোমাদের জন্য তার অর্ধাংশ; কিন্তু যদি তাদের সন্তান-সন্ততি থাকে, তবে তারা যা অসিয়ত করেছে সেই অসিয়ত ও ঋণ অন্তে তাদের পরিত্যক্ত সম্পত্তি হতে তোমাদের জন্য এক চতুর্থাংশ এবং যদি তোমাদের কোন সন্তান-সন্ততি না থাকে তবে তোমরা যা পরিত্যাগ করে যাবে, তাদের জন্য তার এক চতুর্থাংশ; কিন্তু যদি তোমাদের সন্তান-সন্ততি থাকে তবে তোমরা যা অসিয়ত করবে সেই অসিয়ত ও ঋণ অন্তে তোমাদের পরিত্যক্ত সম্পত্তি হতে তাদের জন্যে এক অষ্টমাংশ; যদি কোন মূল ও শাখা বিহীন পুরুষ বা স্ত্রী মারা যায় এবং তার এক ভ্রাতা অথবা এক ভগ্নী থাকে, তবে এতদুভয়ের মধ্য হতে প্রত্যেকেই এক ষষ্ঠাংশ পাবে, আর যদি তারা তদপেক্ষা অধিক হয় তবে কৃত অসিয়ত পূরণ করার পর অথবা ঋণের পর কারও অনিষ্ট না করে তারা তার এক তৃতীয়াংশ প্রাপ্ত হবে; এটাই আল্লাহর নির্দেশ এবং আল্লাহ মহাজ্ঞানী, সহিষ্ণু।

تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ

১৩. এগুলো আল্লাহর নির্দিষ্ট সীমাসমূহ এবং যে কেউ আল্লাহ ও তদীয় রাসূলের আনুগত্য করবে তিনি

وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١٣﴾

তাকে এরূপ জান্নাতে প্রবিষ্ট করাবেন, যার নিম্নে স্রোতস্বিনীসমূহ প্রবাহিত, তন্মধ্যে তারা সদা অবস্থান করবে এবং এটাই মহা সাফল্য।

وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا ۪ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٤﴾

১৪. আর যে কেউ আল্লাহ ও তদীয় রাসূলকে অমান্য করে এবং তাঁর নির্দিষ্ট সীমাসমূহ অতিক্রম করে, তিনি তাকে আগুনে নিক্ষেপ করবেন, যেখানে সে সদা অবস্থান করবে এবং তার জন্যে লাঞ্ছনাপ্রদ শাস্তি রয়েছে।

وَالّٰتِيْ يَاْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَآئِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَيْهِنَّ اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ فِي الْبُيُوْتِ حَتّٰى يَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِيْلًا ﴿١٥﴾

১৫. আর তোমাদের নারীদের মধ্যে যারা নির্লজ্জতার (ব্যভিচার) কাজ করে, তোমরা তাদের বিরুদ্ধে তোমাদের মধ্য হতে চারজন সাক্ষী উপস্থিত কর, অনন্তর যদি তারা সাক্ষ্য প্রদান করে তবে তাদেরকে তোমরা গৃহসমূহের মধ্যে আবদ্ধ করে রাখ, যে পর্যন্ত মৃত্যু তাদেরকে উঠিয়ে না নেয়; কিংবা আল্লাহ তাদের জন্যে কোন পথ নির্দেশ না করেন।

وَالَّذٰنِ يَاْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ۚ فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿١٦﴾

১৬. আর তোমাদের মধ্য হতে যে কোন দু'ব্যক্তি এ নির্লজ্জতার কাজ করবে, তাদের উভয়কেই শাস্তি প্রদান কর; কিন্তু তারা যদি ক্ষমা প্রার্থনা করে এবং সদাচারী হয়, তবে তদদুভয় হতে প্রত্যাবর্তিত হও, নিশ্চয়ই আল্লাহ তা'আলা তাওবা গ্রহণকারী, করুণাময়।

اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ فَاُولٰٓئِكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٧﴾

১৭. তাওবা কবূল করার দায়িত্ব যে আল্লাহর উপর রয়েছে তা তো শুধু তাদেরই জন্যে যারা অজ্ঞতাবশতঃ পাপ করে থাকে, তৎপর অবিলম্বে ক্ষমা প্রার্থনা করে। সুতরাং আল্লাহ তাদেরকেই ক্ষমা করবেন; আল্লাহ মহাজ্ঞানী, প্রজ্ঞাময়।

وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰٓى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ اِنِّيْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٨﴾

১৮. আর তাদের জন্যে ক্ষমা নেই যারা ঐ পর্যন্ত পাপ করতে থাকে, যখন তাদের কারও নিকট মৃত্যু উপস্থিত হয়, তখন বলেঃ নিশ্চয়ই আমি এখন ক্ষমা প্রার্থনা (তাওবা) করছি এবং তাদের জন্যেও নয় যারা অবিশ্বাসী অবস্থায় মৃত্যুমুখে পতিত হয়; তাদেরই জন্যে আমি বেদনাদায়ক শাস্তি প্রস্তুত করে রেখেছি।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرْهًا ؕ وَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ لِتَذْهَبُوْا بِبَعْضِ مَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ فَاِنْ كَرِهْتُمُوْهُنَّ فَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّيَجْعَلَ اللّٰهُ فِيْهِ خَيْرًا كَثِيْرًا ﴿١٩﴾

১৯. হে মু'মিনগণ! এটা তোমাদের জন্যে বৈধ নয় যে, তোমরা বলপূর্বক নারীদের উত্তরাধিকারী হও এবং প্রকাশ্য অশ্লীলতা ব্যতীত তোমরা তাদেরকে যা প্রদান করেছ, তার কিয়দাংশ গ্রহণের জন্যে তাদেরকে প্রতিরোধ করো না এবং তাদের সাথে সদ্ভাবে অবস্থান কর; কিন্তু যদি পাপ অনুভব কর তবে তোমরা যে বিষয়ে দোষিত মনে কর আল্লাহ সেটাকে প্রচুর কল্যাণকর করতে পারেন।

وَاِنْ اَرَدْتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ ۙ وَّاٰتَيْتُمْ اِحْدٰىهُنَّ قِنْطَارًا فَلَا تَاْخُذُوْا مِنْهُ شَيْـًٔا ؕ اَتَاْخُذُوْنَهٗ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٢٠﴾

২০. আর যদি তোমরা এক স্ত্রীর স্থলে অন্য স্ত্রী পরিবর্তন করতে ইচ্ছা কর এবং তাদের একজনকে রাশি রাশি ধন-সম্পদ প্রদান করে থাক, তবে তোমরা তন্মধ্য হতে কিছুই প্রতিগ্রহণ করো না; তবে কি তোমরা অপবাদ প্রয়োগ এবং প্রকাশ্য পাপ করে সেটা গ্রহণ করবে?

وَكَيْفَ تَاْخُذُوْنَهٗ وَقَدْ اَفْضٰى بَعْضُكُمْ اِلٰى بَعْضٍ وَّاَخَذْنَ مِنْكُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿٢١﴾

২১. এবং কিরূপে তোমরা তা গ্রহণ করবে? বস্তুতঃ তোমরা পরস্পর একে অন্যের সাথে মিলিত হয়েছো এবং তারা তোমাদের নিকট সুদৃঢ় অঙ্গীকার গ্রহণ করেছে।

وَلَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّمَقْتًا ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿٢٢﴾

২২. আর যা বিগত হয়েছে তদ্ব্যতীত তোমাদের পিতৃগণ নারীকুলের মধ্যে যাদেরকে বিয়ে করেছে তোমরা তাদেরকে বিয়ে করো না; নিশ্চয়ই এটা অশ্লীল ও পাপের কাজ এবং নিকৃষ্টতর পন্থা।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ وَعَمّٰتُكُمْ وَخٰلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ الْاَخِ وَبَنٰتُ الْاُخْتِ وَاُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيْٓ اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ وَاُمَّهٰتُ نِسَآئِكُمْ وَرَبَآئِبُكُمُ الّٰتِيْ فِيْ حُجُوْرِكُمْ مِّنْ نِّسَآئِكُمُ الّٰتِيْ دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ز فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ز وَحَلَآئِلُ اَبْنَآئِكُمُ الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ لا وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٢٣﴾ لا

২৩. তোমাদের জন্যে অবৈধ করা হয়েছে তোমাদের মাতৃগণ, তোমাদের কন্যাগণ, তোমাদের ভগ্নিগণ, তোমাদের ফুফুগণ, তোমাদের খালাগণ, তোমাদের ভ্রাতৃ কন্যাগণ, তোমাদের ভগ্নি কন্যাগণ, তোমাদের সেই মাতৃগণ, যারা তোমাদেরকে স্তন্য দান করেছেন, তোমাদের দুগ্ধ-ভগ্নিগণ, তোমাদের স্ত্রীদের মাতৃগণ তোমরা যাদের সাথে সহবাস করেছো, সেই স্ত্রীদের (পূর্ব স্বামীর) যে সকল কন্যা তোমাদের ক্রোড়ে অবস্থিতা; কিন্তু যদি তোমরা তাদের সাথে সহবাস না করে থাক তবে তোমাদের জন্যে কোন অপরাধ নেই এবং যারা তোমাদের ঔরসজাত, সে পুত্রদের পত্নীগণ এবং যা অতীত হয়ে গেছে তদ্ব্যতীত দু'ভগ্নিকে একত্রিত করা। নিশ্চয়ই আল্লাহ ক্ষমাশীল! করুণাময়।

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ؕ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ فَرِيْضَةً ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٢٤﴾

২৪. এবং নারীদের মধ্যে সধবাগণ; (অন্যের বিবাহিতা স্ত্রীগণও) কিন্তু তোমাদের দক্ষিণ হাত যাদের অধিকারী– আল্লাহ তোমাদের জন্য তাদেরকে বিধিবদ্ধ করেছেন, এতদ্ব্যতীত তোমাদের জন্যে বৈধ করা হয়েছে যে, তোমরা স্বীয় ধন-সম্পদের দ্বারা ব্যভিচারের উদ্দেশ্য ব্যতীত বিবাহবদ্ধ করার জন্যে তাদের অনুসন্ধান কর, অনন্তর তাদের দ্বারা যে ফলভোগ করেছ, তজ্জন্যে তাদেরকে তাদের নির্ধারিত পাওনা প্রদান কর এবং কোন অপরাধ হবে না– যদি নির্ধারণের পর তোমরা পরস্পর সম্মত হও, নিশ্চয়ই আল্লাহ মহাজ্ঞানী, প্রজ্ঞাময়।

وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ؕ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَآ اُحْصِنَّ فَاِنْ اَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ الْعَذَابِ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ؕ وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٥﴾

২৫. আর তোমাদের মধ্যে যে ব্যক্তি মু'মিনা ও স্বাধীনা রমণীকে বিয়ে করার শক্তি-সামর্থ না রাখে, তবে তোমাদের দক্ষিণ হাত যার অধিকারী –সেই ঈমানদার দাসী। আল্লাহ তোমাদের ঈমান বিষয়ে পরিজ্ঞাত আছেন, তোমরা একে অপর হতে সমুদ্ভূত, অতএব তাদের মনিবদের অনুমতিক্রমে ব্যভিচারিণী ও গুপ্ত প্রেমিকা ব্যতীত সতী-সাধ্বীদেরকে বিয়ে কর এবং তাদেরকে নিয়ম অনুযায়ী মোহর প্রদান করবে। অতএব যখন তারা বিবাহবদ্ধ হয়, তৎপর যদি তারা ব্যভিচার করে, তবে তাদের প্রতি স্বাধীনা নারীদের শাস্তির অর্ধেক, এটা তাদেরই জন্যে তোমাদের মধ্যে যারা দুষ্কার্যকে ভয় করে এবং যদি তোমরা বিরত থাক,

তবে এটা তোমাদের জন্য কল্যাণকর এবং আল্লাহ ক্ষমাশীল, করুণাময়।

يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٦﴾

২৬. আল্লাহ তোমাদের জন্যে বর্ণনা করতে এবং তোমাদেরকে তোমাদের পূর্ববর্তীগণের আদর্শসমূহ প্রদর্শন করতে ও তোমাদেরকে ক্ষমা করতে ইচ্ছা করেন এবং আল্লাহ মহাজ্ঞানী, প্রজ্ঞাময়।

وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۗ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ﴿٢٧﴾

২৭. আর আল্লাহ তোমাদের তওবা গ্রহণ করতে ইচ্ছা করেন এবং যারা প্রবৃত্তির পূজারী তারা ইচ্ছা করে যে, তোমরা মারাত্মকভাবে বিচ্যুত হয়ে পড়।

يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ﴿٢٨﴾

২৮. আল্লাহ তোমাদের বোঝা হালকা করতে চান– যেহেতু মানুষ দুর্বল (রূপে) সৃষ্ট হয়েছে।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۗ وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿٢٩﴾

২৯. হে মু'মিনগণ! তোমরা পরস্পর সম্মতিক্রমে ব্যবসা ব্যতীত অন্যায়-ভাবে পরস্পরের ধন-সম্পত্তি গ্রাস করো না এবং তোমরা নিজেদেরকে হত্যা করো না; নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাদের প্রতি ক্ষমাশীল।

১। (ক) সাবিত বিন জাহ্হাক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি ইসলাম ছাড়া ইচ্ছাকৃতভাবে অন্য কোন ধর্মের অনুসারী বলে মিথ্যা শপথ করে তাকে উক্ত ধর্মের লোক বলেই গণ্য করা হবে। এবং যে ব্যক্তি লোহার অস্ত্র দ্বারা আত্মহত্যা করবে তাকে এর মাধ্যমে জাহান্নামে শাস্তি দেয়া হবে। (বুখারী, হাদীস নং ১৩৬৩)

(খ) হাসান থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ আমাদেরকে জুন্দুব (রাযিআল্লাহু আনহু) এই মসজিদে হাদীস বর্ণনা করেছেন। আর আমরা তা আজও ভুলিনি এবং আমরা এ ভয় করিনা যে, জুন্দুব (রাযিআল্লাহু আনহু) রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর উপর মিথ্যা বলতে পারেন। নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ এক ব্যক্তি আহত হয়েছিল (তার যন্ত্রনা সহ্য করতে না পেরে) সে আত্মাহত্যা করলে আল্লাহ্ তা'আলা বললেনঃ আমার বান্দা স্বীয় জান কবজের ব্যাপারে আমার চাইতে অগ্রগামী হয়েছে। অতএব আমি তার উপর জান্নাত হারাম করে দিলাম। (বুখারী, হাদীস নং ১৩৬৪)

(গ) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি গলায় ফাঁসি লাগিয়ে আত্মহত্যা করবে, জাহান্নামে সে নিজেই নিজেকে অনুরূপভাবে শাস্তি দিবে। এবং যে ব্যক্তি বর্শা দ্বারা আত্মহত্যা করবে জাহান্নামে সে নিজেই নিজেকে বর্শা বিঁধিয়ে শাস্তি দিবে। (বুখারীঃ ১৩৬৫)

وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿٣٠﴾

৩০. আর সীমা অতিক্রম করে ও অত্যাচার করে যে এ কাজ করে, ফলতঃ নিশ্চয়ই আমি তাকে জাহান্নামে নিক্ষেপ করবো এবং এটা আল্লাহর পক্ষে সহজসাধ্য।

اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَاۗىِٕرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾

৩১. তোমরা যদি সেই মহা পাপসমূহ[১] হতে বিরত হও যা হতে তোমাদেরকে নিষেধ করা হয়েছে, তাহলেই আমি তোমাদের অপরাধ ক্ষমা করবো এবং তোমাদেরকে সম্মান-প্রদ গন্তব্যস্থানে প্রবিষ্ট করবো।

وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰي بَعْضٍ ۭ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوْا ۭ وَلِلنِّسَاۗءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ۭ وَسْـَٔـلُوا اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٣٢﴾

৩২. এবং তোমরা ওসবের আকাঙ্ক্ষা করো না যার দ্বারা আল্লাহ তোমাদের কাউকে অন্যের উপর প্রাধান্য দান করেছেন। পুরুষেরা যা উপার্জন করেছে তাতে তাদের অংশ রয়েছে এবং নারীগণ যা উপার্জন করেছে তাতে তাদের অংশ আছে এবং তোমরা আল্লাহরই নিকট তাঁর অনুগ্রহ প্রার্থনা কর, নিশ্চয়ই আল্লাহ সর্ব বিষয়ে মহাজ্ঞানী।

وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۭ وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ اَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ﴿٣٣﴾

৩৩. আর আমি সবার জন্য উত্তরাধিকারী করেছি যা কিছু তাদের পিতা-মাতা ও আত্মীয়-স্বজন পরিত্যাগ করে যায় এবং তোমাদের দক্ষিণ হাত যাদের সাথে প্রতিজ্ঞাবদ্ধ; অতএব তোমরা তাদেরকে তাদের অংশ প্রদান কর; নিশ্চয়ই আল্লাহ সব বিষয়ে সাক্ষী।

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ ঈমান ধ্বংসকারী সাতটি বিষয় হ'তে বেচে থাক। সাহাবাগণ বললেনঃ হে আল্লাহ্‌র রাসূল! সেই বিষয়গুলি কি? তিনি বললেনঃ (১) আল্লাহ্‌র সাথে শিরক করা, (২) যাদু করা, (৩) আল্লাহ্‌র যথার্থ কারণ ব্যতীত যাকে হত্যা করা নিষিদ্ধ করেছেন তাকে হত্যা করা, (৪) সুদ খাওয়া, (৫) (অন্যায়ভাবে) ইয়াতীমের সম্পদ খাওয়া, (৬) যুদ্ধ চলাকালে জেহাদের ময়দান হতে পলায়ন করা, (৭) সত্য-সাধবী মুসলিম রমনীর ওপর ব্যভিচারের মিথ্যারোপ করা, যে কখনও তা কল্পনাও করেনা। (বুখারী, হাদীস নং ২৭৬৬)

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَّبِمَآ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ؕ فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ؕ وَالّٰتِيْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ وَاهْجُرُوْهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا ﴿٣٤﴾

৩৪. পুরুষগণ নারীদের উপর কর্তৃত্বশীল, যেহেতু আল্লাহ তাদের মধ্যে একের উপর অপরকে প্রাধান্য দান করেছেন এবং এ হেতু যে, তারা স্বীয় ধন-সম্পদ হতে ব্যয় করে থাকে; সুতরাং যে সমস্ত নারী পুণ্যবতী তারা আনুগত্য করে, আল্লাহর সংরক্ষিত প্রচ্ছন্ন বিষয় সংরক্ষণ করে এবং যদি নারীগণের অবাধ্যতার আশঙ্কা হয়, তবে তাদেরকে সদুপদেশ প্রদান কর এবং তাদেরকে শয্যা হতে পৃথক কর ও তাদেরকে প্রহার কর, অনন্তর যদি তারা তোমাদের অনুগত হয়, তবে তাদের জন্যে অন্য পন্থা অবলম্বন করো না; নিশ্চয়ই আল্লাহ সমুন্নত, মহীয়ান।

وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ وَحَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا ﴿٣٥﴾

৩৫. আর যদি তোমরা উভয়ের মধ্যে বিচ্ছেদের আশঙ্কা কর, তবে উভয়ের পরিবার হতে একজন করে বিচারক পাঠাও; যদি তারা দু'জনই মীমাংসা আকাঙ্ক্ষা করে তবে আল্লাহ তাদের উভয়ের মধ্যে সম্প্রীতি সঞ্চার করবেন; নিশ্চয়ই আল্লাহ মহাজ্ঞানী, অভিজ্ঞ।

وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا ۙ ﴿٣٦﴾

৩৬. এবং তোমরা আল্লাহরই ইবাদত কর এবং তাঁর সাথে কোন বিষয়ে অংশী স্থাপন করো না এবং পিতা-মাতার সাথে সদ্ব্যবহার কর এবং আত্মীয়-স্বজনগণ, ইয়াতীমগণ, দরিদ্রগণ, সম্পর্কীয় প্রতিবেশী ও সম্পর্ক বিহীন প্রতিবেশী, পার্শ্ববর্তী সহচর ও পথিক এবং তোমাদের দক্ষিণ হাত যাদের অধিকারী তাদের সাথেও সদ্ব্যবহার কর; নিশ্চয়ই

আল্লাহ অহংকারী আত্মাভিমানীকে ভালবাসেন না।

৩৭. যারা কৃপণতা করে ও লোকদেরকে কার্পণ্য করার আদেশ করে আর আল্লাহ স্বীয় সম্পদ হতে যা দান করেছেন তা গোপন করে এবং আমি অবিশ্বাসীদের জন্যে অপমানজনক শাস্তি প্রস্তুত করে রেখেছি।[১]

اَلَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَ يَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ۚ﴿۳۷﴾

৩৮. এবং যারা লোকদেরকে দেখাবার জন্যে স্বীয় ধন-সম্পদ ব্যয় করে এবং আল্লাহর প্রতি ও পরকালের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করে না, আর যাদের সহচর শয়তান, সে নিকৃষ্ট সঙ্গীই বটে।

وَ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ لَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَ مَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿۳۸﴾

৩৯. আর এতে তাদের কী হতো, যদি তারা আল্লাহ ও পরকালের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করতো এবং আল্লাহ তাদেরকে যা প্রদান করেছেন তা হতে ব্যয় করতো? এবং আল্লাহ তাদের বিষয়ে মহাজ্ঞানী।

وَ مَا ذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ اَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا ﴿۳۹﴾

৪০. নিশ্চয়ই আল্লাহ বিন্দুমাত্র অত্যাচার করেন না এবং যদি কোন সৎকার্য থাকে তবে তিনি ওটা দ্বিগুণিত করেন এবং আল্লাহ তাঁর নিকট হতে মহান প্রতিদান প্রদান করেন।[২]

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ وَ اِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَ يُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۴۰﴾

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত, তিনি বলেন, নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ প্রতিদিন প্রত্যুষে যখন বান্দারা ঘুম থেকে ওঠে তখন দু'জন ফেরেশ্‌তা আসমান থেকে নেমে আসে। তাদের একজন এই দু'আ করতে থাকে হে আল্লাহ্! দানশীলকে পুরস্কৃত কর এবং অপরজন এই বলে দু'আ করতে থাকে হে আল্লাহ্ বখিল ও কৃপণকে ধ্বংস কর। (বুখারী, হাদীস নং ১৪৪২)

২। আবূ সাঈদ খুদরী (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত। (তিনি বলেছেনঃ) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সময়ে কিছু লোক তাঁকে জিজ্ঞেস করলো, হে আল্লাহ্‌র রাসূল! কিয়ামতের দিন আমরা কি আমাদের রবকে দেখতে পাবো। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ হ্যাঁ, দেখতে পাবে।

فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِن كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ شَهِيدًا ﴿٤١﴾

৪১. অনন্তর তখন কী দশা হবে, যখন আমি প্রত্যেক সম্প্রদায় হতে সাক্ষী আনয়ন করবো এবং তোমাকেই তাদের প্রতি সাক্ষী করবো?

يَوْمَئِذٍ يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَعَصَوُا الرَّسُولَ لَوْ تُسَوَّىٰ بِهِمُ الْأَرْضُ ۚ وَلَا يَكْتُمُونَ اللَّهَ حَدِيثًا ﴿٤٢﴾

৪২. যারা অবিশ্বাসী হয়েছে ও রাসূলের বিরুদ্ধাচরণ করেছে, তারা সেদিন কামনা করবে, যেন ভূমন্ডল তাদের সাথে সমতল হয় এবং আল্লাহর নিকট তারা কোন কথাই গোপন করতে পারবে না।

মেঘমুক্ত আকাশে দিনের আলোতে সূর্যকে দেখতে কি তোমাদের কোন অসুবিধা হয়? সবাই জবাব দিলো, না। তিনি বললেনঃ পূর্ণিমার রাতে মেঘমুক্ত আকাশে চাঁদ দেখতে কি তোমাদের কোন অসুবিধা হয়? সবাই জবাব দিলো না। তখন নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ এভাবে চাঁদ ও সূর্যের কোন একটিকে দেখতে তোমরা যতখানি অসুবিধা মনে করো কিয়ামতের দিন আল্লাহ্‌কে দেখতে ততটুকু অসুবিধা মাত্র হবে। কিয়ামতের দিন একজন ঘোষক ঘোষণা করবে, প্রত্যেক ব্যক্তি যে যার ইবাদত করতে, সে তার সাথে দলভুক্ত হয়ে যাও। সুতরাং যারা আল্লাহ্ ছাড়া মূর্তি বা পাথরের পূজা করতো তারা সবাই দোযখে নিক্ষিপ্ত হবে একজনও অবশিষ্ট থাকবে না। অবশেষে যখন আল্লাহ্‌র ইবাদতকারী নেক্‌কার, গোনাহ্‌গার ও দু'-চারজন আহলে কিতাব ছাড়া আর কেউ-ই অবশিষ্ট থাকবে না। তখন ইয়াহূদীদের ডেকে বলা হবে, তোমরা কার ইবাদত করতে? তারা বলবে আমরা আল্লাহ্‌র বেটা উযায়েরের ইবাদত করতাম। তখন তাদের বলা হবে, তোমরা মিথ্যা কথা বললে। আল্লাহ্ কাউকে স্ত্রী বা সন্তান হিসেবে গ্রহণ করেনি। তোমরা কি চাও? তারা বলবেঃ হে আমাদের রব! আমরা পিপাসার্ত হয়ে পড়েছি। আমাদের পানি পান করতে দিন। তখন তাদেরকে মরীচিকার মতো একটি প্রান্তর দেখিয়ে বলা হবে যে, সেখানে যাও। এভাবে তাদের সবাইকে এমন আগুনের মধ্যে একত্রিত করা হবে, যার এক অংশ আর এক অংশকে আক্রমণ করেছে এভাবে তারা সবাই দোযখে পতিত হবে। তারপর নাসারা (খ্রিস্টান)-দেরকে ডাকা হবে। তাদেরকে বলা হবে, তোমরা কার ইবাদত ও দাসত্ব করতে? তারা বলবে, আমরা আল্লাহ্‌র বেটা ঈসা মসীহর ইবাদত করতাম। তখন তাদেরকে বলা হবে, তোমরা মিথ্যাবাদী। আল্লাহ্ তা'আলা কাউকে স্ত্রী বা সন্তানরূপে গ্রহণ করেন নি। তাদেরকে বলা হবে তোমরা কি চাও? জবাবে তারাও পূর্বের লোকদের অনুরূপ বলবে। (অর্থাৎ ইয়াহূদীদের মতো তারাও বলবে,আমরা পিপাসার্ত হয়ে পড়েছি, আমাদেরকে পানি পান করান।) অবশেষে আল্লাহ্‌র ইবাদতকারী নেক্‌কার ও গোনাহ্‌গার লোক ছাড়া আর কেউ অবশিষ্ট থাকবে না। তখন গোটা বিশ্বজাহানের রব আল্লাহ্ তা'আলা তাদের কাছে এমন সাধারণ আকৃতিতে আগমন করবেন, যে আকৃতিতে তারা ইতিপূর্বে তাকে দেখেছে। তাদের জিজ্ঞেস করা হবে, তোমরা কিসের জন্য অধীর আগ্রহে অপেক্ষা করছো? প্রত্যেকেই তখন নিজ নিজ উপাস্যের দলভূক্ত হয়ে যাবে। তখন তারা (আল্লাহ্‌র ইবাদতকারী) বলবে, দুনিয়ায় যখন আমাদের সর্বাপেক্ষা বেশি প্রয়োজন ছিলো তখন আমরা লোকদেরকে বর্জন করেছিলাম। এমনকি তাদের সাহচর্যই আমরা পরিত্যাগ করেছিলাম। আমরা যে রবের ইবাদত ও দাসত্ব করতাম, এখন তার জন্য অপেক্ষা করছি। আল্লাহ্ তা'আলা তখন বলবেনঃ আমিই তোমাদের রব বা প্রভু। তখন তারা বলবে, আমরা আল্লাহ্‌র সাথে কোন কিছুকে শরীক করি না। একথা তারা দু' অথবা তিনবার বলবে। (বুখারী, হাদীস নং ৪৫৮১)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِىْ سَبِيْلٍ حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿٤٣﴾

৪৩. হে মু'মিনগণ! নেশাগ্রস্ত অবস্থায় যে পর্যন্ত না স্বীয় বাক্য হৃদয়ঙ্গম করতে পার এবং পথচারী অবস্থায় থাকা ব্যতীত গোসল না করা পর্যন্ত অপবিত্রাবস্থায় নামাযের নিকটবর্তী হয়ো না এবং যদি তোমরা পীড়িত হও কিংবা সফরে অবস্থান কর অথবা তোমাদের মধ্যে কেউ পায়খানা হতে প্রত্যাগত হয় কিংবা রমণী স্পর্শ (সম্ভোগ)[১] করে এবং পানি না পাও, তবে মাটি দ্বারা তায়াম্মুম কর, তার দ্বারা তোমাদের মুখমণ্ডল ও হাত সমূহ মুছে ফেল; নিশ্চয়ই আল্লাহ মার্জনাকারী, ক্ষমাশীল।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا السَّبِيْلَ ﴿٤٤﴾

৪৪. তুমি কি তাদের প্রতি লক্ষ্য করনি, যাদেরকে গ্রন্থের এক অংশ প্রদত্ত হয়েছে? তারা ভ্রান্তপথ ক্রয় করেছে এবং কামনা করে যে, তুমিও পথভ্রান্ত হও।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۙ وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ﴿٤٥﴾

৪৫. এবং আল্লাহ তোমাদের শত্রুকুলকে সম্যক পরিজ্ঞাত আছেন; এবং আল্লাহই যথেষ্ট পৃষ্ঠপোষক এবং আল্লাহই যথার্থ সাহায্যকারী।

مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا لَيًّا بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِى الدِّيْنِ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا وَاسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَقْوَمَ ۙ وَلٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٤٦﴾

৪৬. ইয়াহূদীদের মধ্যে কেউ কেউ যথাস্থান হতে বাক্যাবলী বিকৃত করে এবং বলেঃ আমরা শ্রবণ করলাম ও অগ্রাহ্য করলাম; আরো বলে শোন, না শোনার মত এবং তারা স্বীয় জিহ্বা কুঞ্চিত করে ও ধর্মের প্রতি দোষারোপ করে বলে, "রায়েনা" (আমাদের রাখাল) যদি তারা বলতোঃ আমরা শুনলাম ও অনুসরণ

১। স্পর্শ দ্বারা এখানে সহবাস বা সঙ্গম উদ্দেশ্যে।

করলাম, এবং শুনুন ও আমাদের প্রতি লক্ষ্য রাখুন তাহলে এটা তাদের পক্ষে উত্তম ও সুসঙ্গত হতো; কিন্তু আল্লাহ তাদের অবিশ্বাসহেতু তাদেরকে অভিসম্পাত করেছেন; অতএব অল্প সংখ্যক ব্যতীত তারা বিশ্বাস করে না।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰۤى اَدْبَارِهَاۤ اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّاۤ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿٤٧﴾

৪৭. হে গ্রন্থ প্রাপ্তগণ! তোমাদের সঙ্গে যা আছে তার সত্যতা সত্যায়নকারী যা অবতীর্ণ করেছি তৎপ্রতি বিশ্বাস স্থাপন কর; এর পূর্বে যে, আমি বহু মুখমণ্ডল বিকৃত করে দেব, তৎপর তাদেরকে পৃষ্ঠের দিকে উল্টিয়ে দেব অথবা শনিবারীয়দের প্রতি যেরূপ অভিসম্পাত করেছিলাম তদ্রূপ তাদের প্রতি অভিসম্পাত করবো এবং আল্লাহর আদেশ সুসম্পন্ন হয়েই থাকে।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰۤى اِثْمًا عَظِيْمًا ﴿٤٨﴾

৪৮. নিশ্চয়ই আল্লাহ তাঁর সাথে অংশীস্থাপন করলে তাকে ক্ষমা করবেন না এবং তদ্ব্যতীত যাকে ইচ্ছা ক্ষমা করবেন এবং যে কেউ আল্লাহর অংশী স্থির করে, সে মহাপাপে জড়িয়ে মিথ্যা রচনা করলো।[১]

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ بَلِ اللّٰهُ

৪৯. তুমি কি তাদের প্রতি লক্ষ্য করনি যারা স্বীয় পবিত্রতা প্রকাশ করে? বরং আল্লাহ যাকে ইচ্ছা পবিত্র

১। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) সরাসরি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন। আল্লাহ্ তা'আলা জাহান্নামবাসীদের সবচেয়ে লঘুদন্ড ও সহজ শাস্তি ভোগকারীকে জিজ্ঞেস করবেন, যদি দুনিয়ার সমস্ত ধন-সম্পদ (এখন) তোমার হাসিল হয়ে যায়। তাহলে এ আযাবের বিনিময়ে তুমি কি তা সব দিয়ে দেবে? সে জবাবে বলবে হ্যাঁ। তিনি বলবেনঃ আমি এর চেয়েও সহজ জিনিস তোমার নিকট চেয়েছিলাম যখন তুমি আদম (আলাইহিস্‌সালামের) পিঠে ছিলে যে, তুমি আমার সাথে শিরক করিওনা, তুমি তা না মেনে শিরক করেছ। (বুখারী, হাদীস নং ৩৩৩৪)

يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٤٩﴾

করেন এবং তারা সূত্র (সুতা) পরিমাণও অত্যাচারিত হবে না।

اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَكَفٰى بِهٖۤ اِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٥٠﴾

৫০. লক্ষ্য কর, তারা কিরূপে আল্লাহর প্রতি মিথ্যা অপবাদ দিচ্ছে! এবং এটি স্পষ্ট অপরাধী হওয়ার জন্যে যথেষ্ট।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰۤؤُلَآءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَبِيْلًا ﴿٥١﴾

৫১. তুমি কি তাদের প্রতি লক্ষ্য করনি যাদেরকে গ্রন্থের একাংশ প্রদত্ত হয়েছে? তারা প্রতিমা ও শয়তানের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করে এবং অবিশ্বাসীদেরকে বলে যে, বিশ্বাস স্থাপনকারীগণ অপেক্ষা তারাই অধিকতর সুপথগামী।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ﴿٥٢﴾

৫২. এদেরই প্রতি আল্লাহ অভিসম্পাত করেছেন এবং আল্লাহ যাকে অভিসম্পাত করেন, তুমি তার জন্যে কোনই সাহায্যকারী পাবে না।

اَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَاِذًا لَّا يُؤْتُوْنَ النَّاسَ نَقِيْرًا ﴿٥٣﴾

৫৩. তবে কি রাজত্বে তাদের জন্যে কোন অংশ রয়েছে? বস্তুতঃ তখন তারা লোকদেরকে খেজুর কণাও প্রদান করবে না।

اَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰى مَاۤ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَاۤ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا ﴿٥٤﴾

৫৪. তবে কি তারা লোকদের প্রতি এ জন্যে হিংসা করে যে আল্লাহ তাদেরকে স্বীয় সম্পদ হতে কিছু দান করেছেন? ফলতঃ নিশ্চয়ই আমি ইবরাহীম বংশীয়গণকে গ্রন্থ ও বিজ্ঞান দান করেছি এবং তাদেরকে বিশাল সাম্রাজ্য প্রদান করেছি।

فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ؕ وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيْرًا ﴿٥٥﴾

৫৫. অনন্তর তাদের মধ্যে অনেকেই ওর প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করেছে এবং অনেকেই ওটা হতে বিরত রয়েছে; এবং (তাদের জন্যে) অগ্নি স্ফুলিঙ্গ বিশিষ্ট জাহান্নামই যথেষ্ট।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصْلِيهِمْ نَارًا ۖ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُودُهُمْ بَدَّلْنَاهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا الْعَذَابَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿٥٦﴾

৫৬. নিশ্চয়ই যারা আমার নির্দেশনসমূহের প্রতি অবিশ্বাসী হয়েছে তাদেরকে অবশ্যই আমি অগ্নিকুণ্ডে দাখিল করবো; যখন তাদের চর্ম বিদগ্ধ হবে, আমি তৎপরিবর্তে তাদের চর্ম পরিবর্তিত করে দেবো যেন তারা শাস্তির আস্বাদ গ্রহণ করে, নিশ্চয়ই আল্লাহ অতীব সম্মানী, প্রজ্ঞাময়।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ لَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيلًا ﴿٥٧﴾

৫৭. যারা বিশ্বাস স্থাপন করেছে ও সৎ কার্যাবলী সম্পাদন করেছে, নিশ্চয়ই আমি তাদেরকে জান্নাতসমূহে দাখিল করবো– যার নিম্নে স্রোতস্বিনীসমূহ প্রবাহিত, তন্মধ্যে তারা চিরকাল অবস্থান করবে; সেখানে তাদের জন্যে পূত-পবিত্র সহধর্মিণীগণ রয়েছেন এবং আমি তাদেরকে ছায়াশীতল স্থানে দাখিল করবো।[১]

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا وَإِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ أَنْ تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ ۚ إِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا بَصِيرًا ﴿٥٨﴾

৫৮. নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাদেরকে আদেশ করেছেন যে, গচ্ছিত (আমানত) বুঝিয়ে দাও ওর অধিকারীকে এবং যখন তোমরা লোকদের মধ্যে বিচার-মীমাংসা কর, তখন ন্যায় বিচার কর; অবশ্যই আল্লাহ তোমাদেরকে উত্তম উপদেশ দান করছেন, নিশ্চয়ই আল্লাহ শ্রবণকারী, পরিদর্শক।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ

৫৯. হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহর অনুগত হও ও রাসূলের অনুগত হও

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেনঃ জান্নাতে এমন একটি বৃক্ষ আছে এর ছায়ায় যদি কোন যান-বাহনে আরোহণকারী ভ্রমণ করতে চায় তাহলে একশত বছর ভ্রমণ করতে পারবে। তোমরা ইচ্ছা করলে এ আয়াত পড়তে পার। অর্থঃ "সম্প্রসারিত ছায়া"। (সূরাঃ ওয়াকিয়াহ্, আয়াতঃ ৩০) (বুখারী, হাদীস নং ৩২৫২)

وَاُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿٥٩﴾

এবং তোমাদের অন্তর্গত আদেশ-দাতাগণের; অতঃপর যদি তোমাদের মধ্যে কোন বিষয়ে কোন মতবিরোধ হয় তবে আল্লাহ ও রাসূলের দিকে প্রত্যাবর্তিত হও— যদি তোমরা আল্লাহ ও পরকালের প্রতি বিশ্বাস করে থাক; এটাই কল্যাণকর ও শ্রেষ্ঠতর সমাধান।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَحَاكَمُوْٓا اِلَى الطَّاغُوْتِ وَقَدْ اُمِرُوْٓا اَنْ يَّكْفُرُوْا بِهٖ ۭ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ﴿٦٠﴾

৬০. তুমি কি তাদের প্রতি লক্ষ্য করনি, যারা ধারণা করে যে, তোমার প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে এবং তোমার পূর্বে যা অবতীর্ণ হয়েছিল তৎপ্রতি তারা বিশ্বাস করে, অথচ তারা নিজেদের মোকদ্দমা শয়তানের নিকট নিয়ে যেতে চায়, যদিও তাদেরকে আদেশ করা হয়েছিল, যেন তাকে অবিশ্বাস করে এবং শয়তান ইচ্ছা করে যে, তাদেরকে সত্যের পথ থেকে বহু দূরে নিয়ে গিয়ে বিভ্রান্ত করে ফেলবে।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ رَاَيْتَ الْمُنٰفِقِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْكَ صُدُوْدًا ﴿٦١﴾

৬১. আর যখন তাদেরকে বলা হয় যে, আল্লাহ যা অবতীর্ণ করেছেন সেদিকে এবং রাসূলের দিকে এসো, তখন তুমি মুনাফিকদেরকে দেখবে, তারা তোমার থেকে বিমুখ হয়ে বিচ্ছিন্ন রয়েছে।

فَكَيْفَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ثُمَّ جَاۗءُوْكَ يَحْلِفُوْنَ ۚ بِاللّٰهِ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّآ اِحْسَانًا وَّتَوْفِيْقًا ﴿٦٢﴾

৬২. অনন্তর তখন কিরূপ হবে, যখন তাদের হাতসমূহ যা পূর্বে প্রেরণ করেছে, তজ্জন্যে তাদের উপর বিপদ উপনীত হবে? তখন তারা আল্লাহর শপথ করতে করতে তোমার দিকে আসবে যে কল্যাণ ও সুপ্রীতি ব্যতীত আমরা কিছুই কামনা করিনি।

أُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَهُمْ فِي أَنفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيغًا ﴿٦٣﴾

৬৩. তাদের অন্তরসমূহে যা আছে, আল্লাহ তা পরিজ্ঞাত আছেন; অতএব তুমি তাদের দিক হতে নির্লিপ্ত হও ও তাদেরকে সদুপদেশ প্রদান কর এবং তাদেরকে তাদের সম্বন্ধে হৃদয় স্পর্শী কথা বল।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذ ظَّلَمُوا أَنفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَّحِيمًا ﴿٦٤﴾

৬৪. আমি এতদ্ব্যতীত কোনই রাসূল প্রেরণ করিনি যে, আল্লাহর আদেশে তাদের আনুগত্য স্বীকার করা হবে, এবং যদি তারা স্বীয় জীবনের উপর অত্যাচার করার পর তোমার নিকট আগমন করতো, তৎপর আল্লাহর নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করতো আর রাসূলও তাদের জন্যে আল্লাহর নিকট ক্ষমা চাইতেন, তবে নিশ্চয়ই তারা আল্লাহকে তাওবা কবূলকারী, অত্যন্ত করুণাময় হিসেবে পেত।

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿٦٥﴾

৬৫. অতএব তোমার প্রতিপালকের শপথ! তারা কখনও বিশ্বাস স্থাপনকারী হতে পারবে না, যে পর্যন্ত তোমাকে তাদের আভ্যন্তরীণ বিরোধের বিচারক হিসেবে মেনে না নিবে, তৎপর তুমি যে বিচার করবে তা দ্বিধাহীন অন্তরে গ্রহণ না করবে এবং ওটা শান্তভাবে পরিগ্রহণ না করবে।

وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ أَنِ اقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ أَوِ اخْرُجُوا مِن دِيَارِكُم مَّا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِّنْهُمْ ۖ وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا مَا يُوعَظُونَ بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَشَدَّ تَثْبِيتًا ﴿٦٦﴾

৬৬. আর আমি যদি তাদের উপর বিধিবদ্ধ করতাম যে, তোমরা নিজেদেরকে হত্যা কর অথবা স্বীয় গৃহপ্রাচীর হতে নিষ্ক্রান্ত হও, তবে তাদের অল্প সংখ্যক ব্যতীত ওটা করতো না এবং যে বিষয়ে তাদেরকে

উপদেশ দেয়া হয়েছিল তা যদি তারা করতো তবে নিশ্চয়ই ওটা তাদের জন্যে কল্যাণকর ও অধিকতর সুপ্রতিষ্ঠিত হতো।

وَّاِذًا لَّاٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ لَّدُنَّاۤ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٦٧﴾

৬৭. এবং তখন আমি তাদেরকে অবশ্যই স্বীয় সন্নিধান হতে বৃহত্তর প্রতিদান প্রদান করতাম।

وَّلَهَدَيْنٰهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٦٨﴾

৬৮. এবং নিশ্চয়ই তাদেরকে সরল পথ প্রদর্শন করতাম।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ﴿٦٩﴾

৬৯. আর যে কেউ আল্লাহ ও রাসূলের অনুগত হয়, তবে তারা ঐ ব্যক্তিদের সঙ্গী হবে যাদের প্রতি আল্লাহ অনুগ্রহ করেছেন; অর্থাৎ নবীগণ, সত্য সাধকগণ, শহীদগণ ও সৎকর্মশীলগণ এবং এরাই সর্বোত্তম সঙ্গী।

ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ عَلِيْمًا ﴿٧٠﴾

৭০. এটাই আল্লাহর অনুগ্রহ এবং আল্লাহর জ্ঞানই যথেষ্ট।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِانْفِرُوْا جَمِيْعًا ﴿٧١﴾

৭১. হে মু'মিনগণ! তোমরা স্বীয় সতর্কতা বজায় রেখো, তৎপর পৃথকভাবে বহির্গত হও অথবা সম্মিলিতভাবে অভিযান কর।

وَاِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ فَاِنْ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ شَهِيْدًا ﴿٧٢﴾

৭২. আর তোমাদের মধ্যে এরূপ লোকও রয়েছে যে শৈথিল্য করে; অনন্তর যদি তোমাদের উপর বিপদ নিপতিত হয় তবে বলেঃ আমার প্রতি আল্লাহর অনুগ্রহ ছিল যে, আমি তখন তাদের সাথে বিদ্যমান ছিলাম না।

وَلَئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ كَاَنْ لَّمْ تَكُنْۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ مَعَهُمْ

৭৩. এবং যদি আল্লাহর সন্নিধান হতে তোমাদের উপর অনুগ্রহ সম্পদ অবতীর্ণ হয় তবে এরূপভাবে বলে

فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧٣﴾

যেন তোমাদের মধ্যে ও তার মধ্যে কোনই সম্বন্ধ ছিল না– বস্তুতঃ যদি আমিও তাদের সঙ্গী হতাম তবে মহান ফলপ্রদ সুফল লাভ করতাম।

فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ؕ وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٧٤﴾

৭৪. অতএব যারা ইহকালের বিনিময়ে পরকাল ক্রয় করেছে তারা যেন আল্লাহর পথে সংগ্রাম করে; এবং যে আল্লাহর পথে যুদ্ধ করে তৎপর নিহত অথবা বিজয়ী হয় তবে আমি তাকে মহান প্রতিদান প্রদান করবো।

وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۚ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ﴿٧٥﴾

৭৫. তোমাদের কী হয়েছে যে, তোমরা আল্লাহর পথে যুদ্ধ করছো না? অথচ অসহায় পুরুষগণ, নারীবৃন্দ এবং শিশুরা বলে যে, হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে অত্যাচারী অধিবাসীদের এই নগর হতে বহির্গত করুন এবং স্বীয় সন্নিধান হতে আমাদের পৃষ্ঠপোষক ও নিজের নিকট হতে আমাদের জন্য সাহায্যকারী প্রেরণ করুন।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا اَوْلِيَآءَ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا ﴿٧٦﴾

৭৬. যারা বিশ্বাস স্থাপন করেছে তারা আল্লাহর পথে সংগ্রাম করে এবং যারা অবিশ্বাসী হয়েছে তারা শয়তানের পথে যুদ্ধ করে; অতএব তোমরা শয়তানের সুহৃদগণের (বন্ধুগণের) সাথে যুদ্ধ কর; নিশ্চয়ই শয়তানের কৌশল দূর্বল।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا اَيْدِيَكُمْ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ اَوْ اَشَدَّ

৭৭. তুমি কি তাদের প্রতি লক্ষ্য করনি, যাদেরকে বলা হয়েছিল যেঃ তোমাদের হাতসমূহ সংবরণ রাখ এবং নামায প্রতিষ্ঠিত কর ও যাকাত

خَشْيَةً ۚ وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَآ اَخَّرْتَنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۗ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۗ وَلَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٧٧﴾

প্রদান কর। অনন্তর যখন তাদের প্রতি জিহাদ ফরয করে দেয়া হলো তখন তাদের একদল আল্লাহকে যেরূপ ভয় করে তদ্রূপ মানুষকে ভয় করতে লাগলো বরং তদপেক্ষাও অধিক ভয় এবং তারা বললোঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি কেন আমাদের উপর যুদ্ধ বিধিবদ্ধ করলেন? কেন আমাদেরকে আর কিছুকালের জন্যে অবসর দিলেন না? তুমি বলঃ পার্থিব সম্পদ অকিঞ্চিৎকর এবং আল্লাহ ভীরুগণের জন্যে পরকালই কল্যাণকর এবং তোমরা ক্ষীণ সুতা পরিমাণও অত্যাচারিত হবে না।

اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ۗ وَاِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ۗ قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۗ فَمَالِ هٰٓؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ حَدِيْثًا ﴿٧٨﴾

৭৮. তোমরা যেখানেই থাক মৃত্যু তোমাদেরকে পেয়ে যাবে, যদিও তোমরা সুদৃঢ় দুর্গে অবস্থান কর; এবং যদি তাদের উপর কোন কল্যাণ অবতীর্ণ হয় তবে বলেঃ এটা আল্লাহর নিকট হতে এবং যদি তাদের প্রতি অমঙ্গল নিপতিত হয় তবে বলে যে, এটা তোমার নিকট হতে হয়েছে, তুমি বলঃ সবকিছুই আল্লাহর নিকট হতে হয়; অতএব ঐ সম্প্রদায়ের কী হয়েছে যে, তারা কোন কথা যেন বুঝতেই চায় না।

مَآ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ۗ وَمَآ اَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ۗ وَاَرْسَلْنٰكَ لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ۗ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٧٩﴾

৭৯. তোমার নিকট যে কল্যাণ উপস্থিত হয় তা আল্লাহর সন্নিধান হতে এবং তোমার উপর যে অমঙ্গল নিপতিত হয় তা তোমার নিজ হতে হয়ে থাকে; এবং আমি তোমাকে মানবমণ্ডলীর জন্যে রাসূলরূপে প্রেরণ করেছি; আর আল্লাহ সাক্ষী হিসেবে যথেষ্ট।

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۝٨٠

৮০. যে কেউ রাসূলের অনুগত হয় নিশ্চয়ই সে আল্লাহরই অনুগত হয়ে থাকে; এবং যে ফিরে যায় আমি তার জন্যে তোমাকে রক্ষকরূপে প্রেরণ করিনি।[১]

وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ۫ فَاِذَا بَرَزُوْا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِيْ تَقُوْلُ ؕ وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝٨١

৮১. আর তারা বলেঃ আমরা অনুগত; কিন্তু যখন তারা তোমার নিকট হতে বের হয়ে যায় তখন তাদের একদল— তুমি যা বল তার বিরুদ্ধে শলা-পরামর্শ করে এবং তারা যা শলা-পরামর্শ করে আল্লাহ তা লিপিবদ্ধ করেন; অতএব তাদের প্রতি বিমুখ হও ও আল্লাহর উপর নির্ভর কর; এবং আল্লাহই কার্য সম্পাদনে যথেষ্ট।

اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ؕ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ۝٨٢

৮২. তারা কেন কুরআন নিয়ে গবেষণা করে না? আর যদি ওটা আল্লাহ ব্যতীত অন্য কারও নিকট হতে হতো তবে তারা ওতে বহু গরমিল পেতো।

وَاِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ؕ وَلَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ وَاِلٰۤى اُولِي الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ؕ وَلَوْلَا فَضْلُ

৮৩. আর যখন তাদের নিকট কোন শান্তি বা ভীতিজনক বিষয় উপস্থিত হয় তখন তারা ওটা প্রচার করতে থাকে এবং যদি তারা ওটা রাসূলের ও তাদের আদেশদাতাদের প্রতি

১। (ক) আবূ মূসা (রাযিআল্লাহু আনহু) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন যে, তিনি বলেছেন যে, (কাফেরদের হাতে মুসলিম) বন্দীদেরকে মুক্ত করে আন এবং দাওয়াতকারীর দাওয়াত গ্রহণ কর। (বুখারী, হাদীস নং৭১৭৩)

(খ) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেছেন যে, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আমার উম্মতের সকল লোক জান্নাতে প্রবেশ করবে; কিন্তু যে অস্বীকার করেছে (সে জান্নাতবাসী হতে পারবে না)। জিজ্ঞাসা করা হলঃ কে অস্বীকার করেছে, হে রাসূল? উত্তরে বললেনঃ যে আমার অনুসরণ করল সে জান্নাতে প্রবেশ করবে। আর যে ব্যক্তি আমার অনুসরণ করল না, সে অস্বীকার করল। (বুখারী, হাদীস নং ৭২৮০)

اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٣﴾

সমর্পণ করতো তবে তাদের মধ্যে তত্ত্বানুসন্ধিৎসুগণ ওটা উপলব্ধি করতো, এবং যদি তোমাদের প্রতি আল্লাহর অনুগ্রহ ও করুণা না হতো তবে অল্প সংখ্যক ব্যতীত তোমরা শয়তানের অনুসরণ করতে।

فَقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ لَا تُكَلَّفُ اِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّ اَشَدُّ تَنْكِيْلًا ﴿٨٤﴾

৮৪. অতএব আল্লাহর পথে যুদ্ধ কর; তোমার নিজের ছাড়া তোমার উপর অন্য কোন ভার অর্পণ করা হয়নি এবং বিশ্বাসীদেরকে উদ্বুদ্ধ কর; অচিরেই আল্লাহ অবিশ্বাসীদের সংগ্রাম প্রতিরোধ করবেন এবং আল্লাহ শক্তিতে সুদৃঢ় ও শাস্তি দানে কঠোর।

مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقِيْتًا ﴿٨٥﴾

৮৫. যে কেউ সৎ সুপারিশ করবে সে ওর দরুন অংশ পাবে এবং যে কেউ অসৎ সুপারিশ করবে সে ওর দরুন অংশপ্রাপ্ত হবে এবং আল্লাহ সর্ববিষয়ে শক্তিদাতা।

وَاِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَاۤ اَوْ رُدُّوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيْبًا ﴿٨٦﴾

৮৬. আর যখন তোমরা শুভাশিষে সালাম ও অভিবাদন প্রাপ্ত হও, তবে তোমরাও তা হতে শ্রেষ্ঠতর শুভ সম্ভাষণ কর অথবা ওটাই প্রত্যর্পণ কর; নিশ্চয়ই আল্লাহ সর্ব বিষয়ে হিসাব গ্রহণকারী।[১]

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, আল্লাহ্ তা'আলা আদম (আলাইহিস্ সালাম) কে তাঁর নিজের আকার-আকৃতিতেই সৃষ্টি করেছেন। তাঁর উচ্চতা ছিল ষাট হাত। আল্লাহ্ তা'আলা তাঁকে সৃষ্টি করে বললেন, যাও, ফেরেশ্তাদের অবস্থানরত দলকে সালাম করো এবং মন দিয়ে শুনবে, তারা তোমার সালামের কি জবাব দেয়। এটাই হবে তোমার এবং তোমার সন্তানদের সালাম। সুতরাং আদম (আলাইহিস সালাম) গিয়ে বললেন- আস্সালামু আলাইকুম। (আপনাদের প্রতি শান্তি বর্ষিত হোক) ফেরেশ্তাগণ জবাব দিলেন- আস্সালামু আলাইকা ওয়ারাহ্মাতুল্লাহ্, (আপনার ওপরও শান্তি এবং আল্লাহ্র রহমত বর্ষিত হোক)! ফেরেশ্তাগণ ওয়া রাহ্মাতুল্লাহি অংশ বৃদ্ধি করলেন। অতঃপর যারা বেহেশ্তে যাবে- তারা প্রত্যেকেই আদম (আলাইহিস্ সালাম)-এর আকৃতি বিশিষ্ট হবে। তখন থেকে এখন পর্যন্ত মানুষের উচ্চতা ক্রমাগত হ্রাস পেয়েই আসছে। (বুখারী, হাদীস নং ৬২২৭)

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا ﴿٨٧﴾

৮৭. আল্লাহ ব্যতীত সত্যিকার মা'বূদ কেউ নেই; নিশ্চয়ই এতে সন্দেহ নেই যে, তিনি তোমাদেরকে কিয়ামতের দিনে একত্রিত করবেন এবং আল্লাহ অপেক্ষা কে বেশি সত্যবাদী।

فَمَا لَكُمْ فِى الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا ؕ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿٨٨﴾

৮৮. অনন্তর তোমাদের কি হয়েছে যে, তোমরা মুনাফিকদের সম্বন্ধে দু'দল হলে? এবং তারা যা অর্জন করেছে তজ্জন্যে আল্লাহ তাদেরকে ফিরিয়ে দিয়েছেন। আল্লাহ যাকে পথভ্রান্ত করেন, তুমি কি তাকে পথ প্রদর্শন করতে চাও? এবং আল্লাহ যাকে পথভ্রান্ত করেছেন, বস্তুতঃ তুমি তার জন্যে কোনই পথ পাবে না।

وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ اَوْلِيَآءَ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ ۪ وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٨٩﴾

৮৯. তারা ইচ্ছা করে যে, তারা যেরূপ অবিশ্বাস করেছে, তোমরাও তদ্রূপ অবিশ্বাস কর যেন তোমরাও তাদের সদৃশ হও; অতএব তাদের মধ্য হতে বন্ধু গ্রহণ করো না, যে পর্যন্ত না তারা আল্লাহর পথে দেশ ত্যাগ করে; অতঃপর যদি তারা প্রতিগমন করে, তবে তাদেরকে ধর এবং যেখানে পাও তাদেরকে সংহার (হত্যা) কর এবং তাদের মধ্য হতে বন্ধু অথবা সাহায্যকারী গ্রহণ করো না।

اِلَّا الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ اِلٰى قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ اَوْ جَآءُوْكُمْ حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ اَنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ اَوْ يُقَاتِلُوْا قَوْمَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ۚ فَاِنِ اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ

৯০. কিন্তু তোমাদের মধ্যে ও তাদের মধ্যে সন্ধিবদ্ধ সম্প্রদায়ের সাথে যারা সম্মিলিত হয়, অথবা তোমাদের সাথে অথবা তাদের সম্প্রদায়ের সাথে যুদ্ধ করতে সংকুচিত চিত্ত হয়ে যারা তোমাদের নিকট উপস্থিত হয়,এবং যদি আল্লাহ ইচ্ছা করতেন

وَاَلْقَوْا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ ۙ فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ﴿٩٠﴾

তবে তোমাদের উপর তাদেরকে শক্তিশালী করতেন, তাহলে নিশ্চয়ই তারা তোমাদের সাথে সংগ্রাম করতো; অতঃপর যদি তারা তোমাদের দিক হতে নিবৃত্ত হয় এবং তোমাদের সাথে সংগ্রাম না করে এবং তোমাদের নিকট সন্ধি প্রার্থনা করে, তবে আল্লাহ তাদের প্রতিকূলে তোমাদের জন্যে কোন পন্থা রাখেন নি।

سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّاْمَنُوْكُمْ وَيَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ؕ كُلَّمَا رُدُّوْۤا اِلَى الْفِتْنَةِ اُرْكِسُوْا فِيْهَا ۚ فَاِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْۤا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ وَيَكُفُّوْۤا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ ؕ وَاُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿٩١﴾

৯১. অচিরেই তুমি কতক লোককে এমনও পাবে, যারা তোমাদের দিক হতে নিরাপত্তা পেতে চায় ও স্বীয় সম্প্রদায় হতেও নিরাপত্তার নিশ্চয়তা চায়। যখন তাদেরকে ফেতনার (সন্ত্রাসের) দিকে মনোনিবেশ করানো হয় তখন তারা তাতেই জড়িয়ে পড়ে। অনন্তর যদি তারা তোমাদের দিক হতে নিবৃত্ত না হয় ও সন্ধি প্রার্থনা না করে এবং তাদের হাতসমূহ সংযত না রাখে, তবে তাদেরকে ধর এবং যেখানে পাও তাদেরকে সংহার কর; এদেরই বিরুদ্ধে আমি তোমাদেরকে সুস্পষ্ট ক্ষমতা প্রদান করেছি।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا اِلَّا خَطَـًٔا ۚ وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَـًٔا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ يَّصَّدَّقُوْا ؕ فَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ؕ وَاِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍۭ بَيْنَكُمْ

৯২. কোন মু'মিনের উচিত নয় যে, ভ্রম ব্যতীত কোন মু'মিনকে হত্যা করে; যে কেউ ভ্রমবশতঃ কোন মু'মিনকে হত্যা করে, তবে সে একজন মু'মিন দাসকে মুক্ত করে দেবে এবং তার আত্মীয়-স্বজনগণকে হত্যা-বিনিময় (রক্তপণ) সমর্পণ করবে; কিন্তু হ্যাঁ, তবে যদি তারা

وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖ وَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ۖ تَوْبَةً مِّنَ اللّٰهِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٩٢﴾

ক্ষমা করে দেয়, অনন্তর যদি সে তোমাদের শত্রু সম্প্রদায়ের অন্তর্গত ও মু'মিন হয় তবে একজন মু'মিন দাসকে মুক্তি দান করবে এবং যদি সে তোমাদের মধ্যে ও তাদের মধ্যে সন্ধিবদ্ধ সম্প্রদায়ের অন্তর্গত হয় তবে তার স্বজনদেরকে হত্যা-বিনিময় অর্পণ করবে এবং একজন মু'মিন দাসকে মুক্ত করবে; কিন্তু যদি সে ওটা প্রাপ্ত না হয় (সামর্থহীন হয়), তবে আল্লাহর নিকট হতে ক্ষমা প্রাপ্তির জন্যে ক্রমাগত দু'মাস রোযা রাখবে এবং আল্লাহ মহাজ্ঞানী, প্রজ্ঞাময়।

وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيْمًا ﴿٩٣﴾

৯৩. আর যে কেউ স্বেচ্ছায় কোন মু'মিনকে হত্যা করবে তার শাস্তি হবে জাহান্নাম, তন্মধ্যে সে সদা অবস্থান করবে এবং আল্লাহ তার প্রতি ক্রুদ্ধ ও তাকে অভিশপ্ত করেন এবং তার জন্যে ভীষণ শাস্তি প্রস্তুত করে রেখেছেন।[১]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا ضَرَبْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ اَلْقٰٓى اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖ فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ۗ كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿٩٤﴾

৯৪. হে মু'মিনগণ! যখন তোমরা আল্লাহর পথে বহির্গত হও তখন প্রত্যেক কাজ তথ্য নিয়ে করো এবং কেউ তোমাদেরকে 'সালাম' করলে তাকে বলো না যে, তুমি মু'মিন নও; তোমরা কি পার্থিব জীবনের সম্পদের প্রত্যাশা করছো? তবে আল্লাহর নিকট প্রচুর সম্পদ রয়েছে; প্রথমে তোমরা এরূপই ছিলে, অতঃপর

১। আব্দুল্লাহ্ ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) এরশাদ করেছেনঃ একজন মু'মিন ব্যক্তি তার দ্বীনের ব্যাপারে পূর্ণভাবে আজাদীর মধ্যে থাকে যদি না সে কোন ব্যক্তিকে অবৈধভাবে হত্যা করে। (বুখারী, হাদীস নং ৬৮৬২)

আল্লাহ তোমাদের উপর অনুগ্রহ করেছেন; অতএব তোমরা স্থির করে নাও যে, তোমরা যা করছো নিশ্চয়ই আল্লাহ সে বিষয়ে পূর্ণ অবগত।

لَا يَسْتَوِي الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِي الضَّرَرِ وَ الْمُجٰهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٩٥﴾

৯৫. মু'মিনদের মধ্যে যারা কোন দুঃখ-পীড়া ব্যতীতই গৃহে বসে থাকে, আর যারা স্বীয় ধন ও প্রাণ দ্বারা আল্লাহর পথে জিহাদ করে, তারা সমান নয়; আল্লাহ ধন-প্রাণ দ্বারা জিহাদকারীগণকে উপবিষ্টগণের উপর পদ-মর্যাদায় গৌরবান্বিত করেছেন এবং সকলকেই আল্লাহ কল্যাণপ্রদ প্রতিশ্রুতি দান করেছেন এবং উপবিষ্টগণের উপর জিহাদ-কারীগণকে মহান প্রতিদানে গৌরবান্বিত করেছেন।

دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٩٦﴾

৯৬. স্বীয় সন্নিধান হতে পদ-মর্যাদা ক্ষমা ও করুণা (দ্বারা গৌরবান্বিত করেছেন) এবং আল্লাহ ক্ষমাশীল, করুণাময়।

اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ؕ قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ فِي الْاَرْضِ ؕ قَالُوْٓا اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ؕ فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿٩٧﴾

৯৭. নিশ্চয়ই যারা স্বীয় জীবনের প্রতি অত্যাচার করেছিল, ফেরেশতা তাদের প্রাণ হরণ করে বলবেঃ তোমরা কি অবস্থায় ছিলে? তারা বলবেঃ আমরা দুনিয়ায় অসহায় অবস্থায় ছিলাম; তারা বলবেঃ আল্লাহর পৃথিবী কি প্রশস্ত ছিল না যে, তন্মধ্যে তোমরা হিজরত করতে পারতে? অতএব ওদেরই বাসস্থান জাহান্নাম এবং ওটা নিকৃষ্ট গন্তব্য স্থান।

اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَ

৯৮. কিন্তু পুরুষ, নারী এবং শিশুগণের মধ্যে অসহায়তাবশতঃ

الْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَّلَا يَهْتَدُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٩٨﴾

যারা কোন উপায় করতে পারে না অথবা কোন পথ প্রাপ্ত হয় না।

فَاُولٰٓئِكَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا غَفُوْرًا ﴿٩٩﴾

৯৯. ফলতঃ তাদেরই আশা আছে যে, আল্লাহ তাদেরকে ক্ষমা করবেন এবং আল্লাহ মার্জনাকারী, ক্ষমাশীল।

وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ فِي الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا وَّسَعَةً ؕ وَمَنْ يَّخْرُجْ مِنْۢ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٠٠﴾

১০০. আর যে কেউ আল্লাহর পথে দেশত্যাগ করবে, সে পৃথিবীতে বহু প্রশস্ত স্থান ও স্বচ্ছলতা প্রাপ্ত হবে, এবং যে কেউ গৃহ হতে বহির্গত হয়ে আল্লাহ ও রাসূলের উদ্দেশ্যে দেশ ত্যাগ করে, তৎপর সে মৃত্যু মুখে পতিত হয়, তবে নিশ্চয়ই এর প্রতিদান আল্লাহর উপর ন্যস্ত রয়েছে; এবং আল্লাহ ক্ষমাশীল, করুণাময়।

وَاِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْاَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ ۖ اِنْ خِفْتُمْ اَنْ يَّفْتِنَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ اِنَّ الْكٰفِرِيْنَ كَانُوْا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿١٠١﴾

১০১. আর যখন তোমরা ভূ-পৃষ্ঠে পর্যটন কর, তখন নামায সংক্ষেপ (কসর) করলে তোমাদের কোন অপরাধ নেই, যদি তোমরা আশঙ্কা কর যে, যারা অবিশ্বাসকারী তারা তোমাদেরকে বিব্রত করবে; নিশ্চয়ই অবিশ্বাসীরা তোমাদের প্রকাশ্য শত্রু।

وَاِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ فَاَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ مَّعَكَ وَلْيَاْخُذُوْٓا اَسْلِحَتَهُمْ ۖ فَاِذَا سَجَدُوْا فَلْيَكُوْنُوْا مِنْ وَّرَآئِكُمْ ۪ وَلْتَاْتِ طَآئِفَةٌ اُخْرٰى لَمْ يُصَلُّوْا فَلْيُصَلُّوْا مَعَكَ وَلْيَاْخُذُوْا حِذْرَهُمْ وَاَسْلِحَتَهُمْ ۚ وَدَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ تَغْفُلُوْنَ عَنْ اَسْلِحَتِكُمْ وَاَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيْلُوْنَ عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَّاحِدَةً ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ كَانَ بِكُمْ اَذًى

১০২. এবং যখন তুমি তাদের মধ্যে থাক, তখন তাদের জন্যে (নামাযে ইমামত করবে) নামায প্রতিষ্ঠিত কর, যেন তাদের একদল তোমার সাথে দণ্ডায়মান হয় এবং স্ব-স্ব অস্ত্র গ্রহণ করে; অতঃপর যখন সিজদাহ সম্পন্ন করে তখন যেন তারা তোমার পশ্চাদ্বর্তী হয় এবং অন্য দল যারা নামায পড়েনি তারা যেন অগ্রসর হয়ে তোমার সাথে নামায পড়ে এবং স্ব-স্ব সতর্কতা ও অস্ত্র গ্রহণ করে। অবিশ্বাসীরা ইচ্ছে করে যে, তোমরা

مِّنْ مَّطَرٍ اَوْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَنْ تَضَعُوْٓا اَسْلِحَتَكُمْ ۚ وَخُذُوْا حِذْرَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿۱۰۲﴾

স্বীয় অস্ত্র-শস্ত্র ও দ্রব্য সম্ভার সম্বন্ধে অসতর্ক হলেই তারা একযোগে তোমাদের উপর নিপতিত হয় এবং তাতে তোমাদের অপরাধ নেই— যদি তোমরা বৃষ্টিপাতে বিব্রত হয়ে অথবা পীড়িত অবস্থায় স্ব-স্ব অস্ত্র পরিত্যাগ কর এবং স্বীয় সতর্কতা অবলম্বন কর; এবং নিশ্চয়ই আল্লাহ অবিশ্বাসীদের জন্যে অবমাননাকর শাস্তি প্রস্তুত করেছেন।

فَاِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ ۚ فَاِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۚ اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ﴿۱۰۳﴾

১০৩. অনন্তর যখন তোমরা নামায সম্পন্ন কর তখন দণ্ডায়মান ও উপবিষ্ট এবং এলায়িত অবস্থায় আল্লাহকে স্মরণ কর; অতঃপর যখন তোমরা নিরাপদ হও তখন নামায প্রতিষ্ঠিত কর; নিশ্চয়ই নামায বিশ্বাসীগণের উপর নির্দিষ্ট সময়ের জন্য নির্ধারিত।

وَلَا تَهِنُوْا فِى ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ ؕ اِنْ تَكُوْنُوْا تَاْلَمُوْنَ فَاِنَّهُمْ يَاْلَمُوْنَ كَمَا تَاْلَمُوْنَ ۚ وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُوْنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۰۴﴾

১০৪. এবং সে সম্প্রদায়ের অনুসরণে শৈথিল্য করো না যদি তোমরা কষ্ট পেয়ে থাক তবে তারাও তোমাদের অনুরূপ কষ্টভোগ করেছে এবং তৎসহ আল্লাহ হতে তোমাদের যে আশা (জান্নাতের) আছে, তাদের সে আশা নেই এবং আল্লাহ মহাজ্ঞানী, প্রজ্ঞাময়।

اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَآ اَرٰىكَ اللّٰهُ ؕ وَلَا تَكُنْ لِّلْخَآئِنِيْنَ خَصِيْمًا ﴿۱۰۵﴾

১০৫. নিশ্চয়ই আমি তোমার প্রতি সত্যসহ গ্রন্থ অবতীর্ণ করেছি যেন তুমি তদনুযায়ী মানবদের মাঝে বিচার-ফায়সালা করতে পার। যা আল্লাহ তোমাকে শিক্ষা দান করেছেন এবং তুমি বিশ্বাসঘাতকদের পক্ষে বিতর্ককারী হয়ো না।

وَّ اسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۰۶﴾

১০৬. এবং আল্লাহর নিকট ক্ষমা প্রার্থনা কর,[১] নিশ্চয়ই আল্লাহ ক্ষমাশীল, করুণাময়।

وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا اَثِيْمًا ﴿۱۰۷﴾

১০৭. এবং যারা স্বীয় জীবনের প্রতি বিশ্বাসঘাতকতা করে তুমি তাদের পক্ষে বিতর্ক করো না। নিশ্চয়ই আল্লাহ বিশ্বাসঘাতক পাপীকে ভালবাসেন না।

يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللّٰهِ
وَهُوَ مَعَهُمْ اِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى مِنَ الْقَوْلِ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا ﴿۱۰۸﴾

১০৮. তারা মানব হতে আত্মগোপন করে, কিন্তু আল্লাহ হতে গোপন করতে পারে না; এবং তিনি তাদের সঙ্গে থাকেন, যখন তারা রজনীতে তাঁর (আল্লাহর) অপ্রিয় বাক্যে পরামর্শ করে এবং তারা যা করছে আল্লাহ তার পরিবেষ্টনকারী।

هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ جٰدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۟
فَمَنْ يُّجَادِلُ اللّٰهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ
عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿۱۰۹﴾

১০৯. সাবধান– তোমরাই ঐ লোক, যারা ওদের পক্ষ হতে পার্থিব জীবন সম্বন্ধে বিতর্ক করছ; কিন্তু কিয়ামতের দিন তাদের পক্ষ হতে কে আল্লাহর সাথে বিতর্ক করবে এবং কে তাদের দায়িত্বশীল হবে?

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ
اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۱۱۰﴾

১১০. এবং যে কেউ দুষ্কর্ম করে অথবা স্বীয় জীবনের প্রতি অত্যাচার করে পরে আল্লাহর নিকট ক্ষমা প্রার্থী হয়, সে আল্লাহকে ক্ষমাশীল, করুণাময় পাবে।

وَمَنْ يَّكْسِبْ اِثْمًا فَاِنَّمَا يَكْسِبُهٗ عَلٰى نَفْسِهٖ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۱۱﴾

১১১. এবং যে কেউ পাপ অর্জন করে, বস্তুতঃ সে স্বীয় আত্মারই ক্ষতি করে এবং আল্লাহ মহাজ্ঞানী, প্রজ্ঞাময়।

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত তিনি বলেন যে, আমি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি যে, আল্লাহ্‌র কসম অবশ্যই আমি দিনে সত্তর বারেরও অধিক আল্লাহ্‌র নিকট এস্তেগফার (ক্ষমা প্রার্থনা করি) এবং তওবা করে থাকি। (বুখারী, হাদীস নং ৬৩০৭)

وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْٓـَٔةً اَوْ اِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓـًٔا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّ اِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿١١٢﴾

১১২. আর যে কেউ অপরাধ অথবা পাপ অর্জন করে, তৎপরে ওটা নিরাপরাধের প্রতি আরোপ করে,তবে সে নিজেই সে অপবাদ ও প্রকাশ্য পাপ বহন করবে।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ اَنْ يُّضِلُّوْكَ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَيْءٍ ؕ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿١١٣﴾

১১৩. আর যদি তোমার প্রতি আল্লাহর অনুগ্রহ ও করুণা না হতো, তবে তাদের একদল তোমাকে পথভ্রান্ত করতে ইচ্ছুক হয়েছিল, এবং তারা নিজেদেরকে ছাড়া বিপথগামী করেনি আর তারা তোমাকে কোন বিষয়ে ক্লেশ (ক্ষতি) দিতে পারবে না এবং আল্লাহ তোমার প্রতি গ্রন্থ ও বিজ্ঞান অবতীর্ণ করেছেন এবং তুমি যা জানতে না, তিনি তাই তোমাকে শিক্ষা দিয়েছেন এবং তোমার প্রতি আল্লাহর অসীম করুণা রয়েছে।

لَا خَيْرَ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١١٤﴾

১১৪. তাদের অধিকাংশ গুপ্ত পরামর্শে কোন মঙ্গল নিহিত থাকে না, হ্যাঁ, তবে যে ব্যক্তি এরূপ যে দান অথবা কোন সৎ কাজ কিংবা লোকের মধ্যে পরস্পর সন্ধি করে দেবার উৎসাহ প্রদান করে এবং যে আল্লাহর প্রসন্নতা সন্ধানের জন্যে ঐরূপ করে, আমি তাকে মহান বিনিময় প্রদান করবো।

وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿١١٥﴾

১১৫. আর সুপথ প্রকাশিত হওয়ার পর যে রাসূলের বিরুদ্ধাচরণ করে এবং বিশ্বাসীগণের বিপরীত পথে অনুগামী হয়, তবে সে যাতে অভিনিবিষ্ট— আমি তাকে তাতেই প্রত্যাবর্তিত করবো ও তাকে জাহান্নামে নিক্ষেপ করবো এবং ওটা নিকৃষ্টতর প্রত্যাবর্তন স্থল।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿١١٦﴾

১১৬. নিশ্চয়ই আল্লাহ তার সাথে অংশী স্থাপন করাকে ক্ষমা করেন না এবং এতদ্ব্যতীত তিনি যাকে ইচ্ছা ক্ষমা করে থাকেন এবং যে আল্লাহর সাথে অংশীস্থাপন করে তবে সে নিশ্চয়ই চরমভাবে গোমরাহ হয়ে গেল।

إِنْ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا إِنَاثًا وَإِنْ يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَرِيدًا ﴿١١٧﴾

১১৭. তারা তাঁকে পরিত্যাগ করে তৎপরিবর্তে নারী প্রতিমাপুঞ্জকেই আহ্বান করে এবং তারা বিদ্রোহী শয়তানকে ব্যতীত আহ্বান করে না।

لَعَنَهُ اللَّهُ ۘ وَقَالَ لَأَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَفْرُوضًا ﴿١١٨﴾

১১৮. আল্লাহ তাকে অভিসম্পাত করেছেন এবং সে বলেছিল যেঃ আমি অবশ্যই তোমার বান্দাদের হতে এক নির্দিষ্ট অংশ গ্রহণ করবো।

وَلَأُضِلَّنَّهُمْ وَلَأُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ آذَانَ الْأَنْعَامِ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَتَّخِذِ الشَّيْطَانَ وَلِيًّا مِنْ دُونِ اللَّهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُبِينًا ﴿١١٩﴾

১১৯. এবং নিশ্চয়ই আমি তাদেরকে পথভ্রান্ত করবো, মিথ্যা আশ্বাস দিবো এবং তাদেরকে আদেশ করবো, যেন তারা পশুর কর্ণ ছেদন করে এবং তাদেরকে আদেশ করবো, যেন তারা আল্লাহর সৃষ্টি পরিবর্তন করে এবং যে আল্লাহকে পরিত্যাগ করে শয়তানকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করে, নিশ্চয়ই সে প্রকাশ্য ক্ষতিতে ক্ষতিগ্রস্ত হবে।

يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيهِمْ ۖ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ﴿١٢٠﴾

১২০. তিনি তাদেরকে প্রতিশ্রুতি দেন ও আশ্বাস দান করেন এবং শয়তান প্রতারণা ব্যতীত তাদেরকে প্রতিশ্রুতি প্রদান করে না।

أُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُونَ عَنْهَا مَحِيصًا ﴿١٢١﴾

১২১. তাদেরই বাসস্থান জাহান্নাম এবং সেখান হতে তারা কোন আশ্রয়স্থল পাবে না।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ

১২২. এবং যারা বিশ্বাস স্থাপন করেছে ও সৎকর্ম করেছে, আমি

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا ﴿١٢٢﴾

তাদেরকে জান্নাতে দাখিল করবো যার নিম্নে স্রোতস্বিনীসমূহ প্রবাহিত, তন্মধ্যে তারা চিরকাল অবস্থান করবে, আল্লাহর প্রতিশ্রুতি সত্য; এবং কে আল্লাহ অপেক্ষা বাক্যে অধিকতর সত্যপরায়ণ?

لَيْسَ بِاَمَانِيِّكُمْ وَلَآ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ؕ مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٢٣﴾

১২৩. না তোমাদের বৃথা আশায় কাজ হবে আর না আহলে কিতাবের বৃথা আশায়। যে অসৎ কাজ করবে, সে তার প্রতিফল পাবে এবং সে আল্লাহর পরিবর্তে কাউকেও বন্ধু এবং সাহায্যকারী পাবে না।

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿١٢٤﴾

১২৪. পুরুষ অথবা নারীর মধ্যে যে কেউ সৎকার্য করে আর সে বিশ্বাসীও হয় তবে তারাই জান্নাতে প্রবেশ করবে এবং তারা খেজুর কণা পরিমাণও অত্যাচারিত হবে না।

وَمَنْ اَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ﴿١٢٥﴾

১২৫. আর যে আল্লাহর উদ্দেশ্যে আত্মসমর্পণ করেছে ও সৎকার্য করে এবং ইবরাহীমের সুদৃঢ় ধর্মের অনুসরণ করে, তার অপেক্ষা কার ধর্ম উৎকৃষ্ট? এবং আল্লাহ ইবরাহীমকে স্বীয় বন্ধুরূপে গ্রহণ করেছিলেন।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ﴿١٢٦﴾

১২৬. এবং নভোমণ্ডলে যা কিছু ও ভূ-মণ্ডলে যা কিছু আছে তা আল্লাহরই জন্যে এবং আল্লাহ সর্ব বিষয়ে পরিবেষ্টনকারী।

وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَآءِ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ

১২৭. এবং তারা তোমার নিকট নারীদের সম্বন্ধে বিধান জিজ্ঞেস করেছে; তুমি বলঃ আল্লাহ তোমাদেরকে তাদের সম্বন্ধে ব্যবস্থা দান করেছেন এবং ইয়াতীম নারীদের

اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى بِالْقِسْطِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ﴿١٢٧﴾

সম্বন্ধে তোমাদের প্রতি গ্রন্থ হতে পাঠ করা হয়েছে, যাদের জন্যে যা বিধিবদ্ধ হয়েছে তা তোমরা তাদেরকে প্রদান করনা অথচ তাদেরকে বিয়ে করতে বাসনা কর; (আর বলা হয়েছে) এবং শিশুগণের মধ্যে দুর্বলদের ও ইয়াতীমদের প্রতি যেন সুবিচার প্রতিষ্ঠা কর এবং তোমরা যে সৎকার্য কর, নিশ্চয়ই আল্লাহ সে বিষয়ে খুব জানেন।

وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْۢ بَعْلِهَا نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ؕ وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ؕ وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ؕ وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١٢٨﴾

১২৮. যদি কোন স্ত্রীলোক স্বীয় স্বামীর অসদাচরণ ও উপেক্ষার আশঙ্কা করে, তবে তারা পরস্পর কোন সুমীমাংসায় উপনীত হলে তাদের উভয়ের কোন অপরাধ নেই এবং মীমাংসাই কল্যাণকর এবং মনের মধ্যে কৃপণতার প্রলোভন বিদ্যমান রয়েছে আর যদি তোমরা উত্তম কাজ কর ও সংযমী হও তবে তোমরা যা করছো সে বিষয়ে আল্লাহ সম্যক অবগত।

وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْٓا اَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ؕ وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٢٩﴾

১২৯. তোমরা কখনও স্ত্রীগণের মধ্যে সুবিচার করতে পারবে না যদিও তোমরা কামনা কর, সুতরাং তোমরা কোন এক জনের প্রতি সম্পূর্ণরূপে ঝুঁকে পড়ো না ও অপরজনকে ঝুলানো অবস্থায় রেখো না এবং যদি তোমরা নিজেদের সংশোধন কর ও সংযমী হও তবে নিশ্চয়ই আল্লাহ তা'আলা ক্ষমাশীল, করুণাময়।

وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا ﴿١٣٠﴾

১৩০. এবং যদি তারা উভয়ে বিচ্ছিন্ন হয়, তবে আল্লাহ স্বীয় প্রাচুর্য হতে তাদের প্রত্যেককে সম্পদশালী করবেন এবং আল্লাহ মহান দাতা, মহাজ্ঞানী।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَنِيًّا حَمِيْدًا ﴿١٣١﴾

১৩১. নভোমণ্ডলে যা কিছু রয়েছে ও ভূ-মণ্ডলে যা কিছু রয়েছে তা আল্লাহরই জন্যে এবং নিশ্চয়ই তোমাদের পূর্বে যাদেরকে গ্রন্থ প্রদত্ত হয়েছিল, আমি তাদেরকে ও তোমাদেরকে চরম আদেশ করেছিলাম যে, তোমরা আল্লাহকে ভয় কর এবং যদি অবিশ্বাস কর তবে নিশ্চয়ই নভোমণ্ডলে যা কিছু আছে ও ভূ-মণ্ডলে যা কিছু আছে তা আল্লাহরই এবং আল্লাহ মহা সম্পদশালী প্রশংসিত।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٣٢﴾

১৩২. এবং আকাশসমূহে যা কিছু রয়েছে ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে তা আল্লাহরই এবং আল্লাহই কার্য সম্পাদনে যথেষ্ট।

اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ وَيَاْتِ بِاٰخَرِيْنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا ﴿١٣٣﴾

১৩৩. যদি তিনি ইচ্ছে করেন, তবে হে লোক সকল! তোমাদেরকে ধ্বংস করে অন্যদেরকে আনয়ন করবেন এবং আল্লাহ এরূপ করতে সম্পূর্ণ সক্ষম।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ﴿١٣٤﴾

১৩৪. যে ইহলোকের প্রতিদান আকাঙ্খা করে তবে আল্লাহর নিকট ইহলোক ও পরলোকের প্রতিদান রয়েছে এবং আল্লাহ শ্রবণকারী পরিদর্শক।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى بِهِمَا ۫ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰۤى اَنْ تَعْدِلُوْا ۚ وَاِنْ تَلْوٗۤا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١٣٥﴾

১৩৫. হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহর উদ্দেশ্যে সাক্ষ্য দানকারী, সুবিচারে প্রতিষ্ঠিত থাকবে– এবং যদিও এটা তোমাদের নিজের অথবা পিতা-মাতা ও আত্মীয়-স্বজনের বিরুদ্ধে হয়, যদি সে সম্পদশালী বা দরিদ্র হয়, তবে আল্লাহই তাদের জন্যে যথেষ্ট; অতএব, সুবিচারে স্বীয়

প্রবৃত্তির অনুসরণ করো না, এবং যদি তোমরা (বর্ণনায়) বক্রতা অবলম্বন কর বা পশ্চাৎপদ হও, তবে নিশ্চয়ই আল্লাহ তা'আলা তোমাদের সমস্ত কর্মের পূর্ণ সংবাদ রাখেন।[১]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ﴿١٣٦﴾

১৩৬. হে মু'মিনগণ! তোমরা বিশ্বাস স্থাপন কর আল্লাহর প্রতি ও তাঁর রাসূলের প্রতি এবং এ কিতাবের প্রতি যা তিনি তাঁর রাসূলের উপর অবতীর্ণ করেছেন এবং ঐ কিতাবের প্রতি যা পূর্বে অবতীর্ণ করেছিলেন এবং যে কেউ আল্লাহ তদীয় ফেরেশতাসমূহ, তাঁর কিতাবসমূহ তাঁর রাসূলগণ এবং পরকাল সম্বন্ধে অবিশ্বাস করে, তবে নিশ্চয়ই ভীষণভাবে পথভ্রষ্ট হয়েছে।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا ﴿١٣٧﴾ ؕ

১৩৭. নিশ্চয়ই যারা বিশ্বাস করে তৎপর অবিশ্বাসী হয়, পুনরায় বিশ্বাস স্থাপন করে অবিশ্বাস করে, অনন্তর অবিশ্বাসে পরিবর্ধিত হয়, তবে আল্লাহ কখনও তাদেরকে ক্ষমা করবেন না এবং তাদেরকে পথ প্রদর্শন করবেন না।

بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمَا ﴿١٣٨﴾ ۙ

১৩৮. সেই সব মুনাফিকদেরকে সুসংবাদ দাও যে, তাদের জন্যে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি রয়েছে।

اِلَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ﴿١٣٩﴾ ؕ

১৩৯. যারা মু'মিনদেরকে পরিত্যাগ করে কাফিরদের বন্ধুরূপে গ্রহণ করে তারা কি তাদের নিকট সম্মান প্রত্যাশা করে? কিন্তু যাবতীয় সম্মানই আল্লাহর।

১। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে কবীরা গুনাহ্ সম্পর্কে জিজ্ঞসা করা হলে (যে কবীরা গুনাহ্ কি?) তিনি বললেনঃ (ক) আল্লাহ্র সাথে শিরক করা। (খ) পিতা-মাতার নাফরমানী করা, (গ) অন্যায়ভাবে কাউকে হত্যা করা, (ঘ) মিথ্যা সাক্ষী দেয়া। (বুখারী, হাদীস নং ২৬৫৩)

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَ يُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖٓ ۖ اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ جَمِيْعَا ۙ﴿١٤٠﴾

১৪০. এবং নিশ্চয়ই তিনি তোমাদের গ্রন্থের মধ্যে নির্দেশ করেছেন যে, যখন তোমরা আল্লাহর নিদর্শন-সমূহের প্রতি অবিশ্বাস করতে এবং তার প্রতি উপহাস করতে শ্রবণ কর, তখন তাদের সাথে বসবে না, যে পর্যন্ত না তারা অন্য কথার আলোচনা করে, অন্যথা তোমরাও তাদের সদৃশ হয়ে যাবে, নিশ্চয়ই আল্লাহ সে সমস্ত মুনাফিক ও কাফিরদেরকে জাহান্নামে সমবেতকারী।

اَلَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْٓا اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۖ وَاِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ ۙ قَالُوْٓا اَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ﴿١٤١﴾

১৪১. যারা তোমাদের সম্বন্ধে ওঁৎপেতে থাকে এবং যদি তোমাদের আল্লাহর পক্ষ হতে জয়লাভ হয় তবে তারা বলেঃ আমরা কি তোমাদের সঙ্গে ছিলাম না? এবং যদি ওটা অবিশ্বাসীদের ভাগ্যে ঘটে তবে বলেঃ আমরা কি তোমাদের নেতৃত্ব করিনি এবং বিশ্বাসীগণ হতে তোমাদেরকে রক্ষা করিনি? অনন্তর আল্লাহ উত্থান দিবসে তোমাদের মধ্যে বিচার করবেন; এবং কখনও আল্লাহ মুমিনদের প্রতিপক্ষে কাফিরদেরকে বিজয়ী করবেন না।

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَ هُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَاِذَا قَامُوْٓا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى ۙ يُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِيْلًا ۙ﴿١٤٢﴾

১৪২. নিশ্চয়ই মুনাফিকরা আল্লাহর সাথে প্রতারণা করে এবং তিনিও তাদেরকে ঐ প্রতারণা প্রত্যর্পণ করেছেন এবং যখন তারা নামাযের জন্যে দণ্ডায়মান হয় তখন লোকদেরকে দেখাবার জন্যে আলস্যভরে দণ্ডায়মান হয়ে থাকে এবং আল্লাহকে খুব কমই স্মরণ করে থাকে।

مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ۖ لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ وَلَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ

১৪৩. যারা এর মধ্যে সন্দেহ দোলায় দোদুল্যমান রয়েছে তারা এদিকেও নয় ওদিকেও নয় এবং আল্লাহ যাকে

سَبِيْلًا ﴿١٤٣﴾

পথভ্রান্ত করেছেন বস্তুতঃ তুমি তার জন্যে কোনই পথ পাবে না।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٤٤﴾

১৪৪. হে মু'মিনগণ! তোমরা মু'মিনদেরকে ছেড়ে কাফিরদেরকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করো না, তোমরা কি আল্লাহকে তোমাদের বিরুদ্ধে স্পষ্ট প্রমাণ দিতে চাও?

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِى الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا ﴿١٤٥﴾

১৪৫. নিশ্চয়ই মুনাফিকরা জাহান্নামের নিম্নতম স্তরে অবস্থিত হবে এবং তুমি কখনও তাদের জন্যে সাহায্যকারী পাবে না।[১]

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَ اَصْلَحُوْا وَ اعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ وَ اَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ وَ سَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٤٦﴾

১৪৬. কিন্তু যারা ক্ষমা প্রার্থনা করে ও সংশোধিত হয় এবং আল্লাহকে সুদৃঢ়ভাবে ধারণ করে ও আল্লাহর জন্যে তাদের দ্বীনকে বিশুদ্ধ করে, ফলতঃ তারাই মু'মিনদের সঙ্গী এবং অচিরেই আল্লাহ মু'মিনদেরকে উত্তম প্রতিদান প্রদান করবেন।

مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَ اٰمَنْتُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ﴿١٤٧﴾

১৪৭. যদি তোমরা কৃতজ্ঞ হও ও বিশ্বাস স্থাপন কর তবে আল্লাহ তোমাদেরকে শাস্তি প্রদান করে কী করবেন? এবং আল্লাহ গুণগ্রাহী মহাজ্ঞানী।

১। (ক) আব্দুল্লাহ্ ইবনে আমর (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেনঃ চারটি (দোষ) যার মধ্যে থাকে সে খাঁটি মুনাফিক। আর যার মধ্যে উক্ত দোষগুলোর কোন একটি থাকে, তা ত্যাগ না করা পর্যন্ত তার মধ্যে মুনাফেকীর একটি স্বভাব থেকে যায়। (১) তার কাছে কোন আমানত রাখা হলে সে তার খেয়ানত করে। (২) সে কথা বললে মিথ্যা বলে। (৩) ওয়াদা করলে তা ভঙ্গ করে। (৪) আর সে ঝগড়া করলে, গালাগালি দেয়। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪)

(খ) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ কিয়ামতের দিন আল্লাহ্র তা'আলার নিকট সবচেয়ে নিকৃষ্ট মানুষ হিসেবে দেখতে পাবে দু'মুখো নীতি ওয়ালাকে। সে এমন লোক, যে একরূপ নিয়ে আসে ওদের নিকট এবং আরেকরূপ ধরে যায় ওদের নিকট। (বুখারী, হাদীস নং ৬০৫৮)

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ
اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ﴿١٤٨﴾

১৪৮. আল্লাহ কারো অত্যাচারিত হওয়া ব্যতীত অপ্রিয় বাক্য প্রকাশ করা ভালবাসেন না এবং আল্লাহ শ্রবণকারী, মহাজ্ঞানী।

اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْٓءٍ
فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ﴿١٤٩﴾

১৪৯. যদি তোমরা সৎকার্য প্রকাশ কর বা গোপন কর কিংবা অসদ্বিষয় ক্ষমা কর, তবে নিশ্চয়ই আল্লাহ ক্ষমাদানকারী, সর্বশক্তিমান।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيُرِيْدُوْنَ
اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ
بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَّخِذُوْا
بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿١٥٠﴾

১৫০. নিশ্চয়ই যারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূলগণের প্রতি অবিশ্বাস করে এবং আল্লাহ ও তাঁর রাসূলগণের মধ্যে পার্থক্য করতে ইচ্ছে করে এবং বলে যে, আমরা কতিপয়কে বিশ্বাস করি, এবং কতিপয়কে প্রত্যাখ্যান করি। এবং তারা এ মধ্যবর্তী পথ অবলম্বন করতে ইচ্ছা করে।

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ
عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿١٥١﴾

১৫১. ওরাই প্রকৃতপক্ষে অবিশ্বাসী, এবং আমি অবিশ্বাসীদের জন্যে অবমাননাকর শাস্তি প্রস্তুত করে রেখেছি।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ
اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٥٢﴾

১৫২. এবং যারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূলগণের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করে এবং তাদের কোন একজনের মধ্যে পার্থক্য করে না, আল্লাহ তাদেরকেই তাদের প্রতিদান প্রদান করবেন এবং আল্লাহ ক্ষমাশীল, করুণাময়।

يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا
مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ
فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ
بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا

১৫৩. আহলে কিতাবরা তোমার কাছে আবেদন করছে যে, তুমি তাদের প্রতি আকাশ হতে কোন গ্রন্থ নাযিল কর, পরন্তু তারা মূসাকে এটা অপেক্ষাও মারাত্মক প্রশ্ন করেছিল, বরং তারা বলেছিল যেঃ আল্লাহকে প্রকাশ্যভাবে আমাদেরকে প্রদর্শন

جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٥٣﴾

কর; অনন্তর তাদের অবাধ্যতার জন্যে বজ্রধ্বনি তাদেরকে আক্রমণ করেছিল, অতঃপর তাদের নিকট নিদর্শনাবলী আসবার পর তারা গো-বৎসকে গ্রহণ করেছিল (উপাস্য হিসেবে); কিন্তু ওটাও আমি ক্ষমা করেছিলাম এবং মূসাকে প্রকাশ্য প্রভাব প্রদান করেছিলাম।

وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِي السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿١٥٤﴾

১৫৪. এবং আমি তাদের প্রতিশ্রুতির জন্যে তাদের উপর তূর পর্বত সমুচ্চ করেছিলাম এবং তাদেরকে বলেছিলাম যে 'সিজদা' করতে করতে দরজা দিয়ে প্রবেশ কর এবং তাদেরকে আরও বলেছিলাম যে, শনিবারের সীমা অতিক্রম করো না এবং আমি তাদের নিকট কঠোর প্রতিশ্রুতি গ্রহণ করেছিলাম।[১]

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٥٥﴾

১৫৫. কিন্তু তাদের প্রতিশ্রুতি ভঙ্গ এবং আল্লাহর নিদর্শনাবলীর প্রতি তাদের অবিশ্বাস ও তাদের অন্যায়ভাবে নবীগণ হত্যা এবং তাদের এ উক্তির কারণে যে আমাদের অন্তরসমূহ আচ্ছন্ন; বরং তাদের অবিশ্বাস হেতু আল্লাহ এর উপর মোহর অঙ্কিত করেছেন, এ কারণে তারা অল্প সংখ্যক ব্যতীত বিশ্বাস করে না।

وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ بُهْتَانًا عَظِيْمًا ﴿١٥٦﴾

১৫৬. এবং তাদের অবিশ্বাস ও মারইয়ামের প্রতি তাদের ভয়ানক অপবাদের জন্য।

১। হাম্মাদ ইবনে মুনাব্বেহ হতে বর্ণিত নিশ্চয়ই তিনি আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু)-কে বলতে শুনেছে যে, রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ বনী ইসরাইলকে বলা হয়েছিল যে, তোমরা (প্রস্তাবিত শহরে) সিজদারত অবস্থায় প্রবেশ দ্বার দিয়ে প্রবেশ কর এবং বল, (হে আল্লাহ্!) আমাদেরকে ক্ষমা করে দিন। তারা তা পরিবর্তন (সিজদারত অবস্থায় প্রবেশ না করে) নিতম্বের উপর ভর করে এবং আমাদেরকে ক্ষমা করুন এর পরিবর্তে যবের দানা চাই বলতে বলতে প্রবেশ করল। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪০৩)

وَّ قَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ؕ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ۙ ﴿١٥٧﴾

১৫৭. এবং আল্লাহর রাসূল মারইয়াম নন্দন ঈসাকে আমরা হত্যা করেছি একথা বলার জন্যে; আর মূলতঃ তারা তাকে হত্যা করেনি ও তাকে ক্রুশবিদ্ধও করেনি বরং তাদের জন্য (অন্যকে) ঈসা (عليه السلام)-এর সাদৃশ্য বানিয়ে দেয়া হয়েছিল এবং নিশ্চয়ই যারা তাতে মতবিরোধ করেছিল, অবশ্য তারাই সে বিষয়ে সন্দেহাচ্ছন্ন ছিল, কল্পনার অনুসরণ ব্যতীত এ বিষয়ে তাদের কোন জ্ঞান ছিল না এবং তারা প্রকৃতপক্ষে তাকে হত্যা করেনি।

بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿١٥٨﴾

১৫৮. বরং আল্লাহ তাকে নিজের দিকে উঠিয়ে নিয়েছেন, এবং আল্লাহ পরাক্রান্ত, মহাজ্ঞানী।

وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا ۚ ﴿١٥٩﴾

১৫৯. কিতাবীদের মধ্যে প্রত্যেকে তার মৃত্যুর পূর্বে তাঁর উপর (ঈসা আলাইহিস্‌সালাম) বিশ্বাস করবেই এবং কিয়ামত দিবসে তিনি তাদের উপর সাক্ষী হবেন।

فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۙ ﴿١٦٠﴾

১৬০. আমি ইয়াহূদীদের জুলুমের কারণে তাদের জন্যে যে সমস্ত পবিত্র বস্তু বৈধ ছিল তা তাদের প্রতি অবৈধ করেছি এবং যেহেতু তারা অনেককে আল্লাহর পথ হতে প্রতিরোধ করতো।

وَّاَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا عَنْهُ وَاَكْلِهِمْ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٦١﴾

১৬১. এবং তারা সুদ নিষিদ্ধ হওয়া সত্ত্বেও গ্রহণ করতো এবং তারা অন্যায়ভাবে লোকদের ধন-সম্পদ গ্রাস করতো এবং আমি তাদের মধ্যস্থ অবিশ্বাসীদের জন্যে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি প্রস্তুত করে রেখেছি।

لٰكِنِ الرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٦٢﴾

১৬২. কিন্তু তাদের মধ্যে যারা জ্ঞানে সুপ্রতিষ্ঠিত এবং বিশ্বাসীগণের মধ্যে যারা তোমার প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে এবং তোমার পূর্বে যা অবতীর্ণ হয়েছিল তৎপ্রতি বিশ্বাস স্থাপন করে এবং যারা নামায প্রতিষ্ঠাকারী ও যাকাত প্রদানকারী এবং আল্লাহ ও পরকালের প্রতি বিশ্বাস স্থাপনকারী, তাদেরকেই আমি প্রচুর প্রতিদান প্রদান করবো।

اِنَّآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ كَمَآ اَوْحَيْنَآ اِلٰى نُوْحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۚ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَعِيْسٰى وَاَيُّوْبَ وَيُوْنُسَ وَهٰرُوْنَ وَسُلَيْمٰنَ ۚ وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿١٦٣﴾

১৬৩. নিশ্চয়ই আমি তোমার প্রতি প্রত্যাদেশ করেছি; যেরূপ আমি নূহ ﷺ ও তৎপরবর্তী নবীগণের প্রতি প্রত্যাদেশ করেছিলাম এবং ইবরাহীম ﷺ, ইসমাঈল ﷺ, ইসহাক, ইয়াকূব ﷺ ও তদ্বংশীয়গণের প্রতি এবং ঈসা ﷺ, আইয়ুব ﷺ, ইউনুস ﷺ, হারূন ﷺ ও সুলাইমান ﷺ-এর প্রতি প্রত্যাদেশ করেছিলাম এবং আমি দাঊদকে ﷺ যাবূর প্রদান করেছিলাম।

১। (ক) আলকামা বিন ওয়াক্কাস লাইসী বলেন, আমি শুনেছি উমর ইবনুল খাত্তাব (রাযিআল্লাহু আনহু) মসজিদের মিম্বারের ওপর উঠে বলেছিলেন; আমি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছিঃ সব কাজই নিয়াত (সংকল্প) অনুযায়ী হয়। আর প্রত্যেক ব্যক্তি যা নিয়াত করে তাই পায়। কাজেই যার হিজরাত দুনিয়া লাভের বা কোন মেয়েকে বিয়ে করার নিয়তে হয়েছে তার হিজরাত উক্ত উদ্দেশ্যই হয়েছে। (বুখারী, হাদীস নং ১)

(খ) উম্মুল মু'মিনীন হযরত আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) থেকে বর্ণিত আছে, হারিস ইবনে হিশাম রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে জিজ্ঞেস করলেন, 'হে আল্লাহ্র রাসূল! আপনার নিকট ওহী কিভাবে আসে? রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ 'ওহী কোন সময় ঘণ্টার আওয়াজের মত আমার নিকট আসে। আর ওটাই আমার পক্ষে সবচেয়ে কষ্টদায়ক ওহী, আমার থেকে ঘাম ঝরে পড়ত। (ফেরেশ্তা) যা বলে, তা শেষ হতেই আমি তার কাছ থেকে আয়ত্ত করে ফেলি। আবার কোন সময় ফেরেশ্তা মানুষের আকারে এসে আমাকে যে ওহী বলেন, আমি তা সাথে সাথেই আয়ত্ত করে নেই।

আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) বলেন, 'আমি প্রচন্ড শীতের দিনেও রাসূলুল্লাহ্র উপর (প্রথম প্রকার) ওহী নাযিল হওয়ার পর তাঁর কপাল থেকে ঘাম ঝরে পড়তে দেখেছি।' (বুখারী, হাদীস নং ২)

وَ رُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَ رُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ؕ وَ كَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِيْمًا ﴿۱۶۴﴾

১৬৪. আর নিশ্চয়ই আমি তোমার নিকট ইতিপূর্বে বহু রাসূলের প্রসঙ্গ বর্ণনা করেছি এবং অনেক রাসূল যাদের কথা তোমাকে বলিনি; আল্লাহ মূসার সাথে প্রত্যক্ষ বাক্যে কথা বলেছেন।

رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَ مُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۱۶۵﴾

১৬৫. আমি সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারী রাসূলগণকে প্রেরণ করেছি যাতে রাসূলগণের পরে লোকদের জন্য আল্লাহর উপর কোন অজুহাত দাঁড় করানোর সুযোগ না থাকে এবং আল্লাহ অতীব সম্মানী, মহাজ্ঞানী।

لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَاۤ اَنْزَلَ اِلَيْكَ اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ يَشْهَدُوْنَ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ؕ ﴿۱۶۶﴾

১৬৬. কিন্তু আল্লাহ তোমার প্রতি যা অবতীর্ণ করেছেন, তৎসম্বন্ধে তিনি সজ্ঞানে অবতারণার সাক্ষ্য দান করছেন এবং ফেরেশতাগণও সাক্ষ্য প্রদান করছেন এবং সাক্ষ্য দানে আল্লাহই যথেষ্ট।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ صَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ﴿۱۶۷﴾

১৬৭. নিশ্চয়ই যারা অবিশ্বাস করেছে এবং আল্লাহর পথ হতে প্রতিরোধ করেছে, অবশ্যই তারা চরমভাবে বিভ্রান্ত হয়েছে।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ ظَلَمُوْا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَ لَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيْقًا ﴿۱۶۸﴾

১৬৮. নিশ্চয়ই যারা অবিশ্বাসী হয়েছে ও অত্যাচার করেছে, আল্লাহ তাদেরকে ক্ষমা করবেন না এবং তাদেরকে সুপথ প্রদর্শন করবেন না।

اِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ وَ كَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿۱۶۹﴾

১৬৯. জাহান্নামের পথ ব্যতীত, তন্মধ্যে তারা চিরকাল অবস্থান করবে এবং এটা আল্লাহর পক্ষে সহজসাধ্য।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ

১৭০. হে লোক সকল! নিশ্চয়ই তোমাদের প্রতিপালকের সন্নিধান

رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٧٠﴾

হতে সত্যসহ রাসূল আগমন করেছেন, অতএব বিশ্বাস স্থাপন কর –তোমাদের কল্যাণ হবে, আর যদি অবিশ্বাস কর তবে নভোমণ্ডলে ও ভূ-মণ্ডলে যা কিছু আছে তা আল্লাহর এবং আল্লাহ মহাজ্ঞানী, প্রজ্ঞাময়।

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِىْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ اِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهٗ ۚ اَلْقٰهَاۤ اِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ مِّنْهُ ۫ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۟ وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ؕ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ سُبْحٰنَهٗۤ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٧١﴾

১৭১. হে আহলে কিতাবগণ! তোমরা স্বীয় দ্বীনে সীমা অতিক্রম করো না এবং আল্লাহর বিরুদ্ধে সত্য ব্যতীত বলো না, নিশ্চয়ই মারইয়াম পুত্র ঈসা মাসীহ আল্লাহর রাসূল ও তাঁর বাণী–যা তিনি মারইয়ামের প্রতি সঞ্চারিত করেছিলেন এবং তাঁর পক্ষ হতে আত্মা (রূহ) অতএব আল্লাহ ও তদীয় রাসূলগণের উপর বিশ্বাস স্থাপন কর এবং (মা'বূদের সংখ্যা) তিনজন বলো না; নিবৃত্ত হও– তোমাদের কল্যাণ হবে; নিশ্চয়ই একমাত্র আল্লাহই মা'বূদ; তিনি কোন সন্তান হওয়া হতে পুতঃ মুক্ত; নভোমণ্ডলে যা আছে ও ভূ-মণ্ডলে যা আছে তা তাঁরই এবং আল্লাহই কার্য সম্পাদনে যথেষ্ট।[১]

১। উবাদা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেন। নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি এ সাক্ষ্য প্রদান করে যে, আল্লাহ্ ব্যতীত আর সত্য কোন মা'বূদ নেই। তিনি এক এবং তার কোন শরীক নেই (আরো সাক্ষ্য প্রদান করে) যে, মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তাঁর বান্দা ও রাসূল। আর নিশ্চয় ঈসা (আলাইহিস্ সালাম) আল্লাহ্র বান্দা এবং তাঁর রাসূল ও তাঁর সেই কালিমা যা তিনি মারইয়াম (আলাইহাস্সালাম)-এর মধ্যে পৌঁছিয়েছেন এবং তিনি তারই তরফ হতে রূহ বিশেষ। এবং (এ বিশ্বাস রাখে যে) জান্নাত সত্য ও জাহান্নাম সত্য। তার আমল যা-ই হোক না কেন, আল্লাহ্ তাকে জান্নাতে প্রবেশ করাবেন। অলীদ বলেছেনঃ আমাকে হাদীস শুনিয়েছেন জাবের উমাইর থেকে সে জুনাদা থেকে এবং এতটুকু বৃদ্ধি করে বলেছে যে, জান্নাতের আটটি দরজার মধ্যে যেটি দিয়ে সে চায় জান্নাতে প্রবেশ করবে। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৩৫)

لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ﴿١٧٢﴾

১৭২. আল্লাহর বান্দা হবেন মাসীহ এবং সান্নিধ্য প্রাপ্ত ফেরেশতাগণ ও তাতে তাঁদের কোনই সংকোচ নেই এবং যে তাঁর ইবাদতে সংকুচিত হয় ও অহংকার করে, তিনি তাদের সকলকে নিজের দিকে একত্রিত করবেন।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا وَاسْتَكْبَرُوْا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٧٣﴾

১৭৩. সুতরাং যারা বিশ্বাস স্থাপন করেছে ও সৎকার্য করে থাকে, তাদেরকে তিনি তাদের সম্যক *প্রতিদান প্রদান করবেন এবং* স্বীয় অনুগ্রহে আরও অধিকতর দান করবেন এবং যারা সংকুচিত হয় ও অহংকার করে, তাদেরকে তিনি যন্ত্রণাপ্রদ শাস্তি প্রদান করবেন এবং আল্লাহ ব্যতীত তারা নিজেদের জন্য কোন অভিভাবক বা সাহায্যকারী পাবে না।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا ﴿١٧٤﴾

১৭৪. হে লোক সকল! তোমাদের প্রতিপালকের সন্নিধান হতে তোমাদের নিকট প্রত্যক্ষ প্রমাণ এসেছে এবং আমি তোমাদের প্রতি সমুজ্জ্বল জ্যোতি অবতীর্ণ করেছি।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا بِهٖ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِيْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ ۙ وَّيَهْدِيْهِمْ اِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿١٧٥﴾

১৭৫. অতঃপর যারা আল্লাহর প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করেছে এবং তাঁকে সুদৃঢ় রূপে ধারণ করেছে, ফলতঃ তিনি তাদেরকে স্বীয় রহমত ও কল্যাণের দিকে প্রবিষ্ট করবেন এবং স্বীয় সরল পথে পথ-প্রদর্শন করবেন।

يَسْتَفْتُوْنَكَ ؕ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِي الْكَلٰلَةِ ؕ اِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ لَيْسَ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَهٗۤ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ

১৭৬. তারা তোমার নিকট ফতোয়া প্রার্থনা করছে, তুমি বলঃ আল্লাহ তোমাদের পিতা-পুত্রহীন (ব্যক্তির অর্থ বন্টন) সম্বন্ধে ফতোয়া দান করছেন,

مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَآ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا تَرَكَ ۚ وَاِنْ كَانُوْٓا اِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَآءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ۗ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اَنْ تَضِلُّوْا ۗ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٧٦﴾

যদি কোন ব্যক্তি নিঃসন্তান অবস্থায় মরে যায় এবং তার ভগ্নী থাকে তবে সে তার পরিত্যক্ত সম্পত্তি হতে অর্ধাংশ পাবে; এবং যদি কোন নারীর সন্তান না থাকে তবে তার ভ্রাতাই তদীয় উত্তরাধিকারী হবে; কিন্তু যদি দু'ভগ্নি থাকে তবে তাদের উভয়ের জন্যে পরিত্যাক্ত বিষয়ের দুই তৃতীয়াংশ এবং যদি তারা ভ্রাতা-ভগ্নি পুরুষ ও নারীগণ থাকে, তবে পুরুষ দু'নারীর তুল্য অংশ পাবে, আল্লাহ তোমাদের জন্যে বর্ণনা করছেন যেন তোমরা বিভ্রান্ত না হও এবং আল্লাহ সর্ববিষয়ে মহাজ্ঞানী।

سُوْرَةُ الْمَآئِدَةِ مَدَنِيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ١٢٠ رُكُوْعَاتُهَا ١٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

সূরাঃ মায়িদাহ্, মাদানী

(আয়াতঃ ১২০ রুকূ'ঃ ১৬)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ۗ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّى الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ ﴿١﴾

১. হে মু'মিনগণ! তোমরা তোমাদের ওয়াদাগুলো পূরণ কর। তোমাদের জন্যে চুতষ্পদ জন্তু হালাল করা হয়েছে। তবে যেগুলো হারাম হওয়া সম্পর্কে তোমাদের উপর পবিত্র কুরআনের আয়াতগুলো অবতীর্ণ হয়েছে সেগুলো এবং ইহরাম বাঁধা অবস্থায় তোমাদের শিকার করা জন্তুগুলো হালাল নয়। নিশ্চয়ই আল্লাহ তাঁর ইচ্ছামত হুকুম করে থাকেন।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَآئِدَ وَلَآ اٰمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ؕ وَاِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ؕ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۪ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٢

২. হে ঈমানদারগণ! তোমরা আল্লাহর নিদর্শনাবলী, নিষিদ্ধ মাসগুলো, হারামে কুরবানীর জন্যে প্রেরিত পশু, কুরবানীর পশুগুলোর গলায় ব্যবহৃত চিহ্নগুলো এবং যারা তাদের প্রতিপালকের সন্তুষ্টি ও অনুগ্রহ পাবার জন্যে সম্মানিত ঘরে যাবার ইচ্ছে করে তাদের অবমাননা করা বৈধ মনে করো না। আর তোমরা যখন ইহরাম মুক্ত হও তখন শিকার কর। যারা তোমাদেরকে পবিত্র মসজিদে যেতে বাধা দিয়েছে সেই সম্প্রদায়ের দুশমনি যেন তোমাদেরকে সীমা ছাড়িয়ে যেতে উৎসাহিত না করে। নেক কাজ করতে ও সংযমী হতে তোমরা পরস্পরকে সাহায্য কর। তবে পাপ ও শত্রুতার ব্যাপারে তোমরা এক অপরকে সাহায্য করো না। আর তোমরা আল্লাহকে ভয় কর। নিশ্চয়ই আল্লাহ কঠিন শাস্তি দাতা।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيْحَةُ وَمَآ اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ ۫ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ؕ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ ؕ اَلْيَوْمَ يَئِسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ؕ اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ؕ فَمَنِ اضْطُرَّ فِيْ مَخْمَصَةٍ غَيْرَ

৩. তোমাদের জন্যে মৃত, রক্ত, শূকরের মাংস, আল্লাহ ছাড়া অপরের নামে উৎসর্গীকৃত পশু, গলাটিপে মারা পশু, প্রহারে মৃত পশু, উপর হতে পড়ে মৃত পশু, শৃংগাঘাতে মৃত পশু এবং হিংস্র জন্তুতে খাওয়া পশু হারাম করা হয়েছে। তবে যা তোমরা যবেহ দ্বারা পবিত্র করেছ তা হালাল। আর যে সমস্ত পশুকে পূজার বেদীর উপর বলি দেয়া হয়েছে তা এবং জুয়ার তীর দ্বারা ভাগ্য নির্ণয় করাও তোমাদের জন্যে হারাম করা হয়েছে। এসবগুলো পাপ কাজ।

مُتَجَانِفٍ لِّاِثْمٍ ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٣

আজ সত্যের প্রত্যাখ্যানকারীগণ তোমাদের দ্বীনের বিরুদ্ধাচরণের ব্যাপারে হতাশ হয়ে পড়েছে। সুতরাং তোমরা তাদেরকে ভয় করো না, শুধু আমাকেই ভয় করো। আজ তোমাদের জন্যে তোমাদের দ্বীন পূর্ণাঙ্গ করলাম। তোমাদের প্রতি আমার অনুগ্রহ সম্পূর্ণ করলাম এবং ইসলামকে তোমাদের দ্বীন মনোনীত করলাম। তবে কেউ পাপের দিকে না ঝুঁকে ক্ষুধার তাড়নায় ওগুলো (উল্লিখিত হারাম বস্তুগুলো) ভক্ষণ করতে বাধ্য হলে সেগুলো খাওয়া তার জন্যে হারাম হবে না। কারণ নিশ্চয়ই আল্লাহ ক্ষমাশীল ও দয়ালু।

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَآ اُحِلَّ لَهُمْ ؕ قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۙ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ ۫ فَكُلُوْا مِمَّآ اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝٤

৪. তারা তোমাকে জিজ্ঞেস করে, তাদের জন্যে কি কি হালাল করা হয়েছে? তুমি বল পবিত্র জিনিসগুলো তোমাদের জন্যে হালাল করা হয়েছে। তোমরা যে সমস্ত পশু-পাখীকে শিকার করা শিক্ষা দিয়েছ; যেভাবে আল্লাহ্ তোমাদেরকে শিক্ষা দিয়েছেন তারা যা শিকার করে আনে তা তোমরা খাও এবং ওগুলোকে শিকারের জন্য পাঠাবার সময় আল্লাহর নাম স্মরণ কর। তোমরা আল্লাহকে ভয় কর, নিশ্চয়ই আল্লাহ হিসাব গ্রহণে তৎপর।

اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ؕ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ ۪ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۫ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ

৫. আজ তোমাদের জন্যে পবিত্র বস্তুগুলো হালাল করা হয়েছে, আর আহলে কিতাবের যবেহকৃত জীবও, তোমাদের জন্যে হালাল এবং তোমাদের যবেহকৃত জীবও তাদের জন্যে হালাল। আর সতী-সাধ্বী

مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْٓ اَخْدَانٍ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ ۡ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝٥

মুসলিম নারীরাও এবং তোমাদের পূর্ববর্তী আহলে কিতাবের মধ্যকার সতী-সাধ্বী নারীরাও (তোমাদের জন্যে হালাল), যখন তোমরা তাদেরকে তাদের বিনিময় (মহর) প্রদান কর, এরূপে যে, (তাদেরকে) তোমাদের পত্নীরূপে গ্রহণ করে নাও, না প্রকাশ্যে ব্যভিচার কর, আর না গোপন প্রণয় কর; আর যে ব্যক্তি ঈমানের সাথে কুফরী করে তার আমল নিষ্ফল হয়ে যাবে এবং সে পরকালে সম্পূর্ণরূপে ক্ষতিগ্রস্ত হবে।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ؕ مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٦

৬. হে মু'মিনগণ! যখন তোমরা নামাযের উদ্দেশ্যে দণ্ডায়মান হও তখন (নামাযের পূর্বে) তোমাদের মুখমণ্ডল ধৌত কর এবং হাত গুলোকে কনুই পর্যন্ত ধুয়ে নাও আর মাথা মাসেহ কর এবং পা গুলোকে টাখনু পর্যন্ত ধুয়ে ফেল;[১] কিন্তু যদি তোমরা অপবিত্র থাক তা'হলে বিশেষ ভাবে পবিত্র হবে। আর যদি তোমরা রোগ গ্রস্ত হও কিংবা সফরে থাক অথবা তোমাদের কেউ পায়খানা হতে আসে কিংবা তোমরা স্ত্রীদেরকে স্পর্শ কর (স্ত্রী সহবাস কর), অতঃপর পানি না পাও তবে পবিত্র মাটি দ্বারা তায়াম্মুম করে নাও, তখন তোমরা তা দ্বারা তোমাদের মুখমণ্ডল ও হাত মাসেহ কর, আল্লাহ তোমাদের উপর কোন

১। নুআইস আল মুজ্‌মের থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ আমি আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু)-এর সাথে মসজিদের ছাদে উঠলাম, তিনি ওযূ করে বললেনঃ আমি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি যে, আমার উম্মতেরা কিয়ামতের দিন তাদেরকে গুররাল- মুহা-জ্জালীন বলে ডাকা হবে। (ওযূর অঙ্গ-প্রতঙ্গগুলো উজ্জ্বল অবস্থায় উপস্থিত হবে।) কাজেই তোমাদের মধ্যে যে ব্যক্তি তার উজ্জ্বলতাকে বৃদ্ধি করতে সক্ষম সে যেন তা (বৃদ্ধি) করে। (বুখারী, হাদীস নং ১৩৬)

সংকীর্ণতা আনয়ন করতে চান না, বরং তিনি তোমাদেরকে পবিত্র করতে ও তোমাদের উপর স্বীয় নিয়ামত পূর্ণ করতে চান, যেন তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِيْ
وَاثَقَكُمْ بِهٖٓ ۙ اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۡ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٧

৭. আর তোমরা তোমাদের প্রতি বর্ষিত আল্লাহর অনুগ্রহকে স্মরণ কর এবং তাঁর ঐ অঙ্গীকারকেও স্মরণ কর যে অঙ্গীকার তিনি তোমাদের নিকট থেকে গ্রহণ করেছেন, যখন তোমরা বলেছিলেঃ আমরা শুনলাম ও মেনে নিলাম, আর তোমরা আল্লাহকে ভয় কর, নিশ্চয়ই তিনি অন্তর্নিহিত কথাগুলোরও পূর্ণ খবর রাখেন।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ
بِالْقِسْطِ ۡ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ
اِعْدِلُوْا ۟ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۡ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝٨

৮. হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহর উদ্দেশ্যে বিধানসমূহ পূর্ণরূপে প্রতিষ্ঠাকারী ও ন্যায়ের সাথে সাক্ষ্য দানকারী হয়ে যাও, কোন বিশেষ সম্প্রদায়ের শত্রুতা যেন তোমাদেরকে এর প্রতি উদ্যত না করে যে, তোমরা ন্যায়বিচার করবে না, তোমরা ন্যায়বিচার কর, এটা তাকওয়ার অধিকতর নিকটবর্তী এবং আল্লাহকে ভয় কর, নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাদের কৃতকর্ম সম্বন্ধে পূর্ণ ওয়াকিফহাল।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ
لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝٩

৯. যারা ঈমান এনেছে ও ভাল কাজ করেছে, তাদেরকে আল্লাহ প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন যে, তাদের জন্যে ক্ষমা ও মহান পুরস্কার রয়েছে।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝١٠

১০. পক্ষান্তরে যারা কুফরি করেছে এবং আমার বিধানসমূহকে মিথ্যা অভিহিত করেছে, তারাই হচ্ছে জাহান্নামের অধিবাসী।

সংকীর্ণতা আনয়ন করতে চান না, বরং তিনি তোমাদেরকে পবিত্র করতে ও তোমাদের উপর স্বীয় নিয়ামত পূর্ণ করতে চান, যেন তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِيْ
وَاثَقَكُمْ بِهٖٓ ۙ اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۡ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٧

৭. আর তোমরা তোমাদের প্রতি বর্ষিত আল্লাহর অনুগ্রহকে স্মরণ কর এবং তাঁর ঐ অঙ্গীকারকেও স্মরণ কর যে অঙ্গীকার তিনি তোমাদের নিকট থেকে গ্রহণ করেছেন, যখন তোমরা বলেছিলেঃ আমরা শুনলাম ও মেনে নিলাম, আর তোমরা আল্লাহকে ভয় কর, নিশ্চয়ই তিনি অন্তর্নিহিত কথাগুলোরও পূর্ণ খবর রাখেন।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ
بِالْقِسْطِ ۡ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ
اِعْدِلُوْا ۟ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۡ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝٨

৮. হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহর উদ্দেশ্যে বিধানসমূহ পূর্ণরূপে প্রতিষ্ঠাকারী ও ন্যায়ের সাথে সাক্ষ্য দানকারী হয়ে যাও, কোন বিশেষ সম্প্রদায়ের শত্রুতা যেন তোমাদেরকে এর প্রতি উদ্যত না করে যে, তোমরা ন্যায়বিচার করবে না, তোমরা ন্যায়বিচার কর, এটা তাকওয়ার অধিকতর নিকটবর্তী এবং আল্লাহকে ভয় কর, নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাদের কৃতকর্ম সম্বন্ধে পূর্ণ ওয়াকিফহাল।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ
لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝٩

৯. যারা ঈমান এনেছে ও ভাল কাজ করেছে, তাদেরকে আল্লাহ প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন যে, তাদের জন্যে ক্ষমা ও মহান পুরস্কার রয়েছে।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝١٠

১০. পক্ষান্তরে যারা কুফরি করেছে এবং আমার বিধানসমূহকে মিথ্যা অভিহিত করেছে, তারাই হচ্ছে জাহান্নামের অধিবাসী।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ يَّبْسُطُوْۤا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾

১১. হে মু'মিনগণ! তোমাদের প্রতি আল্লাহ যে অনুগ্রহ করেছেন তা স্মরণ কর, যখন এক সম্প্রদায় এ চিন্তায় ছিল যে, তোমাদের দিকে তাদের হস্ত প্রসারিত করবে; কিন্তু আল্লাহ তাদের হাতকে তোমাদের দিক থেকে থামিয়ে দিয়েছেন এবং তোমরা আল্লাহকে ভয় কর এবং মু'মিনদের আল্লাহর উপরই ভরসা করা উচিত।

وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۚ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَىْ عَشَرَ نَقِيْبًا ؕ وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مَعَكُمْ ؕ لَئِنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ بِرُسُلِيْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿١٢﴾

১২. আর আল্লাহ বানী ইসরাঈলদের নিকট থেকে অঙ্গীকার নিয়েছিলেন এবং আমি তাদের মধ্য হতে বারোজন দলপতি নিযুক্ত করেছিলাম; এবং আল্লাহ বলেছিলেনঃ আমি তোমাদের সাথে রয়েছি; যদি তোমরা নামায প্রতিষ্ঠা কর ও যাকাত দিতে থাক এবং আমার রাসূলদের উপর ঈমান আনতে থাক ও তাদেরকে সাহায্য করতে থাক এবং আল্লাহকে উত্তমরূপে কর্জ দিতে থাক। তবে আমি অবশ্যই তোমাদের গুনাহগুলো তোমাদের থেকে মাফ করে দেবো এবং অবশ্যই তোমাদেরকে এমন জান্নাতে প্রবেশ করাবো যার তলদেশে নহরসমূহ বইতে থাকবে, অনন্তর তোমাদের মধ্যে যে ব্যক্তি এরপরও কুফরী করবে, নিশ্চয়ই সে সোজা পথ থেকে দূরে সরে পড়লো।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا

১৩. বস্তুতঃ শুধু তাদের প্রতিশ্রুতি ভঙ্গের দরুনই আমি তাদের উপর আমার অভিশাপ অবতীর্ণ করি এবং তাদের হৃদয়কে কঠিন করে দেয়।

حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰى
خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ
وَاصْفَحْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣﴾

তারা কালাম (তাওরাত)-কে ওর স্থানসমূহ হতে পরিবর্তন করে দেয়, (বিকৃত ঘটাতো) এবং তাদেরকে যা কিছু উপদেশ দেয়া হয়েছিল তারা তার মধ্য হতে একটা অংশকে ভুলে গেলো আর প্রতিনিয়ত তুমি তাদের ব্যাপারে অবগত হবে যে, তাদের সামান্য কিছু লোক ছাড়া অধিকাংশই বিশ্বাসঘাকতা করে চলেছে। অতএব তুমি তাদেরকে ক্ষমা করতে থাক এবং তাদেরকে মার্জনা করতে থাক; নিশ্চয়ই আল্লাহ অনুগ্রহকারীদেরকে ভালবাসেন।

وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰٓى اَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ
فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۠ فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ وَسَوْفَ
يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١٤﴾

১৪. আর যারা বলেঃ আমরা নাসারা, আমি তাদের নিকট থেকেও ওয়াদা নিয়েছিলাম, কিন্তু তাদেরকেও যা কিছু উপদেশ দেয়া হয়েছিল তার মধ্য হতে তারা একটা অংশ ভুলে গেলো। সুতরাং আমি তাদের পরস্পরের মধ্যে হিংসা ও শত্রুতা সঞ্চার করে দিলাম কিয়ামতের দিন পর্যন্ত এবং অচিরেই আল্লাহ তাদেরকে তাদের কৃতকর্ম সম্বন্ধে সংবাদ দেবেন।

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيْرًا
مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ؕ
قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾

১৫. হে আহলে কিতাবগণ! তোমাদের কাছে আমার রাসূল এসেছেন, তোমরা কিতাবের যেসব বিষয় গোপন কর তন্মধ্য হতে বহু বিষয় তিনি তোমাদের সামনে পরিষ্কারভাবে বর্ণনা করেন, আর বহু বিষয় থেকে এড়িয়ে যান। তোমাদের কাছে আল্লাহর নিকট থেকে এক আলোকময় জ্যোতি এবং একটি সুস্পষ্ট কিতাব এসেছে।

يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ وَيُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ وَ يَهْدِيْهِمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٦﴾

১৬. তা দ্বারা আল্লাহ এরূপ লোকদেরকে শান্তির পন্থাসমূহ বলে দেন যারা তাঁর সন্তুষ্টি লাভ করতে চায় এবং তিনি তাদেরকে নিজ তাওফীকে ও করুণায় (কুফরীর) অন্ধকার থেকে বের করে (ঈমানের) আলোর দিকে আনয়ন করেন এবং তাদেরকে সরল (সঠিক) পথে প্রতিষ্ঠিত রাখেন।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ اَنْ يُّهْلِكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ؕ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾

১৭. অবশ্যই তারা কুফুরী করেছে যারা বলেঃ নিশ্চয়ই আল্লাহ স্বয়ং হচ্ছেন মাসীহ ইবনু মারইয়াম, তুমি (হে মুহাম্মদ ﷺ)! বলঃ তাহলে যদি আল্লাহ মাসীহ ইবনু মারইয়ামকে ও তার মাকে এবং ভূ-পৃষ্ঠে যারা আছে তাদের সবাইকে ধ্বংস করার ইচ্ছা করেন, তবে এরূপ কে আছে যে তাদেরকে আল্লাহ হতে একটুও রক্ষা করতে পারে? আল্লাহর জন্যেই রাজত্ব নির্দিষ্ট রয়েছে আকাশসমূহে ও যমীনে এবং এতদুভয়ের মধ্যস্থিত যাবতীয় বস্তুর উপর; তিনি যা ইচ্ছা করেন তাই সৃষ্টি করেন, আর আল্লাহ সকল বস্তুর উপর পূর্ণ ক্ষমতাবান।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۫ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿١٨﴾

১৮. ইয়াহূদী ও নাসারাগণ বলেঃ আমরা আল্লাহর পুত্র ও তাঁর প্রিয়পাত্র, তুমি বলে দাওঃ আচ্ছা তাহলে তিনি তোমাদেরকে তোমাদের পাপের দরুন কেন শাস্তি প্রদান করবেন? বরং তোমরাও অন্যান্য সৃষ্টির ন্যায় সাধারণ মানুষ মাত্র। তিনি যাকে ইচ্ছা মার্জনা করবেন এবং যাকে ইচ্ছা শাস্তি দেবেন, আর আল্লাহর রাজত্ব রয়েছে

আকাশসমূহে ও যমীনে এবং এতদুভয়ের মধ্যস্থিত সবকিছুতেও; আর (সবাইকে) তাঁর দিকেই প্রত্যাবর্তন করতে হবে।

يَاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَآءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ وَّلَا نَذِيْرٍ ۚ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٩﴾

১৯. হে আহলে কিতাবগণ! তোমাদের নিকট আমার রাসূল (মুহাম্মাদ ﷺ) এসে পৌঁছেছেন, যিনি তোমাদেরকে স্পষ্টভাবে (আল্লাহর হুকুম) বলে দিচ্ছেন, যে সময় রাসূলদের আগমনের সূত্র (দীর্ঘকাল) বন্ধ ছিল, যেন তোমরা (কিয়ামতের দিন) এরূপ বলে না বস যেঃ আমাদের নিকট কোন সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারী আগমন করেননি; (এখন তো) তোমাদের নিকট সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারী এসে গেছে, আর আল্লাহ সকল বস্তুর উপর পূর্ণ ক্ষমতাবান।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَآءَ وَجَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۖ وَّاٰتٰىكُمْ مَّا لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٠﴾

২০. আর যখন মূসা (عليه السلام) স্বীয় সম্প্রদায়কে বললেনঃ হে আমার সম্প্রদায়! তোমাদের প্রতি আল্লাহর নিয়ামতকে স্মরণ কর, যখন তিনি তোমাদের মধ্যে বহু নবী সৃষ্টি করলেন, আর তোমাদেরকে রাজাধিপতি করেছেন। আর তোমাদেরকে এমন বস্তুসমূহ দান করলেন যা বিশ্ববাসীদের মধ্যে কাউকেও দান করেননি।

يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِىْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٢١﴾

২১. হে আমার সম্প্রদায়! এ পুণ্য ভূমিতে প্রবেশ কর যা আল্লাহ তোমাদের জন্যে লিখে দিয়েছেন, আর পিছনের দিকে ফিরে যেয়ো না, তাহলে তোমরা সম্পূর্ণরূপে ক্ষতিগ্রস্ত হবে।

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ۖ وَاِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا فَاِنَّا دٰخِلُوْنَ ﴿٢٢﴾

২২. তারা বললোঃ হে মূসা (عليه السلام)! সেখানে তো পরাক্রমশালী গোত্র রয়েছে; অতএব, তারা যে পর্যন্ত সেখান হতে বের হয়ে না যায় সে পর্যন্ত আমরা সেখানে কখনও প্রবেশ করবো না। হ্যাঁ যদি তারা সেখান হতে বেরিয়ে যায় তবে নিশ্চয়ই আমরা যেতে প্রস্তুত আছি।

قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ فَاِذَا دَخَلْتُمُوْهُ فَاِنَّكُمْ غٰلِبُوْنَ ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. সে দু'ব্যক্তি, যারা (আল্লাহকে) ভয়কারীদের অন্তর্ভুক্ত ছিল এবং যাদের প্রতি আল্লাহ অনুগ্রহ করেছিলেন, বললোঃ তোমরা তাদের উপর (আক্রমণ চালিয়ে নগরের) দ্বারদেশ পর্যন্ত যাও, ফলে যখনই তোমরা দ্বারদেশে প্রবেশ করবে তখনই জয় লাভ করবে এবং তোমরা আল্লাহর উপরই নির্ভর কর, যদি তোমরা মু'মিন হও।

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَآ اَبَدًا مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَآ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ﴿٢٤﴾

২৪. তারা বললোঃ হে মূসা (عليه السلام)! নিশ্চয়ই আমরা কখনও সেখানে প্রবেশ করব না যে পর্যন্ত তারা সেখানে বিদ্যমান থাকে, অতএব, আপনি ও আপনার প্রভু (আল্লাহ) চলে যান এবং উভয়ে যুদ্ধ করুন, আমরা এখানেই বসে থাকবো।

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ اِلَّا نَفْسِيْ وَاَخِيْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٥﴾

২৫. তিনি (মূসা عليه السلام) বললেনঃ হে আমার প্রভু! আমি শুধু নিজের উপর ও নিজের ভাই-এর উপর অধিকার রাখি, সুতরাং আপনি আমাদের উভয়ের এবং এ অবাধ্য সম্প্রদায়ের মধ্যে মীমাংসা করে দিন।

قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ سَنَةً ۚ يَتِيهُونَ فِي الْأَرْضِ ۖ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٦﴾

২৬. তিনি (আল্লাহ) বললেনঃ (তা হলে মীমাংসা এই যে) এ দেশ চল্লিশ বছর পর্যন্ত এদের জন্য নিষিদ্ধ করে দেয়া হলো তারা উদভ্রান্ত হয়ে পৃথিবীতে ফিরতে থাকবে; সুতরাং তুমি এ অবাধ্য সম্প্রদায়ের জন্যে (একটুও) চিন্তিত হয়ো না।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنَيْ آدَمَ بِالْحَقِّ إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْآخَرِ ۖ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ ۖ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ﴿٢٧﴾

২৭. (হে নবী ﷺ)! তুমি তাদেরকে (আহলে কিতাবদেরকে) আদমের পুত্রদ্বয়ের (হাবীল ও কাবীলের) ঘটনা সঠিকভাবে পাঠ করে শুনিয়ে দাও; যখন তারা উভয়েই এক একটি কুরবানী উপস্থিত করলো এবং তন্মধ্য হতে একজনের (হাবীলের) তো কবূল হলো এবং অপরজনের কবূল হলো না; সেই অপরজন বলতে লাগলোঃ আমি তোমাকে নিশ্চয়ই হত্যা করবো;[১] সেই প্রথম জন বললোঃ আল্লাহ মুত্তাকীদের আমলই কবূল করে থাকেন।

لَئِنْ بَسَطْتَ إِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِي مَا أَنَا بِبَاسِطٍ يَدِيَ إِلَيْكَ لِأَقْتُلَكَ ۖ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٨﴾

২৮. তুমি যদি আমাকে হত্যা করার জন্যে তোমার হাত বাড়াও, তবুও আমি তোমাকে হত্যা করার জন্যে তোমার দিকে কখনও আমার হাত বাড়াবো না; আমি তো বিশ্বপ্রভু আল্লাহকে ভয় করি।

১। (ক) আব্দুল্লাহ্ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেন, নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যখন, (যেখানে) কোন ব্যক্তিকে অন্যায়ভাবে হত্যা করা হবে, তখন তার পাপের একাংশ আদম (আলাইহিস্ সালাম)-এর প্রথম সন্তান (কাবীলের উপর) বর্তাবে। (বুখারী, হাদীস নং ৬৮৬৭)

(খ) আব্দুল্লাহ ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে শুনেছেন, তিনি বলেছেনঃ আমার পরে (মৃত্যুর পরে) তোমরা একে অপরের গলা কেটে (যুদ্ধ বিগ্রহের মাধ্যমে) কুফরীর পথে ফিরে যেয়ো না। (বুখারী, হাদীস নং ৬৮৬৮)

إِنِّيٓ أُرِيدُ أَن تَبُوٓأَ بِإِثۡمِي وَإِثۡمِكَ فَتَكُونَ مِنۡ أَصۡحَٰبِ ٱلنَّارِۚ وَذَٰلِكَ جَزَٰٓؤُاْ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٢٩﴾

২৯. আমি চাই যে, (আমার দ্বারা) কোন পাপ না হোক) তুমি আমার পাপ এবং তোমার পাপ সমস্তই নিজের মাথায় উঠিয়ে নাও; ফলে তুমি জাহান্নামীদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাও, অত্যাচারীদের শাস্তি এরূপই হয়ে থাকে।

فَطَوَّعَتۡ لَهُۥ نَفۡسُهُۥ قَتۡلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُۥ فَأَصۡبَحَ مِنَ ٱلۡخَٰسِرِينَ ﴿٣٠﴾

৩০. অতঃপর তার প্রবৃত্তি তাকে স্বীয় ভ্রাতৃ হত্যার প্রতি উদ্বুদ্ধ করে তুললো, সুতরাং সে তাকে হত্যা করেই ফেললো, ফলে সে ক্ষতিগ্রস্ত-দের অন্তর্ভুক্ত হয়ে পড়লো।

فَبَعَثَ ٱللَّهُ غُرَابٗا يَبۡحَثُ فِي ٱلۡأَرۡضِ لِيُرِيَهُۥ كَيۡفَ يُوَٰرِي سَوۡءَةَ أَخِيهِۚ قَالَ يَٰوَيۡلَتَىٰٓ أَعَجَزۡتُ أَنۡ أَكُونَ مِثۡلَ هَٰذَا ٱلۡغُرَابِ فَأُوَٰرِيَ سَوۡءَةَ أَخِيۚ فَأَصۡبَحَ مِنَ ٱلنَّٰدِمِينَ ﴿٣١﴾

৩১. অতঃপর আল্লাহ একটি কাক প্রেরণ করলেন; সে মাটি খুঁড়তে লাগলো, যেন সে তাকে (কাবীলকে) শিখিয়ে দেয় যে, স্বীয় ভ্রাতার মৃতদেহ কিভাবে ঢাকবে, সে বলতে লাগলোঃ ধিক আমাকে! আমি এই কাকটির মতোও হতে পারলাম না যাতে আমার ভাইয়ের লাশ গোপন করতে পারি। ফলে সে অত্যন্ত লজ্জিত হলো।

مِنۡ أَجۡلِ ذَٰلِكَ كَتَبۡنَا عَلَىٰ بَنِيٓ إِسۡرَٰٓءِيلَ أَنَّهُۥ مَن قَتَلَ نَفۡسَۢا بِغَيۡرِ نَفۡسٍ أَوۡ فَسَادٖ فِي ٱلۡأَرۡضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ ٱلنَّاسَ جَمِيعٗاۚ وَمَنۡ أَحۡيَاهَا فَكَأَنَّمَآ أَحۡيَا ٱلنَّاسَ جَمِيعٗاۚ وَلَقَدۡ جَآءَتۡهُمۡ رُسُلُنَا بِٱلۡبَيِّنَٰتِ ثُمَّ إِنَّ كَثِيرٗا مِّنۡهُم بَعۡدَ ذَٰلِكَ فِي ٱلۡأَرۡضِ لَمُسۡرِفُونَ ﴿٣٢﴾

৩২. এ কারণেই আমি বানী ইসরাঈলের প্রতি এ নির্দেশ দিয়েছি যে, যে ব্যক্তি কোন ব্যক্তিকে হত্যা করে অন্য প্রাণের বিনিময় ব্যতীত কিংবা তার দ্বারা ভূ-পৃষ্ঠে কোন ফাসাদ বিস্তার ব্যতীত তবে সে যেন সমস্ত মানুষকে হত্যা করে ফেললো; আর যে ব্যক্তি কোন ব্যক্তিকে রক্ষা করলো তবে সে যেন সমস্ত মানুষকে রক্ষা করলো; আর তাদের (বানী

ইসরাঈলদের) কাছে আমার বহু রাসূল স্পষ্ট প্রমাণসমূহ নিয়ে আগমন করেছিলেন, তবু এরপরেও তন্মধ্য হতে অনেকেই ভূ-পৃষ্ঠে সীমালঙ্ঘন-কারী রয়ে গেছে।[১]

إِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا اَوْ يُصَلَّبُوْٓا اَوْ تُقَطَّعَ اَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ۭ ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۙ ﴿٣٣﴾

৩৩. যারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করে, আর ভূ-পৃষ্ঠে অশান্তি সৃষ্টি করে বেড়ায় তাদের শাস্তি এটাই যে, তাদেরকে হত্যা করা হবে অথবা শূলে চড়ান হবে, অথবা এক দিকের হাত ও অপর দিকের পা কেটে ফেলা হবে অথবা নির্বাসনে পাঠানো হবে। এটা তো ইহলোকে তাদের জন্যে ভীষণ অপমান, আর পরকালেও তাদের জন্যে ভীষণ শাস্তি রয়েছে।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهِمْ ۚ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٤﴾

৩৪. কিন্তু হ্যাঁ, তোমরা তাদেরকে গ্রেফতার করার পূর্বে যারা তাওবা করে নেয়, তবে জেনে রাখো যে, নিশ্চয়ই আল্লাহ ক্ষমাশীল, দয়ালু।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٣٥﴾

৩৫. হে মু'মিনগণ! আল্লাহকে ভয় কর এবং তাঁর সান্নিধ্য অন্বেষণ কর ও আল্লাহর পথে জিহাদ করতে থাক, আশা করা যায় যে, তোমরা সফলকাম হবে।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لِيَفْتَدُوْا بِهٖ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ

৩৬. নিশ্চয়ই যারা কুফুরি করেছে, যদি তাদের কাছে বিশ্বের সমস্ত দ্রব্যও থাকে এবং ওর সাথে

১। আনাস বিন মালেক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-থেকে বর্ণনা করেন, নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন যে, কবিরা গোনাহের মধ্যে সবচাইতে বড় হচ্ছে আল্লাহ্‌র সঙ্গে শিরক করা এবং কোন মানুষকে অন্যায়ভাবে হত্যা করা। পিতা-মাতার অবাধ্য হওয়া। মিথ্যা কথা বলা, অথবা বলছেন (বর্ণনাকারী সন্দেহ করে বলেছেন) মিথ্যা সাক্ষী দেয়া। (বুখারী, হাদীস নং ৬৮৭১)

مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٣٦﴾

তৎপরিমাণ আরও যোগ হয়, যেন তারা তা প্রদান করে কিয়ামতের শাস্তি থেকে মুক্ত হয়ে যায়, তবুও এ দ্রব্যসমূহ তাদের থেকে কবূল করা হবে না, আর তাদের জন্যে রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنْهَا ۡ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٣٧﴾

৩৭. তারা এটা কামনা করবে যে, জাহান্নাম থেকে বের হয়ে যায়, অথচ তারা তা থেকে কখনও বের হতে পারবে না, বস্তুতঃ তাদের জন্যে রয়েছে চিরস্থায়ী শাস্তি।

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْٓا اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٣٨﴾

৩৮. আর যে পুরুষ চুরি করে এবং যে নারী চুরি করে, তোমরা তাদের কৃতকর্মের বিনিময়ে তাদের হাত গুলো কেটে ফেল, এটা আল্লাহর পক্ষ থেকে শাস্তি, আর আল্লাহ অতিশয় ক্ষমতাবান, মহা প্রজ্ঞাময়।

فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَاَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ يَتُوْبُ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٩﴾

৩৯. কিন্তু যে ব্যক্তি সীমালঙ্ঘন করার পর (চুরি করার পর) তাওবা করে নেয় এবং আমলকে সংশোধন করে নেয়, তবে আল্লাহ তার তাওবা কবূল করবেন নিশ্চয়ই আল্লাহ পরম ক্ষমাশীল, অতি দয়ালু।

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٠﴾

৪০. তুমি কি জান যে, আল্লাহরই জন্যে রয়েছে রাজত্ব আসমান-সমূহের এবং যমীনের; তিনি যাকে ইচ্ছা শাস্তি দেন এবং যাকে ইচ্ছা ক্ষমা করে দেন; আর আল্লাহ সব বিষয়ের উপর পূর্ণ ক্ষমতাবান।

يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ

৪১. হে রাসূল (ﷺ)! যারা কুফুরীর দিকে দ্রুত গতিতে অগ্রসর হচ্ছে, (তাদের এ কর্ম) তোমাকে যেন চিন্তিত না করে। যারা মুখে বলে

قُلُوْبُهُمْ ۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۛ سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ
سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۙ لَمْ يَاْتُوْكَ ؕ يُحَرِّفُوْنَ
الْكَلِمَ مِنْۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ ۚ يَقُوْلُوْنَ اِنْ اُوْتِيْتُمْ
هٰذَا فَخُذُوْهُ وَاِنْ لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوْا ؕ
وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ
شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ
قُلُوْبَهُمْ ؕ لَهُمْ فِى الدُّنْيَا خِزْىٌ ۖ وَّلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ
عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٤١﴾

ঈমান এনেছি; কিন্তু তাদের অন্তর ঈমান আনেনি এরা হোক অথবা যারা ইয়াহূদী হয়ে গেছে তারা হোক, যারা মিথ্যা কথা শুনতে বিশেষ পারদর্শী, তারা তোমার কথাগুলো অন্য ঐ সম্প্রদায়ের স্বার্থে কান পেতে শোনে যারা তোমার নিকট কখনো আসেনি, এরা আল্লাহর কিতাবের শব্দগুলোকে স্বীয় স্থান হতে বিকৃত করে। তারা বলে, তোমরা এ রকম নির্দেশপ্রাপ্ত হলে মানবে, আর তা না হলে বর্জন করবে। বস্তুতঃ আল্লাহই যাকে ফিতনায় ফেলতে চান, তার জন্য আল্লাহর কাছে তোমার কিছুই করার নেই। ওরা হল সেই লোক, যাদের অন্তরাত্মাকে আল্লাহ পবিত্র করতে চান না। তাদের জন্য দুনিয়াতে রয়েছে লাঞ্ছনা, আর তাদের জন্য আখিরাতে রয়েছে মহা শাস্তি।

سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ؕ فَاِنْ جَآءُوْكَ
فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ اَوْ اَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَاِنْ تُعْرِضْ
عَنْهُمْ فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ
بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ﴿٤٢﴾

৪২. তারা মিথ্যা কথা শুনতে যেমন অভ্যস্ত, তেমনি হারাম বস্তু খেতে অভ্যস্ত, অতএব তারা যদি তোমার কাছে আসে, তবে হয় তুমি তাদের মধ্যে মীমাংসা করে দাও কিংবা তাদের থেকে বিরত থাক, আর যদি তুমি তাদের থেকে বিরতই থাক তবে তাদের সাধ্য নেই যে, তোমার বিন্দুমাত্রও ক্ষতি করে, আর যদি তুমি মীমাংসা কর তবে তাদের মধ্যে ন্যায়তঃ মীমাংসা করবে, নিশ্চয়ই আল্লাহ ন্যায় বিচারকদেরকে ভালবাসেন।

وَكَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيْهَا

৪৩. আর তারা কিরূপে তোমাকে মীমাংসাকারী বানিয়ে নিচ্ছে? অথচ

حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَاۤ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۴۳﴾

তাদের কাছে তাওরাত রয়েছে, তাতে আল্লাহর বিধান বিদ্যমান! অতঃপর তারা এরপর (তোমার মীমাংসা হতে) ফিরে যায় আর তারা কখনও আস্থাবান নয়।

اِنَّاۤ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّ نُوْرٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ اَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۴۴﴾

৪৪. নিশ্চয়ই আমি তাওরাত নাযিল করেছি, যাতে হেদায়াত এবং আলো ছিল, আল্লাহর অনুগত নবীরা তদনুযায়ী ইয়াহূদীদেরকে আদেশ করতেন আর আল্লাহওয়ালাগণও এবং আলেমগণও এ কারণে যে, তাদেরকে এ কিতাবুল্লাহ'র সংরক্ষণের আদেশ দেয়া হয়েছিল এবং তারা তা স্বীকার করেছিল; অতএব, (হে ইয়াহূদী আলেমগণ) তোমরাও মানুষকে ভয় করো না, বরং আমাকে ভয় কর; আর আমার বিধানসমূহের বিনিময়ে (পার্থিব) সামান্য বস্তু গ্রহণ করো না; আর যে ব্যক্তি আল্লাহর নাযিলকৃত বিধান অনুযায়ী হুকুম প্রদান না করে, (বিধান না দেয়) তাহলে এমন লোক তো কাফির।

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيْهَاۤ اَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ ۙ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْاَنْفَ بِالْاَنْفِ وَالْاُذُنَ بِالْاُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ ۙ وَالْجُرُوْحَ قِصَاصٌ ؕ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ؕ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۴۵﴾

৪৫. আর আমি তাদের প্রতি তাতে (তাওরাতে) এটা ফরয করেছিলাম যে, প্রাণের বিনিময়ে প্রাণ, চক্ষুর বিনিময়ে চক্ষু, নাকের বিনিময়ে নাক, কানের বিনিময়ে কান, দাঁতের বিনিময়ে দাঁত এবং (তদ্রূপ অন্যান্য) বিশেষ যখমেরও বিনিময় রয়েছে; ফলে যে ব্যক্তি ক্ষমা করে দেয় তবে এটা তার জন্যে (পাপের) কাফ্ফারা হয়ে যাবে; আর যে ব্যক্তি আল্লাহর নাযিলকৃত বিধান অনুযায়ী

হুকুম প্রদান না করে তবে তো এমন ব্যক্তিগণ অত্যাচারী।

وَقَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ ۖ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ ۙ وَّمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٦﴾

৪৬. আর আমি তাদের পর ঈসা ইবনে মারইয়ামকে[১]এ অবস্থায় প্রেরণ করেছিলাম যে, সে তার পূর্ববর্তী কিতাবের অর্থাৎ তাওরাতের সত্যায়নকারী ছিলেন এবং আমি তাকে ইনজীল প্রদান করেছি, যাতে হিদায়াত এবং আলো ছিল, আর এটা স্বীয় পূর্ববর্তী কিতাব অর্থাৎ তাওরাতের সত্যায়নকারী এবং সম্পূর্ণরূপে মুত্তাকীদের জন্যে হিদায়াত ও নসীহত ছিল।

وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فِيْهِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٤٧﴾

৪৭. আহলে ইনজীলের উচিত যে, আল্লাহ তাতে যা কিছু অবতীর্ণ করেছেন, তদনুযায়ী হুকুম প্রদান করে, আর যে ব্যক্তি আল্লাহর নাযিলকৃত বিধান অনুযায়ী হুকুম প্রদান করে না, তবে তো এরূপ লোকই ফাসিক।

وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ

৪৮. আর আমি এ কিতাব (কুরআন)-কে তোমার প্রতি নাযিল করেছি যা হক্বের সাথে পূর্ববর্তী কিতাবসমূহেরও সত্যতা প্রমাণকারী

১। (ক) আব্দুল্লাহ্ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে মুসলমান ব্যক্তি এ সাক্ষ্য দেয় যে, আল্লাহ্ ছাড়া সত্য কোন মা'বূদ নেই এবং আমি (মুহাম্মাদ সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আল্লাহ্র রাসূল, তার রক্ত তিনটি কারণ ব্যতীত প্রবাহিত করা অবৈধ। (হত্যার বদলে কিসাস) জীবনের বদলে জীবন। একজন বিবাহিত ব্যক্তি যে অবৈধ যৌন ব্যভিচারে লিপ্ত হয় এবং ঐ ব্যক্তি যে ইসলাম ত্যাগ করে এবং মুসলমান জামা'আত থেকে বিচ্ছিন্ন হয়ে যায়। (বুখারী, হাদীস নং ৬৮৭৮)

(খ) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, আমি রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি, তিনি বলেছেনঃ যে, আমি মারইয়ামের পুত্র (ঈসা)-এর সবচেয়ে বেশি নিকটতম। নবীগণ একে অন্যের বৈমাত্রে ভাই ; আমার এবং তাঁর মধ্যে কোন নবী নেই। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৪২)

بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ
عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ ؕ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً
وَّمِنْهَاجًا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً
وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ
اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٨﴾

এবং ঐসব কিতাবের সংরক্ষকও; অতএব, তুমি তাদের পাস্পরিক বিষয়ে আল্লাহর অবতারিত এ কিতাব অনুযায়ী মীমাংসা করো, যা তুমি প্রাপ্ত হয়েছো, তা থেকে বিরত হয়ে তাদের প্রবৃত্তি অনুযায়ী কাজ করো না, তোমাদের প্রত্যেক (সম্প্রদায়)-এর জন্যে আমি নির্দিষ্ট শরীয়ত এবং নির্দিষ্ট পন্থা নির্ধারণ করেছি; আর যদি আল্লাহ ইচ্ছা করতেন, তবে অবশ্যই তোমাদের সকলকে একই উম্মত করে দিতেন; কিন্তু তিনি তা করেননি। এই কারণে যে, যে জীবন ব্যবস্থা তিনি তোমাদেরকে প্রদান করেছেন তাতে তোমাদের সকলকে পরীক্ষা করবেন, সুতরাং তোমরা কল্যাণকর বিষয়সমূহের দিকে ধাবিত হও; তোমাদের সকলকে আল্লাহর সমীপে প্রত্যাবর্তন করতে হবে, তখন তিনি তোমাদেরকে জানিয়ে দেবেন যে বিষয়ে তোমরা মতবিরোধ করছিলে।

وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ
اَهْوَآءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ بَعْضِ
مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا
يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ؕ
وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ﴿٤٩﴾

৪৯. আর আমি নির্দেশ দিচ্ছি যে তুমি তাদের পারস্পরিক ব্যাপারে এ প্রেরিত কিতাব অনুযায়ী মীমাংসা করবে এবং তাদের প্রবৃত্তি অনুযায়ী কাজ করবে না এবং তাদের দিক থেকে সতর্ক থাকবে যেন তারা তোমাকে আল্লাহর প্রেরিত কোন নির্দেশ হতে বিভ্রান্ত করতে না পারে; কিন্তু তারা যদি মুখ ফিরিয়ে নেয়, তবে দৃঢ়বিশ্বাস রাখো, আল্লাহর ইচ্ছা এটাই যে, তাদেরকে কোন কোন পাপের দরুন শাস্তি প্রদান করবেন;

আর বহু লোক তো নাফরমানই হয়ে থাকে।

৫০. তবে কি তারা জাহেলিয়্যাতের বিচার ব্যবস্থা কামনা করে?[১] আর দৃঢ় বিশ্বাসীদের কাছে মীমাংসা কার্যে আল্লাহর চেয়ে কে উত্তম হবে?

اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ؕ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٥٠﴾

৫১. হে মু'মিনগণ! তোমরা ইয়াহূদী ও খ্রিস্টানদেরকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করো না, তারা পরস্পরের বন্ধু, আর তোমাদের মধ্যে যে ব্যক্তি তাদের সাথে বন্ধুত্ব করবে, নিশ্চয়ই সে তাদেরই মধ্যে গণ্য হবে; নিশ্চয়ই আল্লাহ অত্যাচারী সম্প্রদায়কে সুপথ প্রদর্শন করেন না।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰۤى اَوْلِيَآءَ ۘ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾

৫২. এ কারণেই যাদের অন্তরে পীড়া রয়েছে, তাদেরকে তোমরা দেখবে যে, তারা দৌড়িয়ে দৌড়িয়ে তাদের (কাফিরদের) মধ্যে প্রবেশ করছে, এবং তারা বলে আমাদের ভয় হচ্ছে যে, আমাদের উপর কোন বিপদ এসে পড়ে না কি! অতএব আশা করা যায় যে, অচিরেই আল্লাহ (মুসলমানদের) পূর্ণ বিজয় দান

فَتَرَى الَّذِيْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يُّسَارِعُوْنَ فِيْهِمْ يَقُوْلُوْنَ نَخْشٰۤى اَنْ تُصِيْبَنَا دَآئِرَةٌ ؕ فَعَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِىَ بِالْفَتْحِ اَوْ اَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهٖ فَيُصْبِحُوْا عَلٰى مَاۤ اَسَرُّوْا فِىْۤ اَنْفُسِهِمْ نٰدِمِيْنَ ﴿٥٢﴾

১। (ক) ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) হতে বর্ণিত, নিশ্চয়ই নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আল্লাহ্‌র কাছে সবচাইতে ঘৃণিত ব্যক্তি হচ্ছে তিনজনঃ যে ব্যক্তি হারাম শরীফের মধ্যে দ্বীন থেকে বেরিয়ে যায় (অর্থাৎ যে ব্যক্তি মক্কা ও মদীনার হারামের মধ্যে অন্যায় কাজ করে) যে ব্যক্তি মুসলমান হওয়া সত্ত্বেও জাহেলী যুগের রীতিনীতি অনুসন্ধান করে এবং যে ব্যক্তি কোন অধিকার ব্যতীত কারো রক্তপাত দাবী করে। (বুখারী, হাদীস নং ৬৮৮২)

(খ) আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত (ইসলামের প্রাথমিক যুগে নামাযের সময় কিভাবে মানুষকে আহ্বান করা যায় এ ব্যাপারে পরামর্শ হল) সাহাবাগণ আগুন জ্বালাবার অথবা ঘন্টা বাজাবার জন্য প্রস্তাব দেন; কিন্তু এ দু'টিকেই ইয়াহূদ ও নাসারাদের রীতি বলে উল্লেখ করা হয়। অতঃপর বেলালকে আযানের বাক্যগুলি দু'বার করে এবং ইকামতের বাক্য একবার করে বলার নির্দেশ দেয়া হয়। (বুখারী, হাদীস নং ৬০৩)

করবেন অথবা অন্য কোন বিষয় বিশেষভাবে নিজ পক্ষ হতে (দেবেন)। ফলে তারা নিজেদের অন্তরে লুকানো মনোভাবের কারণে লজ্জিত হবে।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ اِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ؕ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَاَصْبَحُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٥٣﴾

৫৩. আর মুসলমানরা বলবেঃ আরে! এরাই না কি তারা! যারা অতি দৃঢ়তার সাথে আল্লাহর নামে শপথ করতো যে তারা তোমাদের সাথেই আছে; এদের সমস্ত কর্মই ব্যর্থ হয়ে গেল, ফলে তারা অকৃতকার্য রইলো।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِى اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗٓ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۡ يُجَاهِدُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٤﴾

৫৪. হে মু'মিনগণ! তোমাদের মধ্য হতে যে ব্যক্তি স্বীয় দ্বীন হতে ফিরে যায়, তবে (এতে ইসলামের কোন ক্ষতি নেই।) কেননা আল্লাহ সত্বরই (তাদের স্থলে) এমন এক সম্প্রদায় সৃষ্টি করবেন যাদেরকে আল্লাহ ভাল বাসবেন এবং তারাও আল্লাহকে ভালবাসবে। তারা মুসলমানদের প্রতি মেহেরবান থাকবে, কাফিরদের প্রতি কঠোর হবে, তারা আল্লাহর পথে জিহাদ করবে, আর তারা কোন নিন্দুকের নিন্দার পরোয়া করবে না; এটা আল্লাহর অনুগ্রহ, যাকে ইচ্ছা প্রদান করেন বস্তুতঃ আল্লাহ প্রাচুর্যদানকারী, মহাজ্ঞানী।

اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ ﴿٥٥﴾

৫৫. তোমাদের বন্ধু তো আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ) এবং মু'মিনরা– যারা নামায আদায় করে, যাকাত প্রদান করে এবং তারা বিনয়ী।

وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

৫৬. আর যে ব্যক্তি বন্ধুত্ব রাখবে আল্লাহর সাথে, তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর

فَاِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٥٦﴾

সাথে এবং মু'মিনদের সাথে, তবে (তারা আল্লাহর দলভুক্ত হলো এবং) নিশ্চয়ই আল্লাহর দলই বিজয়ী।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّ لَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾

৫৭. হে মু'মিনগণ! যারা তোমাদের *পূর্বে কিতাবপ্রাপ্ত হয়েছে, তাদের* মধ্যে যারা তোমাদের দ্বীনকে হাসি ও তামাশার বস্তু বানিয়ে নিয়েছে; তাদেরকে ও কাফেরদেরকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করো না আর আল্লাহকে ভয় কর, যদি তোমরা ঈমানদার হয়ে থাক।

وَ اِذَا نَادَيْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا هُزُوًا وَّلَعِبًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿٥٨﴾

৫৮. আর যখন তোমরা নামাযের জন্যে (আযান দ্বারা) আহ্বান কর, তখন তারা তার সাথে হাসি ও তামাশা করে, এর কারণ এই যে, তারা এরূপ লোক, যারা মোটেই জ্ঞান রাখে না।

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّاۤ اِلَّاۤ اَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۙ وَاَنَّ اَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٥٩﴾

৫৯. তুমি (হে মুহাম্মাদ ﷺ) বলে দাওঃ হে আহলে কিতাবগণ! তোমরা আমাদের সাথে শুধু এই কারণে শত্রুতা করছ যে, আমরা ঈমান এনেছি আল্লাহর প্রতি এবং ঐ কিতাবের প্রতি যা আমাদের নিকট প্রেরিত হয়েছে এবং ঐ কিতাবের প্রতি যা অতীতে প্রেরিত হয়েছে, এবং এই কারণে যে তোমাদের অধিকাংশ লোক ফাসেক।

قُلْ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ ؕ

৬০. তুমি (হে মুহাম্মাদ ﷺ) বলে দাওঃ আমি কি তোমাদেরকে বলে দেব, যা প্রতিদান প্রাপ্তি হিসাবে ওটা হতেও (যাকে তোমরা মন্দ বলে জান) আল্লাহর কাছে অধিক নিকৃষ্ট? ওটা ঐসব লোকের পন্থা, যাদেরকে

أُولَٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّ اَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٦٠﴾

আল্লাহ অভিসম্পাত করেছেন এবং যাদের প্রতি তিনি রাগান্বিত হয়েছেন ও যাদের কতককে বানর ও শূকর বানিয়ে দিয়েছেন এবং যারা তাগুতের পূজা করেছে; এরূপ লোকেরাই নিকৃষ্ট স্থানের অধিকারী এবং (ইহকালেও) সরল পথ হতে অধিকতর বিপথগামী।

وَاِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَ قَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا بِهٖ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا يَكْتُمُوْنَ ﴿٦١﴾

৬১. আর যখন তারা তোমাদের নিকট আসে, তখন বলে আমরা ঈমান এনেছি, অথচ তারা কুফরই নিয়ে এসেছিল এবং তারা কুফরই নিয়ে চলে গেছে এবং আল্লাহ তো খুব ভাল জানেন যা তারা গোপন রাখে।

وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ فِى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٢﴾

৬২. আর তুমি তাদের মধ্যে এমন অসংখ্য লোক দেখবে, যারা প্রতিযোগিতামূলক পাপ, যুলুম ও হারাম ভক্ষণে নিপতিত হচ্ছে, বাস্তবিকই তাদের এ কাজ মন্দ।

لَوْلَا يَنْهٰهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿٦٣﴾

৬৩. তাদেরকে আল্লাহওয়ালাগণ এবং আলেমগণ পাপের কথা হতে এবং হারাম মাল ভক্ষণ করা হতে নিষেধ করছে না কেন? বাস্তবিকই তাদের এ কাজ নিন্দনীয়।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ؕ غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا ۘ بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ

৬৪. আর ইয়াহূদীরা বলে, আল্লাহর হাত বন্ধ হয়ে গেছে; তাদেরই হাত বন্ধ[১] হয়ে গেছে। তাদের এ উক্তির

১। ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, তিনি রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেন, নিশ্চয়ই রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তিনি বলেন, নিশ্চয়ই আল্লাহ্ তা'আলা কিয়ামতের দিন সমস্ত পৃথিবীকে তাঁর মুঠিতে ধারণ করবেন এবং সমস্ত আকাশকে স্বীয় ডান হাতে নিয়ে নিবেন। অতঃপর বলবেন আমিই একমাত্র মালিক (বাদশাহ) (বুখারী, হাদীস নং ৭৪১২)

(খ) নিশ্চয়ই আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে, আল্লাহ্ পৃথিবীকে তাঁর মুঠিতে ধারণ করবেন। (বুখারী, হাদীস নং ৭৪১৩)

كَيْفَ يَشَآءُ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ؕ وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ كُلَّمَآ اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ وَيَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٦٤﴾

দরুন তাদের প্রতি অভিশাপ করা হয়েছে; বরং তাঁর (আল্লাহর) তো উভয় হাত উন্মুক্ত, যেরূপ ইচ্ছা ব্যয় করেন; আর যে বিষয় তোমার নিকট তোমার প্রভুর পক্ষ হতে প্রেরিত হয়, তা তাদের মধ্যে অনেকের নাফরমানী ও কুফর বৃদ্ধির কারণ হয় এবং আমি তাদের পরস্পরের মধ্যে শত্রুতা ও হিংসা নিক্ষেপ করেছি কিয়ামত পর্যন্ত; যখনই তারা (মুসলমানদের বিরুদ্ধে) যুদ্ধাগ্নি প্রজ্বলিত করতে চায়, আল্লাহ তা নির্বাপিত করে দেন এবং তারা ভূ-পৃষ্ঠে অশান্তি ছড়িয়ে বেড়ায়, আর আল্লাহ অশান্তি বিস্তারকারীদেরকে ভালবাসেন না।

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٦٥﴾

৬৫. আর এ আহলে কিতাবগণ (ইয়াহূদী ও নাসারা) যদি ঈমান আনতো এবং তাকওয়া অবলম্বন করতো, তবে আমি অবশ্যই তাদের সমস্ত অন্যায় ক্ষমা করে দিতাম এবং অবশ্যই তাদেরকে আরাম ও শান্তিময় জান্নাতে প্রবেশ করাতাম।

وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ؕ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ؕ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٦﴾ ع

৬৬. আর যদি তারা তাওরাত ও ইনজীলের এবং যা কিছু তাদের প্রভুর পক্ষ হতে তাদের প্রতি অবতীর্ণ হয়েছে, ওর যথারীতি আমলকারী হতো, তবে তারা তাদের উপর (অর্থাৎ আকাশ) হতে এবং পায়ের নিম্ন (অর্থাৎ যমীন) হতে রিযিক পেত ও প্রাচুর্যের সাথে ভক্ষণ করতো, তাদের একদল তো সরল পথের পথিক; আর তাদের অধিকাংশই এরূপ যে তাদের কার্যকলাপ অতি

জঘন্য।[১]

يَٰٓأَيُّهَا ٱلرَّسُولُ بَلِّغْ مَآ أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ ۖ وَإِن لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهُۥ ۚ وَٱللَّهُ يَعْصِمُكَ مِنَ ٱلنَّاسِ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿٦٧﴾

৬৭. হে রাসূল (ﷺ)! যা কিছু তোমার প্রতিপালকের পক্ষ থেকে তোমার উপর অবতীর্ণ করা হয়েছে, তুমি (মানুষকে) সব কিছুই পৌঁছিয়ে দাও; আর যদি এরূপ না কর, (তবে) তুমি আল্লাহর পয়গামও পৌঁছাওনি বলে বিবেচিত হবে, আর আল্লাহ তোমাকে মানুষ (অর্থাৎ কাফির) হতে সংরক্ষিত রাখবেন; নিশ্চয়ই আল্লাহ কাফির সম্প্রদায়কে সুপথ প্রদর্শন করেন না।

১। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর মদীনা আগমনের খবর আবদুল্লাহ্ ইবনে সালামের নিকট পৌঁছলে তিনি এসে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে কয়েকটি বিষয়ে প্রশ্ন করেন। তিনি বললেনঃ আমি আপনাকে এমন তিনটি বিষয়ে জিজ্ঞেস করব যা নবী ছাড়া আর কেউ জানে না। (এক) কিয়ামতের সর্বপ্রথম আলামত কি? (দুই) জান্নাতবাসীগণ সর্বপ্রথম কোন্ খাদ্য খাবে? (তিন) কিসের কারণে সন্তান (আকৃতিতে কখানো) তার পিতার অনুরূপ হয় আবার (কখনো) তার মায়ের মত হয়? নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ এ বিষয়গুলো সম্পর্কে জিবরাইল (আলাইহিস্ সালাম) এইমাত্র আমাকে বলে গেলেন। (আব্দুল্লাহ) ইবনে সালাম বললেনঃ ফেরেশ্তাদের মধ্যে তিনিই তো ইয়াহূদীদের শত্রু। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ কিয়ামতের সর্বপ্রথম আলামত হলো আগুন, যা লোকদেরকে পূর্বদিক থেকে পশ্চিমে নিয়ে সমবেত করবে। আর জান্নাতবাসীগণ সর্বপ্রথম যে খাদ্য খাবে তা হলো মাছের কলিজার অতিরিক্ত টুকরো, যা কলিজার সাথে লেগে থাকে। আর সন্তানের ব্যাপারটা হলো এইঃ নারী-পুরুষের মিলনকালে যদি নারীর আগে পুরুষের বীর্যপাত ঘটে তবে সন্তান বাপের অনুরূপ হয়, আর যদি পুরুষের আগে নারীর বীর্যপাত ঘটে তবে সন্তান মায়ের আকৃতি ধারণ করে। তখন আবদুল্লাহ্ ইবনে সালাম বললেনঃ আমি সাক্ষ্য দিচ্ছি যে, আল্লাহ্ ছাড়া কোন সত্য মা'বূদ নেই এবং নিশ্চয়ই আপনি আল্লাহ্র রাসূল। তিনি বললেন, আল্লাহ্র রাসূল! ইয়াহূদীরা এমন একটি জাতি যারা অপবাদ রটনায় অত্যন্তপটু। কাজেই আমার ইসলাম গ্রহণ সম্পর্কে তারা জ্ঞাত হবার আগেই আপনি আমার ব্যাপারে জিজ্ঞেস করুন। তারপর ইয়াহূদীরা এলে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তাদেরকে জিজ্ঞেস করলেনঃ তোমাদের মধ্যে আবদুল্লাহ্ ইবনে সালাম কেমন লোক? তারা বললঃ তিনি আমাদের মধ্যে সর্বোত্তম ব্যক্তি এবং সর্বোত্তম ব্যক্তির ছেলে। তিনি আমাদের মধ্যে সর্বশ্রেষ্ঠ ব্যক্তি এবং সর্বশ্রেষ্ঠ ব্যক্তির ছেলে। তখন নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ আচ্ছা, আবদুল্লাহ্ ইবনে সালাম যদি ইসলাম গ্রহণ করে তবে কেমন হবে? তারা বললঃ আল্লাহ তাকে এ থেকে রক্ষা করুন। তিনি পুনরায় একথা বললেন। তারাও সেই জবাব দিল। এমন সময় আবদুল্লাহ্ ভেতর থেকে তাদের সামনে বেরিয়ে এলেন এবং বললেনঃ আমি সাক্ষ্য দিচ্ছি আল্লাহ্ ছাড়া আর কোন ইলাহ নেই এবং নিশ্চয়ই মুহাম্মাদ আল্লাহ্র রাসূল। তখন তারা বলতে লাগলঃ এ লোকটা আমাদের মধ্যে সর্বনিকৃষ্ট ব্যক্তি এবং সর্বনিকৃষ্ট ব্যক্তির ছেলে। তারপর তারা তাকে খুব হেয় প্রতিপন্ন করল। তিনি বললেনঃ হে আল্লাহ্র রাসূল! তাদের ব্যাপারে আমি এটাই আশঙ্কা করছিলাম। (বুখারী, হাদীস নং ৩৯৩৮)

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَىْءٍ حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾

৬৮. তুমি (মুহাম্মাদ ﷺ) বলে দাওঃ হে আহলে কিতাবগণ! মূলতঃ তোমরা কোন পথেই প্রতিষ্ঠিত নও যে পর্যন্ত না তাওরাত, ইনজীল এবং যা কিছু তোমাদের নিকট তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ থেকে অবতীর্ণ হয়েছে তার পূর্ণ পাবন্দী করবে; আর অবশ্যই যা তোমার প্রতি তোমার প্রভুর পক্ষ থেকে প্রেরণ করা হয়েছে, তা তাদের মধ্যে অনেকেরই নাফরমানী ও কুফরি আরো বৃদ্ধি করবে, অতএব, তুমি এ কাফিরদের জন্যে মনঃক্ষুণ্ন হয়ো না।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـُٔوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٩﴾

৬৯. এটা সুনিশ্চিত যে, মুসলিম, ইয়াহূদী, সাবেঈ[১] এবং নাসারাদের মধ্যে যে ব্যক্তি আল্লাহর প্রতি ও কিয়ামতের প্রতি বিশ্বাস রাখে এবং সৎকর্ম করে, তবে এরূপ লোকদের জন্যে শেষ দিবসে না কোন প্রকার ভয় থাকবে আর না তারা চিন্তান্বিত হবে।

لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ وَاَرْسَلْنَاۤ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ؕ كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰۤى اَنْفُسُهُمْ ۙ فَرِيْقًا كَذَّبُوْا وَفَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ﴿٧٠﴾

৭০. আমি বানী ইসরাঈল হতে অঙ্গীকার নিয়েছি এবং তাদের কাছে বহু রাসূল প্রেরণ করেছি; যখনই তাদের কাছে কোন নবী আগমন করতেন এমন কোন বিধান নিয়ে যা তাদের মনঃপুত হতো না, তখনই তারা কতিপয়কে মিথ্যাবাদী সাব্যস্ত করতো এবং কতিপয়কে হত্যাই করে ফেলতো।

১। যে নিজের দ্বীন পরিত্যাগ করে অন্য দ্বীন গ্রহণ করে। (কুরতুবী)

وَحَسِبُوْٓا اَلَّا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَصَمُّوْا ثُمَّ تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا وَصَمُّوْا كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٧١﴾

৭১. আর তারা এ ধারণাই করেছিল যে, তাদের কোন বিপর্যয় হবে না, ফলে তারা আরও অন্ধ ও বধির হয়ে গেল, অতঃপর আল্লাহ তাদের তওবা গ্রহণ করলেন; এরপরেও তাদের অনেকেই অন্ধ ও বধির হয়ে গেল। বস্তুতঃ আল্লাহ তাদের (এই) কার্যকলাপ খুবই প্রত্যক্ষ করেন।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ وَقَالَ الْمَسِيْحُ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَاْوٰىهُ النَّارُ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿٧٢﴾

৭২. নিশ্চয়ই তারা কুফুরী করেছে যারা বলেছে যে, মাসীহ ইবনে মারইয়ামই তো আল্লাহ; অথচ মাসীহ নিজেই বলেছিলেনঃ হে বানী ইসরাঈলগণ! তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর, যিনি আমারও প্রতিপালক এবং তোমাদেরও প্রতিপালক; নিশ্চয়ই যে ব্যক্তি আল্লাহর সাথে (অন্য কাউকে) অংশীদার স্থাপন করবে, আল্লাহ তার জন্যে জান্নাত হারাম করে দেবেন এবং তার বাসস্থান হবে জাহান্নাম, আর এরূপ অত্যাচারীদের জন্যে কোন সাহায্যকারী হবে না।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّآ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ وَاِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾

৭৩. নিঃসন্দেহে তারাও কুফুরী করেছে যারা বলেঃ আল্লাহ তিনের (অর্থাৎ তিন মা'বূদের) এক, অথচ এক মা'বূদ ভিন্ন অন্য কোনই (সত্য) মা'বূদ নেই; আর যদি তারা স্বীয় উক্তিসমূহ হতে নিবৃত্ত না হয়, তবে তাদের মধ্যে যারা কাফির থাকবে তাদেরকে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি গ্রাস করবে।

اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ اِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧٤﴾

৭৪. এর পরও কি তারা আল্লাহর সমীপে তাওবা করবে না এবং তাঁর কাছে ক্ষমা প্রার্থনা করবে না? অথচ

আল্লাহ অত্যন্ত ক্ষমাশীল, পরম করুণাময়।[১]

مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٧٥﴾

৭৫. মাসীহ ইবনে মারইয়াম একজন রাসূল ছাড়া আর কিছুই নয়; তার পূর্বে আরও বহু রাসূল বিগত হয়েছেন, আর তাঁর মা একজন সত্য নিষ্ঠা মহিলা। তারা উভয়ে খাদ্য ভক্ষণ করতেন, লক্ষ্য কর! আমি কিরূপে তাদের নিকট প্রমাণসমূহ বর্ণনা করছি, আবার লক্ষ্য কর! তারা কিভাবে সত্য বিমুখ হয়ে যাচ্ছে।

قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ؕ وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٧٦﴾

৭৬. তুমি (হে মুহাম্মাদ ﷺ) বলে দাওঃ তোমরা কি আল্লাহ ছাড়া এমন বস্তুর ইবাদত কর, যে তোমাদের না কোন অপকার করবার ক্ষমতা রাখে, আর না কোন উপকার করবার; অথচ আল্লাহই সব শোনেন, সব জানেন।

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوْۤا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ وَاَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٧٧﴾

৭৭. তুমি (হে মুহাম্মাদ ﷺ) বলে দাওঃ হে আহলে কিতাবগণ! তোমরা নিজেদের দ্বীনে অন্যায়ভাবে সীমালঙ্ঘন করো না এবং ঐসব লোকের (ভিত্তিহীন) প্রবৃত্তির অনুসরণ করো না যারা অতীতে নিজেরাও ভ্রান্তিতে পতিত হয়েছে এবং আরও বহু লোককে ভ্রান্তিতে নিক্ষেপ করেছে, বস্তুতঃ তারা সরল পথ থেকে দূরে সরে পড়েছিল।

১। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে, বান্দা তাওবা করলে আল্লাহ্ ঐ ব্যক্তির চেয়েও বেশি খুশী হন যে, ব্যক্তি তার উটকে কোন গভীর জঙ্গলের অজানা পথে হারিয়ে ফেলে, চিন্তায় মুমূর্ষ হয়ে পড়েছে ঠিক, ঐ মুহূর্তে সে তার উটকে হঠাৎ পেয়ে গেলে যতটা খুশী হয়। (বুখারী, হাদীস নং ৬৩০৯)

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٧٨﴾

৭৮. বানী ইসরাঈলের মধ্যে যারা কাফির ছিল; তাদের উপর লা'নত করা হয়েছিল দাঊদ ও ঈসা ইবনে মারইয়ামের মুখে; এ লা'নত এ কারণে করা হয়েছিল যে তারা অবাধ্য ও আদেশ অমান্য করেছিল এবং সীমার বাইরে চলে গিয়েছিল।

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছেনঃ বনী ইস্রাইলে তিনজন লোক ছিল। একজন ছিল শ্বেতরোগী, দ্বিতীয়জন (মাথায়) টাকওয়ালা এবং তৃতীয়জন অন্ধ। মহান আল্লাহ্ তাদের পরীক্ষা করতে ইচ্ছা করলেন। অতঃপর তাদের কাছে একজন ফেরেশ্তা পাঠালেন। ফেরেশ্তা (প্রথমে) শ্বেতরোগীটির নিকট আসলেন এবং তাকে জিজ্ঞেস করলেন, কোন্ জিনিস তোমার নিকট অধিক প্রিয়। সে জবাব দিল, সুন্দর রঙ ও সুন্দর চামড়া (যাতে মানুষ আমাকে নিজের কাছে বসতে দেয়)। কেননা মানুষ আমাকে ঘৃণা করে। তখন ফেরেশ্তা তার গায়ে হাত বুলিয়ে দিলেন। ফলে তার রোগ ভাল হয়ে গেল এবং তাকে সুন্দর রঙ ও আকর্ষণীয় চামড়া দান করা হল। অতঃপর ফেরেশ্তা জিজ্ঞেস করলেন, কোন্ ধরনের সম্পদ তোমার নিকট অধিক প্রিয়। সে জবাব দিল উট। কিংবা গরু। এ ব্যাপারে বর্ণনাকারীর সন্দেহ রয়েছে যে, শ্বেতরোগী এবং টাকওয়ালা দু'জনের একজন বলেছিল উট আর অপরজন বলেছিল গরু। অতএব তাকে একটি গর্ভবতী উষ্ট্রী দেয়া হল। ফেরেশ্তা দো'আ করলেন (আল্লাহ্ তা'আলা) তোমাকে এর মধ্যে বরকত দান করুন। এরপর তিনি টাকওয়ালার নিকট আসলেন এবং জিজ্ঞেস করলেন, তোমার নিকট কোন্ জিনিস অধিক প্রিয়? সে জবাব দিল-সুন্দর চুল এবং আমার থেকে যেন এ টাক চলে যায়। কেননা মানুষ আমাকে ঘৃণা করে থাকে। অতঃপর সেই ফেরেশ্তা তার ওপর হাত বুলিয়ে দিলেন। ফলে তার টাক চলে গেল এবং মাথায় চুলে ভরে গেল। তারপর ফেরেশ্তা জিজ্ঞেস করলেন কোন্ সম্পদ তোমার কাছে বেশি প্রিয়? সে বলল, গরু। অতএব একটি গর্ভবতী গাভী তাকে দিয়ে দিলেন এবং দো'আ করলেন, আল্লাহ্ এতে তোমার জন্য বরকত দান করুন! সবশেষে ফেরেশ্তা অন্ধের নিকট আসলেন এবং তাকে জিজ্ঞেস করলেন, তোমার নিকট কোন্ জিনিস অধিক প্রিয়? সে বলল, আল্লাহ্ যেন আমার চোখে জ্যোতি ফিরিয়ে দেন, যাতে তা দিয়ে আমি মানুষকে দেখতে পারি। ফেরেশ্তা তখন তার চোখের ওপর হাত বুলিয়ে দিলেন। ফলে আল্লাহ্ তার দৃষ্টিশক্তি ফিরিয়ে দিলেন। ফেরেশ্তা জিজ্ঞেস করলেন, কোন্ ধরনের সম্পদ তোমার অধিক প্রিয়? সে বলল, ছাগল। তিনি তাকে একটি গর্ভবতী ছাগী দিলেন।

অতঃপর তিনজনের পশুগুলোই বাচ্চা দিল এবং অল্প দিনেই একজনের উটে ময়দান ভর্তি হয়ে গেল। অপরজনের গরুতে চারণভূমি ভরে উঠল এবং তৃতীয়জনের ছাগলে সারা উপত্যকা ছেয়ে গেল। পুনরায় সেই ফেরেশ্তা (একদিন আল্লাহ্র হুকুমে) পূর্ব সুরত ও আকৃতিতেই শ্বেতরোগীটির নিকট আসলেন এবং বললেন, আমি একজন নিঃস্ব গরীব লোক। আমার সফরের সকল সম্বল শেষ হয়ে গেছে। আজ আমার উদ্দেশ্য পূর্ণ করার জন্য আল্লাহ্ ভিন্ন আর কোন উপায় নেই। আমি আল্লাহ্র নামে যিনি তোমাকে সুন্দর রঙ, সুন্দর চামড়া ও সম্পদ দান করেছেন, তোমার কাছে মাত্র একটি উট প্রার্থনা করছি। আমি এর ওপর সওয়ার হয়ে বাড়ি পৌঁছে যাব। তখন লোকটি তাকে বলল, (আরে বেটা আমার এখান থেকে ভাগ) আরও অনেকের হক রয়ে গেছে। ফেরেশ্তা বললেন, সম্ভবত আমি তোমাকে চিনতে পেরেছি। তুমি কি (এক সময়) শ্বেতরোগী ছিলে না? মানুষ তোমাকে ঘৃণা করত। তুমি কি ফকির ছিলে না? অতঃপর আল্লাহ্ তা'আলা তোমাকে (বিপুল সম্পদ) দান করেছেন। সে বলল, এসব তো আমি (কয়েক পুরুষ পূর্বে) বাপ-দাদা থেকেই ওয়ারিশ সূত্রেই পেয়েছি। তখন ফেরেশ্তা বললেন, যদি তুমি মিথ্যাবাদী হয়ে থাক, আল্লাহ্

كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٩﴾

৭৯. তারা যে মন্দ ও গর্হিত কাজ করত তা' থেকে তারা পরস্পরকে নিষেধ করত না; বাস্তবিকই তাদের কাজ ছিল অত্যন্ত গর্হিত।

تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَ فِي الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿٨٠﴾

৮০. তুমি তাদের (ইয়াহূদীদের) মধ্যে অনেক লোককে দেখবে যে, তারা বন্ধুত্ব করছে কাফিরদের সাথে; যে কাজ তারা ভবিষ্যতের জন্যে করেছে তা নিঃসন্দেহে মন্দ, যেহেতু আল্লাহ তাদের প্রতি অসন্তুষ্ট হয়েছেন, ফলতঃ তারা আযাবে চিরকাল থাকবে।

وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨١﴾

৮১. আর যদি তারা আল্লাহর প্রতি ঈমান আনতো এবং নবীর (মূসা عليه السلام) প্রতি এবং ঐ কিতাবের (তাওরাতের) প্রতি যা তার নিকট প্রেরিত হয়েছিল, তবে তাদেরকে (মুশরিকদেরকে) কখনও বন্ধুরূপে গ্রহণ করতো না; কিন্তু তাদের অধিকাংশ লোকই অবাধ্য।

তোমাকে আবার সেরূপ করে দিন যেমন তুমি (আগে) ছিলে। পরে তিনি টাকওয়ালার নিকট সেই আকার ও আকৃতিতেই আসলেন এবং তার কাছেও ঠিক তদ্রূপই প্রার্থনা করলেন, যেমন করেছিলেন শ্বেতরোগী লোকটির কাছে। এও ঠিক তেমনি জবাবই দিল যেমন দিয়েছিল সে। তখন ফেরেশ্‌তা বললেন যদি তুমি মিথ্যাবাদী হও তাহলে আল্লাহ্ তোমাকে সেরূপই করে দিক যেমন তুমি পূর্বে ছিলে। পরিশেষে তিনি স্বীয় আকৃতিতে অন্ধের নিকট আসলেন এবং বললেন, আমি একজন গরীব মিসকীন মুসাফির। আমার পথের সম্বল সব শেষ হয়ে গেছে। আজ আমি বাড়ি পৌছার আল্লাহ্ ভিন্ন আর কোন উপায় নেই। আমি তোমার কাছে সেই আল্লাহ্‌র নামে একটি ছাগী প্রার্থনা করছি, যিনি তোমার দৃষ্টি শক্তি ফিরিয়ে দিয়েছেন। আমি ছাগীটি দিয়ে আমার সফরের কাজ শেষ করতে পারবো। তখন লোকটি বলল, সত্যিই আমি অন্ধ ছিলাম। অতঃপর আল্লাহ্ আমার দৃষ্টিশক্তি ফিরিয়ে দিয়েছেন। আমি গরীব ছিলাম। আল্লাহ্ আমাকে ধনী বানিয়েছেন। এখন তুমি যা চাও নিয়ে যাও। আল্লাহ্‌র কসম! আল্লাহ্‌র ওয়াস্তে তুমি যা কিছু নেবে তার বিনিময় আজ আমি তোমার কাছে কোন প্রশংসাই পাওয়ার দাবী করবো না। তখন ফেরেশ্‌তা বললেন, তোমার সম্পদ তুমি রেখে দাও। আমি তো তোমাদেরকে শুধু পরীক্ষা করেছিলাম (তা হয়ে গেছে)। আল্লাহ্ তোমার ওপর সন্তুষ্ট হয়েছেন আর তোমার সাথী দু'জনের ওপর হয়েছেন নারাজ। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৬৪)

لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَ رُهْبَانًا وَّ اَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٨٢﴾

৮২. তুমি মানবমণ্ডলীর মধ্যে মুসলমানদের সাথে অধিক শত্রুতা পোষণকারী পাবে এ ইয়াহূদী ও মুশরিকদেরকে, আর তন্মধ্যে মুসলমানদের সাথে বন্ধুত্ব রাখার অধিকতর নিকটবর্তী ঐসব লোককে পাবে, যারা নিজেদেরকে নাসারা বলে, এটা এ কারণে যে, তাদের মধ্যে বহু জ্ঞানপিপাসু আলেম এবং আবেদ বান্দা রয়েছে, আর এই কারণে যে, তারা অহংকারী নয়।

وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنْزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَى أَعْيُنَهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ ۖ يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ﴿٨٣﴾

৮৩. আর যখন তারা তা শ্রবণ করে, যা রাসূল (ﷺ)-এর প্রতি নাযিল হয়েছে, তখন তুমি দেখতে পাও যে, তাদের চোখে অশ্রু বইতে শুরু করে, এ কারণে যে, তারা সত্যকে উপলব্ধি করতে পেরেছে, তারা এরূপ বলেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা মু'মিন হয়ে গেলাম সুতরাং আমাদেরকেও ঐসব লোকের সাথে লিপিবদ্ধ করে নিন, যারা (মুহাম্মাদ ﷺ ও কুর'আনকে সত্য বলে) স্বীকার করে।

وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ أَنْ يُدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ﴿٨٤﴾

৮৪. আর আমাদের কি এমন ওযর আছে যে, আমরা ঈমান আনবো না আল্লাহর প্রতি এবং সেই সত্যের প্রতি যা আমাদের কাছে পৌঁছেছে? অথচ এ আশা রাখবো যে, আমাদের প্রতিপালক নেককারদের সাথে আমাদেরকে শামিল করবেন।

فَأَثَابَهُمُ اللَّهُ بِمَا قَالُوا جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٥﴾

৮৫. ফলতঃ তাদের এ উক্তির বিনিময়ে আল্লাহ তাদেরকে এমন জান্নাতসমূহ প্রদান করবেন, যার তলদেশে নহর বইতে থাকবে, তারা তাতে অনন্তকাল অবস্থান করবে। এটা সৎকর্মশীলদের প্রতিদান।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿٨٦﴾

৮৬. আর যারা কাফির হয়েছে এবং আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যা অভিহিত করেছে, তারা হবে জাহান্নামের অধিবাসী।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿٨٧﴾

৮৭. হে মু'মিনগণ! আল্লাহ যেসব পবিত্র বস্তুগুলিকে তোমাদের জন্যে হালাল করেছেন সেগুলোকে হারাম করো না এবং সীমালঙ্ঘন করো না নিশ্চয়ই আল্লাহ সীমালঙ্ঘনকারীদের পছন্দ করেন না।

وَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۪ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾

৮৮. আর আল্লাহ তোমাদেরকে যা দান করেছেন তন্মধ্য হতে হালাল পবিত্র (রুচিকর) বস্তুগুলো ভক্ষণ কর এবং আল্লাহকে ভয় কর, যাঁর প্রতি তোমরা ঈমান রাখ।

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗٓ اِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ؕ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ؕ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ؕ وَاحْفَظُوْٓا اَيْمَانَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٨٩﴾

৮৯. আল্লাহ তোমাদেরকে তোমাদের অনর্থক কসমগুলোর ব্যাপারে পাকড়াও করবেন না; কিন্তু তিনি তোমাদেরকে ঐ কসমসমূহের জন্যে পাকড়াও করবেন, যেগুলোকে তোমরা দৃঢ়ভাবে কর, (অর্থাৎ ইচ্ছেকৃত শপথ) সুতরাং ওর কাফ্ফারা হচ্ছে দশজন মিসকীনকে খাদ্য প্রদান করা মধ্যম ধরণের, যা তোমরা নিজ পরিবারের লোকদেরকে আহার করিয়ে থাক, অথবা তাদেরকে পরিধেয় বস্ত্র দান করা (মধ্যম ধরণের) অথবা একটা ক্রীতদাস বা বাঁদী আযাদ করা, আর যে ব্যক্তি (এগুলোর কোন একটিও করতে) সমর্থ না হয়, তবে তার জন্য (একাধারে) তিনদিনের রোযা; এটা তোমাদের কসমসমূহের কাফ্ফারা যখন তোমরা কসম কর[১] (অতঃপর ভঙ্গ কর) এবং নিজেদের কসমসমূহের প্রতি লক্ষ্য রাখো; এরূপেই আল্লাহ তোমাদের জন্যে

১। (ক) আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)- থেকে বর্ণনা করেন। তিনি বলেছেনঃ (পৃথিবীতে) আমাদের আগমন সকলের শেষে (কিন্তু) কিয়ামতের দিন আমরা সকলের আগে থাকবো। (বুখারী, হাদীস নং ৬৬২৪)

(খ) রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আল্লাহ্র কসম! যদি তোমদের কেউ পরিবার-পরিজন সম্পর্কে কসম করে এবং সে এর কাফ্ফারা আদায় করার পরিবর্তে যা আল্লাহ্ ফরয করেছেন- কসমে অটল থাকে, তাহলে সে ব্যক্তি আল্লাহ্র নিকট গোনাহ্গার হবে। (বুখারী, হাদীস নং ৬৬২৫)

স্বীয় বিধানসমূহ বর্ণনা করেন, যেন তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٩٠﴾

৯০. হে মু'মিনগণ! নিশ্চয়ই মদ, জুয়া, মূর্তির বেদী[১] এবং শুভ অশুভ নির্ণয়ের তীর, এসব গর্হিত বিষয়, শয়তানী কাজ। সুতরাং এ থেকে সম্পূর্ণরূপে দূরে থাক, যেন তোমাদের কল্যাণ হয়।[২]

اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِى الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿٩١﴾

৯১. শয়তান তো এটাই চায় যে, মদ ও জুয়া দ্বারা তোমাদের পরস্পরের মধ্যে শত্রুতা ও হিংসা সৃষ্টি করে এবং আল্লাহর স্মরণ হতে ও নামায হতে তোমাদেরকে বিরত রাখে, সুতরাং এখনও কি তোমরা নিবৃত্ত হবে না?

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ

৯২. আর তোমরা আল্লাহর আনুগত্য করতে থাক ও রাসূল (ﷺ)-এর

১। আব্দুল্লাহ্ ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে হাদীস বর্ণনা করেছেন যে, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আসফালে বাল্‌দাহ্ নামক স্থানে যায়েদ ইবনে আমর ইবনে নুফাইলের সঙ্গে দেখা করতে যান। এটা ছিল রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর প্রতি অহী নাযিল হওয়ার পূর্বের ঘটনা। তখন (কোরাইশদের পক্ষ থেকে রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সামনে দস্তরখানা পেশ করা হল তখন) রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) যায়েদের সামনে দস্তরখানা পেশ করলেন। এতে গোশ্‌ত ছিল। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তা থেকে খেতে রাজী হলেন না। পরে বললেন, তোমাদের দেব-দেবীদের নামে যা তোমরা জবেহ করো, তা আমি কখনো খাব না। আমি একমাত্র তা-ই খেয়ে থাকি, যা আল্লাহ্‌র নামে জবেহ করা হয়। (বুখারী, হাদীস নং ৫৪৯৯)

২। আবদুর রহমান ইবনে গানাম আশ'আরী বলেছেন, আবূ আমের (রাযিআল্লাহু আনহু কিংবা আবূ মালেক আশ'আরী (রাযিআল্লাহু আনহু) আমার নিকট বর্ণনা করেছেন-আর আল্লাহ্‌র কসম! তিনি মিথ্যা বলেননি, তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছেন, আমার উম্মতের মধ্যে এমন অনেক সম্প্রদায় পয়দা হবে, যারা যেনা-ব্যভিচার, রেশমী কাপড় ব্যবহার, মদ্যপান ও গান-বাদ্যকে হালাল মনে করবে। আর অনেক সম্প্রদায় এমনও হবে, যারা পর্বতের পাদদেশে বসবাস করতে। গোধূলি-লগ্নে যখন তারা তাদের পশু-পাল নিয়ে ফিরে চলবে, এমনি সময় তাদের নিকট কোন গরজে ফকীর আসবে। তারা ফকীরকে বলবে, আগামীকাল সকালে আমাদের কাছে এসো। রাতের অন্ধকারেই আল্লাহ্ তাদেরকে ধ্বংস করে দিবেন এবং (তাদের ওপর) পর্বতটিকে ধ্বসিয়ে দিবেন। অন্যান্যদেরকে কিয়ামত পর্যন্ত বানর ও শূকর বানিয়ে রাখবেন। (বুখারী, হাদীস নং ৫৫৯০)

تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٩٢﴾

আনুগত্য করতে থাক এবং সতর্ক থাক, আর যদি বিমুখ থাক তবে জেনে রাখো যে, আমার রাসূল (ﷺ)-এর দায়িত্ব ছিল শুধু স্পষ্টভাবে (আদেশ) পৌঁছিয়ে দেয়া।

لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٣﴾

৯৩. যারা ঈমান আনে ও ভাল কাজ করে, এরূপ লোকদের উপর তাতে কোন গুনাহ নেই যা তারা পানাহার করেছে, যখন তারা আল্লাহর ভয় করে এবং ঈমান আনে ও ভাল কাজ করে, পুনঃ আল্লাহকে ভয় করতে থাকে এবং ঈমান আনে, পুনঃ আল্লাহকে ভয় করতে থাকে ও ভাল কাজ করতে থাকে; বস্তুতঃ আল্লাহ এরূপ সৎকর্মশীলদেরকে ভালবাসেন

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٤﴾

৯৪. হে মু'মিনগণ! আল্লাহ তোমাদেরকে কতক শিকারের দ্বারা পরীক্ষা করবেন, যেগুলো পর্যন্ত তোমাদের হাত ও তোমাদের বল্লম পৌঁছতে পারবে, এই উদ্দেশ্যে যে, আল্লাহ জেনে নেবেন, কে তাঁকে না দেখে ভয় করে? সুতরাং যে ব্যক্তি এরপরও সীমালঙ্ঘন করবে, তার জন্যে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি রয়েছে।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ؕ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو

৯৫. হে মু'মিনগণ! তোমরা ইহরামের অবস্থায় শিকারকে হত্যা করো না; আর তোমাদের মধ্যে যে ব্যক্তি ইচ্ছাপূর্বক ওকে হত্যা করবে, তার উপর তখন বিনিময় ওয়াজিব হবে, যা (মূল্যের দিক দিয়ে) সেই জানোয়ারের সমতুল্য হয়,যাকে সে হত্যা করেছে, যার (আনুমানিক মূল্যের) মীমাংসা তোমাদের মধ্য হতে দু'জন নির্ভরযোগ্য ব্যক্তি করে

انْتِقَامٍ ﴿٩٥﴾

দেবে যে, সে যে জন্তু হত্যা করেছে তার সমান পর্যায়ের একটি কুরবানীর জন্তু সে কা'বায় পৌঁছে দেবে অথবা কয়েকজন মিসকীনের খাওয়ানোর কাফ্ফারা দেবে, অথবা এর সমপরিমাণ রোযা রাখবে, যেন নিজের কৃতকর্মের পরিণামের স্বাদ গ্রহণ করে; অতীত (ত্রুটি) আল্লাহ ক্ষমা করে দিয়েছেন; আর পুনরায় যে ব্যক্তি এরূপ কর্মই করবে; আল্লাহ সে ব্যক্তি হতে (এর) প্রতিশোধ গ্রহণ করবেন; আল্লাহ পরাক্রান্ত, প্রতিশোধ গ্রহণকারী।

أُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهُ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٩٦﴾

৯৬. তোমাদের জন্যে সামুদ্রিক শিকার ধরা ও তা খাওয়া হালাল করা হয়েছে, তোমাদের ও মুসাফিরদের উপভোগের জন্যে, আর স্থলচর শিকার ধরা তোমাদের জন্যে হারাম করা হয়েছে যতক্ষণ তোমরা ইহরাম অবস্থায় থাক; আর সেই আল্লাহকে ভয় কর, যাঁর সমীপে তোমাদেরকে একত্রিত করা হবে।

جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَامًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَائِدَ ۚ ذَٰلِكَ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٩٧﴾

৯৭. মহাসম্মানিত গৃহ কা'বাকে আল্লাহ মানুষের সুদৃঢ় থাকার উপায় নির্ধারণ করেছেন এবং সম্মানিত মাসকেও, হারামে কুরবানীর জীবকেও এবং সেই জীবকেও যাদের গলায় নিদর্শন রয়েছে; এটা এ জন্যে যেন তোমরা দৃঢ় বিশ্বাস রাখ যে, নিশ্চয়ই আল্লাহ আকাশসমূহ ও যমীনস্থিত সব বস্তুরই খবর রাখেন, আর নিশ্চয়ই আল্লাহ সর্ব বিষয়ে পূর্ণ জ্ঞাত।

اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَاَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩٨﴾

৯৮. তোমরা জেনে রাখো যে, আল্লাহ কঠোর শাস্তি প্রদানকারী এবং অতি ক্ষমাশীল, দয়াময়।

مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٩٩﴾

৯৯. রাসূলের দায়িত্ব শুধু পৌঁছিয়ে দেয়া মাত্র, আর তোমরা যা কিছু প্রকাশ কর এবং যা কিছু গোপন কর তার সবকিছুই আল্লাহ জানেন।

قُلْ لَّا يَسْتَوِى الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰۤاُولِى الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٠﴾

১০০. তুমি (হে মুহাম্মাদ ﷺ) বলে দাওঃ পবিত্র ও অপবিত্র সমান নয়, যদিও অপবিত্রের আধিক্য তোমাকে বিস্মিত করে, অতএব হে জ্ঞানীগণ! আল্লাহকে ভয় করতে থাক যেন তোমরা (পূর্ণ) সফলকাম হও।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ وَاِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ تُبْدَ لَكُمْ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٠١﴾

১০১. হে মু'মিনগণ! তোমরা এমন সব বিষয়ে জিজ্ঞেস করো না যে, যদি তা তোমাদের নিকট প্রকাশ করে দেয়া হয়, তবে তোমাদের কষ্ট দেবে, আর যদি তোমরা কুর'আন অবতীর্ণ হওয়ার সময় উক্ত বিষয়সমূহ সম্বন্ধে জিজ্ঞেস কর, তবে তোমাদের জন্যে প্রকাশ করে দেয়া হবে, অতীতের জিজ্ঞাসাবাদ আল্লাহ ক্ষমা করে দিয়েছেন; বস্তুতঃ আল্লাহ মহা ক্ষমাশীল, অতিশয় সহিষ্ণু।

قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾

১০২. এরূপ বিষয় তোমাদের পূর্বে অন্যান্য লোকেরাও জিজ্ঞেস করেছিল, অতঃপর তারা ওর অস্বীকারকারী হয়ে যায়।

مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٣﴾

১০৩. আল্লাহ না বাহীরার প্রচলন বৈধ করেছেন, না সায়েবার, না ওয়াসীলার এবং না হামীর; কিন্তু যারা কাফির তারা আল্লাহর প্রতি

মিথ্যারোপ করে, আর অধিকাংশই জ্ঞান রাখে না।[১]

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿١٠٤﴾

১০৪. আর যখন তাদেরকে বলা হয়ঃ আল্লাহর অবতীর্ণ বিধানসমূহের দিকে আস এবং রাসূলের দিকে আস, তখন তারা বলেঃ আমাদের জন্যে ওটাই যথেষ্ট যার উপর আমাদের বাপ-দাদাদেরকে পেয়েছি; যদিও তাদের বাপ-দাদাগণ না কোন জ্ঞান রাখতো, আর না হেদায়াতপ্রাপ্ত ছিল; তবুও কি (ওটা তাদের জন্যে যথেষ্ট হবে)?

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٥﴾

১০৫. হে মু'মিনগণ? তোমরা নিজেদের চিন্তা কর, যখন তোমরা দ্বীনের পথে চলছো, তখন কেউ পথভ্রষ্ট হলে সে তোমাদের কোন ক্ষতি করতে পারবে না; তোমরা সবাই আল্লাহরই সমীপে প্রত্যাবর্তিত হবে, অতঃপর তোমরা যা কিছু করছিলে সে সম্পর্কে তিনি তোমাদেরকে অবহিত করবেন।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ اَوْ اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ اِنْ اَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَاَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةُ الْمَوْتِ ؕ تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْۢ بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ اِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِىْ

১০৬. হে মু'মিনগণ! তোমাদের পরস্পরের (বিষয়াদির) মধ্যে তোমাদের মধ্য হতে দু'জন ন্যায় পরায়ণ ব্যক্তি সাক্ষী থাকা সঙ্গত, যখন তোমাদের মধ্যে কারও মৃত্যু আসন্ন হয় (অর্থাৎ) অসিয়ত করার সময় হয়, অথবা ভিন্ন সম্প্রদায় হতে দু'জন হবে, যদি তোমরা সফরে থাক

১। **বাহীরাঃ** যে জন্তুর দুধ প্রতিমার উদ্দেশ্যে উৎসর্গ করা হত। **সায়েবাঃ** যে জন্তু প্রতিমার নামে ছেড়ে দেয়া হত। **ওয়াসীলাঃ** যে উষ্ট্রী উপর্যুপরি মাদী বাচ্চা প্রসব করত ওটাকে প্রতিমার নামে ছেড়ে দেয়া হত। **হামঃ** যে নর উষ্ট্র দ্বারা বিশেষ সংখ্যক প্রজননের কাজ নেয়া হয়েছে ওটাকে প্রতিমার নামে ছেড়ে দেয়া হত। এ সমস্ত জন্তুগুলিকে কোন কাজে ব্যবহার করা তাদের নিষিদ্ধ ছিল। (আহসানুল বায়ান উর্দু ৩৩১ পৃষ্ঠা)

بِهٖ ثَمَنًا وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۙ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللّٰهِ
اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ ﴿١٠٦﴾

অতঃপর মৃত্যুর বিপদ তোমাদের পেয়ে বসে, যদি তোমাদের সন্দেহ হয়, তবে সাক্ষীদ্বয়কে নামাযের (জামায়াতের) পর অপেক্ষমান রাখো, অতঃপর তারা আল্লাহর নামে শপথ করে বলবেঃ আমরা এ শপথের বিনিময়ে কোন স্বার্থ ভোগ করতে চাই না। যদিও সে আত্মীয়ও হয়; আর আল্লাহর বিধানকে আমরা গোপন করবো না (যদি এরূপ করি, তবে) এমতাবস্থায় আমরা ভীষণ পাপী হবো।

فَاِنْ عُثِرَ عَلٰۤى اَنَّهُمَا اسْتَحَقَّاۤ اِثْمًا فَاٰخَرٰنِ يَقُوْمٰنِ
مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِيْنَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْاَوْلَيٰنِ
فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ لَشَهَادَتُنَاۤ اَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا
اعْتَدَيْنَاۤ ۖ اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٧﴾

১০৭. অতঃপর যদি জানা যায় যে, ওসীদ্বয় (সাক্ষীদ্বয়) কোন পাপে জড়িত হয়ে পড়েছে, তবে যাদের বিপক্ষে পাপে জড়িত হয়ে পড়েছিল তাদের মধ্য হতে (মৃতের) সর্বাপেক্ষা নিকটতম অপর দু'ব্যক্তি সে স্থানে স্থলাভিষিক্ত হবে, অতঃপর উভয়ে (এরূপে) আল্লাহর নামে শপথ করে বলবেঃ নিশ্চয়ই আমাদের এ শপথ তাদের শপথ অপেক্ষা অধিক সত্য এবং আমরা বিন্দুমাত্র ব্যতিক্রম করিনি, (যদি করি, তবে) এমতাবস্থায় যালিমদের অন্তর্ভুক্ত হবো।

ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ يَّاْتُوْا بِالشَّهَادَةِ عَلٰى وَجْهِهَاۤ اَوْ يَخَافُوْۤا
اَنْ تُرَدَّ اَيْمَانٌۢ بَعْدَ اَيْمَانِهِمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسْمَعُوْا ؕ
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٨﴾

১০৮. এটাই এ বিষয়ে অতীব সহজ পন্থা যে তারা ঘটনা যথাযথভাবে প্রকাশ করে দেয়, অথবা এ ভয় করে যে, তারা শপথ গ্রহণ করার পর (পুনঃ) শপথগুলোকে ফিরানো হবে; আর আল্লাহকে ভয় কর এবং (বিধানসমূহের) শ্রবণ কর, আর আল্লাহ ফাসিকদেরকে পথ দেখাবেন না।

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اُجِبْتُمْ ؕ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿١٠٩﴾

১০৯. যেদিন আল্লাহ রাসূলগণকে সমবেত করবেন, অতঃপর বলবেনঃ তোমরা (উম্মতদের নিকট থেকে) কী উত্তর পেয়েছিলে? তাঁরা উত্তরে বলবেনঃ (তাদের অনাচারের কথা) আমাদের কিছুই জানা নেই; নিশ্চয়ই আপনি সমস্ত গোপনীয় বিষয় সম্পূর্ণ জ্ঞাত।

اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِيْ عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ اِذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۖ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ وَاِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ وَاِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِيْ وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ كَفَفْتُ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١١٠﴾

১১০. যখন আল্লাহ বলবেনঃ হে ঈসা ইবনে মারইয়াম! আমার অনুগ্রহ স্মরণ কর যা তোমার উপর ও তোমার মায়ের উপর (প্রদত্ত) হয়েছে। যখন আমি তোমাকে রূহুল কুদুস (জিবরীল عليه السلام) দ্বারা সাহায্য করেছি, (এবং) তুমি মানুষের সাথে কথা বলেছো (মায়ের) কোলে এবং প্রৌঢ় (পরিণত) বয়সেও আর যখন আমি তোমাকে কিতাব ও হিকমতের কথা এবং তাওরাত ও ইনজীল শিক্ষা দিয়েছি, আর যখন তুমি আমার আদেশে মাটি দ্বারা পাখির আকৃতি সদৃশ এক আকৃতি প্রস্তুত করেছিলে, অতঃপর তুমি ওতে ফুঁৎকার দিতে, যার ফলে ওটা আমার আদেশে পাখী হয়ে যেতো, আর তুমি আমার আদেশে জন্মান্ধ ও কুষ্ঠরোগী নিরাময় করে দিতে; আর যখন তুমি আমার আদেশে মৃতদেরকে বের করে দাঁড় করাতে, আর যখন আমি বানী ইসরাঈলকে (তোমাকে হত্যা করা হতে) নিবৃত্ত রেখেছি, যখন তুমি তাদের কাছে (স্বীয় নবুওয়াতের) প্রমাণাদি নিয়ে হাযির হয়েছিলে, অতঃপর তাদের মধ্যে যারা কাফির

ছিল তারা বলেছিল এটা (মুজিযাসমূহ) স্পষ্ট যাদু ছাড়া আর কিছুই নয়।

وَاِذْ اَوْحَيْتُ اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِيْ وَبِرَسُوْلِيْ ۚ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ﴿١١١﴾

১১১. আর যখন আমি হাওয়ারী-দেরকে আদেশ করলাম— আমার প্রতি এবং আমার রাসূলের প্রতি ঈমান আন, তারা বললো, আমরা ঈমান আনলাম এবং আপনি সাক্ষী থাকুন যে, আমরা পূর্ণ অনুগত।

اِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ اَنْ يُّنَزِّلَ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ؕ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١١٢﴾

১১২. (ঐ সময়টুকু স্মরণীয়) যখন হাওয়ারীরা বললোঃ হে ঈসা ইবনে মারইয়াম! আপনার প্রতিপালক কি এরূপ করতে পারেন যে, আমাদের জন্যে আকাশ হতে কিছু খাদ্য প্রেরণ করবেন? ঈসা বললেনঃ আল্লাহকে ভয় কর, যদি তোমরা ঈমানদার হয়ে থাক।

قَالُوْا نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُنَا وَنَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿١١٣﴾

১১৩. তারা বললোঃ আমাদের উদ্দেশ্য এই যে, আমরা তা থেকে আহার করি এবং আমাদের অন্তর সম্পূর্ণ প্রশান্ত হয়ে যায়, আর আমাদের এই বিশ্বাস আরও সুদৃঢ় হয় যে, আপনি আমাদের নিকট সত্য বলেছেন এবং আমরা এর প্রতি সাক্ষ্যদানকারীদের অন্তর্ভুক্ত হই।

قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ ۚ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿١١٤﴾

১১৪. ঈসা ইবনে মারইয়াম (عليه السلام) দু'আ করলেনঃ হে আল্লাহ! হে আমাদের প্রভু, আমাদের প্রতি আকাশ হতে খাদ্য অবতীর্ণ করুন যেন ওটা আমাদের জন্যে অর্থাৎ আমাদের মধ্যে যারা প্রথমে (বর্তমান আছে) এবং যারা পরে, সকলের জন্যে একটা আনন্দের বিষয় হয়

এবং আপনার পক্ষ হতে এক নিদর্শন হয়ে থাকে। আর আমাদেরকে খাদ্য প্রদান করুন, বস্তুতঃ আপনি তো সর্বোত্তম খাদ্য প্রদানকারী।

قَالَ اللّٰهُ اِنِّیْ مُنَزِّلُهَا عَلَیْكُمْ ۚ فَمَنْ یَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّیْۤ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّاۤ اُعَذِّبُهٗۤ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۱۵﴾

১১৫. আল্লাহ বললেনঃ আমি এই খাদ্য তোমাদের প্রতি অবতীর্ণ করবো, অতঃপর তোমাদের মধ্যে যে এর অকৃতজ্ঞ হবে, আমি তাকে এমন শাস্তি দেবো যে, বিশ্ববাসীদের মধ্যে ঐশাস্তি আর কাউকেও দেবো না।

وَ اِذْ قَالَ اللّٰهُ یٰعِیْسَی ابْنَ مَرْیَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِیْ وَ اُمِّیَ اِلٰهَیْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا یَكُوْنُ لِیْۤ اَنْ اَقُوْلَ مَا لَیْسَ لِیْ ۗ بِحَقٍّ ؕ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ؕ تَعْلَمُ مَا فِیْ نَفْسِیْ وَ لَاۤ اَعْلَمُ مَا فِیْ نَفْسِكَ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ ﴿۱۱۶﴾

১১৬. আর যখন আল্লাহ বলবেনঃ হে ঈসা ইবনে মারইয়াম! তুমি কি লোকদেরকে বলেছিলে তোমরা আল্লাহ ছাড়া আমাকে ও আমার মাতাকে মা'বূদ নির্ধারণ করে নাও? ঈসা নিবেদন করবেন আমি তো আপনাকে পবিত্র মনে করি; আমার পক্ষে কোনক্রমেই শোভনীয় ছিল না যে, আমি এমন কথা বলি যা বলবার আমার কোনই অধিকার নেই; যদি আমি বলে থাকি, তবে অবশ্যই আপনার জানা থাকবে; আপনি তো আমার অন্তরস্থিত কথাও জানেন, পক্ষান্তরে আপনার অন্তরে যা কিছু রয়েছে আমি তা জানি না; সমস্ত গায়েবের বিষয় আপনিই জ্ঞাত।

مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَاۤ اَمَرْتَنِیْ بِهٖۤ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّیْ وَ رَبَّكُمْ ۚ وَ كُنْتُ عَلَیْهِمْ شَهِیْدًا مَّا دُمْتُ فِیْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّیْتَنِیْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِیْبَ عَلَیْهِمْ ؕ وَ اَنْتَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ شَهِیْدٌ ﴿۱۱۷﴾

১১৭. আমি তাদেরকে কিছুই বলিনি এটা ব্যতীত, যা আপনি আমাকে আদেশ করেছেন যে, তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর, যিনি আমারও প্রতিপালক, তোমাদেরও প্রতিপালক, আর আমি তাদের সম্বন্ধে সাক্ষী

ছিলাম যতক্ষণ তাদের মধ্যে ছিলাম, অতঃপর যখন আপনি আমাকে উঠিয়ে নিয়েছেন। তখন আপনিই তাদের তত্ত্বাবধায়ক; আর আপনি সর্ব বিষয়ে প্রত্যক্ষদর্শী।

إِن تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۖ وَإِن تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١١٨﴾

১১৮. আপনি যদি তাদেরকে শাস্তি প্রদান করেন, তবে ওরা তো আপনার বান্দা, আর যদি তাদেরকে ক্ষমা করে দেন তবে আপনি পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।[১]

قَالَ اللَّهُ هَٰذَا يَوْمُ يَنفَعُ الصَّادِقِينَ صِدْقُهُمْ ۚ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١١٩﴾

১১৯. আল্লাহ বলবেনঃ এটা সেদিন, যেদিন সত্যবাদীদের সত্যবাদিতা কাজে আসবে, তারা জান্নাত প্রাপ্ত হবে, যার তলদেশে নহরসমূহ বইতে থাকবে, সেখানে তারা চিরস্থায়ী থাকবে। আল্লাহ তাদের প্রতি সন্তুষ্ট হয়েছেন এবং তারা আল্লাহর প্রতি সন্তুষ্ট হয়েছে; এটাই হচ্ছে মহা সফলতা।

لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٢٠﴾

১২০. আল্লাহরই জন্যে রয়েছে নভোমণ্ডলের ও ভূ-মণ্ডলের রাজত্ব এবং ঐসমুদয় বস্তুর যা তাতে বিদ্যমান রয়েছে; আর তিনি সকল বিষয়ে পূর্ণ ক্ষমতাবান।

১। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেন যে, তিনি বলেছেন, নিশ্চয়ই কিয়ামতের দিন তোমাদেরকে একত্রিত করা হবে এবং কিছু সংখ্যক লোককে পাকড়াও করে জাহান্নামের দিকে নিয়ে যাওয়া হবে। তখন আমি তাই বলব যা আল্লাহ্‌র নেক বান্দা ঈসা (আলাইহিস্‌সালাম) বলেছিলেনঃ যে, "আমি ততদিন তাদের সম্পর্কে অবগত ছিলাম যতদিন তাদের মাঝে ছিলাম"। (সূরা মায়েদা -১১৭) [বুখারী, হাদীস নং ৪৬২৬]

সূরাঃ আন'আম, মাক্কী

(আয়াতঃ ১৬৫, রুকূঃ ২০)

পরম দয়ালু দাতা আল্লাহর নামে (আরম্ভ করছি)

سُوْرَةُ الْاَنْعَامِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ١٦٥ رُكُوْعَاتُهَا ٢٠

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. যাবতীয় প্রশংসা আল্লাহর জন্যে যিনি আকাশসমূহ ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন এবং সৃষ্টি করেছেন আলো ও অন্ধকার; এটা সত্ত্বেও যারা কুফুরি করেছে তারা তাদের প্রতিপালকের সমকক্ষ নিরূপণ করলো।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ؕ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ①

২. অথচ তিনিই তোমাদেরকে মাটি হতে সৃষ্টি করেছেন, অতঃপর তোমাদের জীবনের জন্যে একটি নির্দিষ্ট মেয়াদ নির্ধারণ করেছেন, এ ছাড়া একটি নির্দিষ্ট মেয়াদও তাঁর নিকট নির্ধারিত রয়েছে; কিন্তু এর পরেও তোমরা সন্দেহ করে থাক।

هُوَ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ قَضٰٓى اَجَلًا ؕ وَاَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ②

৩. আকাশসমূহে ও পৃথিবীতে একমাত্র তিনিই সত্য মা'বূদ রয়েছেন, যিনি তোমাদের গোপনীয় ও প্রকাশ্য সব অবস্থাই জানেন, আর তোমরা ভাল-মন্দ যা কিছু কর সেটাও তিনি পূর্ণরূপে অবগত আছেন।

وَهُوَ اللّٰهُ فِى السَّمٰوٰتِ وَفِى الْاَرْضِ ؕ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ③

৪. আর তাদের অবস্থা হচ্ছে এই যে, তাদের নিকট তাদের প্রতিপালকের নিদর্শনসমূহ হতে যে কোন নিদর্শনই আসুক না কেন, তা হতেই তারা মুখ ফিরিয়ে নিয়ে থাকে।

وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ④

৫. সুতরাং তাদের নিকট যখন সত্য এসেছে, তাকেও তারা মিথ্যা

فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ؕ فَسَوْفَ يَاْتِيْهِمْ

اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٥

অভিহিত করেছে। অতএব অতিসত্বরই তাদের নিকট সে বিষয়ের সংবাদ এসে পৌঁছবে, যার সাথে তারা ঠাট্টা-বিদ্রূপ করতো।

اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَاَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا ۪ وَّجَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ۝٦

৬. তারা কি ভেবে দেখেনি যে, আমি তাদের পূর্বে বহু সম্প্রদায়কে ধ্বংস করে দিয়েছি, যাদেরকে দুনিয়ায় এমন শক্তি, সামর্থ্য ও প্রতিপত্তি দিয়েছিলাম, যা তোমাদেরকে দেইনি, আর আমি তাদের প্রতি আকাশ হতে প্রচুর বৃষ্টি বর্ষণ করেছি এবং তাদের নিম্নভূমি হতে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত করেছি, কিন্তু তাদের গুনাহের কারণে আমি তাদেরকে ধ্বংস করে দিয়েছি এবং তাদের পর অন্য সম্প্রদায়সমূহ নতুন করে সৃষ্টি করেছি।

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتٰبًا فِيْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِاَيْدِيْهِمْ لَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧

৭. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! যদি আমি কাগজের উপর লিখিত কোন কিতাব তোমার প্রতি অবতীর্ণ করতাম, অতঃপর তারা তা নিজেদের হাত দ্বারা স্পর্শও করতো; তবুও কাফির ও অবিশ্বাসী লোকেরা বলতো যে, এটা প্রকাশ্য যাদু ছাড়া আর কিছুই নয়।

وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ۭ وَلَوْ اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ ۝٨

৮. আর তারা বলে থাকে যে, তাদের কাছে কোন ফেরেশ্‌তা কেন অবতীর্ণ করা হয় না? আমি যদি প্রকৃতই কোন ফেরেশ্‌তা অবতীর্ণ করতাম তবে যাবতীয় বিষয়েরই চূড়ান্ত সমাধান হয়ে যেত। অতঃপর আর তাদেরকে কিছু মাত্রই অবকাশ দেয়া হতো না।

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ

৯. আর যদি আমি ফেরেশ্‌তাই অবতীর্ণ করতাম তবে তাকে মানুষ

مَّا يَلْبِسُوْنَ ⑨

রূপেই করতাম। আর আমার এ কাজ দ্বারা তাদেরকে আমি সেই বিভ্রান্তিতেই ফেলে দিতাম, যে আপত্তি তারা এখন করছে।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ⑩

১০. বাস্তবিকই তোমার পূর্বে যেসব রাসূল এসেছিলেন, তাঁদের সাথেও ঠাট্টা-বিদ্রূপ করা হয়েছে, ফলতঃ এসব ব্যঙ্গ বিদ্রূপের পরিণামফল বিদ্রূপকারীদেরকে পরিবেষ্টন করে ফেলেছিল।

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ⑪

১১. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি বল, তোমরা ভূ-পৃষ্ঠে পরিভ্রমণ কর, অতঃপর মিথ্যা প্রতিপন্নকারীদের পরিণাম কি হয়েছে তা গভীর অভিনিবেশ সহকারে লক্ষ্য কর।

قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلْ لِّلّٰهِ ؕ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ⑫

১২. তুমি (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! জিজ্ঞেস কর—আকাশমন্ডলে ও পৃথিবীতে অবস্থিত যা কিছু রয়েছে, তা কার মালিকাধীন? তুমি বলঃ তা সবই আল্লাহর মালিকানা স্বত্ব, আল্লাহ নিজের প্রতি দয়া ও অনুগ্রহকে অপরিহার্য[১] করেছেন। তিনি

১। (ক) যুহরী থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ আমাদেরকে হাদীস বর্ণনা করেছেন সাঈদ ইবনে মুসাইয়্যিব, নিশ্চয়ই আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেনঃ আমি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি যে, আল্লাহ্ তা'আলা রহমতকে একশত ভাগে বিভক্ত করে তাঁর নিকটে নিরান্নবই ভাগ রেখে দিয়েছেন। আর এক ভাগ পৃথিবীতে দিয়েছেন। আর এই এক অংশ থেকেই সৃষ্টিজীব পরস্পরকে দয়া-মায়া দেখায়, তা এ এক ভাগের কারণেই। এমন কি শাবক ব্যাথা পাবে এ ভয়ে ঘোড়াটি তার শাবকের ওপর থেকে পা তুলে নেয়। (তাও এ এক ভাগ থেকে পাওয়া দয়া-মায়ার কারণেই)। (বুখারী, হাদীস নং ৬০০০)

(খ) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে, যখন আল্লাহ্ সমস্ত সৃষ্টিজীবকে সৃষ্টি করেছেন তখন তিনি স্বীয় কিতাবে, (লওহে মাহফুজে) যা তাঁর নিকট আরশের মধ্যে রয়েছে তাতে লিখেছেন যে, নিশ্চয়ই আমার রহমত বা করুণা আমার ক্রোধের উপর বিজয়ী হয়েছে। (বুখারী, হাদীস নং ৩১৯৪)

তোমাদের সকলকে কিয়ামতের দিন অবশ্যই সমবেত করবেন, যেদিন সম্পর্কে কোনই সন্দেহ নেই, যারা নিজেরা নিজেদের ক্ষতি ও ধ্বংসের মুখে ফেলেছে তারাই ঈমান আনে না।

وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٣﴾

১৩. রাতের অন্ধকারের মধ্যে এবং দিনের আলোতে যা কিছু রয়েছে, এসব কিছুই আল্লাহর; তিনি সব কিছুই শুনেন ও জানেন।

قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ؕ قُلْ اِنِّيْۤ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٤﴾

১৪. (হে মুহাম্মাদ ﷺ!) তুমি জিজ্ঞেস কর, আমি কি আল্লাহকে বাদ দিয়ে অন্য কাউকেও নিজের পৃষ্ঠপোষক ও বন্ধুরূপে গ্রহণ করবো (সেই আল্লাহকে বর্জন করে) যিনি হলেন আকাশ ও পৃথিবীর সৃষ্টিকর্তা? তিনি রিযিক দান করেন; কিন্তু তাকে কেউ রিযিক দান করেন না, তুমি বলঃ আমাকে এ আদেশই করা হয়েছে যে, আমি সকলের আগেই ইসলাম গ্রহণ করি (আর আমাকে বিশেষভাবে তাকীদ করা হয়েছে যে,) তুমি মুশরিকদের মধ্যে শামিল হবে না।

قُلْ اِنِّيْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾

১৫. তুমি (হে মুহাম্মাদ ﷺ) বলঃ আমি আমার প্রতিপালকের অবাধ্য হলে, আমি মহা বিচার দিনের মহা শাস্তির ভয় করছি।

مَنْ يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗ ؕ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾

১৬. সে দিন যার উপর হতে শাস্তি প্রত্যাহার করা হবে, তার প্রতি আল্লাহ বড়ই অনুগ্রহ করবেন, আর এটাই হচ্ছে প্রকাশ্য মহা সাফল্য।

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾

১৭. যদি আল্লাহ্ কারও ক্ষতি সাধন করেন তবে তিনি ছাড়া সে ক্ষতি দূর করার আর কেউই নেই, আর যদি তিনি কারও কল্যাণ করেন, (তবে তিনি সেটাও করতে পারেন, কেননা) তিনি প্রতিটি বস্তুর উপর ক্ষমতাবান ও কর্তৃত্বশীল।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ۚ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿١٨﴾

১৮. তিনিই তাঁর বান্দাদের উপর একচ্ছত্র ক্ষমতার অধিকারী, তিনিই মহাজ্ঞানী ও সর্ব বিষয়ে ওয়াকিফ হাল।

قُلْ اَيُّ شَيْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ۚ قُلِ اللّٰهُ ۖ شَهِيْدٌۢ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۖ وَاُوْحِيَ اِلَيَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ۭ اَىِٕنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰى ۭ قُلْ لَّآ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿١٩﴾

১৯. (হে মুহাম্মাদ ﷺ!) তুমি তাদেরকে জিজ্ঞেস কর, কার সাক্ষ্য সবচেয়ে বেশী গণ্য? তুমি বলে দাওঃ আমার ও তোমাদের মধ্যে আল্লাহই হচ্ছেন সাক্ষী, আর এ কুরআন আমার নিকট ওহীর মাধ্যমে পাঠানো হয়েছে, যেন আমি তোমাদেরকে এবং যাদের নিকট এটা পৌছবে তাদের সকলকে এর দ্বারা সতর্ক ও সাবধান করি। বাস্তবিক, তোমরা কি এই সাক্ষ্য দিতে পার যে, আল্লাহর সাথে অন্য কোন মা'বূদ রয়েছে? তুমি বলঃ আমি এ সাক্ষ্য দিতে পারি না, তুমি ঘোষণা কর যে তিনিই একমাত্র মা'বূদ আর তোমরা যে শিরকে লিপ্ত রয়েছো, তা থেকে আমি সম্পূর্ণ মুক্ত।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَاۗءَهُمْ ۘ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠﴾

২০. যাদেরকে আমি কিতাব দান করেছি, তারা রাসূল (ﷺ)-কে এমনভাবে চিনে, যেরূপ তারা নিজেদের সন্তান-সন্ততিদেরকে চিনে; কিন্তু যারা নিজেদেরকে ক্ষতিগ্রস্ত করেছে তারা ঈমান আনবে না।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢١﴾

২১. যে ব্যক্তি আল্লাহর প্রতি মিথ্যা দোষারোপ করে কিংবা আল্লাহর আয়াতসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে, তার চেয়ে বড় যালিম আর কে হতে পারে? এরূপ যালিম লোক কখনই সাফল্য লাভ করতে পারবে না।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَيْنَ شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٢٢﴾

২২. সে দিনটিও স্মরণযোগ্য যেদিন আমি সকলকে একত্রিত করবো, অতঃপর যারা আমার সাথে শির্ক্ করেছে, তাদেরকে আমি বলবো, তোমাদের সে শরীকগণ এখন কোথায় যাদেরকে তোমরা মা'বূদ বলে ধারণা করতে?

ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. অতঃপর তাদের শিরকের ফল এ ছাড়া আর কিছুই হবে না যে তারা বলবে আল্লাহর কসম, হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা মুশরিক ছিলাম না।

اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٤﴾

২৪. তুমি লক্ষ্য কর, তারা নিজেদের সম্পর্কে কিরূপ মিথ্যা বলছে! তাদের নিজেদের মিথ্যা রচনাগুলো নিস্ফল হয়ে যাবে।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٥﴾

২৫. তাদের মধ্যে এমন লোকও রয়েছে, যারা মনোযোগ সহকারে কান লাগিয়ে তোমার কথা শুনে থাকে, (অথচ গ্রহণ করে না, কিন্তু তাদের কর্ম ফলে) তোমার কথা যাতে তারা ভালরূপে বুঝতে না পারে সে জন্যে আমি তাদের অন্তরের উপর আবরণ রেখে দিয়েছি এবং তাদের কর্ণে বধিরতা অর্পণ করেছি (যাতে শুনতে না পায়), তারা যদি

সমস্ত আয়াত ও প্রমাণাদিও অবলোকন করে তবুও তারা ঈমান আনবে না, এমন কি যখন তোমার কাছে আসে তখন তোমার সাথে অর্থহীন বিতর্ক জুড়ে দেয়, আর তাদের কাফির লোকেরা (সব কথা শোনার পর) বলে, এটা প্রাচীনকালের লোকদের কিস্‌সা-কাহিনী ব্যতীত আর কিছুই নয়।

وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْـَٔوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾

২৬. তারা তো তা থেকে অন্য লোকদের বিরত রাখে, অধিকন্তু তারা নিজেরাও তা থেকে দূরে দূরে থাকে। বস্তুতঃ তারা শুধুমাত্র নিজেদেরকে ধ্বংস করছে অথচ তারা অনুভব করছে না।

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧﴾

২৭. তুমি যদি তাদের সেই সময়ের অবস্থাটি অবলোকন করতে যখন তাদেরকে জাহান্নামে দাঁড় করানো হবে, তখন তারা বলবেঃ হায়! আমরা যদি আবার দুনিয়ায় ফিরে যেতে পারতাম, আমরা সেখানে আমাদের প্রতিপালকের নিদর্শনসমূহ অস্বীকার করতাম না এবং আমরা ঈমানদার হয়ে যেতাম!

بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ۗ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٢٨﴾

২৮. (একথা বলার কারণ হলো) যে সত্য তারা পূর্বে গোপন করেছিল, তা তখন তাদের নিকট সুস্পষ্টরূপে প্রতিভাত হয়ে পড়বে, আর একান্তই যদি তাদেরকে সাবেক পার্থিব জীবনে ফিরে যেতে দেয়া হয়, তবু যা করতে তাদেরকে নিষেধ করা হয়েছিল তারা তা-ই করবে, নিঃসন্দেহে তারা মিথ্যাবাদী।

وَقَالُوْٓا اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٢٩﴾

২৯. তারা বলেঃ এই পার্থিব জীবনই প্রকৃত জীবন, (এরপর আর কোন জীবন নেই,) আর আমাদেরকে পুনরুত্থিতও করা হবে না।

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ۭ قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ۭ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ۭ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٠﴾

৩০. হায়! তুমি যদি সেই দৃশ্যটি দেখতে, যখন তাদেরকে তাদের প্রতিপালকের সম্মুখে দন্ডায়মান করা হবে, তখন আল্লাহ তা'য়ালা জিজ্ঞেস করবেনঃ এটা (কিয়ামত) কি সত্য নয়? তখন তারা উত্তরে বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা আমাদের প্রতিপালকের (আল্লাহর) শপথ করে বলছি– হ্যাঁ (এটা বাস্তব ও সত্য বিষয়,) তখন আল্লাহ বলবেনঃ তবে তোমরা এটাকে অস্বীকার করার ফল স্বরূপ শাস্তির স্বাদ গ্রহণ কর।

قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَاۗءِ اللّٰهِ ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَاۗءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا عَلٰي مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰي ظُهُوْرِهِمْ ۭ اَلَا سَاۗءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٣١﴾

৩১. ঐসব লোকই ক্ষতিগ্রস্ত হলো যারা আল্লাহর সাথে সাক্ষাৎ হওয়ার সংবাদকে মিথ্যা ভেবেছে[১] যখন সে নির্দিষ্ট সময়টি হঠাৎ তাদের কাছে এসে পড়বে, তখন তারা বলবেঃ হায়! পিছনে আমরা কতই না অবহেলায় অন্যায় করেছি, তারা নিজেরাই নিজেদের গুনাহের বোঝা নিজেদের পিঠে বহন করবে, শুনে রেখো, তারা যা কিছু বহন করেছে তা কতই না নিকৃষ্ট ধরনের বোঝা!

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۭ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ

৩২. পার্থিব এ জীবন খেল-তামাশার (ও আমোদ-প্রমোদের) ব্যাপার ছাড়া

১। আবূ মূসা নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন তিনি বলেনঃ যে ব্যক্তি আল্লাহ্‌র সাক্ষাতকে ভালবাসে, আল্লাহ্‌ও তার সাক্ষাতকে ভালবাসেন। আর যে ব্যক্তি আল্লাহ্‌র সাথে সাক্ষাতকে অপছন্দ করে, আল্লাহ্‌ও তার সাক্ষাতকে অপছন্দ করেন। (বুখারী, হাদীস নং ৬৫০৮)

خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۳۲﴾

কিছুই নয়, প্রকৃতপক্ষে পরকালের আরামই হবে তাদের জন্যে মঙ্গলময় যারা তাকওয়া অবলম্বন করে। তবুও কি তোমাদের বোধদয় হবে না?

قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ لَيَحْزُنُكَ الَّذِيْ يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿۳۳﴾

৩৩. তাদের কথাবার্তায় তোমার যে খুব দুঃখ ও মনঃকষ্ট হয় তা আমি ভালোভাবেই জানি। তারা শুধুমাত্র তোমাকেই মিথ্যা প্রতিপন্ন করছে না, বরং এ পাপিষ্ঠ যালিমরা আল্লাহর আয়াতসমূহকেও অস্বীকার করছে।

وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰۤى اَتٰهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ جَآءَكَ مِنْ نَّبَاِئِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۳۴﴾

৩৪. তোমার পূর্বে বহু নবী-রাসূলকেও মিথ্যা প্রতিপন্ন করা হয়েছে। অতঃপর তারা এ মিথ্যা প্রতিপন্নকে এবং তাদের প্রতি কৃত নির্যাতন ও উৎপীড়নকে অম্লান বদনে সহ্য করেছে, শেষ পর্যন্ত তাদের কাছে আমার সাহায্য এসে পৌঁছেছে, আল্লাহর কালামকে পরিবর্তন করার মত কেউই নেই। আর তোমার কাছে সাবেক নবীদের কিছু কিছু সংবাদ ও কাহিনী তো পৌঁছে গেছে।

وَاِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْاَرْضِ اَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَآءِ فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۳۵﴾

৩৫. আর যদি তাদের অনাগ্রহ ও উপেক্ষা তোমার কাছে কঠিন হয়ে পড়ে, তবে ক্ষমতা থাকলে মাটির কোন সুড়ঙ্গ অনুসন্ধান কর বা আকাশে সিঁড়ি লাগিয়ে দাও, অতঃপর তাদের কাছে কোন নিদর্শন নিয়ে এসো, আল্লাহ্ ইচ্ছা করলে তাদের সকলকে তিনি হেদায়াতের উপর সমবেত করতেন। সুতরাং তুমি অজ্ঞদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যেয়ো না।

اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ؕ وَالْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿۳۶﴾

৩৬. যারা (মনোযোগ দিয়ে) শুনে থাকে তারাই সত্যের ডাকে সাড়া দেয়, আল্লাহ মৃতদেরকে জীবিত করে

উঠাবেন, অতঃপর তারা তাঁরই কাছে ফিরে যাবে।

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٧﴾

৩৭. তারা বলে যে, তাঁর প্রতিপালকের পক্ষ থেকে তার প্রতি কোন নিদর্শন কেন অবতীর্ণ করা হলো না? তুমি বলে দাওঃ নিদর্শন অবতীর্ণ করতে আল্লাহ পূর্ণ ক্ষমতাবান; কিন্তু অধিকাংশ লোকই তা জ্ঞাত নয়।

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا فِى الْكِتٰبِ مِنْ شَىْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ﴿٣٨﴾

৩৮. ভূ-পৃষ্ঠে চলমান প্রতিটি জীব এবং বায়ুমন্ডলে দু'ডানার সাহায্যে উড়ন্ত প্রতিটি পাখিই তোমাদের ন্যায় এক একটি জাতি, আমি কিতাবে কোন বস্তুর কোন বিষয়ই লিপিবদ্ধ করতে ছাড়িনি, অতঃপর তাদের সকলকে তাদের প্রতিপালকের কাছে সমবেত করা হবে।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ فِى الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ ؕ وَمَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٩﴾

৩৯. আর যারা আমার নিদর্শনসমূহকে মিথ্যা অভিহিত করে, তারা অন্ধকারে নিমজ্জিত বোবা ও বধির, আল্লাহ যাকে ইচ্ছা পথভ্রষ্ট করেন এবং যাকে ইচ্ছা করেন হিদায়াতের সরল-সহজ পথের সন্ধান দেন।

قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ اَوْ اَتَتْكُمُ السَّاعَةُ اَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ ۚ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٠﴾

৪০. তুমি (হে মুহাম্মাদ ﷺ) তাদেরকে বল, তোমরা যদি নিজেদের আদর্শে সত্যবাদী হও তবে চিন্তা করে দেখ যদি তোমাদের প্রতি আল্লাহর শাস্তি এসে পড়ে অথবা তোমাদের নিকট কিয়ামত এসে উপস্থিত হয়, তখনও কি তোমরা আল্লাহকে ব্যতীত অন্য কাউকেও ডাকবে?

بَلْ اِيَّاهُ تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ

৪১. বরং (বিপদের কারণে) তোমরা তাঁকেই ডেকে থাকো। অতএব যে

إِنْ شَآءَ وَ تَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُوْنَ ﴿٤١﴾

জন্য তোমরা তাঁকে ডাকো ইচ্ছে করলে তিনি তা তোমাদের থেকে দূর করে দিবেন। আর যাদেরকে তোমরা অংশী করেছিলে তাদের কথা ভুলে যাবে।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٤٢﴾

৪২. আর আমি তোমাদের পূর্বেকার জাতিসমূহের কাছে বহু রাসূল পাঠিয়েছি, (কিন্তু তাদেরকে অমান্য করার কারণে) আমি তাদের প্রতি অভাব, দারিদ্র ও রোগ-ব্যাধি চাপিয়ে দিয়েছি, যেন তারা বিনয়ের সাথে নতি স্বীকার করে।

فَلَوْلَآ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾

৪৩. সুতরাং তাদের প্রতি যখন আমার শাস্তি পৌঁছলো তখন তারা কেন নম্রতা ও বিনয় প্রকাশ করলো না? বরং তাদের অন্তর আরও কঠিন হয়ে পড়লো, আর শয়তান তাদের কাজকে (তাদের চোখের সামনে) শোভাময় করে দেখালো।

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ؕ حَتّٰٓى اِذَا فَرِحُوْا بِمَآ اُوْتُوْٓا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ﴿٤٤﴾

৪৪. অতঃপর তাদেরকে যা কিছু উপদেশ ও নসীহত করা হয়েছিল তা যখন তারা ভূলে গেল তখন আমি তাদের জন্যে প্রতিটি বস্তুর দরজা উন্মুক্ত করে দিলাম, শেষ পর্যন্ত যখন তারা তাদেরকে দানকৃত বস্তু লাভ করে খুব আনন্দিত ও উল্লাসিত হলো, তখন হঠাৎ একদিন আমি তাদেরকে পাকড়াও করলাম, আর তারা সেই অবস্থায় নিরাশ হয়ে পড়লো।

فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ؕ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٥﴾

৪৫. অতঃপর অত্যাচারী সম্প্রদায়ের মূল শিকড় কেটে ফেলা হলো, আর সমস্ত প্রশংসা বিশ্ব প্রভু আল্লাহরই জন্যে।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ﴿٤٦﴾

৪৬. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি বল, দেখো! আল্লাহ যদি তোমাদের শ্রবণশক্তি ও দৃষ্টিশক্তি কেড়ে নেন এবং তোমাদের অন্তরে মোহর মেরে দেন, তবে আল্লাহ ছাড়া কে আছে যে সেগুলো তোমাদেরকে ফিরিয়ে দেবেন? লক্ষ্য কর তো, আমি আমার আয়াতসমূহ ও দলীল প্রমাণাদি কিভাবে পেশ করছি, এর পরেও তারা তা থেকে ফিরে আসছে!

قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٧﴾

৪৭. তুমি আরও জিজ্ঞেস কর, আল্লাহর শাস্তি যদি হঠাৎ করে বা প্রকাশ্যে তোমাদের উপর এসে পড়ে, তবে কি অত্যাচারীরা ছাড়া আর কেউ ধ্বংস হবে?

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٤٨﴾

৪৮. আমি রাসূলদেরকে তো শুধু এই উদ্দেশ্যে পাঠিয়ে থাকি যে, তারা (সৎ লোকদেরকে) সুসংবাদ দেবে এবং (অসৎ লোকদেরকে) সতর্ক করবে, সুতরাং যারা ঈমান এনেছে ও নিজেকে সংশোধন করেছে তাদের জন্যে কোন ভয়ভীতি থাকবে না এবং তারা চিন্তিতও হবে না।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٤٩﴾

৪৯. আর যারা আমার আয়াত ও নিদর্শনসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করবে, তাদের উপর তাদের নিজেদের ফাসেকীর কারণে শাস্তি আপতিত হবে।

قُلْ لَّآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ؕ

৫০. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি (তাদেরকে) বল– আমি তোমাদেরকে একথা বলি না যে, আমার কাছে আল্লাহর ধন ভান্ডার রয়েছে, আর আমি অদৃশ্যের

أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ ﴿٥٠﴾

কোন জ্ঞানও রাখি না এবং আমি তোমাদেরকে একথাও বলি না যে, আমি একজন ফেরেশ্‌তা। আমার কাছে যা কিছু ওহীরূপে পাঠানো হয়, আমি শুধুমাত্র তারই অনুসরণ করে থাকি। তুমি (তাদেরকে) জিজ্ঞেস কর– অন্ধ ও চক্ষুষ্মান কি সমমানের? সুতরাং তোমরা কেন চিন্তা-ভাবনা কর না?

وَأَنْذِرْ بِهِ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْ يُحْشَرُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِنْ دُونِهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٥١﴾

৫১. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি এর (ওহীর) সাহায্যে ঐসব লোককে সতর্ক কর যারা ভয় করে যে, তাদেরকে তাদের প্রতিপালকের কাছে এমন অবস্থায় সমবেত করা হবে যেখানে তিনি ছাড়া তাদের না কোন সাহায্যকারী হবে, না থাকবে কোন সুপারিশকারী, হয়তো এই কারণে তারা মুত্তাকী হবে।

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ ۖ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ وَمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُونَ مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٥٢﴾

৫২. আর যেসব লোক সকাল-সন্ধ্যায় তাদের প্রতিপালকের ইবাদত করে এবং এর মাধ্যমে তাঁর সন্তুষ্টিই কামনা করে, তাদেরকে তুমি দূরে সরিয়ে দিবে না, তাদের হিসাব-নিকাশের কোন কিছুর দায়িত্ব তোমার উপরও নেই এবং তোমার হিসাব-নিকাশের কোন দায়িত্ব তাদের উপর নেই। এরপরও যদি তুমি তাদেরকে দূরে সরিয়ে দাও, তবে তুমি যালিমদের মধ্যে শামিল হয়ে যাবে।

وَكَذَٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِيَقُولُوا أَهَٰؤُلَاءِ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنْ بَيْنِنَا ۗ أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ

৫৩. এমনিভাবে আমি একজন দ্বারা অপরজনকে পরীক্ষায় নিপতিত করে থাকি, যেন তারা বলতে থাকে যে,

بِالشّٰكِرِيْنَ ﴿٥٣﴾

এরাই কি ঐসব লোক যে, আমাদের মধ্যে এদের প্রতি আল্লাহ্ অনুগ্রহ ও মেহেরবানী করেছেন? ব্যাপারটা কি এটা নয় যে, আল্লাহ্ কৃতজ্ঞতাপরায়ণ লোকদেরকে ভালভাবেই জানেন।

وَاِذَا جَآءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًۢا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ ۙ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥٤﴾

৫৪. আমার আয়াতসমূহের উপর বিশ্বাস স্থাপনকারীরা যখন তোমার নিকট আসে তখন তাদেরকে বলঃ তোমাদের প্রতি শান্তি বর্ষিত হোক, তোমাদের প্রতিপালক নিজের উপর দয়া ও অনুগ্রহ স্থির করে নিয়েছেন। তোমাদের মধ্যে যে ব্যক্তি অজ্ঞতা ও মূর্খতাবশতঃ কোন খারাপ কাজ করে বসে, অতঃপর সে যদি তাওবা করে ও নিজেকে সংশোধন করে নেয়, তবে জেনে রেখ যে, তিনি হচ্ছেন ক্ষমাশীল, পরমদয়ালু।

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٥٥﴾

৫৫. এমনিভাবে আমি আমার আয়াত ও নিদর্শনসমূহ সবিস্তার বর্ণনা করে থাকি, যেন অপরাধী লোকদের পথটি সুস্পষ্ট হয়ে পড়ে।

قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّآ اَتَّبِعُ اَهْوَآءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿٥٦﴾

৫৬. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি কাফিরদের বলে দাও– তোমরা আল্লাহকে ছেড়ে যার ইবাদত কর, (ও যাকে আহ্বান কর) আমাকে তার ইবাদত করতে নিষেধ করে দেয়া হয়েছে। তুমি আরও বলঃ আমি তোমাদের ইচ্ছা ও মনোবৃত্তির অনুসরণ করবো না, কেননা, তা করলে আমি পথহারা হয়ে পড়বো এবং আমি আর হিদায়াত প্রাপ্তদের মধ্যে থাকবো না।

قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَكَذَّبْتُم بِهِ ۚ مَا عِندِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ ۚ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۖ يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ الْفَاصِلِينَ ﴿٥٧﴾

৫৭. তুমি (হে মুহাম্মাদ ﷺ) বলঃ আমি আমার প্রতিপালকের প্রদত্ত একটি সুস্পষ্ট উজ্জ্বল দলীল-প্রমাণের উপর প্রতিষ্ঠিত, আর তোমরা সেই দলীলকে মিথ্যা অভিহিত করছো, যে বিষয়টি তোমরা খুব তাড়াতাড়ি পেতে চাও তার ইখতিয়ার আমার হাতে নেই, হুকুমের মালিক আল্লাহ ছাড়া আর কেউই নয়, তিনি সত্য ও বাস্তবানুগ কথা বর্ণনা করেন, আর তিনিই হচ্ছেন সর্বোত্তম ফায়সালা-কারী।

قُل لَّوْ أَنَّ عِندِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ لَقُضِيَ الْأَمْرُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ﴿٥٨﴾

৫৮. তুমি (হে মুহাম্মাদ ﷺ) বলঃ তোমরা যে বস্তুটি তাড়াতাড়ি পেতে চাও, তা যদি আমার ইখতিয়ারভুক্ত থাকতো, তবে তো আমার ও তোমাদের মধ্যে চূড়ান্ত ফায়সালা অনেক আগেই হয়ে যেতো, আর যালিমদেরকে আল্লাহ খুব ভাল করেই জানেন।

وَعِندَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ وَمَا تَسْقُطُ مِن وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِي ظُلُمَاتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٥٩﴾

৫৯. গায়েব বা অদৃশ্যের চাবিকাঠি তাঁরই নিকট রয়েছে; তিনি ছাড়া আর কেউই তা জ্ঞাত নয়, স্থল ও জলভাগের সব কিছুই তিনি অবগত রয়েছেন, তাঁর অবগতি ব্যতীত বৃক্ষ হতে একটি পাতাও ঝরে না এবং ভূ-পৃষ্ঠের অন্ধকারের মধ্যে একটি দানাও পড়ে না, এমনিভাবে কোন সরস ও নিরস বস্তুও পতিত হয় না; সমস্ত বস্তুই সুস্পষ্ট কিতাবে লিপিবদ্ধ রয়েছে।

وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَمًّى ۖ

৬০. আর সেই মহা প্রভূই রাত্রিকালে নিদ্রারূপে তোমাদের নিকট এক প্রকার মৃত্যু ঘটিয়ে থাকেন, আর

ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٦٠﴾

দিনের বেলা তোমরা যে পরিশ্রম করে থাক তিনি সেটাও সম্যক পরিজ্ঞাত; অতঃপর তিনি নির্দিষ্ট সময়কাল পূরণের নিমিত্তে তোমাদেরকে নিদ্রা থেকে জাগিয়ে থাকেন, তাঁর পর পরিশেষে তার কাছেই তোমাদেরকে ফিরে যেতে হবে, তখন তিনি তোমাদেরকে তোমাদের কৃত-কর্ম সম্পর্কে অবহিত করবেন।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ ﴿٦١﴾

৬১. আর আল্লাহই স্বীয় বান্দাদের উপর পরাক্রমশালী, তিনি তোমাদের উপর পাহারাদার পাঠিয়ে থাকেন;[১] এমন কি যখন তোমাদের কারও মৃত্যুর সময় উপস্থিত হয়, তখন আমার প্রেরিত দূতগণ তার প্রাণ হরণ করে নেয়, এ ব্যাপারে তারা বিন্দুমাত্র ত্রুটি করেন না।

ثُمَّ رُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ ۚ أَلَا لَهُ الْحُكْمُ

৬২. তারপর সকলকে তাদের আসল প্রভু আল্লাহর কাছে প্রত্যাবর্তিত

১। (ক) ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণণা করেছেন। নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আল্লাহ্ সম্পর্কে বলেন, আল্লাহ্ ভাল এবং মন্দ লিখে দিয়েছেন আর তা সুস্পষ্ট করে দিয়েছেন। সুতরাং যে ব্যক্তি কোন সৎ কাজের ইচ্ছা করল অথচ কাজটা করল না, আল্লাহ্ তাকে পূর্ণ (কাজের) সওয়াব দিবেন। আর যদি সে সৎ কাজের ইচ্ছা করল আর বাস্তবে তা করেও ফেলল, আল্লাহ্ তার জন্য দশ থেকে সাতশ' গুণ পর্যন্ত এমনকি এর চেয়েও অধিক সওয়াব লিখে দেন। আর যে ব্যক্তি কোন মন্দ কাজের ইচ্ছা করল, কিন্তু বাস্তবে তা করল না, তবে আল্লাহ্ তাকে পূর্ণ (সৎ কাজের) সওয়াব দিবেন। পক্ষান্তরে সে যদি মন্দ কাজের ইচ্ছা করে এবং (তদানুযায়ী) কাজটা করে ফেলে তবে, আল্লাহ্ তার জন্য একটিই মাত্র গুনাহ্ লিখেন। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৯১)

(খ) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ ফেরেশ্তাগণ একদলের পিছনে আরেক দল যাতায়াত করে থাকে। একদল ফেরেশ্তা রাতে আসে, আরেক দল দিনে। আর তারা ফজর এবং আসরের নামাযের সময় একত্রিত হয়। অতঃপর যারা তোমাদের মাঝে রাত্রি যাপন করেছিল তারা আল্লাহ্ কাছে চলে যায়। তিনি (আল্লাহ্) তাদেরকে (মানুষের অবস্থা) জিজ্ঞেস করেন অথচ তাদের চেয়ে তিনি (এ সম্পর্কে) অধিক জানেন। জিজ্ঞেস করেন, তোমরা আমার বান্দাহদের কি অবস্থায় ছেড়ে এসেছ? তারা জবাব দেয়- তাদের নামাযরত অবস্থায় ছেড়ে এসেছি এবং নামাযরত অবস্থায়ই তাদের কাছে গিয়েছি। (বুখারী, হাদীস নং ৩২২৩)

وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ﴿٦٢﴾

করানো হয়, তোমরা জেনে রেখো যে, ঐ দিন একমাত্র আল্লাহই রায় বা হুকুমের একচ্ছত্র মালিক হবেন, আর তিনি খুবই ত্বরিত হিসাব গ্রহণকারী।

قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ لَئِنْ اَنْجٰىنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٣﴾

৬৩. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি তাদেরকে জিজ্ঞেস কর, স্থলভাগ ও জল ভাগের অন্ধকার (বিপদ) থেকে তোমাদেরকে কে পরিত্রাণ দিয়ে থাকে, যখন কাতর কণ্ঠে ও বিনীতভাবে এবং চুপে চুপে তাঁকে আহ্বান করে থাক, আর বলতে থাক— তিনি যদি আমাদেরকে এই বিপদ থেকে মুক্তি দেন তবে আমরা অবশ্যই কৃতজ্ঞদের অন্তর্ভুক্ত থাকবো।

قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٦٤﴾

৬৪. (হে নবী ﷺ)! তুমি বলে দাওঃ আল্লাহই তোমাদেরকে ঐ বিপদ এবং অন্যান্য প্রতিটি বিপদ-আপদ থেকে রক্ষা করে থাকেন, কিন্তু এর পরও তোমরা শির্ক করতে থাক।

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾

৬৫. (হে রাসূল ﷺ)! তুমি বলে দাওঃ আল্লাহ তোমাদের ঊর্ধ্বলোক হতে এবং তোমাদের পায়ের তলদেশ হতে শাস্তি প্রেরণ করতে পূর্ণ ক্ষমতাবান অথবা তোমাদেরকে দলে দলে বিচ্ছিন্ন করে এক দলের দ্বারা অপর দলের শক্তি স্বাদ গ্রহণ করাবেন; লক্ষ্য কর, আমি বারে বারে কিভাবে আমার আয়াত ও যুক্তিপ্রমাণ বর্ণনা করেছি। উদ্দেশ্য হলো, যেন বিষয়টিকে তারা পূর্ণরূপে জ্ঞানায়ত্ব ও হৃদয়ঙ্গম করে নিতে পারে।

وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ؕ قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ؕ﴿٦٦﴾

৬৬. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তোমার সম্প্রদায়ের লোকেরা ওকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করছে, অথচ ওটাই প্রমাণিত সত্য, তুমি বলে দাও– আমি তোমাদের প্রতিনিধি নই।

لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ ۙ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٧﴾

৬৭. প্রত্যেকটি সংবাদ প্রকাশের একটি নির্দিষ্ট সময় রয়েছে, অতি শীঘ্রই তোমরা নিজেদের পরিণতি সম্পর্কে অবহিত হতে পারবে।

وَاِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ؕ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٨﴾

৬৮. যখন তুমি দেখবে যে লোকেরা আমার আয়াতসমূহে দোষ-ত্রুটি অনুসন্ধান করছে (বা আপোসে আলোচনা করছে) তখন তুমি তাদের নিকট হতে দূরে সরে যাবে, যতক্ষণ না তারা অন্য কোন প্রসঙ্গে নিমগ্ন হয়; শয়তান যদি তোমাকে এটা ভুলিয়ে দেয় তবে স্মরণ হওয়ার পর আর এই যালিম লোকদের সাথে তুমি বসবে না।

وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٦٩﴾

৬৯. যালিম লোকদের হিসাব-নিকাশের দায়-দায়িত্ব মুত্তাকী লোকদের উপর কিছুমাত্র অর্পিত নয়, তবে ওদেরকে উপদেশ প্রদানের দায়িত্ব রয়েছে, হয়তো বা উপদেশের ফলে ওরা পাপাচার হতে বেঁচে থাকতে পারবে (আল্লাহভীতি অর্জন করবে)।

وَذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهٖۤ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۖ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ؕ

৭০. যারা নিজেদের দ্বীনকে খেল-তামাশার বস্তুতে পরিণত করেছে তুমি তাদেরকে বর্জন করে চলবে, এই পার্থিব জগত তাদেরকে সম্মোহিত করে ধোঁকায় নিপতিত করেছে, কুরআন দ্বারা তাদেরকে উপদেশ দিতে থাক, যাতে কোন

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ أُبْسِلُوا بِمَا كَسَبُوا ۖ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾

ব্যক্তি স্বীয় কৃতকর্মের জন্য ধ্বংস না হয়, (কিয়ামতের দিন) আল্লাহ ছাড়া তার কোন বন্ধু ও সুপারিশকারী থাকবে না, আর দুনিয়াভর বিনিময় বস্তু দিয়েও (আল্লাহর শাস্তি হতে) মুক্তি পেতে চাইলে সেই বিনিময় গ্রহণ করা হবে না, তারা এমনই লোক যে, নিজেদের কর্মদোষে আটকা পড়ে গেছে, ফলে তাদের কুফরী করার কারণে তাদের জন্যে ফুটন্ত গরম পানীয় এবং যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি রয়েছে।

قُلْ أَنَدْعُو مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلَىٰ أَعْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ هَدَانَا اللَّهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيَاطِينُ فِي الْأَرْضِ حَيْرَانَ لَهُ أَصْحَابٌ يَدْعُونَهُ إِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ۗ قُلْ إِنَّ هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۖ وَأُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٧١﴾

৭১. হে মুহাম্মাদ (ﷺ)! তুমি বলে দাওঃ আমরা কি আল্লাহ ছাড়া এমন বস্তুকে আহ্বান করবো ও তার ইবাদত করবো, যারা আমাদের কোন উপকার করতে পারবে না এবং আমাদের কোন ক্ষতিও করতে পারবে না? আর আল্লাহ্ আমাদেরকে সুপথ প্রদর্শনের পর আমরা কি পশ্চাৎপদে ফিরে যাবো? আমরা কি ঐ ব্যক্তির ন্যায় হবো যাকে শয়তান মরুভূমির মধ্যে বিভ্রান্ত করে ফেলেছে এবং যে দিশাহারাঃ লক্ষ্যহারা হয়ে ঘুরে বেড়াচ্ছে? তার সঙ্গীগণ তাকে হিদায়াতের দিকে ডেকে বলছে-তুমি আমাদের সঙ্গে এসো, তুমি বলঃ আল্লাহর হিদায়াতই হচ্ছে সত্যিকারের সঠিক হিদায়াত, আর আমাদেরকে সারা জাহানের প্রতিপালকের সামনে আত্মসমর্পণের নির্দেশ দেয়া হয়েছে।

وَ اَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ؕ وَهُوَ الَّذِيْۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۷۲﴾

৭২.(আরো আদিষ্ট হয়েছি)যে,তোমরা নিয়মিতভাবে নামায কায়েম কর এবং সেই প্রভূকে ভয় করে চল যার নিকট তোমাদের সকলকে সমবেত করা হবে।

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۚ قَوْلُهُ الْحَقُّ ؕ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ ؕ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿۷۳﴾

৭৩. সেই প্রতিপালকই আকাশ-মন্ডলকে ও ভূ-মন্ডলকে যথাযথভাবে সৃষ্টি করেছেন, যেদিন তিনি বলবেন (কিয়ামত) হও; আর তা হয়ে যাবে, তাঁর কথা খুবই যথার্থ বাস্তবানুগ; যেদিন শিঙ্গায় ফুৎকার দেয়া হবে, সেইদিন একমাত্র তাঁরই হবে বাদশাহী ও রাজত্ব, যিনি অদৃশ্য ও প্রকাশ্য সবকিছুর খবর রাখেন এবং তিনি হচ্ছেন প্রজ্ঞাময়, সর্বজ্ঞ।

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّيْۤ اَرٰىكَ وَقَوْمَكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۷۴﴾

৭৪. (সেই সময়টি স্মরণযোগ্য) যখন ইবরাহীম (عليه السلام) তাঁর পিতা আযরকে বললেনঃ আপনি কি প্রতিমাগুলোকে মা'বূদ মনোনীত করেছেন? নিঃসন্দেহে আমি আপনাকে ও আপনার সম্প্রদায়কে প্রকাশ্য ভ্রান্তির মধ্যে নিপতিত দেখছি।[১]

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) ইরশাদ করেছেন, ইবরাহীম (আলাইহিস্ সালাম) কিয়ামতের দিন তাঁর পিতা আযরের দেখা পাবেন। তখন আযরের চেহারা কালিমাযুক্ত ও ধূলা-বালি মাখা থাকবে। ইবরাহীম (আলাইহিস্সালাম) তাকে বলবেন, আমি কি আপনাকে (দুনিয়ায়) বলিনি যে, আমার নাফরমানী করবেন না? তখন তাঁর পিতা বলবেন আজ আর তোমার কথা অমান্য করব না। অতঃপর ইবরাহীম (আল্লাহ্র নিকট) ফরিয়াদ করবেন, হে প্রভু আপনি আমার সাথে ওয়াদা করেছিলেন যে, হাশরের দিন আপনি আমাকে লজ্জিত করবেন না। (আপনার রহমত থেকে বঞ্চিত) আমার পিতার অপমানের চাইতে অধিক অপমান আমার জন্য আজ আর কি হতে পারে? আল্লাহ্ তখন বলবেন আমি চিরতরে কাফেরদের জন্য জান্নাত হারাম করে দিয়েছি। পুনরায় বলা হবে, হে ইবরাহীম! তোমার পদতলে কি? তখন তিনি নিচের দিকে তাকাবেন হঠাৎ দেখতে পাবেন, সেখানে (তাঁর পিতার স্থানে) সর্বশরীরে ঘৃণ্য রক্তমাখা একটি মুর্দা খোর জানোয়ার পড়ে রয়েছে। তার চার পা বেঁধে (দু'পা ও দু'হাত) জাহান্নামে ছুড়ে মারা হবে। (বুখারী, হাদীস নং ৩৩৫০)

وَكَذٰلِكَ نُرِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ﴿٧٥﴾

৭৫. এমনিভাবেই আমিই ইবরাহীম (عليه السلام)-কে আসমান ও যমীনের রাজত্ব (পরিচালনা ব্যবস্থা) অবলোকন করিয়েছি, যাতে তিনি বিশ্বাসীদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যান।

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَآ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ﴿٧٦﴾

৭৬. যখন রাত্রির অন্ধকার তাকে আবৃত করলো, তখন তিনি আকাশের একটি নক্ষত্র দেখতে পেলেন, আর বললেনঃ এটাই আমার প্রতিপালক; কিন্তু যখন ওটা অস্তমিত হলো তখন তিনি বললেনঃ আমি অস্তমিত বস্তুকে ভালবাসি না।

فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّيْنَ ﴿٧٧﴾

৭৭. অতঃপর যখন তিনি আকাশে চন্দ্রকে উজ্জ্বল আভায় দেখতে পেলেন তখন বললেনঃ এটাই আমার প্রতিপালক; কিন্তু ওটাও যখন অস্তমিত হলো, তখন বললেনঃ আমার প্রতিপালক যদি আমাকে পথ প্রদর্শন না করেন তবে আমি অবশ্যই পথভ্রষ্ট সম্প্রদায়ের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাবো।

فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّيْ هٰذَآ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٨﴾

৭৮. অতঃপর যখন তিনি সূর্যকে উজ্জ্বল উদ্ভাসিত দেখতে পেলেন তখন বললেনঃ এটি আমার মহান প্রতিপালক। কারণ এটি হচ্ছে সব থেকে বড় যখন সেটিও অস্তমিত হল তখন তিনি বললেনঃ হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা যাকে আল্লাহর অংশী কর তা থেকে আমি মুক্ত।

اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٧٩﴾

৭৯. আমার মুখমন্ডলকে আমি একনিষ্ঠভাবে সেই মহান সত্তার দিকে ফিরাচ্ছি যিনি আকাশমন্ডল ও ভূ-মন্ডল সৃষ্টি করেছেন, আর আমি মুশরিকদের অন্তর্ভুক্ত নই।

وَحَآجَّهٗ قَوْمُهٗ ؕ قَالَ اَتُحَآجُّوْٓنِّیْ فِی اللّٰهِ وَ قَدْ
هَدٰىنِ ؕ وَلَاۤ اَخَافُ مَا تُشْرِكُوْنَ بِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ یَّشَآءَ
رَبِّیْ شَیْـًٔا ؕ وَسِعَ رَبِّیْ كُلَّ شَیْءٍ عِلْمًا ؕ
اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۸۰﴾

৮০. আর তার জাতির লোকেরা তার সাথে ঝগড়া করতে থাকলে সে তাদেরকে বললোঃ তোমরা কি আল্লাহর ব্যাপারে আমার সাথে ঝগড়া করছো? অথচ তিনি আমাকে সঠিক পথের সন্ধান দিয়েছেন! তোমরা আল্লাহর সাথে যা কিছু শরীক করছো আমি ওটাকে ভয় করি না তবে যদি আমার প্রতিপালক কিছু চান, প্রতিটি বস্তু সম্পর্কে আমার প্রতিপালকের জ্ঞান খুবই ব্যাপক, এর পরও কি তোমরা উপদেশ গ্রহণ করবে না?

وَكَیْفَ اَخَافُ مَاۤ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ
اَشْرَكْتُمْ بِاللّٰهِ مَا لَمْ یُنَزِّلْ بِهٖ عَلَیْكُمْ سُلْطٰنًا ؕ
فَاَیُّ الْفَرِیْقَیْنِ اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۱﴾

৮১. তোমাদের মনগড়া ও বানানো শরীকদেরকে আমি কী রূপে ভয় করতে পারি? অথচ তোমরা এই ভয় করছো না যে, আল্লাহর সাথে যাদেরকে তোমরা শরীক করছো তাদের ব্যাপারে আল্লাহ তোমাদের কাছে কোন দলীল প্রমাণ অবতীর্ণ করেননি, আমাদের দুই দলের মধ্যে কারা অধিকতর শান্তি ও নিরাপত্তা লাভের অধিকারী যদি তোমাদের জানা থাকে, তবে বল তো?

اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ یَلْبِسُوْۤا اِیْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ
لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۸۲﴾

৮২. প্রকৃতপক্ষে তারাই শান্তিও নিরাপত্তার অধিকারী। যারা ঈমান এনেছে এবং নিজেদের ঈমানকে যুলুমের সাথে (শিরকের সাথে) সংমিশ্রিত করেনি এবং তারাই হেদায়েতপ্রাপ্ত।

وَتِلْكَ حُجَّتُنَاۤ اٰتَیْنٰهَاۤ اِبْرٰهِیْمَ عَلٰی قَوْمِهٖ ؕ نَرْفَعُ
دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِیْمٌ عَلِیْمٌ ﴿۸۳﴾

৮৩. আর এটাই ছিল আমার যুক্তি-প্রমাণ, যা আমি ইবরাহীম (عليه السلام)-কে তার স্বজাতির মোকাবিলায় দান

করেছিলাম, আমি যাকে ইচ্ছা করি সম্মান-মরতবা ও মহত্ত্ব বাড়িয়ে দিয়ে থাকি, নিঃসন্দেহে তোমার প্রভু প্রজ্ঞাময় ও বিজ্ঞ।

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٤﴾

৮৪. আমি তাকে, (ইব্‌রাহীম (عليه السلام))-কে ইসহাক (عليه السلام) ও ইয়াকুব (عليه السلام)-কে দান করেছি এবং প্রত্যেককেই সঠিক পথের সন্ধান দিয়েছি, আর তার পূর্বে (এমনি ভাবে) নূহ (عليه السلام)-কেও সঠিক পথের হিদায়াত দিয়েছি; আর তার (ইবরাহীমের) বংশের মধ্যে দাউদ, সুলাইমান, আইয়ুব, ইউসুফ, মূসা ও হারূন (عليه السلام)-কে এমনিভাবেই সঠিক পথের সন্ধান দিয়েছি; এমনিভাবেই আমি সৎ ও পুণ্যশীল লোকদেরকে প্রতিদান দিয়ে থাকি।

وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٥﴾

৮৫. আর যাকারিয়া (عليه السلام), ইয়াহ্‌ইয়া (عليه السلام), ঈসা (عليه السلام) ও ইলিয়াস (عليه السلام), তারা প্রত্যেকেই সৎ লোকদের অন্তর্ভুক্ত ছিলেন।

وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَلُوْطًا ؕ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٦﴾

৮৬. আর ইসমাঈল (عليه السلام), ইয়াসাআ' (عليه السلام), ইউনুস (عليه السلام) ও লূত (عليه السلام) এদের প্রত্যেককেই আমি নবুওয়াত দান করে সমগ্র বিশ্বের উপর মহত্ত্ব ও শ্রেষ্ঠত্ব দান করেছি।

وَمِنْ اٰبَآئِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ ۚ وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٨٧﴾

৮৭. আর এদের বাপ-দাদা, সন্তান-সন্ততি, ভাইদের মধ্যে অনেককে আমি নির্বাচিত করে নিয়েছি এবং সঠিক ও সোজা পথে পরিচালিত করেছি।

ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِىْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٨﴾

৮৮. এটাই আল্লাহর হিদায়াত; তিনি তাঁর বান্দার মধ্যে যাকে চান এ পথে পরিচালিত করেন; কিন্তু তারা যদি শির্ক করতো তবে তারা যা কিছুই করতো, সবই নষ্ট হয়ে যেতো।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ﴿٨٩﴾

৮৯. এরা ছিল সেই লোক, যাদেরকে আমি কিতাব, প্রজ্ঞা বা বিচক্ষণতা ও নবুওয়াত দান করেছি, সুতরাং যদি এরা অস্বীকারও করে, তবে তাদের স্থলে আমি এমন এক জাতিকে নিয়োগ করবো, যারা ওটা অস্বীকার করে না।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ ؕ قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٠﴾

৯০. এরা হচ্ছে ওরাই, যাদেরকে আল্লাহ হিদায়াত দান করেছিলেন, সুতরাং তুমিও তাদের হিদায়াতের পথ অনুসরণ করে চল, তুমি বলে দাওঃ আমি এর বিনিময়ে তোমাদের কাছে কোন কিছুই পারিশ্রমিক প্রার্থনা করি না, আর এই কুরআন সমগ্র জগতবাসীর জন্যে উপদেশ ছাড়া কিছুই নয়।

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ اِذْ قَالُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَىْءٍ ؕ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِىْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ وَلَآ اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِىْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩١﴾

৯১. এই লোকেরা আল্লাহ তা'আলার যথাযথ মর্যাদা উপলব্ধি করেনি। কেননা, তারা বললোঃ আল্লাহ কোন মানুষের উপর কোন কিছুই অবতীর্ণ করেননি; (হে নবী ﷺ) তুমি তাদেরকে জিজ্ঞেস করঃ মানুষের হিদায়াত ও আলোকবর্তিকারূপে যে কিতাব মূসা (عليه السلام) এনেছিলেন, তা কে অবতীর্ণ করেছিল? তোমরা সে কিতাব খন্ড খন্ড করে বিভিন্ন পত্রে রেখেছো, ওর কিয়দাংশ তোমরা প্রকাশ করছো এবং বহুলাংশ গোপন

রাখছো, (ঐ কিতাব দ্বারা) তোমাদেরকে বহু বিষয়ে অবহিত করা হয়েছে, যা তোমরা ও তোমাদের পূর্বপুরুষরা জানতে না; তুমি বলে দাওঃ তা আল্লাহই অবতীর্ণ করেছেন। সুতরাং তুমি তাদেরকে তাদের বাতিল ধারণার উপর ছেড়ে দাও, তারা (নিরর্থক আলোচনার) খেলা করতে থাকুক।

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِىْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿٩٢﴾

৯২. আর এ কিতাবও (কুরআন) আমিই অবতীর্ণ করেছি; যা খুব বরকতময় কিতাব এবং পূর্বের সকল কিতাবকে সত্যায়িত করে থাকে, যেন তুমি কেন্দ্রীয় মক্কা নগরী এবং ওর চতুষ্পার্শ্বস্থ জনপদের লোকদেরকে এর দ্বারা সতর্ক কর। যারা আখেরাতে বিশ্বাস করবে তারা এর প্রতি ঈমান আনবে, আর তারা নিয়মিতভাবে স্বীয় নামাযের সংরক্ষণ করে থাকে।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِىَ اِلَىَّ وَلَمْ يُوْحَ اِلَيْهِ شَىْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِىْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْۤا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٩٣﴾

৯৩. আর ঐ ব্যক্তি অপেক্ষা অধিক অত্যাচারী কে হতে পারে যে আল্লাহর প্রতি মিথ্যারোপ করেছে? অথবা এরূপ বলেঃ আমার উপর ওহী নাযিল করা হয়েছে, অথচ তার উপর প্রকৃতপক্ষে কোন ওহীই নাযিল করা হয়নি এবং যে ব্যক্তি এরূপ বলেঃ যেরূপ কালাম আল্লাহ নাযিল করেছেন তদ্রূপ আমি আনয়ন করছি; আর তুমি যদি দেখতে পেতে (ঐ সময়ের অবস্থা) যে সময় যালিমরা সম্মুখীন হবে মৃত্যু যন্ত্রণায়; আর ফেরেশ্‌তারা হাত বাড়িয়ে বলবেঃ নিজেদের প্রাণগুলো বের

কর, আজ তোমাদেরকে সেসব অপরাধের শাস্তি হিসেবে লাঞ্ছনাময় শাস্তি দেয়া হবে যে, তোমরা আল্লাহর উপর মিথ্যা দোষারোপ করে অকারণ প্রলাপ বকছিলে এবং তাঁর আয়াতসমূহ কবূল করা হতে অহংকার করছিলে।[১]

وَلَقَدْ جِئْتُمُونَا فُرَادَىٰ كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَتَرَكْتُم مَّا خَوَّلْنَاكُمْ وَرَاءَ ظُهُورِكُمْ ۖ وَمَا نَرَىٰ مَعَكُمْ شُفَعَاءَكُمُ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ فِيكُمْ شُرَكَاءُ ۚ لَقَد تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنكُم مَّا كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٩٤﴾

৯৪. আর তোমরা আমার কাছে এককভাবে এসোছো, যেভাবে প্রথমবারে আমি তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছিলাম, আর যা কিছু আমি তোমাদেরকে দিয়েছিলাম তা তোমরা নিজেদের পশ্চাতেই ছেড়ে এসেছো, আর আমি তো তোমাদের সাথে তোমাদের সেই সুপারিশকারীদেরকে দেখছি না যাদের সম্বন্ধে তোমরা দাবী করতে যে, তারা তোমাদের কাজেকর্মে (আমার) শরীক, বাস্তবিকই তোমাদের পরস্পরের সম্পর্ক

১। (ক) বারা ইবনে আযেব (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, ঈমানদার ব্যক্তিকে যখন তার কবরে তুলে বসান হয় এবং তার কাছে ফেরেশ্‌তা পাঠান হয়। সে তখন এ বলে সাক্ষ্য প্রদান করে, লা-ইলাহা ইল্লাল্লাহু ওয়া আন্না মুহাম্মাদার রাসূলুল্লাহ্ (অর্থঃ আল্লাহ্ ব্যতীত সত্য কোন প্রভু নেই, আর মুহাম্মাদ [সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম] আল্লাহ্‌র রাসূল) এ সম্পর্কেই আল্লাহ্ বলেছেন, একটি প্রতিষ্ঠিত কথা দ্বারা আল্লাহ্ তা'আলা দুনিয়া ও আখেরাতে ঈমানদারদেরকে অবিচল রাখবেন। (বুখারী, হাদীস নং ১৩৬৯)

(খ) আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, বান্দাকে যখন কবরে রাখা হয় এবং তার বন্ধু-বান্ধব সেখান থেকে ফিরে চলে যায়। সে তখনও তাদের জুতার আওয়াজ শুনতে পায়। এমন সময় তার নিকট দু'জন ফেরেশ্‌তা আসেন এবং তাকে বসিয়ে দেন। মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) কে দেখিয়ে জিজ্ঞেস করেন এ লোকটি সম্পর্কে তুমি কি বলতে? সে তখন বলবে, আমি সাক্ষ্য প্রদান করছি, তিনি আল্লাহ্‌র বান্দা ও তাঁর রাসূল! তখন তাকে বলা হবে, দোযখে তোমার স্থানটি দেখে নাও। সেটি পরিবর্তন করে আল্লাহ্ তোমাকে বেহেশ্‌তে একটি জায়গা প্রদান করেছেন। সে দু'টিই একসাথে দেখতে পাবে। কিন্তু কাফের বা মুনাফেক বলবে, আমি কিছু জানিনা অন্যান্য লোকেরা যা বলত আমিও তাই বলতাম। তখন তাকে বলা হবে, তুমি জানতেও না বুঝতেও না। এরপর লোহার একটি মুগুর দিয়ে উভয় কানে এমন জোরে আঘাত করা হবে যে, সে ভয়ানকভাবে চিৎকার করতে থাকবে। জ্বিন ও মানুষ ছাড়া নিকটবর্তী সবাই তার এ চিৎকার শুনতে পাবে। (বুখারী, হাদীস নং ১৩৩৮)

তো বিচ্ছিন্ন হয়ে গেছে, আর তোমরা যা কিছু ধারণা করতে তা সবই আজ ভ্রান্ত প্রমাণিত হয়েছে।

إِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ۖ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ۚ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَأَنّٰى تُؤْفَكُونَ ﴿٩٥﴾

৯৫. নিশ্চয়ই দানা ও বীজ উৎপাদন-কারী হচ্ছেন আল্লাহ, তিনিই জীবন্তকে প্রাণহীন থেকে বের করেন এবং তিনিই প্রাণহীনকে নির্গতকারী জীবন্ত হতে, তিনিই তো আল্লাহ, তাহলে তোমরা উদ্‌ভ্রান্ত হয়ে (লক্ষভ্রষ্ট হয়ে) কোথায় যাচ্ছো?

فَالِقُ الْإِصْبَاحِ ۚ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۚ ذٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿٩٦﴾

৯৬. তিনিই রাত্রির আবরণ বিদীর্ণ করে সুপ্রভাতের উন্মেষকারী তিনিই রজনীকে বিশ্রামকাল এবং সূর্য ও চন্দ্রকে সময়ের নিরূপক করে দিয়েছেন; এটা হচ্ছে সেই পরম পরাক্রান্ত ও মহাজ্ঞানী (আল্লাহর) নির্ধারণ।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْأٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُونَ ﴿٩٧﴾

৯৭. আর তিনিই তোমাদের জন্যে নক্ষত্ররাজিকে[১] সৃষ্টি করেছেন যেন তোমরা এগুলোর সাহায্যে অন্ধকারে পথের সন্ধান পেতে পার, স্থলভাগেও এবং সমুদ্রেও; নিশ্চয়ই আমি প্রমাণসমূহ খুব বিশদভাবে বর্ণনা করে দিয়েছি ঐসব লোকের জন্যে যারা জ্ঞান রাখে।

وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ

৯৮. তিনিই তোমাদেরকে এক ব্যক্তি হতে সৃষ্টি করেছেন, সুতরাং

১। কাতাদা বলেনঃ আল্লাহ্ তা'আলার বাণী "আমি নিকটবর্তী আকাশকে সুশোভিত করেছি প্রদীপমালা দ্বারা।" (সূরাঃ মূলক-৫) আল্লাহ্ তা'আলা এ সমস্ত প্রদীপমালাকে তিন উদ্দেশ্যে সৃষ্টি করেছেন। (১) তিনি (প্রথম) আকাশকে এর মাধ্যমে সুশোভিত করেছেন, (২) শয়তানের প্রতি নিক্ষেপের উপকরণ হিসেবে ও (৩) পথিকের পথ নির্দেশনার জন্য।

যে ব্যক্তি এ'তিন কারণ ছাড়া অন্য কোন অর্থে এর ব্যাখ্যা করবে সে ভুল করবে এবং তার সময় ও অংশ (অর্থাৎ ঈমান) নষ্ট করল এবং যে সম্পর্কে তার কোন জ্ঞান নেই তার প্রতি ব্যর্থ চেষ্টা করল। (বুখারী)

وَّمُسْتَوْدَعٌ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ﴿٩٨﴾

(প্রত্যেকের জন্যে) একটি স্থল অধিক দিন থাকবার জন্যে এবং একটি স্থল অল্প দিন থাকবার জন্যে রয়েছে (অর্থাৎ দীর্ঘ ও স্বল্পকালীন বাসস্থান)। এই নিদর্শনসমূহ আমি তাদের জন্যে সুস্পষ্টভাবে বর্ণনা করলাম যাদের বুদ্ধি-বিবেচনা আছে।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٩٩﴾

৯৯. আর তিনি আকাশ হতে পানি বর্ষণ করেছেন, এর সাহায্যে সব রকমের উদ্ভিদ আমি (আল্লাহ) উৎপন্ন করেছি; অতঃপর তা থেকে সবুজ শাখা বের করেছি, ফলতঃ তা থেকে আমি উপর্যুপরি (অর্থাৎ একটি উপর একটি) শষ্যদানা উৎপন্ন করে থাকি। আর খেজুর বৃক্ষ থেকে অর্থাৎ ওর পুষ্পকলিকা থেকে ছড়া হয় যা নিম্ন দিকে ঝুঁকে পড়ে, আর আঙ্গুরসমূহের উদ্যান এবং যায়তুন ও আনার যা পরস্পর সাদৃশ্যযুক্ত ও সাদৃশ্যহীন, প্রত্যেক ফলের প্রতি লক্ষ্য কর যখন ওটা ফলে এবং এর পরিপক্ক হওয়ার প্রতি লক্ষ্য কর; এ সমূদয়ের মধ্যে নিদর্শনসমূহ রয়েছে তাদেরই জন্যে যারা ঈমান রাখে।

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٠٠﴾

১০০. আর এ (অজ্ঞ) লোকেরা জ্বিনদেরকে আল্লাহ্‌র শরীক বানিয়ে নিয়েছে, অথচ আল্লাহই ওদেরকে সৃষ্টি করেছেন, আর না জেনে না বুঝে তারা তাঁর জন্যে পুত্র-কন্যা রচনা করে; তিনি মহিমান্বিত (পবিত্র), এদের আরোপিত বিশেষণ-গুলো হতে বহু উর্ধ্বে তিনি।

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ

১০১. তিনি আসমান ও যমীনের স্রষ্টা; তাঁর সন্তান হবে কী করে?

لَهٗ صَاحِبَةٌ ؕ وَخَلَقَ كُلَّ شَیْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿۱۰۱﴾

অথচ তাঁর জীবন সঙ্গিনীই কেউ নেই! তিনিই প্রত্যেকটি জিনিস সৃষ্টি করেছেন এবং প্রত্যেকটি জিনিস সম্পর্কে সর্বজ্ঞাত।

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ وَّكِیْلٌ ﴿۱۰۲﴾

১০২. তিনি আল্লাহ তোমাদের প্রতিপালক, তিনি ছাড়া অন্য কেউই সত্য মা'বূদ নেই, প্রত্যেক বস্তুরই স্রষ্টা তিনি, অতএব তোমরা তাঁরই ইবদত করতে থাকবে, তিনিই সব জিনিসের কার্যনির্বাহী।

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۫ وَهُوَ یُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِیْفُ الْخَبِیْرُ ﴿۱۰۳﴾

১০৩. তাঁকে তো কারও দৃষ্টি পরিবেষ্টন করতে পারে না, আর তিনি সকল দৃষ্টি পরিবেষ্টনকারী এবং তিনি অতীব সূক্ষ্মদর্শী এবং সব বিষয়ে ওয়াকিফহাল।

قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآىِٕرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِیَ فَعَلَیْهَا ؕ وَمَاۤ اَنَا عَلَیْكُمْ بِحَفِیْظٍ ﴿۱۰۴﴾

১০৪. এখন নিশ্চয়ই তোমাদের কাছে তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে সত্য দর্শনের উপায়সমূহ পৌঁছেছে, এখন যে ব্যক্তি নিজের গভীর দৃষ্টিতে অবলোকন করবে, সে নিজেরই কল্যাণ সাধন করবে, আর যে অন্ধ থাকবে সে নিজেই ক্ষতিগ্রস্ত হবে, আর আমি তো তোমাদের প্রহরী নই।

وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰیٰتِ وَلِیَقُوْلُوْا دَرَسْتَ وَلِنُبَیِّنَهٗ لِقَوْمٍ یَّعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۵﴾

১০৫. এরূপেই আমি বিভিন্নভাবে দলীল প্রমাণাদি সমূহ বর্ণনা করে থাকি যাতে লোকেরা বলেঃ তুমি কারও নিকট থেকে পড়ে নিয়েছো, আর যেন আমি একে বুদ্ধিমান লোকদের জন্যে প্রকাশ করে দেই।

اِتَّبِعْ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۱۰۶﴾

১০৬. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তোমার প্রতি তোমার প্রভুর পক্ষ থেকে যে ওহী নাযিল হয়েছে, তুমি তারই অনুসরণ করে চল, তিনি ছাড়া অন্য

কেউই সত্য মা'বূদ নেই, আর মুশরিকদের থেকে বিমুখ থাক।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ؕ وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٧﴾

১০৭. আর যদি আল্লাহর অভিপ্রায় হতো তবে এরা শিরক করতো না; আর আমি তোমাকে এদের পর্যবেক্ষক নিযুক্ত করিনি এবং তুমি তাদের উপর ক্ষমতা প্রাপ্তও নও।

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًا بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۪ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٨﴾

১০৮. (হে মু'মিনগণ)! এরা আল্লাহ্‌কে বাদ দিয়ে যাদেরকে আহ্বান করে (ও ইবাদত করে) তোমরা তাদেরকে গালাগালি করো না, তাহলে তারা অজ্ঞানতাবশতঃ বৈরীভাবে আল্লাহকেই গালাগালি দিতে শুরু করবে, আমি তো এরূপেই প্রতিটি জনগোষ্ঠীর জন্যে তাদের আমলকে চাকচিক্যময় করে দিয়েছি, শেষ পর্যন্ত তাদেরকে তাদের প্রভুর কাছে ফিরে যেতে হবে, তখন তারা যা কিছু করতো তা তিনি তাদেরকে জানিয়ে দিবেন।[১]

১। ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তোমাদের পূর্ববর্তী যুগের লোকদের মধ্যে তিনজন লোক ছিল। তারা পথ চলছিল। হঠাৎ তারা বৃষ্টির মধ্যে পড়ে গেল। তখন তারা এক গুহায় আশ্রয় নিল। অমনি তাদের গুহার মুখ (একটি পাথর চাপা পড়ে) বন্ধ হয়ে গেল। তাদের একজন অন্যজনকে বলল, বন্ধুগণ! আল্লাহ্‌র কসম! এখন সত্য ছাড়া আর কিছুই তোমাদেরকে মুক্ত করতে পারবে না। কাজেই তোমাদের প্রত্যেকের সেই জিনিসের উসীলায় দোয়া করা উচিত যে, ব্যাপারে জানা আছে যে, এ কাজটিতে সে সত্যতা বহাল রেখেছে। তখন তাদের একজন (এই বলে) দো'আ করলঃ হে আল্লাহ্! তুমি ভালো করেই জান যে, আমার একজন মজদুর ছিল। সে এক ফারাক চালের বিনিময়ে আমার কাজ করে দিয়েছিল। পরে সে চলে গিয়েছিল এবং মজুরিও নেয়নি। আমি তার মজুরী দিয়ে কিছু একটা করতে মনস্থ করলাম এবং কৃষি কাজে লাগালাম। এতে যা উৎপাদন হয়েছে, তার বিনিময়ে আমি একটি গাভী কিনলাম। অনেক দিন পর সেই মজদুরটি আমার নিকট এসে তার মজুরী দাবী করল। আমি তাকে বললাম, এ গাভীটির দিকে তাকাও এবং তা হাকিয়ে নিয়ে যাও। সে জবাব দিল, ঠাট্টা করবেন না, আমার তো আপনার কাছে মাত্র এক ফারাক চালই পাওনা। আমি তাকে বললাম গাভীটি নিয়ে যাও। কেননা (তোমার) সেই এক ফারাক দ্বারা যা উৎপাদিত হয়েছে, তারই বিনিময়ে এটি খরিদ করা হয়েছে। তখন সে গাভীটি হাঁকিয়ে নিয়ে গেল। হে আল্লাহ্ যদি তুমি মনে কর তা আমি একমাত্র তোমার ভয়েই করেছি, তাহলে আমাদের (গুহার মুখ) থেকে (এ পাথরটি) সরিয়ে দাও। অতঃপর পাথরটি কিছুটা

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِن جَاءَتْهُمْ آيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِندَ اللَّهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ أَنَّهَا إِذَا جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٩﴾

১০৯. আর কঠিন অঙ্গীকার সহকারে আল্লাহর নামে কসম করে তারা বলেঃ কোন একটা নিদর্শন (মু'জিযা) তাদের কাছে আসলে তারা অবশ্যই ঈমান আনবে। (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি বলে দাওঃ নিদর্শনগুলো সমস্তই আল্লাহর অধিকারে। আর (হে মুসলমানরা)! কী করে তোমাদেরকে বুঝানো যাবে যে, নিদর্শন আসলেও তারা ঈমান আনবে না।

وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا بِهِ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَنَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١١٠﴾

১১০. আর আমিও তাদের অন্তরের ও দৃষ্টির পরিবর্তন করে দিবো যেমনিভাবে তারা এর উপর প্রথমবার ঈমান আনেনি এবং আমি তাদেরকে তাদের অবাধ্যতার মধ্যেই বিভ্রান্ত থাকতে দিবো।

সরে গেল। দ্বিতীয় যুবক দো'আ করল; হে আল্লাহ্! তোমার যদি জানা থাকে (অর্থাৎ তোমার জানাই আছে) যে, আমার মা-বাপ খুব বুড়ো ছিলেন। আমি প্রতিরাতে তাঁদের জন্য আমার ছাগলের দুধ নিয়ে তাঁদের কাছে যেতাম। ঘটনাক্রমে একরাতে তাদের কাছে (দুধ নিয়ে) যেতে আমি দেরী করে ফেললাম। তারপর এমন সময় গেলাম, যখন তাঁরা উভয় ঘুমিয়ে পড়েছেন। আর আমার সন্তানগুলো ক্ষুধায় ছটফট করছে। কিন্তু আমি আমার মা-বাপকে দুধ পান না করান পর্যন্ত আমার ক্ষুধায় কাতর ছেলেপেলেকে দুধ পান করাইনি। কেননা, তাঁদেরকে ঘুম থেকে জাগানটা আমি পছন্দ করিনি। অপরদিকে তাঁদেরকে বাদ দিতেও ভাল লাগেনি। কারণ, এ দুধটুকু পান না করালে তাঁরা উভয়েই খুবই দুর্বল হয়ে যাবেন। তাই (দুই হাতে) আমি (সারারাত) ভোর হয়ে যাওয়া পর্যন্ত (তাদের জাগার) অপেক্ষাই করেছিলাম। যদি তুমি জেনে থাক যে এটা করেছি আমি একমাত্র তোমারই ভয়ে, তাহলে আমাদের থেকে (পাথরটি) সরিয়ে দাও। অতঃপর পাথরটি তাদের থেকে আরেকটু সরে গেল। এমনকি তারা আসমান দেখতে পেল। সর্বশেষ যুবকটি দো'আ করল হে আল্লাহ্! তুমি জান যে, আমার একটি চাচাত বোন ছিল। সবার চেয়ে সে আমার নিকট অধিক প্রিয় ছিল। আমি তার সাথে (যৌনমিলনের) বাসনা করেছিলাম। কিন্তু আমি তাকে একশ দিনার না দেয়া পর্যন্ত সে রাজী হলো না। তখন আমি তা সংগ্রহে লেগে গেলাম। শেষ পর্যন্ত তা সংগ্রহে সক্ষম হলাম। তা নিয়ে তার নিকট আসলাম এবং এ একশ দিনার তাকে দিয়ে দিলাম। অতঃপর সে নিজেই নিজকে আমার নিকট সোপর্দ করল। আমি যখন তার দু'পায়ের মাঝখানে বসলাম, তখন সে বলে উঠল, আল্লাহ্‌কে ভয় কর এবং (শরীয়াতের বিধান মতে) অধিকার লাভ করা ছাড়া আমার কুমারীত্ব নষ্ট করো না। আমি তখন উঠে গিয়েছিলাম এবং একশ দিনারও ত্যাগ করেছিলাম। তুমি যদি জান যে, আমি একমাত্র তোমার ভয়েই তা করেছি, তাহলে তুমি আমাদের থেকে (পাথরটি) সরিয়ে দাও। তখন আল্লাহ্ তা'আলা তাদের (গুহার মুখ) থেকে (পাথরটি) সরিয়ে দিলেন। অতঃপর তারা (গুহা থেকে) বেরিয়ে আসল। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৬৫)

وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ ﴿١١١﴾

১১১. আর যদি আমি তাদের কাছে ফেরেশ্‌তাও অবতীর্ণ করতাম, আর মৃতগণও যদি তাদের সাথে কথাবার্তা বলতো এবং দুনিয়ার সমস্ত বস্তুও যদি আমি তাদের চোখের সামনে সমবেত করতাম, তবুও তারা ঈমান আনতো না আল্লাহর ইচ্ছা ব্যতীত; কিন্তু তাদের অধিকাংশই অজ্ঞ।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا ؕ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١١٢﴾

১১২. আর এমনিভাবেই আমি প্রত্যেক নবীর জন্যে বহু শয়তানকে শত্রুরূপে সৃষ্টি করেছি, তাদের কতক শয়তান মানুষের মধ্যে এবং কতক শয়তান জ্বিনদের হতে হয়ে থাকে, এরা একে অন্যকে কতগুলো মনোমুগ্ধকর ও চাকচিক্য কথা দ্বারা প্ররোচিত করে থাকে। কারণ যেন তারা ধোঁকায় পতিত হয়। তোমার প্রতিপালকের ইচ্ছা হলে তারা এমন কাজ করতে পারতো না, সুতরাং তুমি তাদেরকে এবং তাদের মিথ্যা রচনাগুলোকে বর্জন করে চলবে।

وَلِتَصْغٰٓى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿١١٣﴾

১১৩. (তাদের এরূপ প্ররোচনামূলক কথার উদ্দেশ্য হলো) যারা পরকালের প্রতি ঈমান রাখে না তাদের অন্তরকে ঐ দিকে অনুরক্ত করা; এবং তারা যেন তাতে সন্তুষ্ট থাকে আর তারা যেসব কাজ করে তা যেন তারাও করতে থাকে।

اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ؕ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا

১১৪. (হে মুহাম্মাদ ﷺ! তুমি তাদেরকে জিজ্ঞেস কর) তবে কি আমি আল্লাহকে বর্জন করে অন্য কাউকে মীমাংসাকারী ও বিচারকরূপে অনুসন্ধান করবো? অথচ তিনিই

تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١١٤﴾

তোমাদের কাছে এই কিতাবকে বিস্তারিতভাবে অবতীর্ণ করেছেন! আর আমি যাদেরকে কিতাব দান করেছি তারা জানে যে, এ কিতাব তোমার প্রতিপালকের পক্ষ হতেই যথার্থ ও সঠিকভাবে অবতীর্ণ করা হয়েছে, সুতরাং তুমি সন্দেহ পোষণ-কারীদের মধ্যে শামিল হয়ো না।

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١١٥﴾

১১৫. তোমার প্রতিপালকের বাণী সত্যতা ও ইনসাফের দিক দিয়ে পূর্ণতা লাভ করেছে, তাঁর বাণী পরিবর্তনকারী কেউই নেই, তিনি সবকিছু শোনেন ও সবকিছু জানেন।

وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِى الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿١١٦﴾

১১৬. (হে নবী ﷺ)! তুমি যদি দুনিয়াবাসীদের অধিকাংশ লোকের কথার অনুসরণ কর, তবে তারা তোমাকে আল্লাহ্‌র পথ হতে বিভ্রান্ত করে ফেলবে, তারা তো নিছক ধারণা ও অনুমানেরই অনুসরণ করে, আর তারা ধারণা ও অনুমান ছাড়া কিছুই করছে না।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ مَنْ يَّضِلُّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١١٧﴾

১১৭. কোন্ ব্যক্তি আল্লাহর পথ হতে বিভ্রান্ত হয়েছে তা তোমার প্রতিপালক নিশ্চিতভাবে অবগত আছেন, আর তিনি হেদায়েত প্রাপ্তদের সম্পর্কেও খুব ভালভাবে জ্ঞাত রয়েছেন।

فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ بِاٰيٰتِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٨﴾

১১৮. অতএব, যে জীবকে আল্লাহর নাম নিয়ে যবাই করা হয়েছে তা তোমরা ভক্ষণ কর, যদি তোমরা আল্লাহর বিধানের প্রতি ঈমান রাখ।

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تَاْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ

১১৯. যে জন্তু যবাই করার সময় আল্লাহর নাম উচ্চারণ করা হয়েছে,

وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ اِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ اِلَيْهِ ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا لَّيُضِلُّوْنَ بِاَهْوَآئِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِيْنَ ﴿١١٩﴾

তা ভক্ষণ না করার তোমাদের কাছে কি কারণ থাকতে পারে? অথচ আল্লাহ পাক তোমাদের উপর যা কিছু হারাম করেছেন, তা তিনি সবিস্তারে বর্ণনা করেছেন, তবে কঠিনভাবে বাধ্য হলে তোমরা উক্ত হারাম বস্তুও আহার কতে পার, নিঃসন্দেহে বহুলোক অজ্ঞানতাবশতঃ নিজেদের ইচ্ছা, বাসনা ও প্রবৃত্তির দ্বারা অবশ্যই অন্যকে পথভ্রষ্ট করে, নিশ্চয়ই তোমার প্রতিপালক সীমা-লঙ্ঘনকারীগণ সম্পর্কে ভালভাবেই ওয়াকিফহাল।

وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْسِبُوْنَ الْاِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ ﴿١٢٠﴾

১২০. তোমরা প্রকাশ্য ও গোপনীয় পাপকার্য পরিত্যাগ কর, যারা পাপের কাজ করে, তাদেরকে অতিসত্বরই নিজেদের কৃতকার্যের প্রতিফল দেয়া হবে।

وَلَا تَاْكُلُوْا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاِنَّهٗ لَفِسْقٌ ؕ وَاِنَّ الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَاِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ ﴿١٢١﴾

১২১. আর যে জন্তু যবাই করার সময় আল্লাহর নাম উচ্চারণ করা হয়নি, তা তোমরা ভক্ষণ করো না, কেননা এটা ফাসেকী বা অন্যায়, শয়-তানরা নিজেদের সঙ্গী-সাথীদের মনে এমন কিছু কুমন্ত্রণা প্রবেশ করিয়ে দেয়, যেন তারা তোমাদের সাথে ঝগড়া ও বিতর্ক করে; যদি তোমরা তাদের আকীদা-বিশ্বাস ও কাজ-কর্মে আনুগত্য কর, তবে নিঃসন্দেহে তোমরা মুশরিক হয়ে যাবে।

১। আদী ইবনে হাতেম থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ আমি কাঁধে করে একটি স্বর্ণের তৃশুল নিয়ে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট আসলাম, তখন তিনি বললেনঃ হে আদী তোমার কাঁধ থেকে এই মূর্তিটি সরিয়ে ফেল এবং তাঁকে সূরা তাওবার এই আয়াতটি পাঠ করতে শুনলামঃ অর্থঃ "তারা আল্লাহ্ ব্যতীত তাদের পন্ডিত ও সংসার বিরাগীদেরকে তাদের পালন কর্তারূপে গ্রহণ করেছে।" (সূরাঃ তাওবা, আয়াত-৩১) (তিরমিযী, তাফসীরে তাবারী)

أَوَمَن كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنَٰهُ وَجَعَلْنَا لَهُۥ نُورًا يَمْشِى بِهِۦ فِى ٱلنَّاسِ كَمَن مَّثَلُهُۥ فِى ٱلظُّلُمَٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ۗ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكَٰفِرِينَ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿١٢٢﴾

১২২. এমন ব্যক্তি যে ছিল প্রাণহীন (মৃত) তৎপর তাকে আমি জীবন প্রদান করি এবং তার জন্যে আমি এমন আলোকের (ব্যবস্থা) করে দেই, যার সাহায্যে সে জনগণের মধ্যে চলাফেরা করতে থাকে, সে কি এমন কোন লোকের মত হতে পারে যে (ডুবে) আছে অন্ধকার পুঞ্জের মধ্যে, তা হতে বের হওয়ার পথ পাচ্ছে না, এরূপেই কাফিরদের জন্যে তাদের কার্যকলাপ মনোহর বানিয়ে দেয়া হয়েছে।

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا فِى كُلِّ قَرْيَةٍ أَكَٰبِرَ مُجْرِمِيهَا لِيَمْكُرُوا۟ فِيهَا ۖ وَمَا يَمْكُرُونَ إِلَّا بِأَنفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿١٢٣﴾

১২৩. আর এরূপভাবেই আমি প্রত্যেক জনপদে এর শীর্ষস্থানীয় লোকদেরকে পাপাচারী করেছি, যাতে তারা সেখানে নিজেদের ধোঁকা, প্রতারণা ও ষড়যন্ত্রের জাল বিস্তার করে, মূলতঃ তারা শুধু নিজেদের-কেই নিজেরা প্রবঞ্চিত করে থাকে, অথচ তারা (এ সত্যটাকে) অনুভব করতে পারে না।

وَإِذَا جَآءَتْهُمْ ءَايَةٌ قَالُوا۟ لَن نُّؤْمِنَ حَتَّىٰ نُؤْتَىٰ مِثْلَ مَآ أُوتِىَ رُسُلُ ٱللَّهِ ۘ ٱللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُۥ ۗ سَيُصِيبُ ٱلَّذِينَ أَجْرَمُوا۟ صَغَارٌ عِندَ ٱللَّهِ وَعَذَابٌ شَدِيدٌۢ بِمَا كَانُوا۟ يَمْكُرُونَ ﴿١٢٤﴾

১২৪. তাদের সামনে যখন কোন নিদর্শন আসে তখন তারা বলেঃ আল্লাহর রাসূলদেরকে যা কিছু দেয়া হয়েছিল, আমাদের অনুরূপ জিনিস না দেয়া পর্যন্ত আমরা ঈমান আনবো না, নবুওয়াতের দায়িত্ব কার উপর অর্পণ করবেন তা আল্লাহ ভালভাবেই অবগত, এই অপরাধী লোকেরা অতিসত্বরই তাদের ষড়যন্ত্র ও প্রতারণার ফলে আল্লাহর নিকট লাঞ্ছনা ও কঠিন শাস্তিপ্রাপ্ত হবে।

فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ اَنْ يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ صَدْرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِي السَّمَآءِ ؕ كَذٰلِكَ يَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٥﴾

১২৫. অতএব আল্লাহ যাকে হিদায়াত করতে চান, ইসলামের জন্যে তার অন্তঃকরণ খুলে দেন, আর যাকে পথভ্রষ্ট করার ইচ্ছা করেন, তার অন্তঃকরণ খুব সংকুচিত করে দেন, এমনভাবে সংকুচিত করেন যে, মনে হয় যেন সে আকাশে আরোহণ করছে, এমনিভাবেই যারা ঈমান আনে না তাদের উপর আল্লাহ অপবিত্রতা ও পঙ্কিলতাকে বিজয়ী করে দেন।[১]

وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾

১২৬. আর এটাই হচ্ছে তোমার প্রতিপালকের সহজ-সরল পথ, আমি উপদেশ গ্রহণকারী লোকদের জন্যে আয়াতসমূহ বিশদভাবে বর্ণনা করে দিয়েছি।

لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٧﴾

১২৭. তাদের জন্যে তাদের প্রতিপালকের নিকট রয়েছে এক শান্তি নিকেতন, আর তাদের কৃতকর্মের কারণে, তিনিই হচ্ছেন তাদের অভিভাবক।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ اَجَلَنَا

১২৮. আর যেদিন আল্লাহ তাদের সকলকে একত্রিত করবেন, সেদিন তিনি বলবেন হে জ্বিন সম্প্রদায়! তোমরা তো মানুষের মধ্যে অনেককে বিভ্রান্ত করে নিজেদের অনুগত করে নিয়েছিলে, আর মানুষের মধ্যে

১। হুমাইদ বিন আব্দুর রহমান বলেনঃ আমি মু'আবিয়া (রাযিআল্লাহু আনহু)-কে খুতবারত অবস্থায় বলতে শুনেছি যে, তিনি (মু'আবিয়া) বলেনঃ আমি নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি যে, যার প্রতি আল্লাহ্ কল্যাণ কামনা করেন তাকেই দ্বীন ইসলামের জ্ঞান দান করেন। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেনঃ আর আমি বন্টনকারী, এবং দেন আল্লাহ্। এই উম্মতের একদল লোক কিয়ামত পর্যন্ত দ্বীন ও হকের উপর সুদৃঢ়ভাবে কায়েম থাকবে। যারা তাদের বিরোধিতা করবে তারা কিয়ামত আসা পর্যন্ত কেউ এদের কোনই ক্ষতি করতে পারবে না। (বুখারী, হাদীস নং ৭১)

الَّذِيْٓ اَجَّلْتَ لَنَا ؕ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۲۸﴾

তাদের বন্ধুগণ বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা একে অপরের দ্বারা উপকৃত হয়েছি এবং আমরা সে নির্ধারিত সময়ে উপনীত হয়েছি যা আপনি আমাদের জন্যে নির্দিষ্ট করে রেখেছিলেন, তখন (কিয়ামতের দিন) আল্লাহ (সমস্ত কাফের জ্বিন ও মানুষকে) বলবেনঃ জাহান্নামই হচ্ছে তোমাদের বাসস্থান, তাতে তোমরা চিরস্থায়ীভাবে থাকবে, তবে আল্লাহ্ যাদেরকে চাইবেন (তারাই তা থেকে মুক্তি পেতে পারে) তোমাদের প্রতিপালক অতিশয় কুশলী এবং অত্যন্ত জ্ঞানবান।

وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۲۹﴾

১২৯. এমনিভাবেই আমি যালিম-দেরকে (কাফিরদেরকে) তাদের কৃতকর্মের ফলে পরস্পরের উপর পরস্পরকে প্রভাবশালী ও কর্তৃত্বশালী বানিয়ে দিবো।

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿۱۳۰﴾

১৩০. (কিয়ামতের দিন আল্লাহ জিজ্ঞেস করবেন) হে জ্বিন ও মানব জাতি! তোমাদের কাছে কি তোমাদের মধ্য হতেই নবী রাসূল আসেনি, যারা তোমাদের কাছে আমার আয়াতসমূহ বর্ণনা করতো এবং আজকের দিনের সাথে তোমাদের সাক্ষাত হওয়ার ভীতি প্রদর্শন করতো? তারা জবাব দিবে, হ্যাঁ, আমরাই আমাদের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য দিচ্ছি (অর্থাৎ আমরা অপরাধ করেছি), পার্থিব জীবনই তাদেরকে ধোঁকায় নিপতিত রেখেছিল, আর তারাই নিজেদের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য দিবে যে, তারা কাফির ছিল।

ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّ اَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ﴿١٣١﴾

১৩১. (এ রাসূল প্রেরণ) এ জন্যে যে, তোমার প্রতিপালক কোন জনপদকে এর অধিবাসীবৃন্দ সত্য সম্পর্কে অজ্ঞাত থাকা অবস্থায় অন্যায়ভাবে ধ্বংস করেন না।

وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٢﴾

১৩২. আর প্রত্যেক লোকই নিজ নিজ আমলের কারণে মর্যাদা লাভ করবে, তারা যা আমল করতো সে বিষয়ে তোমার প্রতিপালক উদাসীন নন।

وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ﴿١٣٣﴾

১৩৩. এবং তোমার প্রতিপালক অমুখাপেক্ষী ও দয়াশীল, তাঁর ইচ্ছা হলে তোমাদেরকে অপসারিত করবেন এবং তোমাদের পর তোমাদের স্থানে যাকে ইচ্ছা স্থলাভিষিক্ত করবেন, যেমন তিনি তোমাদেরকে অন্য এক জাতির বংশধর হতে সৃষ্টি করেছেন।

اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿١٣٤﴾

১৩৪. তোমাদের নিকট যে বিষয় সম্পর্কে প্রতিশ্রুতি দেয়া হয়েছে তা অবশ্যম্ভাবী, তোমরা আল্লাহকে অক্ষম করতে পারবে না।

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿١٣٥﴾

১৩৫. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি বলে দাওঃ হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা নিজ নিজ অবস্থায় আমল করতে থাক, আমিও আমল করছি, অতঃপর শীঘ্রই তোমরা জানতে পারবে যে, কার পরিণাম কল্যাণকর, নিঃসন্দেহে অত্যাচারীরা কখনও মুক্তি ও সাফল্য লাভ করতে পারবে না।

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا

১৩৬. আর আল্লাহ যেসব শস্য ও পশু সৃষ্টি করেছেন, তারা (মুশরিকরা)

فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿١٣٦﴾

এর একটি অংশ আল্লাহর জন্যে নির্ধারিত করে থাকে, আর নিজেদের ধারণা মতে তারা বলে যে, এ অংশ আল্লাহর জন্যে এবং এ অংশ আমাদের শরীকদের জন্যে; কিন্তু যা তাদের শরীকদের জন্যে নির্ধারিত হয়ে থাকে, তা তো আল্লাহর দিকে পৌঁছতে পারে না, পক্ষান্তরে যা আল্লাহর জন্যে নির্ধারণ করা হয়েছিল, তা তাদের শরীকদের কাছে পৌঁছে থাকে, এ লোকদের ফায়সালা ও বন্টন নীতি কতইনা খারাপ!

وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٧﴾

১৩৭. আর এমনিভাবে অনেক মুশরিকের দৃষ্টিতে তাদের শরীকরা (দেব-দেবীগণ) তাদের সন্তান হত্যা করাকে শোভনীয় করে দিয়েছে, যেন তারা তাদের সর্বনাশ করতে পারে এবং তাদের কাছে তাদের দ্বীনকে তারা সন্দেহময় করে দিতে পারে, আল্লাহ চাইলে তারা এসব কাজ করতে পারতো না, সুতরাং তুমি তাদেরকে এবং তাদের ভ্রান্ত উক্তিগুলোকে ছেড়ে দাও।

وَقَالُوْا هٰذِهٖۤ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ۖ لَّا يَطْعَمُهَاۤ اِلَّا مَنْ نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٨﴾

১৩৮. আর তারা (নিজেদের বাতিল ধারণা মতে) এও বলে থাকে যে, এ সব বিশেষিত পশু ও বিশেষিত ক্ষেতের ফসল সুরক্ষিত কেউই তা ভক্ষণ করতে পারবে না, তবে যাদেরকে আমরা অনুমতি দিব (তারাই ভক্ষণ করতে পারবে), আর (তারা বলে) এ বিশেষ পশুগুলোর উপর আরোহণ করা ও ভার বহন নিষেধ করে দেয়া হয়েছে, আর

কতগুলো বিশেষ পশু রয়েছে যেগুলোকে যবাই করার সময় তারা আল্লাহর নাম উচ্চারণ করে না, (এসব কথা) শুধু আল্লাহর প্রতি মিথ্যারোপ করার উদ্দেশ্যে (বলে), এসব মিথ্যা আরোপের প্রতিফল অতিসত্বরই তিনি তাদেরকে দান করবেন।

وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰٓى اَزْوَاجِنَا ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ ؕ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿١٣٩﴾

১৩৯. আর তারা এ কথাও বলে থাকে যে, এসব বিশেষ পশুগুলোর গর্ভে যা কিছু রয়েছে, তা বিশেষভাবে আমাদের পুরুষদের জন্যে রক্ষিত; আর আমাদের নারীদের জন্যে এটা হারাম; কিন্তু গর্ভ হতে প্রসূত বাচ্চা যদি মৃত হয়, তবে নারী-পুরুষ সবাই তা বক্ষণে অংশী হতে পারবে, তাদের কৃত এসব বিশেষণের প্রতিদান অতিসত্বরই আল্লাহ তাদেরকে দিবেন, নিঃসন্দেহে তিনি হচ্ছেন প্রজ্ঞাময়, মহাজ্ঞানী।

قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ؕ قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿١٤٠﴾

১৪০. বাস্তবিকই ঐ সমস্ত লোকেরা ক্ষতিগ্রস্ত হল যারা নিজেদের সন্তান-দেরকে মুর্খতা ও অজ্ঞানতার কারণে হত্যা করেছে এবং আল্লাহ সম্পর্কে মিথ্যা রচনা করে তাঁর প্রদত্ত রিযিককে হারাম করে নিয়েছে, তারা নিশ্চিতরূপে পথভ্রষ্ট হয়েছে, বস্তুতঃ তারা হিদায়াতপ্রাপ্ত হতে পারেনি।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ

১৪১. আর সেই আল্লাহই নানা প্রকার বাগান ও গুল্মলতা সৃষ্টি করেছেন যার কতক স্বীয় কান্ডের উপর সন্নিবিষ্ট হয়, আর কতক কান্ডের উপর সন্নিবিষ্ট হয় না, আর

مُتَشَابِهٍ ۗ كُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَآتُوا حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ ۖ وَلَا تُسْرِفُوا ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ﴿١٤١﴾

খেজুর বৃক্ষ ও শস্যক্ষেত্র যাতে বিভিন্ন প্রকারের খাদ্যবস্তু উৎপন্ন হয়ে থাকে, আর তিনি যয়তুন (জলপাই) ও আনার (ডালিমের) কতক সৃষ্টি করেছেন যা সাদৃশ্যপূর্ণ আর কতক অসাদৃশ্যপূর্ণও হয়। এসব ফল তোমরা আহার কর যখন এতে ফল ধরে, আর এতে শরীয়তের নির্ধারিত যে অংশ রয়েছে তা ফসল কাটার দিন আদায় করে দাও, অপব্যয় করো না, নিশ্চয়ই তিনি (আল্লাহ) অপব্যয়কারীদের ভালবাসেন না।[১]

وَمِنَ الْأَنْعَامِ حَمُولَةً وَفَرْشًا ۚ كُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ﴿١٤٢﴾

১৪২. আর চতুষ্পদ জন্তুগুলোর মধ্যে কতগুলো (উঁচু আকৃতির) ভারবাহী জন্তু সৃষ্টি করেছেন, আর কতগুলো ছোট আকৃতির জন্তু। আল্লাহ যা কিছু দান করেছেন তোমরা তা ভক্ষণ কর, আর শয়তানের পদাঙ্ক অনুসরণ করো না, নিঃসন্দেহে সে তোমাদের প্রকাশ্য শত্রু।

ثَمَانِيَةَ أَزْوَاجٍ ۖ مِنَ الضَّأْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ

১৪৩. আর তিনি এ পশুগুলোকে আট প্রকারে সৃষ্টি করেছেন, ভেড়ার

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি, একদা এক রাখাল তার বকরীর পালের নিকট উপস্থিত থাকাকালে হঠাৎ এক নেকড়ে বাঘ এসে থাবা মেরে পাল থেকে একটি বকরী নিয়ে যেতে থাকলো। রাখাল নেকড়ে বাঘের কবল থেকে বকরীটাকে উদ্ধার করতে চাইল। নেকড়েটি তখন রাখালের দিকে চেয়ে বলল, আজ তো আমার থেকে ছিনিয়ে নিলে; কিন্তু হিংস্র জন্তুর আক্রমণের দিন এ বকরীর রক্ষাকারী কে থাকবে, যেদিন আমি ছাড়া এ বকরীর কোন রাখাল থাকবে না।

অনুরূপভাবে একদা এক ব্যক্তি একটি গাভীর পিঠে চড়ে তাকে হাকিয়ে নিয়ে যাচ্ছিল। তখন গাভীটি তার দিকে চেয়ে তার সাথে কথা বলল। গাভীটি বলল, আমাকে তো এ কাজের জন্য সৃষ্টি করা হয়নি। আমাকে সৃষ্টি করা হয়েছে কৃষি কাজের জন্য। লোকেরা বলে উঠল, সুবহানাল্লাহ্! নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, আমি আবূ বকর ও উমর ইবনে খাত্তাব (রাযিআল্লাহু আনহুমা) এ ঘটনায় বিশ্বাস স্থাপন করলাম। (বুখারী, হাদীস নং ৩৬৬৩)

اثْنَيْنِ ۭ قُلْ ءٰۤالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ۭ نَبِّـُٔوْنِيْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٤٣﴾

দু'প্রকার (স্ত্রী-পুরুষ) এবং বকরীর দু'প্রকার (স্ত্রী-পুরুষ), হে নবী (ﷺ)! তুমি জিজ্ঞেস কর তোঃ আল্লাহ কি উভয় পুরুষ পশুগুলোকে হারাম করেছেন, না উভয় স্ত্রী পশুগুলোকে, না স্ত্রী দু'টির গর্ভে যা আছে তা হারাম করেছেন? তোমরা জ্ঞানের সাথে আমাকে উত্তর দাওঃ যদি তোমরা সত্যবাদী হয়ে থাক।

وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ۭ قُلْ ءٰۤالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ۭ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاۗءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٤﴾

১৪৪. আর উটের দু'প্রকার (স্ত্রী-পুরুষ) এবং গরুর দু'প্রকার (স্ত্রী-পুরুষ) পশু, তুমি তাদেরকে জিজ্ঞেস করঃ আল্লাহ কি উভয় পুরুষ পশুগুলোকে বা উভয় স্ত্রী পশুগুলোকে হারাম করেছেন, অথবা স্ত্রী দু'টির (গরু ও উটের) গর্ভে যা রয়েছে তা হারাম করেছেন? না আল্লাহ যখন এসব পশু হালাল-হারাম হওয়ার বিধান জারি করেন তখন কি তোমরা হাযির ছিলে? যে ব্যক্তি বিনা প্রমাণে না জেনে মানুষকে বিভ্রান্ত করার উদ্দেশ্যে আল্লাহর নামে এরূপ মিথ্যা আরোপ করে তার চেয়ে বড় যালিম আর কে হতে পারে? আল্লাহ যালিম-দেরকে সুপথ প্রদর্শন করেন না।

قُلْ لَّآ اَجِدُ فِيْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلٰي طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗٓ اِلَّآ اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤٥﴾

১৪৫. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি বলঃ ওহীর মাধ্যমে আমার কাছে যে বিধান পাঠানো হয়েছে, তাতে কোন আহারকারীর জন্যে কোন বস্তু হারাম করা হয়েছে– এমন কিছু আমি পাইনি, তবে মৃতজন্তু, প্রবাহিত রক্ত ও শূকরের গোশত কেননা, এটা অবশ্যই নাপাক অথবা যা শরীয়ত

গর্হিত বস্তু (শিরকের মাধ্যমে) যে আল্লাহ ছাড়া অন্যের নামে উৎসর্গ করা হয়েছে, তা হারাম করা হয়েছে; কিন্তু যদি কোন লোক নিরূপায় হয়ে পড়ে, এই শর্তে যে সে খাওয়ার প্রতি লোভী ও কামনাকারী নয় এবং প্রয়োজনের অতিরিক্ত ও খায় না তবে (তার জন্য এটা খাওয়া বৈধ) কেননা, আল্লাহ ক্ষমাশীল ও অনুগ্রহশীল।

وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِيْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَآ اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَآ اَوِ الْحَوَايَآ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ؕ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿١٤٦﴾

১৪৬. ইয়াহূদীদের প্রতি আমি সর্বপ্রকার নখ বিশিষ্ট জীব হারাম করেছিলাম; আর গরু ও ছাগল হতে তাদের জন্যে উভয়ের চর্বি হারাম করেছিলাম; কিন্তু পৃষ্ঠদেশের চর্বি, নাড়ি-ভুঁড়ির চর্বি ও হাড়ের সাথে মিশ্রিত চর্বি এই হারামের অন্তর্ভুক্ত ছিল না। তাদের বিদ্রোহমূলক আচরণের জন্যে আমি তাদেরকে এই শাস্তি দিয়েছিলাম, আর আমি নিঃসন্দেহে সত্যবাদী।

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٤٧﴾

১৪৭. সুতরাং (হে নবী ﷺ)! এ সব বিষয়ে যদি তারা তোমাকে মিথ্যাবাদী মনে করে তবে তুমি বলে দাওঃ তোমাদের প্রভু বড়ই করুণাময়, আর অপরাধী সম্প্রদায় হতে তাঁর শাস্তি বিধান কখনই প্রত্যাহার করা হবে না।

سَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكْنَا وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتّٰى ذَاقُوْا بَاْسَنَا ؕ قُلْ هَلْ

১৪৮. এই মুশরিকরা (তোমার কথার উত্তরে) অবশ্যই বলবেঃ আল্লাহ যদি চাইতেন তবে আমরা শিরক করতাম না এবং আমাদের বাপ-দাদারাও করতো না, আর কোন জিনিসও

عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوْهُ لَنَا ؕ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَخْرُصُوْنَ ﴿۱۴۸﴾

আমরা হারাম করতাম না, বস্তুতঃ এভাবেই তাদের পূর্ব যুগের কাফিররা (রাসূলদেরকে) মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছিল, শেষ পর্যন্ত তারা আমার শাস্তির স্বাদ গ্রহণ করতে বাধ্য হয়েছিল, তুমি জিজ্ঞেস করঃ তোমাদের কাছে কি কোন দলীল প্রমাণ আছে? থাকলে আমার সামনে পেশ কর, তোমরা ধারণা ও অনুমান ব্যতীত আর কিছুরই অনুসরণ কর না, তোমরা সম্পূর্ণ আনুমানিক কথা ছাড়া আর কিছুই বলছো না।

قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۚ فَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۴۹﴾

১৪৯. তুমি বলে দাওঃ সত্য ভিত্তিক পূর্ণাঙ্গ দলীল-প্রমাণ তো একমাত্র আল্লাহরই রয়েছে, সুতরাং তিনি চাইলে তোমাদের সকলকেই হিদায়াত দান করতেন।

قُلْ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ الَّذِيْنَ يَشْهَدُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ﴿۱۵۰﴾

১৫০. তুমি আরও বলে দাওঃ আল্লাহ এসব পশু হারাম করেছেন, এর সাক্ষ্য যারা দেবে সেই সাক্ষীদেরকে তোমরা নিয়ে এসো, তারা যদি সাক্ষ্যও দেয়, তবে তুমি তাদের সাথে সাক্ষ্য দিবে না, আর তুমি এমন লোকদের প্রবৃত্তির অনুসরণ করবে না যারা আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে এবং পরকালের প্রতি ঈমান আনে না এবং তারা অন্যান্যদেরকে (দেবতা-দেরকে) নিজেদের প্রতিপালকের সমান স্থির করে।

قُلْ تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۚ وَلَا تَقْتُلُوْٓا

১৫১. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! এ লোকদেরকে বলঃ তোমরা এসো! তোমাদের প্রতিপালক তোমাদের

أَوْلَادَكُمْ مِّنْ إِمْلَاقٍ ۖ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ ۖ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۖ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١٥١﴾

প্রতি কি কি হারাম করেছেন, তা আমি তোমাদেরকে পাঠ করে শুনাবো, আর তা এই যে, তোমরা তাঁর সাথে কাউকেও শরীক করবে না, পিতা-মাতার সাথে সদ্ব্যবহার করবে, দারিদ্রতার ভয়ে নিজেদের সন্তানদেরকে হত্যা করবে না, কেননা আমিই তোমাদেরকে ও তাদেরকে জীবিকা দিবো, আর অশ্লীল কাজ ও কথার নিকটেও যেও না, তা প্রকাশ্যই হোক বা গোপনীয়ই হোক, আর আল্লাহ যার হত্যা নিষিদ্ধ করেছেন; যথার্থ কারণ (অর্থাৎ যে কারণে হত্যা করা শরীয়তে অনুমোদিত তা) ছাড়া তাকে হত্যা করো না, এসব বিষয় আল্লাহ তোমাদেরকে নির্দেশ দিয়েছেন, যেন তোমরা অনুধাবন করতে পার।

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۚ وَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۖ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۖ وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۖ وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٢﴾

১৫২. আর ইয়াতীমদের বয়ঃপ্রাপ্ত না হওয়া পর্যন্ত সদুদ্দেশ্য ব্যতীত তাদের বিষয় সম্পত্তির কাছেও যেও না, আর আদান-প্রদানে পরিমাণ ও ওজন সঠিকভাবে করবে, আমি কারো ওপর তার সাধ্যাতীত ভার (দায়িত্ব-কর্তব্য) অর্পণ করি না, আর তোমরা যখন কথা বলবে তখন স্বজনের বিরুদ্ধে হলেও ন্যায়ানুগ কথা বলবে, আর আল্লাহর সাথে কৃত অঙ্গীকার পূরণ করবে, আল্লাহ তোমাদেরকে এসব বিষয় নির্দেশ দিয়েছেন, যেন তোমরা তাঁর এ নির্দেশ ও উপদেশ গ্রহণ কর।

وَأَنَّ هَٰذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا

১৫৩. আর এ পথই আমার সরল পথ; সুতরাং তোমরা এ পথেরই

السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٥٣﴾

অনুসরণ কর। এ পথ ছাড়া অন্যান্য কোন পথের অনুসরণ করো না, অন্যথায় তোমাদেরকে তাঁর পথ থেকে বিছিন্ন করে দূরে সরিয়ে দেবে, আল্লাহ তোমাদেরকে এই নির্দেশ দিলেন, যেন তোমরা বেঁচে থাকতে পার।

ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِيْٓ اَحْسَنَ وَتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَاۗءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٥٤﴾

১৫৪. অতঃপর (আবার বলছি) মূসা (আলাইহিস সালাম)-কে আমি একখানা কিতাব প্রদান করেছিলাম, যাতে সৎ ও পুণ্য কর্মপরায়ণদের উপর আমার নেয়ামত পূর্ণাঙ্গ হয় এবং প্রত্যেকটি বস্তুর বিশদ বিবরণ হয়ে যায় এবং পথ নির্দেশ সম্বলিত ও রহমত হয়, (উদ্দেশ্য ছিল) যাতে তারা তাদের প্রতিপালকের সাথে সাক্ষাৎ হওয়া সম্বন্ধে পূর্ণ বিশ্বাস লাভ করতে পারে।

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿١٥٥﴾

১৫৫. আর (এমনিভাবে) আমি এই কিতাব (কুরআন) অবতীর্ণ করেছি যা বরকতময় ও কল্যাণময়! সুতরাং তোমরা এটার অনুসরণ করে চল এবং ভয় কর, যেন তোমাদের প্রতি দয়া ও অনুগ্রহ করা হয়।

اَنْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰي طَاۗىِٕفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا ۠ وَاِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿١٥٦﴾

১৫৬. (এটা নাযিল করার কারণ হলো এই যে,) যেন তোমরা না বলতে পার যে, সে কিতাব তো আমাদের পূর্ববর্তী দুই সম্প্রদায়ের প্রতি অবতীর্ণ করা হয়েছিল এবং আমরা তাদের শিক্ষা থেকে সম্পূর্ণ অমনোযোগী ছিলাম।

اَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ اَنَّآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ اَهْدٰى

১৫৭. অথবা তোমরা যেন এ কথাও বলতে না পার, আমাদের প্রতি

مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ؕ سَنَجْزِى الَّذِيْنَ يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ﴿١٥٧﴾

কিতাব নাযিল করা হলে আমরা তাদের তুলনায় বেশি হিদায়াত লাভ করতাম; এখন তো তোমাদের কাছে তোমাদের প্রভুর পক্ষ থেকে এক সুস্পষ্ট দলীল এবং পথ পাবার দিক নির্দেশ ও রহমত সমাগত হয়েছে, অতএব (এরপর আল্লাহর) আয়াতকে যে মিথ্যা প্রতিপন্ন করবে এবং তা থেকে এড়িয়ে থাকবে তার চেয়ে বড় অত্যাচারী আর কে হতে পারে? যারা আমার আয়াতসমূহ এড়িয়ে চলবে তাদেরকে আমি এই এড়িয়ে চলার কারণে অতিসত্বর কঠিন শাস্তি দিব।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِىَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِىَ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ؕ يَوْمَ يَاْتِىْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِىْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ؕ قُلِ انْتَظِرُوْٓا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٥٨﴾

১৫৮. তারা কি শুধু এ প্রতীক্ষায় রয়েছে যে, তাদের কাছে ফেরেশতা আসবে? কিংবা স্বয়ং তোমার প্রতিপালক আসবেন? অথবা তোমার প্রতিপালকের কোন কোন নিদর্শন প্রকাশ হয়ে পড়বে? যেদিন তোমার প্রতিপালকের কতক নিদর্শন প্রকাশ হয়ে পড়বে, (পশ্চিম দিক থেকে যেদিন সূর্যোদয় ঘটবে) সেই দিনের পূর্বে যারা ঈমান আনেনি, তাদের ঈমান তখন কোন উপকারে আসবে না, অথবা যারা নিজেদের ঈমান দ্বারা কোন নেক কাজ করেনি (তখন নেক কাজ দ্বারা কোন ফলোদয় হবে না), তুমি এসব পাপিষ্ঠকে জানিয়ে দাও- তোমরা (এরূপ আশা নিয়ে) প্রতীক্ষা করতে থাক, আমিও প্রতীক্ষা করছি [১]

১। (ক) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ্ সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম বলেছেনঃ পশ্চিম দিক থেকে সূর্যোদয় না হওয়া পর্যন্ত কিয়ামত হবে না। সূর্য যখন পশ্চিম দিক থেকে উদিত হবে এবং মানুষ তা দেখে তখন সবাই ঈমান আনবে (কিন্তু কেউ পূর্বে ঈমান গ্রহণ না করে

إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ ۚ إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿١٥٩﴾

১৫৯. নিশ্চয়ই যারা নিজেদের দ্বীনকে খন্ড-বিখন্ড করেছে এবং বিভিন্ন দলে উপদলে বিভক্ত হয়ে পড়েছে, তাদের সাথে তোমার কোন সম্পর্ক নেই, তাদের বিষয়টি নিশ্চয়ই আল্লাহর হাওলায় রয়েছে, পরিশেষে তিনিই তাদেরকে তাদের কার্যকলাপ সম্পর্কে অবহিত করবেন।

مَن جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا ۖ وَمَن جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَىٰ إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٦٠﴾

১৬০. কেউ কোন ভাল কাজ করলে সে তার দশগুণ প্রতিদান পাবে, আর কেউ পাপ ও অসৎ কাজ করলে তাকে শুধু ততটুকুই প্রতিফল দেয়া হবে যতটুকু সে করেছে, আর তারা অত্যাচারিত হবে না (অর্থাৎ বেশি প্রতিফল ভোগ করিয়ে তাদের প্রতি অত্যাচার করা হবে না)।

قُلْ إِنَّنِي هَدَانِي رَبِّي إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ دِينًا قِيَمًا مِّلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٦١﴾

১৬১. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি বলঃ নিঃসন্দেহে আমার প্রতিপালক আমাকে সঠিক ও নির্ভুল পথে পরিচালিত করেছেন, ওটাই সুপ্রতিষ্ঠিত দ্বীন এবং ইবরাহীম (عليه السلام)-এর অবলম্বিত আদর্শ যা সে ঐকান্তিক নিষ্ঠার সাথে গ্রহণ করেছিল। আর সে মুশরিকদের অন্তর্ভুক্ত ছিল না।

থাকলে তখনকার ঈমান গ্রহণ তার কোন কাজে আসবে না।) আয়াতের অর্থঃ "সে দিন কোন ব্যক্তির ঈমান কাজে আসবে না যদি সে পূর্বেই ঈমান গ্রহণ না করে থাকে।" (সূরা আল-আনআমঃ ১৫৮) [বুখারী, হাদীস নং ৪৬৩৫]

(খ) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ কিয়ামতের তিনটি নির্দশন) প্রকাশ পাওয়ার পর কোন ব্যক্তি ঈমান আনলে তার এ ঈমান কোনই কাজে আসবেনা। সে যদি ইতিপূর্বে পূর্বে ঈমানা না এনে থাকে। (১) পশ্চিম দিকে সূর্য উদিত হওয়া। (২) দাজ্জালের আগমন ঘটা। (৩) দাব্বাতুল আরজ। (মুসলিম)

(গ) আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ এমন কোন নবীর আগমন ঘটেনি যে, তার উম্মতকে একচোখ অন্ধ মিথ্যুক থেকে (দাজ্জাল) সাবধান করে নি। নিশ্চয়ই তার এক চোখ অন্ধ আর তোমাদের প্রভু অন্ধ নন এবং নিশ্চয়ই তার চোখের মাঝে, লিখা থাকবে কাফের।

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٢﴾

১৬২. তুমি বলে দাওঃ আমার নামায, আমার সকল ইবাদত, (কুরবানী ও হজ্জ) আমার জীবন ও আমার মরণ সব কিছু সারা জাহানের রব আল্লাহর জন্যে।

لَا شَرِيكَ لَهُ ۖ وَبِذَٰلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٦٣﴾

১৬৩. তাঁর কোন শরীক নেই, আমি এর জন্যে আদিষ্ট হয়েছি, (অর্থাৎ আমি যেন তাঁর সাথে অন্য কাউকে শরীক স্থির না করি।) আর আত্মসমর্পণকারীদের মধ্যে আমিই হলাম প্রথম।

قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِي رَبًّا وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ مَرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿١٦٤﴾

১৬৪. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি জিজ্ঞেস করঃ আমি কি আল্লাহকে বাদ দিয়ে অন্য প্রতিপালকের সন্ধান করবো? অথচ তিনিই হচ্ছেন প্রতিটি বস্তুর প্রতিপালক! প্রত্যেক ব্যক্তিই স্বীয় কৃতকর্মের জন্যে দায়ী হবে, কোন বোঝা বহনকারীই অপর কারো বোঝা বহন করবে না, পরিশেষে তোমাদের প্রতিপালকের নিকট তোমাদেরকে প্রত্যাবর্তন করতে হবে, তৎপর তিনি তোমরা যে বিষয়ে মতবিরোধ করেছিলে সে বিষয়ে তোমাদেরকে অবহিত করবেন।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ ۗ إِنَّ رَبَّكَ سَرِيعُ الْعِقَابِ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٦٥﴾

১৬৫. আর তিনি এমন, যিনি তোমাদেরকে দুনিয়ার প্রতিনিধি করেছেন এবং তোমাদের কতককে কতকের উপর মর্যাদায় উন্নত করেছেন, উদ্দেশ্য হলো তোমাদেরকে তিনি যা কিছু দিয়েছেন, তাতে তোমাদের পরীক্ষা করবেন, নিঃসন্দেহে তোমার প্রতিপালক ত্বরিত শাস্তিদাতা, আর নিঃসন্দেহে তিনি ক্ষমাশীল ও কৃপানিধান।

সূরাঃ আ'রাফ, মাক্কী

(আয়াতঃ ২০৬, রুকূঃ ২৪)

দয়াময় মেহেরবান আল্লাহর নামে শুরু করছি।

سُوْرَةُ الْاَعْرَافِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٢٠٦ رُكُوْعَاتُهَا ٢٤

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. আলিফ-লাম-মীম-সুয়াদ।

الٓمّٓصٓ ①

২. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তোমার নিকট এ জন্যে কুরআন অবতীর্ণ করা হয়েছে যাতে তুমি এর দ্বারা মানুষকে সতর্ক করতে পার, আর এটা মুমিনদের জন্যে উপদেশ (ভান্ডার), অতএব, তোমার মনে যেন এটা সম্পর্কে কোনরূপ দ্বিধা-সন্দেহ না থাকে (বা তা প্রচার করতে যেন তোমার অন্তর সংকীর্ণ না হয়)।

كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ②

৩. তোমাদের নিকট তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে যা অবতীর্ণ করা হয়েছে, তোমরা তার অনুসরণ কর, আর তোমরা আল্লাহকে ছেড়ে অন্য কোন বন্ধু ও অভিভাবকের অনুসরণ করো না, তোমরা খুব অল্পই উপদেশ গ্রহণ করে থাক।

اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ③

৪. আর কত জনপদকেই না আমি ধ্বংস করেছি। ফলে আমার শাস্তি তাদের উপর রাত্রিকালে ঘুমন্ত অবস্থায় অথবা দ্বিপ্রহরে যখন তারা বিশ্রামরত ছিল তখনই আপতিত হয়েছে।

وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ④

৫. আমার শাস্তি যখন তাদের কাছে এসে পড়েছিল, তখন তাদের মুখে 'বাস্তবিকই আমরা অত্যাচারী ছিলাম' এই কথা ছাড়া আর কিছুই ছিল না।

فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ⑤

فَلَنَسْـَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْـَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ۙ﴿٦﴾

৬. অতঃপর আমি (কিয়ামতের দিন) যাদের কাছে রাসূল প্রেরণ করা হয়েছিল তাদেরকে এবং রাসূল-দেরকেও অবশ্যই জিজ্ঞাসাবাদ করবো।

فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا غَآئِبِيْنَ ﴿٧﴾

৭. তখন আমি তাদের সমস্ত বিবরণ পূর্ণজ্ঞান অনুযায়ী প্রকাশ করে দেবো, আর আমি তো বে-খবর ছিলাম না।

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ ِالْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨﴾

৮. আর সেই দিনের ওজন হবে সঠিক।[১] সুতরাং যাদের (পুণ্যের) পাল্লা ভারী হবে তারাই হবে কৃতকার্য ও সফলকাম।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ﴿٩﴾

৯. আর যাদের (পুণ্যের) পাল্লা হাল্‌কা হবে, তারা হবে সেসব লোক যারা নিজেদের ধ্বংস ও ক্ষতি নিজেরাই করেছে, কেননা, তারা আমার নিদর্শনসমূহকে (বাণীকে) প্রত্যাখ্যান করতো।

وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِى الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿١٠﴾ ع

১০. আর নিশ্চয়ই আমি তোমা-দেরকে ভূ-পৃষ্ঠে থাকবার জায়গা দিয়েছি এবং আমি তোমাদের জন্যে ওতে জীবিকা নির্বাহের উপকরণগুলো সৃষ্টি করেছি, তোমরা খুব কমই কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে থাকো।

وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ۖ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿١١﴾

১১. আমিই তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছি, অতঃপর তোমাদেরকে রূপ দান করেছি, তারপর আমি ফেরেশতাদেরকে নির্দেশ দিয়েছি, তোমরা আদম (عليه السلام)-কে সিজদা

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ দু'টি বাক্য এমন যা, করুণাময় আল্লাহ্‌র নিকট প্রিয়, যবানে উচ্চারণ করতে সহজ, (কিয়ামতের দিন), মিজানের পাল্লায় ভারী, আর তা' হল- অর্থঃ " আল্লাহ্ পূত ও পবিত্র এবং তাঁর জন্য সকল প্রশংসা। মহান আল্লাহ্ পাকের পবিত্রতা বর্ণনা করছি। (বুখারী, হাদীস নং ৭৫৬৩)

কর, তখন ইবলীস ছাড়া সবাই সিজদা করলো, সে সিজদাকারীদের অন্তর্ভুক্ত হল না।

قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ؕ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّ خَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿١٢﴾

১২. তিনি (আল্লাহ) তাকে (ইবলীসকে) জিজ্ঞেস করলেনঃ আমি যখন তোমাকে আদমকে সেজদা করতে আদেশ করলাম, তখন কোন বস্তু তোমাকে সেজদা করা হতে নিবৃত্ত করলো? সে উত্তরে বললোঃ আমি তার চেয়ে শ্রেষ্ঠ, আপনি আমাকে আগুন দ্বারা সৃষ্টি করেছেন, আর তাকে সৃষ্টি করেছেন কাদামাটি হতে।

قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿١٣﴾

১৩. আল্লাহ বললেনঃ এ স্থান থেকে নেমে যাও, এখানে থেকে তুমি অহংকার করবে তা হতে পারে না; সুতরাং বের হয়ে যাও, নিশ্চয়ই তুমি নীচ ও লাঞ্ছিতদের অন্তর্ভুক্ত।

قَالَ اَنْظِرْنِيْۤ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤﴾

১৪. সে বললোঃ (হে আল্লাহ!) আমাকে পুনরুত্থান দিবস পর্যন্ত (বেঁচে থাকার) অবকাশ দিন।

قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿١٥﴾

১৫. আল্লাহ বললেনঃ (ঠিক আছে) তোমাকে অবকাশ দেয়া হলো।

قَالَ فَبِمَاۤ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١٦﴾

১৬. (ইবলীস) বললোঃ আপনি যে আমাকে পথভ্রষ্ট করলেন এ কারণে আমিও শপথ করে বলছিঃ আমি (বানী আদমকে) তাদের (বিভ্রান্ত করার) জন্যে সরল পথের (মাথায়) অবশ্যই ওঁৎ পেতে বসে থাকবো।

ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ

১৭. অতঃপর আমি (পথভ্রষ্ট করার উদ্দেশ্যে) তাদের সম্মুখ দিয়ে, পিছন দিয়ে, ডান দিক দিয়ে এবং বাম দিক

أَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ﴿١٧﴾

দিয়ে তাদের কাছে আসবো, আপনি তাদের অধিকাংশকেই কৃতজ্ঞরূপে পাবেন না।

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٨﴾

১৮. তিনি (আল্লাহ) বললেনঃ তুমি এখান থেকে লাঞ্ছিত ও বিতাড়িত অবস্থায় বের হয়ে যাও, তাদের (বানী আদমের) মধ্যে যারা তোমার অনুসরণ করবে, নিশ্চয়ই আমি তোমাদের সকলের দ্বারা জাহান্নাম পূর্ণ করবো।

وَيٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾

১৯. আর হে আদম! তুমি এবং তোমার স্ত্রী জান্নাতে বসবাস কর এবং এখানে তোমাদের মনে যা চায় তাই খাও; কিন্তু এই বৃক্ষের নিকটবর্তী হয়ো না, অন্যথায় অত্যাচারীদের মধ্যে গণ্য হয়ে পড়বে।

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ﴿٢٠﴾

২০. অতঃপর তাদের লজ্জাস্থান যা পরস্পরের কাছে গোপন রাখা হয়েছিল তা প্রকাশ করার জন্যে শয়তান তাদেরকে কুমন্ত্রণা দিলো, আর বললোঃ তোমাদের প্রতিপালক এই বৃক্ষের কাছে যেতে নিষেধ করেছেন এর কারণ এ ছাড়া কিছুই নয় যে, তোমরা যেন ফেরেশ্‌তা হয়ে না যাও অথবা (এই জান্নাতে) চিরন্তন জীবন লাভ করতে না পার।

وَقَاسَمَهُمَاۤ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٢١﴾

২১. সে তাদের উভয়ের নিকট শপথ করে বললোঃ আমি তোমাদের হিতাকাঙ্খীদের অন্যতম।

فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ

২২. সুতরাং সে (ইবলীস) তাঁদের উভয়কে প্রতারণা ও ছলনা দ্বারা নীচে নিয়ে আসল (অর্থাৎ বিভ্রান্ত

الْجَنَّةِ ۚ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَآ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٢٢﴾

করলো)। ফলে যখন তারা সেই নিষিদ্ধ গাছের ফলের স্বাদ গ্রহণ করে ফেললো, তখন তাদের লজ্জাস্থান তাদের কাছে প্রকাশ হয়ে পড়লো এবং জান্নাতের গাছের পাতা দ্বারা নিজেদেরকে আবৃত করতে লাগলো, এ সময় তাদের প্রতিপালক তাদেরকে সম্বোধন করে বললেনঃ আমি কি এ বৃক্ষ সম্পর্কে তোমাদেরকে নিষেধ করি নি? আর শয়তান যে তোমাদের প্রকাশ্য শত্রু তা কি আমি তোমাদেরকে বলি নি?

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ۫ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. তখন তারা বললোঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা নিজেদের প্রতি অন্যায় করেছি, আপনি যদি আমাদেরকে ক্ষমা না করেন এবং আমাদের দয়া না করেন তবে অবশ্যই আমরা ক্ষতিগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে পড়বো।

قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّ مَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٢٤﴾

২৪. তিনি (আল্লাহ) বললেনঃ তোমরা একে অন্যের শত্রুরূপে এখান থেকে নেমে যাও, তোমাদের জন্যে পৃথিবীতে এক নির্দিষ্ট সময় পর্যন্ত বসবাস করা এবং তথায় জীবন ধারণের উপযোগী সামগ্রীর ব্যবস্থা রয়েছে।

قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿٢٥﴾

২৫. তিনি আরও বললেনঃ সেই পৃথিবীতেই তোমরা জীবন-যাপন করবে, সেখানেই তোমাদের মৃত্যু সংঘটিত হবে এবং তথা হতেই তোমাদেরকে বের করা হবে।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ

২৬. হে বানী আদম! আমি তোমাদেরকে লজ্জাস্থান আবৃত করার

سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ؕ وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ذٰلِكَ خَيْرٌ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٢٦﴾

ও বেশভুষার জন্যে তোমাদের পোশাক পরিচ্ছদের উপকরণ অবতীর্ণ করেছি (বেশভুষার তুলনায়) আল্লাহ-ভীতি পরিচ্ছদই সর্বোত্তম পরিচ্ছদ এটা আল্লাহর নিদর্শন সমূহের অন্যতম নিদর্শন, সম্ভবতঃ মানুষ এটা হতে উপদেশ গ্রহণ করবে।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ؕ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٧﴾

২৭. হে আদম সন্তানগণ! শয়তান যেন তোমাদেরকে সেরূপ ফিৎনায় জড়িয়ে ফেলতে না পারে যেরূপ তোমাদের পিতা-মাতাকে (ফিৎনায় জড়িয়ে ফেলে) জান্নাত হতে বহিষ্কৃত করেছিল এবং তাদেরকে তাদের লজ্জাস্থান দেখাবার জন্যে বিবস্ত্র করেছিল, সে নিজে এবং তার দল তোমাদেরকে এমনভাবে দেখতে পায় যে, তোমরা তাদেরকে দেখতে পাও না, নিঃসন্দেহে শয়তানকে আমি বেঈমান লোকদের বন্ধু ও অভিভাবক বানিয়ে দিয়েছে।

وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ؕ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾

২৮. যখন তারা কোন নিকৃষ্ট ও অশ্লীল কর্ম করে, তখন তারা বলেঃ আমরা আমাদের পূর্বপুরুষদেরকে এসব কাজ করতে পেয়েছি এবং আল্লাহও আমাদেরকে এটা করতে নির্দেশ দিয়েছেন, হে মুহাম্মাদ (ﷺ)! তুমি ঘোষণা করে দাও যে, আল্লাহ অশ্লীল ও নিকৃষ্ট কর্মের নির্দেশ দেন না, তোমরা কি আল্লাহ সম্পর্কে এমন সব কথা বলছো যে বিষয়ে তোমাদের কোন জ্ঞান নেই?

قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ ۫ وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ

২৯. তুমি ঘোষণা করে দাওঃ আমার প্রতিপালক ন্যায়ের নির্দেশ দিয়েছেন

كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۝ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ۝

এবং (আরও নির্দেশ দিয়েছেন যে,) তোমরা প্রত্যেক নামাযের সময় তোমাদের মুখমন্ডলকে (ক্বিবলার দিকে) স্থির রাখ ও তাঁরই আনুগত্যে বিশুদ্ধ মনে একনিষ্ঠভাবে তাঁকেই ডাক, তোমাদেরকে প্রথমে যেভাবে সৃষ্টি করা হয়েছে, তোমরা তেমনিভাবে ফিরে আসবে।

فَرِيْقًا هَدٰى وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ؕ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝

৩০. এক দলকে আল্লাহ হেদায়েত দান করেছেন এবং অপর দলের জন্যে ভ্রান্তি স্থির হয়েছে, কারণ তারা আল্লাহকে ছেড়ে শয়তানকে অভিভাবক ও বন্ধু বানিয়েছিল এবং নিজদেরকে হেদায়েতপ্রাপ্ত মনে করত।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۝

৩১. হে আদম সন্তানগণ! প্রত্যেক নামাযের সময় সুন্দর পোশাক-পরিচ্ছদ গ্রহণ কর, আর খাও এবং পান কর (তবে পরিচ্ছদ ও পানাহারে)[১] অপব্যয় ও অমিতাচার করবে না, কেননা, আল্লাহ অপব্যয়কারীদের ভালবাসেন না।

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ؕ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝

৩২. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি জিজ্ঞেস কর যেঃ আল্লাহ তাঁর বান্দাদের জন্যে যেসব শোভনীয় বস্তু ও পবিত্র জীবিকা সৃষ্টি করেছেন, তা কে নিষিদ্ধ করেছে? তুমি ঘোষণা করে দাওঃ এ সব বস্তু পার্থিব জীবনে, বিশেষ করে কিয়ামতের দিনে ঐসব লোকের জন্যে যারা মুমিন হবে,

১। আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) ফজরের নামায এমন সময়ে পড়তেন যে, তার সাথে সাথে যে সমস্ত মুসলমান রমণীগণ শরীরে চাদর জড়িয়ে নামাযে শরীক হতেন। অতঃপর তারা এত অন্ধকার থাকাতে নামায থেকে বাড়িতে ফিরতেন যে কেউ তাদেরকে চিনতে পারত না। (বুখারী, হাদীস নং ৩৭২)

এমনিভাবে আমি জ্ঞানী সম্প্রদায়ের জন্যে নিদর্শনসমূহ বিশদভাবে বর্ণনা করে থাকি।

قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْإِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَأَنْ تُشْرِكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٣٣﴾

৩৩. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি ঘোষণা করে দাওঃ আমার প্রতিপালক প্রকাশ্য ও অপ্রকাশ্য অশ্লীলতা, পাপকাজ, অসংগত ও অত্যাচার ও বাড়াবাড়ি এবং আল্লাহর সাথে কোন কিছুকে শরীক করা যার পক্ষে আল্লাহ কোন দলীল-প্রমাণ অবতীর্ণ করেন নি, আর আল্লাহ সম্বন্ধে এমন কিছু বলা যে সম্বন্ধে তোমাদের কোন জ্ঞান নেই; (ইত্যাদি কাজ ও বিষয়সমূহ) নিষিদ্ধ করেছেন।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۚ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً ۖ وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٣٤﴾

৩৪. প্রত্যেক জাতির জন্যে একটি নির্দিষ্ট সময় রয়েছে। সুতরাং যখন সেই নির্দিষ্ট সময় উপস্থিত হবে তখন তা এক মুহূর্তকালও আগে এবং পরে হবে না।

يَا بَنِي آدَمَ إِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي ۙ فَمَنِ اتَّقَىٰ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٥﴾

৩৫. হে আদম সন্তান! স্মরণ রাখ, তোমাদের মধ্য হতে যদি এমন কোন রাসূল তোমাদের নিকট আসে এবং আমার বাণী ও নিদর্শন তোমাদের কাছে বর্ণনা করে; তখন যারা (আল্লাহকে) ভয় করবে এবং নিজেদেরকে সংশোধন করে নেবে, তাদের কোন ভয়-ভীতি থাকবে না এবং তারা দুঃখিত ও চিন্তিত হবে না।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٦﴾

৩৬. আর যারা আমার বাণী ও বিধানকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে এবং অহংকার করে তা হতে দূরে সরে

রয়েছে, তারাই হবে জাহান্নামী, সেখানে তারা চিরকাল অবস্থান করবে।

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۚ أُولَٰئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيبُهُمْ مِنَ الْكِتَابِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ قَالُوا أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا وَشَهِدُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ﴿٣٧﴾

৩৭. যে ব্যক্তি আল্লাহর উপর মিথ্যা আরোপ করে এবং তাঁর বাণী ও নিদর্শনসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে; তার চেয়ে বড় অত্যাচারী আর কে হতে পারে? তাদের ভাগ্যলিপিতে লিখিত নির্ধারিত অংশ তাদের নিকট পৌঁছবেই, পরিশেষে যখন আমার প্রেরিত ফেরেশ্‌তা তাদের প্রাণ হরণের জন্যে তাদের নিকট আসবে, তখন ফেরেশ্‌তারা জিজ্ঞেস করবেঃ আল্লাহকে বাদ দিয়ে যাদেরকে তোমরা ডাকতে তারা কোথায়? তখন তারা উত্তরে বলবেঃ আমাদের হতে তারা অদৃশ্য হয়ে গেছে, আর নিজেরাই স্বীকারোক্তি করবে যে, তারা কাফির বা সত্য প্রত্যাখ্যানকারী ছিল।

قَالَ ادْخُلُوا فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ فِي النَّارِ ۖ كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ لَعَنَتْ أُخْتَهَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا ادَّارَكُوا فِيهَا جَمِيعًا ۖ قَالَتْ أُخْرَاهُمْ لِأُولَاهُمْ رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ أَضَلُّونَا فَآتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِنَ النَّارِ ۖ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَلَٰكِنْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾

৩৮. আল্লাহ বলবেনঃ তোমাদের পূর্বে মানুষ ও জ্বিন হতে যেসব সম্প্রদায় গত হয়েছে, তাদের সাথে তোমরাও জাহান্নামে প্রবেশ কর, যখনই কোন দল তাতে প্রবেশ করবে তখনই অপর দলকে তারা অভিসম্পাত করবে, পরিশেষে যখন তাতে সকলে জামায়েত হবে, তখন পরবর্তীগণ পূর্ববর্তীদের সম্পর্কে বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! এরাই আমাদেরকে বিভ্রান্ত করেছে, সুতরাং আপনি এদের জাহান্নামের শাস্তি দ্বিগুণ দিন তখন আল্লাহ

বলবেনঃ প্রত্যেকের জন্যেই দ্বিগুণ রয়েছে; কিন্তু তোমরা তা জ্ঞাত নও।

وَقَالَتْ أُولٰىهُمْ لِأُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٣٩﴾

৩৯. আর পূর্ববর্তী লোকেরা পরবর্তী লোকদের উদ্দেশ্যে বলবেঃ আমাদের উপর তোমাদের কোন শ্রেষ্ঠত্ব নেই, সুতরাং তোমরা তোমাদের কৃতকর্মের ফলস্বরূপ শাস্তি ভোগ করতে থাক।

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۚ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ﴿٤٠﴾

৪০. নিশ্চয়ই যারা আমার আয়াতকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে এবং অহংকার বশতঃ তা থেকে ফিরে থাকে, তাদের জন্যে আকাশের দ্বার উন্মুক্ত করা হবে না এবং তারা জান্নাতেও প্রবেশ করতে পারবে না, যতক্ষণ না সূচেঁর ছিদ্র পথে উষ্ট্র প্রবেশ করে, এমনিভাবেই আমি অপরাধীদেরকে প্রতিফল দিয়ে থাকি।

لَهُمْ مِنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۚ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِينَ ﴿٤١﴾

৪১. তাদের জন্যে হবে জাহান্নামের (আগুনের) বিছানা এবং তাদের উপরে হবে আগুনের চাদর (যা তাদেরকে আচ্ছাদন করে নেবে)। এমনিভাবেই আমি যালিমদেরকে প্রতিফল দিয়ে থাকি।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۖ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيهَا خٰلِدُونَ ﴿٤٢﴾

৪২. আর যারা ঈমান এনেছে ও ভাল কাজ করেছে এমন কোন ব্যক্তিকে আমি তার সাধ্যাতীত দায়িত্ব অর্পণ করি না; তারাই হবে জান্নাতবাসী, এবং তারাই হবে সেখানে চিরকাল অবস্থানকারী।

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غِلٍّ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهٰرُ ۚ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي هَدٰىنَا

৪৩. আর তাদের অন্তরে যা কিছু ঈর্ষা ও বিদ্বেষ রয়েছে তা আমি দূর করে দেবো, তাদের নিম্নদেশ দিয়ে নদীসমূহ প্রবাহিত হবে, তখন তারা

لِهٰذَا ۗ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَآ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ لَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۭ وَنُوْدُوْٓا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾

বলবেঃ সমস্ত প্রশংসা সেই আল্লাহর জন্যে যিনি আমাদেরকে এর পথ-প্রদর্শন করেছেন, আল্লাহ আমাদেরকে হেদায়েত দান না করলে আমরা হেদায়েতপ্রাপ্ত হতাম না, আমাদের প্রতিপালকের প্রেরিত রাসূলগণ সত্যবাণী নিয়ে এসেছিলেন, আর তাদেরকে সম্বোধন করে বলা হবে, তোমরা যে (ভাল) আমল করতে তারই জন্যে তোমাদেরকে এই জান্নাতের উত্তরাধিকারী বানানো হয়েছে।

وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ اَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُّمْ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ۭ قَالُوْا نَعَمْ ۚ فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ بَيْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾

৪৪. আর তখন জান্নাতবাসীরা জাহান্নাম বাসীদেরকে (উপহাস করে) বলবেঃ আমাদের প্রতিপালক যেসব অঙ্গীকার ও প্রতিশ্রুতি আমাদেরকে দিয়েছিলেন, আমরা তা বাস্তবভাবে পেয়েছি; কিন্তু তোমাদের প্রতিপালক যে প্রতিশ্রুতি দিয়েছিলেন তা কি তোমরা সত্য ও বাস্তবরূপে পেয়েছো? তখন তারা বলবে হ্যাঁ, পেয়েছি, (এ সময়) তাদের মধ্যে জনৈক ঘোষক ঘোষণা করে দেবেন যে, যালিমদের উপর আল্লাহর অভিসম্পাত।

الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ كٰفِرُوْنَ ﴿٤٥﴾

৪৫. যারা আল্লাহর পথে চলতে (মানুষকে) বাধা দিতো এবং ওতে বক্রতা অনুসন্ধান করতো, আর তারা পরকালকেও অস্বীকার করতো।

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى الْاَعْرَافِ رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ كُلًّۢا بِسِيْمٰىهُمْ ۚ وَنَادَوْا اَصْحٰبَ

৪৬. এই উভয় শ্রেণীর লোকদের মাঝে পার্থক্যকারী একটি পর্দা রয়েছে, আর আ'রাফে (জান্নাত ও জাহান্নামের মধ্যবর্তী স্থানে অবস্থিত

الْجَنَّةِ اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۚ لَمْ يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ ﴿٤٦﴾

উঁচু দেয়ালের উপরে) অনেক লোক থাকবে, তারা প্রত্যেককে তাদের লক্ষণ ও চিহ্ন দ্বারা চিনতে পারবে, আর জান্নাত বাসীদেরকে ডেকে বলবেঃ তোমাদের প্রতি শান্তি বর্ষিত হোক, তখনো এরা (আ'রাফবাসীরা) জান্নাতে প্রবেশ করেনি বটে; কিন্তু ওর আকাঙ্ক্ষা করে।

وَاِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾

৪৭. আর যখন জাহান্নাম বাসীদের প্রতি তাদের দৃষ্টি ফিরিয়ে দেয়া হবে, তখন তারা (আ'রাফবাসীরা) বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি আমাদেরকে যালিম সম্প্রদায়ের সঙ্গী করবেন না।

وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ قَالُوْا مَآ اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٤٨﴾

৪৮. আ'রাফবাসীরা যেসব জাহান্নামী লোককে তাদের লক্ষণ দ্বারা চিনতে পারবে তাদেরকে ডাক দিয়ে বলবেঃ তোমাদের বাহিনী (ও পার্থিব জীবনের ধন-সম্পদ) এবং তোমাদের গর্ব-অহংকার তোমাদের কোনই উপকারে আসল না।

اَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ ؕ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ﴿٤٩﴾

৪৯. আর সেই জান্নাতবাসীরা কি সে সমস্ত লোক যাদের সম্পর্কে তোমরা কসম করে বলতে যে, এদের প্রতি আল্লাহ দয়া করবেন না? (অথচ তাদের জন্যে এই ফরমান জারী হলো যে,) তোমরা জান্নাতে প্রবেশ কর, তোমাদের কোন ভয় নেই এবং তোমরা চিন্তিত ও দুঃখিত হবে না।

وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيْضُوْا عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ؕ قَالُوْٓا اِنَّ

৫০. আর জাহান্নামবাসীরা জান্নাত-বাসীদেরকে ডেকে বলবেঃ আমাদের উপর কিছু পানি ঢেলে দাও অথবা তোমাদের আল্লাহ প্রদত্ত জীবিকা

اللّٰهُ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝٥٠

হতে কিছু প্রদান কর, তারা বলবেঃ আল্লাহ এসব জিনিষ কাফেরদের প্রতি হারাম করে দিয়েছেন।

الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّلَعِبًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ نَنْسٰهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ وَمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝٥١

৫১. যারা নিজেদের দ্বীনকে খেল-তামাসার বস্তুতে পরিণত করেছিল এবং পার্থিব জীবন যাদেরকে প্রতারণা ও গোলক ধাঁধাঁয় নিমজ্জিত করে রেখেছিল, সুতরাং আজকের দিনে আমি তাদেরকে তেমনিভাবে ভুলে থাকবো যেমনিভাবে তারা এ দিনের সাক্ষাতের কথা ভুলে গিয়েছিল এবং যেমন তারা আমার নিদর্শন ও আয়াতসমূহকে অস্বীকার করছিল।

وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٥٢

৫২. আর আমি তাদের নিকট এমন একখানা কিতাব পৌছিয়ে ছিলাম যাকে আমি জ্ঞান তথ্যে সমৃদ্ধ ও সুবিস্তৃত করেছিলাম এবং যা ছিল ঈমানদার সম্প্রদায়ের জন্যে হেদায়েত ও রহমতের প্রতীক।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝٥٣

৫৩. তারা আর কোন কিছুর অপেক্ষা করছে না, শুধুমাত্র ওর সর্বশেষ পরিণতির অপেক্ষায় রয়েছে, যেদিন এর সর্বশেষ পরিণতি এসে সমুপস্থিত হবে এবং সে দিন যারা এর আগমনের কথা ভুলে গিয়েছিল তারা বলবেঃ বাস্তবিকই আমাদের প্রতিপালকের রাসূলগণ সত্য কথা এনেছিলেন, সুতরাং (এখন) এমন কোন সুপারিশকারী আছে কি যারা আমাদের জন্যে সুপারিশ করবে? অথবা আমাদেরকে কি পুনরায় দুনিয়ায় পাঠানো যেতে পারে যাতে

আমরা পূর্বের কৃতকর্মের তুলনায় ভিন্ন কিছু করতে পারি? নিঃসন্দেহে তারা নিজেরাই নিজেদের ক্ষতি করেছে, আর তারা যেসব মিথ্যা (মা'বূদ ও রসম-রেওয়াজ) রচনা করেছিল, তাও তাদের হতে অদৃশ্য হয়েছে।

إِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍ بِاَمْرِهٖ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٤﴾

৫৪. নিশ্চয়ই তোমাদের প্রতিপালক হচ্ছেন সে আল্লাহ যিনি আসমান ও যমীনকে ছয়দিনে সৃষ্টি করেছেন, অতঃপর তিনি স্বীয় আরশের উপর সমুন্নীত হন, তিনি দিবসকে রাত্রি দ্বারা আচ্ছাদিত করেন, এমন ভাবে যে রাত্রি ও দিবস একে অন্যকে অনুসরণ করে চলে ত্বড়িত গতিতে; সূর্য, চন্দ্র ও নক্ষত্ররাজী সবই তাঁর হুকুমের অনুগত, জেনে রাখো, সৃষ্টির একমাত্র কর্তা তিনিই আর হুকুমের একমাত্র মালিক তিনিই, সারা জাহানের প্রতিপালক আল্লাহ হলেন বরকতময়।

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٥٥﴾

৫৫. তোমরা বিনীতভাবে ও সংগোপনে তোমাদের প্রতিপালককে ডাকবে, তিনি সীমালঙ্ঘনকারীকে ভালবাসেন না।

وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٦﴾

৫৬. দুনিয়ার শান্তি-শৃঙ্খলা স্থাপনের পর ওতে বিপর্যয় ও বিশৃংখলা সৃষ্টি করো না, আর আল্লাহকে ভয়-ভীতি ও আশা-আকাঙ্ক্ষার সাথে ডাক, নিঃসন্দেহে আল্লাহর রহমত সৎকর্মশীলদের অতি সন্নিকটে।

وَهُوَ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ

৫৭. সেই আল্লাহই স্বীয় রহমতের (বৃষ্টির) আগে আগে বাতাসকে

رَحْمَتِهٖ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٧﴾

সুসংবাদ রূপে প্রেরণ করেন, অবশেষে যখন ঐ বাতাস ভারী মেঘমালাকে বহন করে, তখন আমি এই মেঘমালাকে কোন নির্জীব ভূ-খন্ডের দিকে প্রেরণ করি, অতঃপর ওটা হতে বারিধারা বর্ষণ করি, তারপর সেই পানির সাহায্যে সেখানে সর্বপ্রকার ফল-ফলাদি উৎপাদন করি, এমনভাবেই আমি (কিয়ামতের দিন) মৃতকে জীবিত করবো, সম্ভবত তোমরা এটা থেকে শিক্ষা গ্রহণ করবে।

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِىْ خَبُثَ لَا يَخْرُجُ اِلَّا نَكِدًا ؕ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ ﴿٥٨﴾

৫৮. আর ভাল উৎকৃষ্ট ভূমি ওর প্রতিপালকের নির্দেশক্রমে খুব ভাল ফল ফলায়, আর যা নিকৃষ্ট ভূমি, তাতে খুব কমই ফসল ফলে থাকে, এমনিভাবেই আমি কৃতজ্ঞতা পরায়ণদের জন্যে আমার নিদর্শন বিবৃত করে থাকি।

لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اِنِّىْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٥٩﴾

৫৯. আমি নূহ (عليه السلام)-কে তার জাতির নিকট প্রেরণ করেছিলাম, সুতরাং সে তাদেরকে সম্বোধন করে বলেছিলঃ হে আমার জাতি! তোমরা শুধু আল্লাহর ইবাদত কর, তিনি ছাড়া তোমাদের আর কোন সত্য মা'বূদ নেই, আমি তোমাদের প্রতি এক মহা দিবসের শাস্তি আশঙ্কা করছি।

قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦٠﴾

৬০. তখন তার জাতির প্রধান ও নেতাগণ বললোঃ নিশ্চয়ই আমরা তোমাকে স্পষ্ট বিভ্রান্তির মধ্যে দেখছি।

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِىْ ضَلٰلَةٌ وَّلٰكِنِّىْ رَسُوْلٌ مِّنْ

৬১. তিনি বললেনঃ হে আমার জাতি! আমি কোন ভুল-ভ্রান্তি ও

رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦١﴾

গুমরাহীর মধ্যে লিপ্ত নই; বরং আমি সারা জাহানের প্রতিপালকের (প্রেরিত) একজন রাসূল।

أُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَأَنْصَحُ لَكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾

৬২. আমি আমার প্রতিপালকের পয়গাম তোমাদের কাছে পৌঁছিয়ে দিচ্ছি, আর আমি তোমাদেরকে হিতোপদেশ দিচ্ছি, আর তোমরা যা জান না আমি তা আল্লাহর নিকট থেকে জেনে থাকি।

أَوَعَجِبْتُمْ أَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوْا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٦٣﴾

৬৩. তোমাদের মধ্যকার একজন লোকের মারফত তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে উপদেশ বাণী আসায় কি তোমরা বিস্মিত হয়েছো? যাতে তিনি তোমাদেরকে সতর্ক ও হুঁশিয়ার করতে পারেন এবং যাতে (তোমরা সাবধান হও,) তাকওয়া অবলম্বন করতে পার, হয়তো তোমাদের প্রতি অনুগ্রহ করা হবে।

فَكَذَّبُوْهُ فَأَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَأَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ إِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ﴿٦٤﴾

৬৪. কিন্তু তারা তাঁকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করলো, ফলে তাকে এবং তাঁর সাথে নৌকায় যারা ছিল তাদেরকে (আযাব হতে) রক্ষা করলাম, আর যারা আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছিল, তাদেরকে (প্লাবনের পানিতে) ডুবিয়ে মারলাম, বস্তুতঃ নিঃসন্দেহে তারা ছিল এক অজ্ঞ ও ভ্রান্ত সম্প্রদায়।

وَإِلٰى عَادٍ أَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ أَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٦٥﴾

৬৫. আর আমি আ'দ জাতির নিকট তাদের ভাই হূদ (عليه السلام)-কে (নবীরূপে) পাঠিয়েছিলাম, সে বললো ঃ হে আমার জাতি! তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর, আল্লাহ ছাড়া

তোমাদের আর কোন সত্য মা'বূদ নেই, তোমরা কি (এখনো) সাবধান হবে না? (আল্লাহভীতি অর্জন করবে না?)

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖٓ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦٦﴾

৬৬. তখন তার জাতির কাফির লোকদের নেতাগণ বললোঃ অবশ্যই আমরা তোমাকে নির্বোধ দেখছি এবং আমরা তো তোমাকে নিশ্চিতরূপে মিথ্যাবাদীদের অন্তর্গত ধারণা করছি।

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٧﴾

৬৭. সে (হূদ (عليه السلام)) বললোঃ হে আমার জাতি! আমি নির্বোধ নই; বরং আমি হলাম সারা জাহানের প্রতিপালকের প্রেরিত রাসূল।

اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ﴿٦٨﴾

৬৮. আমি আমার প্রতিপালকের পয়গাম তোমাদের নিকট পৌঁছিয়ে দিচ্ছি, আর আমি তোমাদের একজন বিশ্বস্ত হিতাকাঙ্খী।

اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ۭ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَاۗءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾

৬৯. তোমরা কি এতে বিস্মিত হচ্ছো যে, তোমাদের জাতিরই একটি লোকের মাধ্যমে তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে তাঁর বিধান ও উপদেশ তোমাদেরকে সতর্ক করার উদ্দেশ্যে তোমাদের কাছে এসেছে, তোমরা সেই অবস্থার কথা স্মরণ কর, যখন নূহের (عليه السلام) সম্প্রদায়ের পর আল্লাহ তোমাদেরকে তাদের স্থলাভিষিক্ত করেছেন এবং তোমাদের আকার-আকৃতি অন্যদের অপেক্ষা শক্তিতে অধিকতর সমৃদ্ধ করেছেন। সুতরাং তোমরা আল্লাহর অনুগ্রহ স্মরণ কর, হয়তো তোমরা সফলকাম হবে।

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٧٠﴾

৭০. তারা বললোঃ তুমি কি আমাদের নিকট শুধু এই উদ্দেশ্যে এসেছো, যেন আমরা একমাত্র আল্লাহরই ইবাদত করি এবং আমাদের পূর্বপুরুষগণ যাদের ইবাদত করতো তাদেরকে বর্জন করি? তাহলে তুমি তোমার কথা ও দাবীতে সত্যবাদী হলে আমাদেরকে যে শাস্তির ভয় দেখাচ্ছ তা আনয়ন কর।

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ؕ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ اَسْمَآءٍ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٧١﴾

৭১. সে বললোঃ তোমাদের প্রতিপালকের শাস্তি ও ক্রোধ তোমাদের উপর এসেই পড়বে, তোমরা কি আমার সাথে এমন কতগুলো নাম সম্বন্ধে বিতর্ক করছো যার নামকরণ করেছো তোমরা এবং তোমাদের বাপ-দাদারা, যে বিষয়ে আল্লাহ কোন দলীল-প্রমাণ অবতীর্ণ করেন নি? সুতরাং তোমরা (শাস্তির জন্যে) অপেক্ষা করতে থাক, আমিও তোমাদের সাথে অপেক্ষা করছি।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٢﴾

৭২. অতঃপর আমি তাঁকে (হূদকে) এবং তার সঙ্গী-সাথীদেরকে (শাস্তি হতে) আমার অনুগ্রহে রক্ষা করলাম, আর যারা আমার নিদর্শনকে (বিধানকে) মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছিল এবং যারা ঈমানদার ছিল না তাদের মূলোৎপাটন করে ছাড়লাম।

وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا

৭৩. আর আমি সামূদ জাতির নিকট তাদের ভ্রাতা সালেহ (عليه السلام)-কে প্রেরণ করেছিলাম, সে বললোঃ হে আমার জাতি! তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর, আল্লাহ ছাড়া তোমাদের আর কোন সত্য মা'বূদ নেই,

تَأْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾

তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে এক স্পষ্ট নিদর্শন তোমাদের নিকট এসেছে, এই আল্লাহর (নামে উৎসর্গিত) উষ্ট্রী তোমাদের জন্যে একটি নিদর্শন স্বরূপ। সুতরাং তোমরা একে ছেড়ে দাও– আল্লাহর যমীনে চরে খাবে, ওকে খারাপ উদ্দেশ্যে স্পর্শ করো না, (ওকে কোন কষ্ট দিলে) এক যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি তোমাদেরকে গ্রাস করে ফেলবে।

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ عَادٍ وَّ بَوَّاَكُمْ فِي الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّ تَنْحِتُوْنَ الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٧٤﴾

৭৪. তোমরা স্মরণ কর সেই বিষয়টি যখন তিনি আ'দ জাতির পর তোমাদেরকে তাদের স্থলাভিষিক্ত করেছিলেন, আর তিনি তোমাদেরকে পৃথিবীতে এমনভাবে প্রতিষ্ঠিত করেছেন যে, তোমরা সমতল ভূমিতে প্রাসাদ ও পাহাড় কেটে আবাস গৃহ নির্মাণ করেছো। সুতরাং তোমরা আল্লাহর অনুগ্রহের কথা স্মরণ কর এবং পৃথিবীতে বিপর্যয় ছড়িয়ে দিয়ো না।

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٧٥﴾

৭৫. (অতঃপর) তার সম্প্রদায়ের অহংকারী প্রধানরা তখন তাদের মধ্যকার দুর্বল ও উৎপীড়িত মুমিনদেরকে বললোঃ তোমরা কি বিশ্বাস কর যে, সালেহ (عليه السلام) তার প্রতিপালক কর্তৃক প্রেরিত হয়েছেন? তারা উত্তরে বললোঃ নিশ্চয়ই যে পয়গামসহ তিনি প্রেরিত হয়েছেন, আমরা তা বিশ্বাস করি।

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا بِالَّذِيْٓ اٰمَنْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٧٦﴾

৭৬. তখন অহংকারীরা বললোঃ তোমারা যা বিশ্বাস কর আমরা তা অবিশ্বাস করি।

فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ إِنْ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٧٧﴾

৭৭. অতঃপর তারা সেই উষ্ট্রীটিকে মেরে ফেললো এবং (গর্ব ও দাম্ভিকতার সাথে) তাদের প্রতি-পালকের নির্দেশের বিরুদ্ধাচরণ করে চলতে লাগলো এবং বললোঃ হে সালেহ! তুমি সত্য রাসূল হয়ে থাকলে আমাদেরকে যে শাস্তির ভয় দেখাচ্ছ তা আনয়ন কর।

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٧٨﴾

৭৮. সুতরাং তাদেরকে একটি প্রলয়ংকরী ভূমিকম্প এসে গ্রাস করে নিলো, ফলে তারা নিজেদের গৃহের মধ্যেই (মৃত্যু অবস্থায়) উপুড় (অধোমুখী) হয়ে পড়ে গেল।

فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٧٩﴾

৭৯. অতঃপর তিনি (সালেহ (عليه السلام)) একথা বলে তাদের জনপদ হতে বের হয়ে গেলেনঃ হে আমার সম্প্রদায়! আমি আমার প্রতিপালকের পয়গাম তোমাদের কাছে পৌঁছিয়ে দিয়েছি, আর আমি তোমাদেরকে উপদেশ দিয়েছি; কিন্তু তোমরা তো উপদেশ দাতাদেরকে পছন্দ কর না।

وَلُوْطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ أَتَأْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾

৮০. আর আমি লূত (عليه السلام)-কে নবুওয়াত দান করে পাঠিয়েছিলাম, যখন তিনি তাঁর সম্প্রদায়কে বলেছিলেনঃ তোমরা এমন অশ্লীল ও কুকর্ম করছো; যা তোমাদের পূর্বে বিশ্বে আর কেউই করেনি।

إِنَّكُمْ لَتَأْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ط بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿٨١﴾

৮১. তোমরা স্ত্রীলোকদের বাদ দিয়ে পুরুষদের সাথে নিজেদের যৌন ইচ্ছা নিবারণ করে নিচ্ছো। প্রকৃতপক্ষে তোমরা হচ্ছো সীমালঙ্ঘনকারী সম্প্রদায়।

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٨٢﴾

৮২. কিন্তু তার জাতির লোকদের এটা ছাড়া আর কোন উত্তরই ছিল না যে, এদেরকে তোমাদের জনপদ থেকে বের করে দাও, এরা নিজেদেরকে বড় পবিত্র লোক বলে প্রকাশ করছে।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٨٣﴾

৮৩. পরিশেষে, আমি লূত (عليه السلام)-কে এবং তার পরিবারের লোকদেরকে শুধুমাত্র তার স্ত্রী ছাড়া শাস্তি হতে রক্ষা করেছিলাম, তার স্ত্রী ছিল ধ্বংসপ্রাপ্ত লোকদের অন্তর্ভুক্ত।

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٨٤﴾

৮৪. অতঃপর আমি তাদের উপর মুষলধারে (পাথরের) বৃষ্টি বর্ষণ করেছিলাম। সুতরাং অপরাধী লোকদের পরিণাম কি হয়েছিল তা লক্ষ্য কর।

وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۗ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۗ فَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا ۗ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٨٥﴾

৮৫. আর আমি মাদিয়ানবাসীদের কাছে তাদেরই ভাই শু'আইব (عليه السلام) -কে পাঠিয়েছিলাম, সে তার স্বজাতিকে সম্বোধন করে বলেছিলো ঃ হে আমার জাতি! তোমরা (শিরক বর্জন করে) একমাত্র আল্লাহর ইবাদত কর, তিনি ছাড়া তোমাদের আর কোন সত্য মা'বূদ নেই, তোমাদের প্রভুর পক্ষ হতে তোমাদের কাছে সুস্পষ্ট দলীল এসে গেছে। সুতরাং তোমরা ওজন ও পরিমাপ পূর্ণ মাত্রায় দেবে, মানুষকে তাদের প্রাপ্য বস্তু কম দিয়ে ক্ষতিগ্রস্ত করবে না, আর দুনিয়ায় শান্তি-শৃঙ্খলা স্থাপনের পর ঝগড়া-ফাসাদ ও বিপর্যয় ঘটাবে না, তোমরা বাস্তবিক পক্ষে ঈমানদার হলে এই পথই হলো তোমাদের জন্যে কল্যাণকর।

وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِهِ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوا إِذْ كُنْتُمْ قَلِيلًا فَكَثَّرَكُمْ ۖ وَانْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿٨٦﴾

৮৬. আর তোমরা প্রতিটি পথে এই উদ্দেশ্যে বসে থেকো না যে, ঈমানদার লোকদেরকে ভয়-ভীতি প্রদর্শন করবে ও আল্লাহর পথ হতে বিরত রাখবে এবং সহজ-সরল পথকে ছেড়ে দিয়ে বক্রতা অন্বেষণে ব্যস্ত থাকবে। আর ঐ অবস্থাটির কথা স্মরণ কর, যখন তোমরা সংখ্যায় স্বল্প ছিলে, অতঃপর তিনি (আল্লাহ) তোমাদের সংখ্যা বেশি করে দিলেন, আর এ জগতে বিপর্যয় সৃষ্টিকারীদের পরিণতি কী হয়েছে তা লক্ষ্য কর।

وَإِنْ كَانَ طَائِفَةٌ مِنْكُمْ آمَنُوا بِالَّذِي أُرْسِلْتُ بِهِ وَطَائِفَةٌ لَمْ يُؤْمِنُوا فَاصْبِرُوا حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿٨٧﴾

৮৭. আমার নিকট যা (আল্লাহর পক্ষ হতে) প্রেরিত হয়েছে তা যদি তোমাদের কোন দল বিশ্বাস করে এবং কোন দল অবিশ্বাস করে তবে (সেই পর্যন্ত) ধৈর্যধারণ কর যতক্ষণ না আল্লাহ আমাদের মধ্যে চূড়ান্ত ফায়সালা করে দেন, কারণ তিনিই হলেন উত্তম ফায়সালাকারী।[১]

১। (ক) আব্দুল্লাহ ইবনে উমার (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তোমরা সাবধান হও! তোমরা প্রত্যেকেই একজন দায়িত্বশীল। আর (কিয়ামতের দিন) তোমাদের প্রত্যেকের দায়িত্ব সম্পর্কে জিজ্ঞাসাবাদ করা হবে। সুতরাং জনগণের শাসকও একজন দায়িত্বশীল ব্যক্তি। আর তার দায়িত্ব সম্পর্কে (কিয়ামতের দিন) জিজ্ঞেস করা হবে। আর পুরুষ ও তার পরিবারের একজন দায়িত্বশীল। (কিয়ামতের দিন) তার এ দায়িত্ব সম্পর্কে জিজ্ঞাসাবাদ করা হবে। স্ত্রীও তার স্বামীর পরিবার ও সন্তানের ওপর দায়িত্বশীলা। (কিয়ামতের দিন) তার এ দায়িত্ব সম্পর্কে জিজ্ঞেস করা হবে। এমনকি কোন ব্যক্তির গোলাম বা দাসও তার প্রভুর সম্পদের ব্যাপারে একজন দায়িত্বশীল। আর (কিয়ামতের দিন) তার এ দায়িত্ব সম্পর্কে জিজ্ঞেস করা হবে। অতএব সাবধান! তোমরা প্রত্যেকেই একজন দায়িত্বশীল। আর তোমাদের এ দায়িত্ব সম্পর্কে (কিয়ামতের দিন) জিজ্ঞাসাবাদ করা হবে। (বুখারী, হাদীস নং ৭১৩৮)

(খ) তারীফ আবূ তামীমা থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি (একদা) সাফওয়ান, জুন্দুব ও তাঁর সঙ্গীগণের নিকট উপস্থিত ছিলাম। তখন তিনি (জুন্দুব) তাঁর সঙ্গীগণকে উপদেশ দিচ্ছিলেন। তাঁরা (সঙ্গীগণ) জিজ্ঞেস করলেন, আপনি কি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে কিছু শুনতে পেয়েছেন? তখন জুন্দুব বললেন, আমি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)- কে বলতে শুনেছি, যে ব্যক্তি সুনামের জন্য সৎ কাজ করে, আল্লাহ্ তার উদ্দেশ্য কিয়ামতের দিন প্রকাশ করে দিবেন। আর যে ব্যক্তি মানুষকে বিপদে

ফেলবে, কিয়ামতের দিন আল্লাহ্ও তাকে বিপদে পতিত করবেন। তাঁরা বললেন, আমাদেরকে (আরও) উপদেশ প্রদান করুন। অতঃপর তিনি বললেন, (কবরে) সর্বপ্রথম মানুষের পেট গলে ও পচে যাবে। অতএব যে ব্যক্তি পাক-পবিত্র বস্তুই আহার করতে সক্ষম সে যেন তাই আহার করে। আর যে ব্যক্তি কামনা করে যে, তার ও বেহেশ্তের মাঝে তার দ্বারা অন্যায়ভাবে প্রবাহিত অঞ্জলী পরিমাণ রক্তও যেন প্রতিবন্ধকতা সৃষ্টি না করে, সে যেন তাই করে বা তদনুরূপ কাজ করে। (বুখারী, হাদীস নং ৭১৫২)

(গ) আনাস ইবনে মালেক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেনঃ একদা আমি ও রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) মসজিদ থেকে বের হচ্ছিলাম। তখন এক ব্যক্তি মসজিদের আঙ্গিনার নিকটে আমাদের সাথে সাক্ষাত করলো ও বললো, হে আল্লাহ্র রাসূল! (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) কিয়ামত কখন সংঘটিত হবে? তখন নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, তুমি কিয়ামতের জন্য কি পাথেয় সংগ্রহ করেছ? লোকটি তখন যেন একটু অপ্রস্তুত হয়ে গেল এবং পরে বলল, হে আল্লাহ্র নবী! (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আমি তজ্জন্য বেশি পরিমাণ রোযা, নামায ও সাদকা করতে পারিনি। তবে আমি আল্লাহ্কে ও তাঁর রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে অত্যধিক মুহব্বত করি। অতঃপর রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ যাকে তুমি ভালবাস (কিয়ামতের দিন) তুমি তারই সঙ্গী বা সাথী হবে। (বুখারী, হাদীস নং ৭১৫৩)

(ঘ) আবূ যার (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি একদা নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট গেলাম। তিনি বললেনঃ ঐ সত্তার কসম যাঁর হাতে আমার প্রাণ, অথবা (বলেছেন) ঐ সত্তার কসম যিনি ছাড়া অন্য কোন মা'বূদ নেই, অথবা অনুরূপ কোন হলফ করে (তিনি বললেন) যারই উট কিংবা গরু অথবা বকরী রয়েছে- যদি সে তার হক (যাকাত) আদায় না করে, তবে কিয়ামতের দিন ঐ জানোয়ারগুলোকে পূর্বের চাইতেও অধিক বড় ও মোটাতাজা অবস্থায় ঐ ব্যক্তির নিকট উপস্থিত করা হবে এবং ঐ জানোয়ার স্বীয় খুর দ্বারা উক্ত ব্যক্তিকে দলন করতে থাকবে এবং শিং দ্বারা তাকে গুঁতোতে থাকবে। যখন শেষ জানোয়ারটি তাকে অতিক্রম করে যাবে তখন প্রথমটি আবার তার কাছে ফিরে আসবে (এবং পালাক্রমে তাকে দলন করতে শুরু করবে)। এমনিভাবে চূড়ান্ত ফয়সালার দিন পর্যন্ত চলতে থাকবে। (বুখারী, হাদীস নং ১৪৬০)

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ يٰشُعَيْبُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا كٰرِهِيْنَ ﴿٨٨﴾

৮৮. আর তাঁর সম্প্রদায়ের দাম্ভিক ও অহংকারী প্রধানরা বলেছিলঃ হে শো'আইব (عليه السلام)! আমরা অবশ্যই তোমাকে ও তোমার সঙ্গী-সাথী মুমিনদেরকে আমাদের জনপদ হতে বহিস্কার করবো অথবা তোমরা আমাদের দলে (দ্বীনে) ফিরে আসবে, তখন তিনি বললেনঃ আমরা যদি তাতে রাযী না হই (তবুও কি জোর করে ফিরিয়ে দিবে)?

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا فِيْ مِلَّتِكُمْ بَعْدَ اِذْ نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ؕ وَمَا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّعُوْدَ فِيْهَآ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّنَا ؕ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ؕ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ؕ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ ﴿٨٩﴾

৮৯. তোমাদের দল বা দ্বীন হতে আল্লাহ আমাদেরকে মুক্তি দেয়ার পর আমরা যদি তাতে আবার ফিরে যাই তবে নিশ্চিতভাবে আল্লাহর প্রতি মিথ্যা আরোপকারী হবো, আমাদের প্রতিপালক আল্লাহ না চাইলে ওতে আবার ফিরে যাওয়া আমাদের পক্ষে কোনক্রমেই সম্ভব নয়, প্রতিটি বস্তুই আমাদের প্রতিপালকের জ্ঞানায়ত্তে, আমরা আল্লাহর উপরই নির্ভর করছি, হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদের ও আমাদের সম্প্রদায়ের মধ্যে সঠিকভাবে ফায়সালা করে দিন, আপনিই তো সর্বোত্তম ফায়সালাকারী।

وَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٩٠﴾

৯০. আর তাদের সম্প্রদায়ের কাফির লোকদের প্রধানগণ (সর্বসাধারণকে) বলেছিলঃ তোমরা যদি শোআ'ইব (عليه السلام)-কে অনুসরণ করে চল, তবে তোমরা অবশ্যই ক্ষতিগ্রস্ত হবে।

فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩١﴾

৯১. অতঃপর ভূ-কম্পন তাদেরকে গ্রাস করে ফেললো, ফলে তারা নিজেদের গৃহেই (মৃত্যু অবস্থায়) উপুড় হয়ে পড়ে রইলো।

الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۚ اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَانُوْا هُمُ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٢﴾

৯২. (অবস্থা দেখে মনে হলো,) যারা শোআ'ইব (عليه السلام)-কে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছিল, তারা যেন কখনো সেখানে বসবাস করেনি, শো'আইব (عليه السلام)-কে মিথ্যা প্রতিপন্নকারী লোকেরাই শেষ পর্যন্ত ক্ষতিগ্রস্ত হয়েছিল।

فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۚ فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٩٣﴾

৯৩. তিনি (শো'আইব عليه السلام) তাদের নিকট হতে এ কথা বলে বেরিয়ে আসলেন– হে আমার জাতি! আমি আমার প্রভুর পয়গাম তোমাদের নিকট পৌঁছিয়েছি, আর আমি তোমাদেরকে উপদেশ প্রদান করেছি, সুতরাং আমি কাফির সম্প্রদায়ের জন্যে কি করে আক্ষেপ করতে পারি!

وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّآ اَخَذْنَآ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ ﴿٩٤﴾

৯৪. আমি কোন জনপদে নবী-রাসুল পাঠালে, ওর অধিবাসীদেরকে দুঃখ-কষ্ট ও বিপদে আক্রান্ত করে থাকি, উদ্দেশ্য হলোঃ তারা যেন নম্র ও বিনয়ী হয়।

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩٥﴾

৯৫. অতঃপর আমি তাদের দুরবস্থাকে সুখ-স্বাচ্ছন্দ্য দ্বারা পরিবর্তন করে দিয়েছি, অবশেষে তারা খুব প্রাচুর্যের অধিকারী হয়, আর তারা (অকৃতজ্ঞ স্বরে) বলেঃ আমাদের পূর্ব পুরুষরাও এইভাবে সুখ-দুঃখ ভোগ করেছে (এটাই প্রাকৃতিক নিয়ম), অতঃপর অকস্মাৎ আমি তাদেরকে পাকড়াও করলাম কিন্তু তারা কিছুই বুঝতে পারলো না।

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا

৯৬. জনপদের অধিবাসীগণ যদি ঈমান আনতো এবং তাকওয়া

عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٦﴾

অবলম্বন করতো, তবে আমি তাদের জন্যে আকাশ ও পৃথিবীর বরকতের দ্বার খুলে দিতাম; কিন্তু তারা নবী-রাসূলদেরকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে, ফলে তাদের কৃতকর্মের জন্যে আমি তাদেরকে পাকড়াও করলাম।

اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿٩٧﴾

৯৭. জনপদের লোকেরা কি এটা থেকে নির্ভয় হয়ে মনে করছে যে, রাত্রিকালে ঘুমন্ত থাকা অবস্থায় আমার শাস্তি তাদেরকে গ্রাস করে ফেলবে না?

اَوَ اَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩٨﴾

৯৮. অথবা জনপদের লোকেরা কি এই ভয় রাখে না যে, আমার শাস্তি তাদের উপর তখন আপতিত হবে যখন তারা পূর্বাহ্নে আমোদ-প্রমোদে রত থাকবে?

اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩٩﴾

৯৯. তারা কি আল্লাহর পাকড়াও ও শাস্তি থেকে নিরাপদ হয়ে গেছে? ক্ষতিগ্রস্ত সম্প্রদায় ছাড়া আল্লাহর শাস্তি থেকে কেউই নিঃশঙ্ক বোধ করতে (নিরাপদ হতে) পারে না।

اَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ اَهْلِهَآ اَنْ لَّوْ نَشَآءُ اَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾

১০০. কোন এলাকার অধিবাসী ধ্বংস হওয়ার পর সেই এলাকার যারা উত্তরাধিকারী হয়, তাদের কাছে কি এই পথ নির্দেশ দেয়া হয়নি যে, আমি ইচ্ছা করলে তাদের পাপের কারণে তাদেরকে শাস্তি দিতে পারি? আর তাদের অন্তঃকরণের উপর মোহর মেরে দিতে পারি অবশেষে তারা কিছুই শুনতে পাবে না?

تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآئِهَا ۚ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانُوْا

১০১. ঐ জনপদগুলোর কিছু বৃত্তান্ত আমি তোমার নিকট বর্ণনা করছি, তাদের কাছে রাসূলগণ সুস্পষ্ট দলীল

لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا مِنْ قَبْلُ ۚ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠١﴾

প্রমাণসহ এসেছিল; কিন্তু পূর্বে তারা যা প্রত্যাখ্যান করেছিল তার প্রতি তারা ঈমান আনবার ছিল না, এমনিভাবেই আল্লাহ অবিশ্বাসীদের অন্তঃকরণের উপর মোহর মেরে দেন।

وَمَا وَجَدْنَا لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ ۚ وَاِنْ وَّجَدْنَآ اَكْثَرَهُمْ لَفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٢﴾

১০২. আমি তাদের অধিকাংশকে অঙ্গীকার ও প্রতিশ্রুতি রক্ষাকারীরূপে পাইনি, তবে তাদের অধিকাংশকে আমি ফাসেক (সত্যত্যাগী) পেয়েছি।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٠٣﴾

১০৩. অতঃপর আমি মূসা (عليه السلام)-কে তাদের পর আমার আয়াত ও নিদর্শনসহ ফিরাউন ও তার পরিষদবর্গের নিকট পাঠালাম; কিন্তু তারা যুলুম করলো (অর্থাৎ আমার নিদর্শন অস্বীকার করলো), সুতরাং এই বিপর্যয় সৃষ্টিকারীদের পরিণাম কি হয়েছিল তা তুমি লক্ষ্য কর।

وَقَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ اِنِّىْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾

১০৪. মূসা (عليه السلام) বললেনঃ হে ফিরাউন! আমি বিশ্ব-প্রতিপালকের পক্ষ হতে একজন রাসূল।

حَقِيْقٌ عَلٰٓى اَنْ لَّآ اَقُوْلَ عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ۚ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَرْسِلْ مَعِىَ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٠٥﴾

১০৫. আমার জন্য এটাই উপযুক্ত যে, আমি আল্লাহ সম্বন্ধে সত্য কথা ছাড়া আর কিছু বলবো না (অর্থাৎ আল্লাহ সম্পর্কে সত্য কথা বলতে আমি দৃঢ় প্রতিজ্ঞ) আমি তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে তোমাদের কাছে সুস্পষ্ট দলীল ও প্রমাণ নিয়ে এসেছি, সুতরাং বানী ইসরাঈলকে আমার সাথে পাঠিয়ে দাও।

قَالَ اِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِاٰيَةٍ فَاْتِ بِهَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٠٦﴾

১০৬. তখন ফিরাউন বললোঃ তুমি যদি বাস্তবিকই (আল্লাহর পক্ষ হতে) স্পষ্ট দলীল ও নিদর্শন এনে থাক

তবে তুমি সত্যবাদী হলে তা উপস্থাপিত কর।

فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٠٧﴾

১০৭. তখন মূসা (عليه السلام) তাঁর লাঠি নিক্ষেপ করলেন এবং সহসাই ওটা এক প্রকাশ্য (জীবিত) সাপে পরিণত হলো।

وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِىَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿١٠٨﴾

১০৮. আর তিনি তার হাত বের করলেন, তৎক্ষণাৎই ওটা দর্শকদের দৃষ্টিতে শুভ্র ও উজ্জ্বল আলোকময় প্রতিভাত হলো।

قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ﴿١٠٩﴾

১০৯. এ দেখে ফিরাউন সম্প্রদায়ের প্রধানরা বললোঃ নিঃসন্দেহে এ ব্যক্তি বড় সুদক্ষ যাদুকর।

يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ ۚ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿١١٠﴾

১১০. তিনি তোমাদেরকে তোমাদের জমি-জায়গা থেকে বের করে দিতে চান, এখন তোমাদের পরামর্শ কি?

قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَاَرْسِلْ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿١١١﴾

১১১. তারা বললোঃ তাকে এবং তার ভাই (হারূন)-কে কিছুদিনের অবকাশ দাও, আর শহরে শহরে সংগ্রাহক পাঠিয়ে দাও।

يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿١١٢﴾

১১২. যেন তারা তোমার (ফিরাউন) নিকট প্রত্যেক সুদক্ষ যাদুকরকে উপস্থিত করে।

وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْٓا اِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٣﴾

১১৩. যাদুকররা ফিরাউনের কাছে এসে বললোঃ আমরা যদি বিজয় লাভ করতে পারি তবে আমাদের জন্যে পুরস্কার থাকবে তো?

قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿١١٤﴾

১১৪. সে উত্তরে বললোঃ হ্যাঁ, অবশ্যই তোমরাই হবে আমার দরবারের নিকটতম ব্যক্তি।

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِىَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ

১১৫. অতঃপর যাদুকরগণ বললোঃ হে মূসা (عليه السلام)! (প্রথমে) তুমিই কি

نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ ﴿١١٥﴾

তোমার লাঠি নিক্ষেপ করবে, না আমরাই (প্রথমে) নিক্ষেপ করবো?

قَالَ اَلْقُوْا ۚ فَلَمَّآ اَلْقَوْا سَحَرُوْٓا اَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ وَجَآءُوْ بِسِحْرٍ عَظِيْمٍ ﴿١١٦﴾

১১৬. তিনি (মূসা (عليه السلام)) উত্তরে বললেনঃ প্রথমতঃ তোমরাই নিক্ষেপ কর, সুতরাং যখন তারা নিক্ষেপ করলো তখন লোকের চোখে যাদু করলো এবং তাদেরকে ভয় দেখালো ও আতংকিত করলো, তারা খুব বড় রকমের যাদু দেখালো।

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿١١٧﴾

১১৭. তখন আমি মূসা-এর নিকট এই প্রত্যাদেশ পাঠালামঃ তুমি তোমার লাঠিখানা নিক্ষেপ কর, মূসা (عليه السلام) তা নিক্ষেপ করলে ওটা একটা বিরাট সাপ হয়ে সহসা ওদের অলীক (মিথ্যা) সৃষ্টিগুলোকে গিলে ফেলল।

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١١٨﴾

১১৮. পরিশেষে যা হক ছিল তা সত্য প্রমাণিত হলো, আর যা কিছু বানানো হয়েছিল তা বাতিল প্রতিপন্ন হলো।

فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا صٰغِرِيْنَ ﴿١١٩﴾

১১৯. আর ফিরাউন ও তার দলবলের লোকেরা মুকাবিলার ময়দানে পরাজিত হলো এবং লাঞ্ছিত ও অপমানিত হয়ে গেল।

وَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿١٢٠﴾

১২০. যাদুকরগণ তখন সিজদায় পড়ে গেল।

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢١﴾

১২১. তারা পরিস্কার ভাষায় বললোঃ আমরা বিশ্ব প্রতিপালকের প্রতি অকপটে ঈমান আনলাম।

رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٢﴾

১২২. (জিজ্ঞেস করা হলো– কোন বিশ্ব প্রতিপালকের প্রতি? তারা উত্তরে বললো) মূসা ও হারূনের প্রতিপালকের প্রতি।

قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِى الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٢٣﴾

১২৩. ফিরাউন বললো অনুমতি দেয়ার আগেই তোমরা তার উপর ঈমান আনলে? এটা অবশ্যই একটা চক্রান্ত আর তোমরা এ চক্রান্ত পাকিয়েছ শহরবাসীদের সেখান থেকে তাড়িয়ে দেয়ার জন্যে? সত্বরই তোমরা এর পরিণাম জানতে পারবে।

لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٢٤﴾

১২৪. অবশ্যই আমি তোমাদের হাত ও পা উল্টোভাবে কেটে ফেলবে, তারপর তোমাদের সবাইকে আমি শূলে চড়াবো।

قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٢٥﴾

১২৫. তারা (যাদুকররা) বললোঃ নিশ্চয়ই আমরা আমাদের প্রতি-পালকের নিকটে ফিরে যাবো।

وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ۗ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿١٢٦﴾

১২৬. তুমি আমাদের সাথে শত্রুতা করছো এই কারণে যে, আমাদের কাছে যখন আমাদের প্রতিপালকের নিদর্শনাবলী এসেছে তখন আমরা ওগুলোর উপর ঈমান এনেছি, হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে ধৈর্য দান করুন এবং মুসলমানরূপে আমাদের মৃত্যু দান করুন!

وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ۗ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ وَنَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ﴿١٢٧﴾

১২৭. ফিরাউন সম্প্রদায়ের সরদারগণ তাকে বললোঃ তুমি কি মূসা (عليه السلام) ও তার সম্প্রদায়কে রাজ্যে অশান্তি ও বিপর্যয় সৃষ্টির জন্যে মুক্ত ছেড়ে দিবে এবং তোমাকে ও তোমার দেবতাগণকে বর্জন করে চলার সুযোগ দিবে? সে উত্তরে বললোঃ আমি তাদের ছেলে সন্তান-দের হত্যা করবো এবং তাদের নারীদেরকে জীবিত রাখবো, নিশ্চয় আমরা পরাক্রমশালী।

قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۗ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٨﴾

১২৮. মূসা (عليه السلام) তার সম্প্রদায়কে বললেনঃ তোমরা আল্লাহর নিকট সাহায্য প্রার্থনা কর এবং ধৈর্য অবলম্বন কর, এই পৃথিবীর সার্বভৌম মালিক আল্লাহ, তিনি তাঁর বান্দাদের মধ্যে যাকে ইচ্ছা ওর উত্তরাধিকারী করে থাকেন, শুভ পরিণাম ও শেষ সাফল্য তো মুত্তাকী বান্দাদেরই জন্যে।

قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ۗ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٩﴾

১২৯. তারা (মূসা عليه السلام-এর কওম) তাঁকে বললেনঃ আপনি আমাদের নিকট (নবীরূপে) আগমনের পূর্বেও আমরা (ফিরাউন কর্তৃক) নির্যাতিত হয়েছি এবং আপনার আগমনের পরও নির্যাতিত হচ্ছি, তখন তিনি (মূসা عليه السلام) বললেনঃ শীঘ্রই তোমাদের প্রতিপালক তোমাদের শত্রুকে ধ্বংস করবেন এবং তোমাদেরকে রাজ্যে তাদের স্থলাভিষিক্ত করবেন, অতঃপর তোমরা কিরূপ কাজ কর তা তিনি দেখবেন।

وَلَقَدْ اَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣٠﴾

১৩০. আমি ফিরাউনের অনুসারী-দেরকে কয়েক বছর পর্যন্ত দুর্ভিক্ষ ও ফসলহানির মধ্যে বিপন্ন রেখেছিলাম, উদ্দেশ্য ছিল, তারা হয়তো উপদেশ গ্রহণ করে ঈমান আনবে।

فَاِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ۗ اَلَآ اِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ

১৩১. যখন তাদের সুখ-শান্তি ও কল্যাণ হতো তখন তারা বলতোঃ এটা তো আমাদের জন্য, আর যদি তাদের দুঃখ, দৈন্য ও বিপদ-আপদ হতো তখন তারা ওটাকে মূসা (عليه السلام) ও তার সঙ্গী-সাথীদের

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣١﴾

মন্দভাগ্যের কারণরূপে নিরূপণ করতো, তোমরা জেনে রেখো যে, তাদের অকল্যাণ আল্লাহরই নিয়ন্ত্রণাধীন; কিন্তু তাদের অধিকাংশ সে সম্পর্কে কোন জ্ঞান রাখে না।

وَقَالُوْا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾

১৩২. তারা বললোঃ আমাদেরকে যাদু করবার জন্যে যে কোন নিদর্শনই পেশ কর না কেন আমরা তোমার প্রতি ঈমান আনবো না।

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ ۫ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿١٣٣﴾

১৩৩. শেষ পর্যন্ত আমি তাদের উপর প্লাবন, পঙ্গপাল, উকুন, ব্যাঙ ও রক্তধারার শাস্তি পাঠিয়ে কষ্ট দেই, এগুলো ছিল আমার সুস্পষ্ট নিদর্শন; কিন্তু তারা শেষ পর্যন্ত দাম্ভিকতা ও অহংকারেই মেতে রইলো, তারা ছিল একটি অপরাধী জাতি।

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٣٤﴾

১৩৪. তাদের উপর কোন বালা-মুসিবত ও বিপদ-আপদ আপতিত হলে তারা বলতোঃ হে মূসা (عليه السلام) আমাদের এই বিপদ দূর হওয়ার নিমিত্তে তোমার প্রতিপালকের নিকট দু'আ কর, যার প্রতিশ্রুতি তিনি তোমার সাথে করেছেন, যদি আমাদের বিপদ দূর করে দিতে পার তবে আমরা তোমার প্রতি ঈমান আনবো এবং তোমার সাথে বানী ইসরাঈলগণকে পাঠিয়ে দেবো।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ اِلٰٓى اَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ﴿١٣٥﴾

১৩৫. অতঃপর যখনই আমি তাদের হতে সেই আযাবকে এক নির্দিষ্ট সময় পর্যন্ত অপসারিত করতাম যাতে তারা উপনীত হতো, তখনই আবার তারা প্রতিশ্রুতি ভঙ্গ করতো।

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٣٦﴾

১৩৬. সুতরাং আমি (এই প্রতিশ্রুতি ভঙ্গের জন্যে) তাদের হতে প্রতিশোধ নিলাম এবং তাদেরকে অতল সমুদ্রে ডুবিয়ে মারলাম, কেননা তারা আমার নিদর্শনসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে, আর এই ব্যাপারে তারা ছিল সম্পূর্ণ গাফিল বা উদাসীন।

وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ بِمَا صَبَرُوْا ؕ وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ ﴿١٣٧﴾

১৩৭. যে জাতিকে দুর্বল ভাবা হতো আমি তাদেরকে আমার কল্যাণপ্রাপ্ত রাজ্যের পূর্ব ও পশ্চিমের উত্তরাধিকারী বানাই, আর বানী ইসরাঈল জাতি সম্পর্কে তোমার প্রতিপালকের শুভ ও কল্যাণময় বাণী (প্রতিশ্রুতি) পূর্ণ হলো, কেননা তারা ধৈর্যধারণ করেছিল, আর ফিরাউন ও তার সম্প্রদায়ের নির্মিত কীর্তিকলাপ ও উচ্চ প্রাসাদসমূহকে আমি ধ্বংস করেছি।

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ عَلٰٓى اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ ؕ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿١٣٨﴾

১৩৮. আমি বানী ইসরাঈলকে সমুদ্র পার করিয়ে দিলাম, অতঃপর তারা প্রতিমা পূজায় রত এক জাতির সংস্পর্শে আসলো, তখন তারা বললোঃ হে মূসা (عليه السلام)! তাদের যেরূপ মা'বূদ রয়েছে, আমাদের জন্যেও ঐরূপ মা'বূদ বানিয়ে দিন, তখন মূসা বললেনঃ তোমরা একটি গন্ডমুর্খ জাতি।

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيْهِ وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٩﴾

১৩৯. এসব লোক যে কাজে লিপ্ত রয়েছে, তা তো ধ্বংস করা হবে, আর তারা যা করছে তা অমূলক ও বাতিল বিষয়।

قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى

১৪০. তিনি (মূসা عليه السلام) আরো বললেনঃ আমি কি আল্লাহকে ছেড়ে

الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٤٠﴾

তোমাদের জন্যে অন্য কোন মা'বূদের সন্ধান করবো? অথচ তিনিই হলেন একমাত্র আল্লাহ যিনি তোমাদেরকে বিশ্বজগতে শ্রেষ্ঠত্ব দান করেছেন!

وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿١٤١﴾ ع

১৪১. স্মরণ কর সেই সময়টির কথা, যখন আমি তোমাদেরকে ফিরাউনের অনুসারীদের (দাসত্ব) হতে মুক্তি দিয়েছি, তারা তোমাদেরকে অতিশয় মর্মান্তিক কষ্টদায়ক ও ন্যাক্কারজনক শাস্তি দিতো, তোমাদের পুত্রদেরকে হত্যা করতো এবং নারীদেরকে জীবিত রাখতো, এটা ছিল তোমাদের জন্যে তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ থেকে এক বিরাট পরীক্ষা।

وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖٓ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ فِيْ قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤٢﴾

১৪২. আর আমি মূসা (عليه السلام)-কে ওয়াদা দিয়েছিলাম ত্রিশ রাত্রের (সীনাই পর্বতের উপর অবস্থান করার) জন্যে, পরে আরো দশদিন দ্বারা ওটা পূর্ণ করেছিলাম, ফলে তার প্রতিপালকের নির্ধারিত সময়টি চল্লিশ দিন দ্বারা পূর্ণতা লাভ করে, (রওয়ানা হবার সময়) মূসা (عليه السلام) তার ভাই হারূনকে (عليه السلام) বলেছিলেনঃ আমার অনুপস্থিতিতে আমার সম্প্রদায়ের মধ্যে তুমি আমার প্রতিনিধিত্ব করবে এবং তাদেরকে সংশোধন করার কাজ করতে থাকবে, (সাবধান!) বিপর্যয় ও ফাসাদ সৃষ্টিকারীদের অনুসরণ করবে না।

وَلَمَّا جَآءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ؕ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ

১৪৩. এবং মূসা (عليه السلام) যখন নির্ধারিত সময়ে উপস্থিত হলেন এবং তাঁর প্রতিপালক তাঁর সাথে কথা

انْظُرْ إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ فَسَوْفَ تَرَانِي ۚ فَلَمَّا تَجَلَّىٰ رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا وَخَرَّ مُوسَىٰ صَعِقًا ۚ فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ سُبْحَانَكَ تُبْتُ إِلَيْكَ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٤٣﴾

বললেন, তখন তিনি নিবেদন করলেন, হে আমার প্রতিপালক! আমাকে অনুমতি দিন, আমি আপনাকে দেখবো, তখন আল্লাহ বললেনঃ তুমি আমাকে আদৌ দেখতে পারবে না, তবে তুমি ঐ পাহাড়ের দিকে তাকাও; যদি ঐ পাহাড় স্বস্থানে স্থির থাকে তবে তুমি আমাকে দেখতে পারবে, অতঃপর তার প্রতিপালক যখন পাহাড়ের উপর আলোক সম্পাৎ করলেন, তখন তা পাহাড়কে চূর্ণ-বিচূর্ণ করে দিলো, আর মূসা (عليه السلام) সংজ্ঞাহীন হয়ে পড়ে গেলেন, অতঃপর যখন তার চেতনা ফিরে আসলো, তখন তিনি বললেনঃ আপনি মহিমাময়, আপনি পবিত্র সত্তা, আমি তাওবা করছি, আর আমিই মু'মিনদের সর্বপ্রথম।

قَالَ يَا مُوسَىٰ إِنِّي اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسَالَاتِي وَبِكَلَامِي ۖ فَخُذْ مَا آتَيْتُكَ وَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿١٤٤﴾

১৪৪. তিনি (আল্লাহ) বললেনঃ হে মূসা (عليه السلام)! আমি তোমাকেই আমার রিসালাত ও আমার সাথে বাক্যালাপের জন্য লোকদের মধ্য হতে মনোনীত করেছি, অতএব, এখন আমি তোমাকে যা কিছু দেই তা তুমি গ্রহণ কর এবং কৃতজ্ঞতা প্রকাশকারীদের অন্তর্ভুক্ত হও।

১। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) এ আয়াতটি পাঠ করলেনঃ অর্থঃ "অতঃপর তার প্রতিপালক যখন পাহাড়ের উপর আলোক স্মপাৎ করলেন। তখন তা পাহাড়কে চূর্ণ-বিচূর্ণ করে দিলো। আর মূসা (আলাইহিস্ সালাম) সংজ্ঞাহীন হয়ে পড়ে গেলেন।" (সূরা আল-আ'রাফঃ ১৪৩)

হাম্মাদ বলেনঃ এভাবে সুলাইমান তার হাতের কনিষ্ঠাঙ্গুলির মাথায় বৃদ্ধাঙ্গুলিটি রেখে বললেনঃ এতটুকু (সামান্য) পরিমাণ, জ্যোতির বিকিরণ যখন আল্লাহ্ ঘটালেন, তাতেই পাহাড় বিধ্বস্ত হয়ে গেল এবং মূসা (আলাইহিস্ সালাম) অজ্ঞান হয়ে পড়ে গেলেন। (তিরমিযী, হাদীস নং ৩০৭৪)

وَكَتَبْنَا لَهٗ فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَىْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ؕ سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١٤٥﴾

১৪৫. অতঃএব আমি মূসা (আলাইহিস সালাম)-কে ফলকের উপর প্রত্যেক প্রকারের উপদেশ এবং সর্ববিষয়ের সুস্পষ্ট ব্যাখ্যা লিখে দিয়েছি, (অতঃপর তাকে বললাম) তুমি ওকে দৃঢ় ও শক্তভাবে গ্রহণ কর এবং তোমার সম্প্রদায়কে-এর সুন্দর সুন্দর বিধানগুলো মেনে চলতে আদেশ কর, আমি ফাসেক বা সত্যত্যাগীদের আবাসস্থল শীঘ্রই তোমাদেরকে প্রদর্শন করবো।

سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِىَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَىِّ يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٤٦﴾

১৪৬. এই ধরণীর বুকে যারা অন্যায়ভাবে গর্ব অহংকার করে বেড়ায় আমি তাদেরকে আমার নিদর্শনসমূহ হতে ফিরিয়ে রাখবো, প্রত্যেকটি নিদর্শন দেখলেও তারা তাতে ঈমান আনবে না, তারা যদি হেদায়েতের পথও দেখতে পায় তবুও সেই পথকে তারা নিজেদের পথরূপে গ্রহণ করবে না; কিন্তু তারা ভ্রান্ত ও গোমরাহীর পথ দেখলে তাকেই তারা নিজেদের জীবনপথ রূপে গ্রহণ করবে, এর কারণ হলো, তারা আমার নিদর্শনসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে এবং তারা তা থেকে সম্পূর্ণরূপে অমনোযোগী ছিল।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٧﴾

১৪৭. যারা আমার নিদর্শনসমূহ ও পরকালের সাক্ষাতকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে তাদের সমুদয় আমল বিনষ্ট হয়ে যায়, তারা যা করে থাকে তদানুযায়ী তাদেরকে প্রতিফল দেয়া হবে।

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ؕ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤٨﴾

১৪৮. মূসা (عليه السلام)-এর সম্প্রদায় তাঁর চলে যাবার পর নিজেদের অলংকার দ্বারা একটি বাছুরের (মত) দেহ তৈরী করে তাকে মা'বূদরূপে গ্রহণ করলো, ওটা হতে (গরুর মত শব্দ) হাম্বারব বের হতো, তারা কি দেখেনি যে, ওটা তাদের সাথে কথা বলে না এবং তাদেরকে কোন পথও দেখিয়ে দেয় না? তবুও তারা ওটাকে মা'বূদরূপে গ্রহণ করলো; বস্তুতঃ তারা ছিল বড় অত্যাচারী।

وَلَمَّا سُقِطَ فِيْۤ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾

১৪৯. আর যখন তারা তাদের কৃতকর্মের উপর লজ্জিত হলো এবং দেখল যে, (প্রকৃতপক্ষ) তারা বিভ্রান্ত হয়েছে, তখন তারা বললোঃ আমাদের প্রভু যদি আমাদের প্রতি অনুগ্রহ না করেন এবং আমাদেরকে ক্ষমা না করেন তবে তো আমরা ক্ষতিগ্রস্ত হয়ে যাবো।

وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسٰۤى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِيْ مِنْۢ بَعْدِيْ ۚ اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ وَاَخَذَ بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗۤ اِلَيْهِ ؕ قَالَ ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِيْ وَكَادُوْا يَقْتُلُوْنَنِيْ ۖ فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْاَعْدَآءَ وَلَا تَجْعَلْنِيْ مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٥٠﴾

১৫০. আর যখন মূসা (عليه السلام) রাগান্বিত ও মনক্ষুণ্ন অবস্থায় নিজ জাতির নিকট ফিরে এসে বললেনঃ আমার চলে যাওয়ার পর তোমরা খুব খারাপভাবে আমার প্রতিনিধিত্ব করেছো, তোমরা তোমাদের প্রভুর নির্দেশের পূর্বেই কেন তাড়াহুড়া করতে গেলে? অতঃপর তিনি ফলকগুলো ফেলে দিলেন এবং স্বীয় ভাইয়ের মস্তক (চুল) ধরে নিজের দিকে টানতে লাগলেন, উনি (ভাই হারূন) বললেনঃ হে আমার মাতার পুত্র! এই লোকগুলো আমাকে দূর্বল করে ফেলেছিল এবং আমাকে মেরে ফেলতে উদ্যত হয়েছিল, অতএব তুমি আমাকে শত্রু সমক্ষে হাস্যস্পদ করো না, আর এই যালিম লোকদের মধ্যে আমাকে গণ্য করো না।

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِاَخِيْ وَاَدْخِلْنَا فِيْ رَحْمَتِكَ ۖ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١٥١﴾

১৫১. তখন মূসা (عليه السلام) বললেনঃ হে আমার প্রভু! আমাকে ও আমার ভাইকে ক্ষমা করুন! আর আমাদেরকে আপনার রহমতের মধ্যে প্রবেশ করান! আপনি সবচেয়ে বড় দয়াবান।

اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِيْنَ ﴿١٥٢﴾

১৫২. (উত্তরে বলা হলো) নিশ্চয়ই যারা গো-বৎসকে উপাস্যরূপে গ্রহণ করেছে, অবশ্যই তারা এই পার্থিব জীবনে তাদের প্রতিপালকের গযব ও লাঞ্ছনায় নিপতিত হবে, মিথ্যা রচনাকারীদেরকে আমি এভাবেই প্রতিফল দিয়ে থাকি।

وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْٓا اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٥٣﴾

১৫৩. আর যারা খারাপ কাজ করে, অতঃপর তাওবা করে ও ঈমান আনে তবে নিশ্চয়ই তোমার প্রতিপালক আল্লাহ এর পরেও ক্ষমাশীল ও দয়াময়।

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ اَخَذَ الْاَلْوَاحَ ۚ وَفِيْ نُسْخَتِهَا هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ﴿١٥٤﴾

১৫৪. মূসা (عليه السلام)-এর ক্রোধ যখন প্রশমিত হলো তখন তিনি ফলকগুলো তুলে নিলেন, যারা তাদের প্রতিপালকের ভয় করে তাদের জন্যে তাতে যা লিখিত ছিল তা ছিল হেদায়েত ও রহমত।

وَاخْتَارَ مُوْسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ فَلَمَّآ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِيَّايَ ۖ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَآءُ مِنَّا ۚ اِنْ هِيَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ۖ تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَآءُ وَتَهْدِيْ مَنْ تَشَآءُ ۖ اَنْتَ وَلِيُّنَا

১৫৫. মূসা (عليه السلام) তার সম্প্রদায় হতে সত্তরজন নেতৃস্থানীয় লোক আমার নির্ধারিত সময়ে সমবেত হওয়ার জন্যে নির্বাচন করে নিলেন, অতঃপর যখন এই লোকগুলো একটি কঠিন ভূকম্পনে আক্রান্ত হলো তখন মূসা (عليه السلام) বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আপনি ইচ্ছা করলে এর পূর্বেও ওদেরকে ও আমাকে নিপাত

فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ﴿١٥٥﴾

করতে পারতেন, আমাদের মধ্যকার কতক নির্বোধ লোকের অন্যায়ের কারণে কি আপনি আমাদেরকে নিপাত করবেন? সেই ঘটনা তো ছিল আপনার পরীক্ষা, যা দ্বারা আপনি যাকে ইচ্ছা বিভ্রান্ত করেন এবং যাকে ইচ্ছা সৎপথে পরিচালিত করেন, আপনিই তো আমাদের অভিভাবক, সুতরাং আপনি আমাদেরকে ক্ষমাকরুন এবং আমাদের প্রতি অনুগ্রহ করুন, ক্ষমাশীলদের মধ্যে আপনিই তো উত্তম ক্ষমাশীল।

وَاكْتُبْ لَنَا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ إِنَّا هُدْنَا إِلَيْكَ ۚ قَالَ عَذَابِيْٓ أُصِيْبُ بِهٖ مَنْ أَشَآءُ ۚ وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٥٦﴾

১৫৬. অতএব আমাদের জন্যে এই দুনিয়ায় ও পরকালে কল্যাণ লিখে দিন, আমরা আপনার নিকটই প্রত্যাবর্তন করেছি। তিনি (আল্লাহ) বললেনঃ যাকে ইচ্ছা আমি আমার শাস্তি দিয়ে থাকি, আর আমার করুণা ও দয়া প্রতিটি জিনিসকেই পরিব্যপ্ত করে রয়েছে, সুতরাং কল্যাণ আমি তাদের জন্যেই লিখবো যারা পাপাচার হতে বিরত থাকে, (তাক্বওয়া অবলম্বন করে) যাকাত দেয় এবং আমার নিদর্শনসমূহের প্রতি ঈমান আনয়ন করে।

اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَالْإِنْجِيْلِ ۡ يَأْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهٰهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ

১৫৭. (এই কল্যাণ তাদেরই প্রাপ্য) যারা সেই নিরক্ষর রাসূল নবী (ﷺ) -এর অনুসরণ করে চলে, যাঁর কথা তারা তাদের নিকট রক্ষিত তাওরাত ও ইঞ্জীল কিতাবে লিখিত পায় (সেই নিরক্ষর নবী ﷺ) মানুষকে সৎকাজের নির্দেশ দেয় ও অন্যায় কাজ করতে নিষেধ করে, আর তিনি তাদের জন্যে পবিত্র

عَلَيْهِمْ ۚ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٥٧﴾

বস্তুসমূহ বৈধ করে দেন এবং অপবিত্র ও খারাপ বস্তুকে তাদের প্রতি অবৈধ করেন, আর তাদের উপর চাপানো বোঝা ও বন্ধন হতে তাদেরকে মুক্ত করেন, সুতরাং তাঁর প্রতি যারা ঈমান রাখে, তাকে সম্মান করে ও সাহায্য সহানুভূতি করে, আর সেই আলোককে (কুরআনকে) অনুসরণ করে চলে যা তার সাথে অবতীর্ণ করা হয়েছে, তারাই (ইহকাল ও পরকালে) সাফল্য লাভ করবে।

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعَا ۨ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۠ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥٨﴾

১৫৮. (হে মুহাম্মদ ﷺ)! তুমি ঘোষণা করে দাওঃ হে মানবমন্ডলী! আমি তোমাদের সকলের জন্যে সেই আল্লাহর রাসূলরূপে প্রেরিত হয়েছি, যিনি আকাশমন্ডল ও ভূমন্ডলের সার্বভৌম একচ্ছত্র মালিক তিনি ছাড়া আর কোন (সত্য) মা'বূদ নেই, তিনি জীবিত করেন ও মৃত্যু ঘটান, সুতরাং আল্লাহর প্রতি এবং তাঁর সেই বার্তাবাহক নিরক্ষর নবী (ﷺ)-এর প্রতি ঈমান আনয়ন কর, যে আল্লাহতে ও তাঁর কালামে বিশ্বাস স্থাপন করে থাকে, তোমরা তারই অনুসরণ কর, আশা করা যায় তোমরা সরল সঠিক পথের সন্ধান পাবে।

وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٥٩﴾

১৫৯. মূসা (عليه السلام)-এর সম্প্রদায়ের মধ্যে এমন একদল লোক রয়েছে যারা সঠিক ও নির্ভুল পথ-প্রদর্শন করে এবং ন্যায় বিচার করে।

وَقَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ؕ وَاَوْحَيْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰۤى اِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗۤ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٠﴾

১৬০. আর আমি বানী ইসরাঈলকে বারটি বংশে বিভক্ত করে প্রত্যেককে আলাদা আলাদা গোত্রে স্থির করেছি, মূসা (عليه السلام)-এর সম্প্রদায়ের লোকেরা যখন তার কাছে পানি দাবী করলো, তখন আমি মূসা (عليه السلام)-এর কাছে প্রত্যাদেশ পাঠালামঃ তোমার লাঠি দ্বারা পাথরে আঘাত কর, ফলে সাথে সাথে ওটা হতে বারটি ঝরণা উৎসারিত হলো, আর প্রত্যেক গোত্র নিজ নিজ পান-স্থান জেনে নিলো, আর আমি তাদের উপর মেঘ দ্বারা ছায়া বিস্তার করলাম, আর তাদের জন্যে (আকাশ হতে) 'মান্না' ও 'সালওয়া' খাদ্যরূপী নিয়ামত অবতীর্ণ করলাম, সুতরাং (আমি বললাম) তোমাদেরকে যা কিছু পবিত্র জীবিকা দান করা হয়েছে তা আহার কর, (কিন্তু ওরা আমার শর্ত উপেক্ষা করে জুলুম করলো) তারা আমার উপর কোন জুলুম করেনি; বরং তারা তাদের নিজেদের উপরই জুলুম করেছে।

وَاِذْ قِيْلَ لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيْٓـٰٔتِكُمْ ؕ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٦١﴾

১৬১. (স্মরণ কর সেই সময়টির কথা) যখন তাদেরকে বলা হয়েছিল এই (ফিলিস্তিন ও তৎসংশ্লিষ্ট) জনপদে বসবাস কর এবং যথা ইচ্ছা আহার কর, আর তোমরা বলঃ (হে প্রভু!) ক্ষমা চাই, আর (শহরের) দ্বারদেশ দিয়ে নতশিরে প্রবেশ কর, (তাহলে) আমি তোমাদের অপরাধ ক্ষমা করবো এবং সৎকর্মশীল লোকদের জন্যে আমার দান বৃদ্ধি করবো।

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٢﴾

১৬২. কিন্তু তাদের মধ্যে যারা যালিম ও সীমালঙ্ঘনকারী ছিল, তারা সেই কথা পরিবর্তন করে ফেললো যা তাদেরকে (বলতে) বলা হয়েছিল, সুতরাং তাদের সেই সীমালঙ্ঘনের কারণে আমি আসমান হতে তাদের উপর শাস্তি প্রেরণ করলাম।

وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ اِذْ تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَاْتِيْهِمْ ۚ كَذٰلِكَ ۚ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿١٦٣﴾

১৬৩. আর তাদেরকে সেই জনপদের অবস্থাও জিজ্ঞেস কর যা সমুদ্রের তীরে অবস্থিত ছিল, (স্মরণ কর সেই ঘটনার কথা) যখন তারা শনিবারের ব্যাপারে সীমা লঙ্ঘন করেছিল, শনিবারের দিন মাছ পানিতে ভেসে তাদের নিকট আসতো; কিন্তু যেদিন তারা শনিবার উদ্‌যাপন করতো না (অর্থাৎ শনিবার ছাড়া বাকি অন্য দিন) সেদিন ওগুলো তাদের কাছে আসতো না, এইভাবে আমি তাদের নাফরমানীর কারণে তাদেরকে পরীক্ষা করছিলাম।

وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمًا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿١٦٤﴾

১৬৪. (স্মরণ কর সেই সময়টির কথা) যখন তাদের একদল লোক অপর দলের নিকট বলেছিলঃ ঐ জাতিকে তোমরা কেন উপদেশ দিচ্ছ যাদেরকে আল্লাহ ধ্বংস করবেন অথবা কঠিন শাস্তি দিবেন? তারা উত্তরে বললোঃ তোমাদের প্রতিপালকের নিকট দোষ মুক্তির জন্যে ও অক্ষমতা পেশ করার জন্যে, এবং এই জন্যে যে হয়তো বা এই লোকেরা তাঁর নাফরমানী হতে বেঁচে থাকবে।

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖٓ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۭ بَـِٕيْسٍۭ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿١٦٥﴾

১৬৫. সুতরাং তাদেরকে যে উপদেশ দেয়া হয়েছিল তা যখন তারা ভুলে গেল, তখন যারা অসৎ কাজ থেকে নিষেধ করতো তাদেরকে তো আমি বাঁচিয়ে নিলাম, আর যালিমদেরকে তাদের অসৎ কর্মপরায়ণতার কারণে কঠোর শাস্তি দ্বারা পাকড়াও করলাম।

فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ﴿١٦٦﴾

১৬৬. অতঃপর যখন তারা অবাধ্য হয়ে নিষিদ্ধ কাজগুলো করতে থাকলো যেগুলো থেকে তাদেরকে নিষেধ করা হয়েছিল তখন আমি বললামঃ তোমরা ঘৃণিত ও নিকৃষ্ট বানর হয়ে যাও।

وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٧﴾

১৬৭. (এবং ঐ সময়ের কথা স্মরণ কর) যখন তোমার প্রতিপালক ঘোষণা করলেন যে, তিনি তাদের (ইয়াহূদীদের) উপর কিয়ামত পর্যন্ত এমন সব লোককে (শক্তিশালী করে) প্রেরণ করতে থাকবেন, যারা তাদেরকে কঠিনতর শাস্তি দিতে থাকবে (এবং তারা সর্বত্র নির্যাতিত ও নিপীড়িত হবে), নিঃসন্দেহে তোমার প্রতিপালক শাস্তি দানে ক্ষীপ্রহস্ত, আর নিশ্চয়ই তিনি ক্ষমাশীল ও অনুগ্রহশীল।

وَقَطَّعْنٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۫ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿١٦٨﴾

১৬৮. (অতঃপর) আমি তাদেরকে খন্ড খন্ড করে বিভিন্ন দলে-উপদলে দুনিয়ায় বিস্তৃত করেছি, তাদের কতক লোক সদাচারী আর কিছু লোক ভিন্নতর (অনাচারী), আর আমি ভাল ও মন্দের মধ্যে নিপতিত করে তাদেরকে পরীক্ষা করে থাকি, যাতে তারা আমার পথে ফিরে আসে।

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٦٩﴾

১৬৯. অতঃপর তাদের পর এমন অযোগ্য লোক তাদের স্থলাভিষিক্ত হয় যে তারা কিতাবেরও উত্তরাধিকারী হয় তারা এই নিকৃষ্ট দুনিয়ার মাল-সম্পদ নিয়ে নেয় আর বলে আমাদেরকে ক্ষমা করা হবে; এমনকি যদি ওর অনুরূপ মাল-সম্পদ তাদের নিকট আসে তবে তারা ওগুলোও নিয়ে নেবে, তাদের নিকট হতে কি কিতাবের প্রতিশ্রুতি নেয়া হয়নি যে, তারা আল্লাহর নামে সত্য ছাড়া কিছুই বলবে না? আর কিতাবে যা রয়েছে তা তো তারা অধ্যায়নও করেছে, আর মুত্তাকী লোকদের জন্যে পরকালের ঘরই উত্তম, তোমরা কি এতটুকু কথাও অনুধাবন করতে পার না।

وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٧٠﴾

১৭০. যারা আল্লাহর কিতাবকে দৃঢ়ভাবে ধারণ করে (অর্থাৎ আনুগত্য করে) এবং নামায কায়েম করে (তারা অবশ্যই তার প্রতিদান পাবে), আমি তো সৎকর্মশীলদের কর্মফল নষ্ট করি না।

وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّظَنُّوْۤا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَاۤ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٧١﴾

১৭১. (ঐ সময়টিও স্মরণযোগ্য) যখন আমি পাহাড়কে উঠিয়ে নিয়ে ছায়ার ন্যায় তাদের (বানী ইসরাঈলের) মাথার উপর তুলে ধরি তখন তারা মনে করছিল যে, ওটা তাদের উপর পড়ে যাবে, (এমতাবস্থায় আমি বললাম) তোমাদেরকে যা (যে কিতাব) দিয়েছি তা দৃঢ়ভাবে শক্ত হাতে ধারণ কর এবং ওতে যা রয়েছে তা স্মরণ রাখো, আশা করা যায় যে, তোমরা মুত্তাকী হয়ে যাবে।

وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِيٓ آدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۖ قَالُوا بَلَىٰ ۛ شَهِدْنَا ۛ أَن تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَٰذَا غَافِلِينَ ﴿١٧٢﴾

১৭২. (হে নবী ﷺ)! যখন তোমার প্রতিপালক বানী আদমের পৃষ্ঠদেশ হতে তাদের সন্তানদেরকে বের করলেন এবং তাদেরকেই তাদের উপর সাক্ষী বানিয়ে জিজ্ঞেস করলেনঃ আমি কি তোমাদের প্রতিপালক নই? তারা সমস্বরে উত্তর দিলো হ্যাঁ! আমরা সাক্ষী থাকলাম; (এই স্বীকৃতি ও সাক্ষী বানানো এই জন্যে যে,) যাতে তোমরা কিয়াতমের দিন বলতে না পার- আমরা এ বিষয়ে সম্পূর্ণ অনবহিত ছিলাম।

أَوْ تَقُولُوٓا إِنَّمَآ أَشْرَكَ آبَآؤُنَا مِن قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنۢ بَعْدِهِمْ ۚ أَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُونَ ﴿١٧٣﴾

১৭৩. অথবা তোমরা যেন কিয়ামতের দিন এ কথা বলতে না পার, আমাদের পূর্ব পুরুষরাই তো আমাদের পূর্বে শির্ক করেছিল, আমরা ছিলাম তাদের পরবর্তী বংশধর, সুতরাং আপনি কি আমাদেরকে সেই ভ্রান্ত ও বাতিলদের কৃতকর্মের দরুন ধ্বংস করবেন।

وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٧٤﴾

১৭৪. এভাবেই আমি বাণী সমূহকে ও নিদর্শনাবলীকে বিশদভাবে বিবৃত করে থাকি, যাতে তারা (কুফরী হতে তাওহীদের দিকে) ফিরে আসে।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ الَّذِيٓ آتَيْنَاهُ آيَاتِنَا فَانسَلَخَ مِنْهَا فَأَتْبَعَهُ الشَّيْطَانُ فَكَانَ مِنَ الْغَاوِينَ ﴿١٧٥﴾

১৭৫. (হে মুহাম্মদ ﷺ)! তুমি এদেরকে সেই ব্যক্তির বৃত্তান্ত পড়ে শুনিয়ে দাও, যাকে আমি আমার নিদর্শন দান করেছিলাম; কিন্তু সে (এর দায়িত্ব পালন করা হতে) সম্পূর্ণ বেরিয়ে আসে, ফলে শয়তান তার পিছনে লেগে যায়, আর সে পথভ্রষ্টদের মধ্যে শামিল হয়ে যায়।

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿١٧٦﴾

১৭৬. আর আমি ইচ্ছা করলে তাকে এই আয়াতসমূহের সাহায্যে উন্নত করতাম; কিন্তু সে দুনিয়ার প্রতি অধিক ঝুঁকে পড়ে এবং স্বীয় কামনা-বাসনার অনুসরণ করতে থাকে, তার উদাহরণ একটি কুকুরের ন্যায়, ওকে যদি তুমি ধমক বা কিছু দ্বারা আঘাত করে তাড়িয়ে দাও, তবে জিহ্বা বের করে হাঁপায়, আবার যদি ওকে কিছু না করে ছেড়ে দাও তবুও জিহ্বা বের করে হাঁপাতে থাকে, যারা আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে, এই উদাহরণ হলো সেই সম্প্রদায়ের, তুমি কাহিনী বর্ণনা করে শুনাতে থাকো, হয়তো তারা এটা নিয়ে চিন্তা-ভাবনা করবে।

سَآءَ مَثَلًا ۨالْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿١٧٧﴾

১৭৭. এই উদাহরণটি সেই সম্প্রদায়ের জন্যে কতই না মন্দ উদাহরণ যারা আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যা মনে করে থাকে এবং তারা নিজেরাই নিজেদের উপর অত্যাচার করতে থাকে।

مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٧٨﴾

১৭৮. আল্লাহ যাকে হেদায়েত করেন সে-ই হেদায়েতপ্রাপ্ত হন, আর যাকে তিনি বিভ্রান্ত করেন সে ব্যর্থ ও ক্ষতিগ্রস্ত হয়।

وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ

১৭৯. আমি বহু জ্বিন ও মানুষকে জাহান্নামের জন্যে সৃষ্টি করেছি, তাদের হৃদয় রয়েছে; কিন্তু তারা তা দ্বারা উপলব্ধি করে না, তাদের চক্ষু রয়েছে; কিন্তু তারা তা দ্বারা দেখে না, তাদের কর্ণ রয়েছে; কিন্তু তা দ্বারা তারা শোনে না, তারাই হলো

اَضَلُّ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٧٩﴾

পশুর ন্যায়; বরং তা অপেক্ষাও অধিক বিভ্রান্ত, তারাই হলো গাফিল বা অমনোযোগী।

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۪ وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ؕ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٨٠﴾

১৮০. আর আল্লাহর অসংখ্য সুন্দর সুন্দর ও ভাল নাম রয়েছে[১] সুতরাং তোমরা তাঁকে সেসব নামেই ডাকবে, আর তাদেরকে বর্জন কর যারা তাঁর নাম বিকৃত করে, সত্বরই তাদেরকে তাদের কৃতকর্মের প্রতিফল দেয়া হবে।

وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٨١﴾

১৮১. আর আমি যাদেরকে সৃষ্টি করেছি তাদের মধ্যে এমন একটি দলও রয়েছে যারা সত্য (অর্থাৎ দ্বীন ইসলাম)-এর অনুরূপ হিদায়াত করে এবং ওরই অনুরূপ ইনসাফও করে।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٢﴾

১৮২. যারা আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে, আমি তাদের অজ্ঞাতে তাদেরকে ধীরে ধীরে পাকড়াও করবো।

وَاُمْلِيْ لَهُمْ ؕ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿١٨٣﴾

১৮৩. আমি তাদেরকে অবকাশ দিচ্ছি, নিশ্চয় আমার কৌশল বা ষড়যন্ত্র অতি শক্ত।

اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا ۗ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٨٤﴾

১৮৪. তারা কি এটা চিন্তা করে না যে, তাদের সঙ্গী পাগল নয়? তিনি তো একজন সুস্পষ্ট সতর্ককারী!

اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۙ وَّاَنْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ

১৮৫. তারা কী আকাশসমূহ ও পৃথিবীর রাজত্ব সম্পর্কে কোন গভীর চিন্তা করে না? আর আল্লাহ যা কিছু সৃষ্টি

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেন, আল্লাহ্ তা'আলার নিরানব্বই নাম আছে। অর্থাৎ এক কম একশত, যে ব্যক্তি এ নামগুলো মুখস্থ করে নেয়, সে জান্নাতে যাবে। আল্লাহ্ বেজোড় (একক) বেজোড়কেই পছন্দ করেন। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪১০)

قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٥﴾

করেছেন এবং তাদের জীবনের নির্দিষ্ট মেয়াদটি পূর্ণ হবার সময়টি হয়তো বা নিকটে এসে পড়েছে তারা কি এটাও চিন্তা করে না? সুতরাং কুরআনের পর তারা কোন্ কথায় ঈমান আনবে?

مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ؕ وَيَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١٨٦﴾

১৮৬. যাদেরকে আল্লাহ বিপথগামী করেন, তাদের কোন পথ প্রদর্শক নেই, আর আল্লাহ তাদেরকে তাদেরই বিভ্রান্তির মধ্যে দিশেহারার (বিভ্রান্তির) ন্যায় ঘুরে বেড়াতে ছেড়ে দেন।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَاۤ اِلَّا هُوَ ؕ ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ؕ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٧﴾

১৮৭. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তারা তোমাকে জিজ্ঞেস করছে যে, কিয়ামত কখন সংঘটিত হবে? তুমি বলে দাওঃ এই বিষয়ে আমার প্রতিপালকই একমাত্র জ্ঞানের অধিকারী, শুধু তিনিই এর নির্ধারিত সময়ে প্রকাশ করবেন, তা হবে আকাশ রাজ্য ও পৃথিবীতে একটি ভয়ংকর ঘটনা, তোমাদের উপর তা আকস্মিতভাবেই আসবে, তুমি যেন এ বিষয়ে পুরোপুরি অবগত, এটা ভেবে তারা তোমাকে এ সম্পর্কে জিজ্ঞেস করছে, তুমি বলে দাওঃ এর সম্পর্কে জ্ঞান একমাত্র আল্লাহ্‌র কাছেই রয়েছে; কিন্তু অধিকাংশ লোকই এ সম্পর্কে কোনই জ্ঞান রাখে না।[১]

১। সালেম ইবনে আব্দুল্লাহ্, ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণনা করেছেন। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ অদৃশ্য বা গায়েবী ভান্ডার পাঁচটি আল্লাহ্‌ই জানেন কিয়ামত কখন হবে, তিনিই বৃষ্টি বর্ষণ করেন, মায়ের জরায়ুতে কি সন্তান আছে, কোন্ ব্যক্তি আমাগীকাল কি করবে, কোন ব্যক্তি তা জানে না। কোন্ ব্যক্তির মৃত্যু কোন্ স্থানে বা কোন্ দেশে হবে তা সে জানে না। আল্লাহ্ সবচেয়ে বেশি জানেন এবং খবর রাখেন। (বুখারী, হাদীস নং ৪৬২৭)

قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِىْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ط وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۚ وَمَا مَسَّنِىَ السُّوْٓءُ ۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٨﴾

১৮৮. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি ঘোষণা দিয়ে দাওঃ আল্লাহ যা ইচ্ছা করেন তা ছাড়া আমার নিজের ভাল-মন্দ, লাভ-ক্ষতি ইত্যাদি বিষয়ে আমার কোন অধিকার নেই, আমি যদি অদৃশ্য তত্ত্ব ও খবর জানতাম তবে আমি অনেক কল্যাণ লাভ করতে পারতাম আর কোন অমঙ্গল ও অকল্যাণই আমাকে স্পর্শ করতে পারতো না। (অতএব অদৃশ্যের কোন খবরই আমি রাখি না,) আমি শুধু মু'মিন সম্প্রদায়ের জন্যে একজন সতর্ককারী ও সুসংবাদবাহী।

هُوَالَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ اِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٨٩﴾

১৮৯. তিনিই আল্লাহ যিনি তোমাদেরকে এক ব্যক্তি (আদম عليه السلام) হতে সৃষ্টি করেছেন এবং সেই ব্যক্তি হতেই তাঁর সঙ্গিনী (হাওয়া عليها السلام)- কে সৃষ্টি করেছেন যেন তিনি তার নিকট থেকে প্রশান্তি লাভ করতে পারেন, অতঃপর যখন সে তার (স্ত্রীর) সাথে মিলনে প্রবৃত্ত হয় তখন সেই মহিলাটি এক গোপন ও লঘু গর্ভধারণ করে, আর (এই অবস্থায় সে দিন কাটাতে থাকে এবং) তা' নিয়ে চলাফেরা করতে থাকে, অতঃপর যখন তার গর্ভ গুরুভার হয় তখন তারা উভয়েই তাদের প্রতিপালকের কাছে দু'আ করেঃ যদি আপনি আমাদেরকে সৎ সন্তান দান করেন তবে আমরা আপনার কৃতজ্ঞ বান্দা হবো।

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٩٠﴾

১৯০. অতঃপর তিনি যখন তাদেরকে সৎ ও সুস্থ সন্তান দান করেন তখন তারা আল্লাহর দেয়া এই দানে অংশী স্থাপন করে; কিন্তু তারা যাকে অংশী করে আল্লাহ তা অপেক্ষা অনেক উন্নত ও মহান।

اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿١٩١﴾

১৯১. তারা কি এমন বস্তুকে (আল্লাহর সাথে) অংশী করে থাকে যারা কোন বস্তুই সৃষ্টি করে না বরং তারা নিজেরাই (আল্লাহর দ্বারা) সৃষ্টিকৃত?

وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿١٩٢﴾

১৯২. এই শরীককৃত জিনিসসমূহ যেমন তাদের কোন সাহায্য করার ক্ষমতা রাখে না, তেমনি নিজেদেরকেও কোন সাহায্য করতে পারে না।

وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ﴿١٩٣﴾

১৯৩. তোমরা যদি ওদেরকে সৎপথে ডাকো তবে তারা তোমাদের অনুসরণ করবে না। তাদেরকে ডাকতে থাকা অথবা তোমাদের চুপ করে থাকা উভয়ই তোমাদের পক্ষে সমান।

اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٩٤﴾

১৯৪. আল্লাহ ছাড়া তোমরা যাদেরকে ডাকো, তারা তো তোমাদেরই ন্যায় বান্দা, সুতরাং তোমরা তাদেরকে ডাকতে থাকো, যদি তোমরা সত্যবাদী হও তবে তারা তোমাদের ডাকে সাড়া দেবে।

اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ

১৯৫. তাদের কি পা আছে যা দ্বারা তারা চলছে? তাদের কি হাত আছে যা দ্বারা কোন কিছু ধরে থাকে? তাদের কি চক্ষু আছে যা দ্বারা দেখতে পারে? তাদের কি কর্ণ আছে

فَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿١٩٥﴾

যা দ্বারা শুনে থাকে? (হে নবী ﷺ)! তুমি বলে দাওঃ আল্লাহর সাথে তোমরা যাদেরকে অংশী করেছো, তাদেরকে ডাকো, তারপর (সকলে একত্রিত হয়ে) আমার বিরুদ্ধে চক্রান্ত করতে থাকো, আমাকে আদৌ কোন অবকাশ দিও না।

إِنَّ وَلِيِّۦَ ٱللَّهُ ٱلَّذِى نَزَّلَ ٱلْكِتَٰبَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿١٩٦﴾

১৯৬. আমার অভিভাবক হলেন সেই আল্লাহ যিনি কিতাব অবতীর্ণ করেছেন, আর তিনিই সৎকর্মশীলদের অভিভাবকত্ব করে থাকেন।

وَٱلَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِهِۦ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَكُمْ وَلَآ أَنفُسَهُمْ يَنصُرُونَ ﴿١٩٧﴾

১৯৭. আল্লাহ ছাড়া তোমরা যাদেরকে ডাকো, তারা তোমাদের সাহায্য করার কোন ক্ষমতা রাখে না এবং তারা নিজেদেরকেও সাহায্য করতে পারে না।

وَإِن تَدْعُوهُمْ إِلَى ٱلْهُدَىٰ لَا يَسْمَعُوا۟ ۖ وَتَرَىٰهُمْ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٩٨﴾

১৯৮. যদি তুমি তাদেরকে হিদায়াতের পথে ডাকো, তবে সে ডাক তারা শুনবে না, আর তুমি দেখবে যে, তারা তোমার দিকে তাকিয়ে রয়েছে, আসলে তারা কিছুই দেখছে না।

خُذِ ٱلْعَفْوَ وَأْمُرْ بِٱلْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ ٱلْجَٰهِلِينَ ﴿١٩٩﴾

১৯৯. (হে নবী ﷺ)! তুমি বিনয় ও ক্ষমা পরায়ণতার নীতি গ্রহণ কর এবং লোকদেরকে সৎকাজের নির্দেশ দাও, আর মূর্খদেরকে এড়িয়ে চল।

وَإِمَّا يَنزَغَنَّكَ مِنَ ٱلشَّيْطَٰنِ نَزْغٌ فَٱسْتَعِذْ بِٱللَّهِ ۚ إِنَّهُۥ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٠٠﴾

২০০. শয়তানের কুমন্ত্রণা যদি তোমাকে প্ররোচিত করে তবে তুমি আল্লাহর আশ্রয় প্রার্থনা কর, তিনি সর্বশ্রোতা ও সর্বজ্ঞ।

إِنَّ ٱلَّذِينَ ٱتَّقَوْا۟ إِذَا مَسَّهُمْ طَٰٓئِفٌ مِّنَ

২০১. যারা মুত্তাকী, শয়তান যখন তাদেরকে কুমন্ত্রণা দিয়ে খারাপ

الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ ﴿٢٠١﴾

কাজে নিমগ্ন করে, সাথে সাথে তারা আত্মসচেতন হয়ে আল্লাহকে স্মরণ করে ফলে তৎক্ষণাৎ তাদের (জ্ঞান) চক্ষু খুলে যায়।

وَاِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ فِى الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ ﴿٢٠٢﴾

২০২. শয়তানদের যারা অনুগত ভ্রাতা, তারা তাদেরকে বিভ্রান্তি ও গোমরাহীর মধ্যে টেনে নেয়, এ ব্যাপারে তারা অদৌ কোন ত্রুটি করে না।

وَاِذَا لَمْ تَاْتِهِمْ بِاٰيَةٍ قَالُوْا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ؕ قُلْ اِنَّمَآ اَتَّبِعُ مَا يُوْحٰٓى اِلَىَّ مِنْ رَّبِّىْ ۚ هٰذَا بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠٣﴾

২০৩. (হে নবী ﷺ)! তুমি যখন কোন নিদর্শন ও মু'জিযা তাদের কাছে পেশ কর না, তখন তারা বলেঃ আপনি এসব মু'জিযা কেন পেশ করেন না?[১] তুমি তাদেরকে জানিয়ে দাওঃ আমার প্রতিপালকের নিকট থেকে আমার কাছে যা কিছু প্রত্যাদেশ পাঠানো হয়, আমি শুধুমাত্র তারই অনুসরণ করি, এই কুরআন তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে এক বিরাট দলীল ও নিদর্শন এবং ঈমানদার সম্প্রদায়ের জন্যে হিদায়াত ও অনুগ্রহের প্রতীক।

وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٢٠٤﴾

২০৪. যখন কুর'আন পাঠ করা হয়, তখন তেমরা মনোযোগের সাথে তা শ্রবণ করবে এবং নীরব নিশ্চুপ হয়ে থাকবে, হয়তো তোমাদের প্রতি দয়া ও অনুগ্রহ করা হবে।

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِىْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ

২০৫. তোমার প্রতিপালককে মনে মনে বিনয় নম্র ও ভয়-ভীতি সহকারে অনুচ্চস্বরে সকাল ও সন্ধ্যায়

১। আনাস ইবনে মালিক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি সাহাবাগণকে হাদীস বর্ণনা করেছেন যে, মক্কার কাফেরেরা রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট দাবী করল যে, তিনি যেন তাদেরকে কোন মু'জিযা (অলৌকিক নিদর্শন) দেখান। তখন তিনি তাদেরকে (আল্লাহ্র নির্দেশে) চন্দ্র দ্বিখন্ডিত করে দেখালেন। (বুখারী, হাদীস নং ৩৬৩৭)

وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ﴿٢٠٥﴾

স্মরণ করবে, আর (হে নবী ﷺ!) তুমি এই ব্যাপারে গাফিল ও উদাসীন হবে না।

اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ۩ ﴿٢٠٦﴾

২০৬. যারা তোমাদের প্রভুর সান্নিধ্যে থাকেন (অর্থাৎ ফেরেশতারা) তাঁরা অহংকারে তাঁর ইবাদত হতে বিমুখ হয় না, তাঁরা তাঁরই গুণাগুণ ও মহিমা প্রকাশ করেন এবং তাঁরা তাকেই সিজদা করেন।

সূরাঃ আনফাল মাদানী

(আয়াতঃ ৭৫, রুকূঃ ১০)

سُوْرَةُ الْاَنْفَالِ مَدَنِيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٧٥ رُكُوْعَاتُهَا ١٠

দয়াময় মেহেরবান আল্লাহর নামে শুরু করছি।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ؕ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۪ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١﴾

১. (হে নবী ﷺ!) লোকেরা তোমাকে যুদ্ধলব্দ সম্পদ সম্পর্কে জিজ্ঞেস করে, তুমি ঘোষণা করে দাওঃ যুদ্ধলব্ধ সম্পদ আল্লাহ্ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর জন্যে, অতএব তোমরা এ ব্যাপারে আল্লাহকে ভয় কর এবং তোমাদের নিজেদের পারস্পরিক সম্পর্ক সঠিকরূপে গড়ে নাও, আর যদি তোমরা মুমিন হয়ে থাক তবে আল্লাহ এবং তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর আনুগত্য কর।

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٢﴾

২. নিশ্চয় মুমিনরা এইরূপ হয় যে, যখন (তাদের সামনে) আল্লাহকে স্মরণ করা হয়, তখন তাদের অন্তরসমূহ ভীত হয়ে পড়ে, আর যখন তাদের সামনে তাঁর আয়াতসমূহ পাঠ করা হয় তখন সেই

আয়াতসমূহ তাদের ঈমানকে আরও বৃদ্ধি করে দেয়, আর তারা নিজেদের প্রতিপালকের উপর নির্ভর করে।

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝٣

৩. যারা নামায প্রতিষ্ঠা করে এবং আমি যা কিছু তাদেরকে দিয়েছি তা থেকে তারা খরচ করে।

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝٤

৪. এরাই সত্যিকারের ঈমানদার, এদের জন্যেই রয়েছে তাদের প্রতিপালকের নিকট উচ্চ মর্যাদা, আরও রয়েছে ক্ষমা ও সম্মানজনক জীবিকা।

كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۖ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ۝٥

৫. যেরূপে তোমার প্রতিপালক তোমাকে তোমার গৃহ হতে (বদরের দিকে) যথাযথভাবে বের করলেন, আর মুসলমানদের একটি দল একে অপছন্দ (ভারী) মনে করেছিল।

يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝٦

৬. সেই হক্ব বা যথার্থ বিষয় প্রকাশ হওয়ার পরেও তারা তোমার সাথে এরূপ ঝগড়া করছিল যেন কেউ তাদেরকে মৃত্যুর দিকে হাঁকিয়ে নিয়ে যাচ্ছে, আর তারা তা প্রত্যক্ষ করছে।

وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۝٧

৭. আর তোমরা সেই সময়টিকে স্মরণ কর, যখন আল্লাহ তোমাদেরকে সেই দু'টি দলের মধ্য হতে একটি সম্বন্ধে প্রতিশ্রুতি দিচ্ছিলেন যে, ওটা তোমাদের করতলগত হবে, আর তোমরা এই অভিপ্রায়ে ছিলে যেন নিরস্ত দলটি তোমাদের আয়ত্তে এসে পড়ে, আর আল্লাহর ইচ্ছা ছিল এই যে, তিনি স্বীয় নির্দেশবলী দ্বারা সত্যকে সত্য রূপে প্রতিপন্ন করে দেন এবং সেই কাফিরদের মূলকে কর্তন করে দেন।

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٨﴾

৮. যেন সত্যকে সত্যরূপে এবং অসত্যকে অসত্যরূপে প্রমাণিত করে দেন, যদিও এটা অপরাধীরা অপছন্দ করে।

اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ﴿٩﴾

৯. স্মরণ কর সেই সংকট মুহূর্তের কথা, যখন তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের নিকট কাতর কণ্ঠে সাহায্যের আবেদন করেছিলে, আর তিনি সেই আবেদন কবূল করেছিলেন, (আর তিনি বলেছিলেন) আমি তোমাদেরকে এক হাজার ফেরেশ্‌তা দ্বারা সাহায্য করবো, যারা ধারাবাহিকভাবে আসবে।

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠﴾

১০. আল্লাহ এটা শুধু তোমাদের সুসংবাদ দেয়ার জন্যে এবং এর দ্বারা তোমাদের মনে প্রশান্তি আনয়নের জন্যে করেছেন, সাহায্য শুধু আল্লাহর তরফ থেকেই আসে, আল্লাহ মহাপরাক্রমশালী ও প্রজ্ঞাময়।

اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ﴿١١﴾

১১. (আর ঐ সময়ের কথা স্মরণ কর) যখন তিনি (আল্লাহ) তাঁর পক্ষ থেকে প্রশান্তির জন্যে তোমাদেরকে তন্দ্রায় আচ্ছন্ন করেন এবং আকাশ থেকে তোমাদের উপর বৃষ্টি বর্ষণ করেন, এর দ্বারা তোমাদরকে পবিত্র করার জন্যে এবং তোমাদের হতে শয়তানের কুমন্ত্রণা দূরীভূত করবেন আর তোমাদের হৃদয়কে সুদৃঢ় করবেন এবং তোমাদের পা স্থির ও সুদৃঢ় করবেন।

اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۗ سَاُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ

১২. (আর ঐ সময়ের কথাও স্মরণ কর) যখন তোমার প্রতিপালক ফেরেশ্‌তাদের নিকট প্রত্যাদেশ

كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿١٢﴾

করলেনঃ আমি তোমাদের সাথে আছি, সুতরাং তোমরা ঈমানদার-দের সঙ্গে থেকে শক্তি বৃদ্ধি করে তাদের সুপ্রতিষ্ঠিত ও অবিচল রাখো, আর যারা কাফির, আমি তাদের হৃদয়ে ভীতি সৃষ্টি করে দেবো, অতএব তোমরা তাদের ঘাড়ে আঘাত হানো, আর আঘাত হানো তাদের অঙ্গুলিসমূহের প্রতিটি জোড়ায় জোড়ায়।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿١٣﴾

১৩. এটা এই কারণে যে, তারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)- এর বিরোধিতা করে, যে ব্যক্তি আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর বিরোধিতা করে তার জেনে রাখা উচিত যে, আল্লাহ শাস্তি দানে খুবই কঠোর হস্ত।

ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَاَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ ﴿١٤﴾

১৪. এটাই তোমাদের শাস্তি, সুতরাং তোমরা এর স্বাদ গ্রহণ কর, (তোমাদের জানা উচিত যে,) কাফেরদের জন্যে রয়েছে অগ্নির শাস্তি।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ﴿١٥﴾

১৫. হে ঈমানদারগণ! তোমরা যখন যুদ্ধের ময়দানে কাফের সৈন্য বাহিনীর সম্মুখীন হবে, তখন তোমরা তাদের মুকাবিলা করা হতে কখনোই পৃষ্ঠপ্রদর্শন করবে না।

وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهٗۤ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦﴾

১৬. আর সেদিন যুদ্ধ কৌশল বা স্বীয় বাহিনীর কেন্দ্রস্থলে স্থান করে নেয়া ব্যতীত কেউ তাদেরকে পৃষ্ঠপ্রদর্শন করলে অর্থাৎ পালিয়ে গেলে সে আল্লাহর গযবে নিপতিত হবে এবং তার আশ্রয়স্থল হবে জাহান্নাম, আর জাহান্নাম কতই না নিকৃষ্ট স্থান!

فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۪ وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٧﴾

১৭. তোমরা তাদেরকে হত্যা করনি, বরং আল্লাহই তাদেরকে হত্যা করেছেন, আর (হে নবী ﷺ) যখন তুমি (ধূলোবালি) নিক্ষেপ করেছিলে তখন তা মূলতঃ তুমি তা নিক্ষেপ করনি; বরং আল্লাহই তা নিক্ষেপ করেছিলেন, এবং এটা করা হয়েছিল মু'মিনদেরকে তাঁর পক্ষ থেকে তাদের কষ্টের উত্তম পুরস্কার দান করার জন্যে, নিঃসন্দেহে আল্লাহ সব কিছু শোনেন ও সব কিছু জানেন।

ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٨﴾

১৮. আর এমনিভাবেই আল্লাহ কাফিরদের চক্রান্ত দুর্বল ও নস্যাৎ করে থাকেন।

اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٩﴾

১৯. (হে কাফিরগণ!) তোমরা যদি সত্যের বিজয় চাও, বিজয় তো তোমাদের সামনেই এসেছে, তোমরা যদি এখনো (মুসলমানদের অনিষ্টকরণ হতে) বিরত থাকো, তবে তা তোমাদের পক্ষেই কল্যাণকর, আর যদি পুনরায় তোমরা এ হেন কাজ কর, তবে আমিও তোমাদেরকে পুনরায় শাস্তি দিবো, আর তোমাদের বিরাট বাহিনী তোমাদের কোনই উপকারে আসবে না, নিঃসন্দেহে আল্লাহ মু'মিনদের সাথে রয়েছেন।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ﴿٢٠﴾

২০. হে মু'মিনগণ! আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর আনুগত্য কর, তোমরা যখন তাঁর কথা শুনছো তখন তোমরা তাঁর আনুগত্য হতে মুখ ফিরিয়ে নিয়ো না।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ

২১. তোমরা ঐ সব লোকের মত হয়ো না, যারা বলেঃ আমরা আপনার

لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٢١﴾

কথা শুনলাম, কার্যতঃ তারা কিছুই শোনে না।

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٢٢﴾

২২. আল্লাহর কাছে নিকৃষ্টতম জীব হচ্ছে ঐ সব বোবা ও বধির লোক, যারা কিছুই বুঝে না (অর্থাৎ বিবেক-বুদ্ধিকে কাজে লাগায় না)।

وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ؕ وَلَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. আল্লাহ যদি জানতেন যে, তাদের মধ্যে কল্যাণকর কিছু নিহিত আছে তবে অবশ্যই তিনি তাদেরকে শুনবার তাওফীক দিতেন, তিনি যদি তাদেরকে শুনাতেনও তবুও তারা উপেক্ষা করতঃ মুখ ফিরিয়ে অন্য দিকে চলে যেতো।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾

২৪. হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহ ও রাসূল (ﷺ)-এর (আহ্বানে সাড়া দাও) যখন রাসূল তোমাদেরকে তোমাদের জীবন সঞ্চারক বস্তুর দিকে আহ্বান করেন, আর জেনে রেখো যে, আল্লাহ মানুষ ও তার অন্তরের মধ্যস্থলে অন্তরায় হয়ে থাকেন, পরিশেষে তাঁর কাছেই তোমাদেরকে সমবেত করা হবে।

وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾

২৫. তোমরা সেই ফিৎনাকে ভয় কর যা তোমাদের মধ্যকার যালিম ও পাপিষ্ঠদেরকেই বিশেষভাবে আক্রান্ত করবে না (বরং সবারই মধ্যে এটা সংক্রমিত হয়ে পড়বে এবং সবকেই বিপদগ্রস্ত করবে), তোমরা জেনে রেখো যে, আল্লাহ শাস্তি দানে খুব কঠোর।

وَاذْكُرُوْۤا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِى الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ

২৬. (সেই মর্মান্তিক মুহূর্তটির কথা) তোমরা স্মরণ কর, যখন তোমরা ভূ-পৃষ্ঠে অল্প ছিলে ফলে দুর্বলরূপে

فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٦﴾

পরিগণিত হতে, আর তোমরা এই শঙ্কায় নিপতিত থাকতে যে, লোকেরা অকস্মাৎ তোমাদেরকে ধরে (ছিনিয়ে) নিয়ে যাবে, সুতরাং (এই অবস্থায়) আল্লাহ্ই তোমাদেরকে (মদীনায়) আশ্রয় দেন এবং স্বীয় সাহায্য দ্বারা তোমাদেরকে শক্তিশালী করেন, আর পবিত্র বস্তু দ্বারা তোমাদের জীবিকা দান করেন, যেন তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْۤا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٧﴾

২৭. হে মু'মিনগণ! তোমরা জেনে শুনে আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর সাথে খিয়ানত করবে না, আর তোমাদের পরস্পরের আমানত সমূহেরও (গচ্ছিত দ্রব্যের সম্পর্কেও) খিয়ানত করবে না।

وَاعْلَمُوْۤا اَنَّمَاۤ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾

২৮. আর তোমরা জেনে রেখো যে, তোমাদের ধন-সম্পত্তি ও সন্তান-সন্ততি প্রকৃতপক্ষে পরীক্ষার সামগ্রী মাত্র, আর আল্লাহর নিকট (প্রতিফলের জন্যে) মহা পুরস্কার রয়েছে।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾

২৯. হে মু'মিনগণ! তোমরা যদি আল্লাহকে ভয় কর তবে তিনি তোমাদেরকে ন্যায়-অন্যায় পার্থক্য করার একটি মানদন্ড ও শক্তি দান করবেন, আর তোমাদের গোনাহখাতা মিটিয়ে দেবেন এবং তোমাদেরকে ক্ষমা করবেন, আল্লাহ বড় অনুগ্রহশীল ও মঙ্গলময়।

وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ؕ وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ

৩০. আর (সেই সময়টিও স্মরণীয়) যখন কাফিররা তোমার বিরুদ্ধে ষড়যন্ত্র করে যে, তোমাকে বন্দী

خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿٣٠﴾

করবে অথবা হত্যা করবে কিংবা নির্বাসিত করবে, তারাও ষড়যন্ত্র করতে থাকে এবং আল্লাহও ষড়যন্ত্র করতে থাকেন, আর আল্লাহ হচ্ছেন সর্বোত্তম ষড়যন্ত্রকারী।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَآءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَآ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣١﴾

৩১. তাদেরকে যখন আমার আয়াতসমূহ পাঠ করে শুনানো হয় তখন তারা বলেঃ আমরা শুনেছি, ইচ্ছা করলে আমরাও এর অনুরূপ বলতে পারি, নিঃসন্দেহে এটা পূর্ববর্তীদের মিথ্যা রচনা (উপকথা) ছাড়া আর কিছু নয়।

وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣٢﴾

৩২. আর (সেই সময়টিও সম্মরণকর) যখন তারা বলেছিলঃ হে আল্লাহ! এটা (কুর'আন ও নবুয়াত) যদি আপনার পক্ষ হতে সত্য হয় তবে আমাদের উপর আকাশ থেকে প্রস্তর বর্ষণ করুন অথবা আমাদের কঠিন পীড়াদায়ক শাস্তি দিন।

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿٣٣﴾

৩৩. (হে নবী ﷺ) তুমি তাদের মধ্যে থাকা অবস্থায় তাদেরকে শাস্তি দেয়া হবে এটা আল্লাহর অভিপ্রায় নয়, আর আল্লাহ এটাও চান না যে, তারা ক্ষমা প্রার্থনা করতে থাকবে অথচ তিনি তাদেরকে শাস্তি প্রদান করবেন।

وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْٓا اَوْلِيَآءَهٗ ؕ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٤﴾

৩৪. কিন্তু এখন তাদের কি বলবার আছে যে, আল্লাহ তাদের শাস্তি দিবেন না, যখন তারা মসজিদুল হারামের পথ রোধ করছে, অথচ তারা মসজিদুল হারামের তত্ত্বাবধায়ক নয়, মুত্তাকী লোকেরাই হলো এর

তত্ত্বাবধায়ক; কিন্তু তাদের অধিকাংশ লোকই এটা অবগত নয়।

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً وَّتَصْدِيَةً ۭ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٥﴾

৩৫. কা'বা ঘরের কাছে তাদের নামায (উপাসনা) শিষ দেয়া এবং তালি বাজানো ছাড়া অন্য কিছু ছিল না, সুতরাং তোমরা কুফরী করার কারণে এখন শাস্তির স্বাদ গ্রহণ কর।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ يُحْشَرُوْنَ ﴿٣٦﴾

৩৬. নিশ্চয়ই কাফির লোকেরা মানুষকে আল্লাহর পথ থেকে বিরত রাখার উদ্দেশ্যে তাদের ধন-সম্পদ ব্যয় করে, তারা তাদের ধন-সম্পদ ব্যয় করতেই থাকবে, অতঃপর ওটাই শেষ পর্যন্ত তাদের জন্যে দুঃখ ও আফসোসের কারণ হবে এবং তারা পরাভূতও হবে, আর যারা কুফরী করে তাদেরকে জাহান্নামে একত্রিত করা হবে।

لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٣٧﴾

৩৭. এটা এই কারণে যে, আল্লাহ ভাল হতে মন্দকে পৃথক করবেন আর মন্দদের এককে অপরের উপর রাখবেন, অতঃপর সকলকে একত্রিত করে জড়ো করবেন এবং জাহান্নামে নিক্ষেপ করবেন, এইসব লোকই চরম ক্ষতিগ্রস্ত লোক।

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٨﴾

৩৮. (হে নবী ﷺ)! তুমি কাফির-দেরকে বলঃ তারা যদি কুফুরি থেকে বিরত থাকে (এবং আল্লাহর দ্বীনে ফিরে আসে) তবে পূর্বে যা হয়েছে তা আল্লাহ ক্ষমা করবেন, কিন্তু তারা যদি অন্যায়ের পুনরাবৃত্তি করে, তবে পূর্ববর্তী (কাফের) জাতিসমূহের সাথে যে আচরণ করা হয়েছিল তা তো অতীত ঘটনা। (অর্থাৎ শাস্তি অনিবার্য)

وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٣٩﴾

৩৯. তোমরা সদা তাদের বিরুদ্ধে লড়াই করতে থাকবে যতক্ষণ না ফিৎনার অবসান হয় এবং দ্বীন সম্পূর্ণরূপে আল্লাহর জন্যেই হয়ে যায় (অর্থাৎ আল্লাহর তাওহীদ সামগ্রিকভাবে প্রতিষ্ঠিত হয়), আর তারা যদি ফিৎনা ও বিপর্যয় সৃষ্টি হতে বিরত থাকে তবে তারা যা করছে তা আল্লাহই দেখছেন।[১]

وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ؕ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿٤٠﴾

৪০. আর যদি তোমাকে না-ই মানে ও দ্বীন থেকে মুখ ফিরিয়ে নেয় তবে জেনে রেখো যে, আল্লাহ্ই তোমাদের (মুসলমানদের) অভিভাবক ও বন্ধু, তিনি কতইনা উত্তম অভিভাবক ও কতইনা উত্তম সাহায্যকারী!

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ সেই মহান সত্তার শপথ যাঁর হাতে আমার প্রাণ! অচিরেই ইবনে মারইয়াম [ঈসা আলাইহিস্ সালাম] ন্যায়বান শাসক হয়ে তোমাদের মাঝে অবতরণ করবেন (আসবেন)। তিনি ক্রুশ ভেঙে ফেলবেন, শূকর হত্যা করে ফেলবেন এবং জিয্য়া উঠিয়ে দিবেন। আর সম্পদের প্রাচুর্য এত বেশি হবে যে, যে কেউই তা (দান) গ্রহণ করতে চাইবে না। (বুখারী, হাদীস নং ২২২২)

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤١﴾

৪১. আর তোমরা জেনে রেখো যে, যুদ্ধে তোমরা যা কিছু গণীমতের মাল লাভ করেছো ওর এক পঞ্চমাংশ আল্লাহ, তাঁর রাসূল, নিকটাত্মীয়, ইয়াতীম, মিসকীন এবং মুসাফিরের জন্যে, (এই নিয়ম তোমরা মেনে চলবে।) যদি তোমরা ঈমান এনে থাকো আল্লাহর প্রতি এবং তার প্রতি যা আমি অবতীর্ণ করেছি আমার বান্দার উপর সেই চূড়ান্ত ফায়সালার দিন, (বদরের যুদ্ধের দিন) যে দিন দু'দল পরস্পরের সম্মুখীন হয়েছিল, আর নিশ্চয়ই আল্লাহ সকল বিষয়ে সর্বশক্তিমান।

اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰى وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ مِنْكُمْ ۭ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيْعٰدِ ۙ وَلٰكِنْ لِّيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۙ لِّيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْۢ بَيِّنَةٍ وَّيَحْيٰى مَنْ حَيَّ عَنْۢ بَيِّنَةٍ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَسَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٤٢﴾

৪২. (আর স্মরণ কর সেই সময়টির কথা) যখন তোমরা (মদীনা) প্রান্তরের নিকট প্রান্তে ছিলে, আর তারা (কাফির বাহিনী) মদীনা প্রান্তরের দূরবর্তী স্থানে শিবির রচনা করেছিল, আর উষ্ট্রারোহী কাফেলা (আবু সুফিয়ানের নেতৃত্বে কুরাইশের মালসহ কাফেলা) তোমাদের অপেক্ষা নিম্নভূমিতে ছিল, যদি পূর্ব হতেই তোমাদের ও তাদের মধ্যে যুদ্ধ সম্পর্কে কোন সিদ্ধান্ত গ্রহণ করতে চাইতে তবে প্রতিশ্রুত সময়ের ব্যাপারে তোমাদের মধ্যে মতানৈক্য সৃষ্টি হতো; কিন্তু যা ঘটাবার ছিল তা আল্লাহ সম্পন্ন করবার জন্যে উভয় দলকে যুদ্ধক্ষেত্রে সমবেত করলেন, তাতে যে ধ্বংস হবে সে যেন সত্য সুস্পষ্টরূপে প্রকাশ হওয়ার পর ধ্বংস হয়, আর যে জীবিত থাকবে সে যেন সত্য সুস্পষ্টরূপে প্রকাশ হওয়ার পর জীবিত থাকে, আল্লাহ সর্বশ্রোতা ও মহাজ্ঞানী।

إِذْ يُرِيكَهُمُ اللَّهُ فِي مَنَامِكَ قَلِيلًا ۖ وَلَوْ أَرَاكَهُمْ كَثِيرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ سَلَّمَ ۗ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٤٣﴾

৪৩. (আর স্মরণ কর সেই সময়ের কথা) যখন আল্লাহ তোমাকে স্বপ্নযোগে ওদের সংখ্যা অল্প দেখিয়েছিলেন, যদি তোমাকে তাদের সংখ্যা অধিক দেখাতেন তবে তোমরা সাহস হারিয়ে ফেলতে এবং যুদ্ধ সম্পর্কে তোমাদের মধ্যে মতানৈক্য সৃষ্টি হতো; কিন্তু আল্লাহ তোমাদেরকে রক্ষা করেছেন, অন্তরে যা কিছু আছে সে সম্পর্কে তিনি সবিশেষ অবহিত।

وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ الْتَقَيْتُمْ فِي أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا وَيُقَلِّلُكُمْ فِي أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا ۗ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٤٤﴾

৪৪. (আর স্মরণ কর) যখন তোমরা শত্রুর সম্মুখীন হয়েছিলে তখন তিনি (আল্লাহ) তোমাদের চোখে তাদের সংখ্যা কম দেখালেন আর তাদের চোখেও তোমাদের সংখ্যা কম দেখালেন যাতে যা ঘটার তা যেন তিনি ঘটিয়ে দেন। সকল প্রকার কার্য আল্লাহর পানেই প্রত্যাবর্তিত হয়।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوا وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٤٥﴾

৪৫. হে মু'মিনগণ! যখন তোমরা কোন বাহিনীর সাথে প্রত্যক্ষ মুকাবিলায় অবতীর্ণ হবে তখন দৃঢ় ও স্থির থাকবে এবং আল্লাহকে অধিক পরিমাণে স্মরণ করবে, আশা করা যায় যে, তোমরাই সাফল্য লাভ করবে।

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ ۖ وَاصْبِرُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٤٦﴾

৪৬. আর আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের তোমরা আনুগত্য করবে এবং নিজেদের মধ্যে ঝগড়া-বিবাদ করবে না, অন্যথায় তোমরা সাহস হারিয়ে দুর্বল হয়ে পড়বে এবং তোমাদের মনের দৃঢ়তা ও শক্তি বিলুপ্ত হবে, আর তোমরা ধৈর্যসহকারে সব কাজ

করবে, আল্লাহ ধৈর্যশীলদের সাথে রয়েছেন।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِن دِيَارِهِم بَطَرًا وَرِئَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿٤٧﴾

৪৭. তোমরা তাদের ন্যায় হয়ো না যারা নিজেদের গৃহ হতে সদর্পে এবং লোকদেরকে (নিজেদের শক্তি) প্রদর্শন করতঃ বের হয়েছিল আর মানুষকে আল্লাহর পথ হতে বাধা সৃষ্টি করছিলো, তারা যা করে আল্লাহ তা পরিবেষ্টন করে রয়েছেন।

وَإِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَّكُمْ ۖ فَلَمَّا تَرَاءَتِ الْفِئَتَانِ نَكَصَ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ وَقَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِّنكُمْ إِنِّي أَرَىٰ مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ ۚ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٤٨﴾

৪৮. (ঐ সময়ের কথা স্মরণ কর) যখন শয়তান তাদের কার্যাবলীকে তাদের দৃষ্টিতে খুব চাকচিক্যময় ও শোভনীয় করে দেখাচ্ছিল, তখন সে গর্ব করে বলেছিলঃ কোন মানুষই আজ তোমাদের উপর বিজয় লাভ করতে পারবে না, আমি সাহায্যার্থে তোমাদের নিকটই থাকবো; কিন্তু উভয় বাহিনীর মধ্যে যখন প্রত্যক্ষ যুদ্ধ শুরু হলো তখন সে পৃষ্ঠপ্রদর্শন করে সরে পড়লো এবং বললোঃ আমি তোমাদের থেকে সম্পূর্ণ মুক্ত (তোমাদের সাথে আমার কোন সম্পর্ক নেই,) আমি যা দেখছি তোমরা তা দেখ না, আমি আল্লাহকে ভয় করি, আল্লাহ শাস্তি দানে খুবই কঠোর।

إِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ غَرَّ هَٰؤُلَاءِ دِينُهُمْ ۗ وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٤٩﴾

৪৯. (ঐ মুহূর্তটির কথা স্মরণ কর) যখন মুনাফিকরা এবং যাদের অন্তরে ব্যাধি রয়েছে তারা বলতে লাগলো এদের দ্বীন এদেরকে প্রতারিত করেছে (অর্থাৎ এরা ধর্মান্ধ হয়ে পড়েছে), যারা আল্লাহর প্রতি পূর্ণমাত্রায় নির্ভরশীল হয় (তাদের

বেলায়) আল্লাহ মহাপরাক্রমশালী ও প্রজ্ঞাময়।

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ۚ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٥٠﴾

৫০. (হে নবী ﷺ)! তুমি যদি ঐ অবস্থা দেখতে যখন ফেরেশতাগণ কাফেরদের রূহ কবজ করার সময় তাদের মুখমন্ডল ও পৃষ্ঠদেশে আঘাত হানেন (আর বলেন) তোমরা প্রজ্জ্বলিত জাহান্নামের শাস্তির স্বাদ গ্রহণ কর।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٥١﴾

৫১. এই শাস্তি হলো তোমাদের সেই কাজেরই পরিণাম ফল যা তোমাদের দু'হাত পূর্বাহ্নেই প্রেরণ করেছিল, (নতুবা) আল্লাহ তাঁর বান্দাদের উপর (কখনো) অত্যাচারী নন।

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٥٢﴾

৫২. এটা ফিরাউনের বংশ ও তাদের পূর্ববর্তী লোকদের অবস্থার ন্যায়, তারা আল্লাহর নিদর্শনকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে অস্বীকার করলো, ফলে আল্লাহ তাদের পাপের কারণে তাদেরকে পাকড়াও করলেন, নিঃসন্দেহে আল্লাহ মহা শক্তিমান ও কঠিন শাস্তি দাতা।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٣﴾

৫৩. এই শাস্তির কারণ এই যে, আল্লাহ কোন জাতির উপর নিয়ামত দান করে সেই নিয়ামত ততক্ষণ পর্যন্ত পরিবর্তন করেন না (উঠিয়ে নেন না), যতক্ষণ পর্যন্ত সেই জাতি নিজেরাই নিজেদের অবস্থা পরিবর্তন না করে, নিঃসন্দেহে আল্লাহ মহাশ্রোতা ও মহাজ্ঞানী।

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ

৫৪. তারা ফিরাউনের বংশধর ও তৎপূর্বের জাতিসমূহের ন্যায় তাদের প্রতিপালকের নিদর্শনসমূহ মিথ্যা

وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥٤﴾

প্রতিপন্ন করেছে। ফলে আমি তাদের পাপের কারণে তাদেরকে ধ্বংস করে দিয়েছি এবং ফিরাউনের বংশধরদেরকে (সমুদ্রে) ডুবিয়ে দিয়েছি, তারা প্রত্যেকেই ছিল সীমালঙ্ঘনকারী।

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٥﴾

৫৫. নিশ্চয়ই আল্লাহর নিকট নিকৃষ্ট জীব তারাই যারা কুফরী করে, সুতরাং তারা ঈমান আনে না।

اَلَّذِيْنَ عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٦﴾

৫৬. ওদের মধ্যে যাদের সাথে তুমি চুক্তিবদ্ধ হয়েছো, অতঃপর তারা প্রতিবারই কৃত চুক্তি ভঙ্গ করছে তারা (আল্লাহকে কিছুমাত্র) ভয় করে না।

فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٥٧﴾

৫৭. অতএব, তুমি যদি তাদেরকে যুদ্ধের ময়দানে আয়ত্তে আনতে পার তবে তাদের দ্বারা তুমি তাদেরকেও তাড়িয়ে দাও, যারা তাদের পিছনে রয়েছে, যাতে তারা শিক্ষা পায়।

وَاِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَيْهِمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِيْنَ ﴿٥٨﴾

৫৮. (হে নবী ﷺ)! তুমি যদি কোন সম্প্রদায়ের বিশ্বাস ভঙ্গের (খেয়ানতের) আশঙ্কা কর, তবে তোমার চুক্তিকেও প্রকাশ্যভাবে তাদের সামনে নিক্ষেপ করবে, (বাতিল করবে), নিশ্চয়ই আল্লাহ বিশ্বাস ভঙ্গকারীদেরকে পছন্দ করেন না।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا ؕ اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ ﴿٥٩﴾

৫৯. যারা কাফির তারা (বদর প্রান্তরে প্রাণ বাঁচাতে পেরে) যেন মনে না করে যে, তারা (ধরা ছোঁয়ার বাইরে) চলে গেছে, নিঃসন্দেহে

তারা (আল্লাহকে) অপারগ করতে পারবে না।

وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٦٠﴾

৬০. তোমরা কাফিরদের মুকাবিলা করার জন্যে যথাসাধ্য শক্তি ও সদা সজ্জিত অশ্ববাহিনী প্রস্তুত রাখবে, যা দ্বারা আল্লাহ্‌র শত্রু ও তোমাদের শত্রুদেরকে ভীত সন্ত্রস্ত করবে, এ ছাড়া অন্যান্যদেরকেও, যাদেরকে তোমরা জান না; কিন্তু আল্লাহ জানেন; আর তোমরা আল্লাহর পথে যা কিছু ব্যয় কর তার প্রতিদান তোমাদেরকে পুরোপুরি দেয়া হবে, তোমাদের প্রতি (কম দিয়ে) অত্যাচার করা হবে না।

وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦١﴾

৬১. যদি তারা (কাফিররা) সন্ধির দিকে ঝুঁকে পড়ে তবে তুমিও সন্ধি করতে আগ্রহী হও, আর আল্লাহর উপর ভরসা করো, নিঃসন্দেহে তিনি সর্বশ্রোতা ও সর্বজ্ঞাতা।

وَاِنْ يُّرِيْدُوْٓا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ؕ هُوَ الَّذِيْٓ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾

৬২. আর তারা যদি তোমাকে প্রতারিত করার ইচ্ছা করে তবে তোমার জন্যে আল্লাহ্‌ই যথেষ্ট, তিনিই তোমাকে স্বীয় সাহায্য দ্বারা এবং মু'মিনগণ দ্বারা শক্তিশালী করেছেন।

وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ؕ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٣﴾

৬৩. আর তিনি মু'মিনদের অন্তরে প্রীতি ও ঐক্য স্থাপন করেছেন, তুমি যদি পৃথিবীর সমুদয় সম্পদও ব্যয় করতে তবুও তাদের অন্তরে প্রীতি, সদ্ভাব ও ঐক্য স্থাপন করতে পারতে না; কিন্তু আল্লাহই ওদের পরস্পরের মধ্যে প্রীতি ও সদ্ভাব স্থাপন করে দিয়েছেন, নিঃসন্দেহে তিনি মহা শক্তিমান ও মহাকৌশলী।

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٤﴾

৬৪. হে নবী ﷺ! তোমার জন্যে ও তোমার অনুসারী মু'মিনদের জন্যে (সর্বক্ষেত্রে) আল্লাহ্ই যথেষ্ট।

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ ؕ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾

৬৫. হে নবী ﷺ! মু'মিনদেরকে জিহাদের জন্যে উদ্বুদ্ধ কর, তোমাদের মধ্যে যদি বিশজন ধৈর্যশীল মুজাহিদ থাকে তবে তারা দু'শ জন কাফিরের উপর জয়যুক্ত হবে, আর তোমাদের মধ্যে একশ' জন থাকলে তারা এক হাজার কাফিরের উপর বিজয়ী হবে, কারণ তারা এমন এক সম্প্রদায় যাদের বোধশক্তি নেই, কিছুই বোঝে না।

اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ؕ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٦٦﴾

৬৬. আল্লাহ্ এখন তোমাদের দায়িত্বভার লাঘব করে দিলেন, তোমাদের মধ্যে যে (দৈহিক) দুর্বলতা রয়েছে সে সম্পর্কে তিনি অবগত আছেন, সুতরাং তোমাদের মধ্যে একশ'জন ধৈর্যশীল লোক থাকলে তারা দু'শজন কাফিরের উপর জয়যুক্ত হবে, আর এক হাজার জন থাকলে তারা আল্লাহর হুকুমে দু'হাজার জন কাফিরের উপর বিজয় লাভ করবে, আল্লাহ্ ধৈর্যশীলদের সাথে রয়েছেন।

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِى الْاَرْضِ ؕ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٧﴾

৬৭. কোন নবীর পক্ষে ততক্ষণ পর্যন্ত বন্দী লোক রাখা শোভা পায় না, যতক্ষণ পর্যন্ত ভূ-পৃষ্ঠ (দেশ) হতে শত্রু বাহিনী নির্মূল না হয়, তোমরা দুনিয়ার সম্পদ কামনা করছো, আর আল্লাহ চান পরকালের কল্যাণ, আল্লাহ মহাপরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।

لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَآ
اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٦٨﴾

৬৮. আল্লাহর লিপি পূর্বেই লিখিত না হলে তোমরা যা কিছু গ্রহণ করেছো তজ্জন্যে তোমাদের উপর মহাশাস্তি আপতিত হতো।

فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٩﴾

৬৯. সুতরাং যুদ্ধে তোমরা যা কিছু গণীমতরূপে লাভ করেছো তা হালাল ও পবিত্ররূপে ভোগ কর, আর আল্লাহকে ভয় কর, নিঃসন্দেহে আল্লাহ ক্ষমাশীল, দয়ালু।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِيْۤ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰۤى ۙ
اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّاۤ
اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧٠﴾

৭০. হে নবী ﷺ! তোমাদের হাতে যেসব বন্দী রয়েছে তাদেরকে বল, আল্লাহ যদি তোমাদের অন্তরে কল্যাণকর কিছু রয়েছে তা অবগত হন তবে তোমাদের হতে (মুক্তিপণরূপে) যা কিছু নেয়া হয়েছে তা অপেক্ষা উত্তম কিছু দান করবেন এবং তোমাদেরকে ক্ষমা করে দিবেন, আল্লাহ ক্ষমাশীল ও দয়ালু।

وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ
قَبْلُ فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾

৭১. আর তারা যদি তোমার সাথে বিশ্বাসঘাতকতা করার ইচ্ছা রাখে, তবে এর পূর্বে আল্লাহর সাথেও তারা বিশ্বাসঘাতকতা করেছিল, সুতরাং (এর শাস্তি স্বরূপ) তিনি তাদের উপর তোমাকে শক্তিশালী করেছেন, আল্লাহ্ সর্বজ্ঞ ও প্রজ্ঞাময়।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ
وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا
وَّنَصَرُوْۤا اُولٰٓئِكَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يُهَاجِرُوْا مَا لَكُمْ مِّنْ
وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا ۚ

৭২. নিশ্চয়ই যারা ঈমান এনেছে, দ্বীনের জন্যে হিজরত করেছে, নিজেদের জানমাল দ্বারা আল্লাহর পথে জিহাদ করেছে, এবং যারা (মুহাজির মু'মিনদের) আশ্রয় দিয়েছে ও সাহায্য করেছে, তারা পরস্পরের বন্ধু, আর যারা ঈমান এনেছে; কিন্তু হিজরত করেনি, তারা হিজরত না

وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ فِى الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ اِلَّا عَلٰى قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٧٢﴾

করা পর্যন্ত তাদের অভিভাবকত্বের কোন দায়িত্ব তোমাদের নেই, আর তারা যদি দ্বীনের ব্যাপারে তোমাদের নিকট সাহায্যপ্রার্থী হয় তবে তাদের সাহায্য করা তোমাদের কর্তব্য; কিন্তু তোমাদের ও যে জাতির মধ্যে চুক্তি রয়েছে তাদের বিরুদ্ধে নয়, তোমরা যা করছো আল্লাহ তা খুব ভালরূপেই দর্শন করছেন।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ؕ اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِى الْاَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ﴿٧٣﴾

৭৩. আর যারা কুফরী করছে তারা পরস্পর পরস্পরের বন্ধু, তোমরা যদি (উপরোক্ত) বিধান কার্যকর না কর তবে ভূ-পৃষ্টে ফিৎনা ও মহাবিপর্যয় হবে।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٤﴾

৭৪. যারা ঈমান এনেছে, (দ্বীনের জন্যে) হিজরত করেছে এবং আল্লাহর পথে জিহাদ করেছে, আর যারা (মু'মিনদেরকে) আশ্রয় দিয়েছে এবং যাবতীয় সাহায্য-সহানুভূতি করেছে, তারাই হলো প্রকৃত মুমিন, তাদের জন্যে রয়েছে ক্ষমা ও সম্মানজনক জীবিকা।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَاُولٰٓئِكَ مِنْكُمْ ؕ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِىْ كِتٰبِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٥﴾

৭৫. আর যারা পরে ঈমান এনেছে ও হিজরত করেছে এবং তোমাদের সাথে একত্র হয়ে জিহাদ করেছে, তারা তোমাদেরই অন্তর্ভুক্ত, আল্লাহর বিধানে আত্মীয়গণ পরস্পরে একে অন্যের অপেক্ষা বেশি হকদার, নিঃসন্দেহে আল্লাহ প্রতিটি বস্তু সম্পর্কে ভালরূপে অবহিত।

সূরাঃ তাওবা মাদানী

(আয়াতঃ ১২৯, রুকূ'ঃ ১৬)

سُوْرَةُ التَّوْبَةِ مَدَنِيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ١٢٩ رُكُوْعَاتُهَا ١٦

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ①

১. আল্লাহর পক্ষ হতে ও তাঁর রাসূলের পক্ষ হতে অব্যাহতি (ঘোষণা করা) হচ্ছে ঐ মুশরিকদের (অঙ্গীকার) হতে যাদের সাথে তোমরা সন্ধি করে রেখেছিলে।

فَسِيْحُوْا فِى الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِى الْكٰفِرِيْنَ ②

২. সুতরাং (হে মুশরিকরা) তোমরা এই ভূ-মন্ডলে চার মাস বিচরণ করে নাও এবং জেনে রাখো যে, তোমরা আল্লাহকে অক্ষম করতে পারবে না, আর নিশ্চয়ই আল্লাহ্ কাফিরদেরকে অপদস্থ করবেন।

وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِىْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ وَرَسُوْلُهٗ ؕ فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ③

৩. আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের পক্ষ থেকে হজ্জে আকবারের দিন (১০ যুলহিজ্জা) জনগণের সামনে ঘোষণা করা হচ্ছে যে, আল্লাহ ও তাঁর রাসূল উভয়ই এই মুশরিকদের (নিরাপত্তা প্রদান করা) হতে নিঃসম্পর্ক হচ্ছেন; তবে যদি তোমরা তাওবা করে নাও তাহলে তা তোমাদের জন্যে উত্তম, আর যদি তোমরা বিরত হও তবে জেনে রাখো যে, তোমরা আল্লাহকে অক্ষম করেত পারবে না, আর (হে মুহাম্মাদ ﷺ!) এই কাফিরদেরকে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তির সু-সংবাদ দিয়ে দাও।

اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْـًٔا وَّلَمْ يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ اَحَدًا

৪. কিন্তু হ্যাঁ! ঐসব মুশরিক হচ্ছে স্বতন্ত্র যাদের নিকট থেকে তোমরা অঙ্গীকার নিয়েছো, অতঃপর তারা

فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝٤

তোমাদের সাথে (অঙ্গীকার পালনে) একটুও ত্রুটি করেনি এবং তারা তোমাদের বিরুদ্ধে কাউকেও সাহায্য করেনি, সুতরাং তাদের সন্ধি-চুক্তিকে তাদের নির্ধারিত সময় পর্যন্ত পূর্ণ কর; নিশ্চয়ই আল্লাহ সংযমশীল-দেরকে পছন্দ করেন।

فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٥

৫. অতঃপর, যখন নিষিদ্ধ মাসগুলো অতিবাহিত হয়ে যায় তখন ঐ মুশরিকদেরকে যেখানে পাও (বধ) হত্যা কর, তাদেরকে গ্রেফতার কর, তাদেরকে অবরোধ করে রাখো এবং প্রত্যেক ঘাঁটিস্থলে তাদের সন্ধানে অবস্থান কর, অতঃপর যদি তারা তওবা করে নেয়, নামায আদায় করে এবং যাকাত দেয়, তবে তাহাদের পথ ছেড়ে দাও, নিশ্চয়ই আল্লাহ অতিশয় ক্ষমাপরায়ণ, পরম করুণাময়।[১]

১। (ক) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেনঃ যখন নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) ওফাত লাভ করলেন এবং আবূ বকর (রাযিআল্লাহু আনহু) খলিফা হলেন, তখন কতিপয় আরব মুরতাদ হয়ে কুফরীর দিকে ফিরে গেল। উমর (রাযিআল্লাহু আনহু) বললেন, হে আবূ বকর! আপনি কি করে এদের বিরুদ্ধে লড়াই করতে পারেন অথচ আল্লাহ্‌র রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, আমি ততক্ষণ পর্যন্ত লোকদের বিরুদ্ধে লড়াই করতে নির্দেশ পেয়েছি যতক্ষণ না তারা বলবে, 'লা-ইলাহা ইল্লাল্লাহ' (আল্লাহ্ ব্যতীত আর সত্য কোন ইলাহ নেই) এবং যে কেউ (কালেমা) 'লা-ইলাহা ইল্লাল্লাহ' বলবে, সে তার জান-মাল আমার হাত থেকে রক্ষা করল, যদি না সে (শরীয়তে শাস্তিযোগ্য কোন অপরাধে দোষী সাব্যস্ত হয়) কোন বৈধ কারণে (হত্যাযোগ্য হয়)। এবং তার হিসেব হবে আল্লাহ্‌র দরবারে। (বুখারী, হাদীস নং ৬৯২৪)

(খ) আবূ বকর বললেন, আল্লাহ্‌র কসম! যে নামায ও যাকাতের মধ্যে পার্থক্য করবে আমি তার বিরুদ্ধে লড়াই করব, কেননা যাকাত হচ্ছে ঐ হক যা (আল্লাহ্ প্রদত্ত নির্দেশের বলে) সম্পদ থেকে আদায় করতে হবে। আল্লাহ্‌র নামে কসম! যদি তারা রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর কাছে যে যাকাত দিত তা থেকে একটি বকরীর বাচ্চাও দিতে অস্বীকার করে তাহলে আমি তাদের বিরুদ্ধে লড়াই করব যতক্ষণ না তা পুনর্বহাল করতে পারি। উমর (রাযিআল্লাহু আনহু) বললেন, আল্লাহ্‌র কসম! এটা আর কিছুই নয়, বরং আমি লক্ষ্য করলাম যে, আল্লাহ্ তা'আলা আবূ বকর (রাযিআল্লাহু আনহু)-এর লড়াইর সিদ্ধান্ত গ্রহণের জন্য অন্তর খুলে দিয়েছেন, সুতরাং আমি উপলব্ধি করলাম যে, তার সিদ্ধান্ত সঠিক। (বুখারী, হাদীস নং ৬৯২৫)

وَاِنْ اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَاَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ ۝٦

৬. আর যদি মুশরিকদের মধ্য হতে কেউ তোমার কাছে আশ্রয় প্রার্থনা করে, তবে তাকে আশ্রয় দান কর, যাতে সে আল্লাহ্‌র কালাম শুনতে পায়, অতঃপর তাকে তার নিরাপদ স্থানে পৌঁছিয়ে দাও, এ আদেশ এ জন্যে যে, এরা এমন লোক, যারা পূর্ণ জ্ঞান রাখে না।

كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ رَسُوْلِهٖۤ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوْا لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝٧

৭. এই (কুরায়েশ), মুশরিকদের অঙ্গীকার আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের নিকট কিরূপে (বলবৎ) থাকবে? কিন্তু যাদের থেকে তোমরা মসজিদুল হারামের সন্নিকটে অঙ্গীকার নিয়েছো, অতএব যে পর্যন্ত তারা তোমাদের সাথে (চুক্তিতে) সরলভাবে থাকে, তোমরাও তাদের সাথে (চুক্তিতে) সরলভাবে থাকবে, নিঃসন্দেহে আল্লাহ মুত্তাকীদের পছন্দ করেন।

كَيْفَ وَاِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ يُرْضُوْنَكُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ وَتَاْبٰى قُلُوْبُهُمْ ۚ وَاَكْثَرُهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝٨

৮. তাদের অঙ্গীকারের কি মূল্য? অথচ অবস্থা এই যে, যদি তারা তোমাদের উপর বিজয় লাভ করে, তবে তোমাদের আত্মীয়তার সম্পর্কের দিকেও খেয়াল করবে না এবং অঙ্গীকারেরও না, তারা তোমাদেরকে নিজেদের মুখের কথায় সন্তুষ্ট করছে কিন্তু তাদের অন্তরসমূহ অস্বীকার করে, আর তাদের অধিকাংশ লোকই ফাসেক।

اِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٩

৯. তারা আল্লাহর আয়াতসমূহকে স্বল্প মূল্যে বিক্রয় করেছে, তারা তাঁর পথে বাধা সৃষ্টি করেছে, নিশ্চয় তাদের কাজ অতি মন্দ।

لَا يَرْقُبُوْنَ فِيْ مُؤْمِنٍ اِلًّا وَّ لَا ذِمَّةً ؕ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ ⑩

১০. তারা কোন মু'মিনের ব্যাপারে আত্মীয়তার মর্যদাও রক্ষা করে না এবং অঙ্গীকারেরও না; আর তারাই (বিশেষতঃ এ ব্যাপারে) হলো সীমালঙ্ঘনকারী।

فَاِنْ تَابُوْا وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ ؕ وَنُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ⑪

১১. অতএব যদি তারা তাওবা করে নেয় এবং নামায পড়তে থাকে ও যাকাত দিতে থাকে, তবে তারা তোমাদের দ্বীনি ভাই হয়ে যাবে; আর আমি জ্ঞানী লোকদের জন্যে আয়াতসমূহ (বিধানাবলী) বিস্তারিত-ভাবে বর্ণনা করে থাকি।

وَ اِنْ نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَ طَعَنُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ فَقَاتِلُوْٓا اَئِمَّةَ الْكُفْرِ ۙ اِنَّهُمْ لَآ اَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُوْنَ ⑫

১২. আর যদি তারা অঙ্গীকার করার পর নিজেদের শপথগুলোকে ভঙ্গ করে ফেলে এবং তোমাদের দ্বীনের প্রতি অপবাদ দেয়, তবে তোমরা কুফুরের অগ্রনায়কদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ কর, (এই অবস্থায়) তাদের শপথ রইলো না, হয়তো তারা বিরত থাকবে।

اَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوْا بِاِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ وَهُمْ بَدَءُوْكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ اَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشَوْهُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ⑬

১৩. তোমরা এমন লোকদের বিরুদ্ধে কেন যুদ্ধ করবে না যারা নিজেদের শপথগুলো ভঙ্গ করে ফেলেছে, আর রাসূলকে দেশান্তর করার সিদ্ধান্ত গ্রহণ করেছে এবং তারা তোমাদের বিরুদ্ধে নিজেরাই প্রথমে বিবাদ সৃষ্টি করেছে? তোমরা কি তাদেরকে ভয় করছো? বস্তুতঃ আল্লাহই হচ্ছেন এ বিষয়ে বেশি হকদার যে, তোমরা তাঁকে ভয় কর, যদি তোমরা মু'মিন হয়ে থাকো।

قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ وَيُخْزِهِمْ

১৪. তোমরা তাদের সাথে যুদ্ধ কর, আল্লাহ তোমাদের হাতে তাদের শাস্তি

وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٤﴾

প্রদান করবেন এবং তাদেরকে লাঞ্ছিত করবেন, আর তোমাদেরকে তাদের উপর সাহায্য করবেন এবং মু'মিনদের অন্তরসমূহকে প্রশান্ত ও ঠান্ডা করবেন।

وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٥﴾

১৫. আর তাদের অন্তরসমূহের ক্ষোভ (ও ক্রোধ) দূর করে দিবেন এবং (ঐ কাফিরদের মধ্যকার) যার প্রতি ইচ্ছা হয় তাওবা কবূল করবেন, আল্লাহ্ মহাজ্ঞানী প্রজ্ঞাময়।

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾

১৬. তোমরা কি ধারণা করেছো যে, তোমাদেরকে এভাবেই ছেড়ে দেয়া হবে? অথচ আল্লাহ তো এখনও সেই সব লোককে (প্রকাশ্যভাবে) প্রকাশ করেননি, যারা তোমাদের মধ্য হতে জিহাদ করেছে এবং আল্লাহ, তাঁর রাসূল ও মু'মিনগণ ছাড়া অন্য কাউকেও অন্তরঙ্গ বন্ধুরূপে গ্রহণ করেনি; আর আল্লাহ তোমাদের সমস্ত কর্মের পূর্ণ খবর রাখেন।

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۚۖ وَفِى النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾

১৭. মুশরিকরা যখন নিজেরাই নিজেদের কুফুরী স্বীকার করে সাক্ষ্য দেয় তখন তারা আল্লাহর মসজিদের রক্ষণাবেক্ষণ করবে এটা সঙ্গত নয়। তারা এমন যাদের সমস্ত কর্ম ব্যর্থ এবং তারা জাহান্নামে স্থায়ীভাবে অবস্থান করবে।

اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ ۫ فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٨﴾

১৮. হ্যাঁ, আল্লাহর মসজিদগুলো আবাদ তারাই করবে, যারা আল্লাহর প্রতি ও কিয়ামত দিবসের প্রতি ঈমান আনয়ন করে এবং নামায আদায় করে ও যাকাত প্রদান করে, আর আল্লাহ ছাড়া কাউকেও ভয় করে

না, বস্তুতঃ এ সকল লোক সম্বন্ধে আশা যে, তারা হেদায়েত প্রাপ্তদের অন্তর্ভুক্ত হবে।

১৯. তোমরা কি হাজীদের পানি পান করানোকে এবং মসজিদুল হারামের আবাদ (রক্ষণাবেক্ষণ করে) রাখাকে সেই ব্যক্তির (কাজের) সমান সাব্যস্ত করে রেখেছো, যে ব্যক্তি আল্লাহ ও কিয়ামত দিবসের প্রতি ঈমান এনেছে ও আল্লাহর পথে জিহাদ করেছে? তারা আল্লাহর নিকটে সমান নয়; আর আল্লাহ যালিম সম্প্রদায়কে হেদায়েত দান করেন না।

أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَجَاهَدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ لَا يَسْتَوُونَ عِنْدَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٩﴾

২০. যারা ঈমান এনেছে ও হিজরত করেছে, আর নিজেদের ধন ও প্রাণ দ্বারা আল্লাহর পথে জিহাদ করেছে, তারা আল্লাহর নিকটে অতি বড় মর্যাদাবান আর তারাই হচ্ছে পূর্ণ সফলকাম।[১]

الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ أَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللَّهِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿٢٠﴾

১। (ক) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে, ব্যক্তি আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের প্রতি ঈমান আনে, নামায কায়েম করে এবং রোযা রাখে, সে আল্লাহ্‌র পথে জিহাদ করুক কিংবা তাঁর জন্মভূমিতে চুপচাপ বসে থাকুক, তাকে জান্নাত দান করা আল্লাহ্‌র জন্য কর্তব্য হয়ে দাঁড়ায়। লোকেরা বলল, হে আল্লাহ্‌র রাসূল! আমরা কি এ সুসংবাদ অন্য লোকদেরকে জানাব না? তিনি বললেন, আল্লাহ্ তাঁর পথে জিহাদকারীদের জন্য জান্নাতে একশ'টি মর্যাদার স্তর তৈরি করে রেখেছেন। যে কোন দু'টি স্তরের মাঝখানে আসমান ও যমীনের ব্যবধান। কাজেই তোমরা আল্লাহ্‌র কাছে প্রার্থনা করলে ফেরদাউসের জন্য প্রার্থনা করো। কেননা সেটিই জান্নাতের সর্বোচ্চ ও সর্বোত্তম অংশ। এরই উপরিভাগে মহান করুণাময় আর-রাহমানের আরশ, যেখান থেকে জান্নাতের নদীসমূহ প্রবাহিত হচ্ছে। (বুখারী, হাদীস নং ২৭৯০)

(খ) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেন, আমি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছিঃ সেই পবিত্র সত্তার শপথ যাঁর মুঠোর মধ্যে আমার প্রাণ! যদি কিছু সংখ্যক মুসলমান এমন না হতো যারা আমার সাথে জিহাদে অংশগ্রহণ করার পরিবর্তে পেছনে থেকে যাওয়া আদৌ পছন্দ করবে না এবং যাদের সবাইকে আমি সাওয়ারীর জন্তু সরবরাহ করতে পারবো না বলে আশঙ্কা না হতো, তাহলে আল্লাহ্‌র পথে যুদ্ধরত কোন ক্ষুদ্র সেনাদল থেকেও আমি পেছনে থাকতাম না। যাঁর হাতে আমার প্রাণ সেই মহান সত্তার শপথ করে বলছি, আমার নিকট অত্যন্ত পছন্দনীয় বিষয় হচ্ছে আমি আল্লাহ্‌র পথে নিহত (শহীদ) হয়ে যাই অতঃপর জীবন লাভ করি, আবার নিহত (শহীদ) হই, অতঃপর আবার জীবন লাভ করি, আবার নিহত (শহীদ) হই, পুনরায় জীবন লাভ করি এবং পুনরায় নিহত (শহীদ) হই। (বুখারী, হাদীস নং ২৭৯৭)

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ﴿٢١﴾

২১. তাদের প্রতিপালক তাদেরকে নিজের পক্ষ থেকে সুসংবাদ দিচ্ছেন বড় রহমতের ও অতি সন্তুষ্টির, আর এমন জান্নাতের, যার মধ্যে তাদের জন্যে চিরস্থায়ী নিয়ামত থাকবে।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٢﴾

২২. এর মধ্যে তারা অনন্তকাল থাকবে, নিঃসন্দেহে আল্লাহর নিকট রয়েছে মহা পুরস্কার।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا اٰبَاۗءَكُمْ وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَاۗءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَي الْاِيْمَانِ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. হে মু'মিনগণ! তোমরা নিজেদের পিতৃদেরকে ও ভ্রাতাদেরকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করো না যদি তারা ঈমানের মুকাবিলায় কুফ্‌রকে প্রিয় মনে করে; আর তোমাদের মধ্য হতে যারা তাদের সাথে বন্ধুত্ব রাখবে, বস্তুতঃ ঐ সব লোকই হচ্ছে বড় অত্যাচারী।

قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَاۗؤُكُمْ وَاَبْنَاۗؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَاَمْوَالُ ۨاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٤﴾

২৪. (হে নবী ﷺ)! তুমি তাদেরকে বলে দাওঃ যদি তোমাদের পিতৃবর্গ, তোমাদের পুত্রগণ, তোমাদের ভ্রাতাগণ, তোমাদের স্ত্রীগণ, তোমাদের স্বগোত্র, আর ঐ সব ধন-সম্পদ যা তোমরা অর্জন করছো, আর ঐ ব্যবসায় যাতে তোমরা মন্দা পড়বার আশঙ্কা করছো এবং ঐ গৃহসমূহ যা তোমরা পছন্দ করছো, (যদি এসব) তোমাদের নিকট অধিক প্রিয় হয় আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের চেয়ে এবং তাঁর পথে জিহাদ করার চেয়ে, তবে তোমরা প্রতীক্ষা করতে থাকো এই পর্যন্ত যে, আল্লাহ নিজের নির্দেশ পাঠিয়ে দেন, (অর্থাৎ আযাব) আর আল্লাহ ফাসেক সম্প্রদায়কে হেদায়েত দান করেন না।

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ۚ ﴿٢٥﴾

২৫. অবশ্যই আল্লাহ তোমাদেরকে (যুদ্ধে) বহু জায়গায় (কাফিরদের উপর) বিজয়ী করেছেন এবং হুনায়েনের দিনেও, যখন তোমাদেরকে তোমাদের সংখ্যাধিক্য গর্বে আনন্দিত করেছিল, অতঃপর সেই সংখ্যাধিক্য তোমাদের কোনই কাজে আসেনি, আর ভূ-পৃষ্ঠ (নিজের প্রশস্ততা সত্ত্বেও তো) তোমাদের উপর সংকীর্ণ হতে লাগলো, অতঃপর তোমরা পৃষ্ঠ প্রদর্শন পূর্বক পলায়ন করলে।

ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ۚ وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦﴾

২৬. অতঃপর আল্লাহ নিজ রাসূলের প্রতি এবং অন্যান্য মু'মিনদের প্রতি নিজের (পক্ষ হতে) প্রশান্তি নাযিল করলেন এবং এমন সৈন্যদল (অর্থাৎ ফেরেশ্‌তা) নাযিল করলেন যাদেরকে তোমরা দেখনি, আর কাফিরদেরকে শাস্তি প্রদান করলেন; আর এটা হচ্ছে কাফিরদের কর্মফল।

ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٧﴾

২৭. অতঃপর এরপরেও (ঐ কাফিরদের মধ্য হতে) যার প্রতি ইচ্ছা তাওবা কবূল করবেন। আর আল্লাহ হচ্ছেন অতি ক্ষমাশীল, পরম করুণাময়।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖۤ اِنْ شَآءَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٨﴾

২৮. হে মু'মিনগণ! মুশরিকরা হচ্ছে একেবারেই অপবিত্র, অতএব তারা যেন এ বছরের পর মসজিদুল হারামের নিকটেও আসতে না পারে, আর যদি তোমরা দরিদ্রের ভয় কর তবে আল্লাহ্ নিজ অনুগ্রহে তোমাদেরকে অভাবমুক্ত করে দিবেন, যদি তিনি চান, নিশ্চয়ই

আল্লাহ অতিশয় জ্ঞানী বড়ই হিকমতওয়ালা।

قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٢٩﴾

২৯. যেসব আহলে কিতাব আল্লাহর প্রতি ঈমান রাখে না এবং কিয়ামত দিবসের প্রতিও না, আর ঐ বস্তুগুলোকে হারাম মনে করে না যেগুলোকে আল্লাহ ও তাঁর রাসূল হারাম বলেছেন, আর সত্য দ্বীন (অর্থাৎ ইসলামকে) গ্রহণ করে না, তাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করতে থাকো যে পর্যন্ত না তারা (অধীনতা স্বীকার করে (প্রজারূপে) নিজ হাতে জিযিয়া[১] দিতে স্বীকৃত হয়।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٠﴾

৩০. ইয়াহূদীরা বলেঃ উযায়ের আল্লাহর পুত্র এবং নাসারারা বলেঃ মাসীহ্ আল্লাহর পুত্র, এটা তাদের মুখের কথা মাত্র (বাস্তবে তা কিছুই নয়), তারা তো তাদের ন্যায়ই কথা বলছে যারা তাদের পূর্বে কাফির হয়েছে, আল্লাহ তাদেরকে ধ্বংস করুন! তারা উল্টো কোন দিকে যাচ্ছে!

اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٣١﴾

৩১. তারা আল্লাহ্‌কে ছেড়ে নিজেদের আলেম ও ধর্ম-যাজকদেরকে প্রভু বানিয়ে নিয়েছে এবং মারইয়ামের পুত্র মাসীহ্‌কেও অথচ তাদের প্রতি শুধু এই আদেশ করা হয়েছিল যে, তারা শুধুমাত্র এক মা'বূদের ইবাদত করবে যিনি ব্যতীত কোন সত্য

১। (ক) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তোমরা ইয়াহূদীদের বিরুদ্ধে লড়াইয়ে লিপ্ত না হওয়া পর্যন্ত এবং পাথরের আড়ালে লুকানো ইয়াহূদী সম্পর্কে উক্ত পাথর একথা না বলা পর্যন্ত কিয়ামত হবে না। হে মুসলিম! এই (দেখ) আমার আড়ালে ইয়াহূদী লুকিয়ে আছে, একে হত্যা কর। (বুখারী, হাদীস নং ২৯২৬)

উপাস্য নেই। তিনি তাদের অংশী স্থির করা হতে পবিত্র।

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٣٢﴾

৩২. তারা এরূপ চাচ্ছে যে, আল্লাহর নূরকে নিজেদের মুখের ফুৎকার দ্বারা নিভিয়ে দেবে, অথচ আল্লাহ স্বীয় নূর (দ্বীন ইসলাম)-কে পূর্ণত্বে পৌঁছানো ব্যতীত ক্ষান্ত হবেন না, যদিও কাফিররা অপছন্দ করে।

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾

৩৩. তিনি সেই সত্তা যিনি নিজ রাসূলকে হিদায়াত (কুরআন) এবং সত্য দ্বীন সহকারে প্রেরণ করেছেন, যেন তাকে সকল দ্বীনের উপর বিজয়ী করে দেন, যদিও মুশরিকরা অপছন্দ করে।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣٤﴾

৩৪. হে মু'মিনগণ! অধিকাংশ (ইয়াহূদী ও খ্রিস্টানদের) আলেম ও ধর্মযাজকগণ মানুষের ধন-সম্পদ অন্যায়রূপে ভক্ষণ করে এবং আল্লাহর পথ হতে বিরত রাখে, আর যারা (অতি লোভের বশবর্তী হয়ে) স্বর্ণ ও রৌপ্য জমা করে রাখে এবং তা আল্লাহর পথে ব্যয় করে না, (হে মুহাম্মাদ ﷺ!) তুমি তাদেরকে যন্ত্রণাদায়ক এক শাস্তির সুসংবাদ শুনিয়ে দাও।

يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿٣٥﴾

৩৫. যে দিন জাহান্নামের আগুনে ঐগুলোকে উত্তপ্ত করা হবে। অতঃপর তা দ্বারা তাদের ললাটসমূহে, পার্শ্বদেশসমূহে এবং পৃষ্ঠদেশসমূহে দাগ দেয়া হবে, (আর বলা হবে) এটা হচ্ছে ওটাই যা তোমরা নিজেদের জন্যে সঞ্চয় করে

রেখেছিলে, সুতরাং এখন নিজেদের সঞ্চয়ের স্বাদ গ্রহণ কর।

إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِندَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ۚ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ ۚ فَلَا تَظْلِمُوا فِيهِنَّ أَنفُسَكُمْ ۚ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ كَافَّةً كَمَا يُقَاتِلُونَكُمْ كَافَّةً ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٦﴾

৩৬. নিশ্চয়ই মাসসমূহের সংখ্যা হচ্ছে আল্লাহর নিকট বারো মাস আল্লাহর কিতাবে, আল্লাহর যমীন ও আসমানসমূহ সৃষ্টি করার দিন হতেই, এর মধ্যে বিশেষরূপে চারটি মাস হচ্ছে সম্মানিত;[১] এটাই হচ্ছে সুপ্রতিষ্ঠিত দ্বীন। অতএব তোমরা এ মাসগুলোতে (দ্বীনের বিরুদ্ধাচরণ ও এই মাসগুলোর সম্মানহানী করে) নিজেদের ক্ষতিসাধন করো না, আর সকল মুশরিকদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ কর, যেমন তারা তোমাদের সকলের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করে, আর জেনে রেখো যে, আল্লাহ মুত্তাকীদের সাথে রয়েছেন।

إِنَّمَا النَّسِيءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُحِلُّونَهُ عَامًا وَيُحَرِّمُونَهُ عَامًا لِّيُوَاطِئُوا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ فَيُحِلُّوا مَا حَرَّمَ اللَّهُ ۚ زُيِّنَ لَهُمْ سُوءُ أَعْمَالِهِمْ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٣٧﴾

৩৭. নিশ্চয় মাসগুলো পিছিয়ে দেয়া কুফরের মাত্রাকে আরোও বাড়িয়ে দেয়, যা দ্বারা কাফিরদেরকে পথভ্রষ্ট করা হয় (এইরূপে) যে, তারা সেই হারাম মাসকে কোন বছর হালাল করে নেয় এবং কোন বছর হারাম মনে করে, আল্লাহ যেই মাসগুলোকে হারাম করেছেন, যেন তারা সেগুলোর সংখ্যা পূর্ণ করে নিতে পারে, অতঃপর তারা আল্লাহর নিষিদ্ধ মাসগুলোকে হালাল করে নেয়, তাদের দুষ্কর্মগুলো তাদের কাছে ভাল মনে হয়, আর আল্লাহ এইরূপ কাফিরদেরকে হিদায়াত (এর তাওফীক দান) করেন না।

১। চারটি সম্মানিত মাসগুলো হচ্ছেঃ যুলকাদাহ, জুলহিজ্জাহ, মুহাররাম ও রজব।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمُ ٱنفِرُوا۟ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ٱثَّاقَلْتُمْ إِلَى ٱلْأَرْضِ ۚ أَرَضِيتُم بِٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا مِنَ ٱلْءَاخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَٰعُ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا فِى ٱلْءَاخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٣٨﴾

৩৮. হে মু'মিনগণ! তোমাদের কি হলো যে, যখন তোমাদেরকে বলা হয়– আল্লাহর পথে (জিহাদের জন্যে) বেরিয়ে পড়, তখন তোমরা মাটিতে লেগে থাকো (অলসভাবে বসে থাকো); তবে কি তোমরা পরকালের বিনিময়ে পার্থিব জীবনের উপর *পরিতুষ্ট হয়ে গেলে?* বস্তুতঃ পার্থিব জীবনের ভোগবিলাস তো আখিরাতের তুলনায় কিছু নয়, অতি সামান্য![১]

إِلَّا تَنفِرُوا۟ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا وَيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ شَيْـًٔا ۗ وَٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٩﴾

৩৯. যদি তোমরা বের না হও, তবে আল্লাহ তোমাদেরকে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি প্রদান করবেন এবং তোমাদের পরিবর্তে অন্য এক জাতি সৃষ্টি করে দেবেন, আর তোমরা আল্লাহর কোনই ক্ষতি করতে পারবে না। আল্লাহ্ সর্ব বিষয়ে সর্ব শক্তিমান।

إِلَّا تَنصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ ٱللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ ثَانِىَ ٱثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِى ٱلْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَٰحِبِهِۦ لَا تَحْزَنْ إِنَّ ٱللَّهَ مَعَنَا ۖ فَأَنزَلَ ٱللَّهُ سَكِينَتَهُۥ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُۥ بِجُنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ ٱلسُّفْلَىٰ ۗ وَكَلِمَةُ ٱللَّهِ هِىَ ٱلْعُلْيَا ۗ وَٱللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٤٠﴾

৪০. যদি তোমরা তাকে (রাসূলুল্লাহকে) সাহায্য না কর তবে আল্লাহই (তার সাহায্য করবেন যেমন তিনি) তার সাহায্য করেছিলেন সেই সময়ে যখন কাফিররা তাঁকে দেশান্তর করে দিয়েছিল, তিনি দু'জনের মধ্যে দ্বিতীয় ব্যক্তি (রাসূল ﷺ) যেই সময় উভয়ে গুহায় ছিলেন যখন তিনি স্বীয় সাথীকে (আবূ বকরকে ﷺ)

১। আনাস ইবনে মালিক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, এমন কোন ব্যক্তি নেই যে, মৃত্যুর পরে দুনিয়ায় ফিরে আসতে আনন্দ পাবে, যে আল্লাহ্র কাছে কল্যাণ প্রাপ্ত হয়েছে, এমনকি তাকে দুনিয়া ও তাঁর সমস্ত সম্পদ দান করা হলেও; কিন্তু শহীদগণ তাঁর ব্যতিক্রম, কেননা সে (বাস্তব ক্ষেত্রে) শাহাদাতের মর্যাদা দেখতে পারবে। সুতরাং সে দুনিয়ায় ফিরে এসে আর একবার (আল্লাহ্র পথে) প্রাণ দিতে আনন্দ অনুভব করবে। (বুখারী, হাদীস নং ২৭৯৫)

বলেছিলেন তুমি চিন্তিত হয়ো না, নিশ্চয়ই আল্লাহ (তাঁর সাহায্য) আমাদের সাথে রয়েছেন, অতঃপর আল্লাহ তার প্রতি স্বীয় প্রশান্তি নাযিল করলেন এবং তাঁকে সাহায্য করলেন এমন বাহিনী দ্বারা যাদেরকে তোমরা দেখতে পাওনি এবং আল্লাহ কাফিরদের বাক্য নীচু (অর্থাৎ প্রচেষ্টা ব্যর্থ) করে দিলেন, আর আল্লাহর বাণীই সমুচ্চ রইলো, আর আল্লাহ হচ্ছেন প্রভাবশালী, মহাবিজ্ঞ।

اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾

৪১. তোমরা বের হয়ে পড় স্বল্প সরঞ্জামের সাথে আর প্রচুর সরঞ্জামের সাথে[১] এবং আল্লাহর পথে নিজেদের ধন-সম্পদ ও প্রাণ দ্বারা যুদ্ধ কর, এটা তোমাদের জন্যে অতি উত্তম, যদি তোমরা জানতে।

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْۢ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ؕ وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٤٢﴾

৪২. যদি তাড়াতাড়ি অর্থ সম্পদ বা আসবাবপত্র লাভের ব্যবস্থা থাকতো আর সফরও সহজ হতো, তবে তারা অবশ্যই তোমার সহগামী হতো; কিন্তু তাদের তো পথের দূরত্বই দীর্ঘতর বোধ হতে লাগলো; আর তারা এখনই আল্লাহর নামে শপথ করে বলবেঃ যদি আমাদের সাধ্য থাকতো তবে আমরা নিশ্চয়ই তোমাদের সাথে বের হতাম, তারা (মিথ্যা বলে) নিজেরাই নিজেদেরকে ধ্বংস করছে, আর আল্লাহ জানেন যে, তারা অবশ্যই মিথ্যাবাদী।

১। خفافا وثقالا-এর অর্থ বিভিন্ন হতে পারে- যেমনঃ হালকা পাতলা হও আর মোটাভারী হও, একাকী হও বা জামাআত বদ্ধ হও, খুশি হও বা নাখোশ, গরীব হও বা আমীর হও, যুবক হও বা বৃদ্ধ হও ইত্যাদি। ইমাম শাওকানী (রহঃ) বলেনঃ আয়াতের প্রয়োগ সবগুলো অর্থের উপরই হতে পারে।

عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٤٣﴾

৪৩. আল্লাহ তোমাকে ক্ষমা করলেন, (কিন্তু) তুমি তাদেরকে (এত শীঘ্র) কেন অনুমতি দিয়েছিলে (যুদ্ধে অনুপস্থিত থাকার) যে পর্যন্ত না সত্যবাদী লোকেরা তোমার কাছে প্রকাশ হয়ে পড়তো এবং তুমি মিথ্যাবাদীদেরকে জেনে নিতে।

لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٤﴾

৪৪. যারা আল্লাহর প্রতি ও পরকালের প্রতি ঈমান রাখে, তারা নিজেদের ধন-সম্পদ ও প্রাণ দ্বারা জিহাদ করার ব্যাপারে তোমার কাছে অব্যাহতি প্রার্থনা করবে না, আর আল্লাহ এই পরহেযগার লোকদের সম্বন্ধে খুব অবগত আছেন।

اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ﴿٤٥﴾

৪৫. অবশ্য ঐসব লোক তোমার কাছে অব্যাহতি চেয়ে থাকে, যারা আল্লাহর প্রতি ও আখিরাতের প্রতি ঈমান রাখে না, আর তাদের অন্তরসমূহ সন্দেহে নিপতিত রয়েছে, অতএব তারা তাদের সংশয়ের আবর্তে ঘুর্ণিপাক খাচ্ছে।

وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٤٦﴾

৪৬. আর যদি তারা (যুদ্ধে) যাত্রা করার ইচ্ছা করতো, তবে এর কিছু আসবাবপত্র তো প্রস্তুত করতো; কিন্তু আল্লাহ তাদের (যুদ্ধে যাওয়ার জাগরণকে) যাত্রাকে অপছন্দ করেছেন, এ জন্যে তাদেরকে বিরত রাখলেন এবং বলে দেয়া হলো, তোমরাও এখানেই অক্ষম লোকদের সাথে বসে থাকো।

لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا وَّلَاَاوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ

৪৭. যদি তারা তোমাদের সাথে বের হতো, তবে তোমাদের মাঝে ফেৎনা ফাসাদই বৃদ্ধি করতো। আর তারা

لَهُمْ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾

তোমাদের মধ্যে ফাসাদ সৃষ্টি করার উদ্দেশ্যে দৌড়াদৌড়ি করে ফিরতো, আর তোমাদের মধ্যে তাদের কতিপয় গুপ্তচর বিদ্যমান রয়েছে; আল্লাহ এই যালিমদের সম্বন্ধে খুব অবগত রয়েছেন।

لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٤٨﴾

৪৮. তারা তো পূর্বেও ফাসাদ সৃষ্টির চেষ্টা করেছিল, আর তোমার (ক্ষতি সাধনের) জন্যে কর্মসমূহ উলট-পালট করেছিল, অবশেষে সত্য অঙ্গীকার এসে পড়লো এবং আল্লাহর ফায়সালাই বিজয় (বদরের বিজয়) লাভ করলো, আর তারা অপছন্দ-কারীই থেকে গেল।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ۗ اَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ۗ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٩﴾

৪৯. আর তাদের মধ্যে কেউ কেউ এমন আছে, যে বলেঃ আমাকে (যুদ্ধে গমন না করার) অনুমতি দিন এবং আমাকে বিপদে ফেলবেন না, (ভালরূপে বুঝে নাও যে,) তারা তো বিপদে পড়েই গেছে, আর নিশ্চয়ই জাহান্নাম এই কাফিরদেরকে বেষ্টনকারী।

اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَاِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَآ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَّهُمْ فَرِحُوْنَ ﴿٥٠﴾

৫০. যদি তোমার প্রতি কোন মঙ্গল উপস্থিত হয় তবে তাদেরকে খুব খারাপ লাগে, আর যদি তোমার উপর কোন বিপদ এসে পড়ে, তখন তারা বলেঃ আমরা তো প্রথম থেকেই নিজেদের সাবধানতার পথ অবলম্বন করেছিলাম, এবং তারা খুশী হয়ে চলে যায়।

قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ

৫১. তুমি বলে দাওঃ আল্লাহ আমাদের জন্যে যা নির্ধারণ করে

مَوْلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾

দিয়েছেন তা ছাড়া অন্য কোন বিপদ আমাদের উপর আসতে পারে না, তিনিই আমাদের কর্মবিধায়ক এবং অভিভাবক আর সকল মু'মিনেরই কর্তব্য হলো যে, তারা যেন নিজেদের যাবতীয় কাজে আল্লাহর উপরই নির্ভর করে।

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَآ اِلَّآ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ؕ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖٓ اَوْ بِاَيْدِيْنَا ۖ فَتَرَبَّصُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ ﴿٥٢﴾

৫২. (হে নবী ﷺ!) তুমি বলে দাওঃ তোমরা তো আমাদের জন্যে দু'টি মঙ্গলের মধ্যে একটি মঙ্গলের প্রতীক্ষায় রয়েছো; আর আমরা তোমাদের জন্যে এই প্রতীক্ষা করছি যে, আল্লাহ তোমাদের উপর কোন শাস্তি প্রদান করবেন নিজের পক্ষ হতে অথবা আমাদের হাত দ্বারা, অতএব তোমরা অপেক্ষা করতে থাকো, আমরাও তোমাদের সাথে অপেক্ষমান রইলাম।

قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ؕ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٥٣﴾

৫৩. তুমি (আরও) বলে দাওঃ তোমরা সন্তুষ্টির সাথে ব্যয় কর কিংবা অসন্তুষ্টির সাথে, তোমাদের পক্ষ থেকে তা কখনই গৃহীত হবে না; নিঃসন্দেহে তোমরা হচ্ছো ফাসেক সম্প্রদায়।

وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّآ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٥٤﴾

৫৪. আর তাদের দান-খয়রাত গ্রহণ করতে নিষেধ করা হয়েছে এ জন্যে যে, তারা আল্লাহর সাথে ও তাঁর রাসূলের সাথে কুফরী করেছে, আর তারা নামায অলসতার সাথে ছাড়া পড়ে না[১], আর তারা দান করে না,

---

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ মুনাফিকের জন্য ফজর ও এশার নামাযের চাইতে অন্য কোন নামায কঠিন নয়। তারা যদি এ দু'ওয়াক্তের নামাযের সওয়াব জানতো, তাহলে হামাগুড়ি দিয়ে হলেও তারা এই (দু'ওয়াক্তের) নামাযে আসত। আমি

কিছু করলেও তা অনিচ্ছার সাথে (করে)।

فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ تَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٥٥﴾

৫৫. অতএব তাদের ধন-সম্পদ এবং সন্তানাদি যেন তোমাকে বিস্মিত না করে; আল্লাহর ইচ্ছা শুধু এটাই যে, এসব বস্তু দ্বারা তাদেরকে পার্থিব জীবনে শাস্তি দেবেন এবং তাদের প্রাণ কুফরীরই অবস্থায় বের হয়।

وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ؕ وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَّفْرَقُوْنَ ﴿٥٦﴾

৫৬. আর তারা আল্লাহর কসম করে বলে যেঃ তারা (মুনাফিকরা) তোমাদেরই অন্তর্ভুক্ত; অথচ তারা তোমাদের অন্তর্ভুক্ত নয়; বরং তারা হচ্ছে ভীতু সম্প্রদায়।

لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ﴿٥٧﴾

৫৭. যদি তারা কোন আশ্রয়স্থল পেতো, অথবা গুহা কিংবা লুকিয়ে থাকার একটু স্থান পেতো, তবে তারা অবশ্যই ক্ষিপ্রগতিতে সেই দিকে ধাবিত হতো।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِى الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَآ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ﴿٥٨﴾

৫৮. আর তাদের মধ্যে এমন কতক লোক রয়েছে যারা সাদকার (বন্টন) ব্যাপারে তোমার প্রতি দোষারোপ করে, অতঃপর যদি তারা ঐ সমস্ত সাদকা হতে কিছু (অংশ) তাদেরকে দেয়া হয় তবে তারা সন্তুষ্ট হয়, আর যদি তারা তা থেকে (অংশ) না পায় তবে তারা অসন্তুষ্ট হয়ে যায়।

وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۙ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ

৫৯. তাদের জন্যে উত্তম হতো যদি তারা ওর প্রতি সন্তুষ্ট থাকতো যা কিছু তাদেরকে আল্লাহ ও তাঁর রাসূল

সংকল্প করেছিলাম মুয়ায্জীনকে একামত দেবার আদেশ করব এরপর কাউকে ইমামতি করতে বলব এবং যারা এখনও নামাযে শরীক হয়নি আমি আগুন দিয়ে তাদের ঘরগুলো জ্বালিয়ে দেব। (কিন্তু তাদের পরিবার-পরিজনের কথা ভেবে আমার এ ইচ্ছা ত্যাগ করি।) (বুখারী, হাদীস নং ৬৫৭)

وَرَسُوْلُهٗٓ ۙ اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ۝٥٩

দান করেছিলেন, আর বলতো আমাদের পক্ষে আল্লাহই যথেষ্ট, ভবিষ্যতে আল্লাহ স্বীয় অনুগ্রহে আমাদেরকে আরো দান করবেন এবং তাঁর রাসূলও, আমরা আল্লাহরই প্রতি আগ্রহী রইলাম।

اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٦٠

৬০. (ফরয) সাদকাগুলো তো হচ্ছে শুধুমাত্র ফকীর মিসকীনদের জন্য, আর এই সাদকা (আদায়ের) জন্যে নিযুক্ত কর্মচারীদের এবং যাদের মন রক্ষা করতে (অভিপ্রায়) হয় (তাদের), আর দাস মুক্ত করার কাজে এবং ঋণগ্রস্তদের (হাওলাত পরিশোধে), আল্লাহর রাস্তায় আর মুসাফিরদের সাহায্যার্থে, এটা আল্লাহর পক্ষ হতে ফরয (নির্ধারিত), আর আল্লাহ মহাজ্ঞানী অতি প্রজ্ঞাময়।

وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ؕ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٦١

৬১. আর তাদের মধ্যে এমন কতিপয় লোক আছে, যারা নবীকে কষ্ট দেয় এবং বলে যে, তিনি প্রত্যেক কথায় কর্ণপাত করে থাকেন; তুমি বলে দাওঃ এই নবী তো কর্ণপাত করে থাকেন সেই কথাতেই যা তোমাদের জন্যে কল্যাণকর, তিনি আল্লাহর (কথাগুলো ওহী মারফত জ্ঞাত হয়ে তার) প্রতি ঈমান আনয়ন করেন, আর মু'মিনদের (কথাকে) বিশ্বাস করেন, আর তিনি ঐসব লোকের প্রতি অনুগ্রহ করেন যারা তোমাদের মধ্যে ঈমান আনয়ন করে; আর যারা আল্লাহর রাসূলকে কষ্ট দেয়, তাদের জন্যে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি রয়েছে।

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾

৬২. তারা তোমাদের কাছে আল্লাহর শপথ করে থাকে, যেন তারা তোমাদেরকে সন্তুষ্ট করতে পারে, আল্লাহ ও তাঁর রাসূল হচ্ছেন বেশি হকদার (এই বিষয়ে) যে, তারা যদি সত্যিকারের মু'মিন হয়ে থাকে, তবে তারা যেন তাঁকে সন্তুষ্ট করে।

اَلَمْ يَعْلَمُوْۤا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٣﴾

৬৩. তারা কি জানে না যে, যে ব্যক্তি আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের বিরুদ্ধাচরণ করে, তবে এটা সুনিশ্চিত যে, এমন লোকের ভাগ্যে রয়েছে জাহান্নামের আগুন এরূপভাবে যে, সে তাতে অনন্তকাল থাকবে, এটা হচ্ছে চরম লাঞ্ছনা।

يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ﴿٦٤﴾

৬৪. মুনাফিকরা আশঙ্কা করে যে, তাদের (মুসলমানদের) প্রতি না জানি এমন কোন সূরা নাযিল হয়ে পড়ে যা তাদেরকে সেই মুনাফিকদের অন্তরের কথা অবহিত করে দেয়, (হে নবী ﷺ)! তুমি বলে দাওঃ হ্যাঁ, তোমরা বিদ্রূপ করতে থাকো, নিশ্চয়ই আল্লাহ সেই বিষয়কে প্রকাশ করেই দিবেন, যার তোমরা আশঙ্কা করছো।

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ؕ قُلْ اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٦٥﴾

৬৫. আর যদি তাদেরকে জিজ্ঞেস কর, তবে তারা বলে দেবেঃ আমরা তো শুধু আলাপ-আলোচনা ও হাসি-তামাসা করছিলাম; তুমি বলে দাওঃ তবে কি তোমরা আল্লাহ; তাঁর আয়াতসমূহ এবং তাঁর রাসূলের প্রতি হাসি-তামাসা করছিলে?

لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ؕ اِنْ

৬৬. তোমরা ওযর আপত্তি প্রদর্শন করো না, তোমরা তো ঈমান কবূলের

نَّعْفُ عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَآئِفَةًۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿٦٦﴾

পর কুফরী করেছো; যদিও আমি তোমাদের মধ্য হতে কতককে ক্ষমা করে দেই, তবুও কতককে শাস্তি দিবই, কারণ তারা অপরাধী ছিল।

اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ؕ نَسُوا اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ؕ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٦٧﴾

৬৭. মুনাফিক পুরুষেরা এবং মুনাফিক নারীরা পরস্পর সবাই এক রকম, তারা অসৎকর্মের (অর্থাৎ কুফর ও ইসলাম বিরোধিতা) নির্দেশ দেয় এবং সৎকর্ম হতে বিরত রাখে, আর নিজেদের হাতসমূহকে (আল্লাহর পথে ব্যয় করা হতে) বন্ধ করে রাখে, তারা আল্লাহকে ভুলে গিয়েছে, সুতরাং তিনিও তাদেরকে ভুলে গিয়েছেন, নিঃসন্দেহে এই মুনাফিকরাই হচ্ছে ফাসেক।

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٦٨﴾

৬৮. আল্লাহ মুনাফিক পুরুষদের ও মুনাফিক নারীদের এবং কাফিরদের সাথে জাহান্নামের আগুনের অঙ্গীকার করেছেন, যাতে তারা চিরকাল থাকবে, এটা তাদের জন্যে যথেষ্ট, আর আল্লাহ তাদেরকে অভিশাপ করেছেন এবং তাদের জন্যে রয়েছে চিরস্থায়ী শাস্তি।

كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّاَكْثَرَ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ؕ فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا

৬৯. তোমাদের অবস্থা ওদের ন্যায় যারা তোমাদের পূর্বে গত হয়েছে, যারা ছিল তোমাদের চেয়ে অধিকতর শক্তিশালী এবং ধন-সম্পদ ও সন্তানাদির প্রাচুর্যও ছিল তোমাদের চেয়ে অনেক বেশি; ফলতঃ তারা নিজেদের (পার্থিব) অংশ দ্বারা যথেষ্ট উপকার লাভ করেছে, অতঃপর তোমরাও তোমাদের (পার্থিব) অংশ

وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٩﴾

দ্বারা খুব উপকার লাভ করলে, যেমন তোমাদের পূর্ববর্তীগণ নিজেদের অংশ দ্বারা ফলভোগ করেছিল, আর তোমরাও ব্যাঙ্গাত্মক হাসি-তামাসায় এরূপভাবে নিমগ্ন হয়েছো, যেমন তারা ও নিমগ্ন হয়েছিল; আর তাদের (নেক) আমলসমূহ বিনষ্ট হয়ে গিয়েছে দুনিয়াতে ও আখিরাতে, এই সমস্ত লোকেরাই ক্ষতিগ্রস্ত।

اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۙ وَقَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ؕ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٧٠﴾

৭০. তাদের কাছে কি ঐসব লোকের সংবাদ পৌঁছেনি যারা তাদের পূর্বে গত হয়েছে? (যেমন) নূহ সম্প্রদায় এবং আ'দ ও সামূদ সম্প্রদায়, ইব্‌রাহীমের সম্প্রদায় এবং মাদইয়ানের অধিবাসীগণ এবং মু'তাফিকাতের অধিবাসীগণ (বিধ্বস্ত জনপদগুলোর)। তাদের কাছে তাদের রাসূলগণ স্পষ্ট নিদর্শনসমূহ নিয়ে এসেছিলেন, বস্তুতঃ আল্লাহ তো তাদের প্রতি অত্যাচার করেননি; বরং তারা নিজেরাই নিজেদের প্রতি অত্যাচার করেছিল।

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾

৭১. আর মু'মিন পুরুষরা ও মু'মিনা নারীরা হচ্ছে পরস্পর একে অন্যের বন্ধু, তারা সৎ কাজের আদেশ দেয় এবং অসৎ হতে নিষেধ করে, আর নামায কায়েম করে ও যাকাত প্রদান করে, আর আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের আদেশ মেনে চলে, এসব লোকের প্রতি আল্লাহ অবশ্যই করুণা বর্ষণ করবেন, নিঃসন্দেহে আল্লাহ অতিশয় সম্মানিত ও মহাজ্ঞানী।

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٧٢﴾

৭২. আল্লাহ মু'মিন পুরুষ ও মু'মিনা নারীদেরকে এমন জান্নাতসমূহের ওয়াদা দিয়ে রেখেছেন যেগুলোর নিম্নদেশে বইতে থাকবে নহরসমূহ, সেখানে তারা অনন্তকাল থাকবে, আরও (ওয়াদা দিয়েছেন) ঐ উত্তম বাসস্থানসমূহের যা আদ্‌ন নামক জান্নাতের মাঝে অবস্থিত। আর আল্লাহর সন্তুষ্টি হচ্ছে সর্বাপেক্ষা বড় (নিয়ামত), এটা হচ্ছে অতি বড় সফলতা।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٧٣﴾

৭৩. হে নবী! কাফির ও মুনাফিকদের বিরুদ্ধে জিহাদ কর এবং তাদের প্রতি কঠোর ব্যবহার নীতি অবলম্বন কর, আর তাদের বাসস্থান হবে জাহান্নাম এবং ওটা হচ্ছে নিকৃষ্ট স্থান।

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَمَا نَقَمُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِي الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٧٤﴾

৭৪. তারা আল্লাহর নামে শপথ করে বলছে যে, তারা (অমুক কথা) বলেনি, অথচ নিশ্চয়ই তারা কুফরীর কথা বলেছিল এবং নিজেদের ইসলাম গ্রহণের পর কাফির হয়ে গেল, আর তারা এমন বিষয়ের সংকল্প করেছিল যা তারা কার্যকরী করতে পারে নি; আর তারা হিংসা পোষণ ও ঘৃণা করেছিল এজন্য যে, তাদেরকে আল্লাহ ও তাঁর রাসূল নিজ অনুগ্রহে (মদীনায়) সম্পদশালী করে দিয়েছিলেন, অনন্তর যদি তারা তাওবা করে নেয় তবে তাদের জন্যে উত্তম হবে; আর যদি তারা বিমুখ হয় তবে আল্লাহ তাদেরকে ইহকালে ও ও পরকালে যন্ত্রণাময় শাস্তি প্রদান

করবেন, আর ভূ-পৃষ্ঠে তাদের না কোন অলী (অভিভাবক) হবে, আর না কোন সাহায্যকারী।

وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾

৭৫. আর তাদের মধ্যে এমন কতিপয় লোক রয়েছে যারা আল্লাহর সাথে অঙ্গীকার করে, আল্লাহ যদি আমাদেরকে নিজ অনুগ্রহে (প্রচুর সম্পদ) দান করেন, তবে আমরা অবশ্যই খুব দান-খয়রাত করবো এবং সৎলোকদের অন্তর্ভুক্ত হবো।

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧٦﴾

৭৬. কার্যতঃ যখন আল্লাহ তাদেরকে নিজ অনুগ্রহে (প্রচুর সম্পদ) দান করলেন, তখন তারা তাতে কার্পণ্য করতে লাগলো এবং (আনুগত্য করা হতে) তারা গোঁড়ামীর সাথেই বিমুখতা অবলম্বন করলো।

فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَآ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿٧٧﴾

৭৭. সুতরাং আল্লাহ তাদের শাস্তি স্বরূপ তাদের অন্তরসমূহে নিফাক ঢেলে দিলেন, যা আল্লাহর সামনে হাযির হওয়ার দিন পর্যন্তথাকবে, এই কারণে যে, তারা আল্লাহর সাথে নিজেদের ওয়াদার খিলাফ করেছে, আর এই কারণে যে, তারা (পূর্ব হতেই) মিথ্যা বলছিল।

اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿٧٨﴾

৭৮. তাদের কি জানা নেই যে, আল্লাহ্ তাদের মনের গুপ্ত কথা এবং গোপন পরামর্শ সবই অবগত আছেন? আর তাদের কি এই খবর নেই যে, আল্লাহ সমস্ত গায়েবের কথা খুবই জ্ঞাত আছেন?

اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ

৭৯. যারা নফল সাদকা প্রদানকারী মুসলমানদের প্রতি সাদকা সম্বন্ধে

فِي الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ؕ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ ۫ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٩﴾

দোষারোপ করে এবং (বিশেষ করে) সেই লোকদের প্রতি যাদের পরিশ্রম ও মজুরী করা ছাড়া আর কোনই সম্বল নেই, তারা তাদেরকে উপহাস করে, আল্লাহও তাদেরকে উপহাস করেন এবং তাদের জন্যে রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٨٠﴾

৮০. (হে মুহাম্মদ ﷺ!) তুমি তাদের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা কর অথবা তাদের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা না কর (উভয়ই সমান) যদি তুমি তাদের জন্যে সত্তর বারও ক্ষমা প্রার্থনা কর তবুও আল্লাহ তাদেরকে ক্ষমা করবেন না; এর কারণ এই যে, তারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের সাথে কুফরী করেছে। আর আল্লাহ এরূপ ফাসেক লোকদেরকে হেদায়েত দান করেন না।

فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْٓا اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِي الْحَرِّ ؕ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ؕ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨١﴾

৮১. পশ্চাদবর্তী লোকেরা (তাবুকের যুদ্ধে) উৎফুল্ল হয়ে গেল রাসূলুল্লাহর বিরুদ্ধাচারণ করে নিজেদের গৃহে বসে থেকে এবং তারা আল্লাহর পথে নিজেদের ধন ও প্রাণ দিয়ে জিহাদ করাকে অপছন্দ করলো, অধিকন্তু বলতে লাগলোঃ তোমরা (এই ভীষণ) গরমের মধ্যে বের হয়ো না; (হে নবী!) তুমি বলে দাওঃ জাহান্নামের আগুন (এর চেয়ে) অধিকতর গরম, যদি তারা বুঝতে পারতো!

فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾

৮২. অতএব, তারা (দুনিয়ায়) সামান্য হেসে নিক কেননা তারা তাদের কৃতকর্মের কারণে (আখিরাতে) অধিক মাত্রায় কাঁদবে।

فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَآئِفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا مَعِيَ اَبَدًا وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِيَ عَدُوًّا ؕ اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِيْنَ ﴿٨٣﴾

৮৩. অতঃপর যদি আল্লাহ তোমাকে (মদীনায়) তাদের কোন সম্প্রদায়ের কাছে ফিরিয়ে আনেন, অতঃপর তারা (কোন জিহাদে) বের হতে অনুমতি চায়, তবে তুমি বলে দাওঃ তোমরা কখনো আমার সাথে (কোন জিহাদে) বের হবে না এবং আমার সাথী হয়ে কোন শত্রুর বিরুদ্ধে যুদ্ধও করবে না; কারণ তোমরা প্রথমবারই বসে থাকাকে পছন্দ করেছিলে, অতএব তোমরা ঐসব লোকের সাথে বসে থাকো যারা পশ্চাদবর্তী থাকার যোগ্য।

وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨٤﴾

৮৪. (হে রাসূল!) আর তাদের মধ্য হতে কেউ মরে গেলে তার উপর কখনো (জানাযার) নামায পড়বেন না এবং তার কবরের কাছেও দাঁড়াবেন না; তারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের সাথে কুফরী করেছে এবং তারা ফাসেকী অবস্থাতেই মৃত্যুবরণ করেছে।

وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾

৮৫. আর তাদের ধন-সম্পদ ও সন্তান-সন্ততি তোমাকে যেন বিস্মিত না করে; আল্লাহ শুধু এটাই চাচ্ছেন যে, এ সমস্ত বস্তুর কারণে দুনিয়ায় তাদেরকে শাস্তিতে আবদ্ধ রাখেন এবং তাদের প্রাণবায়ু কুফরীর অবস্থাতেই বের হয়।

وَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٨٦﴾

৮৬. আর যখনই কুরআনের কোন সূরা (অংশ) বিষয়ে অবতীর্ণ করা হয় যে, তোমরা আল্লাহর উপর ঈমান আন এবং তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর সাথী হয়ে জিহাদ কর, তখন তাদের মধ্যকার ক্ষমতাবান ব্যক্তিরা তোমার

কাছে অব্যাহতি চায় ও বলে আমাদেরকে ছেড়ে দিন আমরাও এখানে অবস্থানকারীদের সাথে থেকে যাই।

رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨٧﴾

৮৭. তারা অন্তঃপুরবাসিনী নারীদের সাথে থাকতেই সম্মত হলো এবং তাদের অন্তরসমূহের উপর মোহর লাগিয়ে দেয়া হলো, কাজেই তারা বুঝে না।

لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨٨﴾

৮৮. কিন্তু রাসূল ও তাঁর সাথীদের মধ্যে যারা মু'মিন ছিলো তারা (অবশ্যই এই আদেশ মানলো এবং) নিজেদের ধন-সম্পদ ও প্রাণ দ্বারা জিহাদ করলো; আর তাদেরই জন্যে রয়েছে যাবতীয় কল্যাণ এবং তারাই হচ্ছে সফলকাম।

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٨٩﴾

৮৯. আল্লাহ তাদের জন্যে এমন জান্নাত প্রস্তুত করে রেখেছেন যেগুলোর নিম্নদেশ দিয়ে নহরসমূহ বয়ে চলবে, আর তারা ওর মধ্যে অনন্তকাল অবস্থান করবে; এটা হচ্ছে (তাদের) বিরাট সফলতা।

وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٠﴾

৯০. আর আরব গ্রামবাসীদের মধ্য হতে কতিপয় বাহানাকারী লোক আসলো, যেন তাদের অনুমতি দেয়া হয়, আর যারা আল্লাহর সাথে ও তাঁর রাসূলের সাথে সম্পূর্ণরূপেই মিথ্যা বলেছিল, তারা একেবারেই বসে রইল; তাদের মধ্যে যেসব লোক কাফির থাকবে, তাদের যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি হবে।

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا عَلَى

৯১. দুর্বল লোকদের উপর কোন গুনাহ নেই, আর না রুগ্নদের উপর,

الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩١﴾

আর না ঐসব লোকের উপর যাদের খরচ করার সামর্থ্য নেই, যদি এসব লোক আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের প্রতি নিষ্ঠা রাখে[১](এবং আন্তরিকতার সাথে আনুগত্য স্বীকার করে); এসব সৎ লোকের প্রতি কোন প্রকার অভিযোগ নেই; আর আল্লাহ অতিশয় ক্ষমাশীল, পরম করুণাময়।

وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَاۤ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَاۤ اَجِدُ مَاۤ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۖ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ﴿٩٢﴾

৯২. আর ঐ লোকদের উপরও কোন গোনাহ নেই, যখন তারা তোমার নিকট এই উদ্দেশ্যে আসে যে, তুমি তাদেরকে বাহন দান করবে, আর তুমি বলে দিয়েছো আমার নিকট তো কোন কিছু নেই যার উপর আমি তোমাদেরকে আরোহণ করাই, তখন তারা এমন অবস্থায় ফিরে যায় যে, তাদের চক্ষুসমূহ হতে অশ্রু বইতে থাকে এ অনুতাপে যে, তাদের ব্যয় করার মত কোন সম্বল নেই।

اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ اَغْنِيَآءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٣﴾

৯৩. অভিযোগ তো শুধুমাত্র ঐ লোকদের উপরই যারা সম্পদশালী হওয়া সত্ত্বেও (যুদ্ধে গমন না করার)[২] অনুমতি চাচ্ছে, তারা অন্তঃপুরবাসিনী মহিলাদের সাথে থাকতে সম্মত হয়ে গেল এবং আল্লাহ তাদের অন্ত রসমূহের উপর মোহর মেরে দিলেন, কাজেই তারা (পাপ-পুণ্যকে) জানেই না।

১। জারীর ইবনে আব্দুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট বাইয়াত গ্রহণ করেছি, নামায প্রতিষ্ঠা, যাকাত প্রদান, প্রত্যেক মুসলমানকে উপদেশ দেয়ার ব্যাপারে। (বুখারী, হাদীস নং ৫৭)

২। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, (পূর্বের জামানার) কোন একজন নবী জিহাদ করতে মনস্থ করে নিজের কওমের লোকদের বললেন, যে

ব্যক্তি বিবাহ করেছে; কিন্তু বাসর রাত্রি যাপন করেনি অথচ সে বাসররাত্রি যাপনের প্রত্যাশী, সে যেন আমার (এ যুদ্ধে) গমন না করে। যে ব্যক্তি গৃহ নির্মাণ করেছে কিন্তু এখনো ছাদ উত্তোলন করেনি অথবা যে ব্যক্তি গর্ভিণী বকরী কিংবা উট ক্রয় করে বাচ্চা পাবার জন্য অপেক্ষায় আছে; কিন্তু এখনো বাচ্চা লাভ করেনি এসব ব্যক্তিও যেন আমার সাথে না যায়। অতঃপর তিনি জিহাদের জন্য বের হলেন এবং এক জনপদের নিকটবর্তী হলে আসরের নামাযের সময় হলে অথবা প্রায় আসরের সময় হয়ে গেলে তিনি সূর্যকে উদ্দেশ্য করে বললেন, তুমি আল্লাহ্‌র নির্দেশমত কাজ করছো আমিও আল্লাহ্‌র নির্দেশমত কাজ করছি। (অতঃপর তিনি আল্লাহ্‌র কাছে ফরিয়াদ করলেন,) হে আল্লাহ্! তুমি তাকে আমাদের জন্য থামিয়ে দাও। তাই বিজয় লাভ করা পর্যন্ত তা থামিয়ে দেয়া হল। তিনি গণীমত কুড়িয়ে স্তূপ করলেন, ঐগুলো জ্বালিয়ে দেয়ার জন্য আগুন আগমন করলো; কিন্তু জ্বালিয়ে দিল না। তিনি বললেন, তোমাদের মধ্যে গণীমত আত্মসাতকারী আছে। কাজেই প্রত্যেক গোত্রের একজন করে লোককে আমার হাতে হাত দিয়ে বাইয়াত করতে হবে। বাইয়াত করার সময় একজন লোকের হাত তাঁর হাতের সাথে আটকে গেল তিনি বললেন, তোমাদের গোত্রের মধ্যে আত্মসাতকারী আছে। সুতরাং গোটা গোত্রের লোককেই আমার হাতে বাইয়াত করতে হবে। এভাবে (বাইয়াত করার সময়) দু' অথবা তিন ব্যক্তির হাত তাঁর হাতের সাথে আটকে গেল। তিনি বললেন, আত্মসাতকৃত মাল তোমাদের কাছেই আছে। এরপর তারা গরুর মাথার ন্যায় একখন্ড স্বর্ণ এনে স্তূপের মধ্যে রাখলে আগুন এসে তা জ্বালিয়ে দিল। একথা বলার পর নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, পরে আল্লাহ্ আমাদের জন্য গণীমতের অর্থকে হালাল করে দিয়েছেন। তিনি আমাদের দুর্বলতা ও অক্ষমতা দেখেই আমাদের জন্য গণীমতের মাল হালাল করেছেন। (বুখারী, হাদীস নং ৩১২৪)

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَيْهِمْ ؕ قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ ؕ وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٤﴾

৯৪. তারা তোমাদের কাছে ওযর পেশ করবে যখন তোমরা তাদের কাছে ফিরে যাবে; (হে নবী ﷺ) তুমি বলে দাওঃ তোমরা ওযর পেশ করো না, আমরা কখনো তোমাদেরকে সত্যবাদী বলে মনে করবো না, আল্লাহ আমাদেরকে তোমাদের (জিহাদে না যাওয়ার) বৃত্তান্ত জানিয়ে দিয়েছেন, আর ভবিষ্যতেও আল্লাহ এবং তাঁর রাসূল তোমাদের কার্যকলাপ পর্যবেক্ষণ করবেন, অতঃপর তোমরা প্রত্যাবর্তিত হবে এমন সত্তার কাছে যিনি অদৃশ্য এবং প্রকাশ্য সকল বিষয়ই অবগত আছেন, অনন্তর তিনি তোমাদেরকে জানিয়ে দিবেন যা কিছু তোমরা করছিলে।

سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ اِنَّهُمْ رِجْسٌ ۫ وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٥﴾

৯৫. (হ্যাঁ,) তারা তখন তোমাদের সামনে শপথ করে বলবে, যখন তোমরা তাদের কাছে ফিরে যাবে, যেন তোমরা তাদেরকে তাদের অবস্থার উপর ছেড়ে দাও; অতএব তোমরা তাদেরকে তাদের অবস্থার উপর ছেড়েই দাও; তারা হচ্ছে অতিশয় অপবিত্র, আর তাদের ঠিকানা হচ্ছে জাহান্নাম, ঐসব কর্মের বিনিময়ে যা তারা করতো।

يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٩٦﴾

৯৬. তারা এ জন্যে শপথ করবে যেন তোমরা তাদের প্রতি রাজী হয়ে যাও, অনন্তর যদি তোমরা তাদের প্রতি রাজী হয়ে যাও তবে আল্লাহ তো এমন দুষ্কর্মকারী লোকদের প্রতি রাজী হন না।

اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّنِفَاقًا وَّاَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٩٧﴾

৯৭. বেদুঈন লোকেরা কুফরী ও কপটতায় অতি কঠোর, আর এটাই স্বাভাবিক কেননা তাদের ঐসব আহকামের জ্ঞান নাই যা আল্লাহ তাঁর রাসূলের প্রতি অবতীর্ণ করেছেন; আর আল্লাহ হচ্ছেন মহাজ্ঞানী, অতি প্রজ্ঞাময়।

وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٩٨﴾

৯৮. আর এই বেদুঈনদের মধ্যে এমন লোক রয়েছে যে, তারা যা কিছু ব্যয় করে তা জরিমানা মনে করে এবং তোমাদের প্রতি (কালের) আবর্তনসমূহের প্রতীক্ষায় থাকে; (বস্তুতঃ) অশুভ আবর্তন তাদের উপরই হয়, আর আল্লাহ খুব শুনেন, খুব জানেন।

وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ؕ اَلَآ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ؕ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩٩﴾

৯৯. আর বেদুঈনদের মধ্যে কতিপয় লোক এমনও আছে, যারা আল্লাহর প্রতি এবং কিয়ামত দিবসের প্রতি (পূর্ণ) ঈমান রাখে, আর যা কিছু ব্যয় করে ওকে আল্লাহর সান্নিধ্য লাভের উপকরণ ও রাসূলের দুআ' লাভের উপকরণরূপে গ্রহণ করে; স্মরণ রাখো! তাদের এই ব্যয়কার্য নিঃসন্দেহে তাদের জন্যে (আল্লাহর) নৈকট্য লাভের কারণ; নিশ্চয়ই আল্লাহ তাদেরকে নিজের রহমতে দাখিল করে নিবেন; নিশ্চয়ই আল্লাহ হচ্ছেন অতি ক্ষমাশীল, পরম করুণাময়।

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ

১০০. আর যেসব মুহাজির ও আনসার (ঈমান আনয়নে) অগ্রবর্তী এবং প্রথম, আর যেসব লোক একান্ত নিষ্ঠার সাথে তাদের অনুগামী, আল্লাহ

وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١٠٠﴾

তাদের প্রতি সন্তুষ্ট হয়েছেন এবং তারাও তাঁর প্রতি সন্তুষ্ট হয়েছেন,আর আল্লাহ তাদের জন্যে এমন উদ্যানসমূহ প্রস্তুত করে রেখেছেন যার তলদেশে নহরসমূহ বইতে থাকবে, যার মধ্যে তারা চিরস্থায়ীভাবে অবস্থান করবে, তা হচ্ছে বিরাট কৃতকার্যতা।

وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ۛ وَمِنْ اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ ۛ مَرَدُوْا عَلَى النِّفَاقِ ۫ لَا تَعْلَمُهُمْ ؕ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ؕ سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيْمٍ ﴿١٠١﴾

১০১. আর তোমাদের চতুর্দিকস্থ লোকদের মধ্য হতে কতিপয় বেদুঈন এবং মদীনাবাসীদের মধ্য হতেও কতিপয় লোক এমন মুনাফিক রয়েছে যারা নিফাকের চরমে পৌঁছে গেছে, তুমি তাদেরকে জান না, আমিই তাদেরকে জানি, আমি তাদেরকে দ্বিগুণ শাস্তি প্রদান করবো, তৎপর তারা মহা শাস্তির দিকে প্রত্যাবর্তিত হবে।

وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٠٢﴾

১০২. এবং আরো কতকগুলো লোক আছে যারা নিজেদের অপরাধসমূহ স্বীকার করেছে, যারা মিশ্রিত আমল করেছিল, কিছু ভালো আর কিছু মন্দ, আশা রয়েছে যে, আল্লাহ তাদের প্রতি করুণা-দৃষ্টি করবেন, নিঃসন্দেহে আল্লাহ্ অতিশয় ক্ষমাশীল পরম করুণাময়।[১]

১। সামুরা ইবনে জুন্দুব (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, রাত্রে দু'জন ফেরেশ্‌তা এসে আমাকে ঘুম থেকে তুলে এমন এক শহরে (প্রাসাদে) নিয়ে গেল, যা সোনা ও রূপার ইট দ্বারা নির্মিত। সেখানে আমরা এমন কিছু লোকের দেখা পেয়েছি, যাদের দেহের একাংশ খুবই সুশ্রী এবং অপরাংশ অত্যন্ত বিশ্রী। এমনটি তুমি আর কখনো দেখনি। ফেরেশ্‌তা দু'জন তাদেরকে বলল, এই ঝর্ণায় গিয়ে তোমরা ডুব দাও। তারা ওতে গিয়ে লাফিয়ে পড়ল এবং তারপর ফিরে আসল। তখন তাদের কুৎসিত আকৃতি সম্পূর্ণ দূর হয়ে গেল। এখন তারা সুন্দর আকৃতি লাভ করল। ফেরেশ্‌তারা আমাকে বলল, এটি 'আদন' বেহেশ্‌ত। এটাই হলো আপনার স্থায়ী ঠিকানা। তারপর ফেরেশ্‌তারা বুঝিয়ে বললো, আপনি যেসব লোকের শরীরের অর্ধেক সুশ্রী এবং অর্ধেক কুশ্রী দেখেছেন, তারা হলো এমন সব লোক, যারা দুনিয়াতে ভালো-মন্দ দু'ধরনের কাজই করেছে এবং নেক ও বদ্‌আমলকে মিশিয়ে ফেলেছে, আল্লাহ্ তা'আলা তাদেরকে মাফ করে দিয়েছেন। (বুখারী, হাদীস নং ৪৬৭৪)

خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٠٣﴾

১০৩. (হে নবী ﷺ)! তুমি তাদের ধন-সম্পদ হতে যাকাত গ্রহণ কর, যা দ্বারা তুমি তাদেরকে পাক-সাফ করে দেবে, আর তাদের জন্যে দু'আ কর, নিঃসন্দেহে তোমার দুআ' হচ্ছে তাদের জন্যে শান্তির কারণ, আর আল্লাহ খুব শুনেন, খুব জানেন।

اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾

১০৪. তারা কি এটা অবগত নয় যে, আল্লাহই নিজ বান্দাদের তাওবা কবূল করেন, আর তিনিই দান-খয়রাত কবূল করে থাকেন আর এটাও যে, আল্লাহ হচ্ছেন তাওবা কবূল করতে এবং অনুগ্রহ করতে পূর্ণ সমর্থবান?

وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ وَسَتُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٥﴾

১০৫. হে নবী ﷺ! তুমি বলে দাওঃ তোমরা কাজ করতে থাকো, অনন্তর তোমাদের কার্যকে অচিরেই দেখে নিবেন আল্লাহ, তাঁর রাসূল ও ঈমানদারগণ, আর নিশ্চয়ই তোমাদেরকে প্রত্যাবর্তিত হতে হবে এমন এক সত্তার নিকট যিনি হচ্ছেন সকল অদৃশ্য ও প্রকাশ্য বিষয়ের জ্ঞাতা, অতঃপর তিনি তোমাদেরকে তোমাদের সকল কৃতকর্ম জানিয়ে দিবেন।

وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠٦﴾

১০৬. এবং আরও কতক লোক আছে যাদের (সিদ্ধান্তের) ব্যাপার মূলতবী রয়েছে আল্লাহর আদেশ আসা পর্যন্ত, হয় তিনি তাদেরকে শাস্তি প্রদান করবেন, অথবা তাদের তাওবা কবূল করবেন, আর আল্লাহ মহাজ্ঞানী প্রজ্ঞাময়।

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَاۤ اِلَّا الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٠٧﴾

১০৭. আর কেউ কেউ এমন আছে যারা এ উদ্দেশ্যে মসজিদ নির্মাণ করেছে যেন তারা (ইসলামের) ক্ষতি-সাধন করে এবং কুফুরীর কথাবার্তা বলে আর মু'মিনদের মধ্যে বিভেদ সৃষ্টি করে, আর ঐ ব্যক্তির অবস্থানের ব্যবস্থা করে যে এর পূর্ব হতেই আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের বিরোধী, আর তারা শপথ করে বলবেঃ মঙ্গল ভিন্ন আমাদের আর কোন উদ্দেশ্য নেই; আর আল্লাহ সাক্ষী আছেন যে, তারা সম্পূর্ণ মিথ্যাবাদী।

لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا ؕ لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ؕ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ﴿١٠٨﴾

১০৮. (হে মুহাম্মাদ ﷺ)! তুমি কখনো ওতে (নামাযের জন্যে) দাঁড়াবে না; অবশ্য যে মসজিদের ভিত্তি প্রথম দিন হতেই তাকওয়ার উপর স্থাপিত হয়েছে তা এর উপযোগী যে, তুমি তাতে (নামাযের জন্যে) দাঁড়াবে; ওতে এমন সব লোক রয়েছে যারা উত্তমরূপে পাক হওয়াকে পছন্দ করে, আর আল্লাহ উত্তমরূপে পবিত্রতা সম্পাদন-কারীদেরকে পছন্দ করেন।

اَفَمَنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾

১০৯. তবে কি এমন ব্যক্তি উত্তম, যে স্বীয় ইমারতের ভিত্তি আল্লাহর ভীতির উপর এবং তাঁর সন্তুষ্টির উপর স্থাপন করেছে অথবা সেই ব্যক্তি, যে স্বীয় ইমারতের ভিত্তি স্থাপন করেছে কোন গহ্বরের কিনারায়, যা ধ্বসে পড়ার উপক্রম, অতঃপর তা তাকে নিয়ে জাহান্নামের আগুনে পতিত হয়। আর আল্লাহ এমন যালিমদেরকে সৎপথ প্রদর্শন করেন না।

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِىْ بَنَوْا رِيْبَةً فِىْ قُلُوْبِهِمْ
اِلَّآ اَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١١٠﴾

১১০. তাদের এই ইমারত যা তারা নির্মাণ করেছে, তা সদা তাদের মনে খট্‌কা সৃষ্টি করতে থাকবে, হ্যাঁ, যদি তাদের (সেই) অন্তরই ধ্বংস হয়ে যায়, তবে তো কথাই নাই, আর আল্লাহ হচ্ছেন মহাজ্ঞানী, প্রজ্ঞাময়।

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ
وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ؕ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ وَيُقْتَلُوْنَ ۟ وَعْدًا عَلَيْهِ
حَقًّا فِى التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ وَالْقُرْاٰنِ ؕ وَمَنْ اَوْفٰى
بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا بِبَيْعِكُمُ الَّذِىْ
بَايَعْتُمْ بِهٖ ؕ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١١١﴾

১১১. নিঃসন্দেহে আল্লাহ মু'মিনদের নিকট থেকে তাদের প্রাণ ও তাদের ধন-সম্পদ সমূহকে এর বিনিময়ে ক্রয় করে নিয়েছেন যে, তাদের জন্যে জান্নাত রয়েছে, তারা আল্লাহর পথে যুদ্ধ করে, অতএব তারা হয় হত্যা করে অথবা তাদেরকে হত্যা করা হয়, এর (এই যুদ্ধের) দরুন (জান্নাত প্রদানের) সত্য অঙ্গীকার করা হয়েছে তাওরাতে, ইনজীলে এবং কুরআনে; আর কে আছে নিজের অঙ্গীকার পালনকারী আল্লাহ অপেক্ষা অধিক? অতএব তোমরা আনন্দ করতে থাকো তোমাদের এই ক্রয়-বিক্রয়ের উপর, যা তোমরা সম্পাদন করেছো, আর এটা হচ্ছে বিরাট সফলতা।[১]

১। (ক) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি আল্লাহ্‌র পথে জিহাদ করে এবং একমাত্র আল্লাহ্‌র পথে জিহাদ ও তার বিধানের সত্যতার প্রতি স্বীয় বিশ্বাস প্রতিপন্ন করে দেখানো ছাড়া আর কিছুই যাকে বাড়ি থেকে বের করতে পারে না, আল্লাহ্ স্বয়ং তাঁর ব্যাপারে এ জিম্মাদারী গ্রহণ করেছেন যে, তাঁকে জান্নাতে প্রবেশ করাবেন (যদি সে জিহাদে শাহাদাত লাভ করে থাকে) অথবা সে যা কিছু পুরস্কার এবং গণীমাত লাভ করেছে সে সবসহ, যেখান থেকে সে (জিহাদে) বের হয়েছে সেখানে তাঁকে (সহিসালামতে) ফিরিয়ে আনবেন। (বুখারী, হাদীস নং ৩১২৩)

(খ) আমর ইবনে দীনার থেকে বর্ণিত। তিনি জাবের ইবনে আবদুল্লাহ্‌কে বলতে শুনেছেন যে, ওহুদ যুদ্ধের দিন এক ব্যক্তি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বললঃ বলুন তো, আমি যদি শহীদ হই তাহলে আমার অবস্থা কি হবে অর্থাৎ কোথায় অবস্থান করবো? নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ জান্নাতে থাকবে। তখন সে তার হাতের খেজুরগুলো- যা সে খেতেছিলো-ছুঁড়ে ফেলে দিয়ে জিহাদের ময়দানে ঝাঁপিয়ে পড়ে লড়াই করলো এবং শহীদ হলো। (বুখারী, হাদীস নং ৪০৪৬)

(গ) ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ আমি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি যে, (ঈনা) ভাল সম্পদ বাকীতে বেশি দামে বিক্রি করা নিয়ে ব্যস্ত থাকবে

اَلتَّآئِبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ السَّآئِحُوْنَ الرّٰكِعُوْنَ السّٰجِدُوْنَ الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٢﴾

১১২. তারা হচ্ছে তাওবাকারী, ইবাদতকারী প্রশংসাকারী সিয়াম পালনকারী, রুকূ ও সিজদাকারী, সৎ বিষয় শিক্ষা প্রদানকারী এবং মন্দ বিষয়ে বাধা প্রদানকারী, আল্লাহর সীমাসমূহের সংরক্ষণকারী; আর তুমি মু'মিনদেরকে সুসংবাদ শুনিয়ে দাও।[১]

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَلَوْ كَانُوْٓا اُولِيْ قُرْبٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١١٣﴾

১১৩. নবী ও অন্যান্য মু'মিনদের জন্যে জায়েয নয় যে, তারা মুশরিকদের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করে, যদিও তারা আত্মীয়ই হোক না কেন, একথা প্রকাশ হওয়ার পর যে তারা জাহান্নামের অধিবাসী।

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗٓ اَنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّاَ مِنْهُ ؕ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِيْمٌ ﴿١١٤﴾

১১৪. আর ইব্‌রাহীমের নিজ পিতার জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করা, তা তো শুধু সেই ওয়াদার কারণে ছিল, যে ওয়াদা তিনি তার সাথে করেছিলেন। অতঃপর যখন তাঁর নিকট প্রকাশ পেলো যে, সে (পিতা) আল্লাহর দুশমন, তখন তিনি সম্পর্ক ছিন্ন করেন। বাস্তবিকই ইব্‌রাহীম ছিলেন অতিশয় ইবাদত গুজার, সহনশীল।

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِلَّ قَوْمًۢا بَعْدَ اِذْ هَدٰىهُمْ حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَّا يَتَّقُوْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾

১১৫. আর আল্লাহ এরূপ নন যে, কোন জাতিকে হিদায়াত করার পর পথভ্রষ্ট করে দেন, যে পর্যন্ত না তাদেরকে সেসব বিষয় পরিষ্কারভাবে বলে দেন, যা হতে তারা বেঁচে

এবং গরুর লেজ ধরে থাকবে ও চাষাবাদ নিয়ে ব্যস্ত থাকবে, আর জিহাদ ছেড়ে দিবে। তখন আল্লাহ্ তোমাদের উপর লাঞ্ছনা চাপিয়ে দিবেন। আর যতক্ষণ পর্যন্ত তোমরা তোমাদের দ্বীনের দিকে ফিরে না আসবে, ততক্ষণ পর্যন্ত আল্লাহ্ তোমাদেরকে এ থেকে মুক্তি দিবেন না। (আবু দাউদ, হাদীস নং ৩৪৬২)

১। সাহাল বিন সায়াদ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন যে, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, যে ব্যক্তি তার দুই চোয়ালের হাড্ডির (যবানের) এবং দু'পায়ের মাখানের (লজ্জাস্থানের) যামানত আমাকে দিবে, আমি তার জান্নাতের যামীন হব। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৭৪)

থাকবে; নিশ্চয়ই আল্লাহ হচ্ছেন সর্বজ্ঞ।[১]

إِنَّ اللّٰهَ لَهُۥ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ يُحْيِۦ وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُونِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيرٍ ﴿١١٦﴾

১১৬. নিশ্চয়ই আল্লাহরই রাজত্ব রয়েছে আসমানসমূহে ও যমীনে; তিনিই জীবন দান করেন এবং মৃত্যু ঘটিয়ে থাকেন; আর তোমাদের জন্যে আল্লাহ ছাড়া না কোন বন্ধু আছে আর না কোন সাহায্যকারী।

لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبُ فَرِيقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّهُۥ بِهِمْ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١١٧﴾

১১৭. আল্লাহ অনুগ্রহ করলেন নবীর প্রতি এবং মুহাজির ও আনসারদের প্রতি যারা নবীর আনুগত্য করেছিলেন সংকট মুহূর্তে (তাবুকের যুদ্ধে), এমন কি যখন তাদের মধ্যকার এক দলের অন্তর বিচলিত হওয়ার উপক্রম হয়েছিল, তৎপর আল্লাহ তাদের প্রতি অনুগ্রহপরায়ণ হলেন। নিঃসন্দেহে আল্লাহ তাদের সকলের উপর স্নেহশীল, করুণাময়।

وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِينَ خُلِّفُوا ۚ حَتّٰى إِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ أَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوا أَنْ لَّا مَلْجَأَ مِنَ اللّٰهِ إِلَّا إِلَيْهِ ۚ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا ۚ إِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١١٨﴾

১১৮. আর ঐ তিন[২] ব্যক্তির প্রতিও (অনুগ্রহ করলেন) যাদেরকে পিছে ছেড়ে দেয়া হয়েছিল (মুসলমানদের সাথে বের হওয়া থেকে) এই পর্যন্ত যে, যখন ভূ-পৃষ্ঠ নিজ প্রশস্ততা সত্ত্বেও তাদের প্রতি সংকীর্ণ হতে লাগলো এবং তারা নিজেরা নিজেদের জীবনের প্রতি বিতৃষ্ণ হয়ে পড়লো

১। আব্দুল্লাহ্ ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) হারুরিয়াদের (খারেজীদের) সম্পর্কে বর্ণনা করেছেন। নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তারা ইসলাম থেকে এমনভাবে বেরিয়ে যাবে যেমন তীর ধনুকের ছিলার মধ্য থেকে বের হয়ে যায়। (অর্থাৎ তারা ইসলাম থেকে সম্পূর্ণ বের হয়ে যাবে) (বুখারী, হাদীস নং ৬৯৩২)

২। তাবুক যুদ্ধে অংশগ্রহণ থেকে বিরত থাকা কা'ব বিন মালেকসহ তিন সাহাবী।

আর তারা বুঝতে পারলো যে, আল্লাহর পাকড়াও হতে কোথাও আশ্রয় পাওয়া যেতে পারে না তাঁরই দিকে প্রত্যাবর্তন করা ব্যতীত; তৎপর তাদের প্রতি অনুগ্রহ-দৃষ্টি করলেন, যাতে তারা তাওবা করে নিশ্চয়ই আল্লাহ অতিশয় অনুগ্রহকারী, করুণাময়।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١١٩﴾

১১৯. হে মু'মিনগণ! আল্লাহকে ভয় কর এবং (কথায়-কাজে) সত্য-বাদীদের সঙ্গে থাকো।[১]

مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

১২০. মদীনার অধিবাসীদের এবং তাদের আশে-পাশে যেসব বেদুঈন রয়েছে, তাদের পক্ষে এটা উচিত ছিল না যে, তারা আল্লাহর রাসূলের সঙ্গী না হয়, আর এটাও (উচিত ছিল) না যে, নিজেদের প্রাণ তাঁর প্রাণ অপেক্ষা প্রিয় মনে করে, এর কারণ এই যে, আল্লাহর পথে তাদের যে পিপাসা দেখা দেয়, যে ক্লান্তি স্পর্শ করে, আর যে ক্ষুধা পায় আর তাদের এমন পদক্ষেপ কাফিরদের

১। (ক) আব্দুল্লাহ্ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহুমা) হতে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, নিশ্চয় সত্যবাদিতা (মানুষকে) নেকীর দিকে পথ দেখায় এবং নেকী জান্নাতের দিকে চালিত করে। আর মানুষ সত্য বলতে বলতে শেষ পর্যন্ত সিদ্দীক (সত্যবাদী) হয়ে যায়। আর মিথ্যা (মানুষকে) বদ-আমলের দিকে এবং জাহান্নামের দিকে নিয়ে যায়। মানুষ মিথ্যা বলতে থাকে। শেষ পর্যন্ত আল্লাহ্র নিকট জঘন্য মিথ্যাবাদী হিসেবে তার নাম লিখা হয়ে যায়। (বুখারী, হাদীস নং ৬০৯৪)

(খ) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, মুনাফিকের আলামত তিনটি- (১) যখন সে কথা বলে, মিথ্যা বলে, (২) যখন ওয়াদা করে, ভঙ্গ করে, (৩) যখন তার নিকট কিছু আমানত রাখা হয়, তাতে খেয়ানত করে। (বুখারী, হাদীস নং ৬০৯৪)

(গ) সামুরা ইবনে জুন্দুব (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আমি (স্বপ্নে) দেখলাম, দু'জন লোক আমার নিকট এসে বলতে লাগলো, আপনি (মি'রাজের রাতে) যে লোকটি দেখতে পেয়েছিলেন, তার মুখ চিরে ফেলা হচ্ছিল, সে জঘন্য মিথ্যাবাদী ছিল। আর সে এমনভাবে মিথ্যা রটাতো যে, দুনিয়ার প্রতি কোণে কোণে তা ছড়িয়ে যেত। কিয়ামত পর্যন্ত এ মিথ্যাবাদীর অনুরূপ শাস্তি হতে থাকবে। (বুখারী, হাদীস নং ৬০৯৬)

لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٢٠﴾

ক্রোধের কারণ হয়ে থাকে, আর দুশমনদের হতে তারা যা কিছু প্রাপ্ত হয়, এর প্রত্যেকটির বিনিময়ে তাদের জন্যে এক একটি নেক আমল লিপিবদ্ধ হয়ে যায়, নিশ্চয়ই আল্লাহ সৎ কর্মশীলদের পুণ্যফল বিনষ্ট করবেন না।

وَلَا يُنفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢١﴾

১২১. আর ছোট-বড় যা কিছু তারা ব্যয় করেছে, আর যত প্রান্তর তাদের অতিক্রম করতে হয়েছে, তৎসমুদয়ও তাদের জন্যে লিখিত হয়েছে, যেন আল্লাহ তাদের কৃতকর্মসমূহের অতি উত্তম বিনিময় প্রদান করেন।[১]

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنفِرُوا كَافَّةً ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ مِن كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ﴿١٢٢﴾

১২২. আর মু'মিনদের এটা (ও) সমীচীন নয় যে, (জিহাদের জন্যে) সবাই একত্রে বের হয়ে পড়ে; সুতরাং এমন কেন করা হয় না যে, তাদের প্রত্যেকটি বড় দল হতে এক একটি ছোট দল বহির্গত হয়, যাতে তারা ধর্মজ্ঞান অর্জন করতে পারে, আর যাতে তারা নিজ কওমকে (নাফরমানী হতে) ভয় প্রদর্শন করে যখন তারা ওদের নিকট প্রত্যাবর্তন করে, যেন তারা সতর্ক হয়।

১। (ক) আবূ সাঈদ খুদরী (রাযিআল্লাহু আনহু) রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছেন, বান্দাহ যখন ইসলাম গ্রহণ করে এবং তার ইসলামটা সুন্দর হয়, আল্লাহ্ তার পূর্বেকার প্রত্যেকটি গুনাহ ঢেকে (মাফ করে) দেন। তারপর (ভাল-মন্দ কাজের এরূপ) প্রতিদান দেয়া হয়- ভালর বদলে দশগুণ থেকে সাতশ' গুণ পর্যন্ত; আর মন্দের বদলে ঠিক ততটুকু মন্দ, তবে আল্লাহ্ তাও মাফ করে দিতে পারেন। (বুখারী, হাদীস নং ৪১)

(খ) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেনঃ যখন তোমাদের কেউ তাঁর ইসলামকে সুন্দর করে তোলে, তখন সে যে ভাল কাজ করে তার বিনিময় দশ থেকে সাতশ' গুণ পর্যন্ত তার জন্য সওয়াব লেখা হয়; কিন্তু সে যে মন্দ কাজ করে তার বিনিময় তার জন্য (কেবলমাত্র) ততটুকুই লেখা হয়। (বুখারী, হাদীস নং ৪২)

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ قَٰتِلُوا۟ ٱلَّذِينَ يَلُونَكُم مِّنَ ٱلْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوا۟ فِيكُمْ غِلْظَةً ۚ وَٱعْلَمُوٓا۟ أَنَّ ٱللَّهَ مَعَ ٱلْمُتَّقِينَ ﴿١٢٣﴾

১২৩. হে মু'মিনগণ! ঐ কাফিরদের সাথে যুদ্ধ কর যারা তোমাদের আশে-পাশে অবস্থান করে, আর যেন তারা তোমাদের মধ্যে কঠোরতা পায়; আর জেনে রেখো যে, আল্লাহ পরহেযগারদের সাথে রয়েছেন।

وَإِذَا مَآ أُنزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُم مَّن يَقُولُ أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هَٰذِهِۦٓ إِيمَٰنًا ۚ فَأَمَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ فَزَادَتْهُمْ إِيمَٰنًا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿١٢٤﴾

১২৪. আর যখন কোন সূরা অবতীর্ণ করা হয় তখন তাদের মধ্যে কিছু লোক বলেঃ তোমাদের মধ্যে এই সূরা কার ঈমান বৃদ্ধি করলো? অনন্তর যেসব লোক ঈমান এনেছে, এই সূরা তাদের ঈমানকে বর্ধিত করেছে এবং তারাই আনন্দ লাভ করেছে।

وَأَمَّا ٱلَّذِينَ فِى قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَىٰ رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا۟ وَهُمْ كَٰفِرُونَ ﴿١٢٥﴾

১২৫. আর যাদের অন্তরসমূহে রোগ রয়েছে, এই সূরা তাদের কলুষের সাথে আরো কলুষতা বর্ধিত করেছে, আর তাদের কুফরী অবস্থাতেই মৃত্যু হয়েছে।

أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِى كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٢٦﴾

১২৬. আর তারা কি দেখে না যে, তারা প্রতি বছর একবার বা দু'বার কোন না কোন বিপদে পতিত হয়ে থাকে? তবুও প্রত্যাবর্তন করে না, আর না তারা উপদেশ গ্রহণ করে।

وَإِذَا مَآ أُنزِلَتْ سُورَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ ۖ هَلْ يَرَىٰكُم مِّنْ أَحَدٍ ثُمَّ ٱنصَرَفُوا۟ ۚ صَرَفَ ٱللَّهُ قُلُوبَهُم بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ ﴿١٢٧﴾

১২৭. আর যখন কোন সূরা নাযিল করা হয় তখন তারা একে অপরের দিকে তাকাতে থাকে (এবং ইঙ্গিতে বলে); তোমাদেরকে কেউ দেখছে না তো? অতঃপর তারা চলে যায়; আল্লাহ তাদের অন্তরগুলোকে ফিরিয়ে দিয়েছেন, কারণ তারা হচ্ছে নির্বোধ সমাজ মাত্র।

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ

১২৮. তোমাদের নিকট আগমন করেছে তোমাদেরই মধ্যকার এমন

مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢٨﴾

একজন রাসূল যার কাছে তোমাদের ক্ষতিগ্রস্ত হওয়া অতি কষ্টদায়ক মনে হয়, যিনি হচ্ছেন তোমাদের খুবই হিতাকাঙ্খী, মু'মিনদের প্রতি বড়ই স্নেহশীল, করুণাপরায়ণ।

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿١٢٩﴾

১২৯. অতঃপর যদি তারা মুখ ফিরিয়ে নেয়, তবে তুমি বলে দাওঃ আমার জন্যে তো আল্লাহই যথেষ্ট, তিনি ছাড়া অন্য কোন সত্য মা'বূদ নেই আমি তাঁরই উপর নির্ভর করছি, আর তিনি হচ্ছেন মহা আরশের মালিক।

সূরাঃ ইউনুস, মাক্কী

(আয়াতঃ ১০৯, রুকূ'ঃ ১১)

سُوْرَةُ يُوْنُسَ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ١٠٩ رُكُوْعَاتُهَا ١١

দয়াময় মেহেরবান আল্লাহর নামে শুরু করছি।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿١﴾

১. আলিফ-লাম-রা, এটা অতি সূক্ষ্ম তত্ত্বপূর্ণ কিতাবের আয়াত।

اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢﴾

২. লোকদের জন্যে এটা কি বিস্ময়কর হয়েছে যে, আমি তাদের মধ্য হতে একজনের নিকট ওহী প্রেরণ করেছি এই মর্মে, তুমি সকলকে ভয় প্রদর্শন কর এবং যারা ঈমান এনেছে তাদেরকে এই সুসংবাদ দাও যে, তারা তাদের প্রতিপালকের নিকট (পূর্ণ মর্যদা) লাভ করবে; কাফিররা বলতে লাগলো যে, এ ব্যক্তি তো নিঃসন্দেহে প্রকাশ্য যাদুকর।

৩. নিশ্চয় আল্লাহই হচ্ছেন তোমাদের প্রতিপালক, যিনি আসমানসমূহকে এবং যমীনকে সৃষ্টি করেছেন ছয়দিনে, অতঃপর তিনি আরশে সমুন্নীত হলেন, তিনি প্রত্যেক কাজ পরিচালনা করে থাকেন; তাঁর অনুমতি ব্যতীত কোন সুপারিশকারী নেই, আল্লাহই তোমাদের প্রতিপালক, অতএব তোমরা তাঁরই ইবাদত কর; তবুও কি তোমরা বুঝছো না।

إِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ
سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ
مَا مِنْ شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ
فَاعْبُدُوْهُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٣

৪. তোমাদের সকলকে তাঁরই দিকে ফিরে যেতে হবে, আল্লাহর ওয়াদা সত্য; নিশ্চয়ই তিনিই প্রথমবার সৃষ্টি করেন, অতঃপর তিনিই পুনর্বারও সৃষ্টি করবেন, যাতে এরূপ লোকদের, যারা ঈমান আনয়ন করেছে এবং ভাল কাজ করেছে তাদেরকে ইনসাফ মত প্রতিফল প্রদান করেন; আর যারা কুফরী করেছে তারা পাবে উত্তপ্ত পানি এবং যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি তাদের কুফরীর কারণে।

اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ اِنَّهٗ يَبْدَؤُا
الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ لِيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ
مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝٤

৫. তিনি (আল্লাহ), যিনি সূর্যকে দীপ্তিমান এবং চন্দ্রকে আলোকময় বানিয়েছেন এবং ওর (গতির) জন্যে মঞ্জিলসমূহ নির্ধারিত করেছেন যাতে তোমরা বছরসমূহের সংখ্যা ও হিসাব জানতে পার; আল্লাহ এসব বস্তু অযথা সৃষ্টি করেননি, তিনি এই প্রমাণাদি বিশদভাবে বর্ণনা করেন ঐসব লোকের জন্যে যারা জ্ঞানবান।

هُوَ الَّذِىْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ نُوْرًا
وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ
وَالْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ
يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝٥

৬. নিঃসন্দেহে রাত্রি ও দিবসের পরিবর্তন এবং আল্লাহ যা কিছু

اِنَّ فِى اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ۝٦

আসমানসমূহে ও যমীনে সৃষ্টি করেছেন তৎসমূদয়ের মধ্যে প্রমাণসমূহ রয়েছে ঐ লোকদের জন্যে যারা আল্লাহর ভয় পোষণ করে।

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ۝٧

৭. যারা আমার সাথে সাক্ষাতের আশা পোষণ করে না এবং পার্থিব জীবনেই পরিতৃপ্ত থাকে এবং এতেই যারা নিশ্চিন্ত থাকে এবং যারা আমার নিদর্শনাবলী সম্বন্ধে গাফিল।

اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٨

৮. এইরূপ লোকদের ঠিকানা হচ্ছে জাহান্নাম, তাদের কার্যকলাপের কারণে।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝٩

৯. নিশ্চয়ই যারা ঈমান এনেছে এবং ভাল কাজ করেছে তাদের প্রতিপালক তাদেরকে লক্ষ্যস্থলে (জান্নাতে) পৌঁছিয়ে দিবেন, তাদের ঈমানের কারণে, শান্তির উদ্যানসমূহে তাদের (বাসস্থানের) তলদেশ দিয়ে নহরসমূহ বইতে থাকবে।

دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٠

১০. সেখানে তাদের আহ্বান হবেঃ হে আল্লাহ! তুমি মহান, পবিত্র! এবং পরস্পরের শুভেচ্ছা হবেঃ সালাম, আর তাদের শেষ কথা হবেঃ আলহামদুলিল্লাহি রাব্বিল আলামীন।

وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ۭ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝١١

১১. আর যদি আল্লাহ মানবের উপর ত্বরিত ক্ষতি ঘটাতেন, যেমন তারা ত্বরিত উপকার লাভ করতে আগ্রহ রাখে, তবে তাদের নির্ধারিত সময় কবেই পূর্ণ হয়ে যেতো; অনন্তর আমি সেই লোকদেরকে যারা আমার নিকট উপস্থিত হওয়ার চিন্তা করে না, ছেড়ে

দেই তাদের অবস্থার উপর, যেন তারা তাদের অবাধ্যতার মধ্যে ঘুরপাক খেতে থাকে।

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْبِهِ أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَائِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُ مَرَّ كَأَنْ لَمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ ضُرٍّ مَسَّهُ ۚ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢﴾

১২. আর যখন মানুষকে কোন ক্লেশ-কষ্ট স্পর্শ করে তখন আমাকে ডাকতে থাকে শুয়ে, বসে এবং দাঁড়িয়েও, অতঃপর যখন আমি সেই কষ্ট ওর হতে দূর করে দেই তখন সে নিজের পূর্ব অবস্থায় ফিরে আসে, যে কষ্ট তাকে স্পর্শ করেছিল তা মোচন করার জন্যে সে যেন আমাকে কখনো ডাকেইনি। এই সীমালংঙ্ঘন-কারীদের কার্যকলাপ তাদের কাছে এইরূপই চাকচিক্যময় মনে হয়।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا ۙ وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٣﴾

১৩. আমি তোমাদের পূর্বে বহু সম্প্রদায়কে ধ্বংস করে দিয়েছি, যখন তারা যুলুম করেছিল, অথচ তাদের নিকট তাদের রাসূলগণও স্পষ্ট প্রমাণাদিসহ আগমন করেছিল, আর তারা কখনই ঈমান আনয়নকারী ছিল না। আর আমি অপরাধীদেরকে এইরূপেই শাস্তি দিয়ে থাকি।

ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ مِنْ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾

১৪. অতঃপর, আমি তাদের স্থলে তোমাদেরকে তাদের পর ভূ-মন্ডলে প্রতিনিধি বানালাম যেন আমি প্রত্যক্ষ করি যে তোমরা কিরূপ কাজ কর।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ ۙ قَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا ائْتِ بِقُرْآنٍ غَيْرِ هَٰذَا أَوْ بَدِّلْهُ ۚ قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أُبَدِّلَهُ مِنْ تِلْقَاءِ نَفْسِي ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ ۖ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ

১৫. আর যখন তাদের সামনে আমার আয়াতসমূহ পাঠ করা হয় যা অতি স্পষ্ট, তখন ঐ সব লোক যারা আমার সাক্ষাতের আশা করে না, এইরূপ বলেঃ এটা ছাড়া অন্য কোন কুরআন আনয়ন করুন অথবা এতেই কিছু পরিবর্তন করে দিন; তুমি বলে

رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾

দাওঃ আমার দ্বারা এটা সম্ভব নয় যে, আমি নিজের পক্ষ হতে এতে পরিবর্তন করে দেই, আমি তো শুধু তারই অনুসরণ করবো যা ওহী যোগে আমার কাছে পৌঁছেছে, যদি আমি আমার প্রতিপালকের নাফরমানী করি তবে আমি এক অতি ভীষণ দিনের শাস্তির ভয় করি।

قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٦﴾

১৬. তুমি বলে দাওঃ যদি আল্লাহর ইচ্ছা হতো তবে না আমি তোমাদেরকে এটা পাঠ করে শুনাতাম, আর না আল্লাহ তোমাদেরকে ওটা জানাতেন, কেননা আমি এর পূর্বেওতো জীবনের এক দীর্ঘ সময় তোমাদের মধ্যে অতিবাহিত করেছি; তবে কি তোমরা এতটুকু জ্ঞান রাখো না?

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٧﴾

১৭. অতএব সে ব্যক্তির চেয়ে অধিক অত্যাচারী কে হবে, যে ব্যক্তি আল্লাহর প্রতি মিথ্যা আরোপ করে অথবা তাঁর আয়াতসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে? নিঃসন্দেহে এমন পাপাচারীদের কিছুতেই মঙ্গল (মুক্তি) হবে না।

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ قُلْ اَتُنَبِّئُوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٨﴾

১৮. আর তারা আল্লাহ ছাড়া এমন বস্তুসমূহেরও ইবাদত করে যারা তাদের কোন অপকারও করতে পারে না এবং তাদের কোন উপকারও করতে পারে না, আর তারা বলেঃ এরা হচ্ছে আল্লাহর নিকট আমাদের সুপারিশকারী; তুমি বলে দাওঃ তোমরা কি আল্লাহকে এমন বিষয়ের সংবাদ দিচ্ছ যা তিনি অবগত নন, না আকাশসমূহে, আর না যমীনে? তিনি

পবিত্র ও তাদের মুশরিকী কার্যকলাপ হতে অনেক উর্ধ্বে।

وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّآ أُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٩﴾

১৯. আর সমস্ত মানুষ (প্রথম) এক উম্মতই ছিল, অতঃপর তারা মতভেদ সৃষ্টি করলো; আর যদি তোমার প্রতিপালকের পক্ষ হতে এক নির্দেশবাণী প্রথমে সাব্যস্ত হয়ে না থাকতো তবে যে বিষয়ে তারা মতভেদ করছে তার চূড়ান্ত মীমাংসা হয়ে যেতো।[১]

وَيَقُوْلُوْنَ لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ اِنَّمَا الْغَيْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا ۚ اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٢٠﴾

২০. আর তারা বলেঃ তাঁর প্রতি তাঁর প্রতিপালকের পক্ষ হতে কোন মু'জিযা কেন নাযিল হলো না? সুতরাং তুমি বলে দাওঃ গায়েবের খবর শুধুমাত্র আল্লাহই জানেন, অতএব তোমরাও প্রতীক্ষায় থাকো, আমিও তোমাদের সাথে প্রতীক্ষায় থাকলাম।

وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ اِذَا لَهُمْ مَّكْرٌ فِيْٓ اٰيَاتِنَا ؕ قُلِ اللّٰهُ اَسْرَعُ مَكْرًا ؕ اِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ﴿٢١﴾

২১. আর যখন আমি মানুষকে কোন নিয়ামতের স্বাদ উপভোগ করাই তাদের উপর কোন বিপদ পতিত হওয়ার পর, তখনই তারা আমার আয়াতসমূহ সম্বন্ধে দূরভিসন্ধি (কুমতলব) করতে থাকে; তুমি বলে দাওঃ আল্লাহ সবচেয়ে দ্রুত কৌশল গ্রহণ করতে পারেন। নিশ্চয়ই আমার ফেরেশতারা তোমাদের সকল দূরভিসন্ধি লিপিবদ্ধ করছেন।

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বর্ণনা করেন যে, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, প্রত্যেকটি নবজাত শিশু ইসলামী স্বভাব নিয়ে জন্মগ্রহণ করে; কিন্তু পরে পিতা-মাতা তাকে ইয়াহূদ করে গড়ে তুলে অথবা নাসারা করে গড়ে তুলে অথবা অগ্নিপূজক করে গড়ে তুলে। ঠিক যেমন চতুষ্পদ পশু চতুষ্পদ পশু জন্ম দেয়। তোমরা তার নাক বা অন্যান্য অংশ কাটা দেখতে পাও কি? (বুখারী, হাদীস নং ১৩৮৫)

هُوَ الَّذِىْ يُسَيِّرُكُمْ فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا كُنْتُمْ فِى الْفُلْكِ ۚ وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَّفَرِحُوْا بِهَا جَآءَتْهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ وَّجَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اُحِيْطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ لَئِنْ اَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٢٢﴾

২২. তিনি এমন, যিনি তোমাদেরকে স্থলভাগে ও জলভাগে পরিভ্রমণ করান; এমন কি যখন তোমরা নৌকায় অবস্থান কর, আর সেই নৌকাগুলো লোকদের নিয়ে অনুকূলে বায়ুর সাহায্যে চলতে থাকে, আর তারা তাতে আনন্দিত হয়, (হঠাৎ) তাদের উপর এক প্রচন্ড (প্রতিকূল) বায়ু এসে পড়ে এবং প্রত্যেক দিক হতে তাদের উপর তরঙ্গমালা ধেয়ে আসে, আর তারা মনে করে যে তারা (বিপদে) বেষ্টিত হয়ে পড়েছে, (তখন) সকলে খাঁটি বিশ্বাসের সাথে আল্লাহকেই ডাকতে থাকে, (হে আল্লাহ!) যদি আপনি আমাদেরকে এটা হতে রক্ষা করেন, তবে আমরা অবশ্যই কৃতজ্ঞ হয়ে যাবো।

فَلَمَّآ اَنْجٰهُمْ اِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. অনন্তর যখনই আল্লাহ তাদেরকে উদ্ধার করে নেন, তখনই তারা ভূ-পৃষ্ঠে অন্যায়ভাবে বিদ্রোহচারণ করতে থাকে, হে লোক সকল! (শুনে রেখো), তোমাদের বিদ্রোহচারণ তোমাদেরই প্রাণের জন্যে বিপদ হবে, পার্থিব জীবনে (এটা দ্বারা কিছু) ফলভোগ করছো, তৎপর আমারই পানে তোমাদেরকে ফিরে আসতে হবে, অতঃপর আমি তোমাদের যাবতীয় কৃতকর্ম তোমাদেরকে জানিয়ে দেবো।

اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذَتِ الْاَرْضُ

২৪. বস্তুতঃ পার্থিব জীবনের অবস্থা তো এরূপ, যেমন আমি আসমান হতে পানি বর্ষণ করলাম তৎপর তা দ্বারা উৎপন্ন হয় যমীনের উদ্ভিদগুলো

زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَآ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ ۙ اَتٰىهَآ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْاَمْسِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾

অতিশয় ঘন হয়ে, যা মানুষ ও পশুরা ভক্ষণ করে; এমন কি, যখন সেই যমীন নিজের সুদৃশ্যতার পূর্ণ রূপ ধারণ করলো এবং তা শোভনীয় হয়ে উঠলো, আর ওর মালিকরা মনে করলো যে, তারা এখন ওর পূর্ণ অধিকারী হয়েছে, তখন দিবাকালে অথবা রাত্রিকালে ওর উপর আমার পক্ষ হতে কোন আপদ এসে পড়লো, সুতরাং আমি ওকে এমন নিশ্চিহ্ন করে দিলাম যেন গতকল্য ওর অস্তিত্বই ছিল না, এরূপেই নিদর্শনাবলীকে আমি বিশদরূপে বর্ণনা করি এমন লোকদের জন্যে, যারা ভেবে দেখে।

وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَيَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٥﴾

২৫. আর আল্লাহ তোমাদেরকে শান্তির আবাসের (জান্নাতের) দিকে আহ্বান করেন এবং যাকে ইচ্ছা সরল পথে চলার ক্ষমতা দান করেন।

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ؕ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٦﴾

২৬. যারা নেক কাজ করেছে তাদের জন্যে উত্তম বস্তু (জান্নাত) রয়েছে; এবং আরো অতিরিক্ত জিনিস (আল্লাহর দীদার)। আর না তাদের মুখমন্ডলকে মলিনতা আচ্ছন্ন করবে, আর না অপমান; তারাই হচ্ছে জান্নাতের অধিবাসী, তারা ওর মধ্যে অনন্তকাল থাকবে।

وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا ۙ وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ؕ

২৭. পক্ষান্তরে যারা মন্দ কাজ করে, তারা তাদের মন্দ কাজের শাস্তি পাবে ওর অনুরূপ এবং অপমান তাদেরকে আচ্ছাদিত করে নেবে; আল্লাহ (এর শাস্তি) হতে কেউই তাদেরকে রক্ষা করতে পারবে না, যেন তাদের

أُولَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلنَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿٢٧﴾

মুখমন্ডলকে আচ্ছাদিত করে দেয়া হয়েছে অন্ধকার রাত্রির পরতসমূহ দ্বারা; এরা হচ্ছে জাহান্নামের অধিবাসী, তারা ওর মধ্যে অনন্তকাল থাকবে।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا۟ مَكَانَكُمْ أَنتُمْ وَشُرَكَآؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَآؤُهُم مَّا كُنتُمْ إِيَّانَا تَعْبُدُونَ ﴿٢٨﴾

২৮. আর সেদিনটিও (উল্লেখযোগ্য,) যেদিন আমি তাদের সকলকে একত্রিত করবো, অতঃপর মুশরিকদেরকে বলবোঃ তোমরা ও তোমাদের শরীকরা স্ব-স্ব স্থানে অবস্থান কর, অনন্তর আমি তাদের মধ্যে পরস্পর বিভেদ সৃষ্টি করে দেবো এবং তাদের সেই শরীকরা বলবেঃ তোমরা তো আমাদের ইবাদত করতে না।

فَكَفَىٰ بِٱللَّهِ شَهِيدًۢا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِن كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغَٰفِلِينَ ﴿٢٩﴾

২৯. বস্তুতঃ আমাদের ও তোমাদের মধ্যে আল্লাহই হচ্ছেন যথোপযুক্ত সাক্ষী যে, আমরা তোমাদের ইবাদত সমন্ধে অবগত ছিলাম না।

هُنَالِكَ تَبْلُوا۟ كُلُّ نَفْسٍ مَّآ أَسْلَفَتْ وَرُدُّوٓا۟ إِلَى ٱللَّهِ مَوْلَىٰهُمُ ٱلْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا۟ يَفْتَرُونَ ﴿٣٠﴾

৩০. তথায় প্রত্যেক ব্যক্তিই স্বীয় পূর্ব কৃতকর্মগুলো পরীক্ষা করে নেবে এবং তাদেরকে আল্লাহর দিকে প্রত্যাবর্তিত করা হবে, যিনি তাদের প্রকৃত মালিক, আর যেসব মিথ্যা মা'বূদ তারা বানিয়ে নিয়েছিল তা সব কিছু নিমিষেই হারিয়ে যাবে।

قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَٱلْأَرْضِ أَمَّن يَمْلِكُ ٱلسَّمْعَ وَٱلْأَبْصَٰرَ وَمَن يُخْرِجُ ٱلْحَىَّ مِنَ ٱلْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ ٱلْمَيِّتَ مِنَ ٱلْحَىِّ وَمَن يُدَبِّرُ ٱلْأَمْرَ ۚ فَسَيَقُولُونَ ٱللَّهُ ۚ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٣١﴾

৩১. তুমি বলঃ কে, তোমাদেরকে আসমান ও যমীন হতে রিযিক পৌঁছিয়ে থাকেন? অথবা কে কর্ণ ও চক্ষুসমূহের উপর পূর্ণ অধিকার রাখেন? আর কে জীবন্তকে প্রাণহীন হতে বের করেন, আর প্রাণহীনকে জীবন্ত হতে বের করেন? আর কে

সমস্ত কাজ পরিচালনা করেন? তখন অবশ্যই তারা বলবে যে, আল্লাহ; অতএব, তুমি বলঃ তবে কেন তোমরা ভয় কর না?

فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿٣٢﴾

৩২. সুতরাং তিনিই হচ্ছেন আল্লাহ, যিনি তোমাদের সত্য প্রতিপালক, অতএব সত্যের পর ভ্রষ্টতা ছাড়া আর কি রইলো? তবে তোমরা (সত্যকে ছেড়ে) কোথায় ফিরে যাচ্ছ?

كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾

৩৩. এইভাবে সমস্ত অবাধ্য লোকের সম্পর্কে তোমার প্রতিপালকের এই কথা সাব্যস্ত হয়ে গেল যে, তারা ঈমান আনবে না।

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٤﴾

৩৪. (হে নবী ﷺ) তুমি বলঃ তোমাদের (নিরূপিত) শরীকদের মধ্যে এমন কেউ আছে কি যে প্রথমবারও সৃষ্টি করে, আবার পুনর্বারও সৃষ্টি করে, তুমি বলঃ আল্লাহ্ই প্রথমবারও সৃষ্টি করেন। অতঃপর তিনিই পুনর্বারও সৃষ্টি করবেন। অতএব, তোমরা (সত্য হতে) কোথায় ফিরে যাচ্ছ?

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ؕ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٥﴾

৩৫. তুমি বলঃ তোমাদের শরীকদের মধ্যে এমন কেউ আছে কি যে সত্য বিষয়ের সন্ধান দেয়? তুমি বলে দাও যেঃ আল্লাহই সত্য বিষয়ের পথ প্রদর্শন করেন; তবে কি যিনি সত্য বিষয়ের পথ প্রদর্শন করেন, তিনিই অনুসরণ করার সমধিক যোগ্য, না ঐ ব্যক্তি যে অন্যের পথ প্রদর্শন করা ছাড়া নিজেই পথ প্রাপ্ত হয় না? তবে তোমাদের কি হলো? তোমরা কিরূপ সিদ্ধান্ত গ্রহণ করছো?

وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا ۚ إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

৩৬. আর তাদের অধিকাংশ লোক শুধু অলীক কল্পনার পিছনে চলছে; নিশ্চয়ই অলীক কল্পনা বাস্তব ব্যাপারে মোটেই ফলপ্রসূ নয়; নিশ্চয়ই আল্লাহ সবই জানেন, যা কিছু তারা করছে।

وَمَا كَانَ هَٰذَا الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَىٰ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَٰكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٧﴾

৩৭. আর এই কুরআন কল্পনাপ্রসূত নয় যে, আল্লাহ ছাড়া অন্য কারো দ্বারা প্রকাশিত হয়েছে; এটা তো সেই কিতাবের সত্যতা প্রমাণকারী যা এর পূর্বে (নাযিল) হয়েছে, এবং অবশ্যকীয় বিধানসমূহের তফসীল বর্ণনাকারী, (এবং) এতে কোন সন্দেহ নেই, (এটা) বিশ্বপ্রতি-পালকের পক্ষ হতে (নাযিল) হয়েছে।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِثْلِهِ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾

৩৮. তারা কি এরূপ বলে যে, এটা তার (নবীর) স্বরচিত? তুমি বলে দাওঃ তবে তোমরা এর অনুরূপ একটি সূরাই আনয়ন কর এবং আল্লাহকে বাদ দিয়ে যাকে যাকে নিতে পার ডেকে নাও, যদি তোমরা সত্যবাদী হও।

بَلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعِلْمِهِ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيلُهُ ۚ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ﴿٣٩﴾

৩৯. বরং তারা এমন বিষয়কে মিথ্যা সাব্যস্ত করেছে, যা তাদের বোধগম্য নয়। আর এখনো তাদের প্রতি এর বিশ্লেষণ আসেনি; এরূপভাবে তারাও মিথ্যা সাব্যস্ত করেছিল, যারা তাদের

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন। তিনি বলেছেন, প্রত্যেক নবীকেই তার (যুগ) উপযোগী মু'জেযা (বিশেষ নিদর্শন) প্রদান করা হয়েছে। সে অনুসারে ঈমান আনা হয়েছে। অথবা বলেছেন, তাঁর ওপরই লোকেরা ঈমান এনেছে। আর নিশ্চয়ই আমাকে ওহী দেয়া হয়েছে, যা আল্লাহ্ তা'আলা আমার ওপর নাযিল করেছেন। অতএব আমি আশা করছি যে, কিয়ামতের দিন আমার অনুগামী তাদের থেকে অধিক সংখ্যায় হবে। (বুখারী, হাদীস নং ৭২৭৪)

পূর্বে গত হয়েছে; অতএব, দেখো সেই অত্যাচারীদের পরিণাম কি হলো।

৪০. আর তাদের মধ্যে কতক লোক এর প্রতি ঈমান আনবে এবং কতক লোক তারা এর প্রতি ঈমান আনবে না, আর তোমার প্রতিপালক বিপর্যয় সৃষ্টিকারীদেরকে ভালরূপে জানেন।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤٠﴾

৪১. আর (এতদসত্ত্বেও) যদি তারা তোমাকে মিথ্যা সাব্যস্ত করতে থাকে, তবে তুমি বলে দাওঃ আমার কর্মফল আমি পাবো আর তোমাদের কর্মফল তোমরা পাবে, তোমরা তো আমার কৃতকর্মের জন্যে দায়ী নও, আর আমিও তোমাদের কর্মের জন্যে দায়ী নই।

وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ اَنْتُمْ بَرِيْٓـُٔوْنَ مِمَّآ اَعْمَلُ وَاَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٤١﴾

৪২. আর তাদের অনেকে তোমার কথা কান পেতে শোনে; তবে কি তুমি বধিরদেরকে শুনাচ্ছ, যদিও তাদের বোধশক্তি না থাকে।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤٢﴾

৪৩. আর তাদের কতক লোক তোমাকে দেখছে; তবে কি তুমি অন্ধকে পথ দেখাতে চাচ্ছ, যদিও তাদের অন্তদৃষ্টি না থাকে?

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تَهْدِى الْعُمْىَ وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٤٣﴾

৪৪. নিশ্চয়ই আল্লাহ মানুষের প্রতি কোন যুলুম করেন না, পরন্তু মানুষ নিজেরাই নিজেদের প্রতি যুলুম করে।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْـًٔا وَّلٰكِنَّ النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٤﴾

৪৫. আর (ঐ দিনটি তাদেরকে স্মরণ করিয়ে দাও) যে দিন তিনি (আল্লাহ) তাদেরকে এইরূপ অবস্থায় একত্রিত করবেন, যেন তারা পূর্ণ

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ ؕ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

بِلِقَآءِ اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿٤٥﴾

দিবসের মুহূর্তকাল মাত্র অবস্থান করেছিল, এবং তারা একে অপরকে চিনবে; বাস্তবিকই ক্ষতিগ্রস্থ হলো ঐসব লোক যারা আল্লাহর সাক্ষাৎকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে এবং তারা হিদায়াত প্রাপ্ত ছিল না।

وَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٤٦﴾

৪৬. আর আমি তাদের সাথে যে শাস্তির অঙ্গীকার করছি, যদি ওর সামান্য অংশও তোমাকে দেখিয়ে দেই, অথবা তোমাকে মৃত্যু দান করি, সর্বাবস্থায় তাদেরকে আমারই পানে আসতে হবে, আর আল্লাহ তাদের সকল কৃতকর্মেরই সাক্ষী।

وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِىَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٤٧﴾

৪৭. প্রত্যেক উম্মতের জন্যে এক একজন রাসূল রয়েছেন, সুতরাং তাদের সেই রাসূল যখন এসে পড়েন (তখন) তাদের মীমাংসা করা হয় ন্যায়ভাবে, আর তাদের প্রতি কোন অবিচার করা হয় না।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٨﴾

৪৮. আর তারা বলেঃ (আমাদের এই অঙ্গীকার কখন (সংঘটিত) হবে? যদি তোমরা সত্যবাদী হও।

قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِىْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ؕ اِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٤٩﴾

৪৯. তুমি বলে দাওঃ আমি তো আমার নিজের জন্যে কোন উপকার বা ক্ষতির অধিকারী নই; কিন্তু যতটুকু আল্লাহ চান, প্রত্যেক উম্মতের জন্যে একটি নির্দিষ্ট সময় আছে; যখন তাদের সেই নির্দিষ্ট সময় এসে পৌঁছে, তখন তারা মুহূর্তকাল না পশ্চাদপদ হতে পারবে, আর না অগ্রসর হতে পারবে।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا

৫০. তুমি বলে দাওঃ বলতো, যদি তোমাদের উপর আল্লাহর আযাব

مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٥٠﴾

রাত্রিকালে অথবা দিবাভাগে এসে পড়ে, তবে তাতে অপরাধীদের তাড়াতাড়ি চাওয়ার কি আছে?

اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ اٰمَنْتُمْ بِهٖ ؕ آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٥١﴾

৫১. তবে ওটা যখন এসে পড়বে, তখন কে ওটা বিশ্বাস করবে? (বলা হবে) হ্যাঁ এখন মানলে, অথচ তোমরা ওর জন্যে তাড়াহুড়া করছিলে।

ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ ۚ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٥٢﴾

৫২. অতঃপর যালিমদেরকে বলা হবেঃ চিরস্থায়ী শাস্তির স্বাদ গ্রহণ করতে থাকো, তোমরা তো তোমাদেরই কৃতকর্মের ফল পাচ্ছ।

وَيَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ ؕ قُلْ اِيْ وَرَبِّيْۤ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ۫ وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٥٣﴾

৫৩. তারা তোমাকে জিজ্ঞেস করেঃ ওটা (শাস্তি) কি যথার্থ বিষয়? তুমি বলে দাওঃ হ্যাঁ আমার প্রতিপালকের কসম। ওটা নিশ্চিত সত্য; আর তোমরা কিছুতেই আল্লাহকে অপারগ করতে পারবে না।

وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْاَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهٖ ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٥٤﴾

৫৪. আর যদি প্রত্যেক (মুশরিকের) জুলুমকারীর কাছে দুনিয়া ভরা সম্পদও থাকে, তবে সে তা দান করেও নিজের প্রাণ রক্ষা করতে উদ্যত হবে এবং যখন তারা আযাব দেখতে পাবে, তখন অনুতাপকে গোপন রাখবে, আর তাদের ফায়সালা করা হবে ন্যায়ভাবে এবং তাদের প্রতি অবিচার করা হবে না।

اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٥﴾

৫৫. স্মরণ রাখো যে, সবই আল্লাহর স্বত্ব যা কিছু আকাশসমূহে এবং যমীনে রয়েছে; স্মরণ রাখো যে, আল্লাহর অঙ্গীকার সত্য; কিন্তু তাদের অধিকাংশই তা জানে না।

هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٦﴾

৫৬. তিনিই জীবন দান করেন এবং তিনিই মৃত্যু ঘটান, আর তোমরা সবাই তাঁরই পানে প্রত্যাবর্তিত হবে।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِى الصُّدُوْرِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾

৫৭. হে মানব জাতি! তোমাদের কাছে তোমাদের প্রতিপালকের তরফ হতে সমাগত হয়েছে এক নসীহত এবং অন্তরসমূহের সকল রোগের আরোগ্যকারী, আর মু'মিনদের জন্যে পথ প্রদর্শক ও রহমত।

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿٥٨﴾

৫৮. তুমি বলে দাওঃ আল্লাহর এই দান ও রহমতের (কুরআনের) প্রতি সকলেরই আনন্দিত হওয়া উচিত; এটা (পার্থিব সম্পদ) হতে বহুগুণ উত্তম যা তারা সঞ্চয় করছে।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّحَلٰلًا ؕ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٩﴾

৫৯. তুমি বলঃ আচ্ছা বলতো, আল্লাহ তোমাদের জন্যে যা কিছু রিযিক পাঠিয়েছেন, অতঃপর তোমারা ওর কতক অংশ হারাম এবং কতক অংশ হালাল সাব্যস্ত করে নিলে; তুমি জিজ্ঞেস করঃ আল্লাহ কি তোমাদেরকে অনুমতি দিয়েছেন, নাকি তোমরা আল্লাহর উপর মিথ্যা আরোপ করছো?

وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦٠﴾ ع

৬০. আর যারা আল্লাহর উপর মিথ্যা আরোপ করে, তাদের কিয়ামত দিবস সম্বন্ধে কি ধারণা? বাস্তবিক, মানুষের উপর আল্লাহর খুবই অনুগ্রহ রয়েছে; কিন্তু অধিকাংশ লোকই অকৃতজ্ঞ।

وَمَا تَكُوْنُ فِىْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ

৬১. আর তুমি যে অবস্থাতেই থাক না কেন? আর তুমি (নবী ﷺ) যে কোন স্থান হতে কুরআন পাঠ কর এবং তোমরা (অন্যান্য লোক) যে

شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ وَلَاۤ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَلَاۤ اَكْبَرَ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦١﴾

কাজই কর, আমার সব কিছুরই খবর থাকে, যখন তোমরা সেই কাজ করতে শুরু কর; কণা পরিমাণও কোন বস্তু তোমার প্রতিপালকের (জ্ঞানের) অগোচরে নয়ঃ না যমীনে, না আসমানে, আর না কোন বস্তু তা হতে ক্ষুদ্রতর, না তা হতে বৃহত্তর; কিন্তু এই সমস্তই স্পষ্ট কিতাবে (লাওহে মাহ্ফুজে) লিপিবদ্ধ রয়েছে।

اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾

৬২. মনে রেখো যে, আল্লাহর বন্ধুদের না কোন আশঙ্কা আছে, আর না তারা বিষণ্ন হবে।[১]

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾

৬৩. তারা হচ্ছে সেই লোক যারা ঈমান এনেছে এবং (গুনাহ্ হতে) পরহেয্ করে থাকে।

لَهُمُ الْبُشْرٰى فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى الْاٰخِرَةِ ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٤﴾

৬৪. তাদের জন্যে সুসংবাদ রয়েছে পার্থিব জীবনে[২] এবং পরকালেও; আল্লাহর থাকায় কোন পরিবর্তন হয় না; এটা হচ্ছে বিরাট সফলতা।

وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ؕ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٥﴾

৬৫. আর তোমাকে যেন তাদের উক্তিগুলো বিষণ্ন না করে, সকল ইয্যত-সম্মান আল্লাহরই জন্যে রয়েছে; তিনি শুনেন, জানেন।

১। আবূ সাঈদ খুদরী (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, যখন মৃতকে খাটে রেখে লোকেরা তাদের কাঁধে উঠায়ে নেয়, যদি সে পুণ্যবান হয়, তখন সে বলে, আমাকে নিয়ে এগিয়ে চল। আর যদি সে পুণ্যবান না হয়, তাহলে বলে হায়! এরা এটা কোথায় নিয়ে যাচ্ছে? তার এ চীৎকার মানুষ ছাড়া সকলেই শুনতে পায়। যদি (মানুষ) শুনত (এ চীৎকার) তাহলে সে সজ্ঞা হারিয়ে ফেলত। (বুখারী, হাদীস নং ১৩১৪)

২। (ক) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেন, আমি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি, সুসংবাদ প্রদানকারী জিনিসসমূহ ছাড়া নবুওয়াতের আর কিছুই অবশিষ্ট নেই। লোকেরা জিজ্ঞেস করল, সুসংবাদ প্রদানকারী জিনিসসমূহ কি? তিনি বললেন, ভাল স্বপ্ন। (বুখারী, হাদীস নং ৬৯৯০)
(খ) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, মু'মিনের ভাল স্বপ্ন নবুওয়াতের ছিচল্লিশ ভাগের একভাগ। (বুখারী, হাদীস নং ৬৯৮৮)

اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ ؕ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿٦٦﴾

৬৬. মনে রাখো, যত কিছু আসমান-সমূহে আছে এবং যত কিছু যমীনে আছে, এই সমস্তই আল্লাহরই; আর যারা আল্লাহকে ছেড়ে অন্য শরীকদের অনুসরণ করে, তারা কোন বস্তুর অনুসরণ করছে? তারা শুধু অবাস্তব খেয়ালের তাবেদারী করে চলছে এবং শুধু অনুমানপ্রসূত (মিথ্যা) কথা বলছে।

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٧﴾

৬৭. তিনি এমন, যিনি তোমাদের জন্যে রাত্রি বানিয়েছেন, যেন তোমরা তাতে স্বস্তি লাভ কর, আর দিবসকেও সৃষ্টি করেছেন যে, তা হচ্ছে দেখাশুনার উপকরণ; ওতে নিদর্শনাবলী রয়েছে তাদের জন্যে যারা শোনে।

قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ الْغَنِيُّ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا ؕ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾

৬৮. তারা বলেঃ আল্লাহর সন্তান আছে, তিনি পবিত্র! তিনি তো কারো মুখাপেক্ষী নন; তাঁরই স্বত্বে রয়েছে যা কিছু আসমানসমূহে আছে এবং যা কিছু যমীনে আছে; তোমাদের কাছে এর (উক্তি দাবীর) কোন প্রমাণও নেই; আল্লাহ সম্বন্ধে কি তোমরা এমন কথা আরোপ করছো যা তোমাদের জানা নেই?

قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾

৬৯. তুমি বলে দাওঃ যারা আল্লাহর উপর মিথ্যা রচনা করে তারা সফলকাম হবে না।

مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيْقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيْدَ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾

৭০. এটা দুনিয়ার সামান্য আরাম-আয়েশ মাত্র, তৎপর আমারই দিকে তাদের ফিরে আসতে হবে, তখন আমি তাদেরকে তাদের কুফরীর বিনিময়ে কঠিন শাস্তির স্বাদ গ্রহণ করাবো।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِيْ وَتَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْٓا اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْٓا اِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٧١﴾

৭১. আর তুমি তাদেরকে নূহের ইতিবৃত্ত পড়ে শোনাও, যখন তিনি নিজের কওমকে বললেনঃ হে আমার কওম! যদি তোমাদের কাছে কঠিন মনে হয় আমার অবস্থান এবং আল্লাহর আদেশাবলী নসীহত করা, তবে আমার তো আল্লাহরই উপর ভরসা, সুতরাং তোমরা তোমাদের (কল্পিত) শরীকদেরকে সঙ্গে নিয়ে নিজেদের তদবীর মজবুত করে নাও, অতঃপর তোমাদের সেই তদবীর (গোপন ষড়যন্ত্র) যেন তোমাদের দুশ্চিন্তার কারণ না হয়, তারপর আমার সাথে (যা করতে চাও) করে ফেলো, আর আমাকে মোটেই অবকাশ দিও না।

فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ۭ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٧٢﴾

৭২. এরপরও যদি তোমরা মুখ ফিরিয়ে নাও, তবে আমি তো তোমাদের কাছে কোন পারিশ্রমিক চাই (না, আমার পারিশ্রমিক তো শুধু আল্লাহরই যিম্মায় রয়েছে, আর আমাকে হুকুম করা হয়েছে যে, আমি যেন অনুগতদের অন্তর্ভুক্ত থাকি।

فَكَذَّبُوْهُ فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾

৭৩. অনন্তর তারা তাঁকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করলো, অতএব আমি তাঁকে এবং যারা তাঁর সাথে নৌকায় ছিল তাদেরকে নাজাত দিলাম ও তাদেরকে আবাদ করলাম, আর যারা আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যা সাব্যস্ত করেছিল, তাদেরকে নিমজ্জিত করে দিলাম, সুতরাং দেখো কি পরিণাম হয়েছিল তাদের, যাদেরকে ভীতি প্রদর্শন করা হয়েছিল।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٧٤﴾

৭৪. আবার আমি তার (নূহ ﷺ-এর পরে) অপর নবীদেরকে তাদের কওমের নিকট প্রেরণ করলাম, সুতরাং তারা তাদের নিকট মু'জিযাসমূহ নিয়ে আসলো, এতদসত্ত্বেও তারা যে বস্তুকে পূর্বে মিথ্যা সাব্যস্ত করেছিল, পরেও তা মেনে নেয়নি। এভাবেই আমি সীমালঙ্ঘনকারীদের অন্তরসমূহের উপর মোহর লাগিয়ে দেই।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٧٥﴾

৭৫. অতঃপর আমি তাদের পর মূসা ও হারূনকে আমার মু'জিযাসমূহ সহকারে ফিরাউন ও তার পরিষদ-বর্গের নিকট পাঠালাম, অনন্তর তারা অহংকার করলো, আর সেই লোকগুলো ছিল পাপাচারী সম্প্রদায়।

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٦﴾

৭৬. অতঃপর যখন তাদের প্রতি আমার পক্ষ হতে প্রমাণ পৌঁছলো, তখন তারা বলতে লাগলো, নিশ্চয়ই এটা সুস্পষ্ট যাদু।

قَالَ مُوْسٰۤى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ﴿٧٧﴾

৭৭. মূসা বললেনঃ তোমরা কি এ হক সম্পর্কে এমন কথা বলছো, যখন ওটা তোমাদের নিকট পৌঁছলো? এটা কি যাদু? অথচ যাদুকররা তো সফলকাম হয় না!

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِى الْاَرْضِ ؕ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٨﴾

৭৮. তারা বলতে লাগলোঃ তুমি কি আমাদের নিকট এই জন্যে এসেছো যে, আমাদেরকে সরিয়ে দিবে সেই তরীকা হতে, যাতে আমরা আমাদের পূর্বপুরুষদের পেয়েছি, আর পৃথিবীতে তোমাদের দু'জনের আধিপত্য স্থাপিত হয়ে যায়? আর

আমরা তোমাদের দু'জনের প্রতি কখনও ঈমান আনব না।

৭৯. এবং ফিরাউন বললোঃ আমার কাছে সমস্ত সুদক্ষ যাদুকরকে উপস্থিত কর।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِيْ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿٧٩﴾

৮০. অনন্তর যখন যাদুকররা আসলো, তখন মূসা (عليه السلام) তাদেরকে বললেনঃ নিক্ষেপ কর যা কিছু তোমরা নিক্ষেপ করতে চাও।

فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٨٠﴾

৮১. অতঃপর যখন তারা নিক্ষেপ করলো, তখন মূসা (عليه السلام) বললেনঃ যাদু এটাই; নিশ্চয়ই আল্লাহ এখনই এটাকে বানচাল করে দিবেন; (কেননা) আল্লাহ এমন বিপর্যয় সৃষ্টিকারী কাজ সম্পন্ন হতে দেন না।

فَلَمَّآ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨١﴾

৮২. আর আল্লাহ স্বীয় অঙ্গীকার অনুযায়ী হক প্রতিষ্ঠিত করে দেন, যদিও পাপাচারীরা তা অপ্রীতিকর মনে করে।

وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٨٢﴾

৮৩. বস্তুতঃ মূসা (عليه السلام)-এর প্রতি তার স্বগোত্রীয় লোকদের মধ্যে (প্রথমে) শুধু অল্প সংখ্যক লোকই ঈমান আনলো, ভীত-সন্ত্রস্ত অবস্থায় ফিরাউন ও তার প্রধানবর্গের ভয়ে যে, তারা তাদেরকে নির্যাতন করবে; আর বাস্তবিক পক্ষে ফিরাউন সেই দেশে ক্ষমতাবান ছিল, আর সে ছিল সীমাতিক্রম কারীদের অন্তর্ভুক্ত।

فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِى الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٨٣﴾

৮৪. আর মূসা (عليه السلام) বললেনঃ হে আমার সম্প্রদায়! যদি তোমরা আল্লাহর উপর ঈমান রাখো, তবে তাঁরই উপর ভরসা কর, যদি তোমরা মুসলিম হও।

وَقَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ﴿٨٤﴾

فَقَالُوا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٥﴾

৮৫. তারা বললোঃ আমরা আল্লাহরই উপর ভরসা করলাম, হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে এই যালিমদের লক্ষ্যস্থল বানাবেন না।

وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٦﴾

৮৬. আর আমাদেরকে তোমার নিজ রহমতে এই কাফিরদের (কবল) হতে মুক্তি দিন।

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٧﴾

৮৭. আর আমি মূসা ও তার ভ্রাতার প্রতি ওহী পাঠালাম– তোমরা উভয়ে তোমাদের এই লোকদের জন্যে মিসরে(ই) বাসস্থান বহাল রাখো, আর তোমরা সবাই নিজেদের সেই গৃহগুলোকে নামায পড়ার স্থানরূপে গণ্য কর এবং নামায কায়েম কর, আর মু'মিনদেরকে শুভ সংবাদ জানিয়ে দাও।

وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٨٨﴾

৮৮. আর মূসা (عليه السلام) বললেনঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি ফিরাউন ও তার পরিষদবর্গকে দান করেছেন জাঁকজমকের সামগ্রী এবং বিভিন্ন রকমের সম্পদ পার্থিব জীবনে, হে আমাদের রব! যার কারণে তারা আপনার পথ হতে (মানবমন্ডলীকে) বিভ্রান্ত করে, হে আমাদের প্রতিপালক! তাদের সম্পদগুলোকে নিশ্চিহ্ন করে দিন এবং তাদের অন্তরসমূহকে কঠিন করুন, যাতে তারা ঈমান না আনতে পারে যতক্ষণ, তারা যন্ত্রণাময় আযাবকে দেখে নেয়।

قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَلَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾

৮৯. তিনি (আল্লাহ) বললেনঃ তোমাদের উভয়ের দুআ' কবূল করা হলো, অতএব তোমরা দৃঢ় থাকো, আর তাদের পথ অনুসরণ করো না যাদের জ্ঞান নেই।

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ وَ اَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩٠﴾

৯০. আর আমি বানী ইসরাঈলকে সমুদ্র পার করে দিলাম, অতঃপর ফিরাউন তার সৈন্যদলসহ তাদের পশ্চাদানুসরণ করলো যুলুম ও নির্যাতনের উদ্দেশ্যে, এমন কি যখন সে নিমজ্জিত হতে লাগলো, তখন বলতে লাগলোঃ আমি ঈমান আনছি বানী ইসরাঈল যাঁর উপর ঈমান এনেছে, তিনি ছাড়া অন্য কোন সত্য মা'বূদ নেই এবং আমি মুসলিমদের অন্তর্ভুক্ত হচ্ছি।

آٰلْـٰٔنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٩١﴾

৯১. এখন ঈমান আনছো? অথচ পূর্ব (মুহূর্ত) পর্যন্ত তুমি নাফরমানী করছিলে এবং ফাসাদীদের অন্তর্ভুক্ত ছিলে।

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰيَةً ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ﴿٩٢﴾

৯২. অতএব, আমি আজ বাঁচিয়ে দিচ্ছি তোমার দেহকে যেন তুমি তোমার পরবর্তী লোকদের জন্যে উপদেশ গ্রহণের উপকরণ হয়ে থাকো; আর প্রকৃতপক্ষে অনেক লোক আমার উপদেশাবলী হতে উদাসীন রয়েছে।

وَلَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٣﴾

৯৩. আর আমি বানী ইসরাঈলকে থাকবার জন্য অতি উত্তম বাসস্থান প্রদান করলাম, আর আমি তাদেরকে আহার করবার জন্যে উৎকৃষ্ট বস্তুসমূহ দান করলাম, সুতরাং তারা মতভেদ করেনি এই পর্যন্ত যে, তাদের নিকট (আহকামের) জ্ঞান পৌঁছলো; নিঃসন্দেহে তোমার প্রতিপালক কিয়ামত দিবসে তাদের মধ্যে সেই সব বিষয়ের মীমাংসা করবেন, যাতে তারা মতভেদ করছিল।

فَإِنْ كُنْتَ فِي شَكٍّ مِّمَّآ أَنْزَلْنَآ إِلَيْكَ فَسْـَٔلِ الَّذِيْنَ يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَآءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٩٤﴾

৯৪. অতঃপর (হে নবী ﷺ)! যদি তুমি এই (কিতাব) সম্পর্কে সন্দিহান হও, যা আমি তোমার নিকট পাঠিয়েছি, তবে তুমি তাদেরকে জিজ্ঞেস করে দেখো, যারা তোমার পূর্বেকার কিতাবসমূহ পাঠ করে, নিঃসন্দেহে তোমার নিকট এসেছে তোমার প্রতিপালকের পক্ষ হতে সত্য কিতাব, সুতরাং তুমি কখনই সংশয়ীদের অন্তর্ভুক্ত হয়ো না।

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٥﴾

৯৫. আর ঐ সব লোকেরও অন্তর্ভুক্ত হয়ো না, যারা আল্লাহর আয়াতগুলোকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে, যেন তুমি ধ্বংস হয়ে না যাও।

إِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٩٦﴾

৯৬. নিঃসন্দেহে যাদের সম্বন্ধে তোমার প্রতিপালকের কথা সাব্যস্ত হয়ে গিয়েছে, তারা কখনো ঈমান আনবে না।

وَلَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٩٧﴾

৯৭. যদিও তাদের নিকট সমস্ত প্রমাণ পৌঁছে যায়, যে পর্যন্ত না তারা যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি দেখে নেয় (কিন্তু তখন ঈমান আনা বৃথা)।

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ إِيْمَانُهَآ إِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ۚ لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ إِلٰى حِيْنٍ ﴿٩٨﴾

৯৮. সুতরাং এমন কোন জনপদই ঈমান আনেনি যে, তাদের ঈমান আনয়ন উপকারী হয়েছে, ইউনুসের কওম ছাড়া, যখন তারা ঈমান আনলো, তখন আমি তাদের থেকে পার্থিব জীবনে অপমানজনক শাস্তি বিদূরিত করে দিলাম এবং তাদেরকে সুখ-স্বাচ্ছন্দ্যে থাকতে দিলাম এক নির্ধারিত কাল পর্যন্ত।

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ؕ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾

৯৯. আর যদি তোমার প্রতিপালক ইচ্ছা করতেন তাহলে বিশ্বের সকল লোকই ঈমান আনতো; তবে তুমি কি মানুষের উপর জবরদস্তি করতে পার, যাতে তারা ঈমান আনয়ন করে?

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٠﴾

১০০. অথচ আল্লাহর হুকুম ছাড়া কারো ঈমান আনা সম্ভব নয়; আর আল্লাহ নির্বোধ লোকদের উপর (কুফরীর) অপবিত্রতা স্থাপন করে দেন।

قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠١﴾

১০১. তুমি বলে দাওঃ তোমরা চোখ খুলে দেখো, কি কি বস্তু রয়েছে, আসমানসমূহে ও যমীনে; আর যারা ঈমান আনয়ন করে না, প্রমাণাদি ও ভয় প্রদর্শন তাদের কোন উপকার সাধন করতে পারে না।

فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾

১০২. অতএব, তারা শুধু ঐ লোকদের অনুরূপ ঘটনাবলীর প্রতীক্ষা করছে, যারা তাদের পূর্বে গত হয়ে গেছে, তুমি বলে দাওঃ আচ্ছা তবে তোমরা (ওর) প্রতীক্ষায় থাকো, আমিও তোমাদের সাথে প্রতীক্ষারতদের মধ্যে রইলাম।

ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾

১০৩. পরন্তু আমি স্বীয় রাসূলদেরকে এবং মু'মিনদেরকে বাঁচিয়ে রাখতাম, এরূপেই, আমার উচিত যে আমি মু'মিনদেরকে নাজাত দেই।

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَآ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

১০৪. তুমি বলে দাওঃ হে লোক সকল! যদি তোমরা আমার দ্বীন সম্বন্ধে সন্দিহান হও, তবে আমি সেই মা'বূদদের ইবাদত করি না,

وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِىْ يَتَوَفّٰىكُمْ ۖ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٤﴾

আল্লাহকে ছেড়ে তোমরা যাদের ইবাদত কর; কিন্তু আমি সেই মা'বূদের ইবাদত করি, যিনি তোমাদের জান কব্জ করেন, আর আমাকে এই আদেশ করা হয়েছে যে, আমি যেন ঈমান আনয়ন-কারীদের দলভুক্ত থাকি।

وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٥﴾

১০৫. তুমি নিজেকে এই দ্বীনের উপর সুদৃঢ়ভাবে প্রতিষ্ঠিত রাখবে। আর কখনও মুশরিকদের অন্তর্ভুক্ত হয়ো না।

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٦﴾

১০৬. আর আল্লাহকে ছেড়ে এমন কিছুকে আহ্বান করো না, যা না তোমার কোন উপকার করতে পারে, না কোন ক্ষতি করতে পারে বস্তুতঃ যদি এরূপ কর তবে তুমি এমতাবস্থায় যালিমদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাবে।

وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ؕ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٧﴾

১০৭. যদি আল্লাহ তোমাকে কোন কষ্টে নিপতিত করেন, তবে তিনি ছাড়া কেউ তা মোচনকারী নেই, আর যদি তিনি তোমার প্রতি কোন কল্যাণ চান, তবে তাঁর অনুগ্রহের কোন অপসারণকারী নেই; তিনি স্বীয় অনুগ্রহ নিজের বান্দাদের মধ্য হতে যাকে চান দান করেন; এবং তিনি অত্যন্ত ক্ষমাশীল, অতিশয় দয়ালু।

قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِىْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ

১০৮. তুমি বলে দাওঃ হে লোক সকল! তোমাদের কাছে তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে সত্য (ধর্ম) এসেছে, অতএব, যে ব্যক্তি সঠিক পথে আসবে, বস্তুত সে নিজের জন্যেই পথে আসবে, আর যে ব্যক্তি

وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٨﴾

পথভ্রষ্ট থাকবে, তার পথভ্রষ্টতা তারই উপর বর্তাবে, আর আমাকে তোমাদের উপর দায়বদ্ধ করা হয়নি।

وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾

১০৯. আর তুমি তোমার প্রতি প্রেরিত ওহীর অনুসরণ কর, আর ধৈর্যধারণ কর এই পর্যন্ত যে, আল্লাহ মীমাংসা করে দেন এবং তিনিই উত্তম মীমাংসাকারী।

سُوْرَةُ هُوْدٍ مَّكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ١٢٣ رُكُوْعَاتُهَا ١٠

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

সূরাঃ হূদ, মাক্কী

(আয়াতঃ ১২৩ রুকূঃ ১০)

শুরু করছি আল্লাহর নামে যিনি পরম করুণাময়, অতি দয়ালু।

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ﴿١﴾

১. আলিফ-লাম-রা। এটা (কুরআন) এমন কিতাব যার আয়াতগুলি (প্রমাণাদি দ্বারা) মজবুত অকাট্য করা হয়েছে, অতঃপর বিশদভাবে বর্ণনা করা হয়েছে, প্রজ্ঞাময়, মহাজ্ঞাতার পক্ষ হতে।

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ﴿٢﴾

২. এই (উদ্দেশ্যে) যে, আল্লাহ ছাড়া কারো ইবাদত করো না; আমি (নবী ﷺ) তাঁর পক্ষ থেকে তোমাদেরকে ভয় প্রদর্শনকারী ও সুসংবাদদাতা।

وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ؕ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ ﴿٣﴾

৩. আর এই (উদ্দেশ্যে) যে, তোমরা নিজেদের প্রতিপালকের নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করো, তৎপর তাঁর প্রতি নিবিষ্ট থাকো, তিনি তোমাদেরকে সুখ-সম্ভোগ দান করবেন, নির্দিষ্ট কাল পর্যন্ত এবং প্রত্যেক অধিক আমলকারীকে অধিক সওয়াব

দিবেন, আর যদি তোমরা মুখ ফিরাতেই থাকো, তবে আমি তোমাদের জন্য কঠিন দিনের শাস্তির আশঙ্কা করি।

৪. আল্লাহরই নিকট তোমাদেরকে ফিরে যেতে হবে এবং তিনি প্রত্যেক বস্তুর উপর পূর্ণ ক্ষমতা রাখেন।

إِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ④

৫. জেনে রাখো, তারা কুঞ্চিত করে নিজেদের বক্ষকে যাতে নিজেদের কথাগুলি আল্লাহ হতে লুকাতে পারে; জেনে রেখো, তারা যখন নিজেদের কাপড় (নিজেদের দেহে) জড়ায়, তিনি তখনও সব জানেন যা কিছু তারা চুপে চুপে আলাপ করে এবং যা কিছু প্রকাশ্যে আলাপ করে, নিশ্চয় তিনি তো মনের ভিতরের কথাগুলিও জানেন।

اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ؕ اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ⑤

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ۚ كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٦﴾

৬. আর ভূ-পৃষ্ঠে বিচরণকারী এমন কোন প্রাণী নেই যে, তার রিয্ক আল্লাহর যিম্মায় না রয়েছে, আর তিনি তার আবাস (এ জীবদ্দশায়) সম্পর্কে আর তাকে যেখানে সোপর্দ করা হবে (মৃত্যুর পরে) তিনি অবহিত। সবই এক সুস্পষ্ট কিতাবে (লাওহে মাহফুযে) লিপিবদ্ধ রয়েছে।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۗ وَلَئِنْ قُلْتَ إِنَّكُم مَّبْعُوثُونَ مِن بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٧﴾

৭. আর তিনিই আসমান ও যমীনকে সৃষ্টি করেছেন ছ'দিনে এবং সেই সময় তাঁর আরশ পানির উপরে ছিল যেন তোমাদেরকে পরীক্ষা করে নেন যে, তোমাদের মধ্যে উত্তম আমলকারী কে? আর যদি তুমি বলঃ নিশ্চয়ই তোমাদেরকে মৃত্যুর পর জীবিত করা হবে, তখন যে সব লোক কাফির তারা বলেঃ এটা তো নিছক স্পষ্ট যাদু।[১]

وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلَىٰ أُمَّةٍ مَّعْدُودَةٍ لَّيَقُولُنَّ مَا يَحْبِسُهُ ۗ أَلَا يَوْمَ يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٨﴾

৮. আর যদি আমি কিছু সময়ের জন্যে তাদের থেকে শাস্তিকে মুলতবী করে রাখি তবে তারা বলতে থাকে, সেই শাস্তিকে কিসে আটকিয়ে রাখছে? স্মরণ রেখো, যেদিন ওটা তাদের উপর এসে পড়বে, তখন তা কিছুতেই নিবারিত হবে না, আর যা নিয়ে তারা উপহাস করছিল তা এসে তাদেরকে ঘিরে নেবে।

وَلَئِنْ أَذَقْنَا الْإِنسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنَاهَا

৯. আর যদি আমি মানুষকে স্বীয় অনুগ্রহ আস্বাদন করিয়ে তার হতে

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন। নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আল্লাহ্ ডান হাত ভরা। রাত ও দিন ভর খরচ করলেও তা কমে না। তোমরা কি দেখ না আসমান ও যমীনের সৃষ্টির সময় থেকে (আজ পর্যন্ত) তিনি কত (বিপুল পরিমাণে) খরচ করেছেন। তবুও তার ডান হাতের কিছুই কমেনি। আর তাঁর আরশ পানির ওপর অবস্থিত ছিল। তার অন্য হাতে রয়েছে ফয়েয বা কবয। তিনি কখনো তা উত্তোলিত করেন আবার কখানো তা নিম্নমুখী করেন। (বুখারী, হাদীস নং ৭৪১৯)

مِنْهُ ۚ إِنَّهُ لَيَئُوسٌ كَفُورٌ ⑨

তা ছিনিয়ে নেই, তবে সে নিরাশ ও অকৃতজ্ঞ হয়ে পড়ে।

وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ نَعْمَاءَ بَعْدَ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ السَّيِّئَاتُ عَنِّي ۚ إِنَّهُ لَفَرِحٌ فَخُورٌ ⑩

১০. আর যদি তাকে কোন নিয়ামত আস্বাদন করাই কোন কষ্টের পর যা তার উপর আপতিত হয়েছিল, তখন বলতে শুরু করে, আমার সব দুঃখ-কষ্ট দূর হয়ে গেল; সে গর্ব করতে থাকে, আত্ম প্রশংসা করতে থাকে।

إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ⑪

১১. কিন্তু যারা ধৈর্য ধরে ও ভাল কাজ করে, তারা ব্যতীত। এমন লোকদের জন্যে রয়েছে ক্ষমা এবং বিরাট পুরস্কার।

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضَ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَضَائِقٌ بِهِ صَدْرُكَ أَنْ يَقُولُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ جَاءَ مَعَهُ مَلَكٌ ۚ إِنَّمَا أَنْتَ نَذِيرٌ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ⑫

১২. ফলে হয়তো তুমি অংশ বিশেষ বর্জন করতে চাও ঐ নির্দেশাবলী হতে যা তোমার প্রতি ওহী যোগে প্রেরিত হয়, আর তোমার মন সঙ্কুচিত হয় এই কথায় যে, তারা বলেঃ তার প্রতি কোন ধনভান্ডার কেন নাযিল হলো না? অথবা তার সাথে কোন ফেরেশতা কেন আসলো না? (হে নবী ﷺ)! তুমি তো শুধু ভয় প্রদর্শক আর আল্লাহই হচ্ছেন প্রত্যেক বস্তুর উপর পূর্ণ দায়িত্বভার গ্রহণকারী।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۚ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِثْلِهِ مُفْتَرَيَاتٍ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ⑬

১৩. তবে কি তারা বলে যে, ওটা সে নিজেই রচনা করেছে? তুমি বলে দাওঃ তাহলে তোমরাও ওর অনুরূপ রচিত দশটি সূরা আনয়ন কর এবং আল্লাহ ছাড়া যাকে যাকে পার ডাক, যদি তোমরা সত্যবাদী হও।

فَإِلَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا أُنْزِلَ بِعِلْمِ

১৪. অতঃপর যদি তারা তোমাদের ফরমাইশ পূর্ণ করতে না পারে তবে

اللّٰهِ وَاَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٤﴾

তোমরা দৃঢ় বিশ্বাস রাখো যে, এই কুরআন অবতীর্ণ হয়েছে আল্লাহরই জ্ঞান (ক্ষমতা) দ্বারা, আর এটাও যে, তিনি ছাড়া আর কোন সত্য মা'বূদ নেই, তবে এখন তোমরা আত্মসম্পর্ণ করবে কি?

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ﴿١٥﴾

১৫. যারা শুধু পার্থিব জীবন ও ওর জাঁকজমক কামনা করে, আমি তাদেরকে তাদের কৃতকর্মগুলি (-র ফল) দুনিয়াতেই পরিপূর্ণরূপে প্রদান করে দেই এবং দুনিয়াতে তাদের জন্যে কিছুই কম করা হয় না।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾

১৬. এরা এমন লোক যে, তাদের জন্যে আখেরাতে জাহান্নাম ছাড়া আর কিছুই নেই, আর তারা যা কিছু করেছিল তা সবই আখেরাতে অকেজো হয়ে যাবে এবং যা কিছু করছে তাও বিফল হবে।

اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوْهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّرَحْمَةً ۭ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْاَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٧﴾

১৭. অতঃপর যে তার রবের পক্ষ থেকে আসা সুস্পষ্ট প্রমাণের উপর রয়েছে এবং তাকে তেলাওয়াত করেন তাঁর পক্ষ থেকে একজন সাক্ষী (মুহাম্মাদ ﷺ) এবং তাঁর পূর্ববর্তী মূসার কিতাব যা পথ প্রদর্শক ও রহমত স্বরূপ। এমন লোকেরাই এর (কুরআনের) প্রতি ঈমান রাখে; আর অন্যান্য সম্প্রদায়ের যে ব্যক্তি এই কুরআন অমান্য করবে, তবে দোযখ হবে তার প্রতিশ্রুত স্থান, অতএব তুমি এই (কুরআন) সম্পর্কে সন্দেহে পতিত হয়ো না, নিঃসন্দেহে এটা সত্য কিতাব তোমার প্রতিপালকের সন্নিধান হতে; কিন্তু

অধিকাংশ লোক ঈমান আনয়ন করে না।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ أُولَٰئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿١٨﴾

১৮. আর ঐ ব্যক্তি অপেক্ষা অধিক অত্যাচারী কে হবে, যে আল্লাহর প্রতি মিথ্যা আরোপ করে? এরূপ লোকদেরকে তাদের প্রতিপালকের সামনে পেশ করা হবে এবং সাক্ষীগণ (ফেরেশতাগণ) বলবেনঃ এরা ঐ লোক যারা নিজেদের প্রতিপালকের সম্বন্ধে মিথ্যা কথা আরোপ করেছিল, জেনে রেখো, এমন অত্যাচারীদের উপর আল্লাহর অভিশাপ।[১]

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿١٩﴾

১৯. যারা অপরকে আল্লাহর পথ হতে নিবৃত্ত রাখতো এবং ওতে বক্রতা বের করার চেষ্টায় লিপ্ত থাকতো; আর তারা পরকালেরও অমান্যকারী ছিল।

أُولَٰئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ۘ يُضَاعَفُ لَهُمُ

২০. তারা (সমগ্র) ভূ-পৃষ্ঠে আল্লাহকে অক্ষম করতে পারে নাই, আর না তাদের জন্যে আল্লাহ ছাড়া কেউ সহায়কও হলো, এরূপ লোকদের

১। সাফওয়ান ইবনে মুহরিয বর্ণনা করেছেন। একদিন আমি ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা)-এর সঙ্গে (কাবা শরীফ) তাওয়াফ করছিলাম। এমনি সময় এক ব্যক্তি এসে হাযির হলো এবং ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহু) কে সম্বোধন করে বললো, হে আবূ আবদুর রহমান, কিংবা বলেছে, হে ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহু), আপনি কি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে কিয়ামতের দিন আল্লাহ্ তা'আলা এবং ঈমানদারদের মধ্যকার গোপন আলোচনা সম্পর্কে কিছু শুনেছেন? তিনি জবাব দিলেন, হ্যাঁ, আমি শুনেছি, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেন, (কিয়ামতের দিন) ঈমানদারকে রাব্বুল আলামীনের এত নিকটে আনা হবে যে, আল্লাহ্ তা'আলা ঈমানদারের কাঁধে হাত রেখে তার গুনাহ সমূহের স্বীকারোক্তি আদায় করিয়ে নেবেন। তাকে জিজ্ঞেস করবেন, অমুক গুনাহ জানা আছে কি? মনে আছে কি? ঈমানদার বলবে, হে আমার পরওয়ারদিগার, আমি আমার গুনাহর কথা স্বীকার করছি, এমন এমন গুনাহ অবশ্যই আমার থেকে সংঘটিত হয়েছে। সুতরাং এভাবে দু'বার ঈমানদার স্বীকার করবে। অতঃপর আল্লাহ্ তা'আলা বলবেন, আমি দুনিয়ায় তোমার গুনাহ ও অপরাধ গোপন রেখেছি; কিন্তু আজ তোমাকে মাফ করে দিচ্ছি। তারপর তার নেক কাজসমূহের আমলনামা ভাঁজ করে (তার হাতে) দেয়া হবে।

পক্ষান্তরে অপর দল তথা কাফেরদেরকে সাক্ষী-সমক্ষে ডেকে বলা হবে, এরাই ছিল সেসব লোক, যারা তাদের রবের ওপর মিথ্যারোপ করেছিল। (বুখারী, হাদীস নং ৪৬৮৫)

الْعَذَابُ ۚ مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ ﴿٢٠﴾

জন্যে দ্বিগুণ শাস্তি হবে, এরা না শুনতে সক্ষম হচ্ছিল, আর না তারা (সত্যপথ) দেখতে ছিল।

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢١﴾

২১. এরা সেই লোক যারা নিজেরা নিজেদের সর্বনাশ করে ফেলেছে, আর তারা যা কিছু রচনা করেছিল তা সবই তাদের নিকট হতে হারিয়ে গেছে।

لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿٢٢﴾

২২. এটা সুনিশ্চিত যে, আখেরাতে এরাই হবে সর্বাধিক ক্ষতিগ্রস্থ।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَخْبَتُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ ۙ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. নিশ্চয় যারা ঈমান এনেছে এবং সৎ কার্যাবলী সম্পন্ন করেছে, আর নিজেদের প্রতিপালকের প্রতি ঝুঁকে পড়েছে, এরূপ লোকেরাই হচ্ছে জান্নাতবাসী, তাতে তারা অনন্তকাল থাকবে।

مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ كَالْاَعْمٰى وَالْاَصَمِّ وَالْبَصِيْرِ وَالسَّمِيْعِ ۭ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾

২৪. দু'টি সম্প্রদায়ের দৃষ্টান্ত এরূপ– যেমন এক ব্যক্তি যে অন্ধ ও বধির এবং আর এক ব্যক্তি যে দেখতেও পায় ও শুনতে পায় এই দু'ব্যক্তি কি তুলনায় সমান হবে? (কখনও নয়) তবুও কি তোমরা বুঝ না?

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ ۡ اِنِّىْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٥﴾

২৫. আর আমি নূহকে (عليه السلام) তাঁর কওমের নিকট রাসূলরূপে প্রেরণ করেছি, (নূহ বললেন) আমি তোমাদের জন্যে স্পষ্ট ভয় প্রদর্শনকারী।

اَنْ لَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٦﴾

২৬. যে, তোমরা আল্লাহ ছাড়া আর কারো ইবাদত করো না, আমি তোমাদের উপর এক ভীষণ যন্ত্রণাদায়ক দিনের শাস্তির আশঙ্কা করছি।

فَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرٰىكَ اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّاْيِ ۚ وَمَا نَرٰى لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍۭ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿٢٧﴾

২৭. অনন্তর তার সম্প্রদায়ের মধ্যে যেসব নেতৃস্থানীয় লোক কাফির ছিল তারা বলতে লাগলোঃ আমরা তো তোমাকে আমাদেরই মতো মানুষ দেখতে পাচ্ছি, আর আমরা দেখছি যে, শুধু ঐ লোকেরাই তোমার অনুসরণ করছে যারা আমাদের মধ্যে নিতান্তই হীন ও গরীব, তাও আবার শুধু স্থূল বুদ্ধি অনুসারে; আর আমাদের উপর তোমাদের কোন শ্রেষ্ঠত্বও আমরা দেখছি না; বরং আমরা তোমাদেরকে মিথ্যাবাদীই মনে করছি।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰنِيْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ ؕ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَاَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ ﴿٢٨﴾

২৮. তিনি বললেনঃ হে আমার কওম! আচ্ছা বলতো আমি যদি স্বীয় প্রতিপালকের পক্ষ হতে প্রমাণের উপর থাকি এবং তিনি আমাকে নিজ সন্নিধান হতে রহমত (নবুওয়াত) দান করে থাকেন, অতঃপর ওটা তোমাদের বোধগম্য না হয়, তবে কি আমি ওটা তোমাদের উপর জোরপূর্বক চাপিয়ে দেবো, অথচ তোমরা ওটা অবজ্ঞা করতে থাকো?

وَيٰقَوْمِ لَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَاۤ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّيْۤ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ﴿٢٩﴾

২৯. আর হে আমার কওম! আমি এতে তোমাদের কাছে কোন ধন-সম্পদ চাচ্ছি না; আমার বিনিময় তো শুধু আল্লাহর যিম্মায় রয়েছে, আর আমি তো এই মু'মিনদেরকে ধাক্কা দিয়ে বের করে দিতে পারি না; নিশ্চয় তারা নিজেদের প্রতিপালকের সমীপে গমনকারী, পরন্তু আমি তোমাদেরকে নির্বোধ কওমরূপে দেখছি।

وَيٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣٠﴾

৩০. আর হে আমার কওম! আমি যদি তাদেরকে বের করেই দেই তবে আল্লাহর পাকড়াও হতে কে আমাকে রক্ষা করবে? তোমরা কি এতটুকু বুঝ না?

وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ اِنِّيْ مَلَكٌ وَّلَآ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِيْٓ اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۚ اِنِّيْٓ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣١﴾

৩১. আর আমি তোমাদেরকে এই কথা বলছি না যে, আমার নিকট আল্লাহর সকল ধন-ভান্ডার রয়েছে এবং আমি (একথা বলছি না যে আমি) অদৃশ্যের কথা জানি। আর আমি এটাও বলি না যে, আমি ফেরেশ্‌তা। আর যারা তোমাদের চোখে হীন আমি তাদের সম্বন্ধে এটা বলতে পারি না যে, আল্লাহ কখনো তাদেরকে কোন নিয়ামত দান করবেন না। তাদের অন্তরে যা কিছু আছে তা আল্লাহ উত্তমরূপে জানেন, আমি তো এরূপ বললে অন্যায়ই করে ফেলব।

قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣٢﴾

৩২. তারা বললোঃ হে নূহ (عليه السلام)! তুমি আমাদের সাথে বিতর্ক করেছো, অনন্তর সেই বিতর্ক অনেক বেশি করেছো, সুতরাং যে সম্বন্ধে তুমি আমাদেরকে ভয় দেখাচ্ছ তা আমাদের সামনে আনয়ন কর, যদি তুমি সত্যবাদী হও।

قَالَ اِنَّمَا يَاْتِيْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَآءَ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٣٣﴾

৩৩. তিনি বললেনঃ ওটা তো আল্লাহ তোমাদের সামনে আনয়ন করবেন যদি তিনি ইচ্ছা করেন এবং তোমরা তাঁকে অক্ষম করতে পারবে না।

وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِيْٓ اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يُّغْوِيَكُمْ ؕ هُوَ

৩৪. আর আমার দিক নির্দেশনা (নসীহত) তোমাদের উপকারে আসতে পারে না, আমি তোমাদের যতই মঙ্গল কামনা করতে চাই না

رَبُّكُمْ ۖ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٣٤﴾

কেন, যদি আল্লাহরই তোমাদেরকে পথভ্রষ্ট করার ইচ্ছা হয়; তিনিই তোমাদের প্রতিপালক, আর তাঁরই কাছে তোমাদেরকে ফিরে যেতে হবে।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَعَلَيَّ إِجْرَامِي وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا تُجْرِمُونَ ﴿٣٥﴾

৩৫. তবে কি তারা বলেঃ সে (মুহাম্মদ ﷺ) এটা (কুরআন) নিজেই রচনা করেছে। তুমি বলে দাওঃ যদি আমি তা নিজে রচনা করে থাকি তবে আমার এই অপরাধ আমার উপর বর্তিবে, আর আমি তোমাদের এই অপরাধ হতে সম্পূর্ণ মুক্ত।

وَأُوحِيَ إِلَىٰ نُوحٍ أَنَّهُ لَن يُؤْمِنَ مِن قَوْمِكَ إِلَّا مَن قَدْ آمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

৩৬. আর নূহের (عليه السلام) প্রতি ওহী প্রেরিত হলো, যারা ঈমান এনেছে তারা ছাড়া তোমার কওম হতে আর কেউ ঈমান আনবে না, কাজেই যা তারা করছে তাতে তুমি মোটেই দুঃখ করো না।

وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ إِنَّهُم مُّغْرَقُونَ ﴿٣٧﴾

৩৭. আর তুমি আমার চোখের সামনে[১]ও আমার নির্দেশক্রমে নৌকা নির্মাণ কর, আর আমার কাছে যালিমদের সম্পর্কে কোন কথা বলো না, তাদের সকলকে নিমজ্জিত করা হবে।

وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأٌ مِّن قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ ۚ قَالَ إِن تَسْخَرُوا مِنَّا فَإِنَّا نَسْخَرُ مِنكُمْ كَمَا تَسْخَرُونَ ﴿٣٨﴾

৩৮. তিনি নৌকা নির্মাণ করতে লাগলেন, আর যখনই তাঁর কওমের সরদারদের মধ্যে যে তাঁর নিকট দিয়ে গমন করতো, তখনই তাঁর সাথে উপহাস করতো, তিনি বলতেনঃ যদি তোমরা আমাদেরকে

১। **টীকাঃ** এই আয়াতে আল্লাহ্ পাকের "চোখ"-এর প্রমাণ করে। এর প্রতি বিশ্বাস রাখা অপরিহার্য কর্তব্য। চোখকে অন্য অর্থে প্রকাশ করা আহলে সুন্নাত ওয়াল জামা'আতের আকীদা পরিপন্থী।

উপহাস কর তবে আমরাই (একদিন) তোমাদের উপহাস করবো, যেমন তোমরা আমাদেরকে উপহাস করছো।

৩৯. সুতরাং সত্বরই তোমরা জানতে পারবে যে, সে কোন্ ব্যক্তি যার উপর এমন আযাব আসার উপক্রম হয়েছে যা তাকে লাঞ্ছিত করে দেবে এবং তার উপর চিরস্থায়ী আযাব নাযিল হবে।

فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٣٩﴾

৪০. অবশেষে যখন আমার ফরমান এসে পৌঁছলো এবং চুলা (হতে পানি) উথলিয়ে উঠতে লাগলো, আমি বললাম, প্রত্যেক জীবের এক-এক জোড়া, দু'দুটি করে তাতে (নৌকাতে) উঠিয়ে নাও এবং নিজ পরিবার বর্গকেও, তাকে ছাড়া যার সম্বন্ধে পূর্বে নির্দেশ হয়ে গেছে এবং অন্যান্য মু'মিনদেরকে; আর অল্প কয়েকজন ছাড়া কেউই তাঁর সাথে ঈমান আনে নাই।

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ اٰمَنَ ؕ وَمَآ اٰمَنَ مَعَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿٤٠﴾

৪১. আর তিনি (নূহ (عليه السلام)) বললেনঃ তোমরা এতে (নৌকায়) আরোহণ করো, এর গতি ও এর অবস্থান আল্লাহরই নামে; নিশ্চয় আমার প্রতিপালক ক্ষমাশীল, দয়াবান।

وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا ؕ اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٤١﴾

৪২. আর সেই নৌকাটিই তাদেরকে নিয়ে পর্বত তূল্য তরঙ্গের মধ্যে চলতে লাগলো, আর নূহ (عليه السلام) স্বীয় পুত্রকে ডাকতে লাগলেন এবং সে ছিল ভিন্ন স্থানে, হে আমার পুত্র! আমাদের সাথে সওয়ার হও এবং কাফিরদের সাথে থেকো না।

وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۫ وَنَادٰى نُوْحُ ۨ ابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ مَعْزِلٍ يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٢﴾

قَالَ سَاٰوِيْٓ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَآءِ ؕ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ﴿٤٣﴾

৪৩. সে বললোঃ আমি এখনই কোন পাহাড়ে আশ্রয় গ্রহণ করবো যা আমাকে পানি হতে রক্ষা করবে। তিনি (নূহ (عليه السلام))[১] বললেনঃ আজ আল্লাহর শাস্তি হতে কেউই রক্ষাকারী নেই; কিন্তু যার উপর তিনি দয়া করেন, ইতিমধ্যে তাদের উভয়ের মাঝে একটি তরঙ্গ অন্তরাল হয়ে পড়লো, ফলে সে নিমজ্জিত লোকদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে গেল।

وَقِيْلَ يٰۤاَرْضُ ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾

৪৪. আর আদেশ হলোঃ হে যমীন স্বীয় পানি গিলে নাও এবং হে আসমান! থেমে যাও, তখন পানি কমে গেল ও ঘটনার পরিসমাপ্তি ঘটলো, আর নৌকা জুদী (পাহাড়)-এর উপর এসে থামলো, আর বলা হলোঃ অন্যায়কারীরা আল্লাহর রহমত হতে দূরে।

وَنَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِيْ مِنْ اَهْلِيْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ اَحْكَمُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٤٥﴾

৪৫. আর নূহ (عليه السلام) নিজ প্রতিপালককে ডাকলেন এবং বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমার এই পুত্রটি আমার পরিবারবর্গেরই অন্তর্ভুক্ত আর আপনার ওয়াদাও সম্পূর্ণ সত্য এবং আপনি সমস্ত বিচারকের শ্রেষ্ঠ বিচারক।

قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ

৪৬. তিনি (আল্লাহ) বললেনঃ হে নূহ! এই ব্যক্তি তোমার পরিবারের

১। আবূ সাঈদ খুদরী (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) এরশাদ করেছেনঃ যখন কোন ব্যক্তিকে খলিফা বা প্রতিনিধি নিযুক্ত করা হয় তার জন্য দু'দল পরামর্শদাতা থাকে একদল পরামর্শ দাতা তাকে ভাল ও সৎকাজ করার পরামর্শ প্রদান করে এবং ভাল ও সৎকাজ করার জন্য উৎসাহিত করে থাকে। আর একদল পরামর্শদাতা তাকে খারাপ ও অন্যায় কাজ করার পরামর্শ প্রদান করে এবং অন্যায় ও খারাপ কাজের প্রতি উৎসাহিত করে থাকে। আর মা'সূম হবে সেই ব্যক্তি আল্লাহ্ যাকে রক্ষা করবেন। (বুখারী, হাদীস নং ৬৬১১)

غَيْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِۦ عِلْمٌ ۖ إِنِّىٓ أَعِظُكَ أَن تَكُونَ مِنَ ٱلْجَٰهِلِينَ ﴿٤٦﴾

অন্তর্ভুক্ত নয়, সে অসৎ কর্মপরায়ণ, অতএব, তুমি আমার কাছে এমন বিষয়ের আবেদন করো না, যে সম্বন্ধে তোমার জ্ঞান নেই; আমি তোমাকে উপদেশ দিচ্ছি যে, তুমি অজ্ঞ লোকদের অন্তর্ভুক্ত হয়ো না।

قَالَ رَبِّ إِنِّىٓ أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِى بِهِۦ عِلْمٌ ۖ وَإِلَّا تَغْفِرْ لِى وَتَرْحَمْنِىٓ أَكُن مِّنَ ٱلْخَٰسِرِينَ ﴿٤٧﴾

৪৭. সে (নূহ (عليه السلام)) বললোঃ হে আমার প্রতিপালক! আমি আপনার নিকট এমন বিষয়ের আবেদন করা থেকে আশ্রয় চাচ্ছি, যে সম্বন্ধে আমার জ্ঞান নেই, আর যদি আপনি আমাকে ক্ষমা না করেন এবং আমার প্রতি দয়া না করেন, তবে আমি সম্পূর্ণরূপে ক্ষতিগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাবে।

قِيلَ يَٰنُوحُ ٱهْبِطْ بِسَلَٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكَٰتٍ عَلَيْكَ وَعَلَىٰٓ أُمَمٍ مِّمَّن مَّعَكَ ۚ وَأُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُم مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٨﴾

৪৮. বলা হলোঃ হে নূহ (عليه السلام)! অবতরণ কর আমার পক্ষ হতে সালাম ও বরকতসমূহ তোমার উপর এবং সেই দলসমূহের উপর যারা তোমার সাথে রয়েছে; আর অনেক দল এরূপও হবে যাদেরকে আমি (কিছুকাল দুনিয়ার) সুখ-স্বাচ্ছন্দ্য দান করবো, তৎপর তাদেরকে স্পর্শ করবে আমার পক্ষ হতে কঠিন শাস্তি।

تِلْكَ مِنْ أَنۢبَآءِ ٱلْغَيْبِ نُوحِيهَآ إِلَيْكَ ۖ مَا كُنتَ تَعْلَمُهَآ أَنتَ وَلَا قَوْمُكَ مِن قَبْلِ هَٰذَا ۖ فَٱصْبِرْ ۖ إِنَّ ٱلْعَٰقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٤٩﴾

৪৯. এটা হচ্ছে গায়েবী সংবাদ সমূহের অন্তর্ভুক্ত, যা আমি তোমার (হে মুহাম্মাদ (ﷺ)) কাছে ওহী মারফত পৌঁছিয়ে দিচ্ছি, ইতিপূর্বে এটা না তুমি জানতে, আর না তোমার কওম; অতএব, তুমি ধৈর্য ধারণ কর; নিশ্চয় শুভ পরিণাম মুত্তাকীদের জন্যেই।

وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُفْتَرُوْنَ ﴿٥٠﴾

৫০. আর আ'দ (সম্প্রদায়)-এর প্রতি তাদের ভাই হূদ (عليه السلام)-কে (রাসূলরূপে প্রেরণ করলাম;) তিনি বললেনঃ হে আমার কওম! তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর, তিনি ছাড়া তোমাদের কোন সত্য মা'বূদ নেই, তোমরা শুধু মিথ্যা উদ্ভাবনকারী।

يٰقَوْمِ لَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلَى الَّذِىْ فَطَرَنِىْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٥١﴾

৫১. হে আমার কওম! আমি এর জন্যে তোমাদের কাছে কোন বিনিময় চাই না, আমার বিনিময় শুধু তারই যিম্মায় রয়েছে যিনি আমাকে সৃষ্টি করেছেন; তবুও কি তোমরা বুঝ না?

وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿٥٢﴾

৫২. আর হে আমার কওম! তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের নিকট ক্ষমা প্রার্থনা কর, অতঃপর তাঁরই পানে নিবিষ্ট হও, তিনি তোমাদের উপর প্রচুর বৃষ্টি বর্ষণ করবেন এবং তোমাদেরকে আরো শক্তি প্রদান করে তোমাদের শক্তিকে বর্ধিত করে দেবেন, আর তোমরা অপরাধী হয়ে মুখ ফিরিয়ে নিয়ো না।

قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ بِتَارِكِىْۤ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٣﴾

৫৩. তারা বললোঃ হে হূদ (عليه السلام) তুমি তো আমাদের সামনে কোন প্রমাণ উপস্থাপন কর নাই এবং তোমার কথায় তো আমাদের উপাস্য দেবতাদেরকে বর্জন করতে পারি না, আর আমরা কিছুতেই তোমার প্রতি বিশ্বাস স্থাপনকারী নই।

اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْٓءٍ ؕ قَالَ اِنِّىْۤ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْۤا اَنِّىْ بَرِىْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٥٤﴾

৫৪. আমাদের কথা তো এই যে, আমাদের উপাস্য দেবতাদের মধ্য হতে কেউ তোমাকে দুর্দশায় ফেলে দিয়েছে; তিনি বললেনঃ আমি আল্লাহকে সাক্ষী করছি এবং

তোমরাও সাক্ষী থেকো, আমি ঐ সব কিছু থেকে মুক্ত যাদেরকে তোমরা শরীক সাব্যস্ত করছো।

مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ لَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٥٥﴾

৫৫. তাঁকে (আল্লাহকে) ছেড়ে, অনন্তর তোমরা সবাই মিলে আমার বিরুদ্ধে ষড়যন্ত্র চালাও, অতঃপর আমাকে সামান্য অবকাশও দিয়ো না।

اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ؕ مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ؕ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٦﴾

৫৬. আমি আল্লাহর উপর ভরসা করেছি, যিনি আমারও প্রতিপালক এবং তোমাদেরও প্রতিপালক, ভূ-পৃষ্ঠে যত বিচরণকারী রয়েছে সবারই ঝুঁটি তাঁর মুষ্টিতে আবদ্ধ; নিশ্চয় আমার প্রতিপালক সরল পথে অবস্থিত।

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّاۤ اُرْسِلْتُ بِهٖۤ اِلَيْكُمْ ؕ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿٥٧﴾

৫৭. অতঃপর যদি তোমরা ফিরে যাও, তবে আমাকে যে পয়গাম দিয়ে তোমাদের প্রতি পাঠানো হয়েছে, আমি তো ওটা তোমাদের কাছে পৌঁছিয়ে দিয়েছি; আর আমার প্রতিপালক (ভূ-পৃষ্ঠে) তোমাদের স্থলে অন্য লোকদের আবাদ করে দিবেন, এবং তোমরা তাঁর কিছুই ক্ষতি করতে পারবে না; নিশ্চয় আমার প্রতিপালক প্রত্যেক বস্তুর রক্ষণাবেক্ষণ করে থাকেন।

وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٥٨﴾

৫৮. আর যখন আমার (শাস্তির) হুকুম এসে পৌঁছলো তখন আমি হূদকে (عليه السلام) এবং যারা তাঁর সাথে ঈমানদার ছিল তাদেরকে স্বীয় অনুগ্রহে রক্ষা করলাম, আর তাদেরকে বাঁচিয়ে নিলাম অতি কঠিন শাস্তি হতে।

وَتِلْكَ عَادٌ ۖ جَحَدُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهُ وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٥٩﴾

৫৯. আর এরা ছিল আ'দ সম্প্রদায়, যারা নিজেদের প্রতিপালকের নিদর্শনগুলিকে অস্বীকার করলো এবং তাঁর রাসূলদেরকে অমান্য করলো এবং তারা সম্পূর্ণরূপে এমন লোকদের কথামত চলতে লাগলো যারা ছিল যালিম হঠকারী।

وَأُتْبِعُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ أَلَا إِنَّ عَادًا كَفَرُوا رَبَّهُمْ ۗ أَلَا بُعْدًا لِعَادٍ قَوْمِ هُودٍ ﴿٦٠﴾

৬০. আর এই দুনিয়াতেও অভিসম্পাত তাদের সঙ্গে সঙ্গে রইলো এবং কিয়ামতের দিনেও; ভালরূপে জেনে রেখো! আ'দ (সম্প্রদায়) নিজ প্রতিপালকের সাথে কুফরী করলো; আরো জেনে রেখো, দূরে পড়ে গেল আ'দ (রহমত হতে) যারা হূদের (عليه السلام) কওম ছিল।

وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ هُوَ أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا ۚ فَاسْتَغْفِرُوهُ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ ۚ إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ مُجِيبٌ ﴿٦١﴾

৬১. আর আমি সা'মূদ (সম্প্রদায়) এর নিকট তাদের ভাই সালেহ (عليه السلام)-কে প্রেরণ করলাম (নবীরূপে), তিনি বললেনঃ হে আমার কওম! তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর, তিনি ছাড়া কেউ তোমাদের সত্য মা'বূদ নেই। তিনি তোমাদেরকে যমীন হতে সৃষ্টি করেছেন এবং তোমাদেরকে তাতে আবাদ করেছেন, অতএব তোমরা তাঁর কাছে ক্ষমা প্রার্থনা কর, অতপর মনোনিবেশ কর তাঁরই দিকে; নিশ্চয়ই আমার প্রতিপালক একান্ত নিকটবর্তী, ডাকে সাড়া দানকারী।

قَالُوا يَا صَالِحُ قَدْ كُنْتَ فِينَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هَٰذَا ۖ أَتَنْهَانَا أَنْ نَعْبُدَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَإِنَّنَا لَفِي

৬২. তারা বললোঃ হে সালেহ তুমি তো ইতোপূর্বে আমাদের মধ্যে আশা-ভরসাস্থল ছিলে, তুমি কি আমাদেরকে ঐ বস্তুর উপাসনা

شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ﴿٦٢﴾

করতে নিষেধ করছো; যাদের উপাসনা আমাদের পিতৃপুরুষেরা করে এসেছে? আর যে ধর্মের দিকে তুমি আমাদেরকে ডাকছো বস্তুতঃ আমরা তো তৎসম্বন্ধে গভীর সন্দেহের মধ্যে রয়েছি, যা আমাদেরকে দ্বিধাদ্বন্দ্বে ফেলে রেখেছে।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰنِيْ مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ ۗ فَمَا تَزِيْدُوْنَنِيْ غَيْرَ تَخْسِيْرٍ ﴿٦٣﴾

৬৩. সে (সালেহ ﷺ) বললোঃ হে আমার কওম! আচ্ছা তোমরা ভেবে দেখেছ কি, যদি আমি নিজ প্রতিপালকের পক্ষ হতে প্রমাণের উপর থাকি এবং তিনি আমার প্রতি নিজের রহমত (নুবওয়াত) দান করে থাকেন; আর আমি যদি আল্লাহর কথা না মানি, তবে আমাকে আল্লাহ (-র শাস্তি) হতে কে রক্ষা করবে? তবে তোমরা আমার ক্ষতির মধ্যে নিক্ষেপ ছাড়া আর কিছুই বৃদ্ধি করতে পারবে না।

وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ﴿٦٤﴾

৬৪. আর হে আমার কওম! এটা হচ্ছে আল্লাহর উষ্ট্রী যা তোমাদের জন্যে নিদর্শন। অতএব ওকে ছেড়ে দাও, যেন আল্লাহর যমীনে চরে খায়, আর ওকে খারাপ উদ্দেশ্যে স্পর্শ করো না, অন্যথায় তোমাদেরকে আকস্মিক শাস্তি এসে পাকড়াও করবে।

فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ۗ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ﴿٦٥﴾

৬৫. অনন্তর তারা ওকে মেরে ফেললো, তখন সে বললো; তোমরা নিজেদের ঘরে আরো তিনটি দিন সুখভোগ করে নাও এটা এমন ওয়াদা যাতে বিন্দুমাত্র মিথ্যা নেই।

فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِئِذٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿٦٦﴾

৬৬. অতঃপর যখন আমার হুকুম এসে পৌঁছলো, আমি সালেহকে (عليه السلام) এবং যারা তার সাথে ঈমানদার ছিল তাদেরকে নিজ অনুগ্রহে রক্ষা করলাম, আর বাঁচালাম সেই দিনের বড় লাঞ্ছনা হতে; নিশ্চয় তোমার প্রতিপালক শক্তিমান, পরাক্রমশালী।

وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٦٧﴾

৬৭. আর সেই যালিমদেরকে এক প্রচন্ড ধ্বনি এসে আক্রমণ করলো, যাতে তারা নিজ নিজ গৃহে (মৃত অবস্থায়) উপুড় হয়ে পড়ে রাইলো।

كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَآ اِنَّ ثَمُوْدَا كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ﴿٦٨﴾

৬৮. যেন তারা সেই গৃহগুলিতে কখনো বসবাস করে নাই; ভালরূপে জেনে রাখো! সামূদ সম্প্রদায় নিজ প্রতিপালকের সাথে কুফরী করলো; জেনে রাখো, সামূদ সম্প্রদায়কে দূরে নিক্ষেপ করা হয়েছে। (ধ্বংস হয়ে গেছে)।

وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿٦٩﴾

৬৯. আর আমার প্রেরিত রাসূলগণ (ফেরেশতারা) ইবরাহীমের (عليه السلام) নিকট সুসংবাদ নিয়ে আগমন করলেন, (এবং) তাঁরা বললেন সালাম, ইবরাহীমও (عليه السلام) সালাম করলেন, অতঃপর অনতিবিলম্বে একটা কাবাব করা গো বৎস আনয়ন করলেন।

فَلَمَّا رَآ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ﴿٧٠﴾

৭০. কিন্তু যখন তিনি দেখলেন যে, তাঁদের হাত সেই খাদ্যের দিকে অগ্রসর হচ্ছে না, তখন তাঁদেরকে অদ্ভুত ভাবতে লাগলেন এবং মনে মনে তাদের থেকে শঙ্কিত হলেন; (এ দেখে) তারা বললেনঃ ভয় করবেন

না, আমরা লূত সম্প্রদায়ের প্রতি প্রেরিত হয়েছি।

وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ﴿٧١﴾

৭১. আর তাঁর স্ত্রী দন্ডায়মান ছিলেন, তিনি হেঁসে উঠলেন, তখন আমি তাকে (ইব্‌রাহীমের (عليه السلام) স্ত্রীকে) সুসংবাদ দিলাম ইসহাকের (عليه السلام) এবং ইসহাকের (عليه السلام) পর ইয়াকুবের (عليه السلام)।

قَالَتْ يٰوَيْلَتٰٓى ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا ؕ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ﴿٧٢﴾

৭২. তিনি বললেনঃ হায় আমার কপাল! এখন আমি সন্তান প্রসব করবো বৃদ্ধা হয়ে; আর আমার এই স্বামী অতি বৃদ্ধ! বাস্তবিকই এটা তো একটা বিস্ময়কর ব্যাপার!

قَالُوْٓا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ؕ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ﴿٧٣﴾

৭৩. তারা (ফেরেশতারা) বললেনঃ আপনি (ইব্‌রাহীমের স্ত্রীকে) কি আল্লাহর কাজে বিস্ময় বোধ করছেন? (হে) এই পরিবারের লোকেরা! আপনাদের প্রতি তো আল্লাহর রহমত ও তাঁর বরকতসমূহ (নাযিল হয়ে আসছে); নিশ্চয় তিনি প্রশংসার যোগ্য, মহামহিমান্বিত।

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ وَجَآءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِىْ قَوْمِ لُوْطٍ ؕ ﴿٧٤﴾

৭৪. অতঃপর যখন ইব্‌রাহীমের (عليه السلام) সেই ভয় দূর হয়ে গেল এবং তিনি সুসংবাদ প্রাপ্ত হলেন, তখন আমার সাথে লূত-কওম সম্বন্ধে তর্ক-বিতর্ক করতে শুরু করলো।

اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ﴿٧٥﴾

৭৫. বাস্তবিক ইব্‌রাহীম (عليه السلام) ছিলেন বড় সহিষ্ণু প্রকৃতির, ইবাদত গুজার ও প্রত্যাবর্তনকারী।

يٰٓاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَاِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ﴿٧٦﴾

৭৬. হে ইব্‌রাহীম (عليه السلام)! একথা ছেড়ে দাও, তোমার প্রতিপালকের ফরমান এসে গেছে এবং তাদের উপর এমন এক শাস্তি আসছে যা কিছুতেই টলবার নয়।

وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ ﴿٧٧﴾

৭৭. আর যখন আমার ঐ ফেরেশতারা লূতের (عليه السلام) নিকট উপস্থিত হলেন, তখন তিনি তাঁদের কারণে (তাঁদের নিরাপত্তার জন্যে) বিষণ্ন হয়ে পড়লেন এবং সেই কারণে অন্তর সঙ্কুচিত হলো, আর বললেনঃ আজকের দিনটি অতি কঠিন।

وَجَآءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ؕ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِيْ هُنَّ اَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِيْ ضَيْفِيْ ؕ اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ ﴿٧٨﴾

৭৮. আর তাঁর কওম তার কাছে ছুটে আসলো এবং তারা পূর্ব হতে কুকার্যসমূহ করেই আসছিল; লূত (عليه السلام) বললেনঃ হে আমার কওম! আমার (সমাজের) এই কন্যারা রয়েছে, এরা তোমাদের জন্যে অতি পবিত্র। অতএব তোমরা আল্লাহকে ভয় কর এবং আমাকে আমার মেহমানদের সামনে অপমানিত করো না। তোমাদের মধ্যে কি ভালো লোক কেউই নেই?

قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِيْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَاِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ﴿٧٩﴾

৭৯. তারা বললোঃ তুমি তো অবগত আছ যে, তোমার (সমাজের) এই কন্যাগুলিতে আমাদের কোন আবশ্যক নেই, আর আমাদের অভিপ্রায় কি তাও তোমার জানা আছে।

قَالَ لَوْ اَنَّ لِيْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِيْٓ اِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ ﴿٨٠﴾

৮০. তিনি (লূত عليه السلام) বললেনঃ কি উত্তম হতো যদি তোমাদের উপর আমার কিছু ক্ষমতা চলতো, অথবা আমি কোন দৃঢ় স্তম্ভের আশ্রয় নিতাম।

قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَّصِلُوْٓا اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ

৮১. তাঁরা (ফেরেশ্‌তারা) বললেনঃ হে লূত (عليه السلام)! আমরা তো আপনার রবের প্রেরিত, তারা কখনো আপনার নিকট পৌঁছতে

مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَاۤ اَصَابَهُمْ ؕ اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ؕ اَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيْبٍ ﴿٨١﴾

পারবে না, অতএব, আপনি রাত্রির কোন এক ভাগে নিজের পরিবার বর্গকে নিয়ে চলে যান, আপনাদের কেউ যেন পিছনের দিকে ফিরেও না দেখে; কিন্তু হ্যাঁ, আপনার স্ত্রী যাবে না, তার উপরও ঐ আপদ আসবে যা অন্যান্যদের প্রতি আসবে, তাদের (শাস্তির) অঙ্গীকারকৃত সময় হচ্ছে প্রাতঃকাল; প্রভাত কি নিকটবর্তী নয়?

فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ مَّنْضُوْدٍ ﴿٨٢﴾

৮২. অতঃপর যখন আমার হুকুম এসে পৌঁছলো, আমি ঐ ভূ-খন্ডের উপরিভাগকে নীচে করে দিলাম এবং ওর উপর পাকা মাটির পাথর বর্ষণ করতে লাগলাম, যা একাধারে ছিল।

مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ؕ وَمَا هِيَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ ﴿٨٣﴾

৮৩. যা বিশেষ চিহ্নিত করা ছিল তোমার প্রতি পালকের নিকট; আর তা (জনপদগুলি) এই যালিমদের হতে বেশি দূরে নয়।

وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ وَلَا تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ اِنِّيْۤ اَرٰىكُمْ بِخَيْرٍ وَّاِنِّيْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ ﴿٨٤﴾

৮৪. আর আমি মাদইয়ানের (অধিবাসীদের) প্রতি তাদের ভ্রাতা শুআইবকে (عليه السلام) প্রেরণ করলাম; তিনি বললেনঃ হে আমার কওম! তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর, তিনি ছাড়া আর কেউ তোমাদের সত্য মা'বূদ নেই; আর তোমরা মাপে ও ওজনে কম করো না, আমি তোমাদেরকে স্বচ্ছল অবস্থায় দেখতে পাচ্ছি। আর আমি তোমাদের প্রতি এক বেষ্টনকারী দিবসের শাস্তির ভয় করছি।

وَيٰقَوْمِ اَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ

৮৫. আর হে আমার কওম! তোমরা মাপ ও ওজনকে পুরোপুরিভাবে

وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٨٥﴾

সম্পন্ন কর এবং লোকদের তাদের দ্রব্যাদিতে ক্ষতি করো না, আর ভূ-পৃষ্ঠে ফাসাদ সৃষ্টি করে সীমা অতিক্রম করো না।

بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿٨٦﴾

৮৬. আল্লাহ প্রদত্ত যা অবশিষ্ট থাকে, তাই তোমাদের জন্যে অতি উত্তম- যদি তোমাদের বিশ্বাস হয়, আর আমি তো তোমাদের পাহারাদার নই।

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَآ اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ فِىْٓ اَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ؕ اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ ﴿٨٧﴾

৮৭. তারা বললোঃ হে শুআ'ইব (عليه السلام)! তোমার নামায কি তোমাকে এই শিক্ষা দিচ্ছে যে, আমরা ঐসব উপাস্য বর্জন করি যাদের উপাসনা আমাদের পিতৃ-পুরুষরা করে আসছে? অথবা এটা বর্জন করতে যে, আমরা নিজেদের মালে নিজেদের ইচ্ছানুসারে ব্যবস্থা অবলম্বন করি? বাস্তবিকই তুমি হচ্ছ ধৈর্যশীল ও নেক্কার।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّىْ وَرَزَقَنِىْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَآ اَنْهٰكُمْ عَنْهُ ؕ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ؕ وَمَا تَوْفِيْقِىْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿٨٨﴾

৮৮. তিনি বললেনঃ হে আমার কওম! আচ্ছা তোমাদের কি মত, যদি আমি আমার প্রতিপালকের পক্ষ হতে প্রমাণের উপর প্রতিষ্ঠিত থাকি এবং তিনি আমাকে নিজ সন্নিধান হতে একটি উত্তম সম্পদ (নুবওয়াত) দান করে থাকেন, (তবে আমি কিরূপে প্রচার না করে পারি?) আর আমি এটা চাই না যে, আমি তোমাদের বিপরীত সেই সব কাজ করি যা হতে তোমাদেরকে নিষেধ করেছি; আমি তো শুধুমাত্র সাধ্য মুতাবেক সংশোধন করে দিতে চাচ্ছি, আর আমার যা কিছু তাওফীক

হয় তা শুধু আল্লাহরই সাহায্যে হয়ে থাকে; আমি তাঁরই উপর ভরসা রাখি এবং তাঁরই দিকে প্রত্যাবর্তন করি।

وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ؕ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ﴿٨٩﴾

৮৯. আর হে আমার কওম! তোমাদের আমার প্রতি হঠকারিতা যেন এর কারণ না হয়ে পড়ে যে, তোমাদের উপর সেইরূপ বিপদ এসে পড়ে, যেমন নূহের (عليه السلام) কওম অথবা হূদের (عليه السلام) কওম অথবা সালেহের (عليه السلام) কওমের উপর পতিত হয়েছিল; আর লূতের (عليه السلام) কওম তো তোমাদের হতে দূর (যুগে) নয়।

وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ﴿٩٠﴾

৯০. আর তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের নিকট ক্ষমা প্রার্থনা কর, অতঃপর তাঁরই দিকে মনোনিবেশ কর; নিশ্চয় আমার প্রতিপালক পরম দয়ালু, অতি প্রেমময়।

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ۫ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ﴿٩١﴾

৯১. তারা বললোঃ হে শুআ'ইব (عليه السلام)! তোমার বর্ণিত অনেক কথা আমাদের বুঝে আসে না, এবং আমরা নিজেদের মধ্যে তোমাকে দুর্বল দেখছি, আর যদি তোমার স্বজনবর্গ না থাকতো, তবে আমরা তোমাকে প্রস্তরাঘাতে হত্যা করে ফেলতাম। আর আমাদের নিকট তুমি মোটেও শক্তিশালী নও।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٩٢﴾

৯২. তিনি বললেনঃ হে আমার কওম! আমার পরিজনবর্গ কি তোমাদের কাছে আল্লাহ অপেক্ষাও অধিক শক্তিশালী? আর তোমরা তাঁকে বিস্মৃত হয়ে পশ্চাতে ফেলে

রেখেছো; নিশ্চয়ই আমার প্রতিপালক তোমাদের সমস্ত কার্যকলাপকে বেষ্টন করে আছেন।

وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ؕ سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ؕ وَارْتَقِبُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ﴿٩٣﴾

৯৩. আর হে আমার কওম! তোমরা নিজেদের অবস্থায় কাজ করতে থাকো, আমিও (আমার) কাজ করছি, এখন সত্ত্বরই তোমরা জানতে পারবে যে, কে সেই ব্যক্তি যার উপর এমন শাস্তি আসন্ন যা তাকে অপমানিত করবে এবং কে সেই ব্যক্তি যে, মিথ্যাবাদী ছিল; আর তোমরা প্রতীক্ষায় থাকো, আমিও তোমাদের সাথে প্রতীক্ষায় রইলাম।

وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۙ﴿٩٤﴾

৯৪. (আল্লাহ বললেনঃ) আর যখন আমার হুকুম এসে পৌঁছলো, তখন আমি মুক্তি দিলাম শুআইবকে (عليه السلام), আর যারা তার সাথে ঈমানদার ছিল তাদেরকে নিজ রহমতে এবং ঐ যালিমদেরকে আক্রমণ করলো এক বিকট গর্জন, অতপর তারা নিজ গৃহের মধ্যে (মৃত অবস্থায়) উপুড় হয়ে পড়ে রইলো।

كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿٩٥﴾ ع

৯৫. যেন তারা এই গৃহগুলিতে বাস করেই নাই; ভালরূপে জেনে নাও, (রহমত হতে) দূরে সরে পড়লো মাদইয়ান, যেমন দূর হয়েছিল সামূদ (সম্প্রদায়) রহমত হতে।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۙ﴿٩٦﴾

৯৬. এবং আমি মূসাকে (عليه السلام) প্রেরণ করলাম আমার মু'জিযাসমূহ ও সুস্পষ্ট প্রমাণ সহকারে।

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ

৯৭. ফিরাউন ও তার প্রধান বর্গের নিকট, অনন্তর তারা (ও) ফিরাউনের

وَمَآ اَمۡرُ فِرۡعَوۡنَ بِرَشِيۡدٍ ﴿٩٧﴾

মতানুসারে চলতে থাকলো এবং ফিরাউনের কার্যকলাপ মোটেই সৎ ছিল না।

يَقۡدُمُ قَوۡمَهٗ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ فَاَوۡرَدَهُمُ النَّارَ ؕ وَبِئۡسَ الۡوِرۡدُ الۡمَوۡرُوۡدُ ﴿٩٨﴾

৯৮. কিয়ামতের দিন সে নিজ সম্প্রদায়ের আগে আগে থাকবে, অতঃপর তাদেরকে উপনীত করে দেবে দোযখে, আর তা অতি নিকৃষ্ট স্থান যাতে তারা উপনীত হবে।

وَاُتۡبِعُوۡا فِىۡ هٰذِهٖ لَعۡنَةً وَّيَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ ؕ بِئۡسَ الرِّفۡدُ الۡمَرۡفُوۡدُ ﴿٩٩﴾

৯৯. আর লা'নত তাদের সাথে সাথে রইলো (এই দুনিয়াতে) এবং কিয়ামত দিবসেও, তা হলো নিকৃষ্ট পুরস্কার যা তাদেরকে দেয়া হয়েছে।

ذٰلِكَ مِنۡ اَنۡۢبَآءِ الۡقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيۡكَ مِنۡهَا قَآئِمٌ وَّحَصِيۡدٌ ﴿١٠٠﴾

১০০. এটা ছিল সেই জনপদসমূহের কতিপয় অবস্থা যা আমি তোমার নিকট বর্ণনা করছি, ওগুলির মধ্যে কোন কোন জনপদ তো বহাল রয়েছে এবং কোন কোনটির সম্পূর্ণ বিলুপ্তি ঘটেছে।

وَمَا ظَلَمۡنٰهُمۡ وَلٰكِنۡ ظَلَمُوۡۤا اَنۡفُسَهُمۡ فَمَاۤ اَغۡنَتۡ عَنۡهُمۡ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِىۡ يَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مِنۡ شَىۡءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمۡرُ رَبِّكَ ؕ وَمَا زَادُوۡهُمۡ غَيۡرَ تَتۡبِيۡبٍ ﴿١٠١﴾

১০১. আমি তাদের প্রতি অত্যাচার করি নাই; কিন্তু তারা নিজেরাই নিজেদের উপর অত্যাচার করেছে, বস্তুত তাদের কোনই উপকার করে নাই তাদের সেই উপাস্যগুলি, যাদের তারা উপাসনা করতো আল্লাহকে ছেড়ে, যখন এসে পৌঁছলো তোমার প্রতিপালকের হুকুম; বরং উল্টো তাদের ক্ষতি বর্ধিত করলো।

وَكَذٰلِكَ اَخۡذُ رَبِّكَ اِذَاۤ اَخَذَ الۡقُرٰى وَهِىَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخۡذَهٗۤ اَلِيۡمٌ شَدِيۡدٌ ﴿١٠٢﴾

১০২. আর এরূপেই তখন তিনি কোন জনপদের অধিবাসীদেরকে পাকড়াও করেন যখন তারা অত্যাচার করে; নিঃসন্দেহে তাঁর পাকড়াও

হচ্ছে অত্যন্ত যাতনাদায়ক, কঠিন।[১]

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْآخِرَةِ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوعٌ لَّهُ النَّاسُ وَذَٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُودٌ ﴿١٠٣﴾

১০৩. এ সব ঘটনায় সে ব্যক্তির জন্যে বড় উপদেশ রয়েছে যে ব্যক্তি পরকালের শাস্তিকে ভয় করে; ওটা এমন একটা দিন হবে যেদিন সমস্ত মানুষকে সমবেত করা হবে এবং ওটা হলো সকলের উপস্থিতির দিন।[২]

وَمَا نُؤَخِّرُهُ إِلَّا لِأَجَلٍ مَّعْدُودٍ ﴿١٠٤﴾

১০৪. আর আমি ওটা শুধু সামান্য কালের জন্যে স্থগিত রেখেছি।

يَوْمَ يَأْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَسَعِيدٌ ﴿١٠٥﴾

১০৫. যখন সেদিন আসবে তখন কোন ব্যক্তি আল্লাহর অনুমতি ছাড়া কথাও বলতে পারবে না, অনন্তর তাদের মধ্যে কতক তো দুর্ভাগা হবে এবং কতক হবে ভাগ্যবান।

فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُوا فَفِي النَّارِ لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَشَهِيقٌ ﴿١٠٦﴾

১০৬. অতএব, যারা দুর্ভাগা হবে তারা তো দোযখে এইরূপ অবস্থায় থাকবে যে, তাতে তাদের চীৎকার--- আর্তনাদ হতে থাকবে।

خَالِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ ﴿١٠٧﴾

১০৭. তারা অনন্তকাল সেখানে থাকবে, যে পর্যন্ত আসমানসমূহ ও যমীন স্থায়ী থাকবে। তবে যদি প্রতিপালকের ইচ্ছা হয়, (তাহলে ভিন্ন কথা;) নিশ্চয় তোমার

১। আবূ মূসা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ নিশ্চয়ই আল্লাহ্ অত্যাচারীকে পৃথিবীতে সুযোগ ও অবকাশ দিয়ে থাকেন। আবার যখন তাকে ধরেন তখন আর ছাড়েন না। আবূ মূসা বলেনঃ অতঃপর তিনি এই আয়াত পাঠ করলেনঃ অর্থঃ "এবং এরূপেই তোমার রবের পাকড়াও, যখন তিনি যালিমদের কোন বসতিকে পাকড়াও করেন। নিশ্চয় তাঁর পাকড়াও অতি কঠোর যন্ত্রণাদায়ক।" (সূরাঃ হূদ, আয়াত ১০২) (বুখারী, হাদীস নং ৪৬৮৬)

২। আ'সেম (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু)- কে জিজ্ঞেস করলাম, মদীনাকে রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) হারাম করেছেন কি না? তিনি বললেনঃ হ্যাঁ, অমুক স্থান থেকে অমুক স্থান পর্যন্ত, এ এলাকার গাছ কাটা নিষেধ। যে মদীনার (দ্বীনের ব্যাপারে) নতুন প্রথা বা পদ্ধতি (বিদ'আত) প্রবর্তন করবে, তার ওপর আল্লাহ্র এবং ফেরেশ্তাকুলের ও গোটা মানব জাতির অভিশাপ (লা'নত)। (বুখারী, হাদীস নং ৭৩০৬)

প্রতিপালক যা কিছু চান, তা তিনি পূর্ণরূপে সমাধান করতে পারেন।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِى الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ﴿١٠٨﴾

১০৮. পক্ষান্তরে যারা ভাগ্যবান, বস্তুতঃ তারা থাকবে জান্নাতে, (এবং) তাতে তারা অনন্তকাল থাকবে, যে পর্যন্ত আসমানসমূহ ও যমীন স্থায়ী থাকে; কিন্তু যদি প্রতিপালকের ইচ্ছা হয়, (তবে ভিন্ন কথা;) ওটা অফুরন্ত দান হবে।

فَلَا تَكُ فِىْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ؕ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ﴿١٠٩﴾

১০৯. সুতরাং এরা যার উপাসনা করে ওর সম্বন্ধে তুমি এতটুকুও সংশয় করো না; তারাও ঠিক সে রূপেই ইবাদত করছে যে রূপে তাদের পূর্বে তাদের পূর্ব পুরুষরা করতো এবং নিশ্চয় আমি তাদেরকে তাদের অংশ পূর্ণভাবে দিয়ে দিবো একটুও কম না করে।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَفِىْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿١١٠﴾

১১০. আর আমি মূসাকে (عليه السلام) কিতাব দিয়েছিলাম, অনন্তর ওতে মতভেদ করা হলো; আর যদি একটি উক্তি তোমার প্রতিপালকের পক্ষ হতে পূর্বেই স্থিরীকৃত হয়ে না থাকতো তবে ওদের চূড়ান্ত মীমাংসা হয়ে যেতো এবং এই লোকেরা এর সম্বন্ধে এমন সন্দেহে (পতিত) আছে, যা তাদেরকে দ্বিধাদ্বন্দ্বে ফেলে রেখেছে।

وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ ؕ اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١١١﴾

১১১. আর নিশ্চিতরূপে সবাইকে তোমার প্রতিপালক তাদেরকে তাদের কর্মের পূর্ণ অংশ প্রদান করবেন; নিশ্চয়ই তিনি তাদের কার্যকলাপের পূর্ণ খবর রাখেন।

فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ؕ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۱۱۲﴾

১১২. অতএব, তুমি যেভাবে আদিষ্ট হয়েছো, দৃঢ় থাকো এবং সেই লোকেরাও যারা (কুফরী হতে) তাওবা করে তোমার সাথে রয়েছে, সীমালঙ্ঘন কর না; নিশ্চয় তিনি তোমাদের কার্যকলাপ সম্যকভাবে প্রত্যক্ষ করেন।

وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿۱۱۳﴾

১১৩. আর তোমরা যালিমদের প্রতি ঝুঁকে পড়ো না, অন্যথায় তোমাদেরকে জাহান্নামের আগুন স্পর্শ করবে, আর আল্লাহ ছাড়া তোমাদের কেউ সহায় হবে না, অতঃপর তোমাদেরকে কোন সাহায্যও করা হবে না।[১]

وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ﴿۱۱۴﴾

১১৪. এবং নামাযের পাবন্দী কর দিবসের দু'প্রান্তে ও রাত্রির কিছু অংশে; নিঃসন্দেহে সৎকার্যাবলী মুছে ফেলে মন্দ কার্যসমূহকে; এটা হচ্ছে একটি (ব্যাপক) নসীহত, নসীহত মান্যকারীদের জন্যে।[২]

১। আ'সেম (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু)-কে জিজ্ঞেস করলাম, মদীনাকে রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) হারাম করেছেন কি না? তিনি বললেনঃ হ্যাঁ, অমুক স্থান থেকে অমুক স্থান পর্যন্ত, এ এলাকার গাছ কাটা নিষেধ। যে মদীনার (দ্বীনের ব্যাপারে) নতুন প্রথা বা পদ্ধতি (বিদ'আত) প্রবর্তন করবে, তার ওপর আল্লাহ্র এবং ফেরেশ্তাকুলের ও গোটা মানব জাতির অভিশাপ (লা'নত)। (বুখারী, হাদীস নং ৭৩০৬)

২। (ক) ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, কোন এক ব্যক্তি জনৈক মহিলাকে চুমু দিয়ে ফেলল। অতঃপর রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট এসে এই (অসংযত আচরণের) কথা উল্লেখ করলো (এবং আল্লাহ্র কাছে ক্ষমা প্রার্থনার আবেদন জানালো)। তখন তার এ ঘটনা উপলক্ষে উক্ত আয়াত নাযিল করা হলো। অর্থঃ "এবং তোমরা দিনের দু'ভাগে ও রাত্রের প্রথমাংশে নামায কায়েম কর। নিশ্চয় নেক কাজসমূহ বদ আমলসমূহকে দূর করে। স্মরণকারীদের জন্য এটা উপদেশ বাণী।" তখন লোকটি জিজ্ঞেস করলো (হে আল্লাহ্র রাসূল!) এ হুকুম কি কেবল আমার জন্য, না সকলের জন্য? তিনি বললেন, আমার উম্মতের যে কেউ নেক আমল করবে, এ হুকুম তারই জন্য। (বুখারী, হাদীস নং ৪৬৮৭)
(খ) আবূ যর (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আমাকে বলেছেনঃ যে, তুমি যেখানেই থাকনা কেন আল্লাহকে ভয় কর। আর কোন পাপ কাজ হয়ে গেলে সাথে সাথেই কোন পুণ্য কাজ কর, যা তাকে মিটিয়ে দিবে। আর উত্তম চরিত্র ও ব্যবহার নিয়ে মানুষের সাথে মিলা-মিশা কর। (তিরমিযী, হাদীস নং ১৯৮৭)

وَاصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١٥﴾

১১৫. আর ধৈর্যধারণ কর, কেননা আল্লাহ্ সৎকর্মশীলদের পুণ্যফলকে বিনষ্ট করেন না।

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿١١٦﴾

১১৬. বস্তুতঃ যেসব জাতি তোমাদের পূর্বে গত হয়েছে, তাদের মধ্যে এমন বুদ্ধিমান লোক হয় নাই, যারা দেশে ফাসাদ বিস্তার করতে বাধা প্রদান করতো সামান্য কয়েকজন ছাড়া, যাদেরকে আমি তাদের মধ্য হতে রক্ষা করেছিলাম। আর যারা জালিম ছিল, তারা যে আরাম-আয়েশে ছিল ওর পিছনেই পড়ে রইলো এবং তারা অপরাধপরায়ণ হয়ে পড়লো।

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿١١٧﴾

১১৭. আর তোমার প্রতিপালক এমন নন যে, জনপদসমূহকে অন্যায়ভাবে ধ্বংস করে দিবেন, অথচ ওর অধিবাসী সৎকাজে লিপ্ত রয়েছে।

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ﴿١١٨﴾

১১৮. এবং যদি তোমার প্রতিপালক ইচ্ছা করতেন, তবে তিনি সকল মানুষকে একই মতাবলম্বী করে দিতেন (কিন্তু এরূপ করেন নাই), আর তারা সদা মতভেদ করতে থাকবে।

اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ؕ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ؕ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١١٩﴾

১১৯. কিন্তু যার প্রতি তোমার প্রতিপালক অনুগ্রহ করবেন, আর এজন্যেই তিনি তাদেরকে সৃষ্টি করেছেন এবং তোমার প্রতিপালকের এই বাণীও পূর্ণ হবে, আমি জাহান্নামকে পূর্ণ করবো জ্বিনদের ও মানবদের দ্বারা।

وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ

১২০. রাসূলদের ঐ সব বৃত্তান্ত আমি তোমার কাছে বর্ণনা করছি, এর দ্বারা আমি তোমার চিত্তকে দৃঢ় করি, এর মাধ্যমে তোমার কাছে এসেছে সত্য

وَمَوْعِظَةٌ وَّ ذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾

এবং মু'মিনদের জন্যে এসেছে উপদেশ ও শিক্ষনীয় বাণী।

وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ؕ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ﴿١٢١﴾ ۙ

১২১. (হে নবী ﷺ)! যারা বিশ্বাস করে না তাদেরকে বলঃ তোমরা যেমন করছো করতে থাকো এবং আমরাও আমাদের কাজ করছি।

وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٢٢﴾

১২২. এবং তোমরা প্রতীক্ষা কর, আমরাও প্রতীক্ষা করছি।

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٣﴾ ع

১২৩. আকাশসমূহ ও পৃথিবীর অদৃশ্য বিষয়ের জ্ঞান আল্লাহরই এবং তাঁরই কাছে সব কিছু প্রত্যাবর্তিত হবে, সুতরাং তাঁর ইবাদত কর এবং তাঁর উপর নির্ভর কর, আর তোমরা যা কর সে সম্বন্ধে তোমার প্রতিপালক অনবহিত নন।

সূরাঃ ইউসুফ, মাক্কী

(আয়াতঃ ১১১, রুকূ'ঃ ১২)

سُوْرَةُ يُوْسُفَ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ١١١ رُكُوْعَاتُهَا ١٢

করুণাময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ ۟ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿١﴾ ۟

১. আলিফ-লাম-রা; এগুলো সুস্পষ্ট কিতাবের আয়াত।

اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢﴾

২. আমি অবতীর্ণ করেছি তাকে কুরআন (রূপে) আরবী ভাষায়, যাতে তোমরা বুঝতে পারো।

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَاۤ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ﴿٣﴾

৩. আমি তোমার কাছে উত্তম কাহিনী বর্ণনা করছি, অহির মাধ্যমে তোমার কাছে এই কুরআন প্রেরণ করে, যদিও এর পূর্বে তুমি ছিলে অনবহিতদের অন্তর্ভুক্ত।

৪. যখন ইউসুফ (عليه السلام) তার পিতাকে বললেনঃ হে আমার পিতাঃ! আমি এগারোটি নক্ষত্র, সূর্য এবং চন্দ্রকে দেখেছি– দেখেছি ওদেরকে আমার প্রতি সিজ্‌দাবনত অবস্থায়।

إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي سَاجِدِينَ ﴿٤﴾

৫. তিনি বললেনঃ হে আমার পুত্র! তোমার স্বপ্নের বৃত্তান্ত তোমার ভাইদের নিকট বর্ণনা করো না, করলে তারা তোমার বিরুদ্ধে ষড়যন্ত্র করবে, শয়তান তো মানুষের প্রকাশ্য শত্রু।

قَالَ يَا بُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُؤْيَاكَ عَلَىٰ إِخْوَتِكَ فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا ۖ إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلْإِنسَانِ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٥﴾

৬. এইভাবে তোমার প্রতিপালক তোমাকে মনোনীত করবেন এবং তোমাকে কথার (স্বপ্নের) ব্যাখ্যা শিক্ষা দিবেন, আর তোমার প্রতি ও ইয়াকুবের (عليه السلام) পরিবার-পরিজনের প্রতি অনুগ্রহ পূর্ণ করবেন যেভাবে তিনি এটা পূর্বে পূর্ণ করেছিলেন তোমার পিতৃপুরুষ ইবরাহীম (عليه السلام) ও ইসহাকের (عليه السلام) প্রতি, তোমার প্রতিপালক সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাময়।

وَكَذَٰلِكَ يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِن تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ آلِ يَعْقُوبَ كَمَا أَتَمَّهَا عَلَىٰ أَبَوَيْكَ مِن قَبْلُ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٦﴾

৭. ইউসুফ ও তাঁর ভ্রাতাদের ঘটনায় জিজ্ঞাসুদের জন্যে নিদর্শন রয়েছে।

لَّقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ آيَاتٌ لِّلسَّائِلِينَ ﴿٧﴾

৮. যখন তারা (ভ্রাতারা) বলেছিলোঃ আমাদের পিতার নিকট ইউসুফ এবং তার ভাই (বিনইয়ামীন) অধিক প্রিয়, অথচ আমরা একটি সংহত দল, আমাদের পিতা তো স্পষ্ট বিভ্রান্তি-তেই রয়েছেন।

إِذْ قَالُوا لَيُوسُفُ وَأَخُوهُ أَحَبُّ إِلَىٰ أَبِينَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ۗ إِنَّ أَبَانَا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٨﴾

৯. ইউসুফকে (عليه السلام) হত্যা কর অথবা তাকে কোন স্থানে ফেলে

اقْتُلُوا يُوسُفَ أَوِ اطْرَحُوهُ أَرْضًا يَخْلُ لَكُمْ وَجْهُ

اَبِيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ⑨

এসো, ফলে তোমাদের পিতার দৃষ্টি শুধু তোমাদের প্রতিই নিবিষ্ট হবে এবং তারপর তোমরা ভাল লোক হয়ে যাবে।

قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ⑩

১০. তাদের মধ্যে একজন বললোঃ ইউসুফকে (عليه السلام) হত্যা করো না, বরং (যদি তোমরা কিছু করতেই চাও তবে) তাকে কোন গভীর কূপে নিক্ষেপ করো, যাত্রীদলের কেউ তাকে তুলে নিয়ে যাবে।

قَالُوْا يٰۤاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ وَاِنَّا لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ ⑪

১১. তারা বললোঃ হে আমাদের পিতা! ইউসুফের (عليه السلام) ব্যাপারে আপনি আমাদেরকে অবিশ্বাস করছেন কেন, আমরা তো তার হিতাকাঙ্খী।

اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ⑫

১২. আপনি আগামীকাল তাকে আমাদের সাথে প্রেরণ করুন, সে (ফল-মূল) খাবে ও খেলাধূলা করবে, আমরা অবশ্যই তার রক্ষণাবেক্ষণ করবো।

قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْۤ اَنْ تَذْهَبُوْا بِهٖ وَاَخَافُ اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَاَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُوْنَ ⑬

১৩. তিনি বললেনঃ এটা আমাকে কষ্ট দিবে যে, তোমরা তাকে নিয়ে যাবে এবং আমি ভয় করি তোমরা তার প্রতি অমনোযোগী হলে তাকে নেকড়ে বাঘ খেয়ে ফেলবে।

قَالُوْا لَئِنْ اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ اِنَّاۤ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ⑭

১৪. তারা বললোঃ আমরা একটি সংহত দল হওয়া সত্ত্বেও যদি নেকড়ে বাঘ তাকে খেয়ে ফেলে, তবে তো আমরা ক্ষতিগ্রস্তই হবো।

فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْۤا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ وَاَوْحَيْنَاۤ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِهِمْ هٰذَا وَهُمْ

১৫. অতঃপর যখন তারা তাঁকে নিয়ে গেল এবং তাঁকে গভীর কূপে নিক্ষেপ করতে একমত হলো, এমতাবস্থায়

لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٥﴾

আমি তাকে (ইউসুফকে) জানিয়ে দিলামঃ তুমি তাদেরকে তাদের এই কর্মের কথা অবশ্যই বলে দেবে যখন তারা তোমাকে চিনবে না।

وَجَآءُوْٓ اَبَاهُمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ ﴿١٦﴾

১৬. তারা রাত্রিতে কাঁদতে কাঁদতে তাদের পিতার নিকট আসলো।

قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ ﴿١٧﴾

১৭. তারা বললোঃ হে আমাদের পিতা! আমরা দৌড়ে প্রতিযোগিতা করছিলাম এবং ইউসুফকে (عليه السلام) আমাদের মালপত্রের নিকট রেখে গিয়েছিলাম, অতঃপর তাকে নেকড়ে বাঘে খেয়ে ফেলেছে; কিন্তু আপনি তো আমাদেরকে বিশ্বাস করবেন না। যদিও আমরা সত্যবাদী।

وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ كَذِبٍ ۭ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ۭ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ۭ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾

১৮. আর তারা তার জামায় মিথ্যা রক্ত লেপন করে এনেছিল, তিনি বললেনঃ না, তোমাদের মন তোমাদের জন্যে একটি কাহিনী সাজিয়ে দিয়েছে, সুতরাং পূর্ণ ধৈর্যই শ্রেয়, তোমরা যা বলছো সে বিষয়ে একমাত্র আল্লাহই আমার সাহায্যস্থল।

وَجَآءَتْ سَيَّارَةٌ فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ۭ قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا غُلٰمٌ ۭ وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾

১৯. এক যাত্রীদল আসলো, তারা তাদের পানি সংগ্রাহককে প্রেরণ করলো; সে তার পানির বালতি নামিয়ে দিলো, সে বলে উঠলোঃ কি সুখবর! এ যে এক কিশোর! অতঃপর তারা তাকে পণ্যরূপে লুকিয়ে রাখলো, তারা যা কিছু করছিলো সে বিষয়ে আল্লাহ সবিশেষ অবগত ছিলেন।

وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍۢ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا

২০. আর তারা তাকে বিক্রি করলো স্বল্প মূল্যে, মাত্র কয়েক দিরহামের

فِيْهِ مِنَ الزّٰهِدِيْنَ ﴿٢٠﴾

বিনিময়ে, এ ব্যাপারে তারা ছিল অল্পে তুষ্ট।

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ لِامْرَاَتِهٖٓ اَكْرِمِيْ مَثْوٰىهُ عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ؕ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِي الْاَرْضِ ۚ وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ؕ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰٓى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢١﴾

২১. মিসরের যে ব্যক্তি তাকে ক্রয় করেছিল, সে তার স্ত্রীকে বললোঃ সম্মানজনকভাবে এর থাকবার ব্যবস্থা কর, সম্ভবতঃ সে আমাদের উপকারে আসবে অথবা আমরা একে পুত্র রূপেও গ্রহণ করতে পারি এবং এভাবে আমি ইউসুফকে (عليه السلام) সেই দেশে প্রতিষ্ঠিত করলাম তাকে বাক্যাদির (স্বপ্নের) ব্যাখ্যা শিক্ষা দেয়ার জন্যে, আল্লাহ তাঁর কার্য সম্পাদনে অপ্রতিহত; কিন্তু অধিকাংশ মানুষ এটা অবগত নয়।

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗٓ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٢﴾

২২. তিনি যখন পূর্ণ যৌবনে উপনীত হলেন তখন আমি তাঁকে হিকমত ও জ্ঞান দান করলাম এবং এভাবেই আমি সৎকর্ম পরায়ণদেরকে পুরস্কৃত করে থাকি।

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِيْ هُوَ فِيْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّيْٓ اَحْسَنَ مَثْوَايَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. তিনি যে স্ত্রীলোকের গৃহে ছিলেন তাঁকে তার প্রতি আকৃষ্ট করতে চাইলো এবং দরজাগুলি বন্ধ করে দিলো ও বললোঃ চলে এসো তিনি বললেনঃ আমি আল্লাহর আশ্রয় প্রার্থনা করছি, তিনি আমার প্রভু! তিনি আমাকে সম্মানজনকভাবে থাকতে দিয়েছেন জালিমরা কখনও সফলকাম হয় না।

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا ۚ لَوْلَآ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٢٤﴾

২৪. সেই রমনী তো তাঁর প্রতি আসক্ত হয়েছিল এবং তিনিও আসক্ত হয়ে পড়তেন যদি না তিনি তাঁর প্রতিপালকের নিদর্শন প্রত্যক্ষ করতেন, তাকে মন্দ কর্ম ও অশ্লীলতা

হতে বিরত রাখাবার জন্যে, সে তো ছিল আমার মনোনীত বান্দাদের অন্তর্ভুক্ত।

وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُ مِنْ دُبُرٍ وَّاَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ؕ قَالَتْ مَا جَزَآءُ مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّآ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٥﴾

২৫. তারা উভয়ে দৌড়িয়ে দরজার দিকে গেল এবং রমণীটি পিছন হতে তার জামা ছিঁড়ে ফেললো, তাঁরা উভয়ে রমণীটির স্বামীকে দরজার কাছে পেলেন, রমণীটি বললোঃ যে তোমার গৃহিনীর সাথে কুকর্ম কামনা করে তার জন্যে কারাগারে প্রেরণ অথবা অন্য কোন বেদনাদায়ক শাস্তি ব্যতীত কি দন্ড আর হতে পারে?

قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِيْ عَنْ نَّفْسِيْ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ كَانَ قَمِيْصُهُ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٦﴾

২৬. তিনি (ইউসুফ عليه السلام) বললেনঃ সেই আমার হতে অসৎকর্ম কামনা করেছিল, রমণীটির পরিবারের একজন সাক্ষী সাক্ষ্য দিলোঃ যদি তার জামার সম্মুখ দিক ছেঁড়া হয়ে থাকে তবে রমণী সত্য কথা বলেছে এবং পুরুষটি মিথ্যাবাদী।

وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٧﴾

২৭. আর যদি তার জামা পিছন দিক হতে ছেঁড়া হয়ে থাকে তবে রমণীটি মিথ্যা কথা বলেছে এবং পুরুষটি সত্যবাদী।

فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ ؕ اِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾

২৮. সুতরাং গৃহস্বামী যখন দেখলো যে, তার জামা পিছন দিক থেকে ছিন্ন করা হয়েছে তখন সে বললোঃ এটা তোমাদের নারীদের ছলনা, ভীষণ তোমাদের ছলনা।

يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۫ وَاسْتَغْفِرِيْ لِذَنْۢبِكِ ۚ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِئِيْنَ ﴿٢٩﴾

২৯. হে ইউসুফ (عليه السلام) তুমি এটা উপেক্ষা কর এবং হে নারী! তুমি তোমার অপরাধের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা কর, নিশ্চয় তুমিই অপরাধিনী।

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَنْ نَفْسِهِ ۖ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۖ إِنَّا لَنَرَاهَا فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٣٠﴾

৩০. নগরে কতিপয় নারী বললোঃ আযীযের স্ত্রী তার যুবক দাস হতে অসৎকর্ম কামনা করছে; প্রেম তাকে উন্মত্ত করেছে, আমরা তো তাকে দেখছি স্পষ্ট বিভ্রান্তিতে।

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَأً وَآتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِنْهُنَّ سِكِّينًا وَقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ وَقَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَٰذَا بَشَرًا ۚ إِنْ هَٰذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ ﴿٣١﴾

৩১. রমণীটি যখন তাদের ষড়যন্ত্রের কথা শুনলো, তখন সে তাদেরকে ডেকে পাঠালো এবং একটি ভোজ সভার আয়োজন করলো। তাদের প্রত্যেককে একটি করে ছুরি দিলো এবং যুবককে বললোঃ তাদের সামনে বের হও, অতপর তারা যখন তাঁকে দেখলো তখন তারা তার রূপ-মাধুর্যে অভিভূত হলো নিজেদের হাত কেটে ফেললো, তারা বললোঃ অদ্ভুত আল্লাহর মাহাত্ম, এতো মানুষ নয় এতো এক মহিমান্বিত ফিরিশ্‌তা!

قَالَتْ فَذَٰلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّنِي فِيهِ ۖ وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهُ عَنْ نَفْسِهِ فَاسْتَعْصَمَ ۖ وَلَئِنْ لَمْ يَفْعَلْ مَا آمُرُهُ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُونًا مِنَ الصَّاغِرِينَ ﴿٣٢﴾

৩২. সে বললোঃ এ-ই সে যার সম্বন্ধে তোমরা আমার নিন্দা করেছো, আমি তো তা হতে অসৎকর্ম কামনা করেছি; কিন্তু সে নিজেকে পবিত্র রেখেছে; আমি তাকে যা আদেশ করেছি সে যদি তা না করে তবে সে কারারুদ্ধ হবেই এবং হীনদের অন্তর্ভুক্ত হবে।

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ ۖ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُنْ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٣٣﴾

৩৩. ইউসুফ (عليه السلام) বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! এই নারীরা আমাকে যার প্রতি আহ্বান করেছে তা অপেক্ষা কারাগার আমার কাছে অধিক প্রিয়, আপনি যদি তাদের ছলনা হতে আমাকে রক্ষা না করেন তবে আমি তাদের প্রতি আকৃষ্ট হয়ে পড়বো এবং অজ্ঞদের অন্তর্ভুক্ত হবো।

فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٤﴾

৩৪. অতঃপর তাঁর প্রতিপালক তার আহ্বানে সাড়া দিলেন এবং তাঁকে তাদের ছলনা হতে রক্ষা করলেন, তিনি তো সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا رَأَوُا الْآيَاتِ لَيَسْجُنُنَّهُ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٣٥﴾

৩৫. নিদর্শনাবলী দেখার পর তাদের মনে হলো যে, তাকে কিছুকালের জন্যে কারারুদ্ধ করতেই হবে।

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيَانِ ۖ قَالَ أَحَدُهُمَا إِنِّي أَرَانِي أَعْصِرُ خَمْرًا ۖ وَقَالَ الْآخَرُ إِنِّي أَرَانِي أَحْمِلُ فَوْقَ رَأْسِي خُبْزًا تَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ۖ نَبِّئْنَا بِتَأْوِيلِهِ ۖ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٦﴾

৩৬. তাঁর সাথে দু'জন যুবক কারাগারে প্রবেশ করলো, তাদের একজন বললোঃ আমি স্বপ্নে দেখলাম, আমি মদ তৈরি করছি এবং অপরজন বললোঃ আমি স্বপ্নে দেখলাম আমি আমার মাথায় রুটি বহন করছি এবং পাখি তা হতে খাচ্ছে, আমাদেরকে আপনি এর তাৎপর্য জানিয়ে দিন, আমরা আপনাকে সৎ কর্মপরায়ণ দেখছি।

قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقَانِهِ إِلَّا نَبَّأْتُكُمَا بِتَأْوِيلِهِ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَكُمَا ۚ ذَٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِي رَبِّي ۚ إِنِّي تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿٣٧﴾

৩৭. ইউসুফ (عليه السلام) বললেনঃ তোমাদেরকে যে খাদ্য দেয়া হয় তা আসবার পূর্বে আমি তোমাদেরকে স্বপ্নের ব্যাখ্যা জানিয়ে দিবো, আমি যা তোমাদেরকে বলবো তা আমার প্রতিপালক আমাকে যা শিক্ষা দিয়েছেন তা হতে বলবো, যে সম্প্রদায় আল্লাহকে বিশ্বাস করে না ও পরলোকে অবিশ্বাসী হয় আমি তাদের মতবাদ বর্জন করেছি।

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ آبَائِي إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۚ مَا كَانَ لَنَا أَنْ نُشْرِكَ بِاللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ ذَٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٨﴾

৩৮. আমি আমার পিতৃপুরুষ ইবরাহীম (عليه السلام) ইসহাক (عليه السلام) এবং ইয়াকুবের (عليه السلام) মতবাদ অনুসরণ করি, আল্লাহর সাথে কোন বস্তুকে শরীক করা আমাদের কাজ নয়, এটা আমাদের ও সমস্ত মানুষের

প্রতি আল্লাহর অনুগ্রহ; কিন্তু অধিকাংশ মানুষই কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে না।

৩৯. হে আমার কারা-সঙ্গীদ্বয়! ভিন্ন ভিন্ন বহু প্রতিপালক শ্রেয়, না পরাক্রমশালী এক আল্লাহ?

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾

৪০. তাঁকে ছেড়ে তোমরা শুধু কতকগুলি নামের ইবাদত করছো, যে নামগুলো তোমাদের পিতৃপুরুষ ও তোমরা রেখেছো। এইগুলির কোন প্রমাণ আল্লাহ পাঠান নাই, বিধান দেয়ার অধিকার শুধু আল্লাহরই, তিনি নির্দেশ দিয়েছেন যে, তোমরা শুধুমাত্র তাঁরই ইবাদত করবে, আর কারো ইবাদত করবে না, এটাই সরল-সঠিক দ্বীন; কিন্তু অধিকাংশ মানুষ এটা অবগত নয়।

مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اَسْمَآءً سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٠﴾

৪১. হে আমার কারা-সঙ্গীদ্বয়! তোমাদের একজন সম্বন্ধে কথা এই যে, সে তার প্রভুকে মদ্যপান করাবে এবং অপর জন সম্বন্ধে কথা এই যে, সে শূলবিদ্ধ হবে, অতঃপর তার মস্তক হতে পাখি আহার করবে, যে বিষয়ে তোমরা জানতে চেয়েছো তার সিদ্ধান্ত হয়ে গেছে।

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ اَمَّآ اَحَدُكُمَا فَيَسْقِيْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَّاْسِهٖ ؕ قُضِيَ الْاَمْرُ الَّذِيْ فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ﴿٤١﴾

৪২. ইউসুফ (عليه السلام) তাদের মধ্যে যে মুক্তি পাবে বলে মনে করলেন, তাকে বললেনঃ তোমার প্রভুর কাছে আমার কথা বলবে; কিন্তু শয়তান তাকে তার প্রভুর কাছে তার বিষয় বলবার কথা ভুলিয়ে দিলো; সুতরাং ইউসুফ (عليه السلام) কয়েক বছর কারাগারেই রয়ে গেলেন।

وَقَالَ لِلَّذِيْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِيْ عِنْدَ رَبِّكَ ۫ فَاَنْسٰىهُ الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِيْنَ ﴿٤٢﴾

وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّيْٓ اَرٰى سَبْعَ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ؕ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ اَفْتُوْنِيْ فِيْ رُءْيَايَ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ ﴿٤٣﴾

৪৩. (একদিন) রাজা বললেনঃ আমি স্বপ্নে দেখলাম, সাতটি মোটাতাজা গাভী, ওগুলিকে সাতটি ক্ষীণকায় গাভী ভক্ষণ করছে এবং সাতটি সবুজ শীষ ও অপর সাতটি শুষ্ক, হে পরিষদবর্গ! তোমরা আমাকে স্বপ্নের ব্যাখ্যা বল যদি তোমরা স্বপ্নের ব্যাখ্যায় পারদর্শী হয়ে থাক।

قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَمَا نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾

৪৪. তারা বললোঃ এটা কল্পনাপ্রসূত স্বপ্ন এবং আমরা এরূপ স্বপ্ন ব্যাখ্যায় অভিজ্ঞ নই।

وَقَالَ الَّذِيْ نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ فَاَرْسِلُوْنِ ﴿٤٥﴾

৪৫. দু'জন কারারুদ্ধের মধ্যে যে মুক্তি পেয়েছিল এবং দীর্ঘকাল পরে তার স্মরণ হলো সে বললোঃ আমি এর তাৎপর্য তোমাদেরকে জানিয়ে দেবো, সুতরাং তোমরা আমাকে পাঠিয়ে দাও।

يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ اَفْتِنَا فِيْ سَبْعِ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعِ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّيْٓ اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٦﴾

৪৬. (সে বললোঃ) হে ইউসুফ (عليه السلام) হে সত্যবাদী! সাতটি মোটা গাভী, ওগুলিকে সাতটি পাতলা গাভী ভক্ষণ করছে এবং সাতটি সবুজ শীষ ও অপর সাতটি শুষ্ক শীষ সম্বন্ধে আপনি আমাদেরকে ব্যাখ্যা দিন, যাতে আমি লোকদের কাছে ফিরে যেতে পারি এবং যাতে তারা অবগত হতে পারে।

قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖٓ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ﴿٤٧﴾

৪৭. ইউসুফ (عليه السلام) বললেনঃ তোমরা সাত বছর একাধিক্রমে চাষ করবে, অতঃপর তোমরা যে শস্য সংগ্রহ করবে তার মধ্যে যে সামান্য পরিমাণ তোমরা ভক্ষণ করবে, তা ব্যতীত সমস্ত শীষ সহকারে রেখে দেবে।

ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَّاْكُلْنَ

৪৮. এরপর আসবে সাতটি কঠিন বছর, যা তোমরা এবছরগুলির জন্য

مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ ﴿٤٨﴾

রেখেছিলে তা খেয়ে যাবে; কিন্তু সামান্য কিছু যা তোমরা সংরক্ষণ করবে (বীজের জন্য) তা ব্যতীত।

ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ﴿٤٩﴾

৪৯. এবং এরপর আসবে এক বছর, সেই বছর মানুষের জন্যে প্রচুর বৃষ্টিপাত হবে এবং সেই বছর মানুষ প্রচুর ফলের রস নিংড়াবে।

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ فَسْـَٔلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الّٰتِيْ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ عَلِيْمٌ ﴿٥٠﴾

৫০. রাজা বললেনঃ তোমরা (ইউসুফ (عليه السلام))-কে আমার কাছে নিয়ে এসো; যখন দূত তাঁর কাছে উপস্থিত হলো তখন তিনি বললেনঃ তুমি তোমার প্রভুর কাছে ফিরে যাও এবং তাঁকে জিজ্ঞেস কর, যে নারীরা তাদের হাত কেটে ফেলেছিল তাদের অবস্থা কি? আমার প্রতিপালক তাদের ছলনা সম্পর্কে সম্যক অবগত।

قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ قَالَتِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ ۫ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٥١﴾

৫১. (রাজা) নারীদেরকে বললেনঃ যখন তোমরা ইউসুফ (عليه السلام) হতে অসৎকর্ম কামনা করেছিলে, তখন তোমাদের কি হয়েছিল? তারা বললোঃ অদ্ভুত আল্লাহর মাহাত্ম্য! আমরা তার মধ্যে কোন দোষ দেখি নাই; আযীযের স্ত্রী বললোঃ এক্ষণে সত্য প্রকাশ পেয়ে গেল। আমিই তা হতে অসৎকর্ম কামনা করেছিলাম, সে তো সত্যবাদী।

ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّيْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ ﴿٥٢﴾

৫২. (ইউসুফ (عليه السلام) বললেন) এটা এজন্য যে, যাতে তিনি জানতে পারেন যে, তার অনুপস্থিতিতে আমি তার প্রতি বিশ্বাসঘাতকতা করি নাই এবং আল্লাহ বিশ্বাসঘাতকদের ষড়যন্ত্র সফল করেন না।

وَمَآ اُبَرِّئُ نَفْسِيْ ۚ اِنَّ النَّفْسَ لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوْٓءِ اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّيْ ؕ اِنَّ رَبِّيْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥٣﴾

৫৩. আমি নিজেকে নির্দোষ মনে করি না, মানুষের মন অবশ্যই মন্দকর্ম প্রবণ; কিন্তু সে নয় যার প্রতি আমার প্রতিপালক দয়া করেন; আমার প্রতিপালক অতি ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖٓ اَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِيْ ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهٗ قَالَ اِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِيْنٌ اَمِيْنٌ ﴿٥٤﴾

৫৪. রাজা বললেনঃ ইউসুফকে (عليه السلام) আমার কাছে নিয়ে এসো, আমি তাকে আমার একান্ত সহচর নিযুক্ত করবো, অতঃপর (রাজা) যখন তার সাথে কথা বললেন, তখন (রাজা) বললেনঃ আজ তুমি আমাদের কাছে মর্যাদাবান ও বিশ্বাসভাজন হলে।

قَالَ اجْعَلْنِيْ عَلٰى خَزَآئِنِ الْاَرْضِ ۚ اِنِّيْ حَفِيْظٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٥﴾

৫৫. তিনি (ইউসুফ) বললেনঃ আমাকে কোষাগারের দায়িত্বে নিয়োজিত করুন। নিশ্চয়ই আমি ভালো সংরক্ষণকারী, অতিশয় জ্ঞানবান।

وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِي الْاَرْضِ ۚ يَتَبَوَّاُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَآءُ ؕ نُصِيْبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٦﴾

৫৬. এইভাবে আমি ইউসুফকে (عليه السلام) সেই দেশে প্রতিষ্ঠিত করলাম; তিনি ঐ দেশে যথা ইচ্ছা অবস্থান করতে পারতেন, আমি যাকে ইচ্ছা তার প্রতি দয়া করি, আর আমি সৎকর্মপরায়ণদের শ্রমফল নষ্ট করি না।

وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٧﴾

৫৭. আর যারা মু'মিন ও মুত্তাকী তাদের পরকালের পুরস্কারই উত্তম।

وَجَآءَ اِخْوَةُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٨﴾

৫৮. ইউসুফের ভ্রাতাগণ আসলো এবং তার নিকট উপস্থিত হলো, তিনি তাদেরকে চিনলেন; কিন্তু তারা তাঁকে চিনতে পারলো না।

وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُونِي بِأَخٍ لَّكُمْ مِّنْ أَبِيكُمْ ۚ أَلَا تَرَوْنَ أَنِّي أُوفِي الْكَيْلَ وَأَنَا خَيْرُ الْمُنزِلِينَ ﴿٥٩﴾

৫৯. আর তিনি যখন তাদের পণ্য সামগ্রীর ব্যবস্থা করে দিলেন তখন তিনি বললেনঃ তোমরা আমার নিকট তোমাদের বৈমাত্রেয় ভাইকে নিয়ে আসবে, তোমরা কি দেখছো না যে, আমি মাপে পূর্ণ মাত্রায় দিই? এবং আমিই উত্তম অতিথি পরায়ণ।

فَإِن لَّمْ تَأْتُونِي بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِندِي وَلَا تَقْرَبُونِ ﴿٦٠﴾

৬০. কিন্তু তোমরা যদি তাকে আমার নিকট নিয়ে না আসো তবে আমার নিকট তোমাদের জন্যে কোন বরাদ্দ থাকবে না এবং তোমরা আমার নিকটবর্তী হবে না।

قَالُوا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ أَبَاهُ وَإِنَّا لَفَاعِلُونَ ﴿٦١﴾

৬১. তারা বললোঃ ওর বিষয়ে আমরা ওর পিতাকে সম্মত করার চেষ্টা করবো এবং আমরা নিশ্চয়ই এটা করবো।

وَقَالَ لِفِتْيَانِهِ اجْعَلُوا بِضَاعَتَهُمْ فِي رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا انقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٦٢﴾

৬২. ইউসুফ (عليه السلام) তার ভৃত্যদেরকে (কর্মচারীদেরকে) বললোঃ তারা যে পণ্য মূল্য দিয়েছে তা তাদের মালপত্রের মধ্যে রেখে দাও, যাতে স্বজনগণের মধ্যে প্রত্যাবর্তনের পর তারা বুঝতে পারে যে, ওটা প্রত্যার্পণ করা হয়েছে, তা হলে তারা পুনরায় আসতে পারে।

فَلَمَّا رَجَعُوا إِلَىٰ أَبِيهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَأَرْسِلْ مَعَنَا أَخَانَا نَكْتَلْ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ﴿٦٣﴾

৬৩. অতঃপর যখন তারা তাদের পিতার (ইয়াকুব عليه السلام)-এর নিকট ফিরে আসলো তখন তারা বললোঃ হে আমাদের পিতা! আমাদের জন্যে বরাদ্দ নিষিদ্ধ করা হয়েছে, সুতরাং আমাদের ভ্রাতাকে আমাদের সাথে পাঠিয়ে দিন যাতে আমরা রসদ (আহার্য সামগ্রী) পেতে পারি, আমরা অবশ্যই তার রক্ষণাবেক্ষণ করবো।

قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ؕ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۪ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٦٤﴾

৬৪. তিনি বললেনঃ আমি কি তোমাদেরকে ওর সম্বন্ধে সেরূপ ভরসা করবো, যেরূপ ভরসা পূর্বে তোমাদেরকে করেছিলাম ওর ভ্রাতা সম্বন্ধে? আল্লাহই রক্ষণাবেক্ষণে শ্রেষ্ঠ এবং তিনি দয়ালুদের মধ্যে শ্রেষ্ঠ দয়ালু।

وَلَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ؕ قَالُوْا يٰۤاَبَانَا مَا نَبْغِيْ ؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ؕ ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ﴿٦٥﴾

৬৫. যখন তারা তাদের মালপত্র খুললো তখন তারা দেখতে পেলো তাদের পণ্য মূল্য তাদেরকে প্রত্যর্পণ করা হয়েছে, তারা বললোঃ হে আমাদের পিতা! আমরা আর কি প্রত্যাশা করতে পারি? এটা আমাদের প্রদত্ত পণ্য মূল্য আমাদেরকে প্রত্যার্পণ করা হয়েছে, পুনরায় আমরা আমাদের পরিবারবর্গকে খাদ্য সামগ্রী এনে দেবো এবং আমরা আমাদের ভ্রাতার রক্ষণাবেক্ষণ করবো এবং আমরা অতিরিক্ত আর এক উষ্ট্রী বোঝাই পণ্য আনবো যা এনেছি তা পরিমাণে অল্প।

قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّاۤ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٦٦﴾

৬৬. তিনি (পিতা) বললেনঃ আমি ওকে কখনো তোমাদের সাথে পাঠাবো না যতক্ষণ না তোমরা আল্লাহর নামে অঙ্গীকার কর যে, তোমরা তাকে আমার নিকট নিয়ে আসবেই, অবশ্য যদি তোমরা একান্ত অসহায় হয়ে না পড়, অতঃপর যখন তারা তাঁর নিকট প্রতিজ্ঞা করলো তখন তিনি বললেনঃ আমরা যে বিষয়ে কথা বলছি, আল্লাহ তার বিধায়ক।

وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا

৬৭. তিনি (ইয়াকুব عليه السلام) বললেনঃ হে আমার পুত্রগণ! তোমরা এক

مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ وَمَاۤ اُغْنِیْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ عَلَیْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَعَلَیْهِ فَلْیَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿۶۷﴾

দরজা দিয়ে প্রবেশ করো না, ভিন্ন ভিন্ন দরজা দিয়ে প্রবেশ করবে, আল্লাহর বিধানের বিরুদ্ধে আমি তোমাদের জন্যে কিছু করতে পারি না, বিধান আল্লাহরই, আমি তাঁরই উপর নির্ভর করি এবং যারা নির্ভর করতে চায় তারা আল্লাহরই উপর নির্ভর করুক।[১]

১। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, নিশ্চয়ই রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন যে, আমার উম্মতের মধ্যে সত্তর হাজার লোক বিনা হিসাবে জান্নাতে যাবে। আর তারা হলেন ঐ সমস্ত লোক যারা (তাদের অসুস্থতার সময়) ঝাড়ফুক না করে ও ফাল বা কুলক্ষণ করে না (রাস্তায় বের হয়ে খারাপ কিছু দেখে যাত্রা বিরতি দেয় এই মনে করে যে, আজ ভাগ্য খারাপ) এবং সর্বদা তাদের প্রভুর উপর ভরসা করে। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৭২)

(খ) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত যে, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ বনী ইসরাঈলের এক লোক বনী ইসরাঈলের অপর এক লোকের নিকট এক হাজার দীনার কর্জ চাইল। তখন সে (কর্জদাতা) বলল, কয়েকজন সাক্ষী আনুন, আমি তাদেরকে সাক্ষী রাখব। সে (কর্জগ্রহীতা) বলল, সাক্ষীর জন্য আল্লাহ্ই যথেষ্ট। তখন কর্জদাতা বলল, তবে একজন যামিন উপস্থিত করুন। সে বলল, আল্লাহ্ই যথেষ্ট যামিন হিসাবে। কর্জদাতা বলল, আপনি ঠিকই বলেছেন। তারপর সে নির্ধারিত সময়ে পরিশোধের শর্তে তাকে এক হাজার দীনার কর্জ দিয়ে দিল। অতঃপর সে (কর্জগ্রহীতা) সমুদ্রযাত্রা করল এবং তার (ব্যবসায়িক) প্রয়োজন সমাধা করল। তারপর সে যানবাহন খুঁজতে লাগল, যাতে নির্ধারিত সময়ে সে কর্জদাতার নিকট এসে পৌঁছতে পারে। কিন্তু কোনরূপ যানবাহন সে পেল না। তখন (অগত্যা) সে এক টুকরো কাঠ নিয়ে তা ছিদ্র করল এবং কর্জদাতার নামে একখানা চিঠি ও এক হাজার স্বর্ণমুদ্রা তার মধ্যে পুরে ছিদ্রটি বন্ধ করে দিল। তারপর ঐ কাষ্ঠখন্ডটা নিয়ে সমুদ্র তীরে গিয়ে বলল, হে আল্লাহ্! তুমি তো জান, আমি অমুকের নিকট এক হাজার স্বর্ণমুদ্রা কর্জ চাইলে সে আমার কাছ থেকে যামিন চেয়েছিল। আমি বলেছিলাম, আল্লাহ্ই যথেষ্ট যামিন, এতে সে রাযী হয়ে যায়। তারপর সে আমার কাছে সাক্ষী চেয়েছিল। আমি বলেছিলাম, সাক্ষী হিসেবে আল্লাহ্ই যথেষ্ট। এতে সে রাজী হয়ে যায় (এবং আমাকে ধার দেয়)। আমি তার প্রাপ্য তার নিকট পৌঁছে দেয়ার উদ্দেশ্যে যানবাহরের জন্য যথাসাধ্য চেষ্টা করলাম, কিন্তু পেলাম না। আমি ঐ এক হাজার স্বর্ণমুদ্রা তোমার নিকট আমানত রাখছি। এই বলে সে কাষ্ঠখন্ডটা সমুদ্র বক্ষে নিক্ষেপ করল। তৎক্ষণাৎ তা সমুদ্রের মধ্যে নিমজ্জিত হয়ে গেল। অতঃপর লোকটি ফিরে গেল এবং নিজের শহরে যাবার জন্য যানবাহন খুঁজতে লাগল।

ওদিকে কর্জদাতা (নির্ধারিত দিনে) এ আশায় সমুদ্রতীরে গেল যে, হয়ত বা দেনাদার তার পাওনা টাকা নিয়ে এসে পড়েছে। ঘটনাক্রমে ঐ কাষ্ঠখন্ডটা তার নজরে পড়ল, যার ভিতরে স্বর্ণমুদ্রা ছিল। সে তা পরিবারের জ্বালানির জন্য বাড়ি নিয়ে গেল। যখন কাঠের টুকরাটা চিরলো তখন ঐ স্বর্ণমুদ্রা ও চিঠিটা সে পেয়ে গেল। কিছুকাল পর দেনাদার লোকটি এক হাজার স্বর্ণমুদ্রা নিয়ে (পাওনাদারের নিকট) এসে হাজির হল (কারণ কাঠের টুকরোটা পৌঁছা তো সম্ভবপর ছিল না) এবং (সময় মত ঋণ পরিশোধ করতে না পারায় দুঃখ করে) বলল, আল্লাহর কসম! আমি আপনার মাল (প্রাপ্য) যথা সময়ে পৌঁছে দেয়ার উদ্দেশ্যে যানবাহনের খোঁজে সর্বদা চেষ্টিত ছিলাম; কিন্তু যে জাহাজটিতে করে আমি এখন এসেছি। এটির আগে আর কোন জাহাজই পেলাম না। (তাই সময় মত আসতে পারলাম না)। কর্জদাতা বলল, আপনি কি আমার

وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ۭ مَا كَانَ يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ اِلَّا حَاجَةً فِيْ نَفْسِ يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا ۭ وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾

৬৮. যখন তারা, তাদের পিতা তাদেরকে যেভাবে আদেশ করেছিলেন সেভাবেই প্রবেশ করলো, তখন আল্লাহর বিধানের বিরুদ্ধে ওটা তাদের কোন কাজে আসলো না; ইয়াকুব (عليه السلام) শুধু তাঁর মনের একটি অভিপ্রায় পূর্ণ করেছিলেন এবং তিনি অবশ্যই জ্ঞানী ছিলেন, কারণ আমি তাকে শিক্ষা দিয়েছিলাম; কিন্তু অধিকাংশ মানুষ এটা অবগত নয়।

وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰي يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْٓ اَنَا اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَىِٕسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٩﴾

৬৯. তারা যখন ইউসুফের (عليه السلام) সামনে হাজির হলো, তখন ইউসুফ (عليه السلام) তাঁর (সহোদর) ভ্রাতাকে নিজের কাছে রাখলেন এবং বললেনঃ আমিই তোমার (সহোদর) ভাই, সুতরাং তারা যা করতো তার জন্যে দুঃখ করো না।

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِيْ رَحْلِ اَخِيْهِ ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا الْعِيْرُ اِنَّكُمْ لَسٰرِقُوْنَ ﴿٧٠﴾

৭০. অতঃপর তিনি (ইউসুফ) যখন তাদের সামগ্রীর ব্যবস্থা করে দিলেন, তখন তিনি তার (সহোদর) ভাই-এর মালপত্রের মধ্যে পানপাত্র রেখে দিলেন, অতঃপর এক আহ্বায়ক চীৎকার করে বললোঃ হে যাত্রীদল তোমরা নিশ্চয়ই চোর।

قَالُوْا وَاَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ ﴿٧١﴾

৭১. তারা তাদের দিকে একটু অগ্রসর হয়ে বললোঃ তোমরা কি হারিয়েছো?

قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَاۗءَ بِهٖ حِمْلُ

৭২. তারা বললোঃ আমরা রাজার পানপাত্র হারিয়েছি; যে ওটা এনে

নিকট কিছু পাঠিয়েছিলেন? দেনাদার বলল, আমি তো আপনাকে বললামই যে, এর আগে আর কোন জাহাজই আমি পাইনি। সে (কর্জদাতা) বলল, আপনি কাঠের টুকরোর ভিতরে করে যা পাঠিয়েছিলেন তা আল্লাহ্ আপনার হয়ে আমাকে আদায় করে দিয়েছেন। তখন সে এক হাজার স্বর্ণমুদ্রা নিয়ে প্রশান্ত চিত্তে ফিরে চলে আসল। (বুখারী, হাদীস নং ২২৯১)

بَعِيْرٍ وَّاَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ﴿٧٢﴾

দেবে, সে এক উষ্ট্র বোঝাই মাল পাবে এবং এর দায়িত্বশীল আমি।

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِى الْاَرْضِ وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾

৭৩. তারা বললো; আল্লাহর শপথ! তোমরা তো জান যে, আমরা এই দেশে অশান্তি সৃষ্টি করতে আসি নাই এবং আমরা চোরও নই।

قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗٓ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿٧٤﴾

৭৪. তারা বললোঃ যদি তোমরা মিথ্যাবাদী হও তবে তার শাস্তি কি?

قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِىْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِى الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٥﴾

৭৫. তারা বললোঃ এর শাস্তি এই যে, যার মালপত্রের মধ্যে পাত্রটি পাওয়া যাবে, সেই তার বিনিময়, এভাবে আমরা অত্যাচারীদের শাস্তি দিয়ে থাকি।

فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِىْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ وَفَوْقَ كُلِّ ذِىْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٦﴾

৭৬. অতঃপর তিনি তার (সহোদর) ভাই-এর মালপত্র তল্লাশির পূর্বে তাদের মালপত্র তল্লাশি করতে লাগলেন, পরে তাঁর (সহোদর) ভাই-এর মালপত্রের মধ্য হতে পাত্রটি বের করলেন, এভাবে আমি ইউসুফের (عليه السلام) জন্যে কৌশল করেছিলাম, রাজার আইনে তিনি তাঁর সহোদরকে আটক করতে পারতেন না, আল্লাহ ইচ্ছা না করলে, আমি যাকে ইচ্ছা মর্যাদায় উন্নীত করি। প্রত্যেক জ্ঞানবান ব্যক্তির উপর আছেন অধিকতর জ্ঞানী সত্তা।

قَالُوْٓا اِنْ يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ فِىْ نَفْسِهٖ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ

৭৭. তারা বললোঃ সে যদি চুরি করে থাকে তা হলে তার (সহোদর) ভাইও তো ইতিপূর্বে চুরি করেছিল, এতে ইউসুফ (عليه السلام) প্রকৃত ব্যাপার নিজের মনে গোপন রাখলেন এবং তাদের কাছে প্রকাশ করলেন না,

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ﴿٧٧﴾

তিনি (মনে মনে) বললেনঃ তোমাদের অবস্থা তো আরো নিকৃষ্ট এবং তোমরা যা বলছো সে সম্বন্ধে আল্লাহ সবিশেষ অবগত।

قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗۤ اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٧٨﴾

৭৮. তারা বললোঃ হে আযীয! এর পিতা একজন, অতিশয় বৃদ্ধ, সুতরাং এর স্থলে আপনি আমাদের কোন একজনকে রাখুন! আমরা তো আপনাকে দেখছি মহানুভব ব্যক্তিদের একজন।

قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ﴿٧٩﴾

৭৯. তিনি বললেনঃ যার নিকট আমরা আমাদের মাল পেয়েছি, তাকে ছাড়া অন্যকে রাখার অপরাধ হতে আমরা আল্লাহর কাছে আশ্রয় প্রার্থনা করছি! এরূপ করলে আমরা অবশ্যই যালিম হয়ে যাব।

فَلَمَّا اسْتَيْـَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ؕ قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْۤا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْۤ اَبِيْۤ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨٠﴾

৮০. যখন তারা তার নিকট হতে সম্পূর্ণ নিরাশ হলো, তখন তারা নির্জনে গিয়ে পরামর্শ করতে লাগলো, ওদের মধ্যে যে বয়োজ্যেষ্ঠ ছিল, সে বললোঃ তোমরা কি জানো না যে, তোমাদের পিতা তোমাদের নিকট হতে আল্লাহর নামে অঙ্গীকার নিয়েছেন এবং পূর্বেও তোমরা ইউসুফের (عليه السلام) ব্যাপারে ত্রুটি করেছিলে, সুতরাং আমি কিছুতেই এই দেশ ত্যাগ করবো না। যতক্ষণ না আমার পিতা আমাকে অনুমতি দেন অথবা আল্লাহ আমার জন্যে কোন ব্যবস্থা করেন এবং তিনিই বিচারকদের মধ্যে শ্রেষ্ঠ।

اِرْجِعُوْۤا اِلٰۤى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰۤاَبَانَاۤ اِنَّ ابْنَكَ

৮১. তোমরা তোমাদের পিতার নিকট ফিরে যাও এবং বলোঃ

سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَآ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ﴿٨١﴾

আমাদের পিতা! আপনার পুত্র চুরি করেছে এবং আমরা যা জানি তারই প্রত্যক্ষ বিবরণ দিলাম, অদৃশ্যের ব্যাপারে আমরা অবহিত ছিলাম না।

وَسْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ الَّتِيْٓ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ؕ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٨٢﴾

৮২. যে জনপদে আমরা ছিলাম ওর অধিবাসীদেরকে জিজ্ঞেস করুন এবং যে যাত্রীদের সাথে আমরা এসেছিলাম তাদেরকেও, আমরা অবশ্যই সত্যবাদী।

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٨٣﴾

৮৩. ইয়াকুব (عليه السلام) বললেনঃ না, তোমাদের মন তোমাদের জন্যে একটি কাহিনী সাজিয়ে দিয়েছে; সুতরাং পূর্ণ ধৈর্যই শ্রেয়; হয়তো আল্লাহ ওদেরকে এক সাথে আমার কাছে এনে দিবেন, তিনি সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাময়।

وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰٓاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٨٤﴾

৮৪. তিনি ওদের দিক থেকে মুখ ফিরিয়ে নিলেন এবং বললেনঃ আফসোস ইউসুফের (عليه السلام) জন্যে, শোকে তার চক্ষুদ্বয় সাদা হয়ে গিয়েছিল এবং তিনি ছিলেন অসহনীয় মনস্তাপে ক্লিষ্ট।

قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿٨٥﴾

৮৫. তারা বললোঃ আল্লাহর শপথ! আপনি তো ইউসুফের (عليه السلام) কথা ভুলবেন না যতক্ষণ না আপনি মুমূর্ষু হবেন অথবা মৃত্যুবরণ করবেন।

قَالَ اِنَّمَآ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْٓ اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾

৮৬. তিনি বললেনঃ আমি আমার অসহনীয় বেদনা ও আমার দুঃখ শুধু আল্লাহর নিকট নিবেদন করছি এবং আমি আল্লাহর নিকট হতে জানি যা তোমরা জান না।

يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ

৮৭. হে আমার পুত্রগণ! তোমরা যাও, ইউসুফ (عليه السلام) ও তাঁর

وَلَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٧﴾

সহোদরের অনুসন্ধান কর এবং আল্লাহর করুণা হতে তোমরা নিরাশ হয়ো না, কারণ কাফিরগণ ব্যতীত কেউই আল্লাহর করুণা হতে নিরাশ হয় না।

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَاَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِى الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿٨٨﴾

৮৮. যখন তারা তাঁর নিকট উপস্থিত হলো তখন বললোঃ হে আযীয! আমরা ও আমাদের পরিবার-পরিজন বিপন্ন হয়ে পড়েছি এবং আমরা তুচ্ছ পণ্য নিয়ে এসেছি; আপনি আমাদের রসদ পূর্ণ মাত্রায় দিন এবং আমাদেরকে দান করুন; আল্লাহ দাতাদেরকে পুরস্কৃত করে থাকেন।

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ﴿٨٩﴾

৮৯. তিনি বললেনঃ তোমরা কি জান, তোমরা ইউসুফ (عليه السلام) ও তার (সহোদর) ভাইয়ের সাথে কিরূপ আচরণ করেছিলে, যখন তোমরা ছিলে অজ্ঞ?

قَالُوْۤا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ؕ قَالَ اَنَا يُوْسُفُ وَهٰذَاۤ اَخِىْ ۫ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ؕ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٠﴾

৯০. তারা বললোঃ তবে কি তুমিই ইউসুফ (عليه السلام)? তিনি বললেনঃ আমিই ইউসুফ (عليه السلام) এবং এই আমার (সহোদর;) আল্লাহ আমাদের প্রতি অনুগ্রহ করেছেন, যে ব্যক্তি মুত্তাকী ও ধৈর্যশীল, আল্লাহ সেইরূপ সৎকর্মপরায়ণদের শ্রমফল নষ্ট করেন না।

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِـِٕيْنَ ﴿٩١﴾

৯১. তারা বললোঃ আল্লাহর শপথ! আল্লাহ নিশ্চয় তোমাকে আমাদের উপর প্রাধান্য দিয়েছেন এবং আমরা নিশ্চয় অপরাধী ছিলাম।

قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ؕ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ۫

৯২. তিনি বললেনঃ আজ তোমাদের বিরুদ্ধে কোন অভিযোগ নেই, আল্লাহ

وَهُوَ أَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٩٢﴾

তোমাদেরকে ক্ষমা করুন এবং তিনি দয়ালুদের মধ্যে শ্রেষ্ঠ দয়ালু।[১]

اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٣﴾

৯৩. তোমরা আমার এ জামাটি নিয়ে যাও এবং এটা আমার পিতার মুখমন্ডলের উপর রেখো, তিনি দৃষ্টি শক্তি ফিরে পাবেন, আর তোমরা তোমাদের পরিবারের সকলকেই আমার নিকট নিয়ে এসো।

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّيْ لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَآ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ ﴿٩٤﴾

৯৪. অতঃপর যাত্রীদল যখন (মিশর হতে) বের হয়ে পড়লো তখন তাদের পিতা (কেনান থেকে নিকটস্থদেরকে) বললেনঃ তোমরা যদি আমাকে দিশেহারা মনে না কর তবে বলিঃ আমি ইউসুফের (عليه السلام) ঘ্রাণ পাচ্ছি।

قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ﴿٩٥﴾

৯৫. তারা (ঘরের লোকেরা) বললোঃ আল্লাহর শপথ! আপনি তো আপনার পূর্ব বিভ্রান্তিতেই রয়েছেন।

فَلَمَّآ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾

৯৬. অতঃপর যখন সুসংবাদ দাতা উপস্থিত হলো এবং তাঁর মুখমন্ডলের উপর জামাটি রাখলো তখন তিনি দৃষ্টিশক্তি ফিরে পেলেন, তিনি বললেনঃ আমি কি তোমাদেরকে বলি নাই যে, আমি আল্লাহর নিকট হতে জানি, যা তোমরা জান না।

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেনঃ আমি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি, যেদিন আল্লাহ্ রহমতকে সৃষ্টি করেছেন, সেদিন তাকে একশত ভাগে বিভক্ত করেছেন। তার মধ্যে নিরানব্বই ভাগই তাঁর নিকট রেখে দিয়েছেন। আর বাকী এক ভাগ তাঁর সমস্ত সৃষ্টিজীবকে দিয়েছেন। যদি কোন কাফের আল্লাহ্র নিকট যে রহমত আছে, তার পরিমাণ সম্পর্কে জানতো তা'হলে সে জান্নাতের ব্যাপারে নিরাশ হতো না। (অপরপক্ষে) কোন মু'মিন যদি আল্লাহ্র কাছে যে শাস্তি রয়েছে তার পরিমাণ সম্পর্কে জানতো, তবে (দোযখের) আগুন থেকে নিজেকে নিরাপদ মনে করতো না। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৬৯)

قَالُوْا يٰۤاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَاۤ اِنَّا كُنَّا خٰطِـِٕيْنَ ﴿٩٧﴾

৯৭. তারা বললোঃ হে আমাদের পিতা! আমাদের পাপের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করুন; আমরা তো অপরাধী।

قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٩٨﴾

৯৮. তিনি বললেনঃ আমি আমার প্রতিপালকের নিকট তোমাদের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করবো, তিনি তো অতি ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰۤى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾

৯৯. অতঃপর তারা যখন ইউসুফের (عليه السلام) নিকট উপস্থিত হলো, তখন তিনি তাঁর পিতা-মাতাকে (সসম্মানে) তাঁর পাশে বসালেন এবং বললেনঃ আপনারা আল্লাহর ইচ্ছায় নিরাপদে মিসরে প্রবেশ করুন!

وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰۤاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ ز قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ؕ وَقَدْ اَحْسَنَ بِيْۤ اِذْ اَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ وَجَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ ؕ اِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿١٠٠﴾

১০০. আর ইউসুফ (عليه السلام) তাঁর পিতা-মাতাকে উচ্চাসনে বসালেন এবং তারা সবাই তার সামনে সিজদায় লুটিয়ে পড়লো, তিনি বললেনঃ হে আমার পিতা! এটাই আমার পূর্বেকার স্বপ্নের ব্যাখ্যা আমার প্রতিপালক ওটা সত্যে পরিণত করেছেন এবং তিনি আমাকে কারাগার হতে মুক্ত করে এবং শয়তান আমার ও আমার ভ্রাতাদের সম্পর্ক নষ্ট করার পরও আপনাদেরকে মরু অঞ্চল হতে এখানে এনে দিয়ে আমার প্রতি অনুগ্রহ করেছেন, আমার প্রতিপালক যা ইচ্ছা তা নিপুণতার সাথে করে থাকেন, তিনি তো সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাময়।

رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ

১০১. হে আমার প্রতিপালক! আপনি আমাকে রাজ্য দান করেছেন এবং স্বপ্নের ব্যাখ্যা শিক্ষা দিয়েছেন; হে

وَالْاَرْضِ ۫ اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠١﴾

আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সৃষ্টিকর্তা! আপনিই ইহলোক ও পরলোকে আমার অভিভাবক, আপনি আমাকে মুসলিম হিসেবে মৃত্যু দান করুন, এবং আমাকে সৎকর্ম পরায়ণদের অন্তর্ভুক্ত করুন।

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ﴿١٠٢﴾

১০২. এটা অদৃশ্য ঘটনাবলীর অন্যতম তোমাকে আমি ওহী দ্বারা অবহিত করছি, ষড়যন্ত্রকালে যখন তারা মতৈক্যে পৌঁছেছিল তখন তুমি তাদের ওখানে উপস্থিত ছিলে না।

وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾

১০৩. তুমি যতই চাও না কেন, অধিকাংশ লোকই বিশ্বাস করবার নয়।

وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾

১০৪. আর তুমি তো তাদের কাছে কোন পারিশ্রমিক দাবী করছো না, এটা তো বিশ্বজগতের জন্যে উপদেশ ছাড়া কিছু নয়।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿١٠٥﴾

১০৫. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে অনেক নিদর্শন রয়েছে, তারা এ সমস্ত প্রত্যক্ষ করে; কিন্তু তারা এগুলো থেকে বিমুখতা অবলম্বন করে।

وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ ﴿١٠٦﴾

১০৬. তাদের অধিকাংশই আল্লাহকে বিশ্বাস করে; কিন্তু সাথে সাথে শিরকও করে।

اَفَاَمِنُوْٓا اَنْ تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٠٧﴾

১০৭. তবে কি তারা আল্লাহর সর্বগ্রাসী শাস্তি হতে অথবা তাদের অজ্ঞাতসারে কিয়ামতের আকস্মিক উপস্থিতি হতে নিরাপদ?

قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۣ عَلٰي بَصِيْرَةٍ

১০৮. তুমি বলঃ এটাই আমার পথ, আল্লাহর প্রতি মানুষকে আমি আহ্বান

اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ؕ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَاۤ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۰۸﴾

করি সজ্ঞানে, আমি এবং আমার অনুসারীগণও, আল্লাহ মহান পবিত্র। আর আমি মুশরিকদের অন্তর্ভুক্ত নই।

وَمَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْۤ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى ؕ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۰۹﴾

১০৯. তোমার পূর্বেও জনপদ-বাসীদের মধ্য হতে পুরুষদেরকেই পাঠিয়েছিলাম, যাদের নিকট ওহী পাঠাতাম; তারা কি পৃথিবীতে ভ্রমণ করে নাই এবং তাদের পূর্ববর্তীদের কি পরিণাম হয়েছিল তা কি দেখে নাই? তারা মুত্তাকী তাদের জন্যে পরলোকই শ্রেয়; তোমরা কি বুঝ না?

حَتّٰۤى اِذَا اسْتَيْـَٔسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا جَآءَهُمْ نَصْرُنَا ۙ فَنُجِّيَ مَنْ نَّشَآءُ ؕ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۱۰﴾

১১০. অবশেষে যখন রাসূলগণ নিরাশ হলেন এবং লোকে ভাবলো যে, রাসূলদেরকে মিথ্যা সাব্যস্ত করা হয়েছে। তখন তাদের কাছে আমার সাহায্য আসলো, এভাবে আমি যাকে ইচ্ছা উদ্ধার করি, আর অপরাধী সম্প্রদায় হতে আমার শাস্তি রদ করা হয় না।

لَقَدْ كَانَ فِيْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ؕ مَا كَانَ حَدِيْثًا يُّفْتَرٰى وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۱۱۱﴾ ع

১১১. তাদের বৃত্তান্তে বোধশক্তি সম্পন্ন ব্যক্তিদের জন্যে আছে শিক্ষা, এটা এমন বাণী যা মিথ্যা রচনা নয়; কিন্তু মু'মিনদের জন্যে এটা পূর্ব গ্রন্থে যা আছে তার সমর্থন এবং সমস্ত কিছুর বিশদ বিবরণ, হিদায়াত ও রহমত।

সূরাঃ রা'দ, মাদানী

(আয়াতঃ ৪৩, রুকূ'ঃ ৩)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةُ الرَّعْدِ مَدَنِيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٤٣ رُكُوْعَاتُهَا ٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. আলিফ-লাম-মীম-রা; এগুলি কুরআনের আয়াত; যা তোমার প্রতিপালক হতে তোমার প্রতি অবতীর্ণ হয়েছে তা-ই সত্য; কিন্তু অধিকাংশ মানুষ এতে বিশ্বাস করে না।

الٓمّٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ؕ وَالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ①

২. আল্লাহই ঊর্ধ্বদেশে আকাশমন্ডলী স্থাপন করেছেন স্তম্ভ ব্যতীত, তোমরা এটা দেখছো; অতঃপর তিনি আরশে সমুন্নীত হলেন এবং সূর্য ও চন্দ্রকে নিয়মানুবর্তী করলেন; প্রত্যেকে নির্দিষ্টকাল পর্যন্ত আবর্তন করে, তিনি সকল বিষয় নিয়ন্ত্রণ করেন এবং নিদর্শনসমূহ বিশদভাবে বর্ণনা করেন, যাতে তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের সাথে সাক্ষাৎ সম্বন্ধে নিশ্চিত বিশ্বাস করতে পার।

اَللّٰهُ الَّذِيْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ ②

৩. তিনিই ভূতলকে বিস্তৃত করেছেন এবং ওতে পর্বত ও নদী সৃষ্টি করেছেন এবং প্রত্যেক প্রকারের ফল সৃষ্টি করেছেন জোড়ায় জোড়ায়; তিনি দিবসকে রাত্রি দ্বারা আচ্ছাদিত করেন; এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে চিন্তাশীল সম্প্রদায়ের জন্যে।

وَهُوَ الَّذِيْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْهٰرًا ؕ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ③

৪. পৃথিবীতে রয়েছে পরস্পর সংলগ্ন ভূ-খন্ড; ওতে আছে আঙ্গুর-কানন, শস্যক্ষেত্র, একাধিক শীষ বিশিষ্ট

وَفِي الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ صِنْوَانٌ وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى بِمَآءٍ

وَّاحِدٍ ۖ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰى بَعْضٍ فِى الْاُكُلِ ؕ
اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٤﴾

অথবা এক শীষ বিশিষ্ট খেজুর বৃক্ষ, সিঞ্চিত একই পানিতে এবং স্বাদে ওগুলির কতককে কতকের উপর আমি শ্রেষ্ঠত্ব দিয়ে থাকি, অবশ্যই বোধশক্তি সম্পন্ন সম্প্রদায়ের জন্যে এতে রয়েছে নিদর্শন।

وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا
ءَاِنَّا لَفِىْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
بِرَبِّهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ الْاَغْلٰلُ فِىْٓ اَعْنَاقِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٥﴾

৫. যদি তুমি বিস্মিত হও, তবে বিস্ময়ের বিষয় তাদের কথাঃ (মৃত্যুর পর) মাটিতে পরিণত হওয়ার পরও কি আমরা নতুন জীবন লাভ করবো? ওরাই ওদের প্রতিপালককে অস্বীকার করে এবং ওদেরই গলদেশে থাকবে লৌহ শৃঙ্খল, ওরাই জাহান্নামী এবং সেখানে ওরা চিরস্থায়ীভাবে অবস্থানকারী।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ
وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ؕ وَاِنَّ رَبَّكَ
لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ ۚ وَاِنَّ رَبَّكَ
لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٦﴾

৬. কোন কল্যাণের পূর্বে তারা তোমাকে শাস্তি ত্বরান্বিত করতে বলে, যদিও তাদের পূর্বে এর বহু দৃষ্টান্ত গত হয়েছে; মানুষের যুলুম-অত্যাচার সত্ত্বেও তোমার প্রতিপালক তো মানুষের প্রতি ক্ষমাশীল এবং তোমার প্রতিপালক তো শাস্তি দানেও কঠোর।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ
رَّبِّهٖ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ﴿٧﴾

৭. যারা কুফরী করেছে তারা বলেঃ তার প্রতিপালকের নিকট হতে তার নিকট কোন নিদর্শন অবতীর্ণ হয়না কেন? (হে নবী ﷺ) (কথা এই যে,) তুমি তো শুধুমাত্র ভয় প্রদর্শনকারী এবং প্রত্যেক সম্প্রদায়ের জন্যেই পথ প্রদর্শক রয়েছে।

اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ
الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ؕ وَكُلُّ شَىْءٍ عِنْدَهٗ

৮. প্রত্যেক নারী যা গর্ভে ধারণ করে এবং জরায়ুতে যা কিছু কমে ও বাড়ে আল্লাহ তা জানেন এবং তাঁর বিধানে

بِمِقْدَارٍ ⑧

প্রত্যেক বস্তুরই এক নির্দিষ্ট পরিমাণ আছে।

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ⑨

৯. যা অদৃশ্য ও যা দৃশ্যমান তিনি তা অবগত; তিনি মহান, সর্বোচ্চ মর্যাদাবান।

سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ
وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۢ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ⑩

১০. তোমাদের মধ্যে যে কথা গোপন রাখে এবং যে তা প্রকাশ করে, রাত্রে যে আত্মগোপন করে এবং দিবসে যে প্রকাশ্যে বিচরণ করে, তারা সমভাবেই আল্লাহর জ্ঞান গোচর (রয়েছে)।

لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ
يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ
مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاِذَآ اَرَادَ
اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ
دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ⑪

১১. মানুষের জন্যে তার সামনে ও পেছনে একের পর এক প্রহরী থাকে; ওরা আল্লাহর আদেশে তার রক্ষণাবেক্ষণ করে, নিশ্চয় আল্লাহ কোন সম্প্রদায়ের অবস্থা পরিবর্তন করেন না যতক্ষণ না তারা নিজেদের অবস্থা নিজেরা পরিবর্তন করে, কোন সম্প্রদায়ের সম্পর্কে যদি আল্লাহ অশুভ কিছু ইচ্ছা করেন তবে তা রদ করবার কেউ নেই এবং তিনি ছাড়া তাদের কোন অভিভাবক নেই।

هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنْشِئُ
السَّحَابَ الثِّقَالَ ⑫

১২. তিনিই তোমাদেরকে দেখান বিজলী যা ভয় ও ভরসা সঞ্চার করে এবং তিনিই সৃষ্টি করেন ঘন মেঘ।

وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ
وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ
يُجَادِلُوْنَ فِي اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ⑬

১৩. বজ্র নির্ঘোষ ও ফেরেশ্‌তাগণ স্বভয়ে তাঁর সপ্রশংসা মহিমা ও পবিত্রতা ঘোষণা করে এবং তিনি বজ্রপাত করেন এবং যাকে ইচ্ছা ওটা দ্বারা আঘাত করেন; তথাপি ওরা আল্লাহ সম্বন্ধে বিতন্ডা করে; যদিও তিনি মহাশক্তিশালী।

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ
لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ بِشَيْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ
اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ وَمَا
دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿١٤﴾

১৪. সত্যের আহ্বান তাঁরই; যারা তাঁকে ছাড়া আহ্বান করে অপরকে, তাদেরকে তারা কোনই সাড়া দেয় না; তাদের দৃষ্টান্ত সেই ব্যক্তির মত, যে তার মুখে পানি পৌঁছবে এই আশায় তার হস্তদ্বয় প্রসারিত করে এমন পানির দিকে যা তার মুখে পৌঁছবার নয়, কাফিরদের আহ্বান নিস্ফল।

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا
وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿١٥﴾ السجدة

১৫. আল্লাহ প্রতি সিজদাবনত হয় আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে, ইচ্ছায় অথবা অনিচ্ছায় এবং তাদের ছায়াগুলিও সকাল ও সন্ধ্যায়।

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ؕ قُلْ
اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ
نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ
اَمْ هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ۚ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ
شُرَكَآءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ؕ
قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿١٦﴾

১৬. বলঃ কে আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর প্রতিপালক? বলঃ (তিনি) আল্লাহ; বলঃ তবে কি তোমরা অভিভাবকরূপে গ্রহণ করছো আল্লাহর পরিবর্তে অপরকে, যারা নিজেদের লাভ বা ক্ষতি সাধনে সক্ষম নয়? বলঃ অন্ধ ও চক্ষুষ্মান কি সমান অথবা অন্ধকার ও আলো কি এক? তবে কি তারা আল্লাহর এমন শরীক স্থাপন করেছে যারা তাঁর সৃষ্টির মত সৃষ্টি করেছে যে কারণে সৃষ্টি তাদের মধ্যে বিভ্রান্তি ঘটিয়েছে? বলঃ আল্লাহ সকল বস্তুর স্রষ্টা; তিনি এক, পরাক্রমশালী।

اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌۢ بِقَدَرِهَا
فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ؕ وَمِمَّا يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ
فِي النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ؕ

১৭. তিনি আকাশ হতে বৃষ্টি বর্ষণ করেন, ফলে উপত্যকাসমূহ ওদের পরিমাণ অনুযায়ী প্লাবিত হয় এবং প্লাবন তার উপরিস্থিত ফেনা বহন করে, এভাবে ফেনা উপরিভাগে আসে যখন অলংকার অথবা

كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۚ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِى الْاَرْضِ ۚ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ۚ ﴿١٧﴾

তৈজসপত্র নির্মাণ উদ্দেশ্যে কিছু অগ্নিতে উত্তপ্ত করা হয়; এভাবে আল্লাহ সত্য ও অসত্যের দৃষ্টান্ত দিয়ে থাকেন; যা আবর্জনা তা ফেলে দেয়া হয় এবং যা মানুষের উপকারে আসে তা জমিতে থেকে যায়, এভাবেই আল্লাহ উপমা দিয়ে থাকেন।

لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ۚ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ۚ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۙ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٨﴾

১৮. মঙ্গল তাদের যারা তাদের প্রতিপালকের আহ্বানে সাড়া দেয় এবং যারা তাঁর ডাকে সাড়া দেয় না, তাদের যদি পৃথিবীতে যা কিছু আছে তা সমস্তই থাকতো এবং তার সাথে সমপরিমাণ আরো থাকতো তবে অবশ্যই তারা মুক্তিপণ স্বরূপ তা প্রদান করতো; তাদের হিসাব হবে কঠোর এবং জাহান্নাম হবে তাদের আবাস, ওটা কত নিকৃষ্ট আশ্রয়স্থল।

اَفَمَنْ يَّعْلَمُ اَنَّمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ۚ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿١٩﴾

১৯. তোমার প্রতিপালক হতে তোমার প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে তা যে ব্যক্তি সত্য বলে জানে সে আর অন্ধ কি সমান? উপদেশ গ্রহণ করে শুধু বিবেক শক্তিসম্পন্ন ব্যক্তিরাই।

الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ﴿٢٠﴾

২০. যারা আল্লাহকে প্রদত্ত অঙ্গীকার রক্ষা করে এবং প্রতিজ্ঞা ভঙ্গ করে না।

وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ ﴿٢١﴾

২১. আর আল্লাহ যে সম্পর্ক অক্ষুন্ন রাখতে আদেশ করেছেন যারা তা অক্ষুন্ন রাখে, ভয় করে তাদের প্রতিপালককে এবং ভয় করে কঠোর হিসাবকে।

وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً

২২. আর যারা তাদের প্রতিপালকের সন্তুষ্টি লাভের জন্যে ধৈর্যধারণ করে, নামায সুপ্রতিষ্ঠিত করে এবং আমি

وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٢﴾

তাদেরকে যে রুযী দিয়েছি তা হতে গোপনে ও প্রকাশ্যে ব্যয় করে আর যারা ভাল দ্বারা মন্দ দূরীভূত করে, তাদের জন্যে শুভ পরিণাম।

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿٢٣﴾

২৩. স্থায়ী জান্নাত, তাতে তারা প্রবেশ করবে এবং তাদের পিতা-মাতা, পতি-পত্নী ও সন্তান-সন্ততিদের মধ্যে যারা সৎকর্ম করেছে তারাও এবং ফেরেশ্‌তাগণ তাদের কাছে হাজির হবে প্রত্যেক দরজা দিয়ে।

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٤﴾

২৪. (এবং বলবেন) তোমরা ধৈর্যধারণ করেছো বলে তোমাদের প্রতি শান্তি! কতই না ভাল এই পরিণাম।

وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿٢٥﴾

২৫. যারা আল্লাহর সাথে দৃঢ় অঙ্গীকারে আবদ্ধ হওয়ার পর তা ভঙ্গ করে, যে সম্পর্ক অক্ষুণ্ন রাখতে আল্লাহ আদেশ করেছেন, তা ছিন্ন করে এবং পৃথিবীতে অশান্তি সৃষ্টি করে বেড়ায়, তাদের জন্যে আছে অভিসম্পাত এবং তাদের জন্যে আছে মন্দ আবাস।

اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ﴿٢٦﴾

২৬. আল্লাহ যার জন্যে ইচ্ছা তার রুযী বর্ধিত করেন এবং সংকুচিত করেন; কিন্তু তারা পার্থিব জীবন নিয়েই উল্লসিত, অথচ ইহজীবন তো পরজীবনের তুলনায় ক্ষণস্থায়ী ভোগ মাত্র।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِىْٓ

২৭. যারা কুফরী করেছে, তারা বলেঃ তার প্রতিপালকের নিকট হতে তার নিকট কোন নিদর্শন অবতীর্ণ হয় না

إِلَيْهِ مَنْ أَنَابَ ﴿٢٧﴾

কেন? তুমি বলঃ আল্লাহ যাকে ইচ্ছা বিভ্রান্ত করেন এবং তিনি তাদেরকেই তাঁর পথ দেখান যারা তাঁর অভিমুখী।

الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ ۗ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ﴿٢٨﴾

২৮. ওরা যারা ঈমান আনে এবং আল্লাহর যিকিরে তাদের অন্তর প্রশান্ত হয়; জেনে রাখো, আল্লাহর জিকিরেই অন্তর প্রশান্ত হয়।[১]

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَىٰ لَهُمْ وَحُسْنُ مَآبٍ ﴿٢٩﴾

২৯. যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে, কল্যাণ ও শুভ পরিণাম তাদেরই।

كَذَٰلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهَا أُمَمٌ لِّتَتْلُوَ عَلَيْهِمُ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ بِالرَّحْمَٰنِ ۚ قُلْ هُوَ رَبِّي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ مَتَابِ ﴿٣٠﴾

৩০. এইভাবে আমি তোমাকে পাঠিয়েছি এমন এক জাতির নিকট যার পূর্বে বহুজাতি গত হয়েছে, তাদের নিকট আবৃত্তি করার জন্যে, যা আমি তোমার প্রতি প্রত্যাদেশ করেছি; তথাপি তারা দয়াময়কে অস্বীকার করে; তুমি বল তিনিই আমার প্রতিপালক; তিনি ছাড়া অন্য কোন (সত্য) মা'বূদ নেই, তাঁরই উপর আমি নির্ভর করি এবং আমার প্রত্যাবর্তন তাঁরই কাছে।

১। (ক) আবূ মূসা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন যে, যে ব্যক্তি তার প্রভুর (স্মরণ) যিকির করে আর যে করে না তাদের উদাহরণ হল জীবিত এবং মৃত ব্যক্তির ন্যায়। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪০৭)

(খ) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নিশ্চয়ই রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেনঃ যে ব্যক্তি প্রতিদিন একশতবার (সুবহানাল্লাহি বিহামদিহি) এই দু'আটি পাঠ করবে, তার গুনাহ্ যদি সমুদ্রের ফেনাতুল্যও হয় তবুও আল্লাহ্ দয়া করে তা ক্ষমা করে দিবেন। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪০৫)

(গ) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে, ব্যক্তি দিনে একশবার এটা পড়েঃ "লা-ইলাহা ইল্লাল্লাহু ওয়াহ্দাহু লা-শারীকালাহু, লাহুলমুলকু ওয়ালা হুল হামদু ওয়াহুয়া 'আলা কুল্লি শাইয়্যিন ক্বাদির।" অর্থঃ "একমাত্র আল্লাহ্ ছাড়া আর কোন সত্য ইলাহ নেই ; তাঁর কোন শরীক বা অংশীদারও নেই, সার্বভৌমত্ব ও সকল প্রকার প্রশংসা একমাত্র তাঁরই আর তিনি সমস্ত বস্তুর ওপরে সর্বশক্তিমান।" তবে "সে দশটা গোলাম আযাদ করার সমান সওয়াব পায়। একশ'টা নেকী তার জন্য লেখা হয় এবং তার একশ'টা গুনাহ মিটিয়ে দেয়া হয়। ওই দিন সন্ধ্যা হওয়া পর্যন্ত শয়তান থেকে তার রক্ষা পাওয়ার ব্যবস্থা হয় এবং তার চেয়ে উত্তম আর কেউ হবে না। তবে যে ব্যক্তি এটা তার চেয়ে বেশি পড়ে (সে হতে পারবে)। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪০৩)

وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ قُطِّعَتْ
بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ؕ بَلْ لِّلّٰهِ الْاَمْرُ
جَمِيْعًا ؕ اَفَلَمْ يَايْـَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ لَّوْ يَشَآءُ
اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا
مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿٣١﴾

৩১. যদি কোন কুরআন এমন হতো যার দ্বারা পর্বতকে গতিশীল করা যেতো অথবা পৃথিবীকে বিদীর্ণ করা যেতো অথবা মৃতের সাথে কথা বলা যেতো, (তবুও তারা তাতে বিশ্বাস করতো না;) কিন্তু সমস্ত বিষয়ই আল্লাহর ইখতিয়ারভুক্ত; তবে কি যারা ঈমান এনেছে তারা নিরাশ হয়ে পড়েনি যে, আল্লাহ ইচ্ছা করলে নিশ্চয় সকলকে সৎপথে পরিচালিত করতে পারতেন; যারা কুফরী করেছে তাদের কর্মফলের জন্যে তাদের বিপর্যয় ঘটতেই থাকবে, অথবা বিপর্যয় তাদের আশে পাশে আপতিত হতেই থাকবে, যতক্ষণ পর্যন্ত না আল্লাহর প্রতিশ্রুতি ঘটবে, নিশ্চয় আল্লাহ প্রতিশ্রুতির ব্যতিক্রম করেন না।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ
لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ
عِقَابِ ﴿٣٢﴾

৩২. তোমার পূর্বেও অনেক রাসূলের সাথে ঠাট্টা বিদ্রূপ করা হয়েছে, যারা কুফরী করেছে তাদেরকে কিছু অবকাশ দিয়েছিলাম, তারপর তাদেরকে পাকড়াও করেছিলাম; কেমন ছিল আমার পাকড়াও!

اَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا
لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ قُلْ سَمُّوْهُمْ ؕ اَمْ تُنَبِّـُٔوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ
فِي الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ؕ بَلْ زُيِّنَ
لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا عَنِ السَّبِيْلِ ؕ
وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾

৩৩. তবে কি প্রত্যেক মানুষ যা করে তার যিনি পর্যবেক্ষক তিনি এদের অক্ষম উপাস্যগুলির মত? (আল্লাহর পর্যবেক্ষণ সত্ত্বেও) অথচ তারা আল্লাহর বহু শরীক করেছে, তুমি বলঃ তোমরা তাদের পরিচয় দাও; তোমরা কি পৃথিবীর মধ্যে অথবা প্রকাশ্য বর্ণনা হতে এমন কিছুর সংবাদ তাঁকে দিতে চাও যা তিনি

জানেন না? না, বরং কাফিরদের প্রতারণা তাদের নিকট শোভন প্রতীয়মান হয় এবং তারা সৎপথ হতে নিবৃত্ত হয়; আল্লাহ যাকে বিভ্রান্ত করেন তার কোন পথ প্রদর্শক নেই।

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٣٤﴾

৩৪. তাদের জন্যে পার্থিব জীবনে আছে শাস্তি এবং পরকালের শাস্তি তো আরো কঠোর এবং আল্লাহর শাস্তি হতে রক্ষা করার তাদের কেউ নেই।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ اُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ؕ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۖ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ﴿٣٥﴾

৩৫. মুত্তাকীদেরকে যে জান্নাতের প্রতিশ্রুতি দেয়া হয়েছে, তার উপমা এইরূপঃ ওর পাদদেশে নদী প্রবাহিত, ওর ফলসমূহ ও ছায়া চিরস্থায়ীঃ যারা মুত্তাকী এটা তাদের কর্মফল এবং কাফিরদের কর্মফল জাহান্নাম।

وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ ؕ قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ ؕ اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ﴿٣٦﴾

৩৬. আমি যাদেরকে কিতাব দিয়েছি তারা যা তোমার প্রতি অবতীর্ণ হয়েছে তাতে আনন্দ পায়, তবে কোন কোন দল ওর কতক অংশ অস্বীকার করে; তুমি বলঃ আমি তো আল্লাহরই ইবাদত করতে ও তাঁর কোন শরীক না করতে আদিষ্ট হয়েছি; আমি তাঁরই প্রতি আহ্বান করি এবং তাঁরই নিকট আমার প্রত্যাবর্তন।

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ﴿٣٧﴾

৩৭. আর এভাবে আমি ওটা (কুরআন) অবতীর্ণ করেছি এক নির্দেশ, আরবী ভাষায়; জ্ঞান প্রাপ্তির পর তুমি যদি তাদের খেয়াল-খুশীর অনুসরণ কর তবে আল্লাহর বিরুদ্ধে তোমার কোন অভিভাবক ও রক্ষক থাকবে না।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّ ذُرِّيَّةً ؕ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ﴿٣٨﴾

৩৮. তোমার পূর্বেও আমি অনেক রাসূল প্রেরণ করেছিলাম এবং তাদেরকে স্ত্রী ও সন্তান-সন্ততি দিয়েছিলাম; আল্লাহর অনুমতি ছাড়া কোন নিদর্শন উপস্থিত করা কোন রাসূলের কাজ নয়; প্রত্যেক বিষয়ের নির্ধারিত কাল লিপিবদ্ধ।

يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۚ وَعِنْدَهٗۤ اُمُّ الْكِتٰبِ ﴿٣٩﴾

৩৯. আল্লাহ যা ইচ্ছা তা নিশ্চিহ্ন করেন এবং প্রতিষ্ঠিত রাখেন এবং তাঁরই নিকট আছে মূল গ্রন্থ।

وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ﴿٤٠﴾

৪০. আমি তাদেরকে যে শাস্তির কথা বলি, তার কিছু যদি তোমাকে দেখিয়ে দিই অথবা যদি এর পূর্বে তোমার মৃত্যু ঘটিয়েই দিই (সর্বাবস্থায়) তোমার কর্তব্য তো শুধু প্রচার করা, আর হিসাব-নিকাশ তো আমার কাজ।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ؕ وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٤١﴾

৪১. তারা কি দেখে না যে, আমি তাদের যমীনকে (দেশকে) চারদিক হতে সংকুচিত করে আনছি? আল্লাহ আদেশ করেন, তাঁর আদেশ রদ করার কেউ নেই এবং তিনি হিসাব গ্রহণে তৎপর।

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ؕ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ؕ وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٤٢﴾

৪২. তাদের পূর্বে যারা ছিল তারাও চক্রান্ত করেছিল, কিন্তু সমস্ত চক্রান্ত আল্লাহর ইখতিয়ারে; প্রত্যেক ব্যক্তি যা করে তা তিনি জানেন এবং কাফিররা শীঘ্রই জানবে শুভ পরিণাম কাদের জন্যে।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ؕ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ﴿٤٣﴾

৪৩. যারা কুফরী করেছে তারা বলেঃ তুমি আল্লাহর প্রেরিত নও; তুমি বলঃ আল্লাহ এবং যাদের নিকট কিতাবের জ্ঞান আছে, (যেমন আব্দুল্লাহ্ ইবনে সালাম) তারা আমার ও তোমাদের মধ্যে সাক্ষী হিসেবে যথেষ্ট।

সূরাঃ ইবরাহীম, মাক্কী

(আয়াতঃ ৫২, রুকূ'ঃ ৭)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে
(শুরু করছি)

سُوْرَةُ اِبْرٰهِيْمَ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٥٢ رُكُوْعَاتُهَا ٧

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۙ ﴿١﴾

১. আলিফ-লাম-রা; এই কিতাব, এটা আমি তোমার প্রতি অবতীর্ণ করেছি যাতে তুমি মানব জাতিকে তাদের প্রতিপালকের নির্দেশক্রমে বের করে আনতে পার অন্ধকার হতে আলোকের দিকে, তাঁর পথে, যিনি পরাক্রমশালী, সর্বপ্রশংসিত।

اللّٰهِ الَّذِىْ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِ ۙ ﴿٢﴾

২. আল্লাহ, আসমানসমূহ ও যমীনে যা কিছু আছে তা তাঁরই; কঠিন শাস্তির দুর্ভোগ কাফিরদের জন্যে।

الَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ اُولٰٓئِكَ فِىْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٣﴾

৩. যারা ইহজীবনকে পরজীবনের উপর প্রাধান্য দেয়, মানুষকে নিবৃত্ত করে আল্লাহর পথ হতে এবং আল্লাহর পথ বক্র করতে চায়; তারাই তো ঘোর বিভ্রান্তিতে রয়েছে।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ؕ فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٤﴾

৪. আমি প্রত্যেক রাসূলকেই তার স্বজাতির ভাষাভাষী করে পাঠিয়েছি। তাদের নিকট পরিস্কারভাবে ব্যাখ্যা করবার জন্যে, আল্লাহ যাকে ইচ্ছা বিভ্রান্ত করেন এবং যাকে ইচ্ছা সৎপথে পরিচালিত করেন এবং তিনি পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿٥﴾

৫. মূসাকে (عليه السلام) আমি আমার নিদর্শনসহ প্রেরণ করেছিলাম এবং বলেছিলামঃ তোমার সম্প্রদায়কে অন্ধকার হতে আলোতে আনয়ন কর এবং তাদেরকে আল্লাহর দিবসগুলির

দ্বারা উপদেশ দাও, এতে তো নিদর্শন রয়েছে প্রত্যেক অধিক ধৈর্যশীল ও কৃতজ্ঞ ব্যক্তির জন্যে।

৬. যখন মূসা (عليه السلام) তার সম্প্রদায়কে বলেছিলেনঃ তোমরা তোমাদের প্রতি আল্লাহর নিয়ামতকে স্মরণ কর যখন তিনি তোমাদেরকে রক্ষা করেছিলেন ফিরাউনীয় সম্প্রদায়ের কবল হতে, যারা তোমাদেরকে নিকৃষ্ট শাস্তি দিতো, তোমাদের পুত্রদেরকে যবাহ করতো ও তোমাদের নারীদেরকে জীবিত রাখতো; এবং এতে ছিল তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে এক মহাপরীক্ষা।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ أَنجَاكُم مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ ۚ وَفِي ذَٰلِكُم بَلَاءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿٦﴾

৭. যখন তোমাদের প্রতিপালক ঘোষণা করেনঃ তোমরা কৃতজ্ঞ হলে তোমাদেরকে অবশ্যই অধিক দিবো, আর অকৃতজ্ঞ হলে অবশ্যই আমার শাস্তি হবে কঠোর।

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِن شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِن كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ﴿٧﴾

৮. মূসা (عليه السلام) বলেছিলেনঃ তোমরা এবং পৃথিবীর সকলেই যদি অকৃতজ্ঞ হও তথাপি আল্লাহ অভাবমুক্ত এবং সর্বপ্রশংসিত।

وَقَالَ مُوسَىٰ إِن تَكْفُرُوا أَنتُمْ وَمَن فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا فَإِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ﴿٨﴾

৯. তোমাদের কাছে কি সংবাদ আসে নাই তোমাদের পূর্ববর্তী নূহের (عليه السلام) সম্প্রদায়ের, আ'দের ও সামূদের এবং তাদের পরবর্তীদের? তাদের বিষয় আল্লাহ ছাড়া অন্য কেউ জানে না; তাদের কাছে স্পষ্ট নিদর্শনসহ তাদের রাসূল এসেছিলেন; তারা তাদের হাত তাদের মুখে স্থাপন করতো এবং

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ ۛ وَالَّذِينَ مِن بَعْدِهِمْ ۚ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ ۚ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرَدُّوا أَيْدِيَهُمْ فِي أَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوا إِنَّا كَفَرْنَا بِمَا أُرْسِلْتُم بِهِ وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ

مِّمَّا تَدْعُوْنَنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ⑨

বলতোঃ যা সহ তোমরা প্রেরিত হয়েছো তা আমরা প্রত্যাখ্যান করি এবং আমরা অবশ্যই বিভ্রান্তিকর সন্দেহ পোষণ করি সে বিষয়ে, যার প্রতি তোমরা আমাদেরকে আহ্বান করছো।

قَالَتْ رُسُلُهُمْ اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ قَالُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ؕ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ⑩

১০. তাদের রাসূলগণ বলেছিলেনঃ আল্লাহ সম্বন্ধে কি কোন সন্দেহ আছে যিনি আকাশসমূহ ও পৃথিবীর সৃষ্টিকর্তা? তিনি তোমাদেরকে আহ্বান করেন তোমাদের পাপ মার্জনা করবার জন্যে এবং নির্দিষ্ট সময় পর্যন্ত তোমাদেরকে অবকাশ দিবার জন্যে; তারা বলতোঃ তোমরা তো আমাদের মতই মানুষ; আমাদের পিতৃ পুরুষগণ যাদের ইবাদত করতো তোমরা তাদের ইবাদত হতে আমাদেরকে বিরত রাখতে চাও; অতএব তোমরা আমাদের কাছে কোন অকাট্য প্রমাণ উপস্থিত কর।

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَمَا كَانَ لَنَآ اَنْ نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ⑪

১১. তাদের রাসূলগণ তাদেরকে বলেছিলেনঃ আমরা তোমাদের মত মানুষ; কিন্তু আল্লাহ তাঁর বান্দাদের মধ্যে যাকে ইচ্ছা অনুগ্রহ করে থাকেন; আল্লাহর অনুমতি ছাড়া তোমাদের নিকট প্রমাণ উপস্থিত করা আমাদের কাজ নয়; মু'মিনদের আল্লাহর উপরই নির্ভর করা উচিত।

وَمَا لَنَآ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ؕ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ⑫

১২. আমরা আল্লাহর উপর নির্ভর করবো না কেন? তিনিই তো আমাদেরকে পথ প্রদর্শন করেছেন; তোমরা আমাদেরকে যে ক্লেশ দিচ্ছ, আমরা অবশ্যই তা ধৈর্যের সাথে সহ্য

করবো এবং নির্ভরকারীদের আল্লাহরই উপর নির্ভর করা উচিত।

وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ فَاَوْحٰۤى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٣﴾

১৩. কাফিরগণ তাদের রাসূলদেরকে বলেছিলঃ আমরা তোমাদেরকে অবশ্যই আমাদের দেশ হতে বহিষ্কৃত করবো, অথবা তোমাদেরকে আমাদের ধর্মাদর্শে ফিরে আসতেই হবে; অতঃপর তাঁদের নিকট তাঁদের প্রতিপালক ওহী প্রেরণ করলেনঃ যালিমদেরকে আমি অবশ্যই বিনাশ করবো।

وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيْدِ ﴿١٤﴾

১৪. তাদের পরে আমি তোমাদেরকে দেশে প্রতিষ্ঠিত করবই; এটা তাদের জন্যে, যারা ভয় রাখে আমার সম্মুখে উপস্থিত হওয়ার এবং ভয় রাখে আমার শাস্তির।

وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿١٥﴾

১৫. তারা বিজয় কামনা করলো এবং প্রত্যেক উদ্ধত স্বৈরাচারী ব্যর্থকাম হলো।

مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صَدِيْدٍ ﴿١٦﴾

১৬. তাদের প্রত্যেকের জন্যে পরিণামে জাহান্নাম রয়েছে এবং প্রত্যেককে পান করানো হবে গলিত পূঁজ।

يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿١٧﴾

১৭. যা সে অতি কষ্টে গলধঃকরণ করবে এবং তা গলধঃকরণ করা প্রায় অসম্ভব হয়ে পড়বে;[১] সর্বদিক হতে তার নিকট আসবে মৃত্যু যন্ত্রণা; কিন্তু তার মৃত্যু ঘটবে না এবং সে কঠোর শাস্তি ভোগ করতেই থাকবে।

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী করীম (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) এরশাদ করেছেনঃ (জাহান্নামে) কাফেরের এক কাঁধ থেকে অপর কাঁধ পর্যন্ত দূরত্বের পরিমাণ হবে দ্রুতগামী আরোহীর তিন দিনের পথের সমান। (বুখারী হাদীস নং ৬৫৫১)

مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ۨ
اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ
مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٨﴾

১৮. যারা তাদের প্রতিপালককে অস্বীকার করে তাদের উপমা তাদের কর্মসমূহ ভস্ম সদৃশ্য যা ঝড়ের দিনে বাতাস প্রচন্ড বেগে উড়িয়ে নিয়ে যায়; যা তারা উপার্জন করে তার কিছুই তারা তাদের কাজে লাগাতে পারে না; এটা তো ঘোর বিভ্রান্তি।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ
اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٩﴾

১৯. তুমি কি লক্ষ্য কর না যে, আল্লাহ আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী যথাবিধি সৃষ্টি করেছেন? তিনি ইচ্ছা করলে তোমাদের অস্তিত্ব বিলোপ করতে পারেন এবং এক নতুন সৃষ্টি অস্তিত্বে আনতে পারেন।

وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿٢٠﴾

২০. আর এটা আল্লাহর জন্যে আদৌ কঠিন নয়।

وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا
اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا
مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ
لَهَدَيْنٰكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ صَبَرْنَا
مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿٢١﴾

২১. সবাই আল্লাহর নিকট উপস্থিত হবেই; যারা অহংকার করতো তখন দুর্বলেরা তাদেরকে বলবেঃ আমরা তো তোমাদের অনুসারী ছিলাম; এখন তোমরা আল্লাহর শাস্তি হতে আমাদেরকে কিছুমাত্র রক্ষা করতে পারবে? তারা বলবেঃ আল্লাহ আমাদেরকে সৎ পথে পরিচালিত করলে আমরাও তোমাদেরকে সৎ পথে পরিচালিত করতাম; এখন আমাদের ধৈর্যচ্যুত হওয়া অথবা ধৈর্যশীল হওয়া একই কথা; আমাদের কোন নিষ্কৃতি নেই।

وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ
وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ ؕ وَمَا كَانَ

২২. যখন সব কিছুর মীমাংসা হয়ে যাবে তখন শয়তান বলবেঃ আল্লাহ তোমাদেরকে প্রতিশ্রুতি দিয়েছিলেন সত্য প্রতিশ্রুতি, আমিও তোমা-

لِيْ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّآ اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ مَآ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ؕ اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَآ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ؕ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٢﴾

দেরকে প্রতিশ্রুতি দিয়েছিলাম; কিন্তু আমি তোমাদেরকে প্রদত্ত প্রতিশ্রুতি রক্ষা করি নাই; আমার তো তোমাদের উপর কোন আধিপত্য ছিল না, আমি শুধু তোমাদেরকে আহ্বান করেছিলাম আর তোমরা আমার আহ্বানে সাড়া দিয়েছিলে; সুতরাং তোমরা আমার প্রতি দোষারোপ করো না, তোমরা তোমাদের প্রতিই দোষারোপ কর; আমি তোমাদের উদ্ধারে সাহায্য করতে সক্ষম নই এবং তোমরাও আমার উদ্ধারে সাহায্য করতে সক্ষম নও; তোমরা যে পূর্বে আমাকে আল্লাহর শরীক করেছিলে তার সাথে আমার কোনই সম্পর্ক নেই; যালিমদের জন্যে তো বেদনাদায়ক শাস্তি আছেই।

وَاُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ؕ تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ﴿٢٣﴾

২৩. যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে তাদেরকে প্রবেশ করানো হবে জান্নাতে যার পাদদেশে নদী প্রবাহিত; সেখানে তারা চিরস্থায়ী-ভাবে অবস্থানকারী হবে তাদের প্রতিপালকের অনুমতিক্রমে; সেখানে তাদের অভিবাদন হবে 'সালাম'।

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ ﴿٢٤﴾

২৪. তুমি কি লক্ষ্য কর না আল্লাহ কিভাবে উপমা দিয়ে থাকেন? সৎবাক্যের তুলনা উৎকৃষ্ট বৃক্ষ যার মূল সুদৃঢ় ও যার শাখা-প্রশাখা ঊর্ধ্বে বিস্তৃত।

تُؤْتِيْٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍۢ بِاِذْنِ رَبِّهَا ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٥﴾

২৫. যা প্রতি মুহূর্তে ফল দান করে তার প্রতিপালকের অনুমতিক্রমে এবং আল্লাহ মানুষের জন্যে উপমা

দিয়ে থাকেন যাতে তারা শিক্ষা গ্রহণ করে।

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ ۨ اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْأَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ﴿٢٦﴾

২৬. কুবাক্যের তুলনা এক মন্দ বৃক্ষ, যার মূল ভূ-পৃষ্ঠ হতে বিচ্ছিন্ন, যার কোন স্থায়িত্ব নেই।

يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللَّهُ الظَّالِمِينَ ۚ وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ﴿٢٧﴾

২৭. যারা বিশ্বাসী তাদেরকে ইহজীবনে ও পরজীবনে আল্লাহ সুপ্রতিষ্ঠিত রাখবেন শাশ্বত বাণী দ্বারা এবং যারা যালিম আল্লাহ তাদেরকে বিভ্রান্তিতে রাখবেন; আল্লাহ যা ইচ্ছা তাই করেন।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ اللَّهِ كُفْرًا وَأَحَلُّوا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾

২৮. তুমি কি তাদের প্রতি লক্ষ্য কর না যারা আল্লাহর নিয়ামতের বদলে অকৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে এবং তাদের সম্প্রদায়কে নামিয়ে আনে ধ্বংসের ক্ষেত্রে।

جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا ۖ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾

২৯. জাহান্নামে, যার মধ্যে তারা প্রবেশ করবে কত নিকৃষ্ট এই আবাস স্থল।

وَجَعَلُوا لِلَّهِ أَنْدَادًا لِيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِهِ ۗ قُلْ تَمَتَّعُوا فَإِنَّ مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾

৩০. আর তারা আল্লাহর সমকক্ষ উদ্ভাবন করে তাঁর পথ হতে বিভ্রান্ত করার জন্যে; তুমি বলঃ ভোগ করে নাও, পরিণামে জাহান্নামই তোমাদের প্রত্যাবর্তন স্থল।

قُلْ لِعِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خِلَالٌ ﴿٣١﴾

৩১. আমার বান্দাদের মধ্যে যারা মু'মিন তাদেরকে বলঃ নামায কায়েম করতে এবং আমি তাদেরকে যা দিয়েছি তা হতে গোপনে ও প্রকাশ্যে ব্যয় করতে সেদিন আসার পূর্বে যেদিন ক্রয়-বিক্রয় ও বন্ধুত্ব থাকবে না।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ مِنَ

৩২. তিনিই আল্লাহ যিনি আকশমন্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি

السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ﴿٣٢﴾

করেছেন, যিনি আকাশ হতে পানি বর্ষণ করে তার দ্বারা তোমাদের জীবিকার জন্যে ফল-মূল উৎপাদন করেন, যিনি নৌযানকে তোমাদের অধীনে করে দিয়েছেন যাতে তাঁর হুকুমে ওটা সমুদ্রে বিচরণ করে এবং যিনি তোমাদের কল্যাণে নিয়োজিত করেছেন নদীসমূহকে।

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ﴿٣٣﴾

৩৩. তিনি তোমাদের কল্যাণে নিয়োজিত করেছেন সূর্য ও চন্দ্রকে যারা অবিরাম একই নিয়মের অনুবর্তী এবং তোমাদের কল্যাণে নিয়োজিত করেছেন রাত্রি ও দিবসকে।

وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ؕ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ﴿٣٤﴾

৩৪. আর তিনি তোমাদেরকে দিয়েছেন তোমরা তাঁর নিকট যা কিছু চেয়েছো তা হতে; তোমরা আল্লাহর নেয়ামত গণনা করলে ওর সংখ্যা নির্ণয় করতে পারবে না; মানুষ অবশ্যই অতি মাত্রায় যালিম, অকৃতজ্ঞ।

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ﴿٣٥﴾

৩৫. আর যখন (স্মরণ কর) ইবরাহীম (عليه السلام) বলেছিলেনঃ হে আমার প্রতিপালক! এই শহরকে (মক্কাকে) নিরাপদ করুন এবং আমাকে ও আমার পুত্রগণকে প্রতিমা পূজা হতে দূরে রাখুন।

رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٦﴾

৩৬. হে আমার প্রতিপালক! এসব প্রতিমা বহু মানুষকে বিভ্রান্ত করেছে; সুতরাং যে আমার অনুসরণ করবে সে আমার দলভুক্ত; কিন্তু কেউ আমার অবাধ্য হলে আপনি তো ক্ষমাশীল পরম দয়ালু।

رَبَّنَآ إِنِّيٓ أَسۡكَنتُ مِن ذُرِّيَّتِي بِوَادٍ غَيۡرِ ذِي زَرۡعٍ عِندَ بَيۡتِكَ ٱلۡمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيمُواْ ٱلصَّلَوٰةَ فَٱجۡعَلۡ أَفۡـِٔدَةٗ مِّنَ ٱلنَّاسِ تَهۡوِيٓ إِلَيۡهِمۡ وَٱرۡزُقۡهُم مِّنَ ٱلثَّمَرَٰتِ لَعَلَّهُمۡ يَشۡكُرُونَ ٣٧

৩৭. হে আমাদের প্রতিপালক! আমি আমার বংশধরদের কতককে বসবাস করালাম অনুর্বর উপত্যকায় আপনার পবিত্র গৃহের নিকট। হে আমাদের প্রতিপালক! এই জন্যে যে, তারা যেন নামায কায়েম করে; সুতরাং আপনি কিছু লোকের অন্তর ওদের প্রতি অনুরাগী করে দিন এবং ফল-ফলাদি দ্বারা তাদের রুযীর ব্যবস্থা করুন; যাতে তারা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে।[১]

১। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) বলেছেন, নারীজাতি সর্বপ্রথম ইসমাঈল (আলাইহিস্ সালাম)-এর মাতা (হাজেরা) থেকেই কোমরবন্ধ বানানো শিখেছে। হাজেরা সারা থেকে আপন নির্দেশনাবলী গোপন করার উদ্দেশ্যেই কোমরবন্ধ লাগাতেন। অতপর (উভয়ের মনোমালিন্য চরমে পৌঁছলে আল্লাহ্‌র আদেশে) ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) হাজেরা ও তাঁর শিশুপুত্র ইসমাঈলকে সাথে নিয়ে (নির্বাসন দানের জন্য) বের হলেন। পথে হাজেরা শিশুকে দুধ পান করাতেন। শেষ পর্যন্ত ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) তাদের উভয়কে নিয়ে যেখানে খানা-এ-কাবা অবস্থিত সেখানে এসে উপস্থিত হলেন এবং মসজিদের উঁচু অংশে যমযমের উপরিস্থ এক বিরাট বৃক্ষতলে তাদেরকে রাখলেন। তখন মক্কায় না ছিল কোন জনমানব, না ছিল পানির কোনরূপ ব্যবস্থা। অতপর সেখানেই তাদেরকে রেখে গেলেন এবং একটি থলের মধ্যে কিছু খেজুর আর একটি মশকে স্বল্প পরিমাণ পানি দিয়ে গেলেন। তারপর ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) (নিজ গৃহ অভিমুখে) ফিরে চললেন। ইসমাঈলের মাতা (হাজেরা) তাঁর পিছু পিছু ছুটে আসলেন এবং চীৎকার করে বলতে লাগলেন, হে ইবরাহীম! কোথায় চলে যাচ্ছ? আর আমাদেরকে রেখে যাচ্ছ এমন এক ময়দানে, যেখানে না আছে কোন সাহায্যকারী, না আছে (পানাহারের) কোন বস্তু। তিনি বার বার একথা বলতে লাগলেন; কিন্তু ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) সেদিকে ফিরেও তাকালেন না। তখন হাজেরা তাঁকে জিজ্ঞেস করলেন, (এই নির্বাসন)-এর আদেশ কি আপনাকে আল্লাহ্ দিয়েছেন? তিনি জবাব দিলেন, হ্যাঁ। (জবাব শুনে) হাজেরা বললেন, তাহলে আল্লাহ্ আমাদের ধ্বংস ও বরবাদ করবেন না। তারপর তিনি ফিরে আসলেন। ইবরাহীমও (পেছনে না চেয়ে) সামনে চললেন। শেষ পর্যন্ত যখন তিনি গিরিপথের বাঁকে এসে পৌঁছলেন, যেখানে স্ত্রী-পুত্র আর তাঁকে দেখতে পাচ্ছিল না, তখন তিনি কাবা ঘরের দিকে মুখ করে দাঁড়ালেন এবং দু'হাত তুলে এই দু'আ করলেনঃ "হে আমাদের প্রতিপালক, তোমার পবিত্র ঘরের নিকটে এমন এক ময়দানে আমার সন্তান ও পরিজনের বসতি স্থাপন করে যাচ্ছি, যা কৃষির অনুপযোগী (এবং জনশূন্য মরুভূমি)। হে প্রভু! উদ্দেশ্য এই, তারা সালাত কায়েম করবে। অতএব তুমি লোকদের মনকে এদিকে আকৃষ্ট করে দাও এবং (হে আল্লাহ) প্রচুর ফলফলাদি দিয়ে এদের রিযিক-এর ব্যবস্থা করে দাও। যাতে করে তারা (তোমার নিয়ামতের) শুকরিয়া আদায় করতে পারে।" (সূরাঃ ইব্‌রাহীম-৩৭ আয়াত)

[অতপর ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) চলে গেলেন] তখন ইসমাঈলের মাতা ইসমাঈলকে (নিজের বুকের) দুধ খাওয়াতেন আর নিজে ঐ মশক থেকে পানি পান করতেন। পরিশেষে মশকে যা পানি ছিল তা ফুরিয়ে গেল। তখন তিনি নিজেও তৃষ্ণার্ত হলেন এবং (এ কারণে বুকের দুধ শুকিয়ে যাওয়ায়) তাঁর শিশু পুত্রটিও পিপাসায় কাতর হয়ে পড়ল। তিনি শিশুর প্রতি দেখতে লাগলেন, (পিপাসায়) শিশুর বুক ধড়ফড় করছে কিংবা বলেছেন, সে জমিনে ছটফট করছে। শিশু পুত্রের (এই করুণ অবস্থার) দিকে তাকানো তাঁর পক্ষে

رَبَّنَآ إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا نُعْلِنُ ۗ وَمَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِن شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ﴿٣٨﴾

৩৮. হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি তো জানেন যা আমরা গোপন করি ও প্রকাশ করি, আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর কোন কিছুই আল্লাহর নিকট গোপন থাকে না।

অসহনীয় হয়ে উঠল। তিনি সরে পড়লেন এবং তাঁর অবস্থানের সংলগ্ন পর্বত 'সাফা'-কেই একমাত্র নিকটতম পর্বত হিসেবে পেলেন অতঃপর তিনি এর উপর উঠে দাঁড়ালেন, তারপর ময়দানের দিকে মুখ করলেন, এদিক সেদিক তাকিয়ে দেখলেন কাউকে দেখা যায় কি না। কিন্তু না কাউকে তিনি দেখলেন না। তখন দ্রুত সাফা পর্বত থেকে নেমে পড়লেন। যখন তিনি নিচু ময়দানে পৌছলেন তখন আপন কামিজের এক দিক তুলে একজন শ্রান্ত ক্লান্ত ব্যক্তির ন্যায় দৌড়ে চললেন। শেষে ময়দান অতিক্রম করলেন, মারওয়া পাহাড়ের নিকট এসে গেলেন এবং তার উপর উঠে দাঁড়ালেন। অতঃপর চারদিকে নজর করলেন, কাউকে দেখতে পান কি না। কিন্তু কাউকে দেখলেন না। (মানুষের খোঁজে) তিনি (পাহাড়দ্বয়ের মধ্যে) অনুরূপভাবে সাতবার (দৌড়াদৌড়ি) করলেন।

ইবনে আব্বাস বর্ণনা করেন। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, এজন্যেই (হজ্জের সময়) মানুষ এই পাহাড়দ্বয়ের মধ্যে (সাতবার) সায়ী বা দৌড়াদৌড়ি করে। (এবং এটা হজ্জের একটি অঙ্গ।)

অতপর যখন তিনি (শেষবার) মারওয়া পাহাড়ের উপর উঠলেন, একটি আওয়াজ শুনলেন। তখন নিজেকেই নিজে বললেন, একটু অপেক্ষা কর (মনোযোগ দিয়ে শোন)। তিনি (একাগ্রতার সাথে ঐ আওয়াজের দিকে) কান দিলেন। আবারও শব্দ শুনলেন। তখন বললেন, তোমার আওয়াজ তো শুনছি। যদি তোমার কাছে সাহায্যকারী কেউ থাকে তবে আমায় সাহায্য কর। অকস্মাৎ তিনি, যমযম যেখানে অবস্থিত সেখানে একজন ফেরেশ্‌তাকে দেখতে পেলেন। সেই ফেরেশ্‌তা আপন পায়ের গোড়ালি দ্বারা আঘাত করলেন। কিংবা তিনি বলেছেন-আপন ডানা দ্বারা আঘাত হানলেন। ফলে (আঘাতের স্থান থেকে) পানি উপছে উঠতে লাগল। হাজেরা এর চার পাশে বাঁধ দিয়ে তাকে হাউযের আকার দান করলেন এবং অঞ্জলি ভরে তাঁর মশকটিতে পানি ভরতে লাগলেন। হাজেরার অঞ্জলি ভরার পরে পানি উছলে উঠতে লাগল।

ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) বর্ণনা করেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, আল্লাহ্ ইসমাঈলের মাতাকে রহম করুন-যদি তিনি যমযমকে (বাঁধ না দিয়ে ঐভাবে) ছেড়ে দিতেন, কিংবা তিনি বলেছেন, যদি তিনি অঞ্জলি ভরে ভরে পানি (মশকে) না ভরতেন, তাহলে যমযম (কুপ না হয়ে) হতো একটি প্রবাহমান ঝরণা।

বর্ণনাকারী বলেন, অতঃপর হাজেরা পানি পান করলেন এবং শিশুপুত্রকেও দুধ পান করালেন। তখন ফেরেশ্‌তা তাঁকে বললেন, ধ্বংসের কোন আশঙ্কা আপনি করবেন না। কেননা, এখানেই আল্লাহ্‌র ঘর রয়েছে। এই শিশু তার পিতার সাথে মিলে এটি পুনঃনির্মাণ করবে এবং আল্লাহ্ তাঁর পরিজনকে কখনও ধ্বংস করেন না। ঐ সময় বায়তুল্লাহ্ (আল্লাহ্‌র ঘরের পরিত্যক্ত স্থানটি) জমিন থেকে টিলার ন্যায় উচুঁ ছিল। বন্যার পানি আসতো এবং ডান বাম থেকে ভেঙ্গে নিয়ে যেতো।

হাজেরা এভাবেই দিন যাপন করছিলেন। শেষ পর্যন্ত (ইয়ামন দেশীয়) 'জুরহুম' গোত্রের একদল লোক তাদের পাশ দিয়ে অতিক্রম করে গেল। কিংবা তিনি বলেছেন, 'জুরহুম' গোত্রের কিছু লোক 'কাদা'-এর পথে (এদিকে) আসছিল। তারা মক্কার নিচুভূমিতে অবতরণ করল এবং দেখতে পেল কতগুলো পাখি চক্রাকারে উড়ছে। তখন তারা বলল, নিশ্চয় এ পাখিগুলো পানির ওপরই ঘুরছে। অথচ আমরা এ ময়দানে বহুকাল কাটিয়েছি। কিন্তু কোন পানি এখানে ছিল না। অতঃপর তারা একজন বা দু'জন লোক (সেখানে) পাঠাল। তারা গিয়েই পানি দেখতে পেল। ফিরে এসে সবাইকে পানির খবর দিল। (খবর শুনে) সবাই

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ وَهَبَ لِیْ عَلَی الْكِبَرِ اِسْمٰعِیْلَ وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبِّیْ لَسَمِیْعُ الدُّعَآءِ ﴿۳۹﴾

৩৯. সমস্ত প্রশংসা আল্লাহরই প্রাপ্য, যিনি আমাকে আমার বার্ধক্যে ইসমাঈল (عليه السلام) ও ইসহাককে (عليه السلام) দান করেছেন; আমার প্রতিপালক অবশ্যই দু'আ শুনে থাকেন।

সেদিকে অগ্রসর হল। বর্ণনাকারী বলেছেন, ইসমাঈলের মাতা পানির কাছে বসা ছিলেন। তারা তাঁকে জিজ্ঞেস করল, আমরা আপনার নিকটবর্তী স্থানে বসবাস করতে চাই ; আপনি আমাদেরকে অনুমতি দিবেন কি? তিনি জবাব দিলেন হ্যাঁ, তবে এ পানির ওপর তোমাদের কোন অধিকার থাকবে না। তারা হ্যাঁ বলে সম্মতি জানাল। ইবনে আব্বাস বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) ইরশাদ করেছেনঃ এ ঘটনা ইসমাঈলের মাতার জন্য এক সুবর্ণ সুযোগ এনে দিল এবং তিনিও মানুষের সাহচর্য কামনা করেছেন। অতঃপর আগন্তুক দলটি সেখানে বসতি স্থাপন করল এবং পরিবার-পরিজনের কাছেও খবর পাঠাল। তারাও এসে এদের সাথে বসবাস করতে লাগল। শেষ পর্যন্ত সেখানে তাদের কয়েকটি খান্দান জন্ম নিল। ইসমাঈলও (আস্তে আস্তে) বড় হলেন। তাদের থেকে (তাদের ভাষা) আরবী শিখলেন। জওয়ান হলে তিনি তাদের অধিক আগ্রহের বস্তু ও প্রিয়পাত্র হয়ে উঠলেন। যখন তিনি যৌবনপ্রাপ্ত হলেন, তখন তারা তাদেরই এক মেয়েকে তার সঙ্গে বিয়ে দিল। বিয়ের পর ইসমাঈলের মাতা (হাজেরা) ইন্তিকাল করলেন।

ইসমাঈলের বিয়ের পর ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) তাঁর পরিত্যক্ত পরিজনকে দেখার জন্য এখানে আসলেন; কিন্তু (এসে) ইসমাঈলকে পেলেন না। পরে তাঁর স্ত্রীর নিকট তাঁর সম্বন্ধে জিজ্ঞেস করলেন। স্ত্রী বলল, তিনি আমাদের রিযিকের সন্ধানে বেরিয়ে গেছেন। পুনরায় তিনি পুত্রবধুকে তাদের জীবনযাত্রা ও অবস্থা সম্বন্ধে প্রশ্ন করলেন। বধু বলল, আমরা অতিশয় দূরাবস্থা, টানাটানি এবং ভীষণ কষ্টে আছি। সে ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম)-এর নিকট (তাদের দুর্দশার) অভিযোগ করল। তিনি (বধুকে) বললেন, তোমার স্বামী (বাড়ি) আসলে তাকে আমার সালাম জানিয়ে বলবে, সে যেন তার ঘরের চৌকাঠ বদলিয়ে নেয়। (এ বলে তিনি চলে গেলেন।)

ইসমাঈল যখন (বাড়ি) আসলেন, তখন তিনি [ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম)-এর আগমন সম্পর্কে] একটা কিছু আভাস পেলেন। (স্ত্রীকে) জিজ্ঞেস করলেন, তোমাদের কাছে কেউ কি এসেছিলেন? স্ত্রী বলল, হ্যাঁ, এমন এমন আকৃতির একজন বৃদ্ধ এসেছিলেন। আপনার সম্পর্কে আমাকে জিজ্ঞেস করেছিলেন? আমি তাকে (আপনার) খবর জানালাম। তিনি পুনরায় আমাকে আমাদের জীবনযাত্রা সম্বন্ধে প্রশ্ন করলেন। আমি তাঁকে জানালাম যে, আমরা অত্যন্ত কষ্ট ও অভাবে আছি। ইসমাঈল জিজ্ঞেস করলেন, তিনি কি তোমাকে আর কোন অসিয়ত করে গেছেন? স্ত্রী জবাব দিল, হ্যাঁ, তিনি আমাকে নির্দেশ দিয়ে গেছেন, যেন আপনাকে সালাম পৌঁছাই এবং তিনি বলে গেছেন, আপনি যেন আপনার ঘরের দরজার চৌকাঠ বদলিয়ে ফেলেন। ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম) বললেন, তিনি ছিলেন আমার পিতা এবং আমাকে নির্দেশ দিয়ে গেছেন, যেন তোমাকে আমি পৃথক করে দেই। সুতরাং তুমি তোমার (পিত্রালয়ে) আপন লোকদের কাছে চলে যাও। (এ বলে) ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম) তাকে তালাক দিয়ে দিলেন এবং জুরহুম গোত্রের অন্য একটি মেয়েকে বিয়ে করলেন। অতপর আল্লাহ্ যদ্দিন চাইলেন, ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) তদ্দিন এদের থেকে দূরে রইলেন। পরে আবার দেখতে আসলেন। কিন্তু ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম)-কে পেলেন না। তিনি পুত্রবধুর ঘরে ঢুকলেন এবং তাকে ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম) সম্বন্ধে জিজ্ঞেস করলেন। স্ত্রী জানালেন, তিনি আমাদের খাদ্যের সন্ধানে বেরিয়ে গেছেন। ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) জিজ্ঞেস করলেন, তোমরা কেমন আছ? তিনি তার কাছে তাদের জীবনযাত্রা ও সাংসারিক অবস্থা সম্পর্কেও জিজ্ঞেস করলেন। পুত্রবধু জবাব দিলেন, আমরা ভাল অবস্থা ও সচ্ছলতার মধ্যেই আছি। (এ বলে) তিনি আল্লাহর প্রশংসাও

করলেন। ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) তাকে জিজ্ঞেস করলেন, তোমাদের প্রধান খাদ্য কি? বধু জবাবে বললেন, গোশ্‌ত। তিনি আবার জানতে চাইলেন, তোমাদের পানীয় কি? তিনি জবাব দিলেন, পানি। ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) দু'আ করলেনঃ "আয় আল্লাহ্! তাদের গোশত ও পানিতে বরকত দান কর।"

নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, ওই সময় তাদের (সেখানে) খাদ্যশস্য উৎপন্ন হতো না। যদি হতো, ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) সে ব্যাপারেও তাঁদের জন্য দু'আ করতেন।

বর্ণনাকারী বলেছেন, কোন লোকই মক্কা ছেড়ে অন্য কোথাও শুধু গোশত এবং পানি দ্বারা জীবন অতিবাহিত করতে পারে না। কারণ, শুধু গোশত ও পানি (সব সময়) তার প্রকৃতির অনুকূল হতে পারে না।

ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) (আলাপ শেষে) পুত্রবধুকে বললেন, তোমার স্বামী যখন আসবে, তখন তাকে আমার সালাম বলবে এবং তাকে (আমার পক্ষ থেকে) হুকুম করবে, সে যেন তার দরজার চৌকাঠ বহাল রাখে।

অতঃপর ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম) যখন (বাড়ি) আসলেন, (স্ত্রীকে) জিজ্ঞেস করলেন, তোমাদের নিকট কেউ এসেছিলেন কি? স্ত্রী বললেন, হ্যাঁ, একজন সুন্দর আকৃতির বৃদ্ধ এসেছিলেন। স্ত্রী তাঁর প্রশংসা করলেন। তারপর বললেন, তিনি আমাকে আপনার সম্পর্কে জিজ্ঞেস করেছেন, আমি তাঁকে (আপনার) খবর দিয়েছি। তিনি আমাকে আমাদের জীবন-যাপন সম্পর্কেও জিজ্ঞেস করেছেন, আমি তাঁকে জানিয়ে দিয়েছি যে আমরা ভাল অবস্থায় আছি। ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম) জানতে চাইলেন, তিনি কি তোমাকে আর কোন ব্যাপারে আদেশ দিয়ে গেছেন? স্ত্রী বললেন, হ্যাঁ, আপনাকে সালাম বলেছেন আর নির্দেশ দিয়ে গেছেন, যেন আপনি আপনার দরজার চৌকাঠ বহাল রাখেন। ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম) বললেন, ইনিই আমার আব্বাজান। আর তুমি হলে চৌকাঠ। তোমাকে (স্ত্রী হিসেবে) বহাল রাখার নির্দেশ তিনি আমাকে দিয়েছেন।

পুনরায় ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) আল্লাহ্‌র ইচ্ছায় কিছুদিন এদের থেকে দূরে রইলেন। এরপর আবার তাদের কাছে আসলেন। (এসে দেখলেন) ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম) যমযমের নিকটস্থ একটি বৃক্ষতলে বসে নিজের তীর মেরামত করছেন। পিতাকে যখন (আসতে) দেখলেন, দাঁড়িয়ে তার দিকে এগিয়ে গেলেন। অতঃপর একজন পিতা-পুত্রের সঙ্গে এবং পুত্র-পিতার সঙ্গে (সাক্ষাত হলে) যা করে তারা তা-ই করলেন। তারপর ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) বললেন, হে ইসমাঈল! আল্লাহ আমাকে একটি কাজের হুকুম করেছেন। ইসমাইল (আলাইহিস্‌সালাম) জবাব দিলেন, আপনার পরওয়ারদিগার আপনাকে যা আদেশ করেছেন, তা করে ফেলুন। ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) বললেন, তুমি আমাকে সাহায্য করবে কি? ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম) বললেন, হ্যাঁ, আমি আপনার সাহায্য নিশ্চয়ই করব। ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) বললেন, আল্লাহ্ আমাকে এখানে এর চারপাশ ঘেরাও করে একটি ঘর বানাবার নির্দেশ দিয়েছেন। (এ বলে) তিনি উঁচু টিলাটির দিকে ইশারা করলেন। (এবং স্থানটি দেখালেন)। তখনি তাঁরা উভয়ে কাবা ঘরের দেয়াল উঠাতে লেগে গেলেন। ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম) পাথর যোগান দিতেন এবং ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম) গাঁথুনী করতেন। যখন দেয়াল উঁচু হয়ে গেল, তখন ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম) মাকামে ইবরাহীম নামক মশহুর পাথরটি আনলেন এবং ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম)-এর জন্য তা (যথাস্থানে) রাখলেন। ইবরাহীম (আলাইহিস্‌সালাম)-এর ওপর দাঁড়িয়ে ইমারত নির্মাণ করতে লাগলেন এবং ইসমাঈল (আলাইহিস্‌সালাম) তাঁকে পাথর যোগান দিতে লাগলেন। আর উভয়ে এ দু'আ করতে থাকলেনঃ "হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদের থেকে (এ কাজটুকু) কবূল করুন! নিশ্চয়ই আপনি (সবকিছু) শুনেন ও জানেন।"

আবার তাঁরা উভয়ে ইমারত নির্মাণ করতে লাগলেন। তাঁরা কাবা ঘরের চারদিকে ঘুরছিলেন এবং উভয়ে এ দু'আ করছিলেনঃ "হে আমাদের প্রভু! আমাদের এ শ্রমটুকু কবূল করে নিন। নিশ্চয়ই আপনি সব শুনেন ও জানেন। (সূরাঃ বাকারা, ১২৭ আয়াত) (বুখারী, হাদীস নং ৩৩৬৪)

رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿٤٠﴾

৪০. হে আমার প্রতিপালক! আমাকে নামায কায়েমকারী করুন এবং আমার বংশধরদের মধ্য হতেও; হে আমাদের প্রতিপালক! আমার দু'আ কবূল কর।

رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾

৪১. হে আমার প্রতিপালক! যেদিন হিসাব হবে সেদিন আমাকে, আমার পিতা-মাতাকে এবং মু'মিনদেরকে ক্ষমা করুন।

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۙ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ﴿٤٢﴾

৪২. তুমি কখনো মনে করো না যে, যালিমরা যা করে সে বিষয়ে আল্লাহ গাফিল, তবে তিনি সেদিন পর্যন্ত তাদেরকে অবকাশ দেন যেদিন তাদের চক্ষু হবে স্থির (বিস্ফোরিত)।

مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ﴿٤٣﴾

৪৩. ভীত বিহ্বল চিত্তে আকাশের দিকে চেয়ে তারা ছুটাছুটি করবে নিজেদের প্রতি তাদের দৃষ্টি ফিরবে না এবং তাদের অন্তর হবে (আশা) শূণ্য।

وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ؕ اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ﴿٤٤﴾

৪৪. যেদিন তাদের শাস্তি আসবে সেদিন সম্পর্কে তুমি মানুষকে সতর্ক কর, তখন যালিমরা বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে কিছু কালের জন্যে অবকাশ দিন, আমরা আপনার আহ্বানে সাড়া দিবো এবং রাসূলদের অনুসরণ করবো; তোমরা কি পূর্বে শপথ করে বলতে না, তোমাদের পতন নেই?

وَّسَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا

৪৫. অথচ তোমরা বাস করতে তাদের বাসভূমিতে যারা নিজেদের প্রতি যুলুম করেছিল এবং তাদের প্রতি আমি কি করেছিলাম তাও

لَكُمُ الْاَمْثَالَ ﴿٤٥﴾

তোমাদের নিকট সুবিদিত ছিল এবং তোমাদের নিকট আমি তাদের দৃষ্টান্ত ও উপস্থিত করেছিলাম।

وَقَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ط
وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿٤٦﴾

৪৬. তারা ভীষণ চক্রান্ত করেছিল, কিন্তু আল্লাহর নিকট তাদের চক্রান্ত রক্ষিত হয়েছে। তাদের চক্রান্ত এমন ছিল না যাতে পর্বত টলে যায়।

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ط
اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٤٧﴾

৪৭. তুমি কখনো মনে করো না যে, আল্লাহ তাঁর রাসূলদের প্রতি প্রদত্ত প্রতিশ্রুতি ভঙ্গ করেন; আল্লাহ পরাক্রমশালী, প্রতিশোধ গ্রহণকারী।

يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ
وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿٤٨﴾

৪৮. যেদিন এই পৃথিবী পরিবর্তিত হয়ে অন্য পৃথিবী হবে এবং আকাশমন্ডলী এবং মানুষ উপস্থিত হবে আল্লাহর সামনে, যিনি এক পরাক্রমশালী।

وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِي
الْاَصْفَادِ ﴿٤٩﴾

৪৯. সেদিন তুমি অপরাধীদেরকে দেখবে শৃঙ্খলিত অবস্থায়।

سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ
النَّارُ ﴿٥٠﴾

৫০. তাদের জামা হবে আলকাতরার এবং অগ্নি আচ্ছন্ন করবে তাদের মুখমন্ডল।

لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ط
اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٥١﴾

৫১. এটা এই জন্যে যে, আল্লাহ প্রত্যেকের কৃতকর্মের প্রতিফল দিবেন, আল্লাহ হিসাব গ্রহণে তৎপর।

هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا
اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا
الْاَلْبَابِ ﴿٥٢﴾

৫২. এটা মানুষের জন্যে এক বার্তা যাতে এটা দ্বারা তারা সতর্ক হয় এবং জানতে পারে যে, তিনি একমাত্র উপাস্য এবং যাতে বোধশক্তি সম্পন্নরা উপদেশ গ্রহণ করে।

সূরাঃ হিজর, মাক্কী

(আয়াতঃ ৯৯, রুকূ'ঃ ৬)

দয়াময় পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُوْرَةُ الْحِجْرِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٩٩ رُكُوْعَاتُهَا ٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ قف تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَ قُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ①

১. আলিফ-লাম-রা এগুলি আয়াত মহাগ্রন্থের, সুস্পষ্ট কুরআনের।

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ﴿٢﴾

২. কখনো কখনো কাফিররা আকাঙ্খা করবে যে, তারা যদি মুসলিম হতো!

ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا وَيُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٣﴾

৩. তাদেরকে ছেড়ে দাও, তারা খেতে থাকুক, ভোগ করতে থাকুক এবং আশা আকাঙ্খা ওদেরকে মোহাচ্ছন্ন রাখুক, (পরিণামে) তারা অতি শীঘ্রই জানবে।

وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿٤﴾

৪. আমি কোন জনপদকে তার নির্দিষ্ট কাল পূর্ণ না হলে ধ্বংস করি নাই।

مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿٥﴾

৫. কোন জাতি তার নির্দিষ্ট কালকে অগ্রগামী করতে পারে না এবং বিলম্বিতও করতে পারে না।

وَقَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الَّذِىْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٦﴾

৬. তারা বলেঃ ওহে, যার প্রতি কুরআন অবতীর্ণ হয়েছে! তুমি তো নিশ্চয় উন্মাদ।

لَوْ مَا تَاْتِيْنَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٧﴾

৭. তুমি সত্যবাদী হলে আমাদের নিকট ফেরেশ্‌তাদেরকে হাযির করছো না কেন?

مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوْٓا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ ﴿٨﴾

৮. আমি ফেরেশ্‌তাদেরকে হকের সাথেই প্রেরণ করি; ফেরেশতারা হাযির হলে তারা অবকাশ পাবে না।

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٩﴾

৯. আমিই কুরআন অবতীর্ণ করেছি এবং আমিই এর সংরক্ষণকারী।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِىْ شِيَعِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٠﴾

১০. তোমার পূর্বে আমি পূর্বের অনেক সম্প্রদায়ের নিকট রাসূল পাঠিয়েছিলাম।

وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١١﴾

১১. তাদের নিকট আসে নাই এমন কোন রাসূল যাকে তারা ঠাট্টা-বিদ্রূপ করতো না।

كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ فِىْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٢﴾

১২. এভাবে আমি অপরাধীদের অন্তরে তা সঞ্চার করি।

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾

১৩. তারা কুরআনে বিশ্বাস করবে না এবং অতীতে পূর্ববর্তীগণেরও এই আচরণ ছিল।

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ﴿١٤﴾

১৪. যদি তাদের জন্যে আমি আকাশের দুয়ার খুলে দিই এবং তারা সারাদিন তাতে আরোহণ করতে থাকে।

لَقَالُوْٓا اِنَّمَا سُكِّرَتْ اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ﴿١٥﴾

১৫. তবুও তারা বলবেঃ আমাদের দৃষ্টিভ্রম ঘটানো হয়েছে; না, বরং আমরা এক যাদুগ্রস্ত সম্প্রদায়।

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِى السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿١٦﴾

১৬. আকাশে আমি গ্রহ-নক্ষত্র সৃষ্টি করেছি এবং ওকে করেছি সুশোভিত দর্শকদের জন্যে।

وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ﴿١٧﴾

১৭. প্রত্যেক অভিশপ্ত শয়তান হতে আমি ওকে রক্ষা করে থাকি।

اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٨﴾

১৮. আর কেউ চুরি করে সংবাদ শুনতে চাইলে ওর পশ্চাদ্ধাবন করে প্রদীপ্ত শিখা।

وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِىَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ شَىْءٍ مَّوْزُوْنٍ ﴿١٩﴾

১৯. পৃথিবীকে আমি বিস্তৃত করেছি এবং ওতে পর্বতমালা স্থাপন করেছি; আমি ওতে প্রত্যেক বস্তু উদগত করেছি সুপরিমিতভাবে।

وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَّسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ﴿٢٠﴾

২০. আর আমি ওতে জীবিকার ব্যবস্থা করেছি তোমাদের জন্যে আর তোমরা যাদের জীবিকাদাতা নও তাদের জন্যেও।

وَاِنْ مِّنْ شَىْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ وَمَا نُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٢١﴾

২১. আমারই কাছে আছে প্রত্যেক বস্তুর ভান্ডার এবং আমি তা পরিজ্ঞাত পরিমাণেই সরবরাহ করে থাকি।

وَأَرْسَلْنَا الرِّيَاحَ لَوَاقِحَ فَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَاكُمُوهُ وَمَا أَنتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ﴿٢٢﴾

২২. আমি বৃষ্টি গর্ভ বায়ু প্রেরণ করি, অতঃপর আকাশ হতে বারি বর্ষণ করি এবং তা তোমাদেরকে পান করতে দিই; ওর ভান্ডার তোমাদের কাছে নেই।

وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ﴿٢٣﴾

২৩. আমিই জীবনদান করি ও মৃত্যু ঘটাই এবং আমিই চূড়ান্ত মালিকানার অধিকারী।

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ﴿٢٤﴾

২৪. তোমাদের পূর্বে যারা গত হয়েছে আমি তাদেরকে জানি এবং পরে যারা আসবে তাদেরকেও জানি।

وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ۚ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥﴾

২৫. তোমার প্রতিপালকই তাদেরকে সমবেত করবেন; নিশ্চয় তিনি প্রজ্ঞাময়, সর্বজ্ঞ।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٢٦﴾

২৬. আমি তো মানুষকে সৃষ্টি করেছি ছাঁচে ঢালা শুষ্ক ঠন্‌ঠনে মৃত্তিকা হতে।

وَالْجَانَّ خَلَقْنَاهُ مِن قَبْلُ مِن نَّارِ السَّمُومِ ﴿٢٧﴾

২৭. এর পূর্বে সৃষ্টি করেছি জ্বিনকে প্রখর শিখাযুক্ত অগ্নি হতে।

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّن صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٢٨﴾

২৮. (স্মরণ কর;) যখন তোমার প্রতিপালক ফেরেশতাদেরকে বললেনঃ 'আমি ছাঁচে ঢালা শুষ্ক ঠন্‌ঠনে মৃত্তিকা হতে মানুষ সৃষ্টি করছি।'

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ﴿٢٩﴾

২৯. যখন আমি তাকে সুঠাম করবো এবং তাতে আমার রূহ সঞ্চার করবো তখন তোমরা তার প্রতি সিজদাবনত হয়ো।

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٣٠﴾

৩০. তখন ফেরেশতাগণ সবাই একত্রে সিজদা করলেন।

إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ أَبَىٰ أَن يَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ﴿٣١﴾

৩১. কিন্তু ইবলিস ব্যতীত। সে সিজ্‌দাকারীদের অন্তর্ভুক্ত হতে অস্বীকার করলো।

قَالَ يٰۤاِبۡلِيۡسُ مَا لَكَ اَلَّا تَكُوۡنَ مَعَ السّٰجِدِيۡنَ ﴿۳۲﴾

৩২. তিনি (আল্লাহ) বললেনঃ হে ইবলিস! তোমার কি হলো যে, তুমি সিজ্‌দাকারীদের অন্তর্ভুক্ত হলে না?

قَالَ لَمۡ اَكُنۡ لِّاَسۡجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقۡتَهٗ مِنۡ صَلۡصَالٍ مِّنۡ حَمَاٍ مَّسۡنُوۡنٍ ﴿۳۳﴾

৩৩. সে (উত্তরে) বললোঃ ছাঁচে ঢালা শুষ্ক ঠন্‌ঠনে মৃত্তিকা হতে যে মানুষ আপনি সৃষ্টি করেছেন, অমি তাকে সিজ্‌দা করবার নই।

قَالَ فَاخۡرُجۡ مِنۡهَا فَاِنَّكَ رَجِيۡمٌ ﴿۳۴﴾

৩৪. তিনি (আল্লাহ) বললেনঃ 'তবে তুমি এখান হতে বের হয়ে যাও, কারণ তুমি অভিশপ্ত।

وَّاِنَّ عَلَيۡكَ اللَّعۡنَةَ اِلٰى يَوۡمِ الدِّيۡنِ ﴿۳۵﴾

৩৫. কর্মফল দিবস পর্যন্ত তোমার প্রতি রইলো লা'নত।'

قَالَ رَبِّ فَاَنۡظِرۡنِىۡۤ اِلٰى يَوۡمِ يُبۡعَثُوۡنَ ﴿۳۶﴾

৩৬. সে (ইবলীস) বললোঃ হে আমার প্রতিপালক! পুনরুত্থান দিবস পর্যন্ত আমাকে অবকাশ দিন।

قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الۡمُنۡظَرِيۡنَ ﴿۳۷﴾

৩৭. তিনি (আল্লাহ) বললেনঃ যাদেরকে অবকাশ দেয়া হয়েছে তুমি তাদের অন্তর্ভুক্ত হলে।

اِلٰى يَوۡمِ الۡوَقۡتِ الۡمَعۡلُوۡمِ ﴿۳۸﴾

৩৮. অবধারিত সময় উপস্থিত হওয়ার দিন পর্যন্ত।

قَالَ رَبِّ بِمَاۤ اَغۡوَيۡتَنِىۡ لَاُزَيِّنَنَّ لَهُمۡ فِى الۡاَرۡضِ وَلَاُغۡوِيَنَّهُمۡ اَجۡمَعِيۡنَ ﴿۳۹﴾

৩৯. সে বললোঃ হে আমার প্রতিপালক! আপনি যে আমাকে বিপদগামী করলেন তজ্জন্যে আমি পৃথিবীতে মানুষের নিকট পাপ কর্মকে অবশ্যই শোভনীয় করে তুলবো এবং আমি তাদের সকলকেই বিপথগামী করেই ছাড়ব।

اِلَّا عِبَادَكَ مِنۡهُمُ الۡمُخۡلَصِيۡنَ ﴿۴۰﴾

৪০. তবে তাদের মধ্যে আপনার নির্বাচিত (নিবেদিত) বান্দাগণ নয়।

قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَىَّ مُسۡتَقِيۡمٌ ﴿۴۱﴾

৪১. তিনি বললেনঃ এটাই আমার নিকট পৌঁছার সরলপথ।

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ ﴿٤٢﴾

৪২. বিভ্রান্তদের মধ্যে যারা তোমার অনুসরণ করবে তারা ছাড়া আমার বান্দাদের উপর তোমার কোন ক্ষমতা থাকবে না।

وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٣﴾

৪৩. অবশ্যই (তোমার অনুসারীদের) তাদের সবারই নির্ধারিত স্থান হবে জাহান্নাম।

لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ ۚ لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ﴿٤٤﴾

৪৪. ওর সাতটি দরজা আছে, প্রত্যেক দরজার জন্যে তাদের মধ্য থেকে একটি অংশকে নির্দিষ্ট করা হবে।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٥﴾

৪৫. নিশ্চয় মুত্তাকীরা থাকবে প্রস্রবন (ঝর্ণা) বহুল জান্নাতে।

ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ آمِنِينَ ﴿٤٦﴾

৪৬. (তাদেরকে বলা হবেঃ) তোমরা শান্তি ও নিরাপত্তার সাথে তাতে প্রবেশ কর।

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِّنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٤٧﴾

৪৭. আমি তাদের অন্তর হতে হিংসা দূর করবো; তারা ভ্রাতৃভাবে পরস্পর মুখোমুখি আসনে অবস্থান করবে।

لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُم مِّنْهَا بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾

৪৮. সেথায় তাদেরকে বিষণ্নতা স্পর্শ করবে না এবং তারা সেথা হতে বহিস্কৃতও হবে না।

نَبِّئْ عِبَادِي أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾

৪৯. আমার বান্দাদেরকে সংবাদ দাওঃ নিশ্চয় আমি মহা ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ﴿٥٠﴾

৫০. আর আমার শাস্তি সে অতি পীড়াদায়ক শাস্তি।

وَنَبِّئْهُمْ عَن ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ﴿٥١﴾

৫১. আর তাদেরকে সংবাদ দাও, ইবরাহীমের (عليه السلام) অতিথিদের কথা।

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا ۖ قَالَ إِنَّا مِنكُمْ

৫২. যখন তারা তাঁর নিকট উপস্থিত হয়ে বললেনঃ 'সালাম', তখন তিনি

وَجِلُوْنَ ﴿٥٢﴾

বলেছিলেনঃ আমরা তোমাদের আগমনে আতংকিত।

قَالُوْا لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ﴿٥٣﴾

৫৩. তারা (ফেরেশ্‌তারা) বললোঃ ভয় করো না, আমরা তোমাকে এক জ্ঞানী পুত্রের সুসংবাদ দিচ্ছি।

قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ عَلٰٓى اَنْ مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ﴿٥٤﴾

৫৪. সে বললো! তোমরা কি আমাকে সুসংবাদ দিচ্ছ আমি বার্ধক্যগ্রস্ত হওয়া সত্ত্বেও? তোমরা কি বিষয়ে সুসংবাদ দিচ্ছ?

قَالُوْا بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ ﴿٥٥﴾

৫৫. তারা বললোঃ আমরা তোমাকে সত্য সুসংবাদ দিচ্ছি; সুতরাং তুমি হতাশ হয়ো না।

قَالَ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ اِلَّا الضَّآلُّوْنَ ﴿٥٦﴾

৫৬. তিনি বললেনঃ যারা পথভ্রষ্ট তারা ব্যতীত আর কে তার প্রতিপালকের অনুগ্রহ হতে হতাশ হয়?

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٧﴾

৫৭. তিনি বললেনঃ (ইবরাহীম (عليه السلام)) হে প্রেরিতগণ! (ফেরেশ্‌তাগণ) তোমাদের আর বিশেষ কি কাজ (অভিযান) আছে?

قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٥٨﴾

৫৮. তাঁরা বললেনঃ আমাদেরকে এক অপরাধী সম্প্রদায়ের বিরুদ্ধে প্রেরণ করা হয়েছে।

اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ ؕ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٩﴾

৫৯. তবে লূতের (عليه السلام) পরিবারবর্গের বিরুদ্ধে নয়, আমরা অবশ্যই তাদের সকলকে রক্ষা করবো।

اِلَّا امْرَاَتَهٗ قَدَّرْنَآ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٦٠﴾

৬০. কিন্তু তার স্ত্রীকে নয়; আমরা স্থির করেছি যে, সে অবশ্যই পশ্চাতে অবস্থানকারীদের অন্তর্ভুক্ত।

فَلَمَّا جَآءَ اٰلَ لُوْطِ ۨالْمُرْسَلُوْنَ ﴿٦١﴾

৬১. ফেরেশ্‌তাগণ যখন লূত পরিবারের নিকট আসলেন,

قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿٦٢﴾

৬২. তখন লূত (عليه السلام) বললেনঃ তোমরা তো অপরিচিত লোক।

قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿٦٣﴾

৬৩. তাঁরা বললেনঃ বরং তারা যে বিষয়ে সন্দিহান ছিল আমরা তোমার নিকট তাই নিয়ে এসেছি।

وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٦٤﴾

৬৪. আমরা তোমার নিকট সত্য সংবাদ নিয়ে এসেছি এবং অবশ্যই আমরা সত্যবাদী।

فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّامْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٥﴾

৬৫. সুতরাং তুমি রাত্রির কোন এক সময়ে তোমার পরিবারবর্গসহ বের হয়ে পড়ো এবং তুমি তাদের পশ্চাতনুসরণ করো এবং তোমাদের মধ্যে কেউ যেন পিছনের দিকে ফিরে না তাকায়; তোমাদেরকে যেথায় যেতে বলা হচ্ছে তোমরা সেথায় চলে যাও।

وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَآءِ مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ﴿٦٦﴾

৬৬. আমি তাকে (লূত عليه السلام) এই বিষয়ে প্রত্যাদেশ দিলাম যে, প্রত্যুষে তাদেরকে সমূলে বিনাশ করা হবে।

وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٦٧﴾

৬৭. (এদিকে) নগরবাসীরা উল্লাসিত হয়ে উপস্থিত হলো।

قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِيْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ﴿٦٨﴾

৬৮. তিনি বললেনঃ নিশ্চয় এরা আমার অতিথি; সুতরাং তোমরা আমাকে অপমাণিত করো না।

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ ﴿٦٩﴾

৬৯. তোমরা আল্লাহকে ভয় কর ও আমাকে হেয় করো না।

قَالُوْٓا اَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٠﴾

৭০. তারা বললোঃ আমরা কি দুনিয়া জোড়া লোককে আশ্রয় দিতে নিষেধ করি নাই?

قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِيْٓ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٧١﴾

৭১. লূত (عليه السلام) বললেনঃ একান্তই যদি তোমরা কিছু (বিবাহ) করতে চাও তবে আমার এই কন্যাগণ রয়েছে।

لَعَمْرُكَ إِنَّهُمْ لَفِي سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿٧٢﴾

৭২. হে নবী! তোমার জীবনের শপথ! ওরা তো মত্ততায় বিমূঢ় হয়েছে।

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ ﴿٧٣﴾

৭৩. অতঃপর সূর্যোদয়ের সময়ে এক বিকট আওয়াজ তাদেরকে পাকড়াও করলো।

فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ ﴿٧٤﴾

৭৪. সুতরাং আমি জনপদকে উল্টিয়ে উপর-নীচ করে দিলাম এবং তাদের উপর প্রস্তর-কঙ্কর নিক্ষেপ করলাম।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِينَ ﴿٧٥﴾

৭৫. অবশ্যই এতে নিদর্শন রয়েছে পর্যবেক্ষণ শক্তি সম্পন্ন ব্যক্তিদের জন্যে।

وَإِنَّهَا لَبِسَبِيلٍ مُّقِيمٍ ﴿٧٦﴾

৭৬. ওটা (ঐ জনপদের ধ্বংস স্তূপ) লোক চলাচলের পথের পাশে এখনও বিদ্যমান।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾

৭৭. অবশ্যই এতে মু'মিনদের জন্যে রয়েছে নিদর্শন।

وَإِن كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لَظَالِمِينَ ﴿٧٨﴾

৭৮. আর 'আয়কাবাসীরাও' (শুয়াইব عليه السلام এর অনুসারী) তো ছিল সীমালঙ্ঘনকারী।

فَانتَقَمْنَا مِنْهُمْ وَإِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ مُّبِينٍ ﴿٧٩﴾

৭৯. সুতরাং আমি তাদেরকে শাস্তি দিয়েছি। ওদের উভয়ই তো প্রকাশ্য পথপার্শ্বে অবস্থিত।

وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِينَ ﴿٨٠﴾

৮০. হিজরবাসীগণও রাসূলদের প্রতি মিথ্যা আরোপ করেছিল।

وَآتَيْنَاهُمْ آيَاتِنَا فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٨١﴾

৮১. আমি তাদেরকে আমার নিদর্শন দিয়েছিলাম; কিন্তু তারা তা উপেক্ষা করেছিল।

وَكَانُوا يَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا آمِنِينَ ﴿٨٢﴾

৮২. তারা পাহাড় কেটে গৃহ নির্মাণ করতো নিরাপদ বাসের জন্যে।

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِينَ ﴿٨٣﴾

৮৩. অতঃপর প্রভাতকালে এক বিকট আওয়াজ তাদেরকে পাকড়াও করলো।

فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٤﴾

৮৪. সুতরাং তারা যা অর্জন করেছিল তা তাদের কোন কাজে আসে নাই।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ ﴿٨٥﴾

৮৫. আকাশসমূহ ও পৃথিবী এবং এই দু'য়ের অন্তর্বর্তী কোন কিছুই আমি অযথা সৃষ্টি করি নাই এবং কিয়ামত অবশ্যম্ভাবী; সুতরাং তুমি পরম সৌজন্যের সাথে তাদেরকে ক্ষমা কর।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨٦﴾

৮৬. নিশ্চয় তোমার প্রতিপালকই মহা স্রষ্টা, মহাজ্ঞানী।

وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ﴿٨٧﴾

৮৭. আমিতো তোমাকে দিয়েছি সাত আয়াত (সূরা ফাতিহা) যা পুনঃপুনঃ আবৃত্ত হয় এবং দিয়েছি মহা কুরআন।

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾

৮৮. আমি তাদের বিভিন্ন শ্রেণীকে ভোগ বিলাসের যে উপকরণ দিয়েছি তার প্রতি তুমি কখনো তোমার চক্ষুদ্বয় প্রসারিত করো না; তাদের অবস্থার জন্যে তুমি চিন্তা করো না; তুমি মু'মিনদের জন্যে তোমার বাহুকে অবনমিত করো।

وَقُلْ اِنِّيْٓ اَنَا النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ﴿٨٩﴾

৮৯. আর তুমি বলঃ আমি তো এক প্রকাশ্য ভয় প্রদর্শক।

كَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ ﴿٩٠﴾

৯০. যেভাবে আমি অবতীর্ণ করে ছিলাম শপথকারীদের (ইয়াহূদী ও খ্রিস্টানদের) উপর।

الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ ﴿٩١﴾

৯১. যারা কুরআনকে বিভিন্নভাবে বিভক্ত করেছে। (অর্থাৎ এর কিছু অংশ গ্রহণ ও কিছু বর্জন করে।)

فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٢﴾

৯২. সুতরাং তোমার প্রতিপালকের শপথ! আমি তাদের সকলকে প্রশ্ন করবই,

عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

৯৩. সেই বিষয়ে যা তারা করত।

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٤﴾

৯৪. অতএব তুমি যে বিষয়ে আদিষ্ট হয়েছো, তা প্রকাশ্যে প্রচার কর এবং মুশরিকদের উপেক্ষা কর।

اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ﴿٩٥﴾

৯৫. আমিই যথেষ্ট তোমার জন্যে বিদ্রূপকারীদের বিরুদ্ধে।

الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾

৯৬. যারা আল্লাহর সাথে অপর মা'বূদ প্রতিষ্ঠা করেছে! শীঘ্রই তারা জানতে পারবে।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ ﴿٩٧﴾

৯৭. আমি তো জানি যে, তারা যা বলে তাতে তোমার অন্তর সংকুচিত হয়।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٩٨﴾

৯৮. সুতরাং তুমি তোমার প্রতিপালকের প্রশংসা দ্বারা তাঁর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা কর এবং সিজদাকারীদের অন্তর্ভুক্ত হও।[১]

وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿٩٩﴾

৯৯. আর তোমার মৃত্যু উপস্থিত হওয়া পর্যন্ত তুমি তোমার প্রতি-পালকের ইবাদত কর।[২]

১। (ক) ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সময় ফরয নামায শেষে উচ্চস্বরে আল্লাহ্‌র নাম উচ্চারণ করতে করতে লোকেরা ঘরে ফিরত। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) বর্ণনা করেছেন, যখন আমি যিকির করতে বা উচ্চস্বরে আল্লাহ্‌র নাম উচ্চারণ করতে শুনতাম, তখন বুঝতাম নামায শেষ করে লোকেরা ঘরে ফিরছে। (বুখারী, হাদীস নং ৮৪১)

(খ) ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, তাকবীরের আওয়াযে আমি বুঝতে পারতাম যে, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নামায শেষ হয়ে গিয়েছে। (বুখারী, হাদীস নং ৮৪২)

২। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, তোমাদের কেউ কষ্ট ও যাতনায় পড়ে কখনো মৃত্যু কামনা করবে না। আর যদি তাকে মৃত্যু কামনা একান্ত করতেই হয়, তবে সে যেন বলেঃ "আয় আল্লাহ্, যতদিন বেঁচে থাকাটা আমার জন্য মঙ্গলজনক হয় ততদিন আমাকে জীবিত রাখ, এবং যখন মৃত্যু আমার জন্য উত্তম হয়, তখন আমার মৃত্যু দাও।" (বুখারী, হাদীস নং ৬৩৫১)

সূরাঃ নাহল, মাক্কী

(আয়াতঃ ১২৮, রুকূ'ঃ ১৬)

দয়াময় পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةُ النَّحْلِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ١٢٨ رُكُوْعَاتُهَا ١٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. আল্লাহর আদেশ আসবেই; সুতরাং ওটার জন্য তাড়াহুড়া করো না; তিনি মহিমান্বিত এবং তারা যাকে শরীক করে তিনি তার উর্ধ্বে।

اَتٰۤى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ①

২. তিনি তাঁর বান্দাদের মধ্যে যার প্রতি ইচ্ছা নির্দেশ সম্বলিত ওহী সহ ফেরেশ্‌তা প্রেরণ করেন, এই মর্মে সতর্ক করবার জন্যে যে, আমি ছাড়া কোন সত্য মা'বূদ নেই; সুতরাং আমাকে ভয় কর।

يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اَنْ اَنْذِرُوْۤا اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ②

৩. তিনি যথাযথভাবে আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন; তারা যাকে শরীক করে তিনি তার উর্ধ্বে।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ③

৪. তিনি শুক্র হতে মানুষ সৃষ্টি করেছেন; অথচ দেখো, সে প্রকাশ্য বিতন্ডাকারী!

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ④

৫. তিনি চতুস্পদ জন্তু সৃষ্টি করেছেন; তোমাদের জন্যে ওতে শীত নিবারক উপকরণ ও বহু উপকরণ রয়েছে এবং ওটা হতে তোমরা আহার্য পেয়ে থাকো।

وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ⑤

৬. আর যখন তোমরা সন্ধ্যাকালে ওদেরকে চারণভূমি হতে গৃহে নিয়ে আসো এবং প্রভাতে যখন ওদেরকে চারণ ভূমিতে নিয়ে যাও, তখন তোমরা ওর সৌন্দর্য উপভোগ কর।

وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ⑥

وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلَىٰ بَلَدٍ لَّمْ تَكُونُوا بَالِغِيهِ إِلَّا بِشِقِّ الْأَنفُسِ ۚ إِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝٧

৭. আর ওরা তোমাদের ভারবহন করে নিয়ে যায় দূর দেশে যেথায় প্রাণান্ত ক্লেশ ব্যতীত তোমরা পৌঁছতে পারতে না; তোমাদের প্রতিপালক অবশ্যই স্নেহশীল, পরম দয়ালু।

وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ لِتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً ۚ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝٨

৮. তোমাদের আরোহণের জন্যে ও শোভার জন্যে তিনি সৃষ্টি করেছেন ঘোড়া, খচ্চর, গাধা এবং তিনি সৃষ্টি করেন এমন অনেক কিছু যা তোমরা অবগত নও।

وَعَلَى اللَّهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَمِنْهَا جَائِرٌ ۚ وَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ۝٩

৯. সরল পথ আল্লাহর কাছে পৌঁছায়; কিন্তু পথগুলির মধ্যে বক্রপথও আছে; তিনি ইচ্ছা করলে তোমাদের সকলকেই সৎপথে পরিচালিত করতেন।

هُوَ الَّذِي أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لَّكُم مِّنْهُ شَرَابٌ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ۝١٠

১০. তিনিই আকাশ হতে পানি বর্ষণ করেন, ওতে তোমাদের জন্যে রয়েছে, পানীয় এবং তা হতে জন্মায় উদ্ভিদ যাতে তোমরা পশুচারণ করে থাকো।

يُنبِتُ لَكُم بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝١١

১১. তিনি তোমাদের জন্যে ওর দ্বারা জন্মায় শস্য, যায়তুন, খেজুর বৃক্ষ, আঙ্গুর এবং সর্বপ্রকার ফল; অবশ্যই এতে চিন্তাশীল সম্প্রদায়ের জন্যে রয়েছে নিদর্শন।

وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ وَالنُّجُومُ مُسَخَّرَاتٌ بِأَمْرِهِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝١٢

১২. তিনিই তোমাদের কল্যাণে নিয়োজিত করেছেন রজনী, দিবস, সূর্য এবং চন্দ্রকে; আর নক্ষত্ররাজিও অধীন হয়েছে তাঁরই হুকুমে; অবশ্যই এতে বোধশক্তি সম্পন্ন সম্প্রদায়ের জন্যে রয়েছে নিদর্শন।

وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِى الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣﴾

১৩. আর তোমাদের জন্যে পৃথিবীতে রং বেরং এর যা কিছু সৃষ্টি করেছেন; এতে রয়েছে নিদর্শন সেই সম্প্রদায়ের জন্যে যারা উপদেশ গ্রহণ করে।

وَهُوَ الَّذِىْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٤﴾

১৪. তিনিই সমুদ্রকে অধীন করেছেন যাতে তোমরা তাহতে তাজা মৎস্যাহার করতে পার এবং যাতে তা হতে আহরণ করতে পার রত্নাবলী যা তোমরা ভূষণরূপে পরিধান কর; এবং তোমরা দেখতে পাও, ওর বুক চিরে নৌযান চলাচল করে এবং তা এজন্য যে, তোমরা যেন তাঁর অনুগ্রহ সন্ধান করতে পার এবং তোমরা যেন কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

وَاَلْقٰى فِى الْاَرْضِ رَوَاسِىَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥﴾

১৫. আর তিনি পৃথিবীতে সুদৃঢ় পর্বত স্থাপন করেছেন, যাতে পৃথিবী তোমাদেরকে নিয়ে আন্দোলিত না হয় এবং স্থাপন করেছেন নদ-নদী ও পথ, যাতে তোমরা তোমাদের গন্তব্য স্থলে পৌঁছতে পার।

وَعَلٰمٰتٍ ؕ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿١٦﴾

১৬. আর পথ নির্ণায়ক চিহ্নসমূহও; এবং ওরা নক্ষত্রের সাহায্যেও পথের নির্দেশ পায়।

اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٧﴾

১৭. সুতরাং যিনি সৃষ্টি করেন, তিনি কি তারই মত, যে সৃষ্টি করে না? তবুও কি তোমরা শিক্ষা গ্রহণ করবে না?

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٨﴾

১৮. তোমরা আল্লাহর অনুগ্রহ গণনা করলে ওর সংখ্যা নির্ণয় করতে পারবে না; আল্লাহ অবশ্যই ক্ষমাপরায়ণ, পরম দয়ালু।

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿١٩﴾

১৯. তোমরা যা গোপন রাখো এবং যা প্রকাশ কর আল্লাহ তা জানেন।

وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْئًا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿٢٠﴾

২০. তারা আল্লাহ ছাড়া অপর যাদেরকে আহ্বান করে তারা কিছুই সৃষ্টি করে না, তাদেরকেই সৃষ্টি করা হয়।

اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٢١﴾

২১. তারা নিষ্প্রাণ, নির্জীব এবং পুনরুত্থান কবে হবে, সে বিষয়ে তাদের কোন চেতনা (বোধ) নেই।

اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٢٢﴾

২২. তোমাদের মা'বূদ এক মা'বূদ; সুতরাং যারা আখেরাতে বিশ্বাস করে না তাদের অন্তর সত্য বিমুখ এবং তারা অহংকারী।

لَا جَرَمَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. এটা নিঃসন্দেহ যে, আল্লাহ জানেন যা তারা গোপন করে এবং যা তারা প্রকাশ করে; তিনি অহংকারীকে পছন্দ করেন না।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ قَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾

২৪. যখন তাদেরকে বলা হয়ঃ তোমাদের প্রতিপালক কি অবতীর্ণ করেছেন? উত্তরে তারা বলেঃ পূর্ববর্তীদের উপকথা।

لِيَحْمِلُوْٓا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۙ وَمِنْ اَوْزَارِ الَّذِيْنَ يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٢٥﴾

২৫. ফলে কিয়ামত দিবসে তারা বহন করবে তাদের পাপভার পূর্ণমাত্রায় এবং পাপভার তাদেরও যাদেরকে তারা অজ্ঞতা হেতু বিভ্রান্ত করেছে; দেখো, তারা যা বহন করবে তা কতই না নিকৃষ্ট!

قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى اللّٰهُ بُنْيَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾

২৬. তাদের পূর্ববর্তীগণও চক্রান্ত করেছিল; আল্লাহ তাদের ইমারতের ভিত্তিমূলে আঘাত করেছিলেন; ফলে, ইমারতের ছাদ তাদের উপর ধ্বসে পড়লো এবং তাদের প্রতি শাস্তি

আসলো এমন দিক হতে যা ছিল তাদের ধারণাতীত।

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۙ﴿۲۷﴾

২৭. পরে, কিয়ামতের দিনে তিনি তাদেরকে লাঞ্ছিত করবেন এবং বলবেনঃ কোথায় আমার সে সব শরীক যাদের সম্বন্ধে তোমরা বিতন্ডা করতে? যাদেরকে জ্ঞান দান করা হয়েছিল তারা বলবেঃ আজ লাঞ্ছনা ও অমঙ্গল কাফিরদের।

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۠ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ بَلٰٓى اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۸﴾

২৮. যাদের মৃত্যু ঘটায় ফেরেশ্‌তাগণ তারা নিজেদের প্রতি যুলুম করতে থাকা অবস্থায়; অতপর তারা আত্মসমর্পণ করে বলবেঃ আমরা কোন মন্দকর্ম করতাম না; হাঁ, তোমরা যা করতে সে বিষয়ে আল্লাহ সবিশেষ অবহিত।

فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿۲۹﴾

২৯. সুতরাং তোমরা দ্বারগুলি দিয়ে জাহান্নামে প্রবেশ কর, সেথায় স্থায়ী হবার জন্যে; দেখো, অহংকারীদের আবাসস্থল কত নিকৃষ্ট।

وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوْا خَيْرًا ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ؕ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿۳۰﴾

৩০. আর যারা মুত্তাকী ছিল তাদেরকে বলা হবেঃ তোমাদের প্রতিপালক কি অবতীর্ণ করেছিলেন? তারা বলবেঃ মহাকল্যাণ যারা সৎকর্ম করে তাদের জন্যে রয়েছে এই দুনিয়ায় মঙ্গল এবং আখেরাতের আবাস আরো উৎকৃষ্ট; আর মুত্তাকীদের আবাসস্থল কত উত্তম!

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ ؕ كَذٰلِكَ

৩১. ওটা স্থায়ী জান্নাত যাতে তারা প্রবেশ করবে; ওর পাদদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত; তারা যা কিছু কামনা করবে তাতে তাদের জন্যে

يَجْزِى اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٣١﴾

তাই থাকবে; এভাবেই আল্লাহ পুরস্কৃত করেন মুত্তাকীদেরকে।

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ ۙ يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ۙ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٣٢﴾

৩২. ফেরেশ্‌তাগণ যাদের মৃত্যু ঘটায় পবিত্র থাকা অবস্থায়; ফেরেশতাগণ বলবেন, তোমাদের প্রতি শান্তি! তোমরা যা করতে তার ফলে জান্নাতে প্রবেশ কর।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٣٣﴾

৩৩. তারা শুধু প্রতীক্ষা করে তাদের কাছে ফেরেশ্‌তা আগমনের অথবা তোমার প্রতিপালকের হুকুম আগমনের; ওদের পূর্ববর্তীগণ এরূপই করত, আল্লাহ তাদের প্রতি কোন যুলুম করেন নি; কিন্তু তারাই নিজেদের প্রতি যুলুম করতো।

فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٤﴾

৩৪. সুতরাং তাদের প্রতি আপতিত হয়েছিল তাদেরই মন্দ কর্মের শাস্তি এবং তাদেরকে পরিবেষ্টন করেছিল ওটাই যা নিয়ে তারা ঠাট্টা-বিদ্রূপ করতো।

وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٣٥﴾

৩৫. মুশরিকরা বলবেঃ আল্লাহ ইচ্ছা করলে আমাদের পিতৃ পুরুষরা ও আমরা তাঁর ব্যতীত অপর কোন কিছুর ইবাদত করতাম না এবং তাঁর নির্দেশ ব্যতীত আমরা কোন কিছু নিষিদ্ধ করতাম না; তাদের পূর্ববর্তীরা এরূপই করতো; রাসূলদের কর্তব্য তো শুধু সুস্পষ্ট বাণী প্রচার করা।

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ

৩৬. আল্লাহর ইবাদত করবার ও তাগুতকে[১] বর্জন করবার নির্দেশ

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছেন। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, আমি এবং মানুষের দৃষ্টান্ত সেই ব্যক্তির ন্যায় যে, আগুন জ্বালালো। আর আগুন যখন তার চারপাশ আলোকিত করল, পতঙ্গ এবং যে সমস্ত প্রাণী আগুনে ঝাঁপ দেয় সেগুলো ঝাঁপ দিতে লাগল। তখন সে ব্যক্তি সেগুলোকে (আগুন থেকে) ফিরাবার

وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٦﴾

দিবার জন্যে আমি তো প্রত্যেক জাতির মধ্যেই রাসূল পাঠিয়েছি; অতঃপর তাদের কতককে আল্লাহ সৎপথে পরিচালিত করেন এবং তাদের কতকের উপর পথ ভ্রান্তি সাব্যস্ত হয়েছিল; সুতরাং পৃথিবীতে পরিভ্রমণ কর এবং দেখো, যারা সত্যকে মিথ্যা বলেছে তাদের পরিণাম কি হয়েছে।

اِنْ تَحْرِصْ عَلٰى هُدٰىهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِىْ مَنْ يُّضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٣٧﴾

৩৭. তুমি তাদের পথ প্রদর্শন করতে আগ্রহী হলেও আল্লাহ যাকে বিভ্রান্ত করেছেন, তাকে তিনি সৎপথে পরিচালিত করবেন না এবং তাদের কোন সাহায্যকারীও নেই।

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ يَّمُوْتُ ؕ بَلٰى وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٨﴾

৩৮. তারা দৃঢ়তার সাথে আল্লাহর শপথ করে বলেঃ যার মৃত্যু হয় আল্লাহ তাকে পুনর্জীবিত করবেন না; কেন নয়, তিনি তাঁর প্রতিশ্রুতি পূর্ণ করবেনই; কিন্তু অধিকাংশ মানুষ এটা অবগত নয়।

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِىْ يَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰذِبِيْنَ ﴿٣٩﴾

৩৯. (তিনি পুনরুত্থিত করবেন) যে বিষয়ে তাদের মতানৈক্য ছিল তা তাদেরকে স্পষ্টভাবে দেখাবার জন্যে এবং যাতে কাফিররা জানতে পারে যে, তারাই ছিল মিথ্যাবাদী।

اِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَىْءٍ اِذَاۤ اَرَدْنٰهُ اَنْ نَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٤٠﴾

৪০. আমি কোন কিছু ইচ্ছা করলে সে বিষয়ে আমার কথা শুধু এই যে, আমি বলিঃ 'হও' ফলে তা হয়ে যায়।

وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِى اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا

৪১. যারা অত্যাচারিত হবার পর আল্লাহর পথে হিজরত করেছে, আমি

চেষ্টা করল, তা সত্ত্বেও সেগুলো আগুনে পুড়ে মরে। (তদ্রূপ) আমিও তোমাদের কোমর ধরে আগুন থেকে বাঁচাবার চেষ্টা করি; কিন্তু তোমরা তাতে পতিত হও। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৮৩)

لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾

অবশ্যই তাদেরকে দুনিয়ায় উত্তম আবাস প্রদান করবো এবং আখেরাতের পুরস্কারই তো শ্রেষ্ঠ; হায়! তারা যদি ওটা জানতো!

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٤٢﴾

৪২. তারা ধৈর্যধারণ করে ও তাদের প্রতিপালকের উপর নির্ভর করে।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِي إِلَيْهِمْ ۖ فَسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِن كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٤٣﴾

৪৩. (হে নবী (ﷺ)! তোমার পূর্বে আমি ওহীসহ মানুষই প্রেরণ করেছিলাম, তোমরা যদি না জান তবে জ্ঞানীদেরকে জিজ্ঞাস কর।

بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ ۗ وَأَنزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٤﴾

৪৪. প্রেরণ করেছিলাম স্পষ্ট নিদর্শন ও গ্রন্থসহ এবং তোমার প্রতি কুরআন অবতীর্ণ করেছি, মানুষকে স্পষ্টভাবে বুঝিয়ে দেয়ার জন্যে যা তাদের প্রতি অবতীর্ণ করা হয়েছিল, যাতে তারা চিন্তা করে।

أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ أَن يَخْسِفَ اللَّهُ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٤٥﴾

৪৫. যারা কুকর্মের ষড়যন্ত্র করে তারা কি এ বিষয়ে নিশ্চিত আছে যে, আল্লাহ তাদেরকে ভূগর্ভে বিলীন করবেন না অথবা এমন দিক হতে শাস্তি আসবে না যা তাদের ধারণাতীত?

أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُم بِمُعْجِزِينَ ﴿٤٦﴾

৪৬. অথবা চলাফেরা করতে থাকাকালে তিনি তাদেরকে ধৃত করবেন না? তারা তো এটা ব্যর্থ করতে পারবে না।

أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَىٰ تَخَوُّفٍ ۖ فَإِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٤٧﴾

৪৭. অথবা তাদেরকে তিনি ভীত-সন্ত্রস্ত অবস্থায় ধৃত করবেন না? তোমাদের প্রতিপালক তো অবশ্যই দয়ার্দ্র, পরম দয়ালু।

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ يَتَفَيَّأُ ظِلَالُهُ

৪৮. তারা কি লক্ষ্য করে না আল্লাহর সৃষ্ট বস্তুর প্রতি যার ছায়া দক্ষিণে ও

عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَآئِلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَهُمْ دٰخِرُوْنَ ﴿٤٨﴾

বামে ঢলে পড়ে বিনীতভাবে আল্লাহর প্রতি সিজ্‌দাবনত হয়?

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّالْمَلٰٓئِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٤٩﴾

৪৯. আল্লাহকেই সিজদা করে যা কিছু আছে আকাশমন্ডলীতে, পৃথিবীতে যত জীব-জন্তু আছে সে সমস্ত এবং ফেরেশ্‌তাগণও। তারা অহংকার করে না।

يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۩ ﴿٥٠﴾

৫০. তারা ভয় করে, তাদের উপর পরাক্রমশালী তাদের প্রতিপালককে এবং তাদেরকে যা আদেশ করা হয় তারা তা করে।

وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ﴿٥١﴾

৫১. আল্লাহ বললেনঃ তোমরা দু'ইলাহ গ্রহণ করো না; তিনিই তো একমাত্র ইলাহ। সুতরাং তোমরা আমাকেই ভয় কর।[১]

وَلَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ وَاصِبًا ۭ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ﴿٥٢﴾

৫২. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে তা তারই এবং নিরবচ্ছিন্ন আনুগত্য তাঁরই প্রাপ্য; তোমরা কি আল্লাহ ব্যতীত অন্যকে ভয় করবে?

وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيْهِ تَجْـَٔرُوْنَ ﴿٥٣﴾

৫৩. তোমরা যেসব নিয়ামত ভোগ কর তা তো আল্লাহরই নিকট হতে; আবার যখন দুঃখ দৈন্য তোমাদেরকে স্পর্শ করে তখন তোমরা তাঁকেই ব্যাকুলভাবে আহ্বান কর।

ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ

৫৪. আবার যখন আল্লাহ তোমাদের দুঃখ-দৈন্য দূরীভূত করেন তখন

১। উবাদা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, যে সাক্ষ্য দিল, আল্লাহ্ ভিন্ন আর কোন সত্য ইলাহ নেই, তিনি একক, তাঁর কোন শরীক নেই, আর মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তাঁর বান্দা ও রাসূল। আর নিশ্চয় ঈসা (আলাইহিস্‌সালাম) আল্লাহ্‌র বান্দা, তাঁর রাসূল ও তাঁর সেই কালেমা-যা তিনি মারইয়ামকে পৌঁছিয়েছেন এবং তাঁর পক্ষ থেকে একটি 'রূহ' মাত্র, জান্নাত সত্য, জাহান্নাম সত্য, তার আমল যা-ই হোক, আল্লাহ্ তাকে জান্নাতে প্রবেশ করাবেন। আর (অন্য সনদে) জুনাদা এ কথাগুলো বাড়িয়ে বলেছেন, জান্নাতের আট দরজার যে কোন দরজা দিয়েই সে চাইবে (আল্লাহ্ তাকে জান্নাতে প্রবেশ করাবেন।) (বুখারী, হাদীস নং ৩৪৩৫)

بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٤﴾

তোমাদের একদল তাদের প্রতিপালকের সাথে শরীক করে।

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ۟ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٥﴾

৫৫. আমি তাদেরকে যা দান করেছি তা অস্বীকার করবার জন্যে; সুতরাং তোমরা ভোগ করে নাও, অচিরেই জানতে পারবে।

وَيَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ؕ تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٦﴾

৫৬. আমি তাদেরকে যে রিয্ক দান করি তারা তার এক অংশ নির্ধারিত করে তাদের (বাতিল মা'বূদের) জন্যে, যাদের সম্বন্ধে তারা কিছুই জানে না; শপথ আল্লাহর! তোমরা যে মিথ্যা উদ্ভাবন কর সে সম্বন্ধে তোমাদেরকে অবশ্যই প্রশ্ন করা হবে।

وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ ۙ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٥٧﴾

৫৭. তারা নির্ধারণ করে আল্লাহর জন্যে কন্যা সন্তান। তিনি পবিত্র, মহিমান্বিত এবং তাদের জন্যে ওটাই যা তারা কামনা করে।

وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿٥٨﴾

৫৮. তাদের কাউকেও যখন কন্যা সন্তানের সুসংবাদ দেয়া হয় তখন তার মুখমন্ডল কালো হয়ে যায় এবং সে অসহনীয় মনস্তাপে ক্লিষ্ট হয়।

يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ؕ اَيُمْسِكُهٗ عَلٰى هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّهٗ فِى التُّرَابِ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٥٩﴾

৫৯. তাকে যে সংবাদ দেয়া হয়, তার গ্লানী হেতু সে নিজ সম্প্রদায় হতে আত্মগোপন করে; সে চিন্তা করে যে, হীনতা সত্ত্বেও সে তাকে রেখে দিবে, না মাটিতে পুঁতে দিবে। সাবধান![১] তারা যা সিদ্ধান্ত করে তা কতই না নিকৃষ্ট।

১। মুগীরা ইবনে শু'বার লেখক (কেরানী) ওয়ার্‌রাদ থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, মুয়াবিয়া (রাযিআল্লাহু আনহু) মুগীরাকে লিখলেন, তুমি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর কাছে যা কিছু শুনেছ তা আমার কাছে লিখে পাঠাও। এরপর তিনি তাঁর কাছে লিখে পাঠালেন যে, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) প্রত্যেক নামাযের শেষে বলতেন, 'লা-ইলাহা ইল্লাল্লাহু ওয়াহ্‌দাহু লা-শারীকা লাহু, লাহুল মুলকু

لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٠﴾

৬০. যারা আখেরাতে বিশ্বাস করে না, তারা নিকৃষ্ট প্রকৃতির অধিকারী আর আল্লাহর জন্য রয়েছে মহত্তম গুণ ও উদাহরণ; এবং তিনি পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٦١﴾

৬১. আল্লাহ যদি মানুষকে তাদের সীমালঙ্ঘনের জন্যে শাস্তি দিতেন, তবে ভূ-পৃষ্ঠে কোন জীব-জন্তুকেই রেহাই দিতেন না; কিন্তু তিনি এক নির্দিষ্টকাল পর্যন্ত তাদেরকে অবকাশ দিয়ে থাকেন; অতপর যখন তাদের সময় আসে তখন তারা মুহূর্তকাল বিলম্ব অথবা অগ্রগামী করতে পারে না।

وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ؕ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ﴿٦٢﴾

৬২. যা তারা অপছন্দ করে তাই তারা আল্লাহর প্রতি আরোপ করে; তাদের জিহ্বা মিথ্যা বর্ণনা করে যে মঙ্গল তাদেরই জন্যে; স্বতঃসিদ্ধ কথা যে, নিশ্চয়ই তাদের জন্যে আছে অগ্নি এবং তাদেরকেই সর্বাগ্রে তাতে নিক্ষেপ করা হবে।

تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ

৬৩. শপথ আল্লাহর! আমি তোমার পূর্বেও বহু জাতির নিকট (রাসূল) প্রেরণ করেছি; কিন্তু শয়তান ঐ সব জাতির কার্যকলাপ তাদের দৃষ্টিতে

ওলাহুল হামদু ওহুয়া 'আলা কুল্লি শাইয়্যিন ক্বাদির।' আল্লাহুম্মা লা-মানেয়া লিমা আতাইতা অলা মু'তিয়া লিমা মানা'তা অলা ইয়ানফায়ু যালজাদ্দে মিনকাল জাদ্দু। অর্থঃ "আল্লাহ ছাড়া সত্য কোন মা'বূদ (ইলাহ) নেই, তিনি একক, তাঁর কোন শরীক নেই, বাদশাহী তাঁর, প্রশংসা ও তাঁর এবং তিনি সবকিছু করতে সক্ষম। আয় আল্লাহ্ আপনি যা দান করেন তার নিষেধকারী কেউ নেই, আর যা আপনি নিষেধ করেন তার দাতাও কেউ নেই, (আর ধনী ব্যক্তির ধন আপনার নিকট (তার) কোন কাজে আসবে না।)

মুগীরা আরো লিখেছেন যে, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) খামাখা মানুষের গায়ে পড়ে কথা বলা ও মতভেদ করা, বিনা প্রয়োজনে অধিক প্রশ্ন করা, অনর্থক ধন-সম্পদ নষ্ট করতে নিষেধ করেছেন। মায়েদের অবাধ্য হতে, কন্যা-সন্তানকে জ্যান্ত কবর দিতে, অধিকারীর অধিকার প্রদানে অস্বীকার করতে এবং অনধিকারভাবে অধিকার চাইতেও নিষেধ করেছেন। (বুখারী, হাদীস নং ৭২৯২)

وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾

শোভন করেছিল; সুতরাং সে আজ তাদের অভিভাবক এবং তাদেরই জন্যে পীড়াদায়ক শাস্তি।

وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٦٤﴾

৬৪. আমি তো তোমার প্রতি কিতাব অবতীর্ণ করেছি যারা এ বিষয়ে মতভেদ করে তাদেরকে সুস্পষ্টভাবে বুঝিয়ে দিবার জন্যে এবং মু'মিনদের জন্যে পথ নির্দেশ ও দয়া স্বরূপ।

وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٥﴾ ع

৬৫. আল্লাহ আকাশ হতে পানি বর্ষণ করেন এবং তার দ্বারা তিনি ভূমিকে ওর মৃত্যুর পর পুনর্জীবিত করেন; অবশ্যই এতে নিদর্শন আছে, যে সম্প্রদায় কথা শুনে তাদের জন্যে।

وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٦٦﴾

৬৬. অবশ্যই (গৃহপালিত) চতুষ্পদ জন্তুর মধ্যে তোমাদের জন্যে শিক্ষা রয়েছে; ওগুলির উদরস্থিত গোবর ও রক্তের মধ্য হতে তোমাদেরকে আমি পান করাই বিশুদ্ধ দুগ্ধ, যা পানকারীদের জন্যে সুস্বাদু।

وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا حَسَنًا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾

৬৭. আর খেজুর গাছের ফল ও আঙ্গুর হতে তোমরা মাদক (যা হারাম হওয়ার পূর্বে) ও উত্তম খাদ্য গ্রহণ করে থাকো, এতে অবশ্যই বোধশক্তি সম্পন্ন সম্প্রদায়ের জন্যে রয়েছে নিদর্শন।

وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِىْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ ﴿٦٨﴾

৬৮. তোমার প্রতিপালক মৌমাছির অন্তরে এ নির্দেশ জাগিয়ে দিলো যে, তুমি গৃহ নির্মাণ কর পাহাড়ে, বৃক্ষে এবং মানুষ যে গৃহ নির্মাণ করে তাতে।

ثُمَّ كُلِىْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِىْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ يَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ

৬৯. এরপর প্রত্যেক ফল হতে কিছু কিছু আহার কর, অতঃপর তোমার প্রতিপালকের সহজ পথ অনুসরণ

مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٦٩﴾

কর; ওর উদর হতে নির্গত হয় বিবিধ বর্ণের পানীয়; যাতে মানুষের জন্যে রয়েছে রোগমুক্তি; অবশ্যই এতে রয়েছে নিদর্শন চিন্তাশীল সম্প্রদায়ের জন্যে।

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ ؕ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿٧٠﴾

৭০. আল্লাহই তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন; অতঃপর তিনি তোমাদের মৃত্যু ঘটাবেন এবং তোমাদের মধ্যে কাউকে কাউকে উপনীত করা হয় অকর্মণ্য পূর্ণ বার্ধক্য বয়সে; ফলে তারা অনেক কিছু জানার পরও সজ্ঞান থাকবে না; আল্লাহ সর্বজ্ঞ, সর্বশক্তিমান।

وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ فِى الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا بِرَآدِّىْ رِزْقِهِمْ عَلٰى مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ ؕ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٧١﴾

৭১. আল্লাহ জীবনোপকরণে তোমাদের একজনকে অন্য জনের উপর শ্রেষ্ঠত্ব দিয়েছেন; যাদেরকে শ্রেষ্ঠত্ব দেয়া হয়েছে তারা তাদের অধীনস্থ দাস-দাসীদেরকে নিজেদের জীবনোপকরণ হতে এমন কিছু দেয় না, যাতে তারা এ বিষয়ে তাদের সমান হয়ে যায়; তবে কি তারা আল্লাহর অনুগ্রহ অস্বীকার করে?

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ ইবরাহীম (আলাইহিস্ সালাম) সারাকে নিয়ে হিজরত করেছিলেন। তাঁকে সঙ্গে নিয়ে যখন তিনি এমন একটি জনপদে উপস্থিত হলেন, যেখানে এক বাদশাহ অথবা (বর্ণনাকারীর সন্দেহ) কোন এক অত্যাচারী থাকত। তাকে (বাদশাহকে বা অত্যাচারীকে) অবহিত করা হল যে, ইবরাহীম একজন নারীসহ আগমন করেছে, যে নারীদের মধ্যে সবচাইতে সুন্দরী ও সুশ্রী। তাই সে (বাদশাহ বা অত্যাচারী) তাঁর (ইবরাহীমের) কাছে এই মর্মে জানতে চেয়ে লোক পাঠালো যে, হে ইবরাহীম! তোমার সঙ্গিনী মহিলাটি কে? তিনি বললেন, আমার বোন। অতপর সারার কাছে গিয়ে তাঁকে বললেন, আমার কথাকে মিথ্যা প্রমাণ করো না। আমি তাদেরকে জানিয়েছি যে, তুমি আমার বোন। আল্লাহ্র শপথ! গোটা এই এলাকায় (দেশে) আমি আর তুমি ব্যতীত কোন ঈমানদার নেই। এরপর তিনি তাঁকে (সারাকে) বাদশাহর কাছে পাঠালেন। বাদশাহ তাঁর কাছে গেলে তিনি (সারা) উঠলেন, ওযূ করলেন, নামায পড়লেন এবং এই বলে দু'আ করলেন, হে আল্লাহ্! আমি সত্যিকারভাবেই যদি তোমার ও তোমার রাসূলের প্রতি ঈমান এনে থাকি আর আমার স্বামী ব্যতীত অন্য সবার থেকে আমার সতীত্ব হেফাজত ও রক্ষা করে থাকি, তাহলে কাফেরকে আমার ওপর আধিপত্য প্রদান করো না। তৎক্ষণাৎ সে (বাদশাহ মাটিতে পড়ে) সংজ্ঞাহীন হয়ে

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ۙ﴿٧٢﴾

৭২. আর আল্লাহ তোমাদের জন্য তোমাদের মধ্য হতেই জোড়া সৃষ্টি করেছেন এবং তোমাদের জোড়া হতে তোমাদের জন্যে পুত্র, পৌত্রাদি সৃষ্টি করেছেন এবং উত্তম জীবনোপকরণ দান করেছেন; তবুও কি তারা মিথ্যাতে বিশ্বাস করবে এবং তারা কি আল্লাহর অনুগ্রহ অস্বীকার করবে?

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٧٣﴾

৭৩. এবং তারা কি ইবাদত করবে আল্লাহ ছাড়া অপরের যাদের আকাশমন্ডলী অথবা পৃথিবী হতে কোন জীবনোপকরণ সরবরাহ করার শক্তি নেই এবং তারা কিছুই করতে সক্ষম নয়।

فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٧٤﴾

৭৪. সুতরাং তোমরা আল্লাহর কোন সদৃশ স্থির করো না; আল্লাহ জানেন এবং তোমরা জান না।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ؕ هَلْ يَسْتَوٗنَ ؕ

৭৫. আল্লাহ উপমা দিচ্ছেন অপরের অধিকারভুক্ত এক দাসের যে কোন কিছুর উপর শক্তি রাখে না এবং এমন এক ব্যক্তির যাকে তিনি নিজ হতে উত্তম রিয্ক দান করেছেন এবং

গেল এবং পা রগড়াতে শুরু করল। তখন সারা বললেন, হে আল্লাহ্! যদি সে এখন মৃত্যুবরণ করে তাহলে বলা হবে যে, সেই মহিলাটিই তাকে হত্যা করেছে। সুতরাং তার (বাদশাহর) উক্ত অবস্থা বিদূরিত হয়ে গেলে সে আবার তাঁর (সারার) কাছে এগিয়ে গেল। তখন তিনি (সারা) উঠে উযু করেন, নামায আদায়ের পর দু'আ করলেন, হে আল্লাহ্! আমি যদি সত্যিই তোমার ও তোমার রাসূলের প্রতি ঈমান এনে থাকি এবং আমার স্বামী ব্যতীত অন্য সবার থেকে আমার সতীত্বকে রক্ষা করে থাকি তাহলে এ কাফেরকে আমার ওপর আধিপত্য প্রদান করো না। (একথা বলার সাথে সাথে) সে (বাদশা) মাটিতে পড়ে সংজ্ঞা হারিয়ে ফেলল এবং পা রগড়াতে শুরু করল। তখন সারা বললেন, হে আল্লাহ! (এখন) যদি সে মৃত্যুররণ করে তাহলে বলা হবে এ মহিলাটি তাকে (বাদশাহকে) হত্যা করেছে। সুতরাং দ্বিতীয় অথবা তৃতীয় বারের পর সে বলল, আল্লাহ্র শপথ! তোমরা আমার নিকট এক শয়তান বৈ প্রেরণ কর নাই। তাকে ইবরাহীমের নিকট নিয়ে যাও এবং আজারকে (হাজেরাকে) তাকে প্রদান কর। তখন তিনি (সারা) ইবরাহীমের কাছে ফিরে আসলেন এবং তাঁকে লক্ষ্য করে বললেন, আপনি কি উপলব্ধি করেছেন যে, আল্লাহ কাফেরকে নিরাশ, লাঞ্ছিত ও মনোক্ষুণ্ন করেছেন এবং একজন সেবিকা প্রদান করেছেন। (বুখারী, হাদীস নং ২২১৭)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾

সে তা হতে গোপনে ও প্রকাশ্যে ব্যয় করে; তারা কি একে অপরের সমান? সকল প্রশংসা আল্লাহরই প্রাপ্য; অথচ তাদের অধিকাংশই এটা জানে না।

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَاۤ اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٦﴾

৭৬. আল্লাহ আরো উপমা দিচ্ছেন দু'ব্যক্তিরঃ ওদের একজন বধির, কোন কিছুরই শক্তি রাখে না এবং সে তার প্রভুর উপর ভার স্বরূপ; তাকে যেখানেই পাঠানো হোক না কেন, সে ভাল কিছুই করে আসতে পারে না; সে কি সমান হবে ঐ ব্যক্তির যে, ন্যায়ের নির্দেশ দেয় এবং যে আছে সরল পথে?

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَاۤ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٧٧﴾

৭৭. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর অদৃশ্য বিষয়ের জ্ঞান আল্লাহরই এবং কিয়ামতের ব্যাপার তো চক্ষুর পলকের ন্যায়; বরং ওর চেয়েও সত্বর; আল্লাহ সব বিষয়ে সর্বশক্তিমান।

وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾

৭৮. আর আল্লাহ তোমাদেরকে নির্গত করেছেন তোমাদের মাতৃগর্ভ হতে এমন অবস্থায় যে, তোমরা কিছুই জানতে না এবং তিনি তোমাদেরকে দিয়েছেন শ্রবণশক্তি, দৃষ্টিশক্তি এবং হৃদয় যাতে তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَآءِ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٧٩﴾

৭৯. তারা কি লক্ষ্য করে না আকাশের শূণ্য গর্ভে নিয়ন্ত্রণাধীন পাখিদের প্রতি? আল্লাহই ওদেরকে স্থির রাখেন; অবশ্যই এতে নিদর্শন রয়েছে মু'মিন সম্প্রদায়ের জন্যে।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ

৮০. এবং আল্লাহ তোমাদের গৃহকে করেন তোমাদের আবাস স্থল, আর

لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ اَصْوَافِهَا وَاَوْبَارِهَا وَاَشْعَارِهَآ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿٨٠﴾

তিনি তোমাদের জন্যে পশু-চর্মের তাঁবুর ব্যবস্থা করেন; তোমরা ভ্রমণকালে তা সহজে বহন করতে পার এবং অবস্থানকালে সহজে খাটাতে পার, আর তিনি তোমাদের জন্যে ব্যবস্থা করেন ওদের পশম, লোম ও কেশ হতে কিছু কালের গৃহ সামগ্রীও ব্যবহার উপকরণ।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾

৮১. আর আল্লাহ যা কিছু সৃষ্টি করেছেন তা হতে তিনি তোমাদের জন্যে ছায়ার ব্যবস্থা করেন এবং তোমাদের জন্যে পাহাড়ে আশ্রয়ের ব্যবস্থা করেন এবং তোমাদের জন্যে ব্যবস্থা করেন পরিধেয় বস্ত্রের; ওটা তোমাদেরকে তাপ হতে রক্ষা করে এবং তিনি ব্যবস্থা করেন তোমাদের জন্যে বর্মের, ওটা তোমাদেরকে যুদ্ধে রক্ষা করে; এইভাবে তিনি তোমাদের প্রতি তাঁর অনুগ্রহ পূর্ণ করেন যাতে তোমরা আত্মসমর্পণ কর।

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٨٢﴾

৮২. অতপর তারা যদি মুখ ফিরিয়ে নেয়, তবে তোমার কর্তব্য তো শুধু স্পষ্টভাবে বাণী পৌঁছিয়ে দেয়া।

يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٣﴾

৮৩. তারা আল্লাহর অনুগ্রহ জ্ঞাত আছে; কিন্তু সেগুলি তারা অস্বীকার করে এবং তাদের অধিকাংশই কাফির।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٨٤﴾

৮৪. যেদিন আমি প্রত্যেক সম্প্রদায় হতে এক একজন সাক্ষ্য উত্থিত করবো, সেদিন কাফিরদেরকে অনুমতি দেয়া হবে না এবং তাদের নিকট হতে কৈফিয়ত তলব করা হবে না।

وَإِذَا رَأَ الَّذِينَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٨٥﴾

৮৫. যখন যালিমরা শাস্তি প্রত্যক্ষ করবে, তারপর তাদের শাস্তি লঘু করা হবে না এবং তাদেরকে কোন বিরাম দেয়া হবে না।

وَإِذَا رَأَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا شُرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ شُرَكَاؤُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُو مِنْ دُونِكَ ۚ فَأَلْقَوْا إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٨٦﴾

৮৬. মুশরিকরা যাদেরকে (আল্লাহর) শরীক করেছিল, তাদেরকে যখন দেখবে তখন বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! এরাই তারা, যাদেরকে আমরা আপনার শরীক করেছিলাম, যাদেরকে আমরা আহ্বান করতাম আপনার পরিবর্তে; অতঃপর তদুত্তরে তারা বলবেঃ তোমরা অবশ্যই মিথ্যাবাদী।

وَأَلْقَوْا إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ السَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٨٧﴾

৮৭. সে দিন তারা আল্লাহর কাছে আত্মসমর্পণ করবে এবং তারা যে মিথ্যা উদ্ভাবন করতো তা তাদের জন্যে নিস্ফল হবে।

الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ زِدْنَاهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ﴿٨٨﴾

৮৮. আমি শাস্তির উপর শাস্তি বৃদ্ধি করবো কাফিরদের ও আল্লাহর পথে বাধাদানকারীদের; কারণ, তারা অশান্তি সৃষ্টি করতো।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِمْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ ۚ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ﴿٨٩﴾

৮৯. সে দিন উত্থিত করবো প্রত্যেক সম্প্রদায়ে তাদেরই মধ্য হতে তাদের বিষয়ে এক একজন সাক্ষী এবং তোমাকে আমি আনবো সাক্ষীরূপে এদের বিষয়ে; আমি আত্মসমর্পণ কারীদের জন্যে প্রত্যেক বিষয়ে স্পষ্ট ব্যাখ্যা স্বরূপ, পথ নির্দেশ, দয়া ও সুসংবাদ স্বরূপ তোমার প্রতি কিতাব অবতীর্ণ করেছি।

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَاءِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ

৯০. নিশ্চয় আল্লাহ ন্যায়পরায়ণতা, সদাচরণ ও আত্মীয়-স্বজনকে দানের নির্দেশ দেন এবং তিনি নিষেধ করেন

يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٩٠﴾

অশ্লীলতা, অসৎকার্য ও সীমালঙ্ঘন; তিনি তোমাদেরকে উপদেশ দেন যাতে তোমরা শিক্ষা গ্রহণ কর।

وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٩١﴾

৯১. তোমরা আল্লাহর অঙ্গীকার পূর্ণ করো যখন পরস্পর অঙ্গীকার কর এবং তোমরা আল্লাহকে তোমাদের যামিন করে শপথ দৃঢ় করবার পর তা ভঙ্গ করো না; তোমরা যা কর আল্লাহ তা জানেন।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا ؕ تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ اَنْ تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِيَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ ؕ اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ؕ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٢﴾

৯২. সে নারীর মত হয়ো না, যে তার সুতা মজবুত করে পাকাবার পর ওর পাক খুলে নষ্ট করে দেয়; তোমাদের শপথ তোমরা পরস্পরকে প্রবঞ্চনা করবার জন্যে ব্যবহার করে থাকো, যাতে একদল অন্যদল অপেক্ষা অধিক লাভবান হও; আল্লাহ তো এটা দ্বারা শুধু তোমাদের পরীক্ষা করেন; তোমরা যে বিষয়ে মতভেদ করছিলে আল্লাহ কিয়ামতের দিন তা নিশ্চয়ই স্পষ্টভাবে প্রকাশ করে দিবেন।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَلَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

৯৩. যদি আল্লাহ ইচ্ছা করতেন তবে তোমাদেরকে এক জাতি করতে পারতেনঃ কিন্তু তিনি যাকে ইচ্ছা, বিভ্রান্ত করেন এবং যাকে ইচ্ছা, সৎপথে পরিচালিত করেন; তোমরা যা কর সে বিষয়ে অবশ্যই তোমাদেরকে প্রশ্ন করা হবে।

وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٩٤﴾

৯৪. পরস্পর প্রবঞ্চনা করবার জন্যে তোমরা তোমাদের শপথকে ব্যবহার করো না; করলে, পা স্থির হওয়ার পর পিছলিয়ে যাবে এবং আল্লাহর পথে বাধা দেয়ার কারণে তোমরা

শাস্তির আস্বাদ গ্রহণ করবে; তোমাদের জন্যে রয়েছে মহাশাস্তি।

وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٥﴾

৯৫. তোমরা আল্লাহর সঙ্গে কৃত অঙ্গীকার তুচ্ছ মূল্যে বিক্রি করো না; আল্লাহর কাছে যা আছে শুধু তাই তোমাদের জন্যে উত্তম যদি তোমরা জানতে।

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ؕ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْۤا اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾

৯৬. তোমাদের কাছে যা কিছু আছে তা নিঃশেষ হয়ে যাবে এবং আল্লাহর কাছে যা আছে তা-স্থায়ী; যারা ধৈর্য ধারণ করে আমি নিশ্চয়ই তাদেরকে তারা যা করে তা অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ পুরস্কার দান করবো।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٧﴾

৯৭. মু'মিন হয়ে পুরুষ ও নারীর মধ্যে যে কেউ সৎ কর্ম করবে, তাকে আমি নিশ্চয়ই আনন্দময় জীবন দান করবো এবং তাদেরকে তাদের কর্মের শ্রেষ্ঠ পুরস্কার দান করবো।

فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٩٨﴾

৯৮. যখন তুমি কুরআন পাঠ করবে, তখন অভিশপ্ত শয়তান হতে আল্লাহর আশ্রয় প্রার্থনা করবে।

اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٩٩﴾

৯৯. তার (শয়তানের) কোন আধিপত্য নেই তাদের উপর, যারা ঈমান আনে ও তাদের প্রতিপালকের উপরই নির্ভর করে।

اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ﴿١٠٠﴾

১০০. তার আধিপত্য শুধু তাদেরই উপর, যারা তাকে অভিভাবকরূপে গ্রহণ করে এবং যারা আল্লাহর শরীক করে।

وَاِذَا بَدَّلْنَاۤ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ وَّاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْۤا اِنَّمَاۤ اَنْتَ مُفْتَرٍ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ

১০১. আমি যখন কোন এক আয়াত পরিবর্তন করে তার স্থলে অন্য এক আয়াত উপস্থিত করি আর আল্লাহ যা

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠١﴾

অবতীর্ণ করেন তা তিনিই ভাল জানেন, তখন তারা বলেঃ তুমি তো শুধু মিথ্যা উদ্ভাবনকারী; কিন্তু তাদের অধিকাংশই জানে না।

قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهُدًى وَّ بُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٠٢﴾

১০২. তুমি বলঃ তোমার প্রতিপালকের নিকট হতে রূহুল-কুদুস (জিবরাঈল عليه السلام) সত্যসহ কুরআন অবতীর্ণ করেছে, যারা মু'মিন তাদেরকে দৃঢ় প্রতিষ্ঠিত করার জন্যে এবং হিদায়াত ও সুসংবাদ স্বরূপ আত্মসমর্পণকারীদের জন্যে।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ؕ لِسَانُ الَّذِيْ يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِيٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٠٣﴾

১০৩. আমি তো জানিই, তারা বলেঃ তাকে শিক্ষা দেয় এক মানুষ; তারা যার প্রতি এটা সম্বন্ধ করে তার ভাষা তো আরবী নয়; কিন্তু কুরআনের ভাষা স্পষ্ট আরবী ভাষা।

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ لَا يَهْدِيْهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٠٤﴾

১০৪. যারা আল্লাহর নিদর্শনে বিশ্বাস করে না, তাদেরকে আল্লাহ হিদায়াত করেন না এবং তাদের জন্যে আছে বেদনাদায়ক শাস্তি।

اِنَّمَا يَفْتَرِى الْكَذِبَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٠٥﴾

১০৫. যারা আল্লাহর নিদর্শনে বিশ্বাস করে না তারা তো শুধু মিথ্যা উদ্ভাবক এবং তারাই মিথ্যাবাদী।

مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِهٖٓ اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَقَلْبُهٗ مُطْمَئِنٌّۢ بِالْاِيْمَانِ وَلٰكِنْ مَّنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٠٦﴾

১০৬. কেউ ঈমান আনার পরে আল্লাহকে অস্বীকার করলে; কিন্তু যে, কুফরীর জন্য তার হৃদয়কে উন্মুক্ত করে দিল তাদের উপর আল্লাহর গজব আর তাদের জন্য রয়েছে ভয়াবহ শাস্তি। তবে তার জন্যে নয়, যাকে কুফ্‌রীর জন্যে বাধ্য করা হয়েছে; কিন্তু তার চিত্ত ঈমানে অবিচল।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠٧﴾

১০৭. এটা এজন্যে যে, তারা দুনিয়ার জীবনকে আখেরাতের উপর প্রাধান্য দেয় আর নিশ্চয়ই আল্লাহ কাফির সম্প্রদায়কে হিদায়াত করেন না।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿١٠٨﴾

১০৮. ওরাই তারা আল্লাহ যাদের অন্তর, কর্ণ ও চক্ষুসমূহে মোহর করে দিয়েছেন এবং তারাই গাফিল।

لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٠٩﴾

১০৯. নিশ্চয় তারা আখেরাতে হবে ক্ষতিগ্রস্ত।

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٠﴾

১১০. যারা নির্যাতিত হবার পর হিজরত করে, পরে জিহাদ করে এবং ধৈর্যধারণ করে; তোমার প্রতিপালক এই সবের পর, তাদের প্রতি অবশ্যই ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

يَوْمَ تَاْتِىْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١١١﴾

১১১. (স্মরণ কর সে দিনকে) যে দিন আত্মপক্ষ সমর্থনে যুক্তি উপস্থিত করতে আসবে প্রত্যেক ব্যক্তি এবং প্রত্যেককে তার কৃতকর্মের পূর্ণ ফল দেয়া হবে এবং তাদের প্রতি যুলুম করা হবে না।

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿١١٢﴾

১১২. আল্লাহ দৃষ্টান্ত দিচ্ছেন এক জনপদের যা ছিল নিরাপদ ও নিশ্চিন্ত যেথায় আসতো সর্বদিক হতে প্রচুর জীবনোপকরণ; অতঃপর তারা আল্লাহর নিয়ামতসমূহকে অস্বীকার করলো; ফলে তারা যা করতো তজ্জন্যে আল্লাহ তাদেরকে স্বাদ গ্রহণ করালেন ক্ষুধা ও ভীতির আচ্ছাদন দ্বারা।[১]

১। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেনঃ আমাকে দোযখ দেখান হল। আমি দেখলাম তার অধিবাসীদের অধিকাংশই স্ত্রীলোক। তারা কুফরী করে। জিজ্ঞেস করা হল, 'তারা কি আল্লাহ্‌র প্রতি কুফরী করে?' তিনি বললেনঃ 'তারা স্বামী এবং উপকারের প্রতি

وَلَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١١٣﴾

১১৩. তাদের নিকট তো এসেছিলেন এক রাসূল তাদের মধ্য হতে; কিন্তু তারা তাকে অস্বীকার করেছিল; ফলে যুলুম করা অবস্থায় শাস্তি তাদেরকে গ্রাস করলো।

فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۪ وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١١٤﴾

১১৪. আল্লাহ তোমাদেরকে যা দিয়েছেন তন্মধ্যে যা বৈধ ও পবিত্র তা তোমরা আহার কর এবং তোমরা যদি শুধু আল্লাহরই ইবাদত কর তবে তাঁর অনুগ্রহের জন্যে কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٥﴾

১১৫. আল্লাহ তো শুধু মৃত, রক্ত, শূকরের গোশত এবং যা যবাহ্ কালে আল্লাহর পরিবর্তে অন্যের নাম নেয়া হয়েছে তা-ই তোমাদের জন্যে অবৈধ করেছেন; কিন্তু কেউ আকাঙ্ক্ষিত কিংবা সীমালঙ্ঘনকারী না হয়ে অনন্যোপায় হলে আল্লাহ তো ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿١١٦﴾

১১৬. তোমাদের জিহ্বার দ্বারা আল্লাহর প্রতি মিথ্যা আরোপ করে তোমরা বলো না, এটা হালাল এবং এটা হারাম, যারা আল্লাহ সম্বন্ধে মিথ্যা উদ্ভাবন করবে তারা সফলকাম হবে না।

مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۪ وَّلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١١٧﴾

১১৭. (তাদের) সুখ-সম্ভোগ সামান্য এবং তাদের জন্যে রয়েছে বেদনাদায়ক শাস্তি।

وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا

১১৮. ইয়াহূদীদের জন্যে আমি তো শুধু তাই নিষিদ্ধ করেছিলাম যা

কুফরী বা অকৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে। যদি তুমি এক যুগ ধরে তাদের কারও উপকার কর, তারপরও সে তোমার কোন ত্রুটি দেখলে বলে, 'আমি তোমার কাছ থেকে কখনও ভাল কিছু পাইনি।' (বুখারী, হাদীস নং ২৯)

عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٨﴾

তোমার নিকট আমি পূর্বে উল্লেখ করেছি এবং আমি তাদের উপর কোন যুলুম করি নাই; কিন্তু তারাই যুলুম করতো তাদের নিজেদের প্রতি।

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْٓا اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٩﴾

১১৯. যারা অজ্ঞতাবশতঃ মন্দ কর্ম করে অতঃপর তাওবা করে ও নিজেদেরকে সংশোধন করে নেয় তাদের জন্যে তোমার প্রতিপালক অবশ্যই অতি ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيْفًا ۭ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٠﴾

১২০. নিশ্চয় ইবরাহীম (عليه السلام) ছিলেন (একাই) এক উম্মত, (একটি জাতির জীবন্ত প্রতীক) আল্লাহর অনুগত, একনিষ্ঠ এবং তিনি ছিলেন না মুশ্‌রিকদের অন্তর্ভুক্ত।

شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهِ ۭ اِجْتَبٰىهُ وَهَدٰىهُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٢١﴾

১২১. তিনি ছিলেন আল্লাহর অনুগ্রহের প্রতি কৃতজ্ঞ; আল্লাহ তাকে মনোনীত করেছিলেন এবং তাকে পরিচালিত করেছিলেন সরল পথে।[১]

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, ইবরাহীম (আলাইহিস্ সালাম) কখনও মিথ্যা বলেননি; তবে তিনবার। (অন্য বর্ণনায় আছে) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, ইবরাহীম (আলাইহিস্ সালাম) তিনবার মাত্র মিথ্যা বলেছেন। এর মধ্যে দু'বার ছিল আল্লাহ্‌র অস্তিত্বের ব্যাপারে। যেমন তিনি বলেছিলেন, আমি পীড়িত এবং তাঁর অপর কথাটি ছিল 'বরং তাদের এই বড় মূর্তিটিই তো করেছে।" বর্ণনাকারী বলেন, একদা ইবরাহীম (আলাইহিস্ সালাম) ও (তাঁর পত্নী) সারা এক জালিম শাসনকর্তার এলাকায় (মিসরে)এসে পৌছলেন। শাসনকর্তাকে খবর দেয়া হল যে, এই এলাকায় একজন বিদেশী লোক এসেছে। তার সাথে আছে সুন্দরী শ্রেষ্ঠা এক রমণী। রাজা তখন ইবরাহীম (আলাইহিস্ সালাম)-এর কাছে লোক পাঠিয়ে তাঁকে ডেকে আনলেন। সে তাঁকে রমণীটি সম্পর্কে জিজ্ঞেস করলঃ এই রমণীটি কে? ইবরাহীম (আলাইহিস্ সালাম) জবাব দিলেন, আমার বোন। অতঃপর তিনি সারার কাছে আসলেন এবং বললেন, হে সারা আমি এবং তুমি ছাড়া যমীনের ওপর আর কোন মু'মিন নেই। এই লোকটি আমাকে (তোমার সম্বন্ধে) জিজ্ঞেস করেছিল। আমি তাকে বলেছি যে, তুমি আমার বোন। সুতরাং আমাকে মিথ্যা প্রতিপন্ন কর না। তারপর রাজা সারার নিকট (তাঁকে আনার জন্য) লোক পাঠাল। সারা যখন রাজ প্রাসাদে প্রবেশ করলেন এবং রাজা তাঁর দিকে হাত বাড়ালো তখনই সে (আল্লাহ্‌র গযবে) পাকড়াও হল। যালিম (অবস্থা বেগতিক দেখে সারাকে) বলল, আমার জন্য আল্লাহ্‌র কাছে দু'আ কর; আমি তোমাকে কোন কষ্ট দিব না। তখন

وَاٰتَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٢٢﴾

১২২. আমি তাঁকে দুনিয়ায় দিয়েছিলাম মঙ্গল এবং আখেরাতেও নিশ্চয়ই তিনি হবেন সৎকর্ম-পরায়ণদের অন্যতম।

ثُمَّ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۗ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٢٣﴾

১২৩. অতঃপর আমি তোমার প্রতি প্রত্যাদেশ করলাম, তুমি একনিষ্ঠ-ভাবে ইবরাহীমের (عليه السلام) ধর্মাদর্শ অনুসরণ কর; এবং তিনি মুশরিকদের অন্তর্ভুক্ত ছিলেন না।

اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۗ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٢٤﴾

১২৪. শনিবার পালন তো শুধু তাদের জন্যে বাধ্যতামূলক করা হয়েছিল, যারা এ সম্বন্ধে মতভেদ করতো; যে বিষয়ে তারা মতভেদ করতো তোমার প্রতিপালক তো অবশ্যই কিয়ামতের দিন সে বিষয়ে তাদের বিচার মীমাংসা করে দিবেন যে বিষয়ে তারা মতভেদ করতো।

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ ۗ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٢٥﴾

১২৫. তুমি মানুষকে তোমার প্রতিপালকের পথে আহ্বান কর হিকমত ও সদুপদেশ দ্বারা এবং তাদের সাথে যুক্তিতর্ক কর সদ্ভাবে; তোমার প্রতিপালক, তাঁর পথ ছেড়ে কে বিপদগামী হয় সে সম্বন্ধে

সারা আল্লাহ্‌র কাছে (তার জন্য) দু'আ করলেন। ফলে সে মুক্তি পেয়ে গেল। যালিম আবার তাঁর দিকে হাত বাড়াল। তখনই পূর্বের অনুরূপ কিংবা আরো ভয়ঙ্কর গযবে পতিত হল। এবারও বলল, আমার জন্য আল্লাহ্‌র কাছে দু'আ কর। আমি তোমার কোন ক্ষতি করব না। আবারও তিনি দু'আ করলেন এবং সে মুক্তি পেয়ে গেল। অতঃপর রাজা তার কোন একজন দারওয়ানকে ডাকল এবং বলল, তোমরা আমার কাছে কোন মানুষকে আননি। এনেছ একজন শয়তানকে। পরে রাজা সারার খেদমতের জন্য হাজেরা (নামে এক রমণী)-কে দান করল। অতঃপর সারা ইবরাহীম (আলাইহিস্ সালাম)-এর কাছে এসে গেল। তখন তিনি দাঁড়িয়ে নামায পড়ছিলেন। (নামাযের অবস্থায়) হাতের ইশারায় সারাকে জিজ্ঞেস করলেন কি ঘটল? সারা বলল, আল্লাহ্ যালিম কাফেরের চক্রান্ত তারই বক্ষে উল্টো নিক্ষেপ করেছেন অর্থাৎ নস্যাৎ করে দিয়েছেন। আর রাজা হাজেরাকে আমার খেদমতের জন্য দান করেছে।

আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) (হাদীস বর্ণনান্তে) বললেন, হে আকাশের পানির সন্তান-অর্থাৎ হে আরববাসীগণ! এ 'হাজেরা'ই তোমাদের আদি মাতা। (বুখারী, হাদীস নং ৩৩৫৪)

সবিশেষ অবহিত এবং কে সৎপথে আছে তাও সবিশেষ অবহিত।

وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ۖ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿١٢٦﴾

১২৬. যদি তোমরা প্রতিশোধ গ্রহণ কর, তবে ঠিক ততখানি প্রতিশোধ গ্রহণ করবে যতখানি অন্যায় তোমাদের প্রতি করা হয়েছে; তবে তোমরা ধৈর্যধারণ করলে ধৈর্যশীলদের জন্যে ওটাও তো উত্তম।[১]

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٧﴾

১২৭. তুমি ধৈর্যধারণ করো, তোমার ধৈর্য তো হবে আল্লাহ্‌রই সাহায্যে; তাদের দরুণ দুঃখ করো না এবং তাদের ষড়যন্ত্রে তুমি মনক্ষুণ্ন হয়ো না।

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ﴿١٢٨﴾

১২৮. নিশ্চয় আল্লাহ তাদেরই সঙ্গে আছেন, যারা তাকওয়া অবলম্বন করে এবং যারা সৎকর্মপরায়ণ।[২]

১। (ক) আবূ মূসা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ কষ্ট ও পীড়াদায়ক কথা শোনার পরও আল্লাহ্‌র তা'আলার ন্যায় এত বেশি সবর ধারণ আর কেউ করতে পারে না। এক শ্রেণীর মানুষ তাঁর জন্য সন্তান সাব্যস্ত করে। এরপরও আল্লাহ্ তা'আলা তাদেরকে মাফ করে দেন এবং রিযিক দিয়ে থাকেন। (বুখারী, হাদীস নং ৬০৯৯)

(খ) আব্দুল্লাহ্ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেন, একবার নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) (গণীমতের মাল) যথারীতি বন্টন করলেন। এ সময় একজন আনসারী মন্তব্য করলোঃ আল্লাহ্‌র কসম! এ ভাগ-বাটোয়ারায় আল্লাহ্‌র সন্তুষ্টি উদ্দেশ্য নয়। [আবদুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেন], আমি বললামঃ আমি অবশ্যই নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট একথা বলে দেব। সুতরাং আমি রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট আসলাম। এ সময় তিনি তাঁর সাহাবীদের মাঝে বসা ছিলেন। আমি গোপনে তাঁর নিকট কথাটি বর্ণনা করলাম। কথাটি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর ওপর অত্যন্ত কঠিন বোধ হলো। তাঁর চেহারার রং বদলে গেল। তিনি অত্যন্ত রাগান্বিত হলেন। এমন কি, আমি মনে মনে এটাই পোষণ করতে লাগলাম যে, আহ্! আমি যদি তাঁর নিকট কথাটি বিলকূল না বলতাম।! অতপর তিনি বললেনঃ মূসা (আলাইহিস্ সালাম)-কে এর চেয়েও বেশি কষ্ট দেয়া হয়েছে; কিন্তু তিনি সবর করেছেন। (বুখারী, হাদীস নং ৬১০০)

২। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তোমাদের মধ্যে কেউ তার কাজের দ্বারা নাজাত পাবে না। লোকেরা বলল, আপনিও (আপনার কাজের দ্বারা নাজাত) পাবেন না? তিনি বললেনঃ না, আমিও না। তবে আল্লাহ তাঁর রহমত দিয়ে আমাকে ঢেকে রেখেছেন। সুতরাং সঠিক এবং কর্তব্যনিষ্ঠভাবে কাজ করে আল্লাহ্‌র নৈকট্য অর্জন করো, সকাল-বিকাল এবং রাতের শেষাংশে আল্লাহ্‌র ইবাদত করো। (এসব কাজে) মধ্যম পন্থা অবলম্বন করো, মধ্যম পন্থাই তোমাদেরকে লক্ষ্যে পৌঁছাবে। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৬৩)

সূরাঃ বানী ইসরাইল, মাক্কী

(আয়াতঃ ১১১, রুকূ'ঃ ১২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةُ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ١١١ رُكُوْعَاتُهَا ١٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. তিনি পবিত্র যিনি তাঁর বান্দাকে (রাসূলুল্লাহ্ ﷺ কে) এক রজনীতে ভ্রমণ করিয়েছিলেন মসজিদুল হারাম হতে মসজিদুল আকসায়, (বায়তুল মাক্দিস) যার চতুষ্পার্শ্বকে আমি করেছিলাম বরকতময়, তাকে আমার নিদর্শন দেখাবার জন্যে; তিনিই সর্বশ্রোতা সর্বদ্রষ্টা।[১]

سُبْحٰنَ الَّذِىْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِىْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنْ اٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ①

২. আমি মূসাকে (عليه السلام) কিতাব দিয়েছিলাম এবং তাকে করেছিলাম বানী ইসরাঈলের জন্যে পথ নির্দেশক; (আমি আদেশ করেছিলাম;) তোমরা আমাকে ব্যতীত অপর কাউকেও কর্মবিধায়ক রূপে গ্রহণ করো না।

وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِىْ وَكِيْلًا ؕ ②

৩. (তোমরা তো) তাদের বংশধর যাদেরকে আমি নূহের (عليه السلام) সাথে (নৌকায়) আরোহণ করিয়েছিলাম, অবশ্যই তিনি ছিলেন আমার এক কৃতজ্ঞ বান্দা।

ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ③

৪. এবং আমি কিতাবে (তাওরাতে) বানী ইসরাঈলকে জানিয়েছিলাম, নিশ্চয়ই তোমরা পৃথিবীতে দু'বার

وَقَضَيْنَآ اِلٰى بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ فِى الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِى الْاَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيْرًا ④

১। জাবের ইবনে আব্দুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) কে বলতে শুনেছেন, মি'রাজের ব্যাপারে কুরাইশরা যখন আমাকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করতে চেষ্টা করল তখন আমি (কা'বার) হিজর অংশে দাঁড়ালাম। আর আল্লাহ্ বাইতুল মাক্দিস (মসজিদটি)-কে আমার সামনে উদ্ভাসিত করলেন। ফলে আমি তার দিকে তাকিয়ে তার চিহ্ন ও নিদর্শনগুলো তাদেরকে বলে দিতে থাকলাম। (বুখারী, হাদীস নং ৩৮৮৬)

বিপর্যয় সৃষ্টি করবে এবং তোমরা অতিশয় বাড়াবাড়ি করবে।

৫. অতঃপর এই দু'এর প্রথমটির নির্ধারিত কাল যখন উপস্থিত হলো তখন আমি তোমাদের বিরুদ্ধে প্রেরণ করেছিলাম আমার এমন কিছু বান্দাকে যারা ছিল, অতিশয় শক্তিশালী; অতঃপর তারা ঘরে ঘরে প্রবেশ করে সমস্ত কিছু ধ্বংস করেছিল; আর আল্লাহর এ ওয়াদা কার্যকরী হওয়ারই ছিল।

فَإِذَا جَآءَ وَعْدُ أُولٰىهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَآ أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ فَجَاسُوا خِلٰلَ الدِّيَارِ ۚ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُولًا ⑤

৬. অতঃপর আমি তোমাদেরকে পুনরায় তাদের উপর প্রতিষ্ঠিত করলাম, তোমাদেরকে ধন ও সন্তান-সন্ততি দ্বারা সাহায্য করলাম এবং তোমাদেরকে সংখ্যা গরিষ্ঠ ও শক্তিশালী করলাম।

ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَأَمْدَدْنٰكُمْ بِأَمْوَالٍ وَّبَنِينَ وَجَعَلْنٰكُمْ أَكْثَرَ نَفِيرًا ⑥

৭. তোমরা সৎকর্ম করলে সৎকর্ম নিজেদেরই জন্যে করবে মন্দকর্ম করলে তাও নিজেদের জন্যে; অতঃপর পরবর্তী দ্বিতীয় প্রতিশ্রুতি উপস্থিত হলে (আমি আমার বান্দাদেরকে প্রেরণ করলাম) তোমাদের মুখমন্ডল কালিমাচ্ছন্ন করবার জন্যে, প্রথমবার তারা যেভাবে মসজিদে প্রবেশ করেছিল পুনরায় সেই ভাবেই তাতে প্রবেশ করবার জন্যে এবং তারা যা অধিকার করেছিল তা সম্পূর্ণভাবে ধ্বংস করবার জন্যে।

إِنْ أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنْتُمْ لِأَنْفُسِكُمْ ۖ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا ۚ فَإِذَا جَآءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوٓءٰا وُجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَّلِيُتَبِّرُوا مَا عَلَوْا تَتْبِيرًا ⑦

৮. সম্ভবতঃ তোমাদের প্রতিপালক তোমাদের প্রতি দয়া করবেন; কিন্তু তোমরা যদি তোমাদের পূর্ব আচরণের পুনরাবৃত্তি কর; তবে

عَسٰى رَبُّكُمْ أَنْ يَّرْحَمَكُمْ ۚ وَإِنْ عُدْتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِينَ حَصِيرًا ⑧

আমিও পুনরাবৃত্তি করবো; জাহান্নামকে আমি করেছি সত্য প্রত্যাখ্যানকারীদের জন্যে কারাগার।

إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ﴿٩﴾

৯. এ কুরআন সর্বশ্রেষ্ঠ পথ নির্দেশ করে এবং সৎকর্মপরায়ণ বিশ্বাসী-দেরকে সুসংবাদ দেয় যে, তাদের জন্যে রয়েছে মহাপুরস্কার।

وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٠﴾

১০. আর যারা পরলোকে বিশ্বাস করে না তাদের জন্যে আমি প্রস্তুত করে রেখেছি মর্মান্তিক শাস্তি।

وَيَدْعُ الْإِنسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ ۖ وَكَانَ الْإِنسَانُ عَجُولًا ﴿١١﴾

১১. মানুষ যেভাবে কল্যাণ কামনা করে সেভাবেই অকল্যাণ কামনা করে; মানুষ বড়ই তাড়াহুড়াকারী।

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَتَيْنِ ۖ فَمَحَوْنَا آيَةَ اللَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ ۚ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنَاهُ تَفْصِيلًا ﴿١٢﴾

১২. আমি রাত্রি ও দিবসকে করেছি দু'টি নিদর্শন ও রাত্রিকে করেছি নিরালোক এবং দিবসকে করেছি আলোকময়, যাতে তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের অনুগ্রহ সন্ধান করতে পার এবং যাতে তোমরা বর্ষ সংখ্যা ও হিসাব স্থির করতে পার এবং আমি সব কিছু বিশদভাবে বর্ণনা করেছি।

وَكُلَّ إِنسَانٍ أَلْزَمْنَاهُ طَائِرَهُ فِي عُنُقِهِ ۖ وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كِتَابًا يَلْقَاهُ مَنشُورًا ﴿١٣﴾

১৩. প্রত্যেক মানুষের কৃতকর্ম আমি তার গলায় লাগিয়ে দিয়েছি[১] এবং কিয়ামতের দিন আমি তার জন্যে বের করবো এক কিতাব, যা সে পাবে উন্মুক্ত।

১। আব্দুল্লাহ্ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, এক ব্যক্তি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে জিজ্ঞেস করলঃ কোন কাজটি সর্বোত্তম তিনি বললেনঃ সময়মত নামায পড়া, মাতা-পিতার সাথে সৎ ব্যবহার করা, অতঃপর আল্লাহ্‌র পথে জিহাদ করা। (বুখারী, হাদীস নং ৭৫৩৪)

اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ؕ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ﴿۱۴﴾

১৪. (আমি বলবোঃ) তুমি তোমার আমলনামা পাঠ কর; আজ তুমি নিজেই তোমার হিসাব-নিকাশের জন্যে যথেষ্ট।

مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِىْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ؕ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ﴿۱۵﴾

১৫. যারা সৎপথ অবলম্বন করবে তারা তো নিজেদেরই মঙ্গলের জন্যে সৎপথ অবলম্বন করবে এবং যারা পথভ্রষ্ট হবে তারা তো পথভ্রষ্ট হবে নিজেদেরই ধ্বংসের জন্যে এবং কেউ অন্য কারো ভার বহন করবে না; আমি রাসূল না পাঠান পর্যন্ত কাউকেও শাস্তি দেই না।

وَاِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا ﴿۱۶﴾

১৬. যখন আমি কোন জনপদকে ধ্বংস করার ইচ্ছা করি তখন ওর সমৃদ্ধশালী ব্যক্তিদেরকে (সৎকর্ম করতে) আদেশ করি; কিন্তু তারা সেথায় অসৎকর্ম করে; অতঃপর ওর প্রতি দন্ডাজ্ঞা ন্যায়সঙ্গত হয়ে যায় এবং ওটাকে সম্পূর্ণরূপে বিধ্বস্ত করি।

وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ نُوْحٍ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ﴿۱۷﴾

১৭. নূহের (عليه السلام) পর আমি কত মানব গোষ্ঠী ধ্বংস করেছি। তোমার প্রতিপালকই তাঁর বান্দাহদের পাপাচারণের সংবাদ রাখা ও পর্যবেক্ষণের জন্যে যথেষ্ট।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿۱۸﴾

১৮. কেউ পার্থিব সুখ-সম্ভোগ কামনা করলে আমি যাকে যা ইচ্ছা সত্বর দিয়ে থাকি; পরে তার জন্যে জাহান্নাম নির্ধারিত করি, সেখানে সে প্রবেশ করবে নিন্দিত ও অনুগ্রহ হতে দূরীকৃত অবস্থায়।

وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ

১৯. যারা বিশ্বাসী হয়ে পারলোক কামনা করে এবং ওর জন্যে যথাযথ

مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿١٩﴾

চেষ্টা করে তাদের চেষ্টা স্বীকৃত হয়ে থাকে।

كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ؕ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ﴿٢٠﴾

২০. তোমার প্রতিপালক তাঁর দান দ্বারা এদেরকে ও ওদেরকে সাহায্য করেন এবং তোমার প্রতিপালকের দান (কারো জন্যই) নিষিদ্ধ নয়।

اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكْبَرُ تَفْضِيْلًا ﴿٢١﴾

২১. লক্ষ্য কর, আমি কিভাবে তাদের এক দলকে অপরের উপর শ্রেষ্ঠত্ব দিয়েছিলাম, পরকাল তো নিশ্চয়ই মর্যাদায় শ্রেষ্ঠ ও শ্রেয়ত্বে শ্রেষ্ঠতর।

لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا مَّخْذُوْلًا ﴿٢٢﴾

২২. আল্লাহর সাথে অপর কোন মা'বূদ স্থির করো না; করলে নিন্দিত ও নিঃসহায় হয়ে পড়বে।

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ؕ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ﴿٢٣﴾

২৩. তোমার প্রতিপালক নির্দেশ দিয়েছেন যে, তোমরা তিনি ছাড়া অন্য কারো ইবাদত করবে না এবং পিতা-মাতার প্রতি সদ্ব্যবহার করবে; তাদের একজন অথবা উভয়েই তোমার জীবদ্দশায় বার্ধক্যে উপনীত হলেও তাদেরকে বিরক্তি সূচক কিছু বলো না এবং তাদেরকে ধমক দিওনা; তাদের সাথে বলো সম্মান সূচক নম্র কথা।

وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ﴿٢٤﴾

২৪. অনুকম্পায় তাদের প্রতি বিনয়াবনত থেকো এবং বলোঃ হে আমার প্রতিপালক! তাঁদের উভয়ের প্রতি দয়া করুন যেভাবে শৈশবে তাঁরা আমাকে প্রতিপালন করেছিলেন।

رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ؕ اِنْ تَكُوْنُوْا

২৫. তোমাদের প্রতিপালক তোমাদের অন্তরে যা আছে তা ভাল জানেন; তোমরা সৎকর্মপরায়ণ হলে

صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ﴿۲۵﴾

যারা সর্বদা আল্লাহ অভিমুখী আল্লাহ তাদের প্রতিক্ষমাশীল।

وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿۲۶﴾

২৬. আত্মীয়-স্বজনকে দিবে তার প্রাপ্য এবং অভাবগ্রস্থ ও মুসাফিরকেও এবং কিছুতেই অপব্যয় করো না।

اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ﴿۲۷﴾

২৭. নিশ্চয় যারা অপব্যয় করে তারা শয়তানের ভাই এবং শয়তান তার প্রতিপালকের প্রতি অতিশয় অকৃতজ্ঞ।

وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَآءَ رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُوْرًا ﴿۲۸﴾

২৮. আর তুমি নিজেই যখন তোমার প্রতিপালকের নিকট হতে করুণা লাভের প্রত্যাশায় ওর সন্ধানে থাকো তখন তাদেরকে যদি বিমুখই কর, তাদের সাথে নম্রভাবে কথা বলো।

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ﴿۲۹﴾

২৯. তোমার হাত মুষ্টিবদ্ধ করে গলায় বেঁধনা (কার্পণ্য কর না) আবার তাকে একেবারে খোলাও ছেড়ে দিওনা (অপচয় কর না) এমন করলে তুমি তিরস্কৃত ও নিঃস্ব হবে।

اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ﴿۳۰﴾

৩০. তোমার প্রতিপালক যার জন্যে ইচ্ছা তার জীবনোপকরণ বর্ধিত করেন এবং যার জন্যে ইচ্ছা তা হ্রাস করেন; তিনি তাঁর বান্দাদেরকে ভালভাবে জানেন ও দেখেন।

وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ ؕ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاً كَبِيْرًا ﴿۳۱﴾

৩১. তোমাদের সন্তানদেরকে তোমরা দারিদ্র-ভয়ে হত্যা করো না, তাদেরকে ও তোমাদেরকে আমিই রুযী দিয়ে থাকি; তাদেরকে হত্যা করা মহাপাপ।

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿۳۲﴾

৩২. তোমরা জিনার নিকটবর্তী হয়ো না, এটা অশ্লীল ও নিকৃষ্ট আচরণ।

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّي الْقَتْلِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا ﴿۳۳﴾

৩৩. আল্লাহ যার হত্যা নিষিদ্ধ করেছেন যথার্থ কারণ ছাড়া তাকে হত্যা করো না; কেউ অন্যায়ভাবে নিহত হলে তার উত্তরাধিকারীকে তো আমি প্রতিশোধ গ্রহণের অধিকার দিয়েছি; কিন্তু হত্যার ব্যাপারে সে যেন বাড়াবাড়ি না করে; সে তো সাহায্য প্রাপ্ত হয়েছেই।

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۪ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔوْلًا ﴿۳۴﴾

৩৪. ইয়াতীমরা বয়োপাপ্ত না হওয়া পর্যন্ত সদুদ্দেশ্য ছাড়া তাদের সম্পত্তির নিকটবর্তী হয়ো না এবং প্রতিশ্রুতি পালন করো; নিশ্চয়ই প্রতিশ্রুতি সম্পর্কে কৈফিয়ত তলব করা হবে।

وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿۳۵﴾

৩৫. মেপে দেয়ার সময় পূর্ণমাপে দিবে এবং ওজন করবে সঠিক দাঁড়ি-পাল্লায়, এটাই উত্তম ও পরিণামে উৎকৃষ্ট।

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا ﴿۳۶﴾

৩৬. যে বিষয়ে তোমার কোন জ্ঞান নেই সে বিষয়ের পিছে পড়ো না। (অনুমান দ্বারা) নিশ্চিত কর্ণ, চক্ষু, হৃদয় ওদের প্রত্যেকের নিকট কৈফিয়ত তলব করা হবে।

وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ﴿۳۷﴾

৩৭. ভূ-পৃষ্ঠে দম্ভভরে বিচরণ করো না, তুমি তো কখনোই পদভারে ভূ-পৃষ্ঠ বিদীর্ণ করতে পারবে না এবং উচ্চতায় তুমি কখনোই পর্বত প্রমাণ হতে পারবে না।

كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ﴿۳۸﴾

৩৮. এসবের মধ্যে যেগুলি মন্দ সেগুলি তোমার প্রতিপালকের নিকট ঘৃণ্য।

ذٰلِكَ مِمَّآ اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ؕ وَلَا تَجْعَلْ

৩৯. তোমার প্রতিপালক ওহীর দ্বারা তোমাকে যে হিকমত দান করেছেন

مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِىْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿۳۹﴾

এগুলি তার অন্তর্ভুক্ত; তুমি আল্লাহর সাথে কোন মা'বূদ স্থির করো না, করলে তুমি তিরস্কৃত ও আল্লাহর অনুগ্রহ হতে দূরীভূত অবস্থায় জাহান্নামে নিক্ষিপ্ত হবে।

اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ اِنَاثًا ؕ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا ﴿۴۰﴾

৪০. তোমাদের প্রতিপালক কি তোমাদের জন্যে পুত্র সন্তান নির্ধারিত করেছেন এবং তিনি নিজে ফেরেশ্‌তাদেরকে কন্যারূপে গ্রহণ করেছেন? তোমরা তো নিশ্চয়ই ভয়ানক কথা বলে থাকো।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِىْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا ؕ وَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ﴿۴۱﴾

৪১. এই কুরআনে (বহু নীতিবাক্য) আমি বিভিন্নভাবে বিবৃত করেছি যাতে তারা উপদেশ গ্রহণ করে; কিন্তু তাতে তাদের বিমুখতাই বৃদ্ধি পায়।

قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗٓ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ اِذًا لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِى الْعَرْشِ سَبِيْلًا ﴿۴۲﴾

৪২. বলঃ তাদের কথামত যদি তাঁর সাথে আরো মা'বূদ থাকতো তবে তারা আরশ্‌ অধিপতি পর্যন্ত পৌঁছে যাওয়ার উপায় অন্বেষণ করতো।

سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا ﴿۴۳﴾

৪৩. তিনি পবিত্র, মহিমান্বিত এবং তারা যা বলে তা হতে তিনি বহু ঊর্ধ্বে।

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ وَاِنْ مِّنْ شَىْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿۴۴﴾

৪৪. সপ্ত আকাশ, পৃথিবী এবং ওদের অন্তর্বর্তী সব কিছু তাঁরই পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে এবং এমন কিছু নেই যা তাঁর সপ্রশংস পবিত্রতা ঘোষণা করে না; কিন্তু ওদের পবিত্রতা ঘোষণা তোমরা অনুধাবন করতে পার না; নিশ্চয়ই তিনি সহনশীল, ক্ষমাপরায়ণ।

وَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ

৪৫. তুমি যখন কুরআন পাঠ কর তখন তোমার ও যারা পরলোকে

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ﴿٤٥﴾

বিশ্বাস করে না তাদের মধ্যে এক প্রচ্ছন্ন পর্দা রেখে দেই।[১]

وَّجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ﴿٤٦﴾

৪৬. আমি তাদের অন্তরের উপর আবরণ দিয়েছি যেন তারা উপলব্ধি করতে না পারে এবং তাদেরকে বধির করেছি এবং যখন তুমি কুরআনে তোমার একমাত্র রবকে স্মরণ কর তখন তারা মুখ ফিরিয়ে সরে পড়ে।

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ بِهٖٓ اِذْ يَسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ وَاِذْ هُمْ نَجْوٰٓى اِذْ يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ﴿٤٧﴾

৪৭. যখন তারা কান পেতে তোমার কথা শুনে তখন তারা কেন কান পেতে তা শুনে তা আমি ভাল করে জানি এবং (এটাও জানি) গোপনে আলোচনাকালে যালিমরা বলেঃ তোমরা তো এক যাদুগ্রস্ত ব্যক্তির অনুসরণ করছো।

اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ﴿٤٨﴾

৪৮. দেখো, তারা তোমার কি উপমা দেয়! তারা পথভ্রষ্ট হয়েছে এবং তারা পথ পাবে না।

وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿٤٩﴾

৪৯. তারা বলেঃ আমরা অস্থিতে পরিণত ও চূর্ণ-বিচূর্ণ হলেও কি নতুন সৃষ্টিরূপে পুনরুত্থিত হবো?

قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا ﴿٥٠﴾

৫০. বলঃ তোমরা হয়ে যাও পাথর অথবা লৌহ।

১। সাঈদ বিন জুন্দুব (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ সূরা লাহাব অবতীর্ণ হল, তখন আবূ লাহাবের স্ত্রী নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট আসল, আর তখন তাঁর নিকট আবূ বকর (রাযিআল্লাহু আনহু) ও ছিলেন। যখন আবূ বকর (রাযিআল্লাহু আনহু)-কে তাকে দেখতে পেলেন, তখন বললেনঃ ইয়া রাসূলাল্লাহ্! (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আপনি এখান থেকে চলে গেলে ভাল হয়, তিনি বললেনঃ সে আমাকে দেখতে পাবেনা। অতঃপর সে এসে আবূ বকর (রাযিআল্লাহু আনহু) লক্ষ্য করে বলতে লাগল, হে আবূ বকর তোমার সাথী আমাকে তো কবিতার মাধ্যমে নিন্দা করেছে। তখন আবূ বকর (রাযিআল্লাহু আনহু) বললেনঃ এটা আল্লাহ্‌র তরফ থেকে, সে তো কবিতা জানে না এবং সে (আবূ লাহাবের স্ত্রী) এই বলে বিদায় হলো, সে তোমার নিকট সত্যবাদী বলে পরিচিত। অতঃপর আবূ বকর সিদ্দিক (রাযিআল্লাহু আনহু) বললেন, হে আল্লাহ্‌র রাসূল সে তো আপনাকে দেখে নাই। তিনি বললেনঃ একজন ফেরেশ্‌তা তার এবং আমার মাঝখানে পর্দা করে রেখেছিল। (মুসনাদে আবূ ইয়া'লা)

اَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِيْ صُدُوْرِكُمْ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ يُّعِيْدُنَا ؕ قُلِ الَّذِيْ فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُوْنَ اِلَيْكَ رُءُوْسَهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ ؕ قُلْ عَسٰى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا ﴿۵۱﴾

৫১. অথবা এমন সৃষ্টি যা তোমাদের ধারণায় খুবই কঠিন; তারা বলবেঃ কে আমাদেরকে পুনরত্থিত করবে? বলঃ তিনিই যিনি তোমাদেরকে প্রথমবার সৃষ্টি করেছেন; অতপর তারা তোমার সামনে মাথা নাড়বে ও বলবে ওটা কবে? বলঃ হবে সম্ভবত শীঘ্রই।

يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ وَتَظُنُّوْنَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۵۲﴾

৫২. যেদিন তিনি তোমাদেরকে আহ্বান করবেন এবং তোমরা প্রশংসার সাথে তাঁর আহ্বানে সাড়া দিবে এবং তোমরা মনে করবেঃ তোমরা অল্পকালই অবস্থান করেছিলে?

وَقُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿۵۳﴾

৫৩. আমার বান্দাদেরকে যা উত্তম তা বলতে বলঃ শয়তান তাদের মধ্যে বিভেদ সৃষ্টির উস্কানি দেয়; নিশ্চয়ই শয়তান মানুষের প্রকাশ্য শত্রু।

رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ ؕ اِنْ يَّشَاْ يَرْحَمْكُمْ اَوْ اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ ؕ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا ﴿۵۴﴾

৫৪. তোমাদের প্রতিপালক তোমাদেরকে ভালভাবে জানেন; ইচ্ছা করলে তিনি তোমাদের প্রতি দয়া করেন এবং ইচ্ছা করলে তোমাদেরকে শাস্তি দেন; আমি তোমাকে তাদের উপর অভিভাবক করে পাঠায় নি।

وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ عَلٰى بَعْضٍ ۚ وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿۵۵﴾

৫৫. যারা আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে আছে তাদেরকে তোমার প্রতিপালক ভালভাবে জানেন; আমি তো নবীদের কতককে কতকের উপর মর্যদা দিয়েছি; দাঊদকে (عليه السلام) আমি যাবুর দিয়েছি।

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا ﴿٥٦﴾

৫৬. বলঃ তোমরা তিনি (আল্লাহ) ব্যতীত যাদেরকে মা'বূদ মনে কর তাদেরকে আহ্বান কর; করলে দেখবে তোমাদের দুঃখ-দৈন্য দূর করবার অথবা পরিবর্তন করবার শক্তি তাদের নেই।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ ؕ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ﴿٥٧﴾

৫৭. তারা যাদেরকে আহ্বান করে তারাই তো তাদের প্রতিপালকের নৈকট্য লাভের উপায় সন্ধান করে যে তাদের মধ্যে কে কত নিকট হতে পারে, তাঁর দয়া প্রত্যাশা করে ও তাঁর শাস্তিকে ভয় করে; তোমার প্রতিপালকের শাস্তি ভয়াবহ।

وَاِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِى الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿٥٨﴾

৫৮. এমন কোন জনপদ নেই যা আমি কিয়ামতের দিনের পূর্বে ধ্বংস করবো না অথবা যাকে কঠোর শাস্তি দিবো না; এটা তো কিতাবে লিপিবদ্ধ আছে।

وَمَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّآ اَنْ كَذَّبَ بِهَا الْاَوَّلُوْنَ ؕ وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا ؕ وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا ﴿٥٩﴾

৫৯. পূর্ববর্তীগণ কৃর্তক নিদর্শন অস্বীকার করাই আমাকে নিদর্শন প্রেরণ করা হতে বিরত রাখে; আমি স্পষ্ট নিদর্শনস্বরূপ সামূদের নিকট উষ্ট্রী পাঠিয়েছিলাম, অতঃপর ওর প্রতি তারা যুলুম করেছিল; আমি ভয় প্রদর্শনের জন্যেই নিদর্শন প্রেরণ করি।

وَاِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ رَبَّكَ اَحَاطَ بِالنَّاسِ ؕ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِىْٓ اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِى الْقُرْاٰنِ ؕ وَنُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ﴿٦٠﴾

৬০. (স্মরণ কর,) আর যখন আমি তোমাকে বলেছিলাম যে, তোমার প্রতিপালক মানুষকে পরিবেষ্টন করে আছেন; আমি যে দৃশ্য (মি'রাজের রাতে) তোমাকে দেখিয়েছি তা, ও কুরআনে উল্লিখিত অভিশপ্ত বৃক্ষ শুধু মানুষের পরীক্ষার জন্যে; আমি

তাদেরকে ভীতি প্রদর্শন করি; কিন্তু এটা তাদের তীব্র অবাধ্যতাই বৃদ্ধি করে।

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ قَالَ ءَاَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا ۚ﴿۶۱﴾

৬১. স্মরণ কর, যখন আমি ফেরেশ্‌তাদেরকে বললামঃ আদমের (عليه السلام) প্রতি সিজদাবনত হও; তখন ইবলীস ছাড়া সবাই সিজদাবনত হলো; সে বললোঃ আমি কি তাকে সিজ্‌দা করবো যাকে আপনি কাঁদা মাটি হতে সৃষ্টি করেছেন?

قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِيْ كَرَّمْتَ عَلَيَّ ۫ لَئِنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۶۲﴾

৬২. সে (আরো) বললোঃ দেখুন! তাকে যে আপনি আমার উপর মর্যাদা দান করলেন? কিয়ামতের দিন পর্যন্ত যদি আমাকে অবকাশ দেন তাহলে আমি অল্প কয়েকজন ছাড়া তার বংশধরদের সমূলে নষ্ট করে ফেলবো।

قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ جَزَآءً مَّوْفُوْرًا ﴿۶۳﴾

৬৩. আল্লাহ বললেনঃ যাও, জাহান্নামই সম্যক শাস্তি তোমার এবং তাদের যারা তোমার অনুসরণ করবে।

وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَ رَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ؕ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۶۴﴾

৬৪. তোমার আহ্বানে তাদের মধ্যে যাকে পার সত্যচ্যুত কর, তোমার অশ্বারোহী ও পদাতিক বাহিনী দ্বারা তাদেরকে আক্রমন কর এবং তাদের ধনে ও সন্তান-সন্ততিতে শরীক হয়ে যাও, ও তাদেরকে প্রতিশ্রুতি দেও; শয়তান তাদেরকে যে প্রতিশ্রুতি দেয় তা ছলনা মাত্র।

اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ﴿۶۵﴾

৬৫. আমার বান্দাহদের উপর তোমার কোন ক্ষমতা নেই; কর্ম বিধায়ক হিসেবে তোমার প্রতিপালকই যথেষ্ট।

رَبُّكُمُ الَّذِىْ يُزْجِىْ لَكُمُ الْفُلْكَ فِى الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿٦٦﴾

৬৬. তোমাদের প্রতিপালক তিনিই যিনি তোমাদের জন্যে সমুদ্রে জলযান পরিচালিত করেন, যাতে তোমরা তাঁর অনুগ্রহ সন্ধান করতে পার; তিনি তোমাদের প্রতি পরম দয়ালু।

وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِى الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُوْنَ اِلَّاۤ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىكُمْ اِلَى الْبَرِّ اَعْرَضْتُمْ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ﴿٦٧﴾

৬৭. সমুদ্রে যখন তোমাদেরকে বিপদ স্পর্শ করে তখন শুধু তিনি ছাড়া অপর যাদেরকে তোমরা আহ্বান করে থাকো তারা তোমাদের মন হতে সরে যায়; অতঃপর তিনি যখন স্থলে ভিড়িয়ে তোমাদেরকে উদ্ধার করেন তখন তোমরা মুখ ফিরিয়ে নাও; মানুষ বড়ই অকৃতজ্ঞ।

اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ وَكِيْلًا ﴿٦٨﴾

৬৮. তোমরা কি নিশ্চিন্ত আছ যে, তিনি তোমাদেরকে স্থলে কোথাও ভূ-গর্ভস্থ করবেন না অথবা তোমাদের উপর কংকর বর্ষণ করবেন না? তখন তোমরা তোমাদের কোন কর্ম বিধায়ক পাবে না।

اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً اُخْرٰى فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ۙ ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ تَبِيْعًا ﴿٦٩﴾

৬৯. অথবা তোমরা কি নিশ্চিন্ত আছ যে, তোমাদেরকে আর একবার সমুদ্রে নিয়ে যাবেন না এবং তোমাদের বিরুদ্ধে প্রচণ্ড ঝটিকা পাঠাবেন না এবং প্রত্যাখ্যান করার জন্যে তোমাদেরকে নিমজ্জিত করবেন না? তখন তোমরা এ বিষয়ে আমার বিরুদ্ধে কোন সাহায্যকারী পাবে না।

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِىْۤ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا ﴿٧٠﴾

৭০. আমি তো আদম সন্তানকে মর্যাদা দান করেছি, স্থলে ও সমুদ্রে তাদের চলাচলের বাহন দিয়েছি; তাদের উত্তম রুযী দান করেছি এবং যাদের আমি সৃষ্টি করেছি তাদের অনেকের উপর শ্রেষ্ঠত্ব দিয়েছি।

يَوْمَ نَدْعُوا كُلَّ أُنَاسٍ بِإِمَامِهِمْ ۖ فَمَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَأُولَٰئِكَ يَقْرَءُونَ كِتَابَهُمْ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٧١﴾

৭১. সে দিন আমি প্রত্যেক সম্প্রদায়কে তাদের নেতাসহ আহ্বান করবো; অনন্তর যাদেরকে ডান হাতে তাদের আমলনামা দেয়া হবে তারা তাদের আমলনামা পাঠ করবে এবং তাদের উপর সামান্য পরিমাণও যুলুম করা হবে না।

وَمَنْ كَانَ فِي هَٰذِهِ أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَىٰ وَأَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٧٢﴾

৭২. যে ইহলোকে অন্ধ পরলোকেও সে অন্ধ এবং অধিকতর পথভ্রষ্ট।

وَإِنْ كَادُوا لَيَفْتِنُونَكَ عَنِ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهُ ۖ وَإِذًا لَاتَّخَذُوكَ خَلِيلًا ﴿٧٣﴾

৭৩. আমি তোমার প্রতি যা প্রত্যাদেশ করেছি তা হতে তোমার পদস্খলন ঘটাবার জন্যে তারা চূড়ান্ত চেষ্টা করেছে, যাতে তুমি আমার সম্বন্ধে ওর বিপরীত কিছু মিথ্যা উদ্ভাবন কর; সফলকাম হলে তারা অবশ্যই তোমাকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করতো।

وَلَوْلَا أَنْ ثَبَّتْنَاكَ لَقَدْ كِدْتَ تَرْكَنُ إِلَيْهِمْ شَيْئًا قَلِيلًا ﴿٧٤﴾

৭৪. আমি তোমাকে অবিচলিত না রাখলে তুমি তাদের দিকে প্রায় কিছুটা ঝুঁকেই পড়তে।

إِذًا لَأَذَقْنَاكَ ضِعْفَ الْحَيَاةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيرًا ﴿٧٥﴾

৭৫. (তুমি ঝুঁকে পড়লে) অবশ্যই তোমাকে ইহজীবনে ও পরজীবনে দ্বিগুণ (শাস্তি) আস্বাদন কারাতাম, তখন আমার বিরুদ্ধে তোমার জন্যে কোন সাহায্যকারী পেতে না।

وَإِنْ كَادُوا لَيَسْتَفِزُّونَكَ مِنَ الْأَرْضِ لِيُخْرِجُوكَ مِنْهَا وَإِذًا لَا يَلْبَثُونَ خِلَافَكَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٧٦﴾

৭৬. তারা তোমাকে দেশ হতে উৎখাত করবার চূড়ান্ত চেষ্টা করেছিল তোমাকে সেথা হতে বহিষ্কার করার জন্যে; তাহলে তোমার পর তারাও সেথায় অল্পকালই টিকে থাকতো।

سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا ﴿٧٧﴾

৭৭. আমার রাসূলদের মধ্যে তোমার পূর্বে যাদেরকে আমি পাঠিয়েছিলাম তাদের ক্ষেত্রেও ছিল এরূপ নিয়ম এবং তুমি আমার নিয়মের কোন পরিবর্তন পাবে না।

اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ؕ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ﴿٧٨﴾

৭৮. সূর্য হেলে পড়বার পর হতে রাত্রির ঘন অন্ধকার পর্যন্ত নামায কায়েম করবে এবং কায়েম করবে ফজরের নামায; ফজরের নামায পরিলক্ষিত হয় বিশেষভাবে।[১]

وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿٧٩﴾

৭৯. আর রাত্রির কিছু অংশে তাহাজ্জুদ কায়েম করবে; এটা তোমার এক অতিরিক্ত কর্তব্য; আশা করা যায়, তোমার প্রতিপালক তোমাকে প্রতিষ্ঠিত করবেন প্রশংসিত স্থানে (মহা শাফায়াতের মর্যাদায়)।[২]

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেনঃ আমি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) কে বলতে শুনেছি যে, একা নামায পড়ার চাইতে জামাআতের সাথে পড়লে পঁচিশগুণ সওয়াব বেশি। দিনের এবং রাতের ফেরেশ্‌তাগণ ফজরের নামাযে একত্রিত হন। অতঃপর আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেনঃ যদি তোমরা চাও (এর প্রমাণ স্বরূপ কুরআনের এই আয়াত) তাহলে এই আয়াত পাঠ কর- اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا "ফজরের নামাযে, কুরআন পড়ার সময় (ফেরেশতাদের) উপস্থিতির সময়।" [সূরা বানী ইসরাইল, আয়াত-৭৮) (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৮)

২। (ক) আদম ইবনে আলী থেকে বর্ণিত। তিনি বলেনঃ আমি ইবনে উমরকে বলতে শুনেছি, কিয়ামতের দিন লোকেরা দলে দলে বিভক্ত হয়ে যাবে। প্রত্যেক উম্মত তার নিজের নবীর কাছে যাবে। তারা বলবেঃ হে অমুক (নবী)! আল্লাহ্‌র কাছে আমাদের জন্য শাফা'আত করুন। হে অমুক (নবী)! আল্লাহ্‌র কাছে আমাদের জন্য শাফা'আত করুন। (কিন্তু তারা কেউ শাফা'আত করতে রাযী হবেন না।)। শেষ পর্যন্ত শাফা'আতের দায়িত্ব এসে পড়বে নবী (মুহাম্মাদ) (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর ওপর। আর এই দিনেই আল্লাহ্ তাঁকে মাকামে মাহ্‌মূদে দাঁড় করাবেন (প্রশংসিত স্থানে)। (বুখারী, হাদীস নং ৪৭১৮)

(খ) জাবের ইবনে আব্দুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি আযান শুনার পর বলবে- 'আল্লাহুম্মা রব্বা হাযিহিদ্ দা'ওয়াতিত্ তাম্মাতি ওয়াস সলাতিল কা-ইমা, আতি মুহাম্মাদানিল ওয়াসিলাতা ওয়াল ফাযীলাতা ওয়াব'আসহু মাকামাম্ মাহ্‌মুদানিল্লাযী ওয়া'আত্‌তাহ্'। অর্থঃ "হে আল্লাহ্ এই পরিপূর্ণ আহ্বানের মালিক এবং প্রতিষ্ঠিত নামাযের রব। মুহাম্মাদকে অছিলার (মাধ্যম) ও শ্রেষ্ঠত্ব দান করো এবং তাঁকে মাকামে মাহ্‌মূদে দাঁড় করাও যার ওয়াদা তুমি তাঁর কাছে করেছো।" তার জন্য আমার শাফা'আত হালাল হয়ে যাবে। এ হাদীসটি হামযা ইবনে আবদুল্লাহ্ তার বাপের কাছ থেকে এবং তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন। (বুখারী, হাদীস নং ৪৭১৯)

وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ﴿٨٠﴾

৮০. আর দু'আ করঃ হে আমার প্রতিপালক! আপনি আমাকে সেখানে নিয়ে যান সত্যতা সহকারে এবং সেখান হতে আমাকে সত্য সহকারে বের করে নিন এবং আপনার নিকট হতে আমাকে দান করুন বিজয় ও সাহায্য (অকাট্য দলীল)।

وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ﴿٨١﴾

৮১. আর বলঃ সত্য এসেছে এবং মিথ্যা বিলুপ্ত হয়েছে; মিথ্যা তো বিলুপ্ত হয়েই থাকে।

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ﴿٨٢﴾

৮২. আমি অবতীর্ণ করি কুরআন, যা বিশ্বাসীদের জন্যে আরোগ্য ও দয়া, কিন্তু তা সীমালঙ্ঘনকারীদের ক্ষতিই বৃদ্ধি করে।

وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوْسًا ﴿٨٣﴾

৮৩. যখন আমি মানুষের উপর অনুগ্রহ করি তখন সে মুখ ফিরিয়ে নেয় ও অহংকারে দূরে সরে যায় এবং তাকে অনিষ্ট স্পর্শ করলে সে একেবারে হতাশ হয়ে পড়ে।

قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ؕ فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ﴿٨٤﴾

৮৪. বল, প্রত্যেকেই নিজ প্রকৃতি অনুযায়ী কাজ করে থাকে এবং চলার পথে কে সর্বাপেক্ষা নির্ভুল তোমার প্রতিপালক তা ভালোভাবে অবগত আছেন।

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ؕ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّيْ وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٥﴾

৮৫. তোমাকে তারা রূহ সম্পর্কে প্রশ্ন করে, তুমি বলঃ রূহ হলো আমার প্রতিপালকের আদেশ (সম্পর্কিত একটি বিষয়।) এ বিষয়ে তোমাদেরকে সামান্য জ্ঞানই দেয়া হয়েছে।

وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ

৮৬. ইচ্ছা করলে আমি তোমার প্রতি যা প্রত্যাদেশ করেছি তা অবশ্যই

ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَيْنَا وَكِيْلًا ﴿٨٧﴾

প্রত্যাহার করতে পারতাম; তাহলে তুমি এ বিষয়ে আমার বিরুদ্ধে কোন কর্ম বিধায়ক পেতে না।

اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيْرًا ﴿٨٨﴾

৮৭. এটা প্রত্যাহার না করা তোমার প্রতিপালকের দয়া; তোমার প্রতি আছে তাঁর মহা অনুগ্রহ।

قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ﴿٨٩﴾

৮৮. বলঃ যদি মানুষ ও জ্বিন সমবেত হয় এই কুরআনের অনুরূপ কুরআন আনয়নের জন্যে যদিও তারা পরস্পরকে সাহায্য করে, (তবুও) তারা এর অনুরূপ কুরআন আনয়ন করতে পারবে না।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۫ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٩٠﴾

৮৯. আমি মানুষের জন্যে এই কুরআনে বিভিন্ন উপমার দ্বারা আমার বাণী বিশদভাবে বর্ণনা করেছি; কিন্তু অধিকাংশ মানুষ সত্য প্রত্যাখ্যান ব্যতীত ক্ষান্ত হলো না।

وَقَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ يَنْۢبُوْعًا ﴿٩١﴾

৯০. আর তারা বলেঃ কখনই আমরা তোমার উপর বিশ্বাস স্থাপন করবো না, যতক্ষণ না তুমি আমাদের জন্যে ভূমি হতে এক প্রস্রবণ উৎসারিত করবে।

اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِيْرًا ﴿٩٢﴾

৯১. অথবা তোমার খেজুরের কিংবা আঙ্গুরের এক বাগান হবে যার ফাঁকে ফাঁকে তুমি অজস্র ধারায় প্রবাহিত করে দেবে নদী-নালা।

اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا اَوْ تَاْتِيَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ قَبِيْلًا ﴿٩٣﴾

৯২. অথবা তুমি যেমন বলে থাকো, তদানুযায়ী আকাশকে খন্ড-বিখন্ড করে আমাদের উপর ফেলবে অথবা আল্লাহ ও ফেরেশ্‌তাদেরকে আমাদের সামনে উপস্থিত করবে।

اَوْ يَكُوْنَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰى فِي

৯৩. অথবা তোমার একটি স্বর্ণনির্মিত গৃহ হবে, অথবা তুমি আকাশে

السَّمَآءِ ؕ وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ؕ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿۹۳﴾

আরোহণ করবে; অবশ্য তোমার আকাশ আরোহণেও আমরা কখনো বিশ্বাস করবো না যতক্ষণ তুমি আমাদের প্রতি এক কিতাব অবতীর্ণ না করবে যা আমরা পাঠ করবো; বলঃ পবিত্র মহান আমার প্রতিপালক! আমি তো শুধু একজন মানুষ, একজন রাসূল।

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰٓى اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿۹۴﴾

৯৪. 'আল্লাহ কি মানুষকে রাসূল করে পাঠিয়েছেন?' মানুষকে এই উক্তিই বিশ্বাস স্থাপন হতে বিরত রাখে, যখন তাদের নিকট আসে পথ-নির্দেশ।

قُلْ لَّوْ كَانَ فِي الْاَرْضِ مَلٰٓئِكَةٌ يَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّيْنَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا ﴿۹۵﴾

৯৫. বলঃ ফেরেশ্‌তারা যদি নিশ্চিন্ত হয়ে পৃথিবীতে বিচরণ করতো তবে আমি আকাশ হতে ফেরেশ্‌তাকেই তাদের নিকট রাসূল করে পাঠাতাম।

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًاۢ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًاۢ بَصِيْرًا ﴿۹۶﴾

৯৬. বলঃ আমার ও তোমাদের মধ্যে সাক্ষী হিসেবে আল্লাহই যথেষ্ট, তিনি তাঁর বান্দাদেরকে সবিশেষ জানেন ও দেখেন।

وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا ؕ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ﴿۹۷﴾

৯৭. আল্লাহ যাদেরকে পথ নির্দেশ করেন তারা তো পথপ্রাপ্ত এবং যাদেরকে তিনি পথভ্রষ্ট করেন, তুমি কখনই তাঁকে ব্যতীত অন্য কাউকেও তাদের অভিভাবক পাবে না, কিয়ামতের দিন আমি তাদেরকে সমবেত করবো তাদের মুখে[১] ভর দিয়ে চলা অবস্থায়; অন্ধ, বোবা ও

১। আনাস ইবনে মালিক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, এক ব্যক্তি বললঃ " হে আল্লাহ্‌র রাসূল! কাফেরদেরকে কি হাশরের দিন নিম্নমুখী করে একত্রিত করা হবে?" তিনি বললেনঃ "যিনি এ দুনিয়ায় তাকে দু'পায়ের ওপর হাঁটাতে পারলেন তিনি কি হাশরের দিন তাকে নিম্নমুখী করে চালাতে সক্ষম নন?" কাতাদা বলেছেনঃ হ্যাঁ, আমাদের রবের ইজ্জতের শপথ! (তিনি এটা করতে সক্ষম)। (বুখারী, হাদীস নং ৪৭৬০)

বধির করে। তাদের আবাসস্থল জাহান্নাম; যখনই তা স্তিমিত হবে আমি তাদের জন্যে অগ্নি বৃদ্ধি করে দেবো।

ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿٩٨﴾

৯৮. এটাই তাদের প্রতিফল। কারণ, তারা আমার নিদর্শন অস্বীকার করেছিল ও বলেছিলঃ আমরা অস্থিতে পরিণত ও চূর্ণ-বিচূর্ণ হলেও কি নতুন সৃষ্টি রূপে পুনরুত্থিত হবো?।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۭ فَاَبَى الظّٰلِمُوْنَ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٩٩﴾

৯৯. তারা কি লক্ষ্য করে না যে, আল্লাহ, যিনি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন তিনি তাদের অনুরূপ সৃষ্টি করতে সক্ষম? তিনি তাদের জন্যে স্থির করেছেন এক নির্দিষ্ট কাল, যাতে কোন সন্দেহ নেই; তথাপি অত্যাচারীরা সত্য প্রত্যাখ্যান করা ব্যতীত ক্ষান্ত হলো না।

قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّيْٓ اِذًا لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْاِنْفَاقِ ۭ وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا ﴿١٠٠﴾

১০০. বলঃ যদি তোমরা আমার প্রতিপালকের দয়ার ভান্ডারের অধিকারী হতে তবুও তোমরা 'ব্যয় হয়ে যাবে' এই আশঙ্কায় ওটা ধরে রাখতে, মানুষ তো অতিশয় কৃপণ।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اِذْ جَاۗءَهُمْ فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّىْ لَاَظُنُّكَ يٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا ﴿١٠١﴾

১০১. তুমি বানী ইস্‌রাঈলকে জিজ্ঞেস করে দেখো, আমি মূসাকে (عليه السلام) ন'টি স্পষ্ট নিদর্শন দিয়েছিলাম; যখন তিনি তাদের নিকট এসেছিলেন তখন ফিরাউন তাকে বলেছিলঃ হে মূসা (عليه السلام)! আমি তো মনে করি তুমি যাদুগ্রস্ত।

قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ اَنْزَلَ هٰٓؤُلَاۗءِ اِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بَصَاۗىِٕرَ ۚ وَاِنِّىْ لَاَظُنُّكَ يٰفِرْعَوْنُ

১০২. মূসা (عليه السلام) বলেছিলেনঃ তুমি অবশ্যই অবগত আছ যে, এই সমস্ত স্পষ্ট নিদর্শন আকাশমন্ডলী ও

مَثْبُوْرًا ﴿١٠٢﴾

পৃথিবীর প্রতিপালকই অবতীর্ণ করেছেন প্রত্যক্ষ প্রমাণ স্বরূপ; হে ফিরাউন! আমি তো দেখছি যে, তুমি ধ্বংস হয়ে গেছো।

فَاَرَادَ اَنْ يَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ فَاَغْرَقْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ جَمِيْعًا ﴿١٠٣﴾

১০৩. অতঃপর ফিরাউন তাদেরকে দেশ হতে উচ্ছেদ করবার সংকল্প করলো; তখন আমি ফিরাউন ও তার সঙ্গীগণ সকলকে নিমজ্জিত করলাম।

وَّقُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اسْكُنُوا الْاَرْضَ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيْفًا ﴿١٠٤﴾

১০৪. এরপর আমি বানী ইসরাঈলকে বললামঃ তোমরা এই দেশে বসবাস কর এবং যখন কিয়ামতের প্রতিশ্রুতি বাস্তবায়িত হবে তখন তোমাদের সকলকে আমি একত্রিত করে উপস্থিত করবো।

وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ؕ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿١٠٥﴾

১০৫. আমি সত্যসত্যই কুরআন অবতীর্ণ করেছি এবং তা সত্যসহই অবতীর্ণ হয়েছে; আমি তো তোমাকে শুধু সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারী রূপে প্রেরণ করেছি।

وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْلًا ﴿١٠٦﴾

১০৬. আমি কুরআন অবতীর্ণ করেছি খন্ড খন্ডভাবে যাতে তুমি তা মানুষের কাছে পাঠ করতে পার ক্রমে ক্রমে; এবং আমি তা যথাযথভাবে অবতীর্ণ করেছি।

قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖٓ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖٓ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿١٠٧﴾

১০৭. তুমি বলঃ তোমরা কুরআনে বিশ্বাস কর অথবা বিশ্বাস না কর, যাদেরকে এর পূর্বে জ্ঞান দেয়া হয়েছে তাদের নিকট যখন এটা পাঠ করা হয়, তখনই তারা সিজদায় লুটিয়ে পড়ে।

وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا

১০৮. এবং বলেঃ 'আমাদের প্রতিপালক পবিত্র, মহান! আমাদের

لَمَفْعُوْلًا ﴿١٠٨﴾

প্রতিপালকের প্রতিশ্রুতি কার্যকরী হয়েই থাকে।

وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا ﴿١٠٩﴾

১০৯. আর তারা কাঁদতে কাঁদতে ভূমিতে লুটিয়ে পড়ে এবং তাদের বিনয় বৃদ্ধি করে।

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿١١٠﴾

১১০. বল, তোমরা 'আল্লাহ' নামে আহ্বান কর বা 'রহমান' নামে আহ্বান কর, তোমরা যে নামেই আহ্বান কর তাঁর সব নামই তো সুন্দর! তোমরা নামাযে তোমাদের স্বর উচ্চ করো না এবং অতিশয় ক্ষীণও করো না; এই দুই এর মধ্যপথ অবলম্বন করো।

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ﴿١١١﴾

১১১. বলঃ প্রশংসা আল্লাহরই, যিনি সন্তান গ্রহণ করেন নি, তাঁর সার্বভৌমত্বে কোন অংশীদার নেই এবং যিনি দুর্দশাগ্রস্ত হন না, যে কারণে তাঁর অভিভাবকের প্রয়োজন হতে পারে। সুতরাং সম্ভ্রমে তাঁর মাহত্ব ঘোষণা কর।

সূরাঃ কাহ্‌ফ, মাক্কী

(আয়াতঃ ১১০, রুকূ'ঃ ১২)

سُوْرَةُ الْكَهْفِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ١١٠ رُكُوْعَاتُهَا ١٢

দয়াময়, পরম দায়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْٓ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ﴿١﴾

১. সমস্ত প্রশংসা আল্লাহরই যিনি তাঁর বান্দার (মুহাম্মাদ ﷺ)-এর প্রতি এই কিতাব অবতীর্ণ করেছেন এবং এতে তিনি অসংগতি রাখেন নি।

قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ۙ﴿٢﴾

২. একে করেছেন সুপ্রতিষ্ঠিত তাঁর কঠিন শাস্তি সম্পর্কে সতর্ক করবার জন্যে এবং বিশ্বাসীগণ, যারা সৎকর্ম করে তাদেরকে এই সুসংবাদ দেয়ার জন্যে যে, তাদের জন্যে আছে উত্তম পুরস্কার।

مّٰكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ۙ﴿٣﴾

৩. যাতে তারা হবে চিরস্থায়ী।

وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۗ﴿٤﴾

৪. এবং সতর্ক করার জন্যে, তাদেরকে যারা বলে যে, আল্লাহ সন্তান গ্রহণ করেছেন।

مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ؕ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ؕ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ﴿٥﴾

৫. এই বিষয়ে তাদের কোনই জ্ঞান নেই এবং তাদের পিতৃপুরুষদেরও ছিল না; তাদের মুখনিঃসৃত বাক্য কি উদ্ভট! তারা তো শুধু মিথ্যাই বলে।

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَسَفًا ﴿٦﴾

৬. তারা এই বাণী বিশ্বাস না করলে তাদের পিছনে পিছনে ঘুরে সম্ভবতঃ তুমি দুঃখে আত্মবিনাশী হয়ে পড়বে।

اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ﴿٧﴾

৭. পৃথিবীর উপর যা কিছু আছে আমি সেগুলিকে ওর শোভা করেছি তাদেরকে (মানুষকে) এই পরীক্ষা করবার জন্যে যে, তাদের মধ্যে কর্মে কে শ্রেষ্ঠ।

وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا ؕ﴿٨﴾

৮. ওর উপর যা কিছু আছে তা অবশ্যই আমি উদ্ভিদ শূন্য মৃত্তিকায় পরিণত করবো।

اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ ۙ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ﴿٩﴾

৯. তুমি কি মনে কর যে, গুহা ও রাকীমের অধিবাসীরা ছিল আমার নিদর্শনাবলীর মধ্যে বিস্ময়কর?

اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا

১০. যখন যুবকরা গুহায় আশ্রয় নিলো, তখন তারা বলেছিলঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি নিজের

رَشَدًا ﴿١٠﴾

থেকে আমাদেরকে অনুগ্রহ দান করুন এবং আমাদের জন্যে আমাদের কাজ-কর্ম সঠিকভাবে পরিচালনার ব্যবস্থা করুন।

فَضَرَبْنَا عَلٰٓى اٰذَانِهِمْ فِى الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا ﴿١١﴾

১১. অতঃপর আমি তাদেরকে গুহায় কয়েক বছর ঘুমন্ত অবস্থায় রাখলাম।

ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَىُّ الْحِزْبَيْنِ اَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْٓا اَمَدًا ﴿١٢﴾

১২. পরে আমি তাদেরকে জাগরিত করলাম জানবার জন্যে যে, দুই দলের মধ্যে কোনটি তাদের অবস্থানকাল সঠিকভাবে নির্ণয় করতে পারে।

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّهُمْ فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنٰهُمْ هُدًى ﴿١٣﴾

১৩. আমি তোমার কাছে তাদের সঠিক বৃত্তান্ত বর্ণনা করছিঃ তারা ছিল কয়েকজন যুবক, তারা তাদের প্রতিপালকের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করেছিল এবং আমি তাদের সৎ পথে চলার শক্তি বৃদ্ধি করেছিলাম।

وَّرَبَطْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَا مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَآ اِذًا شَطَطًا ﴿١٤﴾

১৪. আর আমি তাদের চিত্ত দৃঢ় করেছিলাম; তারা যখন উঠে দাঁড়ালো তখন বললোঃ "আমাদের প্রতিপালক আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর প্রতিপালক; আমরা কখনই তাঁর পরিবর্তে অন্য কোন মা'বূদকে আহ্বান করবো না; যদি করে বসি তা অতিশয় গর্হিত হবে।"

هٰٓؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ؕ لَوْلَا يَاْتُوْنَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍۭ بَيِّنٍ ؕ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ﴿١٥﴾

১৫. আমাদেরই এই স্বজাতিরা তাঁর পরিবর্তে অনেক মা'বূদ গ্রহণ করেছে, তারা এসব মা'বূদ সম্বন্ধে স্পষ্ট প্রমাণ উপস্থিত করে না কেন? যে আল্লাহর সমন্ধে মিথ্যা উদ্ভাবন করে তার চেয়ে অধিক সীমালঙ্ঘনকারী আর কে?

وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗٓا اِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿١٦﴾

১৬. তোমরা যখন বিচ্ছিন্ন হলে তাদের হতে ও তারা আল্লাহর পরিবর্তে যাদের ইবাদত করে তাদের হতে, তখন তোমরা গুহায় আশ্রয় গ্রহণ কর; তোমাদের প্রতিপালক তোমাদের জন্যে তাঁর দয়া বিস্তার করবেন এবং তিনি তোমাদের জন্যে তোমাদের কাজকর্মকে ফলপ্রসূ করবার ব্যবস্থা করবেন।

وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾

১৭. তুমি যদি তাদেরকে গুহার ভিতরে দেখতে, তবে দেখতে পেতে যে; সূর্য উদয়কালে তাদের গুহার দক্ষিণ পার্শ্বে হেলে আছে এবং অস্তকালে তাদেরকে অতিক্রম করছে বাম পার্শ্ব দিয়ে, আর তারা তার ভিতরে বিশাল জায়গায় (পড়ে রয়েছে)। এসব আল্লাহর নিদর্শন; আল্লাহ যাকে সৎপথে পরিচালিত করেন সে সৎপথ প্রাপ্ত এবং তিনি যাকে পথভ্রষ্ট করেন তুমি কখনই তার কোন পথ প্রদর্শনকারী অভিভাবক পাবে না।

وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۚ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۚ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ؕ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿١٨﴾

১৮. তুমি মনে করতে, তারা জাগ্রত কিন্তু তারা ছিল নিদ্রিত; আমি তাদেরকে ডানে ও বামে পাশ বদলিয়ে দিতাম এবং তাদের কুকুর ছিল সম্মুখের পা দু'টি গুহার দ্বারে প্রসারিত করে; তাকিয়ে তাদেরকে দেখলে তুমি পিছনে ফিরে পালিয়ে যেতে ও তাদের ভয়ে আতংকগ্রস্ত হয়ে পড়তে।

وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ؕ قَالَ قَآئِلٌ

১৯. এবং এভাবেই আমি তাদেরকে জাগ্রত করলাম, যাতে তারা

مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ؕ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ
قَالُوْا رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ؕ فَابْعَثُوْۤا اَحَدَكُمْ
بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖۤ اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَاۤ اَزْكٰى
طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ
وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ﴿١٩﴾

পরস্পরের মধ্যে জিজ্ঞাসাবাদ করে; তাদের একজন বললোঃ তোমরা কতকাল অবস্থান করেছ? কেউ কেউ বললোঃ একদিন অথবা একদিনের কিছু অংশ; কেউ কেউ বললোঃ তোমরা কতকাল অবস্থান করছো, তা তোমাদের প্রতিপালকই ভাল জানেন; এখন তোমাদের একজনকে তোমাদের এই মুদ্রাসহ নগরে প্রেরণ কর; সে যেন দেখে কোন খাদ্য উত্তম ও তা হতে যেন কিছু খাদ্য নিয়ে আসে তোমাদের জন্যে; সে যেন বিচক্ষণতার সাথে কাজ করে ও কিছুতেই যেন তোমাদের সম্বন্ধে কাউকেও কিছু জানতে না দেয়।

اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ
فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْۤا اِذًا اَبَدًا ﴿٢٠﴾

২০. তারা যদি তোমাদের বিষয় জানতে পারে, তবে তোমাদেরকে প্রস্তরাঘাতে হত্যা করবে অথবা তোমাদেরকে তাদের ধর্মে ফিরিয়ে নিবে এবং সেক্ষেত্রে তোমরা কখনই সাফল্য লাভ করবে না।

وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْۤا اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ
حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ
بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ؕ
رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰۤى اَمْرِهِمْ
لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ﴿٢١﴾

২১. এবং এভাবে আমি মানুষকে তাদের বিষয় জানিয়ে দিলাম, যাতে তারা জ্ঞাত হয় যে, আল্লাহর প্রতিশ্রুতি সত্য এবং কিয়ামতে কোন সন্দেহ নেই; যখন তারা তাদের কর্তব্য বিষয়ে নিজেদের মধ্যে বিতর্ক করছিল তখন অনেকে বললোঃ তাদের উপর সৌধ নির্মাণ কর; তাদের প্রতিপালক তাদের বিষয়ে ভাল জানেন; তাদের কর্তব্য বিষয়ে যাদের মত প্রবল হলো তারা বললোঃ আমরা তো নিশ্চয়ই তাদের উপর মসজিদ নির্মাণ করবো।

سَيَقُوْلُوْنَ ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ؕ قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ ۗ فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۪ وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ مِّنْهُمْ اَحَدًا ﴿٢٢﴾

২২. অজানা বিষয়ে অনুমানের উপর নির্ভর করে কেউ কেউ বলবেঃ তারা ছিল তিন জন, তাদের চতুর্থটি ছিল তাদের কুকুর; এবং কেউ কেউ বলেঃ তারা ছিল পাঁচজন, তাদের ষষ্ঠটি ছিল তাদের কুকুর; আর কেউ কেউ বলেন, তারা ছিল সাতজন,তাদের অষ্টমটি ছিল তাদের কুকুর; বলঃ আমার প্রতিপালকই তাদের সংখ্যা ভাল জানেন; তাদের সংখ্যা অল্প কয়েকজনই জানে; সাধারণ আলোচনা ব্যতীত তুমি তাদের বিষয়ে বিতর্ক করো না এবং তাদের কাউকেও তাদের বিষয়ে জিজ্ঞাসাবাদ করো না।

وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَايْءٍ اِنِّيْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾

২৩. কখনই তুমি কোন বিষয়ে বলো নাঃ আমি ওটা আগামীকাল করবো;

اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ز وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ رَبِّيْ لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾

২৪. 'আল্লাহ ইচ্ছা করলে' এই কথা না বলে; যদি ভুলে যাও তবে তোমার প্রতিপালককে স্মরণ করো ও বলোঃ সম্ভবতঃ আমার প্রতিপালক আমাকে গুহাবাসীর বিবরণ অপেক্ষা সত্যের নিকটতম পথ নির্দেশ করবেন।

وَلَبِثُوْا فِيْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ﴿٢٥﴾

২৫. তারা তাদের গুহায় ছিল তিনশ' বছর, আরো নয় বছর।

قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا ۚ لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ ز وَّلَا يُشْرِكُ فِيْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٦﴾

২৬. তুমি বলঃ তারা কত কাল ছিল, তা আল্লাহই ভাল জানেন, আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর অজ্ঞাত বিষয়ের জ্ঞান তাঁরই; তিনি কত সুন্দর ভাবে দেখেন ও শুনেন। তিনি ছাড়া তাদের অন্য কোন অভিভাবক নেই; তিনি কাউকেও নিজ কর্তৃত্বের শরীক করেন না।

وَاتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾

২৭. তুমি তোমার প্রতি প্রত্যাদিষ্ট তোমার প্রতিপালকের কিতাব আবৃত্তি কর; তাঁর বাক্য পরিবর্তন করার কেউই নেই; তুমি কখনই তাঁকে ব্যতীত অন্য কোন আশ্রয় পাবে না।

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿٢٨﴾

২৮. নিজেকে তুমি রাখবে তাদেরই সংসর্গে যারা সকাল ও সন্ধ্যায় আহ্বান করে তাদের প্রতিপালককে তাঁর সন্তুষ্টি লাভের উদ্দেশ্যে এবং তুমি পার্থিব জীবনের শোভা কামনা করে তাদের দিক হতে তোমার দৃষ্টি ফিরিয়ে নিয়ো না; যার চিত্তকে আমি আমার স্মরণে অমনোযোগী করে দিয়েছি, সে তার খেয়াল-খুশীর অনুসরণ করে ও যার কার্যকলাপ সীমা অতিক্রম করে তুমি তার আনুগত্য করো না।

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ ۚ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۚ وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوْهَ ۚ بِئْسَ الشَّرَابُ ۚ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٢٩﴾

২৯. বলঃ সত্য তোমাদের প্রতি-পালকের নিকট হতে প্রেরিত; সুতরাং যার ইচ্ছা, বিশ্বাস করুক ও যার ইচ্ছা প্রত্যাখ্যান করুক; আমি সীমালঙ্ঘনকারীদের জন্যে প্রস্তুত রেখেছি অগ্নি, যার বেষ্টনী তাদেরকে পরিবেষ্টন করে থাকবে; তারা পানীয় চাইলে তাদেরকে দেয়া হবে গলিত ধাতুর ন্যায় পানীয়, যা তাদের মুখমন্ডল বিদগ্ধ করবে, এটা নিকৃষ্ট পানীয় ও জাহান্নাম কত নিকৃষ্ট আশ্রয়।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا ﴿٣٠﴾

৩০. যারা বিশ্বাস রাখে ও সৎকর্ম করে (আমি তাদেরকে পুরস্কৃত করি,) যে সৎ কর্ম করে আমি তার কর্মফল নষ্ট করি না।

أُولَٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّيَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّإِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْأَرَآئِكِ ۚ نِعْمَ الثَّوَابُ ۗ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٣١﴾

৩১. তাদেরই জন্যে আছে স্থায়ী জান্নাত যার পাদদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত। সেথায় তাদেরকে স্বর্ণ কংকনে অলংকৃত করা হবে, তারা পরিধান করবে সূক্ষ্মও স্থূল রেশমের সবুজ বস্ত্র ও হেলান দিয়ে বসবে সুসজ্জিত আসনে; কত সুন্দর পুরস্কার ও উত্তম আশ্রয়স্থল!

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ﴿٣٢﴾

৩২. তুমি তাদের কাছে পেশ কর, দুই ব্যক্তির উপমাঃ তাদের একজনকে আমি দিয়েছিলাম দু'টি আঙ্গুর উদ্যান এবং এই দুইটিকে আমি খেজুর বৃক্ষ দ্বারা পরিবেষ্টিত করেছিলাম ও এই দুইয়ের মধ্যবর্তী স্থানকে করেছিলাম শস্যক্ষেত্র।

كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ أُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا ۙ وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ﴿٣٣﴾

৩৩. উভয় উদ্যানই ফল দান করতো এবং এতে কোন ত্রুটি করতো না এবং উভয়ের ফাঁকে ফাঁকে প্রবাহিত করেছিলাম নহর।

وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ أَنَا أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّأَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾

৩৪. এবং তার প্রচুর ধন-সম্পদ ছিল; অতপর কথা প্রসঙ্গে সে তার বন্ধুকে বললোঃ ধন-সম্পদে আমি তোমাদের অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ এবং জনবলে তোমাদের অপেক্ষা শক্তিশালী।

وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَآ أَظُنُّ أَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖٓ أَبَدًا ﴿٣٥﴾

৩৫. এভাবে নিজের প্রতি যুলুম করে সে তার উদ্যানে প্রবেশ করলো। সে বললোঃ আমি মনে করি না যে, এটা কখনও ধ্বংস হয়ে যাবে।

وَّمَآ أَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ إِلٰى رَبِّىْ لَأَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿٣٦﴾

৩৬. আমি মনে করি না যে, কিয়ামত হবে, আর আমি যদি আমার প্রতিপালকের নিকট প্রত্যাবৃত্ত হই-ই তবে আমি তো নিশ্চয়ই এটা অপেক্ষা উৎকৃষ্ট স্থান পাবো।

قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ اَكَفَرْتَ بِالَّذِىْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ﴿٣٧﴾

৩৭. তদুত্তরে তাকে তার বন্ধু বললোঃ তুমি কি তাঁকে অস্বীকার করছো যিনি তোমাকে সৃষ্টি করেছেন মৃত্তিকা ও পরে শুক্র হতে এবং তারপর পূর্ণাঙ্গ করেছেন মনুষ্য আকৃতিতে?

لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّىْ وَلَآ اُشْرِكُ بِرَبِّىْٓ اَحَدًا ﴿٣٨﴾

৩৮. কিন্তু আমি (বলিঃ) 'আল্লাহই আমার প্রতিপালক এবং আমি কাউকেও আমার প্রতিপালকের শরীক করি না।'

وَلَوْلَآ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٣٩﴾

৩৯. তুমি যখন ধনে ও সন্তানে আমাকে তোমার অপেক্ষা কম দেখলে, তখন তোমার উদ্যানে প্রবেশ করে তুমি কেন বললে নাঃ "মাশা আল্লাহ" (আল্লাহ যা চেয়েছেন তা-ই হয়েছে;) আল্লাহর সাহায্য ব্যতীত কোন শক্তি নেই।[১]

فَعَسٰى رَبِّىْٓ اَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ﴿٤٠﴾

৪০. সম্ভবতঃ আমার প্রতিপালক আমাকে তোমার উদ্যান অপেক্ষা উৎকৃষ্টতর কিছু দিবেন এবং তোমার উদ্যানে আকাশ হতে অগ্নি বর্ষণ করবেন যার ফলে তা উদ্ভিদ শূন্য মৃত্তিকায় পরিণত হবে।

اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا ﴿٤١﴾

৪১. অথবা ওর পানি ভূ-গর্ভে অন্তর্হিত হবে এবং তুমি কখনো ওকে ফিরিয়ে আনতে পারবে না।

১। আবূ মূসা আশ'আরী (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) একটি টিলার ওপর উঠছিলেন। এ সময় তিনি একটি খচ্চরের পিঠে সওয়ার ছিলেন। একজন লোক ওই টিলায় উঠে উচ্চস্বর 'লা-ইলাহা ইল্লাল্লাহ ওয়াল্লাহু আকবর' বললো। তখন নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, তোমরা তো কোন বধির এবং অনুপস্থিত সত্তাকে ডাকছো না। অতপর তিনি বললেনঃ হে আবূ মূসা! কিংবা বলেছেন, ওহে আল্লাহ্‌র বান্দাহ! আমি কি তোমায় এমন একটি কথা বলে দেব, যেটা হলো বেহেশ্‌তের একটি রত্ন-ভান্ডার। আমি বললাম, হ্যাঁ (বলে দিন)! তিনি বললেন, সেটি হলো- 'লা-হাওলা ওয়ালা-কুওয়্যাতা ইল্লা বিল্লাহ।' (বুখারী, হাদীস নং ৬৪০৯)

وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى مَآ اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ﴿٤٢﴾

৪২. তার ধন-সম্পদ ধ্বংস হয়ে গেল এবং সে তাতে যা ব্যয় করেছিল তার জন্যে হাতে হাত রেখে আক্ষেপ করতে লাগলো। যখন তা ধ্বংস হয়ে গেল সে বলতে লাগলোঃ হায়! আমি যদি কাউকেও আমার প্রতিপালকের শরীক না করতাম!

وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ﴿٤٣﴾

৪৩. এবং আল্লাহ ব্যতীত তাকে সাহায্য করার কোন লোকজন ছিল না এবং সে নিজেও প্রতিকারে সমর্থ হলো না।

هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ۭ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ﴿٤٤﴾

৪৪. এই ক্ষেত্রে সাহায্য করবার অধিকার আল্লাহরই, যিনি সত্য; পুরস্কারদানে ও পরিণাম নির্ধারণে তিনিই শ্রেষ্ঠ।

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَاۗءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَاۗءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿٤٥﴾

৪৫. তাদের কাছে পেশ কর উপমা পার্থিব জীবনেরঃ এটা পানির ন্যায় যা আমি বর্ষণ করি আকাশ হতে, যদ্দরুণ ভূমির উদ্ভিদ ঘন সন্নিবিষ্ট হয়ে উদ্‌গত হয়। অতঃপর তা বিশুষ্ক হয়ে এমন চূর্ণ-বিচূর্ণ হয় যে, বাতাস ওকে উড়িয়ে নিয়ে যায়; আল্লাহ সর্ব বিষয়ে শক্তিমান।

اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ﴿٤٦﴾

৪৬. ধনৈশ্বর্য ও সন্তান-সন্ততি পার্থিব জীবনের শোভা এবং অবশিষ্ট থাকে এমন সৎকার্য ওটা তোমার প্রতিপালকের নিকট পুরস্কার প্রাপ্তির জন্যে শ্রেষ্ঠ এবং আশা প্রাপ্তির ব্যাপারেও উৎকৃষ্ট।

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ﴿٤٧﴾

৪৭. (স্মরণ কর, সেদিনের কথা) যেদিন আমি পর্বতকে করবো সঞ্চালিত এবং তুমি পৃথিবীকে দেখবে একটি শূন্য প্রান্তর; সেদিন

তাদেরকে (মানুষকে) আমি একত্রিত করবো এবং তাদের কাউকেও অব্যাহতি দিবো না।

৪৮. আর তাদেরকে তোমার প্রতিপালকের নিকট উপস্থিত করা হবে সারিবদ্ধভাবে এবং বলা হবেঃ 'তোমাদেরকে প্রথমবার যেভাবে সৃষ্টি করেছিলাম সেভাবেই তোমরা আমার নিকট উপস্থিত হয়েছো; অথচ তোমরা মনে করতে যে, তোমাদের জন্য প্রতিশ্রুত সময় আমি উপস্থিত করবো না?'

وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍۭ ۚ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾

৪৯. এবং সেদিন উপস্থিত করা হবে আমলনামা এবং তাতে যা লিপিবদ্ধ আছে তার কারণে তুমি অপরাধীদের দেখবে আতংকগ্রস্ত এবং তারা বলবেঃ 'হায়, দুর্ভোগ আমাদের! এটা কেমন গ্রন্থ! ওটা তো ছোট বড় কিছুই বাদ দেয় না বরং ওটা সমস্ত হিসাব রেখেছে; তারা তাদের কৃতকর্ম সম্মুখে উপস্থিত পাবে; তোমার প্রতিপালক কারো প্রতি যুলুম করেন না।

وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَا لِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّاۤ اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ؕ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ﴿٤٩﴾

৫০. এবং (স্মরণ কর) আমি যখন ফেরেশতাদেরকে বলেছিলামঃ তোমরা আদমকে সেজদা কর তখন ইবলীস ছাড়া সকলে সেজদা করলো। সে জ্বিনদের একজন, সে তার প্রতিপালকের আদেশ অমান্য করলো; তবে কি তোমরা আমার পরিবর্তে তাকে ও তার বংশধরকে অভিভাবকরূপে গ্রহণ করছো? তারা তো তোমাদের শত্রু; যালিমদের জন্য খুবই নিকৃষ্ট বিনিময়।

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗۤ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿٥٠﴾

مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۪ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ﴿٥١﴾

৫১. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সৃষ্টিকালে আমি তাদেরকে ডাকি নাই এবং তাদের সৃজনকালেও নয়, এবং আমি বিভ্রান্তকারীদের সাহায্য গ্রহণ করবার নই।

وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾

৫২. এবং (সেদিনের কথা স্মরণ কর) যেদিন তিনি বলবেনঃ 'তোমরা যাদেরকে আমার শরীক মনে করতে তাদেরকে আহ্বান কর! তারা তখন তাদেরকে আহ্বান করবে; কিন্তু তারা তাদের আহ্বানে সাড়া দিবে না এবং আমি তাদের উভয়ের মধ্যস্থলে রেখে দিবো এক ধ্বংস গহ্বর।

وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾

৫৩. অপরাধীরা আগুন দেখে বুঝবে যে তারা সেখানে পতিত হচ্ছে এবং তারা ওটা হতে কোন পরিত্রাণ স্থল পাবে না।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ﴿٥٤﴾

৫৪. আমি মানুষের জন্যে এই কুরআনে বিভিন্ন উপমার দ্বারা আমার বাণী বিশদভাবে বর্ণনা করেছি; মানুষ অধিকাংশ ব্যাপারেই বিতর্ক প্রিয়।

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾

৫৫. যখন তাদের কাছে পথ-নির্দেশ আসে তখন তাদের পূর্ববর্তীদের অবস্থা তাদের কখন হবে অথবা কখন উপস্থিত হবে বিবিধ শাস্তি এই প্রতীক্ষাই তাদেরকে বিশ্বাস স্থাপন হতে ও তাদের প্রতিপালকের নিকট ক্ষমা প্রার্থনা হতে বিরত রাখে।

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿٥٦﴾

৫৬. আমি শুধু সুসংবাদ দাতা ও সতর্ককারীরূপেই রাসূলদেরকে পাঠিয়ে থাকি; কিন্তু সত্য প্রত্যাখ্যানকারীরা মিথ্যা অবলম্বনে বিতন্ডা করে তা দ্বারা সত্যকে ব্যর্থ

করে দেয়ার জন্যে এবং আমার নিদর্শনাবলী ও যার দ্বারা তাদেরকে সতর্ক করা হয়েছে সেসবকে তারা বিদ্রূপের বিষয়রূপে পরিণত করে থাকে।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿٥٧﴾

৫৭. কোন ব্যক্তিকে তার প্রতিপালকের নিদর্শনাবলী স্মরণ করিয়ে দেয়ার পর সে তা হতে মুখ ফিরিয়ে নেয় এবং তার কৃতকর্মসমূহ ভুলে যায়, তবে তার অপেক্ষা অধিক অত্যাচারী আর কে? আমি তাদের অন্তরের উপর আবরণ দিয়েছি যেন তারা কুরআন বুঝতে না পারে এবং তাদেরকে বধির করেছি; তুমি তাদেরকে সৎপথে আহ্বান করলেও তারা কখনো সৎপথে আসবে না।

وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ؕ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِهٖ مَوْئِلًا ﴿٥٨﴾

৫৮. এবং তোমার প্রতিপালক ক্ষমাশীল দয়াবান, তাদের কৃতকর্মের জন্যে তিনি তাদেরকে শাস্তি দিতে চাইলে তিনি তাদের শাস্তি খুব তাড়াতাড়ি পাঠাতেন; কিন্তু তাদের জন্যে রয়েছে এক প্রতিশ্রুত মুহূর্ত, যা হতে তাদের পরিত্রাণ নেই।

وَتِلْكَ الْقُرٰٓى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ﴿٥٩﴾

৫৯. ঐসব জনপদ তাদের অধিবাসীবৃন্দকে আমি ধ্বংস করেছিলাম যখন তারা সীমালঙ্ঘন করেছিল এবং তাদের ধ্বংসের জন্যে আমি স্থির করেছিলাম এক নির্দিষ্ট ক্ষণ।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَآ اَبْرَحُ حَتّٰٓى اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِيَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾

৬০. (স্মরণ কর! সে সময়ের কথা), যখন মূসা (عليه السلام) তার সঙ্গীকে বলেছিলেনঃ দুই সমুদ্রের মিলনস্থলে (মোহনায়) না পৌঁছা পর্যন্ত আমি

থামবো না, আমি যুগ যুগ ধরে চলতে থাকবো।

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾

৬১. তারা যখন উভয়ের মিলন স্থলে পৌঁছলেন, তারা নিজেদের মাছের কথা ভুলে গেলেন; ওটা সুড়ংঙ্গের মত পথ করে সমুদ্রে নেমে গেল।

১। সাঈদ ইবনে যুবাইর (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেনঃ আমি ইবনে ইব্বাসকে বললাম, নওফুল বিক্কালী বলে থাকে খিযিরের সাথে সাক্ষাতকারী মূসা বনী ইসরাইলের মূসা ছিলেন না। এ কথায় ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আহহু) বললেনঃ আল্লাহর শত্রু মিথ্যে কথা বলছে। উবাই ইবনে কা'ব আমাকে (ইবনে আব্বাস) বলেছেন, তিনি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছেনঃ মূসা বনী ইসরাইলের মধ্যে বক্তৃতা করছিলেন। তাঁকে প্রশ্ন করা হলো, মানব জাতির মধ্যে সবচেয়ে বেশি জানে কে? জবাবে তিনি বললেন, আমি সবচেয়ে বেশি জানি। আল্লাহ্ তাঁর ওপর রুষ্ট হলেন। যেহেতু তাঁকে এ জ্ঞান দেয়া হয়নি। আল্লাহ্ তাঁকে ওহীর মাধ্যমে বললেনঃ দুই সমুদ্রের সঙ্গম স্থলে আমার এক বান্দা অবস্থান করছে, সে তোমার চেয়ে বেশি জানে। মূসা বললেনঃ হে আমার রব! আমি তাঁর কাছে কেমন করে পৌঁছতে পারি? আল্লাহ্ বললেনঃ একটা মাছ সঙ্গে নাও এবং সেটা থলির মধ্যে রাখো (তারপর রওয়ানা হয়ে যাও)। যেখানে সেটাকে হারিয়ে ফেলবে সেখানেই তাকে পাবে। কাজেই তিনি একটা মাছ নিলেন। সেটা থলিতে রাখলেন তারপর চলতে লাগলেন। তাঁর সঙ্গে ইউশা ইবনে নূন নামক এক যুবকও ছিলেন। তারা সমুদ্র কিনারে একটি পাথরের কাছে পৌঁছে গেলেন এবং তার ওপর মাথা রেখে দু'জনে ঘুমিয়ে পড়লেন। এ সময় মাছটি থলির মধ্যে লাফিয়ে উঠলো। থলি থেকে বের হয়ে সেটা সমুদ্রের পানিতে পড়ে গেলো। "মাছটি সমুদ্রের মধ্যে নিজের পথে চলে গেল।" (সূরাঃ কাহাফ-৬১) আর যেখান দিয়ে মাছটি চলে গিয়েছিল, আল্লাহ্ সেখানে সমুদ্রের পানির প্রবাহ বন্ধ করে দিয়েছিলেন এবং সেখানে একটি নালা বানিয়ে দিয়েছিলেন। ঘুম থেকে জেগে ওঠার পর তাঁর সাথী তাঁকে মাছটির কথা জানাতে ভুলে গেলেন। সেই দিনের অবশিষ্ট সময় ও সেই রাত তাঁরা চললেন। পরের দিন মূসা বললেনঃ অর্থঃ "এ সফরে বেশ ক্লান্তি অনুভূত হচ্ছে, এখন আমাদের খাবার আনো।" (সূরাঃ কাহাফ-৬২)

রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আসলে আল্লাহ্ যে স্থানে সাক্ষাতের কথা বলেছিলেন (অর্থাৎ যেখানে মাছটি পালিয়ে গিয়েছিলো) সে স্থান ছেড়ে যাবার সময় থেকেই মূসা ক্লান্তি অনুভব করছিলেন। তখন তাঁর খাদেম তাঁকে বললেনঃ অর্থঃ " আপনার মনে আছে যে পাথরটার পাশে আমরা বিশ্রাম করেছিলাম, সেখানেই মাছটি অদ্ভুতভাবে সমুদ্রের মধ্যে চলে গিয়েছিলো। কিন্তু আমি মাছটির কথা বলতে ভুলে গিয়েছিলাম। আসলে শয়তান আমাকে এ কথা ভুলিয়ে দিয়েছে। তাই আমি আপনাকে তা জানাতে পারিনি।" (সূরাঃ কাহাফ-৬৩) রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ মাছটি সমুদ্রে চলে গিয়েছিলো তার পথ বানিয়ে। মূসা ও তাঁর খাদেমকে (ইউশা' ইবনে নূন) তা অবাক করে দিয়েছিল। মূসা বললেনঃ অর্থঃ "এটিই তো আমরা খুঁজছিলাম।" (সূরাঃ কাহাফ-৬৪) কাজেই তাঁরা নিজেদের পদচিহ্ন অনুসরণ করতে করতে সেই জায়গায় এসে পড়লেন। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তাঁরা দু'জন নিজেদের পদ রেখা অনুসরণ করতে করতে আগের পাথরটার কাছে ফিরে আসলেন। সেখানে এক ব্যক্তিকে কাপড় জড়িয়ে বসে থাকতে দেখলেন। মূসা তাঁকে সালাম দিলেন। জবাবে খিযির তাঁকে বললেন, তোমাদের এ দেশে সালামের প্রচলন হলো কেমন করে? মূসা বললেন, আমি মূসা (খিযির জিজ্ঞেস করলেনঃ) বনী ইসরাইলের (নবী) মূসা ? বললেনঃ হ্যাঁ, আমি বনী ইসরাইলের নবী মূসা। আমি এসেছি, "এজন্য যে আপনি আমাকে সেই জ্ঞানের শিক্ষা দিবেন যা আপনাকে শিখান হয়েছে। তিনি (খিযির) জবাব দিলেন, তুমি আমার সাথে সবর করতে পারবে না। (সূরাঃ কাহাফ-৬৭) হে

فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا ز لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾

৬২. যখন তাঁরা আরো অগ্রসর হলেন মূসা (عليه السلام) তার সঙ্গীকে বললেনঃ আমাদের নাস্তা আন, আমরা তো আমাদের এই সফরে ক্লান্ত হয়ে পড়েছি।

মূসা! আল্লাহ্ আমাকে জ্ঞান দান করেছেনঃ এমন জ্ঞান, যার (সবটুকুর) সন্ধান তুমি পাওনি। আল্লাহ্ আমাকেও জ্ঞান দান করেছেন, এমন জ্ঞান যার (সবটুকু) সন্ধান আমিও পাইনি। মূসা বললেনঃ অর্থঃ "ইন্‌শা আল্লাহ্ আপনি আমাকে সবরকারী পাবেন এবং আমি আপনার কোনো হুকুমের বরখেলাফ করবো না।" (সূরাঃ কাহাফ-৬৯) খিযির তাঁকে বললেনঃ অর্থঃ "যদি তুমি আমার সাথে চলতে চাও তাহলে আমাকে কোনো কথা জিজ্ঞেস করো না যতক্ষণ না আমি নিজেই তা তোমাকে জানাই। (সূরাঃ কাহাফ-৭০) কাজেই তারা দু'জন রওয়ানা হয়ে গেলেন। তারা সমুদ্র কিনার ধরে চলতে লাগলেন। তাঁরা একটি নৌকা দেখতে পেলেন। তাদেরকে নৌকায় করে নিয়ে যাবার ব্যাপারে নৌকার মাঝিদের সাথে আলাপ করলেন। তারা খিযিরকে চিনতে পারল। তাই তাদেরকে বসিয়ে গন্তব্য স্থলে নিয়ে গেলো কিন্তু এর বিনিময়ে কোনো পারিশ্রমিক নিল না। যখন তারা দু'জন নৌকায় চড়লেন, খিযির কুড়াল দিয়ে নৌকার একটা তক্তা উপড়িয়ে ফেললেন। মূসা তাঁকে বললেনঃ এরা তো বিনা ভাড়ায় আমাদেরকে বহন করলেন। অথচ আপনি এদের নৌকাটির ক্ষতি করলেন। (সূরাঃ কাহাফ-৭১) "আপনি নৌকাটা ফাটিয়ে দিলেন। আরোহীদের ডুবিয়ে দেবার জন্য। আপনি তো একটা খারাপ কাজ করলেন।" খিযির বললেনঃ "আমি কি আগেই তোমাকে বলিনি যে আমার সাথে চলার ব্যাপারে তুমি কোনো ক্ষেত্রে সবর করতে পারবে না?" মূসা বললেনঃ আমি যেটা ভুলে গিয়েছিলাম সেটার জন্য আমার কাছ থেকে কৈফিয়ত তলব করবেন না। আর আমার ব্যাপারে খুব বেশী কড়াকড়ি করবেন না। (সূরাঃ কাহাফ-৭৩) রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ মূসা প্রথমবার ভুলে গিয়ে এটাই করেছিলেন। এরপর আসলো একটা চড়ুই পাখি। পাখিটা বসলো নৌকার এক কিনারে। ঠোঁট দিয়ে সমুদ্র থেকে এক বিন্দু পানি পান করলো। এ দৃশ্য দেখে খিযির মূসাকে বললেনঃ এই চড়ুইটা সমুদ্র থেকে যতটুকু পানি খসালো, আমার ও তোমার জ্ঞান আল্লাহ্‌র জ্ঞানের তুলনায় এতটুকুই। তারপর তাঁরা নৌকা ত্যাগ করে হাঁটতে লাগলেন। সমুদ্রের তীর ধরে তাঁরা হাটতে লাগলেন। পথে খিযির দেখলেন একটি ছোট ছেলে অন্য ছেলেদের সাথে খেলা করছে। তিনি হাত দিয়ে ছেলেটিকে ধরলেন। দেহ থেকে তার মাথাটা আলাদা করে দিলেন। তাকে হত্যা করলেন। মূসা তাঁকে বললেনঃ "আপনি একটা নিষ্পাপ শিশুকে হত্যা করলেন, অথচঃ সে কাউকে হত্যা করেনি? আপনি তো একটা অন্যায় কাজ করে ফেলেছেন।" (সূরাঃ কাহাফ-৭৪) তিনি বললেনঃ আমি কি তোমাকে আগেই বলিনি যে, আমার সাথে তুমি ধৈর্য ধরে চলতে পারবে না। (সূরাঃ কাহাফ-৭৫) (বর্ণনাকারী) বলেনঃ এ কাজটি প্রথমটির চেয়ে মারাত্মক ছিলো। "মূসা (আলাইহিস্ সালাম) বললেনঃ এরপর যদি আমি আপনাকে আর কোন প্রশ্ন করি তাহলে আমাকে আর সঙ্গে রাখবেন না। এখন তো আমার দিক থেকে আপনি ওজর পেলেন। পরে তারা সামনে দিকে চলতে লাগলেন। চলতে চলতে তাঁরা একটি জনবসতিতে গিয়ে পৌছলেন। সেখানকার লোকদের কাছে খাবার চাইলেন। তারা দু'জনের মেহমানদারী করতে অস্বীকার করলো। সেখানে তারা একটা দেয়াল দেখতে পেলেন। দেয়ালটি পড়ে যাওয়ার উপক্রম হয়েছিল। (বর্ণনাকারী) বলেনঃ দেয়ালটি ঝুঁকে পড়ে ছিল। খিযির দাঁড়ালেন। নিজের হাতে দেয়ালটি গেঁথে সোজা করে দিলেন। মূসা বললেনঃ এই বসতির লোকদের কাছে আমরা খাবার চাইলাম, তারা আমাদের মেহমানদারী করতে অস্বীকার করলো।। অর্থঃ "আপনি চাইলে এ কাজের মজুরী নিতে পারতেন।" (সূরাঃ কাহাফ-৭৬-৭৭) (অথচ আপনি তা করলেন না, বিনা পারিশ্রমিকে কাজটি করে দিলেন।) খিযির বললেনঃ বাস, এখান থেকে তোমার ও আমার মধ্যে ছাড়াছাড়ি হয়ে গেলো। এখন আমি তোমাকে সেই বিষয়গুলোর তাৎপর্য বুঝিয়ে দেবো যেগুলোর ব্যাপারে

قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّىْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ ز وَمَآ اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ج وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِى الْبَحْرِ ط عَجَبًا ﴿٦٣﴾

৬৩. তিনি বললেনঃ আপনি কি লক্ষ্য করেছেন, আমরা যখন শিলাখণ্ডে বিশ্রাম করছিলাম তখন আমি মাছের কথা ভুলে গিয়েছিলাম? শয়তানই ওর কথা বলতে আমাকে ভুলিয়ে দিয়েছিল; মাছটি আশ্চর্যজনকভাবে নিজের পথ করে নেমে গেল সমুদ্রে।

قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ج فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ﴿٦٤﴾

৬৪. মূসা (عليه السلام) বললোঃ আমরা তো এই স্থানটির অনুসন্ধান করছিলাম; অতঃপর তারা নিজেদের পদচিহ্ন ধরে ফিরে চললেন।

فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾

৬৫. অতঃপর তাঁরা সাক্ষাৎ পেলেন আমার বান্দাহদের মধ্যে একজনের, (খিযির)-এর যাকে আমি আমার নিকট হতে অনুগ্রহ দান করেছিলাম ও যাকে আমি আমার নিকট হতে শিক্ষা দিয়েছিলাম এক বিশেষ জ্ঞান।

قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾

৬৬. মূসা (عليه السلام) তাকে বললেনঃ আমি কি আপনার অনুসরণ করতে পারি; যেন সত্য পথের যে জ্ঞান

তুমি সবর করতে পারোনি। সেই নৌকাটির ব্যাপার এই ছিল যে, সেটির মালিক ছিল কয়েকটা গরীব লোক। সাগরে গতর খেটে তারা জীবন ধারণ করতো। আমি নৌকাটিকে দাগী করে দিতে চাইলাম। কারণ হচ্ছে, সামনে এমন এক বাদশাহর এলাকা রয়েছে যে প্রত্যেকটা নৌকা জোর পূর্বক কেড়ে নেয়। তারপর সেই ছেলেটির কথা। তার বাপ-মা ছিল মুমিন। আমরা আশঙ্কা করলাম ছেলেটি (পরবর্তীকালে) তার নাফরমানী ও বিদ্রোহাত্মক আচরণের সাহায্যে তাদেরকে কষ্ট দেবে। তাই আমরা চাইলাম, আল্লাহ্ তার পরিবর্তে তাদেরকে যেন এমন একটি সন্তান দেন যে, চরিত্রের দিক দিয়ে তার চেয়ে ভালো হবে এবং মানবিক স্নেহ ও দয়ার ক্ষেত্রেও তার চেয়ে উন্নত হবে। আর এ দেয়ালটার ব্যাপার এই যে, এটা হচ্ছে দুটো এতিম ছেলের তারা এই শহরে বাস করে। এই দেয়ালের নিচে তাদের জন্য সম্পদ লুকানো রয়েছে। তাদের পিতা ছিলেন নেক্‌কার ব্যক্তি। তাই তোমার রব চাইলেন, ছেলে দু'টি বড় হয়ে তাদের জন্য রাখা সম্পদ লাভ করবে। তোমার রব মেহেরবানীর কারণে এটা করা হয়েছে। আমি নিজের ইচ্ছায় এসব করিনি। এই হচ্ছে সেই সব বিষয়ের তাৎপর্য, যে জন্য তুমি ধৈর্যধারণ করতে পারোনি।" (সূরা ঃ কাহাফ- ৭৮-৮২)

রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ ভালো হতো যদি মূসা (আলাইহিস্‌সালাম) আরো একটু সবর করতেন। তাহলে আল্লাহ্ তাঁদের আরো কিছু কথা আমাদের জানাতেন। (বুখারী, হাদীস নং ৪৭২৫)

আপনাকে দান করা হয়েছে তা হতে আমাকে শিক্ষা দেন।

قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾

৬৭. তিনি বললেনঃ তুমি কিছুতেই আমার সঙ্গে ধৈর্যধারণ করে থাকতে পারবে না।

وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾

৬৮. যে বিষয় তোমার জ্ঞানায়ত্ত নয়, সে বিষয়ে তুমি ধৈর্যধারণ করবে কেমন করে?

قَالَ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَآ اَعْصِيْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾

৬৯. মূসা (عليه السلام) বললেনঃ আল্লাহ চাইলে আপনি আমাকে ধৈর্যশীল পাবেন এবং আপনার কোন আদেশ আমি অমান্য করবো না।

قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِيْ فَلَا تَسْـَٔلْنِيْ عَنْ شَيْءٍ حَتّٰٓى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾

৭০. তিনি বললেনঃ আচ্ছা, তুমি যদি আমার অনুসরণ কর-ই তবে কোন বিষয়ে আমাকে প্রশ্ন করো না, যতক্ষণ না আমি সে সম্বন্ধে তোমাকে কিছু বলি।

فَانْطَلَقَا ۖ حَتّٰٓى اِذَا رَكِبَا فِي السَّفِيْنَةِ خَرَقَهَا ۭ قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ﴿٧١﴾

৭১. অতঃপর তারা উভয়ে যাত্রা শুরু করলেন, পথিমধ্যে যখন তারা নৌকায় আরোহণ করলেন তখন তিনি তাতে ছিদ্র করে দিলেন, মূসা (عليه السلام) বললেনঃ আপনি কি আরোহীদেরকে নিমজ্জিত করে দেবার জন্যে তাতে ছিদ্র করলেন? আপনিতো এক গুরুতর অন্যায় কাজ করলেন।

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾

৭২. তিনি বললেনঃ আমি কি বলি নাই যে, তুমি আমার সঙ্গে কিছুতেই ধৈর্যধারণ করতে পারবে না?

قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِيْ بِمَا نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِيْ

৭৩. মূসা (عليه السلام) বললেনঃ আমার ভুলের জন্যে আমাকে পাকড়াও

مِنْ اَمْرِىْ عُسْرًا ﴿٧٣﴾

করবেন না[১] ও আমার ব্যাপারে অত্যাধিক কঠোরতা অবলম্বন করবেন না।

فَانْطَلَقَا ۖ حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ؕ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ﴿٧٤﴾

৭৪. অতঃপর তাঁরা চলতে থাকলেন, চলতে চলতে তাদের সাথে এক বলকের সাক্ষাৎ হলে তিনি তাকে হত্যা করে ফেললেন; তখন মূসা (عليه السلام) বললেনঃ আপনি কি এক নিষ্পাপ জীবন নাশ করলেন হত্যার অপরাধ ছাড়াই? আপনি তো এক গুরুতর অন্যায় কাজ করলেন।

১। (ক) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি এ হাদীসটি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) পর্যন্ত পৌঁছিয়ে, বর্ণনা করেন। তিনি বলেছেন, আল্লাহ্ তা'আলা আমার উম্মতের কল্পনা কিংবা ধারণার (ওপর দন্ড দেবেন না) ক্ষমা করে দিয়েছেন, যে পর্যন্ত না সে তা কাজে পরিণত করে অথবা বাক্যে ব্যবহার না করে। (বুখারী হাদীস নং ৬৬৬৪)

(খ) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাই ওয়াসালা) বলেছেনঃ যে রোযাদার ভুলবশতঃ (কোন বস্তু) খায়, সে যেন অবশ্যই তার রোযা পূর্ণ করে। কেননা আল্লাহ তাকে খাইয়েছেন ও পান পান করিয়েছেন। ৬৬৬৯)

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٥﴾

৭৫. তিনি বললেনঃ আমি কি বলি নাই যে, তুমি আমার সাথে কিছুতেই ধৈর্যধারণ করে থাকতে পারবে না?

قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِيْ ۚ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّيْ عُذْرًا ﴿٧٦﴾

৭৬. মূসা (عليه السلام) বললেনঃ এরপর যদি আমি আপনাকে কোন বিষয়ে জিজ্ঞেস করি, তবে আপনি আমাকে সঙ্গে রাখবেন না; আপনার কাছে আমার ওযর-আপত্তি চূড়ান্ত সীমায় পৌঁছে গেছে।

فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَيَاۤ اَهْلَ قَرْيَةِ ۨاسْتَطْعَمَاۤ اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ اَنْ يَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ ؕ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ اَجْرًا ﴿٧٧﴾

৭৭. অতঃপর উভয়ে চলতে লাগলেন; চলতে চলতে তাঁরা এক জনপদের অধিবাসীদের নিকট পৌঁছে খাদ্য চাইলেন; কিন্তু তারা তাদের মেহ্মানদারী করতে অস্বীকার করলো; অতঃপর সেখানে তাঁরা এক পতনোন্মুখ প্রাচীর দেখতে পেলেন এবং তিনি (খিযির) ওটাকে সুদৃঢ় (সোজা) করে দিলেন; মূসা (عليه السلام) বললেনঃ আপনি তো ইচ্ছা করলে এর জন্যে পারিশ্রমিক গ্রহণ করতে পারতেন।

قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِيْ وَبَيْنِكَ ۚ سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٧٨﴾

৭৮. তিনি বললেনঃ এ মুহূর্তেই তোমার ও আমার মধ্যে বিচ্ছেদ কার্যকর হবে। (তবে) যে বিষয়ে তুমি ধৈর্যধারণ করতে পারনি আমি তার তাৎপর্য ও ব্যাখ্যা বলে দিচ্ছি।

اَمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ فِي الْبَحْرِ فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِيْبَهَا وَكَانَ وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ غَصْبًا ﴿٧٩﴾

৭৯. নৌকাটির ব্যাপারে (কথা এই যে,) ওটা ছিল কতিপয় দরিদ্র ব্যক্তির। যারা সমুদ্রে জীবিকা অন্বেষণ করতো; আমি ইচ্ছা করলাম নৌকাটিকে ত্রুটিযুক্ত করতে, কারণ ওদের পিছনে ছিল এক রাজা যে বল প্রয়োগে নৌকা সকল ছিনিয়ে নিত।

وَاَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِيْنَآ اَنْ يُّرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ﴿٨٠﴾

৮০. আর কিশোরটির পিতা-মাতা ছিল মু'মিন। আমি আশঙ্কা করলাম যে, সে (বড় হয়ে) বিদ্রোহাচরণ ও কুফরীর দিকে তাদেরকে নিয়ে যাবে।

فَاَرَدْنَآ اَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾

৮১. অতঃপর আমি চাইলাম যে, তাদের প্রতিপালক যেন তাদেরকে তার পরিবর্তে (এমন) এক সন্তান দান করেন, যে হবে পবিত্রতায় মহত্তর ও ভক্তি ভালবাসায় ঘনিষ্ঠতর।

وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ فِى الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ اَنْ يَّبْلُغَآ اَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِىْ ؕ ذٰلِكَ تَاْوِيْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٨٢﴾

৮২. আর ঐ প্রাচীরটি-ওটা ছিল নগরীর দুই ইয়াতীম (পিতৃহীন) কিশোরের, এর নিম্নদেশে আছে তাদের গুপ্তধন এবং তাদের পিতা ছিল সৎকর্মপরায়ণ। তাই তোমার প্রতিপালক দয়াপরবশ হয়ে ইচ্ছা করলেন যে, তারা বয়ঃপ্রাপ্ত হোক এবং তারা তাদের গুপ্তধন উদ্ধার করুক; আমি নিজের থেকে কিছু করিনি; তুমি যে বিষয়ে ধৈর্যধারণে অপারগ হয়েছিলেন, এটাই তার ব্যাখ্যা।

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِى الْقَرْنَيْنِ ؕ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ﴿٨٣﴾

৮৩. তারা তোমাকে যুলকারনাইন সম্বন্ধে জিজ্ঞাসা করে; তুমি বলে দাওঃ আমি তোমাদের নিকট অচিরেই সে বিষয়ে বর্ণনা করব।

اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِى الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾

৮৪. আমি তাকে পৃথিবীতে কর্তৃত্ব দিয়েছিলাম এবং প্রত্যেক বিষয়ের উপায় ও পন্থা নির্দেশ করেছিলাম।

فَاَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٥﴾

৮৫. তিনি এক কার্যোপকরণ পথ অবলম্বন করলেন।

حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ

৮৬. চলতে চলতে যখন তিনি সূর্য ডোবার স্থানে পৌঁছলেন তখন তিনি

فِيْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ؕ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِمَّآ اَنْ تُعَذِّبَ وَاِمَّآ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾

সূর্যকে এক পংকিল (কর্দমাক্ত) জলাশয়ে অস্ত যেতে দেখলেন এবং তিনি তথায় এক সম্প্রদায়কে দেখতে পেলেন; আমি বললামঃ হে যুলকারনাইন! তুমি তাদেরকে শাস্তি দিতে পার অথবা তাদেরকে সদয়ভাবে গ্রহণ করতে পার।

قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨٧﴾

৮৭. তিনি বললেনঃ যে কেউ সীমালঙ্ঘন করবে আমি তাকে শাস্তি দেব, অতঃপর সে তার প্রতিপালকের নিকট প্রত্যাবর্তিত হবে এবং তিনি তাকে কঠিন শাস্তি দিবেন।

وَاَمَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨ الْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ اَمْرِنَا يُسْرًا ﴿٨٨﴾

৮৮. তবে যে বিশ্বাস করে এবং সৎকর্ম করে তার জন্যে প্রতিদান স্বরূপ আছে কল্যাণ এবং তার প্রতি ব্যবহারে আমি নম্র কথা বলবো।

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾

৮৯. আবার তিনি এক পথ ধরলেন।

حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾

৯০. চলতে চলতে যখন তিনি সূর্যোদয় স্থলে পৌঁছলেন তখন তিনি দেখলেন ওটা এমন এক সম্প্রদায়ের উপর উদিত হচ্ছে যাদের জন্যে সূর্য-তাপ হতে আত্মরক্ষার কোন অন্তরাল আমি সৃষ্টি করি নাই।

كَذٰلِكَ ؕ وَقَدْ اَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾

৯১. প্রকৃত ঘটনা এটাই, তার (আসল) বৃত্তান্ত আমি সম্যক অবগত আছি।

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾

৯২. আবার তিনি এক পথ ধরলেন।

حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾

৯৩. চলতে চলতে তিনি যখন পর্বত প্রাচীরের মধ্যেবর্তী স্থলে পৌঁছলেন তখন তথায় তিনি এক সম্প্রদায়কে পেলেন যারা তার কথা একেবারেই বুঝতে পারছিল না।

قَالُوْا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰٓى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾

৯৪. তারা বললোঃ হে যুলকারনাইন! ইয়াজুজ ও মাজুজ[১] পৃথিবীতে অশান্তি সৃষ্টি করছে; আমরা কি তোমাকে কর দিবো এই শর্তে যে, তুমি আমাদের ও তাদের মধ্যে এক প্রাচীর গড়ে দিবেন?

قَالَ مَا مَكَّنِّيْ فِيْهِ رَبِّيْ خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِيْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿٩٥﴾

৯৫. তিনি বললেনঃ আমার প্রতিপালক আমাকে যে ক্ষমতা দিয়েছেন তাই উৎকৃষ্ট; সুতরাং তোমরা আমাকে শ্রম দ্বারা সাহায্য কর, আমি তোমাদের ও তাদের মধ্যস্থলে এক মযবূত প্রাচীর গড়ে দেব।

اٰتُوْنِيْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِيْٓ اُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾

৯৬. তোমরা আমার নিকট লৌহপিন্ড সমূহ আনয়ন কর; অতঃপর মধ্যবর্তী ফাঁকাস্থান পূর্ণ হয়ে যখন লৌহস্তুপ দুই পর্বতের সমান হলো তখন তিনি বললেনঃ তোমরা হাঁপরে দম দিতে থাকো; যখন তা আগুনে পরিণত হলো তখন তিনি বললেনঃ তোমরা গলিত তাম্র আনয়ন কর, আমি তা ঢেলে দেই ওর উপর।

فَمَا اسْطَاعُوْٓا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿٩٧﴾

৯৭. ফলে ইয়াজুজ ও মা'জুজ তা অতিক্রম করতে পারলো না এবং ভেদ করতেও সক্ষম হল না।

১। যয়নব বিনতে জাহাস (রাযিআল্লাহু আনহা) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, একদা রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তাঁর (যায়নাবের) নিকটে ভীত ও সন্ত্রস্ত অবস্থায় গমন করে বলতে লাগলেন, (অর্থঃ) "আল্লাহ্ ছাড়া কোন (সত্য) মা'বূদ নেই।" যে বিরাট ক্ষতি, অমঙ্গল ও অনিষ্ট (তাদের নিকট) আগমন করেছে- সে কারণে আরবদের জন্য খুবই দুঃখ ও আফসোস, দুর্ভাগ্য! ইয়াজুয ও মাজুযের প্রাচীর গাত্রে এ পরিমাণ আজ খুলে দেয়া হয়েছে। এ বলে তিনি তাঁর বৃদ্ধা ও তর্জনী আঙ্গুল দ্বারা একটি বৃত্ত তৈরি করলেন। যয়নব বিনতে জাহশ বর্ণনা করেন, আমি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে জিজ্ঞেস করলাম, হে আল্লাহ্র রাসূল! আমাদের মাঝে সৎ ও ধার্মিক লোক থাকা সত্ত্বেও কি আমরা ধ্বংস হয়ে যাবো? নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তখন বললেনঃ হ্যাঁ, যখন অসৎ কাজ পাপাচার বৃদ্ধি পাবে। (বুখারী, হাদীস নং ৭১৩৫)

قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّيْ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّيْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّيْ حَقًّا ﴿٩٨﴾

৯৮. যুলকারনাইন বললেনঃ এটা আমার প্রতিপালকের অনুগ্রহ; যখন আমার প্রতিপালকের প্রতিশ্রুতি পূর্ণ হবে তখন তিনি ওটাকে চূর্ণ-বিচূর্ণ করে দিবেন এবং আমার প্রতিপালকের প্রতিশ্রুতি সত্য।

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾

৯৯. সেই দিন আমি তাদেরকে ছেড়ে দেবো দলে দলে তরঙ্গের আকারে এবং শিংগায় ফুৎকার দেয়া হবে। অতঃপর আমি তাদের সকলকে একত্রিত করবো।

وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضًا ﴿١٠٠﴾

১০০. আর সেই দিন আমি জাহান্নামকে প্রত্যক্ষভাবে উপস্থিত করবো কাফিরদের নিকট।

الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِيْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِيْ وَكَانُوْا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾

১০১. যাদের চোখের মধ্যে আমার জিকির থেকে আবরণ পড়ে গিয়েছিল আর যারা শুনতেও অপারগ ছিল।

اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ يَّتَّخِذُوْا عِبَادِيْ مِنْ دُوْنِيْٓ اَوْلِيَآءَ ۭ اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ﴿١٠٢﴾

১০২. যারা সত্য প্রত্যাখ্যান করেছে (কাফির) তারা কি মনে করে যে, তারা আমার পরিবর্তে আমার বান্দাদেরকে অভিভাবকরূপে গ্রহণ করবে? আমি সত্য প্রত্যাখ্যান-কারীদের অভ্যর্থনার জন্যে প্রস্তুত রেখেছি জাহান্নাম।

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾

১০৩. তুমি বলঃ আমি কি তোমাদেরকে সংবাদ দেবো তাদের যারা কর্মে অধিক ক্ষতিগস্ত?

اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾

১০৪. তারাই সেই লোক যাদের প্রচেষ্টা দুনিয়াবী জীবনে বিভ্রান্ত হয়। যদিও তারা মনে করে যে, তারা সৎকর্ম করছে।[১]

১। আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, যে ব্যক্তি আমাদের এই দ্বীনের মধ্যে নতুন কিছু প্রবর্তন করবে তা মারদুদ বা প্রত্যাখ্যাত। (তা গ্রহণযোগ্য হবে না) (বুখারী, হাদীস নং ২৬৯৭)

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَزْنًا ﴿١٠٥﴾

১০৫. ওরাই তারা, যারা অস্বীকার করে তাদের প্রতিপালকের নিদর্শনাবলী ও তাঁর সাথে তাদের সাক্ষাতের বিষয়; ফলে, তাদের কর্ম নিস্ফল হয়ে যায়। সুতরাং কিয়ামতের দিন আমি তাদের জন্য কোন পরিমাপ প্রতিষ্ঠিত ও স্থির করবো না। (অর্থাৎ তাদের কোন প্রকার গুরুত্ব ও মূল্য থাকবে না)

ذَٰلِكَ جَزَاؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوا وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَرُسُلِي هُزُوًا ﴿١٠٦﴾

১০৬. জাহান্নামই তাদের প্রতিফল, যেহেতু তারা সত্য প্রত্যাখ্যান করেছে এবং আমার নিদর্শনাবলী ও রাসূলদেরকে গ্রহণ করেছে বিদ্রূপের বিষয়রূপে।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾

১০৭. যারা বিশ্বাস করে ও সৎকর্ম করে তাদের অভ্যর্থনার জন্যে আছে "জান্নাতুল ফিরদাউস।

خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾

১০৮. সেথায় তারা স্থায়ী হবে; এর পরিবর্তে তারা অন্য স্থানে স্থানান্তরিত হওয়া কামনা করবে না।

قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِكَلِمَاتِ رَبِّي لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنْفَدَ كَلِمَاتُ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾

১০৯. তুমি বলঃ আমার প্রতি-পালকের কথা লিপিবদ্ধ করবার জন্যে সমুদ্র যদি কালি হয়, তবে আমার প্রতিপালকের কথা শেষ হবার পূর্বেই সমুদ্র নিঃশেষ হয়ে যাবে সাহায্যার্থে যদি ও এর মত আরেকটি কালির জন্য (সমুদ্র) আনয়ন করি।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ فَمَنْ كَانَ يَرْجُو لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ﴿١١٠﴾

১১০. তুমি বলঃ আমি তো তোমাদের মতই একজন মানুষ, আমার প্রতি প্রত্যাদেশ হয় যে, তোমাদের ইলাহ একজন। সুতরাং যে তার প্রতিপালকের সাক্ষাৎ কামনা করে সে যেন সৎকর্ম করে ও তার প্রতিপালকের ইবাদতে কাউকেও শরীক না করে।

সূরাঃ মারইয়াম, মাক্কী

(আয়াতঃ ৯৮, রুকূ'ঃ ৬)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

১. কা-ফ্-হা-ইয়া-আঈন-সা-দ্;

২. এটা তোমার প্রতিপালকের অনুগ্রহের বিবরণ তাঁর বান্দাহ যাকারিয়ার (عليه السلام) প্রতি।

৩. যখন তিনি তাঁর প্রতিপালককে আহ্বান করেছিলেন নিভৃতে।

৪. তিনি বলেছিলেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমার অস্থি দুর্বল, (বয়স ভারাবনত) হয়েছে, বার্ধক্যে আমার মস্তক শুভ্রোজ্জ্বল হয়েছে; হে আমার প্রতিপালক! আপনাকে আহ্বান করে আমি কখনো ব্যর্থ হই নি।

৫. আমি ভয় করি আমার পর উত্তরাধিকারীত্বের, আমার স্ত্রী বন্ধ্যা, সুতরাং আপনি আপনার নিকট হতে আমাকে দান করুন উত্তরাধিকারী।

৬. যে আমার উত্তরাধিকারিত্ব করবে এবং উত্তরাধিকারিত্ব পাবে ইয়াকুবের (عليه السلام) বংশের এবং হে আমার প্রতিপালক! তাকে করুন সন্তোষভাজন।

৭. হে যাকারিয়া (عليه السلام)! আমি তোমাকে এক পুত্রের সুসংবাদ দিচ্ছি। তার নাম হবে ইয়াহইয়া (عليه السلام); এই নামে আমি পূর্বে কারো নামকরণ করি নাই।

سُوْرَةُ مَرْيَمَ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٩٨ رُكُوْعَاتُهَا ٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

كٓهٰيٰعٓصٓ ①

ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ②

اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا ③

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ
الرَّاْسُ شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآئِكَ
رَبِّ شَقِيًّا ④

وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَّرَآءِيْ وَكَانَتِ
امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ⑤

يَّرِثُنِيْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ
رَبِّ رَضِيًّا ⑥

يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ۨ اسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ
لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ⑦

قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِىْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِىْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ﴿٨﴾

৮. তিনি বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! কেমন করে আমার পুত্র হবে যখন আমার স্ত্রী বন্ধ্যা ও আমি বার্ধক্যের শেষ সীমায় পৌঁছে গেছি!

قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَىَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا ﴿٩﴾

৯. তিনি বললেনঃ এই ভাবেই হবে; তোমার প্রতিপালক বলেনঃ এটা আমার জন্যে সহজ; আমি তো পূর্বে তোমাকে সৃষ্টি করেছি যখন তুমি কিছুই ছিলে না।

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّىْۤ اٰيَةً ؕ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ﴿١٠﴾

১০. যাকারিয়া (عليه السلام) বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমাকে একটি নিদর্শন দিন! তিনি বললেনঃ তোমার নিদর্শন এই যে, তুমি কারো সাথে ক্রমাগত তিন দিন বাক্যালাপ করবে না।

فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰۤى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿١١﴾

১১. অতঃপর তিনি হুজরা হতে বের হয়ে তার সম্প্রদায়ের নিকট আসলেন ও ইঙ্গিতে তাদেরকে সকাল-সন্ধ্যায় আল্লাহর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করতে বললো।

يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ؕ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ﴿١٢﴾

১২. আমি বললামঃ হে ইয়াহইয়া (عليه السلام)! এই কিতাব দৃঢ়তার সাথে গ্রহণ করো; আমি তাঁকে শৈশবেই বিচারবুদ্ধি দান করেছিলাম।

وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ؕ وَكَانَ تَقِيًّا ﴿١٣﴾

১৩. এবং আমার নিকট হতে হৃদয়ের কোমলতা ও পবিত্রতা; আর তিনি ছিলেন অত্যন্ত আল্লাহভীরু।

وَّبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ﴿١٤﴾

১৪. পিতা-মাতার অনুগত কল্যাণী এবং উদ্ধত (স্বেচ্ছাচারী) ও অবাধ্য ছিলেন না।

وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ

১৫. তাঁর প্রতি ছিল শান্তি যেদিন তিনি জন্ম লাভ করেন ও শান্তি

يُبْعَثُ حَيًّا ﴿١٥﴾

থাকবে যেদিন তাঁর মৃত্যু হবে ও যেদিন তিনি জীবিত অবস্থায় পুনরুজ্জীবিত হবেন।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ﴿١٦﴾

১৬. (হে রাসূল ﷺ) বর্ণনা করুন এই কিতাবে উল্লেখিত মারইয়ামের কথা, যখন তিনি তার পরিবারবর্গ হতে পৃথক হয়ে নিরালায় পূর্ব দিকে এক স্থানে আশ্রয় নিলেন।

فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۫ فَاَرْسَلْنَاۤ اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿١٧﴾

১৭. অতঃপর তাদের হতে নিজেকে আড়াল করবার জন্যে তিনি পর্দা করলেন; অতঃপর আমি তার নিকট আমার রূহকে (জিবরাঈলকে عليه السلام) পাঠালাম, তিনি তাঁর নিকট পূর্ণ মানবাকৃতিতে আত্মপ্রকাশ করলেন।

قَالَتْ اِنِّيْۤ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ﴿١٨﴾

১৮. মারইয়াম বললেনঃ তুমি যদি আল্লাহকে ভয় কর- তবে আমি তোমা হতে দয়াময়ের আশ্রয় নিচ্ছি।

قَالَ اِنَّمَاۤ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ﴿١٩﴾

১৯. তিনি বললেনঃ আমি তো শুধু তোমার প্রতিপালক প্রেরিত, তোমাকে এক পবিত্র পুত্র দান করবার জন্যে (এসেছি)।

قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ﴿٢٠﴾

২০. মারইয়াম বললেনঃ কেমন করে আমার পুত্র হবে! অথচ আমাকে কোন পুরুষ স্পর্শ করে নাই ও আমি ব্যভিচারিণীও নই।

قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهٗۤ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا ﴿٢١﴾

২১. তিনি বললেনঃ এইরূপই হবে; তোমার প্রতিপালক বলেছেনঃ এটা আমার জন্যে সহজ এবং তাঁকে আমি এই জন্যে সৃষ্টি করবো, যেন তিনি মানুষের জন্যে এক নিদর্শন ও আমার নিকট হতে এক অনুগ্রহের প্রতীক হন। এটা তো এক সিদ্ধান্তকৃত ব্যাপার।

فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿٢٢﴾

২২. অতঃপর তিনি গর্ভে সন্তান ধারণ করলেন ও তৎসহ এক দূরবর্তী স্থানে চলে গেলেন।

فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يٰلَيْتَنِىْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ﴿٢٣﴾

২৩. প্রসব বেদনা তাঁকে এক খেজুর বৃক্ষ তলে আসন নিতে বাধ্য করলো; তিনি বললেনঃ হায়! এর পূর্বে আমি যদি মরে যেতাম ও লোকের স্মৃতি হতে সম্পূর্ণ বিলুপ্ত হতাম।

فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ اَلَّا تَحْزَنِىْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ﴿٢٤﴾

২৪. ফেরেশতা তার নিম্ন পার্শ্ব হতে আহ্বান করে তাকে বললেনঃ তুমি চিন্তা করো না, তোমার পাদদেশে তোমার প্রতিপালক এক পানির ঝর্ণা করেছেন।

وَهُزِّىْٓ اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ﴿٢٥﴾

২৫. তুমি তোমার দিকে খেজুর বৃক্ষের কাণ্ড নাড়া দাও, তা থেকে তোমার উপর সুপক্ক তাজা খেজুর পতিত হবে।

فَكُلِىْ وَاشْرَبِىْ وَقَرِّىْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ فَقُوْلِىْٓ اِنِّىْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ﴿٢٦﴾

২৬. সুতরাং আহার করো, পান করো ও চক্ষু জুড়িয়ে নাও; মানুষের মধ্যে কাউকেও যদি তুমি দেখো তখন বলোঃ আমি দয়াময়ের উদ্দেশ্যে মৌনতাবলম্বনের মানত করেছি; সুতরাং আজ আমি কিছুতেই কোন মানুষের সাথে বাক্যালাপ করবো না।

فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ؕ قَالُوْا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔا فَرِيًّا ﴿٢٧﴾

২৭. অতঃপর তিনি সন্তানকে নিয়ে তার সম্প্রদায়ের নিকট উপস্থিত হলেন তারা বললোঃ হে মারইয়াম! তুমি তো এক অদ্ভুত কাণ্ড করে বসেছো!

يٰٓاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِيًّا ﴿٢٨﴾

২৮. হে হারূন ভগ্নী, তোমার পিতা অসৎব্যক্তি ছিলেন না এবং তোমার মাতাও ছিলেন না ব্যভিচারিণী।

فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ ؕ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ﴿٢٩﴾

২৯. অতঃপর মারইয়াম (عليها السلام) সন্তানের দিকে ইঙ্গিত করলেন, তারা বললোঃ যে কোলের শিশু তার সাথে আমরা কেমন করে কথা বলবো?

قَالَ اِنِّيْ عَبْدُ اللّٰهِ ؕ اٰتٰنِيَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِيْ نَبِيًّا ﴿٣٠﴾

৩০. শিশুটি বললোঃ আমি তো আল্লাহর বান্দাহ; তিনি আমাকে কিতাব দিয়েছেন, আমাকে নবী করেছেন।

وَّجَعَلَنِيْ مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۪ وَاَوْصٰنِيْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ﴿٣١﴾

৩১. যেখানেই আমি থাকি না কেন, তিনি আমাকে বরকতময় করেছেন, তিনি আমাকে নির্দেশ দিয়েছেন যত দিন জীবিত থাকি, তত দিন নামায ও যাকাত আদায় করতে।

وَّبَرًّا بِوَالِدَتِيْ ۫ وَلَمْ يَجْعَلْنِيْ جَبَّارًا شَقِيًّا ﴿٣٢﴾

৩২. আর আমার মাতার প্রতি অনুগত থাকতে এবং তিনি আমাকে করেন নাই অহংকারী ও হতভাগ্য।

وَالسَّلٰمُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ اَمُوْتُ وَيَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا ﴿٣٣﴾

৩৩. আমার প্রতি শান্তি, যেদিন আমি জন্ম লাভ করেছি ও যেদিন আমার মৃত্যু হবে ও যেদিন আমি জীবিত অবস্থায় পুনরুত্থিত হবো।

ذٰلِكَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِيْ فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿٣٤﴾

৩৪. ইনিই হলেন মারইয়াম পুত্র ঈসা (عليه السلام); সত্য কথা, যে বিষয়ে তারা বিতর্ক করে।

مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ اِذَا قَضٰۤى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٣٥﴾

৩৫. সন্তান গ্রহণ করা আল্লাহর কাজ নয়, তিনি পবিত্র, তিনি যখন কিছু স্থির করেন তখন বলেনঃ 'হও' এবং তা হয়ে যায়।

وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٣٦﴾

৩৬. আল্লাহই আমার প্রতিপালক ও তোমাদের প্রতিপালক, সুতরাং তাঁর ইবাদত করো, এটাই সরল পথ।

فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا

৩৭. অতঃপর দলগুলি নিজেদের মধ্যে মতানৈক্য সৃষ্টি করলো।

مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٣٧﴾

সুতরাং এই কাফিরদের একমহান দিবসের (কিয়ামতের) আগমনে ভীষণ দুর্দশা রয়েছে।

أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُوْنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾

৩৮. তারা যেদিন আমার নিকট আসবে সেই দিন তারা কত স্পষ্ট শুনবে ও দেখবে! কিন্তু সীমা-লঙ্ঘনকারীগণ আজ স্পষ্ট বিভ্রান্তিতে আছে।

وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٩﴾

৩৯. (হে রাসূল ﷺ) তাদেরকে সতর্ক করে দাও পরিতাপের দিবস সম্বন্ধে, যখন সকল সিদ্ধান্ত হয়ে যাবে; তারা অসাবধানতায় আছে তাই তারা ঈমান আনছে না।[১]

إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٤٠﴾

৪০. চূড়ান্ত মালিকানার অধিকারী আমি, পৃথিবীর ও এর উপর যারা আছে তাদের, এবং তারা আমারই নিকট প্রত্যাবর্তিত হবে।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ إِبْرٰهِيْمَ ۚ إِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿٤١﴾

৪১. বর্ণনা কর এই কিতাবে (উল্লিখিত) ইবরাহীমের (عليه السلام) কথা; তিনি ছিলেন মহা সত্যবাদী ও নবী।

১। আবূ সাঈদ খুদরী (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ কিয়ামতের দিন মৃত্যুকে আনা হবে একটি কালোর মাঝে সাদা লোম বিশিষ্ট মেষ বা ভেড়ার আকারে। একজন ঘোষক ঘোষণা করবেঃ হে জান্নাতবাসীগণ! (এ আওয়াজ শুনে) তারা মাথা তুলে দেখবে। ঘোষক বলবেঃ তোমরা কি একে চেনো? তারা বলবেঃ হ্যাঁ, এতো মৃত্যু। আসলে তাদের প্রত্যেকে (মৃত্যুর সময়) তাকে দেখেছিল। তারপর সে ডাক দেবেঃ হে জাহান্নামীরা! (এ ডাক শুনে) তারা মাথা তুলে দেখবে। ঘোষক বলবেঃ তোমরা কি একে চেনো? তারা জবাব দেবে, হ্যাঁ, এতো মৃত্যু। আসলে তাদের প্রত্যেকে মৃত্যুর সময় তাকে দেখেছিল। তখন তাকে জবাই করা হবে। তারপর সেই ঘোষক বলবেঃ হে জান্নাতবাসীগণ! তোমরা নিশ্চিন্তে জান্নাতে বসবাস করো। আর কখনো তোমাদের মৃত্যু হবে না। হে জাহান্নামবাসীরা! তোমরা জাহান্নামে বসবাস করতে থাকো। তোমাদের আর কখনো মৃত্যু হবে না। এ ঘটনা বর্ণনা করার পর রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) পড়েনঃ অর্থঃ "(হে রাসূল!) তাদেরকে ভয় দেখাও সেই আক্ষেপের দিনের, যে দিনে ফয়সালা হয়ে যাবে। অথচ এরা তবুও গাফলতির মধ্যে ডুবে আছে।" দুনিয়াবাসীরা এখনো গাফলতির সাগরে হাবুডুবু খাচ্ছে। তারা এখনো ঈমান আনছে না।" (বুখারী, হাদীস নং ৪৭৩০)

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنْكَ شَيْئًا ﴿٤٢﴾

৪২. যখন তিনি তাঁর পিতাকে বললেনঃ হে আমার পিতা! যে শুনে না দেখে না এবং তোমার কোন কাজে আসে না তুমি তার ইবাদত কর কেন?

يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ جَاءَنِي مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿٤٣﴾

৪৩. হে আমার পিতা! আমার নিকট তো এসেছে জ্ঞান, যা তোমার নিকট আসে নাই। সুতরাং আমার অনুসরণ করো, আমি তোমাকে সঠিক পথ দেখাবো।

يَا أَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطَانَ ۖ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ عَصِيًّا ﴿٤٤﴾

৪৪. হে আমার পিতা! শয়তানের ইবাদত করো না; শয়তান দয়াময়ের অবাধ্য।

يَا أَبَتِ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يَمَسَّكَ عَذَابٌ مِنَ الرَّحْمَٰنِ فَتَكُونَ لِلشَّيْطَانِ وَلِيًّا ﴿٤٥﴾

৪৫. হে আমার পিতা! আমি আশঙ্কা করি, তোমাকে দয়াময়ের শাস্তি স্পর্শ করবে এবং তুমি শয়তানের সাথী হয়ে পড়বে।

قَالَ أَرَاغِبٌ أَنْتَ عَنْ آلِهَتِي يَا إِبْرَاهِيمُ ۖ لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ لَأَرْجُمَنَّكَ ۖ وَاهْجُرْنِي مَلِيًّا ﴿٤٦﴾

৪৬. পিতা বললোঃ হে ইবরাহীম (عليه السلام)! তুমি কি আমার দেব-দেবী হতে বিমুখ হচ্ছো? যদি তুমি নিবৃত্ত না হও তবে আমি প্রস্তরাঘাতে তোমার প্রাণ নাশ করবোই; তুমি চিরদিনের জন্যে আমার নিকট হতে দূর হয়ে যাও।

قَالَ سَلَامٌ عَلَيْكَ ۖ سَأَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّي ۖ إِنَّهُ كَانَ بِي حَفِيًّا ﴿٤٧﴾

৪৭. ইবরাহীম (عليه السلام) বললেনঃ সালাম তোমার প্রতি; আমি আমার প্রতিপালকের নিকট তোমার জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করবো, নিশ্চয়ই তিনি আমার প্রতি অতিশয় অনুগ্রহশীল।

وَأَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَأَدْعُو رَبِّي ۖ عَسَىٰ أَلَّا أَكُونَ بِدُعَاءِ رَبِّي شَقِيًّا ﴿٤٨﴾

৪৮. আমি তোমার দিক হতে ও তোমরা আল্লাহ ব্যতীত যাদের ইবাদত কর তাদের নিকট হতে

পৃথক হচ্ছি; আমি আমার প্রতিপালককে আহ্বান করি; আশা করি, আমার প্রতিপালককে আহ্বান করে আমি ব্যর্থকাম হবো না।

فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۙ وَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۖ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿٤٩﴾

৪৯. অতঃপর তিনি যখন তাদের থেকে ও তারা আল্লাহ্ ব্যতীত যাদের ইবাদত করতো সেই সব হতে পৃথক হলেন, তখন আমি তাঁকে দান করলাম ইসহাক (عليه السلام) ও ইয়াকুব (عليه السلام) এবং প্রত্যেককে নবী করলাম।

وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِنْ رَحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿٥٠﴾

৫০. এবং তাদেরকে আমি দান করলাম আমার অনুগ্রহ ও তাদেরকে দিলাম সমুন্নত সত্য বাকশক্তি।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ مُوسَىٰ ۚ إِنَّهُ كَانَ مُخْلَصًا وَكَانَ رَسُولًا نَبِيًّا ﴿٥١﴾

৫১. এই কিতাবে (উল্লিখিত) মূসার (عليه السلام) কথা বর্ণনা করো, তিনি ছিলেন বিশুদ্ধচিত্ত এবং তিনি ছিলেন রাসূল, নবী।

وَنَادَيْنَاهُ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ الْأَيْمَنِ وَقَرَّبْنَاهُ نَجِيًّا ﴿٥٢﴾

৫২. আমি তাঁকে আহ্বান করেছিলাম তূর পর্বতের ডান দিক হতে এবং আমি গূঢ়তত্ত্ব আলোচনারত অবস্থায় তাঁকে নিকটবর্তী করেছিলাম।

وَوَهَبْنَا لَهُ مِنْ رَحْمَتِنَا أَخَاهُ هَارُونَ نَبِيًّا ﴿٥٣﴾

৫৩. আমি নিজ অনুগ্রহে তাঁকে দিলাম তার ভ্রাতা হারূনকে (عليه السلام) নবীরূপে।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِسْمَاعِيلَ ۚ إِنَّهُ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُولًا نَبِيًّا ﴿٥٤﴾

৫৪. এবং এই কিতাবে (উল্লিখিত) ইসমাঈলের (عليه السلام) কথা বর্ণনা কর, নিশ্চয়ই তিনি ছিলেন প্রতিশ্রুতি পালনে সত্যাশ্রয়ী এবং তিনি ছিলেন রাসূল, নবী।

وَكَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهُ بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ

৫৫. তিনি তাঁর পরিবার-পরিজনকে নামায ও যাকাত আদায়ের নির্দেশ

وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ﴿٥٥﴾

দিতেন এবং তিনি ছিলেন তাঁর প্রতিপালকের সন্তোষভাজন ।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿٥٦﴾

৫৬. আরও এই কিতাবে (উল্লিখিত) ইদ্‌রীসের (عليه السلام) কথা বর্ণনা কর, তিনি ছিলেন মহা সত্যবাদী নবী।

وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿٥٧﴾

৫৭. এবং আমি তাঁকে দান করেছিলাম উচ্চ মর্যাদা।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۫ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۫ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَآءِيْلَ ۫ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ؕ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ۩ ﴿٥٨﴾

৫৮. নবীদের মধ্যে যাদেরকে আল্লাহ অনুগ্রহ করেছেন যাঁরা আদমের (عليه السلام) বংশধর ও যাদেরকে আমি নূহের (عليه السلام) সাথে নৌকায় আরোহণ করিয়েছিলাম তাদের বংশোদ্ভূত, ইবরাহীম (عليه السلام) ও ইসরাঈলের বংশোদ্ভূত ও যাদেরকে আমি হেদায়াত দান করেছিলাম ও মনোনীত করেছিলাম, তাদের অন্তর্ভুক্ত। তাদের নিকট দয়াময়ের আয়াত আবৃত্তি করা হলে তারা সিজদায় লুটিয়ে পড়তো ক্রন্দনরত অবস্থায়।

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿٥٩﴾

৫৯. তাদের পর আসলো অপদার্থ পরবর্তীরা, তারা নামায নষ্ট করলো আর কুপ্রবৃত্তির অনুসরণ করলো; সুতরাং তারা অচিরেই তারা ধ্বংসে (জাহান্নামের গভীর গর্তে) পতিত হবে।

اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ﴿٦٠﴾

৬০. কিন্তু তারা নয় যারা তাওবা করেছে, ঈমান এনেছে ও সৎকর্ম করেছে; তারা তো জান্নাতে প্রবেশ করবে; তাদের প্রতি কোন যুলুম করা হবে না।

جَنّٰتِ عَدْنِ ۨ الَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ

৬১. এটা স্থায়ী জান্নাত, যে অদৃশ্য বিষয়ের প্রতিশ্রুতি দয়াময় তাঁর

بِالْغَيْبِ ۚ إِنَّهُ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًّا ﴿٦١﴾

বান্দাদেরকে দিয়েছেন; তাঁর প্রতিশ্রুতি অবশ্যম্ভাবী।

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا إِلَّا سَلَامًا ۖ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ﴿٦٢﴾

৬২. সেখানে তারা 'শান্তি' ছাড়া কোন অসার বাক্য শুনবে না এবং সেথায় সকাল-সন্ধ্যায় তাদের জন্যে থাকবে জীবনোপকরণ।

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾

৬৩. এটা সেই জান্নাত, যার অধিকারী করবো আমি আমার বান্দাদের মধ্যে মুত্তাকীদেরকে।

وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ ۖ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَٰلِكَ ۚ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾

৬৪. (জিব্‌রাঈল عليه السلام বলেন) আমরা আপনার প্রতিপালকের আদেশ ব্যতীত অবতরণ করবো না; যা আমাদের সম্মুখে ও পশ্চাতে আছে ও যা এই দু-এর অন্তর্বর্তী তা তাঁরই এবং আপনার প্রতিপালক ভুলে যান না।

رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ ۚ هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا ﴿٦٥﴾

৬৫. তিনি আকাশমণ্ডলী, পৃথিবী এবং এতোদুভয়ের অন্তর্বর্তী যা কিছু আছে, সবারই প্রতিপালক; সুতরাং তুমি তাঁরই ইবাদত করো এবং তাঁরই ইবাদতে প্রতিষ্ঠিত থাকো; তুমি কি তাঁর সমনাম সম্পন্ন কাউকেও জান?

وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ أَإِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ أُخْرَجُ حَيًّا ﴿٦٦﴾

৬৬. মানুষ বলেঃ আমার মৃত্যু হলে আমি কি জীবিত অবস্থায় পুনারুত্থিত হবো?

أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ﴿٦٧﴾

৬৭. মানুষ কি স্মরণ করে না যে, আমি তাকে পূর্বে সৃষ্টি করেছি যখন সে কিছুই ছিল না?

فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ﴿٦٨﴾

৬৮. সুতরাং শপথ তোমার প্রতিপালকের! আমি তো তাদেরকেও শয়তানদেরকে সমবেত করবই পরে আমি তাদেরকে নতজানু অবস্থায়

জাহান্নামের চতুর্দিকে উপস্থিত করবই।

ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ عَلَى الرَّحْمٰنِ عِتِيًّا ﴿٦٩﴾

৬৯. অতঃপর প্রত্যেক দলের মধ্যে যে দয়াময়ের প্রতি সর্বাধিক অবাধ্য আমি তাকে টেনে বের করবই।

ثُمَّ لَنَحْنُ اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا صِلِيًّا ﴿٧٠﴾

৭০. তারপর আমি তো তাদের মধ্যে যারা জাহান্নামের প্রবেশের অধিকতর যোগ্য তাদের বিষয় ভাল জানি।

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿٧١﴾

৭১. এবং তোমাদের প্রত্যেকেই ওটা (পুলসিরাত) অতিক্রম করবে; এটা তোমার প্রতিপালকের অমোঘ সিদ্ধান্ত।

ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾

৭২. পরে আমি মুত্তাকীদেরকে উদ্ধার করবো এবং যালিমদেরকে সেথায় নতজানু অবস্থায় রেখে দিবো।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا ۙ اَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَّاَحْسَنُ نَدِيًّا ﴿٧٣﴾

৭৩. তাদের নিকট আমার স্পষ্ট আয়াত আবৃত্ত হলে কাফিররা মু'মিনদেরকে বলেঃ দু'দলের মধ্যে কোনটি মর্যাদায় শ্রেষ্ঠতর এবং মজলিস হিসেবে কোনটি উত্তম?

وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَحْسَنُ اَثَاثًا وَّرِءْيًا ﴿٧٤﴾

৭৪. তাদের পূর্বে কত মানব গোষ্ঠীকে আমি বিনাশ করেছি যারা তাদের অপেক্ষা সম্পদ ও বাহ্য দৃষ্টিতে শ্রেষ্ঠ ছিল।

قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ اِمَّا الْعَذَابَ وَاِمَّا السَّاعَةَ ؕ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضْعَفُ جُنْدًا ﴿٧٥﴾

৭৫. বলঃ যারা বিভ্রান্তিতে আছে, দয়াময় তাদেরকে প্রচুর অবকাশ দিবেন যতক্ষণ না তারা যে বিষয়ে তাদেরকে সতর্ক করা হচ্ছে তা প্রত্যক্ষ করবে, তা শাস্তি হোক অথবা কিয়ামতই হোক; অতঃপর তারা জানতে পারবে কে মর্যাদায় নিকৃষ্ট ও কে দল-বলে দুর্বল।

وَيَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا هُدًى ؕ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا ﴿٧٦﴾

৭৬. এবং যারা সৎপথে চলে আল্লাহ তাদেরকে অধিক হিদায়াত দান করেন এবং স্থায়ী সৎকর্ম তোমার প্রতিপালকের পুরস্কার প্রাপ্তির জন্যে শ্রেষ্ঠ এবং প্রতিদান হিসেবেও শ্রেষ্ঠ।

اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ كَفَرَ بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوْتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٧٧﴾

৭৭. তুমি কি লক্ষ্য করেছ তাকে, যে আমার আয়াতসমূহ প্রত্যাখ্যান করে এবং বলেঃ আমাকে ধন-সম্পদ ও সন্তান-সন্ততি দেয়া হবেই।

اَطَّلَعَ الْغَيْبَ اَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٧٨﴾

৭৮. সে কি অদৃশ্য সম্বন্ধে অবহিত হয়েছে অথবা দয়াময়ের নিকট হতে প্রতিশ্রুতি লাভ করেছে?

كَلَّا ؕ سَنَكْتُبُ مَا يَقُوْلُ وَنَمُدُّ لَهٗ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ﴿٧٩﴾

৭৯. কখনই নয়! তারা যা বলে, আমি তা লিখে রাখবো এবং তাদের শাস্তি বৃদ্ধি করতে থাকবো।

وَّنَرِثُهٗ مَا يَقُوْلُ وَيَاْتِيْنَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾

৮০. সে যে বিষয়ের কথা বলে, তা থাকবে আমার অধিকারে এবং সে আমার নিকট আসবে একা।

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾

৮১. তারা আল্লাহ ছাড়া অন্য মা'বুদদেরকে গ্রহণ করে এই জন্যে যে, যাতে তারা তাদের সহায় হয়।

كَلَّا ؕ سَيَكْفُرُوْنَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿٨٢﴾

৮২. কখনই নয় তারা তাদের ইবাদত অস্বীকার করবে এবং তাদের বিরোধী হয়ে যাবে।

اَلَمْ تَرَ اَنَّآ اَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا ﴿٨٣﴾

৮৩. তুমি কি লক্ষ্য কর না যে, আমি কাফিরদের জন্যে শয়তানদেরকে পাঠিয়েছি তাদেরকে মন্দ কর্মে বিশেষভাবে প্রলুব্ধ করবার জন্যে।

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿٨٤﴾

৮৪. সুতরাং তাদের বিষয়ে তড়িঘড়ি করো না; আমি তো গণনা করছি তাদের নির্ধারিত কাল।

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾

৮৫. সে দিন আমি দয়াময়ের নিকট মুত্তাকীদেরকে সম্মানিত মেহমান রূপে সমবেত করবো,

وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾

৮৬. এবং অপরাধীদেরকে পিপাসার্ত অবস্থায় জাহান্নামের দিকে তাড়িয়ে নিয়ে যাবো।

لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٨٧﴾

৮৭. যিনি দয়াময়ের নিকট প্রতিশ্রুতি গ্রহণ করেছেন, তিনি ব্যতীত অন্য কারো সুপারিশ করবার ক্ষমতা থাকবে না।

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾

৮৮. তারা বলেঃ দয়াময় সন্তান গ্রহণ করেছেন।

لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا اِدًّا ﴿٨٩﴾

৮৯. তোমরা তো এক বীভৎস কথার অবতারণা করেছ।

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْاَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾

৯০. এতে যেন আকাশসমূহ বিদীর্ণ হয়ে যাবে, পৃথিবী খন্ড-বিখণ্ড হবে ও পর্বতসমূহ চূর্ণ-বিচূর্ণ হয়ে আপতিত হবে।

اَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾

৯১. যেহেতু তারা দয়াময়ের উপর সন্তান আরোপ করে।

وَمَا يَنْبَغِيْ لِلرَّحْمٰنِ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾

৯২. অথচ সন্তান গ্রহণ করা দয়াময়ের জন্যে শোভনীয় নয়।

اِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اِلَّا اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ﴿٩٣﴾

৯৩. আকাশসমূহে ও পৃথিবীতে এমন কেউ নেই, যে দয়াময়ের নিকট উপস্থিত হবে না বান্দারূপে।

لَقَدْ اَحْصٰهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٤﴾

৯৪. তিনি তাদেরকে পরিবেষ্টন করে রেখেছেন এবং তিনি তাদেরকে বিশেষভাবে গণনা করেছেন।

وَكُلُّهُمْ اٰتِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿٩٥﴾

৯৫. এবং কিয়ামতের দিবস তাদের সকলেই তাঁর নিকট আসবে একাকী অবস্থায়।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَٰنُ وُدًّا ﴿٩٦﴾

৯৬. যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে দয়াময় তাদের জন্যে সৃষ্টি করবেন ভালবাসা।[১]

فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ وَتُنْذِرَ بِهِ قَوْمًا لُّدًّا ﴿٩٧﴾

৯৭. আমি তো তোমার ভাষায় কুরআনকে সহজ করে দিয়েছি যাতে তুমি তা দ্বারা মুত্তাকীদেরকে সুসংবাদ দিতে পার এবং বিতণ্ডাপ্রবণ কলহপরায়ণ সম্প্রদায়কে সতর্ক করতে পার।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ ۖ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُم مِّنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ﴿٩٨﴾

৯৮. আর তাদের পূর্বে আমি কত মানব গোষ্ঠীকে বিনাশ করেছি! তুমি কি তাদের কাউকেও দেখতে পাও অথবা তাদের ক্ষীণতম শব্দও শুনতে পাও?

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আল্লাহ্ তা'আলা যখন কোন বান্দাকে ভালোবাসেন, তখন জিবরাঈল (আলাইহিস্ সালাম) কে ডেকে বলেন, আল্লাহ্ তা'আলা অমুক বান্দাকে ভালোবাসেন। এজন্য তুমিও তাকে ভালোবাস। তখন জিবরাঈল (আলাইহিস্ সালাম) ও তাকে ভালোবাসেন। অতপর জিবরাঈল (আলাইহিস্ সালাম) আসমানবাসীদের মধ্যে ঘোষণা করে দেন যে, আল্লাহ্ তা'আলা অমুক বান্দাকে ভালোবাসেন। এজন্য তোমরাও তাকে ভালোবাস। তখন আসমানবাসীরাও তাকে ভালোবাসতে থাকে। তারপর পৃথিবীবাসীর অন্তরেও তাকে গ্রহণীয় ও বরণীয় করে রাখা হয়। (বুখারী, হাদীস নং ৬০৪০)

সূরাঃ ত্বা-হা, মাক্কী

(আয়াতঃ ১৩৫, রুকূ'ঃ ৮)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُوْرَةُ طٰهٰ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ١٣٥ رُكُوْعَاتُهَا ٨

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. ত্বা-হা-।

طٰهٰ ①

২. তোমাকে কষ্ট দেয়ার জন্যে আমি তোমার প্রতি কুরআন অবতীর্ণ করি নি।

مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى ②

৩. বরং যে (আল্লাহকে) ভয় করে তাদের উপদেশার্থে।

اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ③

৪. যিনি সমুচ্চ আকাশমণ্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন এটা তাঁর নিকট হতে অবতীর্ণ।

تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ④

৫. দয়াময় (আল্লাহ) আরশের সমুন্নীত।

اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى ⑤

৬. যা আছে আকাশমণ্ডলীতে, পৃথিবীতে, এই দু'য়ের অন্তর্বর্তী স্থানে ও ভূ-গর্ভে তা তাঁরই।

لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى ⑥

৭. তুমি উচ্চ কণ্ঠে যা-ই বল, তিনি তো যা গুপ্ত ও অতি গোপন সবই জানেন।

وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفٰى ⑦

৮. আল্লাহ, তিনি ছাড়া অন্য কোন (সত্য) মা'বূদ নেই, উত্তম (হবার) উত্তম নাম তাঁরই।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ⑧

৯. আর মূসার (عليه السلام) বৃত্তান্ত তোমার কাছে পৌঁছেছে কি?

وَهَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ⑨

১। আল্লাহ্ তা'আলা আরশের উপর কিভাবে সমুন্নীত তার কোন সীমাবদ্ধতা ও ধরণ বর্ণনা করা ছাড়া বিশ্বাস রাখতে হবে। এ সম্পর্কে আমাদের কোন জ্ঞান নেই। অর্থাৎ তাঁর জন্য যেভাবে উপযুক্ত সেভাবে সমুন্নীত, তবে তাঁর জ্ঞান সব জায়গায় পরিব্যপ্ত।

إِذْ رَأَىٰ نَارًا فَقَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوٓا إِنِّىٓ ءَانَسْتُ نَارًا لَّعَلِّىٓ ءَاتِيكُم مِّنْهَا بِقَبَسٍ أَوْ أَجِدُ عَلَى ٱلنَّارِ هُدًى ﴿١٠﴾

১০. তিনি যখন আগুন দেখলেন তখন তাঁর পরিবারবর্গকে বললেনঃ তোমরা এখানে থাকো আমি আগুন দেখেছি; সম্ভবতঃ আমি তোমাদের জন্যে তা হতে কিছু জ্বলন্ত অঙ্গার আনতে পারবো অথবা ওর নিকট কোন পথ-প্রদর্শক পাবো।

فَلَمَّآ أَتَىٰهَا نُودِىَ يَٰمُوسَىٰٓ ﴿١١﴾

১১. অতঃপর যখন তিনি আগুনের নিকট আসলেন তখন আহ্বান করে বলা হলোঃ হে মূসা (عليه السلام)!

إِنِّىٓ أَنَا رَبُّكَ فَٱخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۖ إِنَّكَ بِٱلْوَادِ ٱلْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٢﴾

১২. আমিই তোমার প্রতিপালক, অতএব তোমার জুতা খুলে ফেলো, কারণ তুমি পবিত্র তুওয়া উপত্যকায় রয়েছ।

وَأَنَا ٱخْتَرْتُكَ فَٱسْتَمِعْ لِمَا يُوحَىٰٓ ﴿١٣﴾

১৩. এবং আমি তোমাকে মনোনীত করেছি; অতএব যা ওহী প্রেরণ করা হচ্ছে তুমি তা মনোযোগের সাথে শ্রবণ কর।

إِنَّنِىٓ أَنَا ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا فَٱعْبُدْنِى وَأَقِمِ ٱلصَّلَوٰةَ لِذِكْرِىٓ ﴿١٤﴾

১৪. আমিই আল্লাহ, আমি ছাড়া সত্য কোন মা'বূদ নেই; অতএব আমার ইবাদত কর এবং আমার স্মরণার্থে নামায কায়েম কর।

إِنَّ ٱلسَّاعَةَ ءَاتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا تَسْعَىٰ ﴿١٥﴾

১৫. কিয়ামত অবশ্যম্ভাবী, আমি এটা গোপন রাখতে চাই যাতে প্রত্যেকেই নিজ কর্মানুযায়ী ফল লাভ করতে পারে।

فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَن لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَٱتَّبَعَ هَوَىٰهُ فَتَرْدَىٰ ﴿١٦﴾

১৬. সুতরাং যে ব্যক্তি কিয়ামতে বিশ্বাস করে না ও নিজ প্রবৃত্তির অনুসরণ করে, সে যেন তোমাকে কিয়ামতে বিশ্বাস স্থাপন হতে বিরত না রাখে, এতে তুমি ধ্বংস হয়ে যাবে।

وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يَٰمُوسَىٰ ﴿١٧﴾

১৭. (আল্লাহ্ বলেন) হে মূসা (عليه السلام)! তোমার ডান হাতে ওটা কি?

قَالَ هِيَ عَصَايَ ۚ أَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَأَهُشُّ بِهَا عَلَىٰ غَنَمِي وَلِيَ فِيهَا مَآرِبُ أُخْرَىٰ ﴿١٨﴾

১৮. তিনি বললেনঃ এটা আমার লাঠি; আমি এতে ভর দিই এবং এটা দ্বারা আঘাত করে আমি আমার মেষ পালের জন্যে বৃক্ষ পত্র ফেলে থাকি এবং এটা আমার অন্যান্য কাজেও লাগে।

قَالَ أَلْقِهَا يَا مُوسَىٰ ﴿١٩﴾

১৯. (আল্লাহ) বললেনঃ হে মূসা (عليه السلام)! তুমি এটা নিক্ষেপ কর।

فَأَلْقَاهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعَىٰ ﴿٢٠﴾

২০. অতঃপর সে তা নিক্ষেপ করলো, সাথে সাথে তা সাপ হয়ে ছুটতে লাগল।

قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ۖ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْأُولَىٰ ﴿٢١﴾

২১. তিনি বললেনঃ তুমি একে ধর, ভয় করো না, আমি একে এর পূর্ব রূপে ফিরিয়ে দিব।

وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلَىٰ جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ آيَةً أُخْرَىٰ ﴿٢٢﴾

২২. এবং তুমি তোমার হাত বগলে রাখো, এটা বের হয়ে আসবে উজ্জ্বল হয়ে কোন দোষ ছাড়াই অপর এক নিদর্শন হয়ে।

لِنُرِيَكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَىٰ ﴿٢٣﴾

২৩. এটা এজন্যে যে, আমি তোমাকে দেখাবো আমার মহা নিদর্শনগুলির কিছু।

اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ﴿٢٤﴾

২৪. ফির'আউনের নিকট যাও, সে সীমালঙ্ঘন করেছে।

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ﴿٢٥﴾

২৫. (মূসা عليه السلام) বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমার বক্ষ প্রশস্ত করে দিন।

وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ﴿٢٦﴾

২৬. এবং আমার কর্ম সহজ করে দিন।

وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِنْ لِسَانِي ﴿٢٧﴾

২৭. আমার জিহ্বার জড়তা দূর করে দিন।

يَفْقَهُوا قَوْلِي ﴿٢٨﴾

২৮. যাতে তারা আমার কথা বুঝতে পারে।

وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِيْ ﴿٢٩﴾

২৯. আমার জন্যে করে দিন একজন সাহায্যকারী, আমার স্বজনবর্গের মধ্য হতে।

هٰرُوْنَ اَخِي ﴿٣٠﴾

৩০. আমার ভাই হারূনকে (عليه السلام)।

اشْدُدْ بِهٖٓ اَزْرِيْ ﴿٣١﴾

৩১. তার দ্বারা আমার শক্তি সুদৃঢ় করুন।

وَاَشْرِكْهُ فِيْٓ اَمْرِيْ ﴿٣٢﴾

৩২. এবং তাকে আমার কর্মে অংশী করুন।

كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٣﴾

৩৩. যাতে আমরা আপনার পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করতে পারি প্রচুর।

وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا ﴿٣٤﴾

৩৪. এবং আপনাকে স্মরণ করতে পারি অধিক।

اِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيْرًا ﴿٣٥﴾

৩৫. আপনি তো আমাদের সম্যক দ্রষ্টা।

قَالَ قَدْ اُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى ﴿٣٦﴾

৩৬. তিনি (আল্লাহ্) বললেনঃ হে মূসা (عليه السلام)! তুমি যা চেয়েছো তা তোমাকে দেয়া হলো।

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً اُخْرٰٓى ﴿٣٧﴾

৩৭. এবং আমি তো তোমার প্রতি আরো একবার অনুগ্রহ করেছিলাম।

اِذْ اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّكَ مَا يُوْحٰٓى ﴿٣٨﴾

৩৮. যখন আমি তোমার মাতার কাছে ইলহাম (অন্তরে কোন কিছু সৃষ্টি করে দেয়া) করলাম, যা ইলহাম করার ছিল।

اَنِ اقْذِفِيْهِ فِي التَّابُوْتِ فَاقْذِفِيْهِ فِي الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَاْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّيْ وَعَدُوٌّ لَّهٗ ؕ وَاَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّيْ ۚ وَلِتُصْنَعَ عَلٰى عَيْنِيْ ﴿٣٩﴾

৩৯. এই মর্মে যে, তুমি তাকে সিন্ধুকের মধ্যে রাখো, অতঃপর তা দরিয়ায় ভাসিয়ে দাও যাতে দরিয়া ওকে তীরে ঠেলে দেয়, ওকে আমার শত্রু ও তার শত্রু নিয়ে যাবে; আমি আমার নিকট হতে তোমার উপর ভালবাসা ঢেলে দিয়েছিলাম, যাতে তুমি আমার চোখের সামনে প্রতিপালিত হও।

إِذْ تَمْشِيٓ أُخْتُكَ فَتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَن يَكْفُلُهُۥ ۖ فَرَجَعْنَٰكَ إِلَىٰٓ أُمِّكَ كَىْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۚ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنَٰكَ مِنَ ٱلْغَمِّ وَفَتَنَّٰكَ فُتُونًا ۚ فَلَبِثْتَ سِنِينَ فِىٓ أَهْلِ مَدْيَنَ ثُمَّ جِئْتَ عَلَىٰ قَدَرٍ يَٰمُوسَىٰ ﴿٤٠﴾

৪০. যখন তোমার ভগ্নি এসে বললোঃ আমি কি তোমাদেরকে বলব কে এই শিশুর ভার নেবে? তখন আমি তোমাকে তোমার মায়ের নিকট ফিরিয়ে দিলাম যাতে তার চক্ষু জুড়ায় এবং সে চিন্তিত না হয় এবং তুমি এক ব্যক্তিকে হত্যা করেছিলে; অতঃপর আমি তোমাকে মনঃপীড়া হতে মুক্তি দিই, আমি তোমাকে বহু পরীক্ষা করেছি। অতঃপর তুমি কয়েক বছর মাদইয়ানবাসীদের মধ্যে ছিলে, হে মূসা (عليه السلام)! এর পরে তুমি নির্ধারিত সময়ে উপস্থিত হলে।

وَٱصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِى ﴿٤١﴾

৪১. এবং আমি তোমাকে আমার নিজের (কর্মের) জন্যে প্রস্তুত করে নিয়েছি।

ٱذْهَبْ أَنتَ وَأَخُوكَ بِـَٔايَٰتِى وَلَا تَنِيَا فِى ذِكْرِى ﴿٤٢﴾

৪২. তুমি ও তোমার ভাই আমার নিদর্শনসমূহসহ যাত্রা শুরু কর এবং আমার স্মরণে শৈথিল্য করো না।

ٱذْهَبَآ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُۥ طَغَىٰ ﴿٤٣﴾

৪৩. তোমরা দু'জন ফিরাউনের নিকট যাও, সে তো সীমালঙ্ঘন করেছে।

فَقُولَا لَهُۥ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهُۥ يَتَذَكَّرُ أَوْ يَخْشَىٰ ﴿٤٤﴾

৪৪. তোমরা তার সাথে নম্র কথা বলবে, হয়তো সে উপদেশ গ্রহণ করবে, অথবা ভয় করবে।

قَالَا رَبَّنَآ إِنَّنَا نَخَافُ أَن يَفْرُطَ عَلَيْنَآ أَوْ أَن يَطْغَىٰ ﴿٤٥﴾

৪৫. তারা বললোঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা আশঙ্কা করছি যে, সে আমাদেরকে শাস্তি দিবে অথবা সীমালঙ্ঘন করবে।

قَالَ لَا تَخَافَآ إِنَّنِى مَعَكُمَآ أَسْمَعُ وَأَرَىٰ ﴿٤٦﴾

৪৬. তিনি বললেনঃ তোমরা ভয় করো না, আমি তো তোমাদের সঙ্গে আছি, আমি শুনি ও আমি দেখি।

فَأْتِيٰهُ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ فَاَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ؕ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ ؕ وَالسَّلٰمُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ﴿٤٧﴾

৪৭. সুতরাং তোমরা তার নিকট যাও এবং বলঃ অবশ্যই আমরা তোমার প্রতিপালকের পক্ষ থেকে প্রেরিত রাসূল, সুতরাং আমাদের সাথে বানী ইসরাঈলকে যেতে দাও এবং তাদেরকে কষ্ট দিয়ো না, আমরা তো তোমার নিকট এনেছি তোমার প্রতিপালকের নিকট হতে নিদর্শন এবং শান্তি তাদের প্রতি যারা সৎ পথের অনুসরণ করে।

اِنَّا قَدْ اُوْحِيَ اِلَيْنَآ اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٤٨﴾

৪৮. আমাদের প্রতি ওহী প্রেরণ করা হয়েছে যে, শাস্তি তার জন্যে, যে মিথ্যা আরোপ করে ও মুখ ফিরিয়ে নেয়।

قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ﴿٤٩﴾

৪৯. ফিরআ'উন বললোঃ হে মূসা (عليه السلام)! কে তোমাদের প্রতিপালক?

قَالَ رَبُّنَا الَّذِيْٓ اَعْطٰى كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى ﴿٥٠﴾

৫০. মূসা (عليه السلام) বললেনঃ আমাদের প্রতিপালক তিনি যিনি প্রত্যেক বস্তুকে তার যোগ্য আকৃতি দান করেছেন, অতঃপর পথ নির্দেশ করেছেন।

قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى ﴿٥١﴾

৫১. ফিরআ'উন বললোঃ তা হলে অতীত যুগের লোকদের অবস্থা কি?

قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ فِيْ كِتٰبٍ ۚ لَا يَضِلُّ رَبِّيْ وَلَا يَنْسَى ﴿٥٢﴾

৫২. মূসা (عليه السلام) বললেনঃ এর জ্ঞান আমার প্রতিপালকের নিকট লিপিবদ্ধ আছে; আমার প্রতিপালক পথ ভ্রষ্ট হন না এবং ভুলেও যান না।

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ؕ فَاَخْرَجْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰى ﴿٥٣﴾

৫৩. যিনি তোমাদের জন্যে পৃথিবীকে করেছেন বিছানা এবং তাতে করে দিয়েছেন তোমাদের চলবার পথ, তিনি আকাশ হতে পানি বর্ষণ করেন এবং আমি তা দ্বারা বিভিন্ন প্রকারের উদ্ভিদ উৎপন্ন করি।

كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ۝٥٤

৫৪. তোমরা আহার কর ও তোমাদের গবাদি পশু চরাও; অবশ্যই এতে নিদর্শন আছে বিবেক সম্পন্নদের জন্যে।

مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ۝٥٥

৫৫. আমি মৃত্তিকা হতে তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছি, তাতেই তোমাদেরকে ফিরিয়ে দিবো এবং তা হতে পুনর্বার বের করবো।

وَلَقَدْ اَرَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰى ۝٥٦

৫৬. আমি তাকে আমার সমস্ত নিদর্শন দেখিয়েছিলাম; কিন্তু সে মিথ্যা আরোপ করেছে ও অমান্য করেছে।

قَالَ اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى ۝٥٧

৫৭. সে বললোঃ হে মূসা (عليه السلام) তুমি কি আমাদের নিকট এসেছো তোমার যাদু দ্বারা আমাদেরকে আমাদের দেশ হতে বহিষ্কার করে দেয়ার জন্য?

فَلَنَاْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ وَلَاۤ اَنْتَ مَكَانًا سُوًى ۝٥٨

৫৮. আমরাও অবশ্যই তোমার নিকট উপস্থিত করবো এর অনুরূপ যাদু, সুতরাং আমাদের ও তোমার মাঝে নির্ধারণ কর এক নির্দিষ্ট সময় ও এক মধ্যবর্তী স্থান, যার ব্যতিক্রম আমরাও করবো না এবং তুমিও করবে না।

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَاَنْ يُّحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ۝٥٩

৫৯. মূসা (عليه السلام) বললেনঃ তোমাদের নির্ধারিত সময় উৎসবের দিন এবং যেই দিন পূর্বাহ্নে জনগণকে সমবেত করা হবে।

فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهٗ ثُمَّ اَتٰى ۝٦٠

৬০. অতঃপর ফিরআ'উন উঠে গেল, এবং পরে তার কৌশলসমূহ একত্রিত করলো ও তৎপর আসলো।

قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ﴿٦١﴾

৬১. মূসা (عليه السلام) তাদেরকে বললেনঃ দুর্ভোগ তোমাদের! তোমরা আল্লাহর প্রতি মিথ্যা আরোপ করো না, করলে তিনি তোমাদেরকে শাস্তি দ্বারা সমূলে ধ্বংস করবেন; যে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে সেই ব্যর্থ হয়েছে।

فَتَنَازَعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوٰى ﴿٦٢﴾

৬২. তারা নিজেদের মধ্যে নিজেদের কর্ম সম্বন্ধে বিতর্ক করলো এবং তারা গোপনে পরামর্শ করলো।

قَالُوْٓا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلٰى ﴿٦٣﴾

৬৩. তারা বললোঃ এই দু'জন অবশ্যই যাদুকর, তারা চায় তাদের যাদু দ্বারা তোমাদেরকে তোমাদের দেশ হতে বহিষ্কৃত করতে এবং তোমাদের উৎকৃষ্ট পদ্ধতির অস্তিত্ব নষ্ট করতে।

فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا ۚ وَقَدْ اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى ﴿٦٤﴾

৬৪. অতএব, তোমরা তোমাদের যাদু ক্রিয়া সংহত কর, অতপর সারিবদ্ধ হয়ে উপস্থিত হও এবং যে আজ জয়ী হবে সেই সফল।

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ﴿٦٥﴾

৬৫. তারা বললোঃ হে মূসা (عليه السلام) হয় তুমি নিক্ষেপ কর অথবা প্রথমে আমরাই নিক্ষেপ করি।

قَالَ بَلْ اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ﴿٦٦﴾

৬৬. মূসা (عليه السلام) বললেনঃ বরং তোমরাই নিক্ষেপ কর; তাদের যাদুর প্রভাবে অকস্মাৎ মূসার (عليه السلام) মনে হলো যে, তাদের দড়ি ও লাঠিগুলি ছুটাছুটি করছে।

فَاَوْجَسَ فِيْ نَفْسِهٖ خِيْفَةً مُّوْسٰى ﴿٦٧﴾

৬৭. মূসার (عليه السلام) অন্তরে কিছুটা ভীতি অনুভূত হল।

قُلْنَا لَا تَخَفْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ﴿٦٨﴾

৬৮. আমি বললামঃ ভয় করো না, তুমিই বিজয়ী।

وَاَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ؕ اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ؕ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ اَتٰى ﴿٦٩﴾

৬৯. তোমার ডান হাতে যা আছে তা নিক্ষেপ করো, এটা তারা যা করেছে তা গ্রাস করে ফেলবে, তারা যা করেছে তা তো শুধু যাদুকরের কৌশল; যাদুকর যেখানেই আসুক সফল হবে না।

فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوْنَ وَمُوْسٰى ﴿٧٠﴾

৭০. অতঃপর যাদুকররা সিজদাবনত হলো ও বললোঃ আমরা হারূন (عليه السلام) ও মূসার (عليه السلام) প্রতিপালকের প্রতি ঈমান আনলাম।

قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ؕ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ فِيْ جُذُوْعِ النَّخْلِ ۫ وَلَتَعْلَمُنَّ اَيُّنَآ اَشَدُّ عَذَابًا وَّاَبْقٰى ﴿٧١﴾

৭১. ফিরআ'উন বললোঃ কী, আমি তোমাদের অনুমতি দেয়ার পূর্বেই তোমরা মূসাতে (عليه السلام) বিশ্বাস স্থাপন করলে! দেখছি সে তো তোমাদের প্রধান, তিনি তোমাদেরকে যাদু শিক্ষা দিয়েছেন; সুতরাং আমি তো তোমাদের হাত-পা বিপরীত দিক হতে কর্তন করবোই এবং আমি তোমাদেরকে খেজুর বৃক্ষের কান্ডে শূলবিদ্ধ করবোই, আর তোমরা অবশ্যই জানতে পারবে আমাদের মধ্যে কার শাস্তি কঠোরতর ও অধিক স্থায়ী।

قَالُوْا لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰى مَا جَآءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالَّذِيْ فَطَرَنَا فَاقْضِ مَآ اَنْتَ قَاضٍ ؕ اِنَّمَا تَقْضِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٧٢﴾

৭২. তারা বললোঃ আমাদের নিকট যে স্পষ্ট নিদর্শন এসেছে তার উপর এবং যিনি আমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন তাঁর উপর তোমাকে কিছুতেই আমরা প্রাধান্য দিবো না, সুতরাং যা তুমি করতে চাও কর, তুমি তো শুধু এই পার্থিব জীবনের উপর কর্তৃত্ব করতে পার।

اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا وَمَآ اَكْرَهْتَنَا

৭৩. আমরা আমাদের প্রতিপালকের প্রতি ঈমান এনেছি যাতে তিনি ক্ষমা

عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرٌ وَّ اَبْقٰى ﴿٧٣﴾

করেন আমাদের অপরাধসমূহ এবং তুমি আমাদেরকে যে যাদু করতে বাধ্য করেছো তা; আর আল্লাহ শ্রেষ্ঠ ও স্থায়ী।

اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ؕ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ﴿٧٤﴾

৭৪. যে তার প্রতিপালকের নিকট অপরাধী হয়ে উপস্থিত হবে তার জন্যে তো আছে জাহান্নাম, সেথায় সে মরবেও না, বাঁচবেও না।

وَمَنْ يَّاْتِهٖ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى ﴿٧٥﴾

৭৫. আর যারা তাঁর নিকট উপস্থিত হবে মু'মিন অবস্থায় সৎকর্ম করে, তাদের জন্যে আছে উচ্চ মর্যাদা।

جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنْ تَزَكّٰى ﴿٧٦﴾

৭৬. স্থায়ী জান্নাত যার পাদদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত, সেখানে তারা স্থায়ী হবে এবং এই পুরস্কার তাদেরই যারা পবিত্রতা অর্জন করেছে।

وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى ۙ اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْ فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰى ﴿٧٧﴾

৭৭. আমি অবশ্যই মূসার (عليه السلام) প্রতি প্রত্যাদেশ করেছিলাম এ মর্মে যে, আমার বান্দাদেরকে নিয়ে রজনীতে বাহির হও এবং তাদের জন্যে সমুদ্রের মধ্য দিয়ে এক শুষ্ক পথ নির্মাণ কর; পশ্চাৎ হতে এসে তোমাকে ধরে ফেলা হবে এই আশঙ্কা করো না এবং ভয়ও করো না।

فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ﴿٧٨﴾

৭৮. অতঃপর ফিরআ'উন সৈন্য বাহিনীসহ তাদের পশ্চাদ্ধাবন করলো, অতঃপর সমুদ্র তাদেরকে সম্পূর্ণরূপে নিমজ্জিত করলো।

وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى ﴿٧٩﴾

৭৯. আর ফিরাউন তার সম্প্রদায়কে পথভ্রষ্ট করেছিল এবং সৎ পথ দেখায় নাই।

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ الْاَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ﴿٨٠﴾

৮০. হে বনী ইসরাঈল! আমি তো তোমাদেরকে তোমাদের শত্রু হতে উদ্ধার করেছিলাম, আমি তোমাদেরকে প্রতিশ্রুতি দিয়েছিলাম তূর পর্বতের ডান পার্শ্বে এবং তোমাদের নিকট মান্না ও সালাওয়া প্রেরণ করেছিলাম।

كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ ۚ وَمَنْ يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ هَوٰى ﴿٨١﴾

৮১. তোমাদেরকে আমি যা দান করেছি তা হতে ভাল ভাল বস্তু আহার কর এবং এই বিষয়ে সীমা-লঙ্ঘন করো না, করলে তোমাদের উপর আমার ক্রোধ অবধারিত এবং যার উপর আমার ক্রোধ অবধারিত সে তো ধ্বংস হয়ে যায়।

وَاِنِّيْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ﴿٨٢﴾

৮২. এবং আমি অবশ্যই ক্ষমাশীল তার প্রতি, যে তাওবা করে, ঈমান আনে, সৎকর্ম করে ও সৎপথে অবিচল থাকে।

وَمَآ اَعْجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ يٰمُوْسٰى ﴿٨٣﴾

৮৩. হে মূসা (عليه السلام)! তোমার সম্প্রদায়কে পশ্চাতে ফেলে তোমাকে তাড়াতাড়ি করতে বাধ্য করলো কিসে?

قَالَ هُمْ اُولَآءِ عَلٰٓى اَثَرِيْ وَعَجِلْتُ اِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضٰى ﴿٨٤﴾

৮৪. তিনি বললেনঃ এই তো তারা আমার পশ্চাতে এবং হে আমার প্রতিপালক! আমি তাড়াতাড়ি আপনার নিকট আসলাম, যাতে আপনি সন্তুষ্ট হন।

قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْۢ بَعْدِكَ وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ﴿٨٥﴾

৮৫. তিনি বললেনঃ আমি তোমার সম্প্রদায়কে পরীক্ষায় ফেলেছি তোমার চলে আসার পর এবং সামেরী তাদেরকে পথভ্রষ্ট করেছে।

فَرَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۚ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا حَسَنًا ۗ اَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ اَرَدْتُّمْ اَنْ يَّحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِيْ ﴿٨٦﴾

৮৬. অতঃপর মূসা (عليه السلام) তাঁর সম্প্রদায়ের নিকট ফিরে গেল ক্ষুব্ধ অনুতপ্ত হয়ে; তিনি বললেনঃ হে আমার সম্প্রদায়! তোমাদের প্রতিপালক কি তোমাদেরকে এক উত্তম প্রতিশ্রুতি দেন নাই? তবে কি প্রতিশ্রুতি কাল তোমাদের নিকট সুদীর্ঘ হয়েছে, না তোমরা চেয়েছো তোমাদের প্রতি আপতিত হোক তোমাদের প্রতিপালকের ক্রোধ, যে কারণে তোমরা আমার প্রতি প্রদত্ত অঙ্গীকার ভঙ্গ করলে?

قَالُوْا مَآ اَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلٰكِنَّا حُمِّلْنَآ اَوْزَارًا مِّنْ زِيْنَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ اَلْقَى السَّامِرِيُّ ﴿٨٧﴾

৮৭. তারা বললোঃ আমরা তোমার প্রতি প্রদত্ত অঙ্গীকার স্বেচ্ছায় ভঙ্গ করি নাই; তবে আমাদের উপর চাপিয়ে দেয়া হয়েছিল লোকের অলংকারের বোঝা এবং আমরা তা (অগ্নি কুণ্ডে) নিক্ষেপ করি, অনুরূপভাবে সামেরীও নিক্ষেপ করে।

فَاَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ فَقَالُوْا هٰذَآ اِلٰهُكُمْ وَاِلٰهُ مُوْسٰى ۙ فَنَسِيَ ﴿٨٨﴾

৮৮. অতঃপর সে তাদের জন্যে গড়লো এক গো-বৎস দেহ, যা গরুর মত হাম্বা শব্দ করতো; তারা বললোঃ এটা তোমাদের মা'বূদ এবং মূসার (عليه السلام) মা'বূদ; কিন্তু মূসা (عليه السلام) ভুলে গেছেন।

اَفَلَا يَرَوْنَ اَلَّا يَرْجِعُ اِلَيْهِمْ قَوْلًا ۙ وَّلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ﴿٨٩﴾

৮৯. তবে কি তারা ভেবে দেখে না যে, ওটা তাদের কথায় সাড়া দেয় না এবং তাদের কোন ক্ষতি অথবা উপকার করবার ক্ষমতাও রাখে না?

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ قَبْلُ يٰقَوْمِ اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَاِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ فَاتَّبِعُوْنِيْ

৯০. হারূন (عليه السلام) তাদেরকে পূর্বে বলেছিলেনঃ হে আমার সম্প্রদায়! এটা দ্বারা তো শুধু তোমাদেরকে

وَاَطِيْعُوْٓا اَمْرِيْ ﴿٩٠﴾

পরীক্ষায় ফেলা হয়েছে; তোমাদের প্রতিপালক দয়াময়, সুতরাং তোমরা আমার অনুসরণ কর এবং আমার আদেশ মেনে চল।

قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عٰكِفِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلَيْنَا مُوْسٰى ﴿٩١﴾

৯১. তারা বলেছিলঃ আমাদের নিকট মূসা (عليه السلام) ফিরে না আসা পর্যন্ত আমরা এর পূজা হতে কিছুতেই বিরত হবো না।

قَالَ يٰهٰرُوْنُ مَا مَنَعَكَ اِذْ رَاَيْتَهُمْ ضَلُّوْٓا ﴿٩٢﴾

৯২. (মূসা (عليه السلام)) বললেনঃ হে হারূন (عليه السلام)! তুমি যখন দেখলে যে, তারা পথভ্রষ্ট হয়েছে তখন কিসে তোমাকে নিবৃত্ত করলো।

اَلَّا تَتَّبِعَنِ ؕ اَفَعَصَيْتَ اَمْرِيْ ﴿٩٣﴾

৯৩. আমার অনুসরণ হতে? তবে কি তুমি আমার আদেশ অমান্য করলে?

قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَاْخُذْ بِلِحْيَتِيْ وَلَا بِرَاْسِيْ ۚ اِنِّيْ خَشِيْتُ اَنْ تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِيْ ﴿٩٤﴾

৯৪. (হারূন (عليه السلام)) বললেনঃ হে আমার সহোদর! আমার দাড়ি ও কেশ ধর না; আমি আশঙ্কা করেছিলাম যে, আপনি বলবেনঃ তুমি বনী ইসরাঈলের মধ্যে বিভেদ সৃষ্টি করেছ ও আমার বাক্য পালনে যত্নবান হও নি।

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يٰسَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾

৯৫. (মূসা (عليه السلام)) বললেনঃ হে সামেরী! তোমার ব্যাপার কি?

قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوْا بِهٖ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ اَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذٰلِكَ سَوَّلَتْ لِيْ نَفْسِيْ ﴿٩٦﴾

৯৬. সে বললোঃ আমি দেখেছিলাম যা তারা দেখে নি; অতঃপর আমি সেই দূতের (জিবরাঈলের) পদচিহ্ন হতে একমুষ্টি (ধূলা) নিয়েছিলাম এবং আমি তা নিক্ষেপ করেছিলাম, আর আমার মন আমার জন্যে শোভন করেছিল এইরূপ করা।

قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ اَنْ تَقُوْلَ

৯৭. (মূসা (عليه السلام)) বললেনঃ দূর হও, তোমার জীবদ্দশায় তোমার জন্যে

لَا مِسَاسَ ۖ وَإِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّن تُخْلَفَهُ ۚ وَانظُرْ إِلَىٰ إِلَٰهِكَ الَّذِي ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ۖ لَّنُحَرِّقَنَّهُ ثُمَّ لَنَنسِفَنَّهُ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ﴿٩٧﴾

এটাই রইলো যে, তুমি বলবেঃ আমাকে স্পর্শ করবে না এবং তোমার জন্যে রাইলো এক নির্দিষ্ট কাল, তোমার বেলায় যার ব্যতিক্রম হবে না এবং তুমি তোমার সেই মা'বূদের প্রতি লক্ষ্য কর যার পূজায় তুমি রত ছিলে; আমরা ওকে জ্বালিয়ে দিবই, অতঃপর ওকে বিক্ষিপ্ত করে সাগরে নিক্ষেপ করবই।

إِنَّمَا إِلَٰهُكُمُ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿٩٨﴾

৯৮. আমাদের মা'বূদ তো শুধুমাত্র আল্লাহই যিনি ছাড়া অন্য কোন (সত্য) মা'বূদ নেই, তাঁর জ্ঞান সর্ববিষয়ে ব্যাপ্ত।

كَذَٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنبَاءِ مَا قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ آتَيْنَاكَ مِن لَّدُنَّا ذِكْرًا ﴿٩٩﴾

৯৯. পূর্বে যা ঘটেছে তার সংবাদ আমি এভাবে তোমার নিকট বিবৃত করি এবং আমি আমার নিকট হতে তোমাকে দান করেছি উপদেশ।

مَّنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وِزْرًا ﴿١٠٠﴾

১০০. এটা হতে যে বিমুখ হবে সে কিয়ামতের দিনে মহা ভার বহন করবে।

خَالِدِينَ فِيهِ ۖ وَسَاءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حِمْلًا ﴿١٠١﴾

১০১. তাতে তারা স্থায়ী হবে এবং কিয়ামতের দিন এই বোঝা তাদের জন্যে কত মন্দ!

يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ ۚ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ﴿١٠٢﴾

১০২. যে দিন শিংগায় ফুৎকার দেয়া হবে সেই দিন আমি অপরাধীদেরকে নীল চক্ষু (দৃষ্টিহীন) অবস্থায় সমবেত করবো।

يَتَخَافَتُونَ بَيْنَهُمْ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ﴿١٠٣﴾

১০৩. তারা নিজেদের মধ্যে চুপি চুপি বলাবলি করবেঃ তোমরা মাত্র দশ দিন (পৃথিবীতে) অবস্থান করেছিলে।

نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً

১০৪. তারা কি বলবে তা আমি ভাল করে জানি, তাদের মধ্যে যে

إِنْ لَّبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾

অপেক্ষাকৃত সৎপথে ছিল, সে বলবেঃ তোমরা মাত্র একদিন অবস্থান করেছিলে।

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا ﴿١٠٥﴾

১০৫. তারা তোমাকে পর্বতসমূহ সম্পর্কে জিজ্ঞেস করে, তুমি বলঃ আমার প্রতিপালক ওগুলিকে সমূলে উৎপাটন করে বিক্ষিপ্ত করে দিবেন।

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾

১০৬. অতঃপর তিনি ওকে (ভূমিকে) পরিণত করবেন মসৃণ সমতল ময়দানে।

لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ اَمْتًا ﴿١٠٧﴾

১০৭. যাতে তুমি বক্রতা ও উচ্চতা দেখবে না।

يَوْمَئِذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ وَخَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾

১০৮. সেই দিন তারা আহ্বানকারীর অনুসরণ করবে, এই ব্যাপারে এদিক -ওদিক করতে পারবে না; দয়াময়ের সামনে সব শব্দ স্তব্ধ হয়ে যাবে; সুতরাং মৃদু পদধ্বনি ছাড়া তুমি কিছুই শুনবে না।

يَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَرَضِيَ لَهٗ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾

১০৯. দয়াময় যাকে অনুমতি দিবেন ও যার কথা তিনি পছন্দ করবেন সে ব্যতীত কারো সুপারিশ সেই দিন কোন কাজে আসবে না।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ عِلْمًا ﴿١١٠﴾

১১০. তাদের সম্মুখে ও পশ্চাতে যা কিছু আছে তা তিনি অবগত; কিন্তু তারা জ্ঞান দ্বারা তাঁকে আয়ত্ত করতে পারে না।

وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ ۗ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾

১১১. চিরঞ্জীব, চির প্রতিষ্ঠিত আল্লাহর সামনে সকলেই হবে নতমুখ এবং সে-ই ব্যর্থ হবে যে যুলুমের ভার বহন করবে।

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾

১১২. এবং যে সৎকর্ম করে মু'মিন হয়ে তার আশঙ্কা নেই অবিচারের এবং ক্ষতিরও।

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾

১১৩. এরূপেই আমি কুরআনকে অবতীর্ণ করেছি আরবী ভাষায় এবং তাতে বিশদভাবে বিবৃত করেছি সতর্কবাণী, যাতে তারা ভয় করে অথবা এটা হয় তাদের জন্যে উপদেশ।

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰٓى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۫ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ﴿١١٤﴾

১১৪. আল্লাহ অতি মহান, প্রকৃত অধিপতি; তোমার প্রতি আল্লাহর অহী সম্পূর্ণ হবার পূর্বে তুমি তাড়াতাড়ি করো না এবং বলঃ হে আমার প্রতিপালক! আমার জ্ঞান বৃদ্ধি করুন!

وَلَقَدْ عَهِدْنَآ اِلٰٓى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِيَ وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ﴿١١٥﴾

১১৫. আমি তো ইতিপূর্বে আদমের (عليه السلام) নিকট হতে অঙ্গীকার নিয়েছিলাম; কিন্তু সে ভুলে গিয়েছিল আমি তাঁকে সংকল্পে দৃঢ় পাইনি।

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى ﴿١١٦﴾

১১৬. স্মরণ কর, যখন আমি ফেরেশতাদেরকে বললামঃ আদমের (عليه السلام) প্রতি সিজদা কর, তখন ইবলীস ছাড়া সবাই সিজদা করলো; সে অমান্য করলো।

فَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ﴿١١٧﴾

১১৭. অতঃপর আমি বললামঃ হে আদম (عليه السلام)! এ অবশ্যই তোমার ও তোমার স্ত্রীর শত্রু; সুতরাং সে যেন কিছুতেই তোমাদেরকে জান্নাত হতে বের করে না দেয়, যার ফলে তুমি বিপদে পতিত হবে।

اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ﴿١١٨﴾

১১৮. তোমার জন্যে এটাই রইলো যে, তুমি জান্নাতে ক্ষুধার্ত হবে না ও নগ্নও হবে না।

وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ﴿١١٩﴾

১১৯. এবং তুমি সেথায় পিপাসার্ত হবে না এবং রৌদ্র ক্লিষ্টও হবে না।

فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰۤاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ﴿١٢٠﴾

১২০. অতঃপর শয়তান তাকে কুমন্ত্রণা দিলো; সে বললোঃ হে আদম (عليه السلام)! আমি কি তোমাকে বলে দিবো অনন্ত জীবনপ্রদ বৃক্ষের কথা ও অক্ষয় রাজ্যের কথা?

فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ؕ وَعَصٰۤى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ﴿١٢١﴾

১২১. অতঃপর তারা তা হতে ভক্ষণ করে ফেলল; তখন তাদের লজ্জাস্থান তাদের নিকট প্রকাশ হয়ে পড়লো এবং তাঁরা জান্নাতের বৃক্ষপত্র দ্বারা নিজেদেরকে আবৃত্ত করতে লাগল, আদম (عليه السلام) তাঁর প্রতিপালকের হুকুম অমান্য করল, ফলে সে ভ্রমে পতিত হল।

ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ﴿١٢٢﴾

১২২. এরপর তাঁর প্রতিপালক তাঁকে মনোনীত করলেন, তাঁর প্রতি ক্ষমাপরায়ণ হলেন এবং তাঁকে পথ প্রদর্শন করলেন।

قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى ۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى ﴿١٢٣﴾

১২৩. তিনি বললেন তোমরা উভয়ে একই সঙ্গে জান্নাত হতে নেমে যাও; তোমরা পরস্পর পরস্পরের শত্রু; পরে আমার পক্ষ হতে তোমাদের নিকট সৎপথের নির্দেশ আসলে যে আমার পথ অনুসরণ করবে সে বিপথগামী হবে না ও দুঃখ কষ্ট পাবে না।

وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ﴿١٢٤﴾

১২৪. যে আমার স্মরণে বিমুখ তার জীবন-যাপন হবে সংকুচিত এবং আমি তাকে কিয়ামতের দিন উত্থিত করবো অন্ধ অবস্থায়।

قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْۤ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ﴿١٢٥﴾

১২৫. সে বলবেঃ হে আমার প্রতিপালক! কেন আমাকে অন্ধ অবস্থায় উত্থিত করলেন? আমি তো ছিলাম চক্ষুষ্মান!

قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿١٢٦﴾

১২৬. তিনি বলবেনঃ এই রূপই আমার নিদর্শনাবলী তোমার নিকট এসেছিল; কিন্তু তুমি তা ভুলে গিয়েছিলে এবং সেভাবে আজ তুমিও বিস্মৃত হলে।

وَكَذٰلِكَ نَجْزِىْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْۢ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ﴿١٢٧﴾

১২৭. এবং এভাবেই আমি প্রতিফল দেই তাকে যে বাড়াবাড়ি করে ও তার প্রতিপালকের আয়াতসমূহের উপর বিশ্বাস স্থাপন করে না; পরকালের শাস্তি তো অবশ্যই কঠিনতর ও অধিক স্থায়ী।

اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِىْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى النُّهٰى ﴿١٢٨﴾

১২৮. এটাও কি তাদেরকে সৎপথ দেখালো না যে, আমি তাদের পূর্বে ধ্বংস করেছি কত মানবগোষ্ঠী যাদের বাসভূমিতে তারা বিচরণ করে থাকে? অবশ্যই এতে বিবেক সম্পন্নদের জন্যে আছে নিদর্শন।

وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّ اَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿١٢٩﴾

১২৯. তোমার প্রতিপালকের পূর্ব সিদ্ধান্ত ও একটা নির্ধারিত সময় না থাকলে এদের উপর শাস্তি অবশ্যম্ভাবী হয়ে পড়তো।

فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى ﴿١٣٠﴾

১৩০. সুতরাং তারা যা বলে সে বিষয়ে তুমি ধৈর্যধারণ কর এবং সূর্যোদয় পূর্বে এবং সূর্যাস্তের পূর্বে তোমার প্রতিপালকের প্রশংসা পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা কর এবং রাত্রিকালে পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা কর, আর দিবসের প্রান্তসমূহেও যাতে তুমি সন্তুষ্ট হতে পার।

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ لِنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ

১৩১. তুমি তোমার চক্ষুদ্বয় কখনো প্রসারিত করো না ওর প্রতি, যা আমি তাদের বিভিন্ন শ্রেণীকে পার্থিব জীবনের সৌন্দর্য স্বরূপ উপভোগের

وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿١٣١﴾

উপকরণ হিসেবে দিয়েছি, তদ্বারা তাদেরকে পরীক্ষা করবার জন্যে; তোমার প্রতিপালক প্রদত্ত জীবনোপকরণ উৎকৃষ্ট ও অধিক স্থায়ী।

وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ؕ لَا نَسْـَٔلُكَ رِزْقًا ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ﴿١٣٢﴾

১৩২. আর তোমার পরিবারবর্গকে নামাযের আদেশ দাও ও তাতে নিজে অবিচলত থাকো, আমি তোমার নিকট কোন জীবনোপকরণ চাই না, আমিই তোমাকে জীবনোপকরণ দেই এবং শুভ পরিণাম তো মুত্তাকীদের জন্যে।

وَقَالُوْا لَوْلَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اَوَلَمْ تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿١٣٣﴾

১৩৩. তারা বলেঃ তিনি তাঁর প্রতিপালকের নিকট হতে আমাদের নিকট কোন নিদর্শন আনয়ন করেন নাই কেন? তাদের নিকট কি আসে নি সুস্পষ্ট প্রমাণ যা পূর্ববর্তী গ্রন্থসমূহে মজুদ রয়েছে।

وَلَوْ اَنَّاۤ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا رَبَّنَا لَوْلَاۤ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى ﴿١٣٤﴾

১৩৪. যদি আমি তাদেরকে ইতিপূর্বে শাস্তি দ্বারা ধ্বংস করতাম তবে তারা বলতোঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি আমাদের নিকট একজন রাসূল প্রেরণ করলেন না কেন? তাহলে, আমরা লাঞ্ছিত ও অপমানিত হবার পূর্বে আপনার আয়াতসমূহ মেনে চলতাম।[১]

১। আবূ আবদুর রহমান ইবনে আবূ নু'আম থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি আবূ সাঈদ খুদরী (রাযিআল্লাহু আনহু)-কে বলতে শুনেছি, আলী ইবনে আবূ তালেব ইয়ামন থেকে রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর জন্য রঙীন চামড়ার থলের মধ্যে সামান্য সোনা পাঠিয়েছিলেন। তার মাটি (তখনো) তার থেকে আলাদা করা হয়নি। তিনি চারজনের মধ্যে সোনাটি বন্টন করে দিলেন। এ চারজন হচ্ছেনঃ (১) উয়াইনা ইবনে বদর, (২) আকরা ইবনে হাবেস, (৩) যায়েদুল খাইল ও (৪) আল কামাহ বা আমের ইবনে তোফায়েল। তাঁর সাহাবাদের মধ্য থেকে এক ব্যক্তি বললেনঃ এ লোকগুলোর চাইতে আমরা এর বেশি হকদার। কথাটি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর কানে পৌছলো। তিনি বললেনঃ তোমাদের কি আমার ওপর আস্থা নেই? (অথচ আমি আসমানের বাসিন্দার আমানতদার।) আমার কাছে দিন-রাত আকাশের খবর আসছে। এ সময় এক ব্যক্তি যার চোখ দু'টি ছিল কোঠরাগত, চোয়ালের হাড়

قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ
اَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى ۝١٣٥

১৩৫. বলঃ প্রত্যেকেই প্রতীক্ষা করছে, সুতরাং তোমরাও প্রতীক্ষা কর, অতঃপর তোমরা শীঘ্রই জানতে পারবে কারা সঠিক পথের অনুসারী আর কারাই বা হেদায়াতপ্রাপ্ত।

ঠেলে বের হয়ে পড়েছিল, কপাল ছিল উঁচু, দাড়ি ছিল ঘন, মাথা ছিল ন্যাড়া এবং তহবন্দ ছিল অনেক ওপরে ওঠানো- দাঁড়িয়ে বললো হে আল্লাহ্‌র রাসূল! আল্লাহ্‌কে ভয় করুন। তিনি বললেনঃ (তুমি ধ্বংস হয়ে যাও,) সারা দুনিয়ার মধ্যে আমি কি আল্লাহ্‌কে সবচেয়ে বেশি ভয় করার হকদার নই? তারপর লোকটি চলে গেলো। খালেদ ইবনে ওলীদ আরজ করলেনঃ হে আল্লাহ্‌র রাসূল! আমি কি তাকে হত্যা করবো না? তিনি জবাবে বললেনঃ না, হয়তো সে নামায পড়ে। খালেদ বললেনঃ এমন অনেক নামাযী আছে যারা মুখে এমন কথা বলে যা তাদের মনের মধ্যে নেই। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ আমাকে লোকদের দিল চিরে ফেলার (দেখার) ও তাদের পেট ফেড়ে ফেলার হুকুম দেয়া হয় নি। আবূ সাঈদ খুদরী বলেনঃ তারপর তিনি সেই লোকটির দিকে চোখ তুলে দেখলেন। সে তখনো পিঠ ফিরিয়ে চলে যাচ্ছিল। তিনি (তার দিকে দৃষ্টি রেখে) বললেনঃ ঐ ব্যক্তির বংশে এমন এক জাতির উদ্ভব হবে, যারা সুমিষ্ট স্বরে আল্লাহ্‌র কিতাব পড়বে; কিন্তু তা তাদের গলার নিচে নামবে না। দ্বীন তাদের কাছ থেকে এমনভাবে ছিটকে বের হয়ে যাবে, যেমন তীর লক্ষ্যবস্তু ছাড়িয়ে দূরে চলে যায়। আবূ সাঈদ বলেন, আমার মনে পড়ছে তিনি একথাও বলেনঃ আমি যদি সেই জাতিকে পাই তাহলে সামূদ জাতির মতো তাদেরকে হত্যা করবো। (বুখারী, হাদীস নং ৪৩৫১)

সূরাঃ আম্বিয়া, মাক্কী

(আয়াতঃ ১১২, রুকূ'ঃ ৭)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُوْرَةُ الْاَنْبِيَآءِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ١١٢ رُكُوْعَاتُهَا ٧

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. মানুষের হিসাব-নিকাশের সময় আসন্ন; কিন্তু তারা উদাসীনতায় মুখ ফিরিয়ে রয়েছে।

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ①

২. যখনই তাদের নিকট তাদের প্রতিপালকের কোন নতুন উপদেশ আসে তখন তারা তা শ্রবণ করে খেলার ছলে।

مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ②

৩. তাদের অন্তর থাকে অমনোযোগী, সীমালঙ্ঘনকারীরা গোপনে পরামর্শ করেঃ এতো তোমাদের মত একজন মানুষ; তবুওকি তোমরা দেখে শুনে যাদুর কবলে পড়বে?

لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ③

৪. তিনি বললেনঃ আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সমস্ত কথাই আমার প্রতিপালক অবগত আছেন এবং তিনিই সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

قٰلَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ④

৫. তারা এটাও বলেঃ এসব অলীক কল্পনা, হয় সে মিথ্যা উদ্ভাবন করেছে, না হয় সে একজন কবি; অতএব সে আনয়ন করুক আমাদের নিকট এক নিদর্শন যেরূপ নিদর্শনসহ প্রেরিত হয়েছিল পূর্ববর্তীগণ।

بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ فَلْيَاْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ⑤

৬. তাদের পূর্বে যে সব জনপদ আমি ধ্বংস করেছি ওর অধিবাসীরা ঈমান আনে নাই; তবে এরা কি ঈমান আনবে?

مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ⑥

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٧

৭. তোমার পূর্বে আমি ওহীসহ বহু পুরুষই পাঠিয়েছিলাম; তোমরা যদি না জান তবে জ্ঞানীদেরকে জিজ্ঞেস কর।

وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ۝٨

৮. আর আমি তাদেরকে এমন দেহ বিশিষ্ট করি নাই যে, তারা আহার্য গ্রহণ করতেন না; আর তারা চিরস্থায়ীও ছিলেন না।

ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ۝٩

৯. অতঃপর আমি তাদের প্রতি আমার প্রতিশ্রুতি পূর্ণ করলাম এবং এবং যাদেরকে ইচ্ছা রক্ষা করেছিলাম এবং যালিমদেরকে বিনাশ করেছিলাম।

لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝١٠

১০. আমি তো তোমাদের প্রতি অবতীর্ণ করেছি কিতাব যাতে আছে তোমাদের জন্যে উপদেশ, তবুও কি তোমরা বুঝবে না?

وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝١١

১১. আমি ধ্বংস করেছি কত জনপদ, যার অধিবাসীরা ছিল যালিম এবং তাদের পরে সৃষ্টি করেছি অপর জাতি।

فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ۝١٢

১২. অতঃপর যখন তারা আমার শাস্তি প্রত্যক্ষ করলো তখনই তারা জনপদ হতে পালাতে লাগলো।

لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ۝١٣

১৩. তাদেরকে বলা হলোঃ পলায়ন করো না এবং ফিরে এসো তোমাদের ভোগ সম্ভারের নিকট ও তোমাদের আবাসগৃহে, হয়তো এ বিষয়ে তোমাদেরকে জিজ্ঞাসাবাদ করা হবে।

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝١٤

১৪. তারা বললোঃ হায় দুর্ভোগ আমাদের! আমরা তো ছিলাম যালিম।

فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ﴿١٥﴾

১৫. তাদের এই আর্তনাদ চলতে থাকে যতক্ষণ না আমি তাদেরকে কর্তিত শস্য ও নির্বাপিত অগ্নি সদৃশ না করি।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿١٦﴾

১৬. আকাশ ও পৃথিবী এবং যা এতোদুভয়ের মধ্যে রয়েছে তা আমি ক্রীড়াচ্ছলে সৃষ্টি করি নাই।

لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٧﴾

১৭. আমি যদি ক্রীড়ার উপকরণ চাইতাম তবে আমি আমার নিকট যা আছে তা নিয়েই ওটা করতাম, আমি তা করি নাই।

بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۚ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ﴿١٨﴾

১৮. কিন্তু আমি সত্য দ্বারা আঘাত হানি মিথ্যার উপর; ফলে ওটা মিথ্যাকে চূর্ণ-বিচূর্ণ করে দেয় এবং তৎক্ষণাৎ মিথ্যা নিশ্চিহ্ন হয়ে যায়, দুর্ভোগ তোমাদের! তোমরা যা বলছো তার জন্যে।

وَلَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ﴿١٩﴾

১৯. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যারা আছে তারা তাঁরই; তাঁর সান্নিধ্যে যারা আছে (ফেরেশ্‌তাগণ) তারা অহংকার বশে তাঁর ইবাদত করা হতে বিমুখ হয় না এবং ক্লান্তি বোধ করে না।

يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ﴿٢٠﴾

২০. তারা দিবা রাত্র তাঁর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে, তারা শৈথিল্য (ক্লান্তিবোধ) করে না।

اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ ﴿٢١﴾

২১. তারা মাটি হতে তৈরি যে সব দেবতা গ্রহণ করেছে সে গুলি কি মৃতকে জীবিত করতে সক্ষম?

لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٢٢﴾

২২. যদি আল্লাহ ছাড়া আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে বহু মা'বূদ থাকত, তবে উভয়ই ধ্বংস হয়ে যেতো; অতএব তারা যা বলে তা হতে আরশের অধিপতি আল্লাহ পবিত্র, মহান।

لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. তিনি যা করেন সে বিষয়ে তাঁকে প্রশ্ন করা যাবে না; বরং তাদেরকেই প্রশ্ন করা হবে।

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٢٤﴾

২৪. তারা কি তাঁকে ছাড়া বহু মা'বূদ গ্রহণ করেছে? বলঃ তোমরা তোমাদের প্রমাণ উপস্থিত কর; এটা আমার সাথে যারা আছে তাদের জন্যে উপদেশ এবং উপদেশ (ছিল) আমার পূর্ববর্তীদের জন্যে; কিন্তু তাদের অধিকাংশই প্রকৃত সত্য জানে না, ফলে তারা মুখ ফিরিয়ে নেয়।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ﴿٢٥﴾

২৫. আমি তোমার পূর্বে কোন রাসূল প্রেরণ করি নাই এই ওহী ব্যতীত যে, আমি ছাড়া অন্য কোন (সত্য) মা'বূদ নেই; সুতরাং তোমরা আমারই ইবাদত কর।

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٢٦﴾

২৬. তারা বলেঃ দয়াময় সন্তান গ্রহণ করেছেন, তিনি পবিত্র, মহান! তাঁরা তো তাঁর সম্মানিত বান্দা।

لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾

২৭. তারা আল্লাহ্‌র আগে বেড়ে কথা বলে না; তারা তো তাঁর আদেশ অনুসারেই কাজ করে থাকে।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿٢٨﴾

২৮. তাদের সম্মুখে ও পশ্চাতে যা কিছু আছে তা তিনি অবগত; তারা (ফেরেশ্‌তাগণ) সুপারিশ করে শুধু তাদের জন্যে যাদের প্রতি তিনি (আল্লাহ্) সন্তুষ্ট এবং তারা তাঁর ভয়ে ভীত সন্ত্রস্ত।

وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾

২৯. তাদের মধ্যে যে বলবেঃ আমিই মা'বূদ তিনি (আল্লাহ্) ব্যতীত, তাকে আমি প্রতিফল দিবো জাহান্নাম। এভাবেই আমি যালিমদেরকে বিনিময় দিয়ে থাকি।

اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ؕ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ؕ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٠﴾

৩০. যারা কুফরী করে তারা কি ভেবে দেখে না যে, আকাশমণ্ডলী ও পৃথিবী মিশে ছিল ওতপ্রোতভাবে; অতঃপর আমি উভয়কে পৃথক করে দিলাম, এবং প্রাণবান সমস্ত কিছু সৃষ্টি করলাম পানি হতে; তবুও কি তারা বিশ্বাস করবে না?

وَجَعَلْنَا فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ ۪ وَجَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٣١﴾

৩১. এবং আমি পৃথিবীতে সৃষ্টি করেছি সুদৃঢ় পর্বত যাতে পৃথিবী তাদেরকে নিয়ে এদিক ওদিক ঢলে না যায় এবং আমি তাতে করে দিয়েছি প্রশস্ত পথ যাতে তারা গন্তব্যস্থলে পৌঁছতে পারে।

وَجَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوْظًا ۚ وَّهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿٣٢﴾

৩২. এবং আকাশকে করেছি সুরক্ষিত ছাদ; কিন্তু তারা আকাশস্থিত নিদর্শনাবলী হতে মুখ ফিরিয়ে নেয়।

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿٣٣﴾

৩৩. আল্লাহই সৃষ্টি করেছেন রাত্রি ও দিবস এবং সূর্য ও চন্দ্র; প্রত্যেকেই নিজ নিজ কক্ষপথে বিচরণ করে।

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ؕ اَفَاْئِنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ﴿٣٤﴾

৩৪. আমি তোমার পূর্বেও কোন মানুষকে অনন্ত জীবন দান করি নি; সুতরাং তোমার মৃত্যু হলে তারা কি চিরজীবি হয়ে থাকবে?

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَنَبْلُوْكُمْ بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ؕ وَاِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿٣٥﴾

৩৫. জীব মাত্রই মৃত্যুর স্বাদ গ্রহণ করবে; আমি তোমাদেরকে মন্দ ও ভাল দ্বারা বিশেষভাবে পরীক্ষা করে থাকি এবং আমারই নিকট তোমরা প্রত্যাবর্তিত হবে।

وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا الَّذِيْ يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ ۚ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٦﴾

৩৬. কাফিররা যখন তোমাকে দেখে তখন তারা তোমাকে শুধু বিদ্রূপের পাত্ররূপেই গ্রহণ করে; তারা বলেঃ এই কি সেই, যে তোমাদের দেবতাগুলির সমালোচনা করে? অথচ

তারাই তো 'আর-রহমান' এর জিকিরের বিরোধিতা করে।

خُلِقَ الْإِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۚ سَأُورِيكُمْ آيَاتِي فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ﴿٣٧﴾

৩৭. মানুষ সৃষ্টিগতভাবে শীঘ্রপরায়ণ, শীঘ্রই আমি তোমাদেরকে আমার নিদর্শনাবলী দেখাবো; সুতরাং তোমরা আমাকে তাড়াতাড়ি করতে বলো না।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾

৩৮. আর তারা বলেঃ তোমরা যদি সত্যবাদী হও তবে বলঃ এই প্রতিশ্রুতি কখন পূর্ণ হবে?

لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ لَا يَكُفُّونَ عَنْ وُجُوهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُونَ ﴿٣٩﴾

৩৯. হায়, যদি কাফিররা সেই সময়ের কথা জানতো যখন তারা তাদের সম্মুখ ও পশ্চাৎ হতে অগ্নি প্রতিরোধ করতে পারবে না এবং তাদেরকে সাহায্য করা হবে না।

بَلْ تَأْتِيهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٤٠﴾

৪০. বস্তুতঃ ওটা তাদের উপর আসবে অতর্কিতভাবে এবং তাদেরকে হতভম্ব করে দিবে; ফলে তারা ওটা রোধ করতে পারবে না এবং তাদেরকে অবকাশও দেয়া হবে না।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٤١﴾

৪১. তোমার পূর্বেও অনেক রাসূলকেই ঠাট্টা-বিদ্রূপ করা হয়েছিল; পরিণামে তারা যা নিয়ে ঠাট্টা-বিদ্রূপ করতো তা বিদ্রূপকারীদেরকে পরিবেষ্টন করেছিল।

قُلْ مَنْ يَكْلَؤُكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمَٰنِ ۚ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُعْرِضُونَ ﴿٤٢﴾

৪২. বলঃ 'রহমান' এর পরিবর্তে কে তোমাদেরকে রক্ষা করছে রাত্রে ও দিবসে? তবুও তারা তাদের প্রতিপালকের স্মরণ হতে মুখ ফিরিয়ে নেয়।

أَمْ لَهُمْ آلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِنْ دُونِنَا ۚ لَا يَسْتَطِيعُونَ

৪৩. তবে কি আমি ব্যতীত তাদের এমন দেব-দেবীও আছে যারা

نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ﴿٤٣﴾

তাদেরকে রক্ষা করতে পারে? তারা তো নিজেদেরকেই সাহায্য করতে পারে না এবং আমার বিরুদ্ধে তাদের সাহায্যকারীও থাকবে না।

بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ؕ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾

৪৪. বস্তুতঃ আমিই তাদেরকে এবং তাদের পিতৃ-পুরুষদেরকে ভোগ সম্ভার দিয়েছিলাম; অধিকন্তু তাদের আয়ুষ্কালও হয়েছিল দীর্ঘ; তারা কি দেখছে না যে, আমি তাদের দেশকে চতুর্দিক হতে সংকুচিত করে আনছি; তবুও কি তারা বিজয়ী হবে?

قُلْ اِنَّمَآ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۚ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَآءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ﴿٤٥﴾

৪৫. বলঃ আমি তো শুধু ওহী দ্বারাই তোমাদেরকে সতর্ক করি; কিন্তু যারা বধির তাদেরকে যখন সতর্ক করা হয় তখন তারা সতর্ক বাণী শুনে না।

وَلَئِنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٤٦﴾

৪৬. তোমার প্রতিপালকের শাস্তি কিঞ্চিৎ মাত্রাও যদি তাদেরকে স্পর্শ করে তারা নিশ্চয় বলে উঠবেঃ হায়, দুর্ভোগ আমাদের, আমরা তো ছিলাম যালিম!

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ؕ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ﴿٤٧﴾

৪৭. এবং কিয়ামত দিবসে আমি স্থাপন করবো ন্যায় বিচারের মানদন্ড; সুতরাং কারো প্রতি কোন অবিচার করা হবে না। এবং কর্ম যদি তিল পরিমাণ ওজনের হয় তবুও তা আমি উপস্থিত করবো; হিসাব গ্রহণ-কারীরূপে আমিই যথেষ্ট।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَآءً وَّ ذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾

৪৮. আমি তো মূসা (عليه السلام) ও হারূনকে (عليه السلام) দিয়েছিলাম ফুরকান, জ্যোতি ও উপদেশ মুত্তাকীদের জন্যে।

الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ﴿٤٩﴾

৪৯. যারা না দেখেও তাদের প্রতিপালককে ভয় করে এবং কিয়ামত সম্পর্কে থাকে ভীত সন্ত্রস্ত।

وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ؕ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٠﴾

৫০. এটা কল্যাণময় উপদেশ; আমি এটা অবতীর্ণ করেছি; তবুও কি তোমরা এটাকে অস্বীকার করবে?

وَلَقَدْ اٰتَيْنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾

৫১. আমি তো এর পূর্বে ইবরাহীমকে (عليه السلام) সৎপথের জ্ঞান দিয়েছিলাম এবং আমি তাঁর সম্বন্ধে ছিলাম সম্যক অবগত।

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْۤ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ﴿٥٢﴾

৫২. যখন তিনি তাঁর পিতা ও তাঁর সম্প্রদায়কে বললেনঃ এই মূর্তিগুলি কী? যেগুলোর পূজায় তোমরা রত আছ? (যেগুলোর পূজা তোমরা করছ?)

قَالُوْا وَجَدْنَاۤ اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ ﴿٥٣﴾

৫৩. তারা বললোঃ আমরা আমাদের পিতৃ-পুরুষদেরকে এদের পূজাকারী হিসেবে পেয়েছি।

قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٥٤﴾

৫৪. তিনি বললেনঃ তোমরা নিজেরা এবং তোমাদের পিতৃ-পুরুষরাও রয়েছো স্পষ্ট বিভ্রান্তিতে।

قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ﴿٥٥﴾

৫৫. তারা বললোঃ তুমি কি আমাদের নিকট সত্য এনেছো, না তুমি খেল-তামাশা করছো?

قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٦﴾

৫৬. তিনি বললেনঃ না, তোমাদের প্রতিপালক তো আকাশমণ্ডলী ও পৃথিবীর প্রতিপালক, যিনি ওগুলি সৃষ্টি করেছেন এবং এই বিষয়ে আমি অন্যতম সাক্ষী।

وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾

৫৭. শপথ আল্লাহর, তোমরা চলে গেলে আমি তোমাদের মূর্তিগুলি সম্বন্ধে অবশ্যই ব্যবস্থা অবলম্বন করবো।

فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٨﴾

৫৮. অতঃপর তিনি সেগুলোকে চূর্ণ-বিচূর্ণ করে দিলেন তাদের বড় (প্রধান) মূর্তিটি ব্যতীত, যাতে তারা তার দিকে ফিরে আসে।

قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٩﴾

৫৯. তারা বললোঃ আমাদের উপাস্যগুলির প্রতি এরূপ করলো কে? সে নিশ্চয়ই অত্যাচারী।

قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٠﴾

৬০. কেউ কেউ বললোঃ আমরা এক যুবককে ওদের সমালোচনা করতে শুনেছি, তার নাম ইবরাহীম।

قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ﴿٦١﴾

৬১. তারা বললোঃ তাকে উপস্থিত কর লোক সম্মুখে, যাতে তারা সাক্ষ্য দিতে পারে।

قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿٦٢﴾

৬২. তারা বললোঃ হে ইবরাহীম! তুমিই কি আমাদের উপাস্যগুলির উপর এরূপ করেছো?

قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٣﴾

৬৩. তিনি বললেনঃ বরং তাদের এই প্রধানই তো একাজ করেছে, অতএব এদেরকেই জিজ্ঞেস কর যদি ওরা কথা বলতে পারে।

فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾

৬৪. তখন তারা মনে মনে চিন্তা করে দেখলো এবং একে অপরকে বলতে লাগলোঃ তোমরাই তো অত্যাচারী।

ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ﴿٦٥﴾

৬৫. অতঃপর তাদের মস্তক অবনত হয়ে গেলে এবং তারা বললোঃ তুমি তো জানই যে, এরা কথা বলে না।

قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٦﴾

৬৬. তিনি বললেনঃ তবে কি তোমরা আল্লাহর পরিবর্তে এমন কিছুর ইবাদত কর যারা তোমাদের কোন উপকার করতে পারে না, ক্ষতিও করতে পারে না?

اُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾

৬৭. ধিক্ তোমাদেরকে এবং আল্লাহর পরিবর্তে তোমরা যাদের ইবাদত কর তাদেরকে! তবে কি তোমরা বুঝবে না।

قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٦٨﴾

৬৮. তারা বললোঃ তাকে পুড়িয়ে দাও এবং সাহায্য কর তোমাদের দেবতাগুলিকে যদি তোমরা কিছু করতে চাও।

قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾

৬৯. আমি বললামঃ হে অগ্নি! তুমি ইবরাহীমের (عليه السلام) জন্যে শীতল ও নিরাপদ হয়ে যাও।

وَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ﴿٧٠﴾

৭০. তারা তাঁর ক্ষতি সাধনের ইচ্ছা করেছিল; কিন্তু আমি তাদেরকে করে দিলাম সর্বাধিক ক্ষতিগ্রস্ত।

وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾

৭১. আর আমি তাঁকে ও লূতকে (عليه السلام) উদ্ধার করে নিয়ে গেলাম সেই দেশে (সিরিয়ায়) যেথায় আমি কল্যাণ রেখেছি বিশ্ববাসীর জন্যে।

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ ۭ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ۭ وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ﴿٧٢﴾

৭২. এবং আমি ইবরাহীমকে (عليه السلام) দান করেছিলাম ইসহাক এবং অতিরিক্ত (পৌত্ররূপে) ইয়াকুবকে (عليه السلام); আর প্রত্যেককেই করেছিলাম সৎকর্মপরায়ণ।

وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَاۗءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ﴿٧٣﴾

৭৩. আর আমি তাদেরকে করে ছিলাম নেতা; তারা আমার নির্দেশ অনুসারে মানুষকে পথপ্রদর্শন করতো; তাদের কাছে আমি ওহী প্রেরণ করেছিলাম সৎকর্ম করতে, নামায কায়েম করতে এবং যাকাত প্রদান করতে তারা আমারই ইবাদত করতো।

وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰۗىِٕثَ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ﴿٧٤﴾

৭৪. এবং লূতকে (عليه السلام) দিয়েছিলাম প্রজ্ঞা ও জ্ঞান, আর তাঁকে উদ্ধার করেছিলাম এমন এক জনপদ হতে যার অধিবাসীরা লিপ্ত ছিল অশ্লীল কর্মে; তারা ছিল এক মন্দ সম্প্রদায়, সত্যত্যাগী (ফাসিক)।

وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾

৭৫. এবং তাঁকে আমি আমার অনুগ্রহ ভাজন করেছিলাম; নিশ্চয় তিনি ছিলেন সৎকর্মপরায়ণদের অন্তর্ভুক্ত।

وَنُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾

৭৬. স্মরণ কর নূহকে (عليه السلام); পূর্বে তিনি যখন আহ্বান করেছিলেন তখন আমি সাড়া দিয়েছিলাম তাঁর আহ্বানে এবং তাকে ও তার পরিজন বর্গকে মহাসংকট হতে উদ্ধার করেছিলাম।

وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٧٧﴾

৭৭. এবং আমি তাকে সাহায্য করেছিলাম সে সম্প্রদায়ের বিরুদ্ধে যারা আমার নিদর্শনাবলী অস্বীকার করেছিল, তারা ছিল এক মন্দ সম্প্রদায়; এ জন্যে তাদের সকলকে আমি নিমজ্জিত করেছিলাম।

وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِي الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ﴿٧٨﴾

৭৮. এবং (স্মরণ কর) দাউদ (عليه السلام) ও সুলাইমানের (عليه السلام) কথা, যখন তাঁরা বিচার করছিলেন শস্য ক্ষেত্র[১] সম্পর্কে; তাতে রাত্রিকালে প্রবেশ করেছিল কোন সম্প্রদায়ের মেষ; আমি প্রত্যক্ষ করছিলাম তাদের বিচার।

فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ۫ وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ؕ

৭৯. এবং আমি সুলাইমানকে (عليه السلام) এ বিষয়ের মীমাংসা বুঝিয়ে দিয়েছিলাম এবং তাঁদের প্রত্যেককে আমি দিয়েছিলাম প্রজ্ঞা ও জ্ঞান;

১। ওটা ছিল আঙ্গুরের ক্ষেত্র বা বাগান। ঐ বাগানটিকে বকরীগুলি নষ্ট করে দেয়। দাউদ (আলাইহিস্ সালাম) ফায়সালা দেন যে, বাগানের ক্ষতিপূরণ স্বরূপ বকরীগুলি বাগানের মালিক পেয়ে যাবে। সুলায়মান (আলাইহিস্ সালাম) এই ফায়সালা শুনে আরয করলেন। হে আল্লাহ্‌র নবী (আলাইহিস্ সালাম)! এটা ছাড়া অন্য একটা ফায়সালা করা যেতে পারে। তো দাউদ (আলাইহিস্ সালাম) উত্তরে বললেন, "ওটা কি?" তিনি জবাব দিলেনঃ "প্রথমত বকরীগুলি বাগানের মালিকের হাতে সমর্পণ করা হোক। সে ওগুলি দ্বারা ফায়দা উঠাতে থাকবে। আর বাগান বকরীর মালিককে দেয়া হোক। সে আঙ্গুরের চারার খিদমত করতে থাকবে। অতঃপর যখন আঙ্গুরের গাছ গুলি ঠিক ঠাক হয়ে যাবে এবং পূর্বের অবস্থায় ফিরে আসবে তখন বাগানের মালিককে বাগান ফিরিয়ে দেয়া হবে এবং বাগানের মালিকও বকরীগুলি, বকরীর মালিককে ফিরিয়ে দিবে।" এই আয়াতের ভাবার্থ এটাই। (তাফসীর ইবনে কাসীর)

وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿٧٩﴾

আমি পর্বত ও পাখিদের জন্যে নিয়ম করে দিয়েছিলাম যেন ওরা দাউদের (عليه السلام) সাথে আমার পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে; আমিই ছিলাম এই সবের কর্তা।

وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ﴿٨٠﴾

৮০. আমি তাকে তোমাদের জন্যে বর্ম নির্মাণ শিক্ষা দিয়েছিলাম, যাতে ওটা তোমাদের যুদ্ধে তোমাদেরকে রক্ষা করে; সুতরাং তোমরা কি কৃতজ্ঞ হবে না?

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿٨١﴾

৮১. এবং সুলাইমানের (عليه السلام) বশীভূত করে দিয়েছিলাম প্রবল বায়ুকে; তা তাঁর আদেশক্রমে প্রবাহিত হতো সেই দেশের দিকে যেখানে আমি কল্যাণ রেখেছি; প্রত্যেক বিষয় সম্পর্কে আমি সম্যক অবগত।

وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٨٢﴾

৮২. এবং শয়তানদের মধ্যে কতক তার জন্যে ডুবুরীর কাজ করতো, এটা ছাড়া অন্য কাজও করতো;[১] আমি তাদের দিকে সতর্ক দৃষ্টি রাখতাম।

وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٨٣﴾

৮৩. আর (স্মরণ কর) আইয়ুবের (عليه السلام) কথা, যখন সে তার প্রতিপালককে আহ্বান করে বলেছিলেনঃ আমি দুঃখ-কষ্টে পড়েছি, আপনি তো দয়ালুদের মধ্যে সর্বশ্রেষ্ঠ দয়ালু।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ

৮৪. তখন আমি তাঁর ডাকে সাড়া দিলাম, তাঁর দুঃখ-কষ্ট দূরীভূত করে

১। অবাধ্য শয়তানদেরকেও আল্লাহ্ তা'আলা তাঁর অনুগত করে দিয়েছিলেন। তাঁর জন্য ডুবুরীর কাজ করত। তারা সমুদ্রে ডুব দিয়ে ওর তলদেশ হতে মণি-মুক্তা বের করে আনতো। এছাড়াও আরো বহু কাজ করতো। যেমন প্রাসাদ নির্মাণ ইত্যাদি। তাদেরকে শিকলে আবদ্ধ রাখা হতো। (তাফসীর ইবনে কাসীর)

اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿٨٤﴾

দিলাম, আর তার পরিবার পরিজনকে তাঁর নিকট ফিরিয়ে দিয়েছিলাম। তাদের সাথে তাদের মত আরো দিয়েছিলাম আমার বিশেষ রহমত এবং ইবাদতকারীদের জন্যে উপদেশ।

وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٨٥﴾

৮৫. আর (স্মরণ কর) ইসমাইল (عليه السلام) ইদরীস (عليه السلام) এবং যুলকিফল-এর কথা তাদের প্রত্যেকেই ছিলেন ধৈর্যশীল।

وَاَدْخَلْنٰهُمْ فِىْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٦﴾

৮৬. এবং তাদেরকে আমি আমার অনুগ্রহভাজন করেছিলাম, তাঁরা ছিলেন সৎ কর্মপরায়ণ।

وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِى الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٧﴾

৮৭. আর (স্মরণ কর) যুন-নুন (ইউনুস)-এর কথা, যখন তিনি ক্রোধভরে বের হয়ে গিয়েছিলেন এবং মনে করেছিলেন আমি তার উপর কোন ক্ষমতা রাখি না; অতঃপর তিনি অন্ধকার হতে সত্য আহ্বান করেছিলেনঃ আপনি ছাড়া কোন (সত্য) মা'বূদ নেই; আপনি পবিত্র, মহান; আমিতো অত্যাচারীদের একজন।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ؕ وَكَذٰلِكَ نُـْۨجِى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾

৮৮. তখন আমি তাঁর ডাকে সাড়া দিয়েছিলাম এবং তাঁকে উদ্ধার করেছিলাম দুশ্চিন্তা হতে এবং এভাবেই আমি মু'মিনদেরকে উদ্ধার করে থাকি।

وَزَكَرِيَّآ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِىْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٨٩﴾

৮৯. এবং (স্মরণ কর) যাকারিয়ার (عليه السلام) কথা, যখন তিনি তাঁর প্রতিপালককে আহ্বান করে বলেছিলেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমাকে একা (সন্তানহীন) ছেড়ে দিওনা এবং আপনিই সর্বোত্তম উত্তরাধিকারী।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۡ وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَاَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ؕ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ﴿٩٠﴾

৯০. অতঃপর আমি তাঁর আহ্বানে সাঁড়া দিয়েছিলাম এবং তাঁকে দান করেছিলাম ইয়াহইয়াকে (عليه السلام), আর তাঁর জন্যে স্ত্রীকে যোগ্যতা সম্পন্ন করেছিলাম; তাঁরা সৎকর্মে প্রতিযোগিতা করতেন, তাঁরা আমাকে ডাকতেন আশা ও ভীতির সাথে এবং তারা ছিলেন আমার নিকট বিনীত।

وَالَّتِىْۤ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَاۤ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩١﴾

৯১. আর (স্মরণ কর) সেই নারীকে (মারয়ামকে) যিনি নিজ সতীত্বকে রক্ষা করেছিলেন, অতঃপর তার মধ্যে আমি আমার রূহ্ হতে ফু'কে দিয়েছিলাম এবং তাঁকে ও তাঁর পুত্রকে করেছিলাম বিশ্ববাসীর জন্য এক নিদর্শন।

اِنَّ هٰذِهٖۤ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٩٢﴾

৯২. এ হচ্ছে তোমাদেরই জাতি এটা তো একই জাতি এবং আমিই তোমাদের প্রতিপালক, অতএব আমারই ইবাদত কর।

وَتَقَطَّعُوْۤا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ؕ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ﴿٩٣﴾

৯৩. কিন্তু মানুষ নিজেদের কার্যকলাপে পরস্পরের মধ্যে মতভেদ সৃষ্টি করেছে; প্রত্যেকেই আমার নিকট প্রত্যাবর্তনকারী।

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ﴿٩٤﴾

৯৪. সুতরাং যদি কেউ মু'মিন হয়ে সৎকর্ম করে তবে তার কর্ম প্রচেষ্টা অগ্রাহ্য হবে না এবং আমি তো তা লিখে রাখি।

وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَاۤ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٩٥﴾

৯৫. যে জনপদকে আমি ধ্বংস করেছি তার সম্পর্কে নিষেধাজ্ঞা রয়েছে যে, তার অধিবাসীবৃন্দ ফিরে আসবে না।

حَتّٰۤى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ

৯৬. এমন কি যখন ইয়াজুজ ও মা'জুজকে মুক্তি দেয়া হবে এবং

حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿٩٦﴾

তারা প্রত্যেক উঁচু ভূমি হতে ছুটে আসবে।

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٩٧﴾

৯৭. সত্য প্রতিশ্রুতির সময় আসন্ন হলে অকস্মাৎ কাফিরদের চক্ষু স্থির হয়ে যাবে, তারা বলবেঃ হায় দুর্ভোগ আমাদের! আমরা তো ছিলাম এ বিষয়ে উদাসীন; বরং আমরা তো যালিম ছিলাম।

اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ؕ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ﴿٩٨﴾

৯৮. তোমরা এবং আল্লাহর পরিবর্তে তোমরা যাদের ইবাদত কর সেগুলি তো জাহান্নামের ইন্ধন; তোমরা সবাই তাতে প্রবেশ করবে।

لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ؕ وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٩٩﴾

৯৯. যদি তারা উপাস্য হতো তবে তারা জাহান্নামে প্রবেশ করতো না; তাদের সবাই তাতে স্থায়ী হবে।

لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّهُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾

১০০. সেথায় থাকবে তাদের আর্তনাদ এবং সেথায় তারা কিছুই শুনতে পাবে না।

اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰٓى ۙ اُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ﴿١٠١﴾

১০১. যাদের জন্যে আমার নিকট থেকে পূর্ব হতে কল্যাণ নির্ধারিত রয়েছে, তাদেরকে উহা হতে (জাহান্নাম) দূরে রাখা হবে।

لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا ۚ وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٢﴾

১০২. তারা তার (জাহান্নামের) ক্ষীণতম শব্দও শুনতে পাবে না এবং সেথায় তারা তাদের মন যা চায় চিরকাল তা ভোগ করবে।

لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٣﴾

১০৩. মহাভীতি তাদেরকে চিন্তাযুক্ত করবে না এবং ফেরেশতারা তাদেরকে অভ্যর্থনা দিবেন, এটা সেই দিন যার প্রতিশ্রুতি তোমাদেরকে দেয়া হয়েছিল।

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَآءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ؕ

১০৪. সেদিন আমি আকাশকে গুটিয়ে ফেলবো, যেভাবে গুটানো হয়

كَمَا بَدَاْنَآ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ؕ وَعْدًا عَلَيْنَا ؕ اِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٠٤﴾

লিখিত দফতর; যেভাবে আমি সৃষ্টির সূচনা করেছিলাম, সেভাবে পুনরায় সৃষ্টি করবো; প্রতিশ্রুতি পালন আমার কর্তব্য, আমি এটা পালন করবই।

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِى الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِىَ الصّٰلِحُوْنَ ﴿١٠٥﴾

১০৫. আর আমি নাযিলকৃত কিতাবে লিখে দিয়েছি এই উপদেশের পর যে, আমার সৎকর্মশীল বান্দারা পৃথিবীর অধিকারী হবে।

اِنَّ فِىْ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ ﴿١٠٦﴾ؕ

১০৬. এতে রয়েছে বাণী সেই সম্প্রদায়ের জন্যে যারা ইবাদত করে।

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٧﴾

১০৭. আমি তো তোমাকে বিশ্বজগতের প্রতি শুধু রহমত রূপেই প্রেরণ করেছি।

قُلْ اِنَّمَا يُوْحٰٓى اِلَىَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٨﴾

১০৮. বলঃ আমার প্রতি ওহী হয় যে, তোমাদের মা'বূদ একই মা'বূদ, সুতরাং তোমরা কি আত্মসমর্পণ-কারী হবে?

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اٰذَنْتُكُمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ وَاِنْ اَدْرِىْٓ اَقَرِيْبٌ اَمْ بَعِيْدٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٩﴾

১০৯. যদি তারা মুখ ফিরিয়ে নেয় তবে তুমি বলোঃ আমি তোমাদেরকে যথাযথভাবে জানিয়ে দিয়েছি এবং তোমাদেরকে যে বিষয়ের প্রতিশ্রুতি দেয়া হয়েছে, আমি জানি না, তা নিকটবর্তী না দূরবর্তী।

اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿١١٠﴾

১১০. তিনি জানেন যা উচ্চস্বরে ব্যক্ত এবং যা তোমরা গোপন কর।

وَاِنْ اَدْرِىْ لَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿١١١﴾

১১১. আমি জানি না হয়তো এটা তোমাদের জন্যে এক পরীক্ষা এবং জীবনোপভোগ কিছু কালের জন্যে।

قٰلَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ وَرَبُّنَا الرَّحْمٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١١٢﴾ ع

১১২. রাসূল বলেছিলেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আপনি ন্যায়ের সাথে ফায়সালা করে দিন, আমাদের প্রতি-পালক তো দয়াময়, তোমরা যা বলছো সে বিষয়ে একমাত্র সহায়স্থল তিনিই।

সূরাঃ হাজ্জ, মাদানী

(আয়াতঃ ৭৮, রুকূ'ঃ ১০)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُوْرَةُ الْحَجِّ مَدَنِيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٧٨ رُكُوْعَاتُهَا ١٠

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. হে মানবমণ্ডলী! তোমরা ভয় করো তোমাদের প্রতিপালককে; নিঃসন্দেহে কিয়ামতের প্রকম্পন এক ভয়ানক ব্যাপার।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ ①

২. যেদিন তোমরা তা প্রত্যক্ষ করবে সেই দিন প্রত্যেক স্তন্যদাত্রী উদাসীন হয়ে যাবে তার দুগ্ধপোষ্য শিশু হতে এবং প্রত্যেক গর্ভবতী তার গর্ভপাত করে ফেলবে; মানুষকে দেখবে মাতাল সদৃশ, যদিও তারা নেশা গ্রস্ত নয়; বস্তুতঃ আল্লাহর শাস্তি কঠিন।

يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّاۤ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ②

৩. মানুষের কতক অজ্ঞানতাবশতঃ আল্লাহ সম্বন্ধে বিতন্ডা করে এবং অনুসরণ করে প্রত্যেক বিদ্রোহী শয়তানের।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ③

৪. তার সম্বন্ধে এই নিয়ম করে দেয়া হয়েছে যে, যে কেউ তার সাথে বন্ধুত্ব করবে সে তাকে পথভ্রষ্ট করবে এবং তাকে পরিচালিত করবে জাহান্নামের শাস্তির দিকে।

كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ④

৫. হে মানুষ! পুনরুত্থান সম্বন্ধে যদি তোমরা সন্দিহান হও তবে (অনুধাবন কর) আমি তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছি মৃত্তিকা হতে, তারপর শুক্র হতে, তারপর রক্তপিন্ড হতে, তারপর পূর্ণাকৃতি বা অপূর্ণাকৃতি মাংসপিন্ড হতে; তোমাদের নিকট

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ؕ وَنُقِرُّ فِي الْاَرْحَامِ

مَا نَشَآءُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ وَتَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۭ بَهِيْجٍ ۝٥

ব্যক্ত করবার জন্যে; আমি যা ইচ্ছা করি তা এক নির্দিষ্ট কালের জন্যে মাতৃগর্ভে স্থিত রাখি, তারপর আমি তোমাদেরকে শিশুরূপে[১] বের করি, পরে যাতে তোমরা পরিণত বয়সে উপনীত হও; তোমাদের মধ্যে কারো কারো মৃত্যু ঘটানো হয় এবং তোমাদের মধ্যে কাউকেও প্রত্যাবৃত্ত করা হয় অকর্মণ্য বয়সে যার ফলে, তারা যা কিছু জানতো সে সম্বন্ধে তারা সজ্ঞান থাকে না। তুমি ভূমিকে দেখো শুষ্ক, অতঃপর তাতে আমি পানি বর্ষণ করলে তা শস্য-শ্যামল হয়ে আন্দোলিত ও স্ফীত হয় এবং উদগত করে সর্বপ্রকার নয়নাভিরাম উদ্ভিদ।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْيِ الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٦

৬. এটা এ জন্যে যে, আল্লাহ সত্য এবং তিনিই মৃতকে জীবন দান করেন এবং তিনি সর্ববিষয়ে শক্তিমান।

وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِى الْقُبُوْرِ ۝٧

৭. আর কিয়ামত অবশ্যম্ভাবী, এতে কোন সন্দেহ নেই এবং কবরে যারা আছে তাদেরকে আল্লাহ নিশ্চয় পুনরুত্থিত করবেন।

১। আব্দুল্লাহ্ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেন, সত্যবাদী মূর্ত প্রতীক রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তোমাদের প্রত্যেকের সৃষ্টির উপাদান (শুক্র) মাতৃগর্ভে চল্লিশ দিন পর্যন্ত জমাট বাঁধতে থাকে। তারপর তা অনুরূপভাবে (চল্লিশ দিনে) জমাটবদ্ধ রক্তপিন্ডে রূপ নেয়। পুনরায় তদ্রূপ (চল্লিশ দিন) গোশতের টুকরায় পরিণত হয়। অতপর আল্লাহ্ চারটি কথার নির্দেশসহ তার কাছে ফেরেশ্‌তা পাঠান। সে তার আমল, মৃত্যু, রিযিক এবং পাপিষ্ঠ হবে না- কি নেক্কার, এসব লিখে দেয়। এরপর তার মধ্যে 'রূহ' ফুঁকে দেয়া হয়। (জন্মের পর) এক ব্যক্তি একজন জাহান্নামীর ন্যায় ক্রিয়াকান্ড করতে থাকে। এমন কি তার ও জাহান্নামের মধ্যে মাত্র এক হাতের ব্যবধান রয়ে যায়। এমনি মুহূর্তে তার (নিয়তির) লিখন এগিয়ে আসে। তখন সে জান্নাতবাসীদের অনুরূপ আমল (কাজকর্ম) করে যায় এবং (পরিণতিতে) জান্নাতে প্রবেশ করে। আর এক ব্যক্তি (শুরুতে) জান্নাতবাসীরই অনুরূপ আমল করে। এমনিভাবে তার ও জান্নাতের মাঝখানে মাত্র এক হাতের দূরত্ব থেকে যায়। এমনি সময় তার ওপর তার (ভাগ্যের) লিখন এগিয়ে আসে। তখন সে জাহান্নামীদের অনুরূপ কাজকর্ম শুরু করে দেয়। (ফলে) সে জাহান্নামী হয়। (বুখারী, হাদীস নং ৩৩৩২)

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۙ﴿٨﴾

৮. মানুষের মধ্যে কেউ কেউ আল্লাহ সম্বন্ধে বিতণ্ড করে, তাদের না আছে জ্ঞান, না আছে পথ নির্দেশ, না আছে কোন দ্বীপ্তিমান কিতাব।

ثَانِيَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَهٗ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٩﴾

৯. সে বিতণ্ডা করে ঘাড় বাঁকিয়ে, লোকদেরকে আল্লাহর পথ হতে ভ্রষ্ট করার জন্যে; তার জন্যে লাঞ্ছনা আছে ইহলোকে এবং কিয়ামতের দিবসে আমি তাকে আস্বাদন করাবো জ্বলন্ত আগুনের শাস্তি।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٠﴾

১০. এটা তোমার কৃতকর্মেরই ফল, নিশ্চয়ই আল্লাহ বান্দাদের প্রতি অত্যাচার করেন না।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ۨاطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ۨانْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿١١﴾

১১. মানুষের মধ্যে কেউ কেউ আল্লাহর ইবাদত করে দ্বিধার সাথে; তার মঙ্গল হলে তাতে প্রশান্তি লাভ করে এবং কোন বিপর্যয় ঘটলে সে তার পূর্বাস্থায় ফিরে যায়; সে ক্ষতিগ্রস্ত হয় দুনিয়াতে ও আখেরাতে; এটাই তো সুস্পষ্ট ক্ষতি।

يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿١٢﴾

১২. সে আল্লাহর পরিবর্তে এমন কিছুকে ডাকে যা তার কোন অপকার করতে পারে না, উপকারও করতে পারে না, এটাই চরম বিভ্রান্তি।

يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗۤ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ؕ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ﴿١٣﴾

১৩. সে ডাকে এমন কিছুকে যার ক্ষতিই তার উপকার অপেক্ষা নিকটতর; কত নিকৃষ্ট এই অভিভাবক এবং নিকৃষ্ট এই সহচর!

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿١٤﴾

১৪. যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে আল্লাহ তাদেরকে দাখিল করবেন জান্নাতে, যার নিম্নদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত; আল্লাহ যা ইচ্ছা তা-ই করেন।

مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَآءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ﴿١٥﴾

১৫. যে মনে করে, আল্লাহ তাঁকে (রাসূলকে) কখনই দুনিয়া ও আখেরাতে সাহায্য করবেন না, সে আকাশ পর্যন্ত একটি রশি টেনে দিক, পরে তা বিচ্ছিন্ন করুক; অতঃপর দেখুক তার প্রচেষ্টা তার আক্রোশের হেতু দূর করে কিনা।

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يُّرِيْدُ ﴿١٦﴾

১৬. এভাবেই আমি সুস্পষ্ট নিদর্শনরূপে ওটা অবতীর্ণ করেছি, আর আল্লাহ যাকে ইচ্ছা সৎপথ প্রদর্শন করেন।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـِٕيْنَ وَالنَّصٰرٰى وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا ۖ اِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١٧﴾

১৭. যারা ঈমান এনেছে এবং যারা ইয়াহূদী হয়েছে, যারা সাবিয়ী, খ্রিস্টান, অগ্নিপূজক এবং যারা মুশরিক হয়েছে কিয়ামতের দিন আল্লাহ তাদের মধ্যে ফায়সালা করে দিবেন; নিশ্চয়ই আল্লাহ প্রত্যেক জিনিসের উপর সাক্ষী।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَآبُّ وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ؕ وَكَثِيْرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ؕ وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ﴿١٨﴾ السجدة

১৮. তুমি কি দেখো না যে, আল্লাহকে সিজদা করে, যা কিছু আছে আকাশমণ্ডলীতে ও পৃথিবীতে, সূর্য, চন্দ্র, নক্ষত্রমণ্ডলী, পর্বতরাজী, বৃক্ষলতা, জীবজন্তু এবং সিজদা করে মানুষের মধ্যে অনেকে? আর অনেকের প্রতি অবধারিত হয়েছে শাস্তি; আল্লাহ যাকে হেয় করেন তার সম্মানদাতা কেউই নেই; আল্লাহ যা ইচ্ছা তা করেন।

هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِىْ رَبِّهِمْ ۫ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ؕ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ﴿١٩﴾

১৯. এরা দু'টি বিবাদমান পক্ষ। তারা তাদের প্রতিপালক সম্বন্ধে বিতর্ক করে; যারা কুফরী করে তাদের জন্য প্রস্তুত করা হয়েছে আগুনের পোশাক; তাদের মাথার উপর ঢেলে দেয়া হবে ফুটন্ত পানি।

يُصْهَرُ بِهٖ مَا فِيْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ ۝٢٠

২০. যা দ্বারা, তাদের উদরে যা আছে তা এবং তাদের চর্ম বিগলিত করা হবে।

وَلَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ ۝٢١

২১. আর তাদের জন্যে থাকবে লৌহ হাতুড়িসমূহ।

كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ اُعِيْدُوْا فِيْهَا ۗ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝٢٢

২২. যখনই তারা যন্ত্রণা কাতর হয়ে জাহান্নাম হতে বের হতে চাইবে তখনই তাদেরকে ফিরিয়ে দেয়া হবে; তাদের বলা হবেঃ আস্বাদন কর দহন-যন্ত্রণা।

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۭ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ۝٢٣

২৩. যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে, আল্লাহ তাদেরকে দাখিল করবেন জান্নাতে যার পাদদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত, সেথায় তাদেরকে অলংকৃত করা হবে স্বর্ণ-কংকন ও মুক্তা দ্বারা এবং সেথায় তাদের পোশাক-পরিচ্ছেদ হবে রেশমের।

وَهُدُوْٓا اِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَهُدُوْٓا اِلٰى صِرَاطِ الْحَمِيْدِ ۝٢٤

২৪. তাদেরকে পবিত্র (তাওহীদের) বাক্যের দিকে পথ প্রদর্শিত করা হয়েছিল এবং তাদেরকে পরিচালিত করা হয়েছিল পরম প্রশংসাভাজন (আল্লাহর) পথে।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِيْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَاۗءَ ۨ الْعَاكِفُ فِيْهِ وَالْبَادِ ۭ وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِاِلْحَادٍۢ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٢٥

২৫. যারা কুফরী করে এবং মানুষকে নিবৃত্ত করে আল্লাহর পথ হতে ও মসজিদুল হারাম হতে, যা আমি করেছি স্থানীয় ও বহিরাগত সবারই জন্যে সমান, আর যে ইচ্ছা করে সীমালঙ্ঘন করে ওতে পাপকার্যের, তাকে আমি আস্বাদন করাবো যন্ত্রণা দায়ক শাস্তি।

وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ

২৬. আর (স্মরণ কর,) যখন আমি ইবরাহীমের (عليه السلام) জন্যে নির্ধারণ করে দিয়েছিলাম কাবা গৃহের স্থান,

أَنْ لَّا تُشْرِكْ بِيْ شَيْـًٔا وَّطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْقَآئِمِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿٢٦﴾

(তখন বলেছিলামঃ) যে, আমার সাথে কোন শরীক স্থির করো না এবং আমার গৃহকে পবিত্র রেখো তাদের জন্যে যারা তাওয়াফ করে এবং যারা কিয়াম করে, রুকূ করে ও সিজদা করে।

وَاَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ﴿٢٧﴾

২৭. এবং মানুষের কাছে হজ্জের ঘোষণা করে দাও, তারা তোমার কাছে আসবে পদব্রজে ও সর্বপ্রকার ক্ষীণকায় উষ্ট্রসমূহের পিঠে, তারা আসবে দূর-দূরান্তর পথ অতিক্রম করে।[১]

لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ ﴿٢٨﴾

২৮. যাতে তারা তাদের কল্যাণের জন্য উপস্থিত হতে পারে এবং তিনি তাদেরকে চতুষ্পদ জন্তু হতে যা রিযিক হিসেবে দান করেছেন ওর উপর নির্দিষ্ট দিনগুলিতে আল্লাহর নাম উচ্চারণ করতে পারে; অতপর তোমরা ওটা হতে আহার কর এবং দুঃস্থ, অভাব গ্রস্তকে আহার করাও।

ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٢٩﴾

২৯. অতঃপর তারা যেন তাদের অপরিচ্ছন্নতা করে তাদের মানত পূর্ণ করে ও তাওয়াফ করে প্রাচীন গৃহের (কাবার)।

ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ وَاُحِلَّتْ لَكُمُ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ

৩০. এটাই বিধান এবং কেউ আল্লাহ কর্তৃক নির্ধারিত পবিত্র অনুষ্ঠানগুলির সম্মান করলে তার প্রতিপালকের নিকট তার জন্যে এটাই উত্তম। তোমাদের জন্যে হালাল করা হয়েছে চতুষ্পদ জন্তু, এগুলি ব্যতীত যা

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি এ ঘরের (বাইতুল্লাহ্‌র) হজ্জ করল, কোন অশ্লীল কথা বলল না এবং কোন অন্যায় করল না, সে যেন নবজাতক শিশুর ন্যায় নিষ্পাপ হয়ে ফিরে আসল। (বুখারী, হাদীস নং ১৮১৯)

وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّوْرِ ﴿٣٠﴾

তোমাদেরকে পাঠ করে শুনানো হয়েছে; সুতরাং তোমরা বর্জন কর মূর্তি পূজার অপবিত্রতা এবং দূরে থাকো মিথ্যা কথা হতে।

حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ﴿٣١﴾

৩১. আল্লাহর প্রতি একনিষ্ঠ হয়ে, তাঁর কোন শরীক না করে; আর যে কেউ আল্লাহর শরীক করে সে যেন আকাশ হতে পড়লো, অতঃপর পাখি তাকে ছোঁ মেরে নিয়ে গেল, কিংবা বায়ু তাকে উড়িয়ে নিয়ে গিয়ে এক দূরবর্তী স্থানে নিক্ষেপ করলো।

ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ﴿٣٢﴾

৩২. এটাই আল্লাহর বিধান এবং কেউ আল্লাহর নিদর্শনাবলীকে সম্মান করলে এটাতো তার হৃদয়ের তাকওয়ারই বহিঃপ্রকাশ।

لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَآ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿٣٣﴾

৩৩. এসবগুলোতে তোমাদের জন্যে নানাবিধ উপকার রয়েছে। এক নির্দিষ্ট কালের জন্যে; অতঃপর ওগুলির কুরবানীর স্থান প্রাচীন গৃহের (কাবার) নিকট।

وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ؕ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗۤ اَسْلِمُوْا ؕ وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ﴿٣٤﴾

৩৪. আমি প্রত্যেক সম্প্রদায়ের জন্যে কুরবানীর নিয়ম করে দিয়েছি যাতে আমি তাদেরকে রুযী স্বরূপ যে সব চতুষ্পদ জন্তু দিয়েছি সেগুলির উপর আল্লাহর নাম উচ্চরণ করে; তোমাদের মা'বূদ এক মা'বূদ। সুতরাং তাঁরই নিকট আত্মসমর্পণ কর এবং সুসংবাদ দাও বিনীতজনকে।

الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَاۤ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

৩৫. যাদের হৃদয়ে ভয়-কম্পিত হয় আল্লাহর নাম স্মরণ করা হলে, যারা তাদের বিপদ-আপদে ধৈর্যধারণ করে এবং নামায কায়েম করে ও আমি তাদেরকে যে রিযিক দিয়েছি তা হতে ব্যয় করে।

وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ۗ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٣٦﴾

৩৬. এবং (কুরবানীর) উটকে করেছি আল্লাহর নিদর্শনগুলির অন্যতম; তোমাদের জন্যে তাতে মঙ্গল রয়েছে; সুতরাং সারিবদ্ধভাবে দণ্ডায়মান অবস্থায় ওগুলির উপর (জবাই করার সময়) তোমরা আল্লাহর নাম নাও; যখন ওরা কাত হয়ে পড়ে যায় তখন তোমরা তা হতে আহার কর এবং আহার করাও ধৈর্যশীল (সহ্যকারী) অভাবগ্রস্তকে ও ভিক্ষাকারী অভাবগ্রস্তকে; এইভাবে আমি ওদেরকে তোমাদের অধীন করে দিয়েছি যাতে তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ۗ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ۗ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٧﴾

৩৭. আল্লাহর কাছে পৌঁছে না ওগুলির গোশ্‌ত এবং রক্ত বরং তাঁর কাছে পৌঁছে তোমাদের তাকওয়া; এভাবে তিনি এগুলিকে তোমাদের অধীন করে দিয়েছেন যাতে তোমরা আল্লাহর শ্রেষ্ঠত্ব ঘোষণা কর এই জন্যে যে, তিনি তোমাদেরকে পথ প্রদর্শন করেছেন; সুতরাং তুমি সুসংবাদ দাও সৎকর্মশীলদেরকে।

اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ﴿٣٨﴾

৩৮. নিশ্চয়ই আল্লাহ মু'মিনদের পক্ষ হতে প্রতিহত করেন (তাদের দুশমন হতে)। তিনি কোন বিশ্বাসঘাতক, অকৃতজ্ঞকে পছন্দ করেন না।

اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ۙ ﴿٣٩﴾

৩৯. (যুদ্ধের) অনুমতি দেয়া হলো তাদেরকে যারা আক্রান্ত হয়েছে; কারণ, তাদের প্রতি অত্যাচার করা হয়েছে; আল্লাহ নিশ্চয় তাদেরকে সাহায্য করতে সম্যক সক্ষম।

الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّآ

৪০. তাদেরকে তাদের ঘরবাড়ী হতে অন্যায়ভাবে বহিস্কৃত করা হয়েছে শুধু

اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ؕ وَلَوْ لَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ؕ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٤٠﴾

এ কারণে যে, তারা বলেঃ আমাদের প্রতিপালক আল্লাহ; আল্লাহ যদি মানব জাতির এক দলকে অন্য দল দ্বারা প্রতিহত না করতেন, তা হলে বিধ্বস্ত হয়ে যেতো খ্রিস্টান-সংসার বিরাগীদের উপাসনা স্থান, গীর্জা, ইয়াহূদীদের উপাসনালয় এবং মসজিদসমূহ যাতে অধিক স্মরণ করা হয় আল্লাহর নাম; আল্লাহ নিশ্চয়ই তাকে সাহায্য করেন যে তাঁকে সাহায্য করে; আল্লাহ নিশ্চয়ই শক্তিমান, পরাক্রমশালী।

اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿٤١﴾

৪১. আমি তাদেরকে পৃথিবীতে প্রতিষ্ঠা দান করলে তারা নামায[১] কায়েম করবে, যাকাত দিবে এবং সৎ কাজের আদেশ করবে ও অসৎকার্য হতে নিষেধ করবে; সকল কর্মের পরিণাম আল্লাহর ইখতিয়ারে।

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ

৪২. এবং লোক যদি তোমাকে অস্বীকার করে (এতে আশ্চার্যের

১। মালেক ইবনে হুয়াইরিশ থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমরা নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর কাছে আসলাম। আমরা সবাই সমবয়স্ক, যুবক ছিলাম। আমরা বিশ দিন যাবত তাঁর কাছে ছিলাম। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) অত্যন্ত সদয় ব্যক্তি ছিলেন। যখন তিনি অনুমান করতে পারলেন, আমরা স্ত্রী-পরিজনের আকাঙ্ক্ষা করছি এবং তাদের থেকে বিছিন্ন থাকাতে আমরা মানসিকভাবে কষ্টবোধ করছি; তিনি জিজ্ঞেস করলেন, আমরা বাড়িতে কাদের রেখে এসেছি। আমরা তাকে অবহিত করলাম। তিনি বললেন, তোমরা স্ত্রী-পরিজনদের কাছে ফিরে যাও, তাদের সাথে বসবাস করো, তাদেরকে দ্বীনের জ্ঞান দান করো এবং ভাল কাজের নির্দেশ দাও। বর্ণনাকারী বলেন, তিনি আরো কিছু বিষয়ে বলছিলেন; কিন্তু আমি তার কিছু মনে রেখেছি আর কিছু ভুলে গেছি। মহানবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেন, আমাকে যেভাবে নামায পড়তে দেখছো ঠিক সেভাবেই নামায আদায় করো। যখন নামাযের সময় হয় তখন তোমাদের কেউ যেন আযান দেয় এবং অপেক্ষাকৃত বয়স্ক ব্যক্তি যেন তোমাদের ইমামতি করে। (বুখারী, হাদীস নং ৭২৪৬)

❁ সালেম বিন আব্দুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু) তার পিতা থেকে বর্ণনা করেছেন। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) নামায শুরু করার সময় কাঁধ বরাবর দু'হাত উঠাতেন। রুকুর জন্য তাকবীর বলার সময় এবং রুকূ' থেকে মাথা উঠানোর সময় অনুরূপভাবেই দু'হাত উঠাতেন এবং সামিয়াল্লাহু লিমান হামিদাহ ও রাব্বানা লাকাল্ হাম্দ্ বলতেন; কিন্তু সিজদার সময় তিনি অনুরূপ (হাত উঠানোর কাজ) করতেন না। (বুখারী, হাদীস নং ৭৩৫)

قَوْمُ نُوْحٍ وَّ عَادٌ وَّثَمُوْدُ ﴿٤٢﴾

কিছুই নেই) তাদের পূর্বে তো নূহের (عليه السلام) কওম, আ'দ এবং সামূদও অস্বীকার করেছিল।

وَ قَوْمُ اِبْرٰهِيْمَ وَ قَوْمُ لُوْطٍ ﴿٤٣﴾

৪৩. এবং ইবরাহীম (عليه السلام) ও লূতের (عليه السلام) কওম।

وَّ اَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَ كُذِّبَ مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٤﴾

৪৪. এবং মাদইয়ানবাসীরাও (তাদের নবীদেরকে অস্বীকার করেছিল;) এবং অস্বীকার করা হয়েছিল মূসাকেও (عليه السلام); আমি কাফিরদেরকে অবকাশ দিয়েছিলাম ও পরে তাদেরকে শাস্তি দিয়েছিলাম, অতঃপর কেমন ছিল আমার শাস্তি!

فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا وَ هِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ز وَ بِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّ قَصْرٍ مَّشِيْدٍ ﴿٤٥﴾

৪৫. আমি ধ্বংস করেছি কত জনপদ যেগুলির বাসিন্দা ছিল যালিম, এসব জনপদ তাদের ঘরের ছাদসহ ধ্বংসস্তূপে পরিণত হয়েছিল এবং কত কূপ পরিত্যক্ত হয়েছিল ও কত সুদৃঢ় প্রাসাদও।

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَآ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي الصُّدُوْرِ ﴿٤٦﴾

৪৬. তারা কি দেশ ভ্রমণ করে নাই? তা হলে তারা জ্ঞান বুদ্ধি সম্পন্ন হৃদয় ও শ্রুতি শক্তি সম্পন্ন কর্ণের অধিকারী হতে পারতো। বস্তুতঃ চক্ষু তো অন্ধ নয়; বরং অন্ধ হচ্ছে বক্ষস্থিত হৃদয়।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ط وَاِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٤٧﴾

৪৭. শাস্তির ব্যাপারে তাড়াতাড়ি করতে বলে, অথচ আল্লাহ তাঁর প্রতিশ্রুতি কখনো ভঙ্গ করেন না, তোমার প্রতিপালকের একদিন তোমাদের গণনার সহস্র বছরের সমান।

وَ كَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ

৪৮. এবং আমি অবকাশ দিয়েছি কত জনপদকে যখন তারা ছিল অত্যাচারী; অতঃপর তাদেরকে শাস্তি

ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ وَ اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿٤٨﴾

দিয়েছি এবং প্রত্যাবর্তন আমারই নিকট।

قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَاۤ اَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٩﴾

৪৯. বলঃ হে মানুষ! আমিতো তোমাদের জন্য এক স্পষ্ট সতর্ককারী।

فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٥٠﴾

৫০. সুতরাং যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে তাদের জন্যে আছে ক্ষমা ও সম্মানজনক জীবিকা।

وَ الَّذِيْنَ سَعَوْا فِيْۤ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٥١﴾

৫১. আর যারা আমার আয়াতকে ব্যর্থ করার চেষ্টা করে তারাই হবে জাহান্নামের অধিবাসী।

وَمَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّاۤ اِذَا تَمَنّٰۤى اَلْقَى الشَّيْطٰنُ فِيْۤ اُمْنِيَّتِهٖ ۚ فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِى الشَّيْطٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٢﴾

৫২. আমি তোমার পূর্বে যে সব রাসূল কিংবা নবী প্রেরণ করেছি তাদের কেউ যখনই আকাঙ্খা করেছেন, তখনই শয়তান তার আকাঙ্খায় কিছু প্রক্ষিপ্ত করে আল্লাহ তা বিদূরিত করেন; অতঃপর আল্লাহ তার আয়াতসমূহকে আরো মজবূত করেন এবং আল্লাহ সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাময়।

لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِى الشَّيْطٰنُ فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّ الْقَاسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ﴿٥٣﴾

৫৩. এটা এ জন্যে যে, শয়তান যা প্রক্ষিপ্ত করে তিনি ওকে পরীক্ষা স্বরূপ করেন তাদের জন্যে যাদের অন্তরে ব্যাধি রয়েছে, যাদের পাষাণ হৃদয়; অত্যাচারীরা দুস্তর মতভেদে রয়েছে।

وَّ لِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٤﴾

৫৪. এবং এ জন্যেও যে, যাদের জ্ঞান দেয়া হয়েছে তারা যেন জানতে পারে যে, এটা তোমার প্রতি-পালকের নিকট হতে প্রেরিত সত্য; অতঃপর তারা যেন বিশ্বাস স্থাপন করে এবং তাদের অন্তর যেন ওর প্রতি অনুগত হয়; যারা ঈমান এনেছে তাদেরকে আল্লাহ সরল পথে পরিচালিত করেন।

وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ ﴿٥٥﴾

৫৫. যারা কুফরী করেছে তারা ওতে সন্দেহ পোষণ করা হতে বিরত হবে না, শেষ পর্যন্ত তাদের নিকট কিয়ামত এসে পড়বে আকস্মিক-ভাবে, অথবা এসে পড়বে এক বন্ধ্যা দিনের শাস্তি।

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ۚ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ۚ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٥٦﴾

৫৬. সে দিন আল্লাহরই আধিপত্য; তিনিই তাদের বিচার করবেন; যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে তারা অবস্থান করবে সুখময় জান্নাতে।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٥٧﴾

৫৭. আর যারা কুফরী করে ও আমার আয়াতসমূহকে অস্বীকার করে তাদেরই জন্যে রয়েছে লাঞ্ছনাজনক শাস্তি।

وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوْٓا اَوْ مَاتُوْا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٥٨﴾

৫৮. আর যারা হিজরত করেছে আল্লাহর পথে অতঃপর নিহত হয়েছে অথবা মৃত্যুবরণ করেছে তাদেরকে আল্লাহ অবশ্যই উৎকৃষ্ট জীবিকা দান করবেন এবং আল্লাহ তিনিই তো সর্বোৎকৃষ্ট রিযিকদাতা।

لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿٥٩﴾

৫৯. তিনি তাদেরকে অবশ্যই এমন স্থানে দাখিল করবেন যা তারা পছন্দ করবে এবং আল্লাহ তো সম্যক প্রজ্ঞাময়, পরম সহনশীল।

ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهٖ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ﴿٦٠﴾

৬০. এটাই হয়ে থাকে, কোন ব্যক্তি নিপীড়িত হয়ে নিপীড়ন পরিমাণ প্রতিশোধ গ্রহণ করলে ও পুনরায় সে অত্যাচারিত হলে আল্লাহ অবশ্যই তাকে সাহায্য করবেন; আল্লাহ নিশ্চয় পাপমোচনকারী, ক্ষমাশীল।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ

৬১. ওটা এজন্যে যে, আল্লাহ রাত্রিকে প্রবিষ্ট করেন দিবসের মধ্যে এবং দিবসকে প্রবিষ্ট করেন রাত্রির

النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٦١﴾

মধ্যে এবং আল্লাহ সর্বশ্রোতা সম্যক দ্রষ্টা।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٦٢﴾

৬২. এজন্যেও যে, আল্লাহ, তিনিই সত্য এবং তারা তাঁর পরিবর্তে যাকে ডাকে ওটা তো অসত্য এবং আল্লাহ, তিনিই তো সমুচ্চ, মহান।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿٦٣﴾

৬৩. তুমি কি লক্ষ্য করনি যে, আল্লাহ বারি বর্ষণ করেন আকাশ হতে, যাতে পৃথিবী সবুজ-শ্যামল হয়ে ওঠে? আল্লাহ সম্যক সূক্ষ্মদর্শী, পরিজ্ঞাত।

لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٦٤﴾

৬৪. আকাশমণ্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে তা তাঁরই এবং আল্লাহ তিনিই তো অভাবমুক্ত, সর্ব-প্রশংসনীয়।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ؕ وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٥﴾

৬৫. তুমি কি লক্ষ্য করনি যে, আল্লাহ তোমাদের কল্যাণে নিয়োজিত করেছেন পৃথিবীতে যা কিছু আছে তৎসমুদয়কে এবং তাঁর নির্দেশে সমুদ্রে বিচরণশীল নৌযানসমূহকে এবং তিনিই আকাশকে স্থির রাখেন যাতে ওটা পতিত না হয় পৃথিবীর উপর তাঁর অনুমতি ছাড়া? আল্লাহ নিশ্চয়ই মানুষের প্রতি স্নেহশীল, পরম দয়ালু।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَحْيَاكُمْ ۫ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ﴿٦٦﴾

৬৬. এবং তিনি তো তোমাদেরকে জীবন দান করেছেন; অতঃপর তিনিই তো তোমাদের মৃত্যু ঘটাবেন, পুনরায় তোমাদেরকে জীবন দান করবেন; মানুষ তো অতিমাত্রায় অকৃতজ্ঞ।

لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْاَمْرِ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ ؕ

৬৭. আমি প্রত্যেক সম্প্রদায়ের জন্যে নির্ধারিত করে দিয়েছি ইবাদত পদ্ধতি যা তারা অনুসরণ করে; সুতরাং তারা যেন তোমার সাথে

إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى مُّسْتَقِيمٍ ﴿٦٧﴾

বিতর্ক না করে এই ব্যাপারে। তুমি তাদেরকে তোমার প্রতিপালকের দিকে আহ্বান কর, তুমি তো সরল পথেই প্রতিষ্ঠিত।

وَإِن جَٰدَلُوكَ فَقُلِ ٱللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٦٨﴾

৬৮. তারা যদি তোমার সাথে বাক-বিতন্ডা করে তবে বলোঃ তোমরা যা কর সে সম্বন্ধে আল্লাহ সম্যক অবহিত।

ٱللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ فِيمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٦٩﴾

৬৯. তোমরা যে বিষয়ে মতভেদ করছো আল্লাহ কিয়ামতের দিন সে বিষয়ে তোমাদের মধ্যে বিচার মীমাংসা করে দিবেন।

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِى ٱلسَّمَآءِ وَٱلْأَرْضِ ۗ إِنَّ ذَٰلِكَ فِى كِتَٰبٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى ٱللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٧٠﴾

৭০. তুমি কি জানোনা যে, আকাশ ও পৃথিবীতে যা কিছু রয়েছে আল্লাহ তা অবগত আছেন? এ সবই লিপিবদ্ধ আছে এক কিতাবে, অবশ্যই এটা আল্লাহর নিকট সহজ।

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِۦ سُلْطَٰنًا وَمَا لَيْسَ لَهُم بِهِۦ عِلْمٌ ۗ وَمَا لِلظَّٰلِمِينَ مِن نَّصِيرٍ ﴿٧١﴾

৭১. এবং তারা ইবাদত করে আল্লাহর পরিবর্তে এমন কিছুর যার সম্পর্কে তিনি কোন দলীল প্রেরণ করেন নাই এবং যার সম্বন্ধে তাদের কোন জ্ঞান নেই; বস্তুতঃ যালিমদের কোন সাহায্যকারী নেই।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ءَايَٰتُنَا بَيِّنَٰتٍ تَعْرِفُ فِى وُجُوهِ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ ٱلْمُنكَرَ ۖ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِٱلَّذِينَ يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ ءَايَٰتِنَا ۗ قُلْ أَفَأُنَبِّئُكُم بِشَرٍّ مِّن ذَٰلِكُمُ ۗ ٱلنَّارُ ۖ وَعَدَهَا ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ ۖ وَبِئْسَ ٱلْمَصِيرُ ﴿٧٢﴾

৭২. এবং তাদের নিকট আমার সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ আবৃত্তি করা হলে তুমি কাফিরদের মুখমণ্ডলে অসন্তোষের লক্ষণ দেখবে; যারা তাদের নিকট আমার আয়াত আবৃত্তি করে তাদেরকে তারা আক্রমণ করতে উদ্যত হয়; তুমি বলঃ তবে কি আমি তোমাদেরকে এটা অপেক্ষা মন্দ কিছুর সংবাদ দিবো? এটা আগুন; এ বিষয়ে আল্লাহ প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন

কাফিরদেরকে এবং এটা কত নিকৃষ্ট প্রত্যাবর্তন স্থল!

৭৩. হে লোক সকল! একটি উপমা দেয়া হচ্ছে, মনোযোগ সহকারে তা শ্রবণ কর; তোমরা আল্লাহর পরিবর্তে যাদেরকে ডাকো তারা তো কখনো একটি মাছিও সৃষ্টি করতে পারবে না, এই উদ্দেশ্যে তারা সবাই একত্রিত হলেও; এবং মাছি যদি সব কিছু ছিনিয়ে নিয়ে যায় তাদের নিকট হতে, এটাও তারা ওর নিকট হতে উদ্ধার করতে পারবে না; পূজারী ও দেবতা কতই না দুর্বল!

يَاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَنْ يَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّلَوِ اجْتَمَعُوْا لَهٗ ؕ وَاِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْـًٔا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ مِنْهُ ؕ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوْبُ ﴿٧٣﴾

৭৪. তারা আল্লাহর যথোচিত মর্যাদা উপলব্ধি করে না; আল্লাহ নিশ্চয়ই ক্ষমতাবান, পরাক্রমশালী।

مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٧٤﴾

৭৫. আল্লাহ ফেরেশতাদের মধ্য হতে মনোনীত করেন বাণীবাহক এবং মানুষের মধ্য হতেও; আল্লাহ সর্বশ্রোতা, সম্যক দ্রষ্টা।

اَللّٰهُ يَصْطَفِيْ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّمِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٧٥﴾

৭৬. তাদের সম্মুখে ও পশ্চাতে যা কিছু আছে তিনি তা জানেন এবং সমস্ত বিষয় আল্লাহর নিকট প্রত্যাবর্তিত হবে।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٧٦﴾

৭৭. হে মু'মিনগণ! তোমরা রুকূ' কর, সিজদা কর এবং তোমাদের প্রতিপালকের ইবাদত কর ও সৎকর্ম কর যাতে সফলকাম হতে পার।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَاسْجُدُوْا وَاعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٧٧﴾ السجدة

৭৮. এবং জিহাদ কর আল্লাহর পথে যেভাবে জিহাদ করা উচিত; তিনি তোমাদেরকে মনোনীত করেছেন। তিনি দ্বীনের ব্যাপারে তোমাদের

وَجَاهِدُوْا فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ؕ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ؕ

مِلَّةَ اَبِيْكُمْ اِبْرٰهِيْمَ ؕ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ۙ۬ مِنْ قَبْلُ وَفِيْ هٰذَا لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ ۚۖ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ ؕ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۧ ﴿٧٨﴾

উপর কোন কঠোরতা আরোপ করেন নাই; এটা তোমাদের পিতা ইবরাহীমের (عليه السلام) মিল্লাত; তিনি পূর্বে তোমাদের নামকরণ করেছেন মুসলিম এবং এই কিতাবেও; যাতে রাসূল (ﷺ) তোমাদের জন্যে সাক্ষী স্বরূপ হন এবং তোমরা সাক্ষী স্বরূপ হও মানব জাতির জন্যে; সুতরাং তোমরা নামায কায়েম কর, যাকাত দাও এবং আল্লাহকে অবলম্বন কর; তিনিই তোমাদের অভিভাবক, কত উত্তম অভিভাবক এবং কত উত্তম সাহায্যকারী তিনি!

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ নিঃসন্দেহে ইসলামী জীবন বিধান সহজ, যে কেউ দ্বীনের কাজে বেশি কড়াকড়ি করে, তাকে দ্বীন পরাজিত করে দেয়। কাজেই তোমরা মধ্যম পথ অবলম্বন কর এবং উত্তম কাজের কাছাকাছি হও, রহমতের আশা রাখো। আর সকাল, বিকালে ও রাতের কিছু অংশে (ইবাদতের মাধ্যমে) সাহায্য চাও। (বুখারী, হাদীস নং ৩৯)

সূরাঃ মু'মিনুন, মাক্কী

(আয়াতঃ ১১৮, রুকূ'ঃ ৬)

দয়াময় পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةُ الْمُؤْمِنُوْنَ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ١١٨ رُكُوْعَاتُهَا ٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. অবশ্যই সফলকাম হয়েছে মু'মিনগণ।

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ①

২. যারা বিনয়-নম্র নিজেদের নামাযে।

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ②

৩. যারা অসার ক্রিয়া-কলাপ হতে বিরত থাকে।

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ③

৪. যারা যাকাত দানে সক্রিয়।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ④

৫. যারা নিজেদের যৌন অঙ্গকে সংযত রাখে।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ⑤

৬. নিজেদের পত্নী অথবা অধিকারভুক্ত দাসীগণ ব্যতীত, এতে তারা নিন্দনীয় হবে না।

اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ⑥

৭. সুতরাং কেউ এদেরকে ছাড়া অন্যকে কামনা করলে তারা হবে সীমালঙ্ঘনকারী।

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ⑦

৮. এবং যারা আমানত ও প্রতিশ্রুতি রক্ষা করে।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ⑧

৯. আর যারা নিজেদের নামাযে যত্নবান থাকে।

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ⑨

১০. তারাই হবে উত্তরাধিকারী।

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ⑩

১১. উত্তরাধিকারী হবে ফিরদাউসের, যাতে তারা স্থায়ী হবে।

الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ⑪

১২. আমি তো মানুষকে সৃষ্টি করেছি মৃত্তিকার মূল উপাদান হতে।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ⑫

ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ﴿١٣﴾

১৩. অতঃপর আমি ওকে শুক্রবিন্দু রূপে স্থাপন করি এক নিরাপদ আঁধারে।

ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۗ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ﴿١٤﴾

১৪. পরে আমি শুক্রবিন্দুকে পরিণত করি রক্তপিন্ডে, অতঃপর রক্তপিন্ডকে পরিণত করি গোশ্‌তপিন্ডে এবং গোশ্‌তপিন্ডকে পরিণত করি হাড়সমূহে; অতঃপর হাড়সমূহকে ঢেকে দিই গোশ্‌ত দ্বারা; অবশেষে ওকে গড়ে তুলি অন্য এক সৃষ্টিরূপে; অতএব সর্বোত্তম স্রষ্টা আল্লাহ কত মহান!

ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ﴿١٥﴾

১৫. এরপর তোমরা অবশ্যই মৃত্যুবরণ করবে।

ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ﴿١٦﴾

১৬. অতঃপর কিয়ামতের দিন তোমাদেরকে পুনরুত্থিত করা হবে।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ ۖ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ﴿١٧﴾

১৭. আমি তো তোমাদের উর্ধ্বে সৃষ্টি করেছি সপ্ত স্তর আকাশ এবং আমি সৃষ্টি বিষয়ে অসতর্ক নই।

وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ فِي الْاَرْضِ ۖ وَاِنَّا عَلٰى ذَهَابٍۭ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ﴿١٨﴾

১৮. এবং আমি আকাশ হতে পানি বর্ষণ করি পরিমিতভাবে, অতঃপর আমি তা মাটিতে সংরক্ষিত করি; আমি ওকে অপসারিত করতেও সক্ষম।

فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ ۙ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿١٩﴾

১৯. অতঃপর আমি ওটা দ্বারা তোমাদের জন্যে খেজুর ও আঙ্গুরের বাগান সৃষ্টি করি; এতে তোমাদের জন্যে আছে প্রচুর ফল; আর তা হতে তোমরা আহার করে থাক।

وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ ﴿٢٠﴾

২০. এবং সৃষ্টি করি এক বৃক্ষ যা জন্মে সিনাই পর্বতে, এতে উৎপন্ন হয় ভোজনকারীদের জন্যে যাইতূন তৈল ও রুচিকর তরকারী।

وَاِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّ مِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٢١﴾

২১. আর তোমাদের জন্যে অবশ্যই শিক্ষনীয় বিষয় আছে চতুষ্পদ জন্তুর মধ্যে; তোমাদেরকে আমি পান করাই ওগুলোর উদরে যা আছে তা হতে এবং তাতে তোমাদের জন্যে রয়েছে প্রচুর উপকারিতা; তোমরা তা হতে ভক্ষণ করে থাক।

وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾

২২. এবং তোমরা তাতে ও নৌযানে আরোহণও করে থাক।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. আমি নূহ (عليه السلام)-কে পাঠিয়েছিলাম তার সম্প্রদায়ের নিকট, তিনি বলেছিলেনঃ হে আমার সম্প্রদায়! আল্লাহর ইবাদত কর, তিনি ছাড়া তোমাদের অন্য কোন সত্য মা'বূদ নেই, তবুও কি তোমরা সাবধান হবে না?

فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يُرِيْدُ اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً ۚ مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٤﴾

২৪. তার সম্প্রদায়ের প্রধানগণ, যারা কুফরী করেছিল, তারা বললোঃ এতো তোমাদের মত একজন মানুষ, তোমাদের উপর শ্রেষ্ঠত্ব লাভ করতে চাচ্ছে, আল্লাহ ইচ্ছা করলে ফেরেশতাই পাঠাতেন; আমাদের পূর্বপুরুষদের কালে এরূপ ঘটেছে, এ কথা আমরা তো শুনিনি।

اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلٌ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٢٥﴾

২৫. সে তো এমন লোক যাকে উন্মত্ততা পেয়ে বসেছে; সুতরাং এর সম্পর্কে তোমরা কিছুকাল অপেক্ষা কর।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٢٦﴾

২৬. (নূহ عليه السلام) বলেছিলেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমাকে সাহায্য করুন, কারণ তারা আমাকে মিথ্যাবাদী বলছে।

فَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا

২৭. অতঃপর আমি তার কাছে ওহী নাযিল করলামঃ তুমি আমার চোখের

وَوَحْيِنَا فَإِذَا جَآءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ فَاسْلُكْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۚ وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ إِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٧﴾

সামনে ও আমার ওহী অনুযায়ী নৌযান নির্মাণ কর, অতঃপর যখন আমার আদেশ আসবে ও উনুন উথলিয়ে উঠবে তখন উঠিয়ে নিয়ো প্রত্যেক জীবের এক এক জোড়া এবং তোমার পরিবার-পরিজনকে, তাদের মধ্যে যাদের বিরুদ্ধ পূর্বে সিদ্ধান্ত হয়েছে তাদের সম্পর্কে তুমি আমাকে কিছু বলো না, আর যারা যুলুম করেছে তাদের ব্যাপারে। তারা তো নিমজ্জিত হবে।

فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ نَجّٰنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٨﴾

২৮. যখন তুমি ও তোমার সঙ্গীরা নৌযানে আরোহণ করবে তখন বলোঃ "আলহামদু লিল্লাহ" সমস্ত প্রশংসা আল্লাহরই যিনি আমাদেরকে উদ্ধার করেছেন যালিম সম্প্রদায় হতে।

وَقُلْ رَّبِّ أَنْزِلْنِيْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّ أَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ﴿٢٩﴾

২৯. আরো বলোঃ হে আমার প্রতিপালক! আমাকে এমনভাবে অবতরণ করিয়ে নিন যা হবে কল্যাণকর; আর আপনিই শ্রেষ্ঠ অবতরণকারী।

إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّإِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِيْنَ ﴿٣٠﴾

৩০. এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে; আমি তো তাদেরকে পরীক্ষা করেছিলাম।

ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٣١﴾

৩১. অতঃপর তাদের পর আমি অন্য এক সম্প্রদায় সৃষ্টি করেছিলাম।

فَأَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ أَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣٢﴾

৩২. এরপর তাদেরই একজনকে তাদের নিকট রাসূল করে পাঠিয়েছিলাম; তিনি বলেছিলেনঃ তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর, তিনি ছাড়া তোমাদের অন্য কোন সত্য মা'বূদ নেই, তবুও কি তোমরা সাবধান হবে না?

وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَاَتْرَفْنٰهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَاْكُلُ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ﴿٣٣﴾

৩৩. তার সম্প্রদায়ের প্রধানগণ, যারা কুফরী করেছিল ও আখিরাতের সাক্ষাৎকে অস্বীকার করেছিল এবং যাদেরকে আমি দিয়েছিলাম পার্থিব জীবনে প্রচুর ভোগ-সম্ভার, তারা বলেছিলঃ এতো তোমাদের মত একজন মানুষ; তোমরা যা আহার কর সে তো তা-ই আহার করে এবং তোমরা যা পান কর সেও তাই পান করে।

وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ ۙ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٣٤﴾

৩৪. যদি তোমরা তোমাদেরই মত একজন মানুষের আনুগত্য কর তবে তোমরা অবশ্যই ক্ষতিগ্রস্ত হবে।

اَيَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ﴿٣٥﴾

৩৫. সে কি তোমাদেরকে এই প্রতিশ্রুতিই দেয় যে, তোমাদের মৃত্যু হলে এবং তোমরা মৃত্তিকা ও হাড্ডিতে পরিণত হলেও তোমাদেরকে পুনরুত্থিত করা হবে?

هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٦﴾

৩৬. অসম্ভব, তোমাদেরকে যে বিষয়ে প্রতিশ্রুতি দেয়া হয়েছে তা অসম্ভব।

اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٣٧﴾

৩৭. একমাত্র পার্থিব জীবনই আমাদের জীবন, আমরা মরি ও বাঁচি এখানেই এবং আমরা পুনরুত্থিত হবো না?

اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلٌ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٨﴾

৩৮. সে তো এমন ব্যক্তি যে আল্লাহ সম্বন্ধে মিথ্যা উদ্ভাবন করেছে এবং আমরা তাকে বিশ্বাস করবার নই।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٣٩﴾

৩৯. সে বললোঃ হে আমার প্রতিপালক! আমাকে সাহায্য করুন; কারণ, তারা আমাকে মিথ্যাবাদী বলে।

قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ ﴿٤٠﴾

৪০. (আল্লাহ) বললেনঃ অচিরেই তারা অনুতপ্ত হবে।

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾

৪১. অতঃপর সত্যসত্যই এক বিকট শব্দ তাদেরকে আঘাত করলো এবং আমি তাদেরকে তরঙ্গ তাড়িত আবর্জনা সদৃশ করে দিলাম; সুতরাং ধ্বংস হয়ে গেল যালিম সম্প্রদায়।

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٤٢﴾

৪২. অতঃপর তাদের পরে আমি বহু জাতি সৃষ্টি করেছি।

مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿٤٣﴾

৪৩. কোন জাতিই তার নির্ধারিত কালের আগে যেতে পারে না, বিলম্বিতও করতে পারে না।

ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرٰا ؕ كُلَّمَا جَآءَ اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَّجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٤٤﴾

৪৪. অতঃপর আমি ধারাবাহিকভাবে আমার রাসূলগণকে প্রেরণ করেছি; যখনই কোন জাতির নিকট তাঁর রাসূল এসেছেন, তারা তাঁকে মিথ্যাবাদী বলেছে; অতঃপর আমি তাদের একের পর এক ধ্বংস করলাম, আমি তাদেরকে কাহিনীর বিষয় করেছি; সুতরাং ধ্বংস হোক অবিশ্বাসীরা!

ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٥﴾

৪৫. অতঃপর আমি আমার নিদর্শন ও সুস্পষ্ট প্রমাণসহ মূসা (عليه السلام) ও তার ভ্রাতা হারূন (عليه السلام) - কে পাঠালাম;

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا عَالِيْنَ ﴿٤٦﴾

৪৬. ফিরআ'উন ও তার পারিষদ-বর্গের নিকট; কিন্তু তারা অহংকার করলো; তারা ছিল উদ্ধত সম্প্রদায়।

فَقَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ ﴿٤٧﴾

৪৭. তারা বললোঃ আমরা কি এমন দু'ব্যক্তিতে বিশ্বাস স্থাপন করবো? যারা আমাদেরই মত এবং তাদের সম্প্রদায় আমাদের দাসত্ব করে।

فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ﴿٤٨﴾

৪৮. অতঃপর তারা তাদেরকে মিথ্যাবাদী বললো, ফলে তারা ধ্বংসপ্রাপ্ত হলো।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾

৪৯. আমি মূসা (عليه السلام)-কে কিতাব দিয়েছিলাম যাতে তারা সৎপথ পায়।

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗۤ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَاۤ اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ﴿٥٠﴾

৫০. এবং আমি মারইয়াম পুত্র ও তার মাতাকে করেছিলাম এক নিদর্শন, তাদেরকে আশ্রয় দিয়েছিলাম এক নিরাপদ ও প্রস্রবণ (ঝর্ণা) বিশিষ্ট উচ্চ ভূমিতে।

يٰۤاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٥١﴾

৫১. হে রাসূলগণ! তোমরা পবিত্র বস্তু হতে আহার কর ও সৎকর্ম কর; তোমরা যা কর সে সম্বন্ধে আমি অবগত।

وَاِنَّ هٰذِهٖۤ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ﴿٥٢﴾

৫২. এবং তোমাদের এই জাতি একই জাতি এবং আমিই তোমাদের প্রতিপালক; অতএব তোমরা আমাকে ভয় কর।

فَتَقَطَّعُوْۤا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿٥٣﴾

৫৩. কিন্তু তারা নিজেদের মধ্যে তাদের দ্বীনকে বহুভাগে বিভক্ত করেছে; প্রত্যেক দলই তাদের নিকট যা আছে তা নিয়েই আনন্দিত।

فَذَرْهُمْ فِيْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٥٤﴾

৫৪. সুতরাং কিছুকাল তাদেরকে স্বীয় বিভ্রান্তিতে থাকতে দাও।

اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ ﴿٥٥﴾

৫৫. তারা কি মনে করে যে, আমি তাদেরকে সাহায্য করি ধন-সম্পদ ও সন্তান-সন্ততি দ্বারা।

نُسَارِعُ لَهُمْ فِي الْخَيْرٰتِ ؕ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٦﴾

৫৬. আমি তাদের জন্যে সর্বপ্রকার মঙ্গল ত্বরান্বিত করছি? বরং তারা বোঝে না।

اِنَّ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿٥٧﴾

৫৭. নিঃসন্দেহে যারা তাদের প্রতিপালকের ভয়ে সন্ত্রস্ত।

وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٨﴾

৫৮. আর যারা তাদের প্রতিপালকের নিদর্শনাবলীতে ঈমান আনে,

وَالَّذِيْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٩﴾

৫৯. আর যারা তাদের প্রতিপালকের সাথে শরীক করে না।

وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا وَّ قُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ﴿٦٠﴾

৬০. আর যারা তাদের যা দান করবার তা দান করে এমতাবস্থায় তাদের অন্তর ভীত-কম্পিত। এজন্য যে তারা তাঁদের প্রতিপালকের নিকট ফিরে যাবে।

اُولٰٓئِكَ يُسٰرِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ ﴿٦١﴾

৬১. তারাই দ্রুত সম্পাদন করে কল্যাণকর কাজ এবং তারা তার প্রতি অগ্রগামী হয়।

وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتٰبٌ يَّنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٢﴾

৬২. আমি কাউকেও তার সাধ্যতীত দায়িত্ব অর্পণ করি না এবং আমার নিকট আছে এক কিতাব যা সত্য ব্যক্ত করে এবং তাদের প্রতি যুলুম করা হবে না।

بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِىْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا وَلَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ ﴿٦٣﴾

৬৩. বরং এই বিষয়ে তাদের অন্তর অজ্ঞানতায় আচ্ছন্ন, এতদ্ব্যতীত আরো (মন্দ) কাজ আছে যা তারা করে থাকে।

حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْـَٔرُوْنَ ﴿٦٤﴾

৬৪. আর আমি যখন তাদের ঐশ্বর্যশালী ব্যক্তিদেরকে শাস্তি দ্বারা ধৃত করি তখনই তারা আর্তনাদ করে উঠে।

لَا تَجْـَٔرُوا الْيَوْمَ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٦٥﴾

৬৫. আজ আর্তনাদ করো না, তোমরা আমার সাহায্য পাবে না।

قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِىْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ﴿٦٦﴾

৬৬. আমার আয়াত তোমাদের কাছে আবৃত্তি করা হতো; কিন্তু তোমরা পিছন ফিরে সরে পড়তে।

مُسْتَكْبِرِيْنَ ۚ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ﴿٦٧﴾

৬৭. এর প্রতি (ঈমান না আনয়ন করে) দম্ভভরে অর্থহীন গল্প-গুজব করতে।

اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾

৬৮. তবে কি তারা এই বাণী অনুধাবণ করে না? অথবা তাদের নিকট কি এমন কিছু এসেছে যা তাদের পূর্বপুরুষদের নিকট আসেনি?

أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا رَسُولَهُمْ فَهُمْ لَهُ مُنْكِرُونَ ﴿٦٩﴾

৬৯. অথবা তারা কি তাদের রাসূলকে চিনে না, ফলে তারা অস্বীকার করে?

أَمْ يَقُولُونَ بِهِ جِنَّةٌ ۚ بَلْ جَاءَهُمْ بِالْحَقِّ وَأَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كَارِهُونَ ﴿٧٠﴾

৭০. অথবা তারা কি বলে যে, সে উন্মাদ? বস্তুতঃ তিনি তাদের নিকট সত্য এনেছেন এবং তাদের অধিকাংশ সত্যকে অপছন্দ করে।

وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ أَهْوَاءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۚ بَلْ أَتَيْنَاهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُعْرِضُونَ ﴿٧١﴾

৭১. সত্য যদি তাদের কামনা-বাসনার অনুগামী হতো তবে বিশৃঙ্খল হয়ে পড়তো আকাশমন্ডলী, পৃথিবী এবং ওদের মধ্যবর্তী সবকিছুই; পক্ষন্তরে আমি তাদেরকে দিয়েছি উপদেশ; কিন্তু তারা উপদেশ হতে মুখ ফিরিয়ে নেয়।

أَمْ تَسْأَلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٧٢﴾

৭২. অথবা তুমি কি তাদের কাছে কোন প্রতিদান চাও? তোমার প্রতিপালকের প্রতিদানই শ্রেষ্ঠ এবং তিনিই শ্রেষ্ঠ রিযিকদাতা।

وَإِنَّكَ لَتَدْعُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٧٣﴾

৭৩. অবশ্যই তুমি তো তাদেরকে সরল পথে আহ্বান করছো।

وَإِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنَاكِبُونَ ﴿٧٤﴾

৭৪. যারা আখিরাতে বিশ্বাস করে না তারা তো সরল পথ হতে বিচ্যুত।

وَلَوْ رَحِمْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِنْ ضُرٍّ لَلَجُّوا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿٧٥﴾

৭৫. আমি তাদের উপর দয়া করলেও এবং তাদের দুঃখ-দৈন্য দূর করলেও তারা অবাধ্যতায় বিভ্রান্তের ন্যায় ঘুরতে থাকবে।

وَلَقَدْ أَخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُونَ ﴿٧٦﴾

৭৬. আমি তাদেরকে শাস্তি দ্বারা ধৃত করলাম; কিন্তু তারা তাদের প্রতিপালকের প্রতি বিনয়ী হলো না এবং কাতর প্রার্থনাও করে না।

حَتَّىٰ إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيدٍ إِذَا هُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ﴿٧٧﴾

৭৭. অবশেষে যখন আমি তাদের জন্যে কঠিন শাস্তির দ্বার খুলে দেই তখন তারা হতাশ হয়ে পড়ে।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾

৭৮. তিনিই তোমাদের জন্যে কর্ণ, চক্ষু ও অন্তঃকরণ সৃষ্টি করেছেন; তোমরা অল্পই কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে থাকো।

وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٩﴾

৭৯. তিনিই তোমাদেরকে পৃথিবীতে বিস্তৃত করেছেন এবং তোমাদেরকে তাঁরই নিকট একত্রিত করা হবে।

وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٨٠﴾

৮০. তিনিই জীবন দান করেন এবং মৃত্যু ঘটান, আর তাঁরই অধিকারে রাত্রি ও দিবসের পরিবর্তন, তবুও কি তোমরা বুঝবে না?

بَلْ قَالُوْا مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿٨١﴾

৮১. এতদসত্ত্বেও তারা বলে, যেমন বলেছিল পূর্ববর্তীগণ।

قَالُوْٓا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٨٢﴾

৮২. তারা বলেঃ আমাদের মৃত্যু ঘটলে এবং আমরা মাটি ও হাড্ডিতে পরিণত হলেও কি আমরা পুনরুত্থিত হবো?

لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨٣﴾

৮৩. আমাদেরকে এ বিষয়েই প্রতিশ্রুতি প্রদান করা হয়েছে এবং অতীতে আমাদের পূর্বপুরুষদেরকেও এটা কালের উপকথা ব্যতীত আর কিছুই নয়।

قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٤﴾

৮৪. জিজ্ঞেস করঃ এই পৃথিবী এবং এতে যা আছে তা কার, যদি তোমরা জানো?

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٥﴾

৮৫. তারা ত্বরিৎ বলবেঃ আল্লাহর; বলঃ তবুও কি তোমরা শিক্ষা গ্রহণ করবে না?

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٨٦﴾

৮৬. জিজ্ঞেস করঃ কে সপ্তাকাশ ও মহা আরশের অধিপতি?

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٨٧﴾

৮৭. তারা বলবেঃ আল্লাহ; বলঃ তবুও কি তোমরা সাবধান হবে না।

قُلْ مَنْۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٨﴾

৮৮. জিজ্ঞেস করঃ সব কিছুর কর্তৃত্ব কার হাতে, যিনি আশ্রয় দান করেন এবং যাঁর উপর আশ্রয়দাতা নেই, যদি তোমরা জানো?

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ﴿٨٩﴾

৮৯. তারা বলবেঃ আল্লাহর; বলঃ তবুও তোমরা কেমন করে বিভ্রান্ত হচ্ছ?

بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٩٠﴾

৯০. বরং আমি তাদের নিকট সত্য পৌঁছিয়েছি; কিন্তু নিশ্চয়ই তারা মিথ্যাবাদী।

مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ ۚ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۭ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٩١﴾

৯১. আল্লাহ কোন সন্তান গ্রহণ করেননি এবং তাঁর সাথে অপর কোন মা'বূদ নেই; যদি থাকতো তবে প্রত্যেক মা'বূদ স্বীয় সৃষ্টি নিয়ে পৃথক হয়ে যেতো এবং একে অপরের উপর প্রাধান্য বিস্তার করতো; তারা যা বলে তা হতে আল্লাহ সম্পূর্ণ পবিত্র!

عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٩٢﴾

৯২. তিনি দৃশ্য ও অদৃশ্যের পরিজ্ঞাতা, তারা যাকে শরীক করে তিনি তার উর্ধে।

قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ﴿٩٣﴾

৯৩. বলঃ হে আমার প্রতিপালক! যে বিষয়ে তাদেরকে প্রতিশ্রুতি প্রদান করা হচ্ছে, তা যদি আপনি আমাকে দেখাতেন।

رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِي الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٤﴾

৯৪. তবে, হে আমার প্রতিপালক! আপনি আমাকে যালিম সম্প্রদায়ের অন্তর্ভুক্ত করবেন না।

وَاِنَّا عَلٰٓى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ﴿٩٥﴾

৯৫. আমি তাদেরকে যে বিষয়ে প্রতিশ্রুতি প্রদান করছি আমি তা তোমাকে দেখাতে অবশ্যই সক্ষম।

اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ؕ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ ﴿٩٦﴾

৯৬. মন্দের মোকাবেলা কর, যা উত্তম তা দ্বারা; তারা যা বলে আমি সে সম্বন্ধে সবিশেষ অবহিত।

وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٩٧﴾

৯৭. আর বলঃ হে আমার প্রতিপালক! আমি আপনার আশ্রয় প্রার্থনা করি শয়তানের প্ররোচনা হতে।

وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ﴿٩٨﴾

৯৮. হে আমার প্রতিপালক! আমি আপনার আশ্রয় প্রার্থনা করি আমার নিকট ওদের (শয়তানদের) উপস্থিতি হতে।

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿٩٩﴾

৯৯. যখন তাদের কারো মৃত্যু উপস্থিত হয় তখন সে বলেঃ হে আমার প্রতিপালক! আমাকে পুনরায় ফেরত পাঠান।

لَعَلِّيْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ؕ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٠٠﴾

১০০. যাতে আমি সৎকর্ম করতে পারি যা আমি পূর্বে করিনি; না এটা হবার নয়; এটা তার একটা উক্তি মাত্র; তাদের সামনে বারযাখ থাকবে পুনরুত্থান দিবস পর্যন্ত।

فَاِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿١٠١﴾

১০১. এবং যেদিন শিংগায় ফুৎকার দেয়া হবে সেদিন পরস্পরের মধ্যে আত্মীয়তার বন্ধন থাকবে না, এবং একে অপরের খোঁজ-খবর নিবে না।

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٢﴾

১০২. সুতরাং যাদের পাল্লা ভারী হবে তারাই হবে সফলকাম।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فِيْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٣﴾

১০৩. আর যাদের পাল্লা হালকা হবে তারাই নিজেদের ক্ষতি করেছে; তারা জাহান্নামে স্থায়ী হবে।

تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ ﴿١٠٤﴾

১০৪. অগ্নি তাদের মুখমন্ডল দগ্ধ করবে এবং তারা তথায় থাকবে বীভৎস চেহারায়।

اَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٠٥﴾

১০৫. তোমাদের নিকট কি আমার আয়াতসমূহ আবৃত্তি করা হতো না? অথচ তোমরা ওগুলো অস্বীকার করতে!

قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّيْنَ ﴿١٠٦﴾

১০৬. তারা বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! দুর্ভাগ্য আমাদেরকে পেয়ে বসেছিল এবং আমরা ছিলাম এক বিভ্রান্ত সম্প্রদায়।

رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا مِنْهَا فَاِنْ عُدْنَا فَاِنَّا ظٰلِمُوْنَ ﴿١٠٧﴾

১০৭. হে আমাদের প্রতিপালক! এই অগ্নি হতে আমাদেরকে উদ্ধার করুন; অতঃপর আমরা যদি পুনরায় কুফরী করি তবে তো আমরা অবশ্যই সীমালঙ্ঘনকারী হবো।

قَالَ اخْسَـُٔوْا فِيْهَا وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ﴿١٠٨﴾

১০৮. (আল্লাহ) বলবেনঃ তোমরা হীন অবস্থায় এখানেই থাক এবং আমার সাথে কোন কথা বলো না।

اِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِيْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾

১০৯. আমার বান্দাদের মধ্যে একদল ছিল যারা বলতোঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা ঈমান এনেছি, সুতরাং আপনি আমাদেরকে ক্ষমা করে দিন ও আমাদের উপর দয়া করুন, আপনি দয়ালুদের মধ্যে শ্রেষ্ঠ দয়ালু।

فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا حَتّٰٓى اَنْسَوْكُمْ ذِكْرِيْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ ﴿١١٠﴾

১১০. কিন্তু তাদেরকে নিয়ে তোমরা এতো ঠাট্টা-বিদ্রূপ করতে যে, তা তোমাদেরকে আমার কথা ভুলিয়ে দিয়েছিল; তোমরা তো তাদেরকে নিয়ে হাসি-ঠাট্টাই করতে।

اِنِّيْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوْٓا ۙ اَنَّهُمْ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿١١١﴾

১১১. আমি আজ তাদেরকে তাদের ধৈর্যের কারণে এমনভাবে পুরস্কৃত করলাম যে, তারাই হলো সফলকাম।

قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ ﴿١١٢﴾

১১২. তিনি বলবেনঃ তোমরা পৃথিবীতে কত বছর অবস্থান করেছিলে?

قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْـَٔلِ الْعَآدِّيْنَ ﴿١١٣﴾

১১৩. তারা বলবেঃ আমরা অবস্থান করেছিলাম একদিন অথবা একদিনের কিছু অংশ, আপনি না হয় গণনাকারীদেরকে জিজ্ঞেস করুন!

قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١١٤﴾

১১৪. তিনি বলবেনঃ তোমরা অল্পকালই অবস্থান করেছিলে, যদি তোমরা জানতে।

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿١١٥﴾

১১৫. তোমরা কি মনে করেছিলে যে, আমি তোমাদেরকে অনর্থক সৃষ্টি করেছি এবং তোমরা আমার নিকট প্রত্যাবর্তিত হবে না?

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿١١٦﴾

১১৬. মহিমান্বিত আল্লাহ যিনি প্রকৃত মালিক, তিনি ব্যতীত কোন সত্য মা'বূদ নেই; সম্মানিত আরশের তিনি অধিপতি।

وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١١٧﴾

১১৭. যে ব্যক্তি আল্লাহর সাথে ডাকে অন্য ইলাহকে, ঐ বিষয়ে তার নিকট কোন প্রমাণ নেই; তার হিসাব তার প্রতিপালকের নিকট আছে, নিশ্চয়ই কাফিররা সফলকাম হবে না।

وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١١٨﴾

১১৮. বলঃ হে আমার প্রতিপালক! ক্ষমা করুন ও দয়া করুন, দয়ালুদের মধ্যে আপনিই দয়ালু।

سُوْرَةُ النُّوْرِ مَدَنِيَّةٌ

সূরাঃ নূর, মাদানী

اٰيَاتُهَا ٦٤ رُكُوْعَاتُهَا ٩

(আয়াতঃ ৬৪, রুকূ'ঃ ৯)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَآ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿١﴾

১. (এটি) একটি সূরা, যা আমি অবতীর্ণ করেছি এবং (এর বিধানকে) অবশ্য পালনীয় করেছি, এতে আমি অবতীর্ণ করেছি সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ যাতে তোমরা উপদেশ গ্রহণ কর।

اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۖ وَّلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾

২. (অবিবাহিত) ব্যভিচারিণী ও ব্যভিচারী তাদের প্রত্যেককে একশ বেত্রাঘাত করবে, আল্লাহর বিধান কার্যকরীকরণে তাদের প্রতি দয়া যেন তোমাদেরকে প্রভাবিত না করে, যদি তোমরা আল্লাহ এবং পরকালে বিশ্বাসী হও; আর মু'মিনদের একটি দল যেন তাদের শাস্তি প্রত্যক্ষ করে।[১]

اَلزَّانِيْ لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً ۫ وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ اِلَّا زَانٍ اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾

৩. ব্যভিচারী ব্যভিচারিণী অথবা মুশরিক নারীকে ব্যতীত বিয়ে করে না এবং ব্যভিচারিণী তাকে ব্যভিচারী অথবা মুশরিক ব্যতীত কেউ বিয়ে করে না, মু'মিনদের জন্যে এটা হারাম করা হয়েছে।

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٤﴾

৪. যারা সতী-সাধ্বী রমনীর প্রতি অপবাদ আরোপ করে এবং চারজন সাক্ষী হাজির করে না. তাদেরকে আশিটি বেত্রাঘাত করবে এবং কখনো তাদের সাক্ষ্য গ্রহণ করবে না; তারাই তো সত্য-ত্যাগী।

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥﴾

৫. তবে যদি এরপর তারা তাওবা করে ও নিজেদেরকে সংশোধন করে- আল্লাহ তো ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ

৬. এবং যারা নিজেদের স্ত্রীর প্রতি অপবাদ আরোপ করে অথচ নিজেরা ব্যতীত তাদের কোন সাক্ষী নেই,

১। (ক) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) অবিবাহিত যুবক ও যুবতীর যেনা করার জন্য তাদের ওপর শাস্তি স্বরূপ এক বছরের জন্য দেশান্তর করার জন্য নির্দেশ করেছেন। (বুখারী, হাদীস নং ৬৮৩৩)

(খ) জাবের ইবনে আব্দুল্লাহ্ আল-আনসারী (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আসলাম গোত্রীয় জনৈক ব্যক্তি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট এসে বললো, সে যেনা করেছে, (এবং এর প্রমাণ স্বরূপ) নিজ দেহের ওপর চারবার সাক্ষ্যও প্রদান করলো। তার কথা শুনে রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) শাস্তির নির্দেশ করলেন। অতপর তাকে (রজম) পাথর মেরে হত্যা করা হলো। বস্তুতঃ সে ছিলো একজন বিবাহিত লোক। (বুখারী, হাদীস নং ৬৮১৪)

إِنَّهُ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ⑥

তাদের প্রত্যেকের সাক্ষ্য এই হবে যে, সে আল্লাহর নামে চারবার শপথ করে বলবে যে, সে অবশ্যই সত্যবাদী।

وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ⑦

৭. আর পঞ্চমবারে বলবে যে, সে যদি মিথ্যাবাদী হয় তবে তার উপর নেমে আসবে আল্লাহর লা'নত।

وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ⑧

৮. তবে স্ত্রীর শাস্তি রহিত হবে যদি সে চারবার আল্লাহর নামে শপথ করে সাক্ষ্য দেয় যে তার স্বামীই মিথ্যাবাদী।

وَالْخَامِسَةَ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَآ اِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ⑨

৯. আর পঞ্চমবারে বলে যে, তার স্বামী সত্যবাদী হলে তার নিজের উপর নেমে আসবে আল্লাহর গযব।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ⑩

১০. তোমাদের প্রতি আল্লাহর অনুগ্রহ ও দয়া না থাকলে তোমাদের কেউই অব্যাহতি পেতো না এবং আল্লাহ তাওবা গ্রহণকারী ও প্রজ্ঞাময়।

اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ؕ لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ؕ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْاِثْمِ ۚ وَالَّذِيْ تَوَلّٰى كِبْرَهٗ مِنْهُمْ لَهٗ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ⑪

১১. যারা এই অপবাদ রচনা করেছে তারা তোমাদেরই একটি দল; এটাকে তোমরা (হে মু'মিনগণ) তোমাদের জন্যে অনিষ্টকর মনে করো না; বরং এটা তোমাদের জন্যে কল্যাণকর; তাদের প্রত্যেকের জন্যে আছে তাদের কৃত পাপকর্মের ফল এবং তাদের মধ্যে যে এই ব্যাপারে প্রধান ভূমিকা গ্রহণ করেছে, তার জন্যে আছে কঠিন শাস্তি।

لَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ خَيْرًا ۙ وَّقَالُوْا هٰذَآ اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ⑫

১২. যখন তোমরা একথা শুনলে, তখন মু'মিন পুরুষ এবং নারীগণ কেন নিজেদের বিষয়ে সৎ ধারণা

করেনি এবং বলেনিঃ এটা সুস্পষ্ট অপবাদ।[১]

لَوْلَا جَآءُوْ عَلَيْهِ بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ يَاْتُوْا بِالشُّهَدَآءِ فَاُولٰٓئِكَ عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٣﴾

১৩. তারা কেন এই ব্যাপারে চারজন সাক্ষী হাজির করেনি? যেহেতু তারা সাক্ষী হাজির করেনি, সে কারণে তারা আল্লাহর বিধানে মিথ্যাবাদী।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِىْ مَآ اَفَضْتُمْ فِيْهِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٤﴾

১৪. দুনিয়াও আখিরাতে তোমাদের প্রতি আল্লাহর অনুগ্রহ ও দয়া না থাকলে, তোমরা যাতে লিপ্ত ছিলে তার জন্য কঠিন শাস্তি তোমাদেরকে স্পর্শ করতো।

اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّتَحْسَبُوْنَهٗ هَيِّنًا ۖ وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ﴿١٥﴾

১৫. যখন তোমরা মুখে মুখে এটা ছড়াচ্ছিলে এবং এমন বিষয় মুখে উচ্চারণ করছিলে যার কোন জ্ঞান তোমাদের ছিল না এবং তোমরা একে তুচ্ছ গণ্য করেছিলে, যদিও আল্লাহর নিকট ছিল এটা গুরুতর বিষয়।

وَلَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۖ سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ﴿١٦﴾

১৬. এবং তোমরা যখন এটা শ্রবণ করলে তখন কেন বললে না, এ বিষয়ে বলাবলি করা আমাদের উচিত নয়; আল্লাহ পবিত্র, মহান! এটা তো এক গুরুতর অপবাদ!

يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖٓ اَبَدًا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧﴾

১৭. আল্লাহ তোমাদেরকে উপদেশ দিচ্ছেন, তোমরা যদি মু'মিন হও, তবে কখনো অনুরূপ আচরণের পুনরাবৃত্তি করবে না।

وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٨﴾

১৮. আল্লাহ তোমাদের জন্যে তাঁর আয়াতসমূহ সুস্পষ্টভাবে বিবৃত করেন এবং আল্লাহ সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাময়।

১। আয়েশা সিদ্দীকা (রাযিআল্লাহু আনহা)-এর প্রতি ইফ্ক বা মিথ্যা দোষারোপের ঘটনা দেখুন। (বুখারী, হাদীস নং ৪৭৫০)

إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ
آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَاللَّهُ
يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٩﴾

১৯. যারা মু'মিনদের মধ্যে অশ্লীলতার প্রসার কামনা করে তাদের জন্যে আছে দুনিয়া ও আখিরাতে পীড়াদায়ক শাস্তি এবং আল্লাহ জানেন, তোমরা জান না।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ
رَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿٢٠﴾

২০. তোমাদের প্রতি আল্লাহর অনুগ্রহ ও দয়া না থাকলে তোমাদের কেউই অব্যাহতি পেতো না এবং আল্লাহ দয়ার্দ্র ও পরম দয়ালু।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ
وَمَنْ يَتَّبِعْ خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ
وَالْمُنْكَرِ ۚ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ
مَا زَكَىٰ مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ أَبَدًا وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يُزَكِّي
مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢١﴾

২১. হে মু'মিনগণ! তোমরা শয়তানের পদাঙ্ক অনুসরণ করো না; কেউ শয়তানের পদাঙ্ক অনুসরণ করলে সে অশ্লীলতা ও মন্দ কাজের নির্দেশ দেবে, আল্লাহর দয়া ও অনুগ্রহ না থাকলে তোমাদের কেউই কখনো পবিত্র হতে পারতো না, তবে আল্লাহ যাকে ইচ্ছা পবিত্র করে থাকেন এবং আল্লাহ সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

وَلَا يَأْتَلِ أُولُو الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ يُؤْتُوا
أُولِي الْقُرْبَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ
وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا ۗ أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ۗ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٢﴾

২২. তোমাদের মধ্যে যারা ঐশ্বর্য ও প্রাচুর্যের অধিকারী তারা যেন শপথ গ্রহণ না করে যে, তারা আত্মীয়-স্বজন ও অভাবগ্রস্তদেরকে এবং আল্লাহর পথে যারা গৃহ ত্যাগ করেছে তাদেরকে কিছুই দিবে না; তারা যেন তাদেরকে ক্ষমা করে তাদের দোষ-ত্রুটি উপেক্ষা করে; তোমরা কি চাও না যে, আল্লাহ তোমাদেরকে ক্ষমা করেন? এবং আল্লাহ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ
لُعِنُوا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٢٣﴾

২৩. যারা সাধবী, সরলমনা ও বিশ্বাসী নারীর প্রতি (যিনার) অপবাদ আরোপ করে তারা দুনিয়া ও

আখিরাতে অভিশপ্ত এবং তাদের জন্যে আছে মহাশাস্তি।

২৪. যেদিন তাদের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য দিবে তাদের জবান, তাদের হাত ও তাদের পা তাদের কৃতকর্ম সম্বন্ধে।

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ وَاَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾

২৫. সেদিন আল্লাহ তাদের প্রাপ্য প্রতিফল পুরোপুরি দিবেন এবং তারা জানবে যে, আল্লাহই সত্য, স্পষ্টকারী।

يَوْمَئِذٍ يُّوَفِّيْهِمُ اللّٰهُ دِيْنَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ﴿٢٥﴾

২৬. দুশ্চরিত্র নারী দুশ্চরিত্র পুরুষের জন্যে; দুশ্চরিত্র পুরুষ দুশ্চরিত্র নারীর জন্যে; সুচরিত্র নারী সুচরিত্র পুরুষের জন্যে এবং সুচরিত্র পুরুষ সুচরিত্র নারীর জন্যে; লোকে যা বলে এরা তা থেকে পবিত্র; এদের জন্যে আছে ক্ষমা এবং সম্মানজনক রুযী।

اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَالْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ ۚ اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٦﴾

২৭. হে মু'মিনগণ! তোমরা নিজেদের গৃহ ব্যতীত অন্য কারো গৃহে গৃহবাসীদের অনুমতি না নিয়ে এবং তাদেরকে সালাম না করে প্রবেশ করো না; এটাই তোমাদের জন্যে শ্রেয়, সম্ভবত তোমরা উপদেশ গ্রহণ করবে।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَهْلِهَا ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾

২৮. যদি তোমরা গৃহে কাউকেও না পাও তাহলে তাতে প্রবেশ করবে না যতক্ষণ না তোমাদেরকে অনুমতি দেয়া হয়; যদি তোমাদেরকে বলা হয়ঃ ফিরে যাও, তবে তোমরা ফিরে যাবে, এটাই তোমাদের জন্যে উত্তম এবং তোমরা যা কর সে সম্বন্ধে আল্লাহ অবহিত।

فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَآ اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ قِيْلَ لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿٢٨﴾

২৯. যে গৃহে কেউ বাস করে না তাতে তোমাদের জন্যে দ্রব্যসামগ্রী

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ

مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٢٩﴾

থাকলে সেখানে তোমাদের প্রবেশে কোনও পাপ নেই এবং আল্লাহ জানেন যা তোমরা প্রকাশ কর এবং যা তোমরা গোপন কর।

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا
فُرُوْجَهُمْ ؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ
بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿٣٠﴾

৩০. মু'মিনদেরকে বলঃ তারা যেন তাদের দৃষ্টিকে সংযত করে এবং তাদের লজ্জাস্থানের হিফাযত করে; এটা তাদের জন্যে পবিত্রতম; তারা যা করে সে বিষয়ে আল্লাহ অবহিত।

وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ
وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا
مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ ۪
وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآئِهِنَّ
اَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اَبْنَآئِهِنَّ اَوْ اَبْنَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ
اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْٓ اَخَوٰتِهِنَّ
اَوْ نِسَآئِهِنَّ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِيْنَ غَيْرِ
اُولِي الْاِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ يَظْهَرُوْا
عَلٰى عَوْرٰتِ النِّسَآءِ ۪ وَلَا يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ
مَا يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ ؕ وَتُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا
اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٣١﴾

৩১. ঈমান আনয়নকারী নারী-দেরকে বলঃ তারা যেন তাদের দৃষ্টিকে সংযত করে ও তাদের লজ্জাস্থানের হিফাযত করে; তারা যেন তার মধ্যে যা সাধারণতঃ প্রকাশ থাকে তা ব্যতীত তাদের অলংকার বা সৌন্দর্য প্রদর্শন না করে, তাদের ঘাড় ও বক্ষদেশ যেন মাথার কাপড় (ওড়না বা চাদর) দ্বারা আবৃত্ত করে, তারা যেন তাদের স্বামী, পিতা, (পিতামহ-মাতামহ) শ্বশুর, পুত্র, স্বামীর পুত্র, ভ্রাতা, ভাতুষ্পুত্র, ভগ্নীপুত্র, আপন নারীগণ, তাদের মালিকানাধীন দাসী, পুরুষদের মধ্যে যৌন কামনা রহিত পুরুষ এবং নারীদের গোপন অঙ্গ সম্বন্ধে অজ্ঞ বালক ব্যতীত কারো নিকট তাদের সৌন্দর্য প্রকাশ না করে, তারা যেন তাদের সৌন্দর্য প্রকাশের উদ্দেশ্যে সজোরে না হাটে, হে মু'মিনগণ! তোমরা সবাই আল্লাহর দিকে প্রত্যাবর্তন কর, যাতে তোমরা সফলকাম হতে পারো।

১। (ক) আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেনঃ প্রাথমিক যুগের মুহাজির মহিলাদের প্রতি আল্লাহ্ তা'আলা রহম করুন। আল্লাহ্ তা'আলা এ আয়াতটি নাযিল করলে এবং তারা যেন নিজেদের বক্ষদেশের উপর ওড়নার আবরণ ফেলে রাখে।" তারা (মহিলারা) তাদের বস্ত্রখন্ড ছিড়ে তা দিয়ে মুখমন্ডল

وَأَنكِحُوا الْأَيَامَىٰ مِنكُمْ وَالصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ ۚ إِن يَكُونُوا فُقَرَاءَ يُغْنِهِمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٢﴾

৩২. তোমাদের মধ্যে যারা স্বামীহীন তাদের বিবাহ সম্পাদন কর এবং তোমাদের দাস ও দাসীদের মধ্যে যারা সৎ তাদেরও; তারা অভাবগ্রস্ত হলে আল্লাহ নিজ অনুগ্রহে তাদেরকে অভাবমুক্ত করে দিবেন; আল্লাহ প্রাচুর্যময়, সর্বজ্ঞ।

وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّىٰ يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۗ وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ۖ وَآتُوهُم مِّن مَّالِ اللَّهِ الَّذِي آتَاكُمْ ۚ وَلَا تُكْرِهُوا فَتَيَاتِكُمْ عَلَى الْبِغَاءِ إِنْ أَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوا عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَن يُكْرِههُّنَّ فَإِنَّ اللَّهَ مِن بَعْدِ إِكْرَاهِهِنَّ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٣﴾

৩৩. যাদের বিয়ের সামর্থ্য নেই, আল্লাহ তাদেরকে নিজ অনুগ্রহে অভাবমুক্ত না করা পর্যন্ত তারা যেন সংযম অবলম্বন করে এবং তোমাদের মালিকানাধীন দাস-দাসীদের মধ্যে কেউ তার মুক্তির জন্যে লিখিত চুক্তি করতে চাইলে তাদের সাথে চুক্তিতে আবদ্ধ হও, যদি তোমরা তাদের মধ্যে মঙ্গলের সন্ধান পাও; আল্লাহ তোমাদেরকে যে সম্পদ দিয়েছেন তা হতে তোমরা তাদেরকে দান করবে; তোমাদের দাসীরা সততা রক্ষা করতে চাইলে পার্থিব জীবনের ধন-লালসায় তাদেরকে ব্যভিচারিনী হতে বাধ্য করো না, আর যে তাদেরকে বাধ্য করে, তবে তাদের উপর জবরদস্তির পর আল্লাহ তো ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

وَلَقَدْ أَنزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُّبَيِّنَاتٍ وَمَثَلًا مِّنَ الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٣٤﴾

৩৪. আমি তোমাদের নিকট অবতীর্ণ করেছি সুস্পষ্ট আয়াত, তোমাদের পূর্ববর্তীদের দৃষ্টান্ত এবং মুত্তাকীদের জন্যে উপদেশ।

ঢেকে ফেলল। (বুখারী, হাদীস নং ৪৭৫৮)

(খ) সাফিয়া বিনতে শাইবা (রাযিআল্লাহু আনহা) থেকে বর্ণিত। আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) বলতেনঃ "এ আয়াত নাযিল হলে, "এবং তারা" যেন নিজেদের বক্ষদেশের ওপর ওড়নার আবরণ ফেলে রাখে।" মহিলারা তাদের কোমর বন্ধের কাপড়ের প্রান্তদেশ কেটে সেই টুকরা দিয়ে (ওড়না বানিয়ে) মুখমন্ডল ঢেকে রাখে। (বুখারী, হাদীস নং ৪৭৫৯)

اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ اَلْمِصْبَاحُ فِيْ زُجَاجَةٍ ؕ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيْٓءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ؕ يَهْدِى اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۙ ﴿٣٥﴾

৩৫. আল্লাহ আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর (আলোকিতকারী) জ্যোতি, তাঁর জ্যোতির উপমা (মু'মিনদের অন্তরে) যেন একটি দীপাধার (তাক), যার মধ্যে আছে এক প্রদীপ, প্রদীপটি একটি কাঁচের আভরণের মধ্যে স্থাপিত, কাঁচের আভরণটি উজ্জ্বল নক্ষত্র সদৃশ; এটা প্রজ্বলিত করা হয় বরকতময় যয়তুন বৃক্ষের তৈল দ্বারা যা পূর্বেরও নয়, পশ্চিমও নয়, (বরং উভয়ের মধ্যবর্তী) অগ্নি ওকে স্পর্শ না করলেও যেন ওর তৈল উজ্জ্বল আলো জ্যোতির উপর জ্যোতি! আল্লাহ যাকে ইচ্ছা পথ-নির্দেশ করেন তাঁর জ্যোতির দিকে; আল্লাহ মানুষের জন্যে উপমা দিয়ে থাকেন এবং আল্লাহ সর্ব বিষয়ে সর্বজ্ঞ।

فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ۙ ﴿٣٦﴾

৩৬. সেসব গৃহে যাকে সমুন্নত করতে এবং যাতে তাঁর নাম যিকির করতে আল্লাহ নির্দেশ দিয়েছেন, তাতে সকাল ও সন্ধ্যায় তাঁর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে;

رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ

৩৭. সে সব লোক, যাদেরকে ব্যবসা-বাণিজ্য এবং ক্রয়-বিক্রয়

১। (ক) আবূ কাতাদা আস-সুলামী (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তোমাদের কেউ মসজিদে প্রবেশ করলে, বসার পূর্বে সে যেন দু'রাকআত নামায পড়ে নেয়। (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৪)

(খ) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ ঘরে এবং বাজারে নামায পড়ার চাইতে জামা'আতের নামাযে পঁচিশ গুণ সওয়াব বেশি। কোন এক ব্যক্তি যখন ভালরূপে ওযূ করে মসজিদের দিকে বের হয় এবং একমাত্র নামাযের উদ্দেশ্যেই সে মসজিদে যায়, তখন তার প্রত্যেকটি পদক্ষেপের জন্য তার একটি পদমর্যাদা বৃদ্ধি পায় এবং মাফ করে দেয়া হয় তার একটি গুনাহ। নামায পড়ে সে যতক্ষণ মুসাল্লায় অবস্থান করে ফেরেশ্‌তামন্ডলী তার জন্য ততক্ষণ এ বলে দোয়া করে- হে আল্লাহ্! তাকে তোমার রহমত দান কর, তার প্রতি অনুগ্রহ কর। আর তোমাদের মধ্যে কোন ব্যক্তি যতক্ষণ নামাযের অপেক্ষায় থাকে সে ততক্ষণ নামাযের মধ্যে আছে বলে গণ্য হয়। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৭)

وَ اِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ ۙ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ﴿٣٧﴾

আল্লাহর যিকির হতে এবং নামায কায়েম ও যাকাত প্রদান হতে বিরত রাখতে পারে না, তারা ভয় করে সে দিনকে যে দিন তাদের অন্তর ও দৃষ্টি বিপর্যস্ত হয়ে পড়বে।

لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٨﴾

৩৮. যাতে তারা যে কর্ম করে তজ্জন্যে আল্লাহ তাদেরকে উত্তম পুরস্কার দেন এবং নিজ অনুগ্রহে তাদের প্রাপ্যের অধিক দেন; আল্লাহ যাকে ইচ্ছা অপরিমিত রুযী দান করেন।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍۭ بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْـًٔا وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ؕ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٣٩﴾

৩৯. যারা কুফরী করে তাদের কর্ম মরুভূমির মরীচিকা সদৃশ, পিপাসার্ত যাকে পানি মনে করে থাকে; কিন্তু সে ওর নিকট উপস্থিত হলে দেখবে ওটা কিছু নয় এবং সে তার নিকট পাবে আল্লাহকে, অতঃপর তিনি তার কর্মফল পূর্ণ মাত্রায় দিবেন; আল্লাহ হিসাব গ্রহণে তৎপর।

اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ؕ ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ؕ اِذَآ اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا ؕ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ﴿٤٠﴾

৪০. অথবা গভীর সমুদ্রতলের অন্ধকার সদৃশ যাকে আচ্ছন্ন করে তরঙ্গের উপর তরঙ্গ, যার উর্ধ্বে মেঘপুঞ্জ, অন্ধকারপুঞ্জ স্তরের উপর স্তর, এমনকি সে হাত বের করলে তা আদৌ দেখতে পাবে না; আল্লাহ যাকে জ্যোতি দান করেন না তার জন্যে কোন জ্যোতি নেই।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ؕ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَتَسْبِيْحَهٗ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٤١﴾

৪১. তুমি কি দেখো না যে, আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যারা আছে তারা এবং উড্ডীয়মান পাখীসমূহ আল্লাহর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে? প্রত্যেকেই

জানে তার প্রার্থনা ও মহিমা ঘোষণার পদ্ধতি এবং তারা যা করে সে বিষয়ে আল্লাহ অবগত।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿٤٢﴾

৪২. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সার্বভৌমত্ব আল্লাহরই এবং তাঁরই দিকে প্রত্যাবর্তন।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِىْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ؕ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ﴿٤٣﴾

৪৩. তুমি কি দেখো না, আল্লাহ সঞ্চালিত করেন মেঘমালাকে, তৎপর তাদেরকে একত্রিত করেন এবং পরে পুঞ্জীভূত করেন, অতঃপর তুমি দেখতে পাও, ওর মধ্য হতে নির্গত হয় পানিধারা; আকাশস্থিত শিলাস্তূপ হতে তিনি বর্ষণ করেন শিলা এবং এটা দ্বারা তিনি যাকে ইচ্ছা প্রদান করেন এবং যাকে ইচ্ছা তার উপর হতে এটা অন্যদিকে ফিরিয়ে দেন; মেঘের বিদ্যুৎ ঝলক দৃষ্টিশক্তি প্রায় কেড়ে নেয়।

يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِى الْاَبْصَارِ ﴿٤٤﴾

৪৪. আল্লাহ দিবস ও রাত্রির পরিবর্তন ঘটান, এতে শিক্ষা রয়েছে অন্তদৃষ্টি সম্পন্নদের জন্যে।

وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِىْ عَلٰى بَطْنِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِىْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِىْ عَلٰٓى اَرْبَعٍ ؕ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٥﴾

৪৫. আল্লাহ সমস্ত জীব সৃষ্টি করেছেন পানি হতে, ওদের কতক পেটে ভর দিয়ে চলে, কতক দু'পা দ্বারা চলে, কতক চলে চার পায়ে, আল্লাহ যা ইচ্ছা সৃষ্টি করেন, নিশ্চয়ই আল্লাহ সর্ব বিষয়ে সর্বশক্তিমান।

لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤٦﴾

৪৬. আমি তো সুস্পষ্ট নিদর্শন অবতীর্ণ করেছি, আল্লাহ যাকে ইচ্ছা সরল সঠিক পথ-প্রদর্শন করেন।

وَيَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَاَطَعْنَا ثُمَّ

৪৭. তারা বলেঃ আমরা আল্লাহ ও রাসূল (ﷺ)-এর প্রতি ঈমান

يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَاۤ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾

আনলাম এবং আমরা আনুগত্য স্বীকার করলাম; কিন্তু এরপর তাদের একদল মুখ ফিরিয়ে নেয়; বস্তুতঃ তারা মু'মিন নয়।

وَاِذَا دُعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٨﴾

৪৮. আর যখন তাদেরকে আহ্বান করা হয় আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ) -এর দিকে তাদের মধ্যে ফায়সালা করে দেবার জন্যে তখন তাদের একদল মুখ ফিরিয়ে নেয়।

وَاِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ يَاْتُوْۤا اِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ﴿٤٩﴾

৪৯. আর যদি তাদের প্রাপ্য থাকে, তবে তাহলে তারা বিনীতভাবে রাসূল (ﷺ)-এর নিকট ছুটে আসে।

اَفِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَمِ ارْتَابُوْۤا اَمْ يَخَافُوْنَ اَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُوْلُهٗ ؕ بَلْ اُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٥٠﴾

৫০. তাদের অন্তরে কি ব্যাধি আছে, না তারা সংশয় পোষণ করে? না তারা ভয় করে যে, আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ) তাদের প্রতি যুলুম করবেন? বরং তারাই তো যালিম।

اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥١﴾

৫১. মু'মিনদের উক্তি তো এই, যখন তাদের মধ্যে ফায়সালা করে দেবার জন্যে আল্লাহ এবং তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর দিকে আহ্বান করা হয় তখন তারা বলবেঃ আমরা শ্রবণ করলাম ও মান্য করলাম। আর তারাই সফলকাম।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٥٢﴾

৫২. যারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর আনুগত্য করে, আল্লাহকে ভয় করে ও তাঁর অবাধ্যতা হতে সাবধান থাকে তারাই সফলকাম।

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ اَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ؕ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ مَّعْرُوْفَةٌ ؕ

৫৩. তারা দৃঢ়ভাবে আল্লাহর শপথ করে বলে যে, তুমি তাদেরকে আদেশ করলে তারা বের হবেই; তুমি বলঃ শপথ করো না, যথার্থ

إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٥٣﴾

আনুগত্যই কাম্য; তোমরা যা কর আল্লাহ সে বিষয়ে খবর রাখেন।

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۖ فَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُم مَّا حُمِّلْتُمْ ۖ وَإِن تُطِيعُوهُ تَهْتَدُوا ۚ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٥٤﴾

৫৪. বলঃ তোমরা আল্লাহর আনুগত্য কর এবং রাসূল (ﷺ)-এর আনুগত্য কর; অতঃপর যদি তোমরা মুখ ফিরিয়ে নাও, তবে তাঁর উপর অর্পিত (রাসূলের) দায়িত্বের জন্যে সে দায়ী এবং তোমাদের উপর অর্পিত দায়িত্বের জন্যে তোমরা দায়ী এবং তোমরা তাঁর আনুগত্য করলে সৎপথ পাবে, রাসূলের কর্তব্য হচ্ছে শুধু স্পষ্টভাবে (আল্লাহ্‌র বাণী) পৌঁছিয়ে দেয়া।

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُم مِّن بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا ۚ يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا ۚ وَمَن كَفَرَ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٥٥﴾

৫৫. তোমাদের মধ্যে যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে আল্লাহ তাদেরকে প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন যে, তিনি তাদেরকে পৃথিবীতে খেলাফত (প্রতিনিধিত্ব) অবশ্যই দান করবেন, যেমন তিনি (প্রতিনিধিত্ব) দান করেছিলেন তাদের পূর্ববর্তীদেরকে এবং তিনি অবশ্যই তাদের জন্যে সুদৃঢ় করবেন তাদের দ্বীনকে যা তিনি তাদের জন্যে মনোনীত করেছেন এবং তাদের ভয়-ভীতির পরিবর্তে তাদেরকে অবশ্যই নিরাপত্তা দান করবেন; তারা শুধু আমার ইবাদত করবে, আমার সাথে কাউকে শরীক করবে না, অতঃপর যারা অকৃতজ্ঞ হবে তারা তো সত্যত্যাগী (ফাসিক)।

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٥٦﴾

৫৬. তোমরা নামায কায়েম কর, যাকাত দাও এবং রাসূল (ﷺ)-এর আনুগত্য কর, যাতে তোমরা অনুগ্রহভাজন হতে পার।

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٥٧﴾

৫৭. তুমি কাফিরদেরকে পৃথিবীতে প্রবল মনে করো না; তাদের আশ্রয়স্থল জাহান্নাম; কত নিকৃষ্ট এই পরিণাম!

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ؕ مِنْ قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ وَمِنْۢ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَآءِ ؕ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ بَعْدَهُنَّ ؕ طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٨﴾

৫৮. হে মু'মিনগণ! তোমাদের মালিকানাধীন দাস-দাসীরা এবং তোমাদের মধ্যে যারা বয়ঃপ্রাপ্ত হয়নি তারা যেন তোমাদের কক্ষে প্রবেশ করতে তিন সময়ে অনুমিত গ্রহণ করেঃ ফজরের নামাযের পূর্বে, দ্বিপ্রহরে যখন তোমরা তোমাদের পোশাক খুলে রাখ তখন এবং এশার নামাযের পর, এই তিন সময় তোমাদের গোপনীয়তা অবলম্বনের সময়; এই তিন সময় ছাড়া অন্য সময়ে বিনা অনুমতিতে প্রবেশ করলে তোমাদের জন্যে ও তাদের জন্যে কোন দোষ নেই; তোমাদের এককে অপরের নিকট তো যাতায়াত করতেই হয়। এইভাবে আল্লাহ তোমাদের নিকট তাঁর নির্দেশ সুস্পষ্টরূপে বিবৃত করেন; আল্লাহ সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাময়।

وَاِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَاْذِنُوْا كَمَا اسْتَاْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٩﴾

৫৯. এবং তোমাদের সন্তান-সন্ততি বয়ঃপ্রাপ্ত হলে তারাও যেন অনুমতি প্রার্থনা করে যেমন অনুমতি প্রার্থনা করে থাকে তাদের বয়ঃজ্যেষ্ঠরা; এভাবে আল্লাহ তোমাদের জন্যে তাঁর নির্দেশ সুস্পষ্টভাবে বিবৃত করেন, আল্লাহ সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাময়।

وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا يَرْجُوْنَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ اَنْ يَّضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ

৬০. আর বৃদ্ধ নারী, যারা বিবাহের আশা রাখে না, তাদের জন্যে অপরাধ নেই, যদি তারা তাদের সৌন্দর্য প্রদর্শন না করে তাদের

غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍۭ بِزِيْنَةٍ ؕ وَاَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ
خَيْرٌ لَّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٦٠﴾

বহির্বাস খুলে রাখে; তবে এটা হতে বিরত থাকাই তাদের জন্যে উত্তম। আল্লাহ সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ
وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ وَّلَا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَنْ
تَاْكُلُوْا مِنْۢ بُيُوْتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اٰبَآئِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ
اُمَّهٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اِخْوَانِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخَوٰتِكُمْ
اَوْ بُيُوْتِ اَعْمَامِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ
اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗٓ اَوْ
صَدِيْقِكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَاْكُلُوْا جَمِيْعًا
اَوْ اَشْتَاتًا ؕ فَاِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا عَلٰٓى
اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً طَيِّبَةً ؕ
كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٦١﴾

৬১. অন্ধের জন্যে দোষ নেই, খোঁড়া ব্যক্তির জন্যে দোষ নেই, রুগ্নের জন্যে দোষ নেই এবং তোমাদের নিজেদের জন্যেও দোষ নেই আহার করা তোমাদের গৃহে, অথবা তোমাদের পিতৃগৃহে, মাতৃগৃহে, ভ্রাতাদের গৃহে, ভগ্নিদের গৃহে, পিতৃব্যদের গৃহে, ফুফুদের গৃহে, মামাদের গৃহে, খালাদের গৃহে অথবা ঐসব গৃহে যার চাবির মালিক তোমরা অথবা তোমাদের বন্ধুদের গৃহে; তোমরা একত্রে আহার কর অথবা পৃথক পৃথকভাবে আহার কর তাতে তোমাদের জন্যে কোন অপরাধ নেই; তবে যখন তোমরা গৃহে প্রবেশ করবে তখন তোমরা তোমাদের স্বজনদের প্রতি সালাম করবে অভিবাদন স্বরূপ যা আল্লাহর নিকট হতে কল্যাণময় ও পবিত্র; এইভাবে আল্লাহ তোমাদের জন্যে তাঁর নির্দেশ বিশদভাবে বর্ণনা করেন যাতে তোমরা বুঝতে পার।

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ
وَاِذَا كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰٓى اَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوْا
حَتّٰى يَسْتَاْذِنُوْهُ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ فَاِذَا
اسْتَاْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَاْنِهِمْ فَاْذَنْ لِّمَنْ

৬২. তারাই মু'মিন যারা আল্লাহ এবং তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর উপর ঈমান আনে এবং রাসূল (ﷺ)-এর সঙ্গে সমষ্টিগত ব্যাপারে একত্র হলে তারা অনুমতি ব্যতীত সরে পড়ে না; যারা তোমার অনুমতি প্রার্থনা করে তারাই আল্লাহ এবং তাঁর রাসূল (ﷺ)-এ বিশ্বাসী; অতএব, তারা তাদের কোন কাজে বাইরে যাবার জন্যে তোমার

شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٢﴾

অনুমতি চাইলে তাদের মধ্যে যাদের ইচ্ছা তুমি অনুমতি দেবে এবং তাদের জন্যে আল্লাহর নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করবে; আল্লাহ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ؕ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ يَتَسَلَّلُوْنَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖۤ اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦٣﴾

৬৩. রাসূল (ﷺ)-এর আহ্বানকে তোমরা একে অপরের প্রতি আহ্বানের মত গণ্য করো না; তোমাদের মধ্যে যারা চুপি চুপি সরে পড়ে আল্লাহ তাদেরকে জানেন। সুতরাং যারা তাঁর আদেশের বিরুদ্ধাচরণ করে তারা সতর্ক হোক যে, বিপর্যয় তাদের উপর আপতিত হবে অথবা আপতিত হবে তাদের উপর কঠিন শাস্তি।

اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قَدْ يَعْلَمُ مَاۤ اَنْتُمْ عَلَيْهِ ؕ وَيَوْمَ يُرْجَعُوْنَ اِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٦٤﴾

৬৪. জেনে রেখো, আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে তা আল্লাহরই, তোমরা যাতে ব্যাপৃত তিনি তা জানেন; যেদিন তারা তাঁর নিকট প্রত্যাবর্তিত হবে সেদিন তিনি তাদেরকে জানিয়ে দিবেন তারা যা করতো; আল্লাহ সর্ববিষয়ে সর্বজ্ঞ।

সূরাঃ ফুরকান, মাক্কী

(আয়াতঃ ৭৭, রুকূ'ঃ ৬)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে শুরু করছি।

سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٧٧ رُكُوْعَاتُهَا ٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. কত মহান তিনি যিনি তাঁর বান্দার প্রতি 'ফুরকান' (কুরআন) অবতীর্ণ করেছেন যাতে তিনি বিশ্বজগতের জন্যে সতর্ককারী হতে পারেন।

تَبٰرَكَ الَّذِيْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرًا ۙ ①

২. যিনি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সার্বভৌমত্বের অধিকারী; তিনি কোন সন্তান গ্রহণ করেননি; সার্বভৌমত্বে তাঁর কোন শরীক নেই। তিনি সমস্ত কিছু সৃষ্টি করেছেন এবং প্রত্যেককে পরিমিত করেছেন যথাযথ অনুপাতে।

الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا ②

৩. আর তারা তাঁর পরিবর্তে মা'বূদ রূপে গ্রহণ করেছে অপরকে, যারা কিছুই সৃষ্টি করে না; বরং তারা নিজেরাই সৃষ্ট এবং তারা নিজেদের অপকার অথবা উপকার করবার ক্ষমতা রাখে না এবং জীবন, মৃত্যু ও পুনরুত্থানের উপরও কোন ক্ষমতা রাখে না।

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا ③

৪. কাফিররা বলেঃ এটা মিথ্যা ব্যতীত কিছুই নয়, সে এটা উদ্ভাবন করেছে এবং ভিন্ন সম্প্রদায়ের লোকেরা তাকে এই ব্যাপারে সাহায্য করেছে; এইরূপে তারা অবশ্যই যুলুম ও মিথ্যায় উপনীত হয়েছে।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اِفْكُ ۨافْتَرٰىهُ وَاَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۚ فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا ۚ ④

৫. তারা বলেঃ এগুলো তো সেকালের উপকথা, যা সে লিখিয়ে

وَقَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ

تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا ۝٥

নিয়েছে; এগুলো সকাল-সন্ধ্যায় তার নিকট পাঠ করা হয়।

قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِىْ يَعْلَمُ السِّرَّ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝٦

৬. বলঃ এটা তিনিই অবতীর্ণ করেছেন যিনি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সমুদয় রহস্য অবগত আছেন; তিনি ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

وَقَالُوْا مَا لِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِىْ فِى الْاَسْوَاقِ ؕ لَوْلَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ۝٧

৭. তারা বলেঃ এ কেমন রাসূল যে আহার করে এবং হাটে বাজারে চলাফেরা করে? তার কাছে কোন ফেরেশতা কেন অবতীর্ণ করা হলো না, যে তার সাথে থাকতো সতর্ককারীরূপে?

اَوْ يُلْقٰۤى اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّاْكُلُ مِنْهَا ؕ وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ۝٨

৮. তাকে ধন-ভান্ডার দেয়া হয়নি কেন, অথবা তার একটি বাগান নেই কেন, যা হতে সে আহার সংগ্রহ করতে পারে? সীমালঙ্ঘনকারীরা আরো বলেঃ তোমরা তো এক যাদুগ্রস্ত ব্যক্তিরই অনুসরণ করছো।

اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ۝٩

৯. দেখো, তারা তোমাকে কি উপমা দেয়, তারা পথভ্রষ্ট হয়েছে এবং তারা পথ পাবে না।

تَبٰرَكَ الَّذِىْۤ اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَيَجْعَلْ لَّكَ قُصُوْرًا ۝١٠

১০. কত মহান তিনি যিনি ইচ্ছা করলে তোমাকে দিতে পারেন এটা অপেক্ষা উৎকৃষ্টতর বস্তু, উদ্যানসমূহ যার নিম্নদেশে নদী-নালা প্রবাহিত এবং দিতে পারেন প্রাসাদসমূহ।

بَلْ كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ ۚ وَاَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا ۝١١

১১. কিন্তু তারা কিয়ামতকে অস্বীকার করেছে এবং যারা কিয়ামতকে অস্বীকার করে তাদের জন্যে আমি প্রস্তুত রেখেছি জ্বলন্ত অগ্নি।

اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا وَّ زَفِيْرًا ۝١٢

১২. দূর হতে অগ্নি যখন তাদেরকে দেখবে তখন তারা শুনতে পাবে এর ক্রুদ্ধ গর্জন ও চীৎকার।

وَإِذَآ أُلْقُوا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِينَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُورًا ﴿١٣﴾

১৩. এবং যখন তাদেরকে শৃঙ্খলিত অবস্থায় ওর কোন সংকীর্ণ স্থানে নিক্ষেপ করা হবে তখন তারা সেখানে ধ্বংস কামনা করবে।

لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا وَّاحِدًا وَّادْعُوا ثُبُورًا كَثِيرًا ﴿١٤﴾

১৪. আজ তোমরা একবারের জন্যে ধ্বংস কামনা করো না; বরং বহুবার ধ্বংস হবার কামনা করতে থাকো।

قُلْ أَذَٰلِكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۚ كَانَتْ لَهُمْ جَزَآءً وَّمَصِيرًا ﴿١٥﴾

১৫. তাদেরকে জিজ্ঞেস করঃ এটাই শ্রেয়, না স্থায়ী জান্নাত, যার প্রতিশ্রুতি দেয়া হয়েছে মুত্তাকী-দেরকে? এটাই তাদের পুরস্কার ও প্রত্যাবর্তন স্থল।

لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَآءُونَ خَٰلِدِينَ ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْئُولًا ﴿١٦﴾

১৬. সেখানে তারা যা কামনা করবে তাই পাবে এবং তারা স্থায়ী হবে, এই প্রতিশ্রুতি পূরণ তোমার প্রতিপালকেরই দায়িত্ব।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ فَيَقُولُ ءَأَنتُمْ أَضْلَلْتُمْ عِبَادِي هَٰؤُلَآءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ ﴿١٧﴾

১৭. এবং যেদিন তিনি একত্রে করবেন তাদেরকে এবং তারা আল্লাহর পরিবর্তে যাদের ইবাদত করতো তাদেরকে তিনি সেদিন জিজ্ঞেস করবেনঃ[১] তোমরাই কি আমার এই বান্দাদেরকে বিভ্রান্ত করেছিলে, না তারা নিজেরাই পথভ্রষ্ট হয়েছিল?

قَالُوا سُبْحَٰنَكَ مَا كَانَ يَنبَغِي لَنَآ أَن نَّتَّخِذَ

১৮. তারা বলবেঃ আপনি পবিত্র ও মহান! আপনার পরিবর্তে আমরা

১। মু'আয বিন জাবাল (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) (তাকে) বললেনঃ হে মু'আয, তুমি কি জানো বান্দার ওপর আল্লাহ্‌র কি হক আছে? মু'আয বললেন, আল্লাহ ও তাঁর রাসূলই ভালো জানেন। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, (বান্দার ওপর আল্লাহ্‌র হক হলো) সে তাঁর ইবাদত বা দাসত্ব করবে এবং তাঁর সাথে অন্য কিছুকে অংশীদার বানাবে না। তিনি (নবী সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আবার বললেন, তুমি কি জানো আল্লাহ্‌র কাছে বান্দার হক কি? মু'আয ইবনে জাবাল বললেন, বিষয়টি আল্লাহ্ ও তাঁর রাসূলই ভালো জানেন। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, আল্লাহ্‌র কাছে বান্দার হক হলো আল্লাহ্ কর্তৃক বান্দাকে আযাব না দেয়া। (বুখারী, হাদীস নং ৭৩৭৩)

مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَ ۚ وَكَانُوْا قَوْمًا بُوْرًا ﴿١٨﴾

অন্যকে অভিভাবকরূপে গ্রহণ করতে পারি না; আপনিই তো এদেরকে ও এদের পিতৃপুরুষদেরকে ভোগ-সম্ভার দিয়েছিলেন; পরিণামে তারা উপদেশ বিস্মৃত হয়েছিল এবং পরিণত হয়েছিল এক ধ্বংসপ্রাপ্ত জাতিতে।

فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ ۙ فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا وَّلَا نَصْرًا ۚ وَمَنْ يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا ﴿١٩﴾

১৯. তোমরা যা বলতে তারা (উপাস্যগুলি) তা মিথ্যা সাব্যস্ত করেছে। সুতরাং তোমরা শাস্তি প্রতিরোধ করতে পারবে না, সাহায্যও পাবে না। তোমাদের মধ্যে যে সীমালঙ্ঘন করবে আমি তাকে মহাশাস্তি আস্বাদন করাবো।

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِى الْاَسْوَاقِ ؕ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ؕ اَتَصْبِرُوْنَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيْرًا ﴿٢٠﴾

২০. তোমার পূর্বে আমি যে সব রাসূল প্রেরণ করেছি তাঁরা আহার করতেন ও হাটে-বাজারে চলাফেরা করতেন। আমি তোমাদের মধ্যে পরস্পরকে পরীক্ষা স্বরূপ করেছি। তোমরা ধৈর্যধারণ করবে কি? তোমার প্রতিপালক সবকিছু দেখেন।'

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ نَرٰى رَبَّنَا ؕ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيْرًا ﴿٢١﴾

২১. যারা আমার সাক্ষাৎ কামনা করে না তারা বলেঃ আমাদের নিকট ফেরেশ্‌তা অবতীর্ণ করা হয় না কেন? অথবা আমরা আমাদের প্রতিপালককে প্রত্যক্ষ করি না কেন? তারা তাদের অন্তরে অহংকার পোষণ করে এবং তারা গুরুতর রূপে সীমালঙ্ঘন করেছে।

يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَيَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٢٢﴾

২২. যেদিন তারা ফেরেশ্‌তাদেরকে প্রত্যক্ষ করবে সেদিন অপরাধীদের জন্যে সুসংবাদ থাকবে না এবং তারা বলবেঃ রক্ষা কর, রক্ষা কর।

وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿٢٣﴾

২৩. আমি তাদের কৃতকর্মগুলোর দিকে অগ্রসর হবো, অতঃপর সেগুলোকে বিক্ষিপ্ত ধূলি-কণায় পরিণত করবো।

اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّاَحْسَنُ مَقِيْلًا ﴿٢٤﴾

২৪. সেদিন জান্নাতবাসীদের জন্য বাসস্থান হবে উৎকৃষ্ট এবং বিশ্রামস্থল হবে মনোরম।

وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا ﴿٢٥﴾

২৫. যেদিন আকাশ মেঘপুঞ্জসহ বিদীর্ণ হবে এবং ফেরেশ্‌তাদেরকে নামিয়ে দেয়া হবে।

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ ِالْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ؕ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ﴿٢٦﴾

২৬. সেদিন প্রকৃত কর্তৃত্ব হবে দয়াময়ের এবং কাফিরদের জন্যে সে দিন হবে কঠিন।

وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِى اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ﴿٢٧﴾

২৭. যালিম ব্যক্তি সেদিন নিজ হস্তদ্বয় দংশন করতে করতে বলবেঃ হায়, আমি যদি রাসূল (ﷺ)-এর সাথে সৎপথ অবলম্বন করতাম।

يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِىْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ﴿٢٨﴾

২৮. হায়, দুর্ভোগ আমার, আমি যদি অমুককে বন্ধুরূপে গ্রহণ না করতাম।

لَقَدْ اَضَلَّنِىْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِىْ ؕ وَكَانَ

২৯. আমাকে তো সে বিভ্রান্ত করেছিল আমার নিকট উপদেশ

الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ﴿٢٩﴾

পৌঁছবার পর; শয়তান মানুষের জন্যে মহাপ্রতারক।

وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿٣٠﴾

৩০. রাসূল (ﷺ) বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমার সম্প্রদায় এই কুরআনকে পরিত্যাজ্য মনে করে।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ﴿٣١﴾

৩১. (আল্লাহ বলেনঃ) এভাবেই প্রত্যেক নবীর শত্রু করেছিলাম আমি অপরাধীদেরকে। তোমার জন্যে তোমার প্রতিপালকই পথ-প্রদর্শক ও সাহায্যকারীরূপে যথেষ্ট।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۚ كَذٰلِكَ ۚ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ﴿٣٢﴾

৩২. কাফিররা বলেঃ সমগ্র কুরআন তাঁর নিকট একবারে অবতীর্ণ হলো না কেন? এভাবেই তোমার হৃদয়কে ওটা দ্বারা মজবূত করবার জন্যে এবং ক্রমে ক্রমে স্পষ্টভাবে আবৃত্তি করেছি।

وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ تَفْسِيْرًا ؕ ﴿٣٣﴾

৩৩. তারা তোমার নিকট এমন কোন সমস্যা উপস্থিত করেনি যার সঠিক সমাধান ও সুন্দর ব্যাখ্যা আমি তোমাকে দান করিনি।

اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ اِلٰى جَهَنَّمَ ۙ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٣٤﴾

৩৪. যাদেরকে মুখে ভর দিয়ে চলা অবস্থায় জাহান্নামের দিকে একত্রিত করা হবে, তাদেরই স্থান হবে অতি নিকৃষ্ট এবং তারাই সর্বাধিক পথভ্রষ্ট।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗٓ اَخَاهُ هٰرُوْنَ وَزِيْرًا ﴿٣٥﴾

৩৫. আমি মূসা (عليه السلام)-কে অবশ্যই অবশ্যই কিতাব দিয়েছিলাম এবং তাঁর ভ্রাতা হারূনকে তাঁর সাহায্যকারী করেছিলাম।

فَقُلْنَا اذْهَبَآ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ﴿٣٦﴾

৩৬. এবং বলেছিলামঃ তোমরা সেই সম্প্রদায়ের নিকট যাও যারা আমার নিদর্শনাবলীকে অস্বীকার করেছে; অতপর আমি তাদেরকে সম্পূর্ণরূপে বিধ্বস্ত করেছিলাম।

وَقَوْمَ نُوحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ أَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ۭ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣٧﴾

৩৭. আর নূহের (আলাইহিস সালাম) সম্প্রদায় যখন রাসূলদের প্রতি মিথ্যা আরোপ করলো তখন আমি তাদেরকে নিমজ্জিত করলাম এবং তাদেরকে মানব জাতির জন্যে নিদর্শন স্বরূপ করে রাখলাম; যালিমদের জন্যে আমি পীড়াদায়ক শাস্তি প্রস্তুত করে রেখেছি।

وَّعَادًا وَّثَمُوْدَا وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًۢا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ﴿٣٨﴾

৩৮. আমি ধ্বংস করেছিলাম 'আদ, সামূদ, রাস্-বাসী এবং তাদের অন্তর্বর্তীকালের বহু সম্প্রদায়কেও।

وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْاَمْثَالَ ۡ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ﴿٣٩﴾

৩৯. আমি তাদের প্রত্যেকের জন্যে দৃষ্টান্ত বর্ণনা করেছিলাম, আর তাদের সকলকেই আমি সম্পূর্ণরূপে ধ্বংস করেছিলাম।

وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِيْٓ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ۭ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ﴿٤٠﴾

৪০. তারা তো সেই জনপদ দিয়েই যাতায়াত করে যার উপর বর্ষিত হয়েছিল অকল্যাণের বৃষ্টি, তবে কি তারা এটা প্রত্যক্ষ করে না? বস্তুতঃ তারা পুনরুত্থানের আশঙ্কা করে না।

وَاِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ۭ اَهٰذَا الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ﴿٤١﴾

৪১. তারা যখন তোমাকে দেখে তখন শুধু তোমাকে ঠাট্টা-বিদ্রূপের পাত্র রূপে গণ্য করে এবং বলেঃ এই কি সে, যাকে আল্লাহ রাসূল করে পাঠিয়েছেন?

اِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَآ اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۭ وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٤٢﴾

৪২. সে আমাদেরকে আমাদের দেবতাগণ হতে দূরে সরিয়ে দিতো যদি না আমরা তাদের আনুগত্যে ধৈর্যের সাথে (প্রতিষ্ঠিত) থাকতাম; যখন তারা শাস্তি প্রত্যক্ষ করবে তখন তারা জানবে কে সর্বাধিক পথভ্রষ্ট।

اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ۭ اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ

৪৩. তুমি কি দেখো না তাকে, যে তার প্রবৃত্তিকে মা'বূদ রূপে গ্রহণ

عَلَيْهِ وَكِيْلًا ﴿٤٣﴾

করে? তবুও কি তুমি তার জিম্মাদার হবে?

اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ اَوْ يَعْقِلُوْنَ ؕ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٤٤﴾

৪৪. তুমি কি মনে কর যে, তাদের অধিকাংশ শুনে ও বুঝে? তারা পশুর মত বরং তারা আরোও পথ ভ্রষ্ট।

اَلَمْ تَرَ اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَآءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ﴿٤٥﴾

৪৫. তুমি কি তোমার প্রতিপালকের প্রতি লক্ষ্য কর না কিভাবে তিনি ছায়া সম্প্রসারিত করেন? তিনি চাইলে এটাকে স্থির রাখতে পারতেন; ফলে আমি সূর্যকে করেছি এর নির্দেশক।

ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا قَبْضًا يَّسِيْرًا ﴿٤٦﴾

৪৬. অতঃপর আমি একে আমার দিকে ধীরে ধীরে গুটিয়ে আনি।

وَهُوَ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا ﴿٤٧﴾

৪৭. এবং তিনিই তোমাদের জন্যে রাত্রিকে করেছেন আবরণ স্বরূপ, বিশ্রামের জন্যে তোমাদের দিয়েছেন নিদ্রা এবং জাগ্রত হওয়ার জন্যে দিয়েছেন দিবস।

وَهُوَ الَّذِىْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَىْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا ﴿٤٨﴾

৪৮. তিনিই স্বীয় রহমতে সুসংবাদ বহনকারী রূপে বায়ু প্রেরণ করেন এবং আমি আকাশ হতে পবিত্র পানি বর্ষণ করি।

لِّنُحْيِىَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَآ اَنْعَامًا وَّاَنَاسِىَّ كَثِيْرًا ﴿٤٩﴾

৪৯. যার দ্বারা আমি মৃত ভূ-খন্ডকে জীবিত করি এবং আমার সৃষ্টির মধ্যে বহু জীব-জন্তু ও মানুষকে তা পান করাই।

وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ۖ فَاَبٰٓى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿٥٠﴾

৫০. আর আমি এটা তাদের মধ্যে বিতরণ করি যাতে তারা উপদেশ গ্রহণ করে; তা সত্ত্বেও অধিকাংশ লোক অস্বীকার করল; কিন্তু কুফুরী করা হতে (অস্বীকার করল না।)

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِىْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ﴿٥١﴾

৫১. আমি ইচ্ছা করলে প্রতিটি জনপদে একজন সতর্ককারী প্রেরণ করতে পারতাম।

فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ﴿٥٢﴾

৫২. সুতরাং তুমি কাফিরদের আনুগত্য করো না এবং তুমি তার (কুরআনের) সাহায্যে তাদের বিরুদ্ধে প্রবল সংগ্রাম চালিয়ে যাও।

وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٥٣﴾

৫৩. তিনিই দুই সমুদ্রকে মিলিত ভাবে প্রবাহিত করেছেন, একটি মিষ্টি, মজাদার এবং অপরটি লবণাক্ত, বিস্বাদ; উভয়ের মধ্যে রেখেছেন এক অন্তরায়, এক শক্ত ব্যবধান।

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ؕ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ﴿٥٤﴾

৫৪. এবং তিনিই মানুষকে সৃষ্টি করেছেন পানি হতে; অতঃপর তিনি তার বংশগত ও বৈবাহিক সম্বন্ধ স্থাপন করেছেন। তোমার প্রতিপালক সর্বশক্তিমান।

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ؕ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ ظَهِيْرًا ﴿٥٥﴾

৫৫. তারা আল্লাহর পরিবর্তে এমন কিছুর ইবাদত করে যারা তাদের উপকার করতে পারে না, অপকারও করতে পারে না, কাফির তো স্বীয় প্রতিপালকের বিরোধী।

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿٥٦﴾

৫৬. আমি তোমাকে শুধু সুসংবাদ-দাতা ও সতর্ককারী রূপেই প্রেরণ করেছি।

قُلْ مَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَآءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٥٧﴾

৫৭. বলঃ আমি তোমাদের নিকট এর জন্যে কোন প্রতিদান চাই না, তবে যে ইচ্ছা করে সে তার প্রতিপালকের পথ অবলম্বন করুক।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ؕ وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا ﴿٥٨﴾

৫৮. তুমি নির্ভর কর সেই চিরঞ্জীবের উপর, যাঁর মৃত্যু নেই এবং তাঁর সপ্রশংসা মহিমা ঘোষণা কর, তিনি তাঁর বান্দাদের পাপ সম্পর্কে অবহিত।

الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ اَلرَّحْمٰنُ فَسْئَلْ بِهٖ خَبِيْرًا ﴿٥٩﴾

৫৯. তিনি আকাশমন্ডলী, পৃথিবী এবং ওগুলোর মধ্যবর্তী সমস্ত কিছু ছয় দিনে সৃষ্টি করেন; অতঃপর তিনি আরশের উপর সমুন্নীত হন; তিনিই রহমান, তাঁর সম্বন্ধে যে অবগত আছে তাকে জিজ্ঞেস করে দেখো।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ ۚ قَالُوْا وَمَا الرَّحْمٰنُ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُوْرًا ۩ ﴿٦٠﴾

৬০. যখন তাদেরকে বলা হয়ঃ সিজদাবনত হও 'রহমান'-এর প্রতি, তখন তারা বলেঃ রহমান আবার কে? তুমি কাউকেও সিজদা করতে বললেই কি আমরা তাকে সিজদা করবো? এতে তাদের বিমুখতাই বৃদ্ধি পায়।

تَبٰرَكَ الَّذِىْ جَعَلَ فِى السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا وَّقَمَرًا مُّنِيْرًا ﴿٦١﴾

৬১. কত মহান তিনি যিনি আকাশে সৃষ্টি করেছেন বড় বড় তারকাপুঞ্জ এবং তাতে স্থাপন করেছেন প্রদীপ (সূর্য) ও জ্যোতির্ময় চন্দ্র!

وَهُوَ الَّذِىْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا ﴿٦٢﴾

৬২. এবং যারা উপদেশ গ্রহণ করতে ও কৃতজ্ঞ হতে চায় তাদের জন্যে তিনিই সৃষ্টি করেছেন রাত্রি এবং দিবসকে পরস্পরের অনুগামীরূপে।

وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ﴿٦٣﴾

৬৩. 'রহমান' এর বান্দা তারাই যারা নম্রভাবে চলাফেরা করে পৃথিবীতে এবং তাদেরকে যখন অজ্ঞ লোকেরা সম্বোধন করে তখন তারা বলেঃ 'সালাম'।

وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ﴿٦٤﴾

৬৪. এবং তারা রাত্রি অতিবাহিত করে তাদের প্রতিপালকের উদ্দেশ্যে সিজদারত হয়ে ও দন্ডায়মান থেকে।

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۖ ﴿٦٥﴾

৬৫. এবং তারা বলেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদের হতে জাহান্নামের শাস্তি দূরীভূত করুন; নিশ্চয়ই ওর শাস্তি তো আঁকড়ে থাকার জিনিস।

إِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿٦٦﴾

৬৬. অবস্থান ও বসবাসের স্থান হিসেবে ওটা কত নিকৃষ্ট!

وَالَّذِيْنَ إِذَآ أَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾

৬৭. আর যখন তারা ব্যয় করে তখন তারা অপব্যয় করে না, কার্পণ্যও করে না; বরং তারা আছে এতদুভয়ের মাঝে মধ্যমপন্থায়।

وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ إِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ﴿٦٨﴾

৬৮. এবং তারা আল্লাহর সাথে কোন উপাস্যকে ডাকে না; আল্লাহ যার হত্যা নিষিদ্ধ করেছেন, যথার্থ কারণ ছাড়া তাকে তারা হত্যা করে না এবং ব্যভিচার করে না; যে এগুলো করে সে শাস্তি ভোগ করবে।[১]

يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ﴿٦٩﴾

৬৯. কিয়ামতের দিন তার শাস্তি দ্বিগুণ করা হবে এবং সেখানে সে স্থায়ী হবে হীন অবস্থায়।

إِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٠﴾

৭০. তারা নয়, যারা তাওবা করে, ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে; আল্লাহ তাদের পাপ পরিবর্তন করে দিবেন পুণ্যের দ্বারা; আল্লাহ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهٗ يَتُوْبُ إِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ﴿٧١﴾

৭১. যে ব্যক্তি তাওবা করে ও সৎকর্ম করে সে সম্পূর্ণরূপে আল্লাহ অভিমুখী হয়।

وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ وَإِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ﴿٧٢﴾

৭২. আর যারা মিথ্যা সাক্ষ্য দেয় না এবং যখন তারা অসার ক্রিয়া-কলাপের সম্মুখীন হয় তখন স্বীয়

১। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ মুশরিকদের কিছু লোক ব্যাপক হত্যা চালায়, ব্যাপক ব্যাভিচারে লিপ্ত হয়। অতপর তারা রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকটে হাযির হয়ে আরয করলোঃ আপনি যা কিছু বলেন এবং যেদিকে আহ্বান করেন, তা তো খুবই উত্তম। আপনি যদি বলেন যে, আমরা যা করেছি তা মাফ করে দেয়া হবে, তখন এ আয়াতটি নাযিল হয়-"আর যারা আল্লাহ্‌র সাথে অন্য ইলাহকে ডাকে না, আল্লাহ্ যাকে হত্যা করা নিষিদ্ধ করেছেন যথার্থ কারণ ব্যতীত তারা তাকে হত্যা করে না এবং ব্যাভিচার করেনা।" (সূরা ফুরকানঃ ৬৮) আরোও নাযিল হয়- "বলো হে আমার বান্দারা যারা নিজেদের ওপর অত্যাচার করেছো, তোমরা আল্লাহ্‌র রহমত থেকে নিরাশ হয়ো না।" (সূরা যুমারঃ ৫৩) (বুখারী, হাদীস নং ৪৮১০)

সম্মানের সাথে তা পরিহার করে চলে।

وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ﴿٧٣﴾

৭৩. এবং যারা তাদের প্রতিপালকের আয়াত দ্বারা উপদেশ প্রদান করলে অন্ধ এবং বধির সদৃশ আচরণ করে না।

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿٧٤﴾

৭৪. আর যারা প্রার্থনা করে– হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদের জন্যে এমন স্ত্রী ও সন্তান-সন্ততি দান করুন যারা আমাদের জন্যে চক্ষু-শীতলকারী এবং আমাদেরকে মুত্তাকীদের জন্যে ইমাম করুন।

اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ﴿٧٥﴾

৭৫. তাদেরকে প্রতিদান স্বরূপ দেয়া হবে (জান্নাতে) বালাখানা, যেহেতু তারা ছিল ধৈর্যশীল, তাদেরকে সেখানে অভ্যর্থনা দেয়া হবে অভিবাদন ও সালাম সহকারে।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿٧٦﴾

৭৬. সেখানে তারা অন্ততকাল থাকবে। আশ্রয়স্থল ও বসতি হিসেবে তা কত উৎকৃষ্ট!

قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ﴿٧٧﴾

৭৭. বলঃ তোমরা আমার প্রতিপালককে না ডাকলে তিনি তোমাদেরকে পরওয়া করেন না; তোমরা মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছো, ফলে অচিরে নেমে আসবে অপরিহার্য শাস্তি।

সূরাঃ শুআ'রা, মাক্কী

(আয়াতঃ ২২৭, রুকূঃ ১১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةُ الشُّعَرَآءِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٢٢٧ رُكُوْعَاتُهَا ١١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. ত্বোয়া-সীন-মীম।

طٰسٓمّٓ ①

২. এগুলো সুস্পষ্ট কিতাবের আয়াত।

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ②

৩. তারা মু'মিন হচ্ছে না বলে তুমি হয়তো (মনোকষ্টে) আত্মবিনাশী হয়ে পড়বে।

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ③

৪. আমি ইচ্ছা করলে আকাশ হতে তাদের নিকট এক নিদর্শন প্রেরণ করতাম, ফলে তাদের গর্দান বিনত হয়ে পড়তো ওর প্রতি।

اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِيْنَ ④

৫. যখনই তাদের কাছে দয়াময়ের নিকট হতে কোন নতুন উপদেশ আসে তখনই তারা তা হতে মুখ ফিরিয়ে নেয়।

وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوْا عَنْهُ مُعْرِضِيْنَ ⑤

৬. তারা তো মিথ্যা জেনেছে, সুতরাং তারা যা নিয়ে ঠাট্টা-বিদ্রূপ করতো তার প্রকৃত বার্তা তাদের নিকট শীঘ্রই এসে পড়বে।

فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَيَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ⑥

৭. তারা কি পৃথিবীর দিকে দৃষ্টিপাত করে না? আমি তাতে প্রত্যেক প্রকারের কত উৎকৃষ্ট উদ্ভিদ উদ্‌গত করেছি।

اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمْ اَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ⑦

৮. নিশ্চয়ই তাতে আছে নিদর্শন; কিন্তু তাদের অধিকাংশই মু'মিন নয়।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ⑧

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٩﴾

৯. এবং নিশ্চয় তোমার প্রতিপালক, পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু।

وَاِذْ نَادٰى رَبُّكَ مُوْسٰٓى اَنِ ائْتِ الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠﴾

১০. (স্মরণ কর) যখন তোমার প্রতিপালক মূসা (عليه السلام)-কে ডেকে বললেনঃ তুমি যালিম সম্প্রদায়ের নিকট যাও।

قَوْمَ فِرْعَوْنَ ؕ اَلَا يَتَّقُوْنَ ﴿١١﴾

১১. ফিরআ'উনের সম্প্রদায়ের নিকট; তারা কি ভয় করে না?

قَالَ رَبِّ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ﴿١٢﴾

১২. তিনি বলেছিলেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমি আশঙ্কা করি যে, তারা আমাকে অস্বীকার করবে।

وَيَضِيْقُ صَدْرِيْ وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِيْ فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُوْنَ ﴿١٣﴾

১৩. এবং আমার হৃদয় সংকুচিত হয়ে পড়ছে, আর আমার জিহ্বা তো সাবলীল নয়, সুতরাং হারূন (عليه السلام) -এর প্রতিও ওহী পাঠান।

وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْۢبٌ فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿١٤﴾

১৪. আমার বিরুদ্ধে তাদের এক অভিযোগ আছে; আমি আশঙ্কা করি যে, তারা আমাকে হত্যা করবে।

قَالَ كَلَّا ۚ فَاذْهَبَا بِاٰيٰتِنَآ اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُوْنَ ﴿١٥﴾

১৫. বললেনঃ কখনই নয়, অতএব তোমরা উভয়ে আমার নিদর্শনসহ যাও, আমি তোমাদের সঙ্গে আছি শ্রবণকারী।

فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾

১৬. অতএব তোমরা উভয়ে ফিরআ'উনের নিকট যাও এবং বলঃ আমরা জগতসমূহের প্রতিপালকের রাসূল।

اَنْ اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٧﴾

১৭. (হে ফিরআ'উন) আর আমাদের সাথে যেতে দাও বানী ইসরাঈলকে।

قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِيْنَا وَلِيْدًا وَّلَبِثْتَ فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ﴿١٨﴾

১৮. ফিরআ'উন বললোঃ আমরা কি তোমাকে শৈশবে আমাদের মধ্যে লালন-পালন করিনি? এবং তুমি তোমার জীবনের বহু বছর আমাদের মধ্যে কাটিয়েছো।

وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِيْ فَعَلْتَ وَاَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩﴾

১৯. তুমি তোমার কর্ম যা করবার তা করেছো; তুমি অকৃতজ্ঞ।

قَالَ فَعَلْتُهَآ اِذًا وَّاَنَا مِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٢٠﴾

২০. (মূসা عليه السلام) বললেনঃ আমি তো এটা করেছিলাম তখন যখন আমি অজ্ঞ ছিলাম।

فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِيْ رَبِّيْ حُكْمًا وَّجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢١﴾

২১. আমি যখন তোমাদের ভয়ে ভীত হলাম তখন আমি তোমাদের নিকট হতে পালিয়ে গিয়েছিলাম; তৎপর আমার প্রতিপালক আমাকে জ্ঞান দান করেছেন এবং আমাকে রাসূল করেছেন।

وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٢٢﴾

২২. আর আমার প্রতি তোমার যে অনুগ্রহের কথা উল্লেখ করেছো, তা এই যে, তুমি বানী ইসরাঈলকে দাসে পরিণত করেছো।

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. ফিরআ'উন বললোঃ জগত-সমূহের প্রতিপালক আবার কি?

قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٢٤﴾

২৪. (মূসা عليه السلام) বললেনঃ তিনি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী এবং এতোদুভয়ের মধ্যবর্তী সব কিছুর প্রতিপালক, যদি তোমরা নিশ্চিত বিশ্বাসী হও।

قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗٓ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ﴿٢٥﴾

২৫. ফিরআ'উন তার পারিষদবর্গকে লক্ষ্য করে বললোঃ তোমরা শুনছো তো?

قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٦﴾

২৬. (মূসা عليه السلام) বললেনঃ তিনি তোমাদের প্রতিপালক এবং তোমাদের পূর্বপুরুষদেরও প্রতি-পালক।

قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْٓ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٢٧﴾

২৭. (ফিরআ'উন) বললোঃ তোমাদের প্রতি প্রেরিত তোমাদের রাসূল নিশ্চয়ই পাগল।

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ إِن كُنتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٢٨﴾

২৮. (মূসা (عليه السلام)) বললেনঃ তিনি পূর্ব ও পশ্চিমের এবং এতোদুভয়ের মধ্যবর্তী সবকিছুর প্রতিপালক, যদি তোমরা বুঝতে।

قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ إِلَٰهًا غَيْرِي لَأَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُونِينَ ﴿٢٩﴾

২৯. (ফিরআ'উন) বললোঃ তুমি যদি আমার পরিবর্তে অন্যকে মা'বূদ রূপে গ্রহণ কর তবে আমি তোমাকে অবশ্যই কারারুদ্ধ করবো।

قَالَ أَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِينٍ ﴿٣٠﴾

৩০. (মূসা (عليه السلام)) বললেনঃ আমি তোমার নিকট স্পষ্ট কিছু (নিদর্শন) আনয়ন করলেও?

قَالَ فَأْتِ بِهِ إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٣١﴾

৩১. (ফিরআ'উন) বললোঃ তুমি যদি সত্যবাদী হও, তবে তা উপস্থিত কর।

فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿٣٢﴾

৩২. অতঃপর তিনি (মূসা (عليه السلام)) তাঁর লাঠি নিক্ষেপ করলেন তৎক্ষণাৎ তা এক সুস্পষ্ট অজগর হলো।

وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّاظِرِينَ ﴿٣٣﴾

৩৩. আর (মূসা (عليه السلام)) হাত বের করলেন আর তৎক্ষণাৎ তা দর্শকদের দৃষ্টিতে শুভ্র উজ্জ্বল প্রতিভাত হলো।

قَالَ لِلْمَلَإِ حَوْلَهُ إِنَّ هَٰذَا لَسَاحِرٌ عَلِيمٌ ﴿٣٤﴾

৩৪. সে (ফিরআ'উন) তার পরিষদ-বর্গকে বললোঃ এতো এক সুদক্ষ যাদুকর।

يُرِيدُ أَن يُخْرِجَكُم مِّنْ أَرْضِكُم بِسِحْرِهِ ۖ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿٣٥﴾

৩৫. এ তোমাদেরকে তোমাদের দেশ হতে তার যাদুবলে বহিষ্কৃত করতে চায়! এখন তোমরা কি করতে বল?

قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ﴿٣٦﴾

৩৬. তারা বললোঃ তাকে ও তার ভ্রাতাকে কিঞ্চিৎ অবকাশ দিন এবং নগরে নগরে সংগ্রাহকারীদেরকে পাঠান।

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيمٍ ﴿٣٧﴾

৩৭. যেন তারা তোমার নিকট সকল সুদক্ষ যাদুকর উপস্থিত করে।

فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿٣٨﴾

৩৮. অতঃপর এক নির্ধারিত দিনে নির্দিষ্ট সময়ে যাদুকরদের একত্রিত করা হলো।

وَّقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنتُم مُّجْتَمِعُونَ ﴿٣٩﴾

৩৯. আর লোকদেরকে বলা হলোঃ তোমরাও সমবেত হচ্ছো কি?

لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ إِن كَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ﴿٤٠﴾

৪০. যেন আমরা যাদুকরদের অনুসরণ করতে পারি, যদি তারা বিজয়ী হয়।

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لِفِرْعَوْنَ أَئِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿٤١﴾

৪১. অতঃপর যাদুকররা এসে ফিরআ'উনকে বললোঃ আমরা যদি বিজয়ী হই তবে আমাদের জন্যে পুরস্কার থাকবে তো?

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٤٢﴾

৪২. (ফিরআ'উন) বললোঃ হ্যাঁ, তখন তোমরা অবশ্যই আমার ঘনিষ্ঠদের অন্তর্ভুক্ত হবে।

قَالَ لَهُم مُّوسَىٰ أَلْقُوا مَا أَنتُم مُّلْقُونَ ﴿٤٣﴾

৪৩. মূসা (عليه السلام) তাদেরকে বললেনঃ তোমাদের যা নিক্ষেপ করবার তা নিক্ষেপ কর।

فَأَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبُونَ ﴿٤٤﴾

৪৪. অতঃপর তারা তাদের রশি ও লাঠি নিক্ষেপ করলো এবং তারা বললোঃ ফিরআ'উনের শপথ! আমরাই বিজয়ী হবো।

فَأَلْقَىٰ مُوسَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿٤٥﴾

৪৫. অতঃপর মূসা (عليه السلام) তাঁর লাঠি নিক্ষেপ করলেন; সহসা তা' তাদের অলীক সৃষ্টিগুলোকে গ্রাস করতে লাগলো।

فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سَاجِدِينَ ﴿٤٦﴾

৪৬. তখন যাদুকররা সিজদাবনত হয়ে পড়লো।

قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٧﴾

৪৭. তারা বললোঃ আমরা ঈমান আনয়ন করলাম জগতসমূহের প্রতিপালকের প্রতি-

رَبِّ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ﴿٤٨﴾

৪৮. যিনি মূসা (عليه السلام) ও হারূন (عليه السلام)-এরও প্রতিপালক।

قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۗ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوْصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٤٩﴾

৪৯. (ফিরআ'উন) বললোঃ আমি তোমাদেরকে অনুমতি দেয়ার পূর্বেই তোমরা তাতে বিশ্বাস করলে? এই তো তোমাদের প্রধান যে তোমাদেরকে যাদু শিক্ষা দিয়েছে; শীঘ্রই তোমরা এর পরিণাম জানবে; আমি অবশ্যই তোমাদের হাত এবং তোমাদের পা বিপরীত দিক হতে কর্তন করবো এবং তোমাদের সবাইকে শূলবিদ্ধ করবই।

قَالُوْا لَا ضَيْرَ ۖ اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿٥٠﴾

৫০. তারা বললোঃ কোন ক্ষতি নেই, আমরা আমাদের প্রতিপালকের নিকট প্রত্যাবর্তন করবো।

اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَاۤ اَنْ كُنَّاۤ اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥١﴾

৫১. আমরা আশা করি যে, আমাদের প্রতিপালক আমাদের অপরাধ মার্জনা করবেন, কারণ আমরা মু'মিনদের মধ্যে অগ্রণী।

وَاَوْحَيْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰۤى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْۤ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٥٢﴾

৫২. আমি মূসা (عليه السلام)-এর প্রতি ওহী করেছিলাম এই মর্মেঃ আমার বান্দাদেরকে নিয়ে রাতে বের হয়ে যাও; তোমাদের তো পশ্চাদ্ধাবন করা হবে।

فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿٥٣﴾

৫৩. অতঃপর ফিরআ'উন শহরে শহরে লোক সংগ্রহকারী পাঠালো,

اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ﴿٥٤﴾

৫৪. (এই বলেঃ) এরা (বনী ইসরাঈল) ক্ষুদ্র একটি দল।

وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ﴿٥٥﴾

৫৫. তারা আমাদের ক্রোধ উদ্রেক করেছে।

وَاِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ﴿٥٦﴾

৫৬. এবং আমরা সকলে সদা সতর্ক।

فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٥٧﴾

৫৭. পরিণামে আমি ফিরআ'উন গোষ্ঠীকে বহিস্কৃত করলাম তাদের উদ্যানরাজিও প্রস্রবণ হতে।

وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿٥٨﴾

৫৮. এবং ধন-ভান্ডার ও সুরম্য অট্টালিকা হতে।

كَذٰلِكَ ۖ وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٥٩﴾

৫৯. এইরূপই (ঘটেছিল) এবং বনী ইসরাঈলকে আমি করেছিলাম তার অধিকারী।

فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ﴿٦٠﴾

৬০. তারা সূর্যোদয়কালে তাদের পশ্চাতে এসে পড়লো।

فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ﴿٦١﴾

৬১. অতঃপর যখন দু'দল পরস্পরকে দেখলো তখন মূসা (عليه السلام)-এর সঙ্গীরা বললোঃ আমরা তো ধরা পড়ে গেলাম।

قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٦٢﴾

৬২. (মূসা (عليه السلام) বললেনঃ কিছুতেই নয়! আমার সঙ্গে আছেন আমার প্রতিপালক, সত্বর তিনি আমাকে পথ-নির্দেশ করবেন।

فَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ۖ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ﴿٦٣﴾

৬৩. অতঃপর আমি মূসা (عليه السلام)-এর প্রতি ওহী করলামঃ তোমার লাঠি দ্বারা সমুদ্রে আঘাত কর, ফলে তা বিভক্ত হয়ে প্রত্যেক ভাগ বিশাল পর্বত সদৃশ হয়ে গেল।

وَاَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٤﴾

৬৪. আমি সেখানে উপনীত করলাম অপর দলটিকে।

وَاَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ﴿٦٥﴾

৬৫. এবং আমি উদ্ধার করলাম মূসা (عليه السلام) ও তার সঙ্গী সকলকে।

ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٦﴾

৬৬. তৎপর নিমজ্জিত করলাম অপর দলটিকে।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۖ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٦٧﴾

৬৭. এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে; কিন্তু তাদের অধিকাংশই মু'মিন নয়।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٦٨﴾

৬৮. তোমার প্রতিপালক, তিনি অবশ্যই পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾

৬৯. তাদের নিকট ইবরাহীম (عليه السلام)-এর বৃত্তান্ত বর্ণনা কর।

৭০. তিনি যখন তাঁর পিতা ও তার সম্প্রদায়কে বলেছিলেনঃ তোমরা কিসের ইবাদত কর?

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ﴿٧٠﴾

৭১. তারা বললোঃ আমরা প্রতিমার পূজা করি এবং আমরা নিষ্ঠার সাথে তাদের সম্মানেরত থাকবো।

قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عَاكِفِينَ ﴿٧١﴾

৭২. তিনি বললেনঃ তোমরা প্রার্থনা করলে তারা কি শোনে?

قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَكُمْ إِذْ تَدْعُونَ ﴿٧٢﴾

৭৩. অথবা তারা কি তোমাদের উপকার কিংবা অপকার করতে পারে?

أَوْ يَنْفَعُونَكُمْ أَوْ يَضُرُّونَ ﴿٧٣﴾

৭৪. তারা বললোঃ বরং আমরা আমাদের পিতৃ-পুরুষদেরকে পেয়েছি এরূপই করতে।

قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿٧٤﴾

৭৫. তিনি বললেনঃ তোমরা কি সেগুলো সম্বন্ধে ভেবে দেখেছো, যেগুলোর পূজা করছো?

قَالَ أَفَرَأَيْتُمْ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ﴿٧٥﴾

৭৬. তোমরা এবং তোমাদের পূর্ব-পুরুষরা?

أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمُ الْأَقْدَمُونَ ﴿٧٦﴾

৭৭. তারা সবাই আমার শত্রু, জগতসমূহের প্রতিপালক ব্যতীত।

فَإِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِي إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿٧٧﴾

৭৮. তিনি আমাকে সৃষ্টি করেছেন তিনিই আমাকে পথ প্রদর্শন করেন।

الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ﴿٧٨﴾

৭৯. তিনিই আমাকে দান করেন আহার্য ও পানীয়।

وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ ﴿٧٩﴾

৮০. এবং রোগাক্রান্ত হলে তিনিই আমাকে রোগমুক্ত করেন।

وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ﴿٨٠﴾

৮১. আর তিনিই আমার মৃত্যু ঘটাবেন, অতঃপর আমাকে পুনর্জীবিত করবেন।

وَالَّذِي يُمِيتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِ ﴿٨١﴾

৮২. আশা করি তিনি কিয়ামত দিবসে আমার অপরাধসমূহ মার্জনা করে দিবেন।

وَالَّذِي أَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لِي خَطِيئَتِي يَوْمَ الدِّينِ ﴿٨٢﴾

رَبِّ هَبْ لِيْ حُكْمًا وَّ اَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٣﴾

৮৩. হে আমার প্রতিপালক! আমাকে প্রজ্ঞা দান করুন এবং সৎকর্ম পরায়ণদের সাথে আমাকে মিলিয়ে দিন।

وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿٨٤﴾

৮৪. আমাকে পরবর্তীদের মধ্যে সত্যভাষী করুন।

وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ ﴿٨٥﴾

৮৫. এবং আমাকে সুখময় জান্নাতের অধিকারীদের অন্তর্ভুক্ত করুন!

وَاغْفِرْ لِاَبِيْٓ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٨٦﴾

৮৬. আর আমার পিতাকে ক্ষমা করুন, সে তো পথভ্রষ্টদের অন্তর্ভুক্ত ছিল।

وَلَا تُخْزِنِيْ يَوْمَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٨٧﴾

৮৭. এবং আমাকে লাঞ্ছিত করবেন না পুনরুত্থান দিবসে।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ﴿٨٨﴾

৮৮. যেদিন ধন-সম্পদ ও সন্তান-সন্ততি কোন কাজে আসবে না।

اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٩﴾

৮৯. সেদিন উপকৃত হবে শুধু সে, যে আল্লাহর নিকট আসবে বিশুদ্ধ অন্তঃকরণ নিয়ে।

وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٩٠﴾

৯০. মুত্তাকীদের নিকটবর্তী করা হবে জান্নাত।

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ﴿٩١﴾

৯১. এবং পথভ্রষ্টদের জন্য উন্মোচিত করা হবে জাহান্নাম।

وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٩٢﴾

৯২. তাদেরকে বলা হবেঃ তারা কোথায়– তোমরা যাদের ইবাদত করতে?

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٩٣﴾

৯৩. আল্লাহর পরিবর্তে? তারা কি তোমাদের সাহায্য করতে পারে অথবা তারা কি আত্মরক্ষা করতে সক্ষম?

فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ﴿٩٤﴾

৯৪. অতঃপর তাদেরকে ও পথভ্রষ্টদেরকে অধোমুখী করে জাহান্নামে নিক্ষেপ করা হবে।

وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ﴿٩٥﴾

৯৫. এবং ইবলীসের বাহিনীর সকলকে।

قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٩٦﴾

৯৬. তারা সেখানে বিতর্কে লিপ্ত হয়ে বলবে–

تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٧﴾

৯৭. আল্লাহর শপথ! আমরা তো স্পষ্ট বিভ্রান্তিতেই ছিলাম।

اِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٨﴾

৯৮. যখন আমরা তোমাদেরকে জগতসমূহের প্রতিপালকের সমকক্ষ মনে করতাম।

وَمَآ اَضَلَّنَآ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٩٩﴾

৯৯. আমাদেরকে দুষ্কৃতিকারীরাই বিভ্রান্ত করেছিল।

فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِيْنَ ﴿١٠٠﴾

১০০. পরিণামে আমাদের কোন সুপারিশকারী নেই।

وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ﴿١٠١﴾

১০১. কোন সহৃদয় বন্ধু ও নেই।

فَلَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٢﴾

১০২. হায়, যদি আমাদের একবার প্রত্যাবর্তনের সুযোগ ঘটতো তাহলে আমরা মু'মিনদের অন্তর্ভুক্ত হতাম।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾

১০৩. এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে; কিন্তু তাদের অধিকাংশ মু'মিন নয়।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾

১০৪. তোমার প্রতিপালক, তিনি তো পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু।

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ ِالْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٠٥﴾

১০৫. নূহ (عليه السلام)-এর সম্প্রদায় রাসূলদের প্রতি মিথ্যারোপ করেছিল।

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٠٦﴾

১০৬. যখন তাদের ভ্রাতা নূহ (عليه السلام) তাদেরকে বললেনঃ তোমরা কি সাবধান হবে না?

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٠٧﴾

১০৭. আমি নিশ্চয়ই তোমাদের জন্যে এক বিশ্বস্ত রাসূল।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٠٨﴾

১০৮. অতএব আল্লাহকে ভয় কর ও আমার আনুগত্য কর।

وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٩﴾

১০৯. আমি তোমাদের নিকট এর জন্যে কোন প্রতিদান চাই না; আমার পুরস্কার তো জগতসমূহের প্রতিপালকের নিকটই আছে।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١١٠﴾

১১০. সুতরাং তোমরা আল্লাহকে ভয় কর এবং আমার আনুগত্য কর।

قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْاَرْذَلُوْنَ ﴿١١١﴾

১১১. তারা বললোঃ আমরা কি তোমার প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করবো অথচ নিচু শ্রেণীর লোকেরা তোমার অনুসরণ করছে?

قَالَ وَمَا عِلْمِىْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١١٢﴾

১১২. (নূহ (عليه السلام)) বললেনঃ তারা কি করতো তা আমার জানা নেই।

اِنْ حِسَابُهُمْ اِلَّا عَلٰى رَبِّىْ لَوْ تَشْعُرُوْنَ ﴿١١٣﴾

১১৩. তাদের হিসাব গ্রহণ আমার প্রতিপালকেরই কাজ; যদি তোমরা বুঝতে।

وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٤﴾

১১৪. মু'মিনদেরকে তাড়িয়ে দেয়া আমার কাজ নয়।

اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١١٥﴾

১১৫. আমি শুধু একজন স্পষ্ট সতর্ককারী।

قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰنُوْحُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمَرْجُوْمِيْنَ ﴿١١٦﴾

১১৬. তারা বললোঃ হে নূহ (عليه السلام)! তুমি যদি বিরত না হও তবে তুমি অবশ্যই প্রস্তরাঘাত প্রাপ্তদের অন্তর্ভুক্ত হবে।

قَالَ رَبِّ اِنَّ قَوْمِىْ كَذَّبُوْنِ ﴿١١٧﴾

১১৭. (নূহ (عليه السلام)) বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমার সম্প্রদায় আমাকে অস্বীকার করছে।

فَافْتَحْ بَيْنِىْ وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَّنَجِّنِىْ وَمَنْ مَّعِىَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٨﴾

১১৮. সুতরাং আমার ও তাদের মধ্যে স্পষ্ট মীমাংসা করে দিন এবং আমাকে ও আমার সাথে যেসব মু'মিন আছে তাদেরকে রক্ষা করুন!

فَاَنْجَيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿١١٩﴾

১১৯. অতঃপর আমি তাকে ও তার সঙ্গে যারা বোঝাই নৌ-যানে ছিল তাদেরকে রক্ষা করলাম।

ثُمَّ اَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبٰقِيْنَ ﴿١٢٠﴾

১২০. তৎপর অবশিষ্ট সবাইকে নিমজ্জিত করলাম।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٢١﴾

১২১. এতে অবশ্যই রয়েছে নিদর্শন; কিন্তু তাদের অধিকাংশই বিশ্বাসী নয়।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٢﴾

১২২. এবং তোমার প্রতিপালক, তিনিই যিনি পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু।

كَذَّبَتْ عَادُ ِۨالْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٣﴾

১২৩. আ'দ সম্প্রদায় রাসূলদেরকে অস্বীকার করেছিল।

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٤﴾

১২৪. যখন তাদের ভ্রাতা হূদ (عليه السلام) তাদেরকে বললেনঃ তোমরা কি সাবধান হবে না?

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٢٥﴾

১২৫. আমি তোমাদের জন্যে এক বিশ্বস্ত রাসূল।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٢٦﴾

১২৬. অতএব, তোমরা আল্লাহ্‌কে ভয় কর এবং আমার আনুগত্য কর।

وَمَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٧﴾

১২৭. আমি তোমাদের নিকট এর জন্যে কোন প্রতিদান চাই না, আমার পুরস্কার জগতসমূহের প্রতিপালকের নিকট রয়েছে।

اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِيْعٍ اٰيَةً تَعْبَثُوْنَ ﴿١٢٨﴾

১২৮. তোমরা কি প্রতিটি উচ্চ স্থানে স্মৃতি স্তম্ভ নির্মাণ করছো নিরর্থক?

وَتَتَّخِذُوْنَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ﴿١٢٩﴾

১২৯. আর তোমরা প্রাসাদ নির্মাণ করছো এই মনে করে যে, তোমরা চিরস্থায়ী হবে।

وَاِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِيْنَ ﴿١٣٠﴾

১৩০. এবং যখন তোমরা (অন্য কারো উপর) আঘাত হান তখন আঘাত হেনে থাকো কঠোরভাবে।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٣١﴾

১৩১. তোমরা আল্লাহকে ভয় কর, আমার আনুগত্য কর।

وَ اتَّقُوا الَّذِيْٓ اَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٢﴾

১৩২. ভয় কর তাঁকে যিনি তোমাদেরকে দিয়েছেন সেই সমুদয় বস্তুসমূহ যা তোমরা জান।

اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّ بَنِيْنَ ﴿١٣٣﴾

১৩৩. তোমাদেরকে দিয়েছেন চতুষ্পদ জন্তু ও সন্তান-সন্ততি।

وَجَنّٰتٍ وَّ عُيُوْنٍ ﴿١٣٤﴾

১৩৪. এবং উদ্যান ও ঝর্ণাধারা।

اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٣٥﴾

১৩৫. আমি তোমাদের জন্যে আশঙ্কা করি মহা দিবসের শাস্তির।

قَالُوْا سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَوَعَظْتَ اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِيْنَ ﴿١٣٦﴾

১৩৬. তারা বললোঃ তুমি উপদেশ দাও অথবা না-ই দাও, উভয়ই আমাদের জন্যে সমান।

اِنْ هٰذَآ اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣٧﴾

১৩৭. এটাতো পূর্ববর্তীদেরই স্বভাব।

وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿١٣٨﴾

১৩৮. আমরা শাস্তি প্রাপ্তদের অন্তর্ভুক্ত নই।

فَكَذَّبُوْهُ فَاَهْلَكْنٰهُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٩﴾

১৩৯. অতঃপর তারা তাকে প্রত্যাখ্যান করলো এবং আমি তাদেরকে ধ্বংস করলাম, এতে অবশ্যই আছে নিদর্শন; কিন্তু তাদের অধিকাংশই মু'মিন নয়।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٤٠﴾

১৪০. এবং তোমার প্রতিপালক, তিনি পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু।

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٤١﴾

১৪১. সামূদ সম্প্রদায় রাসূলদেরকে অস্বীকার করেছিল।

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ صٰلِحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٤٢﴾

১৪২. যখন তাদের ভ্রাতা সালেহ (عليه السلام) তাদেরকে বললেনঃ তোমরা কি (আল্লাহকে) ভয় করবে না?

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٤٣﴾

১৪৩. আমি তো তোমাদের জন্যে এক বিশ্বস্ত রাসূল।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوْنِ ﴿١٤٤﴾

১৪৪. অতএব তোমরা আল্লাহকে ভয় কর এবং আমার আনুগত্য কর।

وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى

১৪৫. আমি তোমাদের নিকট এজন্য কোন প্রতিদান চাই না, আমার

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٤٥﴾

পুরস্কার জগতসমূহের প্রতিপালকের নিকটই আছে।

اَتُتْرَكُوْنَ فِيْ مَا هٰهُنَآ اٰمِنِيْنَ ﴿١٤٦﴾

১৪৬. তোমাদেরকে কি নিরাপদে ছেড়ে দেয়া হবে, যা এখানে (দুনিয়ায়) আছে তাতে–

فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿١٤٧﴾

১৪৭. উদ্যান, ঝর্ণাধারায় সমূহে

وَّزُرُوْعٍ وَّنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيْمٌ ﴿١٤٨﴾

১৪৮. ও শস্যক্ষেত্রে এবং সুকোমল গুচ্ছ বিশিষ্ট খেজুর বাগানসমূহে?

وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا فٰرِهِيْنَ ﴿١٤٩﴾

১৪৯. তোমরা নৈপুণ্যের সাথে পাহাড় কেটে গৃহ নির্মাণ করছো।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٥٠﴾

১৫০. তোমরা আল্লাহকে ভয় কর ও আমার আনুগত্য কর।

وَلَا تُطِيْعُوْٓا اَمْرَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿١٥١﴾

১৫১. এবং সীমালঙ্ঘনকারীদের আদেশ মান্য করো না।

الَّذِيْنَ يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿١٥٢﴾

১৫২. যারা পৃথিবীতে অশান্তি সৃষ্টি করে এবং শান্তি স্থাপন করে না।

قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٥٣﴾

১৫৩. তারা বললোঃ তুমি যাদুগ্রস্ত দের অন্যতম।

مَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا فَاْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٥٤﴾

১৫৪. তুমি তো আমাদের মত একজন মানুষ, কাজেই তুমি যদি সত্যবাদী হও তবে একটি নিদর্শন উপস্থিত কর।

قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿١٥٥﴾

১৫৫. সালেহ (عليه السلام) বললেনঃ এই যে উষ্ট্রী, এর জন্যে আছে পানি পানের পালা এবং তোমাদের জন্যে আছে পানি পানের পালা, নির্ধারিত একদিনে।

وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥٦﴾

১৫৬. এবং তোমরা ওর কোন অনিষ্ট সাধন করো না; করলে মহাদিবসের শাস্তি তোমাদের উপর আপতিত হবে।

فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِيْنَ ﴿١٥٧﴾

১৫৭. কিন্তু তারা ওকে হত্যা করলো, পরিণামে তারা অনুতপ্ত হলো।

فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ
وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٨﴾

১৫৮. অতঃপর শাস্তি তাদেরকে গ্রাস করলো, এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে; কিন্তু তাদের অধিকাংশই মু'মিন ছিল না।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٥٩﴾

১৫৯. তোমার প্রতিপালক, তিনি তো পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু।

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ ِالْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٦٠﴾

১৬০. লূত (عليه السلام)-এর কওম রাসূলদেরকে অস্বীকার করেছিল।

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٦١﴾

১৬১. যখন তাদের ভ্রাতা লূত তাদেরকে বললেনঃ তোমরা কি (আল্লাহকে) ভয় করবে না?

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٦٢﴾

১৬২. আমি তো তোমাদের জন্যে এক বিশ্বস্ত রাসূল।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٦٣﴾

১৬৩. সুতরাং তোমরা আল্লাহকে ভয় কর এবং আমার আনুগত্য কর।

وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ
اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٤﴾

১৬৪. আমি এর জন্যে তোমাদের নিকট কোন প্রতিদান চাই না, আমার পুরস্কার তো জগতসমূহের প্রতি-পালকের নিকটই রয়েছে।

اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٥﴾

১৬৫. (জৈবিক চাহিদার জন্য) তোমরা কি দুনিয়ার পুরুষগুলোর কাছেই যাও,

وَتَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ ؕ
بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُوْنَ ﴿١٦٦﴾

১৬৬. আর তোমাদের প্রতিপালক তোমাদের জন্যে যে স্ত্রীলোক সৃষ্টি করেছেন তাদেরকে তোমরা বর্জন করছ? বরং তোমরা সীমা-লঙ্ঘনকারী সম্প্রদায়।

قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰلُوْطُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِيْنَ ﴿١٦٧﴾

১৬৭. তার বললোঃ হে লূত (عليه السلام)! তুমি যদি বিরত না হও তবে অবশ্যই তুমি নির্বাসিত হবে।

قَالَ اِنِّيْ لِعَمَلِكُمْ مِّنَ الْقَالِيْنَ ﴿١٦٨﴾

১৬৮. লূত (عليه السلام) বললেনঃ আমি তোমাদের এ কর্মকে ঘৃণা করি।

رَبِّ نَجِّنِيْ وَاَهْلِيْ مِمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٩﴾

১৬৯. হে আমার প্রতিপালক! আমাকে ও আমার পরিবারবর্গকে, তারা যা করে তা হতে রক্ষা কর।

فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٧٠﴾

১৭০. অতঃপর আমি তাকে এবং তার পরিবার-পরিজন সবাইকে রক্ষা করলাম।

اِلَّا عَجُوْزًا فِي الْغٰبِرِيْنَ ﴿١٧١﴾

১৭১. এক বৃদ্ধা ব্যতীত, সে ছিল পশ্চাতে অবস্থানকারীদের অন্তর্ভুক্ত।

ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿١٧٢﴾

১৭২. অতঃপর অপর সবাইকে ধ্বংস করলাম।

وَ اَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٣﴾

১৭৩. এবং তাদের উপর (শাস্তি মূলক) বৃষ্টি বর্ষণ করেছিলাম, তাদের জন্যে এই বৃষ্টি ছিল কত নিকৃষ্ট! যাদেরকে ভীতিপ্রদর্শন করা হয়েছিল।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٤﴾

১৭৪. এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে; কিন্তু তাদের অধিকাংশই মু'মিন নয়।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٧٥﴾

১৭৫. নিশ্চয়ই তোমার প্রতিপালক, তিনি পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু।

كَذَّبَ اَصْحٰبُ لْـَٔيْكَةِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧٦﴾

১৭৬. আয়কাবাসীরা (মাদইয়ানের অধিবাসী) রাসূলদেরকে অস্বীকার করেছিল।

اِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾

১৭৭. যখন শু'আইব (عليه السلام) তাদেরকে বলেছিলেনঃ তোমরা কি (আল্লাহকে) ভয় করবে না?

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٧٨﴾

১৭৮. আমি তোমাদের জন্যে এক বিশ্বস্ত রাসূল।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٧٩﴾

১৭৯. সুতরাং তোমরা আল্লাহকে ভয় কর ও আমার আনুগত্য কর।

وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٠﴾

১৮০. আমি তোমাদের নিকট এর জন্যে কোন প্রতিদান চাই না; আমার পুরস্কার জগতসমূহের প্রতিপালকের নিকটই আছে।

اَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ﴿١٨١﴾

১৮১. তোমরা মাপে পূর্ণ মাত্রায় দেবে; যারা মাপে ঘাটতি করে তাদের অন্তর্ভুক্ত হয়ো না।

وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ﴿١٨٢﴾

১৮২. এবং তোমরা ওজন করবে সঠিক দাঁড়ি-পাল্লায়।

وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿١٨٣﴾

১৮৩. লোকদেরকে তাদের প্রাপ্ত বস্তু কম দিবে না এবং পৃথিবীতে বিপর্যয় ঘটাবে না।

وَاتَّقُوا الَّذِىْ خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٨٤﴾

১৮৪. এবং তোমরা ভয় কর তাঁকে যিনি তোমাদেরকে এবং তোমাদের পূর্বে যারা গত হয়েছে তাদেরকে সৃষ্টি করেছেন।

قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٨٥﴾

১৮৫. তারা বললোঃ তুমি তো যাদুগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত।

وَمَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَاِنْ نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿١٨٦﴾

১৮৬. তুমি আমাদেরই মত একজন মানুষ, আমরা মনে করি, তুমি মিথ্যাবাদীদের অন্তর্ভুক্ত।

فَاَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٨٧﴾

১৮৭. তুমি যদি সত্যবাদী হও তবে আকাশের একখন্ড আমাদের উপর ফেলে দাও।

قَالَ رَبِّىْٓ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨٨﴾

১৮৮. তিনি বললেনঃ আমার প্রতিপালক ভাল জানেন যা তোমরা কর।

فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ۚ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٨٩﴾

১৮৯. অতঃপর তারা তাকে প্রত্যাখ্যান করলো, পরে তাদেরকে মেঘাচ্ছন্ন দিবসের শাস্তি গ্রাস করলো; এটা তো ছিল এক ভীষণ দিবসের শাস্তি!

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١٩٠﴾

১৯০. এতে অবশ্যই রয়েছে নিদর্শন; কিন্তু তাদের অধিকাংশই মু'মিন নয়।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٩١﴾

১৯১. এবং নিঃসন্দেহে তোমার প্রতিপালক, তিনি পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু।

وَإِنَّهُ لَتَنزِيلُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٩٢﴾

১৯২. নিশ্চয়ই ওটা (আল-কুরআন) জগতসমূহের প্রতিপালক হতে অবতারিত।

نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ ﴿١٩٣﴾

১৯৩. জিবরাঈল (عليه السلام) এটা নিয়ে অবতরণ করেছেন।

عَلَىٰ قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنذِرِينَ ﴿١٩٤﴾

১৯৪. তোমার হৃদয়ে, যাতে তুমি সতর্ককারী হতে পার।

بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِينٍ ﴿١٩٥﴾

১৯৫. অবতীর্ণ করা হয়েছে সুস্পষ্ট আরবী ভাষায়।

وَإِنَّهُ لَفِي زُبُرِ الْأَوَّلِينَ ﴿١٩٦﴾

১৯৬. পরবর্তীদের কিতাবসমূহে অবশ্যই এর উল্লেখ আছে।

أَوَلَمْ يَكُن لَّهُمْ آيَةً أَن يَعْلَمَهُ عُلَمَاءُ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٩٧﴾

১৯৭. বানী ইসরাঈলের পন্ডিতরা এটা অবগত আছে– এটা কি তাদের জন্যে নিদর্শন নয়?

وَلَوْ نَزَّلْنَاهُ عَلَىٰ بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ ﴿١٩٨﴾

১৯৮. আমি যদি এটা কোন অনারবের প্রতি অবতীর্ণ করতাম,

فَقَرَأَهُ عَلَيْهِم مَّا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿١٩٩﴾

১৯৯. এবং ওটা সে তাদের নিকট পাঠ করতো, তবে তারা তাতে ঈমান আনতো না।

كَذَٰلِكَ سَلَكْنَاهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ﴿٢٠٠﴾

২০০. এভাবে আমি অপরাধীদের অন্তরে তা (অবিশ্বাস) সঞ্চার করেছি।

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٢٠١﴾

২০১. তারা এতে ঈমান আনবে না যতক্ষণ না তারা পীড়াদায়ক শাস্তি প্রত্যক্ষ করে।

فَيَأْتِيَهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٠٢﴾

২০২. ফলে এটা তাদের নিকট এসে পড়বে আকস্মিকভাবে, তারা কিছুই বুঝতে পারবে না।

فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ﴿٢٠٣﴾

২০৩. তখন তারা বলবেঃ আমাদেরকে কি অবকাশ দেয়া হবে?

اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٢٠٤﴾

২০৪. তারা কি তবে আমার শাস্তির ব্যাপারে তাড়াহুড়া করছে।

اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ﴿٢٠٥﴾

২০৫. তুমি কিছু ভেবে দেখেছ? যদি আমি তাদেরকে দীর্ঘকাল ভোগ-বিলাস করতে দিই,

ثُمَّ جَآءَهُمْ مَّا كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿٢٠٦﴾

২০৬. এবং পরে তাদেরকে যে বিষয়ে সতর্ক করা হয়েছিল তা তাদের নিকট এসে পড়ে,

مَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يُمَتَّعُوْنَ ﴿٢٠٧﴾

২০৭. তখন তাদের ভোগ-বিলাসের উপকরণ তাদের কোন কাজে আসবে না?

وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا لَهَا مُنْذِرُوْنَ ﴿٢٠٨﴾

২০৮. আমি এমন কোন জনপদ ধ্বংস করিনি যার জন্যে সতর্ককারী ছিল না।

ذِكْرٰى وَمَا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٢٠٩﴾

২০৯. এটা উপদেশ স্বরূপ, আর আমি কখনও অত্যাচারী নই।

وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ ﴿٢١٠﴾

২১০. শয়তানরা এ নিয়ে (কুরআনসহ) অবতীর্ণ হয়নি।

وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٢١١﴾

২১১. তারা এ কাজের যোগ্য নয় এবং তারা এর সামর্থ্যও রাখে না।

اِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُوْلُوْنَ ﴿٢١٢﴾

২১২. তাদেরকে তো শ্রবণের সুযোগ হতে দূরে রাখা হয়েছে।

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ مِنَ الْمُعَذَّبِيْنَ ﴿٢١٣﴾

২১৩. অতএব তুমি অন্য কোন মা'বূদকে আল্লাহর সাথে ডেকো না, ডাকলে তুমি শাস্তি প্রাপ্তদের অন্তর্ভুক্ত হবে।

وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ﴿٢١٤﴾

২১৪. তোমার নিকটাত্মীয়বর্গকে সতর্ক করে দাও।[১]

১। (আব্দুল্লাহ) ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেছেন, "তোমরা নিকটাত্মীয় এবং তাদের মধ্যেও বিশেষ করে নিজের গোত্রকে সাবধান করে দাও।" (সূরা শু'আরাঃ ২১৪) আয়াতটি নাযিল হলে রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বের হয়ে সাফা পাহাড়ে গিয়ে উঠলেন এবং 'ইয়া

وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢١٥﴾

২১৫. এবং যারা তোমার অনুসরণ করে সেই সব মু'মিনের প্রতি নম্র ব্যবহার কর।

فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّي بَرِيءٌ مِمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢١٦﴾

২১৬. তারা যদি তোমার অবাধ্যতা করে তবে তুমি বলোঃ তোমরা যা কর তার জন্যে আমি দায়ী নই।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ﴿٢١٧﴾

২১৭. তুমি নির্ভর কর পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু আল্লাহর উপর।

الَّذِي يَرَاكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٢١٨﴾

২১৮. যিনি তোমাকে দেখেন যখন তুমি দন্ডায়মান হও (নামাযের জন্য)।

وَتَقَلُّبَكَ فِي السَّاجِدِينَ ﴿٢١٩﴾

২১৯. এবং দেখেন সিজদাকারীদের সাথে তোমার উঠা-বসা।

إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٢٢٠﴾

২২০. তিনি তো সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ ﴿٢٢١﴾

২২১. তোমাদেরকে কি জানাবো কার নিকট শয়তানরা অবতীর্ণ হয়?

تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٢٢٢﴾

২২২. তারা তো অবতীর্ণ হয় প্রত্যেকটি ঘোর মিথ্যাবাদী ও পাপীর নিকট।

يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثَرُهُمْ كَاذِبُونَ ﴿٢٢٣﴾

২২৩. তারা কান পেতে থাকে এবং তাদের অধিকাংশই মিথ্যাবাদী।

وَالشُّعَرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ﴿٢٢٤﴾

২২৪. এবং কবিদের অনুসরণ করে তারা যারা বিভ্রান্ত।

সাবাহাহ' (সকাল বেলার বিপদ, সাবধান) বলে চিৎকার করে ডাকলেন। সবাই সচকিত হয়ে বলে উঠলো, এভাবে কে ডাকছে? তারপর সবাই তাঁর পাশে গিয়ে সমবেত হলো তিনি বললেনঃ আচ্ছা, আমি যদি এখন তোমাদেরকে বলি যে, এ পাহাড়ের অপর দিক থেকে একটি অশ্বারোহী সৈন্যবাহিনী আক্রমণের জন্য প্রস্তুত হয়ে আছে, তাহলে কি তোমরা আমাকে বিশ্বাস করবে? সমবেত সবাই বললো, আপনার ব্যাপারে আমাদের মিথ্যার অভিজ্ঞতা নাই। তখন তিনি বললেনঃ আমি তোমাদেরকে একটি কঠিন আযাব সম্পর্কে সাবধান করে দিচ্ছি। এ কথা শুনে আবু লাহাব বললো, তোমার অকল্যাণ হোক। তুমি কি এ জন্যই আমাদেরকে সমবেত করেছো? এরপর সে সেখান থেকে চলে গেল। তখন নাযিল হলো- "আবূ লাহাবের হাত ভেঙে গিয়েছে।" (সূরা লাহাবঃ ১) ঐ সময় আ'মাশ আয়াতটিতে 'তাব্বা' শব্দের পূর্বে 'কাদ' শব্দ যোগ করে 'ওয়াকাদ তাব্বা' পড়েছেন। (বুখারী, হাদীস নং ৪৯৭১)

اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِىْ كُلِّ وَادٍ يَّهِيْمُوْنَ ﴿٢٥﴾

২২৫. তুমি কি দেখো না তারা বিভ্রান্ত হয়ে (কল্পনার জগতে) প্রত্যেক উপত্যকায় ঘুরে বেড়ায়?

وَاَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٢٦﴾

২২৬. এবং তারা বলে যা তারা করে না।

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا ؕ وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اَىَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ﴿٢٧﴾

২২৭. কিন্তু তারা ব্যতীত যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে এবং আল্লাহকে বারবার স্মরণ করে ও অত্যাচারিত হবার পর প্রতিশোধ গ্রহণ করে।[১] অত্যাচারিরা শীঘ্রই জানবে তাদের গন্তব্যস্থল কোথায়!

سُوْرَةُ النَّمْلِ مَكِّيَّةٌ

সূরাঃ নাম্‌ল, মাক্কী

اٰيَاتُهَا ٩٣ رُكُوْعَاتُهَا ٧

(আয়াতঃ ৯৩, রুকূ'ঃ ৭)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়,পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

طٰسٓ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ﴿١﴾

১. ত্বোয়া-সীন, এগুলো আল-কুরআনের এবং সুস্পষ্ট কিতাবের আয়াত।

هُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾

২. পথ নির্দেশ ও সুসংবাদ মু'মিনদের জন্যে।

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٣﴾

৩. যারা নামায কায়েম করে ও যাকাত দেয় আর তারাই আখিরাতে নিশ্চিত বিশ্বাসী।

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ؕ ﴿٤﴾

৪. যারা আখিরাতে বিশ্বাস করে না তাদের দৃষ্টিতে তাদের কর্মকে আমি শোভনীয় করেছি, ফলে তারা বিভ্রান্তিতে ঘুরে বেড়ায়।

১। মু'মিন কবি, বিপক্ষের সমালোচনার জবাব কবিতার মাধ্যমে প্রদান করেছিলেন। যেমন কবি হাস্‌সান ইবনে সাবিত (রাযিআল্লাহু আনহু) করেছিলেন।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْأَخْسَرُونَ ﴿٥﴾

৫. এদেরই জন্যে আছে কঠিন শাস্তি এবং এরাই আখিরাতে সর্বাধিক ক্ষতিগ্রস্ত।

وَإِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْآنَ مِن لَّدُنْ حَكِيمٍ عَلِيمٍ ﴿٦﴾

৬. নিশ্চয়ই তোমাকে আল-কুরআন দেয়া হচ্ছে প্রজ্ঞাময়, সর্বজ্ঞের নিকট হতে।

إِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِأَهْلِهِ إِنِّي آنَسْتُ نَارًا ۖ سَآتِيكُم مِّنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ آتِيكُم بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ﴿٧﴾

৭. স্মরণ কর সেই সময়ের কথা, যখন মূসা (عليه السلام) তার পরিবারবর্গকে বলেছিলেনঃ আমি আগুন দেখেছি, সত্বর আমি সেখান হতে তোমাদের জন্যে কোন খবর আনবো অথবা তোমাদের জন্যে আনবো জ্বলন্ত অঙ্গার যাতে তোমরা আগুন পোহাতে পার।

فَلَمَّا جَاءَهَا نُودِيَ أَن بُورِكَ مَن فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا ۖ وَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨﴾

৮. অতঃপর তিনি যখন ওর নিকট আসলেন, তখন ঘোষিত হলোঃ বরকতময় সে যে আছে এই অগ্নির মধ্যে এবং যারা আছে ওর চতুষ্পার্শ্বে, জগতসমূহের প্রতিপালক আল্লাহ পবিত্র ও মহিমান্বিত।

يَا مُوسَىٰ إِنَّهُ أَنَا اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٩﴾

৯. হে মূসা (عليه السلام)! আমিই আল্লাহ, পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।

وَأَلْقِ عَصَاكَ ۖ فَلَمَّا رَآهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَانٌّ وَلَّىٰ مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ ۚ يَا مُوسَىٰ لَا تَخَفْ إِنِّي لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُونَ ﴿١٠﴾

১০. তুমি তোমার লাঠি নিক্ষেপ কর, অতঃপর যখন তিনি লাঠিকে সর্পের ন্যায় ছুটাছুটি করতে দেখলেন তখন তিনি পিছনের দিকে ছুটতে লাগলেন এবং ফিরেও তাকালেন না; হে মূসা (عليه السلام)! ভীত হয়ো না, নিশ্চয়ই আমি এমন, আমার সান্নিধ্যে রাসূলগণ ভয় পান না।

إِلَّا مَن ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًا بَعْدَ سُوءٍ فَإِنِّي غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١١﴾

১১. তবে যারা যুলুম করার পর মন্দ-কর্মের পরিবর্তে সৎকর্ম করে তাদের প্রতি আমি ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

وَاَدْخِلْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ۖ فِيْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿١٢﴾

১২. এবং তোমার হাত তোমার বক্ষপার্শ্বে মধ্যে প্রবেশ করাও; এটা বের হয়ে কোনরূপ অনিষ্টতা ছাড়া আসবে শুভ্রোজ্জ্বল হয়ে; এটা ফিরাউন ও তার সম্প্রদায়ের নিকট আনীত নয়টি নিদর্শনের অন্তর্গত; তারা তো দুষ্কর্ম পরায়ণ লোক।

فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٣﴾

১৩. অতঃপর যখন তাদের নিকট আমার স্পষ্ট নিদর্শন আসলো তখন তারা বললোঃ এটা সুস্পষ্ট যাদু।

وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ؕ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤﴾

১৪. তারা অন্যায় ও উদ্ধতভাবে নিদর্শনগুলো প্রত্যাখ্যান করলো; যদিও তাদের অন্তর এগুলোকে সত্য বলে গ্রহণ করেছিল। দেখো, বিপর্যয় সৃষ্টিকারীদের পরিণাম কি হয়েছিল।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥﴾

১৫. আমি অবশ্যই দাউদ (عليه السلام)-কে ও সুলাইমান (عليه السلام)-কে জ্ঞান দান করেছিলাম এবং তাঁরা বলেছিলেনঃ সমস্ত প্রশংসা আল্লাহর যিনি আমাদেরকে তাঁর বহু মু'মিন বান্দাদের উপর শ্রেষ্ঠত্ব দিয়েছেন।

وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَاُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ؕ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾

১৬. সুলাইমান (عليه السلام) হয়েছিলেন দাউদ (عليه السلام)-এর উত্তরাধিকারী এবং তিনি বলেছিলেনঃ হে মানুষ! আমাদেরকে পাখীসমূহের ভাষা শিক্ষা দেয়া হয়েছে এবং আমাদেরকে সবকিছু হতে দেয়া হয়েছে; এটা অবশ্যই সুস্পষ্ট অনুগ্রহ।

وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٧﴾

১৭. সুলাইমান (عليه السلام)-এর সামনে সমবেত করা হলো তাঁর বাহিনীকে- জ্বিন, মানুষ ও পাখীসমূহকে এবং তাদেরকে বিন্যস্ত করা হলো বিভিন্ন দলে।

حَتّٰٓى اِذَآ اَتَوْا عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ
يّٰٓاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ
سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٨﴾

১৮. যখন তারা পিপীলিকা অধ্যুষিত উপত্যকায় পৌঁছলো তখন এক পিপীলিকা বললোঃ হে পিপীলিকা বাহিনী! তোমরা তোমাদের গৃহে প্রবেশ কর, যেন সুলাইমান এবং তার বাহিনী তাদের অজ্ঞাতসারে তোমাদেরকে পদতলে পিষে না ফেলে।

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَ قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ
اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى
وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِيْ
بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩﴾

১৯. সুলাইমান (عليه السلام) ওর উক্তিতে মৃদু হাসলেন এবং বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আপনি আমাকে সামর্থ্য দিন যাতে আমি আপনার প্রতি কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করতে পারি, আমার প্রতি ও আমার পিতা-মাতার প্রতি আপনি যে অনুগ্রহ করেছেন তার জন্যে এবং যাতে আমি সৎকর্ম করতে পারি, যা আপনি পছন্দ করেন এবং আপনার অনুগ্রহে আমাকে আপনার সৎকর্মপরায়ণ বান্দাদের শ্রেণীভুক্ত করুন!

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ اَرَى الْهُدْهُدَ ۖ
اَمْ كَانَ مِنَ الْغَآئِبِيْنَ ﴿٢٠﴾

২০. সুলাইমান (عليه السلام) পাখীসমূহের সন্ধান নিলেন এবং বললেনঃ ব্যাপার কি? হুদ্‌হুদ্‌কে দেখছি না যে! সে অনুপস্থিত না কি?

لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ لَاَاذْبَحَنَّهٗٓ
اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢١﴾

২১. সে উপযুক্ত কারণ না দর্শালে আমি অবশ্যই তাকে কঠিন শাস্তি দিবো অথবা যবাহ করে ফেলবো।

فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ
وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍ بِنَبَاٍ يَّقِيْنٍ ﴿٢٢﴾

২২. (তখন) সে সন্নিকটেই ছিল এবং বললোঃ আপনি যা অবগত নন আমি তা অবগত হয়েছি এবং সাবা হতে সুনিশ্চিত সংবাদ নিয়ে এসেছি।

اِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ وَاُوْتِيَتْ مِنْ

২৩. আমি এক নারীকে দেখলাম যে সে তাদের উপর রাজত্ব করছে;

كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾

তাকে সবকিছু দেয়া হয়েছে এবং তার আছে এক বিরাট সিংহাসন।

وَجَدْتُّهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٢٤﴾

২৪. আমি তাকে ও তার সম্প্রদায়কে দেখলাম তারা আল্লাহর পরিবর্তে সূর্যকে সিজদা করছে; শয়তান তাদের কার্যাবলী তাদের নিকট শোভন করেছে এবং তাদেরকে সৎপথ হতে বিরত করেছে; ফলে তারা সৎপথ পায় না।

اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿٢٥﴾

২৫. বিরত করেছে এই জন্যে যে, তারা যেন সিজদা না করে আল্লাহকে যিনি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর লুকায়িত বস্তুকে প্রকাশ করেন, যিনি জানেন, যা তোমরা গোপন কর এবং যা তোমরা ব্যক্ত কর।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٦﴾ السجدة

২৬. আল্লাহ, তিনি ছাড়া কোন সত্য মা'বূদ নেই, তিনি মহা আরশের অধিপতি।

قَالَ سَنَنْظُرُ اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٧﴾

২৭. (সুলাইমান (عليه السلام)) বললেনঃ আমি দেখবো তুমি কি সত্য বলেছো, না তুমি মিথ্যাবাদী?

اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾

২৮. তুমি যাও আমার এই পত্র নিয়ে এবং এটা তাদের নিকট অর্পণ কর; অতঃপর তাদের নিকট হতে সরে থেকো এবং লক্ষ্য করো তাদের প্রতিক্রিয়া কি?

قَالَتْ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْٓ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٩﴾

২৯. সেই নারী বললোঃ হে পরিষদবর্গ! আমাকে এক সম্মানিত পত্র দেয়া হয়েছে।

اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٣٠﴾

৩০. এটা সুলাইমান (عليه السلام)-এর নিকট হতে এবং এটা এই দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে,

اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣١﴾

৩১. অহমিকা বশে আমাকে অমান্য করো না এবং আনুগত্য স্বীকার করে আমার নিকট উপস্থিত হও।

قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْۤ اَمْرِيْ ۚ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ﴿٣٢﴾

৩২. তিনি (বিলকিস) বললেনঃ হে পরিষদবর্গ! আমার এ সমস্যায় তোমরা পরামর্শ দাও; আমি যা সিদ্ধান্ত করি তা তো তোমাদের উপস্থিতিতেই করি।

قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّاُولُوْا بَاْسٍ شَدِيْدٍ ۙ وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ﴿٣٣﴾

৩৩. তারা বললোঃ আমরা তো শক্তিশালী ও কঠোর যোদ্ধা; তবে সিদ্ধান্ত গ্রহণের ক্ষমতা আপনারই, কি আদেশ করবেন তা আপনি ভেবে দেখুন।

قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَجَعَلُوْۤا اَعِزَّةَ اَهْلِهَاۤ اَذِلَّةً ۚ وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٤﴾

৩৪. তিনি বললেনঃ রাজা-বাদশাহরা যখন কোন জনপদে প্রবেশ করেন তখন ওকে বিপর্যস্ত করে দেন এবং তথাকার মর্যাদাবান ব্যক্তিদেরকে অপদস্থ করেন; এরাও এইরূপই করবে।

وَاِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣٥﴾

৩৫. আমি তাদের নিকট উপঢৌকন পাঠাচ্ছি; দেখি, দূতেরা কি উত্তর নিয়ে ফিরে আসে!

فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ ۫ فَمَاۤ اٰتٰىنِ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّاۤ اٰتٰىكُمْ ۚ بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ﴿٣٦﴾

৩৬. অতঃপর যখন দূত সুলাইমান (عليه السلام)-এর নিকট আসলো তখন সুলাইমান (عليه السلام) বললেনঃ তোমরা কি আমাকে ধন-সম্পদ দিয়ে সাহায্য করছো? আল্লাহ আমাকে যা দিয়েছেন তা তোমাদেরকে যা দিয়েছেন তা হতে উৎকৃষ্ট; বরং তোমরা তোমাদের উপঢৌকন নিয়ে সন্তুষ্ট থাকো।

اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ

৩৭. তাদের নিকট ফিরে যাও, আমি অবশ্যই তাদের বিরুদ্ধে নিয়ে

لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَآ اَذِلَّةً وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٣٧﴾

আসবো এক সৈন্যবাহিনী যার মুকাবিলা করবার শক্তি তাদের নেই। আমি অবশ্যই তাদেরকে তথা হতে বহিষ্কার করবো লাঞ্ছিতভাবে এবং তারা হবে অবনমিত।

قَالَ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣٨﴾

৩৮. সুলাইমান (عليه السلام) আরো বললেনঃ হে আমার পরিষদবর্গ! তারা আত্মসমর্পণ করে আমার নিকট আসার পূর্বে তোমাদের মধ্যে কে তার সিংহাসন আমার নিকট নিয়ে আসবে?

قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ﴿٣٩﴾

৩৯. এক শক্তিশালী জ্বিন বললোঃ আপনি আপনার স্থান হতে উঠবার পূর্বে আমি ওটা আপনার নিকট এনে দিবো এবং এই ব্যাপারে আমি অবশ্যই ক্ষমতাবান, বিশ্বস্ত।

قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۖ لِيَبْلُوَنِيْٓ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ؕ وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ كَرِيْمٌ ﴿٤٠﴾

৪০. কিতাবের জ্ঞান যার ছিল, সে বললোঃ আপনি চক্ষুর পলক ফেলবার পূর্বেই আমি ওটা আপনাকে এনে দিবো। সুলাইমান (عليه السلام) যখন ওটা সামনে রক্ষিত অবস্থায় দেখলেন তখন তিনি বললেনঃ এটা আমার প্রতিপালকের অনুগ্রহ, যাতে তিনি আমাকে পরীক্ষা করতে পারেন, আমি কৃতজ্ঞ না অকৃতজ্ঞ; যে কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে, সে তা করে নিজের কল্যাণের জন্যে এবং যে অকৃতজ্ঞ হয়, সে জেনে রাখুক যে, আমার প্রতিপালক অভাবমুক্ত মহানুভব।

قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيْٓ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٤١﴾

৪১. সুলাইমান বললেনঃ তার সিংহাসনের আকৃতি বদলিয়ে দাও; দেখি সে সঠিক দিশা পাচ্ছে, না সে বিভ্রান্তদের অন্তর্ভুক্ত হয়?

فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ؕ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَ اُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ ﴿٤٢﴾

৪২. ঐ নারী যখন আসলেনঃ তখন তাকে জিজ্ঞেস করা হলো তোমার সিংহাসনটি কি এই রূপই? তিনি বললেনঃ এটা তো যেন ওটাই, আমাদেরকে ইতিপূর্বে প্রকৃত জ্ঞান দান করা হয়েছে এবং আমরা আত্মসমর্পণও করেছি।

وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٤٣﴾

৪৩. আল্লাহর পরিবর্তে তিনি যার পূজা করতেন তাই তাঁকে সত্য হতে নিবৃত্ত করেছিল, নিঃসন্দেহে তিনি কাফির সম্প্রদায়ের অন্তর্ভুক্ত ছিলেন।

قِيْلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَاَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ؕ قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ وَاَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٤﴾

৪৪. তাঁকে বলা হলোঃ এই প্রাসাদে প্রবেশ কর। যখন তিনি ওটা দেখলেন তখন উনি ওটাকে এক গভীর জলাশয় মনে করলেন এবং সে তার উভয় পায়ের গোছা অনাবৃত করলেন, সুলাইমান (عليه السلام) বললেনঃ এটি তো স্বচ্ছ স্ফটিক মন্ডিত প্রাসাদ। সেই নারী বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমি তো নিজের প্রতি যুলুম করেছিলাম, আমি সুলাইমান (عليه السلام)-এর সাথে জগতসমূহের প্রতিপালক আল্লাহর নিকট আত্মসমর্পণ করছি।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٥﴾

৪৫. আমি অবশ্যই সামূদ সম্প্রদায়ের নিকট তাদের ভ্রাতা সালেহ (عليه السلام)-কে পাঠিয়েছিলাম, এই আদেশসহ, তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর; কিন্তু তারা দ্বিধা বিভক্ত হয়ে বিতর্কে লিপ্ত হলো।

قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۚ لَوْ لَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ

৪৬. তিনি বললেনঃ হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা কেন কল্যাণের পূর্বে অকল্যাণ ত্বরান্বিত করতে

تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٦﴾

চাচ্ছ? কেন তোমরা আল্লাহর নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করছো না, যাতে তোমরা অনুগ্রহভাজন হতে পার।

قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ۚ قَالَ طٰٓئِرُكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ﴿٤٧﴾

৪৭. তারা বললোঃ তোমাকে ও তোমার সঙ্গে যারা আছে তাদেরকে আমরা অমঙ্গলের কারণ মনে করি; সালেহ (عليه السلام) বললেনঃ তোমাদের শুভাশুভ আল্লাহর ইখতিয়ারে, বস্তুতঃ তোমরা এমন এক সম্প্রদায় যাদেরকে পরীক্ষা করা হচ্ছে।

وَكَانَ فِى الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿٤٨﴾

৪৮. আর সেই শহরে ছিল এমন নয়জন[১] ব্যক্তি যারা দেশে বিপর্যয় সৃষ্টি করতো এবং সৎকর্ম করতো না।

قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ وَاَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٤٩﴾

৪৯. তারা বললোঃ তোমরা আল্লাহর নামে শপথ গ্রহণ করঃ আমরা রাত্রিকালে তাকে ও তার পরিবার-পরিজনকে অবশ্যই আক্রমণ করবো, অতঃপর তার অভিভাবককে নিশ্চিত বলবোঃ তার পরিবার-পরিজনের হত্যা আমরা প্রত্যক্ষ করিনি; আমরা অবশ্যই সত্যবাদী।

وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٠﴾

৫০. তারা এক চক্রান্ত করেছিল এবং আমিও এক কৌশল অবলম্বন করলাম; কিন্তু তারা বুঝতে পারেনি।

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥١﴾

৫১. অতএব দেখো, তাদের চক্রান্তে পরিণাম কি হয়েছে— আমি অবশ্যই তাদেরকে ও তাদের সম্প্রদায়ের সকলকে ধ্বংস করেছি।

فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةًۢ بِمَا ظَلَمُوْا ۗ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٥٢﴾

৫২. এই তো তাদের ঘর-বাড়ি, সীমালঙ্ঘন হেতু যা জনশূন্য অবস্থায় পড়ে আছে; এতে জ্ঞানী সম্প্রদায়ের জন্যে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে।

১। যারা সালেহ (আলাইহিস সালাম) কে হত্যার ষড়যন্ত্র করেছিল এবং তারা সকলেই পরে ধ্বংস হয়েছিল।

وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٣﴾

৫৩. এবং যারা মু'মিন ও মুত্তাকী ছিল তাদেরকে আমি উদ্ধার করেছি।

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿٥٤﴾

৫৪. (স্মরণ কর) লূত (عليه السلام)-এর কথা, তিনি তাঁর সম্প্রদায়কে বলেছিলেনঃ তোমরা জেনে শুনে কেন অশ্লীল কাজ করছো?

اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿٥٥﴾

৫৫. তোমরা কি কাম-তৃপ্তির জন্যে নারীকে ছেড়ে পুরুষে আসক্ত হবে? তোমরা তো এক অজ্ঞ সম্প্রদায়।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْٓا اٰلَ لُوْطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٥٦﴾

৫৬. উত্তরে তার সম্প্রদায় শুধু বললোঃ লূত পরিবারকে তোমাদের জনপদ হতে বহিষ্কৃত কর, এরা তো এমন লোক যারা পবিত্র সাজতে চায়।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫ قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٥٧﴾

৫৭. অতঃপর তাঁকে ও তাঁর পরিজনবর্গকে আমি উদ্ধার করলাম, তার স্ত্রী ব্যতীত, তাকে করেছিলাম ধ্বংসপ্রাপ্তদের অন্তর্ভুক্ত।

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٥٨﴾

৫৮. তাদের উপর ভয়ঙ্কর বৃষ্টি বর্ষণ করেছিলাম; যাদেরকে ভীতি প্রদর্শন করা হয়েছিল তাদের জন্যে এই বর্ষণ ছিল কত মারাত্মক!

قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى ؕ ءٰٓاللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٥٩﴾

৫৯. বল, প্রশংসা আল্লাহরই এবং শান্তি তাঁর মনোনীত বান্দাদের প্রতি; শ্রেষ্ঠ কি আল্লাহ, না তারা যাদেরকে শরীক করে তারা?[১]

১। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যার মধ্যে তিনটি গুণ আছে সে ঈমানের স্বাদ পায়। (১) তার নিকট অপর সকলের চেয়ে আল্লাহ্ ও রাসূল প্রিয়তর হয়। (২) কাউকে ভালবাসলে আল্লাহ্‌র জন্যই ভালবাসে। (৩) আগুনে নিক্ষিপ্ত হওয়াকে যেমন অপ্রিয় জানে, কুফরীতে ফিরে যাওয়াকেও তেমনি অপ্রিয় মনে করে। (বুখারী, হাদীস নং ১৬)

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَأَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ؕ أَءِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ﴿٦٠﴾

৬০. কে তিনি, যিনি সৃষ্টি করেছেন আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী এবং আকাশ হতে তোমাদের জন্যে বর্ষণ করেন বৃষ্টি? অতঃপর আমি ওটা দ্বারা মনোরম উদ্যান সৃষ্টি করি, ওর বৃক্ষাদি উৎপন্ন করবার ক্ষমতা তোমাদের নেই। আল্লাহর সাথে অন্য কোন মা'বূদ আছে কি? বরং তারা এমন এক সম্প্রদায় যারা সত্যবিচ্যুত হয়।

أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَآ أَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ؕ أَءِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾

৬১. কে তিনি, যিনি পৃথিবীকে করেছেন বাসোপযোগী এবং ওর মাঝে প্রবাহিত করেছেন নদীনালা এবং এতে স্থাপন করেছেন সুদৃঢ় পর্বত ও দুই সমুদ্রের মধ্যে সৃষ্টি করেছেন অন্তরায়? আল্লাহর সাথে অন্য কোন মা'বূদ আছে কি? বরং তাদের অনেকেই জানে না।

أَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْأَرْضِ ؕ أَءِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾

৬২. কে তিনি যিনি (নিরুপায়ের) আর্তের আহ্বানে সাড়া দেন, যখন সে তাঁকে ডাকে এবং বিপদ-আপদ দূরীভূত করেন এবং কে তোমাদেরকে পৃথিবীতে প্রতিনিধি করেন? আল্লাহর সাথে অন্য কোন মা'বূদ আছে কি? তোমরা উপদেশ অতি সামান্যই গ্রহণ করে থাকো।

أَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ؕ أَءِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٣﴾

৬৩. তিনিই বা কে, যিনি তোমাদেরকে স্থলের ও পানির অন্ধকারে পথ-প্রদর্শন করেন এবং যিনি স্বীয় অনুগ্রহের প্রাক্কালে সুসংবাদবাহী বায়ু প্রেরণ করেন? আল্লাহর সাথে অন্য কোন মা'বূদ আছে কি? তারা যাকে শরীক করে আল্লাহ তা হতে বহু উর্ধ্বে।

أَمَّنْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَمَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۗ أَإِلَٰهٌ مَعَ اللَّهِ ۚ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٦٤﴾

৬৪. কে তিনি, যিনি সৃষ্টির সূচনা করেন, অতঃপর ওর পুনরাবৃত্তি করেন এবং যিনি তোমাদেরকে আকাশ ও পৃথিবী হতে রুযী দান করেন? আল্লাহর সাথে অন্য কোন মা'বূদ আছে কি? বলঃ তোমরা যদি সত্যবাদী হও, তবে তোমাদের প্রমাণ পেশ কর।

قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿٦٥﴾

৬৫. বলঃ আল্লাহ ব্যতীত আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে কেউই অদৃশ্য বিষয়ের জ্ঞান রাখে না এবং তারা জানে না তারা কখন পুনরুত্থিত হবে।

بَلِ ادَّارَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْآخِرَةِ ۚ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِنْهَا ۚ بَلْ هُمْ مِنْهَا عَمُونَ ﴿٦٦﴾

৬৬. বরং আখিরাত সম্পর্কে তাদের জ্ঞান তো নিঃশেষ হয়েছে; তারা তো এ বিষয়ে সন্দেহের মধ্যে রয়েছে, বরং এ বিষয়ে তারা অন্ধ।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَإِذَا كُنَّا تُرَابًا وَآبَاؤُنَا أَئِنَّا لَمُخْرَجُونَ ﴿٦٧﴾

৬৭. কাফিররা বলেঃ আমরা ও আমাদের পিতৃপুরুষরা মৃত্তিকায় পরিণত হয়ে গেলেও কি আমাদেরকে পুনরুত্থিত করা হবে?

لَقَدْ وُعِدْنَا هَٰذَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٨﴾

৬৮. নিশ্চয়ই এই বিষয়ে আমাদেরকে এবং পূর্বে আমাদের পূর্বপুরুষদেরকেও ভীতি প্রদর্শন করা হয়েছিল। এটা তো পূর্ববর্তী উপকথা ব্যতীত আর কিছুই নয়।

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٦٩﴾

৬৯. বলঃ পৃথিবীতে পরিভ্রমণ কর এবং দেখো, অপরাধীদের পরিণাম কিরূপ হয়েছে।

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِي ضَيْقٍ مِمَّا يَمْكُرُونَ ﴿٧٠﴾

৭০. তাদের সম্পর্কে তুমি দুঃখ করো না এবং তাদের ষড়যন্ত্রে মনঃক্ষুণ্ন হয়ো না।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٧١﴾

৭১. তারা বলেঃ তোমরা যদি সত্যবাদী হও তবে বল, কখন এই প্রতিশ্রুতি পূর্ণ হবে?

قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِىْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٧٢﴾

৭২. বলঃ তোমরা যে বিষয়ে তাড়াহুড়া করতে চাচ্ছে সম্ভবতঃ তার কিছু তোমাদের নিকটবর্তী হয়েছে।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾

৭৩. নিশ্চয়ই তোমার প্রতিপালক মানুষের প্রতি অনুগ্রহশীল; কিন্তু তাদের অধিকাংশই অকৃতজ্ঞ।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٤﴾

৭৪. তাদের অন্তর যা গোপন করে এবং তারা যা প্রকাশ করে তা তোমার প্রতিপালক অবশ্যই জানেন।

وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ فِى السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٥﴾

৭৫. আকাশে ও পৃথিবীতে এমন কোন গোপন রহস্য নেই, যা সুস্পষ্ট কিতাবে (লওহে মাহফুজে) নেই।

اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَكْثَرَ الَّذِىْ هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٧٦﴾

৭৬. বানী ইসরাঈল যে সমস্ত বিষয়ে মতভেদ করে, এই কুরআন তার অধিকাংশ তাদের নিকট বর্ণনা করে।

وَاِنَّهٗ لَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٧﴾

৭৭. আর নিশ্চয়ই এটা মু'মিনদের জন্যে হিদায়াত ও রহমত।

اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِىْ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ﴿٧٨﴾

৭৮. নিশ্চয়ই তোমার প্রতিপালক নিজ সিদ্ধান্ত অনুযায়ী তাদের মধ্যে ফায়সালা করে দিবেন। তিনি পরাক্রমশালী, সর্বজ্ঞ।

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۗ اِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ﴿٧٩﴾

৭৯. অতএব, আল্লাহর উপর নির্ভর কর; তুমি তো স্পষ্ট সত্যের উপর প্রতিষ্ঠিত।

اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٨٠﴾

৮০. মৃতকে তো তুমি কথা শুনাতে পারবে না, বধিরকেও পারবে না আহ্বান শুনাতে, যখন তারা পিঠ ফিরিয়ে চলে যায়।

وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِى الْعُمْىِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨١﴾

৮১. তুমি অন্ধদেরকে তাদের পথভ্রষ্টতা হতে পথে আনতে পারবে না। তুমি শুনাতে পারবে শুধু তাদেরকে যারা আমার নিদর্শনসমূহে বিশ্বাস করে। আর তারাই আত্মসমর্পণকারী।

وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٨٢﴾

৮২. যখন ঘোষিত শাস্তি তাদের উপর আসবে তখন আমি মৃত্তিকা গর্ভ হতে বের করবো এক জীব, যা তাদের সাথে কথা বলবে, এই জন্যে যে, মানুষ আমার নিদর্শনগুলোকে বিশ্বাস করত না।

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿٨٣﴾

৮৩. যেদিন আমি সমবেত করবো প্রত্যেক সম্প্রদায় হতে এক একটি দলকে, যারা আমার নিদর্শনাবলী প্রত্যাখ্যান করতো এবং তাদেরকে সারিবদ্ধ করা হবে।

حَتّٰۤى اِذَا جَآءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِىْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّاذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾

৮৪. যখন তারা সমাগত হবে তখন (আল্লাহ) বলবেনঃ তোমরা আমার নিদর্শন প্রত্যাখ্যান করেছিলে, আর ওটা তোমরা জ্ঞানায়ত্ত করতে পারোনি? না, তোমরা অন্য কিছু করছিলে?

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٨٥﴾

৮৫. সীমালঙ্ঘন হেতু তাদের উপর ঘোষিত শাস্তি এসে পড়বে; ফলে তারা কিছুই বলতে পারবে না।

اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٨٦﴾

৮৬. তারা কি অনুধাবন করে না যে, আমি রাত্রি সৃষ্টি করেছি তাদের বিশ্রামের জন্যে এবং দিবসকে করেছি আলোকপ্রদ? এতে মু'মিন সম্প্রদায়ের জন্যে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে।

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ﴿٨٧﴾

৮৭. আর যেদিন শিঙ্গায় ফুৎকার দেয়া হবে, সেদিন আল্লাহ যাদেরকে চাইবেন, তারা ব্যতীত আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সবাই ভীত-বিহ্বল হয়ে পড়বে এবং সবাই তাঁর নিকট আসবে বিনীত অবস্থায়।

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ؕ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٨٨﴾

৮৮. তুমি পর্বতমালা দেখে অচল মনে করছো; কিন্তু (সেদিন) এগুলো হবে মেঘপুঞ্জের ন্যায় চলমান; এটা আল্লাহরই সৃষ্টি-নৈপুণ্য, যিনি সব-কিছুকে করেছেন সুষম। তোমরা যা কর সে সম্বন্ধে তিনি সম্যক অবগত।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ﴿٨٩﴾

৮৯. যে সৎকর্ম নিয়ে আসবে, সে এর চেয়ে উৎকৃষ্টতর প্রতিফল পাবে এবং সেদিন তারা শঙ্কা হতে নিরাপদ থাকবে।

وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ؕ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٠﴾

৯০. আর যে অসৎকর্ম নিয়ে আসবে, তাকে অধোমুখে নিক্ষেপ করা হবে জাহান্নামে, তোমরা যা করতে তারই প্রতিফল তোমাদেরকে দেয়া হচ্ছে।

اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِيْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَيْءٍ ۫ وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩١﴾

৯১. আমি তো আদিষ্ট হয়েছি এই নগরীর (মক্কা শরীফের) প্রভুর ইবাদত করতে, যিনি একে করেছেন সম্মানিত। সব কিছু তাঁরই। আমি আরো আদিষ্ট হয়েছি, যেন আমি আত্মসমর্পণকারীদের অন্তর্ভুক্ত হই।[১]

وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ

৯২. আমি আরো আদিষ্ট হয়েছি, কুরআন তিলাওয়াত করতে; অতঃপর

১। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) মক্কা বিজয়ের দিন বলেছেনঃ নিশ্চয়ই আল্লাহ্ এই শহরকে (মক্কাকে) হারাম (মহিমান্বিত ও মর্যাদাসম্পন্ন) করেছেন। এই শহরের বৃক্ষের কাঁটা ভাঙ্গা যাবে না। শিকার তাড়ানো যাবে না। রাস্তায় পরে থাকা জিনিস প্রচারের উদ্দেশ্য ব্যতীত কেউ কুড়িয়ে নিতে পারবে না। (বুখারী, হাদীস নং ১৫৮৭)

لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ اِنَّمَاۤ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿٩٢﴾

যে ব্যক্তি সৎপথ অনুসরণ করে, সে সৎপথ অনুসরণ করে নিজেরই কল্যাণের জন্যে এবং কেউ ভ্রান্তপথ অবলম্বন করলে তুমি বলোঃ আমি তো শুধু সতর্ককারীদের মধ্যে একজন।

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾

৯৩. আর বলঃ প্রশংসা আল্লাহ্‌রই, তিনি তোমাদেরকে সত্বর দেখাবেন তাঁর নিদর্শন; তখন তোমরা তা বুঝতে পারবে। তোমরা যা কর সে সম্বন্ধে তোমার প্রতিপালক গাফিল (অনবহিত) নন।

سُوْرَةُ الْقَصَصِ مَكِّيَّةٌ

সূরাঃ কাসাস্, মাক্কী

اٰيَاتُهَا ٨٨ رُكُوْعَاتُهَا ٩

(আয়াতঃ ৮৮, রুকূ'ঃ ৯)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহ্‌র নামে (শুরু করছি)

طٰسٓمّٓ ﴿١﴾

১. ত্বোয়া-সীন-মীম।

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾

২. এই আয়াতগুলো সুস্পষ্ট কিতাবের।

نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٣﴾

৩. আমি তোমার নিকট মূসা (عليه السلام) ও ফিরআ'উনের কিছু বৃত্তান্ত যথাযথভাবে বর্ণনা করছি, মু'মিন সম্প্রদায়ের উদ্দেশ্যে।

اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْاَرْضِ وَجَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْيٖ

৪. নিশ্চয়ই ফিরআ'উন দেশে পরাক্রমশালী হয়েছিল এবং তথাকার অধিবাসীবৃন্দকে বিভিন্ন শ্রেণীতে বিভক্ত করে তাদের একটি শ্রেণীকে

نِسَآءَهُمْ ۚ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ④

সে হীনবল করেছিল, তাদের পুত্রদেরকে সে হত্যা করতো এবং নারীদেরকে সে জীবিত রাখতো। নিশ্চয় সে ছিল বিপর্যয় সৃষ্টিকারী।

وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِى الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ اَئِمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ الْوٰرِثِيْنَ ⑤

৫. আমি ইচ্ছা করলাম, সে দেশে যাদেরকে হীনবল করা হয়েছিল, তাদের প্রতি অনুগ্রহ করতে; তাদেরকে নেতৃত্ব দান করতে ও দেশের অধিকারী করতে।

وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِى الْاَرْضِ وَنُرِىَ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ⑥

৬. আর তাদেরকে দেশের ক্ষমতায় প্রতিষ্ঠিত করতে, আর ফিরআ'উন, হামান ও তাদের বাহিনীকে তা দেখিয়ে দিতে, যা তাদের নিকট হতে তারা আশঙ্কা করতো।

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ مُوْسٰٓى اَنْ اَرْضِعِيْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِى الْيَمِّ وَلَا تَخَافِىْ وَلَا تَحْزَنِىْ ۚ اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ⑦

৭. মূসা-জননীর অন্তরে আমি ইলহাম করলামঃ শিশুটিকে তুমি স্তন্যদান করতে থাকো; যখন তুমি তার সম্পর্কে কোন আশঙ্কা করবে তখন তাকে দরিয়ায় নিক্ষেপ করো এবং ভয় করো না, চিন্তাও করো না; আমি তাকে তোমার নিকট ফিরিয়ে দিবো এবং তাকে রাসূলদের একজন করবো।

فَالْتَقَطَهٗٓ اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّحَزَنًا ۗ اِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خٰطِـِٕيْنَ ⑧

৮. অতঃপর ফিরআ'উনের লোকজন তাকে উঠিয়ে নিলো। এর পরিণাম তো এই ছিল যে, সে তাদের শত্রু ও দুঃখের কারণ হবে। নিশ্চয় ফিরআ'উন, হামান ও তাদের বাহিনী ছিল ভুলকারী।

وَقَالَتِ امْرَاَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّىْ وَلَكَ ۗ لَا تَقْتُلُوْهُ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا

৯. ফিরআ'উনের স্ত্রী বললোঃ এই শিশু আমার ও তোমার চক্ষু শীতলকারী। তাকে হত্যা করো না, সে আমাদের উপকারে আসতে

وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ⑨

পারে, আমরা তাকে সন্তান হিসেবেও গ্রহণ করতে পারি। প্রকৃতপক্ষে তারা (এর পরিণাম) বুঝতে পারেনি।

وَاَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ؕ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ لَوْلَاۤ اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ⑩

১০. মূসা-জননীর হৃদয় অস্থির হয়ে পড়েছিল; যাতে সে আস্থাশীল হয় তজ্জন্যে আমি তার হৃদয়কে দৃঢ় করে না দিলে সে তার পরিচয়তো প্রকাশ করেই দিতো।

وَقَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ۚ فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ⑪

১১. সে মূসার ভগ্নিকে বললোঃ তার পিছনে পিছনে যাও; সে তাদের অজ্ঞাতসারে দূর হতে তাকে দেখছিল।

وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰۤى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَهُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ ⑫

১২. পূর্ব হতেই আমি ধাত্রী স্তন্য পানে তাকে বিরত রেখেছিলাম। (মূসার ভগ্নি) বললোঃ তোমাদেরকে কি আমি এমন এক পরিবারের সন্ধান দিবো যারা তোমাদের হয়ে একে লালন-পালন করবে এবং এর মঙ্গলকামী হবে?

فَرَدَدْنٰهُ اِلٰۤى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ⑬

১৩. অতঃপর আমি তাকে ফিরিয়ে দিলাম তার জননীর নিকট যাতে তার চক্ষু জুড়ায়, সে চিন্তা না করে এবং বুঝতে পারে যে, আল্লাহর প্রতিশ্রুতি সত্য; কিন্তু অধিকাংশ মানুষই এটা জানে না।

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰۤى اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ⑭

১৪. যখন (মূসা عليه السلام) পূর্ণ যৌবনে উপনীত ও পরিণত বয়স্ক হলেন তখন আমি তাঁকে হিকমত ও জ্ঞান দান করলাম; এভাবে আমি সৎকর্ম-পরায়ণদেরকে পুরস্কার প্রদান করে থাকি।

وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ

১৫. তিনি নগরীতে প্রবেশ করলেন, যখন এর অধিবাসীরা ছিল অসতর্ক

فِيهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۖ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِيْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِيْ مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۖ قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ۗ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾

সেখায় তিনি দু'টি লোককে সংঘর্ষে লিপ্ত দেখলেন, একজন তাঁর নিজ দলের এবং অপরজন তাঁর শত্রু দলের। মূসা (عليه السلام)-এর দলের লোকটি তার শত্রুর বিরুদ্ধে তাঁর সাহায্য প্রার্থনা করলো, তখন মূসা (عليه السلام) তাকে ঘুষি মারলেন; এভাবে তিনি তাকে হত্যা করে বসলেন। মূসা (عليه السلام) বললেনঃ এটা শয়তানের কান্ড; সে তো প্রকাশ্য শত্রু ও পথভ্রষ্টকারী।

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لِيْ فَغَفَرَ لَهٗ ۗ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٦﴾

১৬. তিনি বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমি তো আমার নিজের প্রতি যুলুম করেছি; সুতরাং আমাকে ক্ষমা করুন! অতঃপর তিনি তাকে ক্ষমা করলেন। তিনি তো ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

قَالَ رَبِّ بِمَآ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٧﴾

১৭. তিনি আরো বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! তুমি যেহেতু আমার উপর অনুগ্রহ করেছো, সুতরাং আমি কখনো অপরাধীদের সাহায্যকারী হবো না।

فَاَصْبَحَ فِي الْمَدِيْنَةِ خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ يَسْتَصْرِخُهٗ ۗ قَالَ لَهٗ مُوْسٰى اِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٨﴾

১৮. অতঃপর ভীত সতর্ক অবস্থায় সেই নগরীতে তাঁর প্রভাত হলো। হঠাৎ তিনি শুনতে পেলেন, পূর্বদিন যে ব্যক্তি তাঁর সাহায্য চেয়েছিল, সে তাঁর সাহায্যের জন্যে চীৎকার করছে। মূসা (عليه السلام) তাকে বললেনঃ তুমি তো স্পষ্টই একজন বিভ্রান্ত ব্যক্তি।

فَلَمَّآ اَنْ اَرَادَ اَنْ يَّبْطِشَ بِالَّذِيْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اَتُرِيْدُ اَنْ تَقْتُلَنِيْ كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا

১৯. অতঃপর মূসা (عليه السلام) যখন উভয়ের (মূসা ও ইসরাঈলী ব্যক্তিটির) শত্রু ধরতে উদ্যত হলেন,

بِالْأَمْسِ ۚ إِنْ تُرِيدُ إِلَّا أَنْ تَكُونَ جَبَّارًا فِي الْأَرْضِ وَمَا تُرِيدُ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْمُصْلِحِينَ ﴿١٩﴾

তখন সে (ইসরাঈলী) বলে উঠলোঃ হে মূসা (عليه السلام)! গতকাল তুমি যেমন এক ব্যক্তিকে হত্যা করেছো, সেভাবে আমাকেও কি হত্যা করতে চাচ্ছ? তুমি তো পৃথিবীতে স্বেচ্ছাচারী হতে চাচ্ছ, শান্তি স্থাপনকারী হতে চাও না!

وَجَاءَ رَجُلٌ مِنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ يَسْعَىٰ قَالَ يَا مُوسَىٰ إِنَّ الْمَلَأَ يَأْتَمِرُونَ بِكَ لِيَقْتُلُوكَ فَاخْرُجْ إِنِّي لَكَ مِنَ النَّاصِحِينَ ﴿٢٠﴾

২০. নগরীর দূরপ্রান্ত হতে এক ব্যক্তি ছুটে আসলো ও বললোঃ হে মূসা (عليه السلام)! ফিরআ'উনের পরিষদবর্গ তোমাকে হত্যা করার ষড়যন্ত্র করছে। সুতরাং তুমি বাইরে চলে যাও, আমি তো তোমার মঙ্গলকামী।

فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا يَتَرَقَّبُ قَالَ رَبِّ نَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٢١﴾

২১. ভীত সতর্ক অবস্থায় তিনি তথা (মিসর) হতে বের হয়ে পড়লেন এবং বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আপনি যালিম সম্প্রদায় হতে আমাকে রক্ষা করুন।

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَاءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسَىٰ رَبِّي أَنْ يَهْدِيَنِي سَوَاءَ السَّبِيلِ ﴿٢٢﴾

২২. যখন মূসা (عليه السلام) মাদ্ইয়ান অভিমুখে যাত্রা করলেন তখন বললেনঃ আশা করি আমার প্রতিপালক আমাকে সরল পথ-প্রদর্শন করবেন।

وَلَمَّا وَرَدَ مَاءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةً مِنَ النَّاسِ يَسْقُونَ وَوَجَدَ مِنْ دُونِهِمُ امْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ۖ قَالَتَا لَا نَسْقِي حَتَّىٰ يُصْدِرَ الرِّعَاءُ ۖ وَأَبُونَا شَيْخٌ كَبِيرٌ ﴿٢٣﴾

২৩. যখন তিনি মাদ্ইয়ানের পানির (কূপের) নিকট পৌছলেন তখন দেখলেন যে, একদল লোক তাদের জানোয়ারগুলোকে পানি পান করাচ্ছে এবং তাদের পশ্চাতে দু'জন নারী তাদের পশুগুলোকে থামিয়ে রাখছে। মূসা (عليه السلام) বললেনঃ তোমাদের কি ব্যাপার? তারা বললোঃ আমরা আমাদের জানোয়ারগুলোকে পানি পান করাতে পারি না, যতক্ষণ

রাখালরা তাদের জানোয়ারগুলোকে নিয়ে সরে না যায়। আমাদের পিতা অতি বৃদ্ধ।

فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّىْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَىَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿٢٤﴾

২৪. (মূসা (عليه السلام)) তখন তাদের জানোয়ারগুলোকে পানি পান করালেন। অতঃপর তিনি ছায়ার নীচে আশ্রয় গ্রহণ করলেন ও বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আপনি আমার প্রতি যে অনুগ্রহ করবেন আমি তার মুখাপেক্ষী।

فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا تَمْشِىْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ۖ قَالَتْ اِنَّ اَبِىْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ اَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ؕ فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ۫ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥﴾

২৫. তখন নারীদ্বয়ের একজন লজ্জা ও শালীনতা সহকারে তার নিকট আসলো এবং বললোঃ আমার পিতা আপনাকে আমন্ত্রণ করছেন, আমাদের জানোয়ারগুলোকে পানি পান করাবার পারিশ্রমিক আপনাকে দেয়ার জন্যে। অতঃপর মূসা (عليه السلام) তাঁর নিকট এসে সমস্ত বৃত্তান্ত বর্ণনা করলে তিনি বললেনঃ ভয় করো না, তুমি যালিম সম্প্রদায়ের কবল হতে বেঁচে গেছ।

قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا يٰۤاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ ۫ اِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَاْجَرْتَ الْقَوِىُّ الْاَمِيْنُ ﴿٢٦﴾

২৬. তাদের একজন বললোঃ হে পিতা! তুমি একে মজুর হিসেবে নিযুক্ত কর, কারণ তোমার মজুর হিসেবে উত্তম হবে সে ব্যক্তি, যে শক্তিশালী, বিশ্বস্ত।

قَالَ اِنِّىْۤ اُرِيْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ اِحْدَى ابْنَتَىَّ هٰتَيْنِ عَلٰۤى اَنْ تَاْجُرَنِىْ ثَمٰنِىَ حِجَجٍ ۚ فَاِنْ اَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَاۤ اُرِيْدُ اَنْ اَشُقَّ عَلَيْكَ ؕ سَتَجِدُنِىْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾

২৭. তিনি মূসা (عليه السلام)-কে বললেনঃ আমি আমার এই কন্যাদ্বয়ের একজনকে তোমার সাথে বিয়ে দিতে চাই, এই শর্তে যে, তুমি আট বছর আমার কাজ করবে, যদি তুমি দশ বছর পূর্ণ কর, সেটা তোমার ইচ্ছা। আমি তোমাকে কষ্ট

দিতে চাই না। ইন্‌শাআল্লাহ (আল্লাহ ইচ্ছা করলে) তুমি আমাকে সদাচারী পাবে।

قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ ؕ اَيَّمَا الْاَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿٢٨﴾

২৮. (মূসা (عليه السلام)) বললেনঃ আপনার ও আমার মধ্যে এই চুক্তিই রইলো। এ দু'টি মেয়াদের কোন একটি আমি পূর্ণ করলে আমার বিরুদ্ধে কোন অভিযোগ থাকবে না। আমরা যে বিষয়ে কথা বলছি আল্লাহ তার সাক্ষী।

فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَسَارَ بِاَهْلِهٖۤ اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّيْۤ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْۤ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿٢٩﴾

২৯. মূসা (عليه السلام) যখন মেয়াদ পূর্ণ করবার পর সপরিবারে যাত্রা শুরু করলেন তখন তিনি তূর পর্বতের দিকে আগুন দেখতে পেলেন। তিনি তাঁর পরিজনবর্গকে বললেনঃ তোমরা অপেক্ষা কর, আমি আগুন দেখেছি, সম্ভবতঃ আমি সেখান হতে তোমাদের জন্যে খবর আনতে পারি অথবা একখন্ড জ্বলন্ত কাঠ আনতে পারি যাতে তোমরা আগুন পোহাতে পার।

فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوْدِيَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰۤى اِنِّيْۤ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٠﴾

৩০. যখন তিনি আগুনের নিকট পৌঁছিলেন তখন উপত্যকার ডান পার্শ্বে পবিত্র ভূমিস্থিত এক বৃক্ষ হতে তাকে আহ্বান করে বলা হলোঃ হে মূসা (عليه السلام)! আমিই আল্লাহ, জগতসমূহের প্রতিপালক।

وَاَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰۤى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ۫ اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ﴿٣١﴾

৩১. আরো বলা হলোঃ তুমি তোমার লাঠি নিক্ষেপ কর। অতঃপর যখন তিনি লাঠিকে সর্পের ন্যায় ছুটাছুটি করতে দেখলেন তখন পিছনের দিকে ছুটতে লাগলেন এবং ফিরে তাকালেন

না। তাকে বলা হলোঃ হে মূসা (عليه السلام)! সামনে এসো, ভয় করো না, তুমি তো নিরাপদ।

اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ۫ وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ مَلَا۟ئِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٣٢﴾

৩২. তোমার হাত তোমার বগলে রাখো, এটা বের হয়ে আসবে শুভ্র সমুজ্জ্বল দোষমুক্ত হয়ে। ভয় দূর করবার জন্যে তোমার হস্তদ্বয় নিজের দিকে চেপে ধর। এই দু'টি তোমার প্রতিপালক প্রদত্ত প্রমাণ, ফির'আউন ও তার পরিষদবর্গের জন্যে। তারা তো দুস্কর্মপরায়ণ সম্প্রদায়।

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿٣٣﴾

৩৩. তিনি বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমি তো তাদের একজনকে হত্যা করেছি। ফলে আমি আশঙ্কা করছি যে, তারা আমাকে হত্যা করবে।

وَاَخِيْ هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّيْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْاً يُّصَدِّقُنِيْٓ ۫ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ﴿٣٤﴾

৩৪. আমার ভ্রাতা হারূন আমার চেয়ে বাগ্মী (কথায় পটু)। অতএব তাকে আমার সাহায্য কারীরূপে প্রেরণ করুন, তিনি আমাকে সমর্থন করবেন। আমি আশঙ্কা করি যে, তারা আমাকে মিথ্যাবাদী বলবে।

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِاَخِيْكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا يَصِلُوْنَ اِلَيْكُمَا ۚ بِاٰيٰتِنَآ ۚ اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُوْنَ ﴿٣٥﴾

৩৫. (আল্লাহ) বললেনঃ আমি তোমার ভ্রাতার দ্বারা তোমার বাহু শক্তিশালী করবো এবং তোমাদের উভয়কে বিজয় দান করবো। তারা তোমাদের কাছে পৌঁছতে পারবে না। তোমরা আমার নিদর্শনসহ যাও, তোমরা এবং তোমাদের অনুসারীরা তাদের উপর বিজয়ী হবে।

فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا

৩৬. মূসা (عليه السلام) যখন তাদের নিকট আমার সুস্পষ্ট নিদর্শনগুলো

مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٦﴾

নিয়ে আসলেন, তারা বললোঃ এটা তো অলীক যাদু মাত্র! আমাদের পূর্বপুরুষদের কালে আমরা কখনো এরূপ কথা শুনিনি।

وَقَالَ مُوْسٰى رَبِّيْٓ اَعْلَمُ بِمَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٣٧﴾

৩৭. মূসা (عليه السلام) বললেনঃ আমার প্রতিপালক সম্যক অবগত, কে তাঁর নিকট হতে পথ নির্দেশ এনেছে এবং আখিরাতে কার পরিণাম শুভ হবে। যালিমরা অবশ্যই সফলকাম হবে না।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ ۚ فَاَوْقِدْ لِيْ يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيْنِ فَاجْعَلْ لِّيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَطَّلِعُ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى ۙ وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٣٨﴾

৩৮. ফিরআ'উন বললোঃ হে পরিষদবর্গ! আমি ছাড়া তোমাদের অন্য কোন উপাস্য আছে বলে আমি জানি না! হে হামান! তুমি আমার জন্যে ইট পোড়াও এবং একটি সুউচ্চ প্রাসাদ তৈরি কর; হয়তো আমি তাতে উঠে মূসার মা'বূদকে দেখতে পাবো। তবে আমি অবশ্য মনে করি যে, সে মিথ্যাবাদী।

وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا لَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٣٩﴾

৩৯. ফিরআ'উন ও তার বাহিনী অন্যায়ভাবে পৃথিবীতে অহংকার করেছিল এবং তারা মনে করেছিল যে, তারা আমার নিকট প্রত্যাবর্তিত হবে না।

فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٠﴾

৪০. অতএব, আমি তাকে ও তার বাহিনীকে ধরলাম এবং তাদেরকে সমুদ্রে নিক্ষেপ করলাম। দেখো, যালিমদের পরিণাম কি হয়ে থাকে।

وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿٤١﴾

৪১. তাদেরকে আমি নেতা করেছিলাম; তারা লোকদেরকে জাহান্নামের দিকে আহ্বান করতো; কিয়ামতের দিন তাদেরকে সাহায্য করা হবে না।

وَاَتْبَعْنٰهُمْ فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ﴿٤٢﴾

৪২. এই পৃথিবীতে আমি তাদের পশ্চাতে লাগিয়ে দিয়েছি অভিসম্পাত এবং কিয়ামতের দিন তারা হবে ঘৃণিত।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَآئِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٣﴾

৪৩. আমি তো পূর্ববর্তী বহু মানবগোষ্ঠীকে বিনাশ করবার পর মূসা (عليه السلام)-কে দিয়েছিলাম কিতাব, মানব জাতির জন্যে জ্ঞান-বর্তিকা, পথনির্দেশ ও দয়া স্বরূপ, যাতে তারা উপদেশ গ্রহণ করে।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَآ اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٤٤﴾

৪৪. মূসা (عليه السلام)-কে যখন আমি ওহী করেছিলাম রিসালাতের তখন তুমি (হে মুহাম্মাদ ﷺ) পশ্চিম প্রান্তে উপস্থিত ছিলে না এবং তুমি প্রত্যক্ষদর্শীও ছিলে না।

وَلٰكِنَّآ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۙ وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿٤٥﴾

৪৫. বস্তুতঃ আমি অনেক মানবগোষ্ঠীর আবির্ভাব ঘটিয়েছিলাম; অতঃপর তাদের বহু যুগ অতিবাহিত হয়ে গিয়েছে। তুমি তো মাদ্‌ইয়ান-বাসীদের মধ্যে বিদ্যমান ছিলে না তাদের নিকট আমার আয়াত আবৃত্তি করবার জন্যে। আমিই তো ছিলাম রাসূল প্রেরণকারী।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٦﴾

৪৬. মূসা (عليه السلام)-কে যখন আমি আহ্বান করেছিলাম তখন তুমি তূর পর্বত পার্শ্বে উপস্থিত ছিলে না। বস্তুতঃ এটা (ওহী) তোমার প্রতিপালকের নিকট হতে দয়া স্বরূপ, যাতে তুমি এমন এক সম্প্রদায়কে সতর্ক করতে পার, যাদের নিকট তোমার পূর্বে কোন সতর্ককারী আসেনি,যেন তারা উপদেশ গ্রহণ করে।

وَلَوْلَآ اَنْ تُصِيْبَهُمْ مُّصِيْبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾

৪৭. রাসূল না পাঠালে আর তাদের কৃতকর্মের জন্যে তাদের কোন বিপদ হলে তারা বলতোঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি আমাদের নিকট কোন রাসূল প্রেরণ করলেন না কেন? করলে আমরা আপনার নির্দেশ মেনে চলতাম এবং আমরা হতাম মু'মিন।

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَآ اُوْتِيَ مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى ؕ اَوَلَمْ يَكْفُرُوْا بِمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا ۫ وَقَالُوْٓا اِنَّا بِكُلٍّ كٰفِرُوْنَ ﴿٤٨﴾

৪৮. অতঃপর যখন আমার নিকট হতে তাদের নিকট সত্য আসলো, তারা বলতে লাগলোঃ মূসা (عليه السلام)-কে যেরূপ দেয়া হয়েছিল, তাকে (মুহাম্মাদ ﷺ কে) সেরূপ দেয়া হলো না কেন? কিন্তু পূর্বে মূসা (عليه السلام)-কে যা দেয়া হয়েছিল তা কি তারা অস্বীকার করেনি? তারা বলেছিলঃ উভয়ই যাদু, একে অপরকে সমর্থন করে এবং তারা বলেছিলঃ আমরা প্রত্যেককে প্রত্যাখ্যান করি।

قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ اَهْدٰى مِنْهُمَآ اَتَّبِعْهُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٩﴾

৪৯. বলঃ তোমরা সত্যবাদী হলে আল্লাহর নিকট হতে এক কিতাব আনয়ন কর, যা পথ-নির্দেশে এতদুভয় (তাওরাত ও কুরআন) হতে উৎকৃষ্টতর হবে, আমি সে কিতাব অনুসরণ করবো।

فَاِنْ لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ؕ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٠﴾

৫০. অতঃপর যদি তারা তোমার আহ্বানে সাড়া না দেয়, তাহলে জানবে যে, তারা তো শুধু নিজেদের খেয়াল-খুশীর অনুসরণ করে। আল্লাহর পথ-নির্দেশ অগ্রাহ্য করে যে ব্যক্তি নিজ খেয়াল-খুশীর অনুসরণ করে সে ব্যক্তি অপেক্ষা অধিক

বিভ্রান্ত আর কে? আল্লাহ্ যালিম সম্প্রদায়কে পথ-নির্দেশ করেন না।

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥١﴾

৫১. আমি তো তাদের নিকট পরপর বাণী পৌঁছিয়ে দিয়েছি, যাতে তারা উপদেশ গ্রহণ করে।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾

৫২. এর পূর্বে আমি যাদেরকে কিতাব দিয়েছিলাম, তারা এতে বিশ্বাস করে।

وَاِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ ﴿٥٣﴾

৫৩. যখন তাদের নিকট এটা আবৃত্তি করা হয়, তখন তারা বলেঃ আমরা এতে ঈমান আনি, এটা আমাদের প্রতিপালক হতে আগত সত্য। আমরা তো পূর্বেও আত্মসমর্পণকারী ছিলাম।[১]

اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٥٤﴾

৫৪. তাদেরকে দু'বার পারিশ্রমিক প্রদান করা হবে, কারণ তারা ধৈর্যশীল এবং তারা ভাল দ্বারা মন্দের মুকাবিলা করে এবং আমি তাদেরকে যে রিযিক দিয়েছি তা হতে তারা ব্যয় করে।

وَاِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ وَقَالُوْا لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ز سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ز لَا نَبْتَغِي الْجٰهِلِيْنَ ﴿٥٥﴾

৫৫. তারা যখন অসার বাক্য শ্রবণ করে তখন তারা তা উপক্ষো করে চলে এবং বলেঃ আমাদের কাজের ফল আমাদের জন্যে এবং তোমাদের কাজের ফল তোমাদের জন্যে; তোমাদের প্রতি সালাম। আমরা অজ্ঞদের সঙ্গ চাই না।

১। আবূ বুরদার পিতা আবূ মূসা আসআরী (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যার কাছে ক্রীতদাসী আছে এবং সে তাকে (শরীয়তের প্রয়োজনীয় মাসআলা) শিক্ষা দেয় এবং ভাল আচার-ব্যবহার ও শিষ্টাচার শিক্ষা দেয়। অতঃপর তাকে আযাদ করে নিজেই বিবাহ করে নেয়, তার জন্য দ্বিগুণ সওয়াব রয়েছে। আহলে কিতাবদের মধ্য থেকে যে নিজেদের নবী এবং আমার ওপর ঈমান আনে তার জন্যও দ্বিগুণ সওয়াব রয়েছে। আর যে গোলাম স্বীয় মালিক এবং তার রবের হক যথাযথভাবে আদায় করবে, তার জন্যও দ্বিগুণ সওয়াব রয়েছে। (বুখারী, হাদীস নং ৫০৮৩)

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿٥٦﴾

৫৬. তুমি যাকে ভালবাস ইচ্ছা করলেই তাকে সৎপথে আনতে পারবে না। তবে আল্লাহই যাকে ইচ্ছা সৎপথে আনয়ন করেন এবং তিনিই ভাল জানেন সৎপথ অনুসরণকারীদেরকে।[১]

وَقَالُوا إِنْ نَتَّبِعِ الْهُدَىٰ مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ أَرْضِنَا ۚ أَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَهُمْ حَرَمًا آمِنًا يُجْبَىٰ إِلَيْهِ ثَمَرَاتُ كُلِّ شَيْءٍ رِزْقًا مِنْ لَدُنَّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٧﴾

৫৭. তারা বলেঃ আমরা যদি তোমার সাথে সৎপথ অনুসরণ করি তবে আমাদেরকে দেশ হতে উৎখাত করা হবে। আমি কি তাদেরকে এক নিরাপদ হারামে প্রতিষ্ঠিত করিনি! যেখানে সর্বপ্রকার ফলমূল আমদানী হয় আমার দেয়া রিয্ক স্বরূপ? কিন্তু তাদের অধিকাংশই এটা জানে না।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ بَطِرَتْ مَعِيشَتَهَا ۚ فَتِلْكَ مَسَاكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ مِنْ بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا ۖ وَكُنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ ﴿٥٨﴾

৫৮. কত জনপদকে আমি ধ্বংস করেছি যার বাসিন্দারা নিজেদের ধন-সম্পদের দম্ভ করতো! এগুলোই তো তাদের ঘরবাড়ী; তাদের পর এগুলোতে লোকজন সামান্যই বসবাস করেছে; আর আমি তো চূড়ান্ত মালিকানার অধিকারী।

১। সাঈদ ইবনে মুসাইয়্যিব (রাযিআল্লাহু আনহু) তার পিতা মুসাইয়াব থেকে বর্ণনা করেছেন। আবূ তালিবের যখন মৃত্যুর সময় উপস্থিত হলো নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তার নিকট উপস্থিত হলেন। তখন আবূ জাহল তার কাছে বসা ছিল। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, হে চাচাজান! শুধু "লা-ইলাহা ইল্লাল্লাহু" কালেমাটি একবার বলুন। যাতে আমি আপনার ক্ষমার জন্য আল্লাহ্‌র কাছে প্রার্থনা জানাতে পারি। তখন আবু জাহল ও আবদুল্লাহ্ ইবনে উমাইয়া বলল, তুমি কি আবদুল মুত্তালিবের ধর্ম থেকে বিচ্যুত হয়ে যাবে? তারা দু'জনে বরাবর তাকে এ কথাটি বলতে থাকে। অবশেষে তাদের সাথে আবু তালিব সর্বশেষে যে কথাটি বলল, তা হালোঃ আমি আবদুল মুত্তালিবের ধর্মের অনুসারী হিসেবে মৃত্যুবরণ করছি। তখন নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, আমি আপনার জন্য ক্ষমা প্রার্থনা করতে থাকব যে পর্যন্ত আমাকে আপনার ব্যাপারে নিষেধ করা না হয়। তখন এই আয়াত অবতীর্ণ হলোঃ "নবী ও মু'মিনদের মুশরিকদের জন্য ক্ষমা প্রার্থনা করা উচিত নয়, যদি তারা সম্পর্কের দিক থেকে তাদের নিকটাত্মীয়ও হয়, যখন তাদের কাছে এটা প্রকাশ হয়ে গেছে যে, তারা দোযখের অধিবাসী।" (সূরা তাওবাঃ ১১৩) আরো অবতীর্ণ হলোঃ হে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)! আপনি যাকে চাইবেন তাকেই হেদায়াত করতে পারবেন না।" (সূরা কাসাসঃ ৫৬) (বুখারী, হাদীস নং ৩৮৮৪)

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَتّٰى يَبْعَثَ فِيْٓ اُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرٰٓى اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ﴿٥٩﴾

৫৯. তোমার প্রতিপালক জনপদ-সমূহকে ধ্বংস করেন না ওর কেন্দ্রে তাঁর আয়াত আবৃত্তি করবার জন্যে রাসূল প্রেরণ না করে এবং আমি জনপদসমূহকে তখনই ধ্বংস করি যখন ওর বাসিন্দারা যুলুম করে।

وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٠﴾

৬০. তোমাদেরকে যা কিছু দেয়া হয়েছে তা তো পার্থিব জীবনের ভোগ ও শোভা এবং যা আল্লাহর নিকট আছে তা উত্তম এবং স্থায়ী। তোমরা কি অনুধাবন করবে না?

اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٦١﴾

৬১. যাকে আমি উত্তম পুরস্কারের প্রতিশ্রুতি দিয়েছি, যা সে পাবে সে কি ঐ ব্যক্তির সমান যাকে আমি পার্থিব জীবনের ভোগ-সম্ভার দিয়েছি, যাকে পরে কিয়ামতের দিন হাজির করা হবে? (শাস্তি প্রদানের জন্য অপরাধীরূপে)

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٦٢﴾

৬২. আর সেই দিন তিনি তাদেরকে আহ্বান করে বলবেনঃ তোমরা যাদেরকে আমার শরীক গণ্য করতে তারা কোথায়?

قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا ۚ اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّاْنَآ اِلَيْكَ ۖ مَا كَانُوْٓا اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ﴿٦٣﴾

৬৩. যাদের জন্যে শাস্তি অবধারিত হয়েছে তারা বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! এদেরকেও আমরা বিভ্রান্ত করেছিলাম, যেমন আমরা বিভ্রান্ত হয়েছিলাম; আপনার সমীপে আমরা তাদের হতে সম্পর্কহীনতা ঘোষণা করছি। এরা শুধু আমাদেরই ইবাদত করতো না।

وَقِيْلَ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا

৬৪. তাদেরকে বলা হবেঃ তোমাদের দেবতাগুলোকে আহ্বান কর। তখন

لَهُمْ وَرَاَوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْ اَنَّهُمْ كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ ﴿٦٤﴾

তারা তাদেরকে ডাকবে; কিন্তু তারা তাদের ডাকে সাড়া দেবে না। তারা শাস্তি প্রত্যক্ষ করবে; হায়! তারা যদি সৎপথ অনুসরণ করতো!

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦٥﴾

৬৫. আর সেদিন আল্লাহ তাদেরকে ডেকে বলবেনঃ তোমরা রাসূলদেরকে কি জবাব দিয়েছিলে?

فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْاَنْۢبَآءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٦٦﴾

৬৬. সেদিন সকল তথ্য তাদের নিকট হতে বিলুপ্ত হবে এবং তারা একে অপরকে জিজ্ঞাসাবাদও করতে পারবে না।

فَاَمَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ﴿٦٧﴾

৬৭. তবে যে ব্যক্তি তাওবা করেছিল এবং ঈমান এনেছিল ও সৎকর্ম করেছিল সে তো সাফল্য অর্জন-কারীদের অন্তর্ভুক্ত হবে।

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ؕ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٨﴾

৬৮. তোমার প্রতিপালক যা ইচ্ছা সৃষ্টি করেন এবং যাকে ইচ্ছা মনোনীত করেন, এতে তাদের কোন হাত নেই, আল্লাহ পবিত্র, মহান এবং তারা যাকে শরীক করে তা হতে তিনি ঊর্ধ্বে।

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٦٩﴾

৬৯. আর তোমার প্রতিপালক জানেন তাদের অন্তরে যা গোপন আছে এবং তারা যা ব্যক্ত করে।

وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْحَمْدُ فِى الْاُوْلٰى وَالْاٰخِرَةِ ز وَلَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٧٠﴾

৭০. তিনিই আল্লাহ, তিনি ব্যতীত কোন সত্য মা'বূদ নেই, দুনিয়া ও আখিরাতে প্রশংসা তাঁরই; (শাসন কর্তৃত্ব) হুকুম ও ফয়সালা তাঁরই তোমরা তাঁরই দিকে প্রত্যাবর্তিত হবে।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا

৭১. বলঃ তোমরা ভেবে দেখেছো কি, আল্লাহ যদি রাত্রিকে কিয়ামতের

إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَٰمَةِ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِضِيَآءٍ ۖ أَفَلَا تَسْمَعُونَ ﴿٧١﴾

দিন পর্যন্ত স্থায়ী করেন তবে আল্লাহ ব্যতীত এমন কোন মা'বূদ আছে কি, যে তোমাদেরকে আলোক এনে দিতে পারে? তবুও কি তোমরা কর্ণপাত করবে না?

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِن جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَٰمَةِ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِلَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٧٢﴾

৭২. বলঃ তোমরা ভেবে দেখেছো কি, আল্লাহ যদি দিবসকে কিয়ামতের দিন পর্যন্ত স্থায়ী করেন তবে আল্লাহ ব্যতীত এমন কোন মা'বূদ আছে কি, যে তোমাদের জন্যে রাত্রির আবির্ভাব ঘটাতে পারে যাতে তোমরা বিশ্রাম করতে পার? তবুও কি তোমরা ভেবে দেখবে না?

وَمِن رَّحْمَتِهِۦ جَعَلَ لَكُمُ ٱلَّيْلَ وَٱلنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا۟ فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا۟ مِن فَضْلِهِۦ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾

৭৩. তিনিই তাঁর দয়ায় তোমাদের জন্যে করেছেন রজনী ও দিবস, যেন তাতে তোমরা বিশ্রাম করতে পার এবং তাঁর অনুগ্রহ সন্ধান করতে পার এবং কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَآءِىَ ٱلَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٧٤﴾

৭৪. সেদিন তিনি তাদেরকে আহ্বান করে বলবেনঃ তোমরা যাদেরকে শরীক গণ্য করতে, তারা কোথায়?

وَنَزَعْنَا مِن كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا۟ بُرْهَٰنَكُمْ فَعَلِمُوٓا۟ أَنَّ ٱلْحَقَّ لِلَّهِ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا۟ يَفْتَرُونَ ﴿٧٥﴾

৭৫. প্রত্যেক সম্প্রদায় হতে আমি একজন সাক্ষী বের করে আনবো এবং বলবোঃ তোমাদের প্রমাণ উপস্থিত কর। তখন তারা জানতে পারবে, মা'বূদ হবার অধিকার আল্লাহরই এবং তারা যা মনগড়া মিথ্যা উদ্ভাবন করতো তা তাদের নিকট হতে হারিয়ে যাবে।

إِنَّ قَٰرُونَ كَانَ مِن قَوْمِ مُوسَىٰ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ ۖ وَءَاتَيْنَٰهُ مِنَ ٱلْكُنُوزِ مَآ إِنَّ مَفَاتِحَهُۥ

৭৬. কারূন ছিল মূসা (عليه السلام)-এর সম্প্রদায়ভুক্ত; কিন্তু সে তাদের প্রতি ঔদ্ধত্য প্রকাশ করেছিল। আমি তাকে

لَتَنُوْٓاُ بِالْعُصْبَةِ اُولِى الْقُوَّةِ ۗ اِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ ﴿٧٦﴾

দান করেছিলাম এমন ধন-ভান্ডার যার চাবিগুলো বহন করা একদল বলবান লোকের পক্ষেও কষ্টসাধ্য ছিল। (স্মরণ কর,) তার সম্প্রদায় তাকে বলেছিলঃ দম্ভ করো না, নিশ্চয়ই আল্লাহ দাম্ভিকদেরকে পছন্দ করেন না।

وَابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰىكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ ۖ وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا ۚ وَاَحْسِنْ كَمَآ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ ۖ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِى الْاَرْضِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٧٧﴾

৭৭. আল্লাহ যা তোমাকে দিয়েছেন তার দ্বারা আখিরাতের আবাস অনুসন্ধান কর। আর দুনিয়া হতে তোমার অংশ ভুলো না এবং পরোপকার কর যেমন আল্লাহ তোমার প্রতি অনুগ্রহ করেছেন, আর পৃথিবীতে বিপর্যয় সৃষ্টি করতে চেয়ো না। নিশ্চয়ই আল্লাহ বিপর্যয় সৃষ্টিকারীকে ভালবাসেন না।

قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِىْ ۗ اَوَلَمْ يَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهٖ مِنَ الْقُرُوْنِ مَنْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّاَكْثَرُ جَمْعًا ۗ وَلَا يُسْـَٔلُ عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٧٨﴾

৭৮. সে বললোঃ এই সম্পদ আমি আমার জ্ঞান বলে প্রাপ্ত হয়েছি। সে কি জানতো না যে, আল্লাহ তার পূর্বে ধ্বংস করেছেন বহু মানব গোষ্ঠীকে যারা তার চেয়ে শক্তিতে ছিল প্রবল, সম্পদে ছিল প্রাচুর্যশালী? আর অপরাধীদেরকে তাদের অপরাধ সম্পর্কে প্রশ্ন করা হবে না। (তারা বিনা হিসাবেই জাহান্নামে দিক্ষীত হবে।)

فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ فِىْ زِيْنَتِهٖ ۗ قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَآ اُوْتِىَ قَارُوْنُ ۙ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿٧٩﴾

৭৯. (কারূন) তার সম্প্রদায়ের সামনে উপস্থিত হয়েছিল জাঁকজমক সহকারে। যারা পার্থিব জীবন কামনা করতো তারা বললোঃ আহা! কারূনকে যেরূপ দেয়া হয়েছে আমাদেরকে যদি তা দেয়া হতো! প্রকৃতই সে মহাভাগ্যবান।

وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ وَلَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ﴿٨٠﴾

৮০. আর যাদেরকে জ্ঞান দেয়া হয়েছিল তারা বললোঃ ধিক তোমাদেরকে! যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে তাদের জন্যে আল্লাহর পুরস্কারই শ্রেষ্ঠ এবং ধৈর্যশীল ব্যতীত এটা কেউ পাবে না।

فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْاَرْضَ ۫ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ﴿٨١﴾

৮১. অতঃপর আমি কারূনকে ও তার প্রাসাদকে ভূ-গর্ভে প্রোথিত করলাম।[১] তার স্বপক্ষে এমন কোন দল ছিল না যে আল্লাহর শাস্তি হতে তাকে সাহায্য করতে পারতো এবং সে নিজেও আত্মরক্ষায় সক্ষম ছিল না।

وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ ۚ لَوْلَآ اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ؕ وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٢﴾

৮২. পূর্বদিন যারা তার মত হবার কামনা করেছিল তারা বলতে লাগলো! দেখলে তো, আল্লাহ তার বান্দাদের মধ্যে যার জন্যে ইচ্ছা তার রিযক বর্ধিত করেন এবং যার জন্যে ইচ্ছা হ্রাস করেন। যদি আল্লাহ আমাদের প্রতি সদয় না হতেন তবে আমাদেরকেও তিনি ভূ-গর্ভে প্রোথিত করতেন। দেখলে তো! কাফিররা সফলকাম হয় না।

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِى الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٨٣﴾

৮৩. এটা আখেরাতের সে আবাস যা আমি নির্ধারিত করি তাদের জন্যে যারা এই পৃথিবীতে উদ্ধত হতে ও বিপর্যয় সৃষ্টি করতে চায় না। শুভ পরিণাম মুত্তাকীদের জন্যে।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ

৮৪. যে সৎকর্ম করে সে তার কর্ম অপেক্ষা উত্তম ফল পাবে, আর যে

১। (ক) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আল্লাহ্ তা'আলা কিয়ামতের দিন এমন লোকের দিকে (রহমতের) দৃষ্টিতে দেখবেন না, যে লোক অহংকারবশে তার ইযার (লুঙ্গি) (গিরার নীচে) ঝুলিয়ে চলে। (বুখারী, হাদীস নং ৫৭৮৮)

جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾

মন্দ কর্ম করে সে তো শাস্তি পাবে শুধু তার কর্ম অনুপাতে।

اِنَّ الَّذِىْ فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰى مَعَادٍ ؕ قُلْ رَّبِّىْٓ اَعْلَمُ مَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى وَمَنْ هُوَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٨٥﴾

৮৫. যিনি তোমার উপর কুরআনকে ফরয (অবতীর্ণ) করেছেন তিনি তোমাকে অবশ্যই ফিরিয়ে আনবেন প্রত্যাবর্তন স্থানে। বলঃ আমার প্রতিপালক ভাল জানেন কে সৎ পথের নির্দেশ এনেছে এবং কে স্পষ্ট বিভ্রান্তিতে আছে।

وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْٓا اَنْ يُّلْقٰٓى اِلَيْكَ الْكِتٰبُ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِيْرًا لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٦﴾

৮৬. তুমি আশা করনি যে, তোমার প্রতি কিতাব অবতীর্ণ হবে। এটা তো শুধু তোমার প্রতিপালকের অনুগ্রহ। সুতরাং তুমি কখনো কাফিরদের সহায় হয়ো না।

وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَيْكَ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٨٧﴾

৮৭. তোমার প্রতি আল্লাহর আয়াত অবতীর্ণ হওয়ার পর তারা যেন তোমাকে কিছুতেই সেগুলো হতে বিমুখ না করে। তুমি তোমার প্রতিপালকের দিকে আহ্বান কর এবং কিছুতেই মুশরিকদের অন্তর্ভুক্ত হয়ো না।

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ كُلُّ شَىْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ؕ لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٨﴾

৮৮. তুমি আল্লাহর সাথে অন্য মা'বূদকে ডেকো না, তিনি ছাড়া অন্য কোন (সত্য) মা'বূদ নেই। আল্লাহর মুখমন্ডল (সত্তা) ব্যতীত সবকিছু ধ্বংসশীল। হুকুম-ফয়সালা (ইহকাল ও পরকালে) তাঁরই এবং তাঁরই নিকট তোমরা প্রত্যাবর্তিত হবে।

সূরাঃ আনকাবূত, মাক্কী

(আয়াতঃ ৬৯, রুকূ'ঃ ৭)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةُ الْعَنْكَبُوْتِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٦٩ رُكُوْعَاتُهَا ٧

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ۚ ①

১. আলিফ-লাম-মীম।

اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ②

২. মানুষ কি মনে করে যে, আমরা ঈমান এনেছি, একথা বললেই তাদেরকে পরীক্ষা না করে অব্যাহতি দেয়া হবে?

وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِيْنَ ③

৩. আমি তো তাদের পূর্ব-বর্তীদেরকেও পরীক্ষা করেছিলাম; আর আল্লাহ অবশ্যই জেনে নিবেন কারা সত্যবাদী ও কারা মিথ্যাবাদী।

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ④

৪. যারা মন্দ কর্ম করে তারা কি মনে করে যে, তারা আমার আয়ত্তের বাইরে চলে যাবে? তাদের সিদ্ধান্ত কত মন্দ!

مَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ⑤

৫. যে আল্লাহর সাথে সাক্ষাত কামনা করে (সে জেনে রাখুক যে,) আল্লাহর নির্ধারিত সময় আসবেই, তিনি সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

وَمَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ⑥

৬. আর যে সাধনা করে, সে তো নিজের জন্যেই সাধনা করে; নিশ্চয়ই আল্লাহ বিশ্বজগত হতে অমুখাপেক্ষী।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ⑦

৭. আর যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে আমি নিশ্চয়ই তাদের মন্দ কর্মগুলো মিটিয়ে দিবো এবং তাদের কাজের উত্তম ফল দান করবো।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ۖ وَإِنْ جَاهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ۚ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٨﴾

৮. আমি মানুষকে নির্দেশ দিয়েছি তার পিতা-মাতার প্রতি সদ্ব্যবহার করতে; তবে তারা যদি তোমার উপর বল প্রয়োগ করে, আমার সাথে এমন কিছু শরীক করতে যার সম্পর্কে তোমার কোন জ্ঞান নেই, তবে তুমি তাদেরকে মান্য করো না। আমারই নিকট তোমাদের প্রত্যাবর্তন। অতঃপর আমি তোমাদেরকে জানিয়ে দিবো যা তোমরা করতে।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ﴿٩﴾

৯. যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে, আমি অবশ্যই তাদেরকে সৎকর্ম পরায়ণদের অন্তর্ভুক্ত করবো।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ فَإِذَا أُوذِيَ فِي اللَّهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللَّهِ ۖ وَلَئِنْ جَاءَ نَصْرٌ مِنْ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ إِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ۚ أَوَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي صُدُورِ الْعَالَمِينَ ﴿١٠﴾

১০. মানুষের মধ্যে কতক লোক বলেঃ আমরা আল্লাহতে বিশ্বাস করি, কিন্তু আল্লাহর পথে যখন তারা কষ্টে পতিত হয়, তখন তারা মানুষের পীড়নকে আল্লাহর শাস্তির মত গণ্য করে এবং তোমার প্রতিপালকের নিকট হতে কোন সাহায্য আসলে তারা বলতে থাকে, আমরা তো তোমাদের সাথেই ছিলাম। বিশ্ববাসীর অন্তরে যা আছে, আল্লাহ কি তা সম্যক অবগত নন?

وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنَافِقِينَ ﴿١١﴾

১১. আল্লাহ অবশ্যই জেনে নেবেন কারা ঈমান এনেছে আরও জেনে নিবেন কারা মুনাফিক।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا اتَّبِعُوا سَبِيلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطَايَاكُمْ ۚ وَمَا هُمْ بِحَامِلِينَ مِنْ خَطَايَاهُمْ مِنْ شَيْءٍ ۖ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٢﴾

১২. কাফিররা মু'মিনদেরকে বলেঃ আমাদের পথ অনুসরণ কর, আমরা তোমাদের পাপভার বহন করবো; কিন্তু তারা তো তাদের পাপভারের কিছুই বহন করবে না। তারা অবশ্যই মিথ্যাবাদী।

وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ز وَلَيُسْـَٔلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣﴾

১৩. তারা নিজেদের ভার বহন করবে এবং নিজেদের বোঝার সাথে আরো কিছু বোঝা এবং তারা যে মিথ্যা উদ্ভাবন করে সে সম্পর্কে কিয়ামত দিবসে অবশ্যই তাদেরকে প্রশ্ন করা হবে।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِيْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ط فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١٤﴾

১৪. আমি তো নূহ (عليه السلام)-কে তাঁর সম্প্রদায়ের নিকট প্রেরণ করেছিলাম। তিনি তাদের মধ্যে অবস্থান করেছিলেন পঞ্চাশ বছর কম হাজার বছর। অতঃপর প্লাবন তাদেরকে গ্রাস করে, কারণ তারা ছিল অত্যাচারী।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٥﴾

১৫. অতঃপর আমি তাকে এবং যারা নৌকায় আরোহণ করেছিল তাদেরকে রক্ষা করলাম এবং বিশ্বজগতের জন্যে একে করলাম একটি নিদর্শন।

وَاِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ط ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٦﴾

১৬. (স্মরণ কর) ইবরাহীম (عليه السلام)-এর কথা, তিনি তাঁর সম্প্রদায়কে বলেছিলেনঃ তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর এবং তাঁকে ভয় কর, তোমাদের জন্যে এটাই শ্রেয় যদি তোমরা জানতে।

اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا وَّتَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ط اِنَّ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللّٰهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوْهُ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ط اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿١٧﴾

১৭. তোমরা তো আল্লাহ ব্যতীত শুধু মূর্তিপূজা করছো এবং মিথ্যা উদ্ভাবন করছো, তোমরা আল্লাহ ব্যতীত যাদের পূজা কর তারা তোমাদের রুযীর মালিক নয়। সুতরাং তোমরা রুযী কামনা কর আল্লাহর নিকট এবং তাঁরই ইবাদত কর ও তাঁর প্রতি কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর। তোমরা তাঁরই নিকট প্রত্যাবর্তিত হবে।

وَاِنْ تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ؕ
وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٨﴾

১৮. তোমরা যদি আমাকে মিথ্যাবাদী বল, তবে জেনে রেখো যে, তোমাদের পূর্ববর্তীরাও নবীদেরকে মিথ্যাবাদী বলেছিল। সুস্পষ্টভাবে প্রচার করে দেয়া ছাড়া রাসূলের আর কোন দায়িত্ব নেই।

اَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللّٰهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ
اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿١٩﴾

১৯. তারা কি লক্ষ্য করে না যে, কিভাবে আল্লাহ সৃষ্টিকে অস্তিত্ব দান করেন, অতঃপর ওটা পুনরায় সৃষ্টি করেন? এটা তো আল্লাহর জন্যে সহজ।

قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ بَدَاَ الْخَلْقَ
ثُمَّ اللّٰهُ يُنْشِئُ النَّشْاَةَ الْاٰخِرَةَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ
شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٠﴾

২০. বলঃ পৃথিবীতে পরিভ্রমণ কর এবং অনুধাবন কর, কিভাবে তিনি সৃষ্টি শুরু করেছেন? অতঃপর আল্লাহ সৃষ্টি করবেন পরবর্তী সৃষ্টি। আল্লাহ তো সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান।

يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ
وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ﴿٢١﴾

২১. তিনি যাকে ইচ্ছা শাস্তি দেন এবং যার প্রতি ইচ্ছা অনুগ্রহ করেন। তোমরা তাঁরই নিকট প্রত্যাবর্তিত হবে।

وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ۫
وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٢٢﴾

২২. তোমরা আল্লাহকে ব্যর্থ করতে পারবে না পৃথিবীতে অথবা আকাশে এবং আল্লাহ ব্যতীত তোমাদের কোন অভিভাবক নেই, সাহায্যকারীও নেই।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَآئِهٖٓ اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا
مِنْ رَّحْمَتِىْ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٣﴾

২৩. যারা আল্লাহর নিদর্শন ও তাঁর সাক্ষাৎকার অস্বীকার করে তারাই আমার অনুগ্রহ হতে নিরাশ হয়। তাদের জন্যে আছে যন্ত্রনাদায়ক শাস্তি।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ
اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ؕ اِنَّ فِىْ

২৪. ইবরাহীম (عليه السلام)-এর সম্প্রদায়ের শুধু এই কথা বলা ছাড়া আর কোন উত্তর ছিল না যে, তাঁকে

ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٢٤﴾

হত্যা কর অথবা অগ্নিদগ্ধ কর; কিন্তু আল্লাহ তাকে অগ্নি হতে রক্ষা করলেন। এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে মু'মিন সম্প্রদায়ের জন্যে।

وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۙ وَّمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٥﴾

২৫. এবং তিনি (ইবরাহীম عليه السلام) বললেনঃ তোমরা আল্লাহর পরিবর্তে মূর্তিগুলোকে উপাস্যরূপে গ্রহণ করেছো, পার্থিব জীবনে তোমাদের পারস্পরিক বন্ধুত্বের খাতিরে; পরে কিয়ামতের দিন তোমরা একে অপরকে অস্বীকার করবে এবং পরস্পরকে অভিসম্পাত দিবে তোমাদের আবাস হবে জাহান্নাম এবং তোমাদের কোন সাহায্যকারী থাকবে না।

فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّىْ مُهَاجِرٌ اِلٰى رَبِّىْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٦﴾

২৬. লূত (عليه السلام) তাঁর (ইবরাহীম عليه السلام)-এর প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করলেন। (ইবরাহীম عليه السلام) বললেনঃ) আমি আমার প্রতিপালকের উদ্দেশ্যে দেশ ত্যাগ করছি। তিনি তো পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।

وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا فِىْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَاٰتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ فِى الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٢٧﴾

২৭. আমি (ইবরাহীম عليه السلام)-কে দান করলাম ইসহাক (عليه السلام) ও ইয়াকুব (عليه السلام) এবং তার বংশধরদের জন্যে স্থির করলাম নবুওয়াত ও কিতাব এবং আমি তাকে পুরস্কৃত করেছিলাম দুনিয়ায় এবং আখিরাতেও সে নিশ্চয়ই সৎকর্মপরায়ণদের অন্যতম হবে।

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ ۙ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٨﴾

২৮. স্মরণ কর লূত (عليه السلام-এর কথা) তিনি তাঁর সম্প্রদায়কে বলেছিলেনঃ তোমরা তো এমন

অশ্লীল কর্ম করছো, যা তোমাদের পূর্বে বিশ্বে কেউ করেনি।

اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ السَّبِيْلَ ۙ وَتَاْتُوْنَ فِيْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ ؕ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾

২৯. তোমরাই তো পুরুষে আসক্ত হচ্ছো, তোমরাই তো রাহাজানি (ডাকাতি) করে থাকো এবং তোমরাই তো নিজেদের মজলিসে প্রকাশ্যে ঘৃণ্য কর্ম করে থাকো। উত্তরে তার সম্প্রদায় শুধু এই বললোঃ আমাদের উপর আল্লাহর শাস্তি আনয়ন কর, যদি তুমি সত্যবাদী হও।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٣٠﴾

৩০. তিনি বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! বিপর্যয় সৃষ্টিকারী সম্প্রদায়ের বিরুদ্ধে আমাকে সাহায্য করুন!

وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوْۤا اِنَّا مُهْلِكُوْۤا اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ اِنَّ اَهْلَهَا كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٣١﴾

৩১. যখন আমার প্রেরিত ফেরেশতারা সুসংবাদসহ ইবরাহীমের নিকট আসলেন, তাঁরা বলেছিলেনঃ আমরা এই জনপদবাসীকে ধ্বংস করবো, এর অধিবাসীরা তো অত্যাচারী।

قَالَ اِنَّ فِيْهَا لُوْطًا ؕ قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا ؕ لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَاَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٢﴾

৩২. (ইবরাহীম (عليه السلام) বললেনঃ) এই জনপদে তো লূত রয়েছেন। তারা বললেনঃ সেথায় কারা আছে, তা আমরা ভাল জানি; আমরা তো লূত (عليه السلام)-কে ও তাঁর পরিজনবর্গকে রক্ষা করবোই, তাঁর স্ত্রীকে ব্যতীত; সে তো পশ্চাতে অবস্থানকারীদের অন্তর্ভুক্ত।

وَلَمَّاۤ اَنْ جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالُوْا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ۫

৩৩. এবং যখন আমার প্রেরিত ফেরেশ্তারা লূত (عليه السلام)-এর নিকট আসলেন, তখন তাঁদের জন্যে তিনি চিন্তিত হয়ে পড়লেন এবং নিজেকে

إِنَّا مُنَجُّوكَ وَأَهْلَكَ إِلَّا امْرَأَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٣٣﴾

তাদের রক্ষায় অসমর্থ মনে করলেন। তাঁরা বললেনঃ ভয় করো না, চিন্তাও করো না; আমরা তোমাকে ও তোমার পরিবারবর্গকে রক্ষা করবো, তোমার স্ত্রী ব্যতীত; সে তো পশ্চাতে অবস্থানকারীদের অন্তর্ভুক্ত।

إِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰٓى أَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٣٤﴾

৩৪. আমরা এই জনপদবাসীর উপর আকাশ হতে শাস্তি নাযিল করবো, কারণ তারা পাপাচার করছিল।

وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٣٥﴾

৩৫. আমি বোধশক্তি সম্পন্ন সম্প্রদায়ের জন্যে এতে একটি স্পষ্ট নিদর্শন রেখেছি।

وَإِلٰى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۙ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿٣٦﴾

৩৬. আমি মাদ্‌ইয়ানবাসীদের প্রতি তাদের ভ্রাতা শুআইব (عليه السلام)-কে পাঠিয়েছিলাম। তিনি বলেছিলেনঃ হে আমর সম্প্রদায়! তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর, শেষ দিবসকে ভয় কর এবং পৃথিবীতে বিপর্যয় ঘটিয়ো না।

فَكَذَّبُوْهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٣٧﴾

৩৭. কিন্তু তারা তাঁর প্রতি মিথ্যা আরোপ করলো, অতঃপর তারা ভূমিকম্প দ্বারা আক্রান্ত হলো; ফলে তারা নিজ গৃহে নতজানু অবস্থায় শেষ হয়ে গেল।

وَعَادًا وَّثَمُوْدَا وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ ۖ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَكَانُوْا مُسْتَبْصِرِيْنَ ﴿٣٨﴾

৩৮. এবং আমি আ'দ ও সামূদকে ধ্বংস করেছিলাম, তাদের বাড়ী ঘরই তোমাদের জন্যে এর সুস্পষ্ট প্রমাণ। শয়তান তাদের কাজকে তাদের দৃষ্টিতে শোভন করেছিল এবং তাদেরকে সৎপথ অবলম্বনে বাধা দিয়েছিল, যদিও তারা ছিল বিচক্ষণ।

وَقَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ ۖ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ

৩৯. এবং (আমি ধ্বংস করেছিলাম) কারূন, ফিরাউন ও হামানকে; মূসা

مُوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ فَاسْتَكْبَرُوْا فِى الْاَرْضِ وَمَا كَانُوْا سٰبِقِيْنَ ﴿٣٩﴾

(আলাইহিস সালাম) তাদের নিকট সুস্পষ্ট নিদর্শন নিয়ে এসেছিলেন, তখন তারা দেশে দম্ভ করতো; কিন্তু তারা আমার শাস্তি এড়াতে পারেনি।

فَكُلًّا اَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْاَرْضَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٠﴾

৪০. তাদের প্রত্যেককেই তার অপরাধের জন্যে শাস্তি দিয়েছিলাম, তাদের কারো প্রতি প্রেরণ করেছি প্রস্তরসহ প্রচন্ড ঝটিকা, তাদের কাউকেও আঘাত করেছিল বিকট শব্দ, কাউকেও আমি প্রোথিত করেছিলাম ভূ-গর্ভে এবং কাউকেও করেছিলাম নিমজ্জিত। আল্লাহ্ তাদের প্রতি কোন যুলুম করেননি, তারা নিজেরাই নিজেদের প্রতি যুলুম করেছিল।

مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ۗ وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾

৪১. যারা আল্লাহর পরিবর্তে অপরকে অভিভাবকরূপে গ্রহণ করে তাদের দৃষ্টান্ত মাকড়সা, যে নিজের জন্যে ঘর বানায় এবং ঘরের মধ্যে মাকড়সার ঘরই তো দুর্বলতম, যদি তারা জানতো!

اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٤٢﴾

৪২. তারা আল্লাহর পরিবর্তে যা কিছুকেই আহ্বান করে আল্লাহ তা জানেন এবং তিনি পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।

وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَآ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾

৪৩. মানুষের জন্যে এসব দৃষ্টান্ত বর্ণনা করে থাকি; কিন্তু শুধু জ্ঞানী ব্যক্তিরাই এসব বুঝে থাকে।

خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٤﴾

৪৪. আল্লাহ যথাযথভাবে আকাশ-মন্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন, এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে মু'মিন সম্প্রদায়ের জন্যে।

اُتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ ﴿٤٥﴾

৪৫. তুমি তোমার প্রতি প্রত্যাদিষ্ট (ওহীকৃত) কিতাব আবৃত্তি কর এবং নামায প্রতিষ্ঠিত কর। নিশ্চয়ই নামায বিরত রাখে অশ্লীল ও মন্দ কার্য হতে। আল্লাহর স্মরণই সর্বশ্রেষ্ঠ। তোমরা যা কর আল্লাহ তা জানেন।

وَلَا تُجَادِلُوْٓا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۖ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَاُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَاِلٰهُنَا وَاِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٤٦﴾

৪৬. তোমরা উত্তম পন্থা ব্যতীত কিতাবীদের সাথে বিতর্ক করবে না, তবে তাদের সাথে করতে পার, যারা তাদের মধ্যে সীমালঙ্ঘনকারী এবং বলঃ আমাদের প্রতি ও তোমাদের প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে, তাতে আমরা বিশ্বাস করি এবং আমাদের মা'বূদ ও তোমাদের মা'বূদ তো একই এবং আমরা তাঁরই প্রতি আত্মসমর্পণকারী।

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَمِنْ هٰٓؤُلَآءِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٧﴾

৪৭. এভাবেই আমি তোমার প্রতি কুরআন অবতীর্ণ করেছি এবং যাদেরকে আমি কিতাব দিয়েছিলাম তারা এতে বিশ্বাস করে এবং এদেরও কেউ কেউ এতে বিশ্বাস করে। কাফিররা ব্যতীত আর কেউ আমার নিদর্শনাবলী অস্বীকার করে না।

وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٤٨﴾

৪৮. তুমি তো এর পূর্বে কোন কিতাব পাঠ করনি এবং স্বহস্তে কোন দিন কিতাব লিখনি যে, মিথ্যাবাদীরা সন্দেহ পোষণ করবে।

بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٩﴾

৪৯. বস্তুতঃ যাদেরকে জ্ঞান দেয়া হয়েছে, তাদের অন্তরে এটা স্পষ্ট নিদর্শন। যালিমরা ব্যতীত কেউ আমার নিদর্শন অস্বীকার করে না।

وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّمَا

৫০. তারা বলেঃ তার প্রতিপালকের নিকট হতে তাঁর নিকট নিদর্শনাবলী

الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاِنَّمَاۤ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥٠﴾

প্রেরিত হয় না কেন? বলঃ নিদর্শনাবলী আল্লাহর ইচ্ছাধীন। আমি তো একজন প্রকাশ্য সতর্ককারী মাত্র।

اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾

৫১. এটা কি তাদের জন্যে যথেষ্ট নয় যে, আমি তোমার নিকট কুরআন অবতীর্ণ করেছি, যা তাদের নিকট পাঠ করা হয়? এতে অবশ্যই মু'মিন সম্প্রদায়ের জন্যে অনুগ্রহ ও উপদেশ রয়েছে।[১]

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٥٢﴾

৫২. বলঃ আমার ও তোমাদের মধ্যে সাক্ষী হিসেবে আল্লাহই যথেষ্ট। আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা আছে তা তিনি অবগত এবং যারা অসত্যে বিশ্বাস করে ও আল্লাহকে অস্বীকার করে তারাই তো ক্ষতিগ্রস্ত।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَلَوْلَاۤ اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ؕ وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٣﴾

৫৩. তারা তোমার নিকট অবিলম্বে শাস্তি কামনা করছে, যদি নির্ধারিত কাল না থাকতো তবে শাস্তি তাদের উপর আসতো। নিশ্চয়ই তাদের উপর শাস্তি আসবে আকস্মিকভাবে, তাদের অজ্ঞাতসারে।

يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٤﴾ ۙ

৫৪. তারা তোমার নিকট অবিলম্বে শাস্তি কামনা করছে, জাহান্নাম তো কাফিরদেরকে পরিবেষ্টন করবেই।

يَوْمَ يَغْشٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٥﴾

৫৫. সেদিন শাস্তি তাদেরকে আচ্ছন্ন করবে তাদের উপরের দিক ও তাদের পায়ের তলা হতে এবং তিনি বলবেনঃ তোমরা যা করতে তার স্বাদ গ্রহণ কর।

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আল্লাহ্ তা'আলা অন্য কোন নবী তিলাওয়াত শুনেন না, যেরূপ তিনি নবীর উচ্চস্বরে সুমধুর কণ্ঠের তিলাওয়াত শুনে থাকেন। সুফিয়ান বলেছেন, একথার অর্থ হচ্ছেঃ একজন নবী যিনি কুরআনকে এ ধরনের কিছু মনে করেন যা তাকে অনেক পার্থিব আনন্দ বিতরণ করে। (বুখারী, হাদীস নং ৫০২৪)

يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾

৫৬. হে আমার মু'মিন বান্দারা! আমার পৃথিবী প্রশস্ত; সুতরাং তোমরা আমারই ইবাদত কর।[১]

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٧﴾

৫৭. জীবমাত্রই মৃত্যুর স্বাদ গ্রহণকারী; অতঃপর তোমরা আমারই নিকট প্রত্যাবর্তিত হবে।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿٥٨﴾

৫৮. যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে আমি অবশ্যই তাদের বসবাসের জন্যে সুউচ্চ প্রাসাদ দান করবো জান্নাতে, যার পাদদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত, সেখানে তারা স্থায়ী হবে, কত উত্তম প্রতিদান সৎকর্মশীলদের।

الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰي رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٥٩﴾

৫৯. যারা ধৈর্য অবলম্বন করে ও তাদের প্রতিপালকের উপর নির্ভর করে।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَاۗبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۡ اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٠﴾

৬০. এমন কত জীবজন্তু আছে যারা নিজেদের খাদ্য মওজুদ রাখে না; আল্লাহই রিযিক দান করেন তাদেরকে ও তোমাদেরকে এবং তিনি সর্বশ্রোতা সর্বজ্ঞ।

وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۚ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٦١﴾

৬১. যদি তুমি তাদেরকে জিজ্ঞেস করঃ কে আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন এবং চন্দ্র-সূর্যকে নিয়ন্ত্রণ করছেন? তারা অবশ্যই বলবেঃ আল্লাহ! তাহলে তারা কোথায় ফিরে যাচ্ছে?

১। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত। মু'য়ায (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেছেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর পেছনে সওয়ারীর পিঠে বসা ছিলাম। তখন তিনি আমাকে ডাকলেন, হে মু'য়ায, আমি জবাব দিলাম, লাব্বাইবা ওয়া সা'দাইকা। অতঃপর তিনি এরূপ তিনবার ডাকলেন। (তারপর জিজ্ঞেস করলেন) তুমি কি জান যে, বান্দাহ্দের ওপর আল্লাহ্র হক কি? (আল্লাহ্র হক এই যে,) বান্দাহ আল্লাহ্র ইবাদত করবে এবং তাঁর সাথে কোন কিছুকে শরীক বানাতে পারবে না। পুনরায় তিনি আরও কিছুক্ষণ চললেন। অতঃপর ডাকলেন, হে মু'য়ায! আমি জবাব দিলাম, লাব্বাইকা ওয়া সা'দাইকা। তিনি জিজ্ঞেস করলেন, তোমার কি জানা আছে, বান্দাহ যখন ওটা করে, তখন আল্লাহ্র ওপর বান্দাহদের হক কি দাঁড়ায়? (তা হলো এই যে,) আল্লাহ্ তা'আলা তাদেরকে আযাব দেবেন না। (বুখারী, হাদীস নং ৬২৬৭)

اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٦٢﴾

৬২. আল্লাহ তাঁর বান্দাদের মধ্যে যার জন্যে ইচ্ছা তার রিযিক বর্ধিত করেন এবং যার জন্যে ইচ্ছা তা সীমিত করেন। আল্লাহ সর্ববিষয়ে সম্যক অবহিত।

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٣﴾

৬৩. যদি তুমি তাদেরকে জিজ্ঞেস করঃ মৃত হবার পর আকাশ হতে পানি বর্ষণ করে কে ওকে জীবিত করে? তারা অবশ্যই বলবেঃ আল্লাহ! বলঃ প্রশংসা আল্লাহরই; কিন্তু তাদের অধিকাংশই এটা অনুভব করে না।

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ؕ وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٤﴾

৬৪. এই পার্থিব জীবনতো ক্রীড়া-কৌতুক ব্যতীত কিছুই নয়। পারলৌকিক জীবনই তো প্রকৃত জীবন, যদি তারা জানতো।[১]

فَاِذَا رَكِبُوْا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٥﴾

৬৫. তারা যখন নৌযানে আরোহণ করে তখন তারা বিশুদ্ধচিত্ত হয়ে একনিষ্ঠভাবে আল্লাহকে ডাকে; অতঃপর তিনি যখন স্থলে ভিড়িয়ে তাদেরকে উদ্ধার করেন, তখন তারা শিরকে লিপ্ত হয়।

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۙ وَلِيَتَمَتَّعُوْا ۟ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾

৬৬. ফলে তাদের প্রতি আমার দান তারা অস্বীকার করে এবং ভোগ-বিলাসে মত্ত থাকে; অচিরেই তারা জানতে পারবে।

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ জান্নাতে প্রবেশকারী প্রথম দলের (লোকদের) চেহারা চৌদ্দ তারিখের চাঁদের ন্যায় (উজ্জ্বল ও সুন্দর) হবে। জান্নাতে তাদের না আসবে থু থু, না ঝরবে নাকের পানি, না হবে পায়খানা। তাদের বাসন হবে সোনার তৈরী, চিরুনী হবে সোনা ও রূপার। তাদের আংটি বাতির ন্যায় জ্বলতে থাকবে। তাদের ঘাম মেশকের ন্যায় (খোশবুদার) হবে। প্রত্যেকে দু'জন করে এমন বিবি পাবে-অত্যাধিক সৌন্দর্যের কারণে যাদের গোশত ভেদ করে হাড্ডির ভেতরের মজ্জাও দেখা যাবে। জান্নাত বাসীদের মধ্যে (কখনো) না হবে মতভেদ, না দেখা দেবে পারস্পরিক হিংসা বিদ্বেষ। সবাই এক মন, এক প্রাণ হয়ে থাকবে। সকাল-সন্ধ্যায় তারা আল্লাহ্র পবিত্রতা বর্ণনায় রত থাকবে। (বুখারী, হাদীস নং ৩২৪৫)

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا آمِنًا وَيُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ۗ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَةِ اللَّهِ يَكْفُرُونَ ﴿٦٧﴾

৬৭. তারা কি দেখে না যে, আমি (মক্কা) হারামকে নিরাপদ স্থান করেছি অথচ এর চতুষ্পার্শ্বে যেসব মানুষ আছে তাদের উপর হামলা করা হয়, তবে কি তারা অসত্যেই বিশ্বাস করবে এবং আল্লাহর অনুগ্রহ অস্বীকার করবে?

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ﴿٦٨﴾

৬৮. যে ব্যক্তি আল্লাহ সম্বন্ধে মিথ্যা রচনা করে অথবা তাঁর নিকট হতে আগত সত্যকে অস্বীকার করে তার অপেক্ষা অধিক যালিম আর কে? জাহান্নামই কি কাফিরদের আবাস নয়?

وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٦٩﴾

৬৯. যারা আমার উদ্দেশ্যে সংগ্রাম করে[১] আমি তাদেরকে অবশ্যই আমার পথে পরিচালিত করবো; আল্লাহ অবশ্যই সৎকর্মপরায়ণদের সাথে থাকেন।

১। অর্থাৎ এর ভাবার্থ হচ্ছেঃ যারা নিজেদের ইলম অনুযায়ী আমল করে, আল্লাহ্ তাদেরকে ঐসব বিষয়েও সুপথ প্রদর্শন করবেন, যা তাদের ইলমের মধ্যে নেই। (ইবনে কাসীর)

সূরাঃ রূম, মাক্কী

(আয়াতঃ ৬০, রুকূ'ঃ ৬)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةُ الرُّوْمِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٦٠ رُكُوْعَاتُهَا ٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ۚ ①

১. আলিফ-লাম-মীম

غُلِبَتِ الرُّوْمُ ۙ ②

২. রোমকগণ পরাজিত হয়েছে,

فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ۙ ③

৩. নিকটবর্তী অঞ্চলে; কিন্তু তারা তাদের এই পরাজয়ের পর শীঘ্রই বিজয়ী হবে,

فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ۭ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ۭ وَيَوْمَىِٕذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ ④

৪. কয়েক বছরের মধ্যেই। পূর্বের ও পরের সিদ্ধান্ত আল্লাহরই। আর সেই দিন মু'মিনরা আনন্দিত হবে,

بِنَصْرِ اللّٰهِ ۭ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۙ ⑤

৫. আল্লাহর সাহায্যে। তিনি যাকে ইচ্ছা সাহায্য করেন এবং তিনি পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু।

وَعْدَ اللّٰهِ ۭ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ⑥

৬. এটা আল্লাহরই প্রতিশ্রুতি; আল্লাহ তাঁর প্রতিশ্রুতির ব্যতিক্রম করেন না; কিন্তু অধিকাংশ লোক জানে না।

يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ⑦

৭. তারা পার্থিব জীবনের বাহ্যিক দিক সম্বন্ধে অবগত, আর আখিরাত সম্বন্ধে তারা গাফিল।

اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۣ مَا خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَاۗىِٕ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ⑧

৮. তারা কি নিজেদের অন্তরে ভেবে দেখে না যে, আল্লাহ আকাশমন্ডলী, পৃথিবী ও এতোদুভয়ের অন্তর্বর্তী সবকিছু সৃষ্টি করেছেন যথাযথভাবেই ও এক নির্দিষ্ট কালের জন্যে? কিন্তু মানুষের মধ্যে অনেকেই তাদের প্রতিপালকের সাক্ষাতে অবিশ্বাসী।

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ

৯. তারা কি পৃথিবীতে ভ্রমণ করে না? তাহলে দেখতো যে, তাদের

عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاَثَارُوا الْاَرْضَ وَعَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوْهَا وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝٩

পূর্ববর্তীদের পরিণাম কিরূপ হয়েছে। শক্তিতে তারা ছিল তাদের আপেক্ষা প্রবল, তারা জমি চাষ করতো, তারা ওটা আবাদ করতো তাদের অপেক্ষা অধিক। তাদের নিকট এসেছিল তাদের রাসূলগণ সুস্পষ্ট নিদর্শনসহ; বস্তুতঃ তাদের প্রতি যুলুম করা আল্লাহর কাজ ছিল না বরং তারা নিজেরাই নিজেদের প্রতি যুলুম করেছিল।

ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوا السُّوْٓاٰى اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝١٠

১০. অতঃপর যারা মন্দকর্ম করেছিল তাদের পরিণাম হয়েছে মন্দ; কারণ তারা আল্লাহর আয়াতসমূহ প্রত্যাখ্যান করতো এবং তা নিয়ে ঠাট্টা-বিদ্রূপ করতো।

اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝١١

১১. আল্লাহ সৃষ্টির সূচনা করেন, অতঃপর তিনি এর পুনরাবৃত্তি করবেন, তখন তোমরা তাঁরই নিকট প্রত্যাবর্তিত হবে।

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُوْنَ ۝١٢

১২. যেদিন কিয়ামত সংঘটিত হবে সেদিন অপরাধিগণ হতাশ হয়ে পড়বে।

وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآئِهِمْ شُفَعٰٓؤُا وَكَانُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝١٣

১৩. তাদের শরীকদের কেউ তাদের সুপারিশ করবে না এবং তারাই তাদের শরীকদেরকে অস্বীকার করবে।

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ۝١٤

১৪. যেদিন কিয়ামত সংঘটিত হবে সেদিন মানুষ বিভক্ত[১] হয়ে পড়বে।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ۝١٥

১৫. অতএব যারা ঈমান এনেছে ও সৎকর্ম করেছে তারা জান্নাতে আনন্দে থাকবে।

১। মু'মিন ও কাফিরদের পৃথক পৃথক দল হবে। (আহসানুল বয়ান)

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ﴿١٦﴾

১৬. আর যারা কুফরী করেছে এবং আমার নিদর্শনাবলী ও পরকালের সাক্ষাৎকার অস্বীকার করেছে, তারাই শাস্তি ভোগ করতে থাকবে।

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ﴿١٧﴾

১৭. সুতরাং তোমরা আল্লাহর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা কর সন্ধ্যায় ও প্রভাতে।

وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿١٨﴾

১৮. এবং আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে সকল প্রশংসা তো তারই। আর অপরাহ্নেও যোহরের সময়;

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿١٩﴾

১৯. তিনিই মৃত হতে জীবন্তের আবির্ভাব ঘটান এবং তিনিই জীবন্ত হতে মৃতের ও আবির্ভাব ঘটান এবং ভূমির মৃত্যুর পর ওকে পুনর্জীবিত করেন। এভাবেই তোমরা উত্থিত হবে।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ﴿٢٠﴾

২০. তাঁর নিদর্শনাবলীর মধ্যে রয়েছে যে, তিনি তোমাদেরকে মৃত্তিকা হতে সৃষ্টি করেছেন। এখন তোমরা মানুষ, সর্বত্র ছড়িয়ে পড়ছো।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾

২১. এবং তাঁর নিদর্শনাবলীর মধ্যে রয়েছে যে, তিনি তোমাদের জন্যে তোমাদের মধ্য হতে সৃষ্টি করেছেন তোমাদের সঙ্গিনীদেরকে যাতে তোমরা তাদের নিকট শান্তি পাও এবং তিনি তোমাদের মধ্যে পারস্পরিক ভালবাসা ও দয়া সৃষ্টি করেছেন। চিন্তাশীল সম্প্রদায়ের জন্যে এতে অবশ্যই বহু নিদর্শন রয়েছে।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ﴿٢٢﴾

২২. এবং তার নিদর্শনাবলীর মধ্যে রয়েছে আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সৃষ্টি এবং তোমাদের ভাষা ও বর্ণের

বৈচিত্র। এতে জ্ঞানীদের জন্যে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. এবং তাঁর নিদর্শনাবলীর মধ্যে রয়েছে রাত্রিতে ও দিবাভাগে তোমাদের নিদ্রা এবং তোমাদের তাঁর অনুগ্রহ অন্বেষণ। এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে শ্রবণকারী সম্প্রদায়ের জন্যে।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٤﴾

২৪. এবং তাঁর নিদর্শনাবলীর মধ্যে রয়েছে যে, তিনি তোমাদেরকে প্রদর্শন করেন বিদ্যুৎ ভয় ও ভরসা সঞ্চারকরূপে এবং তিনি আকাশ হতে পানি বর্ষণ করেন ও তার দ্বারা ভূমিকে তার মৃত্যুর পর পুনর্জীবিত করেন; এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে বোধশক্তি সম্পন্ন সম্প্রদায়ের জন্যে।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ؕ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ۖۗ مِّنَ الْاَرْضِ اِذَآ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ﴿٢٥﴾

২৫. তাঁর নিদর্শনাবলীর মধ্যে রয়েছে যে, তাঁরই আদেশে আকাশ ও পৃথিবীর স্থিতি; অতঃপর আল্লাহ যখন তোমাদেরকে মৃত্তিকা হতে উঠবার জন্যে একবার আহ্বান করবেন তখন তোমরা উঠে আসবে।

وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿٢٦﴾

২৬. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে তা তাঁরই। সবাই তাঁর আজ্ঞাবহ।

وَهُوَ الَّذِيْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ؕ وَلَهُ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٧﴾

২৭. তিনি সৃষ্টিকে (প্রথমবার) অস্তিত্বে আনয়ন করেন অতঃপর তিনি এটাকে সৃষ্টি করবেন পুনর্বার; এটা তাঁর জন্যে অতি সহজ। আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে সর্বোচ্চ মর্যাদা তাঁরই এবং তিনিই পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।

ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ؕ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَآءَ فِيْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾

২৮. আল্লাহ তোমাদের জন্যে তোমাদের নিজেদের মধ্যে একটি দৃষ্টান্ত পেশ করেছেনঃ তোমাদেরকে আমি যে রিযিক দিয়েছি তোমাদের অধিকারভুক্ত দাস-দাসীদের কেউ কি তাতে অংশীদার? বরং তোমরা তাতে সমপর্যায়ের অথচ তোমরা কি তাদেরকে সেরূপ ভয় কর যেরূপ তোমরা পরস্পরকে ভয় কর। এভাবেই আমি বোধশক্তি সম্পন্ন সম্প্রদায়ের জন্যে নিদর্শনাবলী বিবৃত করি।

بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٩﴾

২৯. বস্তুতঃ সীমালঙ্ঘনকারীরা অজ্ঞানতাবশতঃ তাদের খেয়াল-খুশীর অনুসরণ করে থাকে; সুতরাং আল্লাহ যাকে পথভ্রষ্ট করেন, কে তাকে সৎপথে পরিচালিত করবে? তাদের কোন সাহায্যকারী নেই।

فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ؕ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ ﴿٣٠﴾

৩০. তুমি একনিষ্ঠ হয়ে নিজেকে দ্বীনে প্রতিষ্ঠিত কর। আল্লাহর প্রকৃতির অনুসরণ কর, যে প্রকৃতি অনুযায়ী তিনি মানুষ সৃষ্টি করেছেন; আল্লাহর সৃষ্টির কোন পরিবর্তন নেই, এটা সরল দ্বীন; কিন্তু অধিকাংশ মানুষ জানে না।

مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ ﴿٣١﴾

৩১. বিশুদ্ধ চিত্তে তাঁর অভিমুখী হয়ে তাঁকে ভয় কর, তোমরা নামায কায়েম কর এবং মুশরিকদের অন্তর্ভুক্ত হয়ো না।

مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿٣٢﴾

৩২. যারা নিজেদের দ্বীনে মতভেদ সৃষ্টি করেছে এবং বিভিন্ন দলে বিভক্ত হয়েছে। প্রত্যেক দলই নিজ নিজ মতবাদ নিয়ে উৎফুল্ল।

وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُم مُّنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا أَذَاقَهُم مِّنْهُ رَحْمَةً إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُم بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾

৩৩. মানুষকে যখন দুঃখ-দৈন্য স্পর্শ করে তখন তারা বিশুদ্ধ চিত্তে তাদের প্রতিপালককে ডাকে; অতঃপর তিনি যখন তাদেরকে স্বীয় অনুগ্রহ আস্বাদন করান তখন তাদের এক দল তাদের প্রতিপালকের শরীক সাব্যস্ত করে থাকে।

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾

৩৪. তাদেরকে আমি যা দিয়েছি তা অস্বীকার করাবার জন্যে। সুতরাং ভোগ করে নাও, শীঘ্রই তোমরা জানতে পারবে।

أَمْ أَنزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ﴿٣٥﴾

৩৫. আমি কি তাদের নিকট এমন কোন দলীল অবতীর্ণ করেছি যা তাদেরকে আমার শরীক করতে বলে?

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ﴿٣٦﴾

৩৬. আমি যখন মানুষকে অনুগ্রহের আস্বাদ দিই তখন তারা উৎফুল্ল হয় এবং তাদের কৃতকর্মের ফলে দুর্দশাগ্রস্ত হলেই তারা হতাশ হয়ে পড়ে।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٣٧﴾

৩৭. তারা কি লক্ষ্য করে না যে, আল্লাহ যার জন্যে ইচ্ছা তার রিযিক প্রশস্ত করেন অথবা তা সীমিত করেন? এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে মু'মিন সম্প্রদায়ের জন্যে।

فَآتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٣٨﴾

৩৮. অতএব আত্মীয়কে দিয়ে দাও তার প্রাপ্য এবং অভাবগ্রস্ত ও মুসাফিরকেও। যারা আল্লাহর চেহারা (দর্শন) কামনা করে[১] তাদের জন্যে এটা শ্রেয় এবং তারাই সফলকাম।

১। যারা জান্নাতে আল্লাহকে দেখে নিজেকে ধন্য করতে চায়। (তাফসীর আহ্সানুল বায়ান, উর্দু)

وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَاْ فِيْٓ اَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ﴿٣٩﴾

৩৯. মানুষের ধন বৃদ্ধি পাবে বলে তোমরা সুদের উপর যা দিয়ে থাকো, আল্লাহর দৃষ্টিতে তা ধন-সম্পদ বৃদ্ধি করে না; কিন্তু আল্লাহর চেহারা (সন্তুষ্টি) লাভের জন্যে যে যাকাত তোমরা দিয়ে থাকো তাই বৃদ্ধি পায়; তারাই সমৃদ্ধশালী।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ۭ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٠﴾

৪০. আল্লাহই তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন, অতঃপর তোমাদেরকে রিযিক দিয়েছেন, তিনি তোমাদের মৃত্যু ঘটাবেন ও পরে তোমাদেরকে জীবিত করবেন। তোমাদের শরীকদের এমন কেউ আছে কি যে এসবের কোন একটিও করতে পারে? তারা যাদেরকে শরীক করে, আল্লাহ তা হতে পবিত্র, মহান।

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِيْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤١﴾

৪১. মানুষের কৃতকর্মের কারণে স্থলে ও সমুদ্রে বিপর্যয় ছড়িয়ে পড়েছে, যার ফলে তাদেরকে কোন কোন কর্মের শাস্তি তিনি আস্বাদন করান যাতে তারা ফিরে অসে।

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلُ ۭ كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ ﴿٤٢﴾

৪২. বলঃ তোমরা পৃথিবীতে পরিভ্রমণ কর এবং দেখো, তোমাদের পূর্ববর্তীদের পরিণাম কি হয়েছে! তাদের অধিকাংশই ছিল মুশরিক।

فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ يَوْمَىِٕذٍ يَّصَّدَّعُوْنَ ﴿٤٣﴾

৪৩. তুমি সরল-সঠিক দ্বীনে নিজেকে প্রতিষ্ঠিত কর, আল্লাহর নির্দেশে অনিবার্য যে দিবস তা আসার পূর্বে, সেদিন মানুষ বিভক্ত হয়ে পড়বে।

مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ﴿٤٤﴾

৪৪. যে কুফরী করে, কুফরীর শাস্তি তারই প্রাপ্য; যারা সৎকর্ম করে তারা নিজেদেরই জন্যে রচনা করে সুখ-শয্যা।

لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٥﴾

৪৫. কারণ যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে, আল্লাহ তাদেরকে নিজ অনুগ্রহে পুরস্কৃত করেন। তিনি কাফিরদেরকে পছন্দ করেন না।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ يُّرْسِلَ الرِّيَاحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِيَ الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٤٦﴾

৪৬. তাঁর নিদর্শনাবলীর একটি এই যে, তিনি সুসংবাদবাহী বায়ু প্রেরণ করেন তোমাদেরকে তাঁর অনুগ্রহ আস্বাদন করাবার জন্যে; এবং যেন তাঁর নির্দেশে নৌযানগুলো বিচরণ করে, যাতে তোমরা তাঁর অনুগ্রহ সন্ধান করতে পার ও তাঁর প্রতি কৃতজ্ঞ হও।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا ؕ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾

৪৭. আমি তোমার পূর্বে রাসূল-দেরকে প্রেরণ করেছিলাম তাদের নিজ নিজ সম্প্রদায়ের নিকট। তারা তাঁদের নিকট সুস্পষ্ট নিদর্শনসমূহ নিয়ে এসেছিলেন; অতঃপর আমি অপরাধীদেরকে শাস্তি দিয়েছিলাম। মু'মিনদেরকে সাহায্য করা আমার দায়িত্ব।

اَللّٰهُ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِي السَّمَآءِ كَيْفَ يَشَآءُ وَيَجْعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٨﴾

৪৮. আল্লাহ, যিনি বায়ু প্রেরণ করেন, ফলে এটা মেঘমালাকে সঞ্চালিত করে; অতঃপর তিনি একে যেমন ইচ্ছা আকাশে ছড়িয়ে দেন, পরে একে খন্ড-বিখন্ড করে এবং তুমি দেখতে পাও ওটা হতে নির্গত হয় পানিধারা; অতঃপর যখন তিনি তাঁর বান্দাদের মধ্যে যাদের নিকট ইচ্ছা এটা পৌঁছিয়ে দেন, তখন তারা হয় আনন্দিত।

وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِيْنَ ﴿٤٩﴾

৪৯. যদিও তারা তাদের প্রতি বৃষ্টি বর্ষণের পূর্বে নিরাশ ছিল।

فَانْظُرْ اِلٰۤى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰى

৫০. আল্লাহর অনুগ্রহের ফল সম্বন্ধে চিন্তা কর, কিভাবে তিনি ভূমির মৃত্যুর পর একে পুনর্জীবিত করেন;

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾

এভাবেই আল্লাহ মৃতকে জীবিত করেন, কারণ তিনি সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান।

وَلَئِنْ اَرْسَلْنَا رِيْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ يَكْفُرُوْنَ ﴿٥١﴾

৫১. এবং আমি যদি এমন বায়ু প্রেরণ করি যার ফলে তারা দেখে যে, শস্য পীত বর্ণ ধারণ করেছে, তখন তো তারা অকৃতজ্ঞ হয়ে পড়ে।

فَاِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٥٢﴾

৫২. নিশ্চয় তুমি মৃতকে শুনাতে পারবে না, বধিরকেও পারবে না আহ্বান শুনাতে, যখন তারা মুখ ফিরিয়ে নেয়।

وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِ الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٥٣﴾

৫৩. আর তুমি অন্ধকেও পথে আনতে পারবে না তাদের পথভ্রষ্টতা হতে। যারা আমার নিদর্শনাবলীতে বিশ্বাস করে শুধু তাদেরকেই তুমি শুনাতে পারবে, কারণ তারা আত্মসমর্পণকারী।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَّشَيْبَةً ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ ﴿٥٤﴾

৫৪. আল্লাহ, যিনি তোমাদেরকে সৃষ্টি করেন দুর্বলরূপে। অতঃপর দুর্বলতার পর তিনি দেন শক্তি, শক্তির পর আবার দেন দুর্বলতা ও বার্ধক্য। তিনি যা ইচ্ছা সৃষ্টি করেন এবং তিনিই সর্বজ্ঞ, সর্বশক্তিমান।

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ۙ مَا لَبِثُوْا غَيْرَ سَاعَةٍ ؕ كَذٰلِكَ كَانُوْا يُؤْفَكُوْنَ ﴿٥٥﴾

৫৫. যেদিন কিয়ামত হবে সেদিন অপরাধীরা শপথ করে বলবে যে, তারা (দুনিয়ায়) এক মুহূর্তের বেশি সময় অবস্থান করেনি। এভাবেই তারা সত্যভ্রষ্ট হতো।

وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَالْاِيْمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى يَوْمِ الْبَعْثِ ۚ فَهٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٦﴾

৫৬. কিন্তু যাদেরকে জ্ঞান ও ঈমান দেয়া হয়েছে তারা বলবেঃ তোমরা তো আল্লাহর বিধানে পুনরুত্থান দিবস পর্যন্ত অবস্থান করেছো। এটাই তো পুনরুত্থান দিবস; কিন্তু তোমরা জানতে না।

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٥٧﴾

৫৭. সেদিন অত্যাচারীদের ওযর আপত্তি তাদের কাজে আসবে না এবং তাদেরকে তওবাও করতে বলা হবে না।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِاٰيَةٍ لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ﴿٥٨﴾

৫৮. আমি তো মানুষের জন্যে এই কুরআনে সর্বপ্রকার দৃষ্টান্তের বর্ণনা করেছি। তুমি যদি তাদের নিকট কোন নিদর্শন হাজির কর, তবে কাফিররা অবশ্যই বলবেঃ তোমরা তো বাতিলপন্থী।

كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٩﴾

৫৯. যাদের জ্ঞান নেই আল্লাহ তাদের হৃদয়ে এভাবে মোহরাঙ্কিত করে দেন।

فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٦٠﴾

৬০. অতএব তুমি ধৈর্যধারণ কর, নিশ্চয়ই আল্লাহর প্রতিশ্রুতি সত্য। যারা দৃঢ় বিশ্বাসী নয় তারা যেন তোমাকে বিচলিত করতে না পারে।

সূরাঃ লোকমান, মাক্কী

(আয়াতঃ ৩৪, রুকূ'ঃ ৪)

سُوْرَةُ لُقْمٰنَ مَكِّيَّةٌ

رُكُوْعَاتُهَا ٤ اٰيَاتُهَا ٣٤

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ﴿١﴾

১. আলিফ-লাম-মীম।

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾

২. এগুলো প্রজ্ঞাপূর্ণ কিতাবের আয়াত।

هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣﴾

৩. পথ-নির্দেশক ও রহমত সৎকর্ম-পরায়ণদের জন্যে।

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾

৪. যারা নামায কায়েম করে, যাকাত দেয় এবং তারা আখিরাতে নিশ্চিত-ভাবে বিশ্বাসী।

أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥﴾

৫. তারাই তাদের প্রতিপালকের নির্দেশিত পথে আছে এবং তারাই সফলকাম।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ عَن سَبِيلِ اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٦﴾

৬. মানুষের মধ্যে কেউ কেউ অজ্ঞতাবশতঃ আল্লাহর পথ হতে (মানুষকে) বিচ্যুত করবার জন্যে অবান্তর কথাবার্তা ক্রয় (সংগ্রহ) করে এবং এই পথটিকেই ঠাট্টা-বিদ্রূপ করে; তাদের জন্যে রয়েছে অবমাননাকর শাস্তি।[১]

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا وَلَّىٰ مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا كَأَنَّ فِي أُذُنَيْهِ وَقْرًا ۖ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٧﴾

৭. যখন তার নিকট আমার আয়াত আবৃত্তি করা হয় তখন সে দম্ভভরে মুখ ফিরিয়ে নেয় যেন সে এটা শুনতেই পায়নি, যেন তার কর্ণ দু'টি বধির; অতএব তাকে যন্ত্রনাদায়ক শাস্তির সুসংবাদ দিয়ে দাও।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتُ النَّعِيمِ ﴿٨﴾

৮. যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে তাদের জন্যে রয়েছে নিয়ামতপূর্ণ জান্নাত।

خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٩﴾

৯. সেখানে তারা চিরকাল থাকবে। আল্লাহর প্রতিশ্রুতি সত্য। তিনি পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

خَلَقَ السَّمَاوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَأَلْقَىٰ فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَن تَمِيدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيهَا مِن

১০. তিনি আকাশমন্ডলী নির্মাণ করেছেন স্তম্ভ ব্যতীত, তোমরা এটা দেখছো; তিনিই পৃথিবীতে স্থাপন

১। আব্দুর রহমান ইবনে গানাম আশ'আরী বলেছেন, আবূ আমের (রাযিআল্লাহু আনহু) কিংবা আবূ মালেক আশ'আরী (রাযিআল্লাহু আনহু) আমার নিকট বর্ণনা করেছেন, আর আল্লাহ্‌র কসম! তিনি মিথ্যা বলেননি, তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছেন, আমার উম্মতের মধ্যে এমন অনেক সম্প্রদায় সৃষ্টি হবে, যারা যেনা-ব্যভিচার, রেশমী কাপড় ব্যবহার, মদ্যপান ও গান-বাদ্যকে হালাল মনে করবে। আর অনেক সম্প্রদায় এমনও হবে, যারা পর্বতের পাদদেশে বসবাস করবে। গোধূলি লগ্নে যখন তারা তাদের পশু পাল নিয়ে ফিরে চলবে, এমনি সময় তাদের নিকট কোন উদ্দেশ্যে ফকীর আসবে। তারা ফকীরকে বলবে, আগামীকাল সকালে আমাদের কাছে এসো। রাতের অন্ধকারেই আল্লাহ্ তাদেরকে ধ্বংস করে দিবেন এবং (তাদের ওপর) পর্বতটিকে ধ্বসিয়ে দিবেন। অন্যান্যদের কিয়ামত পর্যন্ত বানর ও শূকর বানিয়ে রাখবেন। (বুখারী, হাদীস নং ৫৫৯০)

كُلِّ دَآبَّةٍ ؕ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ﴿١٠﴾

করেছেন পর্বতমালা যাতে এটা তোমাদেরকে নিয়ে ঢলে না পড়ে এবং এতে ছড়িয়ে দিয়েছেন সর্বপ্রকার জীব-জন্তু এবং আমিই আকাশ হতে পানি বর্ষণ করে এতে উদ্‌গত করি সর্বপ্রকার কল্যাণকর উদ্ভিদরাজি।

هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ فَاَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ بَلِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿١١﴾

১১. এটা আল্লাহর সৃষ্টি! তিনি ছাড়া অন্যেরা কি সৃষ্টি করেছে তা আমাকে দেখাও; বরং সীমালঙ্ঘনকারীরা তো স্পষ্ট বিভ্রান্তিতে রয়েছে।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿١٢﴾

১২. আমি অবশ্যই লোকমানকে[১] মহাপ্রজ্ঞা দান করেছিলাম। (এবং বলেছিলাম) আল্লাহর প্রতি কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর। যে কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে সে তো তা করে নিজেরই জন্যে এবং কেউ অকৃতজ্ঞ হলে আল্লাহ তো অভাবমুক্ত, সর্ব প্রশংসিত।

وَاِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ﴿١٣﴾

১৩. যখন লোকমান উপদেশচ্ছলে তার পুত্রকে বলেছিলেনঃ হে বৎস! আল্লাহর সাথে কাউকে শরীক করো না। নিশ্চয়ই শিরক মহা অন্যায়।

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ ؕ اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿١٤﴾

১৪. আমি মানুষকে তার পিতা-মাতার প্রতি সদাচারণের নির্দেশ দিয়েছি। তার জননী তাকে কষ্টের পর কষ্ট বরণ করে গর্ভে ধারণ করেছে এবং তার দুধ ছাড়ানো হয় দুই বছরে। সুতরাং আমার প্রতি ও তোমার পিতা-মাতার প্রতি কৃতজ্ঞ

১। হযরত লোকমান নবী ছিলেন কি না এ ব্যাপারে মতভেদ রয়েছে। অধিকাংশ জ্ঞানীদের মতে তিনি নবী ছিলেন না বরং পরহেযগার, অলী এবং আল্লাহ্‌র প্রিয় বান্দা ছিলেন। (তাফসীর ইবনে কাসীর)

হও। প্রত্যাবর্তন তো আমারই নিকট।[১]

وَاِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰٓى اَنْ تُشْرِكَ بِىْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِى الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا ۫ وَّاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَىَّ ۚ ثُمَّ اِلَىَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾

১৫. তারা উভয়ে যদি তোমাকে বাধ্য করে যে তুমি আমার সাথে শিরক করবে যে বিষয়ে তোমার কোন জ্ঞান নেই, তবে তুমি তাদের কথা মানবে না, তবে পৃথিবীতে তাদের সাথে বসবাস করবে সদ্ভাবে এবং যে বিশুদ্ধ চিত্তে আমার অভিমুখী হয়েছে তার পথ অবলম্বন কর, অতঃপর তোমাদের প্রত্যাবর্তন আমারই নিকট এবং তোমরা যা করতে সে বিষয়ে আমি তোমাদেরকে অবহিত করবো।

يٰبُنَىَّ اِنَّهَآ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِىْ صَخْرَةٍ اَوْ فِى السَّمٰوٰتِ اَوْ فِى الْاَرْضِ يَاْتِ بِهَا اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿١٦﴾

১৬. হে বৎস! তা (পূণ্য ও পাপ) যদি সরিষার দানা পরিমাণও হয় এবং তা যদি থাকে শিলাগর্ভে অথবা আকাশে কিংবা ভূগর্ভে, আল্লাহ ওটাও হাজির করবেন। আল্লাহ সূক্ষ্মদর্শী, খবর রাখেন সব বিষয়ের।

يٰبُنَىَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَآ اَصَابَكَ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿١٧﴾

১৭. হে বৎস! নামায কায়েম করবে, ভাল কাজের আদেশ করবে ও মন্দ কাজ হতে নিষেধ করবে এবং আপদে-বিপদে ধৈর্যধারণ করবে, নিশ্চয়ই এটা দৃঢ় সংকল্পের কাজ।

وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِى الْاَرْضِ مَرَحًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ﴿١٨﴾

১৮. (অহংকারবশে) তুমি মানুষ হতে মুখ ফিরিয়ে নিয়ো না এবং পৃথিবীতে উদ্ধতভাবে বিচরণ করো না; কারণ আল্লাহ কোন উদ্ধত, অহংকারীকে পছন্দ করেন না।

১। আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) থেকে বর্ণিত, তিনি জিজ্ঞাসা করলেন হে আল্লাহ্‌র ও রাসূল? আমরা জিহাদকে সর্বোত্তম আমল মনে করি, অতএব আমরা (মেয়েরা) কি জিহাদে অংশগ্রহণ করব না? তিনি বললেন না তবে তোমাদের জন্য সর্বোত্তম জিহাদ হল মাকবূল হজ্জ। (বুখারী, হাদীস নং ২৭৮৪)

وَاقْصِدْ فِيْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ؕ
اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ ﴿١٩﴾

১৯. তুমি পদচারণায় মধ্যবর্তিতা অবলম্বন করবে এবং তোমার কণ্ঠস্বর করবে নীচু; স্বরের মধ্যে গাধার স্বরই সর্বাপেক্ষা অপ্রীতিকর।

اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً
وَّبَاطِنَةً ؕ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ
بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ﴿٢٠﴾

২০. তোমরা কি দেখো না যে, আল্লাহ আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে সবই তোমাদের কল্যাণে নিয়োজিত করেছেন এবং তোমাদের প্রতি তাঁর প্রকাশ্য ও অপ্রকাশ্য অনুগ্রহ সম্পূর্ণ করেছেন? মানুষের মধ্যে কেউ কেউ অজ্ঞতাবশতঃ আল্লাহ সম্বন্ধে বিতন্ডা করে, তাদের না আছে পথ-নির্দেশক আর না আছে কোন দীপ্তিমান কিতাব।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ
نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ
الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿٢١﴾

২১. তাদেরকে যখন বলা হয়ঃ আল্লাহ যা অবতীর্ণ করেছেন তা অনুসরণ কর। তখন তারা বলেঃ বরং আমরা আমাদের পিতৃপুরুষদেরকে যাতে পেয়েছি তারই অনুসরণ করবো। শয়তান যদি তাদেরকে জ্বলন্ত অগ্নির শাস্তির দিকে আহ্বান করে, তবুও কি?

وَمَنْ يُّسْلِمْ وَجْهَهٗٓ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ
فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ؕ وَاِلَى اللّٰهِ
عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿٢٢﴾

২২. যদি কেউ সৎকর্মপরায়ণ হয়ে আল্লাহর নিকট আত্মসমর্পণ করে তবে সে তো দৃঢ়ভাবে ধারণ করে এক মযবূত হাতল, যাবতীয় কার্যের পরিণাম আল্লাহর ইখতিয়ারে।

وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ كُفْرُهٗ ؕ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ
فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ
الصُّدُوْرِ ﴿٢٣﴾

২৩. কেউ কুফরী করলে তার কুফরী যেন তোমাকে চিন্তিত না করে, আমারই নিকট তাদের প্রত্যাবর্তন, অতঃপর আমি তাদেরকে অবহিত করবো তারা যা করতো। নিশ্চয়ই অন্তরে যা রয়েছে সে সম্বন্ধে আল্লাহ সবিশেষ অবহিত।

نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ اِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٢٤﴾

২৪. আমি তাদেরকে জীবনোপরকরণ ভোগ করতে দেবো স্বল্পকালের জন্যে। অতঃপর তাদেরকে কঠিন শাস্তি ভোগ করতে বাধ্য করবো।

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾

২৫. তুমি যদি তাদেরকে জিজ্ঞেস করঃ আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী কে সৃষ্টি করেছেন? তারা নিশ্চয়ই বলবেঃ আল্লাহ। বলঃ সকল প্রশংসা আল্লাহরই; কিন্তু তাদের অধিকাংশই এ বিষয়ে অজ্ঞ।

لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِىُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٦﴾

২৬. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে তা সবই আল্লাহরই; আল্লাহ, তিনি অভাবমুক্ত, প্রশংসিত।

وَلَوْ اَنَّ مَا فِى الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٧﴾

২৭. পৃথিবীর সমস্ত বৃক্ষরাজি যদি কলম হয় এবং এই সমুদ্রের সাথে যদি আরো সাত সমুদ্র যুক্ত হয়ে কালি হয়, তবুও আল্লাহর বাণী (গুণাবলী) (লিখে) শেষ করা যাবে না। আল্লাহ পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।

مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٢٨﴾

২৮. তোমাদের সবারই সৃষ্টি ও পুনরুত্থান একটি মাত্র প্রাণীর সৃষ্টি ও পুনরুত্থানেরই অনুরূপ। আল্লাহ সর্বশ্রোতা, সম্যক দ্রষ্টা।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۫ كُلٌّ يَّجْرِىْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٩﴾

২৯. তুমি কি দেখো না যে, আল্লাহ রাত্রিকে দিবসে এবং দিবসকে রাত্রির ভিতরে প্রবেশ করান? তিনি চন্দ্র-সূর্যকে করেছেন নিয়মাধীন, প্রত্যেকটি পরিভ্রমণ করে নির্দিষ্টকাল পর্যন্ত; তোমরা যা কর আল্লাহ সে সম্পর্কে অবহিত।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ

৩০. এগুলো প্রমাণ যে, আল্লাহই সত্য এবং তারা তাঁর পরিবর্তে যাকে

دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٣٠﴾

ডাকে, তা মিথ্যা। আল্লাহ, তিনি তো সর্বোচ্চ, মহান।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿٣١﴾

৩১. তুমি কি লক্ষ্য কর না যে, আল্লাহর অনুগ্রহে নৌযানগুলো সমুদ্রে চলাচল করে, যার দ্বারা তিনি তোমাদেরকে তাঁর নিদর্শনাবলীর কিছু প্রদর্শন করেন? এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে প্রত্যেক ধৈর্যশীল কৃতজ্ঞ ব্যক্তির জন্যে।

وَاِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰهُمْ اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ﴿٣٢﴾

৩২. যখন তরঙ্গ তাদেরকে আচ্ছান্ন করে মেঘচ্ছায়ার মত তখন তারা আল্লাহকে ডাকে বিশুদ্ধচিত্ত হয়ে। কিন্তু যখন তিনি তাদেরকে উদ্ধার করে স্থলে পৌঁছান তখন তাদের কেউ কেউ মাঝামাঝি স্থানে অবস্থান করে আর বিশ্বাসঘাতক, অকৃতজ্ঞ ব্যক্তিই তাঁর নিদর্শনাবলী অস্বীকার করে।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۫ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿٣٣﴾

৩৩. হে মানবজাতি! তোমরা তোমাদের প্রতিপালককে ভয় কর এবং সেদিনকে ভয় কর যেদিন পিতা সন্তানের কোন উপকারে আসবে না এবং সন্তানও কোন উপকারে আসবে না তার পিতার। নিঃসন্দেহে আল্লাহর প্রতিশ্রুতি সত্য; সুতরাং পার্থিব জীবন যেন তোমাদেরকে কিছুতেই প্রতারিত না করে প্রতারক (শয়তান) যেন তোমাদেরকে কিছুতেই আল্লাহ সম্পর্কে প্রতারিত না করে।

اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ ؕ وَمَا تَدْرِيْ

৩৪. নিশ্চয় কিয়ামতের জ্ঞান শুধু আল্লাহর নিকট রয়েছে, তিনিই বৃষ্টি বর্ষণ করেন এবং তিনি জানেন যা

نَفْسٌ مَّا ذَا تَكْسِبُ غَدًا ۖ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿٣٤﴾

জরায়ুতে আছে। কেউ জানে না আগমীকাল সে কি উপার্জন করবে এবং কেউ জানে না কোন স্থানে তার মৃত্যু ঘটবে। আল্লাহ সর্বজ্ঞ, সর্ব বিষয়ে অবহিত।

سُورَةُ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ

সূরাঃ সাজ্‌দাহ, মাক্কী

آيَاتُهَا ٣٠ رُكُوعَاتُهَا ٣

(আয়াতঃ ৩০, রুকূ'ঃ ৩)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

الٓمٓ ﴿١﴾

১. আলিফ-লাম-মীম।

تَنزِيلُ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٢﴾

২. এ কিতাব জগতসমূহের প্রতি-পালকের নিকট হতে অবতীর্ণ, এতে কোন সন্দেহ নেই।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَاهُم مِّن نَّذِيرٍ مِّن قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٣﴾

৩. তবে কি তারা বলেঃ এটা তো সে নিজে মিথ্যা রচনা করেছে? না, বরং এটা তোমার প্রতিপালক হতে (আগত) সত্য, যাতে তুমি এমন এক সম্প্রদায়কে সতর্ক করতে পার, যাদের নিকট তোমার পূর্বে কোন সতর্ককারী আসেনি, যেন তারা হেদায়াতপ্রাপ্ত হয়।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ مَا لَكُم مِّن دُونِهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا شَفِيعٍ ۚ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٤﴾

৪. আল্লাহ তিনি, যিনি আকাশমন্ডলী, পৃথিবী ও এতোদুভয়ের অন্তবর্তী সবকিছু সৃষ্টি করেছেন ছয় দিনে, অতঃপর তিনি আরশে সমুন্নীত হন। তিনি ছাড়া তোমাদের কোন অভিভাবক নেই এবং সুপারিশকারী নেই; তবুও কি তোমরা উপদেশ গ্রহণ করবে না?

يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ۝٥

৫. তিনি আকাশ থেকে পৃথিবী পর্যন্ত সমুদয় বিষয় পরিচালনা করেন, অতঃপর একদিন সব কিছুই তাঁর সমীপে সমুত্থিত হবে যে দিনের পরিমাপ হবে তোমাদের হিসেবে হাজার বছরের সমান।

ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝٦

৬. তিনিই দৃশ্য ও অদৃশ্যের পরিজ্ঞতা, পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু।

الَّذِيْٓ اَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ ۝٧

৭. যিনি তাঁর সকল কিছু সৃজন করেছেন উত্তমরূপে এবং কাঁদা মাটি হতে মানব সৃষ্টির সূচনা করেছেন।

ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۝٨

৮. অতঃপর তার বংশ উৎপন্ন করেছেন তুচ্ছ তরল পদার্থের নির্যাস থেকে।

ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝٩

৯. পরে তিনি তাকে করেছেন সুঠাম এবং ওতে ফুঁকে দিয়েছেন রূহ তাঁর নিকট হতে এবং তোমাদেরকে দিয়েছেন কর্ণ, চক্ষু ও অন্তঃকরণ, তোমরা অতি সামান্যই কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

وَقَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِي الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۭ بَلْ هُمْ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ۝١٠

১০. তারা বলেঃ আমরা মৃত্তিকায় পর্যবসিত হলেও কি আমাদেরকে আবার নতুন করে সৃষ্টি করা হবে? বস্তুতঃ তারা তাদের প্রতিপালকের সাক্ষাৎকার অস্বীকার করে।

قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۝١١

১১. বলঃ তোমাদের জন্যে নিযুক্ত মৃত্যুর ফেরেশতা তোমাদের প্রাণ হরণ করবেন। অবশেষে তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের নিকট প্রত্যাবর্তীত হবে।

وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ

১২. এবং (হে নবী)! তুমি যদি দেখতে! যখন অপরাধীরা তাদের

عِنْدَ رَبِّهِمْ ط رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ﴿١٢﴾

প্রতিপালকের সামনে নতশীরে বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা প্রত্যক্ষ করলাম ও শ্রবণ করলাম, এখন আপনি আমাদেরকে পুনরায় প্রেরণ করুন আমরা সৎকর্ম করবো, আমরা দৃঢ় বিশ্বাসী হয়ে যাবো।

وَلَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَلٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّيْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٣﴾

১৩. আমি ইচ্ছা করলে প্রত্যেক ব্যক্তিকে সৎপথে পরিচালিত করতে পারতাম; কিন্তু আমার একথা অবশ্যই সত্যঃ আমি নিশ্চয়ই (ভ্রষ্টতার কারণে) জ্বিন ও মানুষ উভয় দ্বারা জাহান্নাম পূর্ণ করবো।

فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾

১৪. অতএব শাস্তি আস্বাদন কর, কারণ আজকের এই সাক্ষাৎকারের কথা তোমরা বিস্মৃত হয়েছিলে, আমিও তোমাদেরকে বিস্মৃত হয়েছি, তোমরা যা করতে তজ্জন্যে তোমরা স্থায়ী শাস্তি ভোগ করতে থাকো।

اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿١٥﴾ ۩

১৫. শুধু তারাই আমার নিদর্শনাবলী বিশ্বাস করে যারা ওর দ্বারা উপদিষ্ট হলে সিজদায় লুটিয়ে পড়ে এবং তাদের প্রতিপালকের সপ্রশংসা পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে এবং অহংকার করে না।

تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ز وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿١٦﴾

১৬. তারা শয্যা ত্যাগ করে তাদের প্রতিপালককে ডাকে আশঙ্কায় ও আশায় এবং তাদেরকে যে রিযিক দান করেছি তা হতে তারা ব্যয় করে।

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ ج جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٧﴾

১৭. কেউই জানে না তাদের জন্যে নয়নপ্রীতিকর কি লুকায়িত রাখা হয়েছে তাদের কৃতকর্মের পুরস্কার স্বরূপ।

أَفَمَن كَانَ مُؤْمِنًا كَمَن كَانَ فَاسِقًا ۚ لَّا يَسْتَوُونَ ﴿١٨﴾

১৮. ঈমানদার ব্যক্তি কি অবাধ্যের অনুরূপ? তারা সমান নয়।

أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ جَنَّاتُ الْمَأْوَىٰ نُزُلًا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾

১৯. যারা ঈমান আনে, সৎকর্ম করে তাদের কৃতকর্মের ফলস্বরূপ তাদের আপ্যায়নের জন্যে জান্নাত হবে তাদের বাসস্থান।

وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۖ كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٠﴾

২০. পক্ষান্তরে যারা পাপাচার করেছে তাদের বাসস্থান হবে জাহান্নাম; যখনই তারা জাহান্নাম হতে বের হতে চাইবে তখনই তাদেরকে ফিরিয়ে দেয়া হবে তাতে এবং তাদেরকে বলা হবেঃ যে অগ্নির শাস্তিকে তোমরা মিথ্যা বলতে তা আস্বাদন কর।

وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢١﴾

২১. গুরু শাস্তির পূর্বে তাদেরকে আমি (পৃথিবীতে) অবশ্যই লঘু শাস্তি আস্বাদন করাবো, যাতে তারা ফিরে আসে।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۚ إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ ﴿٢٢﴾

২২. যে ব্যক্তি তার প্রতিপালকের নিদর্শনাবলী দ্বারা উপদিষ্ট হয়ে তা থেকে মুখ ফিরিয়ে নেয় তার অপেক্ষা অধিক যালিম আর কে? আমি অবশ্যই অপরাধীদেরকে শাস্তি দিয়ে থাকি।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُن فِي مِرْيَةٍ مِّن لِّقَائِهِ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٣﴾

২৩. আমি অবশ্যই মূসা (عليه السلام)-কে কিতাব দিয়েছিলাম; অতএব তুমি তার সাক্ষাৎ সম্বন্ধে সন্দেহ করো না, আমি তাকে বানী ইসরাঈলের জন্যে পথ-নিদের্শক করেছিলাম।

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا ۖ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ ﴿٢٤﴾

২৪. আর আমি তাদের মধ্য হতে কিছু লোককে নেতা মনোনীত করেছিলাম যারা আমার নির্দেশ অনুসারে পথ প্রদর্শন করতো। যখন

তারা ধৈর্যধারণ করতো আর তারা ছিল আমার নিদর্শনাবলীতে দৃঢ় বিশ্বাসী।

২৫. তারা নিজেদের মধ্যে যেসব বিষয়ে মতবিরোধ করতো, তোমার প্রতিপালক অবশ্যই কিয়ামতের দিন সেগুলোর ফায়সালা করে দিবেন।

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٢٥﴾

২৬. এটাও কি তাদেরকে পথ-প্রদর্শন করলো না যে, আমি তাদের পূর্বে ধ্বংস করেছি কত মানবগোষ্ঠী, যাদের বাসভূমিতে এরা বিচরণ করে থাকে? এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে; তবুও কি তারা শুনবে না?

أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ ؕ أَفَلَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٢٦﴾

২৭. তারা কি লক্ষ্য করে না যে, আমি শস্যহীন শুষ্ক ভূমির উপর পানি প্রবাহিত করে ওর সাহায্যে উদ্‌গত করি শস্য, যা থেকে ভক্ষণ করে তাদের গৃহপালিত চতুস্পদ জন্তুগুলো এবং তারা নিজেরাও? তারা কি তবুও লক্ষ্য করবে না?

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ ؕ أَفَلَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٢٧﴾

২৮. তারা বলেঃ তোমরা যদি সত্যবাদী হও তবে বল, কখন হবে এই ফায়সালা?

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْفَتْحُ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٨﴾

২৯. বল, ফায়সালার দিনে কাফিরদের ঈমান আনয়ন তাদের কোন কাজে আসবে না এবং তাদেরকে অবকাশও দেয়া হবেনা।

قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا إِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٢٩﴾

৩০. অতএব, তুমি তাদেরকে উপেক্ষা কর এবং অপেক্ষা কর, তারাও অপেক্ষা করছে।

فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ إِنَّهُمْ مُّنْتَظِرُوْنَ ﴿٣٠﴾ ع

সূরাঃ আহযাব, মাদানী

(আয়াতঃ ৭৩, রুকূ'ঃ ৯)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُوْرَةُ الْاَحْزَابِ مَدَنِيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٧٣ رُكُوْعَاتُهَا ٩

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. হে নবী (ﷺ)! আল্লাহকে ভয় কর এবং কাফিরদের ও মুনাফিকদের আনুগত্য করো না। আল্লাহ তো সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাময়।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۙ﴿۱﴾

২. তোমার প্রতিপালকের নিকট হতে তোমার প্রতি যা ওহী করা হয় তার অনুসরণ কর; তোমরা যা কর, আল্লাহ সে বিষয়ে সম্যক অবহিত।

وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰۤى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۙ﴿۲﴾

৩. আর তুমি নির্ভর কর আল্লাহর উপর এবং উকিল হিসেবে আল্লাহই যথেষ্ট।

وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿۳﴾

৪. আল্লাহ কোন মানুষের জন্যে তার বুকে দু'টি হৃদয় সৃষ্টি করেননি; তোমাদের স্ত্রীরা, যাদের সাথে তোমরা যিহার (স্ত্রীকে মার সাথে তুলনা করা) করে থাকো, তাদেরকে তোমাদের জননী করেননি এবং যাদেরকে তোমরা (পোষ্যপুত্র) ডাকো, আল্লাহ তাদেরকে তোমাদের পুত্র করেননি, এগুলো তোমাদের মুখের কথা মাত্র। আল্লাহ সত্যই বলেন এবং তিনিই সরল পথ নির্দেশ করেন।

مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ۚ وَمَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ الّٰٓـِٔيْ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَآءَكُمْ اَبْنَآءَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِى السَّبِيْلَ ﴿۴﴾

৫. তোমরা তাদেরকে ডাকো তাদের পিতৃ-পরিচয়ে; আল্লাহর দৃষ্টিতে এটা অধিক ন্যায়সঙ্গত যদি তোমরা তাদের পিতৃ-পরিচয় না জানো তবে

اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْۤا اٰبَآءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِى الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ ؕ

وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَآ أَخْطَأْتُم بِهِۦ وَلَٰكِن مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوبُكُمْ ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝٥

তারা তোমাদের ধর্মীয় ভ্রাতা এবং তোমাদের বন্ধু; এই ব্যাপারে তোমরা কোন ভুল করলে তোমাদের কোন অপরাধ নেই; কিন্তু তোমাদের অন্তরে দৃঢ় সংকল্প থাকলে অপরাধ হবে, আর আল্লাহ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

ٱلنَّبِىُّ أَوْلَىٰ بِٱلْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنفُسِهِمْ وَأَزْوَٰجُهُۥٓ أُمَّهَٰتُهُمْ ۗ وَأُو۟لُوا۟ ٱلْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِى كِتَٰبِ ٱللَّهِ مِنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ وَٱلْمُهَٰجِرِينَ إِلَّآ أَن تَفْعَلُوٓا۟ إِلَىٰٓ أَوْلِيَآئِكُم مَّعْرُوفًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ فِى ٱلْكِتَٰبِ مَسْطُورًا ۝٦

৬. নবী (ﷺ) মু'মিনদের নিকট তাদের নিজেদের অপেক্ষা ঘনিষ্ঠতর এবং তার পত্নীরা তাদের মাতা ১ আল্লাহর বিধান অনুসারে মু'মিন ও মুহাজিররা অপেক্ষা যারা আত্মীয়, তারা পরস্পরের নিকটতর, তবে তোমরা যদি তোমাদের বন্ধু-বান্ধবদের প্রতি দয়া-দাক্ষিণ্য প্রদর্শন করতে চাও তাহলে তা করতে পার। এটা কিতাবে লিপিবদ্ধ আছে।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ ٱلنَّبِيِّۦنَ مِيثَٰقَهُمْ وَمِنكَ وَمِن نُّوحٍ وَإِبْرَٰهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَى ٱبْنِ مَرْيَمَ ۖ وَأَخَذْنَا مِنْهُم مِّيثَٰقًا غَلِيظًا ۝٧

৭. (স্মরণ কর,) যখন আমি নবীদের নিকট হতে অঙ্গীকার গ্রহণ করেছিলাম এবং তোমার নিকট হতেও এবং নূহ (عليه السلام), ইবরাহীম (عليه السلام), মূসা (عليه السلام), মারইয়াম পুত্র ঈসা (عليه السلام)-এর নিকট হতে, তাদের নিকট হতে গ্রহণ করেছিলাম দৃঢ় অঙ্গীকার।

১। আবদুল্লাহ্ ইবনে হিশাম (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, একদা আমরা নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সঙ্গে ছিলাম। এ সময় তিনি উমর ইবনুল খাত্তাবের হাত ধরাবস্থায় ছিলেন। তখন উমর তাঁকে বললেনঃ হে আল্লাহ্‌র রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)! আপনি আমার কাছে আমার প্রাণ ব্যতীত সবচেয়ে অধিক প্রিয়। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ না, সে সত্তার কসম! যাঁর হাতে আমার প্রাণ। (তুমি সে পর্যন্ত ঈমানদার হতে পারবে না) যে পর্যন্ত আমি তোমার কাছে তোমার প্রাণের চেয়েও অধিক প্রিয় না হই। এরপর উমর (রাযিআল্লাহু আনহু) বললেনঃ আল্লাহ্‌র কসম! এখনই আপনি আমার কাছে আমার প্রাণের চেয়ে অধিক প্রিয়। এ সময় রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, হে উমর! এখন (প্রকৃত মুমিন হলে)। (বুখারী, হাদীস নং ৬৬৩২)

لِّيَسْـَٔلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ وَاَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝٨

৮. সত্যবাদীদেরকে তাদের সত্যবাদীতা সম্বন্ধে জিজ্ঞেস করবার জন্যে। তিনি কাফিরদের জন্যে প্রস্তুত রেখেছেন পীড়াদায়ক শাস্তি।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّجُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ۝٩

৯. হে মু'মিনগণ! তোমরা তোমাদের প্রতি আল্লাহর অনুগ্রহের কথা স্মরণ কর, যখন শত্রু বাহিনী তোমাদের বিরুদ্ধে সমাগত হয়েছিল তখন আমি তাদের বিরুদ্ধ প্রেরণ করেছিলাম ঝঞ্ঝাবায়ু এবং এমন এক বাহিনী যা তোমরা দেখনি। তোমরা যা কর আল্লাহ তার সম্যক দ্রষ্টা।

اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا ۝١٠

১০. যখন তারা (তোমাদের বিরুদ্ধ) সমাগত হয়েছিল উচ্চ অঞ্চল ও নিম্ন অঞ্চল হতে, চক্ষুসমূহ দৃষ্টিভ্রম হয়েছিল, প্রাণসমূহ হয়ে পড়েছিল কণ্ঠাগত এবং তোমরা আল্লাহ সম্বন্ধে নানাবিধ বিরূপ ধারণা পোষণ করছিলে।

هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا ۝١١

১১. তখন মু'মিনরা পরীক্ষিত হয়েছিল এবং তারা ভীষণভাবে প্রকম্পিত হয়েছিল।

وَاِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اِلَّا غُرُوْرًا ۝١٢

১২. এবং এ সময়ে মুনাফিকরা ও যাদের অন্তরে ছিল ব্যাধি, তারা বলছিলঃ আল্লাহ এবং তাঁর রাসূল (ﷺ) আমাদেরকে যে প্রতিশ্রুতি দিয়েছিলেন তা প্রতারণা ছাড়া কিছুই না।

وَاِذْ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ يٰۤاَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ۚ وَيَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ؕ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۚ

১৩. এবং যখন তাদের একদল বলেছিলঃ হে ইয়াসরিববাসী (মদীনাবাসী) এখানে তোমাদের কোন স্থান নেই, তোমরা ফিরে যাও এবং তাদের মধ্যে একদল নবী (ﷺ)-এর

إِنْ يُّرِيْدُوْنَ إِلَّا فِرَارًا ﴿١٣﴾

নিকট অব্যাহতি প্রার্থনা করে বলেছিলঃ আমাদের বাড়ীঘর অরক্ষিত, অথচ ওগুলো অরক্ষিত ছিল না, আসলে পলায়ন করাই ছিল তাদের আসল উদ্দেশ্য।

وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَآتَوْهَا وَمَا تَلَبَّثُوْا بِهَآ إِلَّا يَسِيْرًا ﴿١٤﴾

১৪. যদি শত্রুরা নগরীর বিভিন্ন দিক হতে প্রবেশ করে তাদেরকে বিদ্রোহের জন্যে প্ররোচিত করতো, তবে অবশ্য তারা তাই করে বসতো, তারা এতে কালবিলম্ব করতো না।

وَلَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ لَا يُوَلُّوْنَ الْأَدْبَارَ ط وَكَانَ عَهْدُ اللّٰهِ مَسْئُوْلًا ﴿١٥﴾

১৫. অথচ তারা পূর্বেই আল্লাহর সাথে অঙ্গীকার করেছিল যে, তারা পৃষ্ঠ-প্রদর্শন করবে না। আল্লাহর সাথে কৃত অঙ্গীকার সম্বন্ধে অবশ্যই জিজ্ঞাসাবাদ করা হবে।

قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ إِنْ فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذًا لَّا تُمَتَّعُوْنَ إِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٦﴾

১৬. বলঃ তোমাদের কোন লাভ হবে না যদি তোমরা মৃত্যু অথবা হত্যার ভয়ে পলায়ন কর এবং সেই ক্ষেত্রে তোমাদেরকে সামান্যই ভোগ করতে দেয়া হবে।

قُلْ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ سُوْٓءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ط وَلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٧﴾

১৭. বলঃ কে তোমাদেরকে আল্লাহ থেকে রক্ষা করবে যদি তিনি তোমাদের অমঙ্গল ইচ্ছা করেন অথবা তিনি যদি তোমাদের প্রতি অনুগ্রহের ইচ্ছা করেন (তবে কে তোমাদের ক্ষতি করবে?) তারা আল্লাহ ছাড়া নিজেদের কোন অভিভাবক ও সাহায্যকারী পাবে না।

قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَالْقَآئِلِيْنَ لِإِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ إِلَيْنَا ج وَلَا يَأْتُوْنَ الْبَأْسَ إِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٨﴾

১৮. আল্লাহ অবশ্যই জানেন তোমাদের মধ্যে কারা তোমাদেরকে যুদ্ধে অংশগ্রহণে বাধা দেয় এবং তাদের ভ্রাতৃবর্গকে বলেঃ আমাদের সঙ্গে এসো। তারা কমই যুদ্ধে অংশ নেয়।

اَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۚ فَاِذَا جَآءَ الْخَوْفُ رَاَيْتَهُمْ يَنْظُرُوْنَ
اِلَيْكَ تَدُوْرُ اَعْيُنُهُمْ كَالَّذِىْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ
الْمَوْتِ ۚ فَاِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ حِدَادٍ
اَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوْا فَاَحْبَطَ اللّٰهُ
اَعْمَالَهُمْ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٩﴾

১৯. তোমাদের ব্যাপারে কুণ্ঠাবোধ করে যখন বিপদ আসে তখন তুমি দেখবে যে, মৃত্যু-ভয়ে অচেতন ব্যক্তির মত চক্ষু উল্টিয়ে তারা তোমার দিকে তাকিয়ে আছে; কিন্তু যখন বিপদ চলে যায় তখন তারা ধনের লালসায় তোমাদেরকে তীক্ষ্ম ভাষায় বিদ্ধ করে। তারা ঈমান আনেনি, এজন্যে আল্লাহ তাদের কার্যাবলী নিস্ফল করে দিয়েছেন এবং আল্লাহর পক্ষে এটা সহজ।

يَحْسَبُوْنَ الْاَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوْا ۚ وَاِنْ يَّاْتِ
الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ اَنَّهُمْ بَادُوْنَ فِى الْاَعْرَابِ
يَسْاَلُوْنَ عَنْ اَنْۢبَآئِكُمْ ؕ وَلَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ
مَّا قٰتَلُوْٓا اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٢٠﴾

২০. তারা মনে করে যে, শত্রু বাহিনী চলে যায়নি। যদি শত্রু বাহিনী আবার এসে পড়ে, তখন তারা কামনা করবে যে, ভাল হতো যদি তারা যাযাবর মরুবাসীদের সাথে থেকে তোমাদের সংবাদ নিতো! তারা তোমাদের সাথে অবস্থান করলেও তারা যুদ্ধ অল্পই করতো।

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِىْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ
كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ﴿٢١﴾

২১. তোমাদের মধ্যে যারা আল্লাহ ও আখিরাতের প্রতি বিশ্বাস রাখে এবং আল্লাহকে অধিক স্মরণ করে, তাদের জন্যে রাসূলুল্লাহ্ (ﷺ)-এর মধ্যে রয়েছে উত্তম আদর্শ।

وَلَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا هٰذَا مَا
وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ز
وَمَا زَادَهُمْ اِلَّآ اِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا ﴿٢٢﴾

২২. মু'মিনরা যখন শত্রু বাহিনীকে দেখলো তখন তারা বলে উঠলোঃ এটা তো তাই, আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ) যার প্রতিশ্রুতি আমাদেরকে দিয়েছেন এবং আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ) সত্যই বলেছিলেন। আর এতে তাদের ঈমান ও আনুগত্যই বৃদ্ধি পেলো।

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ

২৩. মু'মিনদের মধ্যে কতক আল্লাহর সাথে তাদের কৃত অঙ্গীকার পূর্ণ

عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ﴿٢٣﴾

করেছে, তাদের কেউ কেউ শাহাদাত বরণ করেছে এবং কেউ কেউ প্রতীক্ষায় রয়েছে। তারা তাদের অঙ্গীকারে কোন পরিবর্তন করেনি।[১]

لِّيَجْزِيَ اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٢٤﴾

২৪. কারণ আল্লাহ সত্যবাদীদেরকে পুরস্কৃত করেন সত্যবাদিতার জন্যে এবং তাঁর ইচ্ছা হলে মুনাফিকদেরকে শাস্তি দেন অথবা তাদেরকে ক্ষমা করেন। নিশ্চয় আল্লাহ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ۗ وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ﴿٢٥﴾

২৫. আল্লাহ কাফিরদেরকে তাদের পূর্ণ ক্রোধ সহকারে ফিরিয়ে দিলেন। তারা কোন কল্যাণই অর্জন করতে পারেনি। যুদ্ধে মু'মিনদের জন্যে আল্লাহই যথেষ্ট। আল্লাহ সর্বশক্তিমান, পরাক্রমশালী।

وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ وَتَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ﴿٢٦﴾

২৬. কিতাবীদের মধ্যে যারা (বনূ কুরায়জা) তাদেরকে সাহায্য করেছিল, তাদেরকে তিনি তাদের দূর্গ হতে অবতরণে বাধ্য করলেন এবং তাদের অন্তরে ভীতি সঞ্চার করলেন; এখন তোমরা তাদের কতককে হত্যা করছো এবং কতককে করছো বন্দী।

وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ وَاَرْضًا لَّمْ

২৭. এবং তোমাদেরকে অধিকারী করলেন তাদের ভূমি, ঘরবাড়ি ও

১। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেন, আমাদের ধারণা কুরআনের এই বাণীটি তাঁর ও তাঁর অনুরূপ লোকদের সম্পর্কে নাযিল হয়েছেঃ "মু'মিনদের মধ্য থেকে কিছু সংখ্যাক আল্লাহ্‌র সাথে তাদের কৃত ওয়াদা পূর্ণ করেছে।" আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) আরো বলেন যে, রুবাই নামক তাঁর এক বোন কোন এক মহিলার সামনের দাঁত ভেঙ্গে দিয়েছিলেন। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) এ ব্যাপারে কিসাসের নির্দেশ প্রদান করলে আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) আরয করলেন, হে আল্লাহ্‌র রাসূল! যে মহান সত্তা আপনাকে সত্য বিধান দিয়ে প্রেরণ করেছেন তাঁর শপথ! ওর দাঁত ভাঙতে দেয়া যাবে না। পরে বাদীপক্ষ কিসাসের দাবি ত্যাগ করে ক্ষতিপূরণ নিতে স্বীকৃত হলে রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, আল্লাহ্‌র কিছু বান্দাহ এমন আছে যে, তাঁরা কোন ব্যাপারে আল্লাহ্‌র নামে শপথ করলে তিনি তা পূরণ করে দেয়ার ব্যবস্থা করেন। (বুখারী, হাদীস নং ২৮০৬)

تَطَـُٔوْهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢٧﴾

ধন-সম্পদের এবং এমন ভূমির যা তোমরা এখনো পদানত করনি। আল্লাহ্ সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِىُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَاُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٢٨﴾

২৮. হে নবী (ﷺ)! তুমি তোমার স্ত্রীদেরকে বলঃ তোমরা যদি পার্থিব জীবন ও তার বিলাসিতা কামনা কর, তবে এসো, আমি তোমাদের ভোগ-সামগ্রীর ব্যবস্থা করে দেই এবং সৌজন্যের সাথে তোমাদেরকে বিদায় দেই।[১]

وَاِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾

২৯. পক্ষান্তরে যদি তোমরা আল্লাহ, তাঁর রাসূল (ﷺ) ও আখিরাত কামনা কর তবে তোমাদের মধ্যে যারা সৎকর্মশীল, আল্লাহ তাদের জন্যে মহা প্রতিদান প্রস্তুত রেখেছেন।

يٰنِسَآءَ النَّبِىِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۗ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿٣٠﴾

৩০. হে নবী-পত্নিরা! যে কাজ স্পষ্টত অশ্লীল, তোমাদের মধ্যে কেউ তা করলে, তাকে দ্বিগুণ শাস্তি দেয়া হবে এবং এটা আল্লাহর জন্যে অতি সহজ।

১। (ক) আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আল্লাহ্ যখন (রাসূলুল্লাহ্ সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে স্ত্রীদের ব্যাপারে ইখতিয়ার দেন, তিনি সর্বপ্রথম আমার কাছে এসে বলেনঃ "আমি তোমাকে একটি কথা বলছি, তাড়াহুড়া না করে পিতা-মাতার সাথে পরামর্শ করে জবাব দেবে।" তিনি ভাল করেই জানতেন আমার পিতা-মাতা আমাকে তাঁর থেকে বিচ্ছেদের অনুমতি দেবেন না। তিনি (আয়েশা) বলেন, অতপর তিনি [রাসূলুল্লাহ সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম] বলেন, আল্লাহ্ বলেছেনঃ "তোমার স্ত্রীদেরকে বলে দাও, তোমরা যদি পার্থিব জীবন ও তার চাকচিক্য চাও তবে আস, আমি তোমাদেরকে তা দান করি, এবং সুন্দরভাবে বিদায় দেই। আর যদি তোমরা আল্লাহ্, তাঁর রাসূল এবং পরকাল চাও, তবে আল্লাহ্ তোমাদের মধ্যকার সৎকর্মশীলদের জন্য বিপুল প্রতিদান প্রস্তুত করে রেখেছেন।" আমি তাঁকে বললাম, এ এমন কোন্ বিষয় যাতে আমি পিতা-মাতার অনুমতি নেবো। কারণ, আল্লাহ্, তাঁর রাসূল এবং পরকালই আমার কাম্য। (বুখারী, হাদীস নং ৪৭৮৬)

(খ) আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) হতে বর্ণিত। তিনি বলেছেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আমাদেরকে [রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর স্ত্রীদেরকে] পার্থিব সুখ-সম্ভোগ অথবা আল্লাহ্, তাঁর রাসূল ও আখেরাত-এ দু'টির মধ্যে যে কোন একটি (বেছে নেয়ার) এখতিয়ার দিয়েছিলেন। আমরা আল্লাহ্ ও তাঁর রাসূলকে বেছে নিয়েছিলাম। আর এ বেছে নেয়াকে আমাদের জন্য (তালাক বা অন্য কোন) কিছু বলে গণ্য করা হয়নি। (বুখারী, হাদীস নং ৫২৬২)

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَآ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾

৩১. তোমাদের মধ্যে যে কেউ আল্লাহ এবং তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর প্রতি অনুগত হবে ও সৎকর্ম করবে তাকে আমি বিনিময় দিবো দু'বার এবং তার জন্যে তৈরি করে রেখেছি উত্তম রিযিক।

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٣٢﴾

৩২. হে নবী-পত্নীরা! তোমরা অন্য নারীদের মত নও; যদি তোমরা আল্লাহ্‌কে ভয় কর তবে (পরপুরুষের সাথে) মিষ্টি কণ্ঠে এমনভাবে কথা বলো না যাতে অন্তরে যার ব্যাধি আছে, সে খারাপ ইচ্ছাপোষণ করে এবং তোমরা উপযোগী কথা বলবে।

وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ﴿٣٣﴾

৩৩. এবং তোমরা স্বগৃহে অবস্থান করবে; প্রাচীন জাহিলী যুগের সৌন্দর্য প্রদর্শনের মত নিজেদেরকে প্রদর্শন করে বেড়াবে না। তোমরা নামায প্রতিষ্ঠা করবে ও যাকাত প্রদান করবে এবং আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর অনুগত থাকবে; আল্লাহ তো শুধু চান তোমাদের হে আহলে বাইত আল্লাহ তো শুধু চান তোমাদের হতে নাপাকী দূর করতে এবং তোমাদেরকে সম্পূর্ণরূপে পূত-পবিত্র করতে।

وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ﴿٣٤﴾

৩৪. আল্লাহর আয়াত ও হিকমতের (হাদীসের) কথা যা তোমাদের গৃহে পঠিত হয়, তা তোমরা স্মরণ রাখবে, নিশ্চয়ই আল্লাহ অতি সূক্ষ্মদর্শী, সর্ববিষয়ে অবহিত।

اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ

৩৫. অবশ্য মুসলমান পুরষ ও মুসলমান নারী, মু'মিন পুরুষ ও মু'মিন নারী, অনুগত পুরুষ ও অনুগত নারী, সত্যবাদী পুরুষ ও

وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٣٥﴾

সত্যবাদী নারী, ধৈর্যশীল পুরুষ ও ধৈর্যশীল নারী, বিনীত পুরুষ ও বিনীত নারী, দানশীল পুরুষ ও দানশীল নারী, রোযা পালনকারী পুরুষ ও রোযা পালনকারী নারী, যৌনাঙ্গ হিফাযতকারী পুরুষ ও যৌনাঙ্গ হিফাযতকারী নারী, আল্লাহকে অধিক স্মরণকারী পুরুষ ও অধিক স্মরণকারী নারী– এদের জন্যে আল্লাহ রেখেছেন ক্ষমা ও মহা প্রতিদান।[১]

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, আল্লাহ্ তা'আলার তরফ হতে একদল ফেরেশ্‌তা (নিয়োজিত) আছে, যারা আল্লাহ্‌র যিকরে রত লোকদের তালাশে রাস্তায় রাস্তায় ঘুরে বেড়ায়। যখন তারা আল্লাহ্‌র যিকরে মশগুল লোকদেরকে দেখতে পায়, তখন একে অন্যকে ডাকাডাকি করে বলে, নিজ নিজ দায়িত্ব পালনে এদিকে চলে এসো। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেন, তখন সেই ফেরেশ্‌তারা নিজেদের ডানা দিয়ে ওই লোকদেরকে ঘিরে ফেলে এবং এভাবে তাদেরকে ঘিরতে ঘিরতে ফেরেশ্‌তাদের স্তর আসমান পর্যন্ত পৌঁয়ে যায়। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেন, তখন ফেরেশ্‌তাদের রব তাদেরকে জিজ্ঞেস করেন, আমার এ বান্দাগণ কি বলছে? অথচ এটা ফেরেশ্‌তাদের চেয়ে তিনিই বেশি জানেন। ফেরেশ্‌তারা জবাব দেয়, তারা আপনার পবিত্রতা বর্ণনা করছে। আপনার শ্রেষ্ঠত্ব প্রকাশ করছে, আপনার গুণ ও প্রশংসা করছে এবং আপনার মাহাত্ম্য বর্ণনা করছে। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেন, তখন আল্লাহ্ তাদেরকে জিজ্ঞেস করেন, তারা কি আমাকে দেখেছে? তারা জবাবে বলে না, আল্লাহ্‌র কসম! তারা আপনাকে কখনো দেখেনি। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেন, আল্লাহ্ তা'আলা জিজ্ঞেস করেন, যদি তারা আমাকে দেখত, তাহলে কি করতো। ফেরেশ্‌তারা বলে, যদি তারা আপনাকে দেখত, তবে আরও অনেক বেশি ইবাদত করতো, আরও অধিক মাহাত্ম্য ঘোষণা করতো এবং আরও বেশি বেশি আপনার পবিত্রতা বর্ণনা করতো।

নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেন, আল্লাহ্ তা'আলা আবার জিজ্ঞেস করেন, তারা আমার নিকট কি চায়? ফেরেশ্‌তারা জবাবে বলে, তারা আপনার কাছে জান্নাত পেতে চায়। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেন, আল্লাহ্ তা'আলা জিজ্ঞেস করেন, তারা কি তা দেখেছে? ফেরেশ্‌তারা বলে, না- আল্লাহ্‌র কসম! হে পরওয়ারদিগার! তা দেখেনি। আল্লাহ্ তা'আলা জিজ্ঞেস করেন, যদি বেহেশ্‌ত দেখতো, তবে তারা কিরূপ করতো? ফেরেশ্‌তারা জবাব দেয়, যদি তারা বেহেশ্‌ত চোখে দেখতো, তবে আরও তীব্র আকাঙ্ক্ষী হতো, আরও অধিক আকাঙ্ক্ষা করতো এবং তা পাওয়ার আগ্রহ তাদের আরও অধিক বেড়ে যেত।

নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেন, আল্লাহ্ তা'আলা পুনরায় জিজ্ঞেস করেন, কিসের থেকে তারা বাঁচতে চায়? ফেরেশ্‌তারা বলে, জাহান্নাম থেকে। আল্লাহ্ তা'আলা জিজ্ঞেস করেন, তারা কি জাহান্নাম দেখেছে? ফেরেশ্‌তারা জবাব দেয় না, আল্লাহ্‌র কসম! তারা তা দেখেনি। আল্লাহ্ তা'আলা বলেন, তারা তা দেখলে কি করতো? ফেরেশ্‌তারা জবাব দেয়, তারা জাহান্নাম দেখলে তা থেকে আরও বেশি পালিয়ে বাঁচতো এবং একে আরও অধিক ভয় তরে চলতো।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ۗ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ﴿٣٦﴾

৩৬. আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ) কোন বিষয়ে ফয়সালা করলে কোন মু'মিন পুরুষ কিংবা মু'মিন নারীর নিজেদের কোন ব্যাপারে অন্য কোন সিদ্ধান্তের ইখতিয়ার থাকবে না। কেউ আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-কে অমান্য করলে সে তো স্পষ্টই পথভ্রষ্ট হবে।

وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْٓ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰىهُ ۗ فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ حَرَجٌ فِيْٓ اَزْوَاجِ اَدْعِيَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ۗ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿٣٧﴾

৩৭. (স্মরণ কর,) আল্লাহ যাকে (যায়েদকে) অনুগ্রহ করেছেন এবং তুমিও যার প্রতি অনুগ্রহ করেছো, তুমি তাকে বলছিলেঃ তুমি তোমার স্ত্রীকে নিজের নিকট রাখো এবং আল্লাহকে ভয় কর। আর তুমি তোমার অন্তরে যা গোপন রাখছো আল্লাহ তা প্রকাশ করে দিচ্ছেনঃ তুমি লোকদেরকে ভয় করছিলে, অথচ আল্লাহকে ভয় করাই তোমার পক্ষে অধিকতর উচিত ছিল। অতঃপর যায়েদ যখন তার (যয়নাবের) প্রয়োজন খতম করে দিল তখন আমি তাকে তোমার সাথে বিবাহ দিয়ে দিলাম, যাতে মু'মিনদের পোষ্যপুত্ররা নিজ স্ত্রীর প্রয়োজন খতম করলে সেসব রমণীকে বিয়ে করায় মু'মিনদের কোন দোষ না হয়। আল্লাহর আদেশ তো কার্যকরী হয়েই থাকে।

নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) উল্লেখ করেন, তখন আল্লাহ তা'আলা ফেরেশ্‌তাদেরকে বলেন, তোমরা সাক্ষী থাক, আমি তাদের সবাইকে মাফ করে দিলাম। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বর্ণনা করেন, এ ফেরেশ্‌তাগণের একজন বলে, এ লোকদের মাঝে এমন এক ব্যক্তি রয়েছে, যে ওই যিকরকারীদের মধ্যে শামিল নয়। অন্য উদ্দেশ্যে ও প্রয়োজনে সে (ওখানে) এসেছিল। আল্লাহ্ তা'আলা বলেন, এ মজলিসের লোকগণ এত মর্যাদাবান যে, তাদের সাথে যারা বসে, তারাও বঞ্চিত হয় না। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪০৮)

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهٗ ؕ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرَاۙ ﴿٣٨﴾

৩৮. আল্লাহ নবী (ﷺ)-এর জন্যে যা নির্ধারিত করেছেন তা করতে তার জন্যে কোন দোষ নেই। পূর্বে যেসব নবী অতীত হয়ে গেছে, তাদের ক্ষেত্রেও এটাই ছিল আল্লাহর বিধান। আল্লাহর বিধান সুনির্ধারিত।

الَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَيَخْشَوْنَهٗ وَلَا يَخْشَوْنَ اَحَدًا اِلَّا اللّٰهَ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ﴿٣٩﴾

৩৯. তারা (নবীগণ) আল্লাহর রিসালাত (বার্তাসমূহ) প্রচার করতেন এবং তাঁকে ভয় করতেন, আর আল্লাহকে ছাড়া অন্য কাউকে ভয় করতেন না। হিসাব গ্রহণে আল্লাহই যথেষ্ট।

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٤٠﴾

৪০. মুহাম্মাদ (ﷺ) তোমাদের মধ্যে কোন পুরুষের পিতা নন; বরং তিনি আল্লাহর রাসূল এবং শেষ নবী। আল্লাহ সর্ববিষয়ে সর্বজ্ঞ।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًاۙ ﴿٤١﴾

৪১. হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহকে বেশি বেশি স্মরণ কর।

وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٤٢﴾

৪২. এবং সকাল-সন্ধ্যায় আল্লাহর পবিত্রতা ও মহিমা বর্ণনা কর।

هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ﴿٤٣﴾

৪৩. তিনিই তোমাদের প্রতি রহমত বর্ষণ করেন এবং তাঁর ফেরেশ্‌তারাও (তোমাদের জন্যে রহমত প্রার্থনা করে) যেন তোমাদেরকে অন্ধকার হতে আলোতে নিয়ে যায় এবং তিনি মু'মিনদের প্রতি পরম দয়ালু।

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ۚۖ وَاَعَدَّ لَهُمْ اَجْرًا كَرِيْمًا ﴿٤٤﴾

৪৪. যেদিন তারা আল্লাহর সাথে সাক্ষাৎ করবে, সেদিন তাদের অভিবাদন হবে 'সালাম'। তিনি তাদের জন্য প্রস্তুত রেখেছেন উত্তম প্রতিদান।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًاۙ وَّنَذِيْرًاۙ ﴿٤٥﴾

৪৫. হে নবী (ﷺ)! নিশ্চয়ই আমি তোমাকে পাঠিয়েছি সাক্ষীরূপে এবং সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারীরূপে।

وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ﴿٤٦﴾

৪৬. আল্লাহর অনুমতিক্রমে তাঁর দিকে আহ্বানকারী রূপে এবং উজ্জ্বল প্রদীপ রূপে।

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا ﴿٤٧﴾

৪৭. তুমি মু'মিনদেরকে সুসংবাদ দাও যে, তাদের জন্যে আল্লাহর নিকট রয়েছে মহা অনুগ্রহ।

وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَدَعْ اَذٰىهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٤٨﴾

৪৮. আর তুমি কাফির ও মুনাফিকদের অনুসরণ করো না; তাদের নির্যাতন উপেক্ষা করো এবং নির্ভর করো আল্লাহর উপর; উকিল হিসাবে আল্লাহই যথেষ্ট।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ فَمَتِّعُوْهُنَّ وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٤٩﴾

৪৯. হে মু'মিনগণ! তোমরা মু'মিন নারীদেরকে বিয়ে করার পরে তাদেরকে স্পর্শ করার পূর্বে তালাক দিলে তোমাদের জন্যে তাদের পালনীয় কোন ইদ্দত নেই যা তোমরা গণনা করবে। বরং তোমরা তাদেরকে কিছু সম্পদ দিবে এবং সুন্দর পন্থায় তাদেরকে বিদায় করবে।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِيْۤ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ مِمَّاۤ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ ۫ وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ۗ خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْۤ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ

৫০. হে নবী (ﷺ)! আমি তোমার জন্যে তোমার ঐ সমস্ত স্ত্রীদেরকে বৈধ করেছি, যাদেরকে তুমি মহর প্রদান করেছো এবং বৈধ করেছি ঐ সমস্ত দাসীও যাদেরকে আল্লাহ তোমাকে গণীমত হিসেবে প্রদান করেছেন এবং (বিবাহের জন্যে বৈধ করেছি) তোমার চাচার কন্যা ও ফুফুর কন্যাকে, মামার কন্যা ও খালার কন্যাকে, যারা তোমার সাথে দেশ ত্যাগ করেছে এবং কোন মু'মিন নারী নবী (ﷺ)-এর নিকট নিজেকে হিবা করলে আর নবী (ﷺ) তাকে

أَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٥٠﴾

বিয়ে করতে চাইলে সেও বৈধ, এটা বিশেষ করে তোমার জন্যে, অন্য মু'মিনদের জন্যে নয়; যাতে তোমার কোন অসুবিধা না হয়। মু'মিনদের স্ত্রী এবং তাদের মালিকানাধীন দাসীদের সম্বন্ধে যা আমি বিধান নির্ধারিত করেছি তা আমি জানি, আল্লাহ মহা ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

تُرْجِي مَن تَشَاءُ مِنْهُنَّ وَتُؤْوِي إِلَيْكَ مَن تَشَاءُ ۖ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ۚ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَن تَقَرَّ أَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَا آتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ﴿٥١﴾

৫১. যাকে ইচ্ছা তুমি তাদের মধ্যে তোমার নিকট হতে দূরে রাখতে পার এবং যাকে ইচ্ছা তোমার নিকট স্থান দিতে পার এবং তুমি যাকে পৃথক রেখেছিলে তাকে গ্রহণ করলে তোমার কোন অপরাধ নেই। এই বিধান এই জন্যে যে, এতে তাদের চক্ষু শীতল হবে এবং তারা দুঃখ পাবে না, আর তাদেরকে তুমি যা দিবে তাতে তাদের প্রত্যেকেই সন্তুষ্ট থাকবে। তোমাদের অন্তরে যা আছে আল্লাহ তা জানেন। আল্লাহ সর্বজ্ঞ, সহনশীল।

لَّا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِن بَعْدُ وَلَا أَن تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ رَّقِيبًا ﴿٥٢﴾

৫২. এরপর তোমার জন্যে কোন নারী বৈধ নয় এবং তোমার স্ত্রীদের পরিবর্তে অন্য স্ত্রী গ্রহণও বৈধ নয় যদিও তাদের সৌন্দর্য তোমাকে বিস্মিত করে, তবে তোমার অধিকারভুক্ত দাসীদের ব্যাপারে এই বিধান প্রযোজ্য নয়। আল্লাহ সব কিছুর উপর তীক্ষ্ম দৃষ্টি রাখেন।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلَّا أَن يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَىٰ طَعَامٍ غَيْرَ نَاظِرِينَ إِنَاهُ وَلَٰكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ

৫৩. হে মু'মিনগণ! তোমাদেরকে অনুমতি দেয়া না হলে তোমরা আহার প্রস্তুতির জন্যে অপেক্ষা না করে (ভোজনের জন্যে) নবী-গৃহ প্রবেশ করো না। তবে তোমাদেরকে

فَانْتَشِرُوْا وَلَا مُسْتَاْنِسِيْنَ لِحَدِيْثٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ
يُؤْذِى النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيٖ مِنْكُمْ ۫ وَاللّٰهُ لَا يَسْتَحْيٖ مِنَ
الْحَقِّ ؕ وَاِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا فَسْـَٔلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ
حِجَابٍ ؕ ذٰلِكُمْ اَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ وَقُلُوْبِهِنَّ ؕ وَمَا كَانَ
لَكُمْ اَنْ تُؤْذُوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَلَآ اَنْ تَنْكِحُوْٓا اَزْوَاجَهٗ
مِنْۢ بَعْدِهٖٓ اَبَدًا ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمًا ﴿٥٣﴾

আহ্বান করা হলে তোমরা প্রবেশ করো এবং আহার শেষে তোমরা চলে যাও; তোমরা কথা-বার্তায় মশগুল হয়ে পড়ো না, কারণ তোমাদের এই আচরণ নবী (ﷺ)-কে পীড়া দেয়, অথচ তিনি তোমাদের থেকে (উঠিয়ে দিতে) সংকোচ বোধ করেন; কিন্তু আল্লাহ সত্য বলতে সংকোচ বোধ করেন না। তোমরা তার স্ত্রীদের নিকট কিছু চাইলে পর্দার পিছন হতে চাইবে। এই বিধান তোমাদের ও তাদের হৃদয়ের জন্যে অধিকতর পবিত্র। তোমাদের কারো পক্ষে আল্লাহর রাসূল (ﷺ)-কে কষ্ট দেয়া অথবা তাঁর (মৃত্যুর) পর তাঁর স্ত্রীদেরকে বিয়ে করা কখনও সংগত নয়। আল্লাহর দৃষ্টিতে এটা গুরুতর অপরাধ।

اِنْ تُبْدُوْا شَيْـًٔا اَوْ تُخْفُوْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٥٤﴾

৫৪. তোমরা কোন বিষয়ে প্রকাশই কর অথবা গোপনই রাখো— আল্লাহ তো সর্ববিষয়ে সর্বজ্ঞ।

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيْٓ اٰبَآئِهِنَّ وَلَآ اَبْنَآئِهِنَّ
وَلَآ اِخْوَانِهِنَّ وَلَآ اَبْنَآءِ اِخْوَانِهِنَّ وَلَآ اَبْنَآءِ
اَخَوٰتِهِنَّ وَلَا نِسَآئِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ ۚ
وَاتَّقِيْنَ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ﴿٥٥﴾

৫৫. তাদের (নবী-স্ত্রীদের) জন্যে তাদের পিতৃগণ, পুত্রগণ, ভ্রাতৃগণ, ভ্রাতুষ্পুত্রগণ, ভগ্নিপুত্রগণ, স্বীয় মহিলাগণ এবং তাদের অধিকারভুক্ত দাস-দাসীগণের ব্যাপারে ওটা (পর্দা) পালন না করা অপরাধ নয়। হে নবী-স্ত্রীগণ! আল্লাহকে ভয় কর, আল্লাহ সবকিছু প্রত্যক্ষ করেন।

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿٥٦﴾

৫৬. নিঃসন্দেহে আল্লাহ ও তাঁর ফেরেশতামণ্ডলী নবীর উপর দরূদ (রহমত) প্রেরণ করেন। (অতএব) হে মু'মিনগণ তোমরাও তাঁর উপর দরূদ ও সালাম পেশ কর।

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿٥٧﴾

৫৭. যারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-কে কষ্ট দেয়, আল্লাহ তো তাদেরকে দুনিয়া ও আখিরাতে অভিশপ্ত করেন এবং তিনি তাদের জন্যে রেখেছেন লাঞ্ছনাজনক শাস্তি।

وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا فَقَدِ احْتَمَلُوا بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ﴿٥٨﴾

৫৮. মু'মিন পুরুষ ও মু'মিন নারী কোন অপরাধ না করা সত্ত্বেও যারা তাদেরকে কষ্ট দেয়, তারা মিথ্যা অপবাদ ও স্পষ্ট পাপের বোঝা বহন করে।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُل لِّأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِن جَلَابِيبِهِنَّ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَن يُعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٥٩﴾

৫৯. হে নবী (ﷺ)! তুমি তোমার স্ত্রীদেরকে, কন্যাদেরকে ও মু'মিনদের নারীদেরকে বলঃ তারা যেন তাদের চাদরের কিছু অংশ নিজেদের উপর টেনে দেয়। এতে তাদের চেনা সহজতর হবে; ফলে তাদেরকে উত্যক্ত করা হবে না। আল্লাহ ক্ষমাশীল পরম দয়ালু।

لَّئِن لَّمْ يَنتَهِ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ وَالْمُرْجِفُونَ فِي الْمَدِينَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُونَكَ فِيهَا إِلَّا قَلِيلًا ﴿٦٠﴾

৬০. মুনাফিকরা এবং যাদের অন্তরে ব্যাধি আছে এবং যারা নগরে গুজব রটনা করে, তারা বিরত না হলে আমি নিশ্চয়ই তাদের বিরুদ্ধে তোমাকে আরোপ করবো, এরপর এই নগরীতে তোমার প্রতিবেশীরূপে তারা অল্প সংখ্যক লোকই থাকবে।

مَّلْعُونِينَ أَيْنَمَا ثُقِفُوا أُخِذُوا وَقُتِّلُوا تَقْتِيلًا ﴿٦١﴾

৬১. তারা অভিশপ্ত হয়েছে; তাদেরকে যেখানেই পাওয়া যাবে সেখানেই ধরা হবে এবং টুকরা টুকরা করে হত্যা করা হবে।

سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلُ وَلَن تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ﴿٦٢﴾

৬২. পূর্বে যারা অতিবাহিত হয়ে গেছে তাদের ব্যাপারে এটাই ছিল আল্লাহর বিধান। তুমি কখনো আল্লাহর বিধানে কোন পরিবর্তন পাবে না।

يَسْـَٔلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۭ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُوْنُ قَرِيْبًا ﴿٦٣﴾

৬৩. লোকেরা তোমাকে কিয়ামত সম্পর্কে জিজ্ঞেস করে। বলঃ এর জ্ঞান শুধু আল্লাহরই আছে। তুমি এটা কি করে জানবে, সম্ভবতঃ কিয়ামত শীঘ্রই হয়ে যেতে পারে?

اِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ الْكٰفِرِيْنَ وَاَعَدَّ لَهُمْ سَعِيْرًا ﴿٦٤﴾

৬৪. আল্লাহ কাফিরদেরকে লা'নত করেছেন এবং তাদের জন্যে প্রস্তুত রেখেছেন জ্বলন্ত অগ্নি।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۚ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٦٥﴾

৬৫. সেখানে তারা স্থায়ীভাবে থাকবে এবং তারা কোন অভিভাবক ও সাহায্যকারী পাবে না।

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَآ اَطَعْنَا اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ﴿٦٦﴾

৬৬. যেদিন তাদের মুখমন্ডল অগ্নিতে উলট-পালট করা হবে সেদিন তারা বলবেঃ হায়! আমরা যদি আল্লাহকে মানতাম ও রাসূল (ﷺ)-কে মানতাম!

وَقَالُوْا رَبَّنَآ اِنَّآ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَآءَنَا فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا ﴿٦٧﴾

৬৭. তারা আরো বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা আমাদের নেতা ও বড়দের আনুগত্য করেছিলাম এবং তারা আমাদেরকে পথভ্রষ্ট করেছিল।

رَبَّنَآ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيْرًا ﴿٦٨﴾

৬৮. হে আমাদের প্রতিপালক! তাদের দ্বিগুণ শাস্তি প্রদান করুন এবং তাদেরকে দিন মহা অভিশাপ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ۭ وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ﴿٦٩﴾

৬৯. হে মু'মিনগণ! মূসা (عليه السلام)-কে যারা কষ্ট দিয়েছে তোমরা তাদের মত হয়ো না, তারা যা রটনা করেছিল আল্লাহ তা হতে তাকে নির্দোষ প্রমাণিত করেছেন এবং আল্লাহর নিকট তিনি মর্যাদাবান।[১]

১। জাবির ইবনে আব্দুল্লাহ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যখন রাতের আঁধার নেমে আসে; কিংবা বলেছেন, যখন সন্ধ্যা হয়ে যাবে, তখন তোমরা তোমাদের শিশুদের (ঘরে) আটকে রাখো। কেননা, এ সময় শয়তান ছড়িয়ে পড়ে। আর রাত কিছুটা কেটে গেলে তাদেরকে ছেড়ে দিতে পার এবং আল্লাহর নাম নিয়ে (ঘরের) দরজা বন্ধ কর। কারণ শয়তান বন্ধ দরজা খোলে না।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ قُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۙ﴿۷۰﴾

৭০. হে মু'মিনগণ! আল্লাহকে ভয় কর এবং সঠিক কথা বল।

يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَ مَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿۷۱﴾

৭১. তাহলে তিনি তোমাদের কর্মকে ত্রুটিমুক্ত করবেন এবং তোমাদের পাপসমূহ ক্ষমা করবেন। যারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর আনুগত্য করে, তারা অবশ্যই মহা সাফল্য অর্জন করবে।

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ الْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَ اَشْفَقْنَ مِنْهَا وَ حَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ۙ﴿۷۲﴾

৭২. আমি তো আকাশমন্ডলী, পৃথিবী ও পর্বতমালার প্রতি এই আমানত পেশ করেছিলাম, অতঃপর তারা তা বহন করতে অস্বীকার করলো এবং এতে শঙ্কিত হলো; কিন্তু মানুষ তা বহন করলো, সে তো অতিশয় যালিম, অতিশয় অজ্ঞ।

لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتِ وَ الْمُشْرِكِيْنَ وَ الْمُشْرِكٰتِ وَ يَتُوْبَ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۷۳﴾

৭৩. পরিণামে আল্লাহ মুনাফিক পুরুষ ও মুনাফিক নারী এবং মুশরিক পুরুষ ও মুশরিক নারীকে শাস্তি দিবেন এবং মু'মিন পুরুষ ও মু'মিন নারীকে ক্ষমা করবেন। আল্লাহ ক্ষমাশীল পরম দয়ালু।

হাদীস বর্ণনাকারী (ইবনে জুরাইহ্) বলেছেনঃ আমাকে আমর ইবনে দীনার জানিয়েছেন যে, আতা যেমন রেওয়ায়েত করেছেন, ঠিক অনুরূপ বর্ণনা জাবের ইবনে আব্দুল্লাহ থেকে তিনিও শুনেছেন। তবে তিনি আল্লাহর যিকিরের উল্লেখ করেননি। (বুখারী, হাদীস নং ৩৩০৪)

সূরাঃ সাবা, মাক্কী

(আয়াতঃ ৫৪, রুকূ'ঃ ৬)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةُ سَبَإٍ مَّكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٥٤ رُكُوْعَاتُهَا ٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. সমস্ত প্রশংসা আল্লাহর, যিনি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে সব কিছুরই অধিপতি এবং আখিরাতেও প্রশংসা তারই। তিনি প্রজ্ঞাবান, সর্বজ্ঞ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي الْاٰخِرَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ①

২. তিনি জানেন যা ভূমিতে প্রবেশ করে, যা তা হতে বের হয় এবং যা আকাশ হতে অবতীর্ণ হয় ও যা কিছু আকাশে উত্থিত হয়। তিনিই পরম দয়ালু, ক্ষমাশীল।

يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ؕ وَهُوَ الرَّحِيْمُ الْغَفُوْرُ ②

৩. কাফিররা বলেঃ আমাদের উপর কিয়ামত আসবে না। বলঃ হ্যাঁ আসবেই, শপথ আমার প্রতি-পালকের, নিশ্চয়ই তোমাদের নিকট ওটা আসবে। তিনি অদৃশ্য সম্বন্ধে সম্যক পরিজ্ঞাত, আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে তাঁর অগোচর নয় অণু পরিমাণ কিছু কিংবা তদপেক্ষা ক্ষুদ্র অথবা বৃহৎ কিছু; বরং এর প্রত্যেকটি লিপিবদ্ধ আছে সুস্পষ্ট কিতাবে।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَاْتِيْنَا السَّاعَةُ ؕ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتَاْتِيَنَّكُمْ ۙ عٰلِمِ الْغَيْبِ ۚ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَلَآ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرُ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ③

৪. এটা এ জন্য যে, যারা মু'মিন ও সৎকর্মপরায়ণ, তিনি তাদেরকে প্রতিদান দিবেন। তাদেরই জন্যে আছে ক্ষমা ও সম্মানজনক রিযিক।

لِّيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ④

৫. যারা আমার আয়াতসমূহকে ব্যর্থ করবার চেষ্টা করে তাদের জন্যে রয়েছে ভয়ঙ্কর পীড়াদায়ক শাস্তি।

وَالَّذِيْنَ سَعَوْ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ⑤

وَيَرَى الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ وَيَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۝٦

৬. যাদেরকে জ্ঞান দেয়া হয়েছে তারা বিশ্বাস করে যে, তোমার প্রতিপালকের নিকট হতে তোমার প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে তা সত্য; এটা মানুষকে পরাক্রমশালী ও মহা প্রশংসিত আল্লাহর পথ নির্দেশ করে।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ اِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمْ لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۝٧

৭. কাফিররা বলেঃ আমরা কি তোমাদেরকে এমন ব্যক্তির সন্ধান দিব যে তোমাদেরকে বলেঃ তোমাদের দেহ সম্পূর্ণ ছিন্নভিন্ন হয়ে পড়লেও তোমরা নূতন সৃষ্টিরূপে উত্থিত হবে।

اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلٰلِ الْبَعِيْدِ ۝٨

৮. সে কি আল্লাহ সম্বন্ধে মিথ্যা উদ্ভাবন করে অথবা সে কি উন্মাদ? বস্তুতঃ যারা আখিরাতে বিশ্বাস করে না তারা আযাবে ও ঘোর বিভ্রান্তিতে রয়েছে।

اَفَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنْ نَّشَاْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ۝٩

৯. তারা কি তাদের সম্মুখে ও পশ্চাতে, আসমান ও যমীনে যা আছে তার প্রতি লক্ষ্য করে না? আমি ইচ্ছা করলে তাদেরকেসহ ভূমি ধ্বসিয়ে দিবো অথবা তাদের উপর আকাশের কোন খন্ডের পতন ঘটাবো, আল্লাহ অভিমুখী প্রতিটি বান্দার জন্যে এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا ؕ يٰجِبَالُ اَوِّبِيْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚ وَاَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ ۝١٠

১০. আমি নিশ্চয়ই দাউদ (عليه السلام)-এর প্রতি আমার অনুগ্রহ করেছিলাম এবং আদেশ করেছিলামঃ হে পর্বতমালা! তোমরা দাউদ (عليه السلام)-এর সাথে আমার পবিত্রতা ঘোষণা কর এবং পাখীসমূহকে, তার জন্যে নরম করেছিলাম লৌহকে

اَنِ اعْمَلْ سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِي السَّرْدِ وَاعْمَلُوْا

১১. যাতে তুমি পূর্ণ মাপের বর্ম তৈরি করতে ও পরিমাণ রক্ষা করতে পার

صَالِحًا ۖ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١﴾

এবং তোমরা সৎকর্ম কর, তোমরা যা কিছু কর আমি তা দেখি।

وَلِسُلَيْمَٰنَ الرِّيحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۖ وَأَسَلْنَا لَهُ عَيْنَ الْقِطْرِ ۖ وَمِنَ الْجِنِّ مَن يَعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۖ وَمَن يَزِغْ مِنْهُمْ عَنْ أَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿١٢﴾

১২. আমি সুলাইমান (عليه السلام)-এর অধীন করেছিলাম বায়ুকে, যা প্রভাতে এক মাসের পথ অতিক্রম করতো। এবং সন্ধ্যায় এক মাসের পথ অতিক্রম করতো। আমি তার জন্যে গলিত তামার এক ঝরণা প্রবাহিত করেছিলাম। আল্লাহর অনুমতিক্রমে জ্বিনদের কতক তার সামনে কাজ করতো। তাদের মধ্যে যে আমার নির্দেশ অমান্য করে তাকে আমি জ্বলন্ত অগ্নির শাস্তি আস্বাদন করাবো।

يَعْمَلُونَ لَهُ مَا يَشَاءُ مِن مَّحَارِيبَ وَتَمَاثِيلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُورٍ رَّاسِيَاتٍ ۚ اعْمَلُوا آلَ دَاوُودَ شُكْرًا ۚ وَقَلِيلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُورُ ﴿١٣﴾

১৩. তারা তাঁর সুলাইমান (عليه السلام) ইচ্ছানুযায়ী প্রাসাদ, ভাস্কর্য হাউজ সদৃশ বৃহদাকার পাত্র এবং সুদৃঢ়ভাবে স্থাপিত বৃহদাকার ডেগ নির্মাণ করতো। (আমি বলেছিলাম) হে দাউদ পরিবার! কৃতজ্ঞতার সাথে তোমরা কাজ করতে থাকো। আমার বান্দাদের মধ্যে অল্পই কৃতজ্ঞ।

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَىٰ مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنسَأَتَهُ ۖ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ أَن لَّوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوا فِي الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿١٤﴾

১৪. যখন আমি সুলাইমান (عليه السلام)-এর মৃত্যু ঘটালাম তখন জ্বিনদেরকে তার মৃত্যুবিষয় জানালো শুধু মাটির পোকা (উইপোকা) যা সুলাইমান (عليه السلام)-এর লাঠি খাচ্ছিল। যখন সুলাইমান (عليه السلام) পড়ে গেলন তখন জ্বিনেরা বুঝতে পারলো যে, তারা যদি অদৃশ্য বিষয় জানতো তাহলে তারা লাঞ্ছনাদায়ক শাস্তিতে আবদ্ধ থাকতো না।

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِي مَسْكَنِهِمْ آيَةٌ ۖ جَنَّتَانِ

১৫. সাবাবাসীদের জন্যে তাদের আবাসভূমিতে ছিল এক নিদর্শন,

عَنْ يَّمِيْنٍ وَّشِمَالٍ ۚ كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ۭ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَّرَبٌّ غَفُوْرٌ ﴿١٥﴾

দু'টি বাগান, একটি ডান দিকে, অপরটি বামদিকে; তোমরা তোমাদের প্রতিপালক প্রদত্ত রিযিক ভোগ কর এবং তাঁর প্রতি কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর। (কত) সুন্দরতম নগরী এবং ক্ষমাশীল তোমাদের প্রতিপালক।

فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنٰهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ اُكُلٍ خَمْطٍ وَّاَثْلٍ وَّشَيْءٍ مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ ﴿١٦﴾

১৬. পরে তারা আদেশ অমান্য করলো। ফলে আমি তাদের উপর প্রবাহিত করলাম বাঁধভাঙ্গা বন্যা এবং তাদের বাগান দু'টিকে পরিবর্তন করে দিলাম এমন দু'টি বাগানে যাতে উৎপন্ন হয় বিস্বাদ ফলমূল, ঝাউগাছ এবং কিছু বরই গাছ।

ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ۭ وَهَلْ نُجٰزِيْٓ اِلَّا الْكَفُوْرَ ﴿١٧﴾

১৭. আমি তাদেরকে এই শাস্তি দিয়েছিলাম তাদের কুফরীর কারণে। আমি অকৃতজ্ঞ ব্যতীত আর কাউকেও এমন শাস্তি দিই না।

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَّقَدَّرْنَا فِيْهَا السَّيْرَ ۭ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِيَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ﴿١٨﴾

১৮. তাদের এবং যেসব জনপদের প্রতি আমি অনুগ্রহ করেছিলাম সেগুলোর অন্তর্বর্তী স্থানে দৃশ্যমান বহু জনপদ স্থাপন করেছিলাম এবং ঐ সব জনপদে ভ্রমণের যথাযথ ব্যবস্থা করেছিলাম (এবং তাদেরকে বলে-ছিলামঃ) তোমরা এ সব জনপদে নিরাপদে ভ্রমণ কর দিবসে ও রজনীতে।

فَقَالُوْا رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿١٩﴾

১৯. কিন্তু তারা বললোঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদের সফরের (মনযিলগুলোর) ব্যবধান বর্ধিত করুন! এভাবে তারা নিজেদের প্রতি যুলুম করেছিল। ফলে আমি তাদেরকে উপখ্যানে পরিণত করলাম এবং তাদেরকে সম্পূর্ণরূপে ছিন্নভিন্ন করে দিলাম। নিশ্চয় এতে প্রত্যেক

ধৈর্যশীল, কৃতজ্ঞ ব্যক্তির জন্যে অবশ্যই অনেক নিদর্শন রয়েছে।

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٠﴾

২০. তাদের সম্বন্ধে ইবলীস তার ধারণা সত্য প্রমাণ করলো, ফলে তাদের মধ্যে একটি মু'মিন দল ব্যতীত সবাই তার অনুসরণ করলো।

وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِم مِّن سُلْطَانٍ إِلَّا لِنَعْلَمَ مَن يُؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِي شَكٍّ ۗ وَرَبُّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ﴿٢١﴾

২১. তাদের উপর তার (শয়তানের) কোন আধিপত্য ছিল না। তবে কারা আখেরাতে বিশ্বাসী এবং কারা ওতে সন্দিহান তা অবহিত হওয়া ছিল আমার উদ্দেশ্য। তোমার প্রতিপালক সর্ববিষয়ের তত্ত্বাবধায়ক।

قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ ۖ لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهِمَا مِن شِرْكٍ وَمَا لَهُ مِنْهُم مِّن ظَهِيرٍ ﴿٢٢﴾

২২. তুমি বলঃ তোমরা আহ্বান কর তাদেরকে যাদেরকে তোমরা আল্লাহর পরিবর্তে (মা'বূদ) মনে করতে, তারা আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে অণু পরিমাণ কিছুর মালিক নয় এবং এতদুভয়ে তাদের কোন অংশও নেই এবং তাদের কেউ তার সহায়কও নয়।

وَلَا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ عِندَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ ۚ حَتَّىٰ إِذَا فُزِّعَ عَن قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ ۖ قَالُوا الْحَقَّ ۖ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿٢٣﴾

২৩. যাকে অনুমতি দেয়া হয় তার ছাড়া আল্লাহর নিকট কারো সুপারিশ ফলপ্রসূ হবে না। পরে যখন তাদের অন্তর হতে ভয় বিদূরিত হবে তখন তারা পরস্পরের মধ্যে জিজ্ঞাসাবাদ করবেঃ তোমাদের প্রতিপালক কি বললেন? তদুত্তরে তারা বলবেঃ যা সত্য তিনি তাই বলেছেন। তিনি সর্বোচ্চ, মহান।

قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قُلِ اللَّهُ ۙ وَإِنَّا أَوْ إِيَّاكُمْ لَعَلَىٰ هُدًى أَوْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٢٤﴾

২৪. বলঃ আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী হতে কে তোমাদেরকে রিযিক প্রদান করে? বলঃ আল্লাহ! হয় আমরা না হয় তোমরা সৎপথে স্থিত অথবা স্পষ্ট বিভ্রান্তিতে পতিত।

قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّآ اَجْرَمْنَا وَلَا نُسْـَٔلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٥﴾

২৫. বলঃ আমাদের অপরাধের জন্যে তোমাদেরকে জবাবদিহি করতে হবে না এবং তোমরা যা কর সে সম্পর্কে আমাদেরকেও জবাবদিহি করতে হবে না।

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ؕ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ ﴿٢٦﴾

২৬. বলঃ আমাদের প্রতিপালক আমাদের সবাইকে একত্রিত করবেন, অতঃপর তিনি আমাদের মধ্যে সঠিকভাবে ফায়সালা করে দিবেন, তিনিই শ্রেষ্ঠ ফায়সালাকারী, সর্বজ্ঞ।

قُلْ اَرُوْنِيَ الَّذِيْنَ اَلْحَقْتُمْ بِهٖ شُرَكَآءَ كَلَّا ؕ بَلْ هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٧﴾

২৭. বলঃ তোমরা আমাকে দেখাও যাদেরকে তোমরা শরীকরূপে তাঁর সাথে জুড়ে দিয়েছো তাদেরকে। না, কখনো নয়; বরং তিনি আল্লাহ পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾

২৮. আমি তোমাকে সমগ্র মানব জাতির প্রতি সুসংবাদদাতা ও সতর্ক-কারীরূপে প্রেরণ করেছি; কিন্তু অধিকাংশ মানুষ জানে না।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾

২৯. তারা বলেঃ তোমরা যদি সত্যবাদী হও (তবে বল,) এ (কিয়ামতের) প্রতিশ্রুতি কখন বাস্তবায়িত হবে?

قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ عَنْهُ سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٠﴾

৩০. বলঃ তোমাদের জন্যে আছে এক নির্ধারিত দিবস যা থেকে তোমরা মুহূর্তকাল বিলম্ব করতে পারবে না, আগেও আনতে পারবে না।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚۖ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ ۨالْقَوْلَ ۚ

৩১. কাফিররা বলেঃ আমরা এই কুরআন কখনোও বিশ্বাস করবো না, এর পূর্ববর্তী কিতাবসমূহেও না। তুমি যদি দেখতে যালিমদেরকে যখন তাদের প্রতিপালকের সামনে

يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لَوْلَآ اَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٣١﴾

দন্ডায়মান করা হবে, তখন তারা পরস্পর বাদ-প্রতিবাদ করতে থাকবে, দুর্বলেরা অহংকার-কারীদেরকে বলবেঃ তোমরা না থাকলে আমরা অবশ্যই মু'মিন হতাম।

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْٓا اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى بَعْدَ اِذْ جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾

৩২. অহংকারকারীরা দুর্বলদেরকে বলবেঃ তোমাদের নিকট সৎ পথের দিশা আসার পর আমরা কি তোমাদেরকে ওটা হতে নিবৃত্ত করেছিলাম? বস্তুতঃ তোমরাই তো ছিলে অপরাধী।

وَقَالَ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِذْ تَاْمُرُوْنَنَآ اَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَنَجْعَلَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ؕ وَجَعَلْنَا الْاَغْلٰلَ فِيْٓ اَعْنَاقِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٣٣﴾

৩৩. দুর্বলেরা অহংকারকারীদেরকে বলবেঃ প্রকৃতপক্ষে তোমরাই তো দিবা-রাত্র চক্রান্তে লিপ্ত ছিলে, আমাদেরকে নির্দেশ দিয়েছিলে যেন আমরা আল্লাহ্‌কে অমান্য করি এবং তাঁর শরীক স্থাপন করি, যখন তারা শাস্তি প্রত্যক্ষ করবে তখন তারা অনুতাপ গোপন রাখবে এবং আমি কাফিরদের গলায় বেড়ী পরিয়ে দেবো। তাদেরকে তারা যা করতো তারই প্রতিফল দেয়া হবে।

وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٤﴾

৩৪. যখনই আমি কোন জনপদে সতর্ককারী প্রেরণ করেছি তখনই তার বিত্তশালী অধিবাসীরা বলেছেঃ তোমরা যে বিষয়সহ প্রেরিত হয়েছো আমরা তা প্রত্যাখ্যান করি।

وَقَالُوْا نَحْنُ اَكْثَرُ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۙ وَّمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٣٥﴾

৩৫. তারা আরো বলতোঃ আমরা ধনে-জনে সমৃদ্ধশালী; সুতরাং আমাদেরকে কিছুতেই শাস্তি দেয়া হবে না।

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ

৩৬. বলঃ আমার প্রতিপালক যার প্রতি ইচ্ছা রিযিক বর্ধিত করেন

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾

অথবা এটা সীমিত করেন; কিন্তু অধিকাংশ লোকই এটা জানে না।

وَمَآ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِيْ تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰٓى اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۖ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِي الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾

৩৭. তোমাদের ধন-সম্পদ ও সন্তান-সন্ততি এমন কিছু নয় যা তোমাদেরকে আমার নিকটবর্তী করে দিবে; যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে তারাই তাদের কর্মের জন্যে পাবে বহুগুণ পুরস্কার; আর তারা প্রাসাদসমূহে নিরাপদে থাকবে।

وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ﴿٣٨﴾

৩৮. যারা আমার আয়াতসমূহকে ব্যর্থ করার চেষ্টা করবে তাদেরকেই আযাবে একত্রিত করা হবে।

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ۭ وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهٗ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٣٩﴾

৩৯. বলঃ আমার প্রতিপালক তাঁর বান্দাদের মধ্যে যার প্রতি ইচ্ছা তার রিযিক বর্ধিত করেন অথবা ওটা সীমিত করেন। তোমরা যা কিছু ব্যয় করবে তিনি তার প্রতিদান দিবেন। তিনি শ্রেষ্ঠ রিযিকদাতা।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ يَقُوْلُ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اَهٰٓؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٤٠﴾

৪০. যেদিন তিনি তাদের সবাইকে একত্রিত করবেন এবং ফেরেশতা-দেরকে জিজ্ঞেস করবেনঃ এরা কি তোমাদেরই পূজা করতো?

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ الْجِنَّ ۚ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾

৪১. ফেরেশতারা বলবেঃ আপনি পবিত্র, মহান! তারা ব্যতীত আমাদের অভিভাবক আপনিই, তারা তো পূজা করতো জ্বিনদের এবং তাদের অধিকাংশই ছিল তাদের প্রতি বিশ্বাসী।

فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا ۭ وَنَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿٤٢﴾

৪২. আজ তোমাদের একে অন্যের উপকার কিংবা অপকার করার ক্ষমতা নেই। যারা যুলুম করেছিল তাদেরকে বলবোঃ তোমরা যে অগ্নি-শাস্তি অস্বীকার করতে তা আস্বাদন কর।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَٰذَا إِلَّا رَجُلٌ يُرِيدُ أَن يَصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُكُمْ ۚ وَقَالُوا مَا هَٰذَا إِلَّا إِفْكٌ مُّفْتَرًى ۚ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٤٣﴾

৪৩. তাদের নিকট যখন আমার সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ আবৃত্তি করা হয় তখন তারা বলেঃ তোমাদের পূর্বপুরুষ যার ইবাদত করতো এ ব্যক্তিই তো তাদের ইবাদতে তোমাদেরকে বাধা দিতে চায়। তারা বলেঃ এটা তো মিথ্যা উদ্ভাবন ব্যতীত কিছু নয় এবং কাফিরদের নিকট যখন সত্য আসে তখন তারা বলেঃ এটা তো এক সুস্পষ্ট যাদু।

وَمَا آتَيْنَاهُم مِّن كُتُبٍ يَدْرُسُونَهَا وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِن نَّذِيرٍ ﴿٤٤﴾

৪৪. আমি তাদেরকে (পূর্বে) কোন কিতাব দিইনি যা তারা অধ্যয়ন করতো এবং তোমার পূর্বে তাদের নিকট কোন সতর্ককারীও প্রেরণ করিনি।

وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَمَا بَلَغُوا مِعْشَارَ مَا آتَيْنَاهُمْ فَكَذَّبُوا رُسُلِي ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٤٥﴾

৪৫. তাদের পূর্ববর্তীরাও মিথ্যা আরোপ করেছিল। তাদেরকে আমি যা দিয়েছিলাম এরা তার এক দশমাংশও পায়নি, তবুও তারা আমার রাসূলদেরকে মিথ্যাবাদী বলেছিল। ফলে কত ভয়ঙ্কর হয়েছিল (আমার শাস্তি।)

قُلْ إِنَّمَا أَعِظُكُم بِوَاحِدَةٍ ۖ أَن تَقُومُوا لِلَّهِ مَثْنَىٰ وَفُرَادَىٰ ثُمَّ تَتَفَكَّرُوا ۚ مَا بِصَاحِبِكُم مِّن جِنَّةٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ لَّكُم بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ﴿٤٦﴾

৪৬. বলঃ আমি তোমাদেরকে একটি বিষয়ে উপদেশ দিচ্ছিঃ তোমরা আল্লাহর উদ্দেশ্যে দুই দুই জন অথবা এক এক জন করে দাঁড়াও, অতঃপর তোমরা চিন্তা করে দেখো- তোমাদের সঙ্গী আদৌ উন্মাদ নয়। সে তো আসন্ন কঠিন শাস্তি সম্পর্কে তোমাদের সতর্ককারী মাত্র।

قُلْ مَا سَأَلْتُكُم مِّنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٤٧﴾

৪৭. বলঃ আমি তোমাদের নিকট কোন পারিশ্রমিক চেয়ে থাকলে তা তোমাদের জন্যই থাক; আমার পুরস্কার তো আছে আল্লাহর নিকট এবং তিনি সর্ববিষয়ে সাক্ষী।

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿٤٨﴾

৪৮. বলঃ আমার প্রতিপালক সত্য (ওহী) অবতীর্ণ করেন; তিনি অদৃশ্যের পরিজ্ঞাতা।

قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ ﴿٤٩﴾

৪৯. বলঃ সত্য এসেছে এবং অসত্য না পারে নতুন কিছু সৃজন করতে এবং না পারে পুনরাবৃত্তি করতে।

قُلْ إِنْ ضَلَلْتُ فَإِنَّمَا أَضِلُّ عَلَىٰ نَفْسِي ۖ وَإِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوحِي إِلَيَّ رَبِّي ۚ إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ﴿٥٠﴾

৫০. বলঃ আমি বিভ্রান্ত হলে বিভ্রান্তির পরিণাম আমারই এবং যদি আমি সৎ পথে থাকি তবে তা এজন্যে যে, আমার প্রতি আমার প্রতিপালক ওহী প্রেরণ করেন। তিনি সর্বশ্রোতা, অতি নিকটবর্তী।

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ فَزِعُوا فَلَا فَوْتَ وَأُخِذُوا مِنْ مَكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٥١﴾

৫১. তুমি যদি দেখতে যখন তারা ভীত-সন্ত্রস্ত হয়ে পড়বে, তারা অব্যাহতি পাবে না এবং তারা নিকটস্থ স্থান হতে ধৃত হবে।

وَقَالُوا آمَنَّا بِهِ ۖ وَأَنَّىٰ لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٥٢﴾

৫২. আর তারা বলবেঃ আমরা তাকে বিশ্বাস করলাম; কিন্তু এতো দূরবর্তী স্থান হতে তারা নাগাল পাবে কিরূপে?

وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ ۖ وَيَقْذِفُونَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٥٣﴾

৫৩. তারা তো পূর্বে তাকে প্রত্যাখ্যান করেছিল; তারা দূরবর্তী স্থান হতে অদৃশ্য বিষয়ে বাক্য ছুঁড়ে মারতো।

وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِمْ مِنْ قَبْلُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُرِيبٍ ﴿٥٤﴾

৫৪. তাদের ও তাদের বাসনার মধ্যে অন্তরাল করা হয়েছে, যেমন পূর্বে করা হয়েছিল তাদের সমপন্থীদের ক্ষেত্রে। তারা ছিল বিভ্রান্তির সন্দেহের মধ্যে।

سُوْرَةُ فَاطِرٍ مَّكِّيَّةٌ

সূরাঃ ফাতির, মাক্কী

اٰيَاتُهَا ٤٥ رُكُوْعَاتُهَا ٥

(আয়াতঃ ৪৫, রুকূ'ঃ ৫)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا اُولِيْٓ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ؕ يَزِيْدُ فِى الْخَلْقِ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ①

১. যাবতীয় প্রশংসা আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সৃষ্টিকর্তা আল্লাহরই, যিনি ফেরেশতাদেরকে বার্তাবাহক করেছেন যারা দুই-দুই, তিন-তিন ও চার-চার পাখা বিশিষ্ট। তিনি (তাঁর) সৃষ্টিতে যা ইচ্ছা বৃদ্ধি করেন। আল্লাহ সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান।

مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ②

২. আল্লাহ মানুষের জন্য যে অনুগ্রহের দরজা খুলে দেন কেউ তা' বিরত করতে পারে না এবং তিনি কিছু বন্ধ করতে চাইলে তৎপর কেউ ওর উন্মুক্তকারী নেই। তিনি পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ③

৩. হে মানুষ! তোমাদের প্রতি আল্লাহর অনুগ্রহ স্মরণ কর। আল্লাহ ছাড়া কি কোন স্রষ্টা আছে, যে তোমাদেরকে আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী হতে রিযিক দান করে? তিনি ছাড়া (সত্য) কোন মা'বূদ নেই। সুতরাং কোথায় তোমরা বিপথে চালিত হচ্ছো?

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ④

৪. তারা যদি তোমার প্রতি মিথ্যা আরোপ করে তবে তোমার পূর্বেও রাসূলদের প্রতি মিথ্যা আরোপ করা হয়েছিল। আল্লাহর নিকটই সবকিছু প্রত্যাবর্তিত হবে।

يَاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۖ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ⑤

৫. হে মানুষ। আল্লাহ্‌র প্রতিশ্রুতি সত্য; সুতরাং পার্থিব জীবন যেন তোমাদেরকে কিছুতেই প্রতারিত না করে এবং সে (শয়তান) যেন কিছুতেই আল্লাহ সম্পর্কে তোমাদেরকে প্রবঞ্চিত না করে।

اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ؕ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ⑥

৬. নিশ্চয়ই শয়তান তোমাদের শত্রু; সুতরাং তাকে শত্রু হিসেবে গ্রহণ কর। সে তো তার দলকে আহ্বান করে শুধু এই জন্যে যে, তারা যেন জাহান্নামী হয়।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ⑦

৭. যারা কুফরী করে তাদের জন্যে আছে কঠিন শাস্তি এবং যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে তাদের জন্যে আছে ক্ষমা ও মহা পুরস্কার।

اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ؕ فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۫ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ⑧

৮. কাউকেও যদি তার মন্দ কর্ম সুন্দর করে দেখানো হয় এবং সে ওটাকে উত্তম মনে করে (সে ব্যক্তি কি তার সমান যে সৎকর্ম করে?) আল্লাহ্ যাকে ইচ্ছা বিভ্রান্ত করেন এবং যাকে ইচ্ছা সৎপথে পরিচালিত করেন। অতএব তুমি তাদের জন্যে আক্ষেপ করে তোমার প্রাণকে ধ্বংস করো না। তারা যা করে আল্লাহ্ তা জানেন।

وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ⑨

৯. আল্লাহই বায়ু প্রেরণ করে তা দ্বারা মেঘমালা সঞ্চালিত করেন। অতঃপর আমি তা মৃত ভূ-খন্ডের দিকে প্রেরিচালিত করি, অতঃপর আমি ওটা দ্বারা যমীনকে ওর মৃত্যুর পর সঞ্জীবিত করি। পুনরাত্থান এই রূপেই হবে।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا ؕ

১০. কেউ ইয্যত-সম্মান চাইলে (সে জেনে রাখুক যে,) সমস্ত ইয্যত তো

اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهٗ ؕ وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَمَكْرُ اُولٰٓئِكَ هُوَ يَبُوْرُ ⑩

আল্লাহরই। তাঁরই (আল্লাহর) দিকে পবিত্র বাণীসমূহ আরোহণ করে এবং সৎকর্ম ওকে উন্নীত করে, আর যারা মন্দকর্মের ফন্দি আঁটে তাদের জন্যে আছে কঠিন শাস্তি। তাদের ফন্দি ব্যর্থ হবেই।

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا ؕ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ⑪

১১. আল্লাহ্ তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন মৃত্তিকা হতে; অতঃপর শুক্রবিন্দু হতে, অতঃপর তোমাদেরকে করেছেন জোড়া জোড়া! আল্লাহর অজ্ঞাতসারে কোন নারী গর্ভধারণ করে না এবং প্রসবও করে না। কোন দীর্ঘায়ু ব্যক্তির আয়ু বৃদ্ধি করা হয় না অথবা তার আয়ু হ্রাস করা হয় না, কিন্তু তাতো রয়েছে কিতাবে (লাওহে মাহফুজে)। নিশ্চয় এটা আল্লাহ্র জন্যে সহজ।

وَمَا يَسْتَوِى الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ؕ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ⑫

১২. দু'টি সমুদ্র একরূপ নয়— একটির পানি সুমিষ্ট ও সুপেয়, অপরটির পানি লোনা, খর (কটু স্বাদবিশিষ্ট)। প্রত্যেকটি হতে তোমরা তাজা গোশত (মৎস) আহার কর এবং অলংকার আহরণ কর যা তোমরা পরিধান কর এবং তোমরা দেখো যে, ওর বুক চিরে নৌযান চলাচল করে যাতে তোমরা তাঁর অনুগ্রহ অনুসন্ধান করতে পার এবং যাতে তোমরা কৃতজ্ঞ হও।

يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ ۙ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِىْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ⑬

১৩. তিনি রাত্রিকে দিবসে প্রবিষ্ট করান এবং দিবসকে প্রবিষ্ট করান রাত্রিতে, তিনি সূর্য ও চন্দ্রকে করেছেন নিয়ন্ত্রিত, প্রত্যেকে পরিভ্রমণ করে এক নির্দিষ্টকাল পর্যন্ত। তিনিই আল্লাহ, তোমাদের প্রতিপালক। সার্বভৌমত্ব তাঁরই।

আর তোমরা আল্লাহর পরিবর্তে যাদেরকে ডাকো তারা তো খেজুরের আঁটির সামান্য আবরণেরও অধিকারী নয়।

إِنْ تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ ۚ وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ ۚ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيرٍ ﴿١٤﴾

১৪. তোমরা তাদেরকে আহ্বান করলে তারা তোমাদের আহ্বান শুনবে না এবং শুনলেও তোমাদের আহ্বানে সাড়া দিবে না। তোমরা তাদেরকে যে শরীক করেছো তা তারা কিয়ামতের দিন অস্বীকার করবে। সর্বজ্ঞের ন্যায় কেউই তোমাকে অবহিত করতে পারে না।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿١٥﴾

১৫. হে লোক সকল! তোমরা তো আল্লাহর মুখাপেক্ষী; কিন্তু আল্লাহ, তিনি অভাবমুক্ত, প্রশংসিত।

إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٦﴾

১৬. তিনি ইচ্ছা করলে তোমাদেরকে অপসরণ (ধ্বংস) করে নতুন সৃষ্টি আনয়ন করতে পারেন।

وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ﴿١٧﴾

১৭. এটা আল্লাহর পক্ষে কঠিন নয়।

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۗ وَإِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلَىٰ حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۗ إِنَّمَا تُنْذِرُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۚ وَمَنْ تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿١٨﴾

১৮. কোন বহনকারী অন্যের বোঝা বহন করবে না, কোন ভারাক্রান্ত ব্যক্তি যদি কাউকেও এটা বহন করতে আহ্বান করে তবে তার কিছুই বহন করা হবে না, নিকটাত্মীয় হলেও। তুমি শুধু সতর্ক করতে পার যারা তাদের প্রতিপালককে না দেখে ভয় করে এবং নামায কায়েম করে। যে কেউ নিজেকে পরিশোধন করে সে তো পরিশোধন করে নিজেরই কল্যাণের জন্যে। প্রত্যাবর্তন তো আল্লাহরই নিকট।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ﴿١٩﴾

১৯. আর সমান নয় অন্ধ ও চক্ষুষ্মান।

وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ﴿٢٠﴾

২০. এবং না অন্ধকার ও আলো (সমান)।

وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ ﴿٢١﴾

২১. এবং না ছায়া রৌদ্র (সমান)।

وَمَا يَسْتَوِي الْاَحْيَآءُ وَلَا الْاَمْوَاتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِي الْقُبُوْرِ ﴿٢٢﴾

২২. আর সমান নয় জীবিত ও মৃতরাও। আল্লাহ যাকে ইচ্ছা শ্রবণ করান; তুমি শুনাতে সমর্থ হবে না যারা কবরে রয়েছে তাদেরকে।

اِنْ اَنْتَ اِلَّا نَذِيْرٌ ﴿٢٣﴾

২৩. তুমি একজন সতর্ককারী মাত্র।

اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ؕ وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ ﴿٢٤﴾

২৪. আমি তোমাকে সত্যসহ প্রেরণ করেছি সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারী রূপে; এমন কোন সম্প্রদায় নেই যার নিকট সতর্ককারী প্রেরিত হয়নি।

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿٢٥﴾

২৫. তারা যদি তোমার প্রতি মিথ্যা আরোপ করে তবে তাদের পূর্ববর্তীরাও মিথ্যা আরোপ করেছিল, তাদের নিকট এসেছিল তাদের রাসূলগণ সুস্পষ্ট নিদর্শন, গ্রন্থাদি (সহীফা) ও দীপ্তিমান কিতাবসহ।

ثُمَّ اَخَذْتُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٢٦﴾

২৬. অতঃপর আমি কাফিরদেরকে পাকড়াও করেছিলাম। কি ভয়ঙ্কর ছিল আমার শাস্তি!

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهَا ؕ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ بِيْضٌ وَّحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ ﴿٢٧﴾

২৭. তুমি কি দেখো না যে, আল্লাহ আকাশ হতে বৃষ্টিপাত করেন এবং এটা দ্বারা আমি বিচিত্র বর্ণের ফল-মূল উদগত করি? পাহাড়ের মধ্যে আছে বিচিত্র বর্ণের পথ—শুভ্র, লাল ও বিভিন্ন রঙের এবং নিকষ কালো পাথরসমূহ।

وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ وَالْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ؕ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ﴿٢٨﴾

২৮. এভাবে রং বেরং-এর মানুষ, জানোয়ার ও চতুষ্পদ জন্তু রয়েছে। আল্লাহর বান্দাদের মধ্যে যারা জ্ঞানী তারাই তাঁকে ভয় করে; আল্লাহ পরাক্রমশালী, ক্ষমাশীল।

إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَٰبَ اللَّهِ وَأَقَامُوا الصَّلَوٰةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَٰهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَٰرَةً لَّن تَبُورَ ﴿٢٩﴾

২৯. যারা আল্লাহর কিতাব পাঠ করে, নামায কায়েম করে, আমি তাদেরকে যে রিযিক দিয়েছি তা হতে গোপনে ও প্রকাশ্যে ব্যয় করে, তারাই আশা করতে পারে তাদের এমন ব্যবসায়ের যার ক্ষয় নেই।

لِيُوَفِّيَهُمْ أُجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِۦٓ ۚ إِنَّهُۥ غَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٣٠﴾

৩০. এ জন্যে যে, আল্লাহ তাদের কর্মের পূর্ণ প্রতিফল দিবেন এবং নিজ অনুগ্রহে তাদেরকে আরো বেশি দিবেন। তিনি তো ক্ষমাশীল ও গুণগ্রাহী।

وَالَّذِىٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِعِبَادِهِۦ لَخَبِيرٌۢ بَصِيرٌ ﴿٣١﴾

৩১. আমি তোমার প্রতি যে কিতাব অবতীর্ণ করেছি তা সত্য, এটা পূর্ববর্তী কিতাবের সমর্থক। নিশ্চয়ই আল্লাহ তাঁর বান্দাদের সবকিছু জানেন ও দেখেন।

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَٰبَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۖ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِۦ ۖ وَمِنْهُم مُّقْتَصِدٌ ۖ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرَٰتِ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ﴿٣٢﴾

৩২. অতঃপর আমি কিতাবের অধিকারী করলাম আমার বান্দাদের মধ্যে তাদেরকে যাদেরকে আমি মনোনীত করেছি; তবে তাদের কেউ নিজের প্রতি অত্যাচারী, কেউ মধ্যপন্থী এবং কেউ আল্লাহর ইচ্ছায় কল্যাণের কাজে অগ্রগামী। এটাই মহা অনুগ্রহ।

جَنَّٰتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٣٣﴾

৩৩. তারা প্রবেশ করবে স্থায়ী জান্নাতে, সেখানে তাদেরকে স্বর্ণ নির্মিত কঙ্কর ও মুক্তা দ্বারা অলংকৃত করা হবে এবং সেখানে তাদের পোশাক-পরিচ্ছেদ হবে রেশমের।

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِىٓ أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ۖ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٣٤﴾

৩৪. এবং তারা বলবেঃ যাবতীয় প্রশংসা আল্লাহর যিনি আমাদের দুঃখ-দুর্দশা দূরীভূত করেছেন; আমাদের প্রতিপালক তো ক্ষমাশীল, গুণগ্রাহী।

الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ ﴿٣٥﴾

৩৫. যিনি নিজ অনুগ্রহে আমাদেরকে স্থায়ী আবাস দিয়েছেন যেখানে ক্লেশ আমাদেরকে স্পর্শ করে না এবং ক্লান্তিও স্পর্শ করে না।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ۗ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ ﴿٣٦﴾

৩৬. কিন্তু যারা কুফরী করে তাদের জন্যে আছে জাহান্নামের আগুন। তাদের মৃত্যুর আদেশ দেয়া হবে না যে, তারা মরবে এবং তাদের জন্যে জাহান্নামের শাস্তিও লাঘব করা হবে না। এভাবে আমি প্রত্যেক অকৃতজ্ঞকে শাস্তি দিয়ে থাকি।

وَهُمْ يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا ۚ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ۗ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَآءَكُمُ النَّذِيْرُ ۗ فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿٣٧﴾

৩৭. সেখানে তারা আর্তনাদ করে বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে নিষ্কৃতি দিন, আমরা সৎ কর্ম করবো, পর্বে যা করতাম তা করবো না। আল্লাহ বলবেনঃ আমি কি তোমাদেরকে এতো দীর্ঘ জীবন দান করিনি যে, তখন কেউ সতর্ক হতে চাইলে সতর্ক হতে পারতে? তোমাদের নিকট তো সতর্ককারীরাও এসেছিলো। সুতরাং শাস্তি আস্বাদন কর; যালিমদের কোন সাহায্যকারী নেই।

اِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٣٨﴾

৩৮. আল্লাহ আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর অদৃশ্য বিষয় অবগত আছেন। অন্তরে যা রয়েছে সে সম্বন্ধে তিনি সবিশেষ অবহিত।

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ ۗ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۗ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ اِلَّا خَسَارًا ﴿٣٩﴾

৩৯. তিনিই তোমাদেরকে পৃথিবীতে প্রতিনিধি করেছেন। সুতরাং কেউ কুফরী করলে তার কুফরীর জন্যে সে নিজেই দায়ী হবে। কাফিরদের কুফরী শুধু তাদের প্রতিপালকের ক্রোধই বৃদ্ধি করে এবং কাফিরদের কুফরী তাদের ক্ষতিই বৃদ্ধি করে।

قُلْ أَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ أَرُونِى مَاذَا خَلَقُوا۟ مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِى السَّمَٰوَٰتِ أَمْ ءَاتَيْنَٰهُمْ كِتَٰبًا فَهُمْ عَلَىٰ بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ إِن يَعِدُ الظَّٰلِمُونَ بَعْضُهُم بَعْضًا إِلَّا غُرُورًا ﴿٤٠﴾

৪০. বলঃ তোমরা আল্লাহর পরিবর্তে যাদেরকে ডাকো সেই সব শরীক (দেব-দেবীর) কথা ভেবে দেখেছো কি? তারা পৃথিবীতে কিছু সৃষ্টি করে থাকলে আমাকে দেখাও; অথবা আকাশমন্ডলীতে (সৃষ্টিতে) তাদের কোন অংশ আছে কি? না কি আমি তাদেরকে এমন কোন কিতাব দিয়েছি যার প্রমাণের উপর এরা নির্ভর করে? বস্তুতঃ যালিমরা একে অপরকে মিথ্যা প্রতিশ্রুতি দিয়ে থাকে।

إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضَ أَن تَزُولَا ۚ وَلَئِن زَالَتَآ إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِّنۢ بَعْدِهِۦٓ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿٤١﴾

৪১. আল্লাহ আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীকে সংরক্ষণ করেন যাতে ওরা স্থানচ্যুত না হয়, ওরা স্থানচ্যুত হলে তিনি ব্যতীত কে ওদেরকে সংরক্ষণ করবে? তিনি অতি সহনশীল, ক্ষমাপরায়ণ।[১]

وَأَقْسَمُوا۟ بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَٰنِهِمْ لَئِن جَآءَهُمْ نَذِيرٌ لَّيَكُونُنَّ أَهْدَىٰ مِنْ إِحْدَى الْأُمَمِ ۖ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيرٌ مَّا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا ﴿٤٢﴾

৪২. তারা দৃঢ়তার সাথে আল্লাহর শপথ করে বলতো যে, তাদের নিকট কোন সতর্ককারী আসলে তারা অন্য সব সম্প্রদায় অপেক্ষা সৎপথের অধিকতর অনুসারী হবে; কিন্তু তাদের নিকট যখন (এক) সতর্ক-কারী (মুহাম্মাদ ﷺ) আসলো তখন শুধু তাদের বিমুখতাই বৃদ্ধি পেল।

اسْتِكْبَارًا فِى الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ۚ وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهِۦ ۚ فَهَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا سُنَّتَ الْأَوَّلِينَ ۚ

৪৩. পৃথিবীতে ঔদ্ধত্য (অহংকার) প্রকাশ এবং কূট ষড়যন্ত্রের কারণে। কূট ষড়যন্ত ওর উদ্যোক্তাদেরকেই পরিবেষ্টন করে। তবে কি তারা

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছিঃ (কিয়ামতের দিন) আল্লাহ্ পৃথিবীকে মুঠের মধ্যে এবং আকাশসমূহকে ডান হাতে পেচিয়ে রাখবেন। অতঃপর বলবেনঃ আমি বাদশাহ্ পৃথিবীর বাদশাহরা আজ কোথায়? (বুখারী, হাদীস নং ৪৮১২)

فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا ﴿٤٣﴾

প্রতীক্ষা করছে পূর্ববর্তীদের প্রতি প্রবর্তিত বিধানের? কিন্তু তুমি আল্লাহর বিধানের কখনো কোন পরিবর্তন পাবে না এবং আল্লাহর বিধানের কোন ব্যতিক্রমও দেখবে না।

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَىْءٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ﴿٤٤﴾

৪৪. তারা কি পৃথিবীতে পরিভ্রমণ করেনি? তাহলে তাদের পূর্ববর্তীদের পরিণাম কি হয়েছিল তা দেখতে পেতো। তারা তো এদের অপেক্ষা অধিকতর শক্তিশালী ছিল। আল্লাহ এমন নন যে, আকাশমন্ডলী এবং পৃথিবীর কোন কিছুই তাঁকে অক্ষম করতে পারে; তিনি সর্বজ্ঞ, সর্বশক্তিমান।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا ﴿٤٥﴾

৪৫. আল্লাহ মানুষকে তাদের কৃতকর্মের জন্যে শাস্তি দিলে ভূ-পৃষ্ঠে কোন জীব-জন্তুকেই রেহাই দিতেন না; কিন্তু তিনি এক নির্দিষ্টকাল পর্যন্ত তাদেরকে অবকাশ দিয়ে থাকেন। অতঃপর তাদের নির্দিষ্টকাল এসে গেলে আল্লাহ তো আছেন তাঁর বান্দাদের সম্যক দ্রষ্টা।

سُوْرَةُ يٰسٓ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٨٣ رُكُوْعَاتُهَا ٥

সূরাঃ ইয়াসীন, মাক্কী

(আয়াতঃ ৮৩, রুকূ'ঃ ৫)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

يٰسٓ ﴿١﴾

১. ইয়াসীন।

وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾

২. (শপথ) প্রজ্ঞাময় কুরআনের।

اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣﴾

৩. তুমি অবশ্যই রাসূলদের অন্তর্ভুক্ত।

عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٤

৪. তুমি সরল পথে প্রতিষ্ঠিত।

تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۝٥

৫. কুরআন অবতীর্ণ পরাক্রমশালী পরম দয়ালু (আল্লাহর) নিকট হতে।

لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ۝٦

৬. যাতে তুমি সতর্ক করতে পার এমন এক জাতিকে যাদের পিতৃ-পুরষদেরকে সতর্ক করা হয়নি, যার ফলে তারা গাফিল।

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٧

৭. তাদের অধিকাংশের জন্যে সেই বাণী অবধারিত হয়েছে; সুতরাং তারা ঈমান আনবে না।

اِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِيَ اِلَى الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ۝٨

৮. আমি তাদের গলদেশে চিবুক (থুথনি) পর্যন্ত বেড়ি পরিয়েছি, ফলে তারা ঊর্ধমুখী হয়ে গেছে।

وَجَعَلْنَا مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ۝٩

৯. আমি তাদের সম্মুখে প্রাচীর ও পশ্চাতে প্রাচীর স্থাপন করেছি এবং তাদেরকে আবৃত্ত করেছি, ফলে তারা দেখতে পায় না।

وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝١٠

১০. তুমি তাদেরকে সতর্ক কর বা না কর, তাদের পক্ষে উভয়ই সমান; তারা ঈমান আনবে না।

اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ ۚ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّاَجْرٍ كَرِيْمٍ ۝١١

১১. তুমি শুধু তাকেই সতর্ক করতে পার যে উপদেশ মেনে চলে এবং না দেখে দয়াময় আল্লাহকে ভয় করে। অতএব তুমি তাকে ক্ষমা ও মহাপুরস্কারের সংবাদ দাও।

اِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتٰى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَاٰثَارَهُمْ ۗ وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ فِيْٓ اِمَامٍ مُّبِيْنٍ ۝١٢

১২. আমিই মৃতকে করি জীবিত এবং লিখে রাখি যা তারা অগ্রে প্রেরণ করে ও যা তারা পশ্চাতে রেখে যায়, আমি প্রত্যেক জিনিস স্পষ্ট কিতাবে সংরক্ষিত রেখেছি।

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ اِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ۝١٣

১৩. তাদের নিকট বর্ণনা কর এক জনপদের অধিবাসীদের দৃষ্টান্ত; যাদের নিকট এসেছিল রাসূলগণ।

إِذْ أَرْسَلْنَآ إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوٓا إِنَّآ إِلَيْكُم مُّرْسَلُونَ ﴿١٤﴾

১৪. যখন আমি তাদের নিকট পাঠিয়েছিলাম দু'জন রাসূল, কিন্তু তারা তাদেরকে মিথ্যাবাদী বললো; তখন আমি তাদেরকে শক্তিশালী করেছিলাম তৃতীয় একজন দ্বারা সুতরাং তারা বলেছিলেনঃ আমরা নিশ্চয়ই তোমাদের নিকট প্রেরিত হয়েছি।

قَالُوا مَآ أَنتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَمَآ أَنزَلَ الرَّحْمَٰنُ مِن شَيْءٍ ۙ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا تَكْذِبُونَ ﴿١٥﴾

১৫. তারা বললেনঃ তোমরা তো আমাদের মতই মানুষ, দয়াময় (আল্লাহ) তো কিছুই অবতীর্ণ করেননি। তোমরা শুধু মিথ্যাই বলছো।

قَالُوا رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّآ إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُونَ ﴿١٦﴾

১৬. তারা বললোঃ আমাদের প্রতিপালক জানেন যে আমরা অবশ্যই তোমাদের নিকট প্রেরিত হয়েছি।

وَمَا عَلَيْنَآ إِلَّا الْبَلَٰغُ الْمُبِينُ ﴿١٧﴾

১৭. স্পষ্টভাবে প্রচার করাই আমাদের দায়িত্ব।

قَالُوٓا إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۖ لَئِن لَّمْ تَنتَهُوا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُم مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٨﴾

১৮. তারা বললোঃ আমরা তোমাদেরকে অমঙ্গলের কারণ মনে করি, যদি তোমরা বিরত না হও তবে তোমাদেরকে অবশ্যই প্রস্তরাঘাতে হত্যা করবো এবং আমাদের পক্ষ হতে তোমাদের উপর যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি অবশ্যই আপতিত হবে।

قَالُوا طَٰٓئِرُكُم مَّعَكُمْ ۚ أَئِن ذُكِّرْتُم ۚ بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ﴿١٩﴾

১৯. তারা (রাসূলগণ) বললেনঃ তোমাদের অমঙ্গল তোমাদেরই সাথে, এটা কি এ জন্যে যে, তোমাদেরকে উপদেশ দেয়া হবে? বস্তুতঃ তোমরা এক সীমালঙ্ঘনকারী সম্প্রদায়।

وَجَآءَ مِنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢٠﴾

২০. নগরীর প্রান্ত হতে এক ব্যক্তি ছুটে আসলো, সে বললোঃ হে আমার সম্প্রদায়! রাসূলদের অনুসরণ কর।

اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٢١﴾

২১. অনুসরণ কর তাদের যারা তোমাদের নিকট কোন প্রতিদান চায় না এবং তারা সৎপথ প্রাপ্ত।

وَمَا لِيَ لَآ اَعْبُدُ الَّذِيْ فَطَرَنِيْ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٢﴾

২২. আমার কি হয়েছে যে, যিনি আমাকে সৃষ্টি করেছেন এবং যাঁর নিকট তোমরা প্রত্যাবর্তিত হবে আমি তাঁর ইবাদত করবো না?

ءَاَتَّخِذُ مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً اِنْ يُّرِدْنِ الرَّحْمٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يُنْقِذُوْنِ ﴿٢٣﴾

২৩. আমি কি তাঁর পরিবর্তে অন্য মা'বূদ গ্রহণ করবো? দয়াময় (আল্লাহ) আমাকে ক্ষতিগ্রস্ত করতে চাইলে তাদের শাফায়াত আমার কোন কাজে আসবে না এবং তারা আমাকে উদ্ধার করতেও পারবে না।

اِنِّيْٓ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٤﴾

২৪. আমি অবশ্যই তখন স্পষ্ট বিভ্রান্তিতে পড়বো।

اِنِّيْٓ اٰمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُوْنِ ﴿٢٥﴾

২৫. নিশ্চয়ই আমি তোমাদের প্রতিপালকের উপর ঈমান এনেছি, অতএব তোমরা আমার কথা শ্রবণ কর।

قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ۗ قَالَ يٰلَيْتَ قَوْمِيْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾

২৬. বলা হলোঃ জান্নাতে প্রবেশ কর। সে বললোঃ হায়! আমার সম্প্রদায় যদি জানতো।[১]

بِمَا غَفَرَ لِيْ رَبِّيْ وَجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ ﴿٢٧﴾

২৭. (একথা) যে, আমার প্রতিপালক আমাকে ক্ষমা করেছেন এবং আমাকে তিনি সম্মানিত করেছেন।

১। (ক) আবূ মূসা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আমি এবং আমাকে যা দিয়ে পাঠান হয়েছে, তার দৃষ্টান্ত হলো এমন এক ব্যক্তির ন্যায়, যে নিজ জাতির নিকট এসে বলল যে, আমি স্বচক্ষে (শত্রু) সেনাদল প্রত্যক্ষ করেছি এবং আমি (তোমাদের) সুস্পষ্ট ভীতিপ্রদর্শনকারী। সুতরাং তোমরা আত্মরক্ষা করো। একদল তার কথা মেনে রাতের আঁধারে নিরাপদ স্থানে আশ্রয় নিল এবং বিপদমুক্ত হলো। আর অপর দল তাকে মিথ্যাবাদী সাব্যস্ত করল, (যার ফলে) সকাল বেলা (শত্রু) সেনাদল তাদের ওপর এসে পড়ল এবং তাদেরকে ধ্বংস করে দিল। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৮২)

(খ) আনাস ইবনে মালেক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ বেহেশ্‌তে প্রবেশের পরে একমাত্র শহীদ ব্যতীত আর কেউ দুনিয়াতে ফিরে আসতে চাইবে না (অথচ তাঁর জন্য দুনিয়ার সবকিছুই নিয়ামত হিসেবে থাকবে।) সে দুনিয়ায় ফিরে এসে দশবার শহীদি মৃত্যুবরণের আকাঙ্খা পোষণ করবে। কেননা বাস্তবে সে শাহাদাতের মর্যাদা লাভ করেছে। (বুখারী, হাদীস নং ২৮১৭)

وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى قَوْمِهٖ مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِيْنَ ﴿٢٨﴾

২৮. আমি তার (মৃত্যুর) পর তার সম্প্রদায়ের বিরুদ্ধে আকাশ হতে কোন বাহিনী প্রেরণ করিনি এবং আমি প্রেরণকারীও ছিলাম না।

اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ خٰمِدُوْنَ ﴿٢٩﴾

২৯. ওটা ছিল শুধুমাত্র এক বিকট শব্দ। ফলে তারা নিস্তব্ধ হয়ে গেল।

يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٠﴾

৩০. পরিতাপ (এরূপ) বান্দাদের জন্যে! তাদের নিকট যখনই কোন রাসূল এসেছে তখনই তারা তাকে ঠাট্টা-বিদ্রূপ করেছে।

اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ اَنَّهُمْ اِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٣١﴾

৩১. তারা কি লক্ষ্য করে না যে, তাদের পূর্বে কত সম্প্রদায় আমি ধ্বংস করেছি, যারা তাদের দিকে ফিরে আসবে না?

وَاِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿٣٢﴾

৩২. এবং অবশ্যই তাদের সকলকে আমার নিকট উপস্থিত করা হবে।

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ ۚ اَحْيَيْنٰهَا وَاَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَاْكُلُوْنَ ﴿٣٣﴾

৩৩. মৃত যমীন, তাদের জন্যে একটি নিদর্শন যাকে আমি জীবিত করি এবং যা হতে উৎপন্ন করি (শস্য) দানা, যা হতে তারা ভক্ষণ করে।

وَجَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ وَّفَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ ﴿٣٤﴾

৩৪. তাতে আমি তৈরি করি খেজুর ও আঙ্গুরের বাগান এবং প্রবাহিত করি ঝর্ণাধারা।

لِيَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ وَمَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٥﴾

৩৫. যাতে তারা ভক্ষণ করতে পারে এর ফলমূল হতে, অথচ তাদের হাত ওটা তৈরি করে নি। তবুও কি তারা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করবে না?

سُبْحٰنَ الَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾

৩৬. পবিত্র ও মহান তিনি, যিনি যমীন যা উৎপন্ন করে, তাদের নিজেদের মধ্য হতে মানুষ (নারী-পুরুষ) এবং তারা যাদেরকে জানে না তাদের প্রত্যেককে সৃষ্টি করেছেন জোড়া-জোড়া করে।

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيۡلُ ۚۖ نَسۡلَخُ مِنۡهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمۡ مُّظۡلِمُوۡنَ ۙ﴿۳۷﴾

৩৭. তাদের এক নিদর্শন রাত্রি, ওটা হতে আমি দিবালোক অপসারিত করি, তখন সকলেই অন্ধকারাচ্ছন্ন হয়ে পড়ে।

وَالشَّمۡسُ تَجۡرِىۡ لِمُسۡتَقَرٍّ لَّهَا ؕ ذٰلِكَ تَقۡدِيۡرُ الۡعَزِيۡزِ الۡعَلِيۡمِ ؕ﴿۳۸﴾

৩৮. এবং সূর্য ভ্রমণ করে ওর নির্দিষ্ট গন্তব্যের দিকে, এটা পরাক্রমশালী, সর্বাজ্ঞের নিয়ন্ত্রণ।

وَالۡقَمَرَ قَدَّرۡنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالۡعُرۡجُوۡنِ الۡقَدِيۡمِ ﴿۳۹﴾

৩৯. এবং চন্দ্রের জন্যে আমি নির্দিষ্ট করেছি বিভিন্ন মনযিল; অবশেষে ওটা শুষ্কবক্র, পুরাতন খেজুর শাখার আকার ধারণ করে।

لَا الشَّمۡسُ يَنۡۢبَغِىۡ لَهَاۤ اَنۡ تُدۡرِكَ الۡقَمَرَ وَلَا الَّيۡلُ سَابِقُ النَّهَارِ ؕ وَكُلٌّ فِىۡ فَلَكٍ يَّسۡبَحُوۡنَ ﴿۴۰﴾

৪০. সূর্যের পক্ষে সম্ভব নয় চন্দ্রের নাগাল পাওয়া এবং রজনীর পক্ষে সম্ভব নয় দিবসকে অতিক্রম করা; এবং প্রত্যেকে নিজ নিজ কক্ষপথে চলছে।

وَاٰيَةٌ لَّهُمۡ اَنَّا حَمَلۡنَا ذُرِّيَّتَهُمۡ فِى الۡفُلۡكِ الۡمَشۡحُوۡنِ ۙ﴿۴۱﴾

৪১. তাদের (জন্য) এক নিদর্শন এই যে, আমি তাদের বংশধরদেরকে বোঝাই নৌযানে আরোহণ করিয়েছিলাম।

وَخَلَقۡنَا لَهُمۡ مِّنۡ مِّثۡلِهٖ مَا يَرۡكَبُوۡنَ ﴿۴۲﴾

৪২. এবং তাদের জন্যে অনুরূপ যানবাহন সৃষ্টি করেছি যাতে তারা আরোহণ করে।

وَاِنۡ نَّشَاۡ نُغۡرِقۡهُمۡ فَلَا صَرِيۡخَ لَهُمۡ وَلَا هُمۡ يُنۡقَذُوۡنَ ۙ﴿۴۳﴾

৪৩. আমি ইচ্ছা করলে তাদেরকে নিমজ্জিত করতে পারি; সে অবস্থায় তারা কোন আর্তনাদ শ্রবণকারী পাবে না এবং তারা পরিত্রাণও পাবে না।

اِلَّا رَحۡمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيۡنٍ ﴿۴۴﴾

৪৪. কিন্তু আমার করুণা না হলে এবং কিছু কালের জন্যে জীবনোপভোগ করতে না দিলে।

وَاِذَا قِيۡلَ لَهُمُ اتَّقُوۡا مَا بَيۡنَ اَيۡدِيۡكُمۡ وَمَا خَلۡفَكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تُرۡحَمُوۡنَ ﴿۴۵﴾

৪৫. যখন তাদেরকে বলা হয়ঃ যা তোমাদের সম্মুখে ও তোমাদের পশ্চাতে আছে সে (পাপ কাজ)

সম্বন্ধে সাবধান হও যাতে তোমরা অনুগ্রহ ভাজন হতে পার।

৪৬. আর যখনই তাদের প্রতিপালকের নিদর্শনাবলীর কোন নিদর্শন তাদের নিকট আসে তখন তারা তা হতে মুখ ফিরিয়ে নেয়।

وَمَا تَأْتِيهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٦﴾

৪৭. এবং যখন তাদেরকে বলা হয়ঃ আল্লাহ তোমাদেরকে যে রুযী দিয়েছেন তা হতে ব্যয় কর, তখন কাফিররা মু'মিনদেরকে বলেঃ আল্লাহ ইচ্ছা করলে যাকে খাওয়াতে পারতেন আমরা কেন তাকে খাওয়াবো? তোমরা তো স্পষ্ট বিভ্রান্তিতে রয়েছো।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗٓ ۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٧﴾

৪৮. তারা বলেঃ তোমরা যদি সত্যবাদী হও তবে বলঃ এই প্রতিশ্রুতি কখন পূর্ণ হবে?

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٨﴾

৪৯. তারা তো অপেক্ষায় আছে এক বিকট শব্দের যা তাদেরকে আঘাত করবে তাদের বাক-বিতন্ডা কালে।

مَا يَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ ﴿٤٩﴾

৫০. তখন তারা অসিয়ত করতে সমর্থ হবে না এবং নিজেদের পরিবার-পরিজনের নিকট ফিরে আসতেও পারবে না।

فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً وَّلَآ اِلٰٓى اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٠﴾

৫১. যখন শিঙ্গায় ফুৎকার দেয়া হবে তখনই তারা কবর হতে ছুটে আসবে তাদের প্রতিপালকের দিকে।

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ﴿٥١﴾

৫২. তারা বলবেঃ হায়! দুর্ভোগ আমাদের! কে আমাদেরকে আমাদের নিদ্রাস্থল হতে উঠালো? দয়াময় আল্লাহ তো এরই প্রতিশ্রুতি দিয়েছিলেন এবং রাসূলগণ সত্যই বলেছিলেন।

قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ۜ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٢﴾

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٥٣﴾

৫৩. এটা হবে শুধুমাত্র এক বিকট আওয়াজ; তখনই তাদের সকলকে উপস্থিত করা হবে আমার সামনে।

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَّلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٤﴾

৫৪. আজ কারো প্রতি কোন যুলুম করা হবে না এবং তোমরা যা করতে শুধু তারই প্রতিফল দেয়া হবে।

إِنَّ أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغُلٍ فٰكِهُونَ ﴿٥٥﴾

৫৫. এই দিন জান্নাতবাসীরা আনন্দে মগ্ন থাকবে।

هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلٰلٍ عَلَى الْأَرَآئِكِ مُتَّكِئُونَ ﴿٥٦﴾

৫৬. তারা এবং তাদের স্ত্রীগণ (সুশীতল) ছায়ায় সুসজ্জিত আসনে হেলান দিয়ে বসবে।

لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُونَ ﴿٥٧﴾

৫৭. সেথায় থাকবে তাদের জন্যে ফলমূল এবং তাদের জন্যে থাকবে যা তারা চাইবে।

سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيمٍ ﴿٥٨﴾

৫৮. পরম দয়ালু প্রতিপালকের পক্ষ হতে তাদেরকে বলা হবে 'সালাম'।

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٩﴾

৫৯. আর হে অপরাধীগণ! তোমরা আজ পৃথক হয়ে যাও।

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يٰبَنِيٓ ءَادَمَ أَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٦٠﴾

৬০. হে বানী আদম! আমি কি তোমাদেরকে নির্দেশ দিইনি যে, তোমরা শয়তানের ইবাদত করো না, কারণ সে তোমাদের প্রকাশ্য শত্রু।

وَّأَنِ اعْبُدُونِي هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾

৬১. আর আমারই ইবাদত কর, এটাই সরল পথ।

وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ﴿٦٢﴾

৬২. শয়তান তো তোমাদের বহু দলকে বিভ্রান্ত করেছিল, তবুও কি তোমরা বুঝনি?

هٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٦٣﴾

৬৩. এটা সেই জাহান্নাম যার প্রতিশ্রুতি তোমাদেরকে দেয়া হয়েছিল।

اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٦٤﴾

৬৪. আজ তোমরা এতে প্রবেশ কর; কারণ তোমরা একে অবিশ্বাস করেছিলে।

اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٦٥﴾

৬৫. আমি আজ এদের মুখে মোহর লাগিয়ে দিবো, এদের হাত কথা বলবে আমার সাথে এবং এদের পা সাক্ষ্য দিবে এদের কৃতকর্মের।

وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى يُبْصِرُوْنَ ﴿٦٦﴾

৬৬. আমি ইচ্ছা করলে এদের চক্ষুগুলোকে বিলীন করে দিতে পারতাম, তখন এরা পথ চলতে চাইলে কি করে দেখতে পেতো?

وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٧﴾

৬৭. এবং আমি ইচ্ছা করলে এদেরকে স্ব-স্ব স্থানে (আকৃতি) বিকৃত করে দিতে পারতাম, ফলে এরা চলতে পারতো না এবং ফিরেও আসতে পারতো না।

وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِى الْخَلْقِ ؕ اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٨﴾

৬৮. আমি যাকে দীর্ঘ জীবন দান করি তার স্বাভাবিক সৃষ্টি হতে আমি তাকে উল্টিয়ে দেই। তবুও কি তারা বুঝে না?

وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِىْ لَهٗ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿٦٩﴾

৬৯. আমি তাকে (রাসূলকে ﷺ) কবিতা রচনা করতে শিখাইনি এবং এটা তার পক্ষে উচিতও নয়। এটাতো শুধু উপদেশ এবং সুস্পষ্ট কুরআন।

لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٠﴾

৭০. যাতে সে সতর্ক করতে পারে যারা জীবিত তাদেরকে এবং যাতে কাফিরদের বিরুদ্ধে শাস্তির কথা সত্য হতে পারে।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَآ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ﴿٧١﴾

৭১. তারা কি লক্ষ্য করে না যে, নিজ হাতে সৃষ্ট বস্তুদের মধ্যে তাদের জন্যে আমি সৃষ্টি করেছি গৃহপালিত জন্তু এবং তারাই এগুলোর অধিকারী।

وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَمِنْهَا يَاْكُلُوْنَ ﴿٧٢﴾

৭২. এবং আমি এগুলোকে তাদের বশীভূত করে দিয়েছি। এগুলোর কতক তাদের বাহন এবং এগুলোর কতক তারা আহার করে।

وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾

৭৩. তাদের জন্য এগুলোতে আছে বহু উপকারিতা আর আছে পানীয় বস্তু। তবুও কি তারা কৃতজ্ঞ হবে না?

وَاتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنصَرُونَ ﴿٧٤﴾

৭৪. তারা তো আল্লাহর পরিবর্তে অন্য মা'বূদ গ্রহণ করেছে এই আশায় যে, তারা সাহায্যপ্রাপ্ত হবে।

لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُندٌ مُّحْضَرُونَ ﴿٧٥﴾

৭৫. (অথচ) এসব মা'বূদ তাদের সাহায্য করতে সক্ষম নয়; বরং তাদেরকে তাদের বাহিনীরূপে (সাহায্যকারী রূপে) উপস্থিত করা হবে।

فَلَا يَحْزُنكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٦﴾

৭৬. অতএব তাদের কথা তোমাকে যেন দুঃখ না দেয়। আমি তো জানি যা তারা গোপন করে এবং যা তারা ব্যক্ত করে।

أَوَلَمْ يَرَ الْإِنسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِن نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ﴿٧٧﴾

৭৭. মানুষ কি দেখে না যে, আমি তাকে সৃষ্টি করেছি শুক্রবিন্দু হতে? অথচ হঠাৎ করেই সে হয়ে পড়ে প্রকাশ্য বিতন্ডাকারী।

وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ ۖ قَالَ مَن يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ﴿٧٨﴾

৭৮. আর সে আমার সম্বন্ধে উপমা রচনা করে অথচ সে নিজের সৃষ্টির কথা ভুলে যায়; বলেঃ হাড্ডিতে প্রাণ সঞ্চার করবে কে, যখন ওটা পচে গলে যাবে?

قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ﴿٧٩﴾

৭৯. বলঃ ওর মধ্যে প্রাণ সঞ্চার করবেন তিনিই যিনি এটা প্রথমবার সৃষ্টি করেছেন এবং তিনি প্রত্যেকটি সৃষ্টি সম্বন্ধে সম্যক পরিজ্ঞাত।

الَّذِي جَعَلَ لَكُم مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنتُم مِّنْهُ تُوقِدُونَ ﴿٨٠﴾

৮০. তিনি তোমাদের জন্যে সবুজ বৃক্ষ হতে অগ্নি উৎপাদন করেন এবং তোমরা ওটা দ্বারা প্রজ্বলিত কর।

أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى أَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۚ بَلٰى ۚ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨١﴾

৮১. যিনি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন তিনি কি তাদের অনুরূপ সৃষ্টি করতে সমর্থ নন? হ্যাঁ, নিশ্চয়ই তিনি মহাস্রষ্টা, সর্বজ্ঞ।

إِنَّمَآ أَمْرُهٗٓ إِذَآ أَرَادَ شَيْـًٔا أَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٨٢﴾

৮২. তাঁর ব্যাপার শুধু এই যে, যখন তিনি কোন কিছুর ইচ্ছা করেন তখন ওকে বলেনঃ হও, ফলে তা হয়ে যায়।

فَسُبْحٰنَ الَّذِي بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّإِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾

৮৩. অতএব, পবিত্র ও মহান তিনি যাঁর হাতে প্রত্যেক বিষয়ের সার্বভৌম ক্ষমতা এবং তাঁরই নিকট তোমাদেরকে প্রত্যাবর্তিত করা হবে।

سُوْرَةُ الصّٰفّٰتِ مَكِّيَّةٌ

সূরাঃ সা-ফ্ফা-ত, মাক্কী

اٰيَاتُهَا ١٨٢ رُكُوْعَاتُهَا ٥

(আয়াতঃ ১৮২, রুকূ'ঃ ৫)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

وَالصّٰفّٰتِ صَفًّا ﴿١﴾

১. শপথ তাদের যারা (ফেরেশ্‌তা-গণ) সারিবদ্ধভাবে দন্ডায়মান।

فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ﴿٢﴾

২. ও যারা কঠোর পরিচালক (মেঘমালার)।

فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ﴿٣﴾

৩. এবং যারা কুরআন আবৃত্তিতে রত।

إِنَّ إِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ﴿٤﴾

৪. নিশ্চয়ই তোমাদের মা'বূদ এক।

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ﴿٥﴾

৫. যিনি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী এবং এতোদুভয়ের অন্তর্বর্তী সব কিছুর প্রতিপালক এবং প্রতিপালক সকল উদয় স্থলের।

إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِينَةٍ الْكَوَاكِبِ ۝٦

৬. আমি পৃথিবীর আকাশকে নক্ষত্ররাজির শোভা দ্বারা সুশোভিত করেছি।

وَحِفْظًا مِّن كُلِّ شَيْطَٰنٍ مَّارِدٍ ۝٧

৭. এবং রক্ষা করেছি প্রত্যেক বিদ্রোহী শয়তান হতে।

لَا يَسَّمَّعُونَ إِلَى الْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ وَيُقْذَفُونَ مِن كُلِّ جَانِبٍ ۝٨

৮. ফলে, তারা উর্ধ্ব জগতের কিছু শ্রবণ করতে পারে না এবং তাদের প্রতি (জলন্ত তারকা) নিক্ষিপ্ত হয় সকল দিক হতে-

دُحُورًا وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ۝٩

৯. বিতাড়নের জন্যে এবং তাদের জন্যে আছে অবিরাম শাস্তি।

إِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝١٠

১০. তবে কেউ হঠাৎ ছোঁ মেরে কিছু শুনে ফেললে জ্বলন্ত উল্কাপিন্ড তাদের পশ্চাদ্ধাবন করে।

فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَم مَّنْ خَلَقْنَا ۚ إِنَّا خَلَقْنَٰهُم مِّن طِينٍ لَّازِبٍ ۝١١

১১. তাদেরকে (কাফেরদেরকে) জিজ্ঞেস করঃ তাদেরকে সৃষ্টি করা কঠিনতর, না আমি অন্য যা কিছু সৃষ্টি করেছি তার সৃষ্টি কঠিনতর? তাদেরকে আমি সৃষ্টি করেছি আঠাল মাটি হতে।

بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ ۝١٢

১২. তুমি তো বিস্ময়বোধ করছো আর তারা করছে বিদ্রূপ।

وَإِذَا ذُكِّرُوا لَا يَذْكُرُونَ ۝١٣

১৩. এবং যখন তাদেরকে উপদেশ দেয়া হয় তখন তারা তা গ্রহণ করে না।

وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخِرُونَ ۝١٤

১৪. তারা কোন নিদর্শন (মু'জিযা) দেখলে উপহাস করে।

وَقَالُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝١٥

১৫. এবং বলেঃ এটা তো এক সুস্পষ্ট যাদু ব্যতীত আর কিছুই নয়।

أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ۝١٦

১৬. আমরা যখন মরে যাবো এবং মাটি ও হাড্ডিতে পরিণত হবো,

তখনো কি আমাদেরকে পুনরুত্থিত করা হবে?

১৭. এবং আমাদের পূর্বপুরুষদেরও?

اَوَاٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ﴿١٧﴾

১৮. বলঃ হ্যাঁ এবং তোমরা হবে লাঞ্ছিত।

قُلْ نَعَمْ وَاَنْتُمْ دَاخِرُوْنَ ﴿١٨﴾

১৯. ওটা একটি মাত্র প্রচন্ড শব্দ, আর তখনই তারা প্রত্যক্ষ করবে।

فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ فَاِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿١٩﴾

২০. এবং তারা বলবেঃ হায়! দুর্ভোগ আমাদের! এটাই তো কর্মফল দিবস!

وَقَالُوْا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿٢٠﴾

২১. এটাই ফায়সালার দিন যা তোমরা অস্বীকার করতে।

هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢١﴾

২২. (ফেরেশতাদেরকে বলা হবেঃ) একত্রিত কর যালিম ও তাদের সহচরদেরকে এবং তাদেরকে, যাদের তারা ইবাদত করতো—

اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَاَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٢٢﴾

২৩. আল্লাহর পরিবর্তে এবং তাদেরকে হাঁকিয়ে নিয়ে যাও জাহান্নামের পথে।

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ ﴿٢٣﴾

২৪. অতঃপর তাদেরকে থামাও, কারণ তাদেরকে প্রশ্ন করা হবেঃ

وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْئُوْلُوْنَ ﴿٢٤﴾

২৫. তোমাদের কি হলো যে, তোমরা একে অপরের সাহায্য করছো না?

مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ﴿٢٥﴾

২৬. বস্তুতঃ সেদিন তারা আত্মসমর্পণ করবে।

بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُوْنَ ﴿٢٦﴾

২৭. এবং তারা একে অপরের সামনা সামনি হয়ে জিজ্ঞাসাবাদ করবে—

وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٢٧﴾

২৮. তারা বলবেঃ তোমরা তো (শক্তি প্রয়োগ করে পথভ্রষ্ট করতে) ডান দিক থেকে আমাদের নিকট আসতে।

قَالُوْٓا اِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَاْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ ﴿٢٨﴾

قَالُوْا بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۚ ﴿٢٩﴾

২৯. তারা বলবেঃ তোমরা তো বিশ্বাসীই ছিলে না।

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ﴿٣٠﴾

৩০. এবং তোমাদের উপর আমাদের কোন কর্তৃত্ব ছিল না; বস্তুতঃ তোমরাই ছিলে সীমালঙ্ঘনকারী সম্প্রদায়।

فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَآ ۖ اِنَّا لَذَآئِقُوْنَ ﴿٣١﴾

৩১. আমাদের বিরুদ্ধে আমাদের প্রতিপালকের কথা সত্য হয়েছে; আমাদেরকে অবশ্যই শাস্তি আস্বাদন করতে হবে।

فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ﴿٣٢﴾

৩২. আমরা তোমাদেরকে বিভ্রান্ত করেছিলাম, কারণ আমরা নিজেরাও ছিলাম বিভ্রান্ত।

فَاِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِى الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾

৩৩. তারা সবাই সেই দিন আযাবে শরীক হবে।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٤﴾

৩৪. অপরাধীদের প্রতি আমি এরূপই করে থাকি।

اِنَّهُمْ كَانُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٣٥﴾

৩৫. যখন তাদেরকে বলা হতো যে, আল্লাহ ছাড়া কোন (সত্য) মা'বূদ নেই তখন তারা অহংকার করতো।

وَيَقُوْلُوْنَ اَئِنَّا لَتَارِكُوْٓا اٰلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ۭ ﴿٣٦﴾

৩৬. এবং বলতোঃ আমরা কি এক পাগল কবির কথায় আমাদের মা'বূদদেরকে বর্জন করবো?

بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٧﴾

৩৭. বরং সে তো সত্য নিয়ে এসেছে এবং সে সমস্ত রাসূলকে সত্য বলে স্বীকার করেছে।

اِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا الْعَذَابِ الْاَلِيْمِ ۚ ﴿٣٨﴾

৩৮. তোমরা অবশ্যই যন্ত্রণাদায়ক শাস্তির স্বাদ গ্রহণ করবে।

وَمَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٣٩﴾

৩৯. এবং তোমরা যা করতে তারই প্রতিফল পাবে।

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٤٠﴾

৪০. তবে তারা নয় যারা আল্লাহর একনিষ্ঠ বান্দা।

أُولَٰٓئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ﴿٤١﴾

৪১. তাদের জন্যে আছে নির্ধারিত রিযিক—

فَوَٰكِهُ ۖ وَهُم مُّكْرَمُونَ ﴿٤٢﴾

৪২. ফলমূল এবং তারা হবে সম্মানিত;

فِى جَنَّٰتِ ٱلنَّعِيمِ ﴿٤٣﴾

৪৩. থাকবে নেয়ামতপূর্ণ জান্নাতে।

عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَٰبِلِينَ ﴿٤٤﴾

৪৪. তারা মুখোমুখি হয়ে আসনে বসবে।

يُطَافُ عَلَيْهِم بِكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍۭ ﴿٤٥﴾

৪৫. তাদেরকে ঘুরে ঘুরে পরিবেশন করা হবে বিশুদ্ধ জাম পানিও পাত্র ঝর্ণাধারা হতে।

بَيْضَآءَ لَذَّةٍ لِّلشَّٰرِبِينَ ﴿٤٦﴾

৪৬. সাদা উজ্জ্বল যা হবে পানকারীদের জন্যে সুস্বাদু।

لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنزَفُونَ ﴿٤٧﴾

৪৭. তাতে (তাদের) মাথা ঘুরাবে না এবং তারা তাতে মাতালও হবে না।

وَعِندَهُمْ قَٰصِرَٰتُ ٱلطَّرْفِ عِينٌ ﴿٤٨﴾

৪৮. আর তাদের সঙ্গে থাকবে আনত নয়না (অবনত ও বিনিত), টানাটানা চক্ষু বিশিষ্ট হূরগণ।

كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُونٌ ﴿٤٩﴾

৪৯. তারা যেন সুরক্ষিত ডিম্ব।

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَآءَلُونَ ﴿٥٠﴾

৫০. তারা একে অপরের সামনা সামনি হয়ে জিজ্ঞাসাবাদ করবে।

قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّى كَانَ لِى قَرِينٌ ﴿٥١﴾

৫১. তাদের মধ্যে কেউ বলবেঃ আমার ছিল এক সঙ্গী।

يَقُولُ أَءِنَّكَ لَمِنَ ٱلْمُصَدِّقِينَ ﴿٥٢﴾

৫২. সে বলতোঃ তুমি কি বিশ্বাসীদের অন্তর্ভুক্ত (যে,)?

أَءِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَٰمًا أَءِنَّا لَمَدِينُونَ ﴿٥٣﴾

৫৩. আমরা যখন মরে যাবো এবং আমরা মৃত্তিকা ও হাড্ডিতে পরিণত হবো তখনো কি আমাদেরকে প্রতিফল দেয়া হবে?

قَالَ هَلْ أَنتُم مُّطَّلِعُونَ ﴿٥٤﴾

৫৪. সে বলবেঃ তোমরা কি (তাকে উঁকি মেরে) দেখতে চাও?

فَٱطَّلَعَ فَرَءَاهُ فِى سَوَآءِ ٱلْجَحِيمِ ﴿٥٥﴾

৫৫. অতঃপর সে ঝুঁকে দেখবে এবং তাকে দেখতে পাবে জাহান্নামের মধ্যস্থলে;

قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ ﴿٥٦﴾

৫৬. সে বলবেঃ আল্লাহর শপথ! তুমি তো আমাকে প্রায় ধ্বংসই করেছিলে।

وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٥٧﴾

৫৭. আমার প্রতিপালকের অনুগ্রহ না থাকলে আমিও তো আটক ব্যক্তিদের মধ্যে শামিল হতাম।

اَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِيْنَ ﴿٥٨﴾

৫৮. আমাদের তো আর মৃত্যু হবে না?

اِلَّا مَوْتَتَنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٥٩﴾

৫৯. প্রথম মৃত্যুর পর এবং আমাদেরকে শাস্তিও দেয়া হবে না?

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٠﴾

৬০. এটা নিশ্চয়ই মহা সাফল্য।

لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ﴿٦١﴾

৬১. এরূপ সাফল্যের জন্যে আমলকারীদের উচিত আমল করা।

اَذٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا اَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ ﴿٦٢﴾

৬২. আপ্যায়নের জন্যে কি এটাই শ্রেষ্ঠ, না যাক্কূম বৃক্ষ?

اِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٣﴾

৬৩. অবশ্যই যালিমদের জন্যে আমি এটা তৈরি করেছি পরীক্ষা স্বরূপ।

اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْٓ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ﴿٦٤﴾

৬৪. এই বৃক্ষ বের হয় জাহান্নামের তলদেশ হতে।

طَلْعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٦٥﴾

৬৫. ওটার কলিগুলো যেন শয়তানের মাথা।

فَاِنَّهُمْ لَاٰكِلُوْنَ مِنْهَا فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٦٦﴾

৬৬. এটা হতে তারা নিশ্চয়ই আহার করবে এবং পেট পূর্ণ করবে তা' দ্বারা।

ثُمَّ اِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٦٧﴾

৬৭. তদুপরি তাদের জন্যে থাকবে ফুটন্ত পানির মিশ্রণ।

ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَاِلَى الْجَحِيْمِ ﴿٦٨﴾

৬৮. অতঃপর তাদের প্রত্যাবর্তনস্থল হবে অবশ্যই জাহান্নামের দিকে।

اِنَّهُمْ اَلْفَوْا اٰبَآءَهُمْ ضَآلِّيْنَ ﴿٦٩﴾

৬৯. তারা তাদের পিতৃপুরুষদেরকে পেয়েছিল পথভ্রষ্ট।

فَهُمْ عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ يُهْرَعُوْنَ ﴿٧٠﴾

৭০. আর তারা তাদের পদাঙ্ক অনুসরণে ধাবিত হয়েছিল।

وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ اَكْثَرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٧١﴾

৭১. তাদের পূর্বেও পূর্ববর্তীদের অধিকাংশ পথভ্রষ্ট হয়েছিল।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿٧٢﴾

৭২. এবং আমি তাদের মধ্যে সতর্ককারী প্রেরণ করেছিলাম।

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾

৭৩. সুতরাং লক্ষ্য কর, যাদেরকে সতর্ক করা হয়েছিল, তাদের পরিণাম কি হয়েছিল।

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٧٤﴾

৭৪. তবে আল্লাহর একনিষ্ঠ বান্দাদের কথা ভিন্ন।

وَلَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ﴿٧٥﴾

৭৫. নূহ (عليه السلام) আমাকে আহ্বান করেছিলেন, আর আমি কত উত্তম সাড়া দানকারী!

وَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾

৭৬. তাকে ও তার পরিবারবর্গকে আমি উদ্ধার করেছিলাম মহা বিপদ হতে।

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ﴿٧٧﴾

৭৭. তার বংশধরদেরকেই আমি বিদ্যমান রেখেছি বংশ পরম্পরায়।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿٧٨﴾

৭৮. আমি তার নাম পরবর্তীদের স্মরণে রেখেছি।

سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٩﴾

৭৯. সমগ্র জগতের মধ্যে নূহ (عليه السلام) -এর প্রতি শান্তি বর্ষিত হোক।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٠﴾

৮০. এভাবেই আমি সৎকর্মশীল-দেরকে প্রতিদান দিয়ে থাকি।

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨١﴾

৮১. সে ছিল আমার মু'মিন বান্দাদের অন্যতম।

ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿٨٢﴾

৮২. অবশিষ্ট সকলকে আমি নিমজ্জিত করেছিলাম।

وَاِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ﴿٨٣﴾

৮৩. নিশ্চয়ই ইবরাহীম (عليه السلام) তার (নূহ عليه السلام এর) অনুসারীভুক্ত ছিলেন।

اِذْ جَآءَ رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٤﴾

৮৪. স্মরণ কর, যখন সে তার প্রতিপালকের নিকট উপস্থিত হয়েছিল বিশুদ্ধ চিত্তে।

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا ذَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٨٥﴾

৮৫. যখন সে তার পিতা ও তার সম্প্রদায়কে জিজ্ঞেস করেছিলঃ তোমরা কিসের পূজা করছো?

اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ اللّٰهِ تُرِيْدُوْنَ ﴿٨٦﴾

৮৬. তোমরা কি আল্লাহর পরিবর্তে অলীক (বানিয়ে নেয়া) মা'বূদ-গুলোকে চাও?

فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾

৮৭. বিশ্বজগতের প্রতিপালক সম্বন্ধে তোমাদের ধারণা কী?

فَنَظَرَ نَظْرَةً فِى النُّجُوْمِ ﴿٨٨﴾

৮৮. অতঃপর সে (ইব্রাহীম عليه السلام) তারকারাজির দিকে একবার তাকালো।

فَقَالَ اِنِّىْ سَقِيْمٌ ﴿٨٩﴾

৮৯. অতঃপর বললোঃ আমি অসুস্থ।

فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ ﴿٩٠﴾

৯০. সুতরাং তারা তাকে পশ্চাতে রেখে চলে গেল।

فَرَاغَ اِلٰٓى اٰلِهَتِهِمْ فَقَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٩١﴾

৯১. পরে সে (অতি সাবধানে) তাদের দেবতাগুলোর নিকট গেল এবং বললোঃ তোমরা কেন আহার করছো না?

مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ ﴿٩٢﴾

৯২. তোমাদের কি হয়েছে যে, তোমরা কথা বল না?

فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِيْنِ ﴿٩٣﴾

৯৩. অতঃপর সে তাদের উপর ডান হাত দ্বারা সবলে আঘাত করতঃ ঝাপিয়ে পড়ল।

فَاَقْبَلُوْٓا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ ﴿٩٤﴾

৯৪. তখন ঐ লোকগুলো তার দিকে ছুটে আসলো।

قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ مَا تَنْحِتُوْنَ ﴿٩٥﴾

৯৫. সে বললোঃ তোমরা নিজেরা যাদেরকে খোদাই করে বানিয়েছ তোমরা কি তাদেরই পূজা কর?

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾

৯৬. প্রকৃতপক্ষে আল্লাহই সৃষ্টি করেছেন তোমাদেরকে এবং তোমরা যা কর (তাও)।

قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا فَاَلْقُوْهُ فِى الْجَحِيْمِ ﴿٩٧﴾

৯৭. তারা বললোঃ এর জন্যে এক ইমারত তৈরি কর, অতঃপর একে জ্বলন্ত অগ্নিতে নিক্ষেপ কর।

فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٩٨﴾

৯৮. তারা তার (ইব্রাহীম عليه السلام-এর) বিরুদ্ধে চক্রান্তের সংকল্প করেছিল; কিন্তু আমি তাদেরকে পরাজিত করেছিলাম।

وَقَالَ اِنِّىْ ذَاهِبٌ اِلٰى رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٩٩﴾

৯৯. এবং সে (ইব্রাহীম عليه السلام) বললোঃ আমি আমার প্রতিপালকের দিকে চললাম, তিনি অবশ্যই আমাকে সৎপথে পরিচালিত করবেন।

رَبِّ هَبْ لِىْ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠٠﴾

১০০. হে আমার প্রতিপালক! আমাকে সৎ সন্তান দান করুন।

فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ ﴿١٠١﴾

১০১. অতঃপর আমি তাকে এক সহনশীল পুত্রের সুসংবাদ দিলাম।

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْىَ قَالَ يٰبُنَىَّ اِنِّىْٓ اَرٰى فِى الْمَنَامِ اَنِّىْٓ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ؕ قَالَ يٰٓاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۫ سَتَجِدُنِىْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾

১০২. অতঃপর সে (সন্তান) যখন তার পিতার সাথে কাজ করার মত বয়সে উপনীত হলো তখন ইবরাহীম (عليه السلام) বললোঃ হে আমার বৎস! আমি স্বপ্নে দেখি যে, তোমাকে আমি যবেহ করছি, এখন তোমার অভিমত কী? সে বললোঃ হে আমার পিতা! আপনি যা আদিষ্ট হয়েছেন তাই করুন। আল্লাহ ইচ্ছা করলে আপনি আমাকে ধৈর্যশীলদের অন্তর্ভুক্ত পাবেন।

فَلَمَّآ اَسۡلَمَا وَتَلَّهٗ لِلۡجَبِيۡنِ ﴿۱۰۳﴾

১০৩. যখন তারা উভয়ে আনুগত্য প্রকাশ করলো এবং তিনি (ইবরাহীম (عليه السلام)) তাকে (পুত্রকে) কাত করে শোয়ালেন,

وَنَادَيۡنٰهُ اَنۡ يّٰۤاِبۡرٰهِيۡمُ ﴿۱۰۴﴾

১০৪. তখন আমি তাকে আহ্বান করে বললামঃ হে ইব্রাহীম (عليه السلام)!

قَدۡ صَدَّقۡتَ الرُّءۡيَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجۡزِى الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿۱۰۵﴾

১০৫. তুমি তো স্বপ্ন বাস্তবেই পালন করলে! এভাবেই আমি সৎকর্ম-শীলদেরকে প্রতিদান দিয়ে থাকি।

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الۡبَلٰٓؤُا الۡمُبِيۡنُ ﴿۱۰۶﴾

১০৬. নিশ্চয়ই এটা ছিল এক স্পষ্ট পরীক্ষা।

وَفَدَيۡنٰهُ بِذِبۡحٍ عَظِيۡمٍ ﴿۱۰۷﴾

১০৭. আমি তার (ইসমাঈলের) ফিদইয়া (পরিবর্তে) এক মহান কুরবানী (দুম্বা) প্রদান করলাম।

وَتَرَكۡنَا عَلَيۡهِ فِى الۡاٰخِرِيۡنَ ﴿۱۰۸﴾

১০৮. আমি এটা (তার আদর্শ) পরবর্তীদের মধ্যে রেখেছি।

سَلٰمٌ عَلٰٓى اِبۡرٰهِيۡمَ ﴿۱۰۹﴾

১০৯. ইবরাহীম (عليه السلام)-এর উপর শান্তি বর্ষিত হোক।

كَذٰلِكَ نَجۡزِى الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿۱۱۰﴾

১১০. এভাবে আমি সৎকর্মশীল-দেরকে প্রতিদান দিয়ে থাকি।

اِنَّهٗ مِنۡ عِبَادِنَا الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۱۱﴾

১১১. সে ছিল আমার মু'মিন বান্দাদের অন্যতম।

وَبَشَّرۡنٰهُ بِاِسۡحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيۡنَ ﴿۱۱۲﴾

১১২. আমি তাকে সুসংবাদ দিয়েছিলাম ইসহাক (عليه السلام)-এর সে ছিল এক নবী, সৎকর্মশীলদের অন্যতম।

وَبٰرَكۡنَا عَلَيۡهِ وَعَلٰٓى اِسۡحٰقَ ؕ وَمِنۡ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحۡسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفۡسِهٖ مُبِيۡنٌ ﴿۱۱۳﴾

১১৩. আমি তাকে রবকত দান করেছিলাম এবং ইসহাককেও (عليه السلام) এবং উভয়ের বংশধরদের মধ্যে কতক সৎকর্মপরায়ণ এবং কতক নিজেদের প্রতি স্পষ্ট অত্যাচারী।

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١١٤﴾

১১৪. আমি অনুগ্রহ করেছিলাম মূসা (عليه السلام) ও হারূন (عليه السلام)-এর উপর।

وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿١١٥﴾

১১৫. এবং তাদেরকে ও তাদের সম্প্রদায়কে আমি উদ্ধার করেছিলাম মহা বিপদ হতে।

وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٦﴾

১১৬. আমি সাহায্য করেছিলাম তাদেরকে, ফলে তারা হয়েছিল বিজয়ী।

وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ﴿١١٧﴾

১১৭. আমি উভয়কে দিয়েছিলাম স্পষ্ট কিতাব।

وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١١٨﴾

১১৮. এবং উভয়কে আমি পরিচালিত করেছিলাম সরল পথে।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿١١٩﴾

১১৯. আমি তাদের উভয়ের সুখ্যাতি পরবর্তীদের স্মরণে রেখেছি।

سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٠﴾

১২০. মূসা (عليه السلام) ও হারূন (عليه السلام) -এর উপর শান্তি বর্ষিত হোক।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢١﴾

১২১. এভাবে আমি সৎকর্মশীল-দেরকে প্রতিদান দিয়ে থাকি।

اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٢﴾

১২২. তারা দু'জনে ছিল আমার মু'মিন বান্দাদের অন্তর্ভুক্ত।

وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٣﴾

১২৩. ইলিয়াসও (عليه السلام) ছিল রাসূলদের একজন।

اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٤﴾

১২৪. স্মরণ কর, যখন সে তার সম্প্রদায়কে বলেছিলঃ তোমরা কী আল্লাহকে ভয় করবে না?

اَتَدْعُوْنَ بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخٰلِقِيْنَ ﴿١٢٥﴾

১২৫. তোমরা কি বা'আল দেবমূর্তিকে ডাকবে এবং পরিত্যাগ করবে সর্বোত্তম স্রষ্টাকে?

اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٢٦﴾

১২৬. আল্লাহ, যিনি প্রতিপালক তোমাদের এবং প্রতিপালক তোমাদের পূর্বপুরুষদের।

فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٢٧﴾

১২৭. তখন তারা তাকে (ইলিয়াসকে) মিথ্যাবাদী বলেছিল, কাজেই তাদেরকে অবশ্যই শাস্তির জন্যে উপস্থিত করা হবে।

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٢٨﴾

১২৮. তবে আল্লাহর একনিষ্ঠ বান্দাদের কথা ভিন্ন।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٢٩﴾

১২৯. আমি তাকে পরবর্তীদের স্মরণে রেখেছি।

سَلٰمٌ عَلٰٓى اِلْ يَاسِيْنَ ﴿١٣٠﴾

১৩০. ইলিয়াস (عليه السلام)-এর উপর শান্তি বর্ষিত হোক।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣١﴾

১৩১. এভাবে আমি সৎকর্মশীল-দেরকে প্রতিদান দিয়ে থাকি।

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾

১৩২. সে ছিল আমার মু'মিন বান্দাদের অন্যতম।

وَاِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٣﴾

১৩৩. লূতও (عليه السلام) ছিল রাসূলদের একজন।

اِذْ نَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٣٤﴾

১৩৪. আমি তাকে ও তার পরিবারের সবাইকে উদ্ধার করেছিলাম।

اِلَّا عَجُوْزًا فِى الْغٰبِرِيْنَ ﴿١٣٥﴾

১৩৫. এক বৃদ্ধা (লূত عليه السلام-এর স্ত্রী) ব্যতীত, যে ছিল পশ্চাতে অবস্থানকারীদের অন্তর্ভুক্ত।

ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿١٣٦﴾

১৩৬. অতঃপর অবশিষ্টদেরকে আমি সম্পূর্ণরূপে ধ্বংস করেছিলাম।

وَاِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِيْنَ ﴿١٣٧﴾

১৩৭. তোমরা তো তাদের ধ্বংসাবশেষগুলো অতিক্রম করে থাকো সকালে।

وَبِالَّيْلِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٣٨﴾

১৩৮. এবং রাতে, তবুও কি তোমরা অনুধাবন করবে না?

وَاِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٩﴾

১৩৯. আর ইউনুসও (عليه السلام) ছিলেন রাসূলদের একজন।

اِذْ اَبَقَ اِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿١٤٠﴾

১৪০. যখন তিনি পলায়ন করে বোঝাই নৌযানে পৌঁছিলেন।

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ﴿١٤١﴾

১৪১. অতঃপর সে লটারীতে যোগদান করলো এবং পরাভূত হলো।

فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿١٤٢﴾

১৪২. পরে এক বৃহদাকার মৎস্য তাকে গিলে ফেললো, তখন তিনি নিজেকে ধিক্কার দিতে লাগলেন।

فَلَوْلَآ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ﴿١٤٣﴾

১৪৩. তিনি যদি আল্লাহর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা না করতেন,

لَلَبِثَ فِيْ بَطْنِهٖٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤٤﴾

১৪৪. তাহলে তাকে পুনরুত্থান দিবস পর্যন্ত থাকতে হতো ওর উদরে।

فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ سَقِيْمٌ ﴿١٤٥﴾

১৪৫. অতঃপর ইউনুস (عليه السلام)-কে আমি নিক্ষেপ কারলাম এক তৃণহীন প্রান্তরে এবং তিনি ছিলেন রুগ্ন।

وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ﴿١٤٦﴾

১৪৬. পরে আমি তাঁর উপর একটি লতা বিশিষ্ট গাছ উৎপন্ন (লাউ গাছের মত) করলাম।

وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ يَزِيْدُوْنَ ﴿١٤٧﴾

১৪৭. তাঁকে আমি লক্ষ বা ততোধিক লোকের প্রতি প্রেরণ করেছিলাম।

فَاٰمَنُوْا فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿١٤٨﴾

১৪৮. এবং তারা ঈমান এনেছিল; ফলে আমি তাদেরকে কিছু কালের জন্যে জীবনোপভোগ করতে দিলাম।

فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ ﴿١٤٩﴾

১৪৯. এখন তাদেরকে জিজ্ঞেস করঃ তোমার প্রতিপালকের জন্যেই কি রয়েছে কন্যা সন্তান এবং তাদের জন্যে পুত্র সন্তান?

اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّهُمْ شٰهِدُوْنَ ﴿١٥٠﴾

১৫০. অথবা আমি কি ফেরেশতা-দেরকে নারীরূপে সৃষ্টি করেছি আর তারা প্রত্যক্ষ করছিল?

اَلَآ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٥١﴾

১৫১. সাবধান! তারা তো মনগড়া কথা বলে (যে,)

وَلَدَ اللّٰهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٥٢﴾

১৫২. আল্লাহ, সন্তান জন্ম দিয়েছেন। তারা নিশ্চয়ই মিথ্যাবাদী।

اَصۡطَفَى الۡبَنَاتِ عَلَى الۡبَنِيۡنَ ﴿۱۵۳﴾

১৫৩. তিনি কি পুত্র সন্তনের উপরে কন্য সন্তান পছন্দ করতেন?

مَا لَكُمۡ ۟ كَيۡفَ تَحۡكُمُوۡنَ ﴿۱۵۴﴾

১৫৪. তোমাদের কী হয়েছে, তোমরা কিরূপ বিচার কর?

اَفَلَا تَذَكَّرُوۡنَ ﴿۱۵۵﴾

১৫৫. তবে কি তোমরা উপদেশ গ্রহণ করবে না?

اَمۡ لَكُمۡ سُلۡطٰنٌ مُّبِيۡنٌ ﴿۱۵۶﴾

১৫৬. তোমাদের কি সুস্পষ্ট দলীল প্রমাণ আছে?

فَاۡتُوۡا بِكِتٰبِكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ﴿۱۵۷﴾

১৫৭. তোমরা সত্যবাদী হলে তোমাদের কিতাব উপস্থিত কর।

وَجَعَلُوۡا بَيۡنَهٗ وَبَيۡنَ الۡجِنَّةِ نَسَبًا ؕ وَلَقَدۡ عَلِمَتِ الۡجِنَّةُ اِنَّهُمۡ لَمُحۡضَرُوۡنَ ﴿۱۵۸﴾

১৫৮. তারা আল্লাহ ও জ্বিন জাতির মধ্যে আত্মীয়তার সম্পর্কে স্থির করেছে, অথচ জ্বিনেরা জানে যে, তাদেরকেও উপস্থিত করা হবে।

سُبۡحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوۡنَ ﴿۱۵۹﴾

১৫৯. তারা যা বলে তা হতে আল্লাহ পবিত্র, মহান।

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الۡمُخۡلَصِيۡنَ ﴿۱۶۰﴾

১৬০. আল্লাহর একনিষ্ঠ বান্দারা ব্যতীত।

فَاِنَّكُمۡ وَمَا تَعۡبُدُوۡنَ ﴿۱۶۱﴾

১৬১. তোমরা এবং তোমরা যাদের ইবাদত কর তারা–

مَاۤ اَنۡتُمۡ عَلَيۡهِ بِفٰتِنِيۡنَ ﴿۱۶۲﴾

১৬২. তোমরা কেউই আল্লাহ সম্বন্ধে বিভ্রান্ত করতে পারবে না।

اِلَّا مَنۡ هُوَ صَالِ الۡجَحِيۡمِ ﴿۱۶۳﴾

১৬৩. শুধু জাহান্নামে প্রবেশকারীকে ব্যতীত।

وَمَا مِنَّاۤ اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعۡلُوۡمٌ ﴿۱۶۴﴾

১৬৪. আমাদের (ফেরেশ্তাদের) প্রত্যেকের জন্যেই নির্ধারিত স্থান রয়েছে,

وَّاِنَّا لَنَحۡنُ الصَّآفُّوۡنَ ﴿۱۶۵﴾

১৬৫. আমরা তো সারিবদ্ধভাবে দন্ডয়মান।

وَاِنَّا لَنَحۡنُ الۡمُسَبِّحُوۡنَ ﴿۱۶۶﴾

১৬৬. এবং আমরা অবশ্যই তাঁর পবিত্রতা ঘোষণাকারী।

وَاِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٦٧﴾

১৬৭. তারাই (কাফিরগণ) তো বলে এসেছে,

لَوْ اَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٦٨﴾

১৬৮. পূর্ববর্তীদের কিতাবের মত যদি আমাদের কোন কিতাব থাকতো,

لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٩﴾

১৬৯. তবে অবশ্যই আমরা আল্লাহর একনিষ্ঠ বান্দা হতাম।

فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٧٠﴾

১৭০. কিন্তু তারা তা (কুরআন) প্রত্যাখ্যান করলো এবং শীঘ্রই তারা জানতে পারবে।

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧١﴾

১৭১. আমার প্রেরিত বান্দাদের সম্পর্কে আমার এই বাক্য পূর্বেই স্থির হয়েছে (যে,)

اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ﴿١٧٢﴾

১৭২. অবশ্যই তারা সাহায্যপ্রাপ্ত হবে,

وَاِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿١٧٣﴾

১৭৩. এবং নিশ্চয়ই আমার বাহিনী হবে বিজয়ী।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٤﴾

১৭৪. অতএব, কিছুকালের জন্যে তুমি তাদেরকে উপেক্ষা কর।

وَّاَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٥﴾

১৭৫. তুমি তাদেরকে পর্যবেক্ষণ কর, শীঘ্রই তারা প্রত্যক্ষ করবে।

اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٧٦﴾

১৭৬. তারা কি আমার শাস্তির ব্যাপারে তাড়াহুড়া করছে?

فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَآءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٧﴾

১৭৭. তাদের আঙিনায় যখন শাস্তি নেমে আসবে তখন সতর্কীকৃতদের প্রভাত হবে খুবই মন্দ!

وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٨﴾

১৭৮. অতএব কিছুকালের জন্যে তুমি তাদেরকে উপেক্ষা কর।

وَّاَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٩﴾

১৭৯. তুমি (তাদেরকে) পর্যবেক্ষণ কর, শীঘ্রই তারা প্রত্যক্ষ করবে।

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٨٠﴾

১৮০. তারা যা আরোপ করে তা হতে পবিত্র ও মহান তোমার প্রতিপালক, যিনি সকল ইয্যত-ক্ষমতার অধিকারী।

وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٨١﴾

১৮১. আর শান্তি বর্ষিত হোক রাসূলদের উপর।

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٢﴾

১৮২. যাবতীয় প্রশংসা জগতসমূহের প্রতিপালক আল্লাহরই প্রাপ্য।

সূরাঃ সোয়া-দ, মাক্কী

سُوْرَةُ صٓ مَكِّيَّةٌ

(আয়াতঃ ৮৮, রুকূ'ঃ ৫)

اٰيَاتُهَا ٨٨ رُكُوْعَاتُهَا ٥

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِى الذِّكْرِ ﴿١﴾

১. সোয়া-দ, শপথ উপদেশপূর্ণ কুরআনের!

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِىْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ﴿٢﴾

২. কিন্তু কাফিররা ঔদ্ধত্য (অহংকার) ও বিরোধিতায় (ডুবে আছে।)

كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ ﴿٣﴾

৩. এদের পূর্বে আমি কত জনগোষ্ঠী ধ্বংস করেছি; তখন তারা আর্তচিৎকার করেছিল; কিন্তু তখন পরিত্রাণের কোনই উপায় ছিল না।

وَعَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ ز وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٤﴾

৪. তারা আশ্চার্যবোধ করছে যে, তাদের নিকট তাদেরই মধ্য হতে একজন সতর্ককারী আসলো এবং কাফিররা বলেঃ এতো এক যাদুকর, মিথ্যাবাদী।

اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عُجَابٌ ﴿٥﴾

৫. সে কি বহু মা'বূদের (পরিবর্তে) এক মা'বূদ বানিয়ে নিয়েছে? এতো এক আশ্চার্য ব্যাপার!

وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ يُّرَادُ ۚ ﴿٦﴾

৬. তাদের প্রধানরা সরে পড়ে এই বলেঃ তোমরা চলে যাও এবং তোমাদের দেবতাগুলোর পূজায় তোমরা অবিচলিত থাকো। নিশ্চয়ই এই ব্যাপারটি উদ্দেশ্যমূলক।

مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ۚ اِنْ هٰذَآ اِلَّا اخْتِلَاقٌ ۚ ﴿٧﴾

৭. আমরা তো পূর্বের ধর্মে এরূপ কথা শুনিনি; এটা এক মনগড়া উক্তি মাত্র।

ءَاُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْۢ بَيْنِنَا ۭ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ ذِكْرِيْ ۚ بَلْ لَّمَّا يَذُوْقُوْا عَذَابِ ۭ ﴿٨﴾

৮. আমাদের মধ্য হতে কি তারই উপর কুরআন অবতীর্ণ হলো? প্রকৃতপক্ষে তারা তো আমার কুরআনে সন্দিহান, তারা এখনো আমার শাস্তি আস্বাদন করেনি।

اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَاۗىِٕنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيْزِ الْوَهَّابِ ۚ ﴿٩﴾

৯. তাদের নিকট কি আছে তোমার প্রতিপালকের অনুগ্রহের ভান্ডার, যিনি পরাক্রমশালী, মহান দাতা?

اَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۡ فَلْيَرْتَقُوْا فِي الْاَسْبَابِ ﴿١٠﴾

১০. তাদের কি সার্বভৌমত্ব আছে, আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী এবং এতোদুভয়ের অন্তর্বর্তী সবকিছুর উপর? থাকলে তারা সিঁড়ি বেয়ে আরোহণ করুক (আকাশের উপর)!

جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُوْمٌ مِّنَ الْاَحْزَابِ ﴿١١﴾

১১. বহু দলের এই বাহিনীও সেক্ষেত্রে অবশ্যই পরাজিত হবে।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ ذُو الْاَوْتَادِ ﴿١٢﴾

১২. তাদের পূর্বেও রাসূলদেরকে মিথ্যাবাদী বলেছিল নূহ (عليه السلام)-এর সম্প্রদায়, আ'দ ও বহু পেরাগ ওয়ালা ফিরাউন।

وَثَمُوْدُ وَقَوْمُ لُوْطٍ وَّاَصْحٰبُ لْـَٔيْكَةِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ الْاَحْزَابُ ﴿١٣﴾

১৩. আর সামূদ, লূত-সম্প্রদায় ও আইকার অধিবাসী; তারা ছিল এক একটা বিশাল বাহিনী।

اِنْ كُلٌّ اِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ﴿١٤﴾

১৪. তাদের প্রত্যেকেই রাসূলদেরকে মিথ্যাবাদী বলেছে। ফলে, তাদের ক্ষেত্রে আমার শাস্তি হয়েছে সুসাব্যস্ত।

وَمَا يَنْظُرُ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ﴿١٥﴾

১৫. তারা তো অপেক্ষা করছে একটি মাত্র প্রচন্ড শব্দের, যাতে কোন বিরাম থাকবে না।

وَقَالُوْا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ﴿١٦﴾

১৬. তারা বলেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! বিচার দিবসের পূর্বেই আমাদের প্রাপ্য আমাদেরকে শীঘ্র দিয়ে দাও না!

اِصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوٗدَ ذَا الْاَيْدِ ۚ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿١٧﴾

১৭. তারা যা বলে তাতে তুমি ধৈর্যধারণ কর, আর স্মরণ কর, আমার শক্তিশালী বান্দা দাউদ (عليه السلام)-এর কথা; তিনি ছিলেন অতিশয় আল্লাহ্ অভিমুখী।

اِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِشْرَاقِ ﴿١٨﴾

১৮. আমি পর্বতমালাকে তার বশীভূত করেছিলাম, এগুলো সকাল-সন্ধ্যায় তার সাথে আমার পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করতো।

وَالطَّيْرَ مَحْشُوْرَةً ۗ كُلٌّ لَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿١٩﴾

১৯. এবং সমবেত পাখিসমূহকেও; সবাই ছিল তার দিকে প্রত্যাবর্তনকারী।

وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿٢٠﴾

২০. আমি তার রাজ্যকে সুদৃঢ় করেছিলাম এবং তাকে দিয়েছিলাম প্রজ্ঞা ও ফায়সালাকারী বাচনভঙ্গী।

وَهَلْ اَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ ۘ اِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ﴿٢١﴾

২১. তোমার নিকট বিবাদকারী লোকদের বৃত্তান্ত পৌঁছেছে কি? যখন তারা প্রাচীর ডিঙিয়ে আসলো ইবাদতখানায়,

اِذْ دَخَلُوْا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ ۗ قَالُوْا لَا تَخَفْ ۚ خَصْمٰنِ بَغٰى بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَآ اِلٰى سَوَآءِ الصِّرَاطِ ﴿٢٢﴾

২২. যখন তারা দাউদ (عليه السلام)-এর নিকট পৌঁছলো, তখন তাদের কারণে সে ভীত হয়ে পড়লো। তারা বললোঃ ভীত হবেন না, আমরা দুই বিবাদকারী পক্ষ– আমরা একে অপরের উপর বাড়াবাড়ি করেছি; অতএব আমাদের মধ্যে ন্যায়বিচার করুন; অবিচার করবেন না এবং

আমাদেরকে সঠিক পথনির্দেশ করুন।

إِنَّ هٰذَآ أَخِيْ لَهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً وَّلِيَ نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ فَقَالَ أَكْفِلْنِيْهَا وَعَزَّنِيْ فِي الْخِطَابِ ﴿٢٣﴾

২৩. এ হচ্ছে আমার ভাই, এর কাছে নিরানব্বইটি দুম্বা এবং আমার কাছে মাত্র একটি দুম্বা; তবুও সে বলেঃ আমার যিম্মায় এটিও দিয়ে দাও; এবং কথায় সে আমার প্রতি কঠোরতা প্রদর্শন করেছে।

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ إِلٰى نِعَاجِهٖ ۖ وَإِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ لَيَبْغِيْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ إِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَقَلِيْلٌ مَّا هُمْ ۗ وَظَنَّ دَاوٗدُ أَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا وَّأَنَابَ ۩ ﴿٢٤﴾

২৪. (দাঊদ (عليه السلام)) বললেনঃ তোমার দুম্বাটিকে তার দুম্বাগুলোর সাথে যুক্ত করার দাবী করে সে তোমার প্রতি যুলুম করেছে। শরীকদের অনেকে একে অন্যের উপর অবিচার করে থাকে, করে না শুধু মু'মিন ও সৎকর্মশীল ব্যক্তিরা এবং তারা সংখ্যায় স্বল্প। দাঊদ (عليه السلام) বুঝতে পারলেন যে, আমি তাকে পরীক্ষা করলাম। অতঃপর তিনি তাঁর প্রতিপালকের নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করলেন এবং নত হয়ে লুটিয়ে পড়লেন ও তাঁর অভিমুখী হলেন।

فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ۗ وَإِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٢٥﴾

২৫. অতঃপর আমি তাঁর ত্রুটি ক্ষমা করলাম। আমার নিকট তাঁর জন্যে রয়েছে উচ্চ মর্যাদা ও শুভ পরিণাম।

يٰدَاوٗدُ إِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ إِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ الْحِسَابِ ﴿٢٦﴾

২৬. হে দাঊদ (عليه السلام)! আমি তোমাকে পৃথিবীতে প্রতিনিধি করেছি, অতএব তুমি লোকদের মধ্যে সুবিচার কর এবং প্রবৃত্তির অনুসরণ করো না, কেননা এটা তোমাকে আল্লাহর পথ হতে বিচ্যুত করবে। যারা আল্লাহর পথ পরিত্যাগ করে তাদের জন্যে রয়েছে কঠিন শাস্তি, কারণ তারা বিচার দিবসকে ভুলে রয়েছে।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ؕ ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ ؕ ﴿٢٧﴾

২৭. আমি আকাশ ও পৃথিবী এবং এতোদুভয়ের মধ্যস্থিত কোন কিছুই অনর্থক সৃষ্টি করিনি, যদিও কাফিরদের ধারণা তা-ই, সুতরাং কাফিরদের জন্যে রয়েছে জাহান্নামের দুর্ভোগ।

اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۗ اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ﴿٢٨﴾

২৮. যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে এবং যারা পৃথিবীতে বিপর্যয় সৃষ্টি করে বেড়ায়, আমি কি তাদেরকে সমগণ্য করবো? আমি কি মুত্তাকীদেরকে অপরাধীদের সমান গণ্য করবো?

كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٩﴾

২৯. এ এক কল্যাণময় কিতাব, এটা আমি তোমার উপর অবতীর্ণ করেছি, যাতে মানুষ এর আয়াতসমূহ অনুধাবন করে এবং বোধশক্তি সম্পন্ন ব্যক্তিরা উপদেশ গ্রহণ করে।

وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ؕ ﴿٣٠﴾

৩০. আমি দাঊদ (عليه السلام)-কে দান করলাম সুলাইমান (عليه السلام)! তিনি ছিলেন উত্তম বান্দা এবং তিনি ছিলেন অতিশয় আল্লাহ অভিমুখী।

اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ ۙ ﴿٣١﴾

৩১. যখন অপরাহ্নে তাঁর সামনে দ্রুতগামী উৎকৃষ্টমানের অশ্বরাজিকে উপস্থিত করা হলো,

فَقَالَ اِنِّىْٓ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّىْ ۚ حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿٣٢﴾

৩২. তখন তিনি বললেনঃ আমি তো আমার প্রতিপালকের স্মরণ হতে বিমুখ হয়ে ঐশ্বর্য প্রীতিতে মগ্ন হয়ে পড়েছি, এদিকে (সূর্য) অস্তমিত হয়ে গেছে।

رُدُّوْهَا عَلَىَّ ؕ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوْقِ وَالْاَعْنَاقِ ﴿٣٣﴾

৩৩. এগুলোকে পুনরায় আমার সামনে আনয়ন কর। অতঃপর তিনি ওগুলোর পদ ও গলদেশ ছেদন করতে লাগলেন।

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ﴿٣٤﴾

৩৪. আমি সুলাইমান (عليه السلام)-কে পরীক্ষা করলাম এবং তার আসনের উপর রাখলাম একটি দেহ; অতঃপর তিনি (আমার) অভিমুখী হলেন।

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٣٥﴾

৩৫. তিনি বললেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমাকে ক্ষমা করুন! এবং আমাকে দান করুন এমন এক রাজ্য যার অধিকারী আমি ছাড়া আর কেউ না হয়। আপনি তো পরম দাতা।

فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖ رُخَآءً حَيْثُ اَصَابَ ﴿٣٦﴾

৩৬. তখন আমি তাঁর অধীন করে দিলাম বায়ুকে, যা তার আদেশে, সে যেখানে ইচ্ছা করতো সেখানে মৃদুমন্দ গতিতে প্রবাহিত হতো।

وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ وَّغَوَّاصٍ ﴿٣٧﴾

৩৭. এবং শয়তানদেরকে, যারা সবাই ছিল প্রাসাদ নির্মাণকারী ও ডুবুরী।

وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ﴿٣٨﴾

৩৮. এবং শৃঙ্খলে আবদ্ধ আরো অনেককে।

هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٩﴾

৩৯. এসব আমার অনুগ্রহ, এটা হতে তুমি অন্যকে দিতে অথবা নিজে রাখতে পার। এর জন্যে তোমাকে হিসাব দিতে হবে না।

وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٤٠﴾

৪০. এবং আমার নিকট রয়েছে তার জন্যে উচ্চ মর্যাদা ও শুভ পরিণাম।

وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ اَيُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ﴿٤١﴾

৪১. স্মরণ কর আমার বান্দা আইয়ূব (عليه السلام)-কে যখন তিনি তার প্রতিপালককে আহ্বান করে বলেছিলেনঃ শয়তান তো আমাকে যন্ত্রণা ও কষ্টে ফেলেছে।

اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ﴿٤٢﴾

৪২. (আমি তাকে বললামঃ) তুমি তোমার পা দ্বারা ভূমিতে আঘাত কর, এই তো গোসলের সুশীতল পানি ও পানীয়।

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿٤٣﴾

৪৩. আমি তাকে দিলাম তার পরিজনবর্গ ও তাদের মত আরো তাদের সাথে, আমার অনুগ্রহ স্বরূপ ও বোধশক্তি সম্পন্ন লোকদের জন্যে উপদেশ স্বরূপ।

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ؕ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿٤٤﴾

৪৪. (আমি তাকে আদেশ করলামঃ) এক মুষ্টি তৃণ লও এবং তা দ্বারা আঘাত কর ও শপথ ভঙ্গ করো না। আমি তাকে পেলাম ধৈর্যশীল। কত উত্তম বান্দা সে! সে ছিল (আমার) অভিমুখী।

وَاذْكُرْ عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ اُولِى الْاَيْدِىْ وَالْاَبْصَارِ ﴿٤٥﴾

৪৫. স্মরণ কর, আমার বান্দা ইবরাহীম (عليه السلام), ইসহাক (عليه السلام) ও ইয়াকুব (عليه السلام)-এর কথা, তাঁরা ছিলেন শক্তিশালী ও সূক্ষ্মদর্শী।

اِنَّآ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ﴿٤٦﴾

৪৬. আমি তাঁদেরকে অধিকারী করেছিলাম এক বিশেষ গুণের– ওটা ছিল পরকালের স্মরণ।

وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ؕ ﴿٤٧﴾

৪৭. অবশ্যই তাঁরা ছিলেন আমার মনোনীত ও উত্তম বান্দাদের অন্তর্ভুক্ত।

وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ؕ ﴿٤٨﴾

৪৮. স্মরণ কর ইসমাঈল (عليه السلام), আল-ইয়াসা'আ (عليه السلام) ও যুলকিফলের (عليه السلام) কথা, তাঁরা প্রত্যেকেই ছিলেন উত্তম।

هٰذَا ذِكْرٌ ؕ وَاِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٤٩﴾

৪৯. এটা এক স্মরণীয় বর্ণনা। মুত্তাকীদের জন্যে রয়েছে উত্তম আবাস।

جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ﴿٥٠﴾

৫০. চিরস্থায়ী জান্নাত, তাদের জন্যে উন্মুক্ত যার দ্বার।

مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ ﴿٥١﴾

৫১. সেথায় তারা আসীন হবে হেলান দিয়ে, সেথায় তারা বহুবিধ ফলমূল ও পানীয়ের জন্যে আদেশ দিবে।

وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ﴿٥٢﴾

৫২. আর তাদের পার্শ্বে থাকবে আনত নয়না সমবয়স্কা তরুণীগণ।

هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٥٣﴾

৫৩. এটাই হিসাব দিবসের জন্যে তোমাদেরকে দেয়া প্রতিশ্রুতি।

اِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ نَّفَادٍ ﴿٥٤﴾

৫৪. এটাই আমার দেয়া রিযিক যা নিঃশেষ হবে না।

هٰذَا ؕ وَاِنَّ لِلطّٰغِيْنَ لَشَرَّ مَاٰبٍ ﴿٥٥﴾

৫৫. এটাই (মুত্তাকীদের পরিণাম), আর সীমালঙ্ঘনকারীদের জন্যে রয়েছে নিকৃষ্টতম পরিণাম—

جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٥٦﴾

৫৬. জাহান্নাম, সেথায় তারা প্রবেশ করবে, কত নিকৃষ্ট বিশ্রামস্থল!

هٰذَا ۙ فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ ﴿٥٧﴾

৫৭. এটা তো তা (সীমালঙ্ঘন-কারীদের জন্যে), সুতরাং তারা আস্বাদন করুক ফুটন্ত পানি ও পুঁজ।

وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖۤ اَزْوَاجٌ ؕ ﴿٥٨﴾

৫৮. আরো আছে এরূপ বিভিন্ন ধরনের শাস্তি।

هٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ ؕ اِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ﴿٥٩﴾

৫৯. এ তো এক বাহিনী, তোমাদের সাথে (জাহান্নামে) প্রবেশকারী। তাদের জন্যে নেই অভিনন্দন, তারা তো জাহান্নামে জ্বলবে।

قَالُوْا بَلْ اَنْتُمْ ۟ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ ؕ اَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوْهُ لَنَا ۚ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٦٠﴾

৬০. অনুসারীরা বলবেঃ বরং তোমরাও, তোমাদের জন্যেও তো অভিনন্দন নেই। তোমরাই তো পূর্বে ওটা আমাদের জন্যে ব্যবস্থা করেছো। কত নিকৃষ্ট এই আবাস-স্থল!

قَالُوْا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِى النَّارِ ﴿٦١﴾

৬১. তারা বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! যে এটা আমাদের জন্য পেশ করেছে জাহান্নামে তার শাস্তি আপনি দ্বিগুণ বর্ধিত করুন!

وَقَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْاَشْرَارِ ﴿٦٢﴾

৬২. তারা আরো বলবেঃ আমাদের কি হলো যে, আমরা যেসব লোককে মন্দ বলে গণ্য করতাম। তাদেরকে দেখতে পাচ্ছি না?

أَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْأَبْصَارُ ﴿٦٣﴾

৬৩. তবে কি আমরা তাদেরকে অহেতুক ঠাট্টা-বিদ্রূপের পাত্র মনে করতাম, না তাদের ব্যাপারে আমাদের দৃষ্টি বিভ্রম ঘটেছে?

إِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ ﴿٦٤﴾

৬৪. এটা নিশ্চিত সত্য, জাহান্নামী-দের এই বাদ-প্রতিবাদ।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَمَا مِنْ إِلٰهٍ إِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٦٥﴾

৬৫. বলঃ আমি তো একজন সতর্ককারী মাত্র এবং আল্লাহ্ ছাড়া (সত্য) কোন মা'বূদ নেই, যিনি এক, পরাক্রমশালী।

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ﴿٦٦﴾

৬৬. যিনি আকাশমন্ডলী, পৃথিবী এবং এগুলোর মধ্যস্থিত সবকিছুর প্রতিপালক, যিনি পরাক্রমশালী, মহাক্ষমাশীল।

قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيمٌ ﴿٦٧﴾

৬৭. বলঃ এটা এক মহা সংবাদ,

أَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ﴿٦٨﴾

৬৮. যা হতে তোমরা মুখ ফিরিয়ে নিচ্ছ।

مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَإِ الْأَعْلٰى إِذْ يَخْتَصِمُونَ ﴿٦٩﴾

৬৯. উচ্চ মর্যাদা সম্পন্ন ফেরেশ্তাদের সম্পর্কে আমার কোন জ্ঞান ছিল না যখন তারা বাদানুবাদ করছিলেন।

إِنْ يُوحٰى إِلَيَّ إِلَّا أَنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٧٠﴾

৭০. আমার নিকট তো এই ওহী এসেছে যে, আমি একজন স্পষ্ট সতর্ককারী।

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰئِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِنْ طِينٍ ﴿٧١﴾

৭১. (স্মরণ কর,) যখন তোমার প্রতিপালক ফেরেশতাদেরকে বলে-ছিলেনঃ আমি মানুষ সৃষ্টি করছি মাটি হতে,

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُوحِي فَقَعُوا لَهُ سٰجِدِينَ ﴿٧٢﴾

৭২. যখন আমি ওকে সুষম করবো এবং ওতে আমার রূহ সঞ্চার করবো, তখন তোমরা ওর প্রতি সিজদাবনত হয়ো।

فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿٧٣﴾

৭৩. তখন ফেরেশ্‌তারা সবাই সিজদাবনত হলেন–

اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اِسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾

৭৪. শুধু ইবলীস ব্যতীত, সে অহংকার করলো এবং কাফিরদের অন্তর্ভুক্ত হলো।

قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا مَنَعَكَ اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ؕ اَسْتَكْبَرْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِيْنَ ﴿٧٥﴾

৭৫. তিনি (আল্লাহ্) বললেনঃ হে ইবলীস। আমি যাকে নিজ হাতে সৃষ্টি করেছি, তার প্রতি সিজদাবনত হতে তোমাকে কিসে বাধা দিলো? তুমি কি ঔদ্ধত্য প্রকাশ করলে, না তুমি উচ্চ মার্যাদা সম্পন্ন?

قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ؕ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّ خَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿٧٦﴾

৭৬. সে বললোঃ আমি তার চেয়ে শ্রেষ্ঠ। আপনি আমাকে আগুন হতে সৃষ্টি করেছেন এবং তাকে সৃষ্টি করেছেন মাটি হতে।

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ﴿٧٧﴾

৭৭. তিনি বললেনঃ তুমি এখান হতে বের হয়ে যাও, নিশ্চয়ই তুমি বিতাড়িত।

وَّاِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيْٓ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٧٨﴾

৭৮. এবং তোমার উপর আমার লা'নত স্থায়ী হবে প্রতিদান দিবস পর্যন্ত।

قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿٧٩﴾

৭৯. সে বললোঃ হে আমার প্রতিপালক! আপনি আমাকে অবকাশ দিন পুনরুত্থান দিবস পর্যন্ত।

قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿٨٠﴾

৮০. তিনি বললেনঃ তুমি অবকাশ-প্রাপ্তদের অন্তর্ভুক্ত হলে–

اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ﴿٨١﴾

৮১. অবধারিত সময় উপস্থিত হওয়ার দিন পর্যন্ত।

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٢﴾

৮২. সে বললোঃ আপনার ইয্‌যতের শপথ! আমি তাদের সবাইকে পথভ্রষ্ট করবো,

اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٨٣﴾

৮৩. তবে তাদের মধ্যে আপনার একনিষ্ঠ বান্দাদেরকে নয়।

قَالَ فَالْحَقُّ ۙ وَالْحَقَّ اَقُوْلُ ﴿٨٤﴾

৮৪. তিনি বললেনঃ তবে এটাই সত্য, আর আমি সত্যই বলি–

لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٥﴾

৮৫. তোমার দ্বারা ও তোমার সমস্ত অনুসারীদের দ্বারা আমি জাহান্নাম পূর্ণ করবই।

قُلْ مَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ ﴿٨٦﴾

৮৬. বলঃ আমি এর জন্যে তোমাদের নিকট কোন প্রতিদান চাই না এবং আমি বানোয়াটদের অন্তর্ভুক্ত নই।

اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾

৮৭. এটা তো বিশ্বজগতের জন্যে উপদেশ মাত্র।

وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَاَهٗ بَعْدَ حِيْنٍ ﴿٨٨﴾

৮৮. এর সংবাদ তোমরা অবশ্যই জানবে, কিছু দিন পরে।

سُوْرَةُ الزُّمَرِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٧٥ رُكُوْعَاتُهَا ٨

সূরাঃ যুমার, মাক্কী

(আয়াতঃ ৭৫, রুকূ'ঃ ৮)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١﴾

১. এই কিতাব অবতীর্ণ পরাক্রমশালী প্রজ্ঞাপূর্ণ আল্লাহর নিকট হতে।

اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ﴿٢﴾

২. আমি তোমার নিকট এই কিতাব সত্যতা সহকারে অবতীর্ণ করেছি; সুতরাং তুমি আল্লাহর ইবাদত কর তাঁর আনুগত্যে বিশুদ্ধ চিত্ত হয়ে।

اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ۭ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ﴿٣﴾

৩. জেনে রেখো, অবিমিশ্র আনুগত্য আল্লাহরই প্রাপ্য। যারা আল্লাহর পরিবর্তে অন্যকে অভিভাবকরূপে গ্রহণ করে, (তারা বলেঃ) আমরা তো এদের পূজা এজন্যেই করি যে, এরা আমাদেরকে আল্লাহর সান্নিধ্যে এনে দিবে। তারা যে বিষয়ে নিজেদের মধ্যে মতভেদ করছে আল্লাহ তার ফায়সালা করে দিবেন। যে মিথ্যাবাদী ও কাফির, আল্লাহ তাকে সৎপথে পরিচালিত করেন না।

لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ
مَا يَشَآءُ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝٤

৪. আল্লাহ সন্তান গ্রহণ করতে ইচ্ছা করলে তিনি তাঁর সৃষ্টির মধ্যে যাকে ইচ্ছা মনোনীত করতে পারতেন। পবিত্র ও মহান তিনি! তিনি আল্লাহ, এক, প্রবল পরাক্রমশালী।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى
النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ
اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ۝٥

৫. তিনি যথাযথভাবে আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন। তিনি রাত্রি দ্বারা দিবসকে আচ্ছাদিত করেন এবং রাত্রিকে আচ্ছাদিত করেন দিবস দ্বারা। সূর্য ও চন্দ্রকে তিনি করেছেন নিয়মাধীন প্রত্যেকেই পরিভ্রমণ করে এক নির্দিষ্টকাল পর্যন্ত। জেনে রেখো, তিনি পরাক্রমশালী, ক্ষমাশীল।

خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا
وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ؕ يَخْلُقُكُمْ
فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ
ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝٦

৬. তিনি তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন একই ব্যক্তি হতে। অতঃপর তিনি তা হতে তার সঙ্গিনী সৃষ্টি করেছেন। তিনি তোমাদেরকে দিয়েছেন আট প্রকার চতুষ্পদ জন্তু। তিনি তোমাদেরকে তোমাদের মাতৃগর্ভের ত্রিবিধ অন্ধকারে পর্যায়ক্রমে সৃষ্টি করেছেন। তিনিই আল্লাহ, তোমাদের প্রতিপালক, সার্বভৌমত্ব তাঁরই, তিনি ছাড়া কোন (সত্য) মা'বূদ নেই। অতএব তোমরা মুখ ফিরিয়ে কোথায় চলেছো?

اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۖ وَلَا يَرْضٰى
لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ؕ وَلَا تَزِرُ
وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ
الصُّدُوْرِ ۝٧

৭. তোমরা অকৃতজ্ঞ হলে আল্লাহ, তোমাদের মুখাপেক্ষী নন, তিনি তাঁর বান্দাদের অকৃতজ্ঞতা পছন্দ করেন না। যদি তোমরা কৃতজ্ঞ হও তবে তিনি তোমাদের জন্যে এটাই পছন্দ করেন। একের ভার অন্যে বহন করবে না। অতপর তোমাদের প্রতিপালকের নিকট তোমাদের প্রত্যাবর্তন এবং তোমরা যা করতে তিনি তোমাদেরকে তা অবগত

করাবেন। অন্তরে যা আছে তা তিনি সম্যক অবগত।

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوٓا إِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَندَادًا لِّيُضِلَّ عَن سَبِيلِهِ ۚ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيلًا ۖ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ﴿٨﴾

৮. মানুষকে যখন দুঃখ-দৈন্য স্পর্শ করে তখন সে একনিষ্ঠভাবে তার প্রতিপালককে ডাকে। পরে যখন (তিনি) তার প্রতি তাঁর পক্ষ হতে অনুগ্রহ করেন তখন সে ভুলে যায় তার পূর্বে যার জন্যে সে ডেকেছিল তাঁকে এবং সে আল্লাহর সমকক্ষ দাঁড় করায়, অপরকে তাঁর পথ হতে বিভ্রান্ত করবার জন্যে। বলঃ কুফরীর (জীবন) অবস্থায় তুমি কিছুকাল উপভোগ করে নাও। বস্তুত তুমি জাহান্নামীদের অন্যতম।

أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ آنَاءَ اللَّيْلِ سَاجِدًا وَقَائِمًا يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُو رَحْمَةَ رَبِّهِ ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۗ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٩﴾

৯. যে ব্যক্তি রাত্রিকালে সিজদাবনত হয়ে ও দাঁড়িয়ে আনুগত্য প্রকাশ করে, আখিরাতকে ভয় করে এবং তার প্রতিপালকের রহমত প্রত্যাশা করে, (সে কি তার সমান যে তা করে না?) বলঃ যারা জানে এবং যারা জানে না তারা কি সমান? বোধশক্তি সম্পন্ন লোকেরাই শুধু উপদেশ গ্রহণ করে।

قُلْ يَا عِبَادِ الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا رَبَّكُمْ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۗ وَأَرْضُ اللَّهِ وَاسِعَةٌ ۗ إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُم بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿١٠﴾

১০. বলঃ হে আমার মু'মিন বান্দারা! তোমরা তোমাদের প্রতিপালককে ভয় কর। যারা এই দুনিয়াতে কল্যাণকর কাজ করে তাদের জন্যে আছে কল্যাণ। আর প্রশস্ত আল্লাহর পৃথিবী, ধৈর্যশীলদেরকে অপরিমিত প্রতিদান দেয়া হবে।

قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّينَ ﴿١١﴾

১১. বলঃ আমি আদিষ্ট হয়েছি, আল্লাহর আনুগত্য একনিষ্ঠ হয়ে তাঁর ইবাদত করতে।

وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٢﴾

১২. আর আদিষ্ট হয়েছি, আমি যেন আত্মসমর্পণকারীদের অগ্রণী হই।

قُلْ إِنِّيٓ أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٣﴾

১৩. বলঃ আমি যদি আমার প্রতিপালকের অবাধ্য হই তবে আমি ভয় করি মহা দিবসের শাস্তির।

قُلِ اللَّهَ أَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهُ دِينِي ﴿١٤﴾

১৪. বলঃ আমি ইবাদত করি আল্লাহরই তাঁর প্রতি আমার আনুগত্যকে একনিষ্ঠ রেখে।

فَاعْبُدُوا مَا شِئْتُم مِّن دُونِهِ ۗ قُلْ إِنَّ الْخَاسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوٓا أَنفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ أَلَا ذَٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ﴿١٥﴾

১৫. অতএব তোমরা আল্লাহর পরিবর্তে যার ইচ্ছা তার ইবাদত কর। বলঃ কিয়ামতের দিন ক্ষতিগ্রস্ত তারাই যারা নিজেদের ও নিজেদের পরিবারবর্গের ক্ষতিসাধন করে। জেনে রেখো, এটাই সুস্পষ্ট ক্ষতি।

لَهُم مِّن فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِن تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ۚ ذَٰلِكَ يُخَوِّفُ اللَّهُ بِهِ عِبَادَهُ ۚ يَا عِبَادِ فَاتَّقُونِ ﴿١٦﴾

১৬. তাদের জন্যে থাকবে তাদের ঊর্ধ্ব দিকে অগ্নির আচ্ছাদন এবং তাদের নিম্ন দিকেও আচ্ছাদন। এতদ্বারা আল্লাহ তাঁর বান্দাদেরকে সতর্ক করেন। হে আমার বান্দারা। তোমরা আমাকে ভয় কর।

وَالَّذِينَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوتَ أَن يَعْبُدُوهَا وَأَنَابُوٓا إِلَى اللَّهِ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿١٧﴾

১৭. যারা তাগূতের পূজা থেকে দূরে থাকে এবং আল্লাহর অভিমুখী হয় তাদের জন্যে আছে সুসংবাদ। অতএব সুসংবাদ দাও আমার বান্দাদেরকে।

الَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَاهُمُ اللَّهُ وَأُولَٰئِكَ هُمْ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿١٨﴾

১৮. যারা মনোযোগ সহকারে কথা শুনে এবং ওর মধ্যে যা উত্তম তা গ্রহণ করে। তাদেরকে আল্লাহ সৎপথে পরিচালিত করেন এবং তারাই বোধশক্তি সম্পন্ন।

أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ۚ أَفَأَنتَ تُنقِذُ مَن فِي النَّارِ ﴿١٩﴾

১৯. যার উপর দন্ডাদেশ অবধারিত হয়েছে, তুমি কি রক্ষা করতে পারবে সেই ব্যক্তিকে, যে জাহান্নামে আছে?

لَٰكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّن فَوْقِهَا

২০. তবে যারা তাদের প্রতি-পালককে ভয় করে, তাদের জন্যে

غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ ۙ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ الْمِيْعَادَ ﴿٢٠﴾

আছে বহু প্রাসাদ যার উপর নির্মিত আছে আরও প্রাসাদ, যার পাদদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত, আল্লাহ প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন; আল্লাহ প্রতিশ্রুতি ভঙ্গ করেন না।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَلَكَهٗ يَنَابِيْعَ فِي الْاَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهٗ حُطَامًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿٢١﴾

২১. তুমি কি দেখো না যে, আল্লাহ আকাশ হতে পানি বর্ষণ করেন, অতপর ভূমিতে নির্ঝররূপে প্রবাহিত করেন এবং তার দ্বারা বিবিধ বর্ণের ফসল উৎপন্ন করেন, অতঃপর এটা শুকিয়ে যায় এবং তোমরা এটা পীত বর্ণ দেখতে পাও, অবশেষে তিনি ওটা খড়কুটায় পরিণত করেন? এতে অবশ্যই উপদেশ রয়েছে বোধশক্তি সম্পন্নদের জন্যে।

اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ فَوَيْلٌ لِّلْقٰسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٢﴾

২২. আল্লাহ ইসলামের জন্যে যার বক্ষ উন্মুক্ত করে দিয়েছেন এবং সে তার প্রতিপালকের পক্ষ হতে এক আলোতে আছে, (সে কি তার সমান যে এরূপ নয়?) দুর্ভোগ তাদের জন্যে, যাদের অন্তর আল্লাহর স্মরণের ব্যাপারে কঠোর তারা স্পষ্ট বিভ্রান্তিতে রয়েছে।

اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٢٣﴾

২৩. আল্লাহ অবতীর্ণ করেছেন সর্বোত্তম বাণী সম্বলিত কিতাব যা সামঞ্জস্যপূর্ণ এবং যা পুনঃ পুনঃ আবৃত্তি করা হয়। এতে যারা তাদের প্রতিপালককে ভয় করে তাদের গাত্র (শিহরীত) হয়, অতঃপর তাদের দেহ-মন প্রশান্ত হয়ে আল্লাহর স্মরণে ঝুঁকে পড়ে; এটাই আল্লাহর পথ-নির্দেশ, তিনি যাকে ইচ্ছা ওটা দ্বারা পথ-প্রদর্শন করেন।আল্লাহ যাকে বিভ্রান্ত করেন তার কোন পথ-প্রদর্শক নেই।

أَفَمَن يَتَّقِي بِوَجْهِهِ سُوءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ وَقِيلَ لِلظَّالِمِينَ ذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٢٤﴾

২৪. যে ব্যক্তি কিয়ামতের দিন তার মুখমন্ডল দ্বারা কঠিন শাস্তি ঠেকাতে চাইবে, (সে কি তার মত যে নিরাপদ?) যালিমদেরকে বলা হবেঃ তোমরা যা অর্জন করতে তার শাস্তি আস্বাদন কর।

كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٥﴾

২৫. তাদের পূর্ববর্তীরাও মিথ্যা আরোপ করেছিল, ফলে শাস্তি তাদেরকে গ্রাস করলো তাদের অজ্ঞাতসারে।

فَأَذَاقَهُمُ اللَّهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾

২৬. ফলে আল্লাহ তাদেরকে পার্থিব জীবনে লাঞ্ছনা ভোগ করালেন এবং আখিরাতের শাস্তি তো কঠিনতর। যদি তারা জানতো।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِن كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾

২৭. আমি এই কুরআনে মানুষের জন্যে সর্বপ্রকার দৃষ্টান্ত উপস্থিত করেছি, যাতে তারা উপদেশ গ্রহণ করে।

قُرْآنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِي عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٢٨﴾

২৮. আরবী ভাষায় এই কুরআন বক্রতামুক্ত, যাতে মানুষ সাবধানতা অবলম্বন করে।

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيهِ شُرَكَاءُ مُتَشَاكِسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ۚ هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ۚ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٩﴾

২৯. আল্লাহ একটি দৃষ্টান্ত পেশ করছেন। এক ব্যক্তির মালিক অনেক যারা পরস্পর বিরুদ্ধ ভাবাপন্ন এবং এক ব্যক্তির মালিক শুধু একজন; এই দুই জনের অবস্থা কি সমান? সমস্ত প্রশংসা আল্লাহরই প্রাপ্য; কিন্তু তাদের অধিকাংশই এটা জানে না।

إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُم مَّيِّتُونَ ﴿٣٠﴾

৩০. তুমি তো মরণশীল এবং তারাও মরণশীল।

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِندَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ ﴿٣١﴾

৩১. অতঃপর কিয়ামত দিবসে তোমরা পরস্পর তোমাদের প্রতিপালকের সামনে বাক-বিতন্ডা করবে।

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ﴿٣٢﴾

৩২. যে ব্যক্তি আল্লাহ সম্বন্ধে মিথ্যা বলে এবং যখন তার নিকট সত্য আসে প্রত্যাখ্যান করে তার অপেক্ষা অধিক যালিম আর কে? কাফিরদের আবাসস্থল কি জাহান্নাম নয়?

وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿٣٣﴾

৩৩. যারা সত্যসহ উপস্থিত হয়েছে এবং তাকে সত্য বলে মেনেছে তারাই তো মুত্তাকী।

لَهُم مَّا يَشَاءُونَ عِندَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٤﴾

৩৪. তারা যা চাইবে সব কিছুই আছে তাদের প্রতিপালকের নিকট। এটাই সৎকর্মশীলদের প্রতিদান।

لِيُكَفِّرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُم بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٣٥﴾

৩৫. যাতে তারা যেসব অপকর্ম করেছিল আল্লাহ তা ক্ষমা করে দিবেন এবং তাদেরকে তাদের সৎকর্মের জন্যে পুরস্কৃত করবেন।

أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ ۖ وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِن دُونِهِ ۚ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٣٦﴾

৩৬. আল্লাহ কি তাঁর বান্দার জন্যে যথেষ্ট নন? অথচ তারা তোমাকে আল্লাহর পরিবর্তে অপরের ভয় দেখায়। আল্লাহ যাকে পথভ্রষ্ট করেন তার জন্যে কোন পথ প্রদর্শক নেই।

وَمَن يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن مُّضِلٍّ ۗ أَلَيْسَ اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انتِقَامٍ ﴿٣٧﴾

৩৭. আর যাকে আল্লাহ হিদায়াত দান করেন তার জন্যে কোন পথ-ভ্রষ্টকারী নেই, আল্লাহ কি পরাক্রম-শালী, প্রতিশোধ গ্রহণকারী নন?

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَرَأَيْتُم مَّا تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ ضُرِّهِ أَوْ أَرَادَنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَاتُ رَحْمَتِهِ ۚ قُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ ۖ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٣٨﴾

৩৮. তুমি যদি তাদেরকে জিজ্ঞেস করঃ আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী কে সৃষ্টি করেছেন? তারা অবশ্যই বলবেঃ আল্লাহ। বলঃ তোমরা কি ভেবে দেখেছো যে, আল্লাহ আমার অনিষ্ট চাইলে তোমরা আল্লাহর পরিবর্তে যাদেরকে ডাকো তারা কি সেই অনিষ্ট দূর করতে পারবে? অথবা তিনি আমার প্রতি অনুগ্রহ করতে

চাইলে তারা কি সে অনুগ্রহকে বন্ধ করতে পারবে? বলঃ আমার জন্যে আল্লাহই যথেষ্ট। নির্ভরকারীরা তাঁর উপর নির্ভর করে।

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ﴿٣٩﴾

৩৯. বলঃ হে আমার সম্প্রদায়। তোমরা স্ব স্ব অবস্থানে আমল করতে থাকো, অবশ্য আমিও আমল করছি। তোমরা শীঘ্রই জানতে পারবে।

مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٤٠﴾

৪০. কে সে যার প্রতি আসবে লাঞ্ছনাদায়ক শাস্তি এবং তার উপর আপতিত হবে স্থায়ী শাস্তি।

اِنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٤١﴾

৪১. আমি তোমার প্রতি সত্যসহ কিতাব অবতীর্ণ করেছি মানুষের জন্যে, অতঃপর যে সৎপথ অবলম্বন করে সে তা করে নিজেরই কল্যাণের জন্যে এবং যে পথভ্রষ্ট হয় সে তো পথভ্রষ্ট হয় নিজেরই ধ্বংসের জন্যে এবং তুমি তাদের জিম্মাদার নও।

اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ۚ فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْاُخْرٰٓى اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾

৪২. আল্লাহই জান কবজ করেন জীবসমূহের তাদের মৃত্যুর সময় এবং যাদের মৃত্যু আসেনি তাদের জানও ঘুমের সময়। অতঃপর যার জন্যে মৃত্যুর সিদ্ধান্ত করেন তার প্রাণ তিনি রেখে দেন এবং অপরগুলো ফিরিয়ে দেন, এক নির্দিষ্ট সময়ের জন্যে। অবশ্যই এতে নিদর্শন রয়েছে চিন্তাশীল সম্প্রদায়ের জন্যে।

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُفَعَاۗءَ ۭ قُلْ اَوَلَوْ كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْـــًٔا وَّلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤٣﴾

৪৩. তারা কি আল্লাহ ছাড়া অপরকে শাফায়াতকারী গ্রহণ করেছে? বলঃ যদিও তারা কোন ক্ষমতা রাখে না এবং তারা বুঝে না?

قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ۭ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ

৪৪. বলঃ যাবতীয় শাফায়াত আল্লাহরই ইখতিয়ারে, আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সার্বভৌমত্ব আল্লাহরই,

وَالْاَرْضِ ؕ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٤٤﴾

অতঃপর তারই নিকট তোমরা প্রত্যাবর্তিত হবে।

وَاِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ قُلُوْبُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَاِذَا ذُكِرَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٥﴾

৪৫. এক আল্লাহর কথা বলা হলে যারা আখিরাতে বিশ্বাস করে না তাদের অন্তর ঘৃণায় ভরে যায় এবং যখন আল্লাহর পরিবর্তে (তাদের দেবতাগুলোর) উল্লেখ করা হলে তারা আনন্দিত হয়ে যায়।

قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٦﴾

৪৬. বলঃ হে আল্লাহ! আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর অদৃশ্য ও প্রকাশ্যের পরিজ্ঞাতা! আপনার বান্দারা যে বিষয়ে মতবিরোধ করে, আপনি তাদের মধ্যে ওর ফায়সালা করে দিবেন।

وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ﴿٤٧﴾

৪৭. যারা যুলুম করেছে তাদের কাছে যদি সমস্ত পৃথিবীর যাবতীয় সম্পদ এবং তার সাথেও থাকে সমপরিমাণ সম্পদ, কিয়ামতের দিন কঠিন শাস্তি হতে পরিত্রাণ লাভের জন্য মুক্তিপণ স্বরূপ সকল কিছু তারা দিয়ে দিতে প্রস্তুত হবে। আর তাদের জন্যে আল্লাহ্‌র নিকট হতে এমন কিছু প্রকাশিত হবে, যা তারা ধারণাও করেনি।

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤٨﴾

৪৮. তাদের কৃতকর্মের খারাপী তাদের নিকট প্রকাশ হয়ে পড়বে এবং তারা যা নিয়ে ঠাট্টা-বিদ্রূপ করতো তা তাদেরকে ঘিরে ফেলবে।

فَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ۫ ثُمَّ اِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۙ قَالَ اِنَّمَاۤ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ ؕ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٩﴾

৪৯. মানুষকে দুঃখ-কষ্ট স্পর্শ করলে সে আমাকে ডাকে; অতঃপর যখন আমি তার প্রতি অনুগ্রহ প্রদান করি আমার পক্ষ থেকে তখন সে বলেঃ আমাকে তো এটা দেয়া হয়েছে

আমার জ্ঞানের বিনিময়ে। বস্তুতঃ এটা এক পরীক্ষা; কিন্তু তাদের অধিকাংশই জানে না।

قَدْ قَالَهَا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٥٠﴾

৫০. তাদের পূর্ববর্তীরাও এটাই বলতো; কিন্তু তাদের কৃতকর্ম তাদের কোন কাজে আসেনি।

فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ۭ وَالَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ هٰٓؤُلَاۗءِ سَيُصِيْبُهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ۙ وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٥١﴾

৫১. তাদের কর্মের খারাপী তাদের উপর আপতিত হয়েছে, তাদের মধ্যে যারা যুলুম করে তাদের উপরও তাদের কর্মের খারাপী আপতিত হবে এবং তারা ব্যর্থও করতে পারবে না।

اَوَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾

৫২. তারা কি জানে না, আল্লাহ যার জন্যে ইচ্ছা, তার রিযিক বর্ধিত করেন অথবা হ্রাস করেন। এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে মু'মিন সম্প্রদায়ের জন্যে।

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٣﴾

৫৩. বলঃ হে আমার বান্দারা! তোমরা যারা নিজেদের প্রতি অবিচার করেছো– আল্লাহর রহমত হতে নিরাশ হয়ো না; আল্লাহ সমস্ত পাপ ক্ষমা করে দিবেন। তিনি তো ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٥٤﴾

৫৪. আর তোমরা তোমাদের প্রতি-পালকের অভিমুখী হও এবং তাঁর নিকট আত্মসমর্পণ কর তোমাদের নিকট শাস্তি আসার পূর্বে, তৎপর তোমাদেরকে সাহায্য করা হবে না।

وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿٥٥﴾

৫৫. এবং অনুসরণ কর তোমাদের প্রতি তোমাদের প্রতিপালকের নিকট হতে উত্তম যা অবতীর্ণ করা হয়েছে তার, তোমাদের উপর হঠাৎ করে শাস্তি আসার পূর্বে– আর তোমাদের (সে ব্যাপারে) খবরও থাকবে না।

اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰي مَا فَرَّطْتُّ فِيْ

৫৬. এমন যেন না হয় যে, কোন ব্যক্তি বলেঃ হায়! আল্লাহর প্রতি

جَنۢبِ اللّٰهِ وَاِنۡ كُنۡتُ لَمِنَ السّٰخِرِيۡنَ ۙ﴿۵۶﴾

আমার কর্তব্যে আমি যে শৈথিল্য করেছি তার জন্যে আফসোস! আমি তো ঠাট্টাকারীদের অন্তর্ভুক্তই থাকতাম।

اَوۡ تَقُوۡلَ لَوۡ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰٮنِىۡ لَكُنۡتُ مِنَ الۡمُتَّقِيۡنَ ۙ﴿۵۷﴾

৫৭. অথবা বলে যে, আল্লাহ আমাকে পথ-প্রদর্শন করলে আমি তো অবশ্যই মুত্তাকীদের অন্তর্ভুক্ত হতাম!

اَوۡ تَقُوۡلَ حِيۡنَ تَرَى الۡعَذَابَ لَوۡ اَنَّ لِىۡ كَرَّةً فَاَكُوۡنَ مِنَ الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿۵۸﴾

৫৮. অথবা শাস্তি প্রত্যক্ষ করে বলেঃ আহা! যদি একবার পৃথিবীতে আমার প্রত্যাবর্তন ঘটতো তবে আমি সৎকর্মশীল হতাম।

بَلٰى قَدۡ جَآءَتۡكَ اٰيٰتِىۡ فَكَذَّبۡتَ بِهَا وَاسۡتَكۡبَرۡتَ وَكُنۡتَ مِنَ الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۵۹﴾

৫৯. হ্যাঁ, অবশ্যই আমার নিদর্শন তোমার নিকট এসেছিল; কিন্তু তুমি এগুলোকে মিথ্যা সাব্যস্ত করেছিলে ও অহংকার করেছিলে; আর তুমি তো ছিলেই কাফিরদের অন্তর্ভুক্ত।

وَيَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيۡنَ كَذَبُوۡا عَلَى اللّٰهِ وُجُوۡهُهُمۡ مُّسۡوَدَّةٌ ؕ اَلَيۡسَ فِىۡ جَهَنَّمَ مَثۡوًى لِّلۡمُتَكَبِّرِيۡنَ ﴿۶۰﴾

৬০. তুমি কিয়ামতের দিন যারা আল্লাহর প্রতি মিথ্যা আরোপ করে, তাদের মুখ কালো দেখবে। অহংকারীদের আবাসস্থল কি জাহান্নাম নয়?

وَيُنَجِّى اللّٰهُ الَّذِيۡنَ اتَّقَوۡا بِمَفَازَتِهِمۡ ۖ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوۡٓءُ وَلَا هُمۡ يَحۡزَنُوۡنَ ﴿۶۱﴾

৬১. আল্লাহ মুত্তাকীদেরকে উদ্ধার করবেন তাদের সাফল্যসহ; তাদেরকে দুঃখ-কষ্ট স্পর্শ করবে না এবং তারা চিন্তিতও হবে না।

اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَىۡءٍ ۫ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ وَّكِيۡلٌ ﴿۶۲﴾

৬২. আল্লাহ সব কিছুর স্রষ্টা এবং তিনিই সব কিছুর ব্যবস্থাপক।

لَهٗ مَقَالِيۡدُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ وَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓـئِكَ هُمُ الۡخٰسِرُوۡنَ ﴿۶۳﴾

৬৩. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর চাবি-কাঠি তাঁরই নিকট। যারা আল্লাহর আয়াতসমূহকে অস্বীকার করে তারাই তো ক্ষতিগ্রস্ত।

قُلۡ اَفَغَيۡرَ اللّٰهِ تَاۡمُرُوۡٓنِّىۡۤ اَعۡبُدُ اَيُّهَا الۡجٰهِلُوۡنَ ﴿۶۴﴾

৬৪. বলঃ ওহে মূর্খরা! তোমরা কি আমাকে আল্লাহ ব্যতীত অন্যের ইবাদত করতে বলছো?

وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٦٥﴾

৬৫. নিশ্চয়ই তোমার প্রতি ও তোমার পূর্ববর্তীদের প্রতি ওহী হয়েছে, যদি তুমি আল্লাহর শরীক স্থির কর তবে নিঃসন্দেহে তোমার কর্ম তো নিষ্ফল হবে এবং অবশ্যই তুমি ক্ষতিগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত হবে।

بَلِ اللَّهَ فَاعْبُدْ وَكُن مِّنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٦٦﴾

৬৬. অতএব তুমি আল্লাহরই ইবাদত কর ও কৃতজ্ঞদের অন্তর্ভুক্ত হও।

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمَاوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٧﴾

৬৭. তারা আল্লাহর যথাযথ সম্মান করে না। সমস্ত পৃথিবী কিয়ামতের দিন থাকবে তাঁর হাতের মুষ্টিতে এবং আকাশমন্ডলী থাকবে ভাজকৃত তাঁর ডান হাতে। পবিত্র ও মহান তিনি, তারা যাকে শরীক করে তিনি তার ঊর্ধ্বে।

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَن شَاءَ اللَّهُ ۖ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَىٰ فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنظُرُونَ ﴿٦٨﴾

৬৮. এবং শিংগায় ফুৎকার দেয়া হবে, ফলে যাদেরকে আল্লাহ ইচ্ছা করেন তারা ব্যতীত আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সবাই অজ্ঞান হয়ে পড়বে। অতঃপর আবার শিংগায় ফুৎকার দেয়া হবে, তৎক্ষণাৎ তারা দন্ডায়মান হয়ে তাকাতে থাকবে।[১]

وَأَشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتَابُ وَجِاْيٓءَ بِالنَّبِيِّينَ وَالشُّهَدَاءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٩﴾

৬৯. সমস্ত পৃথিবী তার প্রতিপালকের নূরে উদ্ভাসিত হবে, আমলনামা পেশ করা হবে এবং নবীগণকে ও সাক্ষীগণকে হাজির করা হবে এবং সকলের মধ্যে ন্যায়বিচার করা হবে ও তাদের প্রতি যুলুম করা হবে না।

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ দু'টি ফুৎকারের মধ্যখানে হবে চল্লিশ। লোকেরা বললোঃ আবূ হুরাইরা, চল্লিশ দিন? তিনি বলেন আমি (উত্তর দিতে) অস্বীকার করি। তারা বলে, চল্লিশ বছর? তিনি বলেন আমি (উত্তর দিতে) অস্বীকার করি। তারা বলেঃ চল্লিশ মাস? তিনি বলেন, আমি (জবাব দিতে) অস্বীকার করে যোগ করলাম "মেরুদন্ডের হাঁড় ছাড়া মানুষের সব কিছুই পচে-গলে যাবে, এ হাঁড় দ্বারা তারা গোটা দেহের পত্তন হবে। (বুখারী, হাদীস নং ৪৮১৪)

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٠﴾

৭০. প্রত্যেক ব্যক্তি যা আমল করেছে তার পূর্ণ প্রতিফল পাবে। তারা যা করে সে সম্পর্কে আল্লাহ সর্বাধিক জ্ঞাত।

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧١﴾

৭১. কাফিরদেরকে জাহান্নামের দিকে দলে দলে হাঁকিয়ে নিয়ে যাওয়া হবে। যখন তারা জাহান্নামের নিকট উপস্থিত হবে তখন ওর প্রবেশ দ্বারগুলো খুলে দেয়া হবে এবং জাহান্নামের দারোয়ানরা তাদেরকে বলবেঃ তোমাদের নিকট কি তোমাদের মধ্য হতে রাসূলগণ আসেন নি যারা তোমাদের নিকট তোমাদের প্রতিপালকের আয়াত তেলাওয়াত করতেন এবং তোমাদেরকে এই দিনের সাক্ষাত সম্বন্ধে সতর্ক করতেন? তারা বলবেঃ অবশ্যই এসেছিলেন। প্রকৃতপক্ষে কাফিরদের প্রতি শাস্তির হুকুম বাস্তবায়িত হয়েছে।

قِيْلَ ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٢﴾

৭২. তাদেরকে বলা হবেঃ জাহান্নামের দ্বারসমূহে প্রবেশ কর তাতে স্থায়ীভাবে অবস্থানের জন্যে। কত নিকৃষ্ট অহংকারকারীদের আবাসস্থল!

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ﴿٧٣﴾

৭৩. যারা তাদের প্রতিপালককে ভয় করতো তাদেরকে দলে দলে জান্নাতের দিকে নিয়ে যাওয়া হবে। যখন তারা জান্নাতের নিকট উপস্থিত হবে ও এর দ্বারসমূহ খুলে দেয়া হবে এবং জান্নাতের দারোয়ানরা তাদেরকে বলবেঃ তোমাদের প্রতি সালাম, তোমরা সুখী হও এবং জান্নাতে প্রবেশ কর স্থায়ীভাবে অবস্থানের জন্যে।

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿٧٤﴾

৭৪. যাবতীয় প্রশংসা আল্লাহর, যিনি আমাদের প্রতি তাঁর প্রতিশ্রুতি পূর্ণ করেছেন এবং আমাদেরকে অধিকারী করেছেন এই ভূমির; আমরা জান্নাতে যেখানে ইচ্ছা বসবাস করবো। সুতরাং (সৎ) আমলকারীদের বিনিময় কত উত্তম!

وَتَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ وَقُضِىَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٥﴾

৭৫. এবং তুমি ফেরেশতাদেরকে দেখতে পাবে যে, তারা আরশের চতুস্পার্শ্বে ঘিরে তাদের প্রতিপালকের সপ্রশংস পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করছে। আর তাদের বিচার করা হবে ইনসাফ ভিত্তিক; বলা হবেঃ সমস্ত প্রশংসা জগতসূহের প্রতিপালক আল্লাহর প্রাপ্য।

سُوْرَةُ الْمُؤْمِنِ مَكِّيَّةٌ

সূরাঃ মু'মিন, মাক্কী

اٰيَاتُهَا ٨٥ رُكُوْعَاتُهَا ٩

(আয়াতঃ ৮৫, রুকূ'ঃ ৯)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

حٰمٓ ﴿١﴾

১. হা-মীম,

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٢﴾

২. এই কিতাব অবতীর্ণ হয়েছে পরাক্রমশালী সর্বজ্ঞ আল্লাহ্‌র নিকট হতে—

غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِى الطَّوْلِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿٣﴾

৩. যিনি পাপ ক্ষমাকারী, তাওবা কবূলকারী, যিনি শাস্তিদানে কঠোর, শক্তিশালী। তিনি ব্যতীত (সত্য) কোন মা'বূদ নেই। তাঁরই নিকট প্রত্যাবর্তন।

مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ۝٤

৪. শুধু কাফিররাই আল্লাহর নিদর্শন সম্বন্ধে ঝগড়া করে; সুতরাং শহরগুলিতে তাদের অবাধ বিচরণ যেন তোমাকে ধোকায় না ফেলে।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّالْاَحْزَابُ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۖ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۭ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ ۖ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝٥

৫. তাদের পূর্বে নূহ (عليه السلام)-এর সম্প্রদায় এবং তাদের পরে অন্যান্য দলও মিথ্যারোপ করেছিল। প্রত্যেক সম্প্রদায় নিজ নিজ রাসূলকে গ্রেফতার করবার চক্রান্ত করেছিল এবং তারা বাজে তর্কে লিপ্ত হয়েছিল, এর দ্বারা সত্যকে নষ্ট করে দেয়ার জন্যে; ফলে আমি তাদেরকে পাকড়াও করলাম এবং কত কঠোর ছিল আমার শাস্তি!

وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۝٦

৬. এভাবে কাফিরদের ক্ষেত্রে সাব্যস্ত হয়ে গেল তোমার প্রতিপালকের বাণী– এরা অবশ্যই জাহান্নামী।

اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۝٧

৭. যারা আরশ ধারণ করে আছে এবং যারা এর চতুস্পার্শ্বে রয়েছে, তারা তাদের প্রতিপালকের পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে প্রশংসার সাথে এবং তাতে বিশ্বাস স্থাপন করে এবং মু'মিনদের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করে (বলেঃ) হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি সকল কিছুকেই (তোমার) রহমত ও জ্ঞান দ্বারা পরিবেষ্টন করেছ, অতএব যারা তাওবা করে ও আপনার পথের অনুসরণ করে আপনি তাদেরকে ক্ষমা করুন এবং তাদেরকে জাহান্নামের শাস্তি হতে রক্ষা করুন!

رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ الَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ

৮. হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি তাদেরকে প্রবেশ করান স্থায়ী

صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَ ذُرِّيّٰتِهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٨

জান্নাতে, যার অঙ্গীকার আপনি তাদেরকে দিয়েছেন এবং তাদের বাপ-দাদা, স্ত্রী ও সন্তান-সন্ততির মধ্যে যারা সৎকর্ম করেছে তাদেরকেও। আপনি তো পরাক্রম-শালী, প্রজ্ঞাবান।

وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ؕ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ؕ وَ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝٩

৯. এবং আপনি তাদেরকে মন্দকাজসমূহ হতে রক্ষা করুন, আপনি যাকে মন্দকাজসমূহ হতে রক্ষা করেন, ঐদিন তো তার প্রতি অনুগ্রহই করলেন, এটাই তো মহা সাফল্য।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ اِذْ تُدْعَوْنَ اِلَى الْاِيْمَانِ فَتَكْفُرُوْنَ ۝١٠

১০. নিশ্চয়ই যারা কুফরী করেছে তাদেরকে আহ্বান করা হবেঃ তোমাদের নিজেদের প্রতি তোমাদের ক্ষোভ অপেক্ষা আল্লাহ্‌র অসন্তুষ্টি ছিল অনেক বড়, যখন তোমাদেরকে ঈমানের প্রতি আহ্বান করা হতো তখন তোমরা তা অস্বীকার করতে।

قَالُوْا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَ اَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ ۝١١

১১. তারা বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি আমাদেরকে মৃত অবস্থায় দু'বার রেখেছেন এবং দু'বার আমাদেরকে প্রাণ দিয়েছেন। আমরা আমাদের অপরাধ স্বীকার করছি; এখন বহির্গমনের (নিস্কৃতির জন্য) কোন পথ মিলবে কি?

ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗٓ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ ۚ وَ اِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ؕ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ۝١٢

১২. তোমাদের (এই শাস্তি তো) এই জন্যে যে, যখন এক আল্লাহকে ডাকা হতো তখন তোমরা তাঁকে অস্বীকার করতে এবং আল্লাহ্‌র শরীক স্থির করা হলে তোমরা তা মেনে নিতে। বস্তুতঃ সমুচ্চ মহান আল্লাহ্‌রই সমস্ত

কর্তৃত্ব ১

هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ رِزْقًا ؕ وَمَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ ﴿١٣﴾

১৩. তিনিই তোমাদেরকে তাঁর নিদর্শনাবলী দেখান এবং আকাশ হতে অবতীর্ণ করেন তোমাদের জন্যে রিযিক; আল্লাহর অভিমুখী ব্যক্তিরই উপদেশ গ্রহণ করে থাকে।

فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١٤﴾

১৪. সুতরাং তোমরা আল্লাহকে ডাকো তাঁর ইবাদতে একনিষ্ঠ হয়ে, যদিও কাফিররা এটা অপছন্দ করে।

رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ ۚ يُلْقِي الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ﴿١٥﴾

১৫. তিনি সমুচ্চ মর্যাদার অধিকারী, আরশের অধিপতি, তিনি তাঁর বান্দাদের মধ্যে যার প্রতি ইচ্ছা রূহ (ওহী) প্রেরণ করেন স্বীয় আদেশসহ, যাতে সে সতর্ক করতে পারে সাক্ষাত (কিয়ামত) দিবস সম্পর্কে।

يَوْمَ هُمْ بٰرِزُوْنَ ۚ لَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ؕ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ؕ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿١٦﴾

১৬. যেদিন তারা (করব হতে) বের হয়ে পড়বে, সেদিন আল্লাহর নিকট তাদের কিছুই গোপন থাকবে না। (আল্লাহ জিজ্ঞাসা করবেন) আজ কর্তৃত্ব কার? এক পরাক্রমশালী আল্লাহরই।

اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ؕ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٧﴾

১৭. আজ প্রত্যেক ব্যক্তিকে তার কৃতকর্মের বিনিময় দেয়া হবে; আজ কারো প্রতি যুলুম করা হবে না। নিশ্চয়ই আল্লাহ দ্রুত হিসাব সম্পন্নকারী।

১। আব্দুল্লাহ্ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেনঃ একদিন নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) একটি কথা বললেন। আমি (তার বিপরীতে) আরেকটি কথা বললাম। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ কেউ যদি এমন অবস্থায় মৃত্যুবরণ করে যে, সে আল্লাহ্র সাথে অন্য কাউকে শরীক করে বা সমকক্ষ হওয়ার দাবী করে তবে সে জাহান্নামে যাবে। আমি বললাম, আর কেউ যদি এমন অবস্থায় মৃত্যুবরণ করে যে, সে আল্লাহ্র সাথে আর কাউকে শরীক বা সমকক্ষ মনে করলো না, তাহলে সে জান্নাতে প্রবেশ করবে। (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৯৭)

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ؕ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ يُّطَاعُ ؕ ﴿١٨﴾

১৮. তাদেরকে সতর্ক করে দাও আসন্ন দিন (কিয়ামত) সম্পর্কে দুঃখ-কষ্টে তাদের প্রাণ কণ্ঠাগত হবে। যালিমদের জন্যে কোন অন্তরঙ্গ বন্ধু নেই এবং যার সুপারিশ গ্রাহ্য হবে এমন কোন সুপারিশ-কারীও নেই।

يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُوْرُ ﴿١٩﴾

১৯. চক্ষুর অপব্যবহার ও অন্তরে যা গোপন আছে সে সম্বন্ধে তিনি অবহিত।

وَاللّٰهُ يَقْضِيْ بِالْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَقْضُوْنَ بِشَيْءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿٢٠﴾

২০. আল্লাহই ফয়সালা করেন ইনসাফের সাথে; আল্লাহর পরিবর্তে তারা যাদেরকে ডাকে তারা ফয়সালা করতে অক্ষম। নিশ্চয়ই আল্লাহ সর্বশ্রোতা, সর্বদ্রষ্টা।

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ كَانُوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِي الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٢١﴾

২১. তারা কি পৃথিবীতে ভ্রমণ করে না? করলে দেখতো– তাদের পূর্ববর্তীদের পরিণাম কি হয়েছিল। পৃথিবীতে তারা ছিল এদের অপেক্ষা শক্তিতে এবং কীর্তিতে প্রবলতর, অতঃপর আল্লাহ তাদেরকে শাস্তি দিয়েছিলেন তাদের অপরাধের জন্যে এবং আল্লাহর শাস্তি হতে তাদেরকে রক্ষা করবার কেউ ছিল না।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٢﴾

২২. এটা এ জন্যে যে, তাদের নিকট তাদের রাসূলগণ নিদর্শনাবলীসহ আসলে তারা তাদেরকে অস্বীকার করেছিল। ফলে আল্লাহ তাদেরকে পাকড়াও করলেন। নিশ্চয়ই তিনি তো মহা শক্তিশালী, শাস্তি দানে কঠোর।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٣﴾

২৩. আমি আমার নিদর্শনাবলী ও স্পষ্ট প্রমাণসহ মূসা (عليه السلام)-কে প্রেরণ করেছিলাম।

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَٰنَ وَقَٰرُونَ فَقَالُوا۟ سَٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٢٤﴾

২৪. ফিরআ'উন, হামান ও কারূনের নিকট; কিন্তু তারা বলেছিলঃ এ তো এক যাদুকর, চরম মিথ্যাবাদী।

فَلَمَّا جَآءَهُم بِٱلْحَقِّ مِنْ عِندِنَا قَالُوا۟ ٱقْتُلُوٓا۟ أَبْنَآءَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مَعَهُۥ وَٱسْتَحْيُوا۟ نِسَآءَهُمْ ۚ وَمَا كَيْدُ ٱلْكَٰفِرِينَ إِلَّا فِى ضَلَٰلٍ ﴿٢٥﴾

২৫. অতঃপর যখন (মূসা (عليه السلام)) আমার নিকট হতে সত্য নিয়ে তাদের নিকট উপস্থিত হলেন তখন তারা বললোঃ মূসা (عليه السلام)-এর উপর যারা ঈমান এনেছে, তাদের পুত্র সন্তানদেরকে হত্যা কর এবং তাদের নারীদেরকে জীবিত রাখো; কিন্তু কাফিরদের ষড়যন্ত্র ব্যর্থ হবেই।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِىٓ أَقْتُلْ مُوسَىٰ وَلْيَدْعُ رَبَّهُۥٓ ۖ إِنِّىٓ أَخَافُ أَن يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَن يُظْهِرَ فِى ٱلْأَرْضِ ٱلْفَسَادَ ﴿٢٦﴾

২৬. ফিরআ'উন বললোঃ আমাকে ছেড়ে দাও আমি মূসা (عليه السلام)-কে হত্যা করি এবং সে তার প্রতিপালককে ডাকুক। আমি আশঙ্কা করি যে, সে তোমাদের দ্বীনকে পরিবর্তন করে ফেলবে অথবা সে পৃথিবীতে বিপর্যয় সৃষ্টি করবে।

وَقَالَ مُوسَىٰٓ إِنِّى عُذْتُ بِرَبِّى وَرَبِّكُم مِّن كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ ٱلْحِسَابِ ﴿٢٧﴾

২৭. মূসা (عليه السلام) বললেনঃ যারা হিসাব দিবসে বিশ্বাস করে না, সেই সব অহংকারী ব্যক্তি হতে আমি আমার ও তোমাদের প্রতিপালকের আশ্রয় প্রার্থনা করছি।

وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ مِّنْ ءَالِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ إِيمَٰنَهُۥٓ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَن يَقُولَ رَبِّىَ ٱللَّهُ وَقَدْ جَآءَكُم بِٱلْبَيِّنَٰتِ مِن رَّبِّكُمْ ۖ وَإِن يَكُ كَٰذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُۥ ۖ وَإِن يَكُ صَادِقًا يُصِبْكُم بَعْضُ ٱلَّذِى يَعِدُكُمْ ۖ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهْدِى مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ﴿٢٨﴾

২৮. ফিরআ'উন বংশের এক ব্যক্তি যে মু'মিন ছিল এবং নিজ ঈমান গোপন রাখতো, বললোঃ তোমরা কি এ ব্যক্তিকে এ জন্যে হত্যা করবে যে, সে বলেঃ আমার প্রতিপালক আল্লাহ অথচ সে তোমাদের প্রতিপালকের নিকট হতে সুস্পষ্ট প্রমাণসহ তোমাদের নিকট এসেছে? সে মিথ্যাবাদী হলে তার মিথ্যার প্রতিফল সে ভোগ করবে, আর যদি সে সত্যবাদী হয় তবে সে

তোমাদেরকে যে শাস্তির কথা বলে তার কিছু তো তোমাদের উপর আপতিত হবেই। আল্লাহ সীমলঙ্ঘনকারী ও মিথ্যাবাদীকে সৎপথে পরিচালিত করেন না।

২৯. হে আমার সম্প্রদায়! আজ কর্তৃত্ব তোমাদের, দেশে তোমরাই প্রবল; কিন্তু আমাদের উপর আল্লাহর শাস্তি এসে পড়লে কে আমাদেরকে সাহায্য করবে? ফিরআ'উন বললোঃ আমি যা বুঝি, আমি তোমাদেরকে তা-ই বলছি। আমি তোমাদেরকে শুধু সৎপথই দেখিয়ে থাকি।

يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظٰهِرِيْنَ فِي الْاَرْضِ ز فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَاْسِ اللّٰهِ اِنْ جَآءَنَا ط قَالَ فِرْعَوْنُ مَآ اُرِيْكُمْ اِلَّا مَآ اَرٰى وَمَآ اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٢٩﴾

৩০. মু'মিন ব্যক্তিটি বললোঃ হে আমার সম্প্রদায়! আমি তোমাদের জন্যে পূর্ববর্তী সম্প্রদায়সমূহের (শাস্তির) দিনের অনুরূপ আশঙ্কা করি।

وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ الْاَحْزَابِ ﴿٣٠﴾

৩১. যেমন ঘটেছিল নূহ (عليه السلام)-এর সম্প্রদায়, আ'দ, সামূদ এবং তাদের পরবর্তীদের ক্ষেত্রে। আল্লাহ তো বান্দাদের প্রতি কোন যুলুম করতে চান না।

مِثْلَ دَاْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ط وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ﴿٣١﴾

৩২. হে আমার সম্প্রদায়! আমি তোমাদের জন্যে আশঙ্কা করি ফরিয়াদ দিবসের।

وَيٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ﴿٣٢﴾

৩৩. যেদিন তোমরা পশ্চাৎ ফিরে পলায়ন করতে চাইবে, আল্লাহর শাস্তি হতে তোমাদেরকে রক্ষা করবার কেউ থাকবে না। আল্লাহ যাকে পথভ্রষ্ট করেন তার জন্যে কোন পথ প্রদর্শক নেই।

يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ج مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ج وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾

৩৪. পূর্বেও তোমাদের নিকট ইউসুফ (عليه السلام) এসেছিল স্পষ্ট নিদর্শনসহ;

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ

فِيْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ ؕ حَتّٰۤى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ۚ﴿٣٤﴾

কিন্তু সে যা নিয়ে এসেছিল তোমরা তাতে বারবার সন্দেহ পোষণ করতে। পরিশেষে যখন তাঁর মৃত্যু হলো তখন তোমরা বলেছিলেঃ তারপরে আল্লাহ আর কখনও কাউকেও রাসূল করে প্রেরণ করবেন না। এভাবে আল্লাহ বিভ্রান্ত করেন সীমালঙ্ঘনকারী ও সংশয়শীল-দেরকে।

الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ؕ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ﴿٣٥﴾

৩৫. যারা নিজেদের নিকট কোন দলীল প্রমাণ না থাকা সত্ত্বেও আল্লাহর নিদর্শন সম্পর্কে বিতর্কে লিপ্ত হয় (তাদের এ কর্ম) আল্লাহ এবং মু'মিনদের নিকট অতিশয় ঘৃণার। এভাবে আল্লাহ প্রত্যেক অহংকারী ও স্বৈরাচারী ব্যক্তির হৃদয়কে মোহর করে দেন।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْۤ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ﴿٣٦﴾

৩৬. ফিরআ'উন বললোঃ হে হামান! আমার জন্যে তুমি নির্মাণ কর এক সুউচ্চ প্রাসাদ যাতে আমি দরজা সমূহে পৌঁছি–

اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ فَاَطَّلِعَ اِلٰۤى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ؕ وَكَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ﴿٣٧﴾

৩৭. আসমানসমূহের দরজা, যেন আমি দেখতে পাই মূসা (عليه السلام)-এর মা'বূদকে; তবে আমি তো তাকে মিথ্যাবাদী মনে করি। এভাবেই ফিরাউনের নিকট শোভনীয় করা হয়েছিল তার মন্দ কর্মকে এবং তাকে প্রতিহত করা হয়েছিল সরল পথ হতে এবং ফিরাআ'উনের ষড়যন্ত্র ব্যর্থ হয়েছিল সম্পূর্ণরূপে।

وَقَالَ الَّذِيْۤ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٣٨﴾

৩৮. যে ব্যক্তিটি ঈমান এনেছিল সে বললোঃ হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা আমার অনুসরণ কর, আমি তোমাদেরকে সঠিক পথে পরিচালিত করবো।

يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ز وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ﴿٣٩﴾

৩৯. হে আমার সম্প্রদায়! এ পার্থিব জীবন তো (অস্থায়ী) উপভোগের এবং আখিরাতই হচ্ছে চিরস্থায়ী আবাস।

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا ج وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٤٠﴾

৪০. কেউ মন্দ আমল করলে সে শুধু তার আমলের অনুরূপ শাস্তি পাবে এবং পুরুষ কিংবা নারীর মধ্যে যারা মু'মিন হয়ে সৎ আমল করে তারা প্রবেশ করবে জান্নাতে, সেখানে তারা অসংখ্য রিযিক পাবে।

وَيٰقَوْمِ مَا لِيْٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَى النَّارِ ﴿٤١﴾

৪১. হে আমার সম্প্রদায়! এ কেমন কথা! আমি তোমাদেরকে আহ্বান করছি মুক্তির দিকে, আর তোমরা আমাকে আহ্বান করছো জাহান্নামের দিকে!

تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ز وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ﴿٤٢﴾

৪২. তোমরা আমাকে আল্লাহকে অস্বীকার করতে এবং তাঁর শরীক স্থাপন করতে ডাকছ, যা সম্পর্কে আমার কোন জ্ঞান নেই; পক্ষান্তরে আমি তোমাদেরকে আহ্বান করছি পরাক্রমশালী, ক্ষমাশীল আল্লাহর দিকে।

لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ مَرَدَّنَآ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٤٣﴾

৪৩. নিশ্চয়ই তোমরা আমাকে ডাকছ এমন একজনের দিকে যে দুনিয়া ও আখিরাতে কোথাও আহ্বানযোগ্য নয়। বস্তুতঃ আমাদের প্রত্যাবর্তন তো আল্লাহর নিকট এবং সীমা-লঙ্ঘনকারীরাই জাহান্নামের অধিবাসী।

فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ ط وَاُفَوِّضُ اَمْرِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ط اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٤٤﴾

৪৪. সুতরাং আমি তোমাদেরকে যা বলছি, তোমরা তা অচিরেই স্মরণ করবে এবং আমি আমার ব্যাপার আল্লাহর নিকট সমর্পণ করছি; নিশ্চয়ই আল্লাহ তাঁর বান্দাদের প্রতি বিশেষ দৃষ্টি রাখেন।

فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ﴿٤٥﴾

৪৫. অতঃপর আল্লাহ তাঁকে তাদের ষড়যন্ত্রের অনিষ্ট হতে রক্ষা করলেন এবং নিকৃষ্ট শাস্তি পরিবেষ্টন করলো ফিরআ'উন-সম্প্রদায়কে।

اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۫ اَدْخِلُوْٓا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿٤٦﴾

৪৬. সকাল-সন্ধ্যায় তাদেরকে উপস্থিত করা হয় আগুনের সম্মুখে এবং যেদিন কিয়ামত ঘটবে সেদিন (বলা হবেঃ) ফিরআ'উন সম্প্রদায়কে নিক্ষেপ কর কঠিন শাস্তিতে।

وَاِذْ يَتَحَآجُّوْنَ فِى النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ﴿٤٧﴾

৪৭. যখন তারা জাহান্নামে পরস্পর ঝগড়ায় লিপ্ত হবে তখন দুর্বলেরা অহংকারীদেরকে বলবেঃ আমরা তো তোমাদেরই অনুসারী ছিলাম, এখন কি তোমরা আমাদের হতে জাহান্নামের আগুনের কোন অংশ নিবারণ করতে পারবে?

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿٤٨﴾

৪৮. দাম্ভিকেরা বলবেঃ আমরা সবাই তো জাহান্নামে আছি; নিশ্চয়ই আল্লাহ বান্দাদের ফয়সালা করে ফেলেছেন।

وَقَالَ الَّذِيْنَ فِى النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ﴿٤٩﴾

৪৯. জাহান্নামের অধিবাসিরা তার প্রহরীদেরকে বলবেঃ তোমাদের প্রতিপালকের নিকট প্রার্থনা কর তিনি যেন আমাদের হতে একদিন আযাব হ্রাস করেন।

قَالُوْٓا اَوَلَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ قَالُوْا بَلٰى ؕ قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ وَمَا دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِىْ ضَلٰلٍ ﴿٥٠﴾

৫০. তারা বলবেঃ তোমাদের নিকট কি নিদর্শনাবলীসহ তোমাদের রাসূলগণ আসেনি? জাহান্নামীরা বলবেঃ অবশ্যই এসেছিল। প্রহরীরা বলবেঃ তবে তোমরাই প্রার্থনা কর, আর কাফিরদের প্রার্থনা ব্যর্থই হয়।

اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ﴿٥١﴾

৫১. নিশ্চয়ই আমি আমার রাসূলদের ও মু'মিনদেরকে সাহায্য করবো পার্থিব জীবনে এবং যেদিন সাক্ষীগণ দন্ডয়মান হবে।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿٥٢﴾

৫২. যেদিন যালিমদের কোন আপত্তি কোন উপকারে আসবে না, তাদের জন্যে রয়েছে লা'নত এবং তাদের জন্যে রয়েছে নিকৃষ্ট আবাস।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى وَاَوْرَثْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ ﴿٥٣﴾

৫৩. আমি অবশ্যই মূসা (عليه السلام)-কে দান করেছিলাম পথ-নির্দেশ এবং বানী ইসরাঈলকে উত্তরাধিকারী করেছিলাম সেই কিতাবের,

هُدًى وَّذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿٥٤﴾

৫৪. পথ-নির্দেশ ও উপদেশ বোধশক্তি সম্পন্ন লোকদের জন্যে।

فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ﴿٥٥﴾

৫৫. অতএব তুমি ধৈর্যধারণ কর; নিশ্চয়ই আল্লাহর প্রতিশ্রুতি সত্য, তুমি তোমার ত্রুটির জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা কর এবং সকাল-সন্ধ্যায় তোমার প্রতিপালকের সপ্রশংসা পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা কর।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ بِبَالِغِيْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿٥٦﴾

৫৬. যারা নিজেদের নিকট কোন দলীল না থাকলেও আল্লাহর নিদর্শন সম্পর্কে বিতর্কে লিপ্ত হয়, তাদের অন্তরে আছে শুধু অহংকার, যা সফল হবার নয়। অতএব আল্লাহর শরণাপন্ন হও, তিনি তো সর্বশ্রোতা, সর্বদ্রষ্টা।

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٧﴾

৫৭. মানব সৃজন অপেক্ষা আকাশ-মন্ডলী ও পৃথিবীর সৃষ্টি অবশ্যই অনেক বড় কাজ; কিন্তু অধিকাংশ মানুষ এটা জানে না।

وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا الْمُسِيْٓءُ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٨﴾

৫৮. সমান নয় অন্ধ ও দৃষ্টিশক্তি সম্পন্ন এবং যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে এবং যারা গুনাহগার। তোমরা অল্পই উপদেশ গ্রহণ করে থাকো।

إِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيهَا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٥٩﴾

৫৯. কিয়ামত অবশ্যম্ভাবী, এতে কোন সন্দেহ নেই; কিন্তু অধিকাংশ লোক বিশ্বাস করে না।

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ﴿٦٠﴾

৬০. তোমাদের প্রতিপালক বলেনঃ তোমরা আমাকে ডাকো, আমি তোমাদের ডাকে সাড়া দিবো। যারা অহংকারে আমার ইবাদত বিমুখ, তারা অবশ্যই জাহান্নামে প্রবেশ করবে লাঞ্ছিত হয়ে।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦١﴾

৬১. আল্লাহই তোমাদের বিশ্রামের জন্যে সৃষ্টি করেছেন রাত্রি এবং আলোকোজ্জ্বল করেছেন দিবসকে। আল্লাহ তো মানুষের প্রতি অনুগ্রহশীল; কিন্তু অধিকাংশ মানুষ কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে না।

ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ﴿٦٢﴾

৬২. তিনি আল্লাহ, তোমাদের প্রতিপালক, সব কিছুর স্রষ্টা; তিনি ব্যতীত (সত্য) কোন মা'বূদ নেই, সুতরাং তোমরা কোথায় পথভ্রষ্ট হয়ে ঘুরছ?

كَذَٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿٦٣﴾

৬৩. এভাবেই পথভ্রষ্ট হয়ে তারা ঘুরে, যারা আল্লাহর নিদর্শনাবলীকে অস্বীকার করে।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ ۖ فَتَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٤﴾

৬৪. আল্লাহই তোমাদের জন্যে পৃথিবীকে করেছেন বাসোপযোগী এবং আকাশকে করেছেন ছাদ এবং তোমাদের আকৃতি গঠন করেছেন এবং তোমাদের আকৃতি করেছেন উৎকৃষ্ট এবং তোমাদেরকে দান করেছেন উৎকৃষ্ট রিযিক। এই তো আল্লাহ, তোমাদের প্রতিপালক। কত মহান জগতসমূহের প্রতিপালক আল্লাহ!

هُوَ الْحَيُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٥﴾

৬৫. তিনি চিরঞ্জীব, তিনি ব্যতীত (সত্য) কোন মা'বূদ নেই; সুতরাং তোমরা তাঁকেই ডাকো, তাঁর ইবাদতে একনিষ্ঠ হয়ে। যাবতীয় প্রশংসা জগতসমূহের প্রতিপালক আল্লাহরই প্রাপ্য।

قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِيَ الْبَيِّنٰتُ مِنْ رَّبِّيْ ز وَاُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٦﴾

৬৬. বলঃ আমার প্রতিপালকের নিকট হতে আমার নিকট নিদর্শন আসার পরেও তোমরা আল্লাহ ব্যতীত যাদেরকে আহ্বান কর, তাদের ইবাদত করতে আমাকে নিষেধ করা হয়েছে এবং আমি আদিষ্ট হয়েছি জগতসমূহের প্রতিপালকের নিকট আত্মসমর্পণ করতে।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُيُوْخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾

৬৭. তিনিই তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন মাটি হতে, পরে শুক্রবিন্দু হতে, তারপর রক্তপিন্ড হতে, তারপর তোমাদেরকে বের করেন শিশুরূপে, অতঃপর যেন তোমরা উপনীত হও যৌবনে, তারপর হও বৃদ্ধ। তোমাদের মধ্যে কারো এর পূর্বেই মৃত্যু ঘটে এবং এটা এজন্যে যে, তোমরা নির্ধারিত কাল পৌঁছে যাও এবং যাতে তোমরা অনুধাবন করতে পার।

هُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٦٨﴾ ع

৬৮. তিনিই জীবন দান করেন ও মৃত্যু ঘটান এবং যখন তিনি কিছু করার সিদ্ধান্ত নেন তখন তিনি বলেনঃ হও এবং তা হয়ে যায়।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ اَنّٰى يُصْرَفُوْنَ ﴿٦٩﴾ ۙ

৬৯. তুমি কি লক্ষ্য কর না তাদের প্রতি যারা আল্লাহর নির্দশনসমূহ সম্পর্কে পরস্পর বিতর্ক করে? কিভাবে তাদেরকে পরিচালিত করা হচ্ছে?

الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۗ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۙ﴿٧٠﴾

৭০. যারা অস্বীকার করে কিতাব ও যা সহ আমি রাসূলদেরকে প্রেরণ করেছিলাম তা, শীঘ্রই তারা জানতে পারবে–

اِذِ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ ۗ يُسْحَبُوْنَ ۙ﴿٧١﴾

৭১. যখন তাদের গলদেশে বেড়ি ও শৃঙ্খল থাকবে, তাদেরকে টেনে নিয়ে যাওয়া হবে।

فِي الْحَمِيْمِ ۙ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُوْنَ ۚ﴿٧٢﴾

৭২. ফুটন্ত পানিতে, অতঃপর তাদেরকে দগ্ধ করা হবে অগ্নিতে।

ثُمَّ قِيْلَ لَهُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ۙ﴿٧٣﴾

৭৩. পরে তাদেরকে বলা হবেঃ কোথায় তারা যাদেরকে তোমরা (তাঁর) শরীক করতে;

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا مِنْ قَبْلُ شَيْـًٔا ۗ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾

৭৪. আল্লাহ ব্যতীত? তারা বলবেঃ তারা তো আমাদের নিকট হতে অদৃশ্য হয়েছে; বস্তুতঃ পূর্বে আমরা এমন কিছুকেই আহ্বান করিনি। এভাবে আল্লাহ কাফিরদেরকে বিভ্রান্ত করেন।

ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُوْنَ ۚ﴿٧٥﴾

৭৫. এটা এই কারণে যে, তোমরা পৃথিবীতে অযথা উল্লাস করতে এবং এই কারণে যে, তোমরা দম্ভ করতে।

اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٦﴾

৭৬. তোমরা জাহান্নামের দ্বার সমূহে প্রবেশ কর তাতে স্থায়ীভাবে অবস্থানের জন্যে, আর কতই না নিকৃষ্ট অহংকারীদের আবাসস্থল!

فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٧٧﴾

৭৭. সুতরাং তুমি ধৈর্যধারণ কর। আল্লাহর অঙ্গীকার সত্য। আমি তাদেরকে যে অঙ্গীকার প্রদান করি তার কিছু যদি দেখিয়েই দেই অথবা তোমার মৃত্যু ঘটাই– তাদের প্রত্যাবর্তন তো আমারই নিকট।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ

৭৮. আমি তো তোমার পূর্বে অনেক রাসূল প্রেরণ করেছিলাম; তাদের

قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۗ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٧٨﴾

কারো কারো কথা তোমার নিকট বর্ণনা করেছি এবং কারো কারো কথা তোমার নিকট বর্ণনা করিনি। আল্লাহর অনুমতি ছাড়া কোন নিদর্শন উপস্থিত করা কোন রাসূলের কাজ নয়। আল্লাহর আদেশ আসলে ন্যায়-সঙ্গতভাবে ফায়সালা হয়ে যাবে। তখন বাতিল পন্থীরা ক্ষতিগ্রস্ত হবে।

اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٩﴾

৭৯. আল্লাহ্ই তোমাদের জন্যে চতুষ্পদ জন্তু সৃষ্টি করেছেন, তার কতক তোমরা আরোহণ করে থাকো এবং কতক তোমরা আহারও করে থাকো।

وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿٨٠﴾

৮০. এতে তোমাদের জন্যে রয়েছে প্রচুর উপকার, তোমরা যা প্রয়োজন বোধ কর, এটা দ্বারা তা পূর্ণ করে থাকো, এবং এদের উপর ও নৌযানের উপর তোমাদেরকে বহন করা হয়।

وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ ۗ فَاَيَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُنْكِرُوْنَ ﴿٨١﴾

৮১. তিনি তোমাদেরকে তাঁর নিদর্শনাবলী দেখিয়ে থাকেন। সুতরাং তোমরা আল্লাহর নিদর্শন-সমূহের কোন্‌টি অস্বীকার করবে।

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ كَانُوْٓا اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَاَشَدَّ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِي الْاَرْضِ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾

৮২. তারা কি পৃথিবীতে ভ্রমণ করেনি ও দেখেনি তাদের পূর্ববর্তীদের কি পরিণাম হয়েছিল? পৃথিবীতে তারা ছিল এদের অপেক্ষা সংখ্যায় অধিক এবং শক্তিতে ও কীর্তিতে অধিক প্রবল। তারা যা করতো তা তাদের কোন কাজে আসেনি।

فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ

৮৩. তাদের নিকট যখন নিদর্শনাবলীসহ তাদের রাসূলগণ আসতো তখন তারা নিজেদের জ্ঞানের দম্ভ করতো। তারা যা নিয়ে

يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٨٣﴾

ঠাট্টা-বিদ্রূপ করতো তা তাদেরকে বেষ্টন করলো।

فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِيْنَ ﴿٨٤﴾

৮৪. অতঃপর যখন তারা আমার শাস্তি প্রত্যক্ষ করলো তখন বললোঃ আমরা এক আল্লাহতেই ঈমান আনলাম এবং আমরা তাঁর সাথে যাদেরকে শরীক করতাম তাদেরকে প্রত্যাখ্যান করলাম।

فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا ؕ سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ فِيْ عِبَادِهٖ ۚ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾

৮৫. তারা যখন আমার শাস্তি প্রত্যক্ষ করলো তখন তাদের ঈমান তাদের কোন উপকারে আসলো না। আল্লাহর এই বিধান পূর্ব হতেই তাঁর বান্দাদের মধ্যে চলে আসছে এবং সে ক্ষেত্রে কাফিররা ক্ষতিগ্রস্ত হয়।

سُوْرَةُ حٰمٓ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ

সূরাঃ হা-মীম আস্‌সাজদাহ, মাক্কী

اٰيَاتُهَا ٥٤ رُكُوْعَاتُهَا ٦

(আয়াতঃ ৫৪, রুকূ'ঃ ৬)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

حٰمٓ ﴿١﴾

১. হা-মীম।

تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٢﴾

২. এটা দয়াময়, পরম দয়ালুর নিকট হতে অবতীর্ণ।

كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٣﴾

৩. এটা (এমন) এক কিতাব, বিশদভাবে বর্ণনা করা হয়েছে এর আয়াতসমূহ, আরবী ভাষায় কুরআন-রূপে জ্ঞানী সম্প্রদায়ের জন্যে।

بَشِيْرًا وَّ نَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٤﴾

৪. সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারীরূপে; কিন্তু তাদের অধিকাংশই বিমুখ হয়েছে। সুতরাং তারা শুনবে না।

وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ۝٥

৫. তারা বলেঃ তুমি যার প্রতি আমাদেরকে আহ্বান করছো সে বিষয়ে আমাদের অন্তর আবরণ আচ্ছাদিত, কর্ণে আছে বধিরতা এবং তোমার ও আমাদের মধ্যে আছে অন্তরায়; সুতরাং তুমি তোমার কাজ কর এবং আমরা আমাদের কাজ করি।

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْٓا اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ۝٦

৬. বলঃ আমি তো তোমাদের মতই একজন মানুষ, আমার প্রতি ওহী হয় যে, তোমাদের মা'বূদ একমাত্র মা'বূদ। অতএব তাঁরই পথ দৃঢ়ভাবে অবলম্বন কর এবং তারই নিকট ক্ষমা প্রার্থনা কর। দুর্ভোগ অংশীবাদীদের জন্যে—

الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝٧

৭. যারা যাকাত প্রদান করে না এবং তারা আখিরাতেও অবিশ্বাসী।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝٨

৮. যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে তাদের জন্যে রয়েছে অবিচ্ছিন্ন পুরস্কার।

قُلْ اَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ۗ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٩

৯. বলঃ তোমরা কি তাঁকে অস্বীকার করবেই যিনি পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন দুই দিনে এবং তোমরা তাঁর সমকক্ষ দাঁড় করাতে চাও? তিনি তো জগতসমূহের প্রতিপালক।

وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَآ اَقْوَاتَهَا فِيْٓ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ۗ سَوَآءً لِّلسَّآئِلِيْنَ ۝١٠

১০. তিনি স্থাপন করেছেন (অটল) পর্বতমালা ভূ-পৃষ্ঠে এবং তাতে রেখেছেন বরকত এবং চার দিনের মধ্যে এতে ব্যবস্থা করেছেন খাদ্যের, সমভাবে (এতে উত্তর) রয়েছে জিজ্ঞাসুদের জন্যে।

ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا

১১. অতঃপর তিনি আকাশের দিকে মনোনিবেশ করেন যা ছিল ধূম্র

وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ؕ قَالَتَآ اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ﴿١١﴾

বিশেষ। অনন্তর তিনি ওটাকে ও পৃথিবীকে বললেনঃ তোমরা উভয়ে এসো ইচ্ছা অথবা অনিচ্ছায় । তারা বললোঃ আমরা আসলাম অনুগত হয়ে।

فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ؕ وَزَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖ وَحِفْظًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿١٢﴾

১২. অতঃপর তিনি তাকে দুই দিনে সপ্তাকাশে পরিণত করলেন এবং প্রত্যেক আকাশে তার বিধান ব্যক্ত করলেন এবং আমি দুনিয়ার আকাশকে সুশোভিত করলাম প্রদীপমালা দ্বারা এবং করলাম সুরক্ষিত। এটা পরাক্রমশালী সর্বজ্ঞ আল্লাহর ব্যবস্থাপনা।

فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّثَمُوْدَ ﴿١٣﴾

১৩. তারা যদি বিমুখ হয় তবে বলঃ আমি তো তোমাদেরকে সতর্ক করছি এক (আযাবের) বজ্রের; আ'দ ও সামূদের বজ্রের অনুরূপ।

اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿١٤﴾

১৪. যখন তাদের নিকট রাসূলগণ এসেছিলেন তাদের সম্মুখ ও পশ্চাৎ হতে (এবং বলেছিলেন) তোমরা আল্লাহ ব্যতীত কারো ইবাদত করো না। তখন তারা বলেছিলঃ আমাদের প্রতিপালকের এইরূপ ইচ্ছা হলে তিনি অবশ্যই ফেরেশতা প্রেরণ করতেন। অতএব তোমরা যেসব সহ প্রেরিত হয়েছো, আমরা তা প্রত্যাখ্যান করছি।

فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ؕ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿١٥﴾

১৫. আর আ'দ সম্প্রদায়ের ব্যাপার এই যে, তারা পৃথিবীতে অযথা দম্ভ করতো এবং বলতোঃ আমাদের অপেক্ষা শক্তিশালী কে আছে? তারা কি তবে লক্ষ্য করেনি যে, আল্লাহ, যিনি তাদেরকে সৃষ্টি করেছেন, তিনি তাদের অপেক্ষা শক্তিশালী? অথচ

তারা আমার নিদর্শনাবলীকে অস্বীকার করতো।

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى وَهُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١٦﴾

১৬. অতঃপর আমি তাদেরকে পার্থিব জীবনে শাস্তি আস্বাদন করাবার জন্যে তাদের বিরুদ্ধে অশুভ দিনে প্রেরণ করেছিলাম প্রচন্ড ঘূর্ণিঝড়। পরকালের শাস্তি তো অধিকতর লাঞ্ছনাদায়ক এবং তাদের সাহায্য করা হবে না।

وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٧﴾

১৭. আর সামূদ সম্প্রদায়ের ব্যাপার তো এই যে, আমি তাদেরকে পথ-নির্দেশ করেছিলাম; কিন্তু তারা সৎপথের পরিবর্তে অন্ধত্ব (ভ্রান্ত পথ) অবলম্বন করেছিল। অতঃপর তাদের কৃতকর্মের পরিণাম স্বরূপ লাঞ্ছনা-দায়ক বজ্র (শাস্তি) আঘাত হানলো।

وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿١٨﴾

১৮. আমি উদ্ধার করলাম তাদেরকে যারা ঈমান এনেছিল এবং যারা তাকওয়া অবলম্বন করতো।

وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَآءُ اللّٰهِ اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٩﴾

১৯. যেদিন আল্লাহর শত্রুদেরকে জাহান্নাম অভিমুখে সমবেত করা হবে সেদিন তাদেরকে তাড়িয়ে নিয়ে যাওয়া হবে বিভিন্ন দলে,

حَتّٰٓى اِذَا مَا جَآءُوْهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٠﴾

২০. পরিশেষে যখন তারা জাহান্নামের সন্নিকটে পৌছবে তখন তাদের কর্ণ, চক্ষু ও ত্বক (চামড়া) তাদের কৃতকর্ম সম্বন্ধে সাক্ষ্য দিবে।

وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا ۗ قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَّهُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢١﴾

২১. জাহান্নামীরা তাদের ত্বককে জিজ্ঞেস করবেঃ তোমরা আমাদের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য দিচ্ছি কেন? উত্তরে তারা বলবেঃ আল্লাহ, যিনি সবকিছুকে বাকশক্তি দিয়েছেন তিনি আমাদেরকেও বাকশক্তি দিয়েছেন।

তিনি তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন প্রথম বার এবং তাঁরই নিকট তোমরা প্রত্যাবর্তিত হবে।

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَآ اَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾

২২. তোমরা কিছু গোপন করতে না এই বিশ্বাসে যে, তোমাদের কর্ণ, চক্ষু এবং ত্বক তোমাদের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য দিবে না– উপরন্তু তোমরা মনে করতে যে, তোমরা যা করতে তার অনেক কিছুই আল্লাহ জানেন না।

وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِيْ ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. তোমাদের প্রতিপালক সম্বন্ধে তোমাদের এই ধারণাই তোমাদের ধ্বংস এনেছে। ফলে তোমরা হয়েছো ক্ষতিগ্রস্থ।

فَاِنْ يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ ﴿٢٤﴾

২৪. এখন তারা ধৈর্যধারণ করলেও জাহান্নামই হবে তাদের আবাস এবং তারা অনুগ্রহ চাইলেও তারা অনুগ্রহ প্রাপ্ত হবে না।

وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٢٥﴾

২৫. আমি তাদের জন্যে নির্ধারণ করে দিয়েছিলাম সহচর যারা তাদের সম্মুখ ও পশ্চাতে যা আছে তা তাদের দৃষ্টিতে শোভন করে দেখিয়েছিল এবং তাদের ব্যাপারেও তাদের পূর্ববর্তী জ্বিন ও মানবদের ন্যায় শাস্তির কথা বাস্তব হয়েছে। তারা তো ছিল ক্ষতিগ্রস্ত।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ﴿٢٦﴾

২৬. কাফিররা বলেঃ তোমরা এই কুরআন শ্রবণ করো না এবং তা তিলাওয়াতকালে শোরগোল সৃষ্টি কর যাতে তোমরা জয়ী হতে পার।

فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾

২৭. আমি অবশ্যই কাফিরদেরকে কঠিন শাস্তি আস্বাদন করাবো এবং নিশ্চয়ই আমি তাদেরকে নিকৃষ্ট কার্যকলাপের বিনিময় দিবো।

ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۚ لَهُمْ فِيْهَا دَارُ الْخُلْدِ ؕ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿٢٨﴾

২৮. জাহান্নাম, এটাই আল্লাহর শত্রুদের পরিণাম; সেখানে তাদের জন্যে রয়েছে স্থায়ী আবাস আমার নিদর্শনাবলী অস্বীকৃতির প্রতিফল স্বরূপ।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبَّنَآ اَرِنَا الَّذَيْنِ اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٢٩﴾

২৯. কাফিররা বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! যেসব জ্বিন ও মানব আমাদেরকে পথভ্রষ্ট করেছিল তাদের উভয়কে দেখিয়ে দিন, আমরা উভয়কে পদদলিত করবো, যাতে তারা নিম্ন শ্রেণীর অন্তর্ভুক্ত হয়।

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٠﴾

৩০. নিশ্চয়ই যারা বলেঃ আমাদের প্রতিপালক আল্লাহ, অতঃপর অবিচলিত থাকে, তাদের নিকট অবতীর্ণ হয় ফেরেশ্‌তা এবং বলেঃ তোমরা ভীত হয়ো না, চিন্তিত হয়ো না এবং তোমাদেরকে যে জান্নাতের প্রতিশ্রুতি দেয়া হয়েছিল তার সুসংবাদ পেয়ে আনন্দিত হও।

نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْٓ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ﴿٣١﴾

৩১. আমরাই তোমাদের বন্ধু দুনিয়ার জীবনে ও আখিরাতে; সেখানে তোমাদের জন্যে রয়েছে যা কিছু তোমাদের মন চায় এবং সেখানে তোমাদের জন্যে রয়েছে যা তোমরা চাইবে।

نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ﴿٣٢﴾

৩২. এটা হলো ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু আল্লাহর পক্ষ হতে আপ্যায়ন।

وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٣٣﴾

৩৩. ঐ ব্যক্তি অপেক্ষা কথায় কে উত্তম যে আল্লাহর দিকে মানুষকে আহ্বান করে, সৎ কর্ম করে এবং বলেঃ আমি তো আত্মসমর্পণ-কারীদের অন্তর্ভুক্ত।

وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ؕ اِدْفَعْ بِالَّتِيْ

৩৪. ভাল এবং মন্দ সমান হতে পারে না। মন্দ প্রতিহত কর উৎকৃষ্ট

هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِيٌّ حَمِيْمٌ ﴿٣٤﴾

দ্বারা; ফলে, তোমার সাথে যার শত্রুতা আছে, সে হয়ে যাবে অন্তরঙ্গ বন্ধুর মত।

وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿٣٥﴾

৩৫. এই গুণের অধিকারী করা হয় শুধু তাদেরকেই যারা ধৈর্যশীল, এই গুণের অধিকারী করা হয় শুধু তাদেরকে যারা মহা ভাগ্যবান।

وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٦﴾

৩৬. যদি শয়তানের কুমন্ত্রনা তোমাকে প্ররোচিত করে তবে আল্লাহর আশ্রয় নিবে। তিনি সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ؕ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿٣٧﴾

৩৭. তাঁর নিদর্শনাবলীর মধ্যে রয়েছে রজনী ও দিবস, সূর্য ও চন্দ্র। তোমরা সূর্যকে সিজদা করো না, চন্দ্রকেও নয়; সিজদা কর আল্লাহকে, যিনি এইগুলো সৃষ্টি করেছেন, যদি তোমরা তাঁরই ইবাদত কর।

فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْـَٔمُوْنَ ﴿٣٨﴾ السجدة

৩৮. তারা অহংকার করলেও যারা তোমার প্রতিপালকের সান্নিধ্যে রয়েছে (ফেরেশ্‌তাগণ) তারা তো দিবস ও রজনীতে তাঁর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে এবং তারা ক্লান্তি ও বোধ করে না।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٩﴾

৩৯. আর তাঁর একটি নিদর্শন এই যে, তুমি ভূমিকে দেখতে পাও শুষ্ক, অতপর আমি তাতে বৃষ্টি বর্ষণ করলে তা আন্দোলিত ও স্ফীত হয়; যিনি ভূমিকে জীবিত করেন তিনিই মৃতের জীবন দানকারী। তিনি তো সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ؕ اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْٓ اٰمِنًا

৪০. যারা আমার আয়াতসমূহকে বিকৃত করে তারা আমার অগোচরে নয়। শ্রেষ্ঠ কে? যে ব্যক্তি জাহান্নামে

يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٤٠﴾

নিক্ষিপ্ত হবে সে, না যে কিয়ামতের দিন নিরাপদে থাকবে সে! তোমাদের যা ইচ্ছা কর; তোমরা যা কর তিনি তার দ্রষ্টা।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِيْزٌ ﴿٤١﴾ ۙ

৪১. যারা তাদের নিকট কুরআন আসার পর তা প্রত্যাখ্যান করে (তাদেরকে কঠিন শাস্তি দেয়া হবে;) এটা অবশ্যই এক মহিমাময় গ্রন্থ।

لَّا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ ؕ تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ﴿٤٢﴾

৪২. কোন মিথ্যা এতে অনুপ্রবেশ করবে না– অগ্র হতেও নয়, পশ্চাত হতেও নয়। এটা প্রজ্ঞাবান, প্রশংসনীয় আল্লাহর নিকট হতে অবতীর্ণ।

مَا يُقَالُ لَكَ اِلَّا مَا قَدْ قِيْلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ وَّذُوْ عِقَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٤٣﴾

৪৩. তোমার সম্বন্ধে তো তাই বলা হয় যা বলা হতো তোমার পূর্ববর্তী রাসূলদের সম্পর্কে। তোমার প্রতিপালক অবশ্যই ক্ষমাশীল এবং কঠিন শাস্তিদাতা।

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ؕ ءَاَعْجَمِيٌّ وَّعَرَبِيٌّ ؕ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ ؕ وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ؕ اُولٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ ﴿٤٤﴾ ع

৪৪. আমি যদি আজমী ভাষায় কুরআন অবতীর্ণ করতাম তবে তারা অবশ্যই বলতো, এর আয়াতগুলো বিশদভাবে বর্ণনা হয়নি কেন? কি আশ্চর্য যে, এর ভাষা আজমী, অথচ রাসূল আরবীয়। বলঃ মু'মিনদের জন্যে এটা পথ-নির্দেশ ও ব্যাধির প্রতিকার; কিন্তু যারা অবিশ্বাসী তাদের কর্ণে রয়েছে বধিরতা এবং কুরআন হবে তাদের জন্যে অন্ধত্ব। তারা এমন যে, যেন তাদেরকে আহ্বান করা হয় বহু দূর হতে।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا

৪৫. আমি তো মূসা (عليه السلام)-কে কিতাব দিয়েছিলাম, অতঃপর এতে মতভেদ ঘটেছিল। তোমার প্রতি-

كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ﴿٤٥﴾

পালকের পক্ষ হতে পূর্ব সিদ্ধান্ত না থাকলে তাদের মীমাংসা হয়ে যেতো। তারা অবশ্যই এর সম্বন্ধে বিভ্রান্তিকর সন্দেহে রয়েছে।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۗ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٤٦﴾

৪৬. যে সৎ আমল করে সে নিজের কল্যাণের জন্যেই তা করে এবং কেউ মন্দ আমল করলে ওর প্রতিফল সেই ভোগ করবে। তোমার প্রতিপালক তাঁর বান্দাদের প্রতি কোন যুলুম করেন না।[১]

১। আবূ মূসা আশ'আরী (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ মুসলমান, ইয়াহূদী ও খ্রিস্টানদের উদাহরণ হলো এরূপঃ যেমন কোন ব্যক্তি নির্দিষ্ট মজুরীতে একদিন সকাল থেকে সন্ধ্যা পর্যন্ত কাজ করার জন্য একদল লোক নিযুক্ত করলেন। তারা দুপুর পর্যন্ত কাজ করে বলল, আপনি আমাদেরকে যে মজুরী দিতে চেয়েছিলেন তাতে আমাদের প্রয়োজন নেই। আর আমরা যা করেছি তার জন্য কোন দাবীও নেই। তিনি (নিয়োগকর্তা) তাদেরকে বললেন, তোমরা এরূপ করিও না। বাকী কাজ সমাধা করে পুরা মজুরী নিয়ে নাও; কিন্তু তারা তা করতে অস্বীকার করল এবং কাজ ত্যাগ করল। তখন তিনি তাদের স্থলে অপর লোকদেরকে নিযুক্ত করলেন এবং তাদেরকে বললেন, তোমরা দিনের অবশিষ্টাংশ পুরা কর। আমি পূর্ববর্তীদের যে মজুরী দিতে চেয়েছিলাম তা তোমরা পাবে। তারা কাজ আরম্ভ করল; কিন্তু যখন আসর নামাযের সময় হল তখন তারা বলতে লাগল, আমরা আপনার জন্য যে কাজ করেছি তা ফ্রী আর আপনি এর জন্য যে মজুরী দিতে চেয়েছিলেন তা আপনারই থাকল। ঐ ব্যক্তি বললেন তোমাদের অবশিষ্টাংশ কাজ শেষ কর, দিনের তো আর সামান্যই বাকী রয়েছে; কিন্তু তারা অস্বীকার করল। তখন ঐ ব্যক্তি অপর এক (তৃতীয়) দলকে বাকী দিনের জন্য কাজে নিযুক্ত করলেন। তারা সূর্যাস্ত পর্যন্ত বাকী দিন কাজ করল এবং পূর্ববর্তী দু'দলের পুরো মজুরী নিয়ে নিল। এটাই হল তাদের এবং যে নূর (ইসলাম) তারা কবূল করেছে তার উপমা। (বুখারী, হাদীস নং ২২৭১)

اِلَيۡهِ يُرَدُّ عِلۡمُ السَّاعَةِ ؕ وَمَا تَخۡرُجُ مِنۡ ثَمَرٰتٍ مِّنۡ اَكۡمَامِهَا وَمَا تَحۡمِلُ مِنۡ اُنۡثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلۡمِهٖ ؕ وَيَوۡمَ يُنَادِيۡهِمۡ اَيۡنَ شُرَكَآءِىۡ ۙ قَالُوۡۤا اٰذَنّٰكَ ۙ مَا مِنَّا مِنۡ شَهِيۡدٍ ۚ﴿۴۷﴾

৪৭. কিয়ামতের জ্ঞান আল্লাহর দিকেই প্রবর্তিত, তাঁর অজ্ঞাতসারে কোন ফল আবরণী হতে বের হয় না, কোন নারী গর্ভধারণ করে না এবং সন্তানও প্রসব করে না, যেদিন আল্লাহ তাদেরকে (মুশরিকদেরকে) ডেকে বলবেনঃ আমার শরীকরা কোথায়? তখন তারা বলবেঃ আমরা আপনাকে বলে দিয়েছি যে, এই ব্যাপারে আমাদের মধ্যে কেউ সাক্ষী নেই।

وَضَلَّ عَنۡهُمۡ مَّا كَانُوۡا يَدۡعُوۡنَ مِنۡ قَبۡلُ وَظَنُّوۡا مَا لَهُمۡ مِّنۡ مَّحِيۡصٍ ﴿۴۸﴾

৪৮. পূর্বে তারা যাদেরকে আহ্বান করতো তারা অদৃশ্য হয়ে যাবে এবং অংশীবাদীরা উপলব্ধি করবে যে, তাদের মুক্তির কোন উপায় নেই।

لَا يَسۡـَٔمُ الۡاِنۡسَانُ مِنۡ دُعَآءِ الۡخَيۡرِ ۫ وَاِنۡ مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَـُٔوۡسٌ قَنُوۡطٌ ﴿۴۹﴾

৪৯. মানুষ কল্যাণ (ধন-সম্পদ) প্রার্থনায় কোন ক্লান্তিবোধ করে না; কিন্তু যখন তাকে দুঃখ-কষ্ট স্পর্শ করে তখন সে অত্যন্ত নিরাশ ও হতাশ হয়ে পড়ে।

وَلَئِنۡ اَذَقۡنٰهُ رَحۡمَةً مِّنَّا مِنۡۢ بَعۡدِ ضَرَّآءَ مَسَّتۡهُ لَيَقُوۡلَنَّ هٰذَا لِىۡ ۙ وَمَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنۡ رُّجِعۡتُ اِلٰى رَبِّىۡۤ اِنَّ لِىۡ عِنۡدَهٗ لَلۡحُسۡنٰى ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا بِمَا عَمِلُوۡا ۫ وَلَنُذِيۡقَنَّهُمۡ مِّنۡ عَذَابٍ غَلِيۡظٍ ﴿۵۰﴾

৫০. দুঃখ-কষ্ট স্পর্শ করবার পর যদি তাকে আমি অনুগ্রহের আস্বাদ দিই তখন সে বলেই থাকেঃ এটা আমার প্রাপ্য এবং আমি মনে করি না যে, কিয়ামত সংঘটিত হবে, আর আমি যদি আমার প্রতিপালকের নিকট প্রত্যাবর্তিত হইও তবে তাঁর নিকট তো আমার জন্যে কল্যাণই থাকবে। আমি কাফিরদেরকে তাদের কৃতকর্ম সম্বন্ধে অবশ্যই অবহিত করবো এবং তাদেরকে আস্বাদান করাবো কঠোর শাস্তি।

وَاِذَاۤ اَنۡعَمۡنَا عَلَى الۡاِنۡسَانِ اَعۡرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ

৫১. যখন আমি মানুষকে নেয়ামত প্রদান করি তখন সে অহংকারবশতঃ

وَ اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُوْ دُعَآءٍ عَرِيْضٍ ﴿٥١﴾

মুখ ফিরিয়ে নেয় ও দূরে সরে যায় এবং তাকে অনিষ্ঠ স্পর্শ করলে সে তখন দীর্ঘ প্রার্থনায় রত হয়ে যায়।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهٖ مَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِيْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ﴿٥٢﴾

৫২. বলঃ তোমাদের অভিমত কি, যদি (এই কুরআন) আল্লাহর নিকট হতে অবতীর্ণ হয়ে থাকে এবং তোমরা এটা প্রত্যাখ্যান কর তবে যে ব্যক্তি ঘোর বিরোধিতায় লিপ্ত আছে, তার অপেক্ষা অধিক পথভ্রষ্ট কে?

سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِي الْاٰفَاقِ وَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ الْحَقُّ ؕ اَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٥٣﴾

৫৩. আমি তাদেরকে অতিসত্ত্বর আমার নিদর্শনাবলী দেখাবো বিশ্বজগতে এবং তাদের নিজেদের মধ্যে; ফলে তাদের নিকট সুস্পষ্ট হয়ে উঠবে যে, ওটাই সত্য। এটা কি যথেষ্ট নয় যে, তোমার প্রতিপালক সর্ববিষয়ে অবহিত?

اَلَآ اِنَّهُمْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآءِ رَبِّهِمْ ؕ اَلَآ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطٌ ﴿٥٤﴾ ع

৫৪. জেনে রেখো এরা এদের প্রতিপালকের সাথে সাক্ষাৎকারে সন্দিহান; জেনে রেখো; সব কিছুকেই আল্লাহ পরিবেষ্টন করে রয়েছেন।

সূরাঃ শূরা, মাক্কী

(আয়াতঃ ৫৩, রুকূ'ঃ ৫)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُوْرَةُ الشُّوْرٰى مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٥٣ رُكُوْعَاتُهَا ٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. হা-মীম,

حٰمٓ ۝١

২. 'আঈন-সীন-ক্বা'-ফ

عٓسٓقٓ ۝٢

৩. পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান আল্লাহ এভাবেই তোমার প্রতি এবং তোমার পূর্ববর্তীদের প্রতি ওহী করেন।

كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَ اِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۙ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٣

৪. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে তা তাঁরই। তিনি সমুন্নত, মহান।

لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝٤

৫. আকাশমন্ডলী তার উর্ধদেশ হতে ফেটে (ভেঙ্গে) পড়ার উপক্রম হয় এবং ফেরেশ্‌তারা তাদের প্রতিপালকের সপ্রশংস পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে এবং জগদ্বাসীদের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করে। সাবধান! নিশ্চয় আল্লাহ, তিনি অতি ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِى الْاَرْضِ ؕ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝٥

৬. যারা আল্লাহর পরিবর্তে অপরকে অভিভাবকরূপে গ্রহণ করে, আল্লাহ তাদের প্রতি কঠোর দৃষ্টি রাখেন। তুমি তাদের তত্ত্বাবধায়ক নও।

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ اللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ۖ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝٦

৭. এভাবে আমি তোমার প্রতি কুরআন অবতীর্ণ করেছি আরবী ভাষায়, যাতে তুমি সতর্ক করতে পার মক্কা এবং ওর চতুর্দিকের জনগণকে এবং সতর্ক করতে পার হাশর (কিয়ামত) দিবস সম্পর্কে যাতে কোন সন্দেহ নেই; (সেদিন) এক

وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ فَرِيْقٌ فِى الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِى السَّعِيْرِ ۝٧

দল জান্নাতে প্রবেশ করবে এবং একদল জাহান্নামে প্রবেশ করবে।

৮. আল্লাহ ইচ্ছা করলে মানুষকে একই উম্মত করতে পারতেন; বস্তুত তিনি যাকে ইচ্ছা তাকে স্বীয় রহমতের অধিকারী করেন; যালিমদের কোন অভিভাবক নেই, কোন সাহায্যকারী ও নেই।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٨﴾

৯. তারা কি আল্লাহর পরিবর্তে অপরকে অভিভাবকরূপে গ্রহণ করেছে? কিন্তু আল্লাহ, অভিভাবক তো তিনিই এবং তিনি মৃতকে জীবিত করেন। তিনি সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান।

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ ۚ فَاللّٰهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِ الْمَوْتٰى ۫ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٩﴾

১০. তোমরা যে বিষয়েই মতভেদ কর না কেন, ওর ফয়সালা তো আল্লাহরই নিকট। (বলঃ) তিনিই আল্লাহ, আমার প্রতিপালক। আমি ভরসা করি তাঁর উপর এবং আমি তাঁরই দিকে প্রত্যাবর্তন করি।

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهٗۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ﴿١٠﴾

১১. তিনি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সৃষ্টিকর্তা, তিনি তোমাদের মধ্য হতে তোমাদের জোড়া সৃষ্টি করেছেন এবং চতুষ্পদ জন্তুগুলোর মধ্য হতে (তাদের) জোড়া; এভাবে তিনি তাতে তোমাদের বংশ বিস্তার করেন; কোন কিছুই তাঁর সদৃশ নয়, তিনি সর্বশ্রোতা, সর্বদ্রষ্টা।

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّمِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ؕ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿١١﴾

১২. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর চাবিসমূহ তাঁরই নিকট। তিনি যার প্রতি ইচ্ছা তার রিযিক বর্ধিত করেন অথবা সংকুচিত করেন। তিনি সর্ববিষয়ে সর্বজ্ঞ।

لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٢﴾

شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰٓى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ؕ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ؕ اَللّٰهُ يَجْتَبِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ﴿١٣﴾

১৩. তিনি তোমাদের জন্যে নির্ধারণ করেছেন দ্বীন যার নির্দেশ দিয়েছিলেন তিনি নূহ (عليه السلام)-কে আর যা আমি ওহী করেছিলাম তোমাকে এবং যার নির্দেশ দিয়েছিলাম ইবরাহীম (عليه السلام), মূসা (عليه السلام) ও ঈসা (عليه السلام)-কে, এই বলে যে, তোমরা এই দ্বীনকে (তাওহীদকে) প্রতিষ্ঠিত কর এবং ওতে মতভেদ করো না। তুমি মুশরিকদেরকে যার প্রতি আহ্বান করছো তা তাদের নিকট কঠিন মনে হয়। আল্লাহ যাকে ইচ্ছা তাঁর জন্য চয়ন করে নেন এবং যে তাঁর দিকে প্রত্যাবর্তন করে, তাকে দ্বীনের দিকে পরিচালিত করেন।

وَمَا تَفَرَّقُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْرِثُوا الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿١٤﴾

১৪. তাদের নিকট তাওহীদের জ্ঞান আসার পরও শুধুমাত্র পারস্পরিক বাড়াবাড়ির কারণে তারা নিজেদের মধ্যে মতভেদ ঘটায়; এক নির্ধারিত কাল পর্যন্ত অবকাশ সম্পর্কে তোমার প্রতিপালকের পূর্ব সিদ্ধান্ত না থাকলে তাদের বিষয়ে ফায়সালা হয়ে যেতো। তাদের পর যারা কিতাবের উত্তরাধিকারী হয়েছে তারা বিভ্রান্তি কর সন্দেহে রয়েছে।

فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ ۚ وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَاُمِرْتُ لِاَعْدِلَ بَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ؕ لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ؕ

১৫. সুতরাং তুমি ওর দিকে (সবাইকে) আহ্বান কর এবং এতেই দৃঢ় প্রতিষ্ঠিত থাকো যেভাবে তুমি আদিষ্ট হয়েছো এবং তাদের প্রবৃত্তির অনুসরণ করো না। বলঃ আল্লাহ যে কিতাব অবতীর্ণ করেছেন আমি তাতে বিশ্বাস করি এবং আদিষ্ট হয়েছি তোমাদের মধ্যে ইনসাফ করতে।

لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ ۖ اللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ﴿١٥﴾

আল্লাহই আমাদের প্রতিপালক এবং তোমাদের প্রতিপালক আমাদের আমল আমাদের এবং তোমাদের আমল তোমাদের; আমাদের এবং তোমাদের মধ্যে কোন ঝগড়া-বিবাদ নেই। আল্লাহই আমাদেরকে একত্রিত করবেন এবং প্রত্যাবর্তন তাঁরই নিকট।

وَالَّذِينَ يُحَاجُّونَ فِي اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مَا اسْتُجِيبَ لَهُ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿١٦﴾

১৬. যারা আল্লাহ সম্পর্কে বিতর্ক করে আল্লাহকে মেনে নেয়ার পর, তাদের যুক্তি-তর্ক তাদের প্রতিপালকের দৃষ্টিতে অসার এবং তাদের প্রতি রয়েছে (আল্লাহর) ক্রোধ এবং তাদের জন্যে রয়েছে কঠিন শাস্তি।

اللّٰهُ الَّذِي أَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيزَانَ ۗ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيبٌ ﴿١٧﴾

১৭. আল্লাহই অবতীর্ণ করেছেন সত্যসহ কিতাব এবং দাঁড়ি পাল্লা। তুমি কি জান, সম্ভবতঃ কিয়ামত নিকটবর্তী?

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا مُشْفِقُونَ مِنْهَا ۙ وَيَعْلَمُونَ أَنَّهَا الْحَقُّ ۗ أَلَا إِنَّ الَّذِينَ يُمَارُونَ فِي السَّاعَةِ لَفِي ضَلٰلٍ بَعِيدٍ ﴿١٨﴾

১৮. যারা এর প্রতি বিশ্বাস করে না তারাই এটার জন্য তড়িঘড়ি করে। আর যারা বিশ্বাসী তারা একে ভয় করে এবং জানে যে, ওটা সত্য। সাবধান! কিয়ামত সম্পর্কে যারা তর্ক-বিতর্ক করে তারা গভীর বিভ্রান্তিতে রয়েছে।

اللّٰهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ﴿١٩﴾

১৯. আল্লাহ তাঁর বান্দাদের প্রতি অতি দয়ালু; তিনি যাকে ইচ্ছা রিযিক দান করেন। তিনি প্রবল শক্তিশালী, পরাক্রমশালী।

مَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي حَرْثِهِ ۖ وَمَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا ۙ

২০. যে আখিরাতের ফসল কামনা করে তার জন্যে আমি তার ফসল বর্ধিত করে দিই এবং যে দুনিয়ার

وَمَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ﴿٢٠﴾

ফসল কামনা করে আমি তাকে এরই কিছু দিই, আখিরাতে তার জন্যে কিছুই থাকবে না।

اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ يَاْذَنْۢ بِهِ اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢١﴾

২১. তাদের কি এমন কতকগুলো শরীকও আছে যারা তাদের জন্যে দ্বীনের এমন বিধান প্রবর্তন করেছে যার অনুমতি আল্লাহ দেননি? ফায়সালার ঘোষণা না থাকলে তাদের বিষয়ে তো সিদ্ধান্ত হয়েই যেতো। নিশ্চয়ই যালিমদের জন্যে রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِىْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٢٢﴾

২২. তুমি যালিমদেরকে ভীত-সন্ত্রস্ত দেখবে তাদের কৃতকর্মের জন্যে; আর এটাই আপতিত হবে তাদের উপর। যারা ঈমান আনে ও আমল করে তারা থাকবে জান্নাতের বাগানসমূহে। তারা যা কিছু চাইবে তাদের প্রতিপালকের নিকট তাই পাবে। এটাই তো মহা অনুগ্রহ।

ذٰلِكَ الَّذِىْ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى ؕ وَمَنْ يَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿٢٣﴾

২৩. এই সুসংবাদই আল্লাহ দেন তাঁর সেই বান্দাদেরকে যারা ঈমান আনে ও সৎ আমল (সুন্নাত অনুযায়ী আমল) করে। বলঃ আমি এর বিনিময়ে তোমাদের নিকট হতে আত্মীয়তার ভালবাসা ব্যতীত অন্য কোন বিনিময় চাই না। যে উত্তম কাজ করে আমি তার জন্যে এতে কল্যাণ বর্ধিত করি। আল্লাহ ক্ষমাশীল, গুণগ্রাহী।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ؕ وَيَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ

২৪. তারা কি বলে যে, সে (রাসূল) আল্লাহ সম্পর্কে মিথ্যা বানিয়েছে, সুতরাং যদি আল্লাহ ইচ্ছা করেন তবে তোমার হৃদয় মোহর করে দিবেন।

الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٤﴾

আল্লাহ মিথ্যাকে মুছে দেন এবং নিজ বাণী দ্বারা সত্যকে প্রতিষ্ঠিত করেন। অন্তরে যা আছে সে বিষয়ে তিনি তো সবিশেষ অবহিত।

وَهُوَ الَّذِىْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ
وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٢٥﴾

২৫. তিনিই তাঁর বান্দাদের তাওবা কবূল করেন এবং পাপ মোচন করেন এবং তোমরা যা কর তিনি তা জানেন।[১]

وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ
عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿٢٦﴾

২৬. তিনি মু'মিন ও সৎ আমল-কারীদের আহ্বানে সাড়া দেন এবং তাদের প্রতি তাঁর অনুগ্রহ বর্ধিত করেন; কাফিরদের জন্যে রয়েছে কঠিন শাস্তি।

وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِى الْاَرْضِ
وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ
خَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٢٧﴾

২৭. আল্লাহ তাঁর বান্দাদের রুযী বাড়িয়ে দিলে তারা পৃথিবীতে অবশ্যই সীমালঙ্ঘন করতো; কিন্তু তিনি তাঁর ইচ্ছামত পরিমাণেই দিয়ে থাকেন। তিনি তাঁর বান্দাদের সম্পর্কে সম্যক জানেন ও দেখেন।

وَهُوَ الَّذِىْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا

২৮. তারা তখন নিরাশ হয়ে পড়ে তখনই তিনি বৃষ্টি বর্ষণ করেন এবং

১। শাদ্দাদ ইবনে আউস (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, "সাইয়্যেদুল ইস্তিগফার (সর্বোৎকৃষ্ট ইস্তিগফার) হচ্ছে বান্দাহর এটা বলাঃ "আল্লাহুম্মা আনতা রাব্বী লা-ইলাহা ইল্লা আনতা, খালাকতানী ওয়া আনা আবদুকা ওয়া আনা 'আলা 'আহদিকা ওয়া ওয়া'দিকা মাসতাতা'তু, আউযুবিকা মিন শার্‌রি মা সানা'তু আবু-উলাকা বিনি'মাতিকা আলাইয়্যা ওয়া আবুউলাকা বিযাম্বী ইগফিরলী ফাইন্নাহু, লা-ইয়াগফিরুয্‌যুনুবা ইল্লা আনতা।" অর্থাৎ "হে আল্লাহ্! তুমিই আমার রব, তুমি ভিন্ন আর ইলাহ নেই। তুমি আমাকে সৃষ্টি করেছ। আমি তোমার গোলাম। আমি যথাসাধ্য তোমার সাথে কৃত ওয়াদা অঙ্গীকারের ওপর দৃঢ় থাকব। আমার কৃত কর্মের কুফল ও মন্দ পরিণাম থেকে তোমার নিকট পানাহ চাই। তুমি আমাকে যে সব নেয়ামত দিয়েছ, আমি সেসব নেয়ামতের কথা স্বীকার করছি এবং স্বীকার করছি আমার গুনাহ্‌র কথাও। তুমি আমাকে মাফ কর। কেননা তুমি ছাড়া গুনাহ মাফ করার আর কেউ নেই।"

রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, যে ব্যক্তি এ কথাগুলি দিনের বেলায় দৃঢ় প্রত্যয়ের সাথে বলে এবং সন্ধ্যা হওয়ার আগে ওই দিনেই মারা যায় তবে সে জান্নাতবাসী। আর যে ব্যক্তি তা রাত্রিবেলা আন্তরিকতার সাথে বলে এবং সকাল হওয়ার আগেই মারা যায়, তবে সে ও জান্নাতী। (বুখারী, হাদীস নং ৬৩০৬)

وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ؕ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٨﴾

তাঁর করুণা বিস্তার করেন। তিনিই তো অভিভাবক, সর্বপ্রশংসিত।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ وَهُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ ﴿٢٩﴾

২৯. তাঁর মহা নিদর্শনের অন্তর্ভুক্ত হলো আকশমন্ডলী ও পৃথিবীর সৃষ্টি এবং এতোদুভয়ের মধ্যে তিনি যেসব জীবজন্তু ছড়িয়ে দিয়েছেন সেগুলো; তিনি যখন ইচ্ছা তখনই ওদেরকে সমবেত করতে সক্ষম।

وَمَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ﴿٣٠﴾

৩০. তোমাদের যে বিপদ-আপদ ঘটে তা তো তোমাদেরই হাতের কামাইয়ের ফল এবং তোমাদের অনেক অপরাধ তিনি ক্ষমা করে দেন।

وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۚ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٣١﴾

৩১. তোমরা পৃথিবীতে (আল্লাহকে) ব্যর্থ করতে পারবে না এবং আল্লাহ ব্যতীত তোমাদের কোন অভিভাবক নেই, সাহায্যকারীও নেই।

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ فِى الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿٣٢﴾

৩২. তাঁর মহা নিদর্শনের অন্তর্ভুক্ত হলো পর্বত সদৃশ সমুদ্রে চলমান নৌযানসমূহ।

اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿٣٣﴾

৩৩. তিনি ইচ্ছা করলে বায়ুকে স্তব্ধ করে দিতে পারেন; ফলে নৌযানসমূহ অচল হয়ে পড়বে সমুদ্র পৃষ্ঠে। নিশ্চয়ই এতে নিদর্শন রয়েছে ধৈর্যশীল ও কৃতজ্ঞ ব্যক্তির জন্যে।

اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيْرٍ ﴿٣٤﴾

৩৪. অথবা তিনি তাদের কৃতকর্মের ফলে সেগুলোকে ধ্বংস করে দিতে পারেন এবং অনেককে তিনি ক্ষমাও করেন।

وَّيَعْلَمَ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِىْٓ اٰيٰتِنَا ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ﴿٣٥﴾

৩৫. আর আমার নিদর্শনাবলী সম্পর্কে যারা তর্কে লিপ্ত হয়। তারা যেন অবহিত থাকে যে, তাদের (আযাব হতে) কোন মুক্তি নেই।

فَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۚ ﴿٣٦﴾

৩৬. বস্তুতঃ তোমরা যা প্রদত্ত হয়েছ তা পার্থিব জীবনের ভোগ; কিন্তু আল্লাহর নিকট যা আছে তা উত্তম ও স্থায়ী, (ওগুলি) তাদের জন্যে যারা ঈমান আনে ও তাদের প্রতিপালকের উপর নির্ভর করে।

وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ۚ ﴿٣٧﴾

৩৭. (ওগুলি তাদের জন্য) যারা কবিরা গোনাহসমূহ ও অশ্লীল কর্ম হতে বেঁচে থাকে এবং যখন তারা ক্রোধান্বিত হয় ক্ষমা করে দেয়।

وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۪ وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ ۪ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۚ ﴿٣٨﴾

৩৮. (ওগুলি তাদের জন্য) যারা তাদের প্রতিপালকের আহ্বানে সাড়া দেয়, নামায প্রতিষ্ঠা করে, নিজেদের মধ্যে পরামর্শের মাধ্যমে তাদের কর্ম সম্পাদন করে এবং তাদেরকে আমি যে রিযিক দিয়েছি তা হতে ব্যয় করে।

وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٣٩﴾

৩৯. এবং (ওগুলি তাদের জন্য) যারা অত্যাচারিত হলে প্রতিশোধ গ্রহণ করে।

وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٠﴾

৪০. মন্দের প্রতিফল অনুরূপ মন্দ এবং যে ক্ষমা করে দেয় ও সংশোধন করে নেয়, তার বিনিময় আল্লাহর নিকট আছে। নিশ্চয়ই আল্লাহ যালিমদেরকে পছন্দ করেন না।

وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ ؕ ﴿٤١﴾

৪১. তবে অত্যাচারিত হবার পর যারা প্রতিশোধ নেয়, করে তাদের বিরুদ্ধে দোষারোপের কোন সুযোগ নেই।

اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَيَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤٢﴾

৪২. শুধু তাদের বিরুদ্ধে দোষারোপ করা হবে যারা মানুষের উপর অত্যাচার করে এবং পৃথিবীতে অন্যায়ভাবে বিদ্রোহাচরণ করে

বেড়ায়। তাদের জন্যে রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

৪৩. যে ধৈর্যধারণ করে এবং ক্ষমা করে দেয় তা হবে অবশ্যই দৃঢ় সাহসীকতাপূর্ণ কর্মসমূহের অন্তর্ভুক্ত।

وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ إِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿٤٣﴾

৪৪. আল্লাহ যাকে পথভ্রষ্ট করেন তার জন্যে তিনি ব্যতীত কোন অভিভাবক নেই। যালিমরা যখন আযাব প্রত্যক্ষ করবে তখন তুমি তাদেরকে বলতে শুনবেঃ প্রত্যা-বর্তনের কোন উপায় আছে কি?

وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ
وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ
هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿٤٤﴾

৪৫. তুমি তাদেরকে দেখতে পাবে যে, তাদেরকে জাহান্নামের সামনে উপস্থিত করা হচ্ছে[১] তারা অপমানে অবনত অবস্থায় গোপনে পার্শ্ব চোখে তাকাচ্ছে। মু'মিনরা কিয়ামতের দিন বলবেঃ প্রকৃত ক্ষতিগ্রস্ত তারাই যারা কিয়ামতের দিন নিজেদের ও নিজেদের পরিজনবর্গের ক্ষতি সাধন করেছে। জেনে রাখো যে, যালিমরা ভোগ করবে স্থায়ী আযাব।

وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ مِنَ الذُّلِّ
يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا
اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ﴿٤٥﴾

৪৬. আল্লাহ ব্যতীত তাদেরকে সাহায্য করার জন্যে তাদের কোন অভিভাবক থাকবে না এবং আল্লাহ যাকে পথভ্রষ্ট করেন তার (আত্মরক্ষার) কোন পথ নেই।

وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ
اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ ﴿٤٦﴾

৪৭. তোমরা তোমাদের প্রতি-পালকের আহ্বান সাড়া দাও সেই

اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ

১। আনাস বিন মালিক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, এক ব্যক্তি বললঃ "হে আল্লাহ্‌র রাসূল! কাফিরদেরকে কি কিয়ামতের দিন নিম্নমুখী করে একত্রিত করা হবে? তিনি বললেনঃ যিনি এ দুনিয়ায় তাকে দু'পায়ের ওপর হাঁটাতে পারলেন তিনি কি কিয়ামতের দিন তাকে নিম্নমুখী করে চালাতে পারবেন না? কাতাদা বলেছেন, হ্যাঁ, আমাদের রবের ইয্‌যতের শপথ তিনি এটা করতে সক্ষম। (বুখারী, হাদীস নং ৪৭৬০)

لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ﴿٤٧﴾

দিবস আসার পূর্বে যা আল্লাহর বিধানে অপ্রতিরুদ্ধ, যেদিন তোমাদের কোন আশ্রয়স্থল থাকবে না এবং তোমাদের জন্য তা নিরোধ করবার কেউ থাকবে না।

فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ؕ اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَاِنَّاۤ اِذَاۤ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ ﴿٤٨﴾

৪৮. তারা যদি মুখ ফিরিয়ে নেয়, তবে তোমাকে তো আমি তাদের রক্ষক করে পাঠাইনি। তোমার দায়িত্ব তো শুধু প্রচার করে যাওয়া। আমি মানুষকে যখন আমার রহমত আস্বাদন করাই তখন সে এতে উৎফুল্ল হয় এবং যখন তাদের কৃতকর্মের জন্যে তাদের বিপদ-আপদ ঘটে তখন মানুষ হয়ে যায় অকৃতজ্ঞ।

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ﴿٤٩﴾

৪৯. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর কর্তৃত্ব আল্লাহরই। তিনি যা ইচ্ছা তা-ই সৃষ্টি করেন। তিনি যাকে ইচ্ছা কন্যা সন্তান দান করেন এবং যাকে ইচ্ছা পুত্র সন্তান দান করেন।

اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾

৫০. অথবা তাদেরকে দান করেন পুত্র ও কন্যা উভয়ই এবং যাকে ইচ্ছা তাকে করে দেন বন্ধ্যা, তিনি সর্বজ্ঞ, সর্বশক্তিমান।

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿٥١﴾

৫১. মানুষের জন্য অসম্ভব যে, আল্লাহর তার সাথে কথা বলবেন ওহীর মাধ্যম ছাড়া, অথবা পর্দার অন্তরাল ব্যতিরেকে অথবা এমন দূত প্রেরণ ছাড়া, যে দূত তাঁর অনুমতিক্রমে তিনি যা চান তা ব্যক্ত করে, তিনি সমুন্নত, প্রজ্ঞাবান।

وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ؕ مَا كُنْتَ

৫২. আর এভাবেই আমি তোমার প্রতি ওহী করেছি রূহ (কুরআন)

تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ؕ وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۙ﴿۵۲﴾

আমার নির্দেশে; তুমি তো জানতে না কিতাব কি ও ঈমান কি পক্ষান্তরে আমি একে করেছি আলো যা দ্বারা আমি আমার বান্দাদের মধ্যে যাকে ইচ্ছা পথ-নির্দেশ করি; তুমি অবশ্যই প্রদর্শন কর সরল পথ—

صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ اَلَآ اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ ﴿۵۳﴾

৫৩. ঐ আল্লাহর পথ, যাঁর অধিপত্বে রয়েছে আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে। সাবধান! সকল বিষয় আল্লাহরই দিকে প্রত্যাবর্তন করে।

سُوْرَةُ الزُّخْرُفِ مَكِّيَّةٌ

সূরাঃ যুখরুফ, মাক্কী

اٰيَاتُهَا ٨٩ رُكُوْعَاتُهَا ٧

(আয়াতঃ ৮৯, রুকূ'ঃ ৭)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

حٰمٓ ﴿۱﴾

১. হা-মীম,

وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿۲﴾

২. শপথ সুস্পষ্ট কিতাবের;

اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۳﴾

৩. আমি এটা (অবতীর্ণ) করেছি আরবী ভাষায় কুরআনরূপে, যাতে তোমরা বুঝতে পার।

وَاِنَّهٗ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿۴﴾

৪. এটা রয়েছে আমার নিকট উম্মুল কিতাবে; (লাওহে মাহফুজে) এটা উচ্চমর্যাদা সম্পন্ন প্রজ্ঞাময়।

اَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ﴿۵﴾

৫. আমি কি তোমাদের হতে এই উপদেশ বাণী (কুরআন) সম্পূর্ণরূপে প্রত্যাহার করে নিবো এই কারণে যে, তোমরা সীমালঙ্ঘনকারী সম্প্রদায়?

وَكَمْ اَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ فِي الْاَوَّلِيْنَ ﴿۶﴾

৬. পূর্ববর্তীদের নিকট আমি কত নবী প্রেরণ করেছিলাম।

وَمَا يَأْتِيهِم مِّن نَّبِيٍّ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٧﴾

৭. এবং যখনই তাদের নিকট কোন নবী এসেছে তারা তাকে ঠাট্টা-বিদ্রূপ করেছে।

فَأَهْلَكْنَا أَشَدَّ مِنْهُم بَطْشًا وَمَضَىٰ مَثَلُ الْأَوَّلِينَ ﴿٨﴾

৮. তাদের মধ্যে যারা এদের অপেক্ষা শক্তিতে প্রবল ছিল তাদেরকে আমি ধ্বংস করেছিলাম; আর এভাবে চলে আসছে পূর্ববর্তীদের অনুরূপ দৃষ্টান্ত।

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ﴿٩﴾

৯. তুমি যদি তাদেরকে জিজ্ঞেস করঃ কে আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছে? তারা অবশ্যই বলবেঃ এগুলো তো সৃষ্টি করেছেন পরাক্রমশালী, সর্বজ্ঞ আল্লাহ।

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٠﴾

১০. যিনি তোমাদের জন্যে পৃথিবীকে করেছেন শয্যা এবং ওতে করেছেন তোমাদের চলার পথ যাতে তোমরা সঠিক পথ পেতে পার;

وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَنشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا كَذَٰلِكَ تُخْرَجُونَ ﴿١١﴾

১১. এবং যিনি আকাশ হতে পানি বর্ষণ করেন পরিমিতভাবে এবং আমি তার দ্বারা জীবিত করি নির্জীব ভূ-খন্ডকে। এভাবেই তোমাদেরকে পুনরুত্থিত করা হবে।

وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْكَبُونَ ﴿١٢﴾

১২. এবং যিনি জোড়াসমূহের প্রত্যেককে সৃষ্টি করেন এবং যিনি তোমাদের জন্যে সৃষ্টি করেন এমন নৌযান ও চতুষ্পদজন্তু যাতে তোমরা আরোহণ কর।

لِتَسْتَوُوا عَلَىٰ ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَٰذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ﴿١٣﴾

১৩. যাতে তোমরা ওদের পৃষ্ঠে স্থির হয়ে বসতে পার, তারপর তোমাদের প্রতিপালকের নিয়ামত স্মরণ কর যখন তোমরা ওর উপর স্থির হয়ে বস; এবং বলঃ পবিত্র ও মহান তিনি, যিনি এদেরকে আমাদের বশীভূত করে দিয়েছেন, যদিও আমরা সমর্থ ছিলাম না এদেরকে বশীভূত করতে।

وَاِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٤﴾

১৪. আমরা আমাদের প্রতিপালকের নিকট অবশ্যই প্রত্যাবর্তন করবো।

وَجَعَلُوْا لَهٗ مِنْ عِبَادِهٖ جُزْءًا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ مُّبِيْنٌ ؕ ﴿١٥﴾

১৫. তারা তাঁর (আল্লাহর) বান্দাদের মধ্য হতে তাঁর অংশ সাব্যস্ত করেছে। মানুষ তো স্পষ্টই অকৃতজ্ঞ।

اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنٰتٍ وَّاَصْفٰىكُمْ بِالْبَنِيْنَ ﴿١٦﴾

১৬. তিনি কি তাঁর সৃষ্টি হতে নিজের জন্যে কন্যা সন্তান গ্রহণ করেছেন এবং তোমাদেরকে চয়ন করেছেন পুত্র সন্তান দ্বারা?

وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿١٧﴾

১৭. দয়াময় আল্লাহর প্রতি তারা যা আরোপ করে যখন তাদের কাউকেও সেই (কন্যা সন্তানের) সংবাদ দেয়া হলে তার মুখমন্ডল কালো হয়ে যায় এবং সে দুঃখে ভারাক্রান্ত হয়ে পড়ে।

اَوَمَنْ يُّنَشَّؤُا فِى الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِى الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِيْنٍ ﴿١٨﴾

১৮. তারা কি আল্লাহর প্রতি আরোপ করে এমন সন্তান, যে অলংকারে মন্ডিত হয়ে লালিত-পালিত হয় এবং তর্ক-বিতর্ককালে স্পষ্ট বক্তব্যে অসমর্থ?

وَجَعَلُوا الْمَلٰٓئِكَةَ الَّذِيْنَ هُمْ عِبٰدُ الرَّحْمٰنِ اِنَاثًا ؕ اَشَهِدُوْا خَلْقَهُمْ ؕ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْـَٔلُوْنَ ﴿١٩﴾

১৯. তারা দয়াময় আল্লাহর বান্দা ফেরেশতাদেরকে নারী গণ্য করেছে; এদের সৃষ্টির সময় কি তারা উপস্থিত ছিল? তাদের সাক্ষী লিপিবদ্ধ করা হবে এবং তাদেরকে জিজ্ঞেস করা হবে।

وَقَالُوْا لَوْ شَآءَ الرَّحْمٰنُ مَا عَبَدْنٰهُمْ ؕ مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۗ اِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ؕ ﴿٢٠﴾

২০. তারা বলেঃ দয়াময় আল্লাহ ইচ্ছা করলে আমরা এদের পূজা করতাম না। এ বিষয়ে তাদের কোন জ্ঞান নেই; তারা তো শুধু আন্দাজে কথা বলে।

اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا مِّنْ قَبْلِهٖ فَهُمْ بِهٖ مُسْتَمْسِكُوْنَ ﴿٢١﴾

২১. আমি কি তাদেরকে এর (কুরআনের) পূর্বে কোন কিতাব দান করেছি যা তারা দৃঢ়ভাবে ধারণ করে আছে?

بَلْ قَالُوْٓا اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّ اِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٢٢﴾

২২. বরং তারা বলেঃ আমরা তো আমাদের পূর্বপুরুষদেরকে পেয়েছি এক মতাদর্শের উপর এবং আমরা তাদেরই পদাঙ্ক অনুসরণ করে হেদায়েতপ্রাপ্ত।

وَكَذٰلِكَ مَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّ اِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. অনুরূপ তোমার পূর্বে কোন জনপদে যখনই কোন সতর্ককারী প্রেরণ করেছি তখন ওর সমৃদ্ধশালী ব্যক্তিরা বলতোঃ আমরা তো আমাদের পূর্বপুরুষদেরকে পেয়েছি এক মতাদর্শের উপর এবং আমরা তাদেরই পদাঙ্ক অনুসরণ করছি।

قٰلَ اَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ؕ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٢٤﴾

২৪. সে (সতর্ককারী) বলতোঃ তোমরা তোমাদের পূর্বপুরুষদেরকে যে পথে পেয়েছো, আমি যদি তোমাদের জন্যে তদপেক্ষা উৎকৃষ্ট পথ-নির্দেশ আনয়ন করি তবুও কি? (তোমরা তাদের পদাঙ্ক অনুসরণ করবে?) তারা বলতোঃ তোমরা যা সহ প্রেরিত হয়েছো আমরা তা প্রত্যাখ্যান করি।

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٥﴾

২৫. অতঃপর আমি তাদের থেকে প্রতিশোধ গ্রহণ করলাম; দেখো, মিথ্যাচারীদের পরিণাম কি হয়েছে!

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖٓ اِنَّنِيْ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٦﴾

২৬. (স্মরণ কর,) যখন ইবরাহীম (عليه السلام) তার পিতা এবং সম্প্রদায়কে বলেছিলেনঃ তোমরা যাদের পূজা কর তাদের সাথে আমার কোন সম্পর্ক নেই।

اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ سَيَهْدِيْنِ ﴿٢٧﴾

২৭. সম্পর্ক আছে শুধু তাঁরই সাথে যিনি আমাকে সৃষ্টি করেছেন এবং তিনিই আমাকে হেদায়েত দিবেন।

وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِىْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾

২৮. এই (তাওহীদের) ঘোষণাকে সে স্থায়ী কালেমারূপে রেখে গেছে তার পরবর্তীদের জন্যে যাতে তারা (শিরক থেকে) প্রত্যাবর্তন করে।

بَلْ مَتَّعْتُ هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٩﴾

২৯. বরং আমিই তাদেরকে এবং তাদের পূর্বপুরুষদেরকে সুযোগ দিয়েছিলাম ভোগের, অবশেষে তাদের নিকট সত্য ও স্পষ্ট (প্রচারক) রাসূল আগমন করা পর্যন্ত।

وَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٠﴾

৩০. যখন তাদের নিকট সত্য আসলো তখন তারা বললোঃ এটা তো যাদু এবং আমরা অবশ্যই এর প্রতি কুফরী করি।

وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ﴿٣١﴾

৩১. এবং তারা বলেঃ এই কুরআন কেন অবতীর্ণ করা হলো না দুই জনপদের কোন প্রতিপত্তিশালী ব্যক্তির উপর?

اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ؕ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا ؕ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿٣٢﴾

৩২. তারা কি তোমার প্রতিপালকের রহমত বণ্টন করে? আমিই তাদের মধ্যে জীবিকা বণ্টন করি তাদের পার্থিব জীবনে এবং একজনকে অপরের উপর মর্যাদায় উন্নত করি যাতে একে অপরের দ্বারা খেদমত করিয়ে নিতে পারে এবং তারা যা জমা করে তা হতে তোমার প্রতিপালকের রহমত উৎকৃষ্টতর।

وَلَوْلَآ اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ﴿٣٣﴾

৩৩. (সত্য অস্বীকারে) মানুষ যদি এক উম্মতে পরিণত হয়ে পড়বে, এই আশঙ্কা না থাকলে দয়াময় আল্লাহকে যারা অস্বীকার করে, তাদেরকে আমি দিতাম তাদের গৃহের জন্যে রৌপ্য নির্মিত ছাদ ও সিঁড়ি যাতে তারা আরোহণ করে।

وَلِبُيُوْتِهِمْ اَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔوْنَ ﴿٣٤﴾

৩৪. এবং তাদের গৃহের জন্যে দিতাম দরজা, (বিশ্রামের জন্যে) পালঙ্ক, যাতে তারা হেলান দিয়ে বসত।

وَزُخْرُفًا ؕ وَاِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٥﴾

৩৫. এবং স্বর্ণের নির্মিতও। আর এই সবই তো শুধু পার্থিব জীবনের ভোগ সম্ভার। মুত্তাকীদের জন্যে তোমার প্রতিপালকের নিকট রয়েছে আখেরাত (-এর কল্যাণ)।

وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ﴿٣٦﴾

৩৬. যে ব্যক্তি দয়াময় আল্লাহর স্মরণে বিমুখ হয় আমি তার জন্যে নিয়োজিত করি এক শয়তান, অতঃপর সেই হয় তার সহচর।

وَاِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٧﴾

৩৭. তারাই (শয়তানরা) মানুষকে সৎপথ হতে বিরত রাখে, অথচ মানুষ মনে করে যে তারা হেদায়েতের উপর পরিচালিত হচ্ছে।

حَتّٰۤى اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ﴿٣٨﴾

৩৮. অবশেষে যখন সে আমার নিকট উপস্থিত হবে, তখন সে (শয়তানকে) বলবেঃ হায়! আমার ও তোমার মধ্যে যদি পূর্ব ও পশ্চিমের ব্যবধান থাকতো! কত নিকৃষ্ট সহচর সে!

وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِى الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٩﴾

৩৯. আর আজ তোমাদের (এই অনুতাপ) তোমাদের অবশ্যই কোন উপকারে আসবে না, যেহেতু তোমরা যুলুম করেছিলে। তোমরা তো সবাই শাস্তিতে শরীক।

اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِى الْعُمْىَ وَمَنْ كَانَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٠﴾

৪০. তুমি কি শুনাতে পারবে বধিরকে? অথবা যে অন্ধ ও যে ব্যক্তি স্পষ্ট বিভ্রান্তিতে আছে, তাকে কি পারবে সৎপথে পরিচালিত করতে?

فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ ﴿٤١﴾

৪১. আমি যদিও তোমার মৃত্যু ঘটাই, তবু আমি তাদের প্রতিশোধ নিব।

أَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِي وَعَدْنَاهُمْ فَإِنَّا عَلَيْهِمْ مُقْتَدِرُونَ ﴿٤٢﴾

৪২. অথবা আমি তাদেরকে যে আযাবের ওয়াদা করেছি যদি আমি তোমাকে তা প্রত্যক্ষ করাই, তবে তাদের উপর আমার তো অবশ্যই পূর্ণ ক্ষমতা রয়েছে।

فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِي أُوحِيَ إِلَيْكَ ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٤٣﴾

৪৩. সুতরাং তোমার প্রতি যা ওহী করা হয়েছে তা দৃঢ়ভাবে অবলম্বন কর। তুমি তো সরল পথেই রয়েছো।

وَإِنَّهُ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۖ وَسَوْفَ تُسْأَلُونَ ﴿٤٤﴾

৪৪. (কুরআন) তোমার ও তোমার সম্প্রদায়ের জন্যে তা সম্মানের বস্তু; তোমাদেরকে অবশ্যই এ বিষয়ে প্রশ্ন করা হবে।

وَسْأَلْ مَنْ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رُّسُلِنَا أَجَعَلْنَا مِن دُونِ الرَّحْمَٰنِ آلِهَةً يُعْبَدُونَ ﴿٤٥﴾

৪৫. তোমার পূর্বে আমি যেসব রাসূল প্রেরণ করেছিলাম তাদেরকে তুমি জিজ্ঞেস কর, আমি কি দয়াময় আল্লাহ ব্যতীত কোন মা'বূদ স্থির করেছিলাম যাদের ইবাদত করা যায়।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَإِيهِ فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٦﴾

৪৬. মূসা (عليه السلام)-কে তো আমি আমার নিদর্শনাবলী সহ ফিরআ'উন ও তার পরিষদবর্গের নিকট পাঠিয়েছিলাম; সে বলেছিলঃ আমি অবশ্যই জগতসমূহের প্রতিপালকের প্রেরিত।

فَلَمَّا جَاءَهُم بِآيَاتِنَا إِذَا هُم مِّنْهَا يَضْحَكُونَ ﴿٤٧﴾

৪৭. সে (মূসা عليه السلام) তাদের নিকট আমার নিদর্শনাবলীসহ যাওয়া মাত্র তারা তা নিয়ে হাসি-ঠাট্টা করতে লাগলো।

وَمَا نُرِيهِم مِّنْ آيَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ أُخْتِهَا ۖ وَأَخَذْنَاهُم بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤٨﴾

৪৮. আমি তাদেরকে এমন কোন নিদর্শন দেখাইনি যা ওর অনুরূপ নিদর্শন অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ নয়। আমি তাদেরকে শাস্তি দিলাম যাতে তারা প্রত্যাবর্তন করে।

وَقَالُوْا يٰۤاَيُّهَ السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾

৪৯. তারা বলেছিলঃ হে যাদুকর! তোমার প্রতিপালকের নিকট তুমি আমাদের জন্যে তা প্রার্থনা কর যা তিনি তোমার সাথে অঙ্গীকার করেছেন; তাহলে আমরা অবশ্যই হেদায়েতপ্রাপ্ত।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ﴿٥٠﴾

৫০. অতঃপর যখন আমি তাদের উপর হতে শাস্তি দূর করলাম তখনই তারা অঙ্গীকার ভঙ্গ করে বসলো।

وَنَادٰى فِرْعَوْنُ فِيْ قَوْمِهٖ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَيْسَ لِيْ مُلْكُ مِصْرَ وَهٰذِهِ الْاَنْهٰرُ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِيْ ۚ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٥١﴾

৫১. ফিরআ'উন তার সম্প্রদায়ের মধ্যে এ বলে ঘোষণা করলোঃ হে আমার সম্প্রদায়! মিসরের বাদশাহী কি আমার নয়? এই নদীগুলো আমার পাদদেশে প্রবাহিত, তোমরা কি দেখো না?।

اَمْ اَنَا خَيْرٌ مِّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ مَهِيْنٌ ۙ وَّلَا يَكَادُ يُبِيْنُ ﴿٥٢﴾

৫২. বরং আমি তো শ্রেষ্ঠ এই ব্যক্তি হতে যে হীন এবং স্পষ্ট কথা বলতেও অক্ষম।

فَلَوْلَاۤ اُلْقِيَ عَلَيْهِ اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ اَوْ جَآءَ مَعَهُ الْمَلٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِيْنَ ﴿٥٣﴾

৫৩. (তিনি যদি নবী হতেন তবে) মূসা (عليه السلام)-কে কেন দেয়া হলো না স্বর্ণ বালা অথবা তার সাথে কেন আসলো না ফেরেশতারা দলবদ্ধভাবে।

فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهٗ فَاَطَاعُوْهُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٥٤﴾

৫৪. এভাবে সে তার সম্প্রদায়কে হতবুদ্ধি করে দিলো, ফলে তারা তার কথা মেনে নিলো। তারা তো ছিল এক অবাধ্য সম্প্রদায়।

فَلَمَّاۤ اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٥﴾

৫৫. যখন তারা আমাকে ক্রোধান্বিত করলো তখন আমি তাদেরকে শাস্তি দিলাম এবং নিমজ্জিত করলাম তাদের সবাইকে।

فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّمَثَلًا لِّلْاٰخِرِيْنَ ﴿٥٦﴾

৫৬. তৎপর পরবর্তীদের জন্যে আমি তাদেরকে করে রাখলাম অতীত ইতিহাস ও দৃষ্টান্ত।

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّونَ ﴿٥٧﴾

৫৭. যখন মরিয়ম পুত্রের দৃষ্টান্ত উপস্থিত করা হয়, তখনই তোমার সম্প্রদায় (আনন্দে) শোরগোল শুরু করে দেয়।

وَقَالُوٓا ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ ؕ مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ﴿٥٨﴾

৫৮. এবং বলেঃ আমাদের দেবতাগুলো শ্রেষ্ঠ, না ঈসা (عليه السلام)? তারা শুধু ঝগড়া-বিবাদের উদ্দেশ্যেই তোমাকে এ কথা বলে। বস্তুত তারা তো শুধু ঝগড়া-বিবাদকারী সম্প্রদায়।

اِنْ هُوَ اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَ جَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٥٩﴾

৫৯. তিনি তো ছিলেন আমারই এক বান্দা, যার প্রতি আমি অনুগ্রহ করেছিলাম এবং যাকে করেছিলাম বানী ইসরাঈলের জন্য দৃষ্টান্ত।

وَلَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰٓئِكَةً فِي الْاَرْضِ يَخْلُفُوْنَ ﴿٦٠﴾

৬০. আমি ইচ্ছা করলে তোমাদের পরিবর্তে ফেরেশতা সৃষ্টি করতে পারতাম, যারা পৃথিবীতে (পরস্পর) প্রতিনিধিত্বকারী হতো।

وَ اِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُوْنِ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦١﴾

৬১. তিনি (ঈসা عليه السلام) তো কিয়ামতের নিদর্শন; সুতরাং তোমরা কিয়ামতে সন্দেহ পোষণ করো না এবং আমাকে অনুসরণ কর। এটাই সরল পথ।

وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٦٢﴾

৬২. শয়তান যেন তোমাদেরকে কিছুতেই নিবৃত্ত না করে, সে তো তোমাদের প্রকাশ্য শত্রু।

وَلَمَّا جَآءَ عِيْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِاُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ تَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوْنِ ﴿٦٣﴾

৬৩. ঈসা (عليه السلام) যখন স্পষ্ট নিদর্শনাবলী সহ আসলো, তখন সে বললোঃ আমি তো তোমাদের নিকট এসেছি প্রজ্ঞাসহ এবং তোমরা যে বিষয়ে মতভেদ করছো, তা স্পষ্ট করে দিবার জন্যে। সুতরাং তোমরা আল্লাহকে ভয় কর এবং আমার অনুসরণ কর।

إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٦٤﴾

৬৪. আল্লাহই তো আমার প্রতিপালক এবং তোমাদেরও প্রতিপালক, অতএব তাঁর ইবাদত কর; এটাই সরল পথ।

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِن بَيْنِهِمْ ۖ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ أَلِيمٍ ﴿٦٥﴾

৬৫. অতঃপর তাদের কতিপয় দল মতানৈক্য সৃষ্টি করলো; সুতরাং যালিমদের জন্যে দুর্ভোগ যন্ত্রণাদায়ক দিনের শাস্তির।

هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَن تَأْتِيَهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٦٦﴾

৬৬. তারা তো তাদের অজ্ঞাতসারে আকস্মিকভাবে কিয়ামত আসারই অপেক্ষা করছে।

الْأَخِلَّاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ إِلَّا الْمُتَّقِينَ ﴿٦٧﴾

৬৭. বন্ধুরা সেইদিন হয়ে পড়বে একে অপরের শত্রু, তবে মুত্তাকীরা ব্যতীত।

يَا عِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنتُمْ تَحْزَنُونَ ﴿٦٨﴾

৬৮. হে আমার বান্দাগণ! আজ তোমাদের কোন ভয় নেই এবং চিন্তিতও হবে না তোমরা–

الَّذِينَ آمَنُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ﴿٦٩﴾

৬৯. যারা আমার আয়াতসমূহে বিশ্বাস করেছিল এবং আত্মসমর্পণ করেছিল।

ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ ﴿٧٠﴾

৭০. তোমার এবং তোমাদের সহধর্মিনীগণ জান্নাতে প্রবেশ কর, তোমাদেরকে সন্তুষ্ট করা হবে।

يُطَافُ عَلَيْهِم بِصِحَافٍ مِّن ذَهَبٍ وَأَكْوَابٍ ۖ وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ ۖ وَأَنتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٧١﴾

৭১. স্বর্ণের বালা ও পানপাত্র নিয়ে তাদেরকে প্রদক্ষিণ করা হবে; মন যা চায় এবং নয়ন যাতে তৃপ্ত হয় সেখানে রয়েছে এবং সেখানে তোমরা স্থায়ী হবে।

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٧٢﴾

৭২. এটাই জান্নাত, তোমাদেরকে যার অধিকারী করা হয়েছে, তোমাদের কর্মের ফল স্বরূপ।

لَكُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ كَثِيْرَةٌ مِّنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٣﴾

৭৩. সেখানে তোমাদের জন্যে রয়েছে প্রচুর ফল-মূল, তোমরা আহার করবে তা হতে।

اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ عَذَابِ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ﴿٧٤﴾

৭৪. নিশ্চয়ই অপরাধীরা জাহান্নামের শাস্তিতে থাকবে চিরকাল–

لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٥﴾

৭৫. তাদের শাস্তি লাঘব করা হবে না এবং তারা হতাশ হয়ে পড়বে।

وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْا هُمُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٦﴾

৭৬. আমি তাদের প্রতি যুলুম করিনি, বরং তারা নিজেরাই ছিল যালিম।

وَنَادَوْا يٰمٰلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ؕ قَالَ اِنَّكُمْ مّٰكِثُوْنَ ﴿٧٧﴾

৭৭. তারা চিৎকার করে বলবেঃ হে মালিক (জাহান্নামের অধিকর্তা)! তোমার প্রতিপালক আমাদেরকে নিঃশেষ করে দিন। সে বলবেঃ তোমরা তো এখানেই অবস্থান করবে।

لَقَدْ جِئْنٰكُمْ بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٨﴾

৭৮. (আল্লাহ বলবেনঃ) আমি তো তোমাদের নিকট সত্য পৌঁছিয়ে ছিলাম; কিন্তু তোমাদের অধিকাংশই ছিল সত্যকে অপছন্দকারী।

اَمْ اَبْرَمُوْٓا اَمْرًا فَاِنَّا مُبْرِمُوْنَ ﴿٧٩﴾

৭৯. তারা কি কোন ব্যাপারে চূড়ান্ত সিদ্ধান্ত গ্রহণ করেছে? আমিই তো সিদ্ধান্তকারী।

اَمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ ؕ بَلٰى وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٨٠﴾

৮০. তারা কি মনে করে যে, আমি তাদের গোপন বিষয় ও তাদের পরস্পরে চুপে চুপে যা বলে তার খবর রাখি না? অবশ্যই রাখি। আমার ফেরেশতারা তো তাদের নিকট থেকে সবকিছু লিপিবদ্ধ করে।

قُلْ اِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ ۖ فَاَنَا اَوَّلُ الْعٰبِدِيْنَ ﴿٨١﴾

৮১. বলঃ দয়াময় আল্লাহর কোন সন্তান থাকলে আমি হতাম তার উপাসকগণের সর্বপ্রথম।

سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٨٢﴾

৮২. তারা যা আরোপ করে তা হতে পবিত্র ও মহান, আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর অধিপতি এবং আরশের অধিপতি।

فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٨٣﴾

৮৩. অতএব তাদেরকে যে দিবসের কথা বলা হয়েছে তার সম্মুখীন হওয়ার পূর্ব পর্যন্ত তাদেরকে তর্ক-বিতর্ক ও ক্রীড়া-কৌতুক করতে দাও।

وَهُوَ الَّذِيْ فِي السَّمَآءِ اِلٰهٌ وَّفِي الْاَرْضِ اِلٰهٌ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ﴿٨٤﴾

৮৪. তিনিই মা'বূদ আকাশমন্ডলীতে, তিনিই মা'বূদ পৃথিবীতে এবং তিনি প্রজ্ঞাবান, সর্বজ্ঞ।

وَتَبٰرَكَ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ وَعِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٥﴾

৮৫. কত মহান তিনি যিনি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী এবং এগুলোর মধ্যবর্তী সবকিছুরই সার্বভৌম অধিপতি! কিয়ামতের জ্ঞান শুধু তাঁরই আছে এবং তাঁরই নিকট তোমরা প্রত্যাবর্তিত হবে।

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾

৮৬. আল্লাহর পরিবর্তে তারা যাদেরকে ডাকে, শাফায়াতের ক্ষমতা তাদের নেই, তবে যারা সত্য উপলব্ধি করে ওর সাক্ষ্য দেয় তারা ব্যতীত।

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٨٧﴾

৮৭. যদি তুমি তাদেরকে জিজ্ঞেস করঃ কে তাদেরকে সৃষ্টি করেছে; তবে তারা অবশ্যই বলবে; আল্লাহ! তবুও তারা কোথায় ফিরে যাচ্ছে?

وَقِيْلِهٖ يٰرَبِّ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾

৮৮. তাঁর (মুহাম্মাদ ﷺ-এর) এ উক্তি—হে আমার প্রতিপালক! এই সম্প্রদায় তো ঈমান আনবে না।

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ ؕ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾

৮৯. সুতরাং তুমি তাদেরকে উপেক্ষা কর এবং বলঃ সালাম; তারা শীঘ্রই জানতে পারবে।

সূরাঃ দুখান, মাক্কী

(আয়াতঃ ৫৯, রুকূ'ঃ ৩)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

১. হা-মীম,

২. শপথ সুস্পষ্ট কিতাবের,

৩. আমি তো এটা অবতীর্ণ করেছি এক বরকতময় রজনীতে; (শবে কদরে) আমি তো সতর্ককারী।

৪. এ রাতে প্রত্যেক প্রজ্ঞাপূর্ণ বিষয় ফয়সালা হয়।

৫. আমার আদেশক্রমে, আমি তো রাসূল প্রেরণ করে থাকি।

৬. তোমার প্রতিপালকের অনুগ্রহ স্বরূপ; তিনি তো সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

৭. যিনি আকাশমন্ডলী, পৃথিবী ও ওগুলোর মধ্যস্থিত সবকিছুর প্রতিপালক— যদি তোমরা নিশ্চিত বিশ্বাসী হও।

৮. তিনি ব্যতীত (সত্য) কোন মা'বূদ নেই, তিনি জীবন দান করেন এবং তিনিই মৃত্যু ঘটান; তিনি তোমাদের প্রতিপালক এবং তোমাদের পূর্ব-পুরুষদেরও প্রতিপালক।

৯. বস্তুতঃ তারা সন্দেহের বশবর্তী হয়ে খেল-তামাশা করছে।

১০. অতএব তুমি অপেক্ষা কর সেই দিনের যেদিন স্পষ্ট ধুম্রাচ্ছন্ন হবে আকাশ,

سُوْرَةُ الدُّخَانِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٥٩ رُكُوْعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ۚ ﴿١﴾

وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۙ ﴿٢﴾

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ﴿٣﴾

فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ۙ ﴿٤﴾

اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ؕ اِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ۚ ﴿٥﴾

رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۙ ﴿٦﴾

رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۟ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٧﴾

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨﴾

بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ﴿٩﴾

فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِي السَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ۙ ﴿١٠﴾

يَّغْشَى النَّاسَ ۭ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ⑪

১১. এবং তা আবৃত করে ফেলবে মানব জাতিকে। এটা হবে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ⑫

১২. (তখন তারা বলবেঃ) হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে এই শাস্তি হতে মুক্তি দিন, আমরা ঈমান আনবো।

اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ جَاۗءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ⑬

১৩. (এখন) তারা কি করে আর উপদেশ গ্রহণ করবে? তাদের নিকট তো এসেছিলেন স্পষ্ট ব্যাখ্যা প্রদানকারী এক রাসূল;

ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ ⑭

১৪. অতঃপর তারা তাকে পৃষ্ঠপ্রদর্শন করে বলেঃ সে তো শিখানো (বুলি বলছে,) সে তো এক পাগল।

اِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَاۗىِٕدُوْنَ ⑮

১৫. আমি (যদি) তোমাদের শাস্তি কিছুকালের জন্যে সরিয়ে দেই তোমরা তো পুনরায় তাই করবে।

يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ۚ اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ ⑯

১৬. যেদিন আমি তোমাদেরকে প্রবলভাবে পাক্‌ড়াও করবো, সেদিন আমি প্রতিশোধ নিবই।

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاۗءَهُمْ رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ ⑰

১৭. এদের পূর্বে আমি তো ফিরআ'উন সম্প্রদায়কে পরীক্ষা করেছিলাম এবং তাদের নিকটও এসেছিল এক মহান রাসূল।

اَنْ اَدُّوْٓا اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ۭ اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ⑱

১৮. তিনি বলেছিলেনঃ আল্লাহর বান্দাদেরকে আমার নিকট প্রত্যার্পণ কর। আমি তোমাদের জন্যে এক বিশ্বস্ত রাসূল।

وَّاَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ۭ اِنِّىْٓ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ⑲

১৯. এবং তোমরা আল্লাহর বিরুদ্ধে উদ্ধত হয়ো না, আমি তোমাদের নিকট উপস্থিত করছি স্পষ্ট প্রমাণ।

وَاِنِّىْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ ⑳

২০. তোমরা যাতে আমাকে প্রস্তরাঘাতে হত্যা করতে না পার, তজ্জন্যে

আমি আমার প্রতিপালক ও তোমাদের প্রতিপালকের আশ্রয় চাচ্ছি।

وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ ﴿٢١﴾

২১. যদি তোমরা আমার কথায় বিশ্বাস স্থাপন না কর, তবে তোমরা আমার থেকে দূরে থাকো।

فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ ﴿٢٢﴾

২২. অতঃপর মূসা (عليه السلام) তাঁর প্রতিপালকের নিকট দু'আ করলেনঃ এরা তো এক অপরাধী সম্প্রদায়।

فَاَسْرِ بِعِبَادِيْ لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. আমি বলেছিলামঃ তুমি আমার বান্দাদেরকে নিয়ে রাতে বের হয়ে পড়, তোমাদের পশ্চাদ্ধাবন করা হবে।

وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ۭ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٤﴾

২৪. সমুদ্রকে স্থির থাকতে দাও, তারা এমন এক বাহিনী যারা নিমজ্জিত হবে।

كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٢٥﴾

২৫. তারা ছেড়ে গিয়েছিল কত উদ্যান ও প্রস্রবণ,

وَّزُرُوْعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿٢٦﴾

২৬. কত শস্যক্ষেত্র ও সুরম্য প্রাসাদ,

وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ﴿٢٧﴾

২৭. কত বিলাস উপকরণ, যা তাদেরকে আনন্দ দিতো!

كَذٰلِكَ ۣ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿٢٨﴾

২৮. এরূপই ঘটেছিল এবং আমি এগুলোর উত্তরাধিকারী করেছিলাম ভিন্ন সম্প্রদায়কে।

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاۗءُ وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ﴿٢٩﴾

২৯. আকাশ এবং পৃথিবী কেউই তাদের জন্যে অশ্রুপাত করেনি এবং তাদেরকে অবকাশও দেয়া হয়নি।

وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿٣٠﴾

৩০. আমি তো উদ্ধার করেছিলাম বানী ইসরাইলকে লাঞ্ছনাদায়ক শাস্তি হতে—

مِنْ فِرْعَوْنَ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٣١﴾

৩১. ফিরআ'উনের; সে তো ছিল পরাক্রান্ত সীমালঙ্ঘনকারীদের মধ্যে।

وَلَقَدِ اخْتَرْنَاهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٣٢﴾

৩২. আমি জেনে শুনেই তাদেরকে বিশ্বে শ্রেষ্ঠত্ব দিয়েছিলাম,

وَآتَيْنَاهُم مِّنَ الْآيَاتِ مَا فِيهِ بَلَاءٌ مُّبِينٌ ﴿٣٣﴾

৩৩. এবং তাদেরকে দিয়েছিলাম নিদর্শনাবলী, যাতে ছিল সুস্পষ্ট পরীক্ষা।

إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ﴿٣٤﴾

৩৪. তারা (কাফেররা) বলেই থাকে,

إِنْ هِيَ إِلَّا مَوْتَتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنشَرِينَ ﴿٣٥﴾

৩৫. আমাদের প্রথম মৃত্যু ব্যতীত আর কিছুই নেই এবং আমরা আর পুনরুত্থিত হবো না।

فَأْتُوا بِآبَائِنَا إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٦﴾

৩৬. অতএব তোমরা যদি সত্যবাদী হও তবে আমাদের পূর্বপুরুষদেরকে উপস্থিত কর।

أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ أَهْلَكْنَاهُمْ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٣٧﴾

৩৭. শ্রেষ্ঠ কি তারা, না তুব্বা সম্প্রদায় ও তাদের পূর্ববর্তীরা? আমি তাদেরকে ধ্বংস করেছিলাম, অবশ্যই তারা ছিল অপরাধী।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَاعِبِينَ ﴿٣٨﴾

৩৮. আমি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী এবং এতোদুভয়ের মধ্যস্থিত কোন কিছুই খেল-তামাশার ছলে সৃষ্টি করিনি।

مَا خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

৩৯. আমি এ দু'টি যথাযথ উদ্দেশ্য সৃষ্টি করেছি; কিন্তু তাদের অধিকাংশই এটা জানে না।

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٠﴾

৪০. সকলের জন্যে নির্ধারিত রয়েছে তাদের বিচার দিবস।

يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلًى عَن مَّوْلًى شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤١﴾

৪১. যেদিন এক বন্ধু অপর বন্ধুর কোন কাজে আসবে না এবং তারা সাহায্যও পাবে না।

إِلَّا مَن رَّحِمَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٤٢﴾

৪২. তবে আল্লাহ যার প্রতি দয়া করেন (তার কথা স্বতন্ত্র।) তিনি তো পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু।

৪৩. নিশ্চয় যাককূম বৃক্ষ হবে–

إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوْمِ ﴿٤٣﴾

৪৪. পাপীর খাদ্য;

طَعَامُ الْأَثِيْمِ ﴿٤٤﴾

৪৫. গলিত তাম্রের মত; ওটা তার উদরে ফুটতে থাকবে।

كَالْمُهْلِ يَغْلِيْ فِي الْبُطُوْنِ ﴿٤٥﴾

৪৬. ফুটন্ত পানির মত।

كَغَلْيِ الْحَمِيْمِ ﴿٤٦﴾

৪৭. (বলা হবে) তাকে ধর এবং টেনে নিয়ে যাও জাহান্নামের মধ্যস্থলে,

خُذُوْهُ فَاعْتِلُوْهُ إِلٰى سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿٤٧﴾

৪৮. অতঃপর তার মস্তকের উপর ফুটন্ত পানির শাস্তি ঢেলে দাও।

ثُمَّ صُبُّوْا فَوْقَ رَأْسِهٖ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيْمِ ﴿٤٨﴾

৪৯. (এবং বলা হবেঃ) আস্বাদ গ্রহণ কর, তুমি তো ছিলে সম্মানিত অভিজাত।

ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ ﴿٤٩﴾

৫০. এটা তো সেটাই, যে বিষয়ে তোমরা সন্দেহ করতে।

إِنَّ هٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهٖ تَمْتَرُوْنَ ﴿٥٠﴾

৫১. মুত্তাকীরা থাকবে নিরাপদ স্থানে–

إِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ مَقَامٍ أَمِيْنٍ ﴿٥١﴾

৫২. উদ্যান ও ঝর্ণার মাঝে,

فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٥٢﴾

৫৩. তারা পরিধান করবে মিহি ও পুরু রেশমী বস্ত্র এবং তারা মুখোমুখী (হয়ে বসবে।)

يَّلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ وَّإِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٥٣﴾

৫৪. এরূপই ঘটবে; তাদেরকে সঙ্গীনি দিবো বড় বড় চক্ষু বিশিষ্ট পরমা সুন্দরী।

كَذٰلِكَ وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿٥٤﴾

৫৫. সেখানে তারা প্রশান্ত চিত্তে বিবিধ ফল-মূল আনতে বলবে।

يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ ﴿٥٥﴾

৫৬. প্রথম মৃত্যুর পর তারা সেখানে আর মৃত্যু আস্বাদন করবে না। তিনি তাদেরকে জাহান্নামের শাস্তি হতে রক্ষা করবেন–

لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُوْلٰى وَوَقٰهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿٥٦﴾

فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٥٧﴾

৫৭. তোমার প্রতিপালকের নিজ অনুগ্রহে। এটাই তো মহা সাফল্য।

فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٨﴾

৫৮. আমি তোমার ভাষায় কুরআনকে সহজ করে দিয়েছি যাতে তারা উপদেশ গ্রহণ করে।

فَارْتَقِبْ اِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ ﴿٥٩﴾

৫৯. সুতরাং তুমি প্রতীক্ষা কর, তারাও তো প্রতীক্ষমান।

سُوْرَةُ الْجَاثِيَةِ مَكِّيَّةٌ

সূরাঃ জাসিয়াহ, মাক্কী

اٰيَاتُهَا ٣٧ رُكُوْعَاتُهَا ٤

(আয়াতঃ ৩৭, রুকূ'ঃ ৪)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

حٰمٓ ﴿١﴾

১. হা-মীম

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾

২. এ কিতাব পরাক্রমশালী প্রজ্ঞাবান আল্লাহর নিকট হতে অবতীর্ণ।

اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾

৩. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে অনেক নিদর্শন রয়েছে মু'মিনদের জন্যে।

وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾

৪. তোমাদের সৃষ্টিতে এবং জীব-জন্তুর বিস্তারে নিদর্শনাবলী রয়েছে দৃঢ় বিশ্বাসীদের জন্যে।

وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٥﴾

৫. রাত্রি ও দিবসের পরিবর্তনে, আল্লাহ আকাশ হতে যে পানি বর্ষণ দ্বারা পৃথিবীকে ওর মৃত্যুর পর পুনর্জীবিত করেন তাতে এবং বায়ুর পরিবর্তনে নিদর্শনাবলী রয়েছে জ্ঞানী সম্প্রদায়ের জন্যে,

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦﴾

৬. এগুলো আল্লাহর আয়াত, যা আমি তোমার নিকট আবৃত্তি করছি যথাযথভাবে; সুতরাং আল্লাহর এবং

তাঁর আয়াতের পরিবর্তে তারা আর কোন বাণীতে বিশ্বাস করবে?

وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۙ﴿٧﴾

৭. দুর্ভোগ প্রত্যেক ঘোর মিথ্যাবাদী পাপীর।

يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٨﴾

৮. যে আল্লাহর আয়াতের আবৃত্তি শুনে অথচ অহংকারের সাথে অটল থাকে যেন সে তা শুনেনি। তাকে সংবাদ দাও যন্ত্রণাদায়ক শাস্তির।

وَاِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْـًٔا اتَّخَذَهَا هُزُوًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٩﴾

৯. যখন আমার কোন আয়াত সে অবগত হয় তখন সে তা ঠাট্টা-বিদ্রুপচ্ছলে গ্রহণ করে। তাদের জন্যে রয়েছে লাঞ্ছনাদায়ক শাস্তি।

مِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ ۚ وَلَا يُغْنِىْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْـًٔا وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٠﴾

১০. তাদের পশ্চাতে রয়েছে জাহান্নাম; তাদের কৃতকর্ম তাদের কোন কাজে আসবে না, তারা আল্লাহর পরিবর্তে যাদেরকে অভিভাবক স্থির করেছে তারাও নয়। তাদের জন্যে রয়েছে মহাশাস্তি।

هٰذَا هُدًى ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ﴿١١﴾

১১. এটা (কুরআন) হেদায়েত স্বরূপ; যারা তাদের প্রতিপালকের আয়াতসমূহ অস্বীকার করে, তাদের জন্যে রয়েছে অতিশয় যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

اَللّٰهُ الَّذِىْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِىَ الْفُلْكُ فِيْهِ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢﴾

১২. একমাত্র আল্লাহই তো সমুদ্রকে তোমাদের জন্যে নিয়োজিত করেছেন, যাতে তাঁর আদেশে তাতে নৌযানসমূহ চলাচল করতে পারে এবং যাতে তোমরা তাঁর অনুগ্রহ অনুসন্ধান করতে পার ও তাঁর প্রতি কৃতজ্ঞ হও।

وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ

১৩. তিনি তোমাদের জন্য নিয়োজিত করে দিয়েছেন আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সব কিছুই তাঁর পক্ষ হতে,

يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿١٣﴾

চিন্তাশীল সম্প্রদায়ের জন্যে, এতে অবশ্যই রয়েছে নিদর্শনাবলী।

قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا لِلَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ اَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾

১৪. মু'মিনদেরকে বলঃ তারা যেন ক্ষমা করে তাদেরকে, যারা আল্লাহর দিবসগুলোর আশা করে না, এটা এজন্যে যে, আল্লাহ কতিপয় লোকদেরকে তার কৃতকর্মের জন্যে প্রতিদান দিবেন।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ۫ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿١٥﴾

১৫. যে সৎ আমল করে সে তার (কল্যাণের) জন্যেই তা করে এবং কেউ মন্দ কর্ম করলে তার প্রতিফল সেই ভোগ করবে, অতঃপর তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের নিকট প্রত্যাবর্তিত হবে।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾

১৬. আমি তো বানী ইসরাঈলকে কিতাব (তাওরাত), বিধান (সে অনুযায়ী) ও নবুওয়াত দান করেছিলাম এবং তাদেরকে উত্তম রিযিক এবং তাদেরকে বিশ্বজগতের উপর শ্রেষ্ঠত্ব দিয়েছিলাম।

وَاٰتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۙ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٧﴾

১৭. এবং তাদেরকে সুস্পষ্ট প্রমাণ দান করেছিলাম দ্বীন সম্পর্কে, তাদের নিকট জ্ঞান আসবার পর তারা শুধু পরস্পর বিদ্বেষবশতঃ বিরোধিতা করেছিল, তারা যে বিষয়ে মতবিরোধ করতো, অবশ্যই তোমার প্রতিপালক কিয়ামতের দিন তাদের মধ্যে সে বিষয়ের ফায়সালা করে দিবেন।

ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨﴾

১৮. এরপর আমি তোমাকে প্রতিষ্ঠিত করেছি দ্বীনের বিশেষ শরীয়তের উপর; সুতরাং তুমি তার অনুসরণ করো, অজ্ঞদের প্রবৃত্তির অনুসরণ করো না।

إِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩﴾

১৯. তারা তোমার কোন উপকার করতে পারবে না; আল্লাহর (আযাব) হতে যালিমরা একে অপরের বন্ধু; আর আল্লাহ তো মুত্তাকীদের বন্ধু।

هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٢٠﴾

২০. এটা (কুরআন) মানব জাতির জন্যে সুস্পষ্ট দলীল এবং দৃঢ় বিশ্বাসী সম্প্রদায়ের জন্যে হেদায়েত ও রহমত।

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٢١﴾

২১. দুষ্কৃতিকারীরা কি মনে করে যে, আমি জীবন ও মৃত্যুর দিক দিয়ে তাদেরকে তাদের সমান গণ্য করবো যারা ঈমান আনে ও আমল করে? তাদের সিদ্ধান্ত কত মন্দ!

وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾

২২. আল্লাহ আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন যথাযথভাবে এবং যাতে প্রত্যেক ব্যক্তি তার কর্মানুযায়ী ফল পেতে পারে আর তাদের প্রতি যুলুম করা হবে না।

اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ؕ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. তুমি কি লক্ষ্য করেছো তাকে, যে তার প্রবৃত্তিকে নিজের মা'বূদ বানিয়ে নিয়েছে? আল্লাহ জেনে-শুনেই তাকে বিভ্রান্ত করেছেন এবং তার কর্ণ ও হৃদয়ে মোহর মেরে দিয়েছেন এবং তার চক্ষুর উপর রেখে-ছেন আবরণ। অতএব, আল্লাহ্‌র পর কে তাকে হেদায়েত করবে? তবুও কি তোমরা উপদেশ গ্রহণ করবে না?

وَقَالُوْا مَا هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ

২৪. তারা বলেঃ একমাত্র পার্থিব জীবনই আমাদের জীবন আমরা মরি ও বাঁচি, আর কালের আবর্তনই[১]

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আল্লাহ তা'আলা বলেনঃ আমাকে আদম সন্তানরা কষ্ট দেয়। তারা যামানা বা কালকে গালি দেয়। অথচ আমি যামানা। আমার হাতেই নির্দেশ। রাত-দিনের আমি পরিবর্তন করি। (বুখারী, হাদীস নং ৪৮২৬)

وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَآ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿٢٤﴾

আমাদেরকে ধ্বংস করে। বস্তুতঃ এই ব্যাপারে তাদের কোন জ্ঞান নেই, তারা তো শুধু ধারণা প্রসূতই কথা বলে।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾

২৫. তাদের নিকট যখন আমার সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ আবৃত্তি করা হয় তখন তাদের কোন যুক্তি থাকে না শুধু এই উক্তি ছাড়া যে, তোমরা সত্যবাদী হলে আমাদের পূর্ব-পুরুষদেরকে উপস্থিত কর।

قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾

২৬. বলঃ আল্লাহই তোমাদেরকে জীবিত করেন ও তোমাদের মৃত্যু ঘটান। অতঃপর তিনি তোমাদেরকে কিয়ামত দিবসে একত্রিত করবেন যাতে কোন সন্দেহ নেই; কিন্তু অধিকাংশ মানুষ তা জানে না।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّخْسَرُ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٢٧﴾

২৭. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর আধিপত্ত্ব আল্লাহরই; যেদিন কিয়ামত সংঘটিত হবে সেদিন বাতিল পন্থীরা হবে ক্ষতিগ্রস্ত।

وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۚ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰٓى اِلٰى كِتٰبِهَا ۚ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾

২৮. এবং প্রত্যেক সম্প্রদায়কে দেখবে (ভয়ে) নতজানু, প্রত্যেক সম্প্রদায়কে তার আমলনামার প্রতি আহ্বান করা হবে, আজ তোমাদেরকে তারই বিনিময় দেয়া হবে যা তোমরা করতে।

هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ۚ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٩﴾

২৯. এই আমার কিতাব, এটা তোমাদের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য দিবে সত্যভাবে। তোমরা যা করতে তা আমি অবশ্যই লিপিবদ্ধ করিয়ে-ছিলাম।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ

৩০. যারা ঈমান আনে ও সৎ আমল করে, তাদের প্রতিপালক তাদেরকে

رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿٣٠﴾

প্রবেশ করাবেন স্বীয় রহমতে। এটাই স্পষ্ট সাফল্য।

وَ اَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۫ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣١﴾

৩১. পক্ষান্তরে যারা কুফরী করেছে (তাদেরকে বলা হবেঃ) তোমাদের নিকট কি আমার আয়াতসমূহ পাঠ করা হয়নি? কিন্তু তোমরা অহংকার প্রকাশ করেছিলে এবং তোমরা ছিলে এক অপরাধী সম্প্রদায়।

وَ اِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ السَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا ۙ قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ ۙ اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّ مَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ﴿٣٢﴾

৩২. যখন বলা হয়ঃ আল্লাহর প্রতিশ্রুতি তো সত্য এবং কিয়ামত— এতে কোন সন্দেহ নেই, তখন তোমরা বলে থাকোঃ আমরা জানি না কিয়ামত কি; আমরা মনে করি এটি একটি ধারণা মাত্র এবং আমরা এ বিষয়ে নিশ্চিত নই।

وَ بَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَ حَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٣﴾

৩৩. তাদের মন্দ কর্মগুলো তাদের নিকট প্রকাশ হয়ে পড়বে এবং যা নিয়ে তারা ঠাট্টা-বিদ্রূপ করতো তা তাদেরকে পরিবেষ্টন করবে।

وَ قِيْلَ الْيَوْمَ نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَ مَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٣٤﴾

৩৪. আর বলা হবেঃ আজ আমি তোমাদেরকে ভুলে যাব যেমন তোমরা এই দিবসের সাক্ষাতকারকে ভুলে গিয়েছিলে। তোমাদের আশ্রয়-স্থল হবে জাহান্নাম এবং তোমাদের কোন সাহায্যকারী থাকবে না।

ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّ غَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا

৩৫. এটা এজন্যে যে, তোমরা আল্লাহর আয়াতসমূহকে বিদ্রূপ করেছিলে এবং পার্থিব জীবন তোমাদেরকে প্রতারিত করেছিল।[১]

১। আনাস ইবনে মালিক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তিনটি জিনিস মৃত ব্যক্তির সঙ্গীরূপে অনুসরণ করে। দু'টি তো ফিরে আসে এবং একটি তার সঙ্গে থাকে। সঙ্গে গমন করে আত্মীয়-স্বজন, ধন-সম্পদ ও তার আমল। তার জ্ঞাতী-গোষ্ঠী ও মাল-দৌলত ফিরে আসে। আর (সঙ্গী হিসেবে) থেকে যায় শুধু আমল। (বুখারী, হাদীস নং ৬৫১৪)

وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٣٥﴾

সুতরাং আজ তাদেরকে জাহান্নাম হতে বের করা হবে না এবং আল্লাহর সন্তুষ্টি লাভের জন্য তওবাও করতে বলা হবে না।

فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ رَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٦﴾

৩৬. প্রশংসা আল্লাহরই, যিনি আকাশমন্ডলীর প্রতিপালক, পৃথিবীর প্রতিপালক, জগতসমূহের প্রতি-পালক।

وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣٧﴾

৩৭. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে তাঁরই বড়ত্ব এবং তিনি পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

সূরাঃ আহ্ক্বাফ, মাক্কী

(আয়াতঃ ৩৫, রুকূ'ঃ ৪)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُوْرَةُ الْاَحْقَافِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٣٥ رُكُوْعَاتُهَا ٤

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. হা-মীম

حٰمٓ ۚ ①

২. এ কিতাব অবতীর্ণ হয়েছে পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান আল্লাহর নিকট হতে;

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ②

৩. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী এবং এতোদুভয়ের মধ্যস্থিত সব কিছুই আমি সত্যের সাথে ও নির্দিষ্টকালের জন্য সৃষ্টি করেছি; কিন্তু কাফিররা তাদেরকে সতর্ক করা বিষয় হতে মুখ ফিরিয়ে নেয়।

مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ③

৪. বলঃ তোমরা আল্লাহর পরিবর্তে যাদেরকে ডাকো তাদের কে দেখছো কি? তারা পৃথিবীতে কি সৃষ্টি করেছে আমাকে দেখাও অথবা আকাশ-মন্ডলীতে তাদের কোন অংশীদারিত্ব আছে কি? এর পূর্বে আসা কোন কিতাব অথবা জ্ঞানের কোন অবশিষ্ট থাকলে তা তোমরা আমার নিকট নিয়ে আস, যদি তোমরা সত্যবাদী হও।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ؕ اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ④

৫. তার চেয়ে অধিক বিভ্রান্ত কে হবে যে আল্লাহ ব্যতীত এমন কিছুকে ডাকে যে কিয়ামত দিবস পর্যন্ত তার ডাকে সাড়া দিবে না? এবং তারা তাদের আহ্বান সম্বন্ধেও অনবহিত।

وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَآئِهِمْ غٰفِلُوْنَ ⑤

৬. আর যখন মানুষকে একত্রিত করা হবে তখন তারা তাদের শত্রু হবে

وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَآءً وَّكَانُوْا

بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ⑥

এবং তারা যে তাদের ইবাদত করেছিল তা অস্বীকার করবে।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ⑦

৭. যখন তাদের নিকট আমার আয়াতসমূহ আবৃত্তি করা হয় সুস্পষ্টভাবে এবং যখন কাফেরদের নিকট প্রকৃত সত্য উপস্থিত হয়; তখন তারা বলেঃ এটা তো সুস্পষ্ট যাদু।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَلَا تَمْلِكُوْنَ لِيْ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ كَفٰى بِهٖ شَهِيْدًۢا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ⑧

৮. তারা কি একথা বলে যে, তার (মুহাম্মাদ ﷺ-এর) এটা (কুরআন) মনগড়া? বলঃ যদি আমার ওটা মনগড়া হয়ে থাকে, তবে তোমরা তো আল্লাহর পক্ষ হতে আমার জন্য কোন কিছুই অধিকার রাখ না। তোমরা তার (কুরআনের) ব্যাপারে যে সব কথা বল ও শ্রবণ কর তিনি তা ভালোভাবে জানেন। আমার ও তোমাদের মধ্যে সাক্ষী হিসেবে তিনিই যথেষ্ট এবং তিনি অতি ক্ষমাকারী, অতি দয়াবান।

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَآ اَدْرِيْ مَا يُفْعَلُ بِيْ وَلَا بِكُمْ ؕ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى اِلَيَّ وَمَآ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ⑨

৯. বলঃ আমি তো রাসূলগণের মাঝে কোন নতুন নই এবং আমার ও তোমাদের সাথে কি আচরণ করা হবে; তা আমি জানি না, আমার প্রতি যা ওহী করা হয় আমি শুধু তারই অনুসরণ করি। আমি একজন স্পষ্ট সতর্ককারী ছাড়া অন্য কিছু নই।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَكَفَرْتُمْ بِهٖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى مِثْلِهٖ فَاٰمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي

১০. বলঃ তোমাদের কি অভিমত যদি এটি (কুরআন) আল্লাহর নিকট হতে অবতীর্ণ হয়ে থাকে আর তোমরা তা অবিশ্বাস কর এবং বানী ইসরাঈলের একজন এর অনুরূপ কিতাব সম্পর্কে সাক্ষ্য দিয়ে বিশ্বাস

الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠﴾

স্থাপন করলো অথচ তোমরা অহংকার করলে, আল্লাহ অত্যাচারী জাতিকে সৎপথে পরিচালিত করেন না।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُوْنَآ اِلَيْهِ ؕ وَاِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا بِهٖ فَسَيَقُوْلُوْنَ هٰذَآ اِفْكٌ قَدِيْمٌ ﴿١١﴾

১১. মু'মিনদের সম্পর্কে কাফিররা বলেঃ এটা ভাল হলে তারা এর দিকে আমাদের অগ্রগামী হতো না। তারা যেহেতু এর (কুরআন) দ্বারা হেদায়েত পায়নি, অতএব তারা বলেঃ এটা তো সেই পুরনো মিথ্যা।

وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّرَحْمَةً ؕ وَهٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ وَبُشْرٰى لِلْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢﴾

১২. এবং এর পূর্বে মূসা (عليه السلام)-এর কিতাব (তাওরাত) অনুসরণীয় এবং রহমত স্বরূপ এসেছিল। আর এ এমন কিতাব (কুরআন) যা আরবী ভাষায়, (তার) সত্যতা প্রমাণকারী যেন এটা যালিমদেরকে সতর্ক করার জন্য এবং যারা সৎকর্ম করে তাদের জন্য সুসংবাদ।

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿١٣﴾

১৩. যারা বলেঃ আমাদের প্রতিপালক আল্লাহ এবং এই বিশ্বাসে অবিচল থাকে, তাদের জন্য কোন ভয় নেই এবং তারা চিন্তাগ্রস্তও হবে না।

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾

১৪. তারাই জান্নাতের অধিবাসী, সেখানে তারা স্থায়ী হবে, তারা যে আমল করত এটা তারই প্রতিদান।

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ اِحْسٰنًا ؕ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ؕ وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَبَلَغَ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۙ قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ

১৫. আমি মানুষকে নির্দেশ দিয়েছি তার মাতা-পিতার প্রতি সদ্ব্যবহার করার জন্য। তার মাতা তাকে গর্ভে ধারণ করেছে কষ্টের সাথে এবং প্রসব করেছে কষ্টের সাথে, তাকে গর্ভে ধারণ ও তার জন্যে দুধপান ছাড়াতে লাগে ত্রিশ মাস, শেষ পর্যন্ত

نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ۚ اِنِّيْ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٥﴾

যখন সে পূর্ণ শক্তি প্রাপ্ত হল এবং চল্লিশ বছরে পৌছল তখন সে বললোঃ হে আমার প্রতিপালক! আপনি আমাকে সামর্থ দিন, যাতে আমি আপনার নেয়ামতের শুকরিয়া আদায় করতে পারি। আমার প্রতি– আমার পিতা-মাতার প্রতি আপনি যে অনুগ্রহ করেছেন, তার জন্যে এবং যাতে আমি সৎকার্য করতে পারি যা আপনি পছন্দ করেন; আমার জন্যে আমার সন্তান-সন্ততিদেরকে সৎ-কর্মপরায়ণ করুন, নিশ্চয়ই আমি আপনারই দিকে প্রত্যাবর্তন করলাম এবং আমি আত্মসমর্পণকারীদের অন্তর্ভুক্ত।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ فِيْٓ اَصْحٰبِ الْجَنَّةِ ۭ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿١٦﴾

১৬. ওরা তো তারা যাদের আমি উত্তম আমলগুলি গ্রহণ করে থাকি এবং তাদের মন্দ আমলগুলো ক্ষমা করি,তারা জান্নাতবাসীদের অন্তর্ভুক্ত। এদেরকে যে প্রতিশ্রুতি দেয়া হয়েছে তা সত্য প্রমাণিত হবে।

وَالَّذِيْ قَالَ لِوَالِدَيْهِ اُفٍّ لَّكُمَآ اَتَعِدٰنِنِيْٓ اَنْ اُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُوْنُ مِنْ قَبْلِيْ ۚ وَهُمَا يَسْتَغِيْثٰنِ اللّٰهَ وَيْلَكَ اٰمِنْ ڰ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَيَقُوْلُ مَا هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٧﴾

১৭. আর যে তার মাতা-পিতাকে (ঘৃণাচ্ছলে) বলেঃ তোমাদের জন্যে দুঃখ হয়! তোমরা কি আমাকে এ ভয় দেখাতে চাও যে, আমি পুনরুত্থিত হবো অথচ আমার পূর্বে বহু জাতি গত হয়েছে? আর তারা দু'জনে আল্লাহর নিকট ফরিয়াদ করে বলেঃ তুমি ধ্বংস হয়ে যাও, বিশ্বাস স্থাপন কর, আল্লাহর প্রতিশ্রুতি অবশ্যই সত্য; কিন্তু সে বলেঃ এটা তো অতীতকালের গল্প-কাহিনী মাত্র।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ

১৮. ওরা তো তারা যাদের প্রতিও আল্লাহর কথা (আযাব) সত্য

مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿١٨﴾

হয়েছে। এদের পূর্বেকার জ্বিন ও মানুষ সম্প্রদায়ের মত। এরাই তো ক্ষতিগ্রস্ত।

وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۚ وَلِيُوَفِّيَهُمْ اَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٩﴾

১৯. প্রত্যেকের মর্যাদা তার কর্মানুযায়ী হবে যেন (আল্লাহ) প্রত্যেকের কর্মের পূর্ণ প্রতিফল দিবেন এবং তাদের প্রতি যুলুম করা হবে না।

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِيْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُوْنَ ﴿٢٠﴾

২০. যেদিন অবিশ্বাসীদেরকে জাহান্নামের উপর দাঁড় করানো হবে। (সেদিন তাদেরকে বলা হবেঃ) তোমরা তো পার্থিব জীবনে পূর্ণ সুখ-শান্তি ভোগ করে নিয়েছ; সুতরাং আজ তোমাদেরকে দেয়া হবে অবমাননাকর শাস্তি, তোমরা পৃথিবীতে অন্যায়ভাবে অহংকার করেছিলে এবং তোমরা ছিলে পাপাচারী।

وَاذْكُرْ اَخَا عَادٍ ؕ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَهٗ بِالْاَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖۤ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنِّيْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٢١﴾

২১. এবং স্মরণ কর, আ'দ সম্প্রদায়ের ভ্রাতার কথা, তিনি তার আহকাফবাসী সম্প্রদায়কে সতর্ক করেছিলেন এবং এর পূর্বে ও পরেও সতর্ককারী এসেছিল (এই বলে) যে, আল্লাহ ব্যতীত কারও ইবাদত করো না। আমি তোমাদের জন্যে মহাদিবসের শাস্তির আশঙ্কা করছি।

قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٢﴾

২২. তারা বলেছিলঃ তুমি আমাদেরকে আমাদের দেব-দেবীগুলোর পূজা হতে বাধা দিতে এসেছো? তুমি যার (যে আযাবের) ভয় দেখাচ্ছ তা আমাদের নিকট নিয়ে আস যদি তুমি সত্যবাদী হও।

قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ز وَاُبَلِّغُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. তিনি বললেনঃ এর জ্ঞান তো শুধু আল্লাহরই রয়েছে; আমি যা নিয়ে প্রেরিত হয়েছি শুধু তাই তোমাদের নিকট প্রচার করি; কিন্তু আমি দেখছি, তোমরা এক মূর্খ সম্প্রদায়।

فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِيَتِهِمْ ۙ قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ؕ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ؕ رِيْحٌ فِيْهَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ﴿٢٤﴾

২৪. অতঃপর যখন তাদের উপত্যকার দিকে তারা মেঘ আসতে দেখলো তখন তারা বলতে লাগলোঃ সেটা তো মেঘ, আমাদেরকে বৃষ্টি দান করবে। (হুদ عليه السلام বললেনঃ) বরং এটাই তো ওটা যা তোমরা তাড়াতাড়ি চেয়েছো, এতে রয়েছে এক ঝড়-তুফান যার মাঝে রয়েছে ভয়াবহ আযাব।

تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍۭ بِاَمْرِ رَبِّهَا فَاَصْبَحُوْا لَا يُرٰٓى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٢٥﴾

২৫. এ ঝড়-তুফান তার প্রতিপালকের নির্দেশে সবকিছুকে ধ্বংস করে দিবে। অতঃপর তাদের পরিণাম এই হলো যে, তাদের বসতিগুলো ছাড়া আর কিছুই রইলো না। এভাবে আমি অপরাধী সম্প্রদায়কে প্রতিফল দিয়ে থাকি।

وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَآ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَّاَبْصَارًا وَّاَفْـِٕدَةً ۖ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَآ اَبْصَارُهُمْ وَلَآ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ شَيْءٍ اِذْ كَانُوْا يَجْحَدُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٢٦﴾ ع

২৬. আমি তাদেরকে (আ'দ সম্প্রদায়কে) যা দিয়েছিলাম তোমাদেরকে তা দেই নি; আমি তাদেরকে কর্ণ, চক্ষু ও হৃদয় দিয়েছিলাম; কিন্তু তাদের কর্ণ, তাদের চক্ষু ও তাদের হৃদয় তাদের কোন কাজে আসেনি; কেননা তারা আল্লাহর আয়াতসমূহকে অমান্য করেছিল। তা-ই তাদেরকে পরিবেষ্টন করলো যা নিয়ে তারা ঠাট্টা-বিদ্রূপ করতো।

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى وَصَرَّفْنَا الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٧﴾

২৭. আমি তো ধ্বংস করেছিলাম তোমাদের চতুস্পার্শবর্তী জনপদ-সমূহ; আমি নিদর্শনাবলী বর্ণনা করেছিলাম, যাতে তারা ফিরে আসে (সৎপথে)।

فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ؕ بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٨﴾

২৮. তারা (আল্লাহর) সান্নিধ্য লাভের জন্যে আল্লাহর পরিবর্তে যাদেরকে মা'বূদ গ্রহণ করেছিল তারা তাদেরকে সাহায্য করলো না কেন? বস্তুতঃ তাদের মা'বূদগুলো তাদের নিকট হতে হারিয়ে যায়। তাদের মিথ্যা ও অলীক উদ্ভাবনের পরিণাম এরূপই।

وَاِذْ صَرَفْنَاۤ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْۤا اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا اِلٰى قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿٢٩﴾

২৯. (স্মরণ কর), আমি তোমার নিকট পাঠিয়েছিলাম একদল জ্বিনকে, যারা কুরআন পাঠ শুনছিল, যখন তারা তার (নবীর) নিকট উপস্থিত হলো, তারা বলতে লাগলোঃ নীরবে শ্রবণ কর। যখন (কুরআন পাঠ) সমাপ্ত হলো তখন তারা তাদের সম্প্রদায়ের নিকট সতর্ককারী রূপে ফিরে গেল–

قَالُوْا يٰقَوْمَنَاۤ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيْۤ اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٠﴾

৩০. তারা বললোঃ হে আমাদের সম্প্রদায়! আমরা এমন এক কিতাব শ্রবণ করেছি যা মূসা (عليه السلام)-এর পরে অবতীর্ণ করা হয়েছে, যা পূর্ব কিতাবের সত্যায়ন করে এবং সত্যের দিকে এবং সরল পথের দিকে পরিচালিত করে।

يٰقَوْمَنَاۤ اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣١﴾

৩১. হে আমাদের সম্প্রদায়! আল্লাহর দিকে আহ্বানকারীর ডাকে সাড়া দাও এবং তার প্রতি বিশ্বাস স্থাপন কর, তিনি তোমাদের পাপ

ক্ষমা করবেন এবং যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি হতে তোমাদেরকে রক্ষা করবেন।

وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءُ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٢﴾

৩২. এবং যে আল্লাহর দিকে আহ্বানকারীর ডাকে সাড়া না দেয় তবে সেও পৃথিবীতে আল্লাহর অভিপ্রায়কে ব্যর্থ করতে পারবে না এবং আল্লাহ ছাড়া তাদের কোন সাহায্যকারীও থাকবে না। তারাই সুস্পষ্ট গোমরাহীতে রয়েছে।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ؕ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٣﴾

৩৩. তারা কি দেখে না যে, আল্লাহ, যিনি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন এবং এসবের সৃষ্টিতে কোন ক্লান্তিবোধ করেননি, তিনি মৃতের জীবন দান করতেও সক্ষম। কেন নয়? নিশ্চয়ই তিনি সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান।

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٤﴾

৩৪. যেদিন কাফিরদেরকে উপস্থিত করা হবে জাহান্নামের নিকট, (সেদিন তাদেরকে জিজ্ঞাসা করা হবেঃ) এটা কি সত্য নয়? তারা বলবেঃ হ্যাঁ আমাদের প্রতিপালকের শপথ! (এটা সত্য)। তিনি (আল্লাহ) বলবেনঃ অতএব তোমরা যে কুফরী করতে তার পরিবর্তে শাস্তি আস্বাদন কর।

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ؕ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ؕ بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

৩৫. অতএব তুমি ধৈর্যধারণ কর যেমন ধৈর্যধারণ করেছিলেন দৃঢ় প্রতিজ্ঞ রাসূলগণ এবং তাদের জন্যে (শাস্তির প্রার্থনায়) তাড়াতাড়ি করো না। তাদেরকে যে বিষয়ে সতর্ক করা হয়েছে তা সেদিন তারা প্রত্যক্ষ করবে, সেদিন তাদের মনে হবে, তারা যেন দিবসের কিছুক্ষণের

বেশি পৃথিবীতে অবস্থান করেনি। এটা হলো সংবাদ দেয়া, সত্যত্যাগী সম্প্রদায় ব্যতীত কাউকেও ধ্বংস করা হবে না।

সূরাঃ মুহাম্মাদ, মাদানী

(আয়াতঃ ৩৮, রুকূ'ঃ ৪)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ مَّدَنِيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٣٨ رُكُوْعَاتُهَا ٤

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ①

১. যারা কুফরী করে এবং অপরকে আল্লাহর পথ হতে বিরত রাখে তিনি তাদের আমল নষ্ট করে দেন।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ②

২. এবং যারা ঈমান আনে, সৎ আমল করে এবং মুহাম্মাদ (ﷺ)-এর প্রতি যা অবতীর্ণ করা হয়েছে বিশ্বাস করে, আর তাই তাদের প্রতিপালক হতে সত্য; তিনি তাদের অপকর্মগুলো দূরিভুত করবেন এবং তাদের অবস্থা ভাল করবেন।[১]

ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ③

৩. এটা এ জন্য যে, যারা কুফরী করে তারা বাতিলের অনুসরণ করে আর যারা ঈমান আনে তারা তাদের প্রতিপালক প্রেরিত সত্যের অনুসরণ করে। এভাবে আল্লাহ মানুষের জন্য তাদের দৃষ্টান্ত পেশ করেন।

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেনঃ সেই সত্তার শপথ! যাঁর হাতে (আমি) মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর প্রাণ, বর্তমান মানবগোষ্ঠীর কোন ইয়াহূদী বা খ্রিস্টান আমার আর্বিভাবের সংবাদ শুনার পর যে "দ্বীন" নিয়ে আমি প্রেরিত হয়েছি, তার প্রতি ঈমান না এনে মৃত্যুবরণ করলে সে নিশ্চিতই জাহান্নামীদের অন্তর্ভুক্ত হবে। (মুসলিম, হাদীস নং ৩৮৬)

فَإِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَضَرْبَ الرِّقَابِ حَتَّىٰ إِذَا أَثْخَنْتُمُوهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ فَإِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَإِمَّا فِدَاءً حَتَّىٰ تَضَعَ الْحَرْبُ أَوْزَارَهَا ۚ ذَٰلِكَ وَلَوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَانتَصَرَ مِنْهُمْ وَلَٰكِن لِّيَبْلُوَ بَعْضَكُم بِبَعْضٍ ۗ وَالَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَلَن يُضِلَّ أَعْمَالَهُمْ ﴿٤﴾

৪. অতএব যখন তোমরা কাফিরদের সাথে যুদ্ধে মিলিত হও তখন তাদের গর্দানে আঘাত কর, পরিশেষে যখন তোমরা তাদেরকে সম্পূর্ণরূপে পরাভূত করবে তখন তাদেরকে কষে বেড়িতে বাঁধবে; অতঃপর তখন হয় অনুকম্পা; নয় মুক্তিপণ। (তোমরা জিহাদ চালাবে) যতক্ষণ না যুদ্ধ তার অস্ত্রের বোঝা নামিয়ে ফেলে। এটাই বিধান। এটা এই জন্যে যে, আল্লাহ ইচ্ছা করলে তাদেরকে (নিজেই) শাস্তি দিতে পারতেন; কিন্তু তিনি তোমাদেরকে পরস্পরের দ্বারা পরীক্ষা করতে চান। যারা আল্লাহর পথে নিহত তিনি তাদের কর্ম বিনষ্ট হতে দেবে না।

سَيَهْدِيهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ﴿٥﴾

৫. তিনি তাদেরকে সৎপথে পরিচালিত করলে এবং তাদের অবস্থা ভাল করে দিবেন।

وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ﴿٦﴾

৬. তিনি তাদেরকে দাখিল করবেন জান্নাতে, যার কথা তিনি তাদেরকে জানিয়েছেন।[১]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَنصُرُوا اللَّهَ يَنصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ﴿٧﴾

৭. হে মু'মিনগণ! যদি তোমরা আল্লাহকে সাহায্য কর, তবে তিনি তোমাদেরকে সাহায্য করবেন এবং তোমাদের (অবস্থান) সুদৃঢ় করবেন।

১। আবূ সাঈদ খুদরী (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ (জাহান্নামের) আগুন থেকে মুক্তি পাওয়ার পর মু'মিনদেরকে জান্নাত ও জাহান্নামের মাঝখানে অবস্থিত একটি পুলের ওপর এনে দাঁড় করানো হবে। আর (তথায়) তাদের দুনিয়াতে একে অপরের প্রতি কৃত অন্যায়-অবিচারের প্রতিশোধ গ্রহণ করা হবে। এক পর্যায়ে তারা পাক-পবিত্র হয়ে গেলে তাদেরকে বেহেশতে প্রবেশের অনুমতি দেয়া হবে। সেই সত্তার কসম! যাঁর হাতে মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর জীবনঃ প্রত্যেক ব্যক্তি তার জান্নাতের বাড়ি দুনিয়ার বাড়ির চেয়েও উত্তমরূপে চিনতে সক্ষম হবে। (বুখারী, হাদীস নং ৬৫৩৫)

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَاَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ⑧

৮. যারা কুফরী করেছে তাদের জন্য দুর্ভোগ এবং তিনি তাদের আমল নষ্ট করে দিবেন।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ⑨

৯. এটা এজন্য যে, আল্লাহ যা অবতীর্ণ করেছেন তারা তা অপছন্দ করে। সে কারণে আল্লাহ তাদের কর্ম নিষ্ফল করে দিবেন।

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۫ وَلِلْكٰفِرِيْنَ اَمْثَالُهَا ⑩

১০. তারা কি পৃথিবীতে পরিভ্রমণ করেনি এবং দেখেনি তাদের পূর্ববর্তীদের পরিণাম কি হয়েছিল? আল্লাহ তাদেরকে ধ্বংস করেছেন এবং কাফিরদের জন্যে রয়েছে অনুরূপ পরিণাম।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ⑪

১১. এটা এজন্যে যে, আল্লাহ মু'মিনদের অভিভাবক এবং কাফিরদের কোন অভিভাবক নেই।

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ وَيَاْكُلُوْنَ كَمَا تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ⑫

১২. নিশ্চয়ই যারা ঈমান আনয়ন করবে এবং সৎ আমল করবে আল্লাহ তাদেরকে জান্নাতে প্রবেশ করাবেন, যার নিম্নদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত; কিন্তু যারা কুফরী করে, তারা ভোগ-বিলাসে লিপ্ত থাকে এবং জীব-জন্তুর মত আহার করে, তাদের বাসস্থান জাহান্নাম।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ هِيَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِيْٓ اَخْرَجَتْكَ ۚ اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ⑬

১৩. তোমার যে জনপদ হতে তোমাকে বিতাড়িত করেছে তা অপেক্ষা অতি শক্তিশালী কত জনপদ ছিল; আমি তাদেরকে ধ্বংস করেছি এবং তাদেরকে সাহায্য করার কেউ ছিল না।

اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ كَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ

১৪. যে ব্যক্তি তার প্রতিপালক হতে সুস্পষ্ট প্রমাণের ওপর প্রতিষ্ঠিত সে

কি তার ন্যায় যার নিকট নিজের মন্দ আমলগুলো সুশোভীত যারা নিজেদের প্রবৃত্তির অনুসরণ করে?

عَمَلِهٖ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ﴿١٤﴾

১৫. মুত্তাকীদেরকে যে জান্নাতের অঙ্গীকার দেয়া হয়েছে তার দৃষ্টান্ত হলো সেখানে থাকবে নির্মল পানির নহরসমূহ, আছে দুধের নহরসমূহ যার স্বাদ অপরিবর্তনীয় এবং পানকারীদের জন্যে সুস্বাদু সুরার নহরসমূহ এবং পরিশোধিত মধুর নহরসমূহ এবং সেখানে তাদের জন্যে থাকবে বিবিধ ফল-মূল ও তাদের প্রতিপালকের ক্ষমা। (মুত্তাকীরা কি তাদের ন্যায়) যারা জাহান্নামে স্থায়ী হবে এবং যাদেরকে পান করতে দেয়া হবে ফুটন্ত পানি যা তাদের নাড়ি-ভূড়ি ছিন্ন-ভিন্ন করে দিবে?

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ فِيْهَآ اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّآءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ؕ وَلَهُمْ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ؕ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ ﴿١٥﴾

১৬. এবং তাদের মধ্যে কতক তোমার কথা শ্রবণ করে, অতঃপর তোমার নিকট হতে বের হয়ে যারা জ্ঞানবান তাদেরকে বলেঃ এই মাত্র সে কি বললো? তাদের অন্তরের উপর আল্লাহ মোহর মেরে দিয়েছেন এবং তারা নিজেদের প্রবৃত্তির অনুসরণ করে।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ حَتّٰٓى اِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ۗ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ﴿١٦﴾

১৭. যারা সৎপথ অবলম্বন করে আল্লাহ তাদের হিদায়েত বৃদ্ধি করেন এবং তাদেরকে তাকওয়া দান করেন।

وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَّاٰتٰىهُمْ تَقْوٰىهُمْ ﴿١٧﴾

১৮. তারা তো কিয়ামতেরই অপেক্ষা করছে যে, কিয়ামত তাদের নিকট এসে পড়ুক আকস্মিকভাবে? তবে

فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۚ فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ

ذِكْرٰىهُمْ ﴿١٨﴾

কিয়ামতের লক্ষণসমূহ তো এসেই পড়েছে! যদি তা এসেই যায় তবে তারা উপদেশ গ্রহণ করবে কেমন করে!

فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ﴿١٩﴾

১৯. সুতরাং তুমি জান যে, আল্লাহ ব্যতীত (সত্য) কোন মা'বূদ নেই, ক্ষমা প্রার্থনা কর তোমার ত্রুটির জন্য এবং মু'মিন নর-নারীদের ত্রুটি জন্যে। আল্লাহ তোমাদের গতিবিধি এবং অবস্থান সম্বন্ধে অবগত আছেন।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَّ ذُكِرَ فِيْهَا الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ؕ فَاَوْلٰى لَهُمْ ﴿٢٠﴾

২০. মু'মিনরা বলেঃ একটি সূরা অবতীর্ণ হয় না কেন? অতঃপর যখন সুস্পষ্ট মর্ম বিশিষ্ট কোন সূরা অবতীর্ণ হয় এবং তাতে জিহাদের কথা উল্লেখ করা হয় তুমি দেখবে যাদের অন্তরে ব্যাধি আছে তারা মৃত্যুভয়ে বিহ্বল মানুষের মত তোমার দিকে তাকাচ্ছে। তাদের জন্যে উত্তম ছিল যে,

طَاعَةٌ وَّ قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ ۫ فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ ۫ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ﴿٢١﴾

২১. আনুগত্য করা ও ন্যায়সঙ্গত কথা বলা। অতঃপর যখন (জিহাদের) সিদ্ধান্ত চূড়ান্ত হয় আর তারা আল্লাহর সাথে সততা রক্ষা করে তবে তাদের জন্যে এটা মঙ্গলজনক হবে।

فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْۤا اَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾

২২. ক্ষমতায় অধিষ্ঠিত হলে তোমাদের দ্বারা এমনও সম্ভব যে তোমরা পৃথিবীতে বিপর্যয় সৃষ্টি করবে এবং তোমাদের আত্মীয়তার বন্ধন ছিন্ন করবে।[১]

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেনঃ তিনি বলেন আল্লাহ্ তা'আলা সৃষ্টিকূলকে সৃষ্টি করেন। তা শেষ করলে 'রাহেম' বা 'রক্ত

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعْمَىٰ أَبْصَارَهُمْ ﴿٢٣﴾

২৩. ওরা তারাই যাদের প্রতি আল্লাহ লা'নত করেছেন এবং তাদেরকে বধির ও দৃষ্টিশক্তিহীন করেন।

أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْ عَلَىٰ قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾

২৪. তবে কি তারা কুরআন সম্বন্ধে গভীরভাবে চিন্তা-ভাবনা করে না? না তাদের অন্তর তালাবদ্ধ?

إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِم مِّن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ ۖ وَأَمْلَىٰ لَهُمْ ﴿٢٥﴾

২৫. যাদের নিকট হিদায়েত স্পষ্ট হবার পরও পৃষ্ঠ-প্রদর্শন করে ফিরে যায় শয়তান তাদের কাজকে শোভন করে দেখায় এবং তাদেরকে ঢিল দিয়ে রাখে।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ سَنُطِيعُكُمْ فِي بَعْضِ الْأَمْرِ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾

২৬. এটা এজন্যে যে, আল্লাহ যা অবতীর্ণ করেছেন যারা তা অপছন্দ করে; তাদেরকে তারা বলেঃ আমরা কোন কোন বিষয়ে তোমাদের আনুগত্য করবো। আল্লাহ তাদের গোপন কথাও অবগত আছেন।

فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾

২৭. তাদের মরণ কালে ফেরেশ্‌তারা যখন তাদের মুখমন্ডলে ও পৃষ্ঠদেশে আঘাত করবে, তখন তাদের অবস্থা কেমন হবে!

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اتَّبَعُوا مَا أَسْخَطَ اللَّهَ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾

২৮. এটা এজন্যে যে, যা আল্লাহর ক্রোধ সৃষ্টি করে তারা তার অনুসরণ করে এবং তাঁর সন্তুষ্টিকে অপছন্দ করে; ফলে তিনি তাদের কর্ম নষ্ট করে দেন।

সম্পর্ক' দাঁড়ালো (আল্লাহ্‌র দরবারে কিছু আরয করলো) আল্লাহ্ বললেনঃ থামো। সে (রক্ত-সম্পর্ক) বলেঃ যে ব্যক্তি আত্মীয়তার সম্পর্ক ছিন্ন করে আমি তার থেকে তোমার নিকট পানাহ চাই। আল্লাহ্ বলেনঃ যে তোমাকে একত্রিত করবে আমি তার সাথে মিলিত হবো, আর যে তোমাকে ছিন্ন করবে আমি তার থেকে ছিন্ন হবো- এতেও কি তুমি সন্তুষ্ট নও? জবাবে সে বলেঃ হে পরওয়ারদিগার! অবশ্যই, তিনি (আল্লাহ্) বলেন, তোমার জন্য তাই। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেন, তোমরা চাইলে পড়তে পারঃ "ক্ষমতায় অধিষ্ঠিত হলে সম্ভবতঃ তোমরা পৃথিবীতে বিপর্যয় সৃষ্টি করবে এবং আত্মীয়তার বন্ধন ছিন্ন করবে।" (সূরা মুহাম্মাদঃ ২২) (বুখারী, হাদীস নং ৪৮৩০)

أَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ أَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ أَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾

২৯. যাদের অন্তরে ব্যাধি আছে তারা কি মনে করে যে, আল্লাহ তাদের বিদ্বেষ ভাব প্রকাশ করে দেবেন না?

وَلَوْ نَشَآءُ لَأَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ط وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ لَحْنِ الْقَوْلِ ط وَاللّٰهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾

৩০. আমি ইচ্ছা করলে তোমাকে তাদেরকে দেখাতাম। ফলে তুমি তাদের লক্ষণ দেখে তাদেরকে চিনতে পারতে, তবে তুমি অবশ্যই কথার ভঙ্গিতে তাদেরকে চিনতে পারবে। আল্লাহ তোমাদের কর্ম সম্পর্কে অবগত।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ لا وَنَبْلُوَا أَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾

৩১. আমি অবশ্যই তোমাদেরকে পরীক্ষা করবো, যতক্ষণ না আমি অবগত হই তোমাদের মধ্যেকে জিহাদকারী ও ধৈর্যশীল এবং আমি তোমাদের অবস্থা সমূহেরও পরীক্ষা করি।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَآقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى لا لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْئًا ط وَسَيُحْبِطُ أَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾

৩২. যারা কুফরী করে এবং মানুষকে আল্লাহর পথ হতে বিরত রাখে এবং নিজেদের নিকট হিদায়েত স্পষ্ট হবার পরও রাসূল (ﷺ)-এর বিরোধিতা করে, তারা আল্লাহর কোন ক্ষতি করতে পারবে না। তিনি তো তাদের কর্ম নষ্ট করবেন।[১]

يٰأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا أَطِيْعُوا اللّٰهَ وَأَطِيْعُوا

৩৩. হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহর আনুগত্য কর এবং রাসূল (ﷺ)-এর

১। আবূ মূসা (রাযিয়াল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে জ্ঞান ও সঠিক পথ-নির্দেশ দিয়ে আল্লাহ্ আমাকে পাঠিয়েছেন, তার দৃষ্টান্ত মাটির ওপর বর্ষিত প্রচুর বৃষ্টির মত। যে মাটি পরিস্কার ও উর্বর, তা ঐ পানি গ্রহণ করে অনেক ঘাস ও শস্য উৎপন্ন করে। আর যে মাটি শক্ত, তা ঐ পানি ধরে রাখে। আল্লাহ তার সাহায্যে মানবজাতির কল্যাণ করেন। মানুষ তা নিজেরা পান করে, পশুদেরকে পান করায় এবং সেচের মাধ্যমে ফসল উৎপন্ন করে। আর কিছু অনুর্বর মাটি থাকে যা বৃষ্টির পানি ধরে রাখে না এবং ঘাস ও উৎপন্ন করে না। এটাই হচ্ছে তার দৃষ্টান্ত যে আল্লাহ্‌র দ্বীনের জ্ঞান অর্জন করে এবং তাতে লাভবান হয়। আল্লাহ্ আমাকে যা দিয়ে পাঠিয়েছেন তা নিজে শিক্ষা করে এবং অন্যকে শিক্ষা দেয়। আর এটা সেই লোকেরও দৃষ্টান্ত যে তার দিকে মাথা তুলেও তাকায় না এবং আমাকে আল্লাহ্ যে পথ-নির্দেশ দিয়ে পাঠানো হয়েছে তাও গ্রহণ করে না। (বুখারী, হাদীস নং ৭৯)

الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْٓا اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾

আনুগত্য কর, আর (তা না করে) তোমাদের আমলসমূহ বিনষ্ট করো না।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾

৩৪. যারা কুফরী করে ও আল্লাহর পথ হতে মানুষকে বিরত রাখে, অতঃপর কাফির অবস্থায় মারা যায়, আল্লাহ তাদেরকে কখনই ক্ষমা করবেন না।

فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْٓا اِلَى السَّلْمِ ۖ وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ ۖ وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾

৩৫. সুতরাং তোমরা হীনবল হয়ো না এবং সন্ধির জন্য আহ্বান করো না, (কেননা) তোমরাই বিজয়ী; আল্লাহ তোমাদের সঙ্গে আছেন (আরশের উপর হতে পর্যবেক্ষণ ও সাহায্য করার দিক দিয়ে), তিনি তোমাদের কর্মফল কখনো নষ্ট করবেন না।

اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۗ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾

৩৬. দুনিয়ার জীবন তো শুধু খেল-তামাশার, যদি তোমরা ঈমান আনো ও তাকওয়ার পথে চলো তবে আল্লাহ তোমাদেরকে তোমাদের প্রতিফল দিবেন। আর তিনি তোমাদের ধন-সম্পদ চান না।

اِنْ يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَيُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾

৩৭. তোমাদের নিকট হতে তিনি তা চাইলে ও সে জন্য তোমাদের উপর চাপ দিলে তোমরা তো কার্পণ্য করবে এবং তিনি তোমাদের বিদ্বেষ ভাব প্রকাশ করে দিবেন।

هٰٓاَنْتُمْ هٰٓؤُلَاۤءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَمَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ۗ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَاۤءُ ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا

৩৮. দেখো, তোমরাইতো তারা যাদেরকে আল্লাহর পথে ব্যয় করতে বলা হচ্ছে অথচ তোমাদের অনেকে কৃপণতা করছে; যারা কার্পণ্য করে তারা তো কার্পণ্য করে নিজেদেরই প্রতি। আল্লাহ অভাবমুক্ত এবং

يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْٓا اَمْثَالَكُمْ ﴿٣٨﴾

তোমরা অভাবগ্রস্ত, যদি তোমরা বিমুখ হও তবে তিনি অন্য জাতিকে তোমাদের স্থলাভিষিক্ত করবেন; তারা তোমাদের মত হবে না।

سُوْرَةُ الْفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٢٩ رُكُوْعَاتُهَا ٤

সূরাঃ ফাত্হ, মাদানী

(আয়াতঃ ২৯, রুকূ'ঃ ৪)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ﴿١﴾

১. নিশ্চয়ই (হে রাসূল) আমি তোমাকে দান করেছি সুস্পষ্ট বিজয়।

لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ وَمَا تَاَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٢﴾

২. আল্লাহ তোমার অতীত ও ভবিষ্যত[১] ত্রুটিসমূহ যেন মার্জনা করেন এবং তাঁর অনুগ্রহ তোমার জন্য পূর্ণ করেন এবং তোমাকে সরল পথে পরিচালিত করেন।

وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًا ﴿٣﴾

৩. এবং তোমাকে আল্লাহ বলিষ্ঠভাব সাহায্য দান করেন।

هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ۗ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٤﴾

৪. তিনিই মু'মিনদের অন্তরে প্রশান্তি দান করেন যেন তারা নিজেদের ঈমানের সহিত ঈমান আরও বাড়িয়ে নেয়, আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর বাহিনীসমূহ আল্লাহরই এবং আল্লাহ্ সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাবান-

لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ

৫. এটা এজন্যে যে, তিনি মু'মিন পুরুষদেরকে ও মু'মিন নারীদেরকে

১। মুগীরা ইবনে শুঅ'বা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) রাতে (নামাযে) এতটা দাঁড়াতেন, যাতে তাঁর দু'পা ফুলে যেতো। তাঁকে বলা হলো, আল্লাহ্ তো আপনার পূর্বাপর (সকল) গোনাহ মাফ করে দিয়েছেন। (এরপরও কেন এত দীর্ঘক্ষণ দাঁড়িয়ে নফল নামায পড়ছেন?) তিনি বললেনঃ আমি কি আল্লাহ্র শোকরগুজার বান্দা হবো না? (বুখারী, হাদীস নং ৪৮৩৬)

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ
سَيِّاٰتِهِمْ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِيْمًا ۙ﴿۵﴾

এমন জান্নাতে প্রবেশ করিয়ে দেন যার নিম্নদেশে নদী প্রবাহিত, যেখানে তারা স্থায়ী হবে এবং তিনি তাদের অপকর্ম সমূহ দূর করবেন; এটাই আল্লাহ্‌র নিকট মহা বিজয়।

وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ
وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّآنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ؕ
عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۚ وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ
وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿۶﴾

৬. এবং তিনি মুনাফিক পুরুষ মুনাফিক নারী, মুশরিক পুরুষ ও মুশরিক নারীকে শাস্তি দিবেন যারা আল্লাহ্ সম্বন্ধে মন্দ ধারণা পোষণ করে। তাদের উপর অকল্যাণের চক্র (আযাব), আল্লাহ্ তাদের প্রতি ক্রোধান্বিত হয়েছেন এবং তাদেরকে অভিশপ্ত করেছেন আর তাদের জন্যে জাহান্নাম প্রস্তুত রেখেছেন; ওটা কত নিকৃষ্ট আবাস!

وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ
عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۷﴾

৭. আল্লাহরই আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর বাহিনীসমূহ এবং আল্লাহই পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۙ﴿۸﴾

৮. আমি তোমাকে প্রেরণ করেছি সাক্ষীরূপে, সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারীরূপে।

لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ؕ
وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿۹﴾

৯. যাতে তোমরা আল্লাহ্ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর প্রতি ঈমান আন এবং তাকে রাসূল (ﷺ)-কে সাহায্য কর ও সম্মান কর; সকাল-সন্ধ্যায় তাঁর (আল্লাহ্‌র) পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা কর।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ ؕ يَدُ اللّٰهِ
فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى
نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ

১০. যারা তোমার বায়'আত গ্রহণ করে তারা তো আল্লাহ্‌রই বায়'আত গ্রহণ করে। আল্লাহ্‌র হাত তাদের হাতের উপর। সুতরাং যে ওটা ভঙ্গ করে ওটা ভঙ্গ করবার পরিণাম তারই উপর বর্তাবে এবং যে আল্লাহ্‌র সাথে

فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٠﴾

অঙ্গীকার পূর্ণ করে তিনি তাকে মহা প্রতিদান দিবেন।

سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ؕ بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١١﴾

১১. যেসব আরব বেদুঈনকে পশ্চাতে রেখে দেয়া হয়েছে, তারা তোমাকে বলবেঃ আমাদের ধন-সম্পদ ও পরিবার-পরিজন আমাদেরকে ব্যস্ত করে রেখেছিল, অতএব আমাদের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করুন। তারা মুখে যা বলে তা তাদের অন্তরে নেই। তাদেরকে বলঃ আল্লাহ্ তোমাদের কারো কোন ক্ষতি কিংবা উপকার সাধনের ইচ্ছা করলে কে ক্ষমতা রাখে যে, তাঁকে বাধা দান করতে পারে? বস্তুতঃ তোমরা যা কর সে বিষয়ে আল্লাহ্ ভালোভাবে অবহিত।

بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ اِلٰٓى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُوْرًا ﴿١٢﴾

১২. বরং, তোমরা মনে করেছিলে যে, রাসূল (ﷺ) ও মু'মিনগণ তাদের পরিবার-পরিজনের নিকট কখনই ফিরে আসতে পারবে না এবং এ ধারণাটা তোমাদের অন্তরে খুব চমৎকার মনে হয়েছিল; তোমরা মন্দ ধারণা করেছিলে, তোমরা তো ধ্বংসমুখী এক সম্প্রদায়।

وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَاِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ﴿١٣﴾

১৩. যারা আল্লাহ্ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর প্রতি ঈমান আনে না, আমি সেসব কাফিরের জন্যে প্রজ্জ্বলিত অগ্নি প্রস্তুত করে রেখেছি।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٤﴾

১৪. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর আধিপত্ত্ব; তিনি যাকে ইচ্ছা ক্ষমা করেন এবং যাকে ইচ্ছা শাস্তি দেন। আর আল্লাহ মহা ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ؕ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٥﴾

১৫. তোমরা যখন যুদ্ধলব্ধ সম্পদ সংগ্রহের জন্য যেতে থাকবে তখন যাদেরকে পশ্চতে ছেড়ে যাওয়া হয়েছিল, তারা বলবেঃ আমাদেরকে তোমাদের সাথে যেতে দাও। তারা আল্লাহর কথা পরিবর্তন করতে চায়। বলঃ তোমরা কখনই আমাদের সাথে যেতে পারবে না। আল্লাহ্ পূর্বেই এরূপ ঘোষণা করেছেন। তারা বলবেঃ তোমরা তো আমাদের প্রতি বিদ্বেষ পোষণ করছো। বস্তুতঃ অতি সামান্যই বুঝে।

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٦﴾

১৬. যেসব আরব বেদুঈনকে পশ্চাতে ছেড়ে যাওয়া হয়েছিল তাদেরকে বলঃ তোমাদেরকে শীঘ্রই ডাকা হবে এক প্রবল পরাক্রান্ত জাতির বিরুদ্ধে যুদ্ধ করতেঃ তোমরা তাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করবে অথবা তারা আত্মসমর্পণ করবে। তোমরা এই নির্দেশ পালন করলে আল্লাহ্ তোমাদেরকে উত্তম পুরস্কার দান করবেন। আর তোমরা যদি পূর্বানুরূপ পৃষ্ঠ প্রদর্শন কর; তবে তিনি তোমাদেরকে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি প্রদান করবেন।

لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٧﴾

১৭. অন্ধ, পঙ্গু এবং রুগ্নের জন্য এবং রুগ্নের জন্যে কোন অপরাধ হবে না। আর যে কেউই আল্লাহ্ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর আনুগত্য করবে আল্লাহ্ তাঁকে প্রবেশ করাবেন জান্নাতে, যার নিম্নদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত; কিন্তু যে ব্যক্তি পৃষ্ঠ প্রদর্শন করবে তিনি তাকে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি দিবেন।

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ

১৮. আল্লাহ মু'মিনদের প্রতি সন্তুষ্ট হয়েছেন যখন তারা বৃক্ষতলে তোমার

تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿١٨﴾

নিকট বায়'আত গ্রহণ করেছেন, তিনি তাদের অন্তরে যা ছিল তা অবগত হলেন তাই তাদেরকে তিনি দান করলেন প্রশান্তি এবং তাদেরকে বিনিময় দিলেন আসন্ন বিজয়,

وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿١٩﴾

১৯. এবং বিপুল পরিমাণ গণীমতের সম্পদ যা তারা হস্তগত করবে; আল্লাহ্ পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٢٠﴾

২০. আল্লাহ্ তোমাদেরকে প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন গণিমতের বিপুল সম্পদের যার অধিকারী হবে তোমরা। তিনি এটা তোমাদের জন্যে তড়িঘড়ি করেছিলেন এবং তিনি তোমাদের হতে মানুষের হস্তকে প্রতিহত করেছেন এবং এটা যেন হয় মু'মিনদের জন্যে এক নিদর্শন এবং (আল্লাহ্) তোমাদেরকে পরিচালিত করেন সরল পথে।

وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا ۖ قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢١﴾

২১. আরো বহু (গণিমত) সম্পদ রয়েছে যা এখনো তোমাদের অধিকারে আসেনি, ওটা তো আল্লাহ্র নিকটে রক্ষিত আছে। আল্লাহ্ সর্ব বিষয়ে সর্ব শক্তিমান।

وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٢٢﴾

২২. কাফিররা তোমাদের মুকাবিলা করলে (পরিণামে তারা) অবশ্যই পৃষ্ঠ প্রদর্শন করতো, তখন তারা কোন অভিভাবক ও সাহায্যকারী পেতো না।

سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿٢٣﴾

২৩. এটা আল্লাহ্র বিধান, যা পূর্ব হতে চলে আসছে; তুমি আল্লাহ্র এই বিধানে কোন পরিবর্তন পাবে না।

وَهُوَ الَّذِيْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ

২৪. তিনি সেই সত্ত্বা যিনি মক্কা উপত্যকায় তাদের হাত তোমাদের

عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ﴿٢٤﴾

হতে এবং তোমাদের হাত তাদের হতে ফিরিয়ে রেখেছেন তাদের উপর তোমাদেরকে বিজয়ী করবার পর। তোমরা যা করছিলে আল্লাহ্ তা দেখেছিলেন।

هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْىَ مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ؕ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ وَ نِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَـُٔوْهُمْ فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِىْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٢٥﴾

২৫. তারাই তো কুফরী করেছিল এবং বাধা দিয়েছিল তোমাদেরকে মসজিদুল হারাম হতে ও কুরবানীর জন্যে আবদ্ধ পশুগুলোকে যথাস্থানে পৌঁছতে। যদি (মক্কায়) না থাকতো এমন কতকগুলো মু'মিন নর ও নারী যাদেরকে তোমরা জানো না, তাদেরকে তোমরা পদদলিত করতে অজ্ঞাতসারে; ফলে তাদের কারণে তোমরা কষ্ট পেতে আল্লাহ্ যাকে ইচ্ছা তাকে স্বীয় নেয়ামত দান করবেন। যদি তারা (উভয়ে) পৃথক হতো, আমি তাদের মধ্যে কাফিরদেরকে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি দিতাম।

اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِىْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْۤا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمًا ﴿٢٦﴾

২৬. যখন কাফিররা তাদের অন্তরে পোষণ করতো (গোত্রীয়) অহমিকা- জাহিল যুগের অহমিকা, তখন আল্লাহ্ তাঁর রাসূল (ﷺ) ও মু'মিনদেরকে স্বীয় প্রশান্তি দান করলেন; আর তাদেরকে তাকওয়ার কথা সুদৃঢ় করলেন, এবং এরাই ছিল এর অধিকতর যোগ্য ও উপযুক্ত। আল্লাহ্ সমস্ত বিষয়ে পরিজ্ঞাত।

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ ۙ لَا تَخَافُوْنَ ؕ فَعَلِمَ مَا لَمْ

২৭. নিশ্চয়ই আল্লাহ্ তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর স্বপ্ন বাস্তবায়ন করেছেন, আল্লাহ্র ইচ্ছায় তোমরা অবশ্যই মসজিদুল হারামে প্রবেশ করবে নিরাপদে— কেউ কেউ মস্তক মুন্ডন

تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿٢٧﴾

করবে, কেউ কেউ চুল কাটবে; তোমার কোন ভয় থাকবে না। আল্লাহ্ জানেন তোমরা যা জানো না। এটা ছাড়াও তিনি তোমাদেরকে দিয়েছেন এক আসন্ন বিজয়।

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٢٨﴾

২৮. তিনিই তাঁর রাসূল (ﷺ)-কে হিদায়েত ও সত্য দ্বীনসহ প্রেরণ করেছেন, অপর সমস্ত দ্বীনের উপর তাকে জয়যুক্ত করবার জন্যে। সাক্ষী হিসেবে আল্লাহ্ই যথেষ্ট।

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ز سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ۚۖ وَمَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ۚۖ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾

২৯. মুহাম্মাদ (ﷺ) আল্লাহ্র রাসূল; আর যারা এর সাথে আছে তারা কাফিরদের বিরুদ্ধে কঠোর এবং নিজেদের মধ্যে পরস্পরে সহানুভূতিশীল; আল্লাহ্র অনুগ্রহ ও সন্তুষ্টি কামনায় তুমি তাদেরকে রুকু' ও সিজদায় অবনত দেখবে। তাদের মুখমন্ডলে সিজদার চিহ্ন থাকবে, তাওরাতে তাদের বর্ণনা এরূপই এবং ইঞ্জীলেও। তাদের দৃষ্টান্ত একটি শস্য ক্ষেত, যার চারা গাছগুলো অঙ্কুরিত হয় পরে সেগুলো শক্ত ও পুষ্ট হয় পরে কান্ডের উপর দাঁড়ায় দৃঢ়ভাবে যা চাষীকে আনন্দিত করে। এভাবে (আল্লাহ্ মু'মিনদের সমৃদ্ধি দ্বারা) কাফিরদের অন্তর্জ্বালা সৃষ্টি করেন। যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে আল্লাহ্ তাদেরকে ক্ষমা ও মহা পুরস্কারের প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন।

সূরাঃ হুজুরাত মাদানী

(আয়াতঃ ১৮, রুকু'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُوْرَةُ الْحُجُرٰتِ مَدَنِيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ١٨ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. হে মু'মিনগণ! আল্লাহ্ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর সামনে তোমরা কোন বিষয়ে অগ্রগামী হয়ো না এবং আল্লাহ্কে ভয় কর, নিশ্চয়ই আল্লাহ্ সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ①

২. হে মু'মিনগণ! তোমরা নবী (ﷺ)-এর কণ্ঠস্বরের উপর নিজেদের কণ্ঠস্বর উঁচু করো না এবং নিজেদের মধ্যে যেভাবে উচ্চস্বরে কথা বল তার সাথে সেই রূপ উচ্চস্বরে কথা বলো না; এতে তোমাদের কর্ম নষ্ট হয়ে যাবে তোমাদের অজান্তে।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ②

৩. যারা আল্লাহ্র রাসূলের সামনে নিজেদের কণ্ঠস্বর নীচু করে, আল্লাহ্ তাদের অন্তরকে তাকওয়ার জন্যে পরীক্ষা করেছেন। তাদের জন্যে রয়েছে ক্ষমা ও মহাপুরস্কার।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ③

৪. যারা কক্ষসমূহের পিছন হতে তোমাকে উচ্চস্বরে ডাকে তাদের অধিকাংশই নির্বোধ।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ④

৫. তুমি বের হয়ে তাদের নিকট আসবে যদি তারা ধৈর্যধারণ করতো তবে তাই তাদের জন্যে উত্তম হতো। আল্লাহ্ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ⑤

৬. হে মু'মিনগণ! যদি ফাসিক তোমাদের নিকট কোন বার্তা আনয়ন করে, তোমরা তা পরীক্ষা করে

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ

فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ۝٦

দেখবে যাতে অজ্ঞতা বশতঃ তোমরা কোন সম্প্রদায়কে কষ্ট না পৌঁছাও যাতে পরে তোমাদের কৃতকর্মের জন্যে লজ্জিত হয়ে যাও।

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ؕ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۝٧

৭. তোমরা জেনে রেখো যে, তোমাদের মধ্যে আল্লাহ্‌র রাসূল (ﷺ) রয়েছেন; তিনি বহু বিষয়ে তোমাদের কথা শুনলে তোমরাই কষ্ট পাবে; কিন্তু আল্লাহ্ তোমাদের নিকট ঈমানকে প্রিয় করেছেন এবং ওকে তোমাদের হৃদয়গ্রাহীও করেছেন; কুফরী, পাপাচার ও অবাধ্যতাকে করেছেন তোমাদের নিকট অপ্রিয়। এরাই সৎপথের পথিক।

فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٨

৮. (এটা) আল্লাহ্‌র দান ও অনুগ্রহ; আল্লাহ্ সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাবান।

وَاِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا عَلَى الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْٓءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ فَآءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝٩

৯. মু'মিনদের দুই দল যদি দ্বন্দ্বে লিপ্ত হয় তবে তোমরা তাদের মধ্যে মীমাংসা করে দিবে; যদি তাদের একদল অপর দলের বিরুদ্ধে বাড়াবাড়ি করে তবে তোমরা বাড়াবাড়িকারী দলের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করবে যতক্ষণ না তারা আল্লাহ্‌র নির্দেশের দিকে ফিরে আসে, যদি তারা ফিরে আসে তবে তাদের মধ্যে ন্যায়ের সাথে ফায়সালা করবে এবং সুবিচার করবে। নিশ্চয়ই আল্লাহ সুবিচারকারীদেরকে ভালবাসেন।

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝١٠

১০. মু'মিনরা পরস্পর ভাই ভাই, সুতরাং তোমাদের দুই ভাই-এর মধ্যে মীমাংসা করে দাও এবং আল্লাহ্‌কে ভয় কর যাতে তোমরা অনুগ্রহ প্রাপ্ত হও।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿١١﴾

১১. হে মু'মিনগণ! কোন পরুষ যেন অপর কোন পুরুষকে বিদ্রুপ না করে; কেননা তারা তাদের চেয়ে উত্তম হতে পারে এবং কোন নারী অপর কোন নারীকেও যেন বিদ্রুপ না করে; কেননা সে তাদের অপেক্ষা উত্তম হতে পারে। তোমরা একে অপরের প্রতি দোষারোপ করো না এবং তোমরা একে অপরকে মন্দ নামে ডেকো না; ঈমানের পরে মন্দ নামে ডাকা গর্হিত কাজ। যারা এ ধরনের আচরণ পরিত্যাগ করে না তারাই অত্যাচারী।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ز اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾

১২. হে মু'মিনগণ! তোমরা বহুবিধ ধারণা হতে বিরত থাকো; কারণ কোন কোন ধারণা পাপ এবং তোমরা একে অপরের গোপনীয় বিষয় অনুসন্ধান করো না এবং একে অপরের পশ্চাতে নিন্দা করো না। তোমাদের মধ্যে কেউ কি তার মৃত ভাইয়ের গোশত ভক্ষণ করতে ভালবাসবে?[১] বস্তুতঃ তোমরাও এটাকে ঘৃণাই কর। তোমরা আল্লাহকে ভয় কর। আল্লাহ তাওবা গ্রহণকারী, দয়ালু।

১। (ক) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) হতে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তোমরা অবশ্যই ধারণা-অনুমান থেকে বেঁচে থাক। কেননা, ধারণা-অনুমান সবচেয়ে বড় মিথ্যা কথা। কারো দোষ খুঁজে বেড়িও না, গোয়েন্দাগিরিতে লিপ্ত হয়ো না। (বেচা-কেনায়) একে অন্যকে ধোঁকা দিও না, পরস্পরে হিংসা করো না, একে অন্যের প্রতি বিদ্বেষ ভাব রেখো না, একজন থেকে আরেকজন বিচ্ছিন্ন হয়ে যেও না। বরং তোমরা সবাই এক আল্লাহ্‌র বান্দাহ হয়ে ভাই ভাই বনে যাও। (বুখারী, হাদীস নং ৬০৬৬)

(খ) হাম্মাম (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণনা করেছেন, একদিন আমরা হুযাইফা (রাযিআল্লাহু আনহু)-এর সাথে ছিলাম। তাঁর কাছে বলা হলো, একজন লোক মানুষের কথা ওসমান (রাযিআল্লাহু আনহু)-এর নিকট বলে থাকে (অর্থাৎ চোগলখুরী করে থাকে)। তখন হুযাইফা (রাযিআল্লাহু আনহু) বললেন, আমি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)- কে বলতে শুনেছি, চোগলখোর বেহেশ্‌তে যাবে না। (বুখারী, হাদীস নং ৬০৫৬)

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآىِٕلَ لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿١٣﴾

১৩. হে লোকসকল! আমি তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছি এক পুরুষ ও এক নারী হতে, পরে তোমাদেরকে বিভক্ত করেছি বিভিন্ন জাতি ও গোত্রে, যাতে তোমরা একে অপরের সাথে পরিচিত হতে পার। তোমাদের মধ্যে ঐ ব্যক্তিই আল্লাহর নিকট অধিক মর্যাদা সম্পন্ন যে অধিক মুত্তাকী। আল্লাহ সবকিছু জানেন, সবকিছুর খবর রাখেন।

قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْۤا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤﴾

১৪. আরব বেদুঈনগণ বলেঃ আমরা ঈমান আনলাম; তুমি বলঃ তোমরা ঈমান আননি, বরং তোমরা বলঃ আমরা ইসলাম গ্রহণ করেছি মাত্র। কারণ ঈমান এখনো তোমাদের অন্তরে প্রবেশ করেনি। যদি তোমরা আল্লাহ্ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর আনুগত্য কর তবে তোমাদের কর্মফল সামান্য পরিমাণও লাঘব করা হবে না। আল্লাহ ক্ষমাশীল, দয়ালু।

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿١٥﴾

১৫. তারাই প্রকৃত মু'মিন যারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর প্রতি ঈমান আনার পরে আর কোন সন্দেহ পোষণ করে না এবং জান ও মাল দ্বারা আল্লাহর পথে সংগ্রাম করে, তারাই সত্যনিষ্ঠ।

قُلْ اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٦﴾

১৬. বলঃ তোমরা কি তোমাদের দ্বীন সম্পর্কে আল্লাহকে অবহিত করছো? অথচ আল্লাহ যা কিছু আছে আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে তা জানেন। আল্লাহ সর্ববিষয়ে সম্যক অবহিত।

يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا ؕ قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ

১৭. যারা ইসলাম গ্রহণ করে তারা তোমার উপকার করেছে বলে মনে

إِسْلَامَكُمْ ۚ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ أَنْ هَدٰىكُمْ لِلْإِيمَانِ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ﴿١٧﴾

করে। বলঃ তোমাদের ইসলাম গ্রহণ আমাকে উপকৃত করেছে এমনটি মনে করো না। বরং আল্লাহই তোমাদেরকে ঈমানের পথ দেখিয়ে তোমাদেরকে ধন্য করেছেন, যদি তোমরা সত্যবাদী হও।

إِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَاللّٰهُ بَصِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨﴾

১৮. আল্লাহ আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর অদৃশ্য বিষয় সম্পর্কে অবগত আছেন তোমরা যা কর আল্লাহ তা দেখেন।

سُورَةُ قٓ مَكِّيَّةٌ

সূরাঃ ক্বা'ফ মাক্কী

آيَاتُهَا ٤٥ رُكُوعَاتُهَا ٣

(আয়াতঃ ৪৫, রুকূ'ঃ ৩)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

قٓ ۚ وَالْقُرْآنِ الْمَجِيدِ ﴿١﴾

১. ক্বা'ফ, শপথ কুরআন মাজীদের।

بَلْ عَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُونَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيبٌ ﴿٢﴾

২. কিন্তু কাফিররা তাদের মধ্য হ'তে একজন সতর্ককারী আবির্ভূত হতে দেখে বিস্ময় বোধ করে ও বলেঃ এটা তো এক আশ্চর্য ব্যাপার।

ءَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجْعٌ بَعِيدٌ ﴿٣﴾

৩. আমাদের মৃত্যু হলে আমরা মৃত্তিকায় পরিণত হব, (অতঃপর আমরা কি পুনরুজ্জীবিত হবো?) সে প্রত্যাবর্তন তো সুদূর পরাহত!

قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ ۖ وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِيظٌ ﴿٤﴾

৪. আমি তো জানি মৃত্তিকা ক্ষয় কর তাদের কতটুকু এবং আমার নিকট আছে সংরক্ষিত একটি কিতাব।

بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَهُمْ فِي أَمْرٍ مَرِيجٍ ﴿٥﴾

৫. বস্তুতঃ তাদের নিকট সত্য আসার পর তারা তা প্রত্যাখ্যান করেছে। ফলে তারা সংশয়ে পড়ে আছে।

اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوْجٍ ۝٦

৬. এরাকি কখন তাদের ওপরের আকাশের দিকে তাকিয়ে দেখে না কিভাবে আমি তা তৈরি করেছি ও তাকে সুশোভিত করেছি? আর তাতে কোন (সূক্ষ্মতম) ফাটলও নেই।

وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ۝٧

৭. আমি ভূমিকে বিস্তৃত করেছি ও তাতে পর্বতমালা স্থাপন করেছি এবং সেখানে উৎপন্ন করেছি নয়ন প্রীতিকর সর্বপ্রকার উদ্ভিদ।

تَبْصِرَةً وَّ ذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ۝٨

৮. প্রত্যেক বিনীত ব্যক্তির জন্যে জ্ঞান ও উপদেশ স্বরূপ।

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ الْحَصِيْدِ ۝٩

৯. আকাশ হতে আমি বর্ষণ করি কল্যাণকর বৃষ্টি এবং তদ্দ্বারা আমি সৃষ্টি করি উদ্যান ও পরিপক্ক শস্যরাজি।

وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ۝١٠

১০. ও উঁচু উঁচু খেজুর বৃক্ষ যাতে আছে গুচ্ছ গুচ্ছ খেজুর।

رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ؕ كَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ ۝١١

১১. বান্দাদের জীবিকা স্বরূপ; আমি বৃষ্টি দ্বারা জীবিত করি মৃত ভূমিকে; এভাবেই পুনরুত্থান ঘটবে।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّاَصْحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوْدُ ۝١٢

১২. তাদের পূর্বেও সত্য প্রত্যাখ্যান করেছিল নূহ (عليه السلام)-এর সম্প্রদায়, রাস্‌স ও সামুদ সম্প্রদায়,

وَعَادٌ وَّ فِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ لُوْطٍ ۝١٣

১৩. আ'দ, ফির'আউন ও লূতের ভাইয়েরা,

وَّ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ؕ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ۝١٤

১৪. এবং আয়কার অধিবাসী ও তুব্বা সম্প্রদায়; তারা সকলে রাসূলদেরকে মিথ্যাবাদী বলেছিল, ফলে তাদের উপর আমার শাস্তি কার্যকর হয়েছে।

اَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ ؕ بَلْ هُمْ فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۝١٥

১৫. আমি কি প্রথমবার সৃষ্টি করেই ক্লান্ত হয়ে পড়েছি বরং পুনঃসৃষ্টি বিষয়ে তারা সন্দেহ পোষণ করবে!

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ ۚ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ﴿١٦﴾

১৬. আমিই মানুষকে সৃষ্টি করেছি এবং তার অন্তর তাকে যে কুমন্ত্রণা দেয় তা আমি জানি। আমি তার ঘাড়ের শাহ রগ অপেক্ষাও নিকটতর (জ্ঞানের দিক দিয়ে)।

اِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيْدٌ ﴿١٧﴾

১৭. স্মরণ রেখো, দুই গ্রহণকারী (ফেরেশ্‌তা) তার ডানে ও বামে বসে তার কর্ম লিপিবদ্ধ করে।

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ﴿١٨﴾

১৮. মানুষ যে কথাই উচ্চারণ করে তা লিপিবদ্ধ করার জন্যে তৎপর প্রহরী তার নিকটেই রয়েছে।

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ﴿١٩﴾

১৯. মৃত্যুযন্ত্রণা সত্যই আসবে; এটা সে জিনিস হতে তোমরা অব্যাহতি চেয়ে আসছো।

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ ﴿٢٠﴾

২০. আর শিংগায় ফুৎকার দেয়া হবে, এটাই ঐ দিন, যার ভয় দেখানো হতো।

وَجَآءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَآئِقٌ وَّشَهِيْدٌ ﴿٢١﴾

২১. সেদিন প্রত্যেক ব্যক্তি উপস্থিত হবে, তার সাথে থাকবে চালক ও সাক্ষী।

لَقَدْ كُنْتَ فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ﴿٢٢﴾

২২. তুমি এই দিবস সম্বন্ধে অজ্ঞ ছিলে, এখন তোমার সম্মুখ হতে আবরণ সরিয়েছি, অদ্য তোমার দৃষ্টি প্রখর।

وَقَالَ قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيْدٌ ﴿٢٣﴾ ؕ

২৩. তার সঙ্গী (ফেরেশ্‌তা) বলবেঃ এই তো আমার নিকট আমলনামা প্রস্তুত।

اَلْقِيَا فِيْ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿٢٤﴾ ۙ

২৪. (আদেশ করা হবেঃ) তোমরা উভয়ে নিক্ষেপ কর জাহান্নামে প্রত্যেক উদ্ধত কাফিরকে-

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيْبِ ﴿٢٥﴾ ۙ

২৫. কল্যাণকর কাজে বেশি বেশি বাঁধা দানকারী, সীমালঙ্ঘনকারী ও সন্দেহ পোষণকারীকে।

الَّذِىْ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلْقِيٰهُ فِى الْعَذَابِ الشَّدِيْدِ ﴿٢٦﴾

২৬. যে ব্যক্তি আল্লাহর সাথে অন্য মা'বূদ গ্রহণ করতো তাকে কঠিন শাস্তিতে নিক্ষেপ কর।

قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَآ اَطْغَيْتُهٗ وَلٰكِنْ كَانَ فِىْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٢٧﴾

২৭. তার সহচর (শয়তান) বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমি তাকে অবাধ্য হতে প্ররোচিত করিনি। বস্তুতঃ সে নিজেই ছিল দূরবর্তী ভ্রষ্টতায়।

قَالَ لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَىَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ اِلَيْكُمْ بِالْوَعِيْدِ ﴿٢٨﴾

২৮. (আল্লাহ বলবেনঃ) আমার সামনে ঝগড়া করো না; তোমাদেরকে আমি তো পূর্বেই সতর্ক করেছি।

مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَىَّ وَمَآ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٢٩﴾

২৯. আমার কথার রদ-বদল হয় না এবং আমি আমার বান্দাদের প্রতি অবিচারকারী নই।

يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَاْتِ وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ﴿٣٠﴾

৩০. সেদিন আমি জাহান্নামকে জিজ্ঞেস করবোঃ তুমি কি পূর্ণ হয়ে গেছো? (জাহান্নাম) বলবেঃ আরো আছে কি?[১]

وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ ﴿٣١﴾

৩১. আর জান্নাতকে নিকটস্থ করা হবে মুত্তাকীদের, কোন দূরত্ব থাকবে না।

هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ اَوَّابٍ حَفِيْظٍ ﴿٣٢﴾

৩২. এরই প্রতিশ্রুতি তোমাদেরকে দেয়া হয়েছিল, প্রত্যেক আল্লাহ অভিমুখী, হিফাযতকারীর জন্যে।

مَنْ خَشِىَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبِ ﴿٣٣﴾

৩৩. যারা না দেখে দয়াময় আল্লাহকে ভয় করে এবং অনুতপ্ত হৃদয়ে উপস্থিত হয়-

---

১। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ (জাহান্নামীদেরকে) জাহান্নামে নিক্ষেপ করা হবে এবং জাহান্নাম বলবে, আরও অধিক আছে কি? শেষ পর্যন্ত তিনি (আল্লাহ তা'আলা তার মধ্যে) আপন পদ স্থাপন করবেন তখন সে বলবে ব্যাস ব্যাস। (আর নয় আর নয় (বুখারী হাদীস নং ৪৮৪৮)

ادْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ ﴿٣٤﴾

৩৪. শান্তি পূর্ণভাবে তোমরা তাতে প্রবেশ কর; এটা অনন্ত জীবনের দিন।

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ﴿٣٥﴾

৩৫. সেখানে তারা যা কামনা করবে তাই পাবে এবং আমার নিকট রয়েছে তারও অধিক (আল্লাহর দর্শন)।

وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِي الْبِلَادِ ؕ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿٣٦﴾

৩৬. আমি তাদের পূর্বে আরো বহু জাতি ধ্বংস করেছি যারা ছিল তাদের অপেক্ষা শক্তিতে প্রবল, তারা দেশে-বিদেশে ভ্রমণ করে ফিরতো; পরে তাদের জন্য কোন আশ্রয়স্থল রইলো না।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيْدٌ ﴿٣٧﴾

৩৭. এতে উপদেশ রয়েছে তার জন্যে যার আছে অন্তঃকরণ অথবা যে শ্রবণ করে একাগ্র চিত্তে।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ۖ وَّمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ ﴿٣٨﴾

৩৮. আমি আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী এবং এগুলোর মধ্যস্থিত সব কিছু সৃষ্টি করেছি ছয় দিনে; আমাকে কোন ক্লান্তি স্পর্শ করেনি।

فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ ﴿٣٩﴾

৩৯. অতএব, তারা যা বলে তাতে তুমি ধৈর্যধারণ কর এবং তোমার প্রতিপালকের প্রশংসা সহকারে পবিত্রতা বর্ণনা করা সূর্যোদয় ও সূর্যাস্তের পূর্বে।[১]

وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ﴿٤٠﴾

৪০. তাঁর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা কর রাত্রির একাংশে এবং নামাযের পরেও।

১। জারীর ইবনে আবদুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, এক সময়ে আমরা নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সাথে ছিলাম। এই সময়ে রাতের বেলায় তিনি চাঁদের দিকে তাকিয়ে বললেন, এই চাঁদকে যেমন তোমরা দেখতে পাচ্ছ, ঠিক তেমনি তোমাদের প্রভুকেও দেখতে পাবে। তাঁকে দেখার ব্যাপারে কোনরূপ সন্দেহ পোষণ করবে না। সুতরাং সূর্য উদিত হওয়ার আগে এবং অস্ত যাওয়ার আগে (শয়তানের ওপর বিজয়ী হয়ে) যদি তোমরা ঠিক সময়ে নামায আদায় করতে পার তবে তাই কর। এরপর তিনি তিলাওয়াত করলেনঃ অর্থাৎ "সূর্য উদয়ের পূর্বে ও অস্ত যাওয়ার পূর্বে তুমি আল্লাহ্র পবিত্রতা বর্ণনা কর।" (সূরা ক্বাফঃ ৩৯) [বুখারী, হাদীস নং ৫৫৪]

وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿٤١﴾

৪১. আর শ্রবণ কর, যেদিন এক আহ্বানকারী নিকটবর্তী স্থান হতে আহ্বান করবে,

يَّوْمَ يَسْمَعُوْنَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ۭ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ﴿٤٢﴾

৪২. যেদিন (মানুষ) অবশ্যই শ্রবণ করবে এক বিকট আওয়াজ, সেদিনই (কবর হতে মৃত্যুদের) বের হবার দিন।

اِنَّا نَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَاِلَيْنَا الْمَصِيْرُ ﴿٤٣﴾

৪৩. আমিই জীবিত করি, আর মৃত্যুও ঘটাই এবং সকলেই ফিরে আসবে আমারই দিকে।

يَوْمَ تَشَقَّقُ الْاَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ۭ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ ﴿٤٤﴾

৪৪. যেদিন পৃথিবী বিদীর্ণ হবে এবং লোকেরা বের হয়ে আসবে দ্রুতবেগে, এই সমবেতকরণ আমার জন্যে সহজ।

نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۣ فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ﴿٤٥﴾

৪৫. তারা যা বলে, তা আমি জানি, তুমি তাদের উপর জবরদস্তিকারী নও; সুতরাং যে শাস্তিকে ভয় করে তাকে উপদেশ দান কর কুরআনের সাহায্যে।

سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ مَكِّيَّةٌ

সূরাঃ যারিয়াত, মাক্কী

اٰيَاتُهَا ٦٠ رُكُوْعَاتُهَا ٣

(আয়াতঃ ৬০, রুকূ'ঃ ৩)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ﴿١﴾

১. শপথ ধূলি ঝড় ঝঞ্ঝার, যা ধূলা-বালিকে উড়িয়ে নিয়ে যায়।

فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ﴿٢﴾

২. শপথ বোঝা বহনকারী মেঘপুঞ্জের,

فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ﴿٣﴾

৩. শপথ স্বচ্ছন্দ গতিতে বয়ে যাওয়া নৌযানের,

فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ﴿٤﴾

৪. শপথ কর্ম বন্টনকারীদের (ফেরেশতাদের-)

اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ﴿٥﴾

৫. তোমাদেরকে প্রদত্ত প্রতিশ্রুতি অবশ্যই সত্য।

وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ﴿٦﴾

৬. কর্মফল দিবস অবশ্যম্ভাবী।

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ﴿٧﴾

৭. শপথ বহু পথ বিশিষ্ট আকাশের,

اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ﴿٨﴾

৮. তোমরা তো পরস্পর বিরোধী কথায় লিপ্ত।

يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ ﴿٩﴾

৯. যে ব্যক্তি সত্যভ্রষ্ট সে তা পরিত্যাগ করে,

قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ﴿١٠﴾

১০. অভিশপ্ত হোক মিথ্যাচারীরা,

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ﴿١١﴾

১১. যারা অজ্ঞ ও উদাসীন!

يَسْـَٔلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٢﴾

১২. তারা জিজ্ঞেস করেঃ কর্মফল দিবস কবে হবে?

يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ ﴿١٣﴾

১৩. (বলঃ) সেদিন যখন তাদেরকে শাস্তি দেয়া হবে অগ্নিতে,

ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ ۭ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٤﴾

১৪. (এবং বলা হবেঃ) তোমরা তোমাদের শাস্তি আস্বাদন কর, তোমরা এই শাস্তির জন্য তড়িঘড়ি করছিলে।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿١٥﴾

১৫. সেদিন মুত্তকীরা জান্নাতে ও ঝরণার মধ্যে থাকবে।

اٰخِذِيْنَ مَآ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ ﴿١٦﴾

১৬. যা তাদের প্রতিপালক তাদেরকে প্রদান করবেন; তা তারা গ্রহণ করবে নিশ্চয়ই তারা ইতিপূর্বে সৎকর্মপরায়ণ ছিল।

كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ﴿١٧﴾

১৭. তারা রাত্রির সামান্য অংশই নিদ্রাবস্থায় অতিবাহিত করতো নিদ্রায়।

وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿١٨﴾

১৮. রাত্রির শেষ প্রহরে তারা ক্ষমা প্রার্থনা করতো,

وَفِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿١٩﴾

১৯. এবং তাদের ধন-সম্পদে রয়েছে অভাবগ্রস্ত ও বঞ্চিতের হক।

وَفِي الْاَرْضِ اٰيٰتٌ لِّلْمُوْقِنِيْنَ ﴿٢٠﴾

২০. পৃথিবীতে বিশ্বাসীদের অনেক নিদর্শন রয়েছে।

وَفِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٢١﴾

২১. এবং তোমাদের মধ্যেও! তোমরা কি অনুধাবন করবে না?

وَفِي السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿٢٢﴾

২২. আকাশে রয়েছে তোমাদের রিযিক আর যা কিছুর প্রতিশ্রুতি তোমাদের দেয়া হয়েছে।

فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَآ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. আকাশ ও পৃথিবীর প্রতি-পালকের শপথ! অবশ্যই একথা তোমাদের কথোপকথনের মতই সত্য।

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ الْمُكْرَمِيْنَ ﴿٢٤﴾

২৪. হে নবী (ﷺ)! তোমার নিকট ইবরাহীম (عليه السلام) এর সম্মানীত মেহমানদের কাহিনী এসেছে কি?

اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ ۚ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿٢٥﴾

২৫. যখন তারা তার নিকট উপস্থিত হয়ে বললোঃ (আপনার প্রতি) সালাম। উত্তরে তিনি বললেনঃ (আপনাদেরকেও) সালাম। এরা তো অপরিচিত লোক।

فَرَاغَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ﴿٢٦﴾

২৬. অতঃপর ইবরাহীম (عليه السلام) তাঁর স্ত্রীর নিকট গেলেন এবং একটি বাছুর গরুও ভাজা গোশত নিয়ে আসলেন।

فَقَرَّبَهٗٓ اِلَيْهِمْ قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٢٧﴾

২৭. ও তাদের সামনে রাখলেন এবং বললেনঃ আপনারা খাচ্ছেন না কেন?

فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ ؕ وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ﴿٢٨﴾

২৮. এতে তাদের সম্পর্কে মনে মনে ভয় পেলেন। তারা বললেনঃ ভীত হবেন না। অতঃপর তারা তাকে এক জ্ঞানবান পুত্র-সন্তানের সুসংবাদ দিলেন।

فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِيْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِيْمٌ ﴿٢٩﴾

২৯. একথা শুনে তার স্ত্রী চীৎকার করতে করতে সামনে আসলেন এবং মুখ চাপড়িয়ে বললেন– আমি তো বৃদ্ধা, বন্ধ্যা!

قَالُوْا كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٠﴾

৩০. তারা বললেনঃ তোমার প্রতিপালক এরূপই বলেছেন।[১] তিনি প্রজ্ঞাবান, সর্বজ্ঞ।

১। মু'আবিয়া (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেছেন, আমি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি আমার উম্মতের একদল লোক সর্বাবস্থায় আল্লাহ্‌র হুকুমের ওপর প্রতিষ্ঠিত থাকবে। যারা তাদেরকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করতে চেষ্টা করবে কিংবা বিরোধিতা করবে তারা তাদের কোন ক্ষতি করতে পারবে না। তারা এ অবস্থায় থাকতেই কিয়ামত এসে যাবে। মালেক ইবনে ইউখামের বলেছেন, আমি মু'আয ইবনে জাবাল আনসারীকে বলতে শুনেছি, তাদের এলাকা হবে শাম (সিরিয়া)। (হাদীসটি বর্ণনা করার পরই) মু'আবিয়া বললেন, মালেক ইবনে ইউখামের বলেছেন যে, তিনি মু'আয ইবনে জাবাল আনসারীকে বলতে শুনেছেন, যে তাদের এলাকা হবে শাম। (বুখারী, হাদীস নং ৭৪৬০)

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣١﴾

৩১. তিনি (ইবরাহীম (عليه السلام)) বললেনঃ হে প্রেরিত (ফেরেশতা-গণ!) আপনাদের বিশেষ কাজ কি?

قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾

৩২. তাঁরা বললেনঃ আমাদেরকে এক অপরাধী সম্প্রদায়ের [লূত জাতির] নিকট পাঠানো হয়েছে।

لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ طِيْنٍ ﴿٣٣﴾

৩৩. তাদের উপর মাটির শক্ত কঙ্কর নিক্ষেপ করার জন্যে,

مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣٤﴾

৩৪. যা চিহ্নিত তোমার প্রতি-পালকের নিকট হতে সীমালঙ্ঘন-কারীদের জন্যে ।

فَاَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيْهَا مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٥﴾

৩৫. সেখানে যেসব মু'মিন ছিল আমি তাদেরকে বের করে নিলাম।

فَمَا وَجَدْنَا فِيْهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٣٦﴾

৩৬. এবং সেখানে একটি পরিবার [লূত (عليه السلام)-এর পরিবার] ব্যতীত কোন মুসলমান আমি পাইনি।

وَتَرَكْنَا فِيْهَآ اٰيَةً لِّلَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٣٧﴾

৩৭. আমি ওতে একটি নির্দশন রেখেছি তাদের জন্যে, যারা যন্ত্রণাদায়ক আযাবকে ভয় করে।

وَفِيْ مُوْسٰٓى اِذْ اَرْسَلْنٰهُ اِلٰى فِرْعَوْنَ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾

৩৮. এবং (নিদর্শন রেখেছি) মূসা (عليه السلام)-এর কাহিনীতেও, যখন আমি তাকে স্পষ্ট প্রমাণসহ ফিরাউনের কাছে পাঠালাম।

فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَقَالَ سٰحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿٣٩﴾

৩৯. তখন সে ক্ষমতার দম্ভে মুখ ফিরিয়ে নিলো এবং বললোঃ (এই ব্যক্তি) এক যাদুকর অথবা উন্মাদ।

فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿٤٠﴾

৪০. সুতরাং আমি তাকে ও তার সৈন্যবাহিনীকে পাকড়াও করলাম এবং তাদেরকে সমুদ্রে নিক্ষেপ করলাম এবং সে তিরস্কৃত হলো।

وَفِيْ عَادٍ اِذْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيْحَ الْعَقِيْمَ ﴿٤١﴾

৪১. এবং (নিদর্শন রয়েছে) 'আদের ঘটনায়, যখন আমি তাদের বিরুদ্ধে প্রেরণ করেছিলাম অকল্যাণকর বায়ু;

مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ اَتَتْ عَلَيْهِ اِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيْمِ ﴿٤٢﴾

৪২. এটা যা কিছুর উপর দিয়ে বয়ে গিয়েছিল তাকেই জরাজীর্ণ করে দিয়েছিল।

وَفِيْ ثَمُوْدَ اِذْ قِيْلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوْا حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٤٣﴾

৪৩. আরো (নিদর্শন রয়েছে) সামূদের কাহিনীতে, যখন তাদেরকে বলা হলোঃ তোমরা ভোগ করে নাও কিছুকাল।

فَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿٤٤﴾

৪৪. কিন্তু তারা তাদের প্রতিপালকের আদেশ অমান্য করলো; ফলে তাদের প্রতি বজ্রাঘাত হলো এবং তারা দেখছিল।

فَمَا اسْتَطَاعُوْا مِنْ قِيَامٍ وَّمَا كَانُوْا مُنْتَصِرِيْنَ ﴿٤٥﴾

৪৫. তারা উঠে দাঁড়াতে পারলো না, এবং তা প্রতিরোধ করতেও পারলো না।

وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٤٦﴾

৪৬. (ধ্বংস করেছিলাম) ইতিপূর্বে নূহ (عليه السلام)-এর সম্প্রদায়কে, তারা ছিল ফাসেক সম্প্রদায়।

وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ﴿٤٧﴾

৪৭. আমি আকাশ নির্মাণ করেছি আমার (নিজ) হাতে এবং আমি অবশ্যই মহা সম্প্রসারণকারী।

وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ ﴿٤٨﴾

৪৮. এবং আমি পৃথিবীকে বিছিয়ে দিয়েছি, সুতরাং আমি কত সুন্দরভাবে বিছিয়েছি!

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٩﴾

৪৯. আমি প্রত্যেক বস্তু সৃষ্টি করেছি জোড়ায়-জোড়ায়, যাতে তোমরা উপদেশ গ্রহণ করতে পার।

فَفِرُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ ؕ اِنِّيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥٠﴾

৫০. আল্লাহর দিকে ধাবিত হও; আমি তোমাদের জন্য তাঁর পক্ষ হতে স্পষ্ট সতর্ককারী।

وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ؕ اِنِّيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥١﴾

৫১. তোমরা আল্লাহর সাথে অন্য কোন মা'বূদ স্থির করো না; আমি তোমাদের জন্য তাঁর পক্ষ হতে স্পষ্ট সতর্ককারী।

كَذٰلِكَ مَآ اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿٥٢﴾

৫২. এভাবে, তাদের পূর্ববর্তীদের নিকট যখনই কোন রাসূল এসেছে, তারা বলেছেঃ (তুমি তো) এক যাদুকর অথবা উন্মাদ!

اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿٥٣﴾

৫৩. তারা কি একে অপরকে এই উপদেশই দিয়ে এসেছে? বস্তুতঃ তারা এক সীমালঙ্ঘনকারী সম্প্রদায়।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ﴿٥٤﴾

৫৪. অতএব, তুমি তাদের দিক হতে মুখ ফিরিয়ে নাও এতে তুমি তিরস্কৃত হবে না।

وَّ ذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٥﴾

৫৫. এবং তুমি উপদেশ দিতে থাক, নিশ্চয়ই উপদেশ মু'মিনদের উপকারে আসে।

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾

৫৬. আমি সৃষ্টি করেছি জ্বিন ও মানুষকে এজন্যে যে, তারা আমারই ইবাদত করবে।

مَآ اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَآ اُرِيْدُ اَنْ يُّطْعِمُوْنِ ﴿٥٧﴾

৫৭. আমি তাদের নিকট হতে কোন রিযিক চাই না এবং এও চাই না যে তারা আমার আহার যোগাবে।

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ ﴿٥٨﴾

৫৮. আল্লাহই তো রিযিক দানকারী এবং তিনি অত্যন্ত পরাক্রমশালী।

فَاِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذَنُوْبًا مِّثْلَ ذَنُوْبِ اَصْحٰبِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿٥٩﴾

৫৯. নিশ্চয়ই যালিমদের প্রাপ্য তাই যা (অতীতে) তাদের (পূর্বের ধ্বংসপ্রাপ্ত সঙ্গীরা) ভোগ করেছে। সুতরাং তারা যেন আমার নিকট তড়িঘড়ি না করে।

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ يَّوْمِهِمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٦٠﴾

৬০. কাফেরদের জন্যে দুর্ভোগ তাদের ঐ দিনে, যে দিনের ভয় তাদেরকে দেখানো হয়েছে।[১]

১। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) সরাসরি রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন। আল্লাহ্ তা'আলা জাহান্নামীদের মধ্যে সবচেয়ে লঘুদন্ড ও সহজ আযাব ভোগকারীকে জিজ্ঞেস করবেন, যদি দুনিয়ার সমস্যা ধন-সম্পদ (এখন) তোমার হাসিল হয়ে যায়, তাহলে এ আযাবের বিনিময়ে তুমি কি তা সব দিয়ে দেবে? সে জবাব দেবে-হ্যাঁ। তখন আল্লাহ্ বলবেন, যখন তুমি আদমের পৃষ্ঠে ছিলে, আমি তোমার থেকে এর চেয়েও অতি সহজ একটি জিনিস চেয়েছিলাম, আমার সাথে কাউকে শরীক করো না। কিন্তু তুমি (তা মানতে) অস্বীকার করলে এবং শিরকে লিপ্ত হলে। (বুখারী, হাদীস নং ৩৩৩৪)

সূরাঃ তূর, মাক্কী

(আয়াতঃ ৪৯, রুকূ'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُوْرَةُ الطُّوْرِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٤٩ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. শপথ তূর পর্বতের,

وَالطُّوْرِ ۝١

২. শপথ কিতাবের, যা লিখিত আছে

وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ۝٢

৩. খোলা পত্রে;

فِيْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ۝٣

৪. শপথ বায়তুল মা'মূরের,

وَّالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ ۝٤

৫. শপথ সমুন্নত আকাশের,

وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ۝٥

৬. এবং শপথ উদ্বেলিত সমুদ্রের–

وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ ۝٦

৭. তোমার প্রতিপালকের আযাব অবশ্যম্ভাবী,

اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۝٧

৮. এর প্রতিহতকারী কেউ নেই।

مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ۝٨

৯. যেদিন আকাশ দুলিত হবে প্রবলভাবে।

يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ۝٩

১০. এবং পাহাড় চলবে দ্রুত।

وَّتَسِيْرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ۝١٠

১১. দুর্ভোগ সে দিন মিথ্যাশ্রয়ীদের–

فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝١١

১২. যারা খেল-তামাশাচ্ছলে অসার কার্যকলাপে লিপ্ত থাকে।

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ۝١٢

১৩. সেদিন তাদেরকে চরমভাবে ধাক্কা মারতে মারতে নিয়ে যাওয়া হবে জাহান্নামের অগ্নির দিকে,

يَوْمَ يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ۝١٣

১৪. এতো সেই অগ্নি যাকে তোমরা মিথ্যা মনে করতে।

هٰذِهِ النَّارُ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ۝١٤

১৫. এটা কি যাদু? নাকি তোমরা দেখছো না?

اَفَسِحْرٌ هٰذَآ اَمْ اَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ ۝١٥

اِصۡلَوۡهَا فَاصۡبِرُوۡۤا اَوۡ لَا تَصۡبِرُوۡا ۚ سَوَآءٌ عَلَيۡكُمۡ ؕ
اِنَّمَا تُجۡزَوۡنَ مَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۶﴾

১৬. তোমরা এতে প্রবেশ কর, অতঃপর তোমরা ধৈর্যধর আর না ধর উভয়ই তোমাদের জন্যে সমান। নিশ্চয়ই তোমাদেরকে তারই প্রতিফল দেয়া হচ্ছে যা তোমরা করতে।

اِنَّ الۡمُتَّقِيۡنَ فِىۡ جَنّٰتٍ وَّنَعِيۡمٍ ﴿۱۷﴾

১৭. নিশ্চয়ই মুত্তাকীরা থাকবে জান্নাতে ও ভোগ-বিলাসে,

فٰكِهِيۡنَ بِمَاۤ اٰتٰهُمۡ رَبُّهُمۡ ۚ وَوَقٰهُمۡ رَبُّهُمۡ
عَذَابَ الۡجَحِيۡمِ ﴿۱۸﴾

১৮. তাদের প্রতিপালক তাদেরকে যা দিবেন তারা তা উপভোগ করবে এবং তিনি তাদেরকে রক্ষা করবেন জাহান্নামের আযাব হতে,

كُلُوۡا وَاشۡرَبُوۡا هَنِيۡٓـًٔا بِمَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۹﴾

১৯. তোমরা তৃপ্তির সাথে পানাহার করতে থাকো, তোমরা যা করতে তার প্রতিদান স্বরূপ ।

مُتَّكِـِٕيۡنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصۡفُوۡفَةٍ ۚ وَزَوَّجۡنٰهُمۡ
بِحُوۡرٍ عِيۡنٍ ﴿۲۰﴾

২০. তারা শ্রেণীবদ্ধভাবে সজ্জিত আসনে হেলান দিয়ে বসবে; আমি তাদের মিলন ঘটাবো সুনয়না (বড় বড় চক্ষু বিশিষ্ট) হূরের সঙ্গে।

وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَاتَّبَعَتۡهُمۡ ذُرِّيَّتُهُمۡ بِاِيۡمَانٍ
اَلۡحَقۡنَا بِهِمۡ ذُرِّيَّتَهُمۡ وَمَاۤ اَلَتۡنٰهُمۡ مِّنۡ عَمَلِهِمۡ
مِّنۡ شَىۡءٍ ؕ كُلُّ امۡرِئٍۢ بِمَا كَسَبَ رَهِيۡنٌ ﴿۲۱﴾

২১. এবং যারা ঈমান আনে আর তাদের সন্তান-সন্ততি ঈমানে তাদের অনুগামী হয়, তাদের সাথে মিলিত করবো তাদের সন্তান-সন্ততিকে এবং আমি তাদের কর্মফলের ঘাটতি করবো না, প্রত্যেক ব্যক্তি নিজ কৃতকর্মের জন্যে দায়ী।

وَاَمۡدَدۡنٰهُمۡ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحۡمٍ مِّمَّا يَشۡتَهُوۡنَ ﴿۲۲﴾

২২. আমি তাদেরকে অনেক অনেক ফল-মূল এবং গোশ্‌ত দিবো যা তারা পছন্দ করে।

يَتَنَازَعُوۡنَ فِيۡهَا كَاۡسًا لَّا لَغۡوٌ فِيۡهَا وَلَا تَاۡثِيۡمٌ ﴿۲۳﴾

২৩. সেখানে তারা একে অপরের নিকট হতে গ্রহণ করবে এমন পান-পাত্র, যার ফলে কেউ অসার কথা বলবে না এবং পাপ কর্মেও লিপ্ত হবে না।

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُونٌ ﴿٢٤﴾

২৪. তাদের সেবার জন্য নিয়োজিত থাকবে কিশোরেরা যেন তারা সুরক্ষিত মুক্তা সদৃশ।

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٥﴾

২৫. তারা একে অপরের দিকে ফিরে জিজ্ঞেস করবে,

قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ﴿٢٦﴾

২৬. এবং বলবেঃ পূর্বে আমরা পরিবার-পরিজনের মধ্যে ভয়ে ভয়ে ছিলাম।

فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَانَا عَذَابَ السَّمُومِ ﴿٢٧﴾

২৭. অতঃপর আল্লাহ আমাদের প্রতি অনুগ্রহ করেছেন এবং দগ্ধকারী আযাব হতে আমাদেরকে রক্ষা করেছেন।

إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلُ نَدْعُوهُ ۖ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ﴿٢٨﴾

২৮. নিশ্চয়ই আমরা এর আগে আল্লাহকে ডাকতাম, তিনি তো বড়ই উপকারী, পরম দয়ালু।

فَذَكِّرْ فَمَا أَنتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَلَا مَجْنُونٍ ﴿٢٩﴾

২৯. অতএব তুমি উপদেশ দিতে থাকো, তোমার প্রভুর অনুগ্রহে তুমি গণক নও, উন্মাদও নও।

أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهِ رَيْبَ الْمَنُونِ ﴿٣٠﴾

৩০. তারা কি বলতে চায় যে, সে একজন কবি? আমরা তার জন্যে কালের বিপর্যয়ের (মৃত্যুর) অপেক্ষা করছি।

قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُتَرَبِّصِينَ ﴿٣١﴾

৩১. বলঃ তোমরা অপেক্ষা কর, অবশ্য আমিও তোমাদের সাথে অপেক্ষা কারীদের অন্তর্ভুক্ত।

أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَامُهُم بِهَٰذَا أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ﴿٣٢﴾

৩২. তবে কি তাদের বিবেক-বুদ্ধি তাদেরকে এ বিষয়ে প্ররোচিত করে, না তারা এক সীমালঙ্ঘনকারী সম্প্রদায়?

أَمْ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُ ۚ بَل لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٣﴾

৩৩. তারা কি বলেঃ এ কুরআন তাঁর নিজের বানানো? বরং তারা বিশ্বাস করতে চায় না।

فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ إِن كَانُوا صَادِقِينَ ﴿٣٤﴾

৩৪. তারা যদি সত্যবাদী হয় তবে এর সদৃশ বানানো কিছু উপস্থিত করুক না।

أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ﴿٣٥﴾

৩৫. তারা কি কোন কিছু ব্যতীতই সৃষ্ট হয়েছে, না তারা নিজেরাই (নিজেদের) স্রষ্টা?

أَمْ خَلَقُوا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ ۚ بَل لَّا يُوقِنُونَ ﴿٣٦﴾

৩৬. না কি তারা আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছে? বরং তারা তো বিশ্বাস করে না।

أَمْ عِندَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُونَ ﴿٣٧﴾

৩৭. তোমার প্রতিপালকের ভান্ডার কি তাদের নিকট রয়েছে, না তারা এ সমুদয়ের নিয়ন্ত্রক?

أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَسْتَمِعُونَ فِيهِ ۖ فَلْيَأْتِ مُسْتَمِعُهُم بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾

৩৮. না কি তাদের কোন সিঁড়ি আছে যাতে আরোহণ করে তারা শ্রবণ করে? তবে তাদের সেই শ্রোতা সুস্পষ্ট প্রমাণ উপস্থিত করুক!

أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمُ الْبَنُونَ ﴿٣٩﴾

৩৯. তবে কি তাঁর জন্যে কন্যা-সন্তান এবং পুত্র-সন্তান তোমাদের জন্যে?

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُم مِّن مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُونَ ﴿٤٠﴾

৪০. তবে কি তুমি তাদের নিকট পারিশ্রমিক চাচ্ছ যে, তারা একে একটি কঠিন বোঝা মনে করবে?

أَمْ عِندَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿٤١﴾

৪১. না কি অদৃশ্য বিষয়ে তাদের কোন জ্ঞান আছে যে, তারা তা লিখছে?

أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ ﴿٤٢﴾

৪২. অথবা তারা কি কোন ষড়যন্ত্র করতে চায়? কাফিররাই হবে ষড়যন্ত্রের শিকার।

أَمْ لَهُمْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٤٣﴾

৪৩. না কি আল্লাহ ব্যতীত তাদের অন্য কোন (সত্য) মা'বূদ আছে? তারা যাকে শরীক স্থির করে আল্লাহ তা হতে পবিত্র।

وَإِن يَرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَّرْكُومٌ ﴿٤٤﴾

৪৪. যদি তারা আকাশের কোন খন্ড ভেঙ্গে পড়তে দেখলে বলেঃ এটা তো এক পুঞ্জীভূত মেঘ।

فَذَرْهُمْ حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ يُصْعَقُونَ ﴿٤٥﴾

৪৫. তাদেরকে উপেক্ষা করে চল সেদিন পর্যন্ত, যেদিন তারা ধ্বংসের সম্মুখীন হবে।

يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٦﴾

৪৬. সেদিন তাদের ষড়যন্ত্র কোন কাজে আসবে না এবং তারা সাহায্য প্রাপ্তও হবে না।

وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَٰلِكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٧﴾

৪৭. নিশ্চয়ই যালিমদের জন্যে এ ছাড়া আরোও শাস্তি রয়েছে; কিন্তু তাদের অধিকাংশই তা জানে না।

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٤٨﴾

৪৮. তুমি তোমার প্রতিপালকের নির্দেশের অপেক্ষায় ধৈর্যধারণ কর; তুমি আমার চোখের সামনেই রয়েছো। তুমি তোমার প্রতিপালকের সপ্রশংস পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা কর যখন তুমি শয্যা ত্যাগ কর।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ﴿٤٩﴾

৪৯. এবং তাঁর পবিত্রতা ঘোষণা কর রাত্রিকালে ও তারকার অস্ত গমনের পর।

سُورَةُ النَّجْمِ مَكِّيَّةٌ

সূরাঃ নাজম, মাক্কী

آيَاتُهَا ٦٢ رُكُوعَاتُهَا ٣

(আয়াতঃ ৬২, রুকূ'ঃ ৩)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَىٰ ﴿١﴾

১. শপথ তারকারাজির, যখন সেটা হয় অস্তমিত,

مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَىٰ ﴿٢﴾

২. তোমাদের সঙ্গী পথভ্রষ্ট নয়, বিভ্রান্তও নয়,

৩. এবং তিনি প্রবৃত্তি হতেও কথা বলেন না।

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ۝٣

৪. এটা তো এক ওহী, যা তাঁর প্রতি প্রত্যাদেশ করা হয়।

إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحٰى ۝٤

৫. তাকে শিক্ষা দান করে মহা শক্তিশালী, (ফেরেশ্‌তা)

عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ۝٥

৬. মহা শক্তিধর, তিনি (জিবরাঈল ﷺ নিজ আকৃতিতে) স্থির হয়েছিলেন,

ذُوْ مِرَّةٍ ۭ فَاسْتَوٰى ۝٦

৭. তখন তিনি ঊর্ধ্ব দিগন্তে ছিলেন,

وَهُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ۝٧

৮. অতঃপর তিনি তার (রাসূল ﷺ-এর) নিকটবর্তী হলেন, অতি নিকটবর্তী।

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ۝٨

৯. ফলে তিনি দুই ধনুক অথবা ওরও কম ব্যবধানে হয়ে গেলেন।

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ۝٩

১০. তখন আল্লাহ তাঁর বান্দার প্রতি যা ওহী করার তা ওহী করলেন।

فَاَوْحٰٓى اِلٰى عَبْدِهٖ مَآ اَوْحٰى ۝١٠

১১. যা সে দেখেছে অন্তকরণ তা অস্বীকার করেনি।

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ۝١١

১২. তিনি যা দেখেছেন তোমরা কি সে বিষয়ে তাঁর সঙ্গে বিতর্ক করবে?

اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ۝١٢

১। কাতাদা আনাস ইবনে মালেক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে, তিনি মালেক ইবনে সাসা'আ হতে বর্ণনা করেছেন। তিনি (মালেক) বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আমি (কা'বা) ঘরের পাশে নিদ্রা ও জাগরণ উভয়ের মাঝামাঝি অবস্থায় ছিলাম। এরপর নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) দু'ব্যক্তির মাঝে নিজেকে উল্লেখ করে (বলেন) আমার নিকট সোনার তশতরী নিয়ে আসা হল—যা হিকমত ও ঈমানে পরিপূর্ণ ছিল। আমার বক্ষ থেকে পেটের নীচ পর্যন্ত বিদীর্ণ করা হল, তারপর পেট যমযমের পানিতে ধৌত করা হল এবং তা হিকমত ও ঈমানে পরিপূর্ণ করে দেয়া হল। পরে আমার কাছে একটি সাদা চতুষ্পদ জন্তু আনা হল, যা খচর থেকে ছোট এবং গাধা থেকে বড়। অর্থাৎ 'বোরাক'। অতঃপর (তাতে আরোহণ করে) আমি জিবরাঈল (ﷺ)সহ চলতে লাগলাম এবং পৃথিবীর নিকটবর্তী আসমানে গিয়ে পৌছলাম। জিজ্ঞেস করা হলো, 'কে' ? জবাব দেয়া হল, আমি জিবরাঈল (ﷺ)। প্রশ্ন হলো তোমার সাথে কে? উত্তর দেয়া হল, 'মুহাম্মাদ' (ﷺ)। জানতে চাওয়া হল তাঁকে কি আনতে পাঠানো

হয়েছিলো? জিবরাইল (عليه السلام) জানালেন, হ্যাঁ। বলা হল, মারাহাবা, আপনার শুভাগমন কতই না উত্তম। এরপর আমি আদমের (عليه السلام) কাছে গেলাম। তাঁকে সালাম দিলাম। তিনি বললেন, মারহাবা, হে পুত্র এবং নবী।

অতঃপর আমরা দ্বিতীয় আসমানে গেলাম। জিজ্ঞেস করা হল, কে? জানালেন, আমি জিবরাঈল (عليه السلام)। প্রশ্ন করা হল, তোমার সাথে কে? বললেন, 'মুহাম্মাদ' (ﷺ)। প্রশ্ন হল, তাঁকে কি ডাকা হয়েছে? বললেন, হ্যাঁ। বলা হল, মারহাবা, আপনার শুভাগমন কতই না উত্তম। তারপর ঈসা ও ইয়াহ্ইয়া (عليه السلام)-এর কাছে পৌঁছলাম। তাঁরা বললেন, মারহাবা, হে ভাই ও নবী।

এরপর আমরা তৃতীয় আসমানে গেলাম। জিজ্ঞেস করা হল, কে? উত্তর দেয়া হল, জিবরাঈল (عليه السلام)। প্রশ্ন হল, সাথে কে? জবাব হল, 'মুহাম্মাদ' (ﷺ)। জানতে চাওয়া হল, তাঁকে কি আনতে পাঠান হয়েছিল? জানান হল, হ্যাঁ। বলা হল, মারহাবা, আপনার আগমন কতই না আনন্দের ! অতপর আমি ইউসুফ (عليه السلام)-এর কাছে গেলাম এবং তাঁকে সালাম করলাম। তিনি বললেন, মারহাবা, হে ভাই ও নবী।

এবার আমরা চতুর্থ আসমানে গেলাম। প্রশ্ন হল, কে ? বললেন, আমি জিবরাঈল (عليه السلام)। প্রশ্ন হল, সাথে কে? বলা হল, 'মুহাম্মাদ' (ﷺ)। জিজ্ঞেস করা হল, তাঁকে কি ডাকা হয়েছে? জানান হল, হ্যাঁ। বলা হল, মারহাবা আপনার আগমন কতই না উত্তম! এরপর ইদরীস (عليه السلام)-এর খেদমতে এসে তাঁকে সালাম দিলাম। তিনি বললেন, মারহাবা, হে ভাই ও নবী।

তারপর আমরা পঞ্চম আসমানে পৌঁছলাম। (অনুরূপ) প্রশ্নোত্তর হলো। (যেমন) প্রশ্ন কে? উত্তর জিবরাঈল (عليه السلام)। প্রশ্ন সাথে কে? উত্তর 'মুহাম্মাদ' (ﷺ)। প্রশ্ন তাকে কি ডাকা হয়েছে? উত্তর- হ্যাঁ। বলা হল- মারহাবা, আপনার শুভাগমন কতইনা আনন্দের! পরে আমরা হারুন (عليه السلام)-এর খেদমতে হাযির হলাম, তাঁকে সালাম করলাম। তিনি বললেন, মারহাবা হে ভাই ও নবী।

অতঃপর আমরা ষষ্ঠ আসমানে গিয়ে পৌঁছলাম। (এখানেও অনুরূপ প্রশ্নোত্তর হল) প্রশ্ন- কে ? উত্তর- জিবরাঈল (عليه السلام)। প্রশ্ন-সাথে কে? উত্তর 'মুহাম্মাদ' (ﷺ)। প্রশ্ন-ডাকা হয়েছে কি? উত্তর-হ্যাঁ। বলা হল- মারহাবা, তাঁর শুভাগমন কতই না উত্তম! তারপর আমি মূসা (عليه السلام)-এর কাছে গেলাম এবং তাঁকে সালাম করলাম। তিনি বললেন, মারহাবা হে ভাই ও নবী। যখন আমরা এগিয়ে চললাম, তখন মূসা (عليه السلام) কেঁদে দিলেন। জিজ্ঞেস করা হলো, কেন কাঁদছেন? বললেন, হে আল্লাহ্! এই ছেলে আমার পরে নবী হয়েছে, তার উম্মত আমার উম্মতের চেয়ে অধিক পরিমাণে জান্নাতে যাবে।

এরপর সপ্তম আসমানে উঠলাম। (এখানেও সেই প্রশ্নোত্তর) প্রশ্ন- কে? উত্তর-জিবরাঈল (عليه السلام)। প্রশ্ন- তোমার সাথে কে? উত্তর-'মুহাম্মাদ' (ﷺ)। প্রশ্ন তাঁকে কি ডাকা হয়েছে? জবাব-হ্যাঁ। বলা হল-মারহাবা, তাঁর শুভাগমন কতই না উত্তম! অতপর আমি ইবরাহীম-এর খেদমতে হাযির হয়ে তাঁকে সালাম করলাম। তিনি বললেন, মারহাবা, হে সন্তান ও নবী। তারপর আমার সামনে বায়তুল মা'মূর উন্মুক্ত করে আনা হল। আমি এটি সম্পর্কে জিবরাঈল (عليه السلام)-কে জিজ্ঞেস করলাম। তিনি বললেন, এটি বায়তুল মা'মূর। প্রতিদিন এখানে সত্তর হাজার ফেরেশ্তা নামায আদায় করে। এই সত্তর হাজার একবার এখান থেকে বের হলে দ্বিতীয়বার (কিয়ামত পর্যন্ত) তারা এখানে আর ফিরে আসবে না। তারপর আমাকে 'সিদরাতুল মুনতাহা' দেখান হল। দেখলাম, এর ফল (কুল) হাজারা নামক স্থানের মটকির সমান বিরাট ও পুরু। তার পাতাগুলো যেমন এক একটি হাতির কান। এর মূলদেশে চারটি ঝর্ণাধারা প্রবাহমান। এর দু'টি অভ্যন্তরে আর দু'টি বাইরে। আমি জিবরাঈল (عليه السلام)-কে জিজ্ঞেস করলাম, তিনি বললেন, অভ্যন্তরের দু'টি জান্নাতে অবস্থিত। আর বাইরের দু'টি হল (ইরাকের) ফুরাত ও (মিসরের) নীল নদ। অতঃপর আমার ওপর পঞ্চাশ ওয়াক্ত নামায ফরয করা হয়। এরপর আমি ফিরে চলি এবং মূসা (عليه السلام)-এর কাছে এসে পৌঁছি। তিনি জিজ্ঞেস করলেন, কি করে আসলেন। বললাম, আমার ওপর পঞ্চাশ ওয়াক্ত নামায ফরয করা হয়েছে। তিনি বললেন, আমি মানুষ সম্পর্কে আপনার চেয়ে অধিক জ্ঞাত আছি। আমি বনী ইসরাঈলের (মানসিক) চিকিৎসার ভীষণ চেষ্টা চালিয়েছি। আপনার উম্মত (এত নামায আদায়ে) কিছুতেই সমর্থ হবে না। আল্লাহ্র

وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى ﴿١٣﴾

১৩. নিশ্চয়ই তিনি তাকে আরেক বার দেখেছিলেন।

عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ﴿١٤﴾

১৪. সিদরাতুল মুনতাহার নিকট,

عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ﴿١٥﴾

১৫. যার নিকট অবস্থিত জান্নাতুল মা'ওয়া।

اِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ﴿١٦﴾

১৬. তখন সিরাহ বৃক্ষটি, যার দ্বারা আচ্ছাদিত হবার তার দ্বারা আচ্ছাদিত হচ্ছিল,

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ﴿١٧﴾

১৭. তার দৃষ্টি ভ্রষ্ট হয়নি এবং দৃষ্টি সীমালঙ্ঘনও করে নি।

لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ﴿١٨﴾

১৮. অবশ্যই তিনি তাঁর প্রতি-পালকের মহান নিদর্শনাবলী দেখেছিলেন।

اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ﴿١٩﴾

১৯. তোমরা কি ভেবে দেখেছো 'লাত' ও 'উয্যা' সম্বন্ধে

وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى ﴿٢٠﴾

২০. এবং তৃতীয় আরেকটি 'মানাত' সম্বন্ধে?

اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ﴿٢١﴾

২১. তবে কি তোমাদের জন্য পুত্র তাঁর জন্য কন্যা সন্তান?

تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ﴿٢٢﴾

২২. এই প্রকার বন্টন তো অসঙ্গত।

اِنْ هِيَ اِلَّآ اَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ

২৩. এগুলো কতক নাম মাত্র, যা তোমাদের পূর্বপুরুষরা ও তোমরা রেখেছো, এর সমর্থনে আল্লাহ কোন দলীল প্রেরণ করেন নি। তারা তো

কাছে ফিরে যান এবং (তা কমানোর) আবেদন করুন। আমি ফিরে গেলাম এবং আবেদন করলাম। সুতরাং তিনি নামায চল্লিশ ওয়াক্ত করে দিলেন। পুনরায় অনুরূপ ঘটলে ত্রিশে নেমে আসল। আবার সেরূপ হলে আল্লাহ্ বিশ ওয়াক্ত করে দিলেন। আবারও তদ্রূপই ঘটল। আল্লাহ্ দশে নামিয়ে দিলেন। তারপর মূসা (عليه السلام)-এর কাছে আসলাম। তিনি পূর্বের মতোই বললেন, এবার আল্লাহ্ পাঁচ ওয়াক্ত নামায (ফরয) করলেন। অতঃপর মূসা (عليه السلام)-এর কাছে আসলাম। কি করে এসেছি তা তিনি জানতে চাইলেন। বললাম, আল্লাহ্ নামায পাঁচ ওয়াক্ত করে দিয়েছেন। এবারও তিনি তা-ই বললেন। বললাম, আমি তা (সানন্দে) মেনে নিয়েছি। তখন (আল্লাহ্র পক্ষ থেকে) ডাক আসল, "আমি আমার ফরয জারি করে দিয়েছি এবং আমার বান্দাহদের থেকে লাঘব করে দিয়েছি। আমি প্রতিটি নেকীর দশ গুণ সওয়াব দেব। (বুখারী, হাদীস নং ৩২০৭)

وَمَا تَهْوَى الْأَنْفُسُ ۚ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنْ رَبِّهِمُ الْهُدَىٰ ﴿٢٣﴾

শুধু অনুমান এবং তাদের প্রবৃত্তি যা চায় তারই অনুসরণ করে, অথচ তাদের নিকট তাদের প্রতিপালকের হিদায়েত এসেছে।

أَمْ لِلْإِنْسَانِ مَا تَمَنَّىٰ ﴿٢٤﴾

২৪. মানুষ যা চায় তাই কি সে পায়?

فَلِلَّهِ الْآخِرَةُ وَالْأُولَىٰ ﴿٢٥﴾

২৫. বস্তুতঃ শেষ ও প্রথম জগতের অধিপতি আল্লাহই।

وَكَمْ مِنْ مَلَكٍ فِي السَّمَاوَاتِ لَا تُغْنِي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مِنْ بَعْدِ أَنْ يَأْذَنَ اللَّهُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَرْضَىٰ ﴿٢٦﴾

২৬. আকাশসমূহে কত ফেরেশতা রয়েছে! তাদের কোন সুপারিশ কাজে আসবে না যতক্ষণ আল্লাহ যাকে ইচ্ছা এবং যার প্রতি সন্তুষ্ট তাকে অনুমতি না দেন।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ لَيُسَمُّونَ الْمَلَائِكَةَ تَسْمِيَةَ الْأُنْثَىٰ ﴿٢٧﴾

২৭. যারা আখিরাতে বিশ্বাস করে না তারাই ফেরেশতাদেরকে নারী বাচক নাম দিয়ে থাকে।

وَمَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ ۖ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ﴿٢٨﴾

২৮. অথচ এ বিষয়ে তাদের কোন জ্ঞান নেই, তারা শুধু অনুমানের অনুসরণ করে; সত্যের মুকাবিলায় অনুমানের কোন মূল্য নেই।

فَأَعْرِضْ عَنْ مَنْ تَوَلَّىٰ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿٢٩﴾

২৯. অতএব তাকে উপেক্ষা করে চল যে আমার স্মরণ হতে বিমুখ; সে তো শুধু পার্থিব জীবনই কামনা করে।

ذَٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِنَ الْعِلْمِ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدَىٰ ﴿٣٠﴾

৩০. তাদের জ্ঞানের দৌড় এই পর্যন্ত। তোমার প্রতিপালকই ভাল জানেন কে তাঁর পথ হতে বিচ্যুত, তিনিই ভাল জানেন কে হেদায়েত প্রাপ্ত।

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ أَسَاءُوا بِمَا عَمِلُوا وَيَجْزِيَ الَّذِينَ أَحْسَنُوا بِالْحُسْنَىٰ ﴿٣١﴾

৩১. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে তা আল্লাহরই। যারা মন্দ আমল করে তাদেরকে তিনি দেন মন্দ ফল এবং যারা সৎ আমল করে তাদেরকে দেন উত্তম প্রতিদান,

اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ﴿٣٢﴾

৩২. যারা বিরত থাকে গুরুতর পাপ ও অশ্লীল কর্ম হতে, ছোট খাট অপরাধ করে। তোমার প্রতি-পালকের ক্ষমা অপরিসীম; তিনি তোমাদের সম্পর্কে সম্যক অবগত— যখন তিনি তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছিলেন মাটি হতে এবং এক সময় তোমরা মাতৃগর্ভে ভ্রূণরূপে ছিলে। অতএব তোমরা নিজেদের সাফাই গেয়ো না, তিনিই ভালো জানেন মুত্তাকী কে।

اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ تَوَلّٰى ﴿٣٣﴾

৩৩. তুমি কি দেখেছো সে ব্যক্তিকে যে মুখ ফিরিয়ে নেয়;

وَاَعْطٰى قَلِيْلًا وَّاَكْدٰى ﴿٣٤﴾

৩৪. এবং সামান্য দান করেই ক্ষান্ত হয়ে যায়?

اَعِنْدَهٗ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى ﴿٣٥﴾

৩৫. তার নিকটে কি গায়েবের জ্ঞান আছে যে, সে সব কিছু দেখবে?

اَمْ لَمْ يُنَبَّاْ بِمَا فِيْ صُحُفِ مُوْسٰى ﴿٣٦﴾

৩৬. তাকে কি অবগত করা হয়নি যা মূসা (عليه السلام) -এর কিতাবে আছে,

وَاِبْرٰهِيْمَ الَّذِيْ وَفّٰٓى ﴿٣٧﴾

৩৭. এবং ইবরাহীম (عليه السلام)-এর কিতাবে, যিনি পূর্ণ করেছিলেন (স্বীয়) অঙ্গীকার?

اَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ﴿٣٨﴾

৩৮. তা এই যে, অবশ্যই কোন বহনকারী অপরের বোঝা বহন করবে না,

وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ﴿٣٩﴾

৩৯. আর মানুষ তাই পায় যা সে চেষ্টা করে,

وَاَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى ﴿٤٠﴾

৪০. আর তার কর্ম অচিরেই দেখানো হবে—

ثُمَّ يُجْزٰىهُ الْجَزَآءَ الْاَوْفٰى ﴿٤١﴾

৪১. অতঃপর তাকে দেয়া হবে পূর্ণ প্রতিদান।

وَاَنَّ اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ﴿٤٢﴾

৪২. আর সবকিছুর সমাপ্তি তো তোমার প্রতিপালকের নিকট।

وَاَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَاَبْكٰى ﴿٤٣﴾

৪৩. আর তিনিই হাসান, তিনিই কাঁদান,

وَاَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ وَاَحْيَا ﴿٤٤﴾

৪৪. এবং তিনিই মারেন, তিনিই বাঁচান,

وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿٤٥﴾

৪৫. আর তিনিই সৃষ্টি করেন জোড়ায় জোড়ায় পুরুষ ও নারী,

مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى ﴿٤٦﴾

৪৬. শুক্র বিন্দু হতে যখন তা নিক্ষেপ করা হয়,

وَاَنَّ عَلَيْهِ النَّشْاَةَ الْاُخْرٰى ﴿٤٧﴾

৪৭. আর পুনরায় জীবিত করার দায়িত্বও তাঁরই,

وَاَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى وَاَقْنٰى ﴿٤٨﴾

৪৮. আর তিনিই ধনী ও সম্পদশালী করেন ও সম্পদ দান করেন,

وَاَنَّهٗ هُوَ رَبُّ الشِّعْرٰى ﴿٤٩﴾

৪৯. আর তিনি শি'রা নক্ষত্রের মালিক।

وَاَنَّهٗۤ اَهْلَكَ عَادَاۨ الْاُوْلٰى ﴿٥٠﴾

৫০. এবং তিনিই প্রথম আ'দ সম্প্রদায়কে ধ্বংস করেছিলেন,

وَثَمُوْدَاۡ فَمَاۤ اَبْقٰى ﴿٥١﴾

৫১. এবং সামূদ সম্প্রদায়কেও– তিনি বাকী রাখেননি–

وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا هُمْ اَظْلَمَ وَاَطْغٰى ﴿٥٢﴾

৫২. আর এদের পূর্বে নূহ (عليه السلام)-এর সম্প্রদায়কেও তারা ছিল অতিশয় যালিম ও অবাধ্য।

وَالْمُؤْتَفِكَةَ اَهْوٰى ﴿٥٣﴾

৫৩. উৎপাটিত আবাস ভূমিকে উল্টিয়ে নিক্ষেপ করেছিলেন,

فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ﴿٥٤﴾

৫৪. ওকে আচ্ছন্ন করলো কি সর্বগ্রাসী আযাব!

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى ﴿٥٥﴾

৫৫. অতএব তুমি তোমার প্রতিপালকের কোন অনুগ্রহ সম্পর্কে সন্দেহ পোষণ করবে?

هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى ﴿٥٦﴾

৫৬. অতীতের সতর্ককারীদের ন্যায় এই নবী (ﷺ)-ও এক সতর্ককারী;

৫৭. কিয়ামত আসন্ন,

اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ ۝٥٧

৫৮. আল্লাহ্ ছাড়া কেউই এটা ব্যক্ত করতে সক্ষম নয়।

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ۝٥٨

৫৯. তোমরা কি এই কথায় (কুরআনে) বিস্ময়বোধ করছো?

اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ ۝٥٩

৬০. হাসছো অথচ কাঁদছো না?

وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ ۝٦٠

৬১. তোমরা তো উদাসীন,

وَاَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ ۝٦١

৬২. অতএব তোমরা আল্লাহকে সিজদা কর এবং তাঁর ইবাদত কর।[১]

فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ۝٦٢ السجدة

সূরাঃ কামার, মাক্কী

سُوْرَةُ الْقَمَرِ مَكِّيَّةٌ

(আয়াতঃ ৫৫, রুকূ'ঃ ৩)

اٰيَاتُهَا ٥٥ رُكُوْعَاتُهَا ٣

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. কিয়ামত আসন্ন, চন্দ্র ফেটে গেছে,

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ۝١

২. তারা কোন নিদর্শন দেখলে মুখ ফিরিয়ে নেয় এবং বলেঃ এটা তো পূর্ব হতে চলে আসা বড় যাদু।

وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ۝٢

৩. তারা মিথ্যারোপ করে এবং নিজেদের প্রবৃত্তির অনুসরণ করে, আর প্রত্যেকটি ব্যাপার নির্ধারিত লক্ষ্যে পৌছবে।

وَكَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ وَكُلُّ اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ۝٣

৪. তাদের নিকট এসেছে সংবাদ, যাতে আছে সাবধান বাণী।

وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْۢبَآءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ ۝٤

১। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, মক্কাবাসী নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর নিকট একটি নিদর্শন দেখানোর দাবী করলো, তখন তিনি তাদেরকে (আল্লাহ্র নির্দেশে) চাঁদ দ্বিখন্ডিত হওয়ার নিদর্শন দেখালেন। (বুখারী, হাদীস নং ৪৮৬৭)

حِكْمَةٌۢ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ۝٥

৫. এটা পরিপূর্ণ জ্ঞান, তবে সতর্ক বাণীসমূহ তাদের উপর কার্যকর হয় নি।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَىٰ شَيْءٍ نُّكُرٍ ۝٦

৬. অতএব তুমি তাদেরকে উপেক্ষা কর। যেদিন আহ্বানকারী (ইসরাফীল) আহ্বান করবে এক ভয়াবহ বস্তুর দিকে,

خُشَّعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنتَشِرٌ ۝٧

৭. অপমানে শঙ্কিত নয়নে সেদিন তারা কবরসমূহ হতে বের হবে বিক্ষিপ্ত পঙ্গপালের ন্যায়,

مُّهْطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ ۖ يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ۝٨

৮. তারা আহ্বানকারীর দিকে ছুটে আসবে। কাফিররা বলবেঃ কঠিন এই দিন।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ وَازْدُجِرَ ۝٩

৯. এদের পূর্বে নূহ (عليه السلام)-এর জাতিও মিথ্যারোপ করেছিল– তারা আমার বান্দার প্রতি মিথ্যারোপ করেছিল এবং বলেছিলঃ এতো এক পাগল। আর তাকে ধমকিয়ে ছিল।

فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانتَصِرْ ۝١٠

১০. তখন সে তার প্রতিপালককে আহ্বান করে বলেছিলঃ আমি তো পরাজিত, অতএব, তুমি আমাকে সাহায্য কর।

فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُّنْهَمِرٍ ۝١١

১১. তখন আমি আকাশের দুয়ার প্রবল বৃষ্টিসহ উন্মুক্ত করে দেই,

وَفَجَّرْنَا الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَىٰ أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝١٢

১২. এবং ভূমি হতে উৎসারিত করলাম ঝর্ণাধারা; অতঃপর সকল পানি মিলিত হলো এক পরিকল্পনা অনুসারে।

وَحَمَلْنَاهُ عَلَىٰ ذَاتِ أَلْوَاحٍ وَدُسُرٍ ۝١٣

১৩. তখন নূহ (عليه السلام)-কে আরোহণ করালাম কাঠ ও পেরেক নির্মিত এক নৌযানে,

تَجْرِيْ بِاَعْيُنِنَا جَزَآءً لِّمَنْ كَانَ كُفِرَ ﴿١٤﴾

১৪. যা আমার চোখের সামনে চললো, এটা তার পরিবর্তে যাকে অস্বীকার করা হয়েছিল।

وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَآ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿١٥﴾

১৫. রেখে দিয়েছি আমি এটাকে নিদর্শনরূপে; অতএব উপদেশ গ্রহণকারী কেউ আছে কি?

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿١٦﴾

১৬. সুতরাং (বলঃ) কেমন ছিল আমার আযাব ও সতর্কবাণী!

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿١٧﴾

১৭. কুরআন আমি সহজ করে দিয়েছি উপদেশ গ্রহণের জন্যে, সুতরাং উপদেশ গ্রহণকারী কেউ আছে কি?

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿١٨﴾

১৮. আ'দ সম্প্রদায় মিথ্যা মনে করেছিল, ফলে কি কঠোর হয়েছিল আমার আযাব ও সতর্কবাণী!

اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْ يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ﴿١٩﴾

১৯. আমি তাদের উপর প্রেরণ করেছিলাম ক্রমাগত প্রবাহমান প্রচন্ডগতি সম্পন্ন বায়ু, দুর্ভোগের দিনে,

تَنْزِعُ النَّاسَ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ﴿٢٠﴾

২০. মানুষকে ওটা উৎখাত করেছিল উৎপাটিত খেজুর কান্ডের ন্যায়।

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٢١﴾

২১. কত কঠোর ছিল আমার আযাব ও সতর্কবাণী!

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٢٢﴾

২২. আমি কুরআনকে সহজ করে দিয়েছি উপদেশ গ্রহণের জন্যে; অতএব উপদেশ গ্রহণকারী কেউ আছে কি?

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِالنُّذُرِ ﴿٢٣﴾

২৩. সামূদ সম্প্রদায় সতর্ক-বাণীসমূহকে মিথ্যা মনে করেছিল,

فَقَالُوْٓا اَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗٓ اِنَّآ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٢٤﴾

২৪. তারা বলেছিলঃ আমরা কি আমাদেরই এক ব্যক্তির অনুসরণ করবো? তবে তো আমরা বিপথগামী এবং বিবেকহীনরূপে গণ্য হবো।

ءَاُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْۢ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ اَشِرٌ ﴿٢٥﴾

২৫. আমাদের মধ্যে কি ওরই প্রতি ওহী হয়েছে? বরং সে তো একজন মিথ্যাবাদী, দাম্ভিক।

سَيَعْلَمُوْنَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْاَشِرُ ﴿٢٦﴾

২৬. আগামীকাল (কিয়ামতের দিন) তারা জানবে, কে মিথ্যাবাদী, দাম্ভিক।

اِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ﴿٢٧﴾

২৭. আমি তাদের পরীক্ষার জন্যে পাঠিয়েছি এক উষ্ট্রী; অতএব তুমি (হে সালেহ!) তাদের আচরণ লক্ষ্য কর এবং ধৈর্যশীল হও।

وَنَبِّئْهُمْ اَنَّ الْمَآءَ قِسْمَةٌۢ بَيْنَهُمْ ۚ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ﴿٢٨﴾

২৮. আর তুমি তাদেরকে জানিয়ে দাও যে, তাদের মধ্যে পানি বন্টন নির্ধারিত এবং পানির অংশের জন্যে প্রত্যেকে হাজির হবে পালাক্রমে।

فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطٰى فَعَقَرَ ﴿٢٩﴾

২৯. অতঃপর তারা তাদের এক সঙ্গীকে আহ্বান করলো, সে ওটাকে (উষ্ট্রীকে) ধরে হত্যা করলো।

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٣٠﴾

৩০. কি কঠোর ছিল আমার আযাব ও সতর্কবাণী!

اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَكَانُوْا كَهَشِيْمِ الْمُحْتَظِرِ ﴿٣١﴾

৩১. আমি তাদের উপর ছেড়েছি এক বিকট আওয়াজ; ফলে তারা হয়ে গেল খোয়াড় মালিকদের বিখন্ডিত ভূষির ন্যায়।

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٣٢﴾

৩২. আমি কুরআন সহজ করে দিয়েছি উপদেশ গ্রহণের জন্যে; অতএব উপদেশ গ্রহণকারী কেউ আছে কি?

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطٍۭ بِالنُّذُرِ ﴿٣٣﴾

৩৩. লূত সম্প্রদায় মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছিল সতর্ককারীদেরকে,

اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ ؕ

৩৪. আমি তাদের উপর প্রেরণ করেছিলাম প্রস্তর বর্ষণকারী প্রবল বাতাস; কিন্তু লূত পরিবারের উপর

نَجَّيْنٰهُمْ بِسَحَرٍ ﴿٣٤﴾

নয়; তাদেরকে আমি উদ্ধার করেছিলাম রাত্রির শেষাংশে;

نِّعْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا ۚ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ شَكَرَ ﴿٣٥﴾

৩৫. এটা আমার বিশেষ অনুগ্রহ; যারা কৃতজ্ঞ আমি এভাবেই তাদেরকে পুরস্কৃত করে থাকি।

وَلَقَدْ اَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ﴿٣٦﴾

৩৬. তিনি [লূত (عليه السلام)] তাদেরকে সতর্ক করেছিলেন আমার শক্ত পাকড়াও হতে; কিন্তু তারা সতর্কবাণী সম্বন্ধে বিতর্ক শুরু করলো।

وَلَقَدْ رَاوَدُوْهُ عَنْ ضَيْفِهٖ فَطَمَسْنَآ اَعْيُنَهُمْ فَذُوْقُوْا عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٣٧﴾

৩৭. তারা লূত (عليه السلام)-এর নিকট হতে তার মেহমানদেরকে দাবী করলো, তখন আমি তাদের চোখের দৃষ্টিশক্তি লোপ করে দিলাম (এবং বললামঃ) আস্বাদন কর আমার আযাব এবং সতর্কবাণীর পরিণাম!

وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣٨﴾

৩৮. প্রত্যুষে বিরামহীন আযাব তাদেরকে আঘাত করলো।

فَذُوْقُوْا عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٣٩﴾

৩৯. অতএব আস্বাদন কর আমার আযাব এবং সতর্কবাণীর পরিণাম!

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٤٠﴾

৪০. আমি কুরআনকে সহজ করে দিয়েছি উপদেশ গ্রহণের জন্যে; অতএব উপদেশ গ্রহণকারী কেউ আছে কি?

وَلَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ﴿٤١﴾

৪১. ফিরআ'উন সম্প্রদায়ের নিকটও এসেছিল সতর্কবাণী,

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٤٢﴾

৪২. কিন্তু তারা আমার সকল নিদর্শন মিথ্যা প্রতিপন্ন করলো, অতঃপর পরাক্রমশালী ও সর্বশক্তিমান রূপে আমি তাদেরকে কঠিন শাস্তি দিলাম।

اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِي الزُّبُرِ ﴿٤٣﴾

৪৩. তোমাদের মধ্যকার কাফের কি তাদের (পূর্বের কাফেরগণ) অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ? না কি তোমাদের মুক্তি সনদ রয়েছে পূর্ববর্তী কিতাবে?

৪৪. তারা কি বলেঃ যে, আমরা এক বিজয়ী দল?

اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ﴿٤٤﴾

৪৫. এই দল শীঘ্রই পরাজিত হবে এবং পৃষ্ঠ প্রদর্শন করবে,

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ﴿٤٥﴾

৪৬. অধিকন্তু কিয়ামত তাদের আযাবের নির্ধারিতকাল এবং কিয়ামত হবে কঠিনতর ও তিক্ততর।

بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ ﴿٤٦﴾

৪৭. নিশ্চয়ই অপরাধীরা বিভ্রান্তি ও আযাবে নিপতিত

اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٤٧﴾

৪৮. যেদিন তাদেরকে উপুড় করে টেনে নিয়ে যাওয়া হবে জাহান্নামের দিকে; (বলা হবেঃ) জাহান্নামের যন্ত্রণা আস্বাদন কর।

يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ فِي النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ط ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ﴿٤٨﴾

৪৯. আমি প্রত্যেক কিছু সৃষ্টি করেছি নির্ধারিত পরিমাপে।

اِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾

৫০. আমার আদেশ তো একটি কথায় নিষ্পন্ন, চক্ষুর পলকের মত।

وَمَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ﴿٥٠﴾

৫১. আমি ধ্বংস করেছি তোমাদের মত দলগুলোকে, অতএব তা হতে উপদেশ গ্রহণকারী কেউ আছে কি?

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَآ اَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٥١﴾

৫২. তাদের সমস্ত কার্যকলাপ আছে আমল নামায় লিখিত আছে,

وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوْهُ فِي الزُّبُرِ ﴿٥٢﴾

৫৩. ছোট ও বড় সবকিছুই লিপিবদ্ধ;

وَكُلُّ صَغِيْرٍ وَّكَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿٥٣﴾

৫৪. মুত্তাকীরা থাকবে জান্নাতে ও নহরসমূহে।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَهَرٍ ﴿٥٤﴾

৫৫. প্রকৃত সম্মানের আসনে, সার্বভৌম ক্ষমতার অধিকারী আল্লাহর সান্নিধ্যে।

فِيْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٥٥﴾

সূরাঃ রহমান, মাদানী

(আয়াতঃ ৭৮, রুকূ'ঃ ৩)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُوْرَةُ الرَّحْمٰنِ مَدَنِيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٧٨ رُكُوْعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. পরম দয়াময় (আল্লাহ),

اَلرَّحْمٰنُ ۙ﴿١﴾

২. তিনিই শিক্ষা দিয়েছেন কুরআন,

عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ؕ﴿٢﴾

৩. তিনিই সৃষ্টি করেছেন মানুষ,

خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۙ﴿٣﴾

৪. তিনি তাকে শিখিয়েছেন ভাব প্রকাশ করতে,

عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ﴿٤﴾

৫. সূর্য ও চন্দ্র নির্ধারিত হিসাবের অধীনে,

اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۙ﴿٥﴾

৬. তারকা ও বৃক্ষাদি সেজদা করে,

وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ﴿٦﴾

৭. আকাশকে সমুন্নত করেছেন এবং স্থাপন ভারসাম্য করেছেন,

وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ۙ﴿٧﴾

৮. যাতে তোমরা পরিমাপে সীমালঙ্ঘন না কর।

اَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيْزَانِ ﴿٨﴾

৯. ওজনের ন্যায্য মান প্রতিষ্ঠিত কর এবং ওজনে কম দিয়ো না।

وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ﴿٩﴾

১০. তিনি পৃথিবীকে বিছিয়ে দিয়েছেন সৃষ্টজীবের জন্যে;

وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ۙ﴿١٠﴾

১১. এতে রয়েছে ফলমূল এবং খেজুর বৃক্ষ যার ফল আবরণযুক্ত,

فِيْهَا فَاكِهَةٌ ۙ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ۖ﴿١١﴾

১২. এবং খোসাবিশিষ্ট দানা ও সুগন্ধী ফুল।

وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ۚ﴿١٢﴾

১৩. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٣﴾

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ﴿١٤﴾

১৪. মানুষকে (আদমকে) তিনি সৃষ্টি করেছেন পোড়া মাটির মত শুকনা মাটি হতে,

وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ﴿١٥﴾

১৫. আর জ্বিনকে সৃষ্টি করেছেন অগ্নি শিখা হতে,

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٦﴾

১৬. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ﴿١٧﴾

১৭. তিনিই দুই উদয়াচল ও দুই আস্তাচলের নিয়ন্ত্রণকারী।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٨﴾

১৮. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ﴿١٩﴾

১৯. তিনি দুই সমুদ্রকে প্রবাহিত করেন যারা পরস্পর মিলিত হয়,

بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ﴿٢٠﴾

২০. এ দু'য়ের মধ্যে রয়েছে এক অন্তরাল যা ওরা অতিক্রম করতে পারে না।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢١﴾

২১. অতএব তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢٢﴾

২২. উভয় সমুদ্র হতে উৎপন্ন হয় মুক্তা ও প্রবাল।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٣﴾

২৩. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ অনুগ্রহ অস্বীকার করবে?

وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَئٰتُ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿٢٤﴾

২৪. সমুদ্রে বিচরণশীল পর্বত কোন জাহাজসমূহ তাঁরই নিয়ন্ত্রণাধীন;

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٥﴾

২৫. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴿٢٦﴾

২৬. ভূ-পৃষ্ঠে যা কিছু আছে সমস্তই ধ্বংসশীল,

وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿٢٧﴾

২৭. এবং অবশিষ্ট থাকবে শুধু তোমার প্রতিপালকের মুখমন্ডল (সত্তা), যা মহিমাময়, মহানুভব;

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٨﴾

২৮. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

يَسْـَٔلُهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِىْ شَاْنٍ ﴿٢٩﴾

২৯. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা আছে সবাই তাঁর নিকট প্রতিদিন প্রার্থনা করে, তিনি সর্বদা মহান কার্যে রত।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٠﴾

৩০. অতএব তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ অনুগ্রহ অস্বীকার করবে?

سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ﴿٣١﴾

৩১. হে মানুষ ও জ্বিন! আমি শীঘ্রই তোমাদের প্রতি (হিসাব-নিকাশের জন্য) মনোনিবেশ করবো,

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٢﴾

৩২. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ؕ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ﴿٣٣﴾

৩৩. হে জ্বিন ও মানুষ জাতি! আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর সীমা হতে যদি তোমরা বের হতে পার, তবে বের হয়ে যাও; কিন্তু তোমরা তা পারবে না, শক্তি ব্যতিরেকে (আর সে শক্তি তোমাদের নেই)।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٤﴾

৩৪. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ﴿٣٥﴾

৩৫. তোমাদের উভয়ের প্রতি প্রেরিত হবে অগ্নিশিখা ও ধোঁয়া, তোমরা তা প্রতিরোধ করতে পারবে না।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٦﴾

৩৬. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فَإِذَا انْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾

৩৭. যেদিন আকাশ বিদীর্ণ হবে সেদিন ওটা লাল চামড়ার মত রক্তবর্ণ ধারণ করবে;

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٨﴾

৩৮. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فَيَوْمَئِذٍ لَا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسٌ وَلَا جَانٌّ ﴿٣٩﴾

৩৯. সেদিন মানুষ ও জ্বিনকে তার অপরাধ সম্বন্ধে জিজ্ঞেস করা হবে না?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٠﴾

৪০. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

يُعْرَفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمَاهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ ﴿٤١﴾

৪১. অপরাধীদেরকে যাবে তাদের চেহারার আলামত হতে; তাদেরকে পাকড়াও করা হবে কপাল (চুলের ঝুঁটি) ও পা ধরে।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٢﴾

৪২. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿٤٣﴾

৪৩. এটা সেই জাহান্নাম, যা অপরাধীরা মিথ্যা প্রতিপন্ন করতো,

يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ آنٍ ﴿٤٤﴾

৪৪. তারা জাহান্নামের অগ্নি ও ফুটন্ত পানির মধ্যে ছুটাছুটি করবে।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٥﴾

৪৫. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَانِ ﴿٤٦﴾

৪৬. আর যে ব্যক্তি আল্লাহ্‌র সামনে উপস্থিত হওয়ার ভয় রাখে, তার জন্যে রয়েছে দু'টি বাগান;

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٧﴾

৪৭. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

ذَوَاتَآ اَفْنَانٍ ﴿٤٨﴾

৪৮. উভয়টি বহু শাখাপল্লব বিশিষ্ট বৃক্ষে ভরপুর;

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٩﴾

৪৯. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فِيْهِمَا عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ﴿٥٠﴾

৫০. উভয়টিতে রয়েছে দু'টি ঝর্ণাধারা সদা প্রবহমান;

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥١﴾

৫১. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ﴿٥٢﴾

৫২. উভয় বাগানে রয়েছে প্রত্যেক ফল দুই প্রকার;

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٣﴾

৫৩. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍۭ بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ؕ وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿٥٤﴾

৫৪. সেখানে তারা হেলান দিয়ে বসবে পুরু রেশমের আস্তর বিশিষ্ট বিছানায়, দুই বাগানের ফল হবে তাদের নিকটবর্তী।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٥﴾

৫৫. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٥٦﴾

৫৬. সে সবের মাঝে রয়েছে বহু আনত নয়না যাদেরকে তাদের পূর্বে কোন মানুষ অথবা জ্বিন স্পর্শ করেনি।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٧﴾

৫৭. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾

৫৮. তারা যেন হীরা ও মতি;

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٩﴾

৫৯. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

هَلْ جَزَآءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ ﴿٦٠﴾

৬০. উত্তম কাজের পুরস্কার উত্তম (জান্নাত) ব্যতীত আর কি হতে পারে?

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٦١﴾

৬১. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

وَمِنْ دُونِهِمَا جَنَّتَانِ ﴿٦٢﴾

৬২. এই বাগানদ্বয় ব্যতীত আরো দু'টি বাগান রয়েছে;

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٦٣﴾

৬৩. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

مُدْهَامَّتَانِ ﴿٦٤﴾

৬৪. গাড় সবুজ এ বাগান দুটি;

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٦٥﴾

৬৫. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فِيهِمَا عَيْنَانِ نَضَّاخَتَانِ ﴿٦٦﴾

৬৬. উভয় বাগানে আছে উৎক্ষিপ্তমান দুই ঝর্ণাধারা;

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٦٧﴾

৬৭. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فِيهِمَا فَاكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾

৬৮. সেখানে রয়েছে ফলমূল খেজুর ও ডালিম;

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٦٩﴾

৬৯. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ ﴿٧٠﴾

৭০. সে সকলের মাঝে রয়েছে উত্তম চরিত্রের সুন্দরীগণ;

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٧١﴾

৭১. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

حُورٌ مَقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾

৭২. তাঁবুতে থাকবে সুরক্ষিত হূর;

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٣﴾

৭৩. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٧٤﴾

৭৪. তাদের পূর্বে কোন মানুষ অথবা জ্বিন তাদের স্পর্শ করেনি।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٥﴾

৭৫. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿٧٦﴾

৭৬. তারা হেলান দিয়ে বসবে এমন সবুজ আসনে যা অতি বিরল ও অতি উত্তম।

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٧﴾

৭৭. সুতরাং তোমরা উভয়ে তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামত অস্বীকার করবে?

تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِى الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿٧٨﴾

৭৮. কত মহান তোমার প্রতি-পালকের নাম যিনি মহিমাময় ও মহানুভব!

سُوْرَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ

সূরাঃ ওয়াকি'আহ্, মাক্কী

اٰيَاتُهَا ٩٦ رُكُوْعَاتُهَا ٣

(আয়াতঃ ৯৬, রুকূ'ঃ ৩)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١﴾

১. যখন কিয়ামত সংঘটিত হবে,

لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ﴿٢﴾

২. (তখন) এর সংঘটন অস্বীকার করার কেউ থাকবে না।

خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ﴿٣﴾

৩. এটা কাউকেও করবে নীচ, কাউকেও করবে সমুন্নত;

اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا ﴿٤﴾

৪. যখন প্রবল কম্পনে পৃথিবী প্রকম্পিত হবে।

وَّ بُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۙ﴿٥﴾

৫. এবং পর্বতমালা চূর্ণ-বিচূর্ণ হয়ে যাবে,

فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْۢبَثًّا ۙ﴿٦﴾

৬. তখন ওটা উৎক্ষিপ্ত ধূলিকণায় পরিণত হবে।

وَّ كُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ؕ﴿٧﴾

৭. এবং তোমরা তিন শ্রেণীতে বিভক্ত হবে।

فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ؕ﴿٨﴾

৮. ডান হাতের দল; (যারা ডান হাতে আমলনামাপ্রাপ্ত) কত ভাগ্যবান ডান হাতের দল!

وَ اَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ؕ﴿٩﴾

৯. এবং বাম হাতের দল; (যারা বাম হাতে আমলনামা প্রাপ্ত) কত হতভাগ্য বাম হাতের দল!

وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ۙ﴿١٠﴾

১০. আর অগ্রবর্তীগণই তো অগ্রবর্তী,

اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۚ﴿١١﴾

১১. তারাই নৈকট্য প্রাপ্ত

فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿١٢﴾

১২. (তারা) থাকবে নিয়ামতপূর্ণ জান্নাতসমূহে;

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۙ﴿١٣﴾

১৩. বহুসংখ্যক হবে পূর্ববর্তীদের মধ্য হতে;

وَ قَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ؕ﴿١٤﴾

১৪. এবং অল্প সংখ্যক হবে পরবর্তীদের মধ্য হতে,

عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ۙ﴿١٥﴾

১৫. স্বর্ণখচিত আসনসমূহে

مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ﴿١٦﴾

১৬. তারা তার উপরে হেলান দিয়ে, পরস্পর মুখোমুখি হয়ে বসবেন।

يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۙ﴿١٧﴾

১৭. তাদের সেবায় ঘোরাফেরা করবে চির কিশোররা

بِاَكْوَابٍ وَّ اَبَارِيْقَ ۙ وَ كَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۙ﴿١٨﴾

১৮. পানপাত্র, কুঁজা ও প্রস্রবণ নিঃসৃত সুরাপূর্ণ পেয়ালা নিয়ে, (এরা হাজির হবে।)

لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَ لَا يُنْزِفُوْنَ ۙ﴿١٩﴾

১৯. সেই সুরা পানে তাদের শিরপীড়া হবে না, তারা জ্ঞান হারাও হবে না–

২০. এবং তাদের পছন্দ মত ফলমূল,
وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ﴿٢٠﴾

২১. আর তাদের পছন্দ মত পাখীর গোশত নিয়ে,
وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٢١﴾

২২. আর (তাদের জন্যে থাকবে) সুন্দর চক্ষুধারী হূর,
وَحُوْرٌ عِيْنٌ ﴿٢٢﴾

২৩. সুরক্ষিত মুক্তা সদৃশ,
كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ﴿٢٣﴾

২৪. তাদের আমলের পুরস্কার স্বরূপ।
جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾

২৫. তারা শুনবে না কোন অসার অথবা পাপবাক্য,
لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ﴿٢٥﴾

২৬. 'সালাম' আর 'সালাম' বাণী ব্যতীত।
اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ﴿٢٦﴾

২৭. আর ডান হাতের দল, কত ভাগ্যবান ডান হাতের দল!
وَاَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ﴿٢٧﴾

২৮. (তারা থাকবে এক উদ্যানে,) সেখানে আছে কাঁটাবিহীন বরই গাছ,
فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ﴿٢٨﴾

২৯. কাঁদি ভরা কলা গাছ,
وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ﴿٢٩﴾

৩০. সম্প্রসারিত ছায়া,
وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ﴿٣٠﴾

৩১. সদা প্রবহমান পানি,
وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ﴿٣١﴾

৩২. ও প্রচুর ফলমূল,
وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ﴿٣٢﴾

৩৩. যা শেষ হবে না ও যা নিষিদ্ধও হবে না।
لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ ﴿٣٣﴾

৩৪. আর সমুচ্চ শয্যাসমূহ;
وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ﴿٣٤﴾

৩৫. তাদেরকে আমি সৃষ্টি করেছি নতুন রূপে
اِنَّآ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ﴿٣٥﴾

৩৬. তাদেরকে করেছি কুমারী
فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ﴿٣٦﴾

৩৭. সোহাগিনী ও সমবয়স্কা,
عُرُبًا اَتْرَابًا ﴿٣٧﴾

لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ؕ ﴿٣٨﴾

৩৮. এসব ডান হাতের লোকদের জন্যে।

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۙ ﴿٣٩﴾

৩৯. তাদের অনেকে হবে পূর্ববর্তীদের মধ্য হতে,

وَ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ؕ ﴿٤٠﴾

৪০. এবং অনেকে হবে পরবর্তীদের মধ্য হতে।

وَ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ؕ ﴿٤١﴾

৪১. আর বাম হাতের দল, কত হতভাগা বাম হাতের দল!

فِيْ سَمُوْمٍ وَّ حَمِيْمٍ ۙ ﴿٤٢﴾

৪২. তারা থাকবে লু-হাওয়ার প্রবাহ ও উত্তপ্ত পানিতে,

وَّ ظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُوْمٍ ۙ ﴿٤٣﴾

৪৩. কালো ধোঁয়ার ছায়ায়,

لَّا بَارِدٍ وَّ لَا كَرِيْمٍ ﴿٤٤﴾

৪৪. যা শীতলও নয়, আরামদায়কও নয়।

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ۚ ﴿٤٥﴾

৪৫. ইতিপূর্বে তারা তো মগ্ন ছিল ভোগ-বিলাসে।

وَ كَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ۚ ﴿٤٦﴾

৪৬. এবং তারা অবিরাম লিপ্ত ছিল ঘোরতর পাপকর্মে।

وَ كَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۙ اَئِذَا مِتْنَا وَ كُنَّا تُرَابًا وَّ عِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۙ ﴿٤٧﴾

৪৭. তারা বলতোঃ আমরা মরে গিয়ে মাটিতে মিশে যাব। আর হাড়গুলো পড়ে থাকবে তবুও কি পুনর্বার উত্থিত হব?

اَوَ اٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ﴿٤٨﴾

৪৮. এবং আমাদের পূর্বপুরুষগণও?

قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَ الْاٰخِرِيْنَ ۙ ﴿٤٩﴾

৪৯. বলঃ অবশ্যই পূর্ববর্তীগণ এবং পরবর্তীগণও

لَمَجْمُوْعُوْنَ ۙ اِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٥٠﴾

৫০. সকলকে একত্রিত করা হবে এক নির্ধারিত দিনের নির্ধারিত সময়ে;

ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ۙ ﴿٥١﴾

৫১. অতঃপর হে বিভ্রান্ত মিথ্যা প্রতিপন্নকারীরা!

لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ۙ ﴿٥٢﴾

৫২. তোমরা অবশ্যই যাক্কূম বৃক্ষ হতে আহার করবে,

فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٥٣﴾

৫৩. এবং ওটা দ্বারা তোমরা উদর পূর্ণ করবে,

فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ﴿٥٤﴾

৫৪. তারপর তোমরা পান করবে ফুটন্ত টগবগে পানি–

فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ﴿٥٥﴾

৫৫. পান করবে তৃষ্ণার্ত উটের ন্যায়।

هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٥٦﴾

৫৬. কিয়ামতের দিন এটাই হবে তাদের আপ্যায়ন।

نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ﴿٥٧﴾

৫৭. আমিই তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছি, তবে কেন তোমরা বিশ্বাস করছো না?

اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ﴿٥٨﴾

৫৮. তোমরা কি ভেবে দেখেছো তোমাদের বীর্যপাত সম্বন্ধে?

ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٥٩﴾

৫৯. ওটা কি তোমরা সৃষ্টি কর, না আমি সৃষ্টি করি?

نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٦٠﴾

৬০. আমি তোমাদের জন্যে মৃত্যু নির্ধারিত করেছি এবং আমি অক্ষম নই–

عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾

৬১. এ ব্যাপারে যে, আমি তোমাদের মত (অন্যকে) পরিবর্তন করে নিয়ে আসব এবং তৈরি করব তোমাদেরকে এমন (আকৃতিতে) যা তোমরা জান না।

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾

৬২. তোমরা তো অবগত হয়েছো প্রথম সৃষ্টি সম্বন্ধে, তবে তোমরা কেন উপদেশ গ্রহণ করো না?

اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿٦٣﴾

৬৩. তোমরা যে বীজ বপন কর সে বিষয়ে চিন্তা করেছো কি?

ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ﴿٦٤﴾

৬৪. তোমরা কি ওকে অঙ্কুরিত কর, না আমি অঙ্কুরিত করি?

لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ﴿٦٥﴾

৬৫. আমি ইচ্ছা করলে একে খড়কুটায় পরিণত করতে পারি, তখন

তোমরা হতবুদ্ধি হয়ে পড়বে,

৬৬. (বলবেঃ) আমাদের তো বরবাদ হয়েছে!

إِنَّا لَمُغْرَمُونَ ﴿٦٦﴾

৬৭. বরং আমরা বঞ্চিত।

بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿٦٧﴾

৬৮. তোমরা যে পানি পান কর সে বিষয়ে তোমরা চিন্তা করেছো কি?

أَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِى تَشْرَبُونَ ﴿٦٨﴾

৬৯. তোমরাই কি ওটা মেঘ হতে বর্ষাও, না আমি বর্ষাই?

ءَأَنتُمْ أَنزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنزِلُونَ ﴿٦٩﴾

৭০. আমি ইচ্ছা করলে ওটাকে লবণাক্ত বানাতে পারি। তবুও তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করবে না কেন?

لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنَٰهُ أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ﴿٧٠﴾

৭১. তোমরা যে আগুন জ্বালাও তা লক্ষ্য করে দেখেছো কি?

أَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِى تُورُونَ ﴿٧١﴾

৭২. তোমরাই কি ওর বৃক্ষ সৃষ্টি কর, না আমি সৃষ্টি করি?

ءَأَنتُمْ أَنشَأْتُمْ شَجَرَتَهَآ أَمْ نَحْنُ الْمُنشِـُٔونَ ﴿٧٢﴾

৭৩. আমি একে করেছি একটি নিদর্শনস্বরূপ এবং মুসাফিরদের জন্য উপকারী।

نَحْنُ جَعَلْنَٰهَا تَذْكِرَةً وَمَتَٰعًا لِّلْمُقْوِينَ ﴿٧٣﴾

৭৪. সুতরাং তুমি তোমার মহান প্রতিপালকের নামের পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা কর।

فَسَبِّحْ بِٱسْمِ رَبِّكَ ٱلْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾

৭৫. আমি শপথ করছি নক্ষত্র রাজির অস্তাচলের,

فَلَآ أُقْسِمُ بِمَوَٰقِعِ ٱلنُّجُومِ ﴿٧٥﴾

৭৬. অবশ্যই এটা এক মহা শপথ, যদি তোমরা জানতে—

وَإِنَّهُۥ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ﴿٧٦﴾

৭৭. নিশ্চয়ই এটা সম্মানিত কুরআন,

إِنَّهُۥ لَقُرْءَانٌ كَرِيمٌ ﴿٧٧﴾

৭৮. যা আছে সুরক্ষিত কিতাবে,

فِى كِتَٰبٍ مَّكْنُونٍ ﴿٧٨﴾

৭৯. পুত-পবিত্ররা ব্যতীত অন্য কেউ তা স্পর্শ করে না।

لَّا يَمَسُّهُۥٓ إِلَّا ٱلْمُطَهَّرُونَ ﴿٧٩﴾

تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾

৮০. এটা জগতসমূহের প্রতি-পালকের নিকট হতে অবতীর্ণ।

اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ ﴿٨١﴾

৮১. তবুও কি তোমরা এই হাদীসকে (কুরআনকে) তুচ্ছ গণ্য করবে?

وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٨٢﴾

৮২. এবং তোমরা মিথ্যারোপকেই তোমাদের উপজীব্য করে নিয়েছো!

فَلَوْلَآ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ﴿٨٣﴾

৮৩. তবে কেন নয়– প্রাণ যখন কণ্ঠাগত হয়।

وَاَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ ﴿٨٤﴾

৮৪. এবং তখন তোমরা তাকিয়ে দেখো।

وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ ﴿٨٥﴾

৮৫. আর আমি তোমাদের অপেক্ষা (জানার দিক দিয়ে) তার নিকটতর; কিন্তু তোমরা দেখতে পাও না।

فَلَوْلَآ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ ﴿٨٦﴾

৮৬. তবে কেন নয়, যদি তোমরা প্রতিদান প্রাপ্ত না হও,

تَرْجِعُوْنَهَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٨٧﴾

৮৭. তবে তোমরা ওটা ফিরাও না কেন? যদি তোমরা সত্যবাদী হও।

فَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٨٨﴾

৮৮. যদি সে নৈকট্য প্রাপ্তদের একজন হয়,

فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ ﴿٨٩﴾

৮৯. তার জন্যে রয়েছে আরাম, উত্তম রিযিক ও নিয়ামতময় জান্নাত;

وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩٠﴾

৯০. আর যদি সে ডান হাতের একজন হয়,

فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩١﴾

৯১. (তাকে বলা হবেঃ) হে ডান হাত ওয়ালা। তোমার জন্য নিরাপত্তা।

وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٩٢﴾

৯২. কিন্তু সে যদি মিথ্যা প্রতিপন্নকারী ও বিভ্রান্তদের অন্যতম হয়,

فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٩٣﴾

৯৩. তবে রয়েছে আপ্যায়ন টগবগে ফুটন্ত পানির দ্বারা,

وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ ﴿٩٤﴾

৯৪. এবং দহন জাহান্নামের;

إِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٩٥﴾

৯৫. নিশ্চয়ই এটা চূড়ান্ত সত্য।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٩٦﴾

৯৬. অতএব, তুমি তোমার মহান প্রতিপালকের নামের পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা কর।

سُوْرَةُ الْحَدِيْدِ مَدَنِيَّةٌ

সূরাঃ হাদীদ মাদানী

آيَاتُهَا ٢٩ رُكُوْعَاتُهَا ٤

(আয়াতঃ ২৯, রুকূ'ঃ ৪)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١﴾

১. পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে সবই আল্লাহ্‌র। তিনি পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢﴾

২. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর কর্তৃত্ব তাঁরই; তিনি জীবন দান করেন ও মৃত্যু ঘটান; তিনি সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান।

هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٣﴾

৩. তিনিই আদি, তিনিই অন্ত, তিনিই জাহের, তিনিই বাতেন এবং তিনি সর্ববিষয়ে অধিক অবহিত।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ فِيْ سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ۚ وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٤﴾

৪. তিনিই ছয় দিবসে আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন, অতপর আরশে সমুন্নীত হয়েছেন। তিনি জানেন যা কিছু ভূমিতে প্রবেশ করে ও যা কিছু তা হতে বের হয় এবং আকাশ হতে যা কিছু নামে ও আকাশে যা কিছু উত্থিত হয়। তোমরা যেখানেই থাকো না কেন তিনি (জানার দিক দিয়ে) তোমাদের সঙ্গে আছেন, তোমরা যা কিছু কর আল্লাহ তা দেখেন।

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝٥

৫. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর কর্তৃত্ব তাঁরই, আর আল্লাহরই দিকে সব বিষয় প্রত্যাবর্তিত হবে।

يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ ؕ وَهُوَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٦

৬. তিনিই রাত্রিকে প্রবেশ করান দিবসে এবং দিবসকে প্রবেশ করান রাত্রিতে এবং তিনি হৃদয় সমূহের গোপন রহস্যও জানেন।

اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝٧

৭. আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর প্রতি ঈমান আন এবং তোমাদেরকে যা কিছুর উত্তরাধিকারী তিনি করেছেন তা হতে ব্যয় কর। তোমাদের মধ্যে যারা ঈমান আনে ও ব্যয় করে, তাদের জন্যে আছে মহা পুরস্কার।

وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٨

৮. তোমাদের কি হলো যে, তোমরা আল্লাহতে ঈমান আনতো না? অথচ রাসূল (ﷺ) তোমাদেরকে তোমাদের প্রতিপালকের প্রতি ঈমান আনতে আহ্বান করছে এবং তিনি (আল্লাহ) তোমাদের নিকট হতে অঙ্গীকার গ্রহণ করেছেন, তোমরা যদি বিশ্বাস করতে।

هُوَ الَّذِىْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖۤ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝٩

৯. তিনিই তাঁর বান্দার প্রতি সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ অবতীর্ণ করেন, তোমাদেরকে সকল প্রকার অন্ধকার হতে আলোর দিকে আনার জন্যে; নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাদের প্রতি করুণাময়, পরম দয়ালু।

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ لَا يَسْتَوِىْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ؕ اُولٰٓئِكَ

১০. তোমাদের কি হয়েছে যে, তোমরা আল্লাহর পথে ব্যয় করছ না? অথচ আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর মালিকানা আল্লাহরই। তোমাদের মধ্যে যারা (মক্কা) বিজয়ের পূর্বে ব্যয়

اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ؕ وَ كُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝١٠

করেছে ও সংগ্রাম করেছে, সমান নয়; তারা মর্যাদায় শ্রেষ্ঠ তাদের অপেক্ষা যারা পরবর্তীকালে ব্যয় করেছে ও সংগ্রাম করেছে। তবে আল্লাহ উভয়ের কল্যাণের প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন। তোমরা যা কর আল্লাহ তা সবিশেষ অবহিত।

مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗۤ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۝١١

১১. কে আছে যে আল্লাহকে উত্তম ঋণ দিবে? তাহলে তিনি তা বহুগুণে তার জন্য বৃদ্ধি করবেন এবং তার জন্যে উত্তম পুরস্কার রয়েছে।

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝١٢

১২. সেদিন (কিয়ামতের দিন) তুমি দেখবে মু'মিন নর-নারীদেরকে তাদের সম্মুখ ভাগে ও ডান পার্শ্বে তাদের জ্যোতি প্রবাহিত হবে। (বলা হবেঃ) আজ তোমাদের জন্যে সুসংবাদ জান্নাতের যার পাদদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত হবে, সেখানে তোমরা স্থায়ী হবে, এটাই মহাসাফল্য।

يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ؕ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ؕ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۝١٣

১৩. সেদিন মুনাফিক পুরুষ ও মুনাফিক নারী মু'মিনদেরকে বলবেঃ তোমরা আমাদের জন্যে একটু অপেক্ষা কর, যাতে আমরা তোমাদের নূর হতে কিছু গ্রহণ করতে পারি। বলা হবেঃ তোমরা তোমাদের পিছনে ফিরে যাও ও আলোর সন্ধান কর। অতঃপর উভয়ের মাঝামাঝি স্থাপিত হবে একটি প্রাচীর সেখানে একটি দরজা থাকবে, যার অভ্যন্তরে রহমত এবং বহির্ভাগে আযাব।

يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ

১৪. তারা তাদেরকে ডেকে জিজ্ঞেস করবেঃ আমরা কি তোমাদের সঙ্গে

فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿١٤﴾

ছিলাম না? তারা বলবেঃ হ্যাঁ, কিন্তু তোমরা নিজেরাই নিজেদেরকে বিপদগ্রস্ত করেছো; তোমরা প্রতীক্ষা করেছিলে, সন্দেহ পোষণ করেছিলে এবং মিথ্যা আশা-আকাঙ্ক্ষা তোমাদেরকে প্রতারিত করেছে, অবশেষে আল্লাহর হুকুম (মৃত্যু) এসেছে; আর মহাপ্রতারক (শয়তান) তোমাদেরকে আল্লাহ সম্পর্কে প্রতারিত করেছিল।

فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ؕ هِيَ مَوْلٰىكُمْ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٥﴾

১৫. আজ তোমাদের নিকট হতে কোন মুক্তিপণ নেয়া হবে না এবং কাফিরদের নিকট হতেও নয়। জাহান্নামই তোমাদের আবাসস্থল, এটাই তোমাদের চিরসঙ্গী, কত নিকৃষ্ট এই পরিণাম!

اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿١٦﴾

১৬. মু'মিন লোকদের জন্য এখনও কি সময় আসেনি যে, আল্লাহর স্মরণ এবং যে সত্য অবতীর্ণ হয়েছে তার সম্মুখে অবনত হবে? এবং পূর্বে যাদেরকে কিতাব দেয়া হয়েছিল তাদের মত যেন তারা না হয়, বহুকাল অতিক্রান্ত হয়ে গেলে যাদের হৃদয় কঠিন হয়ে পড়েছিল। তাদের অধিকাংশই ফাসেক।

اِعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١٧﴾

১৭. জেনে রেখো যে, আল্লাহই পৃথিবীকে তার মৃত্যুর পর জীবন দান করেন। আমি নিদর্শনগুলো তোমাদের জন্যে বিশদভাবে ব্যক্ত করেছি যাতে তোমরা বুঝতে পার।

اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿١٨﴾

১৮. দানশীল পুরুষ ও দানশীল নারী এবং যারা আল্লাহকে উত্তম ঋণ দান করে তাদেরকে দেয়া হবে বহুগুণ বেশি এবং তাদের জন্যে রয়েছে সম্মানজনক বিনিময়।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۚ وَالشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١٩﴾

১৯. যারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের (ﷺ) প্রতি ঈমান আনে, তারাই তাদের প্রতিপালকের নিকট সত্যনিষ্ঠ ও সাক্ষী। তাদের জন্যে রয়েছে তাদের প্রাপ্য পুরস্কার ও জ্যোতি এবং যারা কুফরী করেছে ও আমার নিদর্শনাবলী অস্বীকার করেছে, তারা জাহান্নামের অধিবাসী হবে।

اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّ لَهْوٌ وَّ زِيْنَةٌ وَّ تَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَ تَكَاثُرٌ فِى الْاَمْوَالِ وَ الْاَوْلَادِ ؕ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ؕ وَ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّ مَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانٌ ؕ وَ مَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿٢٠﴾

২০. তোমরা ভালোভাবে জেনে রেখো, দুনিয়ার জীবন তো খেল-তামাশা, জাঁকজমক, পারস্পরিক অহংকার প্রকাশ, ধন-সম্পদ ও সন্তান-সন্ততি প্রাচুর্য লাভের প্রতিযোগিতা ব্যতীত আর কিছুই নয়; এর উপমা বৃষ্টি, যার দ্বারা উৎপন্ন শস্য-সম্ভার কৃষকদের চমৎকৃত করে, অতঃপর ওটা শুকিয়ে যায়, ফলে তুমি ওটা হলুদ বর্ণ দেখতে পাও, অবশেষে তা খড় কুটায় পরিণত হয়। পরকালে রয়েছে কঠিন শাস্তি এবং আল্লাহর ক্ষমা ও সন্তুষ্টি। দুনিয়ার জীবন ছলনাময় ধোকা ব্যতীত কিছুই নয়।

سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢١﴾

২১. তোমরা অগ্রণী হও তোমাদের প্রতিপালকের ক্ষমা ও সেই জান্নাত লাভের প্রয়াসে যা প্রশস্ততায় আকাশ ও পৃথিবীর মত, যা প্রস্তুত করা হয়েছে আল্লাহ ও তাঁর রাসূলগণে বিশ্বাসীদের জন্যে। এটা আল্লাহর অনুগ্রহ, যাকে ইচ্ছা তিনি এটা দান করেন; আল্লাহ বড়ই অনুগ্রহশীল।

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِىْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ؕ

২২. এমন কোন বিপদ নেই যা পৃথিবীতে অথবা ব্যক্তিগতভাবে তোমাদের উপর আসে আর আমি

إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٢٢﴾

তা সংঘটিত করার পূর্বে তা একটি কিতাবে লিপিবদ্ধ রাখিনি, আল্লাহর পক্ষে এটা খুবই সহজ।

لِّكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ﴿٢٣﴾

২৩. এটা এজন্যে যে, তোমরা যা হারিয়েছো তাতে যেন তোমরা হতাশা গ্রস্ত না হও এবং যা তিনি তোমাদেরকে দিয়েছেন তার জন্যে গৌরবে ফেটে না পড়। আল্লাহ পছন্দ করেন উদ্ধত ও অহংকারীদেরকে।

الَّذِينَ يَبْخَلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۗ وَمَن يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٤﴾

২৪. যারা কার্পণ্য করে এবং মানুষকে কার্পণ্যের নির্দেশ দেয় এবং যে মুখ ফিরিয়ে নেয় (সে জেনে রাখুক যে,) আল্লাহ তো অভাবমুক্ত, প্রশংসিত।

لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۖ وَأَنزَلْنَا الْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَنصُرُهُ وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ ۚ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٢٥﴾

২৫. নিশ্চয়ই আমি আমার রাসূলদেরকে প্রেরণ করেছি স্পষ্ট প্রমাণসহ এবং তাদের সঙ্গে দিয়েছি কিতাব ও তুলাদন্ড যাতে মানুষ সুবিচার প্রতিষ্ঠা করে এবং আমি লৌহ দিয়েছি যাতে রয়েছে প্রচন্ড শক্তি ও রয়েছে মানুষের জন্যে বহুবিধ কল্যাণ; এটা এই জন্যে যে, আল্লাহ প্রকাশ করে দিবেন কে প্রত্যক্ষ না করেও তাঁকে ও তাঁর রাসূলদেরকে সাহায্য করে। আল্লাহ শক্তিমান, পরাক্রমশালী।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ فَمِنْهُم مُّهْتَدٍ ۖ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ ﴿٢٦﴾

২৬. আমি নূহ (عليه السلام) ও ইবরাহীম (عليه السلام)-কে (রাসূলরূপে) প্রেরণ করেছিলাম এবং আমি তাদের দু'জনের বংশে নবুওয়াত ও কিতাবের ব্যবস্থা করেছিলাম; কিন্তু তাদের অল্পই সৎপথ অবলম্বন করেছিল এবং অধিকাংশই ছিল ফাসেক।

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى

২৭. অতঃপর আমি একের পর এক আমার রাসূলগণ পাঠিয়েছি এবং

ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ ۙ وَجَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّرَحْمَةً ؕ وَرَهْبَانِيَّةَ ۨ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَآءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٧﴾

মারইয়াম পুত্র ঈসা (عليه السلام)-কে পাঠিয়েছি। আর তাকে দিয়েছিলাম ইঞ্জীল এবং তার অনুসারীদের অন্তরে দিয়েছিলাম করুণা ও দয়া; কিন্তু সন্ন্যাসবাদ (সংসার ত্যাগী) এটা তো তারা নিজেরাই আল্লাহর সন্তুষ্টি লাভের জন্যে প্রবর্তন করেছিল; আমি তাদেরকে এর বিধান দেইনি অথচ এটাও তারা যথাযথভাবে পালন করেনি। তাদের মধ্যে যারা ঈমান এনেছিল, তাদেরকে আমি পুরস্কার দিয়েছিলাম এবং তাদের অধিকাংশই ফাসিক।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۙ ﴿٢٨﴾

২৮. হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহকে ভয় কর এবং তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর প্রতি ঈমান আন, তিনি তাঁর অনুগ্রহে তোমাদেরকে দ্বিগুণ পুরস্কার দিবেন এবং তিনি তোমাদেরকে দিবেন আলো, যার সাহায্যে তোমরা চলবে এবং তিনি তোমাদেরকে ক্ষমা করবেন। আল্লাহ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾

২৯. এটা এজন্যে যে, কিতাবীগণ যেন জানতে পারে, আল্লাহর সামান্যতম অনুগ্রহের উপরও তাদের কোন অধিকার নেই, অনুগ্রহ আল্লাহরই হাতে, যাকে ইচ্ছা তা দান করেন এবং আল্লাহ বড়ই অনুগ্রহশীল।

১। (ক) আবূ বুরদাহ তার পিতা [আবূ মূসা আশআরী (রাযিআল্লাহু আনহু)] বর্ণনা করেছেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ "যার কাছে ক্রীতদাসী আছে এবং সে তাকে (শরীয়তের প্রয়োজনীয় মাসয়ালা) শিক্ষা দেয় এবং ভাল আচার-ব্যবহার ও শিষ্টাচার শিক্ষা দেয় অতঃপর তাকে আযাদ করে নিজেই বিবাহ করে নেয়, তার জন্য দ্বিগুণ সওয়াব রয়েছে। আহলে কিতাবদের মধ্য থেকে যে নিজেদের নবী এবং আমার ওপর ঈমান আনে তার জন্যও দ্বিগুণ সওয়াব রয়েছে। আর যে গোলাম স্বীয় মালিক এবং তার রবের হক যথাযথভাবে আদায় করবে, তার জন্যও দ্বিগুণ সওয়াব রয়েছে। (বুখারী, হাদীস নং ৫০৮৩)

সূরাঃ মুজাদালাহ্, মাদানী

(আয়াতঃ ২২, রুকূ'ঃ ৩)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُوْرَةُ الْمُجَادَلَةِ مَدَنِيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٢٢ رُكُوْعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زَوْجِهَا وَتَشْتَكِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ①

১. (হে রাসূল ﷺ)! আল্লাহ্ শুনেছেন সেই নারীর কথা, যে তার স্বামীর বিষয়ে তোমার সাথে তর্ক-বিতর্ক করছে এবং আল্লাহর নিকট ফরিয়াদ করছে। আল্লাহ তোমাদের কথোপকথন শুনেন, নিশ্চয়ই আল্লাহ্ সর্বশ্রোতা, সর্বদ্রষ্টা।

اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ۭ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰۗـِٔيْ وَلَدْنَهُمْ ۭ وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ②

২. তোমাদের মধ্যে যারা নিজেদের স্ত্রীদের সাথে "যিহার" করে, (নিজ স্ত্রীকে মার মত বলে) তাদের স্ত্রীরা তাদের মা নয়; যারা তাদেরকে জন্মদান করে শুধু তারাই তাদের মা; তারা তো ঘৃণ্য ও মিথ্যা কথা বলে; নিশ্চয়ই আল্লাহ্ পাপমোচনকারী, ক্ষমাশীল।

وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَاۗسَّا ۭ ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ③

৩. যারা নিজেদের স্ত্রীদের সাথে যিহার করে এবং পরে তাদের উক্তি প্রত্যাহার করে, তবে একে অপরকে স্পর্শ করার পূর্বে একটি দাস মুক্ত করতে হবে, এর দ্বারা তোমাদেরকে সদুপদেশ দেয়া হয়। তোমরা যা কর আল্লাহ তার খবর রাখেন।

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَاۗسَّا ۚ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ۭ ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۭ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۭ

৪. কিন্তু যার এ সামর্থ থাকবে না, একে অপরকে স্পর্শ করার পূর্বে তাকে পরস্পর দুই মাস রোযা পালন করতে হবে; যে তাতেও অসমর্থ হবে, সে ষাটজন অভাবগ্রস্তকে

وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٣

খাওয়াবে; এটা এই জন্যে যে, তোমরা যেন আল্লাহ্ ও তাঁর রাসূলে বিশ্বাস স্থাপন কর। এগুলো আল্লাহর নির্ধারিত বিধান, কাফিরদের জন্যে যন্ত্রণাদায়ক আযাব রয়েছে।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝٥

৫. যারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর বিরুদ্ধাচরণ করে, তাদেরকে অপদস্থ করা হবে যেমন অপদস্থ করা হয়েছে তাদের পূর্ববর্তীদেরকে; আমি সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ অবতীর্ণ করেছি; কাফিরদের জন্যে রয়েছে লাঞ্ছনাকর আযাব।

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝٦

৬. সে দিন, যেদিন আল্লাহ্ তাদের সকলকে একত্রে পুনরুত্থিত করবেন এবং তাদেরকে জানিয়ে দিবেন যা তারা করতো; আল্লাহ ওর হিসাব রেখেছেন, যদিও তারা তা ভুলে গেছে। আল্লাহ সর্ব বিষয়ে সম্যক সাক্ষী।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَآ اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝٧

৭. তুমি কি অনুধাবন কর না, আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে আল্লাহ তা জানেন; তিন ব্যক্তির মধ্যে এমন কোন গোপন পরামর্শ হয় না যাতে চতুর্থজন হিসাবে তিনি থাকেন না; এবং পাঁচ ব্যক্তির মধ্যে এমন কোন গোপন পরামর্শ হয় না যাতে ষষ্ঠজন হিসেবে তিনি থাকেন না; তারা এতদপেক্ষা কম হোক বা বেশি হোক; তারা যেখানেই থাকুক না কেন আল্লাহ (জানার দিক দিয়ে) তাদের সঙ্গে

আছেন। তারা যা করে; তিনি তাদেরকে কিয়ামতের দিন তা জানিয়ে দিবেন। আল্লাহ্ সর্ব বিষয়ে সম্যক অবগত।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ز وَاِذَا جَآءُوْكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ وَيَقُوْلُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ط حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ج يَصْلَوْنَهَا ج فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ⑧

৮. তুমি কি তাদেরকে লক্ষ্য কর না, যাদেরকে কানাঘুষা করতে নিষেধ করা হয়েছিল; অতঃপর তারা যা নিষিদ্ধ তারই পুনরাবৃত্তি করে এবং পাপাচারণ, সীমালঙ্ঘন ও রাসূল (ﷺ)-এর বিরুদ্ধাচরণের জন্যে কানাঘুষা করে। তারা যখন তোমার নিকট আসে তখন তারা তোমাকে এমন কথা দ্বারা অভিবাদন (সালাম) করে যার দ্বারা আল্লাহ্ তোমাকে অভিবাদন করেননি। তারা মনে মনে বলেঃ আমরা যা বলি তার জন্যে আল্লাহ আমাদেরকে শাস্তি দেন না কেন? জাহান্নামই তাদের উপযুক্ত শাস্তি যেখানে তারা প্রবেশ করবে, কত নিকৃষ্ট সেই আবাস!

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ط وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ⑨

৯. হে মু'মিনগণ! তোমরা যখন কানাঘুষা (গোপন পরামর্শ) কর, সে পরামর্শ যেন পাপাচরণ, সীমালঙ্ঘন ও রাসূল (ﷺ)-এর বিরুদ্ধাচরণ সম্পর্কে না হয়। তোমরা কল্যাণকর কাজ ও তাকওয়া অবলম্বনের পরামর্শ করো এবং ভয় কর আল্লাহকে যাঁর নিকট সমবেত হবে তোমরা।

اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْـًٔا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ط وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ⑩

১০. কানাঘুষা তো শয়তানদের কাজ যা মু'মিনদেরকে দুঃখ দেয়ার জন্যে করা হয়; তবে আল্লাহ্র ইচ্ছা ব্যতীত শয়তান তাদের সমান্যতম ক্ষতি করতে পারবে না। মু'মিনদের কর্তব্য আল্লাহর উপর নির্ভর করা।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِى الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١١﴾

১১. হে মু'মিনগণ! যখন তোমাদেরকে বলা হয়ঃ মজলিসে স্থান প্রশস্ত করে দাও তখন তোমরা স্থান করে দিয়ো, আল্লাহ্ তোমাদের জন্যে স্থান প্রশস্ত করে দিবেন এবং যখন বলা হয়ঃ উঠে যাও তখন উঠে যাবে। তোমাদের মধ্যে যারা ঈমান এনেছে এবং যাদেরকে জ্ঞান দান করা হয়েছে আল্লাহ্ তাদেরকে উচ্চ মর্যাদা দান করবেন; তোমরা যা কর আল্লাহ্ সে সম্পর্কে পূর্ণ অবহিত।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَىْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ؕ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾

১২. হে মু'মিনগণ! তোমরা যদি রাসূল (ﷺ)-এর সাথে চুপি চুপি (কানাঘুষা) কথা বলতে চাও তার পূর্বে সাদকা প্রদান করবে, এটাই তোমাদের জন্যে উত্তম ও পবিত্রম; যদি তাতে অক্ষম হও (তবে অপরাধী হবে না, কেননা) আল্লাহ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَىْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ؕ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٣﴾

১৩. তোমরা কি চুপে চুপে কথা বলার পূর্বে সাদকা প্রদানকে ভয় পাও? যখন তোমরা সাদকা দিতে পারলে না, আর আল্লাহ্ তোমাদেরকে ক্ষমা করে দিলেন; তখন তোমরা নামায প্রতিষ্ঠিত কর, যাকাত প্রদান কর ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর আনুগত্য কর। তোমরা যা কর আল্লাহ তা সম্যক অবগত।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ ۙ وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٤﴾

১৪. তুমি কি তাদের প্রতি লক্ষ্য করনি আল্লাহ্ যে সম্প্রদায়ের প্রতি অসন্তুষ্ট তাদের সাথে যারা বন্ধুত্ব করে? তারা (মুনাফিকগণ) তোমাদের দলভুক্ত নয়, তাদের দলভুক্তও নয় এবং তারা জেনেশুনে মিথ্যা শপথ করে।

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾

১৫. আল্লাহ তাদের জন্যে প্রস্তুত রেখেছেন কঠিন আযাব। তারা যা করে তা কতই না মন্দ।

اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٦﴾

১৬. তারা তাদের শপথগুলোকে ঢাল হিসেবে ব্যবহার করে, (এভাবে) তারা আল্লাহ্র পথ হতে মানুষকে প্রতিহত করে; তাদের জন্যে রয়েছে লাঞ্ছনাদায়ক আযাব।

لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾

১৭. আল্লাহ্র আযাবের মুকাবিলায় তাদের ধন-সম্পদ ও সন্তান-সন্ততি তাদের কোন কাজে আসবে না, তারাই জাহান্নামের অধিবাসী, সেখানে তারা স্থায়ী হবে।

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ وَ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ عَلٰى شَيْءٍ ؕ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٨﴾

১৮. যেদিন আল্লাহ পুনরুত্থিত করবেন তাদের সকলকে, তখন তারা আল্লাহ্র নিকট সেরূপ শপথ করবে যেরূপ শপথ তোমাদের নিকট করে এবং তারা মনে করে যে, এমন কিছুর উপর রয়েছে যাতে তারা উপকৃত হবে। সাবধান! তারাই তো মিথ্যাবাদী।

اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ؕ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٩﴾

১৯. শয়তান তাদের উপর প্রভাব বিস্তার করেছে, ফলে তাদেরকে ভুলিয়ে দিয়েছে আল্লাহর স্মরণ। তারা শয়তানেরই দল। সাবধান! শয়তানের দল অবশ্যই ক্ষতিগ্রস্ত।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اُولٰٓئِكَ فِي الْاَذَلِّيْنَ ﴿٢٠﴾

২০. যারা আল্লাহ্ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর বিরুদ্ধাচরণ করে তারা হবে চরম লাঞ্ছিতদের অন্তর্ভুক্ত।

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٢١﴾

২১. আল্লাহ্ সিদ্ধান্ত চূড়ান্ত করেছেনঃ আমি এবং আমার রাসূল (ﷺ) অবশ্যই বিজয়ী হবো। নিশ্চয়ই আল্লাহ্ শক্তিমান, পরাক্রমশালী।

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ كَانُوْٓا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٢٢﴾ ع

২২. তুমি পাবে না আল্লাহ্ ও আখিরাতের বিশ্বাসী এমন কোন সম্প্রদায়; যারা ভালবাসে আল্লাহ্ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর বিরুদ্ধাচারীদেরকে, হোক না এই বিরুদ্ধাচারীরা তাদের পিতা, পুত্র, ভ্রাতা অথবা তাদের জ্ঞাতি-গোত্র। তাদের অন্তরে আল্লাহ্ সুদৃঢ় করেছেন ঈমান এবং তাদেরকে শক্তিশালী করেছেন তাঁর পক্ষ হতে এক রূহ্ দ্বারা। তিনি তাদেরকে প্রবেশ করাবেন জান্নাতে, যার পাদদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত; সেখানে তারা স্থায়ী হবে; আল্লাহ তাদের প্রতি সন্তুষ্ট এবং তারাও তাঁর প্রতি সন্তুষ্ট, তারাই আল্লাহ্‌র দল। জেনে রেখো যে, আল্লাহ্‌র দলই সফলকাম হবে।

سُوْرَةُ الْحَشْرِ مَدَنِيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٢٤ رُكُوْعَاتُهَا ٣

সূরাঃ হাশ্‌র মাদানী

(আয়াতঃ ২৪, রুকূ'ঃ ৩)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١﴾

১. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে সবই আল্লাহর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে, তিনি পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ؕ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ

২. তিনিই আহলে কিতাবদের মধ্যে যারা কাফির তাদেরকে প্রথম সমাবেশেই তাদের আবাসভূমি হতে বিতাড়িত করেছিলেন। তোমরা কল্পনাও করনি যে, তারা নির্বাসিত

مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِي الْاَبْصَارِ ۝٢

হবে এবং তারা মনে করেছিল যে, তাদের দুর্ভেদ্য দুর্গগুলো তাদেরকে রক্ষা করবে আল্লাহ্ হতে; কিন্তু আল্লাহ্ এমন এক দিক হতে তাদের উপর চড়াও হলেন যা ছিল তাদের ধারণাতীত এবং তিনি তাদের অন্তরে ত্রাসের সঞ্চার করলেন। তারা ধ্বংস করে ফেললো তাদের বাড়ী-ঘর নিজেদের হাতে এবং মু'মিনদের হাতেও; অতএব হে চক্ষুস্মান ব্যক্তিগণ! তোমরা উপদেশ গ্রহণ কর।

وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ۭ وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ۝٣

৩. আল্লাহ তাদের নির্বাসনের সিদ্ধান্ত গ্রহণ না করলে তাদেরকে পৃথিবীতে (অন্য) শাস্তি দিতেন; আর পরকালে তাদের জন্যে রয়েছে জাহান্নামের আযাব।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَاۗقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاۗقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٤

৪. এটা এজন্যে যে, তারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর বিরুদ্ধাচরণ করেছিল, এবং কেউ আল্লাহ্‌র বিরুদ্ধাচরণ করলে আল্লাহ্ তো শাস্তি দানে কঠোর।

مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَاۗىِٕمَةً عَلٰٓي اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٥

৫. তোমরা যে খেজুর বৃক্ষগুলো কেঁটেছো এবং যেগুলো কান্ডের উপর স্থির রেখে দিয়েছো, তা তো আল্লাহরই অনুমতিক্রমে; এটা এ জন্যে যে, আল্লাহ্ পাপাচারীদেরকে লাঞ্ছিত করবেন।

وَمَآ اَفَاۗءَ اللّٰهُ عَلٰي رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰي مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٦

৬. আল্লাহ্ তাদের (ইয়াহূদীদের) নিকট হতে যে ফায় (সম্পদ) তাঁর রাসূল (ﷺ)-কে দিয়েছেন, তার জন্যে তোমরা ঘোড়া কিংবা উষ্ট্রে আরোহণ (করে যুদ্ধ) করনি; আল্লাহ্ তো যার উপর ইচ্ছা তাঁর

রাসূলদেরকে বিজয়ী দান করেন; আল্লাহ্ সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান।

مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَىْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةًۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ؕ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۘ ﴿٧﴾

৭. আল্লাহ্ এই জনপদবাসীদের নিকট হতে তাঁর রাসূল (ﷺ)-কে যা কিছু দিয়েছেন, তা আল্লাহ্‌র, তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর, (রাসূল (ﷺ)-এর) স্বজনগণের এবং ইয়াতীমদের, অভাবগ্রস্ত ও মুসাফিরদের, যাতে তোমাদের মধ্যে যারা বিত্তবান শুধু তাদের মধ্যেই ঐশ্বর্য আবর্তন না করে। রাসূল (ﷺ) তোমাদেরকে যা দেয় তা তোমরা গ্রহণ কর এবং যা হতে তোমাদেরকে নিষেধ করে তা হতে বিরত থাকো[১] এবং তোমরা আল্লাহ্‌কে ভয় কর, আল্লাহ্ শাস্তি দানে কঠোর।

১। (ক) আব্দুল্লাহ্ [ইবনে মাসউদ] (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেছেনঃ আল্লাহ্ তা'আলা লা'নত করেছেন ওসব নারীর ওপর, যারা (অন্যের) শরীরে (নাম বা চিত্র) অংকন করে এবং যারা নিজ শরীরে (অন্যের দ্বারা) অংকন করায়; যারা ললাট বা কপালের উপরস্থ চুল উপরিয়ে কপাল প্রশস্ত করে এবং সৌন্দর্যের জন্য (রেত ইত্যাদির সাহায্যে) দাঁত সরু ও (দু'দাঁতের মাঝে) ফাঁক সৃষ্টি করে। এসব নারী (এরূপে) আল্লাহ্‌র সৃষ্টির (আকৃতি) বিকৃত করে ফেলে।

অতঃপর বনী আসাদ গোত্রের উম্মে ইয়াকুব নামীয় এক মহিলা এই বর্ণনা শুনে [আবদুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু)-এর নিকট] আসলো এবং বললো, আমি জানতে পেরেছি যে, আপনি এ ব্যাপারে লা'নত করেছেন। তিনি বললেন, আল্লাহ্‌র রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) যার ওপর লা'নত করেছেন আল্লাহ্‌র কিতাবে যার প্রতি লা'নত করা হয়েছে, তার ওপর আমি লা'নত করব না কেন? তখন মহিলাটি বললো, আমি তো কুরআন শরীফ শুরু থেকে শেষ পর্যন্ত পড়েছি, তাতে তো আপনি যা বলছেন, তা পেলাম না। আবদুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু) বললেন, যদি তুমি (মনোযোগ দিয়ে) তা পড়তে তবে অবশ্যই পেতে। তুমি কি (কুরআনে) পড়নিঃ রাসূল তোমাদেরকে যা নির্দেশ দেন তা গ্রহণ করো আর যা থেকে বারণ করেন তা থেকে বিরত থাকো এবং আল্লাহ্‌কে ভয় করে চলো। মহিলাটি বললো, হ্যাঁ, নিশ্চয়ই। [আবদুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু)] বললেন, অতঃপর অবশ্যই [রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)] ও থেকে নিষেধ করেছেন। তখন মহিলাটি বললো, আমার মনে হয়, আপনার বিবি ও তো ঐ কাজ করে। [আবদুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু)] বললেন, তুমি (আমার ঘরে) যাও এবং ভালরূপে দেখেশুনে এসো। অতপর মহিলাটি (তাঁর ঘরে) গেল এবং দেখে শুনে নিল; কিন্তু সে যে প্রয়োজনে গিয়েছিল, তার কিছুই দেখলো না। তখন [আবদুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু)] বললেন, যদি আমার স্ত্রী ওরূপ কাজ করতো, তবে আমার সঙ্গে তার মিলন হতো না। (বুখারী, হাদীস নং ৪৮৮৬)

(খ) আবদুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেন, যে নারী পর চুলা লাগায়, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তার ওপর লা'নত করেছেন। অতঃপর তিনি বললেন, আমি হাদীসটি এমন এক নারীর নিকট থেকে শুনেছি যাকে উম্মে ইয়াকুব বলা হয়। (বুখারী, হাদীস নং ৪৮৮৭)

لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۚ﴿٨﴾

৮. (এ সম্পদ) অভাবগ্রস্ত মুহাজির-দের জন্যে যারা নিজেদের ঘরবাড়ী ও সম্পত্তি হতে বহিস্কৃত হয়েছে। তারা আল্লাহ্‌র অনুগ্রহ ও সন্তুষ্টি কামনা করে এবং আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর সাহায্য করে। তারাই তো সত্যাবাদী।

وَالَّذِيْنَ تَبَوَّءُوا الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ؕ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۚ﴿٩﴾

৯. এবং মুহাজিরদের (আগমনের) পূর্বে যারা এ নগরীতে (মদীনায়) বসবাস করেছে ও ঈমান এনেছে তারা তাদেরকে (মুহাজিরদেরকে) ভালবাসে এবং মুহাজিরদেরকে যা দেয়া হয়েছে তার জন্যে তারা অন্তরে আকাঙ্ক্ষা পোষণ করে না, আর তারা তাদেরকে নিজেদের উপর প্রাধান্য দেয় নিজেরা অভাবগ্রস্ত হলেও; যারা কার্পণ্য হতে নিজেদেরকে মুক্ত করেছে তারাই সফলকাম।

وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۚ﴿١٠﴾

১০. যারা তাদের পরে এসেছে (পৃথিবীতে), তারা বলেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে এবং আমাদের সেই সব ভাইকে ক্ষমা করুন যারা আমাদের পূর্বে ঈমান এনেছে এবং মু'মিনদের বিরুদ্ধে আমাদের অন্তরে হিংসা-বিদ্বেষ সৃষ্টি করবেন না। হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি তো দয়ার্দ্র, পরম দয়ালু।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَئِنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّاِنْ قُوْتِلْتُمْ

১১. তুমি কি মুনাফিকদেরকে দেখোনি? তারা আহলে কিতাবদের মধ্যে যারা কুফরী করেছে তাদের ঐ সব সঙ্গীকে বলেঃ তোমরা যদি বহিস্কৃত হও, তবে আমরা অবশ্যই

لَنَنْصُرَنَّكُمْ ۖ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١١﴾

তোমাদের সাথে দেশত্যাগী হবো এবং আমরা তোমাদের ব্যাপারে কখনো কারো কথা মানবো না এবং যদি তোমরা আক্রান্ত হও তবে আমরা অবশ্যই তোমাদেরকে সাহায্য করবো; কিন্তু আল্লাহ্ সাক্ষ্য দিচ্ছেন যে, তারা অবশ্যই মিথ্যাবাদী।

لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ ۖ وَلَئِنْ قُوتِلُوا لَا يَنْصُرُونَهُمْ ۖ وَلَئِنْ نَصَرُوهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُونَ ﴿١٢﴾

১২. বস্তুতঃ তারা বহিস্কৃত হলে মুনাফিকরা তাদের সাথে দেশ ত্যাগ করবে না এবং তারা আক্রান্ত হলে তারা তাদেরকে সাহায্য করবে না এবং তারা সাহায্য করতে আসলেও অবশ্যই পৃষ্ঠ-প্রদর্শন করবে, অতঃপর তারা কোন সাহায্য প্রাপ্ত হবে না।

لَأَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ﴿١٣﴾

১৩. তাদের অন্তরে আল্লাহ অপেক্ষা তোমরাই অধিকতর ভয়ঙ্কর; এটা এই জন্যে যে, তারা এক নির্বোধ সম্প্রদায়।

لَا يُقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قُرًى مُحَصَّنَةٍ أَوْ مِنْ وَرَاءِ جُدُرٍ ۚ بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ ۚ تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٤﴾

১৪. তারা সমবেতভাবে তোমাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করবে না; কিন্তু শুধু সুরক্ষিত জনপদের অভ্যন্তরে অথবা দুর্গ-প্রাচীরের অন্তরালে থেকে; পরস্পরের মধ্যে তাদের লড়াই-ঝগড়া প্রচন্ড। তুমি মনে কর তারা ঐক্যবদ্ধ; কিন্তু তাদের হৃদয় বিচ্ছিন্ন মিল নেই; এটা এই জন্যে যে, তারা এক নির্বোধ সম্প্রদায়।

كَمَثَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٥﴾

১৫. এরা তাদের ন্যায়, যারা নিকট অতীতে নিজেদের কৃত কর্মের পরিণাম আস্বাদন করেছে। আর তাদের জন্য রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾

১৬. তাদের দৃষ্টান্ত শয়তানের মত— যে মানুষকে বলেঃ কুফরী কর। অতঃপর যখন সে কুফরী করে তখন শয়তান বলেঃ তোমার সাথে আমার কোন সম্পর্ক নেই, আমি জগত-সমূহের প্রতিপালক আল্লাহ্‌কে ভয় করি।

فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٧﴾

১৭. ফলে উভয়ের পরিণাম হবে জাহান্নাম। সেখানে তারা স্থায়ী হবে এবং এটাই যালিমদের কর্মফল।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾

১৮. হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহ্‌কে ভয় কর, প্রত্যেকেই ভেবে দেখুক যে, আগামীকালের (কিয়ামতের) জন্যে সে কি পাঠিয়েছে। আর আল্লাহ্‌কে ভয় কর; তোমরা যা কর আল্লাহ সে সম্পর্কে সর্বাধিক জ্ঞাত।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ اَنْفُسَهُمْ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿١٩﴾

১৯. আর তাদের মত হয়ো না যারা আল্লাহ্‌কে (অনুস্মরণ করা) ভুলে গেছে, ফলে আল্লাহ্ তাদেরকে আত্মভুলা করেছেন। তারাই তো পাপাচারী।

لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۭ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ ﴿٢٠﴾

২০. জাহান্নামের অধিবাসী এবং জান্নাতের অধিবাসী সমান নয়। জান্নাতবাসীরাই সফলকাম।

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰي جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۭ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾

২১. যদি আমি এই কুরআন পর্বতের উপর অবতীর্ণ করতাম তবে তুমি দেখতে যে, ওটা আল্লাহ্‌র ভয়ে বিনীত ও বিদীর্ণ হয়ে গেছে। আমি এসব দৃষ্টান্ত বর্ণনা করি মানুষের জন্যে যাতে তারা চিন্তা করে।[১]

১। জাবের ইবনে আবদুল্লাহ্ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) জুম'আর দিন একটি বৃক্ষ অথবা খেজুরের খুঁটির (রাবীর সন্দেহ) সাথে হেলান দিয়ে দাঁড়াতেন। একজন

هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٢﴾

২২. তিনিই আল্লাহ্, তিনি ব্যতীত (সত্য) কোন মা'বূদ নেই, তিনি অদৃশ্য এবং দৃশ্যের সব কিছুই জানেন; তিনি দয়াময়, পরম দয়ালু।

هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. তিনিই আল্লাহ্, তিনি ব্যতীত (সত্য) কোন মা'বূদ নেই। তিনিই অধিপতি, অতীব পবিত্র, পরিপূর্ণ শান্তিদাতা, নিরাপত্তা দানকারী, রক্ষক, পরাক্রমশালী, প্রবল, অতীব মহিমান্বিত, যারা তার শরীক স্থির করে আল্লাহ্ তা হতে পবিত্র, মহান।

هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾

২৪. তিনিই আল্লাহ্ সৃজনকর্তা, উদ্ভাবন কর্তা, রূপদাতা, সকল উত্তম নাম তাঁরই। আকাশ ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে, সবই তাঁর মহিমা ঘোষণা করে। তিনি পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

আনসার মহিলা কিংবা কোন একটি লোক বলল, হে আল্লাহ্‌র রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)! আমরা আপনার জন্য একটা মিম্বার তৈরি করব কি? তিনি বললেন, তোমাদের ইচ্ছা হলে (তৈরি) করতে পার। তখন তারা তাঁর জন্য একটি মিম্বার তৈরি করলো। জুম'আর দিন যখন নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) মিম্বারে আরোহণ করলেন তখন খেজুরের খুঁটিটা বাচ্চা ছেলের ন্যায় চিৎকার দিয়ে কাঁদতে শুরু করলো। [নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) মিম্বার থেকে] নেমে এলেন এবং খুঁটিটাকে নিজের বুকের সাথে মিলালেন। বাচ্চা ছেলেকে যেমন আদর করে পিঠ চাপড়ে কান্না থামানো হয় নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)ও ঠিক তেমনি তার কান্না থামাবার জন্য তার গা চাপড়াতে লাগলেন। জাবের (রাযিআল্লাহু আনহু) বলেন, এতদিন তার নিকট যেসব দ্বীনের আলোচনা হতো তার কথা স্মরণ করেই খুঁটিটা কান্নাকাটি করছিল। (বুখারী, হাদীস নং ৩৫৮৪)

সূরাঃ মুমতাহিনাহ্, মাদানী

(আয়াতঃ ১৩, রুকূ'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُوْرَةُ الْمُمْتَحِنَةِ مَدَنِيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ١٣ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ وَاِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ؕ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِيْ ۚ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖ وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَاۤ اَخْفَيْتُمْ وَمَاۤ اَعْلَنْتُمْ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ①

১. হে মু'মিনগণ! আমার শত্রু ও তোমাদের শত্রুকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করো না; তোমরা কি তাদের সাথে বন্ধুত্ব করছো, অথচ তারা তোমাদের নিকট যে সত্য এসেছে, তার সাথে কুফরী করেছে, রাসূল (ﷺ)-কে এবং তোমাদেরকে বহিস্কৃত করেছে এ কারণে যে, তোমরা তোমাদের প্রতিপালক আল্লাহ্কে বিশ্বাস কর। যদি তোমরা আমার সন্তুষ্টি লাভের জন্যে আমার পথে জিহাদের উদ্দেশ্যে বের হয়ে থাকো, তবে তোমরা তাদের সাথে গোপনে বন্ধুত্ব প্রতিষ্ঠা করো না, যেহেতু তোমরা যা গোপন কর এবং তোমরা যা প্রকাশ কর তা আমি সম্যক অবগত। তোমাদের যে এটা করে সে তো পথভ্রষ্ট হয় সরল পথ হতে।

اِنْ يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّيَبْسُطُوْۤا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ وَاَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ②

২. যদি তারা তোমাদেরকে পেয়ে যায় তারা হবে তোমাদের শত্রু এবং তারা স্বীয় হাত ও মুখ দ্বারা তোমাদের অনিষ্ট সাধন করবে এবং চাইবে যে, তোমরা কুফরী কর।

لَنْ تَنْفَعَكُمْ اَرْحَامُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ ۚ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ③

৩. তোমাদের আত্মীয়-স্বজন ও সন্তান-সন্ততি কিয়ামতের দিন কোন কাজে আসবে না। আল্লাহ্ তোমাদের মধ্যে ফায়সালা করে দিবেন; তোমরা যা কর তিনি সে সম্পর্কে মহা দ্রষ্টা।

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۫ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗٓ اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَآ اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَيْكَ اَنَبْنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝٤

৪. তোমাদের জন্যে ইবরাহীম (عليه السلام) ও তার অনুসারীদের মধ্যে রয়েছে উত্তম আদর্শ; তাঁরা তাদের সম্প্রদায়কে বলেছিলেনঃ তোমাদের সঙ্গে এবং তোমরা আল্লাহ্‌র পরিবর্তে যার ইবাদত কর তার সঙ্গে আমাদের কোন সম্পর্ক নেই; আমরা তোমাদের সাথে কুফরী করি। তোমাদের ও আমাদের মধ্যে সৃষ্টি হলো শত্রুতা ও বিদ্বেষ চিরকালের জন্যে, যখন পর্যন্ত তোমরা এক আল্লাহয় ঈমান না আন। তবে ব্যতিক্রম তাঁর পিতার প্রতি ইবরাহীম (عليه السلام)-এর উক্তিঃ "আমি নিশ্চয়ই তোমার জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করবো এবং তোমার ব্যাপারে আমি আল্লাহ্‌র নিকট কোন অধিকার রাখি না।" (ইবরাহীম عليه السلام ও তার অনুসারীগণ বলেছিলেনঃ) হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা তো আপনারই উপর নির্ভর করেছি, আপনারই অভিমুখী হয়েছি এবং প্রত্যাবর্তন তো আপনারই নিকট।

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٥

৫. হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি আমাদেরকে কাফিরদের জন্য পরীক্ষার বস্তুতে পরিণত করবেন না, হে আমাদের প্রতিপালক! আপনি আমাদেরকে ক্ষমা করুন! আপনি তো পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝٦

৬. তোমরা যারা আল্লাহ্ (এর সাথে সাক্ষাতের) ও আখিরাতের প্রত্যাশা কর, নিশ্চয়ই তাদের জন্যে রয়েছে উত্তম আদর্শ তাদের মধ্যে। কেউ মুখ ফিরিয়ে নিলে সে জেনে রাখুক যে, আল্লাহ্ তো অভাবমুক্ত, প্রশংসিত।

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ؕ وَاللّٰهُ قَدِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٧

৭. যাদের সাথে তোমাদের শত্রুতা রয়েছে সম্ভবতঃ আল্লাহ্ তাদের ও তোমাদের মধ্যে বন্ধুত্ব সৃষ্টি করে দিবেন; আল্লাহ্ সর্বশক্তিমান এবং আল্লাহ্ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِى الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝٨

৮. দ্বীনের ব্যাপারে যারা তোমাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করেনি এবং তোমাদেরকে স্বদেশ হতে বহিস্কার করেনি তাদের প্রতি সদ্ব্যবহার ও ন্যায় বিচার করতে আল্লাহ্ তোমাদেরকে নিষেধ করেন না। আল্লাহ্ তো ন্যায়-পরায়ণদেরকে ভালবাসেন।

اِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِى الدِّيْنِ وَاَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظٰهَرُوْا عَلٰٓى اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٩

৯. আল্লাহ শুধু তাদের সাথে বন্ধুত্ব করতে নিষেধ করেন যারা দ্বীনের ব্যাপারে তোমাদের সাথে যুদ্ধ করেছে, তোমাদেরকে স্বদেশ হতে বহিস্কার করেছে এবং তোমাদেরকে বহিস্কারে সাহায্য করেছে। সুতরাং তাদের সাথে যারা বন্ধুত্ব করে তারা তো অত্যাচারী।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ؕ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ؕ وَاٰتُوْهُمْ مَّآ اَنْفَقُوْا ؕ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ؕ وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسْـَٔلُوْا مَآ اَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْـَٔلُوْا مَآ اَنْفَقُوْا ؕ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ؕ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ

১০. হে মু'মিনগণ! তোমাদের নিকট মু'মিন নারীরা হিজরত করে আসলে তোমরা তাদেরকে পরীক্ষা করো, আল্লাহ্ তাদের ঈমান সম্বন্ধে সম্যক অবগত আছেন। যদি তোমরা জানতে পার যে, তারা মু'মিন তবে তাদেরকে কাফিরদের নিকট ফেরত পাঠিয়ে দিয়ো না। মু'মিন নারীরা কাফিরদের জন্যে বৈধ নয় এবং কাফিররা মু'মিন নারীদের জন্যে বৈধ নয়। কাফিররা যা ব্যয় করেছে তা তাদেরকে ফিরিয়ে দিবে। অতঃপর তোমরা তাদেরকে বিয়ে করলে

حَكِيمٌ ﴿١٠﴾

তোমাদের কোন অপরাধ হবে না যদি তোমরা তাদেরকে তাদের মহর দিয়ে দাও। তোমরা কাফির নারীদের সাথে বৈবাহিক সম্পর্ক (যা পূর্বে ছিল) বজায় রেখো না। তোমরা যা ব্যয় করেছো তা ফেরত চাইবে এবং কাফিররা ফেরত চাইবে যা তারা ব্যয় করেছে। এটাই আল্লাহ্‌র বিধান; তিনি তোমাদের মধ্যে ফায়সালা করে থাকেন। আল্লাহ্ সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাবান।

وَإِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَآتُوا الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَا أَنْفَقُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾

১১. তোমাদের স্ত্রীদের মধ্যে যদি কেউ কাফিরদের নিকট চলে যায় এবং তোমাদের যদি প্রতিশোধ নেওয়ার কোন সুযোগ আসে তখন যাদের স্ত্রীরা চলে গেছে তাদেরকে, তারা যা ব্যয় করেছে তার সমপরিমাণ অর্থ প্রদান করবে, ভয় কর আল্লাহ্‌কে যাঁর প্রতি তোমরা বিশ্বাসী।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ عَلَىٰ أَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِينَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِينَكَ فِي مَعْرُوفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢﴾

১২. হে নবী (ﷺ)! মু'মিন নারীরা যখন তোমার নিকট এসে বায়'আত করে এই মর্মে যে, তারা আল্লাহ্‌র সাথে কোন শরীক স্থির করবে না, চুরি করবে না, ব্যভিচার করবে না, নিজেদের সন্তানদের হত্যা করবে না, তারা সজ্ঞানে কোন অপবাদ রচনা করে রটাবে না এবং সৎকার্যে তোমাকে অমান্য করবে না তখন তাদের বায়'আত গ্রহণ করো এবং তাদের জন্যে আল্লাহ্‌র নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করো। আল্লাহ্ তো ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَوَلَّوْا۟ قَوْمًا غَضِبَ ٱللَّهُ عَلَيْهِم قَدْ يَئِسُوا۟ مِنَ ٱلْءَاخِرَةِ كَمَا يَئِسَ ٱلْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَٰبِ ٱلْقُبُورِ ﴿١٣﴾

১৩. হে মু'মিনগণ! আল্লাহ্ যে সম্প্রদায়ের প্রতি অসন্তুষ্ট তোমরা তাদের সাথে বন্ধুত্ব করো না, তারা তো পরকাল সম্পর্কে হতাশ হয়ে পড়েছে যেমন হতাশ হয়েছে কাফিররা কবরবাসীদের বিষয়ে।

সূরাঃ সাফ্ফ, মাদানী

سُورَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ

(আয়াতঃ ১৪, রুকূ'ঃ ২)

اٰيَاتُهَا ١٤ رُكُوعَاتُهَا ٢

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ ۖ وَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿١﴾

১. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে সমস্তই আল্লাহর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে। তিনি পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ ﴿٢﴾

২. হে মু'মিনগণ! তোমরা যা কর না তা তোমরা কেন বল?

كَبُرَ مَقْتًا عِندَ ٱللَّهِ أَن تَقُولُوا۟ مَا لَا تَفْعَلُونَ ﴿٣﴾

৩. তোমরা যা কর না তোমাদের তা বলা আল্লাহর নিকট অতিশয় অসন্তোষজনক।

إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلَّذِينَ يُقَٰتِلُونَ فِى سَبِيلِهِۦ صَفًّا كَأَنَّهُم بُنْيَٰنٌ مَّرْصُوصٌ ﴿٤﴾

৪. নিশ্চয়ই যারা আল্লাহর পথে সংগ্রাম করে সারিবদ্ধভাবে শীশা ঢালা সুদৃঢ় প্রাচীরের মত, আল্লাহ তাদেরকে ভালবাসেন।[১]

১। আবূ সাঈদ (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে জিজ্ঞেস করা হলঃ হে আল্লাহ্র রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)! সবচেয়ে ভাল মানুষ কে? রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, যে মুমিন আল্লাহ্র পথে তাঁর জীবন ও সম্পদ দিয়ে জিহাদ করে। লোকেরা বলল, এরপর কে ? তিনি বললেন, যে ব্যক্তি আল্লাহ্কে ভয় করে এবং নিজের অনিষ্টকারিতা থেকে মানুষকে নিষ্কৃতি দেয়ার জন্য পাহাড়ের কোন নির্জন গুহায় অবস্থান করে। (বুখারী, হাদীস নং ২৭৮৬)

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ؕ فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٥

৫. (স্মরণ কর), মূসা (عليه السلام) তাঁর সম্প্রদায়কে বলেছিলেনঃ হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা আমাকে কেন কষ্ট দিচ্ছ যখন তোমরা জান যে, আমি তোমাদের নিকট আল্লাহ্‌র রাসূল! অতঃপর তারা যখন বক্রপথ অবলম্বন করলো তখন আল্লাহ তাদের হৃদয়কে বক্র করে দিলেন। আল্লাহ ফাসেক সম্প্রদায়কে হিদায়াত করেন না।

وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًۢا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٦

৬. (স্মরণ কর) মারইয়াম পুত্র ঈসা (عليه السلام) বলেছিলেনঃ হে বানী ইসরাঈল! আমি তোমাদের নিকট আল্লাহর রাসূল এবং আমার পূর্বে হতে তোমাদের নিকট যে তাওরাত রয়েছে আমি তার সত্যায়নকারী এবং আমার পরে আহমাদ (ﷺ) নামে যে রাসূল আসবেন আমি তাঁর সুসংবাদদাতা। পরে তিনি যখন স্পষ্ট নিদর্শনাবলীসহ তাদের নিকট আসলেন তখন তারা বলতে লাগলোঃ এটা তো এক স্পষ্ট যাদু।[১]

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰٓى اِلَى الْاِسْلَامِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٧

৭. অথচ তাকে ইসলামের দিকে আহ্বান করা হয়, যে ব্যক্তি আল্লাহ সম্বন্ধে মিথ্যা রচনা করে তার অপেক্ষা অধিক যালিম আর কে? আল্লাহ যালিম সম্প্রদায়কে সৎপথে পরিচালিত করেন না।

يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ مُتِمُّ

৮. তারা আল্লাহর নূর (শরীয়ত) তাদের মুখ দিয়ে নিভিয়ে দিতে চায়;

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ সেই মহান সত্তার শপথ যাঁর হাতের মুঠোয় আমার প্রাণ! অচিরেই ইবনে মারইয়াম [ঈসা (عليه السلام)] ন্যায়বান শাসক হয়ে তোমাদের মাঝে অবতরণ করবেন। তিনি ক্রুশ ভেঙে ফেলবেন,শূকর হত্যা করে ফেলবেন এবং জিয্য়া উঠিয়ে দিবেন। আর সম্পদের প্রাচুর্য এত বেশি হবে যে, কেউই তা (দান) গ্রহণ করতে চাইবে না। (বুখারী, হাদীস নং ২২২২)

نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ⑧

কিন্তু আল্লাহ তাঁর নূর পূর্ণরূপে প্রকাশকারী যদিও কাফিররা তা অপছন্দ করে।

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ⑨

৯. তিনিই তাঁর রাসূল (ﷺ)-কে প্রেরণ করেছেন হিদায়েত এবং সত্য দ্বীনসহ সকল দ্বীনের উপর ওকে বিজয়ী করার জন্যে, যদিও মুশরিকরা তা অপছন্দ করে।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ⑩

১০. হে মু'মিনগণ! আমি কি তোমাদেরকে এমন এক বাণিজ্যের সন্ধান দিবো যা তোমাদেরকে রক্ষা করবে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি হতে?

تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ⑪

১১. (তা এই যে) তোমরা আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ) এ বিশ্বাস স্থাপন করবে এবং তোমাদের ধন-সম্পদ ও জীবন দ্বারা আল্লাহর পথে জিহাদ করবে। এটাই তোমাদের জন্যে শ্রেষ্ঠতম যদি তোমরা জানতে!

يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ⑫

১২. (আল্লাহ) তোমাদের পাপরাশি ক্ষমা করে দিবেন এবং তোমাদেরকে প্রবেশ করাবেন এমন জান্নাতে যার পাদদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত এবং স্থায়ী জান্নাতের উত্তম বাসগৃহে। এটাই মহা সাফল্য।

وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ⑬

১৩. আরোও তিনি দান করবেন যা তোমরা পছন্দ কর– আল্লাহর সাহায্য ও আসন্ন বিজয়, মু'মিনদেরকে এর সুসংবাদ দাও।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ

১৪. হে মু'মিনগণ! আল্লাহর দ্বীনের সাহায্যকারী হও, যেমন মারইয়াম পুত্র ঈসা (عليه السلام) বলেছিলেন হাওয়ারীদের উদ্দেশ্যে আল্লাহ্‌র পথে কে আমার সাহায্যকারী হবে? হাওয়ারীগণ বলেছিলঃ আমরাই তো

فَاٰمَنَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْۢ بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ وَ كَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ ۚ فَاَیَّدْنَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا عَلٰی عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِیْنَ ﴿۱۴﴾

আল্লাহ্‌র পথে সাহায্যকারী। অতঃপর বানী ইসরাঈলের একদল ঈমান আনলো এবং একদল কুফরী করলো। পরে আমি মু'মিনদেরকে শক্তিশালী করলাম তাদের শত্রুদের মুকাবিলায়; ফলে তারা বিজয়ী হলো।

সূরাঃ জুমুআ'হ্, মাদানী

سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ مَدَنِیَّةٌ

(আয়াতঃ ১১, রুকূ'ঃ ২)

اٰیَاتُهَا ١١ رُكُوْعَاتُهَا ٢

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

یُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِیْزِ الْحَكِیْمِ ﴿۱﴾

১. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে সবই পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে আল্লাহ্‌র, যিনি মহা অধিপতি, মহা পবিত্র, পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

هُوَ الَّذِیْ بَعَثَ فِی الْاُمِّیّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ یَتْلُوْا عَلَیْهِمْ اٰیٰتِهٖ وَیُزَكِّیْهِمْ وَیُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۗ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۲﴾

২. তিনিই উম্মীদের (নিরক্ষর জাতির) মধ্যে তাদের একজনকে পাঠিয়েছেন রাসূলরূপে, যিনি তাদের নিকট আবৃত্তি করেন তাঁর আয়াতসমূহ, তাদেরকে পবিত্র করেন এবং শিক্ষা দেন কিতাব ও হিকমত (সুন্নাত); যদিও ইতিপূর্বে তারা ছিল স্পষ্ট গোমরাহীতে।

وَّاٰخَرِیْنَ مِنْهُمْ لَمَّا یَلْحَقُوْا بِهِمْ ؕ وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۳﴾

৩. আর তাদের অন্যান্যের জন্যেও যারা এখনো তাদের সাথে মিলিত হয়নি। আল্লাহ্ পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাবান।

ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٤﴾

৪. এটা আল্লাহ্‌রই অনুগ্রহ, যাকে ইচ্ছা তিনি এটা দান করেন। আল্লাহ্ তো মহা অনুগ্রহশীল।

مَثَلُ الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ؕ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥﴾

৫. যাদেরকে তাওরাতের দায়িত্বভার অর্পণ করা হয়েছিল, অতঃপর তা তারা বহন করেনি, তাদের দৃষ্টান্ত কিতাবসমূহ বহনকারী গাধার ন্যায়। কত নিকৃষ্ট সেই সম্প্রদায়ের দৃষ্টান্ত যারা আল্লাহর আয়াতসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে, আল্লাহ্ অত্যাচারী সম্প্রদায়কে সৎপথে পরিচালিত করেন না।

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْۤا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ اَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٦﴾

৬. বলঃ হে ইয়াহূদীগণ! যদি তোমরা মনে কর যে, তোমরাই আল্লাহর বন্ধু, অন্য কোন মানুষ নয়; তবে তোমরা মৃত্যু কামনা কর যদি তোমরা সত্যবাদী হও।

وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗۤ اَبَدًا ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٧﴾

৭. কিন্তু তারা তাদের হস্ত যা পূর্বে প্রেরণ করেছে তার কারণে কখনো মৃত্যু কামনা করবে না। আল্লাহ যালিমদের সম্পর্কে সম্যক অবগত।

قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِىْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٨﴾

৮. বলঃ তোমরা যে মৃত্যু হতে পলায়ন কর সেই মৃত্যু তোমাদের অবশ্যই মুখোমুখি হবে। অতঃপর তোমাদেরকে হাজির করা হবে অদৃশ্য ও দৃশ্যের পরিজ্ঞাতা আল্লাহ্‌র নিকট এবং তিনি তোমাদেরকে জানিয়ে দিবেন যা তোমরা করতে।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نُوْدِىَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٩﴾

৯. হে মু'মিনগণ! জুমুআ'হ্‌র দিনে যখন নামাযের জন্যে আহ্বান (আযান) করা হবে তখন তোমরা আল্লাহর স্মরণে ধাবিত হও এবং ক্রয়-বিক্রয় ত্যাগ কর, এটাই

তোমাদের জন্যে শ্রেয় যদি তোমরা উপলব্ধি কর।

فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَ اذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٠﴾

১০. নামায সমাপ্ত হলে তোমরা পৃথিবীতে ছড়িয়ে পড়বে এবং আল্লাহ্‌র অনুগ্রহ সন্ধান করবে ও আল্লাহকে অধিক স্মরণ করবে যাতে তোমরা সফলকাম হও।

وَ إِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوًا انْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَآئِمًا ؕ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿١١﴾

১১. যখন তারা কোন ক্রয়-বিক্রয় বা খেল-তামাশা দেখে তখন তারা তোমাকে দাঁড়ানো অবস্থায় রেখে সেদিকে ছুটে যায়। বলঃ আল্লাহ্‌র নিকট যা আছে তা খেল-তামাশা ও ক্রয়-বিক্রয় অপেক্ষা উৎকৃষ্ট। আল্লাহ সর্বশ্রেষ্ঠ রিযিকদাতা।

সূরাঃ মুনাফিকূন, মাদানী

سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ مَدَنِيَّةٌ

(আয়াতঃ ১১, রুকূ'ঃ ২)

اٰيَاتُهَا ١١ رُكُوْعَاتُهَا ٢

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١﴾

১. যখন মুনাফিকরা তোমার নিকট আসে তখন তারা বলেঃ আমরা সাক্ষ্য দিচ্ছি যে, আপনি নিশ্চয়ই আল্লাহ্‌র রাসূল। আল্লাহ জানেন যে, তুমি নিশ্চয়ই তাঁর রাসূল এবং আল্লাহ সাক্ষ্য দিচ্ছেন যে, মুনাফিকরা অবশ্যই মিথ্যাবাদী।

اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢﴾

২. তারা তাদের শপথগুলোকে ঢালরূপে ব্যবহার করে, আর তারা আল্লাহর পথ হতে (মানুষকে) প্রতিহত করে। তারা যা করছে তা কত মন্দ!

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝٣

৩. এটা এজন্যে যে, তারা ঈমান আনার পর কুফরী করেছে, ফলে তাদের হৃদয়ে মোহর মেরে দেয়া হয়েছে। অতএব তারা কিছুই বুঝে না।

وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ ؕ وَاِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ؕ كَاَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ؕ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ؕ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝٤

৪. তুমি যখন তাদেরকে দেখবে তখন তাদের দেহাকৃতি তোমার নিকট প্রীতিকর মনে হয় এবং তারা যখন কথা বলে তখন তুমি (সাগ্রহে) তাদের কথা শ্রবণ কর, যেন তারা দেয়ালে ঠেকানো কাঠের স্তম্ভ সদৃশ; তারা যে কোন বড় আওয়াজকে তাদেরই বিরুদ্ধে মনে করে। তারাই শত্রু, অতএব তাদের সম্পর্কে সতর্ক হও, আল্লাহ্ তাদেরকে ধ্বংস করুন! বিভ্রান্ত হয়ে তারা কোথায় চলেছে?

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ وَرَاَيْتَهُمْ يَصُدُّوْنَ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ۝٥

৫. যখন তাদেরকে বলা হয়ঃ তোমরা এসো, আল্লাহ্র রাসূল (ﷺ) তোমাদের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা করবেন, তখন তারা মাথা ফিরিয়ে নেয় এবং তুমি তাদেরকে দেখতে পাও যে, তারা অহংকার করতঃ ফিরে যায়।

سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٦

৬. তুমি তাদের জন্যে ক্ষমা প্রার্থনা কর অথবা না কর, উভয়ই তাদের জন্যে সমান। আল্লাহ তাদেরকে কখনো ক্ষমা করবেন না। আল্লাহ ফাসেক সম্প্রদায়কে হেদায়েত দান করেন না।

هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ؕ وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝٧

৭. ওরা তো তারাই যারা বলেঃ আল্লাহর রাসূল (ﷺ)-এর নিকট যারা, তাদের জন্য ব্যয় করো না, যতক্ষণ তারা না সরে পড়ে। আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর ধন-ভান্ডার

তো আল্লাহরই; কিন্তু মুনাফিকরা তা বুঝে না।

৮. তারা বলেঃ আমরা যদি মদীনায় প্রত্যাবর্তন করি, তবে সেখান হতে সম্মানিতরা হীনদেরকে বহিস্কার করবে; কিন্তু মান-সম্মান তো আল্লাহরই আর তাঁর রাসূল (ﷺ) ও মু'মিনদের; কিন্তু মুনাফিকরা এটা জানে না।

يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَآ اِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ؕ وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨﴾

৯. হে মু'মিনগণ! তোমাদের ধন-সম্পদ ও সন্তান-সন্ততি যেন তোমাদেরকে আল্লাহর স্মরণ হতে উদাসীন না করে– যারা এমন করবে (উদাসীন হবে) তারাই তো ক্ষতিগ্রস্ত।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩﴾

১০. আমি তোমাদেরকে যে রিযিক দিয়েছি তোমরা তা হতে ব্যয় করবে তোমাদের কারো মৃত্যু আসার পূর্বে; (অন্যথায় মৃত্যু আসলে সে বলবে,) হে আমার প্রতিপালক! আমাকে আরো কিছু কালের জন্যে কেন অবকাশ দাও না, দিলে আমি সাদকা করতাম এবং সৎকর্মশীলদের অন্তর্ভুক্ত হতাম![১]

وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَاۤ اَخَّرْتَنِيْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠﴾

১১. নির্ধারিত কাল যখন উপস্থিত হবে, তখন আল্লাহ্ কাউকেও অবকাশ দিবেন না। তোমরা যা কর আল্লাহ সে সম্বন্ধে সবিশেষ অবহিত।

وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١١﴾

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ প্রতিদিন প্রত্যুষে যখন (আল্লাহ্র) বান্দারা ঘুম থেকে ওঠে তখন দু'জন ফেরেশ্তা আসমান থেকে নেমে আসে। তাদের একজন বলতে থাকে, হে আল্লাহ্! দাতাকে পুরস্কৃত কর এবং অপরজন বলতে থাকে, হে আল্লাহ্! কৃপণকে ধ্বংস কর। (বুখারী, হাদীস নং ১৪৪২)

সূরাঃ তাগাবুন, মাদানী

(আয়াতঃ ১৮, রুকূ'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُوْرَةُ التَّغَابُنِ مَدَنِيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ١٨ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۫ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ①

১. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে সবই তাঁর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে, কর্তৃত্ব তাঁরই এবং সমস্ত প্রশংসা তাঁরই, তিনি সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ②

২. তিনিই তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন, অতঃপর তোমাদের মধ্যে কেউ হয় কাফির এবং কেউ মু'মিন। তোমরা যা কর আল্লাহ তার সম্যক দ্রষ্টা।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ③

৩. তিনি সৃষ্টি করেছেন আকাশমন্ডলী ও পৃথিবী যথাযথভাবে এবং তোমাদেরকে আকৃতি দান করেছেন, আর তোমাদের আকৃতি করেছেন অতি সুন্দর, আর প্রত্যাবর্তন তো তাঁরই দিকে।

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ④

৪. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে সবই তিনি জানেন এবং তিনি জানেন তোমরা যা গোপন কর ও তোমরা যা প্রকাশ কর এবং আল্লাহ্ অন্তর্যামী।

اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۫ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ⑤

৫. তোমাদের নিকট কি পৌঁছেনি পূর্ববর্তী কাফিরদের খবর? তারা তাদের কর্মের মন্দফল আস্বাদন করেছিল এবং তাদের জন্যে রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ز فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ط وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ⑥

৬. তা এজন্যে যে, তাদের নিকট তাদের রাসূলগণ স্পষ্ট নিদর্শনাবলীসহ আসতেন তখন তারা বলতোঃ মানুষই কি আমাদেরকে পথের সন্ধান দিবে? অতঃপর তারা কুফরী করলো ও মুখ ফিরিয়ে নিলো; কিন্তু আল্লাহর কিছু যায় আসে না। আর আল্লাহ তো অভাবমুক্তই, অতি প্রশংসিত।

زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا ط قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ط وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ⑦

৭. কাফিররা ধারণা করে যে, তারা কখনো পুনরুত্থিত হবে না। বলঃ নিশ্চয়ই হবে, আমার প্রতিপালকের শপথ! তোমরা অবশ্যই পুনরুত্থিত হবে। অতঃপর তোমরা যা করতে তোমাদেরকে সে সম্বন্ধে অবশ্যই অবহিত করা হবে। এটা আল্লাহর পক্ষে অতি সহজ।

فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ اَنْزَلْنَا ط وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ⑧

৮. অতএব তোমরা আল্লাহ ও তাঁর রাসূল এবং যে জ্যোতি আমি অবতীর্ণ করেছি তাতে বিশ্বাস স্থাপন কর। তোমাদের কৃতকর্ম সম্পর্কে আল্লাহ সবিশেষ অবহিত।

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ط وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ط ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ⑨

৯. (স্মরণ কর,) যেদিন তিনি তোমাদেরকে সমবেত করবেন সমাবেশ দিবসে সেদিন হবে লাভ লোকসানের দিন। যে ব্যক্তি আল্লাহর প্রতি বিশ্বাস করে ও সৎকর্ম করে তিনি তার পাপরাশি মোচন করবেন এবং তাকে প্রবেশ করাবেন জান্নাতে যার পাদদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত, সেখানে তারা হবে চিরস্থায়ী। এটাই মহা সাফল্য।

وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٠﴾

১০. কিন্তু যারা কুফরী করে এবং আমার নিদর্শনসমূহকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করে তারাই জাহান্নামের অধিবাসী, সেখানে তারা স্থায়ী হবে। কত মন্দ ঐ প্রত্যাবর্তন স্থল!

مَاۤ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَ مَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ؕ وَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١١﴾

১১. আল্লাহর অনুমতি ব্যতীত কোন বিপদই আপতিত হয় না এবং যে আল্লাহকে বিশ্বাস করে তিনি তার অন্তরকে সুপথে পরিচালিত করেন। আল্লাহ সর্ববিষয়ে সর্বজ্ঞ।

وَ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿١٢﴾

১২. তোমরা আল্লাহ্‌র আনুগত্য কর এবং তাঁর রাসূল (ﷺ)-এর আনুগত্য কর, যদি তোমরা মুখ ফিরিয়ে নাও, তবে আমার রাসূলের দায়িত্ব শুধু স্পষ্টভাবে প্রচার করা।

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٣﴾

১৩. আল্লাহ্, তিনি ব্যতীত কোন (সত্য) মা'বূদ নেই; সুতরাং মু'মিনরা যেন আল্লাহর উপরই নির্ভর করে।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَ اَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَ اِنْ تَعْفُوْا وَ تَصْفَحُوْا وَ تَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤﴾

১৪. হে মু'মিনগণ! তোমাদের স্ত্রী ও সন্তান-সন্ততিদের মধ্যে কেউ কেউ তোমাদের শত্রু, অতএব তাদের সম্পর্কে তোমরা সতর্ক থেকো। তোমরা যদি তাদেরকে মার্জনা কর, তাদের দোষ-ত্রুটি উপেক্ষা কর এবং তাদেরকে ক্ষমা কর, তবে জেনে রেখো যে, আল্লাহ্ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

اِنَّمَاۤ اَمْوَالُكُمْ وَ اَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ؕ وَ اللّٰهُ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٥﴾

১৫. তোমাদের ধন-সম্পদ ও সন্তান-সন্ততি তো তোমাদের জন্যে পরীক্ষা; আল্লাহ্‌রই নিকট রয়েছে মহা প্রতিদান।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَ اسْمَعُوْا وَ اَطِيْعُوْا

১৬. তোমরা আল্লাহ্‌কে যথাসাধ্য ভয় কর, শুন, আনুগত্য কর ও ব্যয় কর

وَ اَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٦﴾

তোমাদের নিজেদেরই কল্যাণে, যারা অন্তরের কার্পণ্য হতে মুক্ত, তারাই সফলকাম।

اِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ۙ ﴿١٧﴾

১৭. যদি তোমরা আল্লাহকে উত্তম ঋণ দান কর তবে তিনি তোমাদের জন্যে এটা বহু গুণ বৃদ্ধি করবেন এবং তিনি তোমাদেরকে ক্ষমা করবেন। আল্লাহ্ গুণগ্রাহী, সহনশীল।

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾

১৮. তিনি দৃশ্য ও অদৃশ্যের পরিজ্ঞাতা, পরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।

سُوْرَةُ الطَّلَاقِ مَدَنِيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ١٢ رُكُوْعَاتُهَا ٢

সূরাঃ তালাক, মাদানী

(আয়াতঃ ১২, রুকূঃ ২)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَ لَا يَخْرُجْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ؕ وَ تِلْكَ

১. হে নবী (ﷺ)! তোমরা যখন তোমাদের স্ত্রীদেরকে তালাক দিতে ইচ্ছা কর তবে তাদেরকে তালাক দিয়ো ইদ্দতের প্রতি লক্ষ্য রেখে, ইদ্দতের হিসাব রেখো[১] এবং তোমাদের প্রতিপালক আল্লাহ্কে ভয় করো; তোমরা তাদেরকে তাদের

১। আবদুল্লাহ্ ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) বর্ণনা করেছেন যে, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর জীবদ্দশায় তিনি তাঁর ঋতুবতী স্ত্রীকে তালাক দিলে উমর ইবনুল খাত্তাব রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে এ বিষয়ে জিজ্ঞেস করলেন। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ তাকে (তোমার পুত্রকে) বলো সে যেনো তার স্ত্রী 'রুজু' করে (ফিরিয়ে নেয়) এবং 'তুহর' বা ঋতু থেকে পবিত্র হওয়া পর্যন্ত এবং তারপর ঋতুবতী হয়ে (পুনরায়) পাক না হওয়া পর্যন্ত স্ত্রী হিসেবেই রেখে দেয়। অতঃপর ইচ্ছা করলে তাকে রাখবে অন্যথায় যৌন-মিলন না করে তালাক দেবে। এভাবে ইদ্দত পালনের সুযোগ রেখে আল্লাহ্ তা'আলা স্ত্রীদেরকে তালাক দিতে আদেশ করেছেন। (বুখারী, হাদীস নং ৫২৫১)

حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ①

বাসগৃহ হতে বের করে দিও না এবং তারাও যেন বের না হয়, যদি না তারা লিপ্ত হয় স্পষ্ট অশ্লীলতায়; এগুলো আল্লাহর বিধান; যে আল্লাহর বিধান লঙ্ঘন করে সে নিজেরই উপর যুলুম করে। তুমি জান না, হয়তো আল্লাহ এর পর কোন উপায় বের করে দিবেন।

فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّاَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۙ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ②

২. যখন তারা তাদের ইদ্দতে পৌঁছে যায় তখন তোমরা হয় যথাবিধি তাদেরকে রেখে দিবে না হয় তাদেরকে যথাবিধি বিচ্ছিন্ন করে দিবে এবং তোমাদের মধ্য হতে দুই জন ন্যায়পরায়ণ লোককে সাক্ষী রাখবে; তোমরা আল্লাহর জন্যে সঠিক সাক্ষ্য দিয়ো। এটা দ্বারা তোমাদের মধ্যে যে আল্লাহ ও আখিরাতে বিশ্বাস করে তাকে উপদেশ দেয়া হচ্ছে। যে আল্লাহকে ভয় করে আল্লাহ তার পথ করে দিবেন।

وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ③

৩. আর তাকে তার ধারণাতীত উৎস হতে দান করবেন রিযিক; যে ব্যক্তি আল্লাহর উপর নির্ভর করে তার জন্যে আল্লাহই যথেষ্ট, আল্লাহ তাঁর ইচ্ছা পুরণ করবেনই, আল্লাহ সবকিছুর জন্যে স্থির করেছেন নির্দিষ্ট মাত্রা।

وَالّٰٓـِٔيْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآئِكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ وَّالّٰٓـِٔيْ لَمْ يَحِضْنَ ؕ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ

৪. তোমাদের যেসব স্ত্রীর ঋতুবতী হবার আশা নেই তাদের ইদ্দত সম্পর্কে তোমরা সন্দেহ করলে তাদের ইদ্দতকাল হবে তিন মাস এবং যাদের এখনো ঋতুকাল শুরু হয়নি তাদেরও (তিন মাস ইদ্দত) পালন করবে এবং গর্ভবতী নারীদের

مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ۝٤

ইদ্দতকাল সন্তান প্রসব পর্যন্ত। আল্লাহকে যে ভয় করে আল্লাহ তার কাজ-কর্ম সহজ করে দিবেন।

ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗۤ اِلَيْكُمْ ؕ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗۤ اَجْرًا ۝٥

৫. এটা আল্লাহর বিধান যা তিনি তোমাদের প্রতি অবতীর্ণ করেছেন; আল্লাহকে যে ভয় করে তিনি তার পাপরাশি মোচন করবেন এবং তাকে দিবেন মহাপুরস্কার।

اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا عَلَيْهِنَّ ؕ وَاِنْ كُنَّ اُولَاتِ حَمْلٍ فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَاِنْ اَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۚ وَاْتَمِرُوْا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ ۚ وَاِنْ تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهٗۤ اُخْرٰى ۝٦

৬. তোমরা তোমাদের সামর্থ অনুযায়ী যে স্থানে বাস কর তাদেরকে সে স্থানে বাস করতে দিয়ো; তাদেরকে কষ্ট দিওনা সংকটে ফেলার জন্যে, তারা গর্ভবতী থাকলে সন্তান প্রসব পর্যন্ত তাদের জন্যে ব্যয় করবে, যদি তারা তোমাদের সন্তানদেরকে স্তন্যদান করে তবে তাদেরকে পারিশ্রমিক দিবে এবং সন্তানের কল্যাণ সম্পর্কে তোমরা সঙ্গতভাবে নিজেদের মধ্যে পরামর্শ করবে; তোমরা যদি নিজ নিজ দাবীতে অনমনীয় হও তাহলে অন্য নারী তার পক্ষে স্তন্য দান করবে।

لِيُنْفِقْ ذُوْ سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهٗ فَلْيُنْفِقْ مِمَّاۤ اٰتٰىهُ اللّٰهُ ؕ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا مَاۤ اٰتٰىهَا ؕ سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ۝٧

৭. সামর্থবান নিজ সামর্থ অনুযায়ী ব্যয় করবে এবং যার জীবনোপকরণ সীমিত সে আল্লাহ যা দান করেছেন তা হতে ব্যয় করবে। আল্লাহ যাকে যে সামর্থ্য দিয়েছেন তদপেক্ষা অতিরিক্ত বোঝা তিনি তার উপর চাপান না। আল্লাহ কষ্টের পর সহজ করে দিবেন।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ اَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّعَذَّبْنٰهَا

৮. কত জনপদ তাদের প্রতিপালকের ও তাঁর রাসূলদের নির্দেশের বিরুদ্ধাচারণ করেছিল দম্ভভরে। ফলে আমি তাদের নিকট হতে কঠোর

عَذَابًا نُّكْرًا ⑧

হিসাব নিয়েছিলাম এবং তাদেরকে কঠিন আযাব দিয়েছিলাম।

فَذَاقَتْ وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا ⑨

৯. অতঃপর তারা তাদের কৃতকর্মের আযাব আস্বাদন করলো; ক্ষতিই ছিল তাদের কর্মের পরিণাম।

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰۤاُولِي الْاَلْبَابِ ۚ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۛ قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ⑩

১০. আল্লাহ তাদের জন্যে কঠিন শাস্তি প্রস্তুত রেখেছেন। অতএব হে বোধ সম্পন্ন ব্যক্তিগণ! তোমরা আল্লাহকে ভয় কর, যারা ঈমান এনেছো। নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাদের প্রতি অবতীর্ণ করেছেন উপদেশ–

رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ⑪

১১. প্রেরণ করেছেন এমন এক রাসূল (ﷺ), যিনি তোমাদের নিকট আল্লাহর সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ আবৃত্তি করেন, যারা মু'মিন ও সৎকর্মপরায়ণ তাদেরকে অন্ধকার হতে আলোকে আনার জন্যে। যে কেউ আল্লাহর প্রতি বিশ্বাস করে ও সৎকর্ম করে তিনি তাকে প্রবেশ করাবেন জান্নাতে, যার পাদদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত, সেখানে তারা চিরস্থায়ী হবে; আল্লাহ তাকে উত্তম রিযিক দিবেন।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ؕ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ⑫

১২. আল্লাহই সৃষ্টি করেছেন সপ্ত আকাশ এবং পৃথিবী ও ওগুলোর অনুরূপভাবে, ওগুলোর মধ্যে নেমে আসে তাঁর নির্দেশ; ফলে তোমরা বুঝতে পার যে, আল্লাহ সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান এবং জ্ঞানে (দ্বারা) আল্লাহ সবকিছুকে পরিবেষ্টন করে রয়েছেন।

সূরাঃ তাহ্‌রীম, মাদানী

(আয়াতঃ ১২, রুকূ'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ مَدَنِيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ١٢ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ①

১. হে নবী (ﷺ)! আল্লাহ্ তোমার জন্যে যা হালাল করেছেন তুমি তা হারাম করছো কেন? তুমি তোমার স্ত্রীদের সন্তুষ্টি চাচ্ছ; আল্লাহ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ②

২. আল্লাহ্ তোমাদের শপথ হতে মুক্তি লাভের ব্যবস্থা করেছেন, আল্লাহ্ তোমাদের সহায়; তিনি সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাবান।

وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ؕ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ③

৩. স্মরণ কর, নবী (ﷺ) তার স্ত্রীদের একজনকে গোপনে কিছু বলেছিলেন। অতঃপর যখন সে তা অন্যকে বলে দিয়েছিল এবং আল্লাহ্ নবী (ﷺ)-কে তা জানিয়ে দিয়েছিলেন, তখন নবী (ﷺ) এই বিষয়ে কিছু প্রকাশ করলেন এবং কিছু অব্যক্ত রাখলেন, যখন নবী (ﷺ) তা তাঁর সেই স্ত্রীকে জানালেন তখন সে বললঃ কে আপনাকে এটা অবহিত করলো? নবী বললেনঃ আমাকে অবহিত করেছেন তিনি যিনি সর্বজ্ঞ, সম্যক অবহিত।

اِنْ تَتُوْبَاۤ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ

৪. যদি তোমরা উভয়ে (অনুতপ্ত হয়ে) আল্লাহর দিকে প্রত্যাবর্তন কর, যেহেতু তোমাদের হৃদয় ঝুঁকে পড়েছে (তবে আল্লাহ্ তোমাদেরকে ক্ষমা করবেন); কিন্তু তোমরা যদি নবী (ﷺ)-এর বিরুদ্ধে একে

بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ﴿٤﴾

অপরের সাহায্য কর তবে জেনে রেখো যে, আল্লাহ্‌ই তার বন্ধু এবং জিবরাঈল (عليه السلام) ও সৎকর্মপরায়ণ মু'মিনগণও, উপরন্তু সমস্ত ফেরেশ্‌তাগণও তার সাহায্যকারী।

عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗۤ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ﴿٥﴾

৫. যদি নবী (ﷺ) তোমাদের সকলকে পরিত্যাগ করেন তবে তাঁর প্রতিপালক দিতে পারেন তাঁকে তোমাদের অপেক্ষা উৎকৃষ্টতর স্ত্রী- যারা হবে মুসলমান ঈমানদার, আনুগত্যকারিনী, তাওবা-কারিনী, ইবাদতকারিনী, রোযা পালনকারিনী, অকুমারী এবং কুমারী।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ﴿٦﴾

৬. হে মু'মিনগণ! তোমরা নিজেদেরকে এবং তোমাদের পরিবার পরিজনকে রক্ষা কর ঐ অগ্নি হতে, যার ইন্ধন হবে মানুষ ও পাথর, যাতে নিয়োজিত আছে নির্মম হৃদয়, কঠোর স্বভাব ফেরেশতাগণ, যারা অমান্য করে না আল্লাহ যা তাদেরকে আদেশ করেন তা এবং তাঁরা যা করতে আদিষ্ট হন তাই করেন।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ؕ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٧﴾

৭. হে কাফিরগণ! আজ তোমরা কোন প্রকার অজুহাত দাঁড় করো না। তোমরা যে আমল করতে তোমাদেরকে তারই প্রতিফল দেয়া হবে।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا ؕ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ يَوْمَ لَا يُخْزِى اللّٰهُ النَّبِيَّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

৮. হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহ্‌র নিকট তাওবা কর একান্ত বিশুদ্ধ তাওবা; যাতে তোমাদের প্রতিপালক তোমাদের মন্দ কর্মগুলোকে মোচন করে দেন এবং তোমাদেরকে প্রবেশ করান জান্নাতে, যার পাদদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত। সেই দিন আল্লাহ নবী এবং তাঁর মু'মিন বান্দাদেরকে

مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ بِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ⑧

অপদস্ত করবেন না। তাদের নূর তাদের সম্মুখে ও ডান পার্শ্বে ধাবিত হবে, তাঁরা বলবেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদের নূরকে পূর্ণতা দান করুন এবং আমাদেরকে ক্ষমা করুন, আপনি সর্ববিষয়ে ক্ষমতাবান।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ⑨

৯. হে নবী (ﷺ)! কাফির ও মুনাফিকদের বিরুদ্ধে জিহাদ করুন এবং তাদের প্রতি কঠোর হন। তাদের আশ্রয়স্থল জাহান্নাম, ওটা কত নিকৃষ্ট প্রত্যাবর্তন স্থল!

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّ امْرَاَتَ لُوْطٍ ؕ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ⑩

১০. আল্লাহ কাফিরদের জন্যে নূহ (عليه السلام) ও লূত (عليه السلام)-এর স্ত্রীর দৃষ্টান্ত উপস্থিত করেছেন; তারা ছিল আমার বান্দাদের মধ্যে দুই সৎকর্মপরায়ণ বান্দার অধীন; কিন্তু তারা তাদের প্রতি বিশ্বাসঘাতকতা করেছিল, ফলে নূহ (عليه السلام) ও লূত (عليه السلام) তাদেরকে আল্লাহর শাস্তি হতে রক্ষা করতে পারলেন না এবং তাদেরকে বলা হলোঃ জাহান্নামে প্রবেশকারীদের সাথে তোমরাও তাতে প্রবেশ কর।

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَ نَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ⑪

১১. আল্লাহ মু'মিনদের জন্যে উপস্থিত করছেন ফিরআ'উন স্ত্রীর দৃষ্টান্ত, যিনি প্রার্থনা করেছিলেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আপনার নিকট জান্নাতে আমার জন্যে একটি গৃহ নির্মাণ করুন এবং আমাকে উদ্ধার করুন ফিরআ'উন ও তার দুষ্কৃতি হতে এবং আমাকে উদ্ধার করুন যালিম সম্প্রদায় হতে।

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ
فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَصَدَّقَتْ
بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ﴿١٢﴾

১২. (আরো দৃষ্টান্ত দিচ্ছেন) ইমরানের কন্যা মরিয়মের– যিনি তাঁর সতীত্ব রক্ষা করেছিলেন, ফলে আমি তাঁর মধ্যে আমার রূহ হতে ফুঁকে দিয়েছিলাম এবং তিনি তাঁর প্রতিপালকের বাণী ও তাঁর কিতাবসমূহ সত্য বলে গ্রহণ করেছিলেন; তিনি ছিলেন অনুগতদের একজন।[১]

১। আবূ মূসা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, পুরুষদের মধ্যে বহুসংখ্যক লোক কামালিয়াত (পূর্ণতা) হাসিল করেছে; কিন্তু নারীদের মধ্যে ফির'আউনের স্ত্রী আসিয়া এবং ইমরানের কন্যা মারইয়াম ছাড়া আর কেউই পূর্ণতা অর্জনে সক্ষম হয়নি। তবে আয়েশার মর্যাদা সব নারীর ওপর এমন, যেমন সারীদের (শুরুয়া ও ঝোলে ভিজা রুটি) মর্যাদা সর্বপ্রকার খাদ্যের ওপর। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪১১)

সূরাঃ মুল্ক, মাক্কী

(আয়াতঃ ৩০, রুকূ'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُوْرَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٣٠ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

تَبٰرَكَ الَّذِىْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ ز وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرُ ۙ ①

১. বরকতময় তিনি, যাঁর হাতে সর্বময় কর্তৃত্ব; তিনি সব কিছুর উপর ক্ষমতাবান।

الَّذِىْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ط وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۙ ②

২. তিনি মৃত্যু ও জীবন সৃষ্টি করেছেন তোমাদেরকে পরীক্ষা করবার জন্য-কে তোমাদের মধ্যে আমলের দিক দিয়ে সর্বোত্তম। আর তিনি পরাক্রমশালী, ক্ষমাশীল।

الَّذِىْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ط مَا تَرٰى فِىْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ط فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ③

৩. তিনি সৃষ্টি করেছেন স্তরে স্তরে সাতটি আকাশ। দয়াময় আল্লাহর সৃষ্টিতে তুমি কোন খুঁত দেখতে পাবে না; আবার তাকিয়ে দেখো, কোন ত্রুটি দেখতে পাও কি?

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ④

৪. অতঃপর তুমি দুই বার করে দৃষ্টি ফিরাও, সেই দৃষ্টি ব্যর্থ ও ক্লান্ত হয়ে তোমার দিকে ফিরে আসবে।

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيْرِ ⑤

৫. আমি নিকটবর্তী আকাশকে সুশোভিত করেছি প্রদীপমালা (তারকারাজী) দ্বারা এবং ওগুলোকে শয়তানদেরকে প্রহার করার উপকরণ করেছি এবং তাদের জন্যে প্রস্তুত রেখেছি জাহান্নামের আযাব।

وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ط وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ⑥

৬. আর যারা তাদের প্রতিপালকের সাথে কুফরী করে তাদের জন্যে রয়েছে জাহান্নামের আযাব, ওটা কত মন্দ প্রত্যাবর্তনস্থল!

اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِىَ تَفُوْرُ ۙ ⑦

৭. যখন তারা তাতে (জাহান্নামে) নিক্ষিপ্ত হবে তখন তারা তার গর্জনের

শব্দ শুনবে, আর ওটা টগবগ করে ফুটবে।

تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ۭ كُلَّمَآ اُلْقِيَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَذِيْرٌ ⑧

৮. অত্যাধিক ক্রোধে তা ফেটে পড়ার উপক্রম হবে, যখনই তাতে কোন দলকে নিক্ষেপ করা হবে, তাদেরকে রক্ষীরা জিজ্ঞেস করবেঃ তোমাদের নিকট কি কোন সতর্ককারী আসেনি?

قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَاۗءَنَا نَذِيْرٌ ۙ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۚ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ⑨

৯. তারা উত্তরে বলবে, হ্যাঁ আমাদের নিকট সতর্ককারী এসেছিল, আমরা তাদেরকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছিলাম এবং বলেছিলামঃ আল্লাহ কিছুই অবতীর্ণ করেনি, তোমরা তো গুমরাহীতে রয়েছো।

وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيْٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ⑩

১০. এবং তারা আরো বলবেঃ যদি আমরা শুনতাম অথবা বিবেক-বুদ্ধি দিয়ে অনুধাবন করতাম, তবে আমরা জাহান্নামবাসী হতাম না।

فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ⑪

১১. অতঃপর তারা তাদের অপরাধ স্বীকার করবে। সুতরাং অভিশাপ জাহান্নামবাসীদের জন্যে!

اِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ⑫

১২. যারা না দেখেও তাদের প্রতিপালককে ভয় করে তাদের জন্যে রয়েছে ক্ষমা ও মহাপুরস্কার।

وَاَسِرُّوْا قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ⑬

১৩. তোমরা তোমাদের কথা চুপে চুপে বল অথবা উচ্চস্বর বল, তিনি তো অন্তরের গোপনীয়তা সম্পর্কেই সর্বজ্ঞ।

اَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ۭ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ⑭

১৪. যিনি সৃষ্টি করেছেন, তিনিই কি জানেন না? তিনি সূক্ষ্মদর্শী, ভালোভাবে অবগত।

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِيْ

১৫. তিনিই তো তোমাদের জন্যে যমীনকে চলাচলের উপযোগী

مَنَاكِبِهَا وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ؕ وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ ﴿١٥﴾

করেছেন; অতএব তোমরা ওর দিক-দিগন্তে ও রাস্তাসমূহে বিচরণ কর এবং তাঁর দেয়া রিযিক হতে আহার কর, পুনরুত্থান তো তাঁরই নিকট।

ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ فِى السَّمَآءِ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ الْاَرْضَ فَاِذَا هِىَ تَمُوْرُ ﴿١٦﴾

১৬. তোমরা কি নিরাপত্তা পেয়ে গেছ যে, আকাশে যিনি রয়েছেন তিনি তোমাদেরকে সহ ভূমিকে ধ্বসিয়ে দিবেন না? আর ওটা আকস্মিকভাবে থরথর করে কাঁপতে থাকবে।

اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِى السَّمَآءِ اَنْ يُّرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ؕ فَسَتَعْلَمُوْنَ كَيْفَ نَذِيْرِ ﴿١٧﴾

১৭. অথবা তোমরা কি নিরাপদ হয়ে গেছ যে, আকাশে যিনি রয়েছেন তিনি তোমাদের উপর পাথর বর্ষণকারী বাতাস প্রেরণ করবেন না? তখন তোমরা জানতে পারবে কিরূপ ছিল আমার সতর্কবাণী!

وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿١٨﴾

১৮. আর তাদের পূর্ববর্তীরাও মিথ্যা আরোপ করেছিল; ফলে কিরূপ হয়েছিল আমার শাস্তি?

اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَىْءٍ بَصِيْرٌ ﴿١٩﴾

১৯ তারা কি লক্ষ্য করে না তাদের উপরে পাখিসমূহের প্রতি, যারা ডানা বিস্তার করে ও সংকুচিত করে? দয়াময় আল্লাহই তাদেরকে স্থির রাখেন। তিনি সর্ববিষয়ে সম্যক দ্রষ্টা।

اَمَّنْ هٰذَا الَّذِىْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ؕ اِنِ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِىْ غُرُوْرٍ ﴿٢٠﴾

২০. দয়াময় আল্লাহ ব্যতীত তোমাদের এমন কোন সৈন্য বাহিনী আছে কি, যারা তোমাদের সাহায্য করবে? কাফিররা তো ধোঁকায় পড়ে আছে মাত্র।

اَمَّنْ هٰذَا الَّذِىْ يَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا فِىْ عُتُوٍّ وَّنُفُوْرٍ ﴿٢١﴾

২১. এমন কে আছে যে, তোমা-দেরকে রিযিক দান করবে, তিনি যদি রিযিক বন্ধ করে দেন? বস্তুতঃ তারা অবাধ্যতা ও সত্য বিমুখতায় অবিচল রয়েছে।

اَفَمَنْ يَّمْشِىْ مُكِبًّا عَلٰى وَجْهِهٖٓ اَهْدٰٓى اَمَّنْ يَّمْشِىْ سَوِيًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٢﴾

২২. যে ব্যক্তি উপুড় হয়ে মুখে ভর দিয়ে চলে, সে-ই কি সঠিক পথপ্রাপ্ত, না কি সেই ব্যক্তি যে সোজা হয়ে সরল পথে চলে?

قُلْ هُوَ الَّذِىْٓ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. বলঃ তিনিই তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন এবং তোমাদেরকে দিয়েছেন শ্রবণশক্তি, দৃষ্টিশক্তি ও অন্তঃকরণ। তোমরা অল্পই কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে থাকো।

قُلْ هُوَ الَّذِىْ ذَرَاَكُمْ فِى الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾

২৪. বলঃ তিনিই পৃথিবী ব্যাপী তোমাদেরকে ছড়িয়ে দিয়েছেন এবং তাঁরই কাছে তোমাদেরকে একত্রিত করা হবে।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾

২৫. আর এরা বলেঃ তোমরা যদি সত্যবাদী হও (তবে বলঃ) এই প্রতিশ্রুতি কবে বাস্তবায়িত হবে?

قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۖ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٦﴾

২৬. বলঃ এ জ্ঞান শুধু আল্লাহরই নিকট আছে; আমি স্পষ্ট সতর্ককারী মাত্র।

فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِىْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿٢٧﴾

২৭. যখন ওটা নিকটে দেখবে তখন কাফিরদের মুখমন্ডল বিবর্ণ হয়ে যাবে এবং তাদেরকে বলা হবেঃ এটাই তোমরা দাবী করতে।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِىَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِىَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٨﴾

২৮. বলঃ তোমরা ভেবে দেখেছো কি? যদি আল্লাহ আমাকে ও আমার সঙ্গীদেরকে ধ্বংস করেন অথবা আমাদের প্রতি রহম করেন তবে কাফিরদের কে রক্ষা করবে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি হতে?

قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٩﴾

২৯. বলঃ তিনিই দয়াময়, আমরা তাঁর প্রতি বিশ্বাস রেখেছি এবং তাঁরই উপর ভরসা করেছি, অচিরেই

তোমরা জানতে পারবে কে স্পষ্ট গোমরাহীতে রয়েছে।

৩০. বলঃ তোমরা ভেবে দেখেছো কি যদি তোমাদের পানি ভূ-গর্ভের তলদেশে চলে যায় তবে কে তোমাদেরকে এনে দিবে প্রবহমান পানি?

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ﴿٣٠﴾

সূরাঃ কলম, মাক্কী

(আয়াতঃ ৫২, রুকূ'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُوْرَةُ الْقَلَمِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٥٢ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. নূন-শপথ কলমের এবং তারা (ফেরেশ্‌তাগণ) যা লিপিবদ্ধ করে তার,

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ﴿١﴾

২. তোমার প্রতিপালকের অনুগ্রহে তুমি উন্মাদ নও।

مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ﴿٢﴾

৩. এবং নিশ্চয়ই তোমার জন্য রয়েছে অফুরন্ত পুরস্কার,

وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ﴿٣﴾

৪. নিশ্চয় তুমি মহান চরিত্রের উপর রয়েছ।

وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ﴿٤﴾

৫. সহসাই তুমিও দেখবে এবং তারাও দেখবে—

فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ ﴿٥﴾

৬. তোমাদের মধ্যে কে বিকারগ্রস্ত।

بِاَيِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ ﴿٦﴾

৭. তোমার প্রতিপালক ভালোভাবে অবগত আছেন যে, কে তাঁর পথ হতে বিচ্যুত হয়েছে এবং তিনি তাদের সম্পর্কেও অধিক জ্ঞাত যারা হেদায়েত প্রাপ্ত।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿٧﴾

فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِيْنَ ⑧

৮. অতএব তুমি মিথ্যাপ্রতিপন্ন-কারীদের অনুসরণ করো না।

وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ⑨

৯. তারা চায় যে, যদি তুমি নমনীয় হতে, তাহলে তারাও নমনীয় হবে,

وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ⑩

১০. এবং অনুসরণ করো না তার– যে কথায় কথায় শপথ করে, যে অতি নগণ্য,

هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِيْمٍ ⑪

১১. দোষারোপকারী, যে একের কথা অপরের নিকট লাগিয়ে বেড়ায়,

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ⑫

১২. যে কল্যাণের কাজে শক্ত বাধা দেয়, যে সীমালঙ্ঘনকারী, পাপিষ্ঠ,

عُتُلٍّۭ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ ⑬

১৩. রূঢ় স্বভাবের তা সত্ত্বেও তার কোন ভিত্তি নেই, জঘন্য প্রকৃতির।

اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِيْنَ ⑭

১৪. (এ জন্যে যে) সে ধন-সম্পদ ও সন্তান-সন্ততিতে সমৃদ্ধশালী।

اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ⑮

১৫. তার নিকট আমার আয়াতসমূহ আবৃত্তি করা হলে সে বলেঃ এটা তো প্রাচীনকালের রূপকথা মাত্র।

سَنَسِمُهٗ عَلَى الْخُرْطُوْمِ ⑯

১৬. অতিসত্ত্বর আমি তার শুঁড় দাগিয়ে দিবো।

اِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ ۚ اِذْ اَقْسَمُوْا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِيْنَ ⑰

১৭. আমি তাদেরকে পরীক্ষা করেছি, যেভাবে পরীক্ষা করেছিলাম বাগানের মালিকদেরকে যখন তারা শপথ করেছিল যে, তারা প্রত্যুষেই ফল কেটে নেবে বাগান হতে,

وَلَا يَسْتَثْنُوْنَ ⑱

১৮. এবং তারা ইন্‌শাআল্লাহ বলেনি।

فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُوْنَ ⑲

১৯. অতঃপর তোমার প্রতিপালকের নিকট হতে এক আযাব অতিবাহিত হলো সেই বাগানে, যখন তারা ছিল নিদ্রিত।

فَاَصْبَحَتْ كَالصَّرِيْمِ ⑳

২০. ফলে ওটা পুড়ে ছাই বর্ণ ধারণ করলো।

فَتَنَادَوْا مُصْبِحِيْنَ ﴿٢١﴾

২১. প্রভাতে তারা একে অপরকে ডেকে বললোঃ

اَنِ اغْدُوْا عَلٰى حَرْثِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰرِمِيْنَ ﴿٢٢﴾

২২. তোমরা যদি ফল কাটতে চাও তবে সকাল সকাল বাগানে চলো।

فَانْطَلَقُوْا وَهُمْ يَتَخَافَتُوْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. অতঃপর তারা চললো ফিস ফিস করে কথা বলতে বলতে,

اَنْ لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِّسْكِيْنٌ ﴿٢٤﴾

২৪. আজ বাগানে যেন তোমাদের নিকটে কোন অভাবগ্রস্ত ব্যক্তি প্রবেশ করতে না পারে।

وَّغَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ قٰدِرِيْنَ ﴿٢٥﴾

২৫. অতঃপর তারা (অভাবীদেরকে) প্রতিহত করতে সক্ষম—এই বিশ্বাস নিয়ে প্রভাতকালে (বাগানে) যাত্রা করলো।

فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْٓا اِنَّا لَضَآلُّوْنَ ﴿٢٦﴾

২৬. অতঃপর তারা যখন ঐ বাগান প্রত্যক্ষ করলো, তারা বললোঃ আমরা তো দিশা হারিয়ে ফেলেছি।

بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٢٧﴾

২৭. (না) বরং; আমরাই বঞ্চিত হয়েছি!

قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ لَوْ لَا تُسَبِّحُوْنَ ﴿٢٨﴾

২৮. তাদের শ্রেষ্ঠ ব্যক্তি বললোঃ আমি কি তোমাদেরকে বলিনি? যদি তোমরা আল্লাহর পবিত্রতা ঘোষণা করতে?

قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾

২৯. তখন তারা বললোঃ আমরা আমাদের প্রতিপালকের পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করছি, আমরা অত্যাচারী ছিলাম।

فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ ﴿٣٠﴾

৩০. এভাবে তারা একে অপরকে দোষা দিতে লাগলো।

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ ﴿٣١﴾

৩১. তারা বললোঃ হায়, দুর্ভোগ আমাদের! আমরা তো ছিলাম সীমালঙ্ঘনকারী।

عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ﴿٣٢﴾

৩২. আমরা আশা রাখি– আমাদের রব-এর পরিবর্তে আমাদেরকে দিবেন উৎকৃষ্টতর বাগান; আমরা আমাদের রবের দিকে প্রত্যাবর্তনকারী।

كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ط وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ م لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾

৩৩. শাস্তি এভাবেই এসে থাকে এবং পরকালের শাস্তি কঠিনতর হবে যদি তারা জানতো!

اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٣٤﴾

৩৪. নিশ্চয়ই মুত্তাকীদের জন্যে তাদের প্রতিপালকের নিকট নেয়ামত ভরা জান্নাত রয়েছে।

اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٥﴾

৩৫. আমি কি মুসলমানদেরকে অপরাধীদের মত করবো?

مَا لَكُمْ قف كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٦﴾

৩৬. কি হয়েছে তোমাদের? তোমরা কিরূপ ফয়সালা কর?

اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ تَدْرُسُوْنَ ﴿٣٧﴾

৩৭. তোমাদের নিকট কি কোন কিতাব আছে যাতে তোমরা অধ্যয়ন কর?

اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ﴿٣٨﴾

৩৮. নিশ্চয়ই তোমাদের জন্যে ওতে রয়েছে যা তোমরা পছন্দ কর?

اَمْ لَكُمْ اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لا اِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٩﴾

৩৯. তোমাদের সাথে কিয়ামত পর্যন্ত চলবে এমন কোন প্রতিজ্ঞায় আমি আবদ্ধ আছি কি যে, তোমরা নিজেদের জন্যে যা স্থির করবে সেখানে তা-ই পাবে?

سَلْهُمْ اَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ ﴿٤٠﴾

৪০. তুমি তাদেরকে জিজ্ঞেস কর– তাদের মধ্যে এই দাবীর যিম্মাদার কে?

اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ ج فَلْيَاْتُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ﴿٤١﴾

৪১. তাদের কি এমন শরীকরাও আছে? থাকলে তারা তাদের শরীকদেরকে উপস্থিত করুক যদি তারা সত্যবাদী হয়।

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٤٢﴾

৪২. (স্মরণ কর,) সেই দিন যেদিন হাঁটুর নিম্নাংশ[১] উন্মোচিত করা হবে এবং তাদেরকে আহ্বান করা হবে সিজদা করার জন্যে; কিন্তু তারা তা করতে সক্ষম হবে না।

خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾

৪৩. তাদের দৃষ্টি হবে অবনত, অপমানবোধ তাদেরকে আচ্ছন্ন করবে অথচ যখন তারা নিরাপদ ছিল তখন তো তাদেরকে আহ্বান করা হয়েছিল সিজদা করতে। (তারা অমান্য করেছে)

فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ؕ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٤﴾

৪৪. আমাকে এবং এই বাণীকে যারা মিথ্যা বলেছে তাদের ব্যাপারটি ছেড়ে দাও, আমি তাদেরকে এমনভাবে ক্রমে ক্রমে ধরবো তারা জানতে পারবে না।

وَاُمْلِيْ لَهُمْ ؕ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿٤٥﴾

৪৫. আর আমি তাদেরকে অবকাশ দিয়ে থাকি, নিশ্চয়ই আমার কৌশল শক্তিশালী।

اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿٤٦﴾

৪৬. তুমি কি তাদের নিকট কোন বিনিময় চাচ্ছ যে, তারা একে একটি দুর্বহ জরিমানা মনে করবে!

اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٤٧﴾

৪৭. তাদের কি অদৃশ্যের জ্ঞান আছে যে, তারা লিখে রাখে!

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوْتِ ۘ اِذْ نَادٰى وَهُوَ مَكْظُوْمٌ ﴿٤٨﴾

৪৮. অতএব তুমি ধৈর্যধারণ কর তোমার রবের নির্দেশের অপেক্ষায়, তুমি মাছওয়ালার (ইউনুস عليه السلام) ন্যায় (অধৈর্য) হয়ো না, সে চিন্তাগ্রস্ত অবস্থায় ডেকে ছিলো।

১। (ক) আবূ সাঈদ খুদরী (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ আমি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি যে, কিয়ামতের দিন আমাদের প্রভু স্বীয় পায়ের পিন্ডলী খুলবেন, তখন তাকে প্রত্যেক মোমেন পুরুষ এবং মহিলা সিজদা করবে। আর যারা পৃথিবীতে মানুষকে দেখানোর এবং শুনানোর জন্য সিজদা করত তারাই শুধু বাকী থাকবে। তারাও সেজদা করতে চাইবে; কিন্তু তারা তাদের পিঠ শক্ত কাঠের ন্যায় হয়ে যাবে, ফলে সিজদা করতে পারবে না। (বুখারী, হাদীস নং ৪১১৯)

لَوْلَآ اَنْ تَدٰرَكَهٗ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ مَذْمُوْمٌ ﴿٤٩﴾

৪৯. তার রবের অনুগ্রহ তার নিকট না পৌঁছলে সে অপমানিত হয়ে নিক্ষিপ্ত হতো খোলা প্রান্তরে।

فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٥٠﴾

৫০. পরিশেষে তার রব তাকে মনোনীত করলেন এবং তাকে সৎকর্মশীলদের অন্তর্ভুক্ত করলেন।

وَاِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٥١﴾

৫১. কাফিররা যখন উপদেশ বাণী (কুরআন) শ্রবণ করে তখন তারা যেন তাদের তীক্ষ্ম দৃষ্টি দ্বারা তোমাকে আছড়িয়ে ফেলতে চায় এবং বলেঃ সে তো এক পাগল।

وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٢﴾

৫২. এটাতো (কুরআন) বিশ্বজগতের জন্যে উপদেশ বাণী।

সূরাঃ হাক্কাহ্, মাক্কী

سُوْرَةُ الْحَآقَّةِ مَكِّيَّةٌ

(আয়াতঃ ৫২, রুকূ'ঃ ২)

اٰيَاتُهَا ٥٢ رُكُوْعَاتُهَا ٢

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَآقَّةُ ﴿١﴾

১. সেই অবশ্যম্ভাবী ঘটনা।

مَا الْحَآقَّةُ ﴿٢﴾

২. সেই অবশ্যম্ভাবী ঘটনা কী?

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحَآقَّةُ ﴿٣﴾

৩. তুমি কি জান যে, অবশ্যম্ভাবী ঘটনা কী?

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌۢ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾

৪. আ'দ ও সামূদ সম্প্রদায় মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছিল মহাপ্রলয়।

فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا بِالطَّاغِيَةِ ﴿٥﴾

৫. আর সামূদ সম্প্রদায়, তাদেরকে ধ্বংস করা হয়েছিল এক ভয়ঙ্কর আওয়াজ দ্বারা।

وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿٦﴾

৬. আর আ'দ সম্প্রদায়, তাদেরকে ধ্বংস করা হয়েছিল এক প্রচন্ড ঘুর্ণিঝড়ের দ্বারা।

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ ۙ حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ۚ ﴿٧﴾

৭. যা তিনি তাদের উপর প্রবাহিত করেছিলেন সাত রাত ও আট দিন বিরামহীনভাবে, তুমি (সেখানে থাকলে) সেই সম্প্রদায়কে দেখতে খেজুর কান্ডের ন্যায় সেখানে পড়ে আছে।

فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْۢ بَاقِيَةٍ ﴿٨﴾

৮. তাদের কাউকেও তুমি অবশিষ্ট পাচ্ছ কি?

وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ۚ ﴿٩﴾

৯. আর ফিরআ'উন এবং তার পূর্ববর্তীরা এবং উল্টে যাওয়া বস্তি বাসীরা (লূত সম্প্রদায়) গুরুতর পাপ কাজে লিপ্ত ছিল।

فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رَّابِيَةً ﴿١٠﴾

১০. তারা তাদের প্রতিপালকের রাসূলকে অমান্য করেছিল, ফলে তিনি তাদেরকে কঠোরভাবে পাকড়াও করলেন।

اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِى الْجَارِيَةِ ﴿١١﴾

১১. যখন পানি উথলিয়ে উঠেছিল তখন আমি তোমাদেরকে আরোহণ করিয়েছিলাম জাহাজে।

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ﴿١٢﴾

১২. আমি এটা করেছিলাম তোমাদের উপদেশের এবং শ্রবণকারী কর্ণ যেন এটা স্মরণ রাখে।

فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ﴿١٣﴾

১৩. যখন শিংগায় ফুৎকার দেয়া হবে-একটি মাত্র ফুৎকার।

وَّحُمِلَتِ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ﴿١٤﴾

১৪. আর পৃথিবী ও পর্বত মালাকে উত্তোলন করা হবে এবং একই ধাক্কায় চূর্ণ-বিচূর্ণ করে দেয়া হবে।

فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١٥﴾

১৫. সেদিন যা সংঘটিত হওয়ার (কিয়ামত) সংঘটিত হয়ে যাবে।

وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِىَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ﴿١٦﴾

১৬. এবং আকাশ চূর্ণ-বিচূর্ণ হয়ে শক্তিহীন হয়ে পড়বে।

وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا ۚ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ۝١٧

১৭. ফেরেশতাগণ তার পার্শ্বে পার্শ্বে থাকবে এবং সেদিন আটজন ফেরেশতা তোমার প্রতিপালকের আরশকে নিজেদের উপরে বহন করবে।

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۝١٨

১৮. সেই দিন তোমাদেরকে উপস্থিত করা হবে এবং তোমাদের কিছুই গোপন থাকবে না।

فَاَمَّا مَنْ اُوْتِىَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ۝١٩

১৯. অনন্তর যার আমলনামা তার ডান হাতে দেয়া হবে, সে বলবেঃ নাও, আমার আমলনামা পড়ে দেখো;

اِنِّىْ ظَنَنْتُ اَنِّىْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ۝٢٠

২০. আমি জানতাম যে, আমাকে অবশ্যই হিসাবের সম্মুখীন হতে হবে।

فَهُوَ فِىْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝٢١

২১. সুতরাং সে সন্তোষজনক জীবন যাপন করবে;

فِىْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝٢٢

২২. সুমহান জান্নাতে

قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ۝٢٣

২৩. যার ফলরাশি অতি নিকটে থাকবে নাগালের মধ্যে।

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِى الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ۝٢٤

২৪. খাও এবং পান কর তৃপ্তির সাথে, তোমরা অতীত দিনসমূহে যা করেছিলে তার বিনিময়ে।

وَاَمَّا مَنْ اُوْتِىَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِىْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ ۝٢٥

২৫. কিন্তু যার আমলনামা তার বাম হাতে দেয়া হবে, সে বলবেঃ হায়! আমাকে যদি আমার আমলনামা না দেয়া হত।

وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ۝٢٦

২৬. এবং আমি যদি আমার হিসাব কি তা না জানতাম!

يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۝٢٧

২৭. হায়! আমার মৃত্যুই যদি আমার শেষ হতো!

مَآ اَغْنٰى عَنِّىْ مَالِيَهْ ۝٢٨

২৮. আমার ধন-সম্পদ আমার কোন কাজেই আসলো না।

هَلَكَ عَنِّيْ سُلْطٰنِيَهْ ﴿٢٩﴾

২৯. আমার ক্ষমতা ও বিনাশ হয়েছে।

خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ﴿٣٠﴾

৩০. তাকে ধর। অতঃপর তার গলায় বেড়ি পরিয়ে দাও।

ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ﴿٣١﴾

৩১. অতঃপর তাকে জাহান্নামে নিক্ষেপ কর।

ثُمَّ فِيْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ﴿٣٢﴾

৩২. পুনরায় তাকে বেঁধে ফেলো এমন শিকল দ্বারা যার মাপ সত্তর হাত লম্বা।

اِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ ﴿٣٣﴾

৩৩. সে মহান আল্লাহতে বিশ্বাসী ছিল না,

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ﴿٣٤﴾

৩৪. এবং অভাবগ্রস্তকে খাদ্য দানে উৎসাহিত করতো না,[১]

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ ﴿٣٥﴾

৩৫. অতএব এই দিন সেখানে তার কোন অন্তরঙ্গ বন্ধু থাকবে না,

وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ ﴿٣٦﴾

৩৬. এবং ক্ষত নিঃসৃত কোন খাদ্য থাকবে না রক্ত ও পূঁজ ব্যতীত,

لَّا يَاْكُلُهٗٓ اِلَّا الْخَاطِـُٔوْنَ ﴿٣٧﴾

৩৭. যা শুধুমাত্র অপরাধীরাই ভক্ষণ করবে।

فَلَآ اُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٣٨﴾

৩৮. আমি শপথ করি ওর যা তোমরা দেখতে পাও,

وَمَا لَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٣٩﴾

৩৯. এবং যা তোমরা দেখতে পাও না।

اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ﴿٤٠﴾

৪০. নিশ্চয়ই এটা (কুরআন) এক সম্মানিত রাসূলের তেলাওয়াত,

وَّمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ۭ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾

৪১. এটা কোন কবির কথা নয়; তোমরা অল্পই বিশ্বাস কর,

وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾

৪২. এটা কোন গণকের কথাও নয়, তোমরা অল্পই উপদেশ গ্রহণ কর।

১। আব্দুল্লাহ্ ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, এক ব্যক্তি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) কে প্রশ্ন করল যে, ইসলামের কোন কাজটি সবচেয়ে উত্তম? তিনি বললেনঃ (অপরকে) খাদ্য খাওয়ানো এবং পরিচিত এবং অপরিচিত ব্যক্তিকে সালাম দেয়া। (বুখারী, হাদীস নং ১২)

৪৩. এটা জগতসমূহের প্রতি-পালকের নিকট হতে অবতীর্ণ।

تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٣﴾

৪৪. যদি সে নিজে কোন কথা বানিয়ে আমার কথা বলে চালিয়ে দিতো,

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ ﴿٤٤﴾

৪৫. তবে অবশ্যই আমি তার ডান হাত ধরে ফেলতাম,

لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ﴿٤٥﴾

৪৬. এবং কেটে দিতাম তার জীবন-ধমনী (শাহরগ)।

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ﴿٤٦﴾

৪৭. অতঃপর তোমাদের মধ্যে এমন কেউ নেই, যে তার ব্যাপারে আমাকে বিরত রাখতে পারে।

فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حٰجِزِيْنَ ﴿٤٧﴾

৪৮. এটা (কুরআন) মুত্তাকীদের জন্যে অবশ্যই এক উপদেশ।

وَاِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾

৪৯. আমি অবশ্যই জানি যে, তোমাদের মধ্যে মিথ্যা প্রতিপন্ন-কারীও রয়েছে।

وَاِنَّا لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾

৫০. এবং এই (কুরআন) নিশ্চয়ই কাফিরদের অনুশোচনার কারণ হবে,

وَاِنَّهٗ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾

৫১. অবশ্যই এটা নিশ্চিত সত্য।

وَاِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٥١﴾

৫২. অতএব তুমি তোমার মহান প্রতিপালকের নামের মহিমা ঘোষণা কর।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٥٢﴾

সূরাঃ মা'আরিজ, মাক্কী

(আয়াতঃ ৪৪, রুকূ'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُوْرَةُ الْمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٤٤ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. এক ব্যক্তি আবেদন করল সেই আযাবের যা সংঘটিত হবে–

سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ۙ﴿١﴾

২. কাফিরদের হতে তা প্রতিরোধ করার কেউ নেই।

لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ ۙ﴿٢﴾

৩. আল্লাহর নিকট হতে যিনি উর্ধ্বারোহণের বাহনসমূহের অধিকারী।

مِّنَ اللّٰهِ ذِى الْمَعَارِجِ ؕ﴿٣﴾

৪. ফেরেশতা এবং রূহ (জিবরাঈল (আলাইহিস সালাম) তাঁর দিকে উর্ধ্বগামী হয় এমন এক দিন যার পরিমাণ পঞ্চাশ হাজার বছরের সমান।

تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِىْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ﴿٤﴾

৫. সুতরাং তুমি উত্তম ধৈর্যধারণ কর।

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ﴿٥﴾

৬. তারা ঐ দিনকে অনেক দূরে মনে করে,

اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا ۙ﴿٦﴾

৭. কিন্তু আমি তা দেখছি নিকটে।

وَّنَرٰىهُ قَرِيْبًا ؕ﴿٧﴾

৮. সেদিন আকাশ হবে গলিত রূপার মত,

يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ۙ﴿٨﴾

৯. এবং পর্বতসমূহ হবে ধুনিত রঙ্গীন পশমের মত,

وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۙ﴿٩﴾

১০. আর কোন অন্তরঙ্গ বন্ধু কোন অন্তরঙ্গ বন্ধুর খোঁজ নিবে না,

وَلَا يَسْئَلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ۚۖ﴿١٠﴾

১১. তাদেরকে করা হবে একে অপরের দৃষ্টিগোচর। অপরাধী সেই দিনের আযাবের বদলে দিতে চাইবে সন্তান-সন্ততিকে,

يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ؕ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِىْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍۢ بِبَنِيْهِ ۙ﴿١١﴾

وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ ﴿١٢﴾

১২. তার স্ত্রী ও ভাইকে,

وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِيْ تُـْٔوِيْهِ ﴿١٣﴾

১৩. তার জ্ঞাতি-গোষ্ঠীকে, যারা তাকে আশ্রয় দিতো।

وَمَنْ فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ ثُمَّ يُنْجِيْهِ ﴿١٤﴾

১৪. এবং পৃথিবীর সকলকে, যাতে এই মুক্তিপণ তাকে মুক্তি দেয়।

كَلَّا ۭ اِنَّهَا لَظٰى ﴿١٥﴾

১৫. না, কখনো নয়, এটা তো লেলিহান অগ্নি শিখা,

نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى ﴿١٦﴾

১৬. যা মাথা হতে চামড়া খসিয়ে দিবে।

تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ وَتَوَلّٰى ﴿١٧﴾

১৭. জাহান্নাম ঐ ব্যক্তিকে ডাকবে, যে (সত্যের প্রতি) পৃষ্ঠ প্রদর্শন করেছিল ও মুখ ফিরিয়ে নিয়েছিল।

وَجَمَعَ فَاَوْعٰى ﴿١٨﴾

১৮. সে সম্পদ জমা করে এবং সংরক্ষিত করে রেখেছিল।

اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًا ﴿١٩﴾

১৯. মানুষ তো সৃজিত হয়েছে অতিশয় অস্থির চিত্তরূপে

اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا ﴿٢٠﴾

২০. যখন তাকে বিপদ স্পর্শ করে তখন সে হয় হা-হুতাশকারী।

وَّاِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوْعًا ﴿٢١﴾

২১. আর যখন কল্যাণ তাকে স্পর্শ করে তখন সে হয় অতি কৃপণ;

اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ ﴿٢٢﴾

২২. তবে নামাযীরা এমন নয়।

الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ دَآىِٕمُوْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. যারা তাদের নামাযে সদা নিয়মানুবর্তিতা অবলম্বনকারী,

وَالَّذِيْنَ فِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُوْمٌ ﴿٢٤﴾

২৪. আর তাদের সম্পদে নির্ধারিত হক রয়েছে।

لِّلسَّآىِٕلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿٢٥﴾

২৫. ভিক্ষুক ও বঞ্চিতদের,

وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٢٦﴾

২৬. এবং বিচার দিবসকে সত্য বলে মানে।

وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿٢٧﴾

২৭. আর যারা তাদের প্রতিপালকের আযাব সম্পর্কে ভীত-সন্ত্রস্ত

إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ﴿٢٨﴾

২৮. নিশ্চয়ই তাদের প্রতিপালকের আযাব হতে নির্ভয় থাকা যায় না–

وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ﴿٢٩﴾

২৯. এবং যারা নিজেদের লজ্জাস্থানকে হেফাযত করে;[১]

إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٣٠﴾

৩০. তাদের স্ত্রী অথবা অধিকারভুক্ত দাসীদের ক্ষেত্র ব্যতীত, এতে তারা নিন্দনীয় হবে না–

فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ﴿٣١﴾

৩১. তবে কেউ এদেরকে ছাড়া অন্যকে কামনা করলে তারা হবে সীমালঙ্ঘনকারী;[২]

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ﴿٣٢﴾

৩২. এবং যারা তাদের আমানত রক্ষা করে ও প্রতিশ্রুতি পূর্ণ করে,

وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَاتِهِمْ قَائِمُونَ ﴿٣٣﴾

৩৩. আর যারা তাদের সাক্ষ্য দানে (সততার ওপর) অটল,

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٣٤﴾

৩৪. এবং নিজেদের নামাযে যত্নবান-

أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُكْرَمُونَ ﴿٣٥﴾

৩৫. তারা সম্মানিত হবে জান্নাতে।

فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا قِبَلَكَ مُهْطِعِينَ ﴿٣٦﴾

৩৬. কাফিরদের হলো কি যে, তারা তোমার দিকে ছুটে আসছে

عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ ﴿٣٧﴾

৩৭. ডান ও বাম দিক হতে, দলে দলে?

أَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ يُدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيمٍ ﴿٣٨﴾

৩৮. তাদের প্রত্যেকে কি এ আশা করে যে, তাকে প্রবেশ করান হবে নিয়ামতপূর্ণ জান্নাতে?

১। সাহাল ইবনে সা'দ (রাযিআল্লাহু আনহু) রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন যে, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, যে ব্যক্তি তার দুই চোয়ালের মাঝখান (জবানের) এবং দু'পায়ের মাঝখানের (লজ্জাস্থানের) যামানত আমাকে দিবে। আমি তার জান্নাতের যামীন। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৭৪)

২। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেন, আমি তোমাদের কাছে একটি হাদীস বর্ণনা করব, যা আমি রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর কাছ থেকে শুনেছি এবং আমি ব্যতীত আর কেউ তোমাদেরকে বলবে না। আমি রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে বলতে শুনেছি, তিনি বলেছেনঃ কিয়ামতের শর্তসমূহের মধ্যে রয়েছেঃ (দ্বীনের) ইল্‌ম উঠে যাবে, জাহালত বা মূর্খতা বেড়ে যাবে, অবৈদ যৌন-মিলন বেড়ে যাবে, মদ্যপানের মাত্রা বেড়ে যাবে, পুরুষের সংখ্যা কমে যাবে এবং নারীদের সংখ্যা এত মাত্রায় বেড়ে যাবে যে, প্রতি একজন পুরুষকে পঞ্চাশজন মহিলার দেখাশুনা করতে হবে। (বুখারী, হাদীস নং ৫২৩১)

كَلَّا ۭ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٩﴾

৩৯. না, তা হবে না, আমি তাদেরকে যা হতে সৃষ্টি করেছি তা তারা জানে।

فَلَآ اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ ﴿٤٠﴾

৪০. আমি শপথ করছি উদয়াচল ও অস্তাচলের প্রভুর– নিশ্চয়ই আমি সক্ষম–

عَلٰٓي اَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٤١﴾

৪১. আমি তাদের অপেক্ষা উৎকৃষ্টতর মানবগোষ্ঠীকে তাদের স্থলবর্তী করতে আমাকে পেছনে ফেলে যাওয়ার মত কেউ নেই।

فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٤٢﴾

৪২. অতএব তাদেরকে অসার কর্ম ও খেল-তামাশায় মত্ত থাকতে দাও, তার সম্মুখীন হওয়ার পূর্ব পর্যন্ত যে দিবস সম্পর্কে তাদেরকে সতর্ক করা হয়েছিল।

يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ ﴿٤٣﴾

৪৩. সে দিন তারা কবর হতে বের হবে দ্রুত বেগে, মনে হবে যে, তারা কোন একটি আস্তানার দিকে ছুটে আসছে।

خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۭ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿٤٤﴾

৪৪. অবনত হবে তাদের দৃষ্টি; লাঞ্ছনা তাদেরকে আচ্ছন্ন করবে; এটাই সেই দিন, যার প্রতিশ্রুতি এদেরকে দেয়া হয়েছিল।

سُوْرَةُ نُوْحٍ مَكِّيَّةٌ

সূরাঃ নূহ, মাক্কী

اٰيَاتُهَا ٢٨ رُكُوْعَاتُهَا ٢

(আয়াতঃ ২৮, রুকূ'ঃ ২)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

اِنَّآ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ اَنْ اَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١﴾

১. নূহ (عليه السلام)-কে আমি প্রেরণ করেছিলাম তাঁর জাতির কাছে (নির্দেশসহঃ) যে তুমি তোমার জাতির লোকদেরকে সতর্ক কর তাদের প্রতি আযাব আসার পূর্বে।

قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۙ﴿٢﴾

২. তিনি বলেছিলেনঃ হে আমার জাতি। আমি তো তোমাদের জন্যে স্পষ্ট সতর্ককারী—

اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَ اتَّقُوْهُ وَ اَطِيْعُوْنِ ۙ﴿٣﴾

৩. তোমরা আল্লাহর ইবাদত কর ও তাঁকে ভয় কর এবং আমার আনুগত্য কর;

يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَ يُؤَخِّرْكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ اِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤﴾

৪. তিনি তোমাদের পাপরাশি ক্ষমা করবেন এবং তিনি তোমাদেরকে অবকাশ দিবেন এক নির্দিষ্ট কাল পর্যন্ত। নিশ্চয়ই আল্লাহ কর্তৃক নির্ধারিত সময় উপস্থিত হলে তা বিলম্বিত হয় না, যদি তোমরা এটা জানতে!

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ دَعَوْتُ قَوْمِيْ لَيْلًا وَّ نَهَارًا ۙ﴿٥﴾

৫. তিনি বলেছিলেনঃ হে আমার প্রতিপালক! আমি তো আমার সম্প্রদায়কে দিবারাত্র ডেকেছি,

فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِيْٓ اِلَّا فِرَارًا ﴿٦﴾

৬. কিন্তু আমার আহ্বান তাদের দূরে সরে থাকার প্রবণতাকেই বৃদ্ধি করেছে।

وَ اِنِّيْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْٓا اَصَابِعَهُمْ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَ اسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَ اَصَرُّوْا وَ اسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۚ﴿٧﴾

৭. আমি যখনই তাদেরকে আহ্বান করি যাতে আপনি তাদেরকে ক্ষমা করেন, তখনই তারা কানে আঙ্গুলী দেয়, বস্ত্রবৃত করে নিজেদেরকে ও যদি করতে থাকে এবং অতিশয় অহংকার প্রকাশ করে।

ثُمَّ اِنِّيْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۙ﴿٨﴾

৮. অতঃপর আমি তাদেরকে আহ্বান করেছি সুউচ্চস্বরে,

ثُمَّ اِنِّيْٓ اَعْلَنْتُ لَهُمْ وَ اَسْرَرْتُ لَهُمْ اِسْرَارًا ۙ﴿٩﴾

৯. পরে আমি তাদেরকে প্রকাশ্যে উপদেশ দিয়েছি এবং অতি গোপনে।

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۙ﴿١٠﴾

১০. বলেছিঃ তোমরা তোমাদের প্রতি পালকের ক্ষমা প্রার্থনা কর, তিনি তো অতিশয় ক্ষমাশীল,

يُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ﴿١١﴾

১১. তিনি তোমাদের জন্যে আকাশ হতে প্রচুর বৃষ্টিপাত করবেন,

وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ﴿١٢﴾

১২. তিনি তোমাদেরকে সমৃদ্ধ করবেন ধন-সম্পদ ও সন্তান-সন্ততিতে এবং তোমাদের জন্যে বাগানসমূহ তৈরি করবেন ও প্রবাহিত করবেন নদী-নালা।

مَا لَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ﴿١٣﴾

১৩. তোমাদের কি হয়েছে যে, তোমরা আল্লাহর শ্রেষ্ঠত্ব স্বীকার করতে চাচ্ছ না?

وَقَدْ خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا ﴿١٤﴾

১৪. অথচ তিনিই তোমাদেরকে পর্যায়ক্রমে সৃষ্টি করেছেন,

اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ﴿١٥﴾

১৫. তোমরা লক্ষ্য করনি? আল্লাহ কিভাবে সাত আসমানকে স্তরে স্তরে সৃষ্টি করেছেন?

وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿١٦﴾

১৬. এবং সেখানে চাঁদকে আলো ও সূর্যকে প্রদীপরূপে স্থাপন করেছেন?

وَاللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ نَبَاتًا ﴿١٧﴾

১৭. তিনি তোমাদেরকে উদ্ভূত করেছেন মাটি হতে উদ্ভিদ উৎপন্নের ন্যায়।

ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا ﴿١٨﴾

১৮. অতঃপর তোমাদেরকে তাতে তিনি প্রত্যাবৃত্ত করবেন ও পরে পুনরুত্থিত করবেন,

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا ﴿١٩﴾

১৯. এবং আল্লাহ তোমাদের জন্যে ভূমিকে করেছেন বিস্তৃত –

لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ﴿٢٠﴾

২০. যাতে তোমরা এর প্রশস্ত পথে চলাফেরা করতে পার।

قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ اِنَّهُمْ عَصَوْنِيْ وَاتَّبَعُوْا مَنْ لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهٗ وَوَلَدُهٗٓ اِلَّا خَسَارًا ﴿٢١﴾

২১. নূহ (عليه السلام) বলেছিলঃ হে আমার প্রতিপালক! তারা তো আমাকে অমান্য করেছে এবং অনুসরণ করেছে এমন লোকের যার

ধন-সম্পদ ও সন্তান-সন্ততি তার ক্ষতি ব্যতীত আর কিছুই বৃদ্ধি করেনি।

وَمَكَرُوْا مَكْرًا كُبَّارًا ﴿٢٢﴾

২২. আর তারা ভয়ানক ষড়যন্ত্র করেছে।

وَقَالُوْا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا ۙ وَّلَا يَغُوْثَ وَيَعُوْقَ وَنَسْرًا ﴿٢٣﴾

২৩. এবং বলেছিলঃ পরিত্যাগ করো না তোমরা কখনও তোমাদের উপাস্যগুলিকে এবং ওয়াদ, সুওয়া'আ, ইয়াগুস, ইয়াউক ও নাসরকেও পরিত্যাগ করো না।

وَقَدْ اَضَلُّوْا كَثِيْرًا ۚ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا ضَلٰلًا ﴿٢٤﴾

২৪. তারা অনেককে বিভ্রান্ত করেছে এবং যালিমদের বিভ্রান্তি ব্যতীত আর কিছুই বৃদ্ধি করবেন না।

مِمَّا خَطِيْٓـٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا نَارًا ۙ فَلَمْ يَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْصَارًا ﴿٢٥﴾

২৫. তাদের অপরাধের জন্যে তাদেরকে নিমজ্জিত করা হয়েছিল এবং পরে তাদেরকে প্রবেশ করানো হয়েছিল জাহান্নামে, অতঃপর তারা কাউকেও আল্লাহর মুকাবিলায় সাহায্যকারী পায়নি।

وَقَالَ نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ﴿٢٦﴾

২৬. নূহ (عليه السلام) আরো বলেছিলেনঃ হে আমার প্রতিপালক! পৃথিবীতে কাফিরদের মধ্য হতে কোন গৃহবাসীকে ছেড়ে দিবেন না।

اِنَّكَ اِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوْٓا اِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ﴿٢٧﴾

২৭. আপনি যদি তাদেরকে ছেড়ে দেন তারা আপনার বান্দাদেরকে বিভ্রান্ত করবে এবং যারা জন্মলাভ করবে তারা হবে দুষ্কৃতিকারী ও কাফির।

رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾

২৮. হে আমার প্রতিপালক! আপনি আমাকে, আমার পিতা-মাতাকে এবং যারা মু'মিন হয়ে আমার গৃহে প্রবেশ করে তাদেরকে এবং মু'মিন পুরুষ ও মু'মিন নারীদেরকে জমা করুন, আর যালিমদের জন্য ধ্বংস ছাড়া অন্য কিছু বৃদ্ধি করবেন না।

সূরাঃ জ্বীন মাক্কী

(আয়াতঃ ২৮, রুকূ'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُوْرَةُ الْجِنِّ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٢٨ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۙ ①

১. বলঃ আমার প্রতি ওহী প্রেরিত হয়েছে যে, জ্বীনদের একটি দল মনোযোগ সহকারে শ্রবণ করেছে এবং বলেছেঃ আমরা তো এক বিস্ময়কর কুরআন শ্রবণ করেছি।

يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۙ ②

২. যা সঠিক পথ-নির্দেশ করে; সে কারণে আমরা এতে ঈমান আনয়ন করেছি এবং আমরা কখনও আমাদের প্রতি পালকের কোন শরীক স্থাপন করবো না।

وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۙ ③

৩. এবং নিশ্চয়ই আমাদের প্রতিপালকের মর্যাদা সমুচ্চ; তিনি কোন স্ত্রী গ্রহণ করেন নি এবং কোন সন্তান।

وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۙ ④

৪. এবং আমাদের মধ্যকার নির্বোধরা আল্লাহর সম্বন্ধে অতি মিথ্যা উক্তি করতো।

وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۙ ⑤

৫. অথচ আমরা মনে করতাম যে, মানুষ এবং জ্বিন আল্লাহ সম্বন্ধে কখনো মিথ্যা বলবে না।

وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ۙ ⑥

৬. আর কতিপয় মানুষ কতক জ্বিনের আশ্রয় প্রার্থনা করতো, ফলে তারা নিজেদের সীমালঙ্ঘন আরো বাড়িয়ে দিয়েছে।

وَّاَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۙ ⑦

৭. তোমাদের মত তারাও (মানুষ) মনে করেছিল যে, আল্লাহ কাউকেও (রাসূল হিসেবে) পাঠাবেন না।

وَّ اَنَّا لَمَسْنَا السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا وَّشُهُبًا ﴿٨﴾

৮. এবং আমরা আকাশমন্ডলীকে স্পর্শ (পর্যবেক্ষণ) করেছি আর আমরা সেটা পেয়েছি কঠোর প্রহরী ও উল্কাপিন্ড দ্বারা পরিপূর্ণ।

وَّ اَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ؕ فَمَنْ يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ﴿٩﴾

৯. আর পূর্বে আমরা আকাশের বিভিন্ন ঘাঁটিতে (সংবাদ) শুনবার জন্যে বসতাম; কিন্তু এখন কেউ সংবাদ শুনতে চাইলে সে তখন প্রস্তুত জ্বলন্ত উল্কাপিন্ডের সম্মুখীন হয়।

وَّ اَنَّا لَا نَدْرِيْۤ اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِى الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ﴿١٠﴾

১০. আমরা জানি না যে, জগদ্বাসীর সাথে কোন খারাপ আচরণের ইচ্ছা করা হয়েছে না কি তাদের প্রতিপালক তাদের হেদায়েত চান।

وَّ اَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ ؕ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ﴿١١﴾

১১. এবং আমাদের কতক সৎকর্মপরায়ণ এবং কতক এর ব্যতিক্রম, আমরা ছিলাম বিভিন্ন পথের অনুসারী।

وَّ اَنَّا ظَنَنَّاۤ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِى الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ﴿١٢﴾

১২. আর আমাদের একান্ত বিশ্বাস হয়ে গেছে যে, আমরা পৃথিবীতে আল্লাহকে কোনক্রমে পরাভূত করতে পারবো না এবং পলায়ন করেও তাঁকে ব্যর্থ করতে পারব না।

وَّ اَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰۤى اٰمَنَّا بِهٖ ؕ فَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ﴿١٣﴾

১৩. এবং আমরা যখন হেদায়েতের বাণী শুনলাম তখন তাতে আমরা বিশ্বাস স্থাপন করলাম। যে ব্যক্তি তার প্রতিপালকের উপর বিশ্বাস স্থাপন করে সে তার কোন ক্ষতি ও কোন অন্যায়ের আশঙ্কা যেন না করে।

وَّ اَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَ مِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ؕ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ﴿١٤﴾

১৪. আমাদের কতক মুসলমান এবং কতক অত্যাচারী, যারা ইসলাম গ্রহণ করে তারা মুক্তির পথ খুঁজে পেয়েছে।

وَ اَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ﴿١٥﴾

১৫. অপর পক্ষে অত্যাচারীরা তো জাহান্নামেরই ইন্ধন।

وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّآءً غَدَقًا ﴿١٦﴾

১৬. তারা যদি সত্যপথে প্রতিষ্ঠিত থাকতো তবে তাদেরকে আমি অবশ্যই প্রচুর বারি বর্ষণের মাধ্যমে সমৃদ্ধ করতাম।

لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ﴿١٧﴾

১৭. যার দ্বারা আমি তাদেরকে পরীক্ষা করব। যে ব্যক্তি তার প্রতিপালকের স্মরণ হতে বিমুখ হয় তিনি তাকে কঠিন আযাবে প্রবেশ করাবেন।

وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ﴿١٨﴾

১৮. এবং নিশ্চয়ই সিজদার স্থানসমূহ (সমস্ত ইবাদত) আল্লাহরই জন্যে। সুতরাং আল্লাহর সাথে তোমরা অন্য কাউকেও ডেকো না।

وَّاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿١٩﴾

১৯. আর যখন আল্লাহর বান্দা তাঁকে ডাকবার জন্যে দাঁড়ায় তখন তারা তার নিকট ভিড় জমায়।

قُلْ اِنَّمَآ اَدْعُوْا رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٠﴾

২০. বলঃ নিশ্চয়ই আমি আমার প্রতিপালককেই ডাকি এবং তাঁর সাথে কাউকেও শরীক করি না।

قُلْ اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا ﴿٢١﴾

২১. বলঃ আমি তোমাদের অনিষ্টের ও পথ প্রদর্শনের ক্ষমতা রাখি না।

قُلْ اِنِّيْ لَنْ يُّجِيْرَنِيْ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ۙ وَّلَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٢﴾

২২. বলঃ আল্লাহ-এর শাস্তি হতে কেউই আমাকে রক্ষা করতে পারবে না এবং আল্লাহ ব্যতীত আমি কোন আশ্রয়ও পাবো না।

اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ﴿٢٣﴾

২৩. শুধু আল্লাহর পক্ষ হতে পৌঁছানো এবং তাঁর বাণী প্রচারই আমাকে রক্ষা করবে। যারা আল্লাহ ও তাঁর রাসূল (ﷺ)-কে অমান্য করে তাদের জন্যে রয়েছে জাহান্নামের আগুন, সেখানে তারা চিরস্থায়ী হবে।

حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّاَقَلُّ عَدَدًا ﴿٢٤﴾

২৪. যখন তারা প্রতিশ্রুত শাস্তি দেখবে, তখন তারা বুঝতে পারবে, সাহায্যকারী হিসাবে কে দুর্বল এবং কে সংখ্যায় স্বল্প।

قُلْ اِنْ اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ لَهٗ رَبِّيْٓ اَمَدًا ﴿٢٥﴾

২৫. বলঃ আমি জানি না যার প্রতিশ্রুতি তোমাদেরকে দেয়া হচ্ছে তা কি নিকটে, না আমার প্রতিপালক তার জন্যে কোন দীর্ঘ মেয়াদ স্থির করবেন?

عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٦﴾

২৬. তিনি অদৃশ্য জ্ঞানের অধিকারী, তিনি তাঁর অদৃশ্যের জ্ঞান কারো নিকট প্রকাশ করেন না।

اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ﴿٢٧﴾

২৭. তাঁর মনোনীত রাসূল ব্যতীত। তিনি তার সামনে এবং পিছনে প্রহরী নিয়োজিত করেন।

لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَاَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ﴿٢٨﴾

২৮. তাঁরা তাদের প্রতিপালকের রিসালত পৌঁছিয়ে দিয়েছেন কি না তা জানবার জন্যে; রাসূলদের নিকট যা আছে তা তার জ্ঞান গোচর এবং তিনি সবকিছুর বিস্তারিত হিসাব রাখেন।

সূরাঃ মুয্যাম্মিল, মাক্কী

(আয়াতঃ ২০, রুকূ'ঃ ২)

سُوْرَةُ الْمُزَّمِّلِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٢٠ رُكُوْعَاتُهَا ٢

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ﴿١﴾

১. হে বস্ত্রাবৃত!

قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٢﴾

২. রাত্রি জাগরণ (নামায আদায়) কর, কিছু অংশ।

نِّصْفَهٗٓ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ﴿٣﴾

৩. তার অর্ধেক কিংবা তদপেক্ষা কিছু কম।

اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ﴿٤﴾

৪. অথবা তদপেক্ষা বেশি। আর কুরআন পাঠ কর ধীরে ধীরে, (থেমে থেমে সুন্দরভাবে)

اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ﴿٥﴾

৫. আমি অচিরেই তোমার প্রতি অবতীর্ণ করবো ভারত্বপূর্ণ বাণী।

اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّاَقْوَمُ قِيْلًا ﴿٦﴾

৬. নিশ্চয়ই রাত্রিজাগরণ প্রবৃত্তি দমনে অধিক সহায়ক এবং উত্তম বাক্য প্রয়োগে অধিক অনুকূল।

اِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ﴿٧﴾

৭. নিশ্চয়ই দিনে তোমার জন্যে রয়েছে দীর্ঘ কর্মব্যস্ততা।

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ﴿٨﴾

৮. সুতরাং তুমি তোমার প্রতি পালকের নাম স্মরণ কর এবং (অন্য ব্যস্ততা ছিন্ন করে) একনিষ্ঠভাবে তাতে মগ্ন হও।

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ﴿٩﴾

৯. তিনি পূর্ব ও পশ্চিমের প্রভু, তিনি ব্যতীত কোন (সত্য) মা'বূদ নেই। অতএব তাঁকেই কর্মবিধায়ক রূপে গ্রহণ কর।

وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ﴿١٠﴾

১০. লোকেরা যা বলে, তাতে তুমি ধৈর্যধারণ কর এবং উত্তম পন্থায় তাদেরকে পরিহার করে চল।

وَذَرْنِيْ وَالْمُكَذِّبِيْنَ اُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ﴿١١﴾

১১. ছেড়ে দাও আমাকে এবং প্রাচুর্যবান মিথ্যাপ্রতিপন্নকারীদের; আর কিছুকালের জন্যে তাদেরকে অবকাশ দাও।

اِنَّ لَدَيْنَآ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ﴿١٢﴾

১২. আমার নিকট আছে শক্ত বেড়ী ও জ্বলন্ত আগুন,

وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٣﴾

১৩. আর আছে গলায় আটকে যায় এমন খাদ্য এবং যন্ত্রণাদায়ক আযাব।

يَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا ﴿١٤﴾

১৪. (এসব হবে) সেদিন যেদিন পৃথিবী ও পর্বতমালা প্রকম্পিত হবে এবং পর্বতসমূহ বহমান বালুকারাশির ন্যায় হবে।

إِنَّآ أَرْسَلْنَآ إِلَيْكُمْ رَسُولًا ۙ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ أَرْسَلْنَآ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ﴿١٥﴾

১৫. আমি তোমাদের নিকট এক রাসূল পাঠিয়েছি তোমাদের জন্যে সাক্ষী স্বরূপ যেমন ফিরআ'উনের নিকট একজন রাসূল পাঠিয়েছিলাম,

فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَٰهُ أَخْذًا وَبِيلًا ﴿١٦﴾

১৬. কিন্তু ফিরআ'উন সেই রাসূলকে অমান্য করেছিল, ফলে আমি তাকে কঠোরভাবে পাকড়াও করেছিলাম।

فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِن كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَٰنَ شِيبًا ﴿١٧﴾

১৭. অতএব কিভাবে তোমরা বাঁচতে পারবে যদি তোমরা কুফরী কর সেই দিনের প্রতি, যেদিন কিশোরকে বৃদ্ধ বানিয়ে দিবে,

السَّمَآءُ مُنفَطِرٌۢ بِهِۦ ۚ كَانَ وَعْدُهُۥ مَفْعُولًا ﴿١٨﴾

১৮. যেদিনের কঠোরতায় আকাশ ফেটে যাবে; তাঁর প্রতিশ্রুতি অবশ্যই বাস্তবায়িত হবে।

إِنَّ هَٰذِهِۦ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَن شَآءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِۦ سَبِيلًا ﴿١٩﴾

১৯. নিশ্চয়ই এটি উপদেশ, অতএব যার ইচ্ছা সে তার প্রতিপালকের পথ অবলম্বন করুক।

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِن ثُلُثَىِ الَّيْلِ وَنِصْفَهُۥ وَثُلُثَهُۥ وَطَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِينَ مَعَكَ ۚ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ عَلِمَ أَن لَّن تُحْصُوهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوا۟ مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْءَانِ ۚ عَلِمَ أَن سَيَكُونُ مِنكُم مَّرْضَىٰ ۙ وَءَاخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِى الْأَرْضِ يَبْتَغُونَ مِن فَضْلِ اللَّهِ ۙ وَءَاخَرُونَ يُقَٰتِلُونَ فِى سَبِيلِ اللَّهِ ۖ فَاقْرَءُوا۟ مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَأَقِيمُوا۟ الصَّلَوٰةَ وَءَاتُوا۟ الزَّكَوٰةَ وَأَقْرِضُوا۟ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا ۚ

২০. তোমার প্রতিপালক তো জানেন যে, তুমি জাগরণ কর কখনো রাত্রির প্রায় দুই তৃতীয়াংশ, কখনো অর্ধাংশ এবং কখনো এক তৃতীয়াংশ এবং তোমার সাথে যারা আছে তাদের একটি দলও জাগে এবং আল্লাহই রাত ও দিনের হিসাব রাখেন। তিনি জানেন যে, তোমরা কখনও এর সঠিক হিসাব রাখতে পারবে না, অতএব আল্লাহ তোমাদের প্রতি অনুগ্রহ করেছেন। কাজেই কুরআনের যতটুকু পাঠ করা তোমাদের জন্যে সহজ, ততটুকু পাঠ কর, তিনি (আল্লাহ) জানেন যে, তোমাদের মধ্যে কেউ কেউ অসুস্থ হয়ে পড়বে,

وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ؕ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾

অন্যান্যরা আল্লাহর অনুগ্রহ সন্ধানে দেশ ভ্রমণ করবে আবার কেউ আল্লাহর পথে সংগ্রামে লিপ্ত হবে। কাজেই কুরআন হতে যতটুকু সহজসাধ্য তা-ই পাঠ কর এবং নামায প্রতিষ্ঠিত কর, যাকাত প্রদান কর এবং আল্লাহ্কে দাও উত্তম ঋণ। তোমরা তোমাদের আত্মার মঙ্গলের জন্যে ভাল যা কিছু অগ্রিম প্রেরণ করবে তোমরা তা আল্লাহর নিকট পাবে। ওটা অধিক ভালো এবং পুরস্কার হিসেবে অনেক বড়। আর তোমরা ক্ষমা প্রার্থনা কর আল্লাহর নিকট, নিশ্চয়ই আল্লাহ পরম ক্ষমাশীল, দয়ালু।

সূরাঃ মুদ্দাস্সির মাক্কী

(আয়াতঃ ৫৬, রুকূ'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُوْرَةُ الْمُدَّثِّرِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٥٦ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ﴿١﴾

১. হে কম্বলাচ্ছাদিত।

قُمْ فَاَنْذِرْ ﴿٢﴾

২. ওঠো, অতঃপর ভীতি প্রদর্শন কর।

وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ﴿٣﴾

৩. এবং তোমার রবের শ্রেষ্ঠত্ব ঘোষণা কর।

وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ﴿٤﴾

৪. তোমার পোশাক পবিত্র রাখো,

وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ﴿٥﴾

৫. অপবিত্রতা হতে দূরে থাকো,

وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ﴿٦﴾

৬. অধিক লাভের আশায় দান (ইহ্সান) করো না।

৭. এবং তোমার প্রতিপালকের উদ্দেশ্যে ধৈর্যধারণ কর।

وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۝٧

৮. যেদিন শিংগায় ফুৎকার দেয়া হবে।

فَإِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُورِ ۝٨

৯. সেদিন হবে এক সংকটের দিন।

فَذَٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَوْمٌ عَسِيرٌ ۝٩

১০. যা কাফিরদের জন্যে সহজ নয়।

عَلَى الْكَافِرِينَ غَيْرُ يَسِيرٍ ۝١٠

১১. আমাকে ছেড়ে দাও এবং তাকে যাকে আমি সৃষ্টি করেছি একাই।

ذَرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا ۝١١

১২. আমি তাকে বিপুল ধন-সম্পদ দিয়েছি।

وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَمْدُودًا ۝١٢

১৩. এবং সাক্ষ্য দানকারী পুত্রগণ।

وَبَنِينَ شُهُودًا ۝١٣

১৪. এবং তাকে দিয়েছি স্বচ্ছন্দ জীবনের বহু উপকরণ,

وَمَهَّدْتُ لَهُ تَمْهِيدًا ۝١٤

১৫. এরপরও সে কামনা করে, যেন আমি তাকে আরো অধিক দিই।

ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ ۝١٥

১৬. তা কখনও নয়, সে তো আমার নিদর্শনসমূহের হিংসা ও বিরুদ্ধচারী।

كَلَّا ۖ إِنَّهُ كَانَ لِآيَاتِنَا عَنِيدًا ۝١٦

১৭. আমি অচিরেই তাকে কঠিন স্থানে উঠাব।

سَأُرْهِقُهُ صَعُودًا ۝١٧

১৮. সে তো চিন্তা করলো এবং সিদ্ধান্ত গ্রহণ করলো।

إِنَّهُ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۝١٨

১৯. ধ্বংস হোক সে! কেমন করে সে এই সিদ্ধান্ত নিলো!

فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝١٩

২০. আরোও ধ্বংস হোক তার! কেমন করে সে এই সিদ্ধান্তে উপনীত হলো!

ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝٢٠

২১. সে আবার চেয়ে দেখলো।

ثُمَّ نَظَرَ ۝٢١

২২. অতঃপর সে ভ্রুকুঞ্চিত ও মুখ বিকৃত করলো।

ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۝٢٢

২৩. অতঃপর সে পিছনে ফিরলো এবং দম্ভ প্রকাশ করলো।

ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ۝٢٣

فَقَالَ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ يُّؤْثَرُ ﴿٢٤﴾

২৪. এবং বললোঃ এটা চিরাচরিত যাদু ছাড়া আর কিছু নয়,

اِنْ هٰذَآ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ﴿٢٥﴾

২৫. এটা তো মানুষেরই কথা।

سَاُصْلِيْهِ سَقَرَ ﴿٢٦﴾

২৬. আমি তাকে জাহান্নামে নিক্ষেপ করবো,

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ ﴿٢٧﴾

২৭. তুমি কি জান "জাহান্নাম" কী?

لَا تُبْقِيْ وَلَا تَذَرُ ﴿٢٨﴾

২৮. ওটা তাদেরকে (জীবিতবস্থায়) রাখবে না ও (মৃত অবস্থায়) ছেড়ে দিবে না

لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ﴿٢٩﴾

২৯. এটা তো শরীরের চামড়া ঝলসিয়ে দেবে,

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ﴿٣٠﴾

৩০. সেখানে (জাহান্নামে) রয়েছে উনিশ জন (প্রহরী)।

وَمَا جَعَلْنَآ اَصْحٰبَ النَّارِ اِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۙ وَّمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ اِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَيَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْكٰفِرُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ اِلَّا هُوَ ؕ وَمَا هِيَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ ﴿٣١﴾

৩১. আমি ফেরেশ্তাদেরকে জাহান্নামের প্রহরী করেছি কাফিরদের পরীক্ষার জন্য আমি তাদের এই সংখ্যা উল্লেখ করেছি যাতে আহলে কিতাবের দৃঢ় বিশ্বাস জন্মে, ঈমানদারদের ঈমান বর্ধিত হয় এবং বিশ্বাসীগণ এবং আহলে কিতাব যেন সন্দেহ পোষণ না করেন। এর ফলে যাদের অন্তরে ব্যাধি আছে তারা ও কাফিররা বলবেঃ আল্লাহ্ এ বর্ণনা দ্বারা কি বুঝাতে চেয়েছেন? এইভাবে আল্লাহ্ যাকে ইচ্ছা পথভ্রষ্ট করেন এবং যাকে ইচ্ছা হেদায়েত দান করেন। তোমার প্রতিপালকের বাহিনী সম্পর্কে একমাত্র তিনিই জানেন। (জাহান্নামের) এই বর্ণনা তো সমস্ত মানুষের জন্য নিছক উপদেশ।

كَلَّا وَالْقَمَرِ ﴿٣٢﴾

৩২. কখনই না চন্দ্রের শপথ,

وَالَّيْلِ اِذْ اَدْبَرَ ﴿٣٣﴾

৩৩. শপথ রাত্রির, যখন ওর অবসান ঘটে,

وَالصُّبْحِ اِذَآ اَسْفَرَ ﴿٣٤﴾

৩৪. শপথ প্রভাতকালের, যখন ওটা হয় আলোকোজ্বল-

اِنَّهَا لَاِحْدَى الْكُبَرِ ﴿٣٥﴾

৩৫. এটি (জাহান্নাম) বড় ভয়াবহ বিষয়ের অন্যতম,

نَذِيْرًا لِّلْبَشَرِ ﴿٣٦﴾

৩৬. সমস্ত মানুষের জন্যে সতর্ককারী

لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّتَقَدَّمَ اَوْ يَتَاَخَّرَ ﴿٣٧﴾

৩৭. তোমাদের মধ্যে যে অগ্রসর হতে চায় কিংবা যে পিছিয়ে পড়ে, তার জন্যে

كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ﴿٣٨﴾

৩৮. প্রত্যেক ব্যক্তি নিজ কৃতকর্মের কাছে দায়বদ্ধ,

اِلَّآ اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ﴿٣٩﴾

৩৯. তবে দক্ষিণপার্শ্বস্থ ব্যক্তিরা (ডান হাতে আমলনামা প্রাপ্তগণ) নয়,

فِيْ جَنّٰتٍ ۛ يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٤٠﴾

৪০. তারা জান্নাতে থাকবে এবং তারা পরস্পর পরস্পরকে জিজ্ঞেস করবে।

عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٤١﴾

৪১. অপরাধীদের সম্পর্কে,

مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ﴿٤٢﴾

৪২. তোমাদেরকে কিসে সাকার (জাহান্নাম)-এ নিক্ষেপ করেছে?

قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ﴿٤٣﴾

৪৩. তারা বলবেঃ আমরা নামাযীদের অন্তর্ভুক্ত ছিলাম না।

وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ﴿٤٤﴾

৪৪. আমরা অভাবগ্রস্তদেরকে খাবার দিতাম না,

وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ﴿٤٥﴾

৪৫. এবং আমরা সমালোচনা-কারীদের সাথে সমালোচনায় মগ্ন থাকতাম।

وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٤٦﴾

৪৬. আমরা কর্মফল দিবসকে মিথ্যাপ্রতিপন্ন করতাম,

حَتّٰٓى اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ۝٤٧

৪৭. আমাদের নিকট মৃত্যুর আগমন পর্যন্ত।

فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ۝٤٨

৪৮. ফলে (সে সময়) শাফায়াতকারীদের শাফায়াত তাদের কোন কাজে আসবে না।

فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ۝٤٩

৪৯. তাদের কী হলো যে, উপদেশবাণী (কুরআন) হতে মুখ ফিরিয়ে নেয়?

كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ۝٥٠

৫০. তারা যেন ছুটাছুটিকারী গাধা।

فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ۝٥١

৫১. যা সিংহের সম্মুখ হতে পলায়নপর।

بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ۝٥٢

৫২. বরং তাদের প্রত্যেকেই চায় যে, তাকে একটি উন্মুক্ত কিতাব দেয়া হোক।

كَلَّا ۭ بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ۝٥٣

৫৩. কখনও নয়, বরং তারা আদৌ আখিরাতের ভয় করে না।

كَلَّآ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ۝٥٤

৫৪. কখনও নয়, ওটা তো (কুরআনই) উপদেশ বাণী।

فَمَنْ شَاۗءَ ذَكَرَهٗ ۝٥٥

৫৫. অতএব, যার ইচ্ছা সে এটা হতে উপদেশ গ্রহণ করুক।

وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَاۗءَ اللّٰهُ ۭ هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ۝٥٦

৫৬. আল্লাহর ইচ্ছা ব্যতিরেকে কেউ উপদেশ গ্রহণ করবে না একমাত্র তিনিই ভয়ের যোগ্য এবং তিনিই ক্ষমা করার অধিকারী।

সূরাঃ কিয়ামাহ্, মাক্কী

(আয়াতঃ ৪০, রুকূ'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُوْرَةُ الْقِيٰمَةِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٤٠ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ ﴿١﴾

১. আমি শপথ করছি কিয়ামত দিবসের,

وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ﴿٢﴾

২. আরো শপথ করছি তিরস্কারকারী আত্মার।

اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ؕ ﴿٣﴾

৩. মানুষ কি মনে করে যে, আমি তার হাড়গুলো কোনক্রমে একত্র করতে পারবো না।

بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ﴿٤﴾

৪. বরং হ্যাঁ অবশ্যই আমি তার অঙ্গুলীর অগ্রভাগ পর্যন্ত পুনর্বিন্যস্ত করতে সক্ষম।

بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗ ﴿٥﴾

৫. তবুও মানুষ ভবিষ্যতেও অপকর্ম করতে চায়;

يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ؕ ﴿٦﴾

৬. সে প্রশ্ন করে কখন কিয়ামত দিবস আসবে?

فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۙ ﴿٧﴾

৭. অতঃপর যখন চক্ষু স্থির হয়ে যাবে,

وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۙ ﴿٨﴾

৮. এবং চাঁদ আলোহীন হয়ে পড়বে,

وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۙ ﴿٩﴾

৯. যখন সূর্য ও চন্দ্রকে একত্রিত করা হবে,

يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ۚ ﴿١٠﴾

১০. সেদিন মানুষ বলবেঃ আজ পালাবার স্থান কোথায়?

كَلَّا لَا وَزَرَ ؕ ﴿١١﴾

১১. কখনো না. কোন আশ্রয়স্থল নেই।

اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ۨالْمُسْتَقَرُّ ؕ ﴿١٢﴾

১২. সেদিন তোমার প্রতিপালকেরই নিকট দাঁড়াতে হবে।

يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍۭ بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ﴿١٣﴾

১৩. সেদিন মানুষকে অবহিত করা হবে যা সে, অগ্রে পাঠিয়েছে ও পশ্চাতে রেখে গেছে।

بَلِ الْاِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ﴿١٤﴾

১৪. বরং মানুষ নিজের সম্বন্ধে ভালো করে জানে,

وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ﴿١٥﴾

১৫. যদিও সে নানা অজুহাত পেশ করে।

لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ﴿١٦﴾

১৬. তাড়াতাড়ি ওহী আয়ত্ব করার জন্যে তুমি তোমার জিহ্বা ওর সাথে দ্রুত সঞ্চালন করো না।

اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَ قُرْاٰنَهٗ ﴿١٧﴾

১৭. তা সংরক্ষণ ও পাঠ করাবার দায়িত্ব আমারই।

فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهٗ ﴿١٨﴾

১৮. সুতরাং যখন আমি তা (জিবরাঈল-এর মাধ্যমে) পাঠ করি তুমি তখন সেই পাঠের অনুসরণ কর।

ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ﴿١٩﴾

১৯. অতঃপর এর বিশদ ব্যাখ্যার দায়িত্ব আমারই।

كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ ﴿٢٠﴾

২০. কখনও না, বরং তোমরা প্রকৃতপক্ষে দ্রুত লাভ করাকে (দুনিয়াকে) ভালবাস;

وَتَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿٢١﴾

২১. এবং আখিরাতকে উপেক্ষা কর।

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿٢٢﴾

২২. কোন কোন মুখমন্ডল সেদিন উজ্জ্বল হবে,

اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿٢٣﴾

২৩. নিজেরা প্রতিপালকের দিকে তাকিয়ে থাকবে।

وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍۭ بَاسِرَةٌ ﴿٢٤﴾

২৪. কোন কোন মুখমন্ডল সেদিন বিবর্ণ হবে

تَظُنُّ اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿٢٥﴾

২৫. এই আশঙ্কায় যে, এক ধ্বংসকারী বিপর্যয় আসন্ন।

كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ﴿٢٦﴾

২৬. কখনই না, যখন প্রাণ ওষ্ঠাগত হবে,

وَقِيْلَ مَنْ ۜ سَكْرَاقٍ ﴿٢٧﴾

২৭. এবং বলা হবেঃ কে তাকে ঝাড়-ফুঁক করবে (রক্ষার জন্য)?

وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿٢٨﴾

২৮. এবং মনে করবে এটা বিদায়ক্ষণ।

وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿٢٩﴾

২৯. এবং পায়ের সাথে পা জড়িয়ে যাবে।

اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ۨالْمَسَاقُ ﴿٣٠﴾

৩০. আজ তোমার প্রতিপালকের নিকট যাওয়ার দিন।

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ﴿٣١﴾

৩১. সে বিশ্বাস করেনি এবং নামাযও পড়েনি।

وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٣٢﴾

৩২. বরং সে মিথ্যাপ্রতিপন্ন করেছিল ও মুখ ফিরিয়ে নিয়েছিল।

ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ﴿٣٣﴾

৩৩. অতঃপর সে তার পরিবার-পরিজনের নিকট ফিরে গিয়েছিল দম্ভভরে,

اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿٣٤﴾

৩৪. এটি তোমার জন্য প্রযোজ্য এবং এটা তোমাকেই মানায়।

ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿٣٥﴾

৩৫. হ্যাঁ! এটা তোমারই প্রাপ্য, তুমিই এর হকদার।

اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًى ﴿٣٦﴾

৩৬. মানুষ কি মনে করে যে, তাকে নিরর্থক ছেড়ে দেয়া হবে?

اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ﴿٣٧﴾

৩৭. সে কি নিক্ষিপ্ত শুক্রবিন্দু ছিল না?

ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ﴿٣٨﴾

৩৮. অতঃপর সে রক্তপিন্ডে পরিণত হয়। তারপর তাকে আকৃতি দান করেন এবং সুঠাম করেন।

فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿٣٩﴾

৩৯. তারপর তিনি তা হতে সৃষ্টি করেন জোড়া জোড়া পুরুষ ও নারী।

اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ﴿٤٠﴾

৪০. তবুও কি তিনি মৃতকে পুনর্জীবিত করতে সক্ষম নন?

সূরাঃ দাহ্‌র, মাক্কী

(আয়াতঃ ৩১, রুকূ'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

سُوْرَةُ الدَّهْرِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٣١ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. মানুষের উপর অন্তহীন মহাকালের এমন এক সময় কি এসেছিল যখন সে উল্লেখযোগ্য কিছুই ছিল না?

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ①

২. আমি তো মানুষকে সৃষ্টি করেছি সংমিশ্রিত শুক্র বিন্দু হতে, তাকে পরীক্ষা করবো, এই জন্যে আমি তাকে শ্রবণ ও দৃষ্টিশক্তি দিয়েছি।

اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًۢا بَصِيْرًا ②

৩. আমি তাকে পথ দেখিয়েছি এরপর হয় সে কৃতজ্ঞ হবে, নয়তো হবে অকৃতজ্ঞ।

اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا ③

৪. আমি কাফিরদের জন্যে প্রস্তুত রেখেছি শৃঙ্খল, বেড়ি ও লেলিহান অগ্নি।

اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَا۠ وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا ④

৫. নিশ্চয়ই সৎকর্মশীলরা পান করবে এমন পানীয় যার মিশ্রণ হবে কাফূর (কর্পূর)

اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ⑤

৬. এমন একটি ঝর্ণা যা হতে আল্লাহর বান্দারা পান করবে, তারা এই ঝর্ণাকে যথা ইচ্ছা প্রবাহিত করবে।

عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ⑥

৭. তারা মানত পূর্ণ করে এবং সেদিনের ভয় করে, যেদিনের অনিষ্টতা হবে ব্যাপক।

يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ⑦

৮. এবং খাদ্যের প্রতি আসক্তি সত্ত্বেও অভাবগ্রস্ত, ইয়াতীম ও বন্দীকে আহার্য দান করে,

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ⑧

إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ⑨

৯. (এবং বলেঃ) শুধু আল্লাহর সন্তুষ্টি লাভের উদ্দেশ্যে আমরা তোমাদেরকে খাদ্য দান করি, আমরা তোমাদের নিকট হতে কোন প্রতিদান চাই না, কৃতজ্ঞতাও নয়।

إِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ⑩

১০. আমরা আশঙ্কা করি আমাদের প্রতিপালকের নিকট হতে এক ভীতিপ্রদ ভয়ঙ্কর দিনের।

فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقّٰىهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ⑪

১১. পরিণামে আল্লাহ তাদেরকে রক্ষা করবেন সে দিবসের অনিষ্ট হতে এবং তাদেরকে উৎফুল্লতা ও আনন্দ দান করবেন।

وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ⑫

১২. আর তাদের ধৈর্যশীলতার পুরস্কার স্বরূপ তাদেরকে জান্নাত ও রেশমী পোশাক দান করবেন।

مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ⑬

১৩. সেখানে তারা সুসজ্জিত আসনে হেলান দিয়ে বসবে তারা সেখানে অতিশয় গরম অথবা অতিশয় শীত কোনটিই দেখবে না।

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ⑭

১৪. জান্নাতের বৃক্ষছায়া তাদের উপর ঝুকে থাকবে এবং ওর ফলমূল সম্পূর্ণরূপে তাদের আয়ত্বাধীন থাকবে।

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا ⑮

১৫. তাদেরকে পরিবেশন করা হবে রৌপ্যপাত্রে এবং কাঁচের মত স্বচ্ছ পান পাত্রে—

قَوَارِيْرَا مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ⑯

১৬. রৌপ্য জাতীয় কাঁচের পাত্রে, পরিবেশনকারীরা যথাযথ পরিমাণে তা পূর্ণ করবে।

وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ⑰

১৭. সেখানে তাদেরকে পান করতে দেয়া হবে যানজাবীল (আদা দিয়ে তৈরি) মিশ্রিত পানীয়,

عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ﴿١٨﴾

১৮. জান্নাতের এক ঝর্ণা থাকবে যার নাম হবে সালসাবীল।

وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ﴿١٩﴾

১৯. তাদেরকে পরিবেশন করবে চির কিশোরগণ, যখন তাদেরকে দেখবে মনে করবে তারা যেন ছড়ানো-ছিটানো মুক্তা,

وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا ﴿٢٠﴾

২০. তুমি যখন সেখানে দেখবে, দেখতে পাবে কত নিয়ামত এবং বিশাল রাজ্য।

عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ ز وَّحُلُّوْٓا اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ﴿٢١﴾

২১. তাদের পরিধানে থাকবে মিহি রেশমের সবুজ পোশাক, তারা অলংকৃত হবে রৌপ্য নির্মিত কংকনে, আর তাদের প্রতিপালক তাদেরকে পান করাবেন বিশুদ্ধ পানীয়।

اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿٢٢﴾

২২. অবশ্যই, এটা তোমাদের পুরস্কার এবং তোমাদের কর্মপ্রচেষ্টা স্বীকৃত।

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ﴿٢٣﴾

২৩. আমি তোমার ওপরে কুরআন ক্রমান্বয়ে অবতীর্ণ করেছি,

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ اٰثِمًا اَوْ كَفُوْرًا ﴿٢٤﴾

২৪. অতএব তুমি তোমার প্রতিপালকের নির্দেশের জন্য ধৈর্যধারণ কর এবং তাদের মধ্যকার পাপি অথবা কাফিরের আনুগত্য করো না।

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٢٥﴾

২৫. এবং তোমাদের প্রতিপালকের নাম স্মরণ কর সকাল-সন্ধ্যায়।

وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا ﴿٢٦﴾

২৬. রাতে তাঁর জন্য সিজদায় নত হও এবং রাতে দীর্ঘ সময় তাঁর পবিত্রতা বর্ণনা কর।

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ﴿٢٧﴾

২৭. নিশ্চয়ই তারা ভালবাসে দ্রুত লাভ করাকে এবং তারা পরবর্তী কঠিন দিবসকে উপেক্ষা করে চলে।

نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ وَشَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ تَبْدِيْلًا ﴿٢٨﴾

২৮. আমি তাদেরকে সৃষ্টি করেছি এবং আমি তাদের গঠন সুদৃঢ় করেছি। আমি যখন ইচ্ছা করবো তখন তাদের পরিবর্তে তাদের অনুরূপ এক জাতিকে প্রতিষ্ঠিত করবো।

اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٢٩﴾

২৯. এটা এক উপদেশ বাণী, অতএব যার ইচ্ছা সে তার প্রতিপালকের দিকে যাওয়ার পথ অবলম্বন করুক।

وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٣٠﴾

৩০. তোমরা ইচ্ছা করবে না যদি না আল্লাহ ইচ্ছা করেন। নিশ্চয়ই আল্লাহ সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাবান।

يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِىْ رَحْمَتِهٖ ؕ وَالظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣١﴾

৩১. তিনি যাকে ইচ্ছা তাঁর অনুগ্রহের অন্তর্ভুক্ত করেন; আর যালিমরা, তাদের জন্যে তিনি প্রস্তুত রেখেছেন যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

سُوْرَةُ الْمُرْسَلٰتِ مَكِّيَّةٌ

সূরাঃ মুরসালাত্, মাক্কী

اٰيَاتُهَا ٥٠ رُكُوْعَاتُهَا ٢

(আয়াতঃ ৫০, রুকূ'ঃ ২)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)।

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ﴿١﴾

১. শপথ কল্যাণ স্বরূপ প্রেরিত বায়ুর,

فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ﴿٢﴾

২. আর প্রলয়ঙ্কারী ঝড়ের,

وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ﴿٣﴾

৩. শপথ বহনকারী বায়ুর,

فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ﴿٤﴾

৪. আর (মেঘপুঞ্জ) বিচ্ছিন্নকারী বায়ুর,

فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ﴿٥﴾

৫. এবং তার যে মানুষের অন্তরে পৌঁছিয়ে দেয় উপদেশ-

عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ۙ﴿٦﴾

৬. অনুশোচনা স্বরূপ বা সতর্কতা স্বরূপ।

اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ؕ﴿٧﴾

৭. নিশ্চয়ই তোমাদেরকে যে প্রতিশ্রুতি দেয়া হচ্ছে তা অবশ্যই সংঘটিত হবে।

فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ۙ﴿٨﴾

৮. যখন নক্ষত্র রাজির আলো নিভিয়ে দেয়া হবে,

وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ۙ﴿٩﴾

৯. যখন আকাশ ফেঁড়ে দেয়া হবে

وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ۙ﴿١٠﴾

১০. এবং যখন পর্বতমালা ধুনিত হবে,

وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ؕ﴿١١﴾

১১. এবং রাসূলগণকে নির্ধারিত সময়ে উপস্থিত করা হবে,

لِاَيِّ يَوْمٍ اُجِّلَتْ ؕ﴿١٢﴾

১২. কোন দিবসের জন্যে বিলম্বিত করা হচ্ছে?

لِيَوْمِ الْفَصْلِ ۚ﴿١٣﴾

১৩. তুমি কী জান চূড়ান্ত বিচার দিবসের জন্য?

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ؕ﴿١٤﴾

১৪. চূড়ান্ত বিচার দিবস সম্বন্ধে

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٥﴾

১৫. সেদিন দুর্ভোগ মিথ্যা আরোপকারীদের জন্যে।

اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِيْنَ ؕ﴿١٦﴾

১৬. আমি কী পূর্ববর্তীদেরকে ধ্বংস করিনি?

ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٧﴾

১৭. আবার আমি পরবর্তীদেরকে তাদের অনুগামী করবো।

كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٨﴾

১৮. অপরাধীদের সাথে আমি এরূপই করে থাকি।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٩﴾

১৯. সেদিন দুর্ভোগ মিথ্যা আরোপ-কারীদের জন্যে।

اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۙ﴿٢٠﴾

২০. আমি কি তোমাদেরকে নগণ্য পানি হতে সৃষ্টি করিনি?

فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۙ﴿٢١﴾

২১. অতঃপর আমি ওটাকে স্থাপন করেছি নিরাপদ স্থানে,

إِلَىٰ قَدَرٍ مَّعْلُومٍ ﴿٢٢﴾

২২. এক নির্দিষ্টকাল পর্যন্ত,

فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. আমি একে গঠন করেছি পরিমিতভাবে, অতএব আমি কত নিপুণ নিরূপণকারী।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٤﴾

২৪. সেদিন দুর্ভোগ মিথ্যা আরোপকারীদের জন্যে।

اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ﴿٢٥﴾

২৫. আমি কি ভূমিকে একত্রিতকারী রূপে বানাই নি,

اَحْيَآءً وَّاَمْوَاتًا ﴿٢٦﴾

২৬. জীবিত ও মৃতের জন্যে?

وَّجَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ وَّاَسْقَيْنٰكُمْ مَّآءً فُرَاتًا ﴿٢٧﴾

২৭. আমি তাতে স্থাপন করেছি সুদৃঢ় উচ্চ পর্বতমালা এবং তোমাদেরকে পান করিয়েছি সুপেয় পানি।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٨﴾

২৮. সেদিন দুর্ভোগ মিথ্যা আরোপকারীদের জন্যে।

اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٩﴾

২৯. তোমরা চল তারই দিকে যাকে মিথ্যা মনে করতে।

اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى ظِلٍّ ذِيْ ثَلٰثِ شُعَبٍ ﴿٣٠﴾

৩০. চল সে ছায়ার দিকে যার তিনটি শাখা রয়েছে,

لَّا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِيْ مِنَ اللَّهَبِ ﴿٣١﴾

৩১. যে ছায়া শীতল নয় এবং যা হতে রক্ষাও করে না অগ্নিশিখা,

اِنَّهَا تَرْمِيْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿٣٢﴾

৩২. নিশ্চয়ই সে নিক্ষেপ করবে প্রাসাদতুল্য স্ফুলিঙ্গ।

كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ﴿٣٣﴾

৩৩. যা দেখে মনে হবে হলুদ বর্ণের উট।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٤﴾

৩৪. সেই দিন দুর্ভোগ মিথ্যা-রোপকারীদের জন্য।

هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

৩৫. এটা এমন একদিন যেদিন তারা কিছু বলতে পারবে না।

وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ ﴿٣٦﴾

৩৬. এবং না তাদেরকে অনুমতি দেয়া হবে ওযর পেশ করার।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٣٧﴾

৩৭. সেই দিন ধ্বংস মিথ্যারোপ কারীদের জন্যে

هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۚ جَمَعْنٰكُمْ وَالْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٨﴾

৩৮. এটা চূড়ান্ত ফায়সালার দিন, আমি একত্রিত করেছি তোমাদেরকে এবং পূর্ববর্তীদেরকে ।

فَاِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيْدُوْنِ ﴿٣٩﴾

৩৯. তোমাদের কোন অপকৌশল থাকলে তা প্রয়োগ কর আমার বিরুদ্ধে।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٠﴾

৪০. সেই দিন ধ্বংস মিথ্যা-রোপকারীদের জন্যে।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ ظِلٰلٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٤١﴾

৪১. মুত্তাকীরা থাকবে সুশীতল ছায়ায় ও ঝর্ণাবহুল স্থানে।

وَّفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٤٢﴾

৪২. এবং যে ফল-মুল তারা কামনা করবে।

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾

৪৩. তোমরা মজা করে খাও এবং পান কর তোমাদের কাজের বিনিময় স্বরূপ।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٤٤﴾

৪৪. এভাবে আমি সৎকর্মপরায়ণ দেরকে পুরস্কৃত করে থাকি।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٥﴾

৪৫. সেদিন ধ্বংস মিথ্যা আরোপকারীদের জন্যে।

كُلُوْا وَتَمَتَّعُوْا قَلِيْلًا اِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ ﴿٤٦﴾

৪৬. তোমরা খাও, আর আনন্দ-ফুর্তি কর অল্প কিছুদিন, প্রকৃতপক্ষে তো তোমরা অপরাধী।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٧﴾

৪৭. সেদিন ধ্বংস মিথ্যা-আরোপকারীদের জন্যে।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ ارْكَعُوْا لَا يَرْكَعُوْنَ ﴿٤٨﴾

৪৮. যখন তাদেরকে বলা হয়ঃ তোমরা রুকূ কর (নামায আদায় কর) তখন তারা রুকূ করে না ১

১। আনাস ইবনে মালেক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, আমাকে লোকদের সঙ্গে জিহাদ করার হুকুম দেয়া হয়েছে। যতক্ষণ না তারা বলে, 'লা-ইলাহা ইল্লাল্লাহ' অর্থাৎ "আল্লাহ্ ছাড়া সত্য কোন মা'বূদ নেই।" যখন তারা তা বলবে এবং আমাদের মত নামায পড়বে, আমাদের কিবলার দিকে মুখ করবে এবং আমাদের যবেহ করা প্রাণী খাবে, তখন তাদের রক্ত ও সম্পদ আমাদের জন্য হারাম সাব্যস্ত হবে। তবে ইসলাম তাদের জন্য যে হক নির্ধারণ করে দিয়েছে তা ছাড়া এবং তাদের আন্তরিকতার হিসেব আল্লাহর নিকট। (বুখারী. হাদীস নং ৩৯)

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾

৪৯. সেদিন ধ্বংস মিথ্যা আরোপকারীদের জন্যে।

فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٠﴾

৫০. সুতরাং তারা এর (কুরআনের) পরিবর্তে আর কোন কথায় বিশ্বাস স্থাপন করবে?

সূরাঃ নাবা, মাক্কী

(আয়াতঃ ৪০ রুকূ'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةُ النَّبَا مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٤٠ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ۚ ①

১. এরা পরস্পর কোন বিষয়ে জিজ্ঞাসাবাদ করছে?

عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ۙ ②

২. মহান সংবাদটি সম্বন্ধে,

الَّذِىْ هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ ؕ ③

৩. যে বিষয়ে তারা মতবিরোধ করছে!

كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۙ ④

৪. অবশ্যই (তাদের ধারণা অবাস্তব) তারা শীঘ্রই তা জানতে পারবে;

ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ⑤

৫. অতঃপর বলি অবশ্যই তারা তা অচিরেই অবগত হবে।

اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا ۙ ⑥

৬. আমি কি পৃথিবীকে বিছানা বানিয়ে দেয়নি?

وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ۙ ⑦

৭. ও পাহাড়সমূহকে পেরেক রূপে গেঁড়ে দেইনি?

وَّخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ۙ ⑧

৮. জোড়ায় জোড়ায় সৃষ্টি করেছি আমি তোমাদেরকে,

وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۙ ⑨

৯. তোমাদের নিদ্রাকে করে দিয়েছি বিশ্রামের মাধ্যম,

وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ۙ ⑩

১০. আর রাত্রিকে করেছি আবরণ,

وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۚ ⑪

১১. এবং দিবসকে করেছি উপযোগী জীবিকা আহরণের জন্যে।

وَّبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۙ ⑫

১২. আর নির্মাণ করেছি তোমাদের ওপর সুদৃঢ় সাত আকাশ।

وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ۙ ⑬

১৩. এবং সৃষ্টি করেছি একটি অতি উজ্জ্বল প্রদীপ (সূর্য)।

وَّاَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ۙ ⑭

১৪. আর বর্ষণ করেছি মেঘমালা হতে অবিশ্রান্ত পানি।

لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ﴿١٥﴾

১৫. এর দ্বারা আমি উৎপন্ন করি শস্য ও উদ্ভিদ,

وَّجَنّٰتٍ اَلْفَافًا ﴿١٦﴾

১৬. এবং নিবিড়-ঘন বাগানসমূহ।

اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ﴿١٧﴾

১৭. নিশ্চয়ই নির্ধারিত আছে বিচার দিবস;

يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ﴿١٨﴾

১৮. যে দিন শিংগায় ফুঁৎকার দেয়া হবে তখন তোমরা দলে দলে আসবে,

وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ﴿١٩﴾

১৯. আকাশকে খুলে দেয়া হবে, ফলে ওটা হয়ে যাবে বহু দরজা বিশিষ্ট।

وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ﴿٢٠﴾

২০. এবং চলমান করা হবে পাহাড়সমূহকে, ফলে সেগুলো মরীচিকায় পরিণত হবে।

اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ﴿٢١﴾

২১. নিশ্চয়ই জাহান্নাম ওৎপেতে রয়েছে;

لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰبًا ﴿٢٢﴾

২২. যা সীমালঙ্ঘনকারীদের আশ্রয় স্থল।

لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ اَحْقَابًا ﴿٢٣﴾

২৩. সেখানে তারা যুগ যুগ ধরে থাকবে,

لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ﴿٢٤﴾

২৪. সেখানে তারা কোন শীতল বস্তুর স্বাদ এবং কোন পানীয়ও পাবে না,

اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا ﴿٢٥﴾

২৫. ফুটন্ত পানি ও পূঁজ ব্যতীত;

جَزَآءً وِّفَاقًا ﴿٢٦﴾

২৬. এটাই পরিপূর্ণ প্রতিফল।

اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ حِسَابًا ﴿٢٧﴾

২৭. তারা কখনো হিসাব-নিকাশের আশা পোষণ করতো না,

وَّكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٨﴾

২৮. এবং তারা দৃঢ়তার সাথে আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যাপ্রতিপন্ন করেছিল।

وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا ﴿٢٩﴾

২৯. আমি সবকিছুই গণনা করেছি লিখিতভাবে।

فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾

৩০. অতঃপর তোমরা আস্বাদ গ্রহণ কর, এখন আমি তো তোমাদের যাতনাই শুধু বৃদ্ধি করতে থাকবো।

اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ مَفَازًا ﴿٣١﴾

৩১. নিশ্চয়ই মুত্তাকীদের জন্যে সফলতা;

حَدَآئِقَ وَاَعْنَابًا ﴿٣٢﴾

৩২. (সুশোভিত) বাগানসমূহ ও নানাবিধ আঙ্গুর;

وَّكَوَاعِبَ اَتْرَابًا ﴿٣٣﴾

৩৩. এবং সমবয়স্কা নব্য কুমারীবৃন্দ;

وَّكَاْسًا دِهَاقًا ﴿٣٤﴾

৩৪. এবং পরিপূর্ণ পানপাত্র।

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ﴿٣٥﴾

৩৫. সেখানে তারা অসার ও মিথ্যা বাক্য শুনবে না;

جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ﴿٣٦﴾

৩৬. তোমার প্রতিপালকের পক্ষ থেকে যথেষ্ট পুরস্কার ও অনুগ্রহের প্রতিদান।

رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾

৩৭. যিনি প্রতিপালক আকাশমন্ডলী, পৃথিবী ও ওগুলোর মধ্যবর্তী সবকিছুর, যিনি দয়াময়; তাঁর নিকট কারো কথা বলার শক্তি থাকবে না।

يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا ۙ لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾

৩৮. সেদিন রূহ (জিব্‌রীল) ও ফেরেশতাগণ সারিবদ্ধভাবে দাঁড়াবেন; দয়াময় যাকে অনুমতি দিবেন তিনি ব্যতীত অন্যেরা কথা বলতে পারবে না এবং সে সঠিক কথা বলবে।

ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ﴿٣٩﴾

৩৯. এ দিবস সুনিশ্চিত; অতএব যে চায়, সে যেন তার প্রতিপালকের নিকট স্থান করে নেয়।

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেনঃ যখন তোমাদের কেউ তাঁর ইসলামকে সুন্দর করে তোলে, তখন সে যে ভাল কাজ করে তার বিনিময় দশ থেকে সাতশ' গুণ পর্যন্ত তার জন্য সওয়াব লেখা হয়; কিন্তু সে যে মন্দ কাজ করে তার বিনিময় তার জন্য (কেবলমাত্র) ততটুকুই লেখা হয়। (বুখারীঃ ৪২)

إِنَّآ أَنذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا ۖ يَوْمَ يَنظُرُ ٱلْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ ٱلْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِى كُنتُ تُرٰبًۢا ﴿٤٠﴾

৪০. নিশ্চয়ই আমি তোমাদেরকে নিকটতম শাস্তি সম্পর্কে সতর্ক করলাম; সেদিন মানুষ তার হাতের অর্জিত কৃতকর্মকে দেখবে আর কাফির বলতে থাকবেঃ হায়! আমি, যদি মাটি হয়ে যেতাম!

সূরাঃ নাযি'আত, মাক্কী

(আয়াতঃ ৪৬ রুকূ'ঃ ২)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةُ النّٰزِعٰتِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٤٦ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَٱلنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ﴿١﴾

১. শপথ ঐ সমস্ত ফেরেশ্‌তার যারা ডুব দিয়ে নির্মমভাবে রূহ টেনে বের করে,

وَّٱلنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ﴿٢﴾

২. শপথ ঐ সমস্ত ফেরেশ্‌তার যারা সহজভাবে রূহ বের করে নিয়ে যায়।

وَّٱلسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ﴿٣﴾

৩. শপথ ঐ সমস্ত ফেরেশ্‌তার যারা তীব্র গতিতে সাঁতরে চলে,

فَٱلسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ﴿٤﴾

৪. অতঃপর শপথ দ্রুত বেগে অগ্রসর হয় সে সমস্ত ফেরেশ্‌তার।

فَٱلْمُدَبِّرٰتِ أَمْرًا ﴿٥﴾

৫. অতঃপর শপথ যারা সকল কর্ম নির্বাহ করে, তাদের।

يَوْمَ تَرْجُفُ ٱلرَّاجِفَةُ ﴿٦﴾

৬. সেদিন প্রকম্পকারী প্রকম্পিত হবে,

تَتْبَعُهَا ٱلرَّادِفَةُ ﴿٧﴾

৭. তাকে অনুসরণ করবে পরবর্তী প্রকম্পন।

قُلُوبٌ يَوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ﴿٨﴾

৮. হৃদয়সমূহ সেদিন ভীত-সন্ত্রস্ত হবে,

أَبْصٰرُهَا خَاشِعَةٌ ﴿٩﴾

৯. তাদের দৃষ্টিসমূহ হবে ভীত-বিহ্বলতায় অবনমিত।

يَقُوْلُوْنَ ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِى الْحَافِرَةِ ۝١٠

১০. তারা বলেঃ আমরা কি পূর্বাবস্থায় প্রত্যাবর্তিত হবই ?

ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ۝١١

১১. গলিত হাড্ডিতে পরিণত হওয়ার পরও।

قَالُوْا تِلْكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۝١٢

১২. তারা বলেঃ তা-ই যদি হয় তবে তো এটা বড়ই লোকসানের প্রত্যাবর্তন!

فَاِنَّمَا هِىَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ۝١٣

১৩. এটা তো একটি ভয়ঙ্কর ধমক মাত্র;

فَاِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ۝١٤

১৪. ফলে হঠাৎ প্রশস্ত ময়দানে তাদের আবির্ভাব হবে।

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۝١٥

১৫. (হে মুহাম্মাদ ﷺ) তোমার নিকট মূসা (عليه السلام)-এর কাহিনী পৌঁছেছে কি?

اِذْ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝١٦

১৬. যখন তাঁর প্রতিপালক পবিত্র তোওয়া উপত্যকায় তাকে ডেকে বলেছিলেনঃ

اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۝١٧

১৭. ফিরআ'উনের নিকট যাও, সে তো সীমালঙ্ঘন করেছে,

فَقُلْ هَلْ لَّكَ اِلٰٓى اَنْ تَزَكّٰى ۝١٨

১৮. এবং (তাকে) বলঃ তুমি কি পবিত্র হতে চাও?

وَاَهْدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى ۝١٩

১৯. আর আমি তোমাকে তোমার প্রতিপালকের দিকে পথ দেখাবো যাতে তুমি তাঁকে ভয় কর।

فَاَرٰىهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰى ۝٢٠

২০. অতঃপর তিনি তাকে বড় নিদর্শন দেখালেন।

فَكَذَّبَ وَعَصٰى ۝٢١

২১. কিন্তু সে মিথ্যাপ্রতিপন্ন করলো এবং অবাধ্য হলো।

ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعٰى ۝٢٢

২২. আবার সে পিছনে ফিরে পূর্বের কর্মে সচেষ্ট হলো।

فَحَشَرَ فَنَادٰى ۝٢٣

২৩. সে সকলকে সমবেত করলো এবং ঘোষণা করলো,

فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ﴿٢٤﴾

২৪. অতঃপর বললোঃ আমিই তোমাদের সর্বোচ্চ প্রতিপালক।

فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى ﴿٢٥﴾

২৫. ফলে আল্লাহ তাকে পরকালের ও ইহকালের আযাবে পাকড়াও করলেন,

اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ﴿٢٦﴾

২৬. এতে অবশ্যই উপদেশ রয়েছে যে ভয় করে তার জন্যে।

ءَاَنْتُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمِ السَّمَآءُ ؕ بَنٰهَا ﴿٢٧﴾

২৭. তোমাদেরকে সৃষ্টি করা কঠিন কাজ, না আকাশের? তিনিই এটা নির্মাণ করেছেন।

رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوّٰىهَا ﴿٢٨﴾

২৮. তিনি তার ছাদ সুউচ্চ ও সুবিন্যস্ত করেছেন।

وَاَغْطَشَ لَيْلَهَا وَاَخْرَجَ ضُحٰهَا ﴿٢٩﴾

২৯. এবং তিনি এর রজনীকে অন্ধকারাচ্ছন্ন করেছেন এবং স্পষ্ট করেছেন তার দিবসকে।

وَالْاَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰهَا ﴿٣٠﴾

৩০. এবং পৃথিবীকে এরপর বিস্তৃত করেছেন।

اَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَمَرْعٰهَا ﴿٣١﴾

৩১. তিনি তা'থেকে বের করেছেন পানি ও উদ্ভিদ,

وَالْجِبَالَ اَرْسٰهَا ﴿٣٢﴾

৩২. আর পাহাড়সমূহকে তিনি দৃঢ়ভাবে গেঁড়ে দিয়েছেন,

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ﴿٣٣﴾

৩৩. এসব তোমাদের ও তোমাদের জন্তুগুলোর ভোগের সামগ্রীরূপে।

فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ الْكُبْرٰى ﴿٣٤﴾

৩৪. অতঃপর যখন মহা বিপর্যয় (কিয়ামত) উপস্থিত হবে,

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ مَا سَعٰى ﴿٣٥﴾

৩৫. সেদিন মানুষ যা করেছে তা স্মরণ করবে,

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِمَنْ يَّرٰى ﴿٣٦﴾

৩৬. এবং প্রকাশ করা হবে জাহান্নামকে যে দেখবে তার জন্যে।

فَاَمَّا مَنْ طَغٰى ﴿٣٧﴾

৩৭. অনন্তর যে সীমালঙ্ঘন করেছে,

وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٣٨﴾

৩৮. এবং দুনিয়ার জীবনকে অগ্রাধিকার দিয়েছে,

فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ﴿٣٩﴾

৩৯. নিশ্চয়ই জাহান্নামই হবে তার ঠিকানা।

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ ﴿٤٠﴾

৪০. পক্ষান্তরে যে নিজ প্রতিপালকের সামনে দাঁড়ানোর ভয় রেখেছে এবং কুপ্রবৃত্তি হতে নিজেকে বিরত রেখেছে,

فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ﴿٤١﴾

৪১. অবশ্য জান্নাতই হবে তার ঠিকানা।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ﴿٤٢﴾

৪২. তারা তোমাকে জিজ্ঞেস করে কিয়ামত সম্পর্কে যে, ওটা কখন ঘটবে?

فِيمَ أَنْتَ مِنْ ذِكْرَاهَا ﴿٤٣﴾

৪৩. এর আলোচনার সাথে তোমার কি সম্পর্ক?

إِلَىٰ رَبِّكَ مُنْتَهَاهَا ﴿٤٤﴾

৪৪. এর চরম জ্ঞান তো তোমার প্রতিপালকের নিকট,

إِنَّمَا أَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَخْشَاهَا ﴿٤٥﴾

৪৫. যে ওর ভয় রাখে তুমি কেবল তারই সতর্ককারী।

كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَاهَا ﴿٤٦﴾

৪৬. সেদিন তারা যেন এটা দেখবে, তাতে তাদের মনে হবে যে, যেন তারা (পৃথিবীতে) এক সন্ধ্যা অথবা এক সকালের অধিক অবস্থান করেনি।

সূরাঃ আ'বাসা, মাক্কী

سُورَةُ عَبَسَ مَكِّيَّةٌ

(আয়াতঃ ৪২ রুকূঃ ১)

آيَاتُهَا ٤٢ رُكُوعُهَا ١

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

عَبَسَ وَتَوَلَّىٰ ﴿١﴾

১. ভ্রু কুঞ্চিত করল এবং মুখ ফিরিয়ে নিলো,

أَنْ جَاءَهُ الْأَعْمَىٰ ﴿٢﴾

২. কারণ তার নিকট অন্ধ লোকটি এসেছিল।

৩. তুমি কী জানো সে হয় তো পরিশুদ্ধ হতো,

وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّهُ يَزَّكَّىٰٓ ﴿٣﴾

৪. অথবা উপদেশ গ্রহণ করতো, ফলে উপদেশ তার উপকারে আসতো।

أَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنفَعَهُ ٱلذِّكْرَىٰٓ ﴿٤﴾

৫. পক্ষান্তরে যে পরওয়া করে না,

أَمَّا مَنِ ٱسْتَغْنَىٰ ﴿٥﴾

৬. তুমি তার প্রতি মনোযোগ দিচ্ছো।

فَأَنتَ لَهُۥ تَصَدَّىٰ ﴿٦﴾

৭. অথচ সে নিজে পরিশুদ্ধ না হলে তোমার কোন দায়িত্ব নেই,

وَمَا عَلَيْكَ أَلَّا يَزَّكَّىٰ ﴿٧﴾

৮. পক্ষান্তরে যে তোমার নিকট ছুটে আসলো,

وَأَمَّا مَن جَآءَكَ يَسْعَىٰ ﴿٨﴾

৯. আর সে সশংকচিত্ত, (ভীত অবস্থায়)

وَهُوَ يَخْشَىٰ ﴿٩﴾

১০. তুমি তাকে অবজ্ঞা করলে!

فَأَنتَ عَنْهُ تَلَهَّىٰ ﴿١٠﴾

১১. কখনও নয়, এটা তো উপদেশবাণী;

كَلَّآ إِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ﴿١١﴾

১২. যে ইচ্ছা করবে সে এটা স্মরণ রাখবে,

فَمَن شَآءَ ذَكَرَهُۥ ﴿١٢﴾

১৩. ওটা সম্মানিত কিতাবে (লাওহ মাহফুজে) লিপিবদ্ধ

فِى صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ﴿١٣﴾

১৪. যেটা উচ্চ মর্যাদাসম্পন্ন পবিত্র।

مَّرْفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍۭ ﴿١٤﴾

১৫. এমন লেখকদের হাতে থাকে।

بِأَيْدِى سَفَرَةٍ ﴿١٥﴾

১৬. যিনি সম্মানিত ও সৎ।

كِرَامٍۭ بَرَرَةٍ ﴿١٦﴾

১৭. মানুষ ধ্বংস হোক! সে কত অকৃতজ্ঞ!

قُتِلَ ٱلْإِنسَٰنُ مَآ أَكْفَرَهُۥ ﴿١٧﴾

১৮. তাকে তিনি কোন্ বস্তু হতে সৃষ্টি করেছেন?

مِنْ أَىِّ شَىْءٍ خَلَقَهُۥ ﴿١٨﴾

১৯. শুক্র বিন্দু হতে তিনি তাকে সৃষ্টি করেন, পরে তার তাকদীর নির্ধারণ করেন,

مِن نُّطْفَةٍ خَلَقَهُۥ فَقَدَّرَهُۥ ﴿١٩﴾

ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ ﴿٢٠﴾

২০. অতঃপর তার জন্যে পথ সহজ করে দেন;

ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ ﴿٢١﴾

২১. অতঃপর তার মৃত্যু ঘটান এবং তাকে কবরস্থ করেন।

ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ ﴿٢٢﴾

২২. এরপর যখন ইচ্ছা তিনি তাকে পুনরুজ্জীবিত করবেন।

كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ اَمَرَهٗ ﴿٢٣﴾

২৩. কখনও নয়, তিনি তাকে যে আদেশ করেছেন, সে তা এখনো সমাধা করেনি।

فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖٓ ﴿٢٤﴾

২৪. মানুষ তার খাদ্যের প্রতি লক্ষ্য করুক।

اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّا ﴿٢٥﴾

২৫. আমিই প্রচুর পানি বর্ষণ করি,

ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ شَقًّا ﴿٢٦﴾

২৬. অতঃপর আমি ভূমিকে অদ্ভুদভাবে বিদীর্ণ করি,

فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا ﴿٢٧﴾

২৭. এবং ওতে আমি উৎপন্ন করি শস্য;

وَّعِنَبًا وَّقَضْبًا ﴿٢٨﴾

২৮. আঙ্গুর, শাক-শব্জি,

وَّزَيْتُوْنًا وَّنَخْلًا ﴿٢٩﴾

২৯. যায়তুন, খেজুর,

وَّحَدَآئِقَ غُلْبًا ﴿٣٠﴾

৩০. বহু নিবিড়-ঘন বাগান,

وَّفَاكِهَةً وَّاَبًّا ﴿٣١﴾

৩১. ফল এবং গবাদির খাদ্য (ঘাস),

مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ﴿٣٢﴾

৩২. তোমাদের ও তোমাদের পশুগুলোর ভোগের সামগ্রী হিসাবে।

فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ﴿٣٣﴾

৩৩. যখন ঐ বিকট ধ্বনি এসে পড়বে;

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ ﴿٣٤﴾

৩৪. সেদিন মানুষ পলায়ন করবে তাঁর নিজের ভাই হতে,

وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ ﴿٣٥﴾

৩৫. এবং তার মাতা, তার পিতা,

وَصَاحِبَتِهٖ وَبَنِيْهِ ﴿٣٦﴾

৩৬. তার স্ত্রী ও তার সন্তান হতে,

لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِ ﴿٣٧﴾

৩৭. তাদের প্রত্যেকের সেদিন এমন গুরুতর অবস্থা হবে যা তাকে সম্পূর্ণরূপে ব্যস্ত রাখবে।

৩৮. সেদিন অনেক মুখমন্ডল উজ্জ্বল হবে;

وُجُوهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿٣٨﴾

৩৯. হাসি মুখ ও প্রফুল্ল।

ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾

৪০. এবং অনেক মুখমন্ডল হবে সেদিন ধূলি মিশ্রিত।

وَوُجُوهٌ يَّوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿٤٠﴾

৪১. সেগুলোকে আচ্ছন্ন করবে কালো বর্ণ।

تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿٤١﴾

৪২. তারাই কাফির ও পাপাচারী।

أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ﴿٤٢﴾

সূরাঃ তাক্‌ভীর, মাক্কী

سُوْرَةُ التَّكْوِيْرِ مَكِّيَّةٌ

(আয়াতঃ ২৯ রুকূ'ঃ ১)

اٰيَاتُهَا ٢٩ رُكُوْعُهَا ١

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. সূর্যকে যখন দীপ্তিহীন করা হবে;[১]

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ﴿١﴾

২. যখন নক্ষত্ররাজি খসে পড়বে,

وَإِذَا النُّجُومُ انكَدَرَتْ ﴿٢﴾

৩. পর্বতসমূহকে যখন চলমান করা হবে,

وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ﴿٣﴾

৪. যখন পূর্ণ-গর্ভা (দশ মাসের গর্ভবতী) উষ্ট্রী উপেক্ষিত হবে,

وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ﴿٤﴾

৫. যখন বন্য পশুগুলিকে একত্রিত করা হবে,

وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ﴿٥﴾

৬. এবং সমুদ্রগুলিকে যখন উদ্বেলিত করা হবে;

وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ﴿٦﴾

৭. (দেহে) যখন প্রাণগুলিকে মিলিত করা হবে,

وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ﴿٧﴾

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ কিয়ামতের দিন সূর্য এবং চন্দ্র আলোহীন হয়ে পড়বে। (বুখারীঃ ৩২০০)

وَإِذَا الْمَوْءُۥدَةُ سُئِلَتْ ﴿٨﴾

৮. যখন জীবন্ত-প্রথিতা (জীবন কবর) কন্যাকে জিজ্ঞেস করা হবে;[১]

بِأَيِّ ذَنۢبٍ قُتِلَتْ ﴿٩﴾

৯. কি অপরাধে তাকে হত্যা করা হয়েছিল?

وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ﴿١٠﴾

১০. যখন আমলনামাসমূহ প্রকাশ করা হবে,

وَإِذَا السَّمَآءُ كُشِطَتْ ﴿١١﴾

১১. যখন আকাশের আবরণ অপসারিত করা হবে,

وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ﴿١٢﴾

১২. জাহান্নামের অগ্নি যখন উদ্দীপিত করা হবে,

وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ﴿١٣﴾

১৩. এবং জান্নাতকে যখন নিকটবর্তী করা হবে।

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّآ أَحْضَرَتْ ﴿١٤﴾

১৪. তখন প্রত্যেক ব্যক্তিই জানবে সে কি নিয়ে এসেছে।

فَلَآ أُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ﴿١٥﴾

১৫. কিন্তু না, আমি শপথ করছি প্রত্যাবর্তনকারী তারকারাজির;

الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ﴿١٦﴾

১৬. যা গতিশীল ও স্থিতিবান;

وَالَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ ﴿١٧﴾

১৭. শপথ রাতের যখন সে চলে যেতে থাকে।

وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ﴿١٨﴾

১৮. আর প্রভাতের যখন এর আবির্ভাব হয়,

إِنَّهُۥ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿١٩﴾

১৯. নিশ্চয়ই এই কুর'আন সম্মানিত বার্তাবহের আনীত বাণী,

ذِى قُوَّةٍ عِندَ ذِى الْعَرْشِ مَكِينٍ ﴿٢٠﴾

২০. সে সামর্থশালী, আরশের মালিকের নিকট মর্যাদা সম্পন্ন,

مُّطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ﴿٢١﴾

২১. যাকে সেখানে মান্য করা হয় এবং যে বিশ্বাসভাজন।

১। মুগীরা ইবনে শো'বা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ নিশ্চয়ই আল্লাহ্ তোমাদের উপর মায়ের অবাধ্য হওয়া, কন্যা সন্তানদেরকে জীবন্ত কবর দেয়া, কাউকে কিছু না দেওয়া অথচ অন্যের নিকট চাওয়া, অপ্রয়োজনীয় কথা বলা, অধিক প্রশ্ন করা এবং সম্পদের অপচয় করা হারাম করেছেন। (বুখারী ঃ ২৪০৮)

وَمَا صَاحِبُكُم بِمَجْنُونٍ ﴿٢٢﴾

২২. এবং তোমাদের সহচর (মুহাম্মাদ ﷺ) উন্মাদ নয়,

وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأُفُقِ الْمُبِينِ ﴿٢٣﴾

২৩. তিনি তো তাঁকে স্পষ্ট দিগন্তে দেখেছিল।

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ﴿٢٤﴾

২৪. তিনি অদৃশ্য বিষয় সম্পর্কে বর্ণনা করতে কৃপণ নন।

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ رَجِيمٍ ﴿٢٥﴾

২৫. এবং এটা (কুর'আন) কোন অভিশপ্ত শয়তানের বাক্য নয়।

فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ ﴿٢٦﴾

২৬. সুতরাং তোমরা কোথায় চলেছো?

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ﴿٢٧﴾

২৭. এটা তো শুধু বিশ্বজগতের (অধিবাসীদের) জন্যে উপদেশ,[১]

لِمَن شَاءَ مِنكُمْ أَن يَسْتَقِيمَ ﴿٢٨﴾

২৮. তোমাদের মধ্যে যে সরল পথে চলতে চায়, তার জন্যে।

وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٩﴾

২৯. তোমরা কিছুই চাইবে না, যদি জগতসমূহের প্রতিপালক আল্লাহ্ তা না চান।

১। (ক) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন। তিনি বলেছেন, প্রত্যেক নবীকেই তার (যুগ) উপযোগী মু'জেযা (বিশেষ নিদর্শন) প্রদান করা হয়েছে। সে অনুসারে ঈমান আনা হয়েছে। অথবা বলেছেন, তাঁর ওপরই লোকেরা ঈমান এনেছে। আর নিশ্চয়ই আমাকে ওহী দেয়া হয়েছে, যা আল্লাহ্ তা'আলা আমার ওপর নাযিল করেছেন। অতএব, আমি আশা করছি যে, কিয়ামতের দিন আমার অনুগামী তাদের থেকে অধিক সংখ্যায় হবে। (বুখারী, হাদীস নং ৭২৭৪)

(খ) আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেন সেই সত্তার শপথ! যাঁর হাতে (আমি) মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর প্রাণ, বর্তমান মানবগোষ্ঠীর কোন ইয়াহূদী বা নাসারা আমার আবির্ভাবের সংবাদ শুনার পর, যে দ্বীন নিয়ে আমি প্রেরিত হয়েছি, তার প্রতি ঈমান না এনে মৃত্যুবরণ করলে সে নিশ্চিতই জাহান্নামীদের অন্তর্ভুক্ত হবে। (মুসলিম ঃ ৩৮৬)

সূরাঃ ইন্‌ফিতার, মাক্কী

(আয়াতঃ ১৯ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةُ الْاِنْفِطَارِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ١٩ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. যখন আকাশ ফেটে যাবে,

اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ ۙ ①

২. যখন তারকারাজী বিক্ষিপ্তভাবে ঝরে পড়বে,

وَاِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ۙ ②

৩. যখন সমুদ্রগুলি উদ্বেলিত হবে,

وَاِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ۙ ③

৪. এবং যখন কবরসমূহ উন্মোচিত হবে;

وَاِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ ۙ ④

৫. তখন প্রত্যেকে যা পূর্বে প্রেরণ করেছে এবং পশ্চাতে পরিত্যাগ করেছে তা জেনে নেবে।

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَاَخَّرَتْ ؕ ⑤

৬. হে মানুষ! কিসে তোমাকে তোমার মহান প্রতিপালকের ব্যাপারে ধোকায় ফেলেছে?

يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ ۙ ⑥

৭. যিনি তোমাকে সৃষ্টি করেছেন, অতঃপর তোমাকে সুঠাম করেছেন এবং তৎপর সুবিন্যস্ত করেছেন,

الَّذِيْ خَلَقَكَ فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ ۙ ⑦

৮. যে আকৃতিতে চেয়েছেন, তিনি তোমাকে সংযোজিত করেছেন।

فِيْۤ اَيِّ صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ؕ ⑧

৯. না কখনই না, তোমরা তো বিচার দিবসকে মিথ্যাপ্রতিপন্ন করে থাকো;

كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِ ۙ ⑨

১০. অবশ্যই রয়েছে তোমাদের উপর সংরক্ষকগণ;

وَاِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ۙ ⑩

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ ফেরেশ্‌তাগণ একদলের পিছনে আরেক দল যাতায়াত করে থাকে। একদল ফেরেশ্‌তা রাতে আসে, আরেক দল দিনে। আর তারা ফজর এবং আসরের নামাযের সময় একত্রিত হয়। অতঃপর যারা তোমাদের মাঝে রাত্রি যাপন করেছিল তারা আল্লাহ্‌র কাছে চলে যায়। তিনি তাদের (মানুষের অবস্থা) জিজ্ঞেস করেন অথচ তাদের চেয়ে তিনি (এ সম্পর্কে) অধিক জানেন। জিজ্ঞেস করেন, তোমরা আমার বান্দাহদের কি অবস্থায় ছেড়ে এসেছ? তারা জবাব দেয়-তাদের নামাযরত অবস্থায় ছেড়ে এসেছি এবং নামাযরত অবস্থায়ই তাদের কাছে গিয়েছি। (বুখারী ঃ ৩২২৩)

كِرَامًا كَاتِبِيْنَ ﴿١١﴾

১১. সম্মানিত লেখকবর্গ;[১]

يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿١٢﴾

১২. তোমরা যা কর তাঁরা অবগত হন।

اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ﴿١٣﴾

১৩. নিশ্চয়ই পুণ্যবানগণ নিয়ামত সমূহে অবস্থান করবে;

وَّاِنَّ الْفُجَّارَ لَفِيْ جَحِيْمٍ ﴿١٤﴾

১৪. এবং দুষ্কর্মকারীরা থাকবে জাহান্নামে;

يَّصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿١٥﴾

১৫. প্রতিদান দিবসে তারা তাতে প্রবেশ করবে;

وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَآئِبِيْنَ ﴿١٦﴾

১৬. তারা ওটা হতে সরে থাকতে পারবে না।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٧﴾

১৭. প্রতিদান দিবস কি তা কি তুমি জানো?

ثُمَّ مَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٨﴾

১৮. অতঃপর বলিঃ প্রতিদান দিবস কি তা কি তুমি অবগত আছ?

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْـًٔا ۗ وَالْاَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ﴿١٩﴾

১৯. সেদিন কোন ব্যক্তি অপর ব্যক্তির জন্য কোন কিছু করার অধিকার রাখবে না এবং সেদিন সমস্ত কর্তৃত্ব হবে একমাত্র আল্লাহর।

১। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আল্লাহ্ সম্পর্কে বলেন, আল্লাহ্ ভাল এবং মন্দ লিখে দিয়েছেন আর তা সুস্পষ্ট করে দিয়েছেন। সুতরাং যে ব্যক্তি কোন সৎ কাজের ইচ্ছা করল অথচ কাজটা করল না, আল্লাহ্ তাকে পূর্ণ (কাজের) সওয়াব দিবেন। আর যদি সে সৎ কাজের ইচ্ছা করল আর বাস্তবে তা করেও ফেলল, আল্লাহ্ তার জন্য দশ থেকে সাতশ' গুণ পর্যন্ত এমনকি এর চেয়েও অধিক সওয়াব লিখে দেন। আর যে ব্যক্তি কোন মন্দ কাজের ইচ্ছা করল, কিন্তু বাস্তবে তা করল না তবে আল্লাহ্ তাকে পূর্ণ (সৎ কাজের) সওয়াব দিবেন। পক্ষান্তরে সে যদি মন্দ কাজের ইচ্ছা করে এবং (তদানুযায়ী) কাজটা করে ফেলে তবে, আল্লাহ্ তার জন্য একটিই মাত্র গুনাহ্ লিখেন। (বুখারী ঃ ৬৪৯১)

সূরাঃ মুতাফ্‌ফিফীন, মাক্কী

(আয়াতঃ ৩৬ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةُ الْمُطَفِّفِيْنَ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٣٦ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. মন্দ পরিণাম তাদের জন্যে যারা মাপে কম দেয়,

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ①

২. যারা লোকের নিকট হতে নেয়ার সময় পূর্ণ মাত্রায় গ্রহণ করে,

الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ②

৩. এবং যখন তাদের জন্যে মেপে অথবা ওজন করে দেয়, তখন কম দেয়।

وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ③

৪. তারা কি চিন্তা করে না যে, তাদেরকে পুনরুত্থিত করা হবে।

اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ④

৫. সে মহান দিবসে;

لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ⑤

৬. যেদিন সমস্ত মানুষ জগতসমূহের প্রতিপালকের সামনে দাঁড়াবে ।

يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ⑥

৭. কখনই না, নিশ্চয়ই পাপাচারীদের আমলনামা সিজ্জীনে থাকে;

كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ⑦

৮. সিজ্জীন কি তা কি তুমি জান?

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ ⑧

৯. ওটা হচ্ছে লিখিত কিতাব।

كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ⑨

১০. সেদিন মন্দ পরিণাম হবে মিথ্যাপ্রতিপন্নকারীদের,

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ⑩

১১. যারা কর্মফল দিবসকে মিথ্যাপ্রতিপন্ন করেছিল,

الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ⑪

১২. আর সীমালঙ্ঘনকারী মহাপাপী ব্যতীত, কেউই ওকে মিথ্যা বলতে পারে না।

وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ اِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ⑫

১৩. যখন তার নিকট আমার আয়াতসমূহ তেলাওয়াত করা হয় তখন সে বলেঃ এটা তো পূর্বকালীন কাহিনী!

اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ⑬

كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾

১৪. না এটা কখনও নয়; বরং তাদের কৃতকর্মই তাদের মনের উপর মরিচারূপে জমে গেছে।

كَلَّاۤ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ﴿١٥﴾

১৫. কখনও নয়, অবশ্যই সেদিন তারা তাদের প্রতিপালকের দর্শন লাভ হতে বাধাগ্রস্ত হবে।

ثُمَّ اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ﴿١٦﴾

১৬. নিশ্চয়ই তারা জাহান্নামে প্রবেশ করবে;

ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٧﴾

১৭. তৎপর বলা হবেঃ এটাই তা যাকে তোমরা মিথ্যাপ্রতিপন্ন করতে।

كَلَّاۤ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ﴿١٨﴾

১৮. অবশ্যই পুণ্যবানদের আমল-নামা ইল্লিয়্যীনে থাকবে,

وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ﴿١٩﴾

১৯. ইল্লিয়্যূন কি তা কি তুমি জান?

كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿٢٠﴾

২০. (তা হচ্ছে) লিখিত কিতাব।

يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢١﴾

২১. (আল্লাহর) সান্নিধ্যপ্রাপ্ত ফেরেশ্‌তারা ওটা প্রত্যক্ষ করবে।

اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ﴿٢٢﴾

২২. পুণ্যবানগণ তো থাকবে অতি স্বাচ্ছন্দ্যে (জান্নাতে)

عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٢٣﴾

২৩. তারা সুসজ্জিত আসনে বসে দেখতে থাকবে।

تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ﴿٢٤﴾

২৪. তুমি তাদের মুখমন্ডলে স্বাচ্ছন্দ্যের দীপ্তি অনুভব করবে,

يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ﴿٢٥﴾

২৫. তাদেরকে মোহর করা বিশুদ্ধতম শরাব হতে পান করানো হবে,

خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ؕ وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ ﴿٢٦﴾

২৬. এর মোহর হচ্ছে কস্তুরীর। সুতরাং প্রতিযোগীরা এ বিষয়ে প্রতিযোগীতা করুক।

وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ﴿٢٧﴾

২৭. এর মিশ্রণ হবে তাসনীমের,

عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢٨﴾

২৮. এটা একটি ঝর্ণা, যা হতে নৈকট্যপ্রাপ্ত ব্যক্তিরা পান করবে।

اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ﴿٢٩﴾

২৯. যারা অপরাধী তারা মু'মিনদেরকে উপহাস করতো।

وَاِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ﴿٣٠﴾

৩০. এবং তারা যখন তাদের নিকট দিয়ে যেতো তখন চোখ টিপে কটাক্ষ করতো।

وَاِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ ﴿٣١﴾

৩১. এবং যখন তারা আপনজনের নিকট ফিরে আসতো তখন তারা ফিরত উৎফুল্ল হয়ে,

وَاِذَا رَاَوْهُمْ قَالُوْٓا اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَضَآلُّوْنَ ﴿٣٢﴾

৩২. এবং যখন তাদেরকে দেখতো তখন বলতোঃ নিশ্চয়ই এরা পথভ্রষ্ট,

وَمَآ اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٣٣﴾

৩৩. তাদেরকে তো এদের সংরক্ষক-রূপে পাঠানো হয়নি!

فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ﴿٣٤﴾

৩৪. তাই আজ, মু'মিনগণ উপহাস করছে কাফিরদেরকে,[১]

عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٣٥﴾

৩৫. সুসজ্জিত আসনে বসে দেখছে তাদেরকে।

هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾

৩৬. কাফিররা তাদের কৃতকর্মের ফল পেলো তো?

১। আনাস ইবনে মালিক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, এক ব্যক্তি বললঃ হে আল্লাহ্‌র রাসূল! কাফেরদেরকে কি কিয়ামতের দিন নিম্নমুখী করে একত্রিত করা হবে? তিনি (উত্তরে) বললেনঃ যিনি এ দুনিয়ায় তাকে দু'পায়ের ওপর হাটাতে পারলেন তিনি কি কিয়ামতের দিন তাকে নিম্নমুখী করে চালাতে সক্ষম নন? কাতাদা বলেছেনঃ হ্যাঁ, আমাদের প্রতিপালকের ইয্‌যতের শপথ! (তিনি এটা করতে সক্ষম)। (বুখারী ঃ ৪৭৬০)

সূরাঃ ইনশিকাক, মাক্কী

(আয়াতঃ ২৫ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةُ الْاِنْشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٢٥ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. যখন আকাশ ফেটে যাবে,

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ۙ ﴿١﴾

২. এবং স্বীয় প্রতিপালকের আদেশ পালন করবে এবং এটিই তার উপযুক্ত করণীয়।

وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۙ ﴿٢﴾

৩. এবং পৃথিবীকে যখন সম্প্রসারিত করা হবে।

وَاِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ ۙ ﴿٣﴾

৪. এবং পৃথিবী তার অভ্যন্তরে যা আছে তা বাইরে নিক্ষেপ করবে এবং খালি হয়ে যাবে,

وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ ۙ ﴿٤﴾

৫. এবং তার প্রতিপালকের আদেশ পালন করবে এবং তার এটিই উপযুক্ত করণীয়।

وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۙ ﴿٥﴾

৬. হে মানব! তুমি তোমার প্রতিপালকের নিকট পৌঁছানোর জন্য কঠোর সাধনা করছ পরে তুমি তাঁর সাক্ষাৎ লাভ করবে।

يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ۚ ﴿٦﴾

৭. অনন্তর যাকে তার ডান হাতে তার আমলনামা দেয়া হবে,

فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ ﴿٧﴾

৮. তার হিসাব-নিকাশ নেয়া হবে অতি সহজ ভাবে।

فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا ۙ ﴿٨﴾

৯. এবং সে তার স্বজনদের নিকট আনন্দিত হয়ে ফিরে যাবে;

وَّيَنْقَلِبُ اِلٰۤى اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ۙ ﴿٩﴾

১০. এবং যাকে তার আমলনামা তার পৃষ্ঠের পশ্চাদ্ভাগে দেয়া হবে।

وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهْرِهٖ ۙ ﴿١٠﴾

১১. ফলতঃ অচিরেই সে মৃত্যুকে ডাকবে।

فَسَوْفَ يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ۙ ﴿١١﴾

وَّيَصۡلٰى سَعِيۡرًا ﴿١٢﴾

১২. এবং জ্বলন্ত অগ্নিতেই সে প্রবেশ করবে।

اِنَّهٗ كَانَ فِىۡۤ اَهۡلِهٖ مَسۡرُوۡرًا ﴿١٣﴾

১৩. অবশ্য সে তো স্বজনদের মধ্যে সানন্দে ছিল,

اِنَّهٗ ظَنَّ اَنۡ لَّنۡ يَّحُوۡرَ ﴿١٤﴾

১৪. যেহেতু সে ভাবতো যে, তাকে কখনই (আল্লাহর নিকট) ফিরে যেতে না হবে।

بَلٰٓى ۚ اِنَّ رَبَّهٗ كَانَ بِهٖ بَصِيۡرًا ﴿١٥﴾

১৫. হ্যাঁ (অবশ্যই প্রত্যাবর্তিত হবে) নিশ্চয়ই তার প্রতিপালক তার উপর সবিশেষ দৃষ্টি রাখেন।

فَلَاۤ اُقۡسِمُ بِالشَّفَقِ ﴿١٦﴾

১৬. আমি শপথ করি আকাশের লালিমার।

وَالَّيۡلِ وَمَا وَسَقَ ﴿١٧﴾

১৭. এবং রজনীর আর তাতে যা কিছুর সমাবেশ ঘটে তার,

وَالۡقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ ﴿١٨﴾

১৮. এবং শপথ চন্দ্রের, যখন তা' পরিপূর্ণ হয়,

لَتَرۡكَبُنَّ طَبَقًا عَنۡ طَبَقٍ ﴿١٩﴾

১৯. নিশ্চয়ই তোমরা এক স্তর হতে অন্য স্তরে আরোহণ করবে।

فَمَا لَهُمۡ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿٢٠﴾

২০. সুতরাং তাদের কি হলো যে, তারা ঈমান আনে না?

وَاِذَا قُرِئَ عَلَيۡهِمُ الۡقُرۡاٰنُ لَا يَسۡجُدُوۡنَ ﴿٢١﴾ السجدة

২১. এবং তাদের নিকট কুর'আন পঠিত হলে তারা সিজদাহ করে না?

بَلِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا يُكَذِّبُوۡنَ ﴿٢٢﴾

২২. বরং কাফিরগণই মিথ্যাপ্রতি-পন্নকারী করে।

وَاللّٰهُ اَعۡلَمُ بِمَا يُوۡعُوۡنَ ﴿٢٣﴾

২৩. (অথচ) তারা মনে যা পোষণ করে থাকে আল্লাহ তা সবিশেষ পরিজ্ঞাত।

فَبَشِّرۡهُمۡ بِعَذَابٍ اَلِيۡمٍ ﴿٢٤﴾

২৪. সুতরাং তাদেরকে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তির সংবাদ প্রদান কর।

اِلَّا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمۡ اَجۡرٌ غَيۡرُ مَمۡنُوۡنٍ ﴿٢٥﴾

২৫. কিন্তু যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে তাদের জন্যে রয়েছে অফুরন্ত পুরস্কার।

সূরাঃ বুরূজ, মাক্কী

(আয়াতঃ ২২ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةُ الْبُرُوْجِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٢٢ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. শপথ বুরুজ (তারকা-রাশিচক্র) বিশিষ্ট আকাশের,

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ۙ﴿١﴾

২. শপথ প্রতিশ্রুত দিবসের,

وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ۙ﴿٢﴾

৩. শপথ যা উপস্থিত হয় এবং যা উপস্থিতকৃত,

وَشَاهِدٍ وَّ مَشْهُوْدٍ ؕ﴿٣﴾

৪. ধ্বংস করা হয়েছিল গুহাবাসী-দেরকে,

قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ۙ﴿٤﴾

৫. যা ছিল ইন্ধন পূর্ণ অগ্নি,

النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ۙ﴿٥﴾

৬. যখন তারা তার উপর উপবিষ্ট ছিল;

اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ۙ﴿٦﴾

৭. এবং তারা মু'মিনদের সাথে যা করেছিল তাই প্রত্যক্ষ করছিল।

وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ؕ﴿٧﴾

৮. তারা তাদেরকে নির্যাতন করেছিল শুধু এই (অপরাধের) কারণে যে, তারা সে পরাক্রান্ত প্রশংসাভাজন আল্লাহ্‌র প্রতি ঈমান এনেছিল।

وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّاۤ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۙ﴿٨﴾

৯. আকাশমন্ডলী ও পৃথিবীর আধিপত্বি যাঁর, আর আল্লাহ্ সর্ব বিষয়ে দেখেন।

الَّذِىْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ شَهِيْدٌ ؕ﴿٩﴾

১০. যারা ঈমানদার নর-নারীর উপর যুলুম-নির্যাতন করেছে এবং পরে তাওবা'ও করেনি, তাদের জন্যে জাহান্নামের আযাব ও দহন যন্ত্রণা রয়েছে।

اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيْقِ ؕ﴿١٠﴾

১১. যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে তাদের জন্যেই রয়েছে এমন জান্নাত যার নিম্নে নদীসমূহ প্রবাহিত; এটাই বড় সফলতা।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ؕ﴿١١﴾

১২. নিশ্চয় তোমার প্রতিপালকের পাকড়াও বড়ই কঠিন।

إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ﴿١٢﴾

১৩. তিনিই প্রথমবার সৃষ্টি করেন ও পুনরাবর্তন করবেন।

إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ﴿١٣﴾

১৪. এবং তিনি ক্ষমাশীল, প্রেমময়।

وَهُوَ الْغَفُورُ الْوَدُودُ ﴿١٤﴾

১৫. আরশের অধিপতি মহিমাময়।

ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ﴿١٥﴾

১৬. (ইচ্ছাময় তিনি) যা চান তাই করেন।

فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ ﴿١٦﴾

১৭. তোমার নিকট কি সৈন্যবাহিনীর কথা পৌঁছেছে?

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ﴿١٧﴾

১৮. ফিরআ'উন ও সামূদের?

فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ﴿١٨﴾

১৯. তবু কাফিররা মিথ্যা আরোপ করায় রত,

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ﴿١٩﴾

২০. এবং আল্লাহ তাদেরকে সর্বদিক হতে পরিবেষ্টন করে রয়েছেন।

وَاللَّهُ مِن وَرَائِهِم مُّحِيطٌ ﴿٢٠﴾

২১. বরং এটা অতি উচ্চ মর্যাদা সম্পন্ন কুরআন।

بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيدٌ ﴿٢١﴾

২২. সংরক্ষিত ফলকে লিপিবদ্ধ।

فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ ﴿٢٢﴾

সূরাঃ তা'-রিক, মাক্কী

(আয়াতঃ ১৭ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُورَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ١٧ رُكُوعُهَا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

১. শপথ আকাশের এবং রাত্রিতে যা প্রকাশ পায়;

وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ﴿١﴾

২. তুমি কী জান রাত্রিতে যা প্রকাশ পায় তা কি?

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ﴿٢﴾

৩. ওটা দীপ্তিমান নক্ষত্র!

النَّجْمُ الثَّاقِبُ ﴿٣﴾

৪. নিশ্চয়ই প্রত্যেক জীবের উপরই এক সংরক্ষক রয়েছে।[১]

إِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ﴿٤﴾

৫. সুতরাং মানুষের লক্ষ্য করা উচিত যে, তাকে কিসের দ্বারা সৃষ্টি করা হয়েছে।

فَلْيَنظُرِ الْإِنسَانُ مِمَّ خُلِقَ ﴿٥﴾

৬. তাকে সৃষ্টি করা হয়েছে প্রবল বেগে নিঃসৃত পানি হতে,

خُلِقَ مِن مَّاءٍ دَافِقٍ ﴿٦﴾

৭. যা বের হয় পিঠ ও বুকের হাড়ের মধ্য হতে।

يَخْرُجُ مِن بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ﴿٧﴾

৮. নিশ্চয় তিনি তার পুনরাবর্তনে ক্ষমতাবান।

إِنَّهُ عَلَىٰ رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ﴿٨﴾

৯. যেদিন গোপন বিষয়সমূহের যাঁচাই-বাছাই হবে,

يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ﴿٩﴾

১০. সেদিন তার কোন শক্তি থাকবে না এবং সাহায্যকারীও থাকবে না।

فَمَا لَهُ مِن قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ﴿١٠﴾

১১. শপথ বেশি বেশি বৃষ্টি বর্ষণকারী আকাশের,

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ﴿١١﴾

১২. এবং শপথ যমীনের যা ফেটে যায়,

وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ﴿١٢﴾

১৩. নিশ্চয় এটি (কুর'আন) মীমাংসাকারী কথা।

إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ﴿١٣﴾

১৪. এবং এটা হাসি-তামাশা নয়।

وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ﴿١٤﴾

১৫. নিশ্চয় তারা (কাফেররা) ভীষণ এক ষড়যন্ত্র করেছে।

إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ﴿١٥﴾

১। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহু) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেছেন। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আল্লাহ্ সম্পর্কে বলেন, আল্লাহ ভাল এবং মন্দ লিখে দিয়েছেন আর তা সুস্পষ্ট করে দিয়েছেন। সুতরাং যে ব্যক্তি কোন সৎ কাজের ইচ্ছা করল অথচ কাজটা করল না, আল্লাহ্ তাকে পূর্ণ (কাজের) সওয়াব দিবেন। আর যদি সে সৎ কাজের ইচ্ছা করল আর বাস্তবে তা করেও ফেলল, আল্লাহ তার জন্য দশ থেকে সাতশ' গুণ পর্যন্ত এমনকি এর চেয়েও অধিক সওয়াব লিখে দেন। আর যে ব্যক্তি কোন মন্দ কাজের ইচ্ছা করল, কিন্তু বাস্তবে তা করল না, তবে আল্লাহ্ তাকে পূর্ণ (সৎ কাজের) সওয়াব দিবেন। পক্ষান্তরে সে যদি মন্দ কাজের ইচ্ছা করে এবং (তদানুযায়ী) কাজটা করে ফেলে তবে, আল্লাহ্ তার জন্য একটিই মাত্র গুনাহ লিখেন। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৯১

وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ﴿١٦﴾

১৬. আর আমিও একটি কৌশল করি।

فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ﴿١٧﴾

১৭. অতএব কাফিরদেরকে অবকাশ দাও, তাদেরকে অবকাশ দাও কিছুকালের জন্যে।

সূরাঃ আ'লা, মাক্কী

(আয়াতঃ ১৯ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে

(শুরু করছি)

سُوْرَةُ الْاَعْلٰى مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ١٩ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ﴿١﴾

১. তুমি তোমার সর্বোচ্চ প্রতিপালকের নামের ঘোষণা কর,

الَّذِىْ خَلَقَ فَسَوّٰى ﴿٢﴾

২. যিনি সৃষ্টি করেছেন। অতঃপর পরিপূর্ণভাবে ঠিক করেছেন,

وَالَّذِىْ قَدَّرَ فَهَدٰى ﴿٣﴾

৩. এবং যিনি নিরূপণ করেছেন, তারপর হেদায়েত দিয়েছেন,

وَالَّذِىْٓ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ﴿٤﴾

৪. এবং যিনি উদ্ভিদ উৎপন্ন করেছেন,

فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰى ﴿٥﴾

৫. পরে ওকে বিশুষ্ক বিমলিন করেছেন।

سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى ﴿٦﴾

৬. অচিরেই আমি তোমাকে পাঠ করাবো, ফলে তুমি আর ভুলবে না,

اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ۭ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفٰى ﴿٧﴾

৭. আল্লাহ্ যা ইচ্ছা করবেন তদ্ব্যতীত, নিশ্চয়ই তিনি প্রকাশ্য ও গুপ্ত বিষয় পরিজ্ঞাত আছেন।

وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ﴿٨﴾

৮. আমি তোমার জন্যে সহজের সামর্থ দিবো।

فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ﴿٩﴾

৯. অতএব উপদেশ দাও যদি উপদেশ উপকারী হয়।

سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ﴿١٠﴾

১০. যারা ভয় করে তারা উপদেশ গ্রহণ করবে।

وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ﴿١١﴾

১১. আর তা' উপেক্ষা করবে সে, যে নিতান্ত হতভাগ্য,

الَّذِىْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ﴿١٢﴾

১২. সে বৃহৎ অগ্নিতে প্রবেশ করবে,

ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ﴿١٣﴾

১৩. অতঃপর সে সেখানে মরবেও না, বাঁচবেও না।

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ﴿١٤﴾

১৪. নিশ্চয় সে সাফল্য লাভ করে যে পবিত্রতা অবলম্বন করে।

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ﴿١٥﴾

১৫. এবং তদ্বীয় প্রতিপালকের নাম স্মরণ করে ও নামায আদায় করে।

بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿١٦﴾

১৬. কিন্তু তোমরা পার্থিব জীবনকে অগ্রাধিকার দিয়ে থাকো।

وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿١٧﴾

১৭. অথচ আখেরাত (জীবন) উত্তম ও চিরস্থায়ী।

اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿١٨﴾

১৮. নিশ্চয়ই এটা পূর্ববর্তী কিতাবসমূহে আছে,

صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ﴿١٩﴾

১৯. (বিশেষতঃ) ইবরাহীম (عليه السلام) ও মূসা (عليه السلام)-এর কিতাবসমূহে।

سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ مَكِّيَّةٌ

সূরাঃ গাশিয়াহ, মাক্কী

اٰيَاتُهَا ٢٦ رُكُوْعُهَا ١

(আয়াতঃ ২৬ রুকূ'ঃ ১)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ﴿١﴾

১. তোমার কাছে কি আচ্ছন্নকারীর (কিয়ামতের) সংবাদ এসেছে?

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ﴿٢﴾

২. সেদিন বহু মুখমন্ডল ভীত হবে;

৩. কর্মক্লান্ত পরিশ্রান্ত হবে;[১] عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ﴿٣﴾

৪. তারা প্রবেশ করবে জ্বলন্ত আগুনে; تَصْلَىٰ نَارًا حَامِيَةً ﴿٤﴾

৫. তাদেরকে উত্তপ্ত ঝর্ণা হতে (পানি) পান করানো হবে; تُسْقَىٰ مِنْ عَيْنٍ آنِيَةٍ ﴿٥﴾

৬. তাদের জন্যে বিষাক্ত কাঁটাযুক্ত ব্যতীত কোন খাদ্য নেই; لَّيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِن ضَرِيعٍ ﴿٦﴾

৭. তা তাদেরকে পুষ্ট করবে না এবং তাদের ক্ষুধাও মেটাবে না। لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِي مِن جُوعٍ ﴿٧﴾

৮. বহু মুখমন্ডল হবে সেদিন আনন্দোজ্জ্বল, وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ﴿٨﴾

৯. নিজেদের কর্মসাফল্যে সন্তুষ্ট হবে। لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ﴿٩﴾

১০. উচ্চ মর্যাদার জান্নাতে অবস্থান করবে। فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿١٠﴾

১১. সেখানে তারা অবান্তর বাক্য শুনবে না, لَّا تَسْمَعُ فِيهَا لَاغِيَةً ﴿١١﴾

১২. সেখানে আছে প্রবহমান ঝরণা-সমূহ, فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ﴿١٢﴾

১৩. তন্মধ্যে রয়েছে সমুচ্চ আসনসমূহ فِيهَا سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ ﴿١٣﴾

১৪. এবং সুরক্ষিত পান পাত্রসমূহ وَأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ ﴿١٤﴾

১৫. ও সারি সারি বালিশসমূহ; وَنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ﴿١٥﴾

১৬. এবং সম্প্রসারিত গালিচাসমূহ। وَزَرَابِيُّ مَبْثُوثَةٌ ﴿١٦﴾

১। আবদুল্লাহ্ ইবনে মাসউদ (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেছেনঃ একদিন (নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) একটি কথা বললেন। আমি (তার বিপরীত) আরেকটি কথা বললাম। নবী সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেনঃ কেউ যদি এমন অবস্থায় মরে যায় যে, সে আল্লাহ্‌র সাথে অন্য কাউকে শরীক করে বা সমকক্ষ ও প্রতিদ্বন্দ্বী হওয়ার দাবী করে তবে সে দোজখে যাবে। আমি বললাম, আর কেউ যদি এমন অবস্থায় মরে যায় যে, সে আল্লাহ্‌র সাথে আর কাউকে শরীক, সমকক্ষ বা প্রতিদ্বন্দ্বী মনে করলো না তাহলে? (তিনি বললেনঃ) সে জান্নাতে যাবে। (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৯৭)

أَفَلَا يَنْظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ﴿١٧﴾

১৭. তবে কি তারা উষ্ট্রপালের দিকে লক্ষ্য করে না যে, কিভাবে ওকে সৃষ্টি করা হয়েছে?

وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ﴿١٨﴾

১৮. এবং আকাশের দিকে যে, কিভাবে ওটাকে সমুচ্চ করা হয়েছে?

وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ﴿١٩﴾

১৯. এবং পর্বতমালার দিকে যে, কিভাবে ওটাকে বসানো হয়েছে?

وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ﴿٢٠﴾

২০. এবং ভূতলের দিকে যে, কিভাবে ওটাকে সমতল করা হয়েছে?

فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنْتَ مُذَكِّرٌ ﴿٢١﴾

২১. অতএব তুমি উপদেশ দিতে থাকো, তুমি তো একজন উপদেশ দাতা মাত্র।

لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ﴿٢٢﴾

২২. তুমি তাদের যিম্মাদার নও।

إِلَّا مَنْ تَوَلَّى وَكَفَرَ ﴿٢٣﴾

২৩. তবে কেউ মুখ ফিরিয়ে নেবে ও কুফরী করবে,

فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ﴿٢٤﴾

২৪. আল্লাহ তাকে আযাব দিবেন কঠোর আযাব।

إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ﴿٢٥﴾

২৫. নিশ্চয়ই আমারই নিকট তাদের প্রত্যাবর্তন ।

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ﴿٢٦﴾

২৬. অতঃপর আমার উপরই তাদের হিসাব-নিকাশ (গ্রহণের ভার)।

سُورَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٣٠ رُكُوعُهَا ١

সূরাঃ ফাজ্‌র, মাক্কী

(আয়াতঃ ৩০ রুকূ'ঃ ১)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

وَالْفَجْرِ ﴿١﴾

১. শপথ ফজরের,

وَلَيَالٍ عَشْرٍ ﴿٢﴾

২. শপথ দশটি রাতের,

وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ﴿٣﴾

৩. শপথ জোড় ও বেজোড়ের,

وَالَّيْلِ إِذَا يَسْرِ ﴿٤﴾

৪. এবং শপথ রাতের, যখন তা বিদায় হতে থাকে,

هَلْ فِي ذَٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِي حِجْرٍ ﴿٥﴾

৫. এর মধ্যে জ্ঞানবান ব্যক্তির জন্যে বড় শপথ রয়েছে ।

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ﴿٦﴾

৬. তুমি কি দেখো নি তোমার প্রতিপালক কি করেছিলেন আ'দ বংশের সাথে।

إِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ﴿٧﴾

৭. ইরাম গোত্রের প্রতি যারা সুউচ্চ স্তম্ভের অধিকারী ছিল?

الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ﴿٨﴾

৮. যার সমতুল্য অন্য কোন নগরে সৃষ্টি করা হয়নি,

وَثَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ﴿٩﴾

৯. এবং সামূদের সাথে? যারা উপত্যকার পাথর কেটে গৃহ নির্মাণ করেছিল?

وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ﴿١٠﴾

১০. এবং বহু সৈন্য শিবিরের অধিপতি ফিরআ'উনের সাথে?

الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ﴿١١﴾

১১. যারা নগরসমূহে সীমালঙ্ঘন করেছিল।

فَأَكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ﴿١٢﴾

১২. অনন্তর সেখানে তারা বহু অনাচার করেছিল।

فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ﴿١٣﴾

১৩. সুতরাং তোমার প্রতিপালক তাদের উপর শাস্তির কশাঘাত হানলেন।

إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ﴿١٤﴾

১৪. নিশ্চয় তোমার প্রতিপালক ঘাটিতে (ওঁৎ পেতে) আছেন।

فَأَمَّا الْإِنسَانُ إِذَا مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ ﴿١٥﴾

১৫. মানুষ তো এরূপ যে, তার প্রতিপালক যখন তাকে পরীক্ষা করেন, পরে তাকে সম্মানিত করেন এবং সুখ ও সম্পদ দান করেন, তখন সে বলেঃ আমার প্রতিপালক আমাকে সম্মানিত করেছেন।

وَاَمَّآ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَهَانَنِ ۚ ﴿١٦﴾

১৬. এবং আবার যখন তাকে পরীক্ষা করেন, তৎপর তার রিযিক সংকীর্ণ করেন, তখন সে বলেঃ আমার প্রতিপালক আমাকে হেয় করেছেন।

كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ۙ ﴿١٧﴾

১৭. কখনই নয়। বস্তুতঃ তোমরা ইয়াতীমকে সম্মান কর না।

وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۙ ﴿١٨﴾

১৮. এবং তোমরা পরস্পরকে উৎসাহিত কর না অভাবগ্রস্তকে খাদ্য দানে,

وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ۙ ﴿١٩﴾

১৯. এবং তোমরা উত্তরাধিকারীদের প্রাপ্য সম্পদ সম্পূর্ণরূপে ভক্ষণ কর,

وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ؕ ﴿٢٠﴾

২০. এবং তোমরা ধন সম্পদের অত্যধিক মায়া করে থাকো।

كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۙ ﴿٢١﴾

২১. এটা সঙ্গত নয়। পৃথিবীকে যখন ভেঙ্গে চূর্ণ-বিচূর্ণ করা হবে;

وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۚ ﴿٢٢﴾

২২. এবং যখন তোমার প্রতিপালক আগমন করবেন, আর ফেরেশতাগণ সারিবদ্ধভাবে; (থাকবে)

وَجِاْيٓءَ يَوْمَئِذٍۭ بِجَهَنَّمَ ۙ يَوْمَئِذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ؕ ﴿٢٣﴾

২৩. সেদিন জাহান্নামকে আনয়ন করা হবে এবং সেদিন মানুষ উপলব্ধি করবে; কিন্তু এই উপলব্ধি তার কি কাজে আসবে?

يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِيْ ۚ ﴿٢٤﴾

২৪. সে বলবেঃ হায়! আমার এ জীবনের জন্যে আমি যদি কিছু অগ্রীম পাঠাতাম!

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهٗٓ اَحَدٌ ۙ ﴿٢٥﴾

২৫. সেদিন তাঁর (আল্লাহ্‌র) আযাবের মত আযাব কেউ দিতে পারবে না,

وَّلَا يُوْثِقُ وَثَاقَهٗٓ اَحَدٌ ؕ ﴿٢٦﴾

২৬. এবং তাঁর বন্ধনের মত বন্ধন কেউ করতে পারবে না।

يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۙ ﴿٢٧﴾

২৭. হে প্রশান্ত আত্মা!

ارْجِعِيٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿٢٨﴾

২৮. তুমি তোমার প্রতিপালকের নিকট ফিরে এসো সন্তুষ্ট ও প্রিয়পাত্র হয়ে।

فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ﴿٢٩﴾

২৯. অনন্তর তুমি আমার বান্দাদের অন্তর্ভুক্ত হও,

وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ﴿٣٠﴾

৩০. এবং আমার জান্নাতে প্রবেশ কর।

سُوْرَةُ الْبَلَدِ مَكِّيَّةٌ

সূরাঃ বালাদ, মাক্কী

اٰيَاتُهَا ٢٠ رُكُوْعُهَا ١

(আয়াতঃ ২০ রুকূ'ঃ ১)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿١﴾

১. শপথ করছি এই (মক্কা) নগরের,

وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿٢﴾

২. আর তুমি এই নগরের হালালকারী।[১]

وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ﴿٣﴾

৩. শপথ পিতার (আদম عليه السلام) আর যা সে জন্ম দিয়েছে তার।

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ﴿٤﴾

৪. অবশ্যই আমি মানুষকে সৃষ্টি করেছি কষ্টের মধ্যে।

اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ اَحَدٌ ﴿٥﴾

৫. সে কি মনে করে যে, কখনো তার উপর কেউ ক্ষমতাবান হবে না?

يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ﴿٦﴾

৬. সে বলেঃ আমি বহু অর্থ নষ্ট করেছি।

اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَهٗٓ اَحَدٌ ﴿٧﴾

৭. সে কি ধারণা করে যে, তাকে কেউই দেখছে না?

১। ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ মক্কা বিজয়ের দিন রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ এ শহরকে আল্লাহ্ মহিমান্বিত ও মর্যাদাসম্পন্ন করেছেন। এর কাটা (গাছ) ও কাটা যাবে না, শিকার তাড়া করা যাবে না, রাস্তায় পড়ে থাকা জিনিস প্রচারের উদ্দেশ্য ব্যতীত কেউ কুড়িয়ে নিতে পারবে না। (বুখারী, হাদীস নং ১৫৮৭)

৮. আমি কি তার জন্যে দু'টি চোখ বানাইনি?

أَلَمْ نَجْعَلْ لَّهُۥ عَيْنَيْنِ ﴿٨﴾

৯. আর জিহ্বা ও ওষ্ঠদ্বয়?

وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ﴿٩﴾

১০. এবং আমি কি তাকে দু'টি পথই দেখাইনি?

وَهَدَيْنَٰهُ ٱلنَّجْدَيْنِ ﴿١٠﴾

১১. কিন্তু সে দুর্গম গিরি পথে প্রবেশ করলো না।

فَلَا ٱقْتَحَمَ ٱلْعَقَبَةَ ﴿١١﴾

১২. তুমি কী জান যে, দুর্গম গিরি পথটি কি?

وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا ٱلْعَقَبَةُ ﴿١٢﴾

১৩. এটা হচ্ছেঃ কোন দাসকে মুক্ত করা;[১]

فَكُّ رَقَبَةٍ ﴿١٣﴾

১৪. অথবা, দুর্ভিক্ষের দিনে খাদ্য দান;

أَوْ إِطْعَٰمٌ فِى يَوْمٍ ذِى مَسْغَبَةٍ ﴿١٤﴾

১৫. কোন ইয়াতীম, আত্মীয়কে,

يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ﴿١٥﴾

১৬. অথবা ধূলায় লুণ্ঠিত দরিদ্রকে,

أَوْ مِسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ﴿١٦﴾

১৭. তারপর তাদের মধ্যে অন্তর্ভুক্ত হওয়া যারা ঈমান এনেছে এবং যারা পরস্পরকে উপদেশ দেয় ধৈর্যধারণের ও দয়া করুণার;

ثُمَّ كَانَ مِنَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَتَوَاصَوْا۟ بِٱلصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا۟ بِٱلْمَرْحَمَةِ ﴿١٧﴾

১৮. এরাই ডান হাতওয়ালা।

أُو۟لَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلْمَيْمَنَةِ ﴿١٨﴾

১৯. আর যারা আমার নিদর্শনসমূহ অস্বীকার করেছে, তারাই বাম হাতওয়ালা।

وَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا هُمْ أَصْحَٰبُ ٱلْمَشْـَٔمَةِ ﴿١٩﴾

২০. তাদের উপরই রয়েছে আচ্ছন্ন অবস্থায় অগ্নি।

عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌۢ ﴿٢٠﴾

১। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি কোন মুসলমানকে দাসত্ব শৃঙ্খল থেকে মুক্ত করবে, তার (আযাদকৃত দাসের) প্রতিটি অঙ্গের বিনিময়ে আল্লাহ্ তার (মুক্তিদানকারী ব্যক্তির)প্রতিটি অঙ্গকে জাহান্নামের আগুন থেকে রক্ষা করবেন। সা'ঈদ ইবনে মারজানা বলেছেন, আমি আলী ইবনে হুসাইন-এর নিকটে গিয়ে হাদীসটি বর্ণনা করলে আলী ইবনে হুসাইন তাঁর এমন একটি ক্রীতদাসকে মুক্ত করে দেয়ার সংকল্প করলেন, যাকে খরিদ করার জন্য আবদুল্লাহ্ ইবনে জাফর দশ হাজার দিরহাম অথবা এক হাজার দীনার দিতে প্রস্তুত ছিলেন। এরপর তিনি তাকে (দাসত্ব শৃঙ্খল থেকে) মুক্ত করে দিলেন। (বুখারী, হাদীস নং ২৫১৭)

সূরাঃ শামস, মাক্কী

(আয়াতঃ ১৫ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةُ الشَّمْسِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ١٥ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا ۙ﴿١﴾

১. শপথ সূর্যের ও তার রৌদ্রের,

وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰهَا ۙ﴿٢﴾

২. শপথ চন্দ্রের, যখন তা সূর্যের পেছনে পেছনে আসে।

وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰهَا ۙ﴿٣﴾

৩. শপথ দিবসের, যখন তা' (সূর্যকে) প্রকাশ করে,

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰهَا ۙ﴿٤﴾

৪. শপথ রজনীর, যখন তা' সূর্যকে ঢেকে দেয়,

وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰهَا ۙ﴿٥﴾

৫. শপথ আকাশের এবং তাঁর যিনি তা' নির্মাণ করেছেন,

وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰهَا ۙ﴿٦﴾

৬. শপথ পৃথিবীর এবং তাঁর যিনি তা' বিস্তৃত করেছেন,

وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰهَا ۙ﴿٧﴾

৭. শপথ (মানুষের) নফসের এবং তাঁর, যিনি তাকে সুঠাম করেছেন,

فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰىهَا ۙ﴿٨﴾

৮. অতঃপর তাকে তার অসৎকর্ম ও তার সৎকর্মের জ্ঞান দান করেছেন,

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا ۙ﴿٩﴾

৯. অবশ্যই সে সফলকাম হবে, যে নিজেকে পরিশুদ্ধ করবে।

وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰهَا ؕ﴿١٠﴾

১০. এবং নিশ্চয়ই সে ব্যর্থ হবে, যে নিজেকে কলুষিত করবে।

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰىهَآ ۙ﴿١١﴾

১১. সামূদ সম্প্রদায় সীমালঙ্ঘন করতঃ মিথ্যাপ্রতিপন্ন করলো।

اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰىهَا ۙ﴿١٢﴾

১২. সুতরাং তাদের মধ্যে যে সর্বাধিক হতভাগ্য, সে যখন তৎপর (ক্ষিপ্ত) হয়ে উঠলো,

فَقَالَ لَهُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ؕ﴿١٣﴾

১৩. তখন আল্লাহর রাসূল (সালেহ (عليه السلام)) তাদেরকে বললোঃ আল্লাহর

উষ্ট্রী ও তাকে পানি পান করাবার বিষয়ে সাবধান হও (বাধা দিও না)।

فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا ۖ فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُم بِذَنۢبِهِمْ فَسَوَّىٰهَا ﴿١٤﴾

১৪. কিন্তু তারা তাকে মিথ্যাবাদী বললো, অতপর ঐ উষ্ট্রীকে কেটে ফেললো। অবশেষে তাদের পাপের কারণে তাদের প্রতিপালক তাদেরকে সমূলে ধ্বংস করে একাকার করে দিলেন।

وَلَا يَخَافُ عُقْبَٰهَا ﴿١٥﴾

১৫. আর তিনি ওর পরিণামকে ভয় করলেন না।

সূরাঃ লাইল, মাক্কী

سُورَةُ اللَّيْلِ مَكِّيَّةٌ

(আয়াতঃ ২১ রুকূ'ঃ ১)

اٰيَاتُهَا ٢١ رُكُوعُهَا ١

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالَّيْلِ إِذَا يَغْشَىٰ ﴿١﴾

১. শপথ রজনীর, যখন তা' আচ্ছন্ন হয়ে যায়,

وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّىٰ ﴿٢﴾

২. শপথ দিনের, যখন তা' আলোকিত হয়,

وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰٓ ﴿٣﴾

৩. এবং শপথ তাঁর যিনি নর ও নারী সৃষ্টি করেছেন–

إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتَّىٰ ﴿٤﴾

৪. অবশ্যই তোমাদের প্রচেষ্টা বিভিন্ন মুখী।

فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَاتَّقَىٰ ﴿٥﴾

৫. অনন্তর যে দান করে ও মুত্তাকী হয়,

وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَىٰ ﴿٦﴾

৬. যা উত্তম তাকে সত্য মনে করল,

فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرَىٰ ﴿٧﴾

৭. অচিরেই আমি তার জন্যে সুগম করে দেবো সহজ পথ।

وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَىٰ ﴿٨﴾

৮. পক্ষান্তরে কেউ কার্পণ্য করল ও বেপরওয়া হল।

وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ۙ ⑨

৯. আর উত্তম জিনিসকে মিথ্যা মনে করলো,

فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ؕ ⑩

১০. অচিরেই তার জন্যে আমি সুগম করে দেবো কঠোর পরিণামের পথ।

وَمَا يُغْنِىْ عَنْهُ مَالُهٗۤ اِذَا تَرَدّٰى ؕ ⑪

১১. এবং তার সম্পদ তার কোন কাজে আসবে না, যখন সে পতিত হবে (জাহান্নামে)।

اِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ۖ ⑫

১২. আমার দায়িত্ব শুধু পথ নির্দেশ করা,

وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ⑬

১৩. আর নিশ্চয়ই আমি পরকাল ও ইহকালের মালিক।

فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ۚ ⑭

১৪. আমি তোমাদেরকে সতর্ক করে দিয়েছি;

لَا يَصْلٰىهَاۤ اِلَّا الْاَشْقَى ۙ ⑮

১৫. নিতান্ত হতভাগ্য ব্যতীত কেউ তাতে প্রবেশ করবে না,

الَّذِىْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ؕ ⑯

১৬. যে মিথ্যারোপ করে ও মুখ ফিরিয়ে নেয়;

وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ۙ ⑰

১৭. আর তা হতে অতি সত্ত্বর মুক্ত রাখা হবে বড় মুত্তাকীদেরকে,

الَّذِىْ يُؤْتِىْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ۚ ⑱

১৮. যে স্বীয় সম্পদ দান করে আত্মশুদ্ধির জন্য,

وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰۤى ۙ ⑲

১৯. এবং তার প্রতিকারও অনুগ্রহের প্রতিদান হিসেবে নয়,

اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ۚ ⑳

২০. বরং শুধু তার মহান প্রতি-পালকের মুখমন্ডল (সন্তোষ) লাভের প্রত্যাশায়;

وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ۚ ㉑

২১. সে তো অচিরেই সন্তোষ লাভ করবে।

সূরাঃ দুহা, মাক্কী

(আয়াতঃ ১১ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةُ الضُّحٰى مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ١١ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالضُّحٰى ﴿١﴾

১. শপথ পূর্বাহ্নের,

وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ﴿٢﴾

২. শপথ রজনীর যখন তা' আচ্ছন্ন করে ফেলে;

مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ﴿٣﴾

৩. তোমার প্রতিপালক তোমাকে পরিত্যাগ করেননি এবং তোমার প্রতি অসন্তুষ্টও হননি।

وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ﴿٤﴾

৪. আর অবশ্যই তোমার জন্যে আখেরাত দুনিয়া অপেক্ষা উত্তম।

وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ﴿٥﴾

৫. অচিরেই তোমার প্রতিপালক তোমাকে এরূপ দান করবেন যাতে তুমি সন্তুষ্ট হবে।

اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ﴿٦﴾

৬. তিনি কি তোমাকে ইয়াতীম অবস্থায় পাননি? অতঃপর তিনি তোমাকে আশ্রয় দান করেন।

وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ﴿٧﴾

৭. তিনি তোমাকে পথ সম্পর্কে অনবহিত পেয়েছেন, তারপর তিনি দেখিয়েছেন পথ।

وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ﴿٨﴾

৮. তিনি তোমাকে নিঃস্ব অবস্থায় পান তারপর তোমাকে ধনবান করেন।

فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ﴿٩﴾

৯. অতএব, তুমি ইয়াতীমের প্রতি কঠোর হয়ো না,

وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ﴿١٠﴾

১০. আর ভিক্ষুককে ধমক দিও না।

وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿١١﴾

১১. তুমি তোমার প্রতিপালকের অনুগ্রহের কথা ব্যক্ত করতে থাকো।

সূরাঃ আলাম নাশরাহ্, মাক্কী

(আয়াতঃ ৮ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةُ اَلَمْ نَشْرَحْ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٨ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. আমি কি তোমার বক্ষদেশ তোমার জন্য উন্মুক্ত করে দেইনি?

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۙ ①

২. আমি তোমার ওপর হতে ভারী বোঝা অপসারণ করেছি,

وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۙ ②

৩. যা তোমার পৃষ্ঠকে ভেঙ্গে দিচ্ছিল;

الَّذِيْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۙ ③

৪. এবং আমি তোমার জন্য তোমার চর্চা (খ্যাতি)-কে সুউচ্চ করেছি।

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ؕ ④

৫. নিশ্চয়ই কষ্টের সাথেই স্বস্তি আছে।

فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۙ ⑤

৬. অবশ্যই কষ্টের সাথে স্বস্তি আছে।

اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ؕ ⑥

৭. অতএব যখনই অবসর পাও সাধনা করো,

فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۙ ⑦

৮. এবং তোমার প্রতিপালকের প্রতি মনযোগ দাও।

وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ۧ ⑧

সূরাঃ ত্বীন, মাক্কী

(আয়াতঃ ৮ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةُ التِّيْنِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٨ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. শপথ 'তীন' ও 'যায়তূনে'র,

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ۙ ①

২. শপথ 'সিনাই' পর্বতের

وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ۙ ②

৩. এবং শপথ এই নিরাপদ বা শান্তিময় (মক্কা) নগরীর,

وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ۙ ③

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ۝٤

৪. আমি অবশ্যই সৃষ্টি করেছি মানুষকে সুন্দরতম গঠনে,

ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ ۝٥

৫. অতঃপর আমি তাকে প্রত্যাখ্যান করেছি নীচতমদের নীচে।

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝٦

৬. কিন্তু তাদেরকে নয় যারা মুমিন ও সৎকর্মপরায়ণ; তাদের জন্যে আছে অবিচ্ছিন্ন পুরস্কার।

فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ۝٧

৭. সুতরাং এরপর কিসে তোমাকে (হে মানুষ) কর্মফল সম্বন্ধে মিথ্যাপ্রতিপন্নকারী?

اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ۝٨

৮. আল্লাহ কি বিচারকদের মধ্যে শ্রেষ্ঠ বিচারক নন?

سُوْرَةُ الْعَلَقِ مَكِّيَّةٌ

সূরাঃ আ'লাক্, মাক্কী

اٰيَاتُهَا ١٩ رُكُوْعُهَا ١

(আয়াতঃ ১৯ রুকূ'ঃ ১)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ۝١

১. তুমি পড়ো কর তোমার প্রতিপালকের নামে, যিনি সৃষ্টি করেছেন।

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۝٢

২. সৃষ্টি করেছেন মানুষকে রক্তপিন্ড হতে।

اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۝٣

৩. পড়ো এবং তোমার প্রতিপালক মহামহিমান্বিত,

الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۝٤

৪. যিনি কলমের সাহায্যে শিক্ষা দিয়েছেন—

عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ۝٥

৫. তিনি শিক্ষা দিয়েছেন মানুষকে (এমন জ্ঞান) যা সে জানতো না।

كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰٓى ۝٦

৬. কখনও নয়, মানুষ তো সীমালঙ্ঘন করেই থাকে,

أَنْ رَّآهُ اسْتَغْنٰى ۝٧

৭. কারণ সে নিজেকে অভাবমুক্ত মনে করে।

إِنَّ إِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ۝٨

৮. তোমার প্রতিপালকের নিকট প্রত্যাবর্তন সুনিশ্চিত।

أَرَءَيْتَ الَّذِى يَنْهٰى ۝٩

৯. তুমি কি তাকে (আবু জাহলকে) দেখেছো, যে বাধা দেয়,

عَبْدًا إِذَا صَلّٰى ۝١٠

১০. এক বান্দাকে (রাসূলুল্লাহ্ ﷺ) যখন সে নামায আদায় করে?

أَرَءَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰٓى ۝١١

১১. তুমি লক্ষ্য করেছো কি, যদি সে সৎপথে থাকে।

أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوٰى ۝١٢

১২. অথবা তাকওয়ার নির্দেশ দেয়,

أَرَءَيْتَ إِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝١٣

১৩. তুমি লক্ষ্য করেছো কি যদি সে মিথ্যারোপ করে ও মুখ ফিরিয়ে নেয়,

أَلَمْ يَعْلَمْ بِأَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ۝١٤

১৪. সে কি অবগত নয় যে, আল্লাহ দেখছেন?

كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ۙ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ۝١٥

১৫. সাবধান! সে যদি বিরত না হয় তবে আমি তাকে অবশ্যই হেঁচড়িয়ে নিয়ে যাবো, মস্তকের সম্মুখ ভাগের কেশগুচ্ছ ধরে।

نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۝١٦

১৬. মিথ্যাবাদী, পাপিষ্ঠ সম্মুখের কেশগুচ্ছ ওয়ালা।

فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ۝١٧

১৭. অতএব সে তার পরিষদবর্গকে আহ্বান করুক।

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۝١٨

১৮. আমিও অচিরে আহ্বান করবো আযাবের ফেরেশ্‌তাদেরকে,

كَلَّا ۚ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۩ ۝١٩

১৯. সাবধান! তুমি তার অনুসরণ করো না, সিজদা কর ও (আল্লাহর) নৈকট্য অর্জন কর।

সূরাঃ কাদ্‌র, মাক্কী

(আয়াতঃ ৫ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٥ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. নিশ্চয়ই আমি এটা (আল-কুরআন) অবতীর্ণ করেছি মহিমান্বিত রজনীতে;

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۝١

২. আর মহিমান্বিত রজনী সম্বন্ধে তুমি কী জান?

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۝٢

৩. মহিমান্বিত রজনী হাজার মাস অপেক্ষা উত্তম।

لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۙ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ۝٣

৪. ঐ রাত্রিতে ফেরেশতাগণ ও রূহ (জিবরাঈল) অবতীর্ণ হন প্রত্যেক কাজের জন্য তাদের প্রতিপালকের অনুমতিক্রমে।

تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ مِّنْ كُلِّ اَمْرٍ ۝٤

৫. শান্তিময়, এই রাত ফজরের উদয় পর্যন্ত।

سَلٰمٌ ۛ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝٥

সূরাঃ বাইয়্যিনাহ্, মাদানী

(আয়াতঃ ৮ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةُ الْبَيِّنَةِ مَدَنِيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٨ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. আহলে কিতাবদের মধ্যে যারা কুফরী করেছিল এবং মুশরিকরাও আপন মত হতে পৃথক হবে এমন ছিল না, যতক্ষণ তাদের নিকট সুস্পষ্ট প্রমাণ না আসবে (তা হলো)।

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝١

২. আল্লাহর নিকট হতে এক রাসূল যিনি, পাঠ করেন পবিত্র সহীফা।

رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۝٢

فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ۝٣

৩. যাতে সঠিক বিধি-বিধান রয়েছে।

وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝٤

৪. যাদেরকে কিতাব দেয়া হয়েছিল তারা বিভক্ত হলো তাদের নিকট সুস্পষ্ট প্রমাণ আসার পরও।

وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ۝٥

৫. তারা তো আদিষ্ট হয়েছিল আল্লাহর আনুগত্যে বিশুদ্ধ চিত্ত হয়ে একনিষ্ঠভাবে তাঁর ইবাদত করতে এবং নামায কায়েম করতে ও যাকাত প্রদান করতে, এটাই সুপ্রতিষ্ঠিত সঠিক দ্বীন।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝٦

৬. আহলে কিতাবদের মধ্যে যারা কুফরী করেছে এবং মুশরিকরা জাহান্নামের আগুনের মধ্যে স্থায়ীভাবে অবস্থান করবে; তারাই সৃষ্টির সর্ব নিকৃষ্ট।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۝٧

৭. যারা ঈমান আনে ও সৎআমল করে, তারাই সৃষ্টির সর্বোৎকৃষ্ট।

جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ۝٨

৮. তাদের প্রতিপালকের নিকট আছে তাদের পুরস্কার স্থায়ী জান্নাত, যার নিম্নদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত, সেখানে তারা চিরস্থায়ী হবে; আল্লাহ তাদের প্রতি সন্তুষ্ট হয়েছেন এবং তারাও তাঁর উপর সন্তুষ্ট; এটা তার জন্য যে তার প্রতিপালককে ভয় করে।

সূরাঃ যিলযাল, মাদানী

(আয়াতঃ ৮ রুকূ'ঃ ১)

سُوْرَةُ الزِّلْزَالِ مَدَنِيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٨ رُكُوْعُهَا ١

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝١

১. পৃথিবীকে যখন প্রবলভাবে প্রকম্পিত করা হবে,

وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ۙ﴿٢﴾

২. এবং পৃথিবী যখন তার অভ্যন্তরের ভারসমূহ বের করে দিবে,

وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ۚ﴿٣﴾

৩. এবং মানুষ বলবেঃ এর কি হলো?

يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ۙ﴿٤﴾

৪. সেদিন পৃথিবী তার সবতত্ত্ব বর্ণনা করে দিবে,

بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ؕ﴿٥﴾

৫. কারণ তোমার প্রতিপালক তাকে আদেশ করবেন,

يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ؕ﴿٦﴾

৬. সেদিন মানুষ ভিন্ন ভিন্ন দলে বের হবে, তাদের কৃতকর্ম দেখানোর জন্য।

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ؕ﴿٧﴾

৭. কেউ অণু পরিমাণ সৎকর্ম করলে তাও দেখবে।

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۚ﴿٨﴾

৮. এবং কেউ অণু পরিমাণ অসৎকর্ম করলে তাও দেখবে।

সূরাঃ আদিয়াত, মাক্কী

سُوْرَةُ الْعٰدِيٰتِ مَكِّيَّةٌ

(আয়াতঃ ১১ রুকূ'ঃ ১)

اٰيَاتُهَا ١١ رُكُوْعُهَا ١

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۙ﴿١﴾

১. শপথ ঊর্ধ্বশ্বাসে ধাবমান ঘোড়াসমূহের,

فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۙ﴿٢﴾

২. যারা ক্ষুরাঘাতে অগ্নিস্ফূলিঙ্গ ঝরায়,

فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۙ﴿٣﴾

৩. যারা আক্রমণ চালায় প্রভাত-কালে,

فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۙ﴿٤﴾

৪. এবং ঐ সময়ে ধূলা উড়ায়;

فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۙ﴿٥﴾

৫. অতঃপর (শত্রু) দলের অভ্যন্তরে ঢুকে পড়ে—

اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۚ﴿٦﴾

৬. মানুষ অবশ্যই তার প্রতিপালকের বড়ই অকৃতজ্ঞ,

وَ اِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۚ ⑦

৭. এবং নিশ্চয়ই সে নিজেই এ বিষয়ে সাক্ষী;

وَ اِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ؕ ⑧

৮. এবং অবশ্যই সে ধন-সম্পদের আসক্তিতে অত্যন্ত কঠিন।

اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِى الْقُبُوْرِ ۙ ⑨

৯. তবে কি সে ঐ সম্পর্কে অবহিত নয় যখন কবরে যা আছে তা বের করা হবে?

وَحُصِّلَ مَا فِى الصُّدُوْرِ ۙ ⑩

১০. এবং অন্তরে যা আছে তা প্রকাশ করা হবে?

اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيْرٌ ۚ ⑪

১১. অবশ্য সেদিন তাদের কি ঘটবে, তাদের প্রতিপালক অবশ্যই তা সবিশেষ অবহিত।

সূরাঃ কা'রি'আহ্, মাক্কী

سُوْرَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ

(আয়াতঃ ১১ রুকূ'ঃ ১)

اٰيَاتُهَا ١١ رُكُوْعُهَا ١

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْقَارِعَةُ ۙ ①

১. (হৃদয়ে) প্রচন্ড আঘাতকারী (মহাপ্রলয়),

مَا الْقَارِعَةُ ۚ ②

২. (হৃদয়ে) প্রচন্ড আঘাতকারী (মহাপ্রলয়) কি?

وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ؕ ③

৩. (হৃদয়ে) প্রচন্ড আঘাতকারী (মহাপ্রলয়) সম্বন্ধে তুমি কি জান?

يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۙ ④

৪. সেদিন মানুষ হবে বিক্ষিপ্ত পতঙ্গের মতো,

وَ تَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ؕ ⑤

৫. এবং পর্বতসমূহ হবে ধূনিত রঙীন পশমের মতো।

فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۙ ⑥

৬. তখন যার পাল্লা ভারী হবে,

فَهُوَ فِىْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ؕ ⑦

৭. সে সন্তোষজনক জীবন লাভ করবে।

৮. কিন্তু যার পাল্লা হাল্‌কা হবে,

وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ﴿٨﴾

৯. তার স্থান হবে হাবিয়াহ্।

فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ﴿٩﴾

১০. হাবিয়াহ্ কি তুমি জান?

وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَهْ ﴿١٠﴾

১১. (এটা) অতি উত্তপ্ত অগ্নি।

نَارٌ حَامِيَةٌ ﴿١١﴾

সূরাঃ তাকাসূর, মাক্কী

(আয়াতঃ ৮ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُورَةُ التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةٌ

آيَاتُهَا ٨ رُكُوعُهَا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

১. পরস্পর ধন-সম্পদের অহংকার তোমাদেরকে মোহাচ্ছন্ন রাখে।

أَلْهَاكُمُ التَّكَاثُرُ ﴿١﴾

২. যতক্ষণ না তোমরা কবরসমূহে উপস্থিত হচ্ছ।

حَتَّىٰ زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ﴿٢﴾

৩. এটা কখনও ঠিক নয়, শীঘ্রই তোমরা জানতে পারবে;

كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣﴾

৪. অতঃপর, এটা কখনও ঠিক নয়, শীঘ্রই তোমরা এটা জানতে পারবে।

ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٤﴾

৫. সাবধান! যদি তোমরা নিশ্চিত জ্ঞান দ্বারা অবহিত হতে (তবে এমন কাজ করতে না)।

كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ عِلْمَ الْيَقِينِ ﴿٥﴾

৬. তোমরা অবশ্যই জাহান্নাম দেখবে।

لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ ﴿٦﴾

৭. এটা কখনো নয়, তোমরা ওটা চাক্ষুষ প্রত্যয়ে দেখবেই,

ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ ﴿٧﴾

৮. এরপর অবশ্যই সেদিন তোমাদেরকে সুখ ও সম্পদ সম্বন্ধে জিজ্ঞাস করা হবে।

ثُمَّ لَتُسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ﴿٨﴾

সূরাঃ আস্‌র, মাক্কী

(আয়াতঃ ৩ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٣ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. কালের শপথ,

وَالْعَصْرِ ۙ ①

২. মানুষ অবশ্যই ক্ষতির মধ্যে রয়েছে।

اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۙ ②

৩. কিন্তু তারা নয়, যারা ঈমান আনে ও সৎআমল করে এবং পরস্পরকে সত্যের উপদেশ দেয়, ধৈর্যধারণে পরস্পরকে উদ্বুদ্ধ করে থাকে।

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ④

সূরাঃ হুমাযাহ্, মাক্কী

(আয়াতঃ ৯ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٩ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. ধ্বংস প্রত্যেক ঐ ব্যক্তির জন্য, যারা পশ্চাতে ও সম্মুখে লোকের নিন্দা করে;

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۙ ①

২. যে অর্থ জমায় ও তা গণনা করে রাখে;

الَّذِيْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۙ ②

৩. সে মনে করে যে, তার অর্থ তাকে চিরস্থায়ী করে রাখবে;

يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗۤ اَخْلَدَهٗ ④

৪. কখনো নয়, সে অবশ্যই নিক্ষিপ্ত হবে হুতামায়;

كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ۖ ④

৫. আর তুমি কি জানো হুতামা কী?

وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ⑤

৬. (এটা) আল্লাহর প্রজ্বলিত আগুন,

نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۙ ⑥

الَّتِيْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ۝٧

৭. যা হৃদয় অভ্যন্তরে পৌঁছে যাবে।

اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۝٨

৮. নিশ্চয়ই তা' (আগুন) তাদের ওপর দিয়ে বন্ধ করে দেয়া হবে।

فِيْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝٩

৯. উঁচু উঁচু স্তম্ভসমূহে।

سُوْرَةُ الْفِيْلِ مَكِّيَّةٌ

সূরাঃ ফীল্, মাক্কী

اٰيَاتُهَا ٥ رُكُوْعُهَا ١

(আয়াতঃ ৫ রুকূ'ঃ ১)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۝١

১. তুমি কি দেখনি যে, তোমার প্রতিপালক হাতিওয়ালাদের সাথে কি করেছেন?

اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۝٢

২. তিনি কি তাদের চক্রান্ত (সম্পূর্ণরূপে) ব্যর্থ করে দেন নি?

وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۝٣

৩. তাদের বিরুদ্ধে তিনি ঝাঁকে ঝাঁকে পাখিসমূহ প্রেরণ করেছিলেন।

تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝٤

৪. যারা তাদের ওপর পোড়া মাটির কংকর নিক্ষেপ করেছিল।

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۝٥

৫. অতঃপর তিনি তাদেরকে ভক্ষিত ভূষির মতো করে দেন।

سُوْرَةُ قُرَيْشٍ مَكِّيَّةٌ

সূরাঃ কুরাইশ্, মাক্কী

اٰيَاتُهَا ٤ رُكُوْعُهَا ١

(আয়াতঃ ৪ রুকূ'ঃ ১)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۝١

১. কুরাইশদের অনুরাগের কারণ।

اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۝٢

২. তাদের অনুরাগ শীত ও গ্রীষ্ম সফরের।

৩. অতএব তারা ইবাদত করুক এই গৃহের প্রতিপালকের,

فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝٣

৪. যিনি তাদেরকে ক্ষুধায় খাদ্য দান করেছেন এবং ভয় হতে তাদেরকে নিরাপদ করেছেন।

الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝٤

সূরাঃ মাউ'ন, মাক্কী

سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ مَكِّيَّةٌ

(আয়াতঃ ৭ রুকূ'ঃ ১)

اٰيَاتُهَا ٧ رُكُوْعُهَا ١

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. তুমি কি দেখেছ তাকে, যে পরকালকে মিথ্যাপ্রতিপন্ন করে?

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ۝١

২. সে তো ঐ ব্যক্তি, যে ইয়াতীমকে ধাক্কা দিয়ে তাড়িয়ে দেয়।[১]

فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۝٢

৩. এবং সে অভাবগ্রস্তকে খাদ্যদানে উৎসাহ প্রদান করে না।

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝٣

৪. সুতরাং ধ্বংস সেই নামায আদায়কারীদের জন্যে,

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝٤

৫. যারা তাদের নামাযে অমনোযোগী।

الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝٥

৬. যারা লোক দেখানোর জন্যে তা' করে,

الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۝٦

৭. এবং তারা প্রয়োজনীয় ছোটখাট জিনিস সাহায্য দানে বিরত থাকে।

وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۝٧

১। সাহাল বিন সা'দ (রাযিআল্লাহু আনহু) বর্ণনা করেছেন। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ আমি এবং ইয়াতীমের তত্ত্বাবধানকারী জান্নাতে এরূপ (কাছাকাছি) থাকবো। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) শাহাদাত ও মধ্যম আঙ্গুল দ্বারা ইশারা করে (দু'জনের) দূরত্ব দেখালেন। (বুখারী, হাদীস নং ৬০০৫)

সূরাঃ কাওসার, মাক্কী

سُوْرَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ

(আয়াতঃ ৩ রুকূ'ঃ ১)

اٰيَاتُهَا ٣ رُكُوْعُهَا ١

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. আমি অবশ্যই তোমাকে (হাউজে) কাওসার প্রদান করেছি।[১]

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۝١

২. সুতরাং তোমার প্রতিপালকের উদ্দেশ্যে নামায আদায় কর এবং কুরবানী কর।

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝٢

৩. নিশ্চয় তোমার প্রতি বিদ্বেষ পোষণকারীই তো শিকড়কাটা (নির্মূল)।[২]

اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ۝٣

সূরাঃ কা'ফিরূন, মাক্কী

سُوْرَةُ الْكٰفِرُوْنَ مَكِّيَّةٌ

(আয়াতঃ ৬ রুকূ'ঃ ১)

اٰيَاتُهَا ٦ رُكُوْعُهَا ١

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. বলঃ হে কাফিরগণ!

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝١

২. আমি তার ইবাদত করি না যার ইবাদত তোমরা কর,

لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝٢

৩. এবং তোমরাও তাঁর ইবাদতকারী নও যাঁর ইবাদত আমি করি,

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝٣

১। আনাস ইবনে মালিক (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেছেনঃ মিরাজ হলে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে আসমানে উঠিয়ে নেয়া হয়। রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, আমি এমন একটি নদীর ধারে পৌছলাম। যার উভয় তীরে ফাঁপা মোতির তৈরি পাতা আছে। আমি বললাম, হে জিবরাঈল এটি কি? উত্তরে জিবরাঈল বললেন, এটিই হলো হাউজে কাওসার। (বুখারী, হাদীস নং ৪৯৬৪)

২। আনাস (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ তোমাদের মধ্যে কেউ ততক্ষণ পর্যন্ত মো'মিন হতে পারবে না, যতক্ষণ পর্যন্ত আমি তার নিকট, তার পিতা, তার সন্তান এবং সমস্ত মানুষের চেয়েও প্রিয়তর না হবো। (বুখারী, হাদীস নং ১৫)

৪. এবং আমি ইবাদতকারী নই তার, যার ইবাদত তোমরা করে আসছো।

وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ﴿٤﴾

৫. এবং তোমরা তাঁর ইবাদতকারী নও যাঁর ইবাদত আমি করি।

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ؕ﴿٥﴾

৬. তোমাদের দ্বীন (কুফর) তোমাদের জন্য এবং আমার দ্বীন (ইসলাম) আমার জন্য।

لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ﴿٦﴾ ع

সূরাঃ নাস্‌র, মাদানী

سُوْرَةُ النَّصْرِ مَدَنِيَّةٌ

(আয়াতঃ ৩ রুকূ'ঃ ১)

اٰيَاتُهَا ٣ رُكُوْعُهَا ١

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. যখন আসবে আল্লাহর সাহায্য ও বিজয়।

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۙ﴿١﴾

২. এবং তুমি মানুষকে দলে দলে আল্লাহর দ্বীনে প্রবেশ করতে দেখবে।

وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۙ﴿٢﴾

৩. তখন তুমি তোমার প্রতিপালকের সপ্রশংস পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করো এবং তাঁর সমীপে ক্ষমা প্রার্থনা করো তিনি তো বড়ই তাওবা গ্রহণকারী।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ﴿٣﴾ ع

সূরাঃ লাহাব্, মাক্কী

سُوْرَةُ اللَّهَبِ مَكِّيَّةٌ

(আয়াতঃ ৫ রুকূ'ঃ ১)

اٰيَاتُهَا ٥ رُكُوْعُهَا ١

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. ধ্বংস হোক আবূ লাহাবের হস্তদ্বয় এবং ধ্বংস হোক সে নিজেও।[১]

تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ؕ﴿١﴾

১। আবদুল্লাহ্ ইবনে আব্বাস (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেছেনঃ "তোমরা নিকটাত্মীয় এবং তাদের মধ্যেও বিশেষ করে নিজের গোত্রকে সাবধান করে দাও।" আয়াতটি

مَآ اَغۡنٰى عَنۡهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ؕ ﴿۲﴾

২. তার ধন-সম্পদ ও তার উপার্জন তার কোন উপকারে আসেনি।

سَيَصۡلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۙ ﴿۳﴾

৩. অচিরেই সে লেলিহান শিখাময় জাহান্নামের আগুনে প্রবেশ করবে,

وَّامۡرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ الۡحَطَبِ ۚ ﴿۴﴾

৪. এবং তার স্ত্রীও যে ইন্ধন বহন করে,

فِىۡ جِيۡدِهَا حَبۡلٌ مِّنۡ مَّسَدٍ ۚ ﴿۵﴾

৫. তার গলদেশে শক্ত পাকানো রশি (খেজুরের আঁশ দিয়ে বানানো) রয়েছে।

সূরাঃ ইখলাস, মাক্কী

سُوۡرَةُ الۡاِخۡلَاصِ مَكِّيَّةٌ

(আয়াতঃ ৪ রুকূ'ঃ ১)

اٰيَاتُهَا ۴ رُكُوۡعُهَا ۱

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ ﴿۱﴾

১. বলঃ তিনিই আল্লাহ্ একক (ও অদ্বিতীয়),

اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ ﴿۲﴾

২. আল্লাহ কারো মুখাপেক্ষী নন, (সবাই তাঁর মুখাপেক্ষী);

নাযিল হলে রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বের হয়ে সাফা পাহাড়ে গিয়ে উঠলেন এবং 'ইয়া সাবাহাহ' (সকাল বেলার বিপদ, সাবধান) বলে চিৎকার করে ডাকলেন। সবাই সচকিত হয়ে বলে উঠলো, এভাবে কে ডাকছে? তারপর সবাই তার পাশে গিয়ে সমবেত হলো তিনি বললেনঃ আচ্ছা, আমি যদি এখন তোমাদেরকে বলি যে, এ পাহাড়ের অপর দিক থেকে একটি অশ্বারোহী সৈন্যবাহিনী আক্রমণের জন্য প্রস্তুত হয়ে আছে, তাহলে কি তোমরা আমাকে বিশ্বাস করবে? সমবেত সবাই বললো, আপনার ব্যাপারে আমাদের মিথ্যার অভিজ্ঞতা নাই। তখন তিনি বললেনঃ আমি তোমাদেরকে একটি কঠিন আযাব সম্পর্কে সাবধান করে দিচ্ছি। একথা শুনে আবূ লাহাব বললো, তোমার অকল্যাণ হোক। তুমি কি এ জন্যই আমাদেরকে সমবেত করেছো? এরপর সে সেখান থেকে চলে গেল। তখন নাযিল হলো- "তাব্বাত ইয়াদা আবী লাহাব" "আবূ লাহাবের হস্তদ্বয় ধ্বংস হোক।" (বুখারী, হাদীস নং ৪৯৭১)

৩. তিনি কাউকে জন্ম দেননি এবং তাঁকেও জন্ম দেয়া হয়নি,[১]

لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ ﴿٣﴾

৪. এবং কেহই তাঁর সমকক্ষ নয়।

وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿٤﴾

সূরাঃ ফালাক, মাক্কী

سُوْرَةُ الْفَلَقِ مَكِّيَّةٌ

(আয়াতঃ ৫ রুকূ'ঃ ১)

اٰيَاتُهَا ٥ رُكُوْعُهَا ١

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. বলঃ আমি আশ্রয় নিচ্ছি উষার স্রষ্টার,

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ ﴿١﴾

২. তিনি যা সৃষ্টি করেছেন তার অনিষ্ট হতে,

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ ﴿٢﴾

৩. অনিষ্ট হতে অন্ধকার রাত্রির যখন তা আচ্ছন্ন হয়;

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ ﴿٣﴾

৪. এবং গিরায় ফুঁকদান কারিণীর।

وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ ۙ ﴿٤﴾

৫. এবং হিংসুকের অনিষ্ট হতেও যখন সে হিংসা করে।

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿٥﴾

১। মু'আয ইবনে জাবাল (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) [তাকে] বললেন হে মু'আয, তুমি কি জানো বান্দার কাছে আল্লাহ্‌র কি হক আছে? মু'আয বললেন, আল্লাহ্ ও তাঁর রাসূলই ভালো জানেন। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, (বান্দার কাছে আল্লাহ্‌র হক হলো) সে তার ইবাদত বা দাসত্ব করবে এবং তার সাথে অন্য কিছুকে অংশীদার বানাবে না। তিনি [নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)] আবার বললেন, তুমি কি জানো আল্লাহ্‌র কাছে বান্দার হক কি? মু'আয ইবনে জাবাল বললেন, বিষয়টি আল্লাহ্ ও তাঁর রাসূলই ভালো জানেন। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, আল্লাহ্‌র কাছে বান্দার হক হলো আল্লাহ্ কর্তৃক বান্দাকে আযাব না দেয়া। (বুখারী, হাদীস নং ৭৩৭৩, ৭৩৭৪, ৭৩৭৫)

সূরাঃ নাস, মাক্কী

(আয়াতঃ ৬ রুকূ'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে (শুরু করছি)

سُوْرَةُ النَّاسِ مَكِّيَّةٌ

اٰيَاتُهَا ٦ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿١﴾

১. বলঃ আমি আশ্রয় নিচ্ছি মানুষের প্রতিপালকের,[১]

مَلِكِ النَّاسِ ۙ﴿٢﴾

২. যিনি মানবমন্ডলীর বাদশাহ।

اِلٰهِ النَّاسِ ۙ﴿٣﴾

৩. যিনি মানবমন্ডলীর প্রকৃত মা'বূদ।

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ﴿٤﴾

৪. আত্মগোপনকারী কুমন্ত্রণাদাতার অনিষ্ট হতে,[২]

الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ﴿٥﴾

৫. যে লোকদের অন্তরে কুমন্ত্রনার উদ্রেক করে।

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۧ﴿٦﴾

৬. জ্বিনের মধ্য হতে অথবা মানুষের মধ্য হতে।

১। আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) থেকে বর্ণনা করেছেন, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) যখন বিছানায় আসতেন, তখন আপন দু'হাতের তালুতে 'কুলহুআল্লাহু আহাদ' এবং সূরা নাস ও সূরা ফালাক পড়ে দম করতেন। তারপর উভয় কব্জির তালু মুখের ওপর মুছে নিতেন আর দেহের যতটুকু হাত দু'খান পৌছতো ততটুকুতে হাত বুলিয়ে দিতেন। আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) বলেছেন, যখন রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) অসুস্থ হতেন, তখন আমাকে অনুরূপভাবে করতে হুকুম দিতেন। ইউনুস বলেছেন, ইবনে শিহাব যখন তাঁর বিছানায় যেতেন, তখন তাঁকে অনুরূপ করতে আমি দেখতাম। (বুখারী, হাদীস নং ৫৭৪৮)

২। আবূ হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, জাহান্নামকে কামনা-বাসনা দ্বারা ঢেকে রাখা হয়েছে। আর জান্নাতকে বিপদ-মূসীবত দ্বারা ঢেকে রাখা হয়েছে। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৮৭)